भिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर

खण्ड : १

सम्पादक :

आचार्य श्री तुलसी

संग्रहकर्ता :

मुनि श्री चौथमलजी

प्रबन्ध सम्पादक :

श्रीचन्द रामपुरिया, बी. कॉम., बी. एल.

तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह के अभिनन्दन में प्रकाशित

प्रकाशक :

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट

कलकत्ता—१

●

प्रथमावृत्ति

जून, १९६०

अषाढ २०१७

●

प्रति संख्या

१५००

●

पृष्ठांक :

९६२

●

मूल्य :

[illegible]

●

मुद्रक :

रेफिल आर्ट प्रेस,

कलकत्ता

प्रकाशकीय

तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह के अभिनन्दन में तेरापंथ सम्प्रदाय के आद्य आचार्य स्वामी भीखणजी द्वारा रचित कृतियों को 'भिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर' (प्रथम खंड) के रूप में प्रकाशित कर वस्तुतः गौरवानुभूति हो रही है। स्वामीजी की उच्च कोटि की दार्शनिक कृतियों में जैन आचार और विचार विषयक गूढ़ तात्त्विक चर्चाएँ बड़ी सरल भाषा में है। यद्यपि इन कृतियो की रचना स्वामीजी ने आज से प्रायः पौने दो सौ वर्ष पूर्व तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण मे की थी, किन्तु, फिर भी ये रचनायें, आज भी उतनी ही उपयोगी हैं, जितनी अपनी रचना-काल मे थीं।

महासभा ने स्वामी जी की समस्त कृतियों को जन-हितार्थ क्रम से प्रकाशित करने की परिकल्पना की है। प्रथम दो खण्डो में स्वामीजी की उपलब्ध पद्य-कृतियाँ प्रकाशित है। पाठकवृन्द इन परमोपयोगी ग्रन्थ रत्नो से अत्यन्त लाभान्वित होगे, इसमें सन्देह नही।

तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह व्यवस्था उपसमिति
३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट,
कलकत्ता—१
३० जून, १९६०

श्रीचन्द रामपुरिया
व्यवस्थापक,
साहित्य-विभाग

भूमिका

तेरापंथ सम्प्रदाय के आद्य आचार्य संत भीखण जी द्वारा रचित विभिन्न तात्त्विक कृतियों को 'भिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर' के प्रथम खंड मे संकलित किया गया है। इस खंड मे कुल ३४ रत्न हैं। भिन्न-भिन्न रत्नो का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है :

१—नव पदारथ :

जैन-दर्शन मे जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, वंध, निर्जरा और मोक्ष—ये नव पदार्थ वताये गये हैं। इस कृति मे इन्ही पदार्थों का विशद विवेचन है। यह कृति सं० १८५५ में आरम्भ की गई और सं० १८५६ मे समाप्त हुई। ऐसा प्रथम और वारहवी ढाल की अन्तिम गाथाओ से मालूम होता है। 'पुण्य पदार्थ' की दूसरी ढाल, जो १८४३ में रचित है, तथा तेरहवी ढाल, जो १८५७ मे रचित है, वाद मे इस कृति के साथ जोडी गई हैं। इस कृति मे १३ ढालो मे कुल ६४ दोहे और ६८० गाथाएँ हैं। नव पदार्थ का जैसा गभीर विवेचन इस कृति मे है वैसा अन्यत्र कम देखा जाता है। पहली ढाल मे द्रव्य जीव और भाव जीव का भेद तथा जीव के तेईस गुणनिष्पन्न नामो का वड़ा सुन्दर और सरल विवेचन है। दूसरी ढाल मे धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय का तुलनात्मक विवेचन तथा काल और पुद्गलास्तिकाल का अनेक पहलुओं से विवेचन है।

तीसरी और चौथी ढाल में पुण्य पदार्थ का विवेचन है। पुण्य की परिभाषा, पुण्य के उदय से उत्पन्न सुखो का स्वभाव, पुण्योत्पन्न सुखो के भोगने का फल, उनके त्याग का फल, पुण्य का वंध कैसे होता है ?, पुण्य वधने के नौ प्रकार आदि अनेक विपयो का गहरा विवेचन है।

पाँचवी ढाल मे पाप पदार्थ का विवेचन है। छठीं और सातवी ढाल मे आश्रव और कर्म मे भेद, आश्रव जीव है या अजीव, आश्रव के वीस भेद आदि का विवेचन है।

आठवी ढाल मे संवर किसे कहते हैं, संवर कैसे होता है, देश संवर और सर्व संवर आदि वातों पर मौलिक प्रकाश हैं। नवी और दसवी ढाल मे निर्जरा कैसे होती है, निर्जरा की परिभाषा, शुभ योग और निर्जरा का सम्वन्ध, सवर और निर्जरा का सम्वन्ध, अकाम निर्जरा और सकाम निर्जरा, मोक्ष और निर्जरा में अन्तर आदि विषयो का विवेचन है। ग्यारहवी ढाल मे वध पदार्थ का स्वरूप, उसके चार भेद आदि का वर्णन है। वारहवी ढाल मे मोक्ष पदार्थ का विवेचन है। सांसारिक और मौक्तिक सुख, १५ प्रकार के सिद्ध, सिद्धो के स्वरूप आदि का मार्मिक विवेचन है। तेरहवीं ढाल मे नौ पदार्थों में कितने जीव हैं और कितने अजीव इस विषय की चर्चा है।

२—श्रावक ना बारे व्रत :

यह कृति सं० १८३२ मे गुदोच शहर मे समाप्त हुई। इसमें श्रावक के वारह व्रतों का विस्तृत विवेचन है। वारह व्रतो पर इतना विशद और व्यापक विवेचन अन्यत्र कम देखा जाता है। इस कृति मे १३ ढालें हैं जिनमें कुल ५२ दोहे और ३६३ गाथाएँ हैं।

३—कालवादी री चौपई :

स्वामीजी के समय मे कालवादी एक विशिष्ट मत था। इस कृति मे स्वामी जी इस मत की मान्यताओ का खण्डन कर वास्तविक तथ्य क्या है इस पर वड़ा गहरा प्रकाश डालते हैं। यह उच्च कोटि की दार्शनिक कृति है जिसमे गूढ़ तात्त्विक चर्चा वड़ी सरल भापा मे मिलती है। इसमें ७ ढालें हैं। कुल ३६ दोहे और २४७ गाथाएँ हैं। इस कृति की पहली चार ढालो मे रचना-संवत् नही मिलता।

५ वी ढाल खेरवा शहर में १८३२ मे आषाढ़ सुदी १ सोमवार के दिन रची गई थी। ६ वी और ७ वी ढाले पुर में सं० १८४८ की क्रमश वैशाख सुदी ५ बुधवार और वैशाख सुदी ८ रविवार के दिन पूरी हुई ।

४—इन्द्रियवादी री चौपई :

इसमें १५ ढाले हैं। कुल ९२ दोहे और ६९७ गाथाएँ हैं। प्रथम सात और १४ वी ढाल की रचना का काल नही मिलता। अवशेष ढालो का रचना-स्थान और काल इस प्रकार है :—

ढाल	८	नैणवा शहर	सं०	१८४६ ज्येष्ठ सुदी बुधवार
,,	९	,,	सं०	१८४७ फाल्गुन वदि ८ शनिवार
,,	१०	माधोपुर	सं०	,, फाल्गुन सुदी
,,	११	नेणवा शहर	सं०	,, वैशाख वदि ९ बुधवार
,,	१२	आतरदा गाँव	सं०	,, वैशाख सुदी १२ रविवार
,,	१३	इन्द्रगढ़	सं०	,, ज्येष्ठ वदि १४ सोमवार
,,	१५	माधोपुर	सं०	,, चैत्र वदि २ सोमवार

इन्द्रियाँ सावद्य हैं या निरवद्य—इस विषय पर इन ढालो मे मौलिक विवेचन है।

५—परजायवादी री चौपई :

इस कृति मे ३ ढाले हैं जिनमे १५ दोहे और १०१ गाथाएँ हैं। इसके रचना-काल का उल्लेख नही है।

स्वामी जी के समय मे परजायवादी एक मत था। उस मत की विशद समीक्षा इस कृति में है।

६—टीकम डोसी री चौपई :

टीकम डोसी की अनेक शकाएँ थी। उनका निवारण स्वामीजी ने किया। इस कृति में अनेक तात्त्विक विषयों की गहरी चर्चा है। इस कृति मे ५ ढालें हैं। कुल २८ दोहे और १२८ गाथाएँ हैं।

७—निषेपां री चौपई :

इसमें ६ ढाले हैं। कुल ३० दोहे और २६७ गाथाएँ हैं। किसी ढाल मे रचना-काल नही मिलता। इस कृति मे निक्षेपो के स्वरूप का विवेचन और उनपर मौलिक विचार हैं।

८—निन्ह्व री चौपई :

इसमें ६ ढाले हैं। कुल २८ दोहे और १७२ गाथाएँ हैं। किसी भी ढाल मे रचना-काल का उल्लेख नहीं है। निह्नवो की मान्यताओ की गभीर आलोचना इस कृति में है।

९—मिथ्याती री करणी री चौपई :

इस कृति मे ४ ढालें हैं। कुल २५ दोहे और १५१ गाथाएँ है। दूसरी और चौथी ढाल का रचना समय नही मिलता। बाकी दो ढालो का रचना-समय इस प्रकार है —

पहली ढाल	माधोपुर	सं०	१८४३ चैत्र सुदी ६ शुक्रवार
तीसरी ढाल	नैणवा शहर	सं०	१८४७ वैशाख वदि १२ शनिवार

१०—एकल री चौपई :

इसमें ८ ढालें हैं जिनमे कुल ३७ दोहे और २२७ गाथाएँ हैं। इसका रचना-सवत् नही मिलता। जो गण छोड़कर अकेले फिरते हैं उन्हें 'एकल' कहा जाता है। इस चौपई मे ऐसे स्वच्छंदो के दोषो पर प्रकाश डाला है और ऐसी स्वच्छदता किस प्रकार जिन-आज्ञा के विपरीत है यह सिद्ध किया है। सूत्र मे एकल विहारी किसे कहा है? एकल विहार करते हुए भी कैसा साधु शुद्ध होता है? आदि विषयो का

विवेचन दूसरी ढाल मे है। जो अव्यक्त है और विना गुरु की आज्ञा के अकेला स्वच्छन्द विहारी होता है उसका किस तरह पतन होता है इसका बडा मनोवैज्ञानिक चित्रण इस कृति मे होता है। स्वामी जी ने उपसहार स्वरूप कहा है—'भगवान् ने सूत्र मे कहा है कि ऐसे कुशील, पार्श्वस्थ, अपछंद और ससक्त एकल विहारियो का सग नही करना चाहिये। साधु उनके साथ परिचय न करे।'

११—जिनाग्या री चौपई :

इस कृति मे ५ ढाले हैं जिनमे कुल ३४ दोहे और २३५ गाथाएँ हैं। पहली ढाल मे रचना-संवत् नही है। बाकी चार ढाले भिन्न २ वर्ष मे रचित हैं :

ढाल	२	खेरवा	स० १८४० आश्विन वदि ५ शनिवार
,,	३		सं० १८३१ ज्येष्ठ सुदी ३ शुक्रवार
,;	४	नाथ दुवारा	स० १८४२ आषाढ वदि १ सोमवार
,,	५	,,	स० १८५६ फाल्गुन वदि ६ शनिवार

उपर्युक्त विवरण से पता चलता है कि 'जिनाग्या री चौपई' कोई सलग्न रचना नही है। यह इस विषय की अलग-अलग समय की ढालो का सग्रह मात्र है। इसका प्रतिपाद्य है —"जैन-धर्म जिन-आज्ञा मे है, जिन-आज्ञा के बाहर जैन-धर्म नही।" पहली ढाल मे इसका बडा सुन्दर विवेचन है कि किन-किन बातो मे जिन-आज्ञा है और किन-किन मे नही। दूसरी ढाल मे सावद्य-निरवद्य कार्य की कसौटी बताते हुए जो जिन-आज्ञा रहित कार्यो मे भी धर्म बताते हैं उनकी तीव्र आलोचना की है। जो जिन-आज्ञा के बाहर के कार्यों मे मिश्र—धर्म-पाप मिश्रित बतलाते हैं उनकी भी तीव्र आलोचना है। साधु, आहार आदि करते हैं, वस्त्रादि रखते हैं, रात मे सोते हैं, ये कार्य जिन-आज्ञा के अन्तर्गत हैं। जो साधुओ के इन कार्यो मे प्रमाद, अविरति आदि दोष कहते और उनके महाव्रतो को सागार कहते हैं उनकी आलोचना तीसरी ढाल मे है। आज्ञा-सहित कार्य करने मे किस तरह साधु को पाप नही लगता इसका विशद विवेचन भी इस ढाल मे है। चौथी ढाल मे यह बताया गया है कि साधु और साध्वियो के जो अलग-अलग कल्प हैं उनमे किसी तरह का पाप नही। यह कल्प भगवान् द्वारा निर्धारित है और उनकी मुद्रा उस पर है फिर उसे पाप पूर्ण कैसे कहा जा सकता है? इस तरह इस ढाल मे साधु-साध्वियो के कल्प का बड़ा गभीर और सुन्दर विवेचन है।

साधु के उपकरण १४ ही हैं या उनसे अधिक भी हो सकते हैं इसका विवेचन ५ वी ढाल का विषय है। स्वामीजी ने सिद्ध किया है कि साधु के उपकरण १४ ही नही अधिक भी हैं। अत जो यह कहते हैं कि १४ उपकरण के उपरात उपकरण रखने वाला साधु नही, इनके उपरांत जो एक कागज का पन्ना भी रखता है वह असाधु है वे विपरीत प्ररूपणा करते हैं। इस ढाल मे इस बात का भी विवेचन है कि साधु लिखने के उपकरण रख सकता है या नही तथा लिख सकता है या नही।

१२—पोतियाबंध री चौपई :

इस कृति मे ४ ढाले हैं। इनमे कुल २८ दोहे और १६७ गाथाएँ हैं। रचना-सवत् किसी भी ढाल मे नही देखा जाता।

स्वामीजी के समय मे जैनो का एक सम्प्रदाय पोतियाबन्ध नाम से भी था। स्वामीजी गृहस्थावास मे इस सम्प्रदाय के यहाँ भी आना-जाना रखते थे। गच्छवासी सम्प्रदाय को छोड कर वे इसके अनुयायी बने थे।

पोतियाबन्ध सम्प्रदाय की एक मान्यता यह थी कि सिद्धो के पहले अरिहन्तो को वदना करने से आशातना होती है। सर्व साधुओ को वदना नही करनी चाहिए। जो बड़े हैं उन साधुओ

के लिए छोटे कैसे वदनीय हो सकते हैं ? इस तरह नमस्कार मंत्र की रचना में वे त्रुटि वतलाते थे। स्वामीजी ने पहली ढाल में इसी मान्यता को लेकर उसकी निस्सारता सिद्ध की है। उनकी दूसरी मान्यता थी कि वर्तमान समय में जैन साधु नही हो सकते । स्वामीजी ने दूसरी ढाल मे इस मिथ्या मान्यता का खण्डन किया है तथा इस सम्प्रदाय के अन्य अनेक अभिनिवेशो की भी आलोचना की है। वे 'मन' योग से प्रत्याख्यान नही करते थे। 'मन' योग से प्रत्याख्यान करने मे वे पाप वतलाते थे। इसकी आलोचना तीसरी ढाल मे है। चौथी ढाल मे अन्य अनेक मान्यताओ का उल्लेख और उनका खण्डन है।

१३—निन्व रास :

इस कृति मे केवल एक ही ढाल है। स० १८५३ की कार्त्तिक वदि ११ वुधवार के दिन यह ढाल रची गई। इसमे ६ दोहे और १७० गाथाएँ हैं। स्वामीजी को विपक्षी निह्नव कहते। स्वामीजी ने इस ढाल मे यह वताया है कि वास्तव मे निह्नव वह होता है जिसके श्रद्धा, आचार और प्ररूपणा जिन-वाणी के विपरीत हो। उन्होने उस समय के साधुओ की मान्यता, आचार, प्ररूपणा आदि पर विवेचन करते हुए यह सिद्ध किया है कि निह्नव सज्ञा कहाँ घटती है। यह कृति उस समय के मिथ्या अभिनिवेश, क्रिया और प्ररूपणाओ पर वडा गभीर प्रकाश डालती है।

१४—विनीत अविनीत री चौपई :

इस कृति मे नौ ढाले हैं जिनमे दोहो की सख्या ५२ और गाथाओ की सख्या ३४२ है। यह कृति खेरवा शहर मे सवत् १८३२ भाद्र शुक्ल षष्ठी, शुक्रवार के दिन समाप्त हुई। इस कृति का मुख्य आधार 'उत्तराध्ययन' सूत्र है। पर अन्य सूत्रो मे भी जहाँ भी इस विषय पर कुछ भी आया है उसको भी स्वामीजी ने इस कृति मे ले लिया है। विनय किसका करना चाहिए, विनय किसे कहते हैं, अविनय किसे कहते हैं, कौन विनयी है, कौन अविनयी है, साधु के विनय का स्वरूप आदि-आदि अनेक विषयो पर इस कृति मे वडा गम्भीर और मार्मिक विवेचन है। आगम आधार पर रचित इस कृति में वड़ा मौलिक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है और इस दृष्टि से यह एक स्वतत्र कृति भी कही जा सकती है। इसमें स्वामीजी ने विषय को समझाने के लिए अनेक मौलिक दृष्टान्त और मनोवैज्ञानिक विचार दिये हैं।

१५—विनीत अविनीत री ढाल :

इस कृति मे दो ढालो का सग्रह है। दोनो ढालो मे रचना सवत् नही है। दोनो मे कुल मिलाकर दो दोहे और पचास गाथाएँ हैं। पहली ढाल मे अविनयी के चरित्र का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है। दूसरी ढाल मे अविनयी अपनी वृत्तियो को वदल कर किस तरह विनयी हो सकता है, इसका सुन्दर विवेचन है।

१६—उणरी ढाल :

इस कृति मे एक ही ढाल है जिसमे एक दोहा और ७८ गाथाएँ हैं। रचना-संवत् नही मिलता। इस ढाल में स्वामीजी ने तीन सम्वन्धो को लिया है—(१) माता-पिता और सन्तान का सम्वन्ध, (२) मालिक और नौकर का सम्वन्ध और (३) गुरु और शिष्य का सम्वन्ध और वतलाया है कि आध्यात्मिक दृष्टि से सन्तान, नौकर और शिष्य किस तरह उऋण होता है। आध्यात्मिक उऋणता का सुन्दर विवेचन इस ढाल मे है। स्वामीजी ने एक मौलिक दृष्टान्त द्वारा इनका विवेचन किया है।

१७—मोहणी कर्म बंध री ढाल :

आठ कर्मों में मोहनीय कर्म प्रबलतम है। प्राणी की ज्ञान और दर्शन की शक्ति इसीसे अवरुद्ध होती है। इस कृति में महा मोहनीय कर्म-बन्ध के ३० बोलों का विवेचन है। इस ढाल के गंभीर मनन से मनुष्य महान् पापो से बच सकता है। यह ढाल स्वामीजी ने पादुगांव मे संवत् १८३७ श्रावण वदि रविवार के दिन रची। इसमें ५ दोहे और ५० गाथाएँ हैं।

१८—दसवें प्राछित्त री ढाल :

इस ढाल में दसवां प्रायश्चित्त किसको आता है, इसका विवेचन है। यह ढाल 'स्थानाङ्ग' सूत्र के तीसरे और पांचवें स्थानक के आधार पर रची गई है। इसमे रचना-संवत् का उल्लेख नही है। इसमें दो दोहे और ग्यारह गाथाएँ है।

१९—जिण लखणा चारित आवे न आवे तिणरी ढाल :

यह ढाल संवत् १८३५ माघ सुदी ४, बुधवार के दिन रचित है। इसमे ५ दोहे और ५७ गाथाएँ हैं। श्रामण्य को आगम में गुणो का महा भार कहा है। श्रामण्य आत्मिक विशेषताओं के बिना नही आता। इस ढाल में इस बात का विवेचन है कि किन गुणो से सर्व संयम—श्रामण्य का पाना सुलभ होता है और किन-किन कर्मों से मनुष्य उसका अधिकारी नही होता।

२०—सूंस भंगावण रा फल री ढाल :

इस ढाल में ५ दोहे और ५७ गाथाएँ हैं। यह कृति १८५४ चैत्र सुदी१३ बुधवार के दिन पादुगांव मे रची गई है। इस छोटी सी ढाल मे स्वामीजी ने प्रत्याख्यान के महत्वपूर्ण विषय को कई पहलुओं से स्पर्श किया है। प्रत्याख्यान किस भावना से ग्रहण करना चाहिए, किस तरह उसका पालन करना चाहिए, प्रत्याख्यान के भङ्ग मे क्या दोष है, गिरते हुए को किस तरह से दृढ़ करना चाहिए, व्रती के परिणामों को ढीला नही करना चाहिये आदि २ विषयो पर बडा मार्मिक विवेचन है।

२१—सांमधर्मी सांमद्रोही री ढाल :

इस ढाल मे कुल ३१ गाथाएँ हैं। इसका रचना-संवत् नही मिलता। एक योगी ने चूहे को मंत्र के बल से क्रमश बिल्ली से सिंह बनाया। सिंह बनने पर वह चूहा अपने उपकारी योगी को ही खाने के लिए उद्यत हो गया। यह स्वामी द्रोह का दृष्टान्त है। इसीमें एक अन्य दृष्टान्त राजा के स्वामीभक्त नौकर का है जिसको राजा ने ठुकरा दिया। बाद में राजा पर विपद पड़ी। उस समय उस नौकर ने राजा के व्यवहार की ओर जरा भी दृष्टिपात न करते हुए उसकी रक्षा की। स्वामीजी ने इन दृष्टान्तों की उपमा देते हुए विनयी-अविनयी शिष्य के स्वभाव को प्रगट किया है।

२२—शील की नव बाड़ :

इस कृति में ग्यारह ढालें हैं जिनमें दोहो की संख्या ४६ और गाथाएँ १६७ हैं। इसकी रचना संवत् १८४१ की मिती फाल्गुन वदि १० बुधवार के दिन पादुगांव में समाप्त हुई। इस कृति में उत्तम ब्रह्मचारी के शील—उसके लक्षण, रहन-सहन और व्यवहार के नियमों का विवेचन है। ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए 'उत्तराध्ययन' सूत्र में दस समाधि स्थानो का उल्लेख है। उसीके आधार पर ब्रह्मचर्य की बाडो का विस्तृत, मार्मिक एवं मौलिक विवेचन इस कृति में है।

इस कृति का सटिप्पण हिन्दी अनुवाद अलग प्रकाशित किया जा रहा है।

२३—समकित री ढालां :

यह तीन ढालों का संग्रह है। इसमें सम्यक्त्व का महत्त्व, सम्यक्त्वी कौन है, किसमें सम्यक्त्व नहीं है, इसका विवेचन है। इसमें सम्यक्त्व के स्वरूप पर बड़ा अच्छा प्रकाश है। इस संग्रह में कुल २ दोहे और ४६ गाथाएँ हैं।

२४—गणधर सिखावणी :

यह दो ढालों का संग्रह है। दूसरी ढाल का रचना-स्थान केलवा है और यह संवत् १८४३ के पौष महीने में रची गई है। मनुष्य का आयुष्य किस तरह अस्थिर है यह पहली ढाल में बताया गया है। दूसरी ढाल में एक समय के लिए भी प्रमाद न करने का उपदेश देते हुए अनेक उच्च गुणों की आराधना का बड़ा गम्भीर उपदेश है। दोनों ढालों में ३६ गाथाएँ हैं।

२५—दान री ढालां :

यह दो ढालों का संग्रह है। दूसरी ढाल का रचना-स्थान सिरियारी गाँव है। यह ढाल संवत् १८४२ कार्तिक मास में रची गई है। दोनों ढालों में कुल दोहों की संख्या ६ है और गाथाएँ ६० हैं। प्रथम ढाल में निरवद्य सुपात्रदान की महिमा का वर्णन है और दूसरी ढाल में कृपण की प्रकृति का गम्भीर मनोवैज्ञानिक विवेचन है।

२६—वैराग री ढालां :

यह कुल ४ ढालों का संग्रह है। इसमें कुल दोहे ५ हैं और गाथाएँ १०५। दूसरी ढाल का रचना-स्थान सिरियारी गांव है। यह संवत् १८३४ आषाढ़ वदि ११ शनिवार को रची गई है। पहले गणधर सिखावणी का जो संग्रह आया है उसकी पहली ढाल का ही विषय इस संग्रह की पहली ढाल का विषय है। वास्तव में ये दोनों ढालें एक ही संग्रह में होनी चाहिये थीं। दूसरी ढाल को प्रायः 'बूढ़े की ढाल' कहते हैं। इसमें वृद्धावस्था में मनुष्य की कैसी हालत होती है उसका वर्णन है। तीसरी ढाल में गृहस्थावस्था की विडम्बना का वर्णन है। इसमें कई अच्छे सूक्त हैं। उदाहरण स्वरूप :

नचिंत होय बेठा नर अंब, बांधे पर घर केरा बंध।
परणीजे जांणें घर मांड्या, इसड़ा घर अनंता छांड्या॥
तो ही तृप्त न हूवो जीव, नीकल्यो दे दे काची नींव।
घर जलाय तीरथ जे करसी, सो साधु जग मांहें तिरसी॥
केइ श्रावक नां व्रत पाले, ते पिण नरक तिर्यंच दुख टाले।
देश थकी ते पिण ब्रह्मचारी, साधु तजिया सर्व विकारी॥
नरक दिखावण दीवी नार, मोष जावण नें आडी किंवाड।
सुयगडांग तंदुल वियालि साख, तिण में वीर गया छे भाख॥
स्त्री दोष जिण कह्या अनेक, तिण न्याए मेल्या क्यूंही एक।
बुरो मती मानें नर नारी, निश्चें देखो ग्यांन विचारी॥
छेदाणां जस हाथ नें पाय, कांप्या कांन नें नांक कहाय।
ते पिण सो वरसां नी नारी, दूर तजें रहे ब्रह्मचारी॥
विषें दिष्टि वरजी चित्रनारी, तो किम निरखे सोले सिणगारी।
सूर्य साह्मो जोयां घटें तेज, ज्यूं ब्रह्मचर्य घटें इण हेज॥

उंदर बेठो मिनकी पास, जीव तिहां राखे किण आस।
तिम नारी संगे शीलवंत, विरलो कोइ बचे बलवंत॥
इम जांणी रहे साधु एकंत, आपनें हित वांछे ते संत।
शील संजम दिढ पाले ठीक, त्यांनें जांणो मुगत नजीक॥

२७—जुआ री ढाल :

इसमें दोहे ४ और गाथाएँ ६१ हैं। इसकी रचना पुर शहर मे संवत् १८५७ श्रावण सुदी ५ शनिवार को हुई। जुये का भीषण दुष्परिणाम इस कृति मे बड़े मौलिक ढंग से दिखाया गया है।

२८—व्याहुलो :

इसमें केवल एक ही ढाल है। इसकी गाथाएँ ६८ हैं। इसके रचना-काल व स्थान का उल्लेख नही है। विवाह मे जो अनेक नेगचार होते हैं उनका आध्यात्मिक गूढार्थ इस कृति मे प्रगट किया है। स्वामीजी का उद्देश्य है कि इसको पढकर "जोगी जोग सेंठो रहे, भोगी तजे विकार"—अर्थात् योगी योग मे दृढ़ रहे और भोगी विकार को छोड़े। यह ढाल स्वामीजी की औत्पातिकी बुद्धि का बड़ा सुन्दर नमूना है। विवाह सम्बन्धी लौकिक क्रियाओं का परमार्थ उपस्थित करते हुए उत्कट वैराग्य का उपदेश इस कृति में दिया गया है।

२९—तात्त्विक ढालां :

यह पाच ढालों का सग्रह है, जिनमे कुल ७ दोहे और १२४ गाथाएँ हैं। किसी भी ढाल में रचना-संवत् व स्थान का उल्लेख नही है। प्रथम ढाल मे जिन-शासन मे किन किन महान् व्यक्तियो ने सयम ग्रहण किया उनका वर्णन है। दूसरी ढाल में २४ दण्डक की अपेक्षा से २३ पदवियो का वर्णन है। तीसरी ढाल मे मोक्षमार्ग मे ज्ञान और क्रिया की सहचारिता पर अन्धे और पगु का दृष्टान्त है। छोटी होने पर भी यह ढाल बड़ी अर्थ-गम्भीर है। चौथी ढाल में एकेन्द्रिय जीवो को कैसी वेदना होती है इसका दिग्दर्शन है। पांचवी ढाल में मोम, लाख, लकड़ी और मिट्टी के गोलो का दृष्टान्त देकर चार प्रकार के मनुष्यों की मार्मिक व्याख्या की है।

३०—अनुकम्पा री चौपई :

यह रत्न १२ ढालो का संग्रह है जिनमे ५४ दोहे और ४८७ गाथाएँ हैं।

प्रारम्भिक आठ ढालो में रचना-संवत् नही मिलता। अवशेष ढालो के अन्त में निम्न व्योरा मिलता है।

ढाल ९ बगड़ी १८४४ फाल्गुन सुदी ९ रविवार।

ढाल १० मांढा गाँव १८५२ आषाढ वदि ११ मंगलवार।

ढाल ११ खेरवा १८५४ आश्विन सुदी २ शुक्रवार।

ढाल १२ पुर शहर १८५३ कार्त्तिक वदि १४ शुक्रवार।

उपर्युक्त रचना-वर्णन से यह स्पष्ट है कि कुछ ढालें मूल कृति के साथ वाद मे जोड़ी गई हैं। मूल कृति मे ८ अथवा ९ ढालें रही इसका स्पष्ट पता नही चलता। इस कृति मे, हिसा, अहिंसा, दया, अनुकम्पा, उपकार आदि विषयो पर विविध गम्भीर विवेचन हैं जिसके पीछे गहरा आगम-अध्ययन और गम्भीर चिन्तन-मनन स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। अहिंसा के क्षेत्र में स्वामीजी एक बहुत बड़े विचारक और साधक रहे जिनके चिन्तन मे बहुमूल्य स्थाई तत्त्व हैं। इस कृति का सानुवाद सटिप्पण संस्करण अलग प्रकाशित किया जा रहा है।

३१—विरत अविरत री चौपई :

इस सग्रह में २० ढालें हैं। कुल मिला कर ८९ दोहे और ९७५ गाथाएँ हैं। इनमें विरति और अविरति के विषय पर मौलिक चिन्तन और विश्लेषण है। दान के सावद्य-निरवद्य भेद पर आगम-सम्मत विचार हैं। एक ही क्रिया मे धर्म-अधर्म दोनो होते हैं ऐसी मान्यता का खण्डन है। जैन-आगम में कहाँ किस परिस्थिति मे मौन रहने का विधान है इसका जिक्र है। दस प्रकार के दान पर विवेचन कर सावद्य-निरवद्य दान का विवेक उपस्थित किया गया है। यह कृति अनेक मिथ्याभिनिवेशो को दूर कर अनेक विषयो में सम्यक्‌दृष्टि देती है। इस सग्रह की कुछ ढालो के रचना-स्थान और काल का विवरण इस प्रकार है—

ढाल	रचना-स्थान	रचना-काल
४	नाथदुवारा	१८४३ आसोज वदि १० रविवार
८	नाथदुवारा	१८४३ आसोज वदि ८ शुक्रवार
९	कोठारया	१८४३ आसोज सुदी १४ शनिवार
१२	वेनावस	१८४४ माघ सुदी ७ वृहस्पतिवार
१३	पाली	१८५२ श्रावण वदि १३ मंगलवार
१४	पाली	१८५२ आसोज वदि ५ शुक्रवार
१५	पाली	१८५२ आसोज वदि १५ सोमवार
१६	सोजत	१८५३ श्रावण सुदी ६ सोमवार
१७	पाली	१८५५ आसोज सुदी १ बुधवार
१८	नाथ दुवारा	१८५६ पौष वदि २ शनिवार
१९	गोघुंदा	१८५७ चैत्र सुदी १४ बुधवार

३२—श्रद्धा री चौपई :

यह रत्न ३१ ढालो का सग्रह है। ये ढाले विभिन्न स्थल और काल में रची गई हैं। इनका पूरा विवरण इस प्रकार है·

ढाल	रचना-स्थान	रचना-काल
१	बगड़ी	१८३६ कार्त्तिक सुदी १५ मंगलवार
२	माधोपुर	१८४८ आसोज सुदी ६ सोमवार
४	नाथदुवारा	१८४३ श्रावण वदि १५ मंगलवार
५	नाथदुवारा	१८४३ आसोज वदि ९ शनिवार
६	ईडवा	१८५४ चैत्र वदि ४ बुधवार
७	कोठारया	१८४३ कार्त्तिक सुदी १३ शनिवार
८	सिरयारी	१८५० आषाढ सुदी २ रविवार
९	गुदवच	१८५१ वैसाख सुदी ११ बुधवार
१०	खेरवा	१८५३ आसोज वदि १५ बुधवार
११	मेड़ता	१८५४ वैसाख वदि १५ सोमवार
१२	पाली	१८५५
१३	केलवा	१८५५ फाल्गुन वदि १ बधवार

१४	गुरला	१८५८ कार्त्तिक वदि ५ मंगलवार
१५	पीपाड़	१८३३ ज्येष्ठ वदि १२ मंगलवार
१६	पादू	१८५४ वैसाख वदि १० मंगलवार
१८	सिरयारी	१८५१ कार्त्तिक वदि १४ बुधवार
१९	पुर	१८५७ आसोज वदि ६ शुक्रवार
२०	पुर	१८५७ आसोज वदि १३ मंगलवार
२१	गंगापुर	१८५७ पौष सुदी ८ मंगलवार
२२	पीपाड़	१८५७ चैत्र सुदी १३ सोमवार
२३	खेरवा	१८५४ आसोज सुदी १ बृहस्पतिवार
२४	खेरवा	१८५४ आसोज सुदी १५ बृहस्पतिवार
२५	पूहना	१८५७ माघ वदि २ शनिवार
२६	रावल्यां	१८५७ चैत्र सुदी १४ रविवार
२७	मेवाड़	१८५७ आसोज वदि १५ बृहस्पतिवार
२९	नेंणवा	१८४८ माघ वदि १५ सोमवार

स्वामीजी के समय में जैन दर्शन के क्षेत्र में बड़ा वितण्डावाद फैला हुआ था। एक ही विषय के सम्बन्ध मे नाना प्रकार की मान्यताएँ प्रचलित थी। श्रद्धा विषयक इन मान्यताओ का स्वामीजी ने गहरा अध्ययन किया और हजारो विषयों पर सही दृष्टि दी। श्रद्धा आचार की चौपई में श्रद्धा विषयक निर्णयों का संग्रह और जिन धर्म विषयक विपरीत मान्यताओं की तीव्र आलोचना एवं खण्डन है। इस संग्रह मे कुल मिला कर १६० दोहे और १४६४ गाथाएँ है।

३३—आचार री चौपई :

इस चौपई में ३२ ढालों का संग्रह है। कुछ के रचना-काल और स्थान इस प्रकार मिलते हैं—

ढाल	रचना-स्थान	रचना-काल
९	मेडता	१८३३ वैसाख वदि ९
११	रीयां	१८३३ आषाढ सुदी ३ सोमवार
१२	पीपाड़	१८३४ आसोज सुदी ७ बुधवार
१४	अर्णदपुर	१८३३ वैसाख सुदी ११ रविवार
१६	खेरवा	१८३२ आसोज सुदी २ मंगलवार
१७	खेरवा	१८३२ कार्त्तिक वदि २ मंगलवार
१८	गुंदवच्च	१८३२ वैसाख सुदी ११ सोमवार
१९	रीयां	१८३३ ज्येष्ठ सुदी १५ शुक्रवार
२०	रीयां	१८३३ आषाढ वदि ९ रविवार
२५	पाली	१८५२ भाद्र वदि ७ शुक्रवार
२६	सोजत	१८५३ आसोज सुदी ७ शनिवार
२७	पाली	१८५२ आसोज सुदी २ बुधवार
२८	सोजत	१८५३ आसोज वदि ११ मंगलवार
२९	पाली	१८५५ भाद्र वदि १० बुधवार
३०	नाथदुवारा	१८५६ कार्त्तिक सुदी ८ मंगलवार

श्रद्धा के बोलों की तरह् आचार के सम्बन्ध में भी स्वामीजी के समय में वडा अन्धेर चला हुआ था। साधुओं के आचार में इतनी विभिन्नता थी कि किसे साधु कहा जाय और किसे नही यह निर्णय करना असंभव-सा हो गया था। स्वामीजी ने आचार विपयक शिथिलता की जो तीव्र आलोचना की वह इस संग्रह की प्रत्येक ढाल मे देखी जाती है। उन्होने आगम-सम्मत शुद्ध साध्वाचार और श्रावकाचार को जनता के सामने रखा।

३४—अवनीत रास :

इसमें १ दोहा और ४४३ गाथाएँ हैं। अविनयी की प्रकृति का गहरा अध्ययन इस कृति की प्रत्येक गाथा से प्रगट होता है। स्वामीजी से चन्द्रभानजी आदि अलग हुए उसके वाद की यह कृति है। इसमें विनय और अविनय के विपय पर अमूल्य विचार-रत्न छिपे पड़े हैं।

इस खण्ड मे आई हुई कृतियो के विषयो का परिचय सक्षेप मे ऊपर दिया जा चुका है। इन कृतियो के पढने से पाठको के हृदय पर सहज ही निम्न प्रभाव पड़ेगा

स्वामीजी का शास्त्रीय-ज्ञान वडा गभीर था। आगमों का उनका अध्ययन वेजोड था।

शास्त्रीय-ज्ञान के साथ-साथ उनमे तीव्र नीर-क्षीर विवेक था जिसके सहारे वे तत्त्व-अतत्त्व का सही-सही निर्णय दे सकते थे।

उनकी कृतियो मे तत्त्वो का सूक्ष्म निरूपण है। उनमे गांभीर्य के साथ-साथ सरलता और सहज बोध है।

वे बड़े भारी मनोवैज्ञानिक थे। मनोभावो का उनका विश्लेपण जितना ही गहरा है, उतना ही मुग्धकारी।

उन्होने जो कुछ लिखा है वह विद्वानो के लिए जितना सरल है उतना ही एक साधारण पढ़े-लिखे व्यक्ति के लिए भी।

वे सहज कवि और तत्त्व-ज्ञानी थे। उनकी काव्य-प्रतिभा असाधारण और विविध पहलुओवाली थी। वे सैद्धान्तिक थे और दिग्विजयी चर्चावादी। वे महान् टीकाकार थे। सूत्र की गाथाओ की उनकी टीकाएँ बेजोड हैं। वे पाण्डित्यपूर्ण ही नही वरन् बडी मूलस्पर्शी और मार्मिक भी हैं।

महान् बहुश्रुत होने के साथ-साथ वे महान् चिन्तक भी थे।

वे महान् उपदेशक और नैयायिक थे, साथ ही साथ तीव्र आलोचक और कठोर समीक्षक भी। उनकी कृतियों में गहरा ज्ञान और सहज वैराग्य है।

वे एक महान् आचार्य थे और एक दूरदर्शी आचार्य की तरह स्थायी अनुशासन के नियम दे सकते थे।

उनका जीवन-व्यापी प्रयास शुद्ध जैनत्व का प्रकाश करना रहा।

स्वामीजी अपने समय के एक महान् विचारक एवं क्रान्तिकारी पुरुप थे। उस समय की जैन धर्म की स्थिति एवं साधुओ मे छाई हुई शिथिलता के प्रति उनके मन मे गहरा दर्द था। जो यह कहा करते थे कि यह पंचम काल है, सम्पूर्ण साधुत्व का पालन असम्भव है, स्वामीजी उनके लिए एक चुनौती थे। उन्होने केवल प्रचलित आचार-विपय मे ही नही किन्तु विचारो और मान्यताओ के विषय मे भी मौलिक प्रकाश दिया। उन्होने जिनाज्ञा के विपरीत कार्यों में धर्म बताने वालो की गहरी आलोचना की। वे एक अत्यन्त स्पष्टवादी आचार्य थे। अपने विचारो को निर्भयतापूर्वक प्रगट करने मे वे कभी नही सकुचाये।

इस खण्ड मे स्वामीजी की तात्त्विक और सैद्धान्तिक कृतियों का संग्रह है। द्वितीय खण्ड मे स्वामीजी रचित आख्यानो और कथानको का संग्रह है। तृतीय खण्ड में स्वामीजी की गद्यमय रचनाओ का संग्रह रहेगा।

तीनों खण्डो की विस्तीर्ण विषय-सूचि, कठिन शब्दों का कोष आदि तृतीय खण्ड के परिशिष्ट रूप मे प्रकाशित किये जायगे।

तात्त्विक ढालो का यह संग्रह न केवल जैनियो के लिए ही अत्यन्त महत्त्व का सिद्ध होगा पर जो जैन धर्म के हृदय को समझना चाहते हैं उन सब के लिए भी वैसा ही सिद्ध होगा।

स्वामीजी की ढालों की प्राचीनतम प्रति उनके परम भक्त शिष्य और द्वितीय आचार्य श्रीमद् भारीमालजी के हस्ताक्षरों मे उपलब्ध है। वही प्रस्तुत संग्रह का आधार रही है। श्रीमद् जयाचार्य ने स्वामीजी की कृतियो का विषयवार वर्गीकरण कर उन्हें व्यवस्थित कर उनपर 'सिद्धान्त-सार' नामक ग्रन्थ की रचना की। वर्तमान आचार्य श्रीमद् तुलसीरामजी स्वामी ने "भिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर" के रूप में उन्हे संयोजित करने का विचार किया। मुनि श्री चौथमलजी ने आचार्य श्री की दृष्टि के अनुसार सयोजन करने में पूरा परिश्रम किया।

तेरापन्थ सम्प्रदाय के द्विशताब्दी समारोह के अवसर पर तेरापन्थ के प्रतिष्ठापक और आद्य आचार्य की वाणी का यह संग्रह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और आवश्यक प्रकाशन है। करीब १७५ वर्षों के वाद यह बहुमूल्य साहित्य अपने अमित आलोक के साथ जनता के सामने आ रहा है, यह एक बड़े ही सौभाग्य की बात है।

१५, नूरमल लोहिया लेन
कलकत्ता,
३० जून, १९६०

श्रीचन्द रामपुरिया

विषय-सूची

भिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर

खण्ड : १

१ : जीव पदारथ

दुहा

नमूं वीर सासन धणी, गणधर गोतम साम।
तारण तिरण पुरखा तणां, लीजे नित प्रत नाम॥ १॥
त्या जीवादिक नव पदारथ तणो, निरणो कीयो भांत भांत।
त्याने हलूकर्मी जीव ओलखे, पूरी मन री खांत॥ २॥
जीव अजीव ओलख्यां विनां, मिटे नही मन रो भर्म।
समकत आयां विण जीव ने, रुके नही आवतां कर्म॥ ३॥
नव ही पदारथ जू जूआ, जथातथ सरदे जीव।
ते निश्चे समदिष्टी जीवडा, त्यां दीधी मुगत री नीव॥ ४॥
हिवे नव ही पदारथ ओलखायवा, जूआ जूआ कहूं छूं भेद।
पहिलां ओलखाऊं जीव ने, ते सुणजो आंण उमेद॥ ५॥

ढाल : १

[विना रा भाव सुण सुण गुंजे]

सासतो जीव द्रव्य सांख्यात, कदे घटे नहीं तिलमात ।
तिणरा असख्यात प्रदेस, घटे वधे नहीं लवलेस ॥ १ ॥
तिण सूं दरवे कह्यो जीव एक, भाव जीव रा भेद अनेक ।
तिणरो वहोत कह्यो विसतार, ते वुधवंत जाणे विचार ॥ २ ॥
भगोती वीसमां सतक मांय, वीजे उदेसे कह्यो जिणराय ।
जीवरा तेवीस[23] नांम, गुण निपन कह्या छैं तांम ॥ ३ ॥
जीवेतिवा[1] जीवरो नांम, आउखा ने बले जीवे ताम ।
ओतो भावे जीव ससारी, तिणने वुधवंत लीजो विचारी ॥ ४ ॥
जीवथिकाय[2] जीवरो नांम, देह धरे छै तेह भणी आंम ।
प्रदेसां रा समुह ते काय, पुदगल रा समूह मेले छै ताय ॥ ५ ॥
सास उसास लेवे छै तांम, तिण सू पाणेतिवा[3] जीव नांम ।
भूएतिवा[4] कह्यो इण न्याय, सदा छै तिहुं काल रे मांय ॥ ६ ॥
सतेतिवा[5] कह्यो इण न्याय, सुभासुभ पोते छै ताय ।
विनूतिवा[6] विषे रा जांण, सवदादिक लीया सर्व पिछांण ॥ ७ ॥
वेयातिवा[7] जीव री नांम, सुख दुख वेदे छै ठांम ठांम ।
ते तो चेतन सरूप छै जीव, पुदगल रो सवादी सदीव ॥ ८ ॥
चेयातिवा[8] जीवरो नांम, पुदगल नी रचणा करे तांम ।
विवध प्रकारे रचे रूप, ते तो भूंडा ने भला अनूप ॥ ९ ॥
जेयातिवा[9] नांम श्रीकार कर्म रिपू नों जीपणहार ।
तिणरो पराक्रम सकत अनंत, थोड़ा में करे करमां रो अन्त ॥ १० ॥
आयातिवा[10] नाम इण न्याय, सर्व लोक फरस्यो छै ताय ।
जन्म मरण कीया ठांम ठांम, कठे पाम्यो नही आरांम ॥ ११ ॥
रंगणेतिवा[11] नांम मदमातो, राग धेप रूप रंग रातो ।
तिण सूं रहे छै मोह मतवालो, आतमा नें लगावे कालो ॥ १२ ॥
हींडूतिवा[12] जीवरो नांम, चिहूं गति मांहें हींड्यो छै तांम ।
कर्म हिलोलें ठांम ठांम, कठे पाम्यो नहीं विसराम ॥ १३ ॥
पोगलेतिवा[13] जीवरो नांम, पुदगल ले ले मेल्या ठांम ठांम ।
पुदगल मांहें रच रह्यो जीव, तिण सूं लागी संसार री नीव ॥ १४ ॥

माणवेतिवा[14] जीव रो नांम, नवो नही सासतो छै ताम।
तिणरी परजा तो पलटे जाय, द्रव्य तो ज्यू रो ज्यू रहे ताय ॥ १५ ॥

कतातिवा[15] जीव रो नाम, करमां रो करता छै तांम।
तिण सू तिणने कह्यो छै आश्रव, तिण सू लागे छै पुद्गल दरब ॥ १६ ॥

विकतातिवा[16] नाम इण न्याय, कर्मा ने विधूणे छै ताय।
आ निरजरा री करणी अमांम, जीव उजलो जैं निरजरा ताम ॥ १७ ॥

जएतिवा[17] नाम तणो विचार, अति हि गमन तणो करणहार।
एक समे लोक अन्त लग जाय, एहवी सकत सभाविक पाय ॥ १८ ॥

जतूतिवा[18] जीव रो नांम, जन्म पाम्यो छे ठाम ठांम।
चोरासी लख जोनि रे मांहि, उपज्यो ने निसर गयो ताहि ॥ १९ ॥

जोणित्तिवा[19] जीव कहिवाय, पर नो उत्पादक इण न्याय।
घट पट आदि वस्त अनेक, उपजावे निज सुविवेक ॥ २० ॥

सयंभूतिवा[20] जीव रो नाम, किण हि निपजायो नही ताम।
ते तो छे द्रव्य जीव सभावे, ते तो कदे नही विललावे ॥ २१ ॥

सरीरेतिवा[21] नांम एह, सरीर रे अतर तेह।
सरीर पाछे नाम धरायो, कालो गोरादिक नांम कहायो ॥ २२ ॥

नायएतिवा[22] ते कर्मा रो नायक, निज सुख दुख छै दायक।
तथा न्याय तणो करणहार, ते तो बोले छै वचन विचार ॥ २३ ॥

अन्तरअपा[23] ते जीव रो नांम, सर्व सरीर व्यापे रह्यो तांम।
लेलीभूत छै पुदगल माहि, निज सरूप दबे रह्यो त्यांही ॥ २४ ॥

द्रव्य तो जीव सासतो एक, तिणरा भाव कह्या छै अनेक।
भाव ते लखण गुण परयाय, ते तो भावे जीव छै ताय ॥ २५ ॥

भाव तो पाच श्री जिण भाख्या, त्यारा सभाव जू जूआ दाख्या।
उदे उपसम ने खायक पिछाणो, खय उपसम परिणांमीक जाणो ॥ २६ ॥

उदे तो आठ कर्म अजीव, त्यांरा उदा सूँ नीपना जीव।
ते उदे भाव जीव छै ताम, त्यारा अनेक जूआ जूआ नांम ॥ २७ ॥

उपसम तो मोहणी कर्म एक, जब नीपजे गुण अनेक।
ते उपसम तो भाव जीव छै तांम, त्यांरा पिण छे जूआ जूआ नांम ॥ २८ ॥

खय तो हुवे आठ कर्म, जब खायक गुण नीपजे परम।
ते खायक गुण छै भाव जीव, ते उजला रहे सदा सदीव ॥ २९ ॥

बे आवरणी ने मोहणी अतराय, ए च्यारू कर्म खय उपसम थाय।
जब नीपजे खय उपसमभाव चोखो, ते पिण छै भाव जीव निरदोषो ॥ ३० ॥

जीव परिणमें जिण जिण भाव माहि ते सगला छै न्याया न्यारा ताहि ।
पिण परिणामिक सारा छे ताम, जेहव तेहवा परिणामिक नांम ॥ ३१ ॥
कर्म उदे सूं उदे भाव होय, ते तो भाव जीव छै सोय ।
कर्म उपसमीया उपसम भाव, (ते) उपसम भाव जीव इण न्याय ॥ ३२ ॥
कर्म खय सूं खायक भाव होय, ते पिण भाव जीव छै सोय ।
कर्मखेउपसम सूं खें उपसम भाव, ते पिण छै भाव जीव इण न्याव ॥ ३३ ॥
अे च्यारूं इ भाव छै परिणांमिक, अो पिण भाव जीव छै ठीक ।
और जीव अजीव अनेक, परिणामिक विना नही एक ॥ ३४ ॥
छे पांचूइ भाव नें भाव जीव जाणो, त्यांने रूडी रीत पीछांणो ।
उपजे नें विले हो जाय, ते भावे जीव तो छै इण न्याय ॥ ३५ ॥
कर्म संजोग विजोग सू तेह, भावे जीव नीपनो छै एह ।
च्यार भाव तो निश्चे फिर जाय, खायक भाव फिरे नही ताय ॥ ३६ ॥
द्रव्य तो सासतो छै ताहि, ते तो तीनूंइ काल रे माहि ।
ते तो विले कदे नहीं होय, द्रव्य तो ज्यूं रो ज्यूं रहसी सोय ॥ ३७ ॥
ते तो छेद्यो कदे न छेदावै, भेद्यो पिण कदे नही भेदावै ।
जाल्यो पिण जले नांही, बाल्यो पिण न बले अगन माहि ॥ ३८ ॥
काट्यो पिण कटे नही कांई, गाले तो पिण गले नांही ।
बाट्यो तो पिण नही बटाय, घसे तो पिण नही घसाय ॥ ३९ ॥
द्रव्य असख्यात प्रदेसी जीव, नित रो नित रहसी सदीव ।
ते मारयो पिण मरे नाही, वले घटे, बधे नही कांइ ॥ ४० ॥
द्रव्य तो असख्यात प्रदेसी, ते तो सदा ज्यूं रा ज्यूं रहसी ।
एक प्रदेस पिण घटे नांही, तीनूंइ काल रे माही ॥ ४१ ॥
खंडायो पिण न खडे लिगार, नित सदा रहे एक धार ।
एहवो छै द्रव्य जीव अखंड, अखी थको रहे इण मड ॥ ४२ ॥
द्रव्य रा भाव अनेक छै ताय, ते तो लखन गुण परजाय ।
भाव लखन गुण परजाय, ए च्यारू भाव जीव छै ताय ॥ ४३ ॥
ए च्यारु भला ने भूडा होय, एक धारा न रहे कोय ।
केइ खायक भाव रहसी एक धार, नीपना पछै न घटे लिगार ॥ ४४ ॥
दरवे जीव सासतो जांणो, तिणमे पिण सका मूल म आंणो ।
भगोती सातमा सतक रे माय, दूजे उदेसे कह्यो जिणराय ॥ ४५ ॥
भावे जीव असासतो जाणो, तिणमे पिण सका मूल म आणो ।
ए पिण सातमा सतक रे माय, दूजे उदेसे कह्यो जिणराय ॥ ४६ ॥

जेती जीव तणी परजाय, असासती कही जिणराय।
तिण ने निश्चे भावे जीव जांणो, तिणने रूड़ी रीत पिछाणो ॥ ४७ ॥
कर्मा रो करता जीव छै तायो, तिण सूं आश्रव नाम धरायो।
ते आश्रव छै भाव जीव, कर्म लागे ते पुदगल अजीव ॥ ४८ ॥
कर्म रोके छै जीव ताह्यो, तिण गुण सूं संवर कहायो।
सवर गुण छै भाव जीव, रूकीया छै कर्म पुदगल अजीव ॥ ४६ ॥
कर्म तूटा जीव उजल थाय, तिणने निरजरा कही जिणराय।
ते निरजरा छै भाव जीव, तूटे ते कर्म पुदगल अजीव ॥ ५० ॥
समस्त कर्मा सू जीव मूकायो, तिण सूं तो जीव मोख कहायो।
मोख ते पिण छै भाव जीव, मूंकी गया कर्म अजीव ॥ ५१ ॥
सबदादिक काम ने भोग, तेहनो करे संजोग।
ते तो आश्रव छै भाव जीव, तिण सूं लागे छै कर्म अजीव ॥ ५२ ॥
सबदादिक काम ने भोग, त्याने त्यागे ने पाडे विजोग।
ते तो संवर छै भाव जीव, तिण सू रूकीया छै कर्म अजीव ॥ ५३ ॥
निरजरा ने निरजरा री करणी, अे दोनूइ जीव नें आदरणी।
ए दोनू छै भाव जीव, तूटा ने तूटे कर्म अजीव ॥ ५४ ॥
काम भोग सू पामे आरामो, ते संसार थकी जीव स्हांमो।
ते तो आश्रव छै भाव जीव, तिण सूं लागे छै कर्म अजीव ॥ ५५ ॥
काम भोग थकी नेह तूटो, ते संसार थकी छै अपूठो।
ते सवर निरजरा भाव जीव, जब रूके तूटे कर्म अजीव ॥ ५६ ॥
सावद्य करणी सर्व अकार्य, अे तो सगला छै किरतब अनार्य।
ते सगलाइ छै भाव जीव, त्यासू लागे छै कर्म अजीव ॥ ५७ ॥
जिण आगन्या पाले छै रूडी रीत, ते पिण भाव जीव सुवनीत।
जिण आगन्या लोपे चाले कूरीत, ते तो छै भाव जीव अनीत ॥ ५८ ॥
सूर वीरा ससार रे माही, किणरा डराया डरे नाही।
ते पिण छै भाव जीव ससारी, ते तो हुवा अनती वारी ॥ ५६ ॥
साचा सूरवीर साख्यात, ते तो कर्म काटे दिन रात।
ते पिण छै भाव जीव चोखो, दिन दिन नेडी करे छै मोखो ॥ ६० ॥
कहि कहि नें कितोएक केहूं, द्रव्य ने भाव जीव छै बेहू।
त्यानें रूड़ी रीत पिछांणो, छै ज्यूं रा ज्यूं हीया माहे जाणो ॥ ६१ ॥
द्रव्य भाव ओलखावणी ताम, जोड़ कीधी श्री दुवारे सु ठाम।
समत अठारे पचावने वरस, चेत विद तिथ तेरस ॥ ६२ ॥

●

२ : अजीव पदारथ

दुहा

हिवे अजीव ने ओलखायवा, त्यांरा कहूं छू भाव भेद।
थोड़ा सा परगट करू, ते सुणजो आण उमेद ॥ १ ॥

ढाल : २

[मम करो काया माया कारमी]

धर्म अधर्म आकास छै, काल ने पुदगल जाण जी।
अे पाचूंइ द्रव्य अजीव छे, त्यारी बुद्धवत करो पिछांण जी।
ए अजीव पदारथ ओलखो* ॥ १ ॥

यामे च्यार दरब ने अरूपी कह्या, त्यामें वर्ण गंध रस फरस नाहि जी।
एक पुदगल द्रव्य रूपी कह्यो, वर्णादिक सर्व तिण माहि जी ॥ २ ॥

अे पाचूंइ द्रव्य भेला रहे, पिण भेल सभेल न होय जी।
आप आप तणो गुण ले रह्या, त्याने भेला कर सके नही कोय जी ॥ ३ ॥

धर्म द्रव्य धर्मास्तीकाय छै, आसती ते छती वसत ताय जी।
असख्यात प्रदेस छै तेहना, तिणने काय कही इण न्याय जी ॥ ४ ॥

अधर्म द्रव्य अधर्मास्तीकाय छै, आ पिण छती वसत ताय जी।
असख्यात प्रदेस छे तेहना, तिणने काय कही इण न्यायजी ॥ ५ ॥

आकास द्रव्य आकास्तीकाय छै, आ पिण छती वसत छै ताय जी।
अनत प्रदेस छे तेहना, तिण सू काय कही जिणराय जी ॥ ६ ॥

धर्मास्ती अधर्मास्तीकाय तो, पेहली छै लोक प्रमाण जी।
लोक अलोक प्रमाण आकास्ती, लाबी ने पेहली जाण जी ॥ ७ ॥

धर्मास्ती ने अधर्मास्ती, वले तीजी आकास्तीकाय जी।
अे तीनूं कही जिण सासती, तीनूंइ काल रे माय जी ॥ ८ ॥

अे तीनूंइ द्रव्य छै जू जूआ, जूआ जूआ गुण परजाय जी।
त्यारी गुण परजाय पलटे नही, सासता तीन काल रे माय जी ॥ ९ ॥

ए तीनूंइ द्रव्य फेली रह्या, ते तो हाले चाले नही ताय जी।
हाले चाले ते पुदगल जीव छे, ते फिरे छै लोक रे माय जी ॥ १० ॥

जीव ने पुदगल चाले तेहने, साज धर्मास्तीकाय जी।
अनंता चाले त्याने साज छे, तिण सू अनती कही परजाय जी ॥ ११ ॥

---

* यह आँकड़ी है। प्रत्येक गाथा के अन्त मे इसकी पुनरावृत्ति समझनी चाहिए।

जीव ने पुदगल थिर रहे, त्यानें साज अधर्मास्तीकाय जी।
अनता थिर रहे त्याने साझ छे, तिण सूं अनती कही परजाय जी ॥ १२ ॥
जीव अजीव सर्व द्रव्य नों, भाजन आकास्तीकाय जी।
अनता रो भाजन तेह सू, अनंती कही परजाय जी ॥ १३ ॥
चालवाने साज धर्मास्ती, थिर रहेवाने अधर्मास्तीकाय जी।
आकास विकास भाजन गुण, सर्व द्रव्य रहै तिण मांय जी ॥ १४ ॥
धर्मास्ती रा तीन भेद छे, खंध ने देस परदेस जी।
आखो धर्मास्ती खद छे, ते उंणी नही लवलेस जी ॥ १५ ॥
एक प्रदेस थी आदि दे, एक प्रदेस उणो खंध न होय जी।
त्यां लग देस प्रदेस छे, तिणने खध म जाणजो कोय जी ॥ १६ ॥
धर्मास्ती काय तो सेथाले पड़ी, तावडा छांही ज्यू एक धार जी।
तिणरे बेठो ने बीटो कोई नही, वले नही छेकी साध लिगार जी ॥ १७ ॥
पुदगलास्ती सूं प्रदेस न्यारो पड्यो, तिणने परमाणु कह्यो जिणराय जी।
तिण सूखम परमाणु थकी। तिण सू मापी छै धर्मास्तीकाय जी ॥ १८ ॥
एक परमाणूओ फरसे धर्मस्ती, तिणने प्रदेस कह्यो जिणराय जी।
इण मापा सू धर्मास्ती काय नां, असंख्याता प्रदेस हुवे ताय जी ॥ १९ ॥
तिण सूं असख्यात प्रदेसी धर्मास्ती, अधर्मास्ती पिण इमहीज जांण जी।
अनंता आकास्ती काय नां, प्रदेस इण रीत पिछांण जी। २० ॥
काल पदारथ तेहनां, द्रव्य कहया छै अनंत जी।
नीपना नीपजे नें नीपजसी वलि, तिणरो कदेय न आवसी अंत जी ॥ २१ ॥
गये काल अनता समां हूआ, वरतमान समो एक जांण जी।
आगमीये काले अनंता हुसी, ए काल द्रव्य पिछाण जी ॥ २२ ॥
काल द्रव्य नीपजवा आसरी, सासतो कह्यो जिणराय जी।
ऊपजे नें विणसे तिण आसरी, असासतो कह्यो इण न्याय जी ॥ २३ ॥
तिण सूं काल द्रव्य नही सासता, ए तो उपजे छै जेम प्रवाह जी।
जे उपजे ते समो विणसे सही, तिणरो कदेय न आवे छै थाह जी ॥ २४ ॥
सूरज ने चन्द्रमादिक नी चाल थी, समो नीपजे दगचाल जी।
नीपजवा लेखे तो काल सासतो, समयादिक सर्व अधा काल जी ॥ २५ ॥
एक समो नीपजे ने विणसे गयो, पछै बीजो समो हुवे ताय जी।
बीजो विणस्यो तीजो नीपजे, इन अणुक्रमे नीपजता जाय जी ॥ २६ ॥
काल वरेत छै अढाइ धीप में, अढी दीप बारे काल नांहि जी।
अढी धीप वारला जोतषी, एक ठाम रहे त्यांरा त्यांहि जी ॥ २७ ॥

पदगल रा द्रव्य अनंता कह्या, ते द्रव्य तो सासता जांण जी।
भावे तो पुदगल असासतो, तिणरी बुधवंत करजो पिछांण जी॥ ४४॥
पुदगल रा द्रव्य अनंता कह्या, ते घटे वधे नही एक जी।
घटे वधे ते भाव पुदगलु, तिणरा छै भेद अनेक जी॥ ४५॥
तिणरा च्यार भेद जिणवर कह्या, खंध नें देस प्रदेस जी।
चोथो भेद न्यारो परमांणुओ, तिणरो छै ओहीज विसेस जी॥ ४६॥
खंध रे लागो त्यां लग परदेस छै, ते छूटंने एकलो होय जी।
तिणनें कहीजे परमांणुओ, तिण मे फेर पड़्यो नही कोय जी॥ ४७॥
परमाणु ने प्रदेस तुल छै, तिणरी संका मूल म आंण जी।
आंगल रे असंख्यातमें भाग छै, तिणने ओलखो चतुर सुजांण जी॥ ४८॥
उतकष्टो खंध पुदगल तणो, जब सम्पूर्ण लोक प्रमांण जी।
आंगुल रे भाग असंख्यातमें, जगन खध एतलो जांण जी॥ ४६॥
अनत प्रदेसीयो खंध हुवे, एक प्रदेस खेत्र मे समाय जी।
ते पुदगल फेल मोटो खंध हुवे, ते सम्पूर्ण लोक रे मांय जी॥ ५०॥
समचे पुदगल तीन लोक में, खाली ठोर जायगां नही काय जी।
ते आमां स्हामां फिर रह्या लोक में, एक ठाम रहे नही ताय जी॥ ५१॥
थित च्यारूंई भेदां तणी, जगन तो एक समो छै तांम जी।
उतकष्टी असंख्याता काल नी, ए भावे पुदगल तणा परिणांम जी॥ ५२॥
पुदगल नो सभाव छै एहवो, अनंता गले ने मिल जाय जी।
तिण सूं पुदगल रा भाव री, अनंती कही परजाय जी॥ ५३॥
जे जे वस्तु नीपजे पुदगल तणी, ते ते सगली विललाय जी।
त्याने भावे पुदगल जिणवर कह्या, द्रव्य तो ज्यूं रा ज्यूं रहै ताय जी॥ ५४॥
आठ कर्म नें शरीर असासता, ए नीपना हूआ छै ताय जी।
तिण सूं भाव पुदगल कह्या तेह ने, द्रव्य तो नीपजायो नही जाय जी॥ ५५॥
छाया तावड़ो प्रभा कांति छै, ए सगला भाव पुदगल जांण जी।
वले अंधारो ने उद्योत छै, ए पुदगल भाव पिछांण जी॥ ५६॥
हलको भारी सुहालो खरदरो, गोल वटादिक पांच संठांण जी।
घड़ा पड़हा ने वस्त्रादिक, ए सगला भावे पुदगल जाण जी॥ ५७॥
घरत गुलादिक दसूं विगे, भोजनादि सर्व वखांण जी।
वले सस्त्र विवध प्रकार ना, ए सगला भावे पुदगल जांण जी॥ ५८॥
सइकडां मण पुदगल वल गया, पिण द्रव्ये तो वल्यो नही अंस मात जी।
ए भावे पुदगल उपनां हुंता, ते भावे पुदगल विणस जात जी॥ ५६॥

सइकडां मण - पुदगल उपनां, पिण द्रव्य तो नहीं उपनों लिगार जी।
उपनां तेहीज विणससी, पिण द्रव्य नो नहीं विगाड़ जी॥ ६० ॥
द्रव्य तो कदेइ विणसे नहीं, तीनोंइ काल रे मांय जी।
उपजे ने विणसे ते भाव छै, ते पुदगल री परजाय जी॥ ६१ ॥
पुदगल नें कह्यो सासतो असासतो, द्रव ने भाव रे न्याय जी।
कह्यो छै उत्तराधेन छतीस में, तिण में संका म आंणजो कांय जी॥ ६२ ॥
अजीव द्रव्य ओलखायवा, जोड़ कीधी श्री दुवारा मजार जी।
संवत अठारे पचावनें, वैसाख विद पांचम बुधवार जी॥ ६३ ॥

३: पुन पदारथ

ढाल : ३

दुहा

पुन पदार्थ छै तीसरो, तिणसूं सुख मानें संसार।
काम भोग शबदादिक पामें तिण थकी, तिणने लोक जांणे श्रीकार ॥ १ ॥
पुन रा सुख छै पुदगल तणा, काम भोग शबदादिक जांण।
ते मीठा लागे छै कर्म तणे वसे, ग्यांनी तो जाणे जेहर समांन ॥ २ ॥
जेंहर सरीर में त्यां लगे, मीठा लागे नीब पान।
ज्यूं कर्म उदय हुवे जीव रे जब, लागे भोग इमरत समान ॥ ३ ॥
पुन तणा सुख कारमा, तिण में कला म जांणो काय।
मोह कर्म वस जीवड़ा, तिण सुख में रह्या लपटाय ॥ ४ ॥
पुन पदार्थ तो सुभ कर्म छै, तिणरी मूल न करणी चाय।
तिण नें जथातथ परगट करूं, ते सुणज्यो चित्त लाय ॥ ५ ॥

ढाल

[रे जीव मोह अनुकम्पा न आणीये]

पुन तो पुदगल री परजाय छै, जीव रे आय लागे ताम रे लाल।
ते जीव रे उदय आवे सुभ पणे, तिण सूं पुदगल रो पुन छै नांम रे लाल ॥
पुन पदारथ ओलखो ॥ १ ॥
च्यार कर्म ते एकंत पाप छै, च्यार कर्म छै पुन नें पाप हो लाल।
पुन कर्म थी जीव ने, साता हुवे पिण न हुवे संताप हो लाल ॥ २ ॥
अनंता प्रदेस छे पुन तणा, ते जीव रे उदय हुवे आय हो लाल।
अनंतो सुख करे जीव रे, तिणसुं पुन री अनती परजाय हो लाल ॥ ३ ॥
निरवद जोग वरते जब जीव रे, सुभ पणे लागे पुदगल ताम हो लाल।
त्यां पुदगल तणा छै जू जूआ, गुण परिणामे त्यांरा नांम हो लाल ॥ ४ ॥

साता वेदनीय पणे परणम्यां, साता पणे उदय आवे ताम हो लाल।
ते सुखसाता करे जीव ने, तिण सूं साता वेदनी दीयो नांम हो लाल॥ ५॥
पुदगल परणम्यां सुभ आउखा पणे, घणो रहणो वाछै तिण ठांम हो लाल।
जाणे जीवियै पिण न मरजीये, सुभ आउखो तिण रो नाम हो लाल॥ ६॥
केइ देवता नें केइ मिनख रो, सुभ आउखो पुन ताय हो लाल।
जुगलीया तिर्यंच रो आउखो, दीसे छै पुन रे मांय हो लाल॥ ७॥
सुभ नाम पणे आए परणम्या, ते उदय आवे जीव रे ताय हो लाल।
अनेक वाना सुध हुवे तेह सू, नाम कर्म कह्यो जिणराय हो लाल॥ ८॥
सुभ आउखा रा मिनख नें देवता, त्यारी गति ने आणपूर्वी सुध हो लाल।
केइ जीव पचेन्द्रीय विसुध छै, त्यारी जात पिण पुन विसुध हो लाल॥ ९॥
पांच वरीर छै सुध निरमला, त्यारा निरमला तीन उपंग हो लाल।
ते पामे शुभ नाम उदय हूआ, सरीर ने उपंग सुचंग हो लाल॥ १०॥
पेला संघयण ना रूड़ा हाड छै, पहलो संठाण रूडे आकार हो लाल।
ते पामें सुभ नाम उदे थकी, हाड ने आकार श्रीकार हो लाल॥ ११॥
भला भला वर्ण मिले जीव ने, गमता गमता घणा श्रीकार हो लाल।
ते पामे सुभ नाम उदे हूआ, जीव भोगवे विविध प्रकार हो लाल॥ १२॥
भला भला मिले गंध जीव ने, गमता गमता घणा श्रीकार हो लाल।
ते पामें सुभ नाम उदे थकी, जीव भोगवे विविध प्रकार हो लाल॥ १३॥
भला भला मिले रस जीव ने, गमता गमता घणा श्रीकार हो लाल।
ते पामे सुभ नाम उदे थकी, जीव भोगवे विविध प्रकार हो लाल॥ १४॥
भला भला मिले फरस जीव ने, गमता गमता घणा श्रीकार हो लाल।
ते पामें सुभ नाम उदय थकी, जीव भोगवे विविध प्रकार हो लाल॥ १५॥
तस रो दश को छै पुन उदे, सुभ नाम उदय सू जांण हो लाल।
त्याने जूआ जूआ कर वरणवू, निरणो कीजो चतुर सुजाण हो लाल॥ १६॥
[1]तस नाम शुभ कर्म उदय थकी, तसपणो पामें जीव सोय हो लाल।
[2]बादर सुभ नाम कर्म उदय हूआं, जीव चेतन बादर होय हो लाल॥ १७॥
[3]प्रतेक सुभ नाम उदें हूआ, प्रतेक सरीरी जीव थाय हो लाल।
[4]प्रज्यापता सुभ नाम थी, प्रज्यापतो होय जाय हो लाल॥ १८॥
[5]सुभ थिर नाम कर्म उदे थकी, सरीर ना अवयव दिढ थाय हो लाल।
[6]सुभ नाम थी नाभमस्तक लगे, अवयव रूड़ा हूवै ताय हो लाल॥ १९॥
[7]सोभाग नाम सुभ कर्म थी, सर्व लोक नें वलभ होय हो लाल।
[8]सुस्वर सुभ नाम कर्म सूं, सुस्वर कंठ मीठो हुवे सोय हो लाल॥ २०॥

[9]आदेज वचन सुभ करम थी, तिणरो वचन मानें सहु कोय हो लाल।
[10]जस किती सुभ नाम उदे हूआं, जश कीरत जग में होय हो लाल ॥ २१ ॥
अगुरलघू नाम कर्म सू, सरीर हलको भारी नही लगात हो लाल।
परघात सुभ नाम उदे थकी, आप जीते पेलो पामें घात हो लाल ॥ २२ ॥
उसास सुभ नाम उदे थकी, सास उसास सुखे लेवंत हो लाल।
आताप सुभ नाम उदे थकी, आप सीतल पेलो तपंत हो लाल ॥ २३ ॥
उद्योत सुभ नाम उदे थकी, सरीर नो उजवालो जांण हो लाल।
सुभ गइ सुभ नाम कर्म सूं, हंस ज्यूं चोखी चाल वखांण हो लाल ॥ २४ ॥
निरमाण सुभ नाम कर्म सूं, सरीर फोड़ा फूलंगणा रहीत हो लाल।
तीर्थंकर नाम कर्म उदे हूआं, तीर्थंकर हुवे तीन लोक वदीत हो लाल ॥ २५ ॥
केइ जगलीयादिक तिरयंच नी, गति नें आंणपूर्वी जांण हो लाल।
ते तो प्रतक दीसे पुन तणी, ग्यानी वदे ते परमांण हो लाल ॥ २६ ॥
पेहलो सघेण संठाण वरज ने, च्यार सघेण संठाण हो लाल।
त्यामें तो भेल दीसे छै पुन तणो, ग्यांनी वदे तो परमांण हो लाल ॥ २७ ॥
जे जे हाड छै पहिला सघेण में, तिण माहिला च्यारां माय हो लाल।
त्यांने जाबक पाप में घालीया, मिलतो न दीसे न्याय हो लाल ॥ २८ ॥
जे जे आकार पहिला संठाण में, तिण मांहिला च्यारां मांय हो लाल।
त्यांने जाबक पाप में घालीया, ओ पिण मिलतो न दीसे न्याय हो लाल ॥ २९ ॥
उच गोत पणे आय परणम्या, ते उदे आवे जीव रे तांम हो लाल।
उंच पदवी पामें तिण थकी, उंच गोत छै तिण रो नांम हो लाल ॥ ३० ॥
सगली न्यात थकी उंची न्यात छै, तिणमें कठे न लागे छोत हो लाल।
एहवा छै मिनष ने देवता, त्यांरो कर्म छै उंच गोत हो लाल ॥ ३१ ॥
जे जे गुण आवे जीव रे सुभ पणे, जेहवा छै जीव रा नाम हो लाल।
तेहवाइज नाम पुदगल तणा, जीव तणे संयोगे तांम हो लाल ॥ ३२ ॥
जीव सुध हूओ पुदगल थकी, तिण सूं रूड़ा रूड़ा पाया नांम हो लाल।
जीव नें सुध कीधो पुदगला, त्यांरा पिण सुध छै नाम तांम हो लाल ॥ ३३ ॥
ज्यां पुदगल रां प्रसंग थी, जीव वाज्यो संसार में उंच हो लाल।
ते पुदगल पिण उच वाजीया, त्यांरो न्याय न जांणे भूंच हो लाल ॥ ३४ ॥
पदवी तियंकर ने चक्रवत तणी, वासुदेव बलदेव महंत रे लाल।
वले पदवी मडलीक राजा तणी, सारी पुन थकी लहत रे लाल ॥ ३५ ॥
पदवी देविंद्रो ने नरिंद्र नी, वले पदवी अहमिंद्र वखांण हो लाल।
इत्यादिक मोटी मोटी पदवीयां, सहु पुन तणे परमांण हो लाल ॥ ३६ ॥

जे जे पुद्गल परणम्यां सुभ पणे, ते तो पुन उदा सूं जांण हो लाल।
त्यां सूं सुख उपजे संसार में, पुन रा फल एह पिछांण हो लाल॥ ३७॥
बाला विछड़ीया आए मिले, सेंणा तणो मिले संजोग हो लाल।
ते पिण पुन तणा परताप थी, सरीर में न व्यापे रोग हो लाल॥ ३८॥
हाथी घोड़ा रथ पायक तणी, चोरंगणी सेन्या मिले आंण हो लाल।
रिध विरध ने सुख संपत मिलै, ते पुन तणे परिमांण हो लाल॥ ३९॥
खेतू[१] वत्थू[२] हिरण[३] सोवनादिक[४], धन[५] धान[६] ने कुवीं धात[७] हो लाल।
दोपद[८] चोपदादिक आए मिलै, ते तो पुन तणो परताप हो लाल॥ ४०॥
हीरा मांणक मोती मूगीया, वले रत्नां री जात अनेक हो लाल।
ते सारा मिलै छै पुन थकी, पुन विना मिले नहीं एक हो लाल॥ ४१॥
गमती गमती विनेवंत अस्त्री, ते अपछर रे उणीयार हो लाल।
ते पुन थकी आए मिले, वले पुत्र घणा श्रीकार हो लाल॥ ४२॥
ते सुख पामें देवता तणा, ते तो पूरा कह्या न जाय हो लाल।
पल सागरां लग सुख भोगवे, ते तो पुन तणे पसाय हो लाल॥ ४३॥
रूप सरीर नों सून्दरपणो, तिण रो वर्णादिक श्रीकार हो लाल।
ते गमतो लागे सर्व लोग ने, तिणरो बोल्यो गमे वारंवार हो लाल॥ ४४॥
जे जे सुख सगला संसार नां, ते तो पुन तणा फल जांण हो लाल।
ते कहि कहि नें कितरो कहूं, बुधवंत लीज्यो पिछांण हो लाल॥ ४५॥
ए तो पुन तणा सुख वरणव्या, संसार लेखे श्रीकार हो लाल।
त्यांनें मोख सुखां सू मीढीये, तो ए सुख नही मूल लिगार हो लाल॥ ४६॥
पुदगलीक सुख छै पुन तणा, ते तो रोगीला सुख ताय हो लाल।
आतमीक सुख छै मुगत नां, त्यांने तो ओपमा नहीं काय हो लाल॥ ४७॥
पांव रोगी हुवे तेहनें, खाज मीठी लागे अतंत हो लाल।
ज्यूं पुन उदे हूआं जीव नें, सबदादिक सर्व गमता लागंत हो लाल॥ ४८॥
सर्प डंक लागा जहर परगम्यां, मीठा लागे नींब पान हो लाल।
ज्यूं पुन उदय हूआं जीव ने, मीठा लागे भोग परधांन हो लाल॥ ४९॥
रोगीला सुख छे पुदगल तणा, तिणमें कला म जांणो लिगार हो लाल।
ते पिण काचा सुख असासता, विणसतां नही लागे वार हो लाल॥ ५०॥
आतमीक सुख छै सासता, त्यां सुखां रो नही कोइ पार हो लाल।
ते सुख सदा काल सासता, ते सुख रहे एक धार हो लाल॥ ५१॥
पुन तणी वछा कीयां, लागे छै एकंत पाप हो लाल।
तिण सूं दुःख पामें संसार में, वधतो जाये सोग संताप हो लाल॥ ५२॥

जिणसूं पुन तणी वंछा करी, तिण वांछिया कांम नें भोग हो लाल।
त्यांनें दुःख होसी नरक निगोद नां, वले वाला रा पड़सी विजोग हो लाल ॥ ५३ ॥
पुन तणा सुख असासता, ते पिण करणी विण नहीं थाय हो लाल।
निरवद करणी करे तेहने, पुन तो सेहजां लागे छै आय हो लाल ॥ ५४ ॥
पुन री वंछा सूं पुन न नीपजे, पुन तो सेहजां लागे छै आय हो लाल।
तें तो लागे छै निरवद जोग सूं, निरजरा री करणी सूं ताय हो लाल ॥ ५५ ॥
भली लेश्या ने भला परिणांम थी, निश्चेइ निरजरा थाय हो लाल।
जब पुन लागे छैं जीव रें, सहजे सभावे ताय हो लाल ॥ ५६ ॥
जे करणी करे निरजरा तणी, पुन तणी मन में धार हो लाल।
ते तो करणी खोएनें बापडा, गया जमारो हार हो लाल ॥ ५७ ॥
पुन तो चोफरसी कर्म छै, तिणरी वंछा करे ते मूढ हो लाल।
त्यां कर्म ने धर्म न ओलख्यो, करे करे मिथ्यात नी रूढ हो लाल ॥ ५८ ॥
जे जे पुन थी वस्त मिले तके, त्यांने त्याग्यां निरजरा थाय हो लाल।
जो पुन भोगवे ग्रिधी थको, तो चीकणा कर्म बंधाय हो लाल ॥ ५९ ॥
जोड कीधी पुन ओलखायवा, श्रीजी दुवारा सहर मझार हो लाल।
संवत अठारे पचावने, जेठ विद नवमी सोमवार हो लाल ॥ ६० ॥

ढाल : ४

दुहा

नव प्रकारे पुन नीपजे, ते करणी निरवद जांण।
बयांलीस प्रकारे भोगवे, तिणरी बुधवंत करजो पिछांण ॥ १ ॥
पुन नीपजे तिण करणी मझे, तिहां निरजरा निश्चे जांण।
तिण करणी री छै जिण आगना, तिण मांहे संक म आंण ॥ २ ॥
केई साध बाजे जैन रा, त्यां दीधी जिण मारग नें पूठ।
पुन कहे कुपातर ने दीयां, त्यांरी गई अभितर फूट ॥ ३ ॥
काचो पाणी अणगल पावे तेहनें, कहै छैं पुन नें धर्म।
ते जिण मारग सू वेगला, भूला अग्यांनी भर्म ॥ ४ ॥
साध विना अनेरा सर्व ने, सचित अचित दीयां कहे पुन।
वले नांव लेवे ठाणा अंग रो, ते तो पाठ विना छै अर्थ सुन ॥ ५ ॥
किणहीएक ठांणा अंग मझे, घाल्यो छै अर्थ विपरीत।
ते पिण सगला ठांणा अग में नहीं, जोय करो तहतीक ॥ ६ ॥
पुन नीपजे छै किण विधे, जोवो सूतर मांय।
श्री वीर जिणेसर भाषीयो, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[राजा रामजी हो रैख छमासी...]

पुन नीपजे सुभ जोग सूं रे लाल, सुभ जोग जिण आगना मांय हो। भविकजण*
ते करणी छै निरजरा तणी रे लाल, पुन सहिजां लागे छै आय हो॥ भविकजण।*
पुन नीपजे सुभ जोग सं रे लाल॥ १* ॥

जे करणी करे निरजरा तणी रे लाल, तिणरी आगना देवे जगनाथ हो।
तिण करणी करतां पुन नीपजे रे लाल, ज्यूं खाखलो गोहां हुवे साथ हो॥ २ ॥
पुन नीपजे तिहां निरजरा हुवे रे लाल, ते करणी निरवद जांण हो।
सावद्य करणी में पुन नहीं नीपजे रे लाल, ते सुणज्यो चतुर सुजांण हो॥ ३ ॥
हिंसा कीयां झूठ बोलीयां रे लाल, साधु नें देवे असुध आहार हो।
तिण सूं अल्प आउखो बंधे तेहनें रे लाल, ते आउखो पाप मझार हो॥ ४ ॥
लांबो आउषो बंधे तीन बोल सूं रे लाल, लांबो आउषो छै पुन मांय हो।
ते हिंसा न करे प्राणी जीवरी रे लाल, वले बोले नही मूसावाय हो॥ ५ ॥
तथारूप श्रमण निग्रंथ नें रे लाल, देवे फासू निरदोष च्यारूं आहार हो।
यां तीनां बोलां पुन नीपजे रे लाल, ठांणा अंग तीजा ठांणा मझार हो॥ ६ ॥
हिंसा कीयां झूठ बोलीयां रे लाल, साधू नें हेले निंदे ताय हो।
आहार अमनोग नें अपीयकारी दीये रे लाल, तो असभ लांबो आउखो बंधाय हो॥ ७ ॥
सुभ लांबो आउषो बंधे इण विधे रे लाल, ते पिण आउषो पुन मांय हो।
ते हिंसा न करे प्राणी जीव री रे लाल, वले बोले नहीं मूसावाय हो॥ ८ ॥
तथारूप समण निग्रंथ ने रे लाल, करे वंदणा ने नमसकार हो।
पीतकारी वेहरावे च्यारूं आहार नें रे लाल, ठांणा अंग तीजा ठांणा मझार हो॥ ९ ॥
एहीज पाठ भगोती सूतर मझे रे लाल, पांचमें सतक षष्ठम उदेश हो।
संका हुवे तो निरणे करो रे लाल, तिणमें कूड़ नहीं लवलेश हो॥ १० ॥
वंदणा करतां खपावे नीच गोत नें रे लाल, उंच गोत बंधे वले ताय हो।
ते वंदणा करण री जिण आगना रे लाल, उतरावेन गुणतीसमां मांय हो॥ ११ ॥
धर्म कथा कहै तेहनें रे लाल, बंधे किल्याणकारी कर्म हो।
उतरावेन गुणतीगमां अधेनमें रे लाल, तिहां पिण निरजरा धर्म हो॥ १२ ॥
करें वीयावच तेहनें रे लाल, बंधे तीर्थंकर नाम कर्म हो।
उतरावेन गुणतीसमां अधेन में रे लाल, तिहां पिण निरजरा धर्म हो॥ १३ ॥
वीसां बोलां करेनें जीवड़ो रे लाल, करमां री कोड़ खपाय हो।
जब बांधे तीर्थंकर नाम कर्म नें रे लाल, गिनाता आठमा अधेन मांय हो॥ १४ ॥

*यह आँकड़ी है। प्रत्येक गाथा के अन्त में इसकी पुनरावृत्ति समझनी चाहिए।

सुबाहु कुमर आदि दस जणा रे लाल, त्यां साधां नें असणादिक वेंहराय हो।
त्यां बांध्यो आउखो मिनख रो रे लाल, कह्यो विपाक सुतर रे मांय हो ॥ १५ ॥
प्राण भूत जीव सत्व ने रे लाल, दुःख न दे उपजावे सोग नांय हो।
अभूरणया नें अतीप्पणया रे लाल, अपिट्टणया परिताप नहीं दे ताय हो ॥ १६ ॥
ए छ प्रकारे बंधे साता वेदनी रे लाल, उलटा कीधां असाता थाय हो।
भगोती सतषंध सातमें रे लाल, छठा उदेसा मांय हो ॥ १७ ॥
करकस वेदनी बंधे जीवरे रे लाल, अठारे पाप सेव्यां वंधाय हो।
नहीं सेव्यां बंधे अकरकस वेदनी रे लाल, भगोती सातमां सतक छठा मांय हो ॥ १८ ॥
कालोदाई पूछयो भगवांन नें रे लाल, सुतर भगोती मांहि ए रेस हो।
किल्याणकारी कर्म किण विध बंधे रे लाल, सातमें सतक दसमें उदेस हो ॥ १९ ॥
अठारे पाप थांनक नहीं सेवीयां रे लाल, किल्यांण कारी कर्म बंधाय हो।
अठारे पाप थांनक सेवे तेह सूं रे लाल, बंधे अकिल्यांणकारी कर्म आय हो ॥ २० ॥
प्राण भूत जीव सत्व ने रे लाल, बहु सबदे च्यारूंइ मांहि हो।
त्यांरी करे अणुकम्पा दया आणने रे लाल, दुःख सोग उपजावे नाहि हो ॥ २१ ॥
अभूरणया ने अतीप्पणया रे लाल, अपिट्टणया नें अपरिताप हो।
या चवदे सूं बधे साता वेदनी रे लाल यां उलटा सूं बधे असाता पाप हो ॥ २२ ॥
माहा आरंभी ने माहा परिग्रही रे लाल, करे पंचिंद्री नी घात हो।
मद मांस तणो भखण करे रे लाल, तिण पाप सूं नरक में जात हो ॥ २३ ॥
माया कपट ने गूढ़ माया करे रे लाल, वले बोलै मूसावाय हो।
कूडा तोला ने कूड़ा मापा करे रे लाल, तिण पाप सूं तिरजंच थाय हो ॥ २४ ॥
प्रकत रो भद्रीक[1] नें वनीत[2] छै रे लाल, दया[3] नें अमछरभाव[4] जांण हो।
तिण सूं बंधे आउखो मिनख रो रे लाल, ते करणी निरवद पिछांण हो ॥ २५ ॥
[1]पाले सराग पणे साधूपणो रे लाल, वले [2]श्रावक रा वरत वार हो।
बाल तपसा[3] ने अकामनिरजरा[4] रे लाल, यां सूं पामें सुर अवतार हो ॥ २६ ॥
काया सरल[1] भाव सरल[2] सूं रे लाल, वले भाषा सरल[3] पिछांण हो।
जेहवो करे तेहवो मुख सूं कहे[4] रे लाल, यां सूं वंधे सुभ नाम कर्म जांण हो ॥ २७ ॥
ए च्यारूं बोल वांका वरतीयां रे लाल, बंधे उसभ नाम कर्म हो।
ते सावद्य करणी छै पापरी रे लाल, तिण में नहीं निरजरा धर्म हो ॥ २८ ॥
जात[1] कुल[2] बल[3] रूप[4] नो रे लाल, तप[5] लाभ[6] सुतर[7] ठाकुराय[8] हो।
ए आठोई मद करे नहीं रे लाल, तिण सूं उंच गोत वंधाय हो ॥ २९ ॥
ए आठोई मद करे तेहने रे लाल, बंधे नीच गोत कर्म हो।
ते सावद्य करणी पाप री रे लाल, तिण मे नहीं पुन धर्म हो ॥ ३० ॥

ग्यांनावर्णी नें दरसणावर्णी रे लाल, वले मोहणी नें अंतराय हो।
ये च्यारूंइ एकंत पाप कर्म छै रे लाल, त्यांरी करणी नहीं आग्या मांय हो॥ ३१॥
वेदनी आउखो नांम गोत छै रे लाल, ए च्यारूंई कर्म पुन पाप हो।
तिणमें पुन री करणी निरवद कही रे लाल, तिणरी आग्या दे जिन आप हो॥ ३२॥
ए भगवती शतक आठ में रे लाल, नवमां उदेसा मांय हो।
पुन पाप तणी करणी तणो रे लाल, ते जाणे समदिष्टी न्याय हो॥ ३३॥
[1]करणी करे नीहांणो नहीं करे रे लाल, [2]चोखा परिणामां समकतवंत हो।
[3]समाध जोग वरते तेहनो रे लाल, खिमा करी परीसह खमंत हो॥ ३४॥
[5]पांचूं इंद्री ने वश कीयां रे लाल, [6]वले माया कपट रहीत हो।
[7]अपासत्थपणो ग्यांनादिक तणो रे लाल, [8]समणपणे छै सहीत हो॥ ३५॥
[9]हितकारी प्रवचन आठां तणो रे लाल, [10]धर्मकथा कहें विसतार हो।
यां दसां बोलां बंधे जीवरे रे लाल, किल्याणकारी कर्म श्रीकार हो॥ ३६॥
ते किल्याणकारी कर्म पुन छै रे लाल, त्यांरी करणी पिण निरवद जांण हो।
ते ठाणा अंग दसमें ठाणे कह्यो रे लाल, तिहां जोय करो पिछांण हो॥ ३७॥
अन पुने पांण पुने कह्यो रे लाल, लेण सेण वस्त्र पुन जांण हो।
मन पुने वचन काया पुने रे लाल, नमसकार पुने नवमों पिछांण हो॥ ३८॥
पुन्य बंधे नव प्रकार सूं रे लाल, ते नवोई निरवद जांण हो।
ते नवोंई बोलां में जिण आगना रे लाल, तिणरी करज्यो पिछाण हो॥ ३९॥
कोई कहै नवोई बोल समचे कह्या रे लाल, सावद्य निरवद न कह्या तांम हो।
सचित्त अचित्त पिण नही कह्या रे लाल, पातर कुपातर रो पिण नहीं नांम हो॥ ४०॥
तिण सूं सचित अचित दोनूं कह्या रे लाल, पातर कुपातर ने दीयां तांम हो।
पुन नीपजे दीधां सकल नें रे लाल, ते भूठ बोले सुतर रो ले ले नांम हो॥ ४१॥
साध श्रावक पातर ने दीयां रे लाल, तीर्थंकर नामादिक पुन थाय हो।
अनेरां ने दान दीधां थकां रे लाल, अनेरी पुन प्रकत बंधाय हो॥ ४२॥
इम कहै नांम लेई ठाणा अंग नों रे लाल, नवमा ठाणा में अर्थ दिखाय हो।
ते अर्थ अणहूंतो घालीयो रे लाल, ते भोलां ने खबर न काय हो॥ ४३॥
जो अनेरा ने दीयां पुन नीपजे रे लाल, जब टलीयो नहीं जीव एक हो।
कुपातर ने दीयां पुन किहां थकी रे लाल, समभो आंण विवेक हो॥ ४४॥
पुन रा नव बोल तो समचे कह्या रे लाल, उण ठामें तो नहीं छै नीकाल हो।
ज्यूं वंदणा वीयावच पिण समचे कही रे लाल, ते गुणवंत सूं लेजो संभाल हो॥ ४५॥
वंदणा कीधां खपावे नीच गोत ने रे लाल, उंच गोत कर्म बंधाय हो।
तीर्थंकर गोत बंधे वीयावच कीयांरे लाल, ते पिण समचे कह्या छै ताय हो॥ ४६॥

तीथंकर गोत बधे वीस बोल सूं रे लाल, त्यामे पिण समचे बोल अनेक हो।
समचे बोल घणा छै सिधंत में रे लाल, त्यामें कुण समझे विगर ववेक हो ॥ ४७ ॥
जो अन पुने समचे दीधां सकल ने रे लाल, ते नवोई समचे जांण हो।
हुवे निरणो कहूं छूं नवां ही तणों रे लाल, ते सुणज्यो चतुर सुजांण हो ॥ ४८ ॥
अन सचित अचित दीधां सकलने रे लाल, जो पुन नीपजे छै तांम हो।
तो इमहीज पुन पांणी दीयां रे लाल, लेण सेण वसतर पुन आंम हो ॥ ४६ ॥
इमहीज मन पुने समचे हुवे रे लाल, तो मन भूडोई वरत्यां पुन थाय हो।
वले वचन पुने पिण समचे हुवे रे लाल, भूडो बोल्यांई पुन बंधाय हो ॥ ५० ॥
काय पुने विण समचे हुवे रे लाल, तो काया सूं हिसा कीयां पुन होय हो।
नमसकार पुने पिण समचे हुवे रे लाल, तो सकल ने नम्यां पुन जोय हो ॥ ५१ ॥
मन वचय काया माठा वरतीयां रे लाल, जो लागे छै एकंत पाप हो।
तो नवोई बोल इम जांणजो रे लाल, उथप गई समचे री थाप हो ॥ ५२ ॥
मन वचन काया सूं पुन नीपजे रे लाल, ते निरवद वरत्यां होय हो।
तो नवोई बोल इम जाण जो रे लाल, सावद्य मे पुन न कोय हो ॥ ५३ ॥
नमसकार अनेरा ने कीयां थका रे लाल, जो लागे छै एकत पाप हो।
तो अनादिक सचित दीयां थकां रे लाल, कुण करसी पुन री थाप हो ॥ ५४ ॥
निरवद करणी में पुन नीपजे रे लाल, सावद्य करणी सूं लागे पाप हो।
ते सावद्य निरवद किम जांणीये रे लाल, निरवद में आग्या दे जिण आप हो ॥ ५५ ॥
अन पांणी पातर ने वेंहरावीयां रे लाल, लेण सयण वस्त्र वेहराय हो।
त्यारी श्री जिण देवे आगना रे लाल, तिण ठामें पुन बंधाय हो ॥ ५६ ॥
अन पाणी अनेरा नें दीयां रे लाल, लेण सेण वसतर देवे ताय हो।
त्यारी देवे नही जिण आगन्या रे लाल, तिणरे पुन किहां थी बधाय हो ॥ ५७ ॥
सुपातर नें दीया पुन नीपजे रे लाल, ते करणी जिण आगना माय हो।
जो अनेरा नें दीयाई पुन नीपजे रे लाल, तिणरी जिण आगना नही काय हो ॥ ५८ ॥
ठाम २ सुतर मे देखलो रे लाल, निरजरा ने पुन री करणी एक हो।
पुन हुवे तिहां निरजरा रे लाल, तिहां जिण आगना छै शेष हो ॥ ५६ ॥
नव प्रकारे पुन नीपजे रे लाल, ते भोगवे बयालीस प्रकार हो।
ते पुन उदे हुवे जीवरे रे लाल, सुख साता पामें संसार हो ॥ ६० ॥
ए पुन तणा सुख कारिमा रे लाल, ते विणसंतां नहीं वार हो।
तिणरी वछा नही कीजीये रे लाल, ज्यूं पामे भव पार हो ॥ ६१ ॥
जिण पुन तणी वछा करी रे लाल, तिण वंछीया काम नें भोग हो।
संसार वधे काम भोग सूं रे लाल, तिहां पामें जन्म मरण सोग हो ॥ ६२ ॥

वंछा कीजे एक मुगत री रे लाल, और वंछा न कीजे लिगार हो।
जे पुन तणी वंछा करें रे लाल, ते गया जमारो हार हो ॥ ६३ ॥
संवत अठारे तयांले समे रे लाल, काती सुद चोथ विसपतवार हो।
पुन नीपजे ते ओलखायवा रे लाल, जोड़ कीधी कोठारया मझार हो ॥ ६४ ॥

४ : पाप पदारथ

ढाल : ५

दुहा

पाप पदारथ पाडूओ, ते जीव ने घणो भयंकार।
ते घोर रूद्र छै बीहांमणो, जीव ने दुःख नो दातार ॥ १ ॥
पाप तो पुदगल द्रव्य छै, त्यांने जीव लगाया ताम।
तिण सूं दुःख उपजे छै जीव रे, त्यारो पाप कर्म छै नाम ॥ २ ॥
जीव खोटा २ किरतब करै, जब पुदगल लागे ताम।
ते उदय आया दुख उपजे, ते आप कमाया काम ॥ ३ ॥
ते पाप उदय दुख उपजे, जब कोई म करजो रोस।
आप कीधां जिसा फल भोगवे, कोई पुदगल रो नही देस ॥ ४ ॥
पाप कर्म ने करणी पाप री, दोनूं जूआ जूआ छै ताम।
त्यांने जथातथ परगट करूं, ते सुणजो राख चित्त ठांम ॥ ५ ॥

ढाल

[मेघ कुमर हाथी रा भव मे]

घणघातीया च्यार कर्म जिण भाष्या, ते आभपडल वादल ज्यूं जाणो।
त्यां जीव तणा निज गुण ने विगरया, चंद वादल ज्यूं जीव कर्म ढकाणो ॥
पाप कर्म अन्तकरण ओलखीजे* ॥ १ ॥
ग्यांनावर्णी ने दर्शणावर्णीय, मोहणी अन्तराय छै ताम।
जीवरा जेहवा २ गुण विगाड्या, तेहवा २ कर्मा रा नांम ॥ २ ॥
ग्यांनावर्णी कर्म ग्यान आवा न दे, दर्शणावर्णी दर्शण आवे दे नाही।
मोहकर्म जीव ने करे मतवालो, अंतराय आछी वस्तु आडी छै माही ॥ ३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

ए कर्म तो पुद्गल रूपी चोफरसी, त्यांनें खोटी करणी करे जीव लगाया।
त्यांरा उदा सूं खोटा २ जीवरा नाम, तेहवा इज खोटा नाम कर्म रा कहाया ॥ ४ ॥
यां आठूं कर्मां री जुदी २ प्रकृत, जूआ २ छै त्यांरा नाम।
त्यां सूं जूआ २ जीव रा गुण अटक्या. त्यांरो थोड़ो सो विस्तार कहूं छूं तांम ॥ ५ ॥
ग्यांनावर्णी कर्म री प्रकृत पांचे, तिण सूं पांचोंइ ग्यांन जीव न पावे।
मत ग्यांनावर्णी मत ग्यान रे आडी, सुरत ग्यांनावर्णी सुरत ग्यान न आवे ॥ ६ ॥
अवधि ग्यांनावर्णी अवधि ग्यांन ने रोके, मनपरज्यावर्णी मनपरज्या आडी।
केवल ग्यांनावर्णी केवल ग्यांन रोके. यां पांचां में पांचमी प्रकृत जाडी ॥ ७ ॥
ग्यांनावर्णी कर्म खयउपसम हुवै. जब पामें छै च्यार ग्यांन।
केवल ग्यांनावर्णी तो खयोपसम न हुवै, आ तो खय हुवां पामें केवल ग्यांन ॥ ८ ॥
दर्सणावर्णी कर्म री नव प्रकृत छै. ते देखवा नें सुणवादिक आडी।
जीवां नें जावक कर देवे आंधा, त्यां में केवल दर्सणावर्णी सगलां में जाडी ॥ ९ ॥
चषू दर्सणावर्णी कर्म उदे सूं. जीव चषू रहीत हुवै अंध अयांण।
अचषू दर्सणावर्णी कर्म रे जोगे, च्यारूं इंद्रीयां री पर जाये हांण ॥ १० ॥
अवधि दर्सणावर्णी कर्म उदे सूं, अवधि दर्सन न पामें जीवो।
केवल दर्सणावर्णी तणे परसंगे, उपजे नहीं केवल दरसण दीवो ॥ ११ ॥
निद्रा सूतो तो सुखे जगायो जागे, निद्रा २ उदे दुखे जागे छै तांम।
बैठां ऊभां जीव नें नींद आवे, तिण नींद तणो छै प्रचला नाम ॥ १२ ॥
प्रचला २ नींद उदे सूं जीव नें, हालतां चालतां नींद आवै।
पांचमीं नींद छै कठन थीणोदी. तिण नींद सूं जीव जावक दब जावे ॥ १३ ॥
पांच निद्रा नें च्यार दर्सणावर्णी थी, जीव अंध हुवै जावक न सूझे लिगारो।
देखन आश्री दर्सणावर्णी कर्म, जीव रे जावक कीयो अंधारो ॥ १४ ॥
दर्सणावर्णी कर्म खयउपसम हुवे जद, तीन खयउपसम दर्सन पांमतो जीवो।
दर्सणावर्णी जावक खय होवे, केवल दर्सण पामें ज्यूं घट दीवो ॥ १५ ॥
चोथो घन घातियो मोह कर्म छै. तिणरा उदा सूं जीव होवै मतवालो।
सूधी स्रधा रे विषे मूढ मिथ्याती, मात्र किरतब रो पिण न होवै टालो ॥ १६ ॥
मोहणी कर्म तणा दोय भेद कह्या जिण, दर्सण मोहणी नें चारित मोहणी कर्म।
इण जीव रा निज गुण दोय बिगाड्या, एक समकत न दूजो चारित धर्म ॥ १७ ॥
बले दंसण मोहणी उदे हुवे जब, मूल समकती जीव रो हुवे मिथ्याती।
चारित मोहणी कर्म उदे हुवे जब. चारित खोय नें हुवे छ काय रो घाती ॥ १८ ॥
दर्सन मोहणी कर्म उदे सूं: सुधी सरधा समकत नावे।
दर्सण मोहणी उपसम हुवे जब, उपसम समकत निरमलो पावे ॥ १९ ॥

दर्शण मोहणी जाबक खय होवे, जब खायक समकत सासती पावै।
दर्शण मोहणी षयउपसम हुवे जब, खयउपसम समकत जीव नें आवै॥ २० ॥
चारित मोहणी कर्म उदे सू, सर्व विरत चारित नहीं आवे।
चारित मोहणी उपसम हुवे जद, उपसम चारित निरमला पावे॥ २१ ॥
चारित मोहणी जाबक खाय हुवे तो, खायक चारित आवे श्रीकार।
चारित मोहणी खयोपसम हुवे जब, खयउपसम चारित पामें च्यार॥ २२ ॥
जीव तणा उदे भाव नीपनां, ते कर्म तणा उदा सूं पिछांणो।
जीव रा उपसम भाव नीपनां, ते कर्म तणा उपसम सूं जांणो॥ २३ ॥
जीव रा खायक भाव नीपनां, ते तो कर्म तणो खय हुवां सूं ताम।
जीव रा खयोउपसम भाव नीपनां, खयउपसम कर्म हुआं सूं नांम॥ २४ ॥
जीव रा जेहवा २ भाव नीपनां, ते जेहवा २ छै जीव रा नाम।
ते नाम पाया छै कर्म संजोग विजोगे, तेहवा इज कर्मां रा नाम छै तांम॥ २५ ॥
चारित मोहणी तणी छै पच्चवीस प्रकृत, त्यां प्रकृत तणा छै जूआ जूआ नाम।
त्यांरा उदा सूं जीव तणा नांम तेहवा, कर्म ने जीव रा जूआ जूआ परिणाम॥ २६ ॥
जीव अतंत उतकष्टो क्रोध करे जब, जीवरा दुष्ट घणा परिणांम।
तिणने अनुताणुबंधीयो क्रोध कह्यो जिण, ते कषाय आत्मा छै जीव रो नाम॥ २७ ॥
जिणरा उदा सूं उतकष्टो क्रोध करे छै, ते उतकष्टा उदे आया छै तांम।
ते उदे आया छै जीव रां संच्या, त्यांरो अणुताणवघी क्रोध छै नांम॥ २८ ॥
तिण सु कायंक थोडो अप्रत्याखानी क्रोध, तिण सुं कायंक थोड़ो प्रत्याख्यान।
तिण सुं कांयक थोडो छै संजल रो क्रोध, आ क्रोध री चोकड़ी कही भगवांन॥ २९ ॥
इण रीते मान री चोकडी कहणी, माया ने लोभ री चोकड़ी इन जांणो।
च्यार चोकड़ी प्रसगे कर्मां रा नाम, कर्म प्रसगे जीव रा नाम पिछांणो॥ ३० ॥
जीव क्रोध करें क्रोध री प्रकत सूं, मान करे मांन री प्रकत सूं तांम।
माया कपट करें छें माया री प्रकत सूं, लोभ करे छे लोभ री प्रकत सूं आंम॥ ३१ ॥
क्रोध करें तिण सूं जीव क्रोधी कहायो, उदे आइ ते क्रोध री प्रकत कहाणी।
इण हीज रीत मांन माया ने लोभ, यानें पिण लीजो इण हीज रीत पिछांणी॥ ३२ ॥
जीव हसे छै हास्य री प्रकत उदे सूं, रित अरितरी प्रकत सूं रित अरित वधावे।
भय प्रकत उदे हूआं भय पामें जीव, सोग प्रकत उदे जीव नें सोग आवे॥ ३३ ॥
दुगंछा आवें दुगंछा प्रकत उदे सूं, अस्त्री वेद उदे सूं वेदे विकार।
तिणने पुरष तणी अभिलाषा होवे, पछे वेंतो २ हुवे वोहत विगाड़॥ ३४ ॥
पुरष वेद उदे अस्ती नी अभिलाषा, निपुंसक वेद उदे हुवे दोयां री चाय।
करम उदे सूं सवेदी नाम कह्यों जिण, करमां ने पिण वेद कह्या जिण राय॥ ३५ ॥

मिथ्यात उदे जीव हुवो मिथ्याती, चारित मोह उदे जीव हुवो कुकरमी।
इत्यादिक माठा २ छै जीव रा नाम, वले अनार्य हिंसाधर्मी ॥ ३६ ॥
चोथो घनघातीयो अतराय करम छै, तिणरी प्रकत पांच कही जिण तांम।
ते पाचूंई प्रकत पुदगल चोफरसी, त्यांरी प्रकत रा छै जूजूआ नांम ॥ ३७ ॥
दानांतराय छें दान रे आडी, लाभांतराय सूं वस्त लाभ सके नांही।
मन गमता पुदगल नां सुख जे, लाभ न सके सव्दादिक कांई ॥ ३८ ॥
भोगातराय नां करम उदे सूं, भोग मिलीया से भोग भोगवणी नावे।
उवभोगांतराय करम उदे सूं, उवभोग मिलीया तो वे ही भोगवणी नहीं आवें। ३९।
वीर्यअतराय रा करम उदे थी, तीनूंई वीर्य गुण हीणा थावे।
उठाणादिक हीणा थावे पांचूई, जीव तणी सक्त जावक घट जावे ॥ ४० ॥
अनंतो बल प्राकम जीव तणो छै, तिणनें एक अतराय करम सूं घटायो।
तिण करम नें जीव लगायां सू लागो, आप तणो कीयो आप रे उदे आयो ॥ ४१ ॥
पांचू अन्तराय जीव तणा गुण दाब्या, जेहवा गुण दाब्या छै तेहवा करमा रा नांम।
ए तो जीव रे प्रसगे नाम करम रा, पिण सभाव दे यां रो जूजूओ तांम ॥ ४२ ॥
ए तो च्यार घन घातीया करम कह्या जिण, हिवे अघातीया करम छे च्यार।
त्यामे पुन ने पाप दोनू कह्या जिण, हिवे पाप तणो कहू छूं विसतार ॥ ४३ ॥
जीव असाता पावे पाप करम उदे सूं, तिण पाप रो असाता वेदनी नाम।
जीव रा सचीया जीव ने दुःख देवै, असाता वेदनी पुदगल परिणांम ॥ ४४ ॥
नारकी रो आउखो पाप री प्रकत, केइ तिर्यंच रो आउखो पिण पाप।
असनी मिनख ने केई सनी मिनख रो, पाप री प्रकत दीसे छै विलाप ॥ ४५ ॥
ज्यांरो आउखो पाप कह्यो छे जिणेसर, त्यारी गति अणुपूर्वी पिण दीसे छे पाप।
गति अणुपूर्वी दीसे आउखा लारे, इणरो निश्चो तो जाणें जिणेसर आप ॥ ४६ ॥
च्यार सचेयण मे हाड पाडूआ छे, ते उसभ नांम करम उदे सूं जांणों।
च्यार संठाण मे आकार भूंडा ते, उसभ नांम करम सू मिलीया छे आंणो ॥ ४७ ॥
वर्ण गंध रस फरस माठा मिलीया, ते अण गमता नें अतंत अजोग।
ते पिण उसभ नांम करम उदे सू, एहवा पुदगल दुःखकारी मिले छे संजोग ॥ ४८ ॥
सरीर उपंग बंधण ने संघातण, त्यां में केकांरे माठा २ अतंत अजोग।
ते पिण उसभ नाम करम उदे सूं, अणगमता पुदगल रो मिले छे संजोग ॥ ४९ ॥
थावर नांम उदे छे थावर रो दस को, तिण दसका रा दस बोल पिछांणो।
नांम करम उदे छे जीव रा नाम, एहवा इज नांम करमा रा जांणों ॥ ५० ॥
[1]थावर नांम करम उदे जीव थावर हूओ, तिण सूं आघो पाछो सरकणी नावे।
[2]सूक्ष्म नांम उदे जीव सूक्ष्म हूओ छै, सूक्ष्म सरीर सगला नांन्हो पावैं ॥ ५१ ॥

[3]साधारण नांम सूं जीव साधारण हूओ, एकण सरीर में अनंता रहे तांम।
[4]अप्रज्याप्ता नांम सू अप्रज्याप्तो मरे छे, तिण सूं अप्रज्याप्तो छे जीव रो नांम ॥ ५२ ॥
[5]अथिर नांम सू तो जीव अथिर कहाणो, सरीर अथिर जावक ढीलो पावे।
[6]दुभ नाम उदे जीव दुभ कहाणो, नाभ नीचलो सरीर पाडूओ थावे ॥ ५३ ॥
[7]दुभग नाम थकी जीव हुवे दोभागी, अण गमतो लागे न गमे लोकां ने लिगार।
[8]दुःस्वर नाम थकी जीव हुवे दुस्वरीयो, तिणरो कंठ उसभ नही श्रीकार ॥ ५४ ॥
[9]अणादेज नाम करम रा उदा थी, तिणरो वचन कोइ न करे अगीकार।
[10]अजस नांम थकी जीव हुओ अजसीयो, तिणरो अजस बोले लोक वारूंवार ॥ ५५ ॥
[11]अपघात नांम करम रा उदे थी, पेलो जीते ने आप पांमें घात।
[12]दुभ गइ नांम करम संजोगे, तिणरी चाल किण ही ने दीठी न सुहात ॥ ५६ ॥
[13]नीच गोत उदे नीच हुवो लोकां में, उच गोत तणा तिणरी गिणे छे छोत।
नीच गोत थकी जीव हर्ष न पांमें, पोता रो संचीयो उदे आयो नीच गोत ॥ ५७ ॥
पाप तणी प्रकत ओलखावण काजे, जोड कीधी श्री दुवारा सहर मझार।
संवत अठारे पचावने वरते, जेठ सुद तीज नें बृहस्पतिवार ॥ ५८ ॥

५ : आश्रव पदारथ

ढाल : ६

दुहा

आश्रव पदारथ पांचमों, तिणनें कहीजे आश्रव दुवार।
ते करम आवा रा बारणा, ते बारणा नें करम न्यार॥ १॥
आश्रव दुवार तो जीव छें, जीव रा भला भूंडा परिणाम।
भला परिणाम पुन रा बारणा, भूंडा पाप तणा छें तांम॥ २॥
केइ मूढ मिथ्याती जीवड़ा, आश्रव नें कहे छें अजीव।
त्यां जीव अजीव न ओलख्या, त्यांरे मोटी मिथ्यात री नींव॥ ३॥
आश्रव तो निश्चेंइ जीव छें, श्री वीर गया छें भाख।
ठांम २ सिद्धांत मे भाषीयो, ते सुणजो सूतर नी साख॥ ४॥
हिवें पाप आवा ना बारणा, पेंहलो कहूं छूं तांम।
ते जथातथ परगट करूं, ते सुणो राखे चित ठांम॥ ५॥

ढाल

[विना रा भाव सुण. ....]

ठांणा अंग सूतर रे मझार, कह्या छे पांच आश्रव दुवार।
ते दुवार छें माहा विकराल, त्यां में पाप आवे दगचाल॥ १॥
मिथ्यात इविरत नें कषाय, परमाद जोग छे ताय।
ए पांचूंई आश्रव दुवार छे तांम, निश्चें जीव तणा परिणांम॥ २॥
उंधो सरधे ते आश्रव मिथ्यात, उंधो सरधे जीव साख्यात।
तिण आश्रव नो रुंधण हारो, ते समकित संवर दुवारो॥ ३॥
अत्याग भाव इविरत छें ताम, जीव तणा माठा परिणांम।
तिण इविरत ने देवे निवार, ते व्रत छै संवर दुवार॥ ४॥
नही त्याग्या छें त्यां दरबां री, आसा वांछा लगी रही ज्यांरी।
ते इविरत जीव रा परिणांम, तिण ने त्याग्यां हुवे सवर आम॥ ५॥
आश्रव छे ताम, ए पिण जीव रा मेला परिणांम।
आश्रव रुंधाय, जब अपरमाद संवर थाय॥ ६॥

कषाय आश्रव छे आंम, जीव रा कषाय परिणाम।
तिण सूं पाप लागे छें आय, ते अकषाय सूं मिट जाय॥ ७॥
सावद्य निरवद जोग व्यापार, ए पाचूंई आश्रव दुवार।
रूंधे भला भूंडा परिणांम, अजोग सवर तिणरो नाम॥ ८॥
ए पांचूंइ आश्रव उघाड़ा दुवार, करम आवे या दुवार मझार।
दुवार तो जीव ना परिणाम, त्यां सूं करम लागे छें तांम॥ ९॥
यांरा ढाकणा संवर दुवार, आश्रव दुवार ना रूंधणहार।
नवा करम ना रोकणहार, ए पिण जीव रा गुण श्रीकार॥ १०॥
इमहिज कह्यो चोथा अंग मझारो, पाच आश्रव ने सवर दुवारो।
आश्रव करमां रो करता उपाय, करम आश्रव सूं लागे छे आय॥ ११॥
उतराधेन गुणतीसमा माह्यो, पडिकमणां रो फल बतायो।
व्रतां रा छिद्र ढकायो, वले आश्रव दुवार रूंधायो॥ १२॥
उतराधेन गुणतीसमा माह्यो, पच्चक्खाण रो फल बतायो।
पचखांण सूं आश्रव रूंधायो, आवता करम ते मिट जायो॥ १३॥
उतराधेन तीसमां रे मांह्यो, जलना आगम रूंधायो।
जब पाणी आवतो मिट जावे, ज्यूं आश्रव रूंध्या करम नावे॥ १४॥
उतराधेन उगणीसमां माह्यो, गाढा दुवार ढाक्या कह्या ताह्यो।
करम आवा ना ठाम मिटायो, जब पाप न लागे आयो॥ १५॥
ढांकीया कह्या आश्रव दुवार, जब पाप न बंधे लिगार।
कह्यो छे दशवीकालिक मझार, तीजा अधेन में आश्रव दुवार॥ १६॥
रूंधे पाचूंई आश्रव दुवार, ते भीखू मोटां अणगार।
ते तो दसवीकालिक मझार, तिहां जोय करो निस्तार॥ १७॥
पेहला मनजोग रूंधे ते सुध, पछे वचन काय जोग रूंध।
उतराधेन गुणतीसमा माहि, आश्रव रूंधणा चाल्या छे ताहि॥ १८॥
पांच कह्या छे अधर्म दुवार, ते तो प्रश्नव्याकरण मझार।
वले पांच कह्या संवर दुवार, या दोया रो घणो विसतार॥ १९॥
ठाणा अंग पाचमा ठाणा माहि, आश्रव पडिकमणो ताहि।
पडिकम्यां पाछो रूंधाए दुवार, फेर पाप न लागे लिगार॥ २०॥
फूटी नाव रो दिष्टंत, आश्रव ओलखायो भगवत।
भगोती तीजा सतक मझार, तीजे उदेसे छैं विसतार॥ २१॥
वले फूटी नावा रे दिष्टंत, आश्रव ओलखायो भगवंत।
भगोती पेहला सतक मझार, छट्ठे उदेसे छैं विसतार॥ २२॥

ए तो कह्या छें आश्रव दुवार, वले अनेक छें सूतर मझार।
ते पूरा केम कहिवाय, सगला रो एकज न्याय॥ २३ ॥
आश्रव दुवार कह्या ठांम ठांम, ते तो जीव तणा परिणांम।
त्यांनें अजीव कहे मिथ्याती, खोटी सरधा तणा पखपाती॥ २४ ॥
करमां नें ग्रहे ते जीव दरब, ग्रहे तेहीज छे आश्रव।
ते जीव तणा परिणांम, त्यां सूं करम लागे छें तांम॥ २५ ॥
जीव नें पुदगल रो मेल, तीजा दरब तणो नहीं भेल।
जीव लगावे जांण जांण, जब पुदगल लागे छे आंण॥ २६ ॥
तेहिज पुदगल छें पुन पाप, त्यांरो करता छै जीव आप।
करता तेहिज आश्रव जांणो, तिण में संका मूल म आंणो॥ २७ ॥
जीव छै करमा रो करता, सूतर में पाठ अपरता।
कह्यो पेंहला अंग मझारो, जीव करमां रो करतारो॥ २८ ॥
ते पेंहला इज उदेसो संभालो, ए तो करता कह्यो त्रिहूं कालो।
जीव सत्त नों इचकार, तीन करणे कह्यो करतार॥ २९ ॥
करता तेहिज आश्रव तांम, जीव रा भला भूंडा परिणाम।
परिणांम ते आश्रव दुवार, ते जीव तणो व्यापार॥ ३० ॥
करता करणी हेतु नें उपाय, ए करमां रा करता कहाय।
यां सूं करम लागे छें आय, त्यांने आश्रव कह्या जिण राय॥ ३१ ॥
सावद्य करणी सूं पाप लागे तिण सूं दुःख भोगवसी आगे।
सावद्य करणी नें कहे अजीव ते तो निश्चें मिथ्याती जीव॥ ३२ ॥
जोग सावद्य निरवद चाल्या, त्यांनें जीव दरब में घाल्या।
जोग आतमा कही छै तांम, जोग नें कह्या जीव परिणांम॥ ३३ ॥
जोग छें ते जीव व्यापार, जोग छें तेहिज आश्रव दुवार।
आश्रव तेहिज जीव निसंक, तिण में मूल म आंणो संक॥ ३४ ॥
लेस्या भली ने भूंडी चाली, त्यांनें पिण जीव दरब में घाली।
लेस्या उदे भाव जीव तांम, लेस्या ते जीव परिणांम॥ ३५ ॥
लेस्या करमां सूं आतम लेस, ते तो जीव तणा परदेस।
ते पिण आश्रव जीव निसंक, त्यांरा थानक कह्या असंख॥ ३६ ॥
मिथ्यात इविरत ने कषाय, उदे भाव छे जीव रा ताय।
कषाय आत्मा कही छै ताम, यांनें कह्या छें जीव परिणांम॥ ३७ ॥
ए पांचूंई छे आश्रव दुवार, छें करम तणा करतार।
ए पांचूं छें जीव साख्यात, तिण में संका नहीं तिलमात। ३८ ॥

आश्रव जीव तणा परिणांम, नवमें ठाणे कह्यों छै आंम।
जीव रा परिणांम छे जीव, त्यांने विकल कहे छे अजीव ॥ ३६ ॥
नवमें ठाणे ठाणा अग माहि, आश्रव करम ग्रहे छे ताहि।
करम ग्रहे ते आश्रव जीव, ग्रहीया आवे ते पुदगल अजीव ॥ ४० ॥
ठांणा अंग दसमें ठाणे, दस बोल उंधा कुण जाणे।
उंधा जाणे तेहिज मिथ्यात, तेहिज आश्रव जीव साख्यात ॥ ४१ ॥
पांच आश्रव नें इविरत तांम, माठी लेस्या तणा परिणाम।
माठी लेस्या तो जीव छै ताय, तिणरा लषण अजीव किम थाय ॥ ४२ ॥
जीव ने लषण सूं पिछांणो, जीव रा लषण जीव जांणो।
जीव रा लषण ने अजीव थापे, ते तो वीर ना वचन उथापे ॥ ४३ ॥
च्यार सगन्या कही जिणराय, ते पिण पाप तणा छे उपाय।
पाप रो उपाय ते आश्रव, ते आश्रव जीव दरब ॥ ४४ ॥
भला ने भूंडा अघवसाय, त्याने आश्रव कह्या जिनराय।
भला सूं तो लागे छे पुन, भूडा सू लागे पाप जबून ॥ ४५ ॥
आरत ने रुद्र ध्यान, त्याने आश्रव कह्या भगवान।
आश्रव पाप तणा छे दुवार, दुवार तेहिज जीव व्यापार ॥ ४६ ॥
पुन ने पाप आवाना दुवार, ते करम तणा करतार।
करमा रो करता आश्रव जीव, तिण ने कहें अग्यानी अजीव ॥ ४७ ॥
जे आश्रव ने अजीव जाणे, ते पीपल बाधी मूरख ज्यू ताणे।
करम लगावे ते आश्रव, ते निश्चेई जीव दरब ॥ ४८ ॥
आश्रव ने कह्यो रूधाणो, आ जिनजी रा मुख री वाणी।
ओ कीसो दरब रूंधाणो, कीसो दरब थिर थपाणो ॥ ४६ ॥
विपरीत तत्व गुण जाणे, कुण माडे उलटी ताणे।
कुण हिंसादिक रो अत्यागी, कुण रे वछा रहे लागी ॥ ५० ॥
सबदादिक कुण अभिलाखे, कषाय भाव कुण राखे।
कुण मन जोग रो व्यापारो, कुण चिन्तवे म्हारों थारो ॥ ५१ ॥
इंद्री ने कुण मोकली मेले, सबदादिक ने कुण भेले।
इण नें मोकली मेले ते आश्रव, तेहिज छै जीव दरब ॥ ५२ ॥
मुख सूं कुण भूंडो बोले, काया सूं कुण माठो डोले।
ए जीव दरब नो व्यापार, पुदगल पिण वरते छे लार ॥ ५३ ॥
जीव रा चलाचल परदेस, त्यां ने थिर थापे दिढ करेस।
जब आश्रव दरब रूंधाणो, तब तेहिज संवर थपाणो ॥ ५४ ॥

चलाचल जीव परदेस, सारा परदेसा करम प्रवेस।
सारा परदेसां करम ग्रहता, सारा परदेसां करमा रा करता ॥ ५५ ॥
त्यां परदेसा रो थिर करणहार, तेहिज संवर दुवार।
अथिर परदेस ते आश्रव, ते निश्चेंई जीव दरब ॥ ५६ ॥
जोग परिणामीक ने उदे भाव, त्याने जीव कह्या इण न्याव।
अजीव तो उदे भाव नाही, ते देख लो सूतर माही ॥ ५७ ॥
पुन निरवद जोगा सू लागे छे आय, ते करणी निरजरा री छे ताय।
पुन सहजां लागे छे आय, तिण सू जोग छे आश्रव मांय ॥ ५८ ॥
जे जे ससार ना छे काम, त्यारा किण २ रा कहूं नांम।
ते सगला छे आश्रव तांम, ते सगला छें जीव परिणांम ॥ ५९ ॥
करमां ने लगावे तो आश्रव, तेहिज छे आश्रव जीव दरब।
लागे ते पुदगल अजीव, लगावे ते निश्चेंई जीव ॥ ६० ॥
करमा रो करता जीव दरब, करतापणो तेहिज आश्रव।
कीधा हुआ ते करम कहिवाय, ते तो पुदगल लागे छे आय ॥ ६१ ॥
ज्यारे गूढ मिथ्यात अघारो, ते नही पिछाणे आश्रव दुवारो।
त्याने सवली तो मूल न सूझे, दिन २ इधक अलूझे ॥ ६२ ॥
जीव रे करम आडा छे आठ, ते लग रह्या पाटानेपाट।
ज्यामे घातीया करम छे च्यार, मोख मारग रोकणहार ॥ ६३ ॥
और करमां सूं जीव ढंकाय, मोह करम थकी विगडाय।
विगड्यो करे सावद्य व्यापार, तेहिज आश्रव दुवार ॥ ६४ ॥
चारित मोह उदे मतवालो, तिण सूं सावद्य रो न हुवे टालो।
सावद्य रो सेवण हारो, तेहिज आश्रव दुवारो ॥ ६५ ॥
दंसण मोह उदे सरधे उंधो, हाथे मारग न आवे सुधो।
उंधी सरधा रो सरदणहारो, ते मिथ्यात आश्रव दुवारो ॥ ६६ ॥
मूढ कहे आश्रव ने रूपी, वीर कह्यो आश्रव ने अरूपी।
सूतरां मे कह्यो ठाम २, आश्रव ने अरूपी ताम ॥ ६७ ॥
पाच आश्रव ने इविरत ताम, माठी लेस्या तणा परिणांम।
माठी लेस्या अरूपी छैं ताय, तिणरा लषण रूपी किम थाय ॥ ६८ ॥
उजला ने मेला कह्या जोग, मोह करम सजोग विजोग।
उजला जोग मेला थाय, करम झरीयां उजल होय जाय ॥ ६९ ॥
उत्तराधेन गुणतीसमां माय, जोग सचे कह्यों जिणराय।
जोग सचे निरदोष में चाल्या, त्यां ने साधां रा गुण माहे घाल्या ॥ ७० ॥

साधां रा गुण छें सुध मांन, त्यांनें अरूपी कह्या भगवांन।
त्यां जोग आश्रव ने रूपी थाप्या, त्यां वीर नां वचन उथाप्या ॥ ७१ ॥
ठाणा अग तीजा ठांणा मझार, जोग वीर्य रो व्यापार।
तिण सूं अरूपी छै भाव जोग, रूपी सरधे ते सरधा अजोग ॥ ७२ ॥
जोग आतमा जीव अरूपी, त्यां जोगा ने मूढ कहे रूपी।
जोग जीव तणा परिणाम, ते निश्चे अरूपी छें तांम ॥ ७३ ॥
आश्रव जीव सरधावण ताय, जोड़ कीधी छे पाली मांय।
संवत अठारे पंचावना मझार, आसोज सुद बारस रिववार ॥ ७४ ॥

ढाल : ७

दुहा

आश्रव करम आवानां बारणा, त्यांनें विकल कहे छें करम।
करम दुवार ने करम एकहिज कहे, ते भूला अग्यांनी भरम ॥ १ ॥
करम ने आश्रव छे जूजूआ, जूओजूओ छें त्यारो सभाव।
करम नें आश्रव एकहिज कहे, तिणरो मूढ न जांणे न्याव ॥ २ ॥
वले आश्रव ने रूपी कहे, आश्रव ने कहे करम दुवार।
दुवार ने दुवार में आवे तेहने, एक कहे छें मूढ गिंवार ॥ ३ ॥
तीन जोगा ने रूपी कहे, त्याने इज कहे आश्रव दुवार।
वले तीन जोगा ने कहे करम छे, ओ पिण विकलां रे नही छै विचार ॥ ४ ॥
आश्रव नां वीस भेद छे, ते जीव तणी पर्याय।
करम तणा कारण कह्या, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

मिथ्यात आश्रव तो उंधो सरधे ते, उंधो सरधे ते जीव साख्यातो रे।
तिण मिथ्यात आश्रव ने अजीव सरधे छे, त्यांरा घट मांहे घोर मिथ्यातो रे॥
आश्रव ने अजीव कहे ते अग्यांनी ॥ १ ॥
जे जे सावद्य कामां नही त्याग्या छे, त्यांरी आसा वछा रही लागी रे।
ते जीव तणा परिणांम छे मेला, अत्याग भाव छे इविरत सागी रे ॥ २ ॥
परमाद आश्रव जीव नां परिणांम मेला, तिण सूं लागे निरंतर पापो रे।
तिणनें अजीव कहे छे मूढ मिथ्याती, तिण रे खोटी सरधा री थापो रे ॥ ३ ॥
कषाय आश्रव ने जीव कह्यों जिणेसर, कषाय आतमा कही छें तांमो रे।
कषायें करवारो सभाव जीव तणो छें, कषाय छै जीव परिणांमो रे ॥ ४ ॥

जोग आश्रम नें जीव कह्यों जिणेसर, जोग आतमा कहीं छे तांमो रे।
तीन जोगां रो व्यापार जीव तणो छै, जोग छे जीव रा परिणांमो रे॥ ५॥
जीवरी हिसा करें ते आश्रव, हिंसा करे ते जीव साख्यातो रे।
हिसा करे ते परिणांम जीव तणा छे, तिणमें संका नही तिलमातो रे॥ ६॥
भूठ बोले ते आश्रव कह्यों छे, भूठ बोले ते जीव साख्यातो रे।
भूठ बोलण रा परिणाम जीव तणा छे, तिणमें संका नही तिलमातो रे॥ ७॥
चोरी करें ते आश्रव कह्यो जिणेसर, चोरी करें ते जीव साख्यातो रे।
चोरी करवा रा परिणांम जीव तणा छें, तिणमें संका नहीं तिलमातो रे॥ ८॥
मैथुन सेवे ते आश्रव चोथो, मैथुन सेवे ते जीवो रे।
मैथुन परिणांम तो जीव तणा छे, तिण सूं लागे छें पाप अतीवो रे॥ ९॥
परिग्रह राखे ते पांचमों आश्रव, परिग्रह राखे ते पिण जीवो रे।
जीव रा परिणांम छें मूर्छा परिग्रह, तिण सूं लागे छे पाप अतीवो रे॥ १०॥
पांच इंद्रयां ने मोकली मेले ते आश्रव, मोकली मेले ते जीव जांणों रे।
राग धेष आवें सब्दादिक उपर, यांनें जीव रा भाव पिछांणो रे॥ ११॥
सुरत इद्री तो सब्द सुणे छे, चषु इंद्री रूप ले देखो रे।
घाण इंद्री गन्ध ने भोगवे छे, रस इंद्री रस स्वादे वशेपो रे॥ १२॥
फरस इद्री तो फरस भोगवे छें, पांचूं इंद्रयां नों एह सभावो रे।
यां सूं राग नें धेष करे ते आश्रव, तिण नें जीव कहीजे इण न्यावो रे॥ १३॥
तीन जोगां ने मोकला मेले ते आश्रव, मोकला मेले ते जीवो रे।
त्याने अजीव कहे ते मूढ मिथ्याती, त्यांरा घट मे नही ग्यांन रो दीवो रे॥ १४॥
तीन जोगां रो व्यापार जीव तणो छे, ते जोग छे जीव परिणांमो रे।
माठा जोग छे माठी लेस्या रा लषण, जोग आतमा कही छें तामो रे॥ १५॥
भड उपगरण सू कोई करे अजेणा, तेहिज आश्रव जाणो रे।
ते आश्रव सभाव तो जीव तणो छे, रूडी रीत पिछांणो रे॥ १६॥
सुची-कुसग सेवे ते आश्रव, सुची कुसग सेवे ते जीवो रे।
सुची-कुसग सेवे तिणने अजीव कहें, त्यांरे उंडी मिथ्यात री नींवो रे॥ १७॥
दरब जोगा ने रूपी कह्या छे, ते तो भाव जोग रे छें लारो रे।
दरब जोगां सू तो करम न लागे, भाव जोग छे आश्रव दुवारो रे॥ १८॥
आश्रव ने करम कहे छें अग्यानी, तिण लेखे पिण उंधी दरसी रे।
आठ करमां नें तो चोफरसी कहे छे, काया जोग तो छे अठफरसी रे॥ १९॥
आश्रव ने करम कहे त्यारी सरधा, उठी जठा थी भूठी रे।
त्यांरा बोल्या री ठीक पिण त्याने नाही, त्यांरी हीया निलाड री फूटी रे॥ २०॥

वीस आश्रव में सोले एकत सावद्य, ते पाप तणा छे दुवारो रे।
ते जीव रा किरतब माठा ने खोटा, पाप तणा करतारो रे॥ २१॥
मन वचन काया रा जोग व्यापार, वले समचें जोग व्यापारो रे।
ए च्यारुंइ आश्रव सावद्य निरवद, पुन पाप तणा छें दुवारो रे॥ २२॥
मिथ्यात इविरत नें परमाद, कषाय नें जोग व्यापारो रे।
ए करम तणा करता जीव रे छें, ए पांचूंइ आश्रव दुवारो रे॥ २३॥
यांमें च्यार आश्रव सभावीक उदारा, जोग में पनरे आश्रव समाया रे।
जोग किरतब नें सभावीक पिण छे, तिण सूं जोग में पनरेंइ आया रे॥ २४॥
हिंसा करें ते जोग आश्रव छें, झूठ बोलें ते जोग छे ताह्यो रे।
चोरी सूं लेइ सुची कुसग सेवे ते, पनरेंइ आया जोग माह्यो रे॥ २५॥
करमां रो करता तो जीव दरब छै, कीधा हुवा ते करमो रे।
करम ने करता एक सरधे ते, भूला अग्यांनी भर्मो रे॥ २६॥
अठारे पाप ठांणा अजीव चोफरसी, ते उदे आवे तिण वारो रे।
जब जूजूआ किरतब करें अठारो, ते अठारेंइ आश्रव दुवारो रे॥ २७॥
उदे आया ते तो मोह करम छे, ते तो पाप रा ठांणा अठारो रे।
त्यांरा उदा सूं अठारेंइ किरतब करे छें, ते जीव तणो छें व्यापारो रे॥ २८॥
उदे नें किरतब जूआजूआ छे, आ तो सरधा सूची रे।
उदे नें किरतब एकज सरधे, अकल तिणांरी उंची रे॥ २९॥
प्राणातपात जीव री हिंसा करे ते, प्राणातपात आश्रव जाणों रे।
उदे हुवो ते प्राणातपात ठांणो छे, त्यांने रूडी रीत पिछांणो रे॥ ३०॥
झूठ बोले ते मिरषावाद आश्रव छे, उदे छें ते मिरषावाद ठाणो रे।
झूठ बोलें ते जीव उदे हुवा करम, यां दोयां नें जूआजूआ जांणो रे॥ ३१॥
चोरी करे ते अदत्तादांन आश्रव छे, उदे ते अदत्तादांन ठांणो रे।
ते उदे आयां जीव चोरी करें छें, ते तो जीव रा लषण जांणो रे॥ ३२॥
मैथुन सेवे ते मैथुन आश्रव, ते जीव तणा परणांमो रे।
उदे हूओ ते मैथुन पाप थांनक छें, मोह करम अजीव छे तांमो रे॥ ३३॥
सचित्त अचित्त मिश्र उपर, ममता राखे ते परिग्रह जाणो रे।
ते ममता छे मोह करम रा उदा सू, उदे में छे ते पाप ठांणो रे॥ ३४॥
क्रोध सूं लेइ ने मिथ्यात दरसण, उदे हूआ ते पाप रो ठांणो रे।
यांरा उदा सूं सावद्य कांमा करें ते, जीवरा लषण जांणो रे॥ ३५॥
सावद्य कामां ते जीव रा किरतव, उदे हूआ ते पाप करमो रे।
यां दोयां ने कोइ एकज सरधें, ते भूला अग्यांनी भरमो रे॥ ३६॥

आश्रव तो करम आवानां दुवार, ते तो जीव तणा परिणांमो रे।
दुवार मांहें आवे ते आठ करम छें, ते पुदगल दरब छें तांमो रे॥ ३७ ॥
माठा परिणांम ने माठी लेस्या, वले माठा जोग व्यापारो रे।
माठा अववसाय नें माठो ध्यांन, ए पाप आवानां दुवारो रे॥ ३८ ॥
भला परिणांम नें भली लेस्या, भला निरवद जोग व्यापारो रे।
भला अववसाय नें भलोइ ध्यांन, ए पुन आवा रा दुवारो रे॥ ३९ ॥
भला मूंडा परिणांम भली मूंडी लेस्या, भला मूंडा जोग छें तांमो रे।
भला मूंडा अववसाय भला मूंडा ध्यांन, ए जीव तणा परिणांमो रे॥ ४० ॥
भला मूंडा भाव जीव तणा छें, मूंडा पाप रा बारणा जांणों रे।
भला भाव तो छें संवर निरजरा, पुन सहजे लागे छें आंणो रे॥ ४१ ॥
निरजरा री निरवद करणी करतां, करम तणो खय जांणो रे।
जीव तणा परदेस चलै छें, त्यां सूं पुन लागे छें आंणो रे॥ ४२ ॥
निरजरा री करणी करें तिण काले, जीव रा चालें सर्व परदेसो रे।
जब सहचर नांम करम सूं उदे भाव, तिण सूं पुन तणो परवेसो रे॥ ४३ ॥
मन वचन काया रा जोग तीनूंइ, पसत्थ नें अपसत्थ चाल्या रे।
अपसत्थ जोग तो पाप नां दुवार, पसत्थ निरजरा री करणी में घाल्या रे॥ ४४ ॥
अपसत्थ दुवार नें रूंधणा चाल्या, पसत्थ उदीरणा चाल्या रे।
रूंधतां नें उदीरतां निरजरा री करणी, पुन लागे तिण सूं आश्रव में घाल्या रे॥ ४५ ॥
पसत्थ नें अपसत्थ जोग तीनूंइ, त्यांरा बासठ भेद छें ताह्यो रे।
ते सावद्य निरवद जीव री करणी, सूतर उवाइ रे मांह्यो रे॥ ४६ ॥
जिण कह्यों सतरे भेद असंयम, असंजम ते इविरत जांणों रे।
इविरत ते आसा वंछा जीव तणी छें, तिणनें रूडी रीत पिछांणो रे॥ ४७ ॥
माठा २ किरतब नें माठी २ करणी, सर्व जीव व्यापारो रे।
वले जिण आगना बारला सर्व कामां, ए सगला छें आश्रव दुवारो रे॥ ४८ ॥
मोह करम उदे जीव रे च्यार संज्ञा, ते तो पाप करम ग्रहे तांणो रे।
पाप करम ग्रहे ते आश्रव, ते तो लषण जीव रा जांणों रे॥ ४९ ॥
उठांण कम बल वीर्य पुरषाकार प्राक्रम, यांरा सावद्य जोग व्यापारो रे।
तिण सूं पाप करम जीव रे लागे छें, ते जीव छें आश्रव दुवारो रे॥ ५० ॥
उठांण कम बल वीर्य पुरषाकार प्राक्रम, यांरा निरवद किरतब व्यापारो रे।
त्यांसूं पुन करम जीव रे लागें छें, ते पिण जीव छें आश्रव दुवारो रे॥ ५१ ॥
संजती असंजती नें संजतासंजती, ते तो संवर आश्रव दुवारो रे।
ते संवर नें आश्रव दोनूंइ, तिण में संका नहीं छै लिगारो रे॥ ५२ ॥

इम विरती अविरती नें विरताविरती, इम पचखांणी पिण जांणो रे।
इम पिंडीया बाला नें बालपिडीया, जागरा सुत्ता एम पिछांणो रे॥ ५३ ॥
वले संबूडा असंबूडा ने संबूडासंबूडा, धमीया धमठी तांमो रे।
धम्मवचसाइया इमहिज जांणो, तीन तीन बोल छें तांमो रे॥ ५४ ॥
ए सगला बोल छें संवर नें आश्रव, त्यानें इडी रीत पिछांणो रे।
कोइ आश्रव ने अजीव कहें छें, ते पूरा छे मूढ अयांणो रे॥ ५५ ॥
आश्रव घटीयां संवर वधे छे, संवर घटीयां आश्रव वधांणो रे।
किसो दरब घटीयो ने वधीयो, इणनें इडी रीत पिछांणो रे॥ ५६ ॥
इविरत उदे भाव घटीयां सू, विरत वधें छें षयउपसम भावो रे।
ए जीव तणा भाव वधीयां नें घटीया, आश्रव जीव कह्यो इण न्यावो रे॥ ५७ ॥
सतरे भेद असजम ते इविरत आश्रव, ते आश्रव ने निश्चे जीव जांणो रे।
सतरे भेद संजम ने सवर कह्यों जिण, ए तो जीव रा लषण पिछांणो रे॥ ५८ ॥
आश्रव नें जीव सरधावण काजे, जोड कीधी पाली मफारो रे।
संवत अठारे वरस पचावने, आसोज सुद चवदस मंगलवारो रे॥ ५९ ॥

६ : संवर पदारथ

ढाल : ८

दुहा

छठो पदार्थ संवर कह्यो, तिणरा थिरी भूत परदेस।
आश्रव दुवार नों रूंधणो, तिण सूं मिटीयो करमां रो परवेस ॥ १ ॥
आश्रव दुवार करमां रा वारणा, ढकीयां छें संवर दुवार।
आतमा वस कीयां संवर हूओ, ते गुण रतन श्रीकार ॥ २ ॥
संवर पदारथ ओलख्यां विना, संवर न नीपजे कोय।
संका कोइ मत राखजो, सूतर साह्यो जोय ॥ ३ ॥
संवर तणा भेद पांच छे, त्यां पांचां रा भेद अनेक।
त्यांरा भाव भेद परगट करूं, ते सुणजो आंण ववेक ॥ ४ ॥

ढाल

[पूजजी पधारे हो नगरी]

नव ही पदारथ सरधे यथातथ, तिणने कहिजे समकत निधांन हो। भविक जण।
पछे त्याग करे उंधा सरधण तणा, ते समकत संवर परधांन हो। भविक जण।
संवर पदारथ भवीयण ओलखो* ॥ १ ॥

त्याग कीयां सर्व सावद्य जोग रा, जावजीव तणा पचखांण हो।
आगार नहीं त्यांरे पाप करण तणो, ते सर्व विरत संवर जांण हो ॥ २ ॥
पाप उदे सूं जीव परमादी थयो, तिण पाप सूं परमादी थाय हो।
ते पाप खय हूआं के उपसम हूआं, अपरमाद संवर हुवें ताय हो ॥ ३ ॥
कषाय करम उदे छे जीव रे, तिण सूं कषाय आश्रव छें तांम हो।
ते कषाय करम अलगा हुवां जीव रे, जब अकषाय संवर हुवें आंम हो ॥ ४ ॥
थोड़ा थोड़ा सा जोगां ने रूंधीयां, अजोग संवर नहीं थाय हो।
मन वचन काया रा जोग रूंधे सरवथा, ते अजोग संवर हुवें ताय हो ॥ ५ ॥
सावद्य माठा जोग रुंध्यां सरवथा, जब तो सर्व विरत संवर होय हो।
पिण निरवद जोग बाकी रह्या तेहने, तिण सूं अजोग संवर नहीं कोय हो ॥ ६ ॥
परमाद आश्रव ने कषाय जोग आश्रव, ए तो न मिटे कीयां पचखांण हो।
ए तो सहजांइ मिटे छे करम अलगा हुवां, तिणरी अंतरंग करजो पिछांण हो ॥ ७ ॥
सुभ ध्यांन ने लेस्या सूं करम कटियां थकां, जब अपरमाद संवर थाय हो।
इमहिज करतां अकषाय संवर हुवे, इम अजोग संवर होय जाय हो ॥ ८ ॥

* यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

समकित संवर ने सर्व विरत संवर, ए तो हुवें छें कीयां पचखांण हो।
अपरमाद अकषाय अजोग संवर हुवें, ते तो करम खय हूआं जांण हो ॥ ९ ॥
हिंसा झूठ चोर मैथुन परिग्रहो, ए तो जोग आश्रव में समाय हो।
ए पांचूं आश्रव ने त्यागे दीयां, जब विरत संवर हुवे ताय हो॥ १० ॥
पांचूं इंदस्यां नें मेले मोकली, त्यांने पिण जोग आश्रव जांण हो।
इंदस्यां ने मोकली मेलवारा त्याग छें, ते पिण विरत संवर ल्यो पिछांण हो ॥ ११ ॥
भला भूंडा किरतब तीनूंई जोगां तणा, ते तो जोग आश्रव छें तांम हो।
त्यां तीनूंइ जोगां नें जावक रूंधियां, आजोग संवर हुवे आंम हो ॥ १२ ॥
अजेंणा करें भंडउपगरण थकी, तिणने पिण जोग आश्रव जांण हो।
सुंची-कुसग सेवे ते आश्रव कह्यो, त्यांनें त्याग्यां विरत संवर पिछांण हो ॥ १३ ॥
हिंसादिक पनरे जोग आश्रव कह्यां, त्याने त्याग्यां विरत संवर जांण हो।
त्यां पनरां ने माठा जोग मांहे गिण्या, निरवद जोगां री करजो पिछांण हो ॥ १४ ॥
तीनूंइ निरवद जोग रूंध्यां थकां, अजोग संवर होय जात हो।
ए बीसूंइ संवर तणों विवरो कह्यों, ते बीसूइ पाच संवर में समात हो ॥ १५ ॥
कोइ कहे कषाय ने जोगा तणा, सूतर माहे चाल्या पचखांण हो।
त्यांने पचख्यां विनां संवर किण विध होसी, हिवे तिणरी कहुं छू पिछांण हो ॥ १६ ॥
पचखांण चाल्यो छें सूतर में सरीर नो, ते सरीर सू न्यारो हुवा तांम हो।
इम हिज कषाय ने जोग पचखाण छे, सरीर पचखाण ज्यूँ आंम हो ॥ १७ ॥
सामायक आदि पांचूं चारित भणी, सर्व वरत संवर जांण हो।
पुलाग आदि दे छहूंई नियंठा, ए पिण लीज्यो संवर पिछांण हो ॥ १८ ॥
चारितावर्णी षयउपसम हूआं, जब जीव नें आवे वेराग हो।
जब कांम ने भोग थकी विरक्त हुवे, जब सर्व सावद्य दे त्याग हो ॥ १९ ॥
सर्व सावद्य जोग ने त्यागे सरवथा, ते सर्व वरत संवर जांण हो।
जब इविरत रा पाप न लागे सरवथा, ते तो चारित छे गुण खांण हो ॥ २० ॥
धूर सूं तो सामायक चारित आदस्यो, तिणरे मोह करम उदे रह्यों ताय हो।
ते करम उदे सूं किरतब नीपजे, तिण सूं पाप लागें छे आय हो ॥ २१ ॥
भला ध्यान नें भली लेस्या थकी, मोह करम उदे थी घट जाय हो।
जब उदे तणा किरतब पिण हलका पडें, जब हलकाइ पाप लगाय हो ॥ २२ ॥
मोह करम जावक उपसम हुवें, जब उपसम चारित हुवें ताय हो।
जब जीव हुवें सीतलभूत निरमलो, तिणरे पाप न लागे आय हो ॥ २३ ॥
मोहणीय करम नें जावक खय हुवां, खायक चारित हुवे जथाख्यात हो।
जब सीतलभूत हूओ जीव निरमलो, तिणरे पाप न लागें अंसमात हो ॥ २४ ॥

सामायक चारित लीये छे उदीर नें, सावद्य जोग रा करें पचखांण हो।
उपसम चारित आवें मोह उपसम्यां, ते चारित इग्यारमें गुणठांण हो ॥ २५ ॥
खायक चारित आवें मोह करम नें खय कीयां, पिण नावें कीयां पचखांण हो।
ते आवें सुकल ध्यांन ध्यायां थकां, चारित छेहले तीन गुण ठांण हो ॥ २६ ॥
चारितावर्णी षयउपसम हुवां, षयउपसम चारित आवें निधांन हो।
ते उपसम हूआं उपसम चारित हुवें, खय हूआं खायक चारित परधांन हो ॥ २७ ॥
चारित निज गुण जीव रा जिण कह्यां, ते जीव सूं न्यारा नहीं थाय हो।
ते मोहणी करम अलगो हूआं परगट्या, त्यां गुणां सूं हुवा मुनीराय हो ॥ २८ ॥
चारितावर्णी ते मोहणी करम छे, तिणरा अनंत परदेस हो।
तिणरा उदे सूं निज गुण विगड्या, तिणसूं जीव ने अतंत कलेस हो ॥ २९ ॥
तिण करम रा अनंत परदेस अलगा हूआ, जब अनंत गुण उजलो थाय हो।
जब सावद्य जोग नें पचख्या छे सरवथा, ते सर्व विरत संवर छे ताय हो ॥ ३० ॥
जीव उजलो हुवो ते तो हुइ निरजरा, विरत संवर सूं रुकीया पाप करम हो।
नवा पाप न लागे विरत सवर थकी, एहवो छे चारित धर्म हो ॥ ३१ ॥
जिम २ मोहणी करम पतलो पडें, तिम २ जीव उजलो थाय हो।
इम करता मोहनी करम खय जाए सरवथा, जब जथाख्यात चारित होय जाय हो ॥ ३२ ॥
जगन सामायक चारित तेहना, अनता गुण पजवा जाण हो।
अनंता करम परदेस उदे था ते मिट गया, तिण सूं अनंत गुण परगट्या आंण हो ॥ ३३ ॥
जघन्य सामायक चारितीया तणा, अनंत गुण उजला परदेस हो।
वले अनंता परदेस उदे थी मिट गया, जब अनंत गुण उजलो वशेष हो ॥ ३४ ॥
मोह करम घटे छे उदे थी इण विधे, ते तो घटे छें असंखेज्ज वार हो।
तिण सू सामायक चारित नां कह्यां, असंख्यात थानक श्रीकार हो ॥ ३५ ॥
अनत करम परदेस उदे थी मिट गया, चारित थानक नीपजे एक हो।
चारित गुण पजवा अनंता नीपजे, सामायक चारित रा भेद अनेक हो ॥ ३६ ॥
जगन सामायक चारित जेहना, पजवा अनंता जांण हो।
तिण थी उतकष्टा सामायक चारित तणा, पजवा अनंत गुणां वखांण हो ॥ ३७ ॥
पजवा उतकष्टा सामायक चारित तणा, तेह थी सुषम संपराय ना वशेख हो।
अनंत गुणां कह्यां छे जिगन चारित तणा, ए सुषम संपराय लो पेख हो ॥ ३८ ॥
छठा गुण ठांणा थकी नवमा लगे, सामायक चारित जांण हो।
तिणरा असंख्यात थानक पजवा अनंत छे, सुषम संपराय दसमों गुण ठांण हो ॥ ३९ ॥
सुषम संपराय चारित तेहनां, थानक असंखेज जांण हो।
एक २ थानक रा पजवा अनंत छे, तिणने सामायक ज्यूं लीज्यो पिछाण हो ॥ ४० ॥

सुषम संपराय चारितीया रे सेष उदे रह्या, मोह करम रा अनंत परदेस हो।
ते अनंत परदेस खरयां निरजरा हुइ, बाकी उदे नही रह्यों लवलेस हो॥ ४१ ॥
जब जथाख्यात चारित परगट हुवो, तिण चारित रा पजवा अनंत हो।
सुषम संपराय रा उतकष्टा पजवा थकी, अनंत गुणां कह्यां भगवंत हो॥ ४२ ॥
जथाख्यात चारित उजल हूओ सरवथा, तिण चारित रो थानक एक हो।
अनंता पजवा तिण थानक तणा, ते थानक छें उतकष्टो वशेख हो॥ ४३ ॥
मोह करम परदेस अनंता उदे हुवें, ते तो पुदगल री पर्याय हो।
अनंता अलगा हूआं अनंत गुण परगटे, ते निज गुण जीव रा छें ताय हो॥ ४४ ॥
ते निज गुण जीव रा ते तो भाव जीव छें, ते निज गुण छें वंदणीक हो।
ते तो करम खय हूआं सूं नीपनां, भाव जीव कह्या त्यांनें ठीक हो॥ ४५ ॥
सावद्य जोगां रा त्याग करें ने रूंधीया, तिण सूं विरत संवर हुवो जांण हो।
निरवद जोग रूंध्यां संवर हुवें, तिणरी करजो पिछांण हो॥ ४६ ॥
निरवद जोग मन वचन काया तणा, ते घटीयां संवर थाय हो।
सरवथा घटीयां अजोग संवर हुवें, तिणरी विध सुणो चित्त ल्याय हो॥ ४७ ॥
साधु तो उपवास बेलादिक तप करें, करम काटण रे कांम हो।
जब संवर सहचर साधु रे नीपजें, निरवद जोग रूंध्यां सूं तांम हो॥ ४८ ॥
श्रावक उवास बेलादिक तप करें, करम काटण रे कांम हो।
जब विरत संवर पिण सहचर नीपनों, सावद्य जोग रूंध्यां सूं तांम हो॥ ४९ ॥
श्रावक जे जे पुदगल भोगवे, ते सावद्य जोग व्यापार हो।
त्यारो त्याग कीयां थी विरत संवर हुवें, तप पिण नीपजें लार हो॥ ५० ॥
साधु कल्पे ते पुदगल भोगवे, ते निरवद जोग व्यापार हो।
त्यांनें त्याग्या सूं तपसा नीपनी, जोग रूंध्यां रो संवर श्रीकार हो॥ ५१ ॥
साधु रो हालवो चालवो बोलवो, ते तो निरवद जोग व्यापार हो।
निरवद जोग रूध्यां जितलो संवर हुवो, तपसा पिण नीपजे श्रीकार हो॥ ५२ ॥
श्रावक रे हालवो चालवो बोलवो, सावद्य निरवद व्यापार हो।
सावद्य रा त्याग सूं विरत संवर हुवें, निरवद त्याग्यां सूं संवर श्रीकार हो॥ ५३ ॥
चारित ने तो विरत संवर कह्यों, ते तो इविरत त्याग्यां होय हो।
अजोग संवर सुभ जोग रूंध्यां हुवें, तिण मांहें संक न कोय हो॥ ५४ ॥
संवर निज गुण निश्चेंइ जीव रा, तिणनें भाव जीव कह्यों जगनाथ हो।
जिण दरब नें भाव जीव नही ओलख्या, तिणरो घट सूं न गयो मिथ्यात हो॥ ५५ ॥
संवर पदार्थ नें ओलखायवा, जोड़ कीधी नाथ दुवारा मझार हो।
समत अठारे वरसे छपनें, फागुण विद तेरस सुक्रवार हो॥ ५६ ॥

७ : निरजरा पदारथ

ढाल : १

दुहा

निरजरा पदार्थ सातमों, ते तो उजल वसत अनूप।
ते निज गुण जीव चेतन तणो, ते सुणजो धर चूंप ॥ १ ॥

ढाल

[धन्य धन्य जंबू स्वाम नें]

आठ करम छें जीव रे अनाद रा, त्यांरी उतपत आश्रव दुवार हो।
ते उदे थइ नें पछे निरजरे, वले उपजे निरंतर लार हो॥
निरजरा पदार्थ ओलखो ॥ १ ॥

दरब जीव छें तेहनें, असंख्याता परदेस हो।
सारां परदेसां आश्रव दुवार छें सारां परदेसां करम परवेस हो॥ २ ॥

एक एक परदेस तेहनें, समें २ करम लागंत हो।
ते परदेस एकीका करम नां, समें समें लागे अनंत हो॥ ३ ॥

ते करम उदे थइ जीव रे, समें २ अनंता झड़ जाय हो।
भरीया नींगल जूं करम मिटें नहीं, करम मिटवा रो न जांणें उपाय हो॥ ४ ॥

आठ करमां में च्यार घण घातीया, त्यांसू चेतन गुणां री हुइ घात हो।
ते अंसमात्र षय उपसमा रहे सदा, तिण सूं उजलो रहें अंसमात हो॥ ५ ॥

कायक छन घातीया षयउपसम हूआं, जब कोयक उदे रह्या लार हो।
षय उपसम थी जीव उजलो हुवो, उदे थी उजलो नही छे लिगार हो॥ ६ ॥

कायंक करम खय हुवे, कायंक उपसम हुवें ताय हो।
ते षय उपसम भाव छे उजलो, चेतन गुण पर्याय हो॥ ७ ॥

जिम २ करम षय उपसम हुवें, तिम २ जीव उजल हुवें आंम हो।
जीव उजलो तेहिज निरजरा, ते भाव जीव छें तांम हो॥ ८ ॥

देस थकी जीव उजलो हुवे, तिणने निरजरा कही भगवांन हो।
सर्व उजल ते मोष छें, ते मोष छे परम निधांन हो॥ ९ ॥

ग्यांनावरणी षय उपसम हूआं नीपजे, च्यार ग्यांन नें तीन अग्यांन हो।
भणवो आचारंग आदि दे, चवदे पूर्व रो ग्यांन हो॥ १० ॥

ग्यांनावरणी री पांच प्रकत मझे, दोय षयउपसम रहें छे सदीव हो।
तिण सूं दोय अग्यांन रहे सदा, अंस मात्र उजल रहे जीव हो॥ ११ ॥

मिथ्याती रे तो जगन दोय अग्यांन छें, उतकष्टा तीन अग्यांन हो।
देस उणों दस पूर्व उतकष्टो भणे, इतरो उतकष्टो षयउपसम अग्यांन हो ॥ १२ ॥
समदिष्टी रे जगन दोय ग्यांन छें, उतकष्टा च्यार ग्यांन हो।
उतकष्टो चवदें पूर्व भणें, एहवो षयउपसम भाव निधांन हो ॥ १३ ॥
मत ग्यांनावरणी षयउपसम हूआं, नीपजें मत ग्यान मत अग्यांन हो।
सुरत ग्यांनावरणी षयउपसम हूआ, नीपजे सुरत ग्यान अग्यान हो ॥ १४ ॥
वले भणवो आचारग आदि दे, समदिष्टी रे चवदें पूर्व ग्यांन हो।
मिथ्याती उतकष्टो भणे, देस उणो देस पूर्व लग जाण हो ॥ १५ ॥
अवधि ग्यांनावरणी षयउपसम हूआं, समदिष्टी पामें अवध ग्यांन हो।
मिथ्या दिष्टी ने विभंग नाण उपजे, षयउपसम परमांण जांण हो ॥ १६ ॥
मनपजवावर्णी षयउपसम्यां, उपजें मनपजवा नांण हो।
ते साधु समदिष्टी ने उपजे, एहवो षयउपसम भाव परधांन हो ॥ १७ ॥
ग्यांन अग्यांन सागार उपीयोग छें, दोया रो एक सभाव हो।
करम अलगा हूआं नीपजें, ए षयउपसम उजल भाव हो ॥ १८ ॥
दरसणावर्णी षयउपसम हूआं, आठ बोल नीपजे श्रीकार हो।
पांच इंद्री नें तीन दरसण हुवे, ते निरजरा उजला तंत सार हो ॥ १९ ॥
दरसणावर्णी री नव प्रकत मझे, एक प्रकत षयउपसम सदीव हो।
तिण सूं अचषू दरसण ने फरस इदरी रहे, षयउपसम भाव जीव हो ॥ २० ॥
चषू दरसणावर्णी षयउपसम हूआ, चषू दरसण ने चषू इंद्री होय हो।
करम अलगा हूआं उजलो हूओ, जब देखवा लागो सोय हो ॥ २१ ॥
अचषू दरसणावर्णी वशेष थी, षयउपसम हुवें तिण वार हो।
चषू टाले सेष इंद्री, षयउपसम हुवे इंद्री च्यार हो ॥ २२ ॥
अवधि दरसणावर्णी षयउपसम हुआं, उपजें अवधि दरसण वशेष हो।
जब उतकष्टो देखे जीव एतलो, सर्व रूपी पुदगल ले देख हो ॥ २३ ॥
पांच इंद्री ने तीनूं इ दरसण, ते षयउपसम उपीयोग अणाकार हो।
ते वांनगी केवल दरसण माहिली, तिणमें संका म राखो लिगार हो ॥ २४ ॥
मोह करम षयउपसम हूआं, नीपजे आठ बोल अमांम हो।
च्यार चारित ने देस विरत नीपजें, तीन दिष्टी उजल होय तांम हो ॥ २५ ॥
चारित मोहं री पचीस प्रकत मझे, केइ सदा षयउपसम रहे ताय हो।
तिण सूं अंस मात उजलो रहे, जब भला वरते छे अधवसाय हो ॥ २६ ॥
कदे षयउपसम इधकी हूवें, जब इधका गुण हुवें तिण मांय हो।
खिमा दया संतोषादिक गुण वधे, भली लेश्यादि वरतें जब आय हो ॥ २७ ॥

भला परिणांम पिण वरते तेहनें, भला जोग पिण वरते ताय हो।
धर्म ध्यांन पिण ध्यावे किण समें, ध्यावणी आवें मिटीयां कषाय हो॥ २८॥
ध्यांन परिणाम जोग लेस्या भली, वले भला वरते अधवसाय हो।
सारा वरते अंतराय षयउपसम हूआं, मोह करम अलगा हूआं ताय हो॥ २९॥
चोकड़ी अंताणुबंधी आदि दे, घणीं प्रकृत्यां षयउपसम हुवें ताय हो।
जब जीव रे देस विरत नीपजे, इणहीज विध च्यारूं चारित आय हो॥ ३०॥
मोहणी षयउपसम हूआं नीपनों, देस विरत नें चारित च्यार हो।
वले षिमा दयादिक गुण नीपनां, सगलाइ गुण श्रीकार हो॥ ३१॥
देस विरत नें च्यारूंई चरित भला, ते गुण रतनां री खांन हो।
ते खायक चरित री वांनगी, एहवो षयउपसम भाव परधांन हो॥ ३२॥
चारित नें विरत संवर कह्यों, तिण सूं पाप रूंधें छें ताय हो।
पिण पाप झरी नें उजल हूओं, तिणनें निरजरा कही इण न्याय हो॥ ३३॥
दरसण मोहणी षयउपसम हूआं, नीपजें साची सुध सरधांन हो।
तीनूं दिष्ट में सुध सरधान छें, ते तो षयउपसम भाव निधांन हो॥ ३४॥
मिथ्यात मोहणी षयउपसम हुआं, मिथ्यादिष्टी उजली होय हो।
जब केयक पदारथ सुध सरधले, एहवो गुण नीपजें छें सोय हो॥ ३५॥
मिश्र मोहणी षयउपसम हुआं, समिथ्या दिष्टी उजली हुवें तांम हो।
जब घणां पदारथ सुध सरधलें, एहवो गुण नीपजें अमांम हो॥ ३६॥
समकत मोहणी षयउसपसम हूआं, नीपजें समकत रतन परधांन, हो।
नव ही पदारथ सुध सरधलें, एहवो षयउपसम 'भाव निधांन हो॥ ३७॥
मिथ्यात मोहणी उदे छें ज्यां लगे, सममिथ्या दिष्टी नही आवंत हो।
मिश्र मोहणी रा उदे थकी, समकत नही पावंत हो॥ ३८॥
समकत मोहणी ज्यां लगें उदे रहें, त्यां लग षायक समकत आवें नाय हो।
एहवी छाक छै दरसण मोह करम नी, न्हांखे जीव नें भ्रमजाल माय हो॥ ३९॥
षयउपसम भाव तीनोंइ दिष्टी छें, ते सगलोइ सुध सरधांन हो।
ते खायक समकत माहिली, वानगी मातर गुण निधांन हो॥ ४०॥
अंतराय करम षयउपसम हूआं, लबध आठ गुण नीपजें श्रीकार हो।
पांच लबध तीन वीर्य नीपजे, हिवे तेहनो सुणो विसतार हो॥ ४१॥
पांचोंइ प्रकत अंतराय नी, सदा षयउपसम रहें छे साख्यात हों।
तिण सूं पांचूं लबध बाल वीर्य, उजल रहे छें अल्पमात हो॥ ४२॥
दानांतराय षयउपसम हूआं, दांन देवा री लबध उपजंत हो
लाभांतराय षयउपसम हूआं, लाभ री लबध खुलंत हो॥ ४३॥

भोगअंतराय - षयउपसम्यां, भोग लबध उपनें छे ताय हो।
उपभोगअंतराय खयउपसम हूआं, उपभोग लबध उपजें आय हो॥ ४४ ॥
दांन देवा री लबध निरंतर, दांन देवे ते जोग व्यापार हो।
लाभ लबध पिण निरंतर रहें, वस्त लाभे ते किण ही वार हो॥ ४५ ॥
भोग लबध तो रहे छे निरंतर, भोग भोगवे ते जोग व्यापार हो।
उपभोग पिण लबध छे निरंतर, उपभोग भागवे जिण वार हो॥ ४६ ॥
अंतराय अलगी हूआं जीव रे, पुन सारू मिलसी भोग उपभोग हो।
साधु पुदगल भोगवे ते सुभ जोग छें, और भोगवे ते असुभ जोग हो॥ ४७ ॥
वीर्य अंतराय षयउपसम हूआं, वीर्य लबध उपजें छे ताय हो।
वीर्य लबध ते सगत छे जीव री, उतकष्टी अनती होय जाय हो॥ ४८ ॥
तिण वीर्य लबध रा तीन भेद छें, तिणरी करजो पिछांण हो।
बाल वीर्य कह्यों छे बाल रो, ते चोथा गुणठाणा तांई जांण हो॥ ४९ ॥
पिंडत वीर्य कह्यो पिडत तणो, छठा थी लेइ चवदमे गुण ठांण हो।
बाल पिंडत वीर्य कह्यो छे श्रावक तणो, ए तीनोई उजल गुण जांण हो॥ ५० ॥
कदे जीव वीर्य नें फोडवे, ते छे जोग व्यापार हो।
सावद्य निरवद तो जोग छे, ते वीर्य सावद्य नही छे लिगार हो॥ ५१ ॥
वीर्य तो निरंतर रहे, चवदमां गुण ठांणा लग जांण हो।
बारमा ताइ तो षयउपसम भाव छे, खायक तेरमे चवदमें गुण ठाण हो॥ ५२ ॥
लबध वीर्य नें तो वीर्य कह्यो, करण वीर्य ने कह्यो जोग हो।
ते पिण सगत वीर्य ज्यां लगे, त्या लग रहे पुदगल सजोग हो॥ ५३ ॥
पुदगल विण वीर्य सगत हुवे नही, पुदगल विना नही जोग व्यापार हो।
पुदगल लागा छे ज्यां लग जीव रे, जोग वीर्य छे ससार मझार हो॥ ५४ ॥
वीर्य निज गुण छे जीव रो, अतराग अलगा हूआं जाण हो।
ते वीर्य निश्चेइ भाव जीव छे, तिण मे सका मूल म आण हो॥ ५५ ॥
एक मोह करम उपसम हुवे, जब नीपजे उपसम भाव दोय हो।
उपसम समकत उपसम चारित्त हुवे, ते तो जीव उजलो हुवो सोय हो॥ ५६ ॥
दरसण मोहणी करम उपसम हुवां, निपजें उपसम समकत निधान हो।
चारित मोहणी उपसम हूआं, परगटे उपसम चारित परधांन हो॥ ५७ ॥
च्यार घणघातीया करम षय हुवे, जब परगट हुवे खायक भाव हो।
ते गुण सरवथा उजला, त्यारो जूओ २ सभाव हो॥ ५८ ॥
ग्यांनावरणी सरवथा खय हूआं, उपजें केवल ग्यांन हो।
दरसणावर्णी पिण खय हुवें सरवथा, उपजें केवल दरसण परधांन हो॥ ५९ ॥

मोहणी करम खय हुवें सरवथा, बाकी रहें नही अंसमात हो।
जब खायक समकत परगटें, वले खायक चारित जथाख्यात हो ॥ ६० ॥
दरसण मोहणी खय हुवे सरवथा, जब निपजें खायक समकत परधांन हो।
चारित मोहणी खय हूआं, नीपजें खायक चारित निधांन हो ॥ ६१ ॥
अंतराय करम अलगो हूआ, खायक वीर्य सगत हुवें ताय हो।
खायक लब्ध पाचूं इ परगटे, किण ही वात री नही अंतराय हो ॥ ६२ ॥
उपसमय खायक षयउपसम निरमला, ते निज गुण जीव रा निरदोष हो।
ते तो देस थकी जीव उजलो, सर्व उजलो ते मोख हो ॥ ६३ ॥
देस विरत श्रावक तणी, सर्व विरत साधु री छें ताय हो।
देस विरत समाइ सर्व विरत में, ज्यूं निरजरा समाइ मोख मांय हो ॥ ६४ ॥
देस थी जीव उजले ते निरजरा, सर्व उजलो ते जीव मोख हो।
तिण सूं निरजरा ने मोख दोनूं जीव छे, उजल गुण जीव रा निरदोष हो ॥ ६५ ॥
जोड़ कीधी निरजरा ओलखायवा, नाथ दुवारा सहर मझार हो।
सवत अठारे वरस छपने, फागण सुद दसम गुरवार हो ॥ ६६ ॥

ढाल : १०

दुहा

निरजरा गुण निरमल कह्यो, उजल गुण जीव रो वशेख।
ते निरजरा हुवे छे किण विधें, सुणजो आण ववेक ॥ १ ॥
भूख तिरषा सी तापादिक, कष्ट भोगवे विविध परकार।
उदे आया ते भोगव्यां, जब करम हुवे छें न्यार ॥ २ ॥
नरकादिक दुःख भोगव्या, करम घस्यां थी हलको थाय।
आ तो सहजा निरजरा हुइ जीव रे, तिणरो न कीयो मूल उपाय ॥ ३ ॥
निरजरा तणो कामी नही, कष्ट करे छे विविध परकार।
तिणरा करम अल्प मातर झरे, अकाम निरजरा नो एह विचार ॥ ४ ॥
अह लोक अर्थें तप करे, चक्रवतादिक पदवी कांम।
केइ परलोक ने अर्थे करें, नही निरजरा तणा परिणाम ॥ ५ ॥
केइ जस महिमा वधारवा, तप करे छे ताम।
इत्यादिक अनेक कारण करे, ते निरजरा कही छे अकांम ॥ ६ ॥
सुध करणी करें निरजरा तणी, तिण सू करम कटे छे ताम।
थोडो घणो जीव उजलो हुवे, ते सुणजो राखे चित ठाम ॥ ७ ॥

ढाल

[पूज्य भिखन जी रो समरण करता]

देस थकी जीव उजल हुवो छें, ते तो निरजरा अनूप जी।
हिवे निरजरा तणी सुध करणी कहं छू, ते सुणजो धर चूंप जी॥
आ सुध करणी छें कर्म काटण री॥ १ ॥
ज्यूं साबू दे कपडा नें तपावे, पांणी सूं छांटे करें संभाल जी।
पछे पांणी सूं धोवें कपडा ने, जब मेल छूटे ततकाल जी॥ आ० २ ॥
ज्यूं तप कर नें आतम नें तपावे, ग्यांन जल सूं छांटे ताय जी।
ध्यान रूप जल मांहें भखोले, जब करम मेल छंट जाय जी॥ ३ ॥
ग्यांन रूप सावण सुध चोखे, तप रूपी निरमल नीर जी।
धोबी ज्यूं छें अंतर आतमा, ते धोवे छे निज गुण चीर जी॥ ४ ॥
कांमी छें एकंत करम काटण रो, और वंछा नही काय जी।
तो करणी एकंत निरजरा री, तिण सूं करम भड़ जाय जी॥ ५ ॥
करम काटण री करणी चोखी, तिणरा छे बारे भेद जी।
तिण करणी कीयां जीव उजल हुवें छै, ते सुणजो आंण उमेद जी॥ ६ ॥
अणसण करे च्यारूं आहार त्यागे, करें जावजीव पचखांण जी।
अथवा थोडा काल तांइ त्यागे, एहवी तपसा करें जांण २ जी॥ ७ ॥
सुध जोग रूंध्या साधु रे हूवो सवर, श्रावक रे विरत हुइ ताय जी।
पिण कष्ट सह्यां सू निरजरा हुवे, तिण सू घाल्यो छे निरजरा माय जी॥ ८ ॥
ज्यूं २ भूख तिरषा लागें, ज्यू २ कष्ट उपजे अतंत जी।
ज्यूं २ करम कटे हुवें न्यारा, समें २ खिरे छें अनंत जी॥ ९ ॥
उणों रहे ते उणोदरी तप छे, ते तो दरब नें भाव छें न्यार जी।
दरब ते ऊपगरण उणा राखें वले उणोइ करें आहार जी॥ १० ॥
भाव उणोदरी क्रोधादिक वरजे, कलहादिक दिये छें निवार जी।
समता भाव छें आहार उपधि थी, एहवो उणोदरी तप सार जी॥ ११ ॥
भिष्याचरी तप भिष्या त्याग्यां हुवे, ते अभिग्रहा छें विवध परकार जी।
ते तो दरब षेतर काल भाव अभिग्रह छें, त्यांरो छे बोहत विस्तार जी॥ १२ ॥
रस रो त्याग करें मन सुधे, छांड्यो विगयादिक रो सवाद जी।
अरस विरस आहार भोगवे समता सूं, तिणरे तप तणी हुवे समाद जी॥ १३ ॥
काया कलेस तप कष्ट कीयां हुवें, आसण करे विवध परकार जी।
सी तापादिक सहे खाज न खणे, वले न करें सोभा नें सिणगार जी॥ १४ ॥

परीसंलीणीया तप च्यार परकारें, त्यांरा जूजूआ छें नांम जी।
इंद्री कषाय नें जोग संलीण्या, विवत सेणासण सेवणा तांम जी ॥ १५ ॥
सोइंद्री नें विषें नां सब्द सूं रुंधे, विषे सब्द न सुणे किवार जी।
कदा विषे रा सब्द कानां में पडीया, तो राग धेष न करे लिगार जी ॥ १६ ॥
इम चषू इंद्री रुप सूं संलीनता, घाण इंद्री गंध सुं जांण जी।
रसइंद्री रस सूं ने फरस इंद्री फरस सूं, सुरत इंद्री ज्यूं लीजो पिछांण जी ॥ १७ ॥
क्रोध उपजावारो रुंधण करवो, उदे आयो निरफल करे तांम जी।
मांन माया लोभ इम हिज जांणों, कषाय संलीणीया तप हुवें आंम जी ॥ १८ ॥
पाडुआ मन ने रुंधे देणों, भलो मन परवरतावणो तांम जी।
इम हिज वचन नें काया जांणों, जोग संलीणीया हुवें आंम जी ॥ १९ ॥
अस्त्री पसू पिंडग रहीत थांनक सेवे, ते सुध निरदोषण जांण जी।
पीढ पाटादिक निरदोषण सेवें, विवत सेंणासण एम पिछांण जी ॥ २० ॥
ए छव परकारें बाह्य तप कह्यों छें, ते परसिध चावो दीसंत जी।
हिवें छ परकारें अभितर तप कहूं छूं, ते भाख्यो छे श्री भगवंत जी ॥ २१ ॥
प्रायछित कह्यों छे दस परकारें, दोष ओलाए प्रायछित लेवंत जी।
ते करम खपाय आराधक थावे, ते तो मुगत में वेगो जावंत जी ॥ २२ ॥
विनों तप कह्यों सात परकारें, त्यांरो छें बोहत विसतार जी।
ग्यांन दरसण चारित मन विनों, वचन काया नें लोग ववहार जी ॥ २३ ॥
पांचूं ग्यांन तणा गुणग्रांम करणा, ए ग्यांन विनों करणो छें एह जी।
दरसण विनां रा दोय भेद छें, सुसरषा ने अणासातणा तेह जी ॥ २४ ॥
सुसरषा वडां री करणी, त्यांने वंदणा करणी सीम नांम जी।
ते सुसरषा दस विध कही छें, त्यांरा जूआ जूआ नांम छे तांम जी ॥ २५ ॥
गुर आयां उठ उभो होवणो, आसन छोडणो तांम जी।
आसन आमंत्रणों हरष सूं देणो, सतकार नें समांण देणो आंम जी ॥ २६ ॥
वंदणा कर हाथ जोडी रहे उभो, आवता देख सांह्मों जाय जी।
गुर उभा रहे त्यां लग उभा रहिणो, वें जायें जब पोहचावण जावें ताय जी ॥ २७ ॥
अणअसातणा विनां रा भेद, पेंतालीस कह्या जिणराय जी।
अरिहंत नें अरिहंत परुप्यो धर्म, वले आचार्य नें उवझाय जी ॥ २८ ॥
थिवर कुल गण संघ नों विनों, किरीया वादी संभोगी जांण जी।
मत ग्यांनादिक पांचूंई ग्यांन रो, ए पनरेई बोल पिछांण जी ॥ २९ ॥
यां पनरां बोलां में पांच ग्यांन फेर कह्या छें, ते दीसे छे चारित सहीत जी।
ए पांच ग्यांन नें फेर कह्या त्यांरो, विनां तणी ओर रीत जी ॥ ३० ॥

यांरी आसातना टालणी ने विनों करणों, भगत कर देणो समांन जी।
गुणग्रांम करे नें दीपावणा त्यांनें, दरसण विनों छें सुध सरधांन जी॥ ३१ ॥
सामायक आदि दे पांचूंई चारित, त्यांरो विनों करणो जथाजोग जी।
सेवा भगत त्यांरी हरख सूं करणी, त्यांसूं करणो निरदोष संभोग जी॥ ३२ ॥
सावद्य मन नें परो निवारे, ते सावद्य छें बारे परकार जी।
बारे परकार निरवद मन परवरतावे, तिण सूं निरजरा हुवे श्रीकार जी॥ ३३ ॥
इम हिज सावद्य वचन बारे भेदे, तिण सावद्य नें देवे निवार जी।
निरवद वचन बोले निरदोषण, बारेइ बोल वचन विचार जी॥ ३४ ॥
काया अजेंणा सूं नही परवरतावे, तिणरा भेद कह्या सात जी।
ज्यूं सात भेद काया अजेंणा सूं परवरतावे, जब करम तणी हुवें घात जी॥ ३५ ॥
लोग ववहार विनों कह्यों सात परकारे, गुर समीपे वरतवो तांम जी।
गुरवादिक रे छांदे चालणो, ग्यांनादिक हेते करणों त्यांरो कांम जी॥ ३६ ॥
भणायो त्यांरो विनों वीयावच करणी, आरत गवेष करणों त्यांरो कांम जी।
प्रसताव अवसर नों जांण हुवेणो, सर्व कार्य करणो अभिरांम जी॥ ३७ ॥
वीयावच तप छे दस परकारे, ते वीयावच सावां री जांण जी।
करमां री कोड खपे छें तिण थी, नेड़ी हुवे छें निरवांण जी॥ ३८ ॥
सझाय तप छें पांच परकारे, जे भाव सहीत ही करे सोय जी।
अर्थ ने पाठ विवरा सुध गिणीया, करमां रा भड खय होय जी॥ ३९ ॥
आरत रोद्र ध्यांन निवारे, ध्यावें सुकल ध्यांन जी।
ध्यावतो २ उतकष्टों ध्यावें, तो उपजें केवल ग्यांन जी॥ ४० ॥
विउसग तप छें तजवारो नांम, ते तो दरब नें भाव छें दोय जी।
दरब विउसग च्यार परकारे, ते विवरो सुणो सहू कोय जी॥ ४१ ॥
सरीर विउसग सरीर रो तजवो, इम गण नों विउसग जांण जी।
उपधि नों तजवो ते उपधि विउसग, भात पांणी रो इम हिज पिछांण जी॥ ४२ ॥
भाव विउसग रा तीन भेद छे, कषाय संसार नें करम जी।
कषाय विउसग च्यार परकारे, क्रोधादिक च्यारूं छोड्यां छें धर्म जी॥ ४३ ॥
संसार विउसग संसार नों तजवो, तिणरा भेद छें च्यार जी।
नरक तिर्यंच मिनष नें देवा, त्यांने तजने त्यांसूं हुवें न्यार जी॥ ४४ ॥
करम विउसग छें आठ परकारे, तजणा आठूंइ करम जी।
त्यांनें ज्यूं २ तजे हल को होवें, एहवी करणी थी निरजरा धर्म जी ४५ ॥
बारे परकारे तप निरजरा री करणी, जे तपसा करे जांण जी।
ते करम उदीर उदे आंण खेरे, त्यांने नेड़ी होसी निरवांण जी॥ ४६ ॥

साध रे बारे भेदे तपसा करतां, जिहां २ निरवद जोग रूंधाय जी।
तिहां २ संवर हुवें तपसा रे लारे, तिण सूं पुन लागता मिट जाय जी ॥ ४७ ॥
इण तप माहिलो तप श्रावक करतां, कठे उसभ जोग रूंधाय जी।
जब विरत संवर हुवें तपसा लारे, लागता पाप मिट जाय जी ॥ ४८ ॥
इण तप माहिलो तप इंविरती करतां, तिणरे पिण करम कटाय जी।
कोइ परत संसार करे इण तप थी, वेगो जाए मुगत रे मांय जी ॥ ४९ ॥
साध श्रावक समदिष्टी तपसा करतां, त्यांरे उतकष्टी टले करम छोत जी।
कदा उतकष्टो रस आवें तिणरे, तो बंधे तीर्थंकर गोत जी ॥ ५० ॥
तप थी आंणे संसार नों छेहडो, वले आंणे करमां रो अंत जी।
इण तपसा तणे परतापे जीवडो, संसारी रो सिध होवंत जी ॥ ५१ ॥
कोड भवां रा करम संचीया हुवें तो, खिण में दिये खपाय जी।
एहवो छें तप रतन अमोलक, तिणरा गुण रो पार न आय जी ॥ ५२ ॥
निरजरा तो निरवद उजल हुवां थी, करम निरवरते हुओ न्यार जी।
तिण लेखे निरजरा निरवद कहीए, बीजूं तो निरवद नहीं छें लिगार जी ॥ ५३ ॥
इण निरजरा तणी करनी छें निरवद, तिणसूं करमां री निरजरा होय जी।
निरजरा ने निरजरा री करणी, ए तो जूआ जूआ छे दोय जी ॥ ५४ ॥
निरजरा तो मोष तणो अंस निश्चें, देश थकी उजलो छें जीव जी।
जिणरे निरजरा करण री चूंप लागी छे, तिण दीधी मुगत री नींव जी ॥ ५५ ॥
सहजां तो निरजरा अनाद री हुवें छें, ते होय २ ने मिट जाय जी।
करम बंधण सूं निवरत्यो नांहीं, संसार में गोता खाय जी ॥ ५६ ॥
निरजरा तणी करणी ओलखावण, जोड कीधी नाथ दुवारा मझार जी।
समत अठारे बरस छपने, चेत विद बीज ने गुरवार जी ॥ ५७ ॥

●

८ : बंध पदारथ

ढाल : ११

दुहा

आठमों पदारथ बंध छें, तिण जीव नें राख्यो छें बंध।
जिण बंध पदार्थ नहीं ओलख्यो, ते जीव छें मोह अंध ॥ १ ॥
बंध थकी जीव दबीयो रहें, कांई न रहें उघाडी कोर।
तिण बंध तणा प्रबल थकी, कांई न चले जोर ॥ २ ॥
तलाव रूप तो जीव छें, तिणमें पडीया पांणी ज्यूं बंध जांण।
नीकलता पांणी रूप पुन पाप छें, बंध नें लीजो एम पिछांण ॥ ३ ॥
एक जीव दरब छे तेहने, असंख्यात परदेश।
सगला परदेसां आश्रव दुवार छें, सगला परदेसां करम परवेश ॥ ४ ॥
मिथ्यात इविरत नें परमाद छें, वले कषाय जोग विख्यात।
यां पांचां तणा बीस भेद छें, पनरे आश्रव जोग में समात ॥ ५ ॥
नाला रूप आश्रव नाला करम नां, ते रूंध्यां हुवें संवर दुवार,
करम रूप जल आवतो रहे, जब बंध न हुवें लिगार ॥ ६ ॥
तलाव नों पाणी घटे तिण विधे, जीव रे घटे छ करम।
जब कायक जीव उजल हुवे, ते तो छे निरजरा धर्म ॥ ७ ॥
कदे तलाव रीतो हुवें, सर्व पांणी तणो हुवें सोष
ज्यूं सर्व करमां नों सोषंत हुवे, रीता तलाव ज्यूं मोष ॥ ८ ॥
बंध तो छे आठ करमां तणो, ते पुदगल नीं पर्याय।
तिण बंध तणी ओलखणा कहूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ९ ॥

ढाल

[अइ २ कर्म विंडम्बना]

बंध नीपजें छे आश्रव दुवार थी, तिण बंध ने कह्यों पुन पापो जी।
ते पुन पाप तो दरव रूप छें, भावे बंध कह्यों जिण आपो जी ॥
बंध पदारथ ओलखो* ॥ १ ॥
ज्यूं तीथंकर आय उपनां, ते तो दरव तीर्थंकर जांणो जी।
भावे तीथंकर तो जिण समे, होसी तेरमें गुणठांणो जी ॥ बं २ ॥
ज्यूं पुन नें पाप लागो कह्यों, ते तो दरव छें पुन नें पापो जी।
भावे पुन पाप तो उदे आयां हुसी, सुख दुःख भोग संतापो जी ॥ ३ ॥
तिण बंध तणा दोय भेद छें, एक पुन तणो बंध जांणो जी।
बीजो बंध छें पाप रो, दोनूं बंध री करजो पिछांणो जी ॥ ४ ॥

* यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

पुन नों बंध उदे हूआं, जीव नें साता सुख हुवें सोयो जी।
पाप नों बंध उदे हूआ, विविध पणे दुःख होयो जी ॥ ५ ॥
बंध उदे नही ज्यां लग जीव ने, सुख दुःख मूल न होय जी।
बंध तो छता रूप लागो रहे, फोडा न पाडे कोयो जी ॥ ६ ॥
तिण बंध तणा च्यार भेद छे, त्यांने रूडी रीत पिछांणों जी।
प्रकतबंध नें थितबंध दुसरो, अनुभाग नें परदेस बंध जांणों जी ॥ ७ ॥
प्रकतबंध छे करमां री जूजूइ, ते करमां रा सभाव रे न्यायो जी।
बांधी छे तिण समे बंध छें, जेसी बांधी तेसी उदे आयो जी ॥ ८ ॥
तिण प्रकत ने मापी छे काल सूं, इतरा काल तांइ रहसी तांमो जी।
पछे तो प्रकत विललावसी, थित सूं प्रकत बंध छें आंमो जी ॥ ९ ॥
अनुभाग बंध रस विपाक छें, जेसो जेसो रस देसी ताह्यो जी।
ते पिण प्रकत नो बंध रस कह्यों, बांध्या तेसांइज उदे आयो जी ॥ १० ॥
परदेश बंध कह्यों प्रकत बंध तणो, प्रकत प्रकत रा अनंत परदेसो जी।
ते लोलीभूत जीव सूं होय रह्या, प्रकत बंध ओलखाई वशेषो जी ॥ ११ ॥
आठ करमा री प्रकत छे जूजूई, एकी की रा अनंत परदेसो जी।
ते एकी की परदेस जीव रे, लोली भूत हुवा छे वशेषो जी ॥ १२ ॥
ग्यांनावरणी दरसवरणी वेदनी, वले आठमों करम अंतरायो जी।
यांरी थित छें सगला री सारिषी, ते सुणजो चित्त ल्यायो जी ॥ १३ ॥
थित छें यां च्यारूं करमां तणी, अंतरमुहरत परिमांणो जी।
उतकष्टी थित यां च्यारूं करमां तणी, तीस कोडा कोडा सागर जांणों जी ॥ १४ ॥
थित दरसण मोहणी करम नीं, जगन तो अंतरमुहरत परमांणो जी।
उतकष्टी थित छे एहनी, सितर कोडा कोड सागर जांणों जी ॥ १५ ॥
जिगन थित चारित मोहणी करम नी, अंरमुहरत कही जगदीसो जी।
उतकष्टी थित छे एहनी, सागर कोडा कोड चालीसो जी ॥ १६ ॥
थित कही छे आउखा करम नीं, जिगन अंतरमुहरत होयो जी।
उतकष्टी थित सागर तेतीस नीं, आगे थित आउखा री न कोयो जी ॥ १७ ॥
थित नांम ने गोत्र करम तणी, जगन तो आठ मुहरत सोयो जी।
उतकष्टी एकीका करम नीं, बीस कोडा कोड सागर होयो जी ॥ १८ ॥
एक जीव रे आठ करमां तणां, पुदगल रा परदेस अनंतो जी।
ते अभवी जीवां थी मापीयां, अनंत गुणां कह्या भगवंतो जी ॥ १९ ॥
ते अवस उदे आसी जीव रे, भोगवीयां विण नहीं छूटायो जी।
उदे आयां विण सुख दुःख हुवें नही, उदे आयां सुख दुःख थायो जी ॥ २० ॥

सुभ परिणांमां करम बांधीया, ते सुभ पणे उदे आसी जी।
असुभ परिणांमां करम बांधीया, तिण करमां थी दुःख थासी जी ॥ २१ ॥
पांच वरणा आठोंइ करम छें, दोय गंध नें रस पांचूंई जी।
चोफरसी आठूंइ करम छें, रूपी पुदगल करम आठोंइ जी ॥ २२ ॥
करम तो लूखा ने चोपड्या, वले ठंढा उंना होइ जी।
करम हलका नही भारी नही, सूहाली नें खरदरा न कोइ जी ॥ २३ ॥
कोइ तलाव जल सूं पूर्ण भर्‍यो, खाली कोर न रही कायो जी।
ज्यूं जीव भर्‍यो करमां थकी, आ तो उपमा देस थी ताह्यो जी ॥ २४ ॥
असंख्याता परदेस एक जीव रे, ते असंख्याता जेम तलावो जी।
सारा परदेसं भरीया करमां थकी, जांणें भरीया चोखूणी बावो जी ॥ २५ ॥
एक एक परदेस छें जीव नों, तिहां अनंता करम नां परदेसो जी।
तें सारा परदेस भरीया छें बाव ज्यूं, करम पुदगल कीयों छें परवेसो जी ॥ २६ ॥
तलाव खाली हुवे छे इण विधे, पेंहला तो नाला देवे रूंधायो जी।
पछे मोरियादिक छोडे तलाव री, जब तलाव रीतो थायो जी ॥ २७ ॥
ज्यूं जीव रे आश्रव नालो रूंध दे, तपसा करें हरख सहीतो जी।
जब छेहडो आवें सर्व करम नों, तव जीव हुवे करम रहीतो जी ॥ २८ ॥
करम रहीत हुवो जीव निरमलो, तिण जीव ने कहिजे मोखो जी।
ते सिघ हुवो छे सासतो, सर्व करम बंध कर दीयो सोषो जी ॥ २९ ॥
जोड कीधीं छे बंध ओलखायवा, नाथ दुवारा सहर मझारो जी।
संमत अठारे नें वरस छपनें, चेत विद बारस सनीसर वारो जी ॥ ३० ॥

९ : मोख पदारथ

ढाल : १२

दुहा

मोख पदार्थ नवमों कह्यों, ते सगला मांहे श्रीकार।
सर्व गुणां करी सहीत छे, त्यांरा सुखां रो छेह न पार ॥ १ ॥
करमां सूं मूकाणा ते मोख छे, त्यांरा छे नांम विशेप।
परमपद निरवाण ते मोख छें, सिद्ध सिव आदि छे नांम अनेक ॥ २ ॥
परमपद उत्कष्टो पद पामीयो, तिण सूं परमपद त्यारो नांम।
करम दावानल मेट सीतल थया, तिणसूं निरवांण नांम छें तांम ॥ ३ ॥
सर्व कार्य सिधा छें तेहनां, तिण सूं सिध कह्या छें तांम।
उपद्रव्य करेनें रहीत हूआं, तिण सू सिव कहीजे त्यांरो नांम ॥ ४ ॥
इण अनुसारे जांणजो, मोख रा गुण परमांणे नांम।
हिवें मोख तणा सुख वरणवूं, ते सुणजो राखे चित्त ठांम ॥ ५ ॥

ढाल

(पाखंड वधसी आरे पाचवे)

मोख पदार्थ नां सुख सासता रे, तिण सुखां रो कदेय न आवे अंत रे।
ते सुख अमोलक निज गुण जीव रा रे, अनत सुख भाप्या छें भगवंत रे ॥
मोख पदार्थ छें सारां सिरे रे* ॥ १ ॥
तीन काल रा सुख देवां तणां रे, ते सुख इधका घणां अथाग रे।
ते सगलाइ सुख एकण सिध ने रे, तुले नावे अनंतमे भाग रे ॥ मो० २ ॥
संसार नां सुख तो छें पुदगल तणां रे, ते तो सुख निश्चें रोगीला जांण रे।
ते करमां वस गमता लागें जीव नें रे, त्यां सुखां री बुधिवंत करो पिछांण रे ॥ ३ ॥
पांव रोगीलो हुवें छें तेहनें रे, अतंत मीठी लागें छें खाज रे।
एहवा सुख रोगीला छें पुन तणा रे, तिण सूं कदेय न सीझे आतम काज रे ॥ ४ ॥
एहवा सुखां सूं जीव राजी हुवें रे, तिणरे लागे छें पाप करम रा पूर रे।
पछें दुःख भोगवे छें नरक निगोद में रे, मुगति सुखां सूं पडीयो दूर रे ॥ ५ ॥
छूटा जनम मरण दावानल तेह थी रे, ते तो छें मोष सिध भगवंत रे।
त्यां आठोंइ करमां नें अलगा कीयां रे, जब आठोइ गुण नीपना अनंत रे ॥ ६ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ते मोख सिध भगवंत तो इंहा हिज हूआं रे, पछें एक समा में उंचा गया छे थेट रे।
सिध रहिवा नो खेतर छें तिहां जाए रह्या रे, अलोक सूं जाए अड्या छे नेंट रे ॥ ७ ॥
अनंतो ग्यांन नें दरसन तेहनों रे, वले आतमीक सुख अनंतों जाण रे।
षायक समकत छें सिघ वीतराग तेहने रे, वले अवगाहणा अटल छें निरवांण रे ॥ ८ ॥
अमूरतीपणों त्यांरो परगट हूवो रे, हलको भारी न लागे मूल लिगार रे।
तिण सूं अगुरलघू नें अमूरती कह्यां रे, ए पिण गुण त्यांमें श्रीकार रे ॥ ८ ॥
अंतराय करम सूं तो रहीत छे रे, त्यांरे पुदगल सुख चाहीजे नांय रे।
ते निज गुण सुखां मांहे भिले रह्यां रे, कांइ उणारत रही न दीसे कांय रे ॥ १० ॥
छूटा कलकली भूत संसार थी रे, आठोइ करमां तणो कर सोष रे।
ते अनंता सुख पांम्यां सिवे रमणी तणां रे, त्यांनें कहिजें अविचल मोख रे ॥ ११ ॥
त्यारा सुखां नें नही कांई ओपमा रे, तीनोंइ लोक संसार मझार रे।
एक धारा त्यांरा सुख सासता रे, ओछा इधका सुख कदेय न हुवे लिगार रे ॥ १२ ॥
तीरथ सिघा ते तीरथ मां सूं सिध हूआं रे, अतीरथ सिघा ते विण तीरथ सिध थाय रे।
तीथंकर सिघा ते तीरथ थापने रे, अतीथंकर सिघा ते विना तीथंकर ताय रे ॥ १३ ॥
सयबुधी सिघा ते पोतें समझ नें रे, प्रतेकबुधी सिधा ते कांयक वस्त देख रे।
बुधबोही सिघा ते समझे ओरां कनें रे, उपदेस सुणे ने ग्यांन वशेष रे ॥ १४ ॥
स्वलिंगी सिघा साधां रा भेष में रे, अनलिंगी सिघा ते अन लिंगी मांय रे।
ग्रहलिंगी सिघा ग्रहस्थ रा लिग थकां रे, अस्त्री लिंग सिघा अस्त्री लिंग मे ताय रे ॥ १५ ॥
पुरष लिंग सिघा ते पुरष ना लिग छतां रे, निपुंसक सिघा निपुंसक लिंग मे सोय रे।
एक सिघा ते एक समें एक हीज सिघ हुआ रे, अनेक सिघा ते एक समें अनेक सिध होय रे ॥ १६ ॥
ग्यांन दरसन ने चारित तप थकी रे, सारा हूआं छें सिघ निरवांण रे।
यां च्यांरा विनां कोइ सिघ हूओ नही रे, ए च्यारूंई मोष रा मारग जांण रे ॥ १७ ॥
ग्यांन थी जाणे लेवे सर्व भाव ने रे, दरसन सूं सरघ लेवे सयमेव रे।
चारित सूं करम रोके छें आवता रे, तपसा सूं करमां ने दीया खेव रे ॥ १८ ॥
एं पनरेंइ भेदें सिघ हूआं तकेरे, सगला री करणी जांणों एक रे।
वले मोष में सुख सगला रा सारिषा रे, ते सिघ छें अनत भेदे अनेक रे ॥ १९ ॥
मोष पदार्थ नें ओलखायवा रे, जोड कीधी छे नाथ दुवारा मझार रे।
समत अठारें नें बरस छानें रे, चेत सुद चोथ ने सनीसर वार रे ॥ २० ॥

ढाल : १३

दुहा

केइ भेष धार्यां रा घट मभे, जीव अजीव री खबर न कांय।
ते पिण बोला फेके गालां तणा, ते पिण सुध न दीसें कांय ॥ १ ॥
नव पदार्थ रो त्यांरे निरणों नहीं, छ दरबां रो निरणों नांय।
न्याय निरणा बिनां बक बोलरे, तिणरो सोच नहीं मन मांय ॥ २ ॥
जीव अजीव दोनूं जिण कह्या, तीजी वस्त न कांय।
जे जे वस्त छें लोक में, ते दोयां में सर्व समाय ॥ ३ ॥
नव ही पदार्थ जिण कह्या, त्यांनें दोयां में घाले नांय।
त्यांरे अंधकार घट में घणों, ते भूल गया भर्म मांय ॥ ४ ॥
ऊंधी २ करें छें परूपणा, ते भोला नें खबर न कांय।
तिण सूं नव पदार्थ रो निरणों कहूं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[नेह कुंवर हथे रा मन में]

जीव ते चेतन अजीव अचेतन, त्यांनें बादर पणे तो ओलखणा सोरा।
त्यांरा भेदानभेद जूआजूआ करतां, जब तो ओलखणा छें अति ही दोरा।
जीव अजीव सुधा न सरधे मिथ्याती ॥ १ ॥
जीव अजीव टालेनें सात पदार्थ, त्यांनें जीव अजीव सरधें छें दोनूंइ।
एहवी ऊंधी सरधा रा छें मूढ मिथ्याती, त्यां साधू रो भेष ले आतम बिगोइ ॥
जीव अजीव सुधा न सरधें मिथ्याती ॥ २ ॥
पुन पाप नें बंध ए तीनूंइ करम, करम ते निश्चेंइ पुदगल जांणो।
पुदगल छें ते निश्चेंइ अजीव, तिण मांहें संका मूल म आंणो ॥
पुन पाप नें अजीव न सरधें मिथ्याती ॥ ३ ॥
आठ करमां नें रूपी कह्या छें जिणेसर, त्यांमें पांचूंइ वर्ण नें गंध छें दोय।
वले पांचूंइ रस नें च्यार फरस छें, ए सोलें बोल पुदगल अजीव छें सोय ॥
पुन पाप नें अजीव न सरधें मिथ्याती ॥ ४ ॥
पुन पाप ग्रहें नें कहे आश्रव, पुन पाप ग्रहे ते निश्चें जीव जांणो।
निरवद जोगां सूं पुन ग्रहे छें, सावद्य जोगां सूं पाप लागें छें आंणो ॥
आश्रव नें जीव न सरधें मिथ्याती ॥ ५ ॥
करमां नां दुवार आश्रव जीव रा भाव, तिन आश्रव नां बीसोंइ बोल पिछांणो।
ए बीसोंइ बोल छें करमां रा करता, करमां रा करता निश्चेंइ जीव जांणो।
आश्रव नें जीव न सरधें मिथ्याती ॥ ६ ॥

आतमा ने वस करें ते संवर, आतमा वस करें ते निश्चेंइ जीव।
ते तो उपसम खायक षयउपसम भाव, ए तो जीव रा भाव छें निरमल अतीव ॥
संवर ने जीव न सरधें मिथ्याती ॥ ७ ॥

संवर ते आवतां करमां नें रोके, आवतां करम रोकें ते निश्चेंइ जीव।
तिण संवर ने जीव न सरधे अग्यांनी, तिणरे नरक निगोद री लागी छे नींव ॥
तिण संवर नें जीव न सरधे मिथ्याती ॥ ८ ॥

देस थकी करमां नें तोड़ें, जब देस थकी जीव उजलो होय।
जीव उजलो हुओ छें तेहिज निरजरा, निरजरा जीव छे तिणमें सका न कोय ॥
इण निरजरा ने जीव न सरधें मिथ्याती ॥ ९ ॥

करमां ने तोड़े ते निश्चेंइ जीव, करम तूटां थकां उजलो हुवो जीव।
उजला जीव नें निरजरा कही जिण, जीव रा गुण छें उजल अत ही अतीव ॥
इण निरजरा नें जीव न सरधें मिथ्याती ॥ १० ॥

समसत करम थकी मूंकावें, ते करम रहीत आतमा मोष।
इण संसार दुख थी छूट पड़्या छें, ते तो सीतलीभूत थया निरदोष ॥
तिण मोष नें जीव न सरधे मिथ्याती ॥ ११ ॥

करमां थकी मूंकावे ते मोष, तिण मोष नें कहिजें सिध भगवांन।
वले मोष नें परमपद निरवांण कहिजें, ते तों निश्चेंइ निरमल जीव सुध मान ॥
तिण मोष नें जीव न सरधें मिथ्याती ॥ १२ ॥

पुन पाप नें बंध ए तीनूंइ अजीव, त्यांनें जीव नें अजीव सरधे दोनूंइ।
एहवी उंधी सरधा रा छें मूंढ मिथ्याती, त्यां साध रा भेष में आतम विगोइ ॥
पुन पाप नें अजीव न सरधे मिथ्याती ॥ १३ ॥

आश्रव संवर निरजरा नें मोष, ए निमाइ निश्चें जीव च्यांरूइ।
त्यांने जीव अजीव दोनूंइ सरधें, तिण उंधी सरधा सूं आतम विगोइ ॥
यां च्यारां नें जीव न सरधे मिथ्याती ॥ १४ ॥

नव पदार्थ में पांच जीव कह्या जिण, च्यार पदार्थ अजीव कह्या भगवांन।
ए नव पदार्थ रो निरणों करसी, तेहिज समकत छें सुध मांन ॥
जीव अजीव नें सुध न सरधें मिथ्याती ॥ १५ ॥

जीव अजीव ओलखावण काजें, जोड कीधी पुर सहर मझार।
समत अठारें सत्तावनें वरसें, भादवा सुद पूनम नें बुधवार ॥
जीव अजीव नें सुध न सरधें मिथ्याती ॥ १६ ॥

—:: ● ::—

रत्न : २

श्रावक ना बारे व्रत

व्रत पहिलो

(स्थूल प्राणातपात विरमण व्रत)

ढाल : १

दुहा

पांच अणुव्रत परवरा, तीन गुण वरत सार।
सिष्या वरत च्यारे चतुर, तेहनो करो विचार ॥ १ ॥
पहिलां में हिसा तजे, दूजें झूठ परिहार।
तीजें अदत्त चौथे अबंभ, पांचमें तजे धन सार ॥ २ ॥
पहिलो गुण वरत दिसि तणो, दूजें भोग पचखांण।
तीजें अनरथ परहरे, ए तीनू गुण वरत जाण ॥ ३ ॥
सामायक पहिलो सिख्या, दूजें संवर जांण।
तीजें पोषद कहीजीयें, चौथें साधां नें दे दान ॥ ४ ॥
यां बारे वरतां तणों, कहीये छे विसतार।
भाव धरी भवियण सुणों, मन मे आंण विचार ॥ ५ ॥

ढाल

[जिन भाख्या पाप अठार]

श्रावक ना व्रत बार, पाले निरतीचार।
ते दुरगत नहि पड़े ए, भवसायर तिरे ए ॥ १ ॥
पेहलो वरत इम जांण, तिण में हिंसा ना पचखाण।
हिसा तस तणी ए, बीजी थावर भणी ए ॥ २ ॥
वसतां ग्रहस्थावास, हिंसा हुवे जास।
आरम्भ विण करीये ए, पेट किम भरीये ए ॥ ३ ॥
करूं तस तणा पचखांण, थावर नो परमांण।
भेद तस तणां ए, ग्यांनी कह्या घणां ए ॥ ४ ॥
कोई मोंनें घाले घात, माहरो अपराधी साख्यात।
खमतां दोहिलो ए, नहिं मोने सोहिलो ए ॥ ५ ॥
सातो दे धन लेजाय, अथवा लूटे आय।
खून करे जरे ए, सूंस नही तरे ए ॥ ६ ॥

विण अपराधी होय, तिणरी हिंसा दोय।
मारे जांणतां ए, वले- अजांणतां ए॥ ७॥
म्हारे धान जोखण रो काम, गाड़ी चढ़ जाऊं गाम।
खेती हल खड़ूं ए, सूर निदांण करूं ए॥ ८॥
तिहां बहू जीव हणाय, किम पालूं मुनीराय।
नहीं सफे एसो ए, ग्रहवासे फस्यो ए॥ ६॥
आकुटी ने साम, जीव मारण रे काम।
व्रत छै जांणतां ए, नही अजांणतां ए॥ १०॥
म्हारी इसडी इरज्या नाहि, चालूं अंधारा मांहि।
वसतू पूंजूं नही ए, लेवूं मूंकूं सही ए॥ ११॥
थाप लाठी रो नेम, मोसूं चाले केम।
चोपद हाकणा ए, दोपद हठकणा ए॥ १२॥
इम करतां जीव मराय, जीव काया जूदा थाय।
हणवा बुध नही धरी ए, विना बुध मरी ए॥ १३॥
हणवारी बुध होय, जीव न मारूं कोय।
सेउपयोगे करी ए, एसी विगत धरी ए॥ १४॥
हिसानां पचखांण, मैं कीधा परमांण।
जावजीव करी ए, करण जोग धरी ए॥ १५॥
धिन धिन जे ले वैराग, ज्यारे सर्व हिसा रा त्याग।
तस थावर तणीं ए, अणकंपा घणीं ए॥ १६॥
हू ग्रहस्थ मुनीराज, म्हारे आरम्भ काज।
इविरत बहु घणी ए, तस थावर तणी ए॥ १७॥
धिन धिन साधू मुनीराय, ते सुमते सुमता थाय।
जीवे ज्यां भणी ए, न चूके अणी ए॥ १८॥
धिग धिग ग्रहस्थावास, म्हारे मोटो पड़ीयो पास।
हिंसा बहु घणी ए, लागे मो भणी ए॥ १६॥
ग्यांनादिक आंकस ल्याय, मन नें आंणी ठाय।
हिसा टालसूं ए, ममता वालसूं ए॥ २०॥
जावजीव पचखांण, नहि मोंने आसान।
लफरो बहु घणो ए, न्यातीलां तणो ए॥ २१॥
धिन धिन साधू सूर, जिण लफरो कीधो दूर।
तिण विध मोंवत ए, खातो नहि खतै ए॥ २२॥

व्रत दूजो

(स्थूल मृषावाद विरमण व्रत)

ढाल २

दुहा

दूजो व्रत श्रावक तणों, करे झूठ तणों परमांण।
त्यागे माठो जाण नें, पाले जिणवर आंण ॥ १ ॥
झूठा बोला मांनवी, नहि ज्यांरी परतीत।
मनष जमारो हार ने, नरकां हुवें फजीत ॥ २ ॥

ढाल

[जिण भाख्या पाप अठार]

झूठ तणां पचखांण, नाहना मोटा जांण।
पचखे मोटका ए, केयक छोटका ए ॥ १ ॥
छोटा न बोलूं केम, म्हारो ग्रहवासा सूं पेम।
विणज सोदा करू ए, मन में लोभ धरूं ए ॥ २ ॥
मोटा पाच प्रकार, तेहनो करूं परिहार।
व्रत करूं इसो ए, मोसूं निभे जिसो ए ॥ ३ ॥
किन्या गोवाली जांण, तीजी भोम पिछाण।
थापण मोसो करे ए, कूड़ी साख भरे ए ॥ ४ ॥
किन्यां रा भेद अपार, करणो सूंस विचार।
वरसां छोटकी ए, न कहणी मोटकी ए ॥ ५ ॥
गहली गूंगी होय, वले आंख नहि दोय।
कांणी मीमरी ए, आंख्यां चीपडी ए ॥ ६ ॥
काली कोढणी नार, कानां न सुणे लिगार।
टूंटी पांगली ए, बोले तोतली ए ॥ ७ ॥
रोग घणो घट मांय, जीवण री आस न कांय।
वेलंजर , तेजरो ए, आवे एकंतरो ए ॥ ८ ॥
वले रोग छे खेन, जीव न पामें चेन।
रकतपीती तणी ए, दुरगंध अति घणी ए ॥ ९ ॥

कूवी ढूवी होय, बाडी वांकी जोय।
छोटी वांवणी ए, आंख्यां वांभणी ए ॥ १० ॥
हीण वंस री होय, तिणरी जात न जांणे कोय।
आ तो जाये जठे ए, साख न भरे कठे ए ॥ ११ ॥
रूप रोग ने खोड़, वले वरस दे तोड़।
अछतो नहिं भाषणो ए, हुवै जिम दाखणो ए ॥ १२ ॥
यां वोलां रो साम, आय पड़े कोइ कांम।
घर मांडे जठे ए, भूठ न वोलूं तठे ए ॥ १३ ॥
हासा मसकरी काज, म्हारे सूंस नही मुनीराज।
पलतां दोहिलो ए, नहिं मोनें सोहिलो ए ॥ १४ ॥
इत्यादिक परमांण, में कीधा पचखांण।
इमहीज पुरष तणां ए, कन्या ज्यूं भापणां ए ॥ १५ ॥
इम गोवाली जांण, दूध तणो परमांण।
वेत न ओछारणो ए, हुवें जिम दाखणो ए ॥ १६ ॥
भोमाली घर नें हाट, वले वाघ नें घाट।
धरती वावण तणी ए, इत्यादिक घणी ए ॥ १७ ॥
कोइ धन सूंपे आय, हूं राखूं घर माहि।
आय नें मांगे तरे ए, नटूं नहि जरे ए ॥ १८ ॥
मागे धणी जो आय, वाप भाई नें माय।
उ वारस आय अड़े ए, राजा रोके जरे ए ॥ १९ ॥
जव भूठ वोलण रो नेम, राखूं वरत सूं पेम।
चोखो पालसूं ए, दोपण टाल सूं ए ॥ २० ॥
मांगे अनेरो आय, तो नट जावूं मुनीराय।
सूंस नही कियो ए, लोभे चित दीयो ए ॥ २१ ॥
साख भरावे मोय, भूठ न वोलूं कोय।
ते पिण मोटकी ए, नही छोटकी ए ॥ २२ ॥
जो हूं वोलूं वाय, तो घर पेलारो जाय।
भाषा तोलणी ए, पछे वोलणी ए ॥ २३ ॥
करे भूठ रा भेद, त्याग्या आण उमेद।
मनोरथ जद फले ए, भूठ छोटोइ टलें ए ॥ २४ ॥
करण जोग घाली ने एम, करे भूठ रा नेम।
वरत करे इसो ए, पोते निभे जीसो ए ॥ २५ ॥

व्रत तीजो

(स्थूल अदत्त विरमण व्रत)

ढाल : ३

दुहा

तीजो व्रत श्रावक तणो, करे अदत्त रा त्याग।
मन मे सुमता आणीयां, चढे भाव वेराग ॥ १ ॥
अह लोके जस अति घणो, परलोके सुख थाय।
भाव सहित अराधीयां, जन्म मरण मिट जाय ॥ २ ॥
चोरी करे ते मानवी, गया जमारो हार।
मनष तणो भव खोय ने, नरका खाए मार ॥ ३ ॥
तीजो व्रत छे एम, करे अदत्त रा नेम।

ढाल

[जिन भाष्या पाप अठार]

न करे मोटकी ए, वले छोटकी ए ॥ १ ॥
म्हानी किम त्यागू सांम, म्हारे घास इधण रो काम।
खिण खिण किणनें केवुं ए, किहां किहां आम्या लेवुं ए ॥ २ ॥
म्हानी त्यांगे ते धिन, पिण म्हारो नहि मन।
चित्त चोखो नही ए, कर्म घणा सही ए ॥ ३ ॥
सांतो दे गांठी छोड, धाडो कर तांलो तोड।
वसतु मोटी अछै ए, धणी जाण्या पछे ए ॥ ४ ॥
ऐसा अदत्त रा त्याग, मे पचख्यो आण वैराग।
ते पिण परतणी ए, नही घर भणी ए ॥ ५ ॥
म्हारा कुटंबादिक में माल, मो में पडे हवाल।
भीड घणी सही ए, माग्यां दे नही ए ॥ ६ ॥
वले भूखो न मिले अन, म्हारा बाप भाई ने धन।
सेठो कीयो सही ए, मोने दे नही ए ॥ ७ ॥
जबे तालो ल्यूं तोड, वले गांठडी छोड।
सांतो दे चोरसूं ए, खोसल्यू जोर सूं ए ॥ ८ ॥
इतरा मो — आगार, ते नरक तणा दातार।
रमणी वस पड्यो ए, जंजीरां जड्यो ए ॥ ९ ॥

राजा लेवे डंड, हुवे लोक में भंड।
चोरी नहीं करूं ए, ऐसो व्रत करूं ए ॥ १० ॥
इसो पळे मुनीराय, तीनें दो पचखाय।
जीवे ज्यां भणी ए, व्रत चोरी तणो ए ॥ ११ ॥
चोरी कर्म चण्डाल, तिण थी पडे हवाल।
दुख नरकां तणां ए, सहे अति घणां ए ॥ १२ ॥
चोरी ले पर माल, तिण नें पडे हवाल।
नरक निगोद तणां ए, फल चोरी तणां ए ॥ १३ ॥
पर धन लेवे ताहि, दे पेला रे दाहि।
ते नरक ना पावणा ए, त्यात कहावणा ए ॥ १४ ॥
इहलोक उदे हुवे पाप, दुख भुगते आपो आप।
मार घणी पडे ए, बिन आइ मरे ए ॥ १५ ॥
तिणरा काटे हाथ नें पाय, वले सूळी देवे चढाय।
नकटो नें बूटों करे ए, वले मार घणी पड़े ए ॥ १६ ॥
मूआं पछे चोर री काय, न्हाखे खाड मांय।
तिहां कुत्ता आयनें ए, बिगाड़े काय नें ए ॥ १७ ॥
वले काग चांचां सूं मार, तिणरा डीया काढे बार।
शरीर तिण तणो ए, विकराळ दीसे घणो ए ॥ १८ ॥
तिण नें देखे मात नें तात, मन में घणा सीदात।
इण चोरी कर परतगी ए, लजाया म्हां भणी ए ॥ १९ ॥
लोक करे चोरी नी वात, ते सुणे मात नें तात।
बेले जब रोवता ए, नीचो जोवता ए ॥ २० ॥
चोरी सूं दुख अनंत, तिणरो कहितां न आवे अंत।
चिहुं गति में रुळे घणो ए, ते पाप चोरी तणो ए ॥ २१ ॥
इम सांभळनें नर नार, चोरी म करो लिगार।
समता रस आणनें ए, त्यागो जाणनें ए ॥ २२ ॥
कोइ आणे मन वैराग, चोरी सर्व थकी दे त्याग।
करण जोग करी ए, मन समता धरी ए ॥ २३ ॥
कोइ सूंस करें दे भांग, तिणरा घणा नीकळसी सांग।
महा पापी मोटको ए, कर्मां दियो धाको ए ॥ २४ ॥
चोखो पाळसी सूंस, त्यांरी पूरी जे मन हूंस।
जासी देवलोक में ए, केई जाए मोख में ए ॥ २५ ॥

व्रत चौथो

(स्वदार संतोष परदार विरमण व्रत)

ढाल : ४

दुहा

मनष तणो भव पाय ने, जे नर पाले सील।
सिव रमणी बेगी वरे, रहे मुगत में लील ॥ १ ॥
साधु त्यागे सर्वथा, ग्रहचारी पर नार।
माठी निजर जोवे नहीं, तिण रो खेवो पार ॥ २ ॥
एक एक श्रावक एहवा, आंणी मन वैराग।
भोग जाणी विष सारिखा, घर नारी दें त्याग ॥ ३ ॥

ढाल

[जिन भाख्या पाप अठार]

चोथो व्रत इम जाण, अबंभ तणा पचखांण।
देवंगणा मिनषणी ए, त्यागे तिरजंचणी ए ॥ १ ॥
वले पोता री नार, तेहनो करे विचार।
तजे दिन रात नी ए, परणी हाथ नी ए ॥ २ ॥
परवीयादिक नो नेम, निरतो पाले एम।
मोहणी परहरे ए, आतम वस करे ए ॥ ३ ॥
कोई सर्व थकी दे त्याग, आंणी मन वैराग।
विषे ओधरे ए, ब्रह्म वृत घरे ए ॥ ४ ॥
मारे घर नारी सूं नेह, तिणनें किम दूं छेह।
आतम वस नही ए, कर्म घणा सही ए ॥ ५ ॥
करूं दिवस दिवस तणा पचखांण, रात तणो परमांण।
संतोष आदरूं ए, विषे परहरूं ए ॥ ६ ॥
पर नारी सूं पेम, म्हें कीधो छे नेम।
सूइ डोरे करी ए, एसी विरत धरी ए ॥ ७ ॥
जे सेवे पर नार, ते गया जमारो हार।
नरकां मांहें पड़े ए, ढीलो नहिं करे ए ॥ ८ ॥
चोथो व्रत घणो श्रीकार, सारा व्रतां रो सिरदार।
व्रतां रो नायको ए, मुगत रो दायको ए ॥ ९ ॥

सील व्रत छे मोटो रतन्न, तिणरा करे जतन्न।
ते आतम उधरे ए, सिव रमणी वरे ए॥ १० ॥
ए व्रत पाले निर्दोष, त्याने नेड़ी छे मोख।
तिण में संका नही ए, श्री जिण मुख कही ए॥ ११ ॥
चारूं जात रा देव, करे ब्रह्मचारी नी सेव।
वले सीस नमावता ए, वांदे गुण गावता ए॥ १२ ॥
जिण चोथो वरत दीयो भांग, त्यांरा घणा नीकलसी सांग।
ते नरक माहे पड़े ए, घणो रड़वड़े ए॥ १३ ॥
इह लोके फिट फिट होय, पर लोके दुरगति जोय।
तिण जन्म विगाडीयो ए, मानव भव हारीयो ए॥ १४ ॥
जातवंत कुलवंत, ते आतम नित दमंत।
ते व्रत पालसी ए, कुल उजवालसी ए॥ १५ ॥
नहीं जातवंत कुलवंत, वले रस ग्रिधी अतंत।
ते विषय रो प्यासीयो ए, तिण व्रत विणासीयो ए॥ १६ ॥
निरलजा लज्या रहीत, वले विषय विकार सहीत।
तिण व्रत ने कापियो ए, ते मोटो पापीयो ए॥ १७ ॥
ब्रह्म व्रत रा भांगणहार, धिग त्यांरो जमवार।
ते न्यात लज्जावणा ए, दुरगति ना पावणा ए॥ १८ ॥
घणा लोकां रे मांहि, उचे सुर बोल्यो न जाय।
आ खांमी मोटी घणी ए, व्रत भांग्यां तणी ए॥ १९ ॥
कोइ ओ मोटो करे अकाज, लज्यावंत ने आवे लाज।
निरलजा लाजे नही ए, सेहल गिणे सही ए॥ २० ॥
इण सील भांग्यां रो सोय, कहतब न मिटे कोय।
आ मोटी मेहणी ए, जीवे ज्यां भणी ए॥ २१ ॥
इण पापी कियो अकाज, अजेय न आवे लाज।
तोंही बोले गाजतो ए, निरलज नही लाजतो ए॥ २२ ॥
ब्रह्म व्रत तणो करे भंग, तिणरो कदे न कीजे संग।
कुकर्म मांहें मिलीयो ए, कर्म कादे कलीयो ए॥ २३ ॥
जो सेवे परनार, ते गया जमारो हार।
लजावे न्यात में ए, पड़ियो मिथ्यात मे ए॥ २४ ॥
परनारी मा बेन समांन, त्यां सूं न करे माठो ध्यांन।
चित चोखो कीयो ए, ब्रह्म व्रत लीयो ए॥ २५ ॥

कोइ छोडी सर्म नें लाज, त्यांसूं इज करे अकाज।
ते निरलज नहिं लाजीयो ए, डाकी वाजीयो ए॥ २६ ॥
कर्म जोगे जाए भाज, पिण केकां ने आवे लाज।
केइ लाजे नंही ए, वेसरमा सही ए॥ २७ ॥
केई सीदावें मन मांय, म्हें मोटो कियो अन्याय।
पिछतावे घणों ए, खोटा किरतब तणो ए॥ २८ ॥
जिणरो चोथो वरत गयो भांग, तिणरो पूरो अभाग।
ते नागो निरलजो ए, तिण में नही मजो ए॥ २९ ॥
ब्रह्म व्रत तणी नव बाड़, ते पाले निरतीचार।
अडिग सेंठो घणो ए, मन जोग तणो ए॥ ३० ॥
जिण लोपे दीधी वाड, तिण रो हुवे विगाड़।
खुराबी हुवे घणी ए, ब्रह्म व्रत तणी ए॥ ३१ ॥
व्रत भांग सेवे परनार, ते गया जमारो हार।
फिट फिट हुवे घणो ए, कुजस तिण तणो ए॥ ३२ ॥
चोखे चित्त पाले सील, ते रहे मुगत में लील।
राखे नित आसता ए, पामें सुख सासता ए॥ ३३ ॥
दिन दिन चढते रंग, पाले व्रत अभंग।
मन सुमता धरें ए, ते सिव रमणी वरे ए॥ ३४ ॥
ब्रह्म व्रत ने श्री जगदीस, उपमा कही बतीस।
दसमा अंग में कही ए, ते सूरा पाले सही ए॥ ३५ ॥
करण जोग सूं जांण, विवरा सुध पचखांण।
चोखे चित्त पालीये ए, दोषण टालिये ए॥ ३६ ॥

व्रत पांचमों

(स्थूल परिग्रह विरमण व्रत)

ढाल : ५

दुहा

पांचमे व्रत त्यागे परिग्रहो, ते परिग्रह मुरछा जांण।
तिण सूं निरंतर जीव रे, पाप लागे छे आंण ॥ १ ॥
ए मोटो पाप छे परिग्रह, तिण थी गोता खांय।
सांसो हुवे तो देखलो, तीन मनोरथ मांय ॥ २ ॥
ओ अनर्थ ग्यांनी भाषीयो, नरक ले जावे तांण।
जती मार्ग नो भांडणो, निषेद्यों इम जांण ॥ ३ ॥
खेतू वथू हिरण सोवन तणो, धन ने धांन जांण।
वले दोपद नें चोपद तणा, कुंवि धात तणो परमांण ॥ ४ ॥
खेतू ते उघाड़ी भूमका, वथू हाट हवेली जाण।
रूपा नें सोना तणो, करे सक्त सारू पचखाण ॥ ५ ॥
धन ते रोकड नांणो गिणती तणो, धान री जात अनेक।
कुंवीधात ते घर विखेरो कह्यो, त्यांने त्यागे आंण विवेक ॥ ६ ॥
सचित अचित मिश्र द्रव्य छे, यां सगला रो करे प्रमांण।
राख्या ते सगला इविरत में छें, वाकी सगलां रा कीया पचखांण ॥ ७ ॥
ए नवोड जात रो, वाहिरज परिग्रह जांण।
मुर्छा अभितर परिग्रहो, तिण सूं पाप लागे छे आंण ॥ ८ ॥
वाहिरज परिग्रह नव जात रो, ममता कर ग्रह्यो छै ताहि।
तिण सूं यांनेइ परिग्रह कह्यो, पिण यां सूं पाप न लागे आय ॥ ९ ॥

ढाल

[जिण भाख्या पाप अठार]

परिग्रहा नो परिहार, संख्या करे विचार।
ममता उतरे ए, नव भेदे करे ए ॥ १ ॥
खेतू वत्थू छें जेह, सोनो रूप्पो तेह।
धन धान दोपद ए, कुंवी धात चोपद ए ॥ २ ॥
ए नव विध संख्या थाय, वंछा दीए मिटाय।
त्रिसणा परहरे ए, मन सुमता धरें ए ॥ ३ ॥

ममता वडी बलाय, चिहुं गति में लटकाय।
घणो रडबडे ए, नहिं जक पडे ए॥ ४॥
मन सूं करी विचार, ए नरक तणी दातार।
एहने टालवे ए, व्रत ने पालवे ए॥ ५॥
नव जात रो परिग्रह नाहि, विचार करो मन मांहि।
मुर्छा परिग्रहो ए, ओ मारग नरक रो ए॥ ६॥
ए मोटो प्रतिबंध पास, करे बोध बीज रो नास।
मारग छै कुगत रो ए, फलसो मुगत रो ए॥ ७॥
परिग्रह छे मोटो फंद, कर्म तणो छै बंध।
नरक पोंहचावे सही ए, तिहां मार घणी कही ए॥ ८॥
परिग्रह छै महा विकराल, मोटो छै माया जाल।
तिण में खूता सही ए, धर्म पावे नहीं ए॥ ९॥
कनक कांमणी दोय, त्यासूं दुरगति होय।
फंद छे मोटका ए, त्यांसूं खाए धका ए॥ १०॥
कनक कामणी दोय, पेला ने पकड़ावे कोय।
तिण फंद में नाख्यो सही ए, निकल सके नही ए॥ ११॥
परिग्रहो दीधां कहे धर्म, ते भूला अयांनी भर्म।
थांरे कर्म घणा सही ए, समझ पड़े नही ए॥ १२॥
इण परिग्रहा तणा दलाल, त्यांमे पिण होसी हवाल।
दुख नरकां तणा ए, सहसी अति घणा ए॥ १३॥
ए राख्यां लागे छै कर्म, रखायां पिण नही धर्म।
तीनू करण सारिखा ए, ते करजो पारिखा ए॥ १४॥
परिग्रहा नां दातार, त्यारा सावद्य जोग व्यापार।
मारग नहीं मोखरो ए, छादो लोक रो ए॥ १५॥
असणादिक च्यारूं आहार, श्रावक रे परिग्रहा मझार।
ते खाए खवावे सही ए, तिणमें पिण धर्म नही ए॥ १६॥
श्रावक ते माहों मांहि, देवो लेवो छे ताहि।
ते सगलो परिगरो ए, सका मति करो ए॥ १७॥
सचित अचित मिश्र दरव, तिण में आय गया छै सरव।
ए सगलोइ परिगरो ए, ते ममता मांहे खरो ए॥ १८॥
सचितादिक सगला ताहि, गृहस्थ रे परिग्रहा मांहि।
कह्यो उववाइ उपांग में ए, वले सूयगडायंग में ए॥ १९॥

त्यांरो श्रावक कीयो परमांण, त्याग्या त्यांरी विरत पिछांण।
बाकी इविरत में राखीया ए, सूतर छे साखीया ए॥ २०॥
सचितादिक सारां मांहि, सावां रे इवरित नांहि।
त्यां मुर्छा परहरी ए ममता उधरी ए॥ २१॥
परिग्रहो दीयां धर्म हुवेता, तो जिण आग्या देत।
कहे कहे ने दरावता ए, धर्म करावता ए॥ २२॥
इण धन थी अनर्थ होय, धर्म धुरा न चले कोय।
भव भटकावणों ए, दुर्गति पोचावणो ए॥ २३॥
धन थी धर्म न थाय, तीन काल रे मांहि।
साचो कर जांणजो ए, संका मत आंणजो ए॥ २४॥
इण परिगरा माहें रक्त, त्यांने आवै नहीं समक्त।
मुरछ्या तिण में सही ए, समझ पड़े नही ए॥ २५॥
ज्यांरे परिगरा सूं छै प्रीत, ते हूसी घणा फजीत।
नरकां जावसी ए, झीकां खावसी ए॥ २६॥
इण थी बधे संसार, जाए नरक निगोद मझार।
घणो रडवडे ए, जक नही पडे ए॥ २७॥
सचित अचित द्रव्य छे ताहि, ग्रहस्थ रे अव्रत मांहि।
ज्यांरो त्याग कीयो नहीं ए, त्यारो पाप लागे सही ए॥ २८॥
तीनां करणां लागे पाप, तिण सूं दुख भुगते आप।
त्यांने त्याग्यां विरत हुसी ए, जब जीव होसी खुसी ए॥ २९॥
करण जोग घालीजे जांण, कीजे सुध पचखांण।
चोखे चित पालीये ए, दोषण टालीये ए॥ ३०॥

व्रत छठा

(दिशि परिमाण व्रत)

ढाल : ६

दुहा

पांच अणुव्रत धारतां, मोटी बांधी पाल।
छोटा री इविरत रही, ते पाप आवै दग चाल ॥ १ ॥
तिण इविरत मेटण भणी, पहलो गुणव्रत देख।
दिस मरजाद मांडले, टाले पाप विशेष ॥ २ ॥
मांहिली इविरत मेटवा, दूजो गुणवरत धार।
द्रव्यादिक त्यागन करे, भोगादिक परिहार ॥ ३ ॥
जे द्रव्यादिक राखीया, तेहनी इविरत जांण।
अर्थ डंड छूटे नहीं, अनर्थ डंड पचखांण ॥ ४ ॥
छठो वरत श्रावक तणो, करे दिस तणो परमांण।
हिसादिक त्यागे छहूं दिस तणा, मन मांहें सुमता आंण ॥ ५ ॥

ढाल

[इण पुर कंबल कोई न लेसी]

उंची नीची दिस कोस बे च्यार, तिण बाहिर सावद्य परिहार।
त्रिछी दिस पांच सो परमांण, इण विध दिस तणा पचखांण ॥ १ ॥
प्रथवीयादिक जीव न मारें, छोटाइ झूठ तणो परिहारें।
चोरी न करे मइथुन टाले, धन सूं ममता पाछी वाले ॥ २ ॥
मांहें बेठो पिण बारलो लेवो ने देवो, तिण रा पिण त्याग करे सयमेवो।
बारली वसत मांहें मंगावे नांही, मांहिली वसत बारे मेले नहिं कांई ॥ ३ ॥
जिगन तो एक आश्रव त्यागे कोई, उतकष्टा आश्रव त्यागे पांचोंइ।
एक करण तीन जोग सूं जांण, बारला आश्रव ना करे पचखांण ॥ ४ ॥
कोइ दोय करण तीन जोगां सूं ताहि, त्याग कर ने अव्रत देवे मिटाय।
कोइ तीन करण तीन जोगां जांण, पांचोंइ आश्रवनां करे पचखांण ॥ ५ ॥
बारला आश्रवनां कीधा त्याग, इविरत छोड़ी छै आंण वेंराग।
षेत्र थकी सर्व षेत्र में जांण, काल थकी जावजीव पचखांण ॥ ६ ॥
कोइ देवादिक तिण नें न्हांखे बार, तो पिण नहिं सेवे तिहां आश्रव दुवार।
कोइ कष्ट पड्यां राखे छें अगार, पोता नी कचाइ जांणी तिणवार ॥ ७ ॥

कोइ मित्री देवादिक ने बोलावे, तिण आगें आपरो कांम करावे।
तिण पिण छठो व्रत लियो तिवार, इतरो तो पहिला राख्यो छै आगार ॥ ८ ॥
इत्यादिक राखे आगार अनेक, आगार विना करे नहिं एक।
आगार राख्यां इविरत रो पाप लागे, विना आगार करे तो छठो व्रत भांगे ॥ ९ ॥
छठा व्रत तणो छे बोहत विसतार, ते कहितां कहितां न आवे पार।
ओ तो संक्षेप मातर कह्यो विसतार, बुद्धिवंत जाण लेसी अनुसार ॥ १० ॥
छठे व्रत एहवा पचखांण, मांहें घणा दरबादिक जांण।
तेहनी इविरत टालण काज, सातमो व्रत कह्यो जिणराज ॥ ११ ॥

●

व्रत सातमों

(उपभोग परिभोग परिमाण व्रत)

ढाल : ७

दुहा

सातमों व्रत श्रावक तणो, तिण में उवभोग परिभोग नो त्याग।
गमती वस्त त्यागे तेहनें, आवे छे इधिक वैराग ॥ १ ॥
भोग आवे एक वार मे, ते कहिये उवभोग।
वारूंवार आवे भोग जीव रे, तिण ने कह्या छें परिभोग ॥ २ ॥
उवभोग परिभोग श्रावक तणें, इविरत मे कह्या भगवांन।
त्यांरो त्याग करे सद्गुरु कनें, ते सातमों व्रत परधांन ॥ ३ ॥
उवभोग परिभोग काम भोग छै, माहा दुखां री खांन।
तिणने किपाक फल री दीधी ओपमा, भगवंत श्री विरधमान ॥ ४ ॥

ढाल

[इण पुर कंबल कोई न लेसी]

अंगोचा दातण फल अभंगण, उगटणो पीट्ठी ने मंजण।
वस्थ वलेपण पूफ आभरण, धूपखेवण पीवण ने भखण ॥ १ ॥
ओदन सूप विगे साग विमास, महुर जीमण पांणी मुखवास।
वाहण सयण पानीय सचित्त, द्रव संख्या कर त्यागे एक चित्त ॥ २ ॥
ए छावीस बोल तणो परमांण, धिन त्यागे ते सुमता आंण।
नाम लेइ विवरो कर लीजे, करण जोग घाले व्रत कीजे ॥ ३ ॥
ए छावीस बोल भोगवीयां संताप, भोगवायां पिण लागे पाप।
अणमोद्यां धर्म किहां थी होइ, तीनूंइ करण सरीषा जोइ ॥ ४ ॥
मूरख रे दिल वात न वेसे, न्याय छोड झगड़ा में पेसे।
सुगुर छोड कुगुर सूं परचा, भारी हुवे कर उंधी चरचा ॥ ५ ॥
विरत इविरत कही जिण न्यारी, समझे नहिं तिण रे कर्म भारी।
मूढ मती नव तत्व नहि जांणे, लीधी टेक छोडे नहिं तांणे ॥ ६ ॥
छावीस वोल तणो आगार, ते तो इविरत आश्रव दुवार।
त्यामें केइ उवभोग ने केइ परिभोग, त्याने भोगवे ते तो सावद्य जोग ॥ ७ ॥
त्यांरो त्याग करे मन सुमता आण, सकत सारू करे पचखांण।
एक करण ने तीन जोगां सूं त्यागे, जब पोते भोगवण रो पाप न लागे ॥ ८ ॥

दोय करण तीन जोग सूं पचखांण, तिण छ भांगां रो पाप टाल्यो जांण।
ते पोते पिण भोगवे नहि काइ, ओरां ने पिण भोगवावे नाही ॥ ९ ॥
तीन करण तीन जोगा सु' त्यागे, तिण ने नव ही भागां रो पाप न लागे।
भोगवे नहि भोगवावे नाहीं, भोगवण वाला ने सरावे नहिं काई ॥ १० ॥
जे जे सेरी छूटी रही ताहि, तिहां पाप कर्म लागे छे आय।
जे सेरी रुकी ते संवर दुवार, तिण सूं पाप न लागे लिगार ॥ ११ ॥
छूटी सेरी में श्रावक खावे ने खवावें, खातां ने पिण छूटी सेरी में सरावे।
रुकी सेरी में खावे खवावे नांही, अनुमोदना पिण न करे कांई ॥ १२ ॥
श्रावक ने मांहो मां छ काय खवावे, वले छ काय मारे ने जीमावे।
ए इविरत रा सावद्य जोग व्यापार, तिण माहे धर्म नही छें लिगार ॥ १३ ॥
श्रावक ने माहों मां छ काय खवावे, वले छ काय मारे ने जीमावे।
तिण माहै धर्म मिथ्याती जाणे, कर्म तणे वस उंधी ताणें ॥ १४ ॥
विरत आश्री श्रावक ने कह्यो छे धर्मी, इविरत आश्री कह्यो छें अधर्मी।
तिण सूं श्रावक ने धर्मी अधर्मी जांणो, पनवणा भगोती सू जोय पिछांणो ॥ १५ ॥
श्रावक रो खाणो पीणो ने गेहणों, माहों मा एक एक ने लेणो ने देणो।
ते तीनोइ करण इविरत मे घाल्यो, उवांइ ने सूयगडाअंग मे चाल्यो ॥ १६ ॥
शब्द रूप रस गंध ने फासा, राख्या छे तिणरी लग रही आसा।
एहीज उवभोग ने परिभोग, तिणरा मेले छें विवध संजोग ॥ १७ ॥
राख्या छे तिणरी इविरत जाणो, तिणरो समय समय पाप लागे छे आणो।
त्याने त्याग्यां होसी संवर सुखदाय, तिण सूं इविरत रा पाप मिट जाय ॥ १८ ॥
उवभोग परिभोग भोगवे जांण, तिण सू पाप लागे छे आंण।
भोगवावे तिणने दूजे करण पाप, तिण सू पिण होसी बोहत संताप ॥ १९ ॥
अनुमोदे ते सरावे जाण जाण, तिणरे पिण पाप लागे छे आण।
श्रावक रा उवभोग परिभोग, तीनूइ करणा छे सावद्य जोग ॥ २० ॥
जघन मझिम ने उतकष्टा जांण, श्रावक गुण रत्ना री खांण।
त्यारो खाणो पीणो इविरत मे जांणो, तिणने रूड़ी रीत पिछाणो ॥ २१ ॥
जघन श्रावक रे इविरत घणेरी, उतकष्टा श्रावक रे इविरत थोड़े री।
ते इविरत आश्रव पाप रो नालो, तिण सू पाप आवे दगचालो ॥ २२ ॥
श्रावक तप करे आंण हुलास, उवास बेलादिक करे छ मास
सावद्य जोग रूंध्यां संवर हूवो रूडो, तपसा सू कर्म करे चकचूरो ॥ २३ ॥
तप पूरा हूआं पछे इविरत आगार, खाए पीए ते सावद्य जोग व्यापार।
तिण सूं पाप कर्म लागे छे आय, ते पाप होसी जीव ने दुखदाय ॥ २४ ॥

पारणो करे ते पहले करण जांण, करावे ते दूजे करण पिछांण।
सरावणवालो छै तीजे करणो, या तीनां रो बुधवत करसी निरणो ॥ २५ ॥
पहले करण तो पाप बंधावे, तो बीजे करण धर्म किहां थी थावे।
तीजे करण धर्म नहि छै लिगार, यां तीनां रा सावद्य जोग व्यापार ॥ २६ ॥
सावद्य जोग सूं लागे छे पाप, तिण सूं आगना नहि दे आप।
श्रावक ने जीमायां धर्म ह्वेत, तो अरिहंत भगवंत आगना देत ॥ २७ ॥
केइ कहे श्रावक ने जीमाया धर्म, ते भूल गया अग्यांनी भर्म।
पोते पिण जीम्यां लागे छै पाप कर्म, औरां ने जीमायां किम हुवे धर्म ॥ २८ ॥
कोइ कहे लाडू खवायां धर्म, ओ तप कर म्हारा काटसी कर्म।
तिणसू म्हे ओरां ने लाडूडा खवावां, पछे लाडूआं साटे म्हे उवास करावां ॥ २९ ॥
पछै तो उ करसी ते उणनें होय, लाडू खवाया धर्म म जाणो कोय।
लाडू खाधां खवायां तो एकंत पाप, ते श्री जिण मुख सूं भाख्यो छै आप ॥ ३० ॥
श्रावक ने लाडू खवायां धर्म होय, तो एहवो धर्म करे हर कोय।
बडा बडा श्रावक हुआ धनवंत, ते लाडूआ खवाय ने धर्म करंत ॥ ३१ ॥
बडा बडा सेठ सेन्यापती ताहि, त्यारे हुंती धर्म री चाहि।
लाडू खवायां धर्म हुवे तो आघो नहि काढत, लाडू खवाय कांम सिराडे चाढत ॥ ३२ ॥
श्रावक ने लाडू खवाया हुवे धर्म, खवावण वाला रा कट जाए कर्म।
तो चक्रवत बलदेव वासूदेव, ओ तो धर्म करता सयमेव ॥ ३३ ॥
श्रावक ने लाडू खवायां हुवे धर्म, श्रावक ने लाडू खवायां कटे कर्म।
तो च्यारूं जात रा देव सयमेव, ओ तो धर्म करत ततखेव ॥ ३४ ॥
एहवा धर्म थी सिव सुख होय, तो देवता आगो न काढता कोय।
एहवो धर्म करी पुरत मन खांत, देव भव थी पाधरा मोष में जांत ॥ ३५ ॥
लाडू खाधा खवायां धर्म छै नांही, खाणो खवावणो इविरत मांहीं।
इण माहे धर्म सरधे ते भोला, त्यारे मोह कर्म ना छै रे झखोला ॥ ३६ ॥
लाडू खवायां धर्म नहिं रे भाइ, आ तो उघाड़ी दीसे विकलाइ।
ओ लोलपणो जीभ्या रो सवाद, तिण सूं कर्म बधें छे वाद ॥ ३७ ॥
खाणो खवावणो त्यागे सोय, जब सातमो व्रत श्रावक रे होय।
जब रुकसी आवाता पाप कर्म, तेहिज उजल संवर धर्म ॥ ३८ ॥

तीनों इ करण जूआ जूआ कीजे, त्याग नें आगार ओलख लीजे।
इविरत में पाप जांण छाडीजे, विरत मे धर्म जांण वरत लीजे ॥ ३९ ॥
सातमा व्रत रो बहोत विसतार, संषेप मातर कह्यो अनुसार।
ए व्रत लेई ने चोखो पालीजे, मानव भव नो लाहो लीजे ॥ ४० ॥

ढाल : ८

दुहा

उपभोग परिभोग रे, सातमों व्रत पचखांण।
तिण मांहें उदमीया, पनरे करमादांन ॥ १ ॥

ढाल

[इण पुर कंबल कोई न लेसी]

ईंट नीहाला सोनार ठठारा, भडभूंजा कुंभार लुहारा।
ए कर्म करी ने पेट भरीजे, ते अंगाली कर्म कहीजे ॥ १ ॥
बेचे साग पात कंद मूल, फल बीजादिक धान तंदुल।
बेचे फूलादिक सर्व वनराई, ते वण कर्म कहीजे भाई ॥ २ ॥
बेचे गाडादिक रथ कराई, चोकी पाट पिलंग बनाई।
किंवाड़ थंभादिक बेचावे, तीजो साड़ी कर्म कहावे ॥ ३ ॥
हाट हवेली भाडे थापे, रोकड नांणो व्याजे आपे।
गाडादिक भाडे दे जेह, भाडी कर्म कहीजे तेह ॥ ४ ॥
बेचे नालेरादिक फोड़ी, वले अखरोट सोपारी तोडी।
पथर फोड दल पीसे धांन, पांचमों फोडी करमादांन ॥ ५ ॥
कसतूरी कवडा गजदंता, मोती आगर पान अनंता।
चर्म हाड सींग दुहार, छठो कर्मादान ए वार ॥ ६ ॥
भाजने नहें मेनसल आल, बेचे लाख गुली हरीयाल।
कसूंभादिक रंगन पास, दोजग थया कह्या जिन तास ॥ ७ ॥
मधु मांस मांखण ने दारू, सारी विगे कही जिन च्यारूं।
दूध दही घ्रत तेल गुल जांण, आठमों ते रस विणज पिछांण ॥ ८ ॥
बेचे ऊंट गधा नें गाय, घोड़ा हाथी बहल मंगाय।
ऊन रुइ रेसम थान बणाय, केस विणज ए नवमों थाय ॥ ९ ॥
सींगीमोहरो आफूसार, सोमलखारो मोहन खार।
हरवंसी निरवंसी विणजे, दसमों ते विस विणज कहीजे ॥ १० ॥
तिल सरस्यूं प्रमुख पीलावे, इक्षु रस ना घाण मंडावे।
यंत्रपीलण इग्यारमों कर्म, कर्ता बांधे घणों अधर्म ॥ ११ ॥

कान फड़ावे नाक बीधावे, बलदादिक ने तणीय नखावे।
बारमो करमादान निलंछण, व्रतधारी ने लागे लंछण ॥ १२ ॥
जाले गांम नगर दे लाय, अटव्यादिक ने दे रे लगाय।
वाले मुरडा ने दव आपे, तेरमो कर्म इसी पर व्यापे ॥ १३ ॥
चवदमें भांजे नदी द्रह तीर, खेत माहे आंण घाले नीर।
सर द्रह तलाव करे सोखत, ए कर्म करी जीव नरक पडत ॥ १४ ॥
साध विना सगला पोखीजे, पनरमो असंजती पोख कहीजे।
रोजगार लेइ त्यां उपर रेवे, खाणो पीणो असंजती नें देवे ॥ १५ ॥
ए पनरे कर्म तणो विसतार, मरजादा बांध करे परिहार।
पनरेई कह्या सावद्य व्यापार, करे आजीविका चलावण हार ॥ १६ ॥

व्रत आठमों

(अनर्थ दण्ड विरमण व्रत)

ढाल : ६

दुहा

सात व्रत पूरा थया, हिवै आठमां नो विसतार।
अर्थ अनर्थ ओलखवा भणी, तेहनो सुणो विचार॥ १ ॥
सात व्रत आदरतां थका, बाकी अव्रत रहि छे ताहि।
तिण सूं निरंतर जीव रे, कर्म लागे छे आय॥ २ ॥
तिण इविरत रा दोय भेद छे, तिण में एक तो अनर्थ डंड जाण।
एक इविरत अर्थे कही, तिण सू पाप लागे छे आण॥ ३ ॥
अर्थ ते मुतलब आपरे, सावद्य करे विविध प्रकार।
अनर्थ ते मुतलब विना, पाप करता पिण न डरे लिगार॥ ४ ॥
पाप करे छे अर्थे ने अनर्थे, त्याने रूड़ी रीत पिछाण।
अर्थ दड तो छोडणो दोहिलो, अनर्थ दंड रा करे पचखांण॥ ५ ॥
अनर्थ दड तणा भेद अति घणा, ते पूरा कह्या न जाय।
पिण थोड़ा सा परगट करूं, ते सुणजो चित ल्याय॥ ६ ॥

ढाल

[इण पुर कंबल कोई न लेसी]

पहिलो भेद कह्यो अपधान, तिण थी बाधे अनर्थ खान।
बीजे भेदे प्रमाद आखे, घ्रतादिक ठांम उघाडा राखे॥ १ ॥
सस्त्र जोड करे विसतार, पाप उपदेश दे विवध प्रकार।
ए अनर्थ रा करे पचखाण, सूधी पाले जिणवर आण॥ २ ॥
ए अनर्थ डड केम कहीजे, अर्थ डड सेती ओलखीजे।
तेहना भेद छे विविध प्रकार, सखेप मात्र करूं विसतार॥ ३ ॥
माठा ध्यान रा दोय परकार, जग में जे ध्यावे नर नार।
आर्त्त रुद्र ध्यांन ध्यावे लोग, पामे बहु विध हर्ष ने सोग॥ ४ ॥
सब्दादिक इद्रया ना भोग, तेहनो ध्यावे संजोग विजोग।
रोगादिक लागे अणगमता, भोग भोगवता ल्यावे ममता॥ ५ ॥
इण विध जीव रचे ने विरचे, आप अर्थ कुटम्ब ने परचे।
ठाकुर चाकर सगा सनेही, बोहरा ने घुरीया आद देइ॥ ६ ॥

जिण सुषीए सुख बेदे आप, तिण दुषीये पांमें सोग संताप।
ते पिण टाले सुमता आंण, अनर्थ ध्यांन ध्यावा पचखांण ॥ ७ ॥
रुद्र ध्यांन हिंसा जे ध्यावे, झूठ चोरी बंदीवान दरावे।
अर्थ करे पिण धूजे तन, अनर्थ ध्यान तजे एक मन ॥ ८ ॥
घ्रत तेलादिक विणज करंतां, घूपादिक कारज अण सरतां।
इण विध अर्थ उघाड़ा थाय, तिणरो जतन करे चित ल्याय ॥ ९ ॥
परमाद रे वस आलस आंण, उघाड़ा राखण रा पचखांण।
घरटी मूसल उंखल राखे, म्हारे सजे नहीं इण पाखे ॥ १० ॥
अनर्थ राखण ना पचखांण, एहवो व्रत करे मन जांण।
अर्थे पिण राखंता सांके, तो सस्त्र जोड़ी कुण न्हांखे ॥ ११ ॥
भाइ भतीज चाकर ने पेस, ज्यांने देवुं पाप रा उपदेश।
खेती विणज सोदा कर भाइ, बेठो खासी किणरी कमाइ ॥ १२ ॥
बुधवंत नर ग्यांन कर देखे, कहितां लागे पाप वशेखे।
तो अनर्थ कुण घर में घाले, तिण थी कर्म मेला झाले ॥ १३ ॥
जस कीरत मान बडाइ काजे, वले सरमा सरमी लोकां री लाजे।
वले घर रा उदारपणा रे तांई, हिंसादिक करे ते अर्थ डंड मांही ॥ १४ ॥
जिण करतब कीयां करे लोक भंड, जे किरतब करे छे ते अनर्थ डंड।
छ छंडी राखी ते अर्थ डंड मांहि, त्यांरे काजे हिंसादिक करे छे ताहि ॥ १५ ॥
सुयगडायंग अधेन अठारमा मझार, अर्थ डंड रा कह्या छे आठ आगार।
आत्मा न्यातीलां रे कांम, हिंसादिक करे छे तांम ॥ १६ ॥
आगार ते घर हाटादिक कांम, परवार ते दास दासी तांम।
मित्री नें नाग भूत जख देव, त्यांरे तांइ हिंसादिक करे सयमेव ॥ १७ ॥
इहलोक ने वले परलोक, जीवणो मरणो ने काम भोग।
यारी अर्थे वंछा कियां पाप लागे, अनर्थे कीयां आठमो व्रत भागे ॥ १८ ॥
असजती जीवां रो जीवणो चावे, असंजती जीवीयां सूं हरषत थावे।
ए अर्थे कीयां तो अर्थ पाप लागे, अनर्थे कीयां आठमो व्रत भागे ॥ १९ ॥
असजती रो मरणो चावे, अथवा त्यानें मारे ने मरावे।
अर्थे तो मार्यां मरायां पाप लागे, अनर्थे मार्यां मरायां व्रत भागे ॥ २० ॥
ग्रहस्थ नें कांम भोग भोगवायां चावे, अथवा त्यांनें काम भोग भोगवावे।
अर्थे भोगवायां तो पापज लागे, अनर्थे भोगवायां व्रत भागे ॥ २१ ॥
ग्रहस्थ ने उवभोग परिभोग भोगवावे, तो निश्चेइ पाप कर्म बंधावे।
अर्थे भोगवावे तो अर्थ पाप लागे, अनर्थे भोगवायां आठमो व्रत भागे ॥ २२ ॥
ग्रहस्थ रो काम करे अंसमात, तिणरे निश्चेइ पाप लागे साख्यात।
अर्थे कीयां तो अर्थ पाप लागे, अनर्थे कियां आठमो व्रत भागे ॥ २३ ॥
कहि कहि ने कितरो एक केहूं, अर्थ नें अनर्थ डंड छे बेहूं।
तिनमे अर्थ री इविरत राखी छे जाण, अनर्थ डंड तणा पचखांण ॥ २४ ॥
याने रूड़ी रीत पिछांणी लीजे, करण जोग घाले व्रत कीजे।
थामें रोकी सेरी तिण मांहें छे धर्म, छूटी सेरी छे तेहीज अधर्म ॥ २५ ॥
आठमा व्रत रो बोहत विचार, ओ तो अल्प मातर कह्यो विसतार।
हिवे नवमो व्रत कहूं छूं ताहि, सांभलजो भवियण चित ल्याय ॥ २६ ॥

व्रत नवमों

[सामायिक व्रत]

ढाल १०

दुहा

पांच अणुव्रत फेलतां, गुणव्रत दे संकड़ाय ।
सिख्या व्रत जिम चोटली, कहे ओपमा ल्याय ॥ १ ॥
जिम देवल इंडो चढ़े, मुगट मस्तक अंत ।
जिम समदिष्टी जीवड़ा, सिख्या व्रत पालंत ॥ २ ॥
व्रत आठ पहेलां कह्या, जावजीव लग जांण ।
सिख्या व्रत च्यारां तणा, विविध पणे पचखांण ॥ ३ ॥
सामायक महोरत एक नी, जो करे चित ल्याय ।
देसावगासी व्रत ना, जिम करे तिम थाय ॥ ४ ॥
पोसो हुवे दिन रात नो, जो ध्यावे निरमल ध्यांन ।
बारमो व्रत सुध साव नें, देवे सूझतो दांन ॥ ५ ॥

ढाल : १०

[मम करो काया माया कारमी]

सामायक सुमता पणे, सावद्य जोग पचखांण जी ।
काल थी मोहरत एक नी, दुविहं तिविहेणं जांण जी ॥
सिख्या जी व्रत आराधीए* ॥ १ ॥
उतकृष्टे भांगे करे, तीन करण तीन जोग जी ।
ग्रहवासा तणी वात नो, न करे हर्ष न सोग जी ॥ २ ॥
उपगरण सदाइ करतां राषीया, तिण उपरंत कीया पचखांण जी ।
राख्या ते इविरत परिभोग री, तिणरो पाप निरंतर जांण जी ॥ ३ ॥
उपगरण समाइ में राखिया, त्यांरो पिण करे परमांण जी ।
बाकी तीन करण तीन जोग सूं, पांचूं आस्रव ना पचखांण जी ॥ ४ ॥
ते उपगरण पेहरे ओढे वावरे, बिछांवणादिक करे वारंवार जी ।
ते सरीर री सातादिक कारणे, ते तो सावद्य जोग व्यापार जी ॥ ५ ॥
वले गेहणां आभरण कनें रह्या, ते पिण इविरत में जांण जी ।
तिणरो पिण पाप निरंतर, समे समे लागे छे आंण जी ॥ ६ ॥
ते गेंहणा आभरण रा जतन करे, त्यांसूं राजी हुवे तिण वार जी ।
आगो पाछो समारे तिण अवसरे, सावद्य जोग व्यापार जी ॥ ७ ॥

---

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

उपगरण गेंहणा कने राखीया, ते तो नहि आवे समाइ रे कांम जी।
काम तो आवे छे परिभोग में, सुख साता सोभादिक तांम जी॥ ८॥
समाइ री तो दीधी जिण आगना, ते तो समाइ छे संवर धर्म जी।
उपगरण ने गेहणा परिभोगव्यां, तिण सू तो लागे पाप कर्म जी॥ ९॥
समाइ में श्रावक री आत्मा, अधिकरण कही जिण राय जी।
भगोती रे सतषंध सात में, पहिला उदेसा रे माय जी॥ १०॥
अधिकरण ते सस्त्र छ काय रो, तिण नें सातरो करे अंसमात जी।
तिणरी सार संभाल जतन करे, ते सावद्य जोग साख्यात जी॥ ११॥
कपडो ओढे पेहरे वावरे, वले वियावचादि करे ताहि जी।
तिण अधिकरण ने सांतरो कीयो, तिण री आगना न दे जिणराय जी॥ १२।
अंसमात सरीर रो कार्य करे, ते तो सावद्य जोग छे ताहि जी।
तिण सू पाप कर्म लागे जीव रे, तिणरी आगना न दे जिणराय जी॥ १३॥
हालवो चालवो सरीर नो, सुख साता काजे करे जांण जी।
ते सावद्य जोग श्री जिण कह्या, तिण सू पाप कर्म लागे आण जी॥ १४॥
जिण किरतब कीयां जिण आगना नही, ते सावद्य जोग साख्यात जी।
जिण किरतब कीया जिण आगना, ते निरवद जोग विख्यात जी॥ १५॥
उपगरण गेहणा ने सरीर ना, जतन करे समाई मझार जी।
त्याने जिण आगना नही सर्वथा, सावद्य जोग तणो छे व्यापार जी॥ १६॥
कने राख्या छे त्यारा जतन करे, ओ तो राख्यो समाइ मे आगार जी।
समाइ करतां ज्याने त्यागीया, त्यांरा जतन नही करणा लिगार जी॥ १७॥
श्रावक रा उपगरण इविरत मझे, कह्या उवाइ ने सूयगडाअंग मांय जी।
त्यांने सेववो सावद्य जोग छे, तिण सू आगना न दे जिणराय जी॥ १८॥
कोइ कहे सामाइ कीधी तेहने, सावद्य जोग पचखाण जी।
तिणरे पाप रो आगार किहां थी रह्यो, कोइ एह्वी पूछा करे आंण जी॥ १९॥
तेहने जाब इम दीजिये, सर्व सावद्य नहिं पचखांण जी।
सर्व सावद्य रा त्याग साधां तणे, तेहनी करो पिछांण जी॥ २०॥
छ भागा समाइ में पचखीया, तिणरे तीन भांगां रो आगार जी।
तिणरे पाप लागे छे निरंतर, तिणरा जोग छै सावद्य व्यापार जी॥ २१॥
तिणरे पुत्रादिक हूआं हरखत हुवे, मूआं गयां हुवे सोग जी।
इत्यादिक आगार समाइ मझे, एहवा सामाइ में सावद्य जोग जी॥ २२॥
गहणो पडतो हुवे तेहने, जतन करे सामाइ रे मांहि जी।
ते पिण सावद्य जोग छै, तिणरी आज्ञा न दे जिणराय जी॥ २३॥

शरीर कपड़ादिक तेहना, जतन करे सामाइ रे मांय जी।
ल्याय चोरादिक ना भय थकी, एकांत ठामें जेणा सूं जाय जी॥ २४॥
वले सरप राजादिक ना भय थकी, एकंत ठामें जयणा सूं जाय जी।
ते पिण सावद्य जोग छै, आगार सेव्यो समाइ रे मांहि जी॥ २५॥
ल्याय सर्पादिक रा भय थकी, जेंणा सूं नीकल जाए बार जी।
पारकी मिनख बेठो हुवे, त्यांनें तो नहीं लेजावे लार जी॥ २६॥
आपरो तो आगार राखीयो, औरां रो तो नहि छे आगार जी।
औरां ने त्याग्या समाइ मझे, त्यांने किण विध लेजावे बार जी॥ २७॥
ल्याय चोरादिक रा भय थकी, राख्या ते उपधि ले जाय जी।
पारकी कपड़ादिक हुवे घणा, त्यांने बारे ले जावे नहि ताहि जी॥ २८॥
राख्या ते दरब ले जावतां, समाइ रो भंग न थाय जी।
त्यांने त्याग्या छे त्यांने लेजावतां, समाइ रो व्रत भागे जाय जी॥ २९॥
तिण सूं सर्वथा सावद्य जोग रा, समाइ में नहि पचखांण जी।
आगार उपरंत सावद्य जोग रा, पचखांण कीया छे पिछांण जी॥ ३०॥
तिण सूं श्रावक रे त्याग कीया तके, ते सावद्य जोग रा पचखांण जी।
सर्वथा सावद्य जोग रा, ते तो त्याग मात्रां तणा जांण जी॥ ३१॥
उपगरण समाइ में राखीया, ते तो पेले करण लेजो जांण जी।
ते औरां ने भोगावसी किण विधे, औरां रा तो कीया छे पचखांण जी॥ ३२॥
द्रव्य थकी तो कहे तिण उपरंत रा, सगलां रा कीया पचखांण जी।
खेत्र थकी सर्व खेत्र मझे, काल थी मोहूरत जांण जी॥ ३३॥
भाव थी राग द्वेष रहीत छै, तब संवर निरजरा गुण थाय जी।
इण रीते समाइ ओलख करे, जब भावे समाइ हुवे ताय जी॥ ३४॥
अवर सगलां ने त्यागे दिया, त्यांसूं इज करे संजोग जी।
जब भागे समाइ व्रत तेहनों, इणरा वरजीया सावद्य जोग जी॥ ३५॥
कोइ समाइ में समाइवाला तणों, कारज करणो छे जांण जी।
तिणरो कारज कीयां समाइ भागे नहीं, तिणरो पिण करे परिमांण जी॥ ३६॥
समाइ में मांहोंमां कारज करे, ते तो सूत्र मांहिं दीसे नहि ताय जी।
तिणरी निश्चै तो आपणी आवे नहीं, त्यांनी कहे ते सत्य वाय जी॥ ३७॥
कोइ कहे समाइ में राखी पूंजणी, राखी ते दया रे कांम जी।
तिणरो जाब सुणो विवरा सूध, तिण राखे एक ठांम जी॥ ३८॥
सरीरादिक पूंजे समाइ मझे, मातरादिक परठे छे पूंज जी।
एहवा कारज री जिण आगना नहीं, तिण में धर्म कहे ते अबूझ जी॥ ३९॥

सरीर ने पूजे परठे मातरो, ते तो सरीरादिक नो छे काज जी।
जो धर्म तणो कार्य हुवे, तो आगना दे जिणराज जी॥ ४०॥
जो पूंजणो परठणों करे नही, तो काया थिर करणी एक ठांम जी।
हस्तादिक नें विना हलवीयां, रहणी ना आवे छे तांम जी॥ ४१॥
वले आ बाधा लघू बड़ी नीत नी, खमणी न आवे छे तांम जी।
तिण सूं पूंजे छे जायगा जोय ने, ते समाइ तणो नहिं कांम जी॥ ४२॥
माखी माछर कीड़ी आद दे, ते तो लागे सरीर रे आय जी।
ते खमणी नावे छे तेहथी, तिण सूं पूंजे परीकरे ताय जी॥ ४३॥
जो काया थिर राखे एक आसणे, तिण रे पूजण रो कांई काम जी।
परीसो खमणी नावे तेह सूं, पूंजणी राखे छे तांम जी॥ ४४॥
जो इतरी कह्यां समझ पड़े नही, तो राखणी जिण परतीत जी।
जिण आगना बारे धर्म सरध ने, नही करणी एहवी अनीत जी॥ ४५॥
सरीर उपगरण रा जतन कीयां, सावद्य जोग व्यापार जी।
सरीर सू किरतब निरवद करे, तिण ने जिण आगना श्रीकार जी॥ ४६॥

●

व्रत दसमों

(देसावगासी व्रत)

ढाल : ११

दुहा

दसमा देसावगासी वरत छै, तिणरा छै भेद अनेक।
थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो आण ववेक ॥ १ ॥

ढाल

(मम करो काया माया कारमी)

देसावगासी व्रत ना, भांगा हुवे विध दोय जी।
पेहलो छे छठा व्रत नी परे, दूजो सातमा ज्यू जोय जी॥
सिख्या जी व्रत आराधी ए ॥ १ ॥
दिन परते प्रभात थी, छ दिसरो कीधो परिमांण जी।
मरजादा कीधी तिण बारला, पाचू आश्रव ना पचखांण जी ॥ सि० २ ॥
जे भोमका राखी छे मोकली, तिण माहे द्रव्यादिक व्यापार जी।
मरजादा सकत सारूं करे, भोगादिक परीहार जी ॥ ३ ॥
काल थी दिवस ने रात नो, भावना विवध प्रकार जी।
करण जोग घाले जेतला, जेहवो करे परीहार जी ॥ ४ ॥
वले जगन नवकारसी आदि दे, उतकष्टो घाले काल कोय जी।
मरजाद सू त्यागे सावद्य भणी, जिम करे तिम होय जी ॥ ५ ॥
कोइ करे छै त्याग हिसा तणो, तिण मे काल री करे परमांण जी।
ते त्याग पूरो हूआं तेहने, आगे तो नही पचखांण जी ॥ ६ ॥
हिंसा भूठ चोरी मैइथुन नो, वले पांचमो परिग्रह जांण जी।
ए पाचोंइ आश्रव दुवार नो, काल घाले ने करे पचखांण जी ॥ ७ ॥
परमांण करे छावीस बोल नो, पनरें कर्मादांन तणो परमाण जी।
वले सचितादिक चवदे नेम नो, यांरा नित नित करे पचखांण जी ॥ ८ ॥
नोकारसी पोरसी ने पुरमढ, एकासणो आंबलादिक तास जी।
उपवास बेलादिक तप करे, उतकष्टो करे तप छ मास जी ॥ ९ ॥
तप तणो कष्ट हूवो तको, ते करणी निरजरा तणी जांण जी।
खावा पीवा री विरत हुइ तका, दशमो व्रत हूवो आण जी ॥ १० ॥
जे जे सावद्य त्यागे तेहमे, काल री करे परमांण जी।
ते तो दशमों व्रत नीपनों, ते जावजीव नहि पचखांण जी ॥ ११ ॥

व्रत इग्यारमों

ढाल : १२

(पोषध व्रत)

दुहा

श्रावक रो व्रत इग्यारमों, पोषो कह्यो छे भगवांन।
तीजो सिख्या व्रत रलीयामणो, ते सुणो सुरत दे कांन ॥ १ ॥

ढाल

(मम करो काया माया कारमी)

पोषध व्रत वखांणीये, पचखे चउ विध आहार जी।
अबंभ मणी सोवन तजे, माला वणग वलेपण परिहार जी॥
सिख्या जी व्रत आराधीये ॥ १ ॥

सत्य मुसलादिक आद दे, सावद्य जोग तणा पचखांण जी।
काल थी दिवस ने रात रो, एक पोसा तणो परिमांण जी ॥ २ ॥

जगन दोय करण तीन जोग सूं, करे सावद्य जोग पचखांण जी।
कोइ उत्कष्टे भागे करे, तीन करण तीन जोग सूं जांण जी ॥ ३ ॥

द्रव्य थकी तो कने तिण उपरत रा, कीया सर्व दरबा रा पचखाण जी।
षेतर थकी सर्व षेतर मझे, काल थी दिवस ने रात जांण जी ॥ ४ ॥

भाव थकी राग द्वेष रहीत करे, वले चोखे चित उपीयोग सहीत जी।
जब कर्म रुके छे आवतां, वले निरजरा हुवे रूडी रीत जी ॥ ५ ॥

उपगरण पोसा माहे राखिया, तिण उपरत कीया पचखाण जी।
राख्या ते इविरत परिभोग री, तिणरो पाप निरंतर लागे आण जी ॥ ६ ॥

पोसा ने सामायक वरत ना, सरीषा छे पचखांण जी।
सामाइ तो मोहरत एक नी, पोसो दिन रात रो जांण जी ॥ ७ ॥

पोसा ने समायक वरत में, या दोयां मे सरीषो छे आगार जी।
ते कह्या छ सगला इविरत मे, ते जोय करो निसतार जी ॥ ८ ॥

जब कोइ कहे पोषध वरत मे, मणी सोवनादिक पचखांण जी।
तिण सूं मणी सोवन कने राखीयां, पोसो भागे गयो जांण जी ॥ ९ ॥

पोसा माहें कने राखीया, मणी सोवनादिक जांण जी।
तिण उपरत पचखांण छे, उत्तर एह पिछांण जी ॥ १० ॥

उमूक कहिता मूंके दीया, त्यां मणी सोवन रा पचखांण जी।
कने रह्या त्यांरी इविरत रही, भगोती सू करजो पिछांण जी ॥ ११ ॥

मणी सोवन रा जावक पचखाण हुवे, तो उमूक रो पाठ कहिता नांहिं जी ।
ओ तो निरणो उघाड़ो दीसे कीयो, विचार देखो मन मांहिं जी ॥ १२ ॥
श्रेणक ने किस्नजी री राणियां, इत्यादिक हुइ राणीयां अनेक जी ।
त्यां पोसा कीया दीसे गेहणा थकां, समझो आंण ववेक जी ॥ १३ ॥
त्यांरी चूडीयां में हीरा पना जड्या, वले दांतां मे जांणीजे मेख जी ।
ओर गेहणा त्यांरे पेहरणे, त्यां उतारस्था नहि दीसे छे एक जी ॥ १४ ॥
भारी भारी जूंहर चूड्यां जड्या, वले भारी २ हाथ गला मांय जी ।
ते सगलाइ केम उतारसी, ओ तो मिलतो न दीसे छे न्यय जी ॥ १५ ॥
त्या कीधी समाइ संझ्या काल री, समाइ करी रात परभात जी ।
ते खिण खिण में केम उतारसी, आ पिण मिलती न दीसे छै वात जी ॥ १६ ॥
समाइ में गेहणा न राखणा, तो चूडो न राखणो ताहि जी ।
गेहणो ने चूडो तो एक हीज छै, दोनूंई आभूषण मांहिं जी ॥ १७ ॥
सामायक नें पोसा तणी, दोयां री विध जाणो एक जी ।
रीत दोयां री वरोवरी, समझो ने आण ववेक जी ॥ १८ ॥
इहलोक रे अर्थ करे नही, न करे खावा पीवा रे हेत जी ।
लोभ लालच हेते करे नही, पर लोक हेते न करे तेथ जी ॥ १९ ॥
सवर निरजरा रे हेते करे, और वंछा नहि काय जी ।
इण परिणांमां पोसो करे, तो भाव थकी सुध थाय जी ॥ २० ॥
कोई लाडूआं साटे पोसा करे, कोइ परिग्रह लेवा करे तांम जी ।
कोई और द्रव्य लेवा पोसो करे, ते कहिवा रो पोसो छे नांम जी ॥ २१ ॥
ते तो अरथी छै एकंत पेट री, ते मजूरीया तणी छै पांत जी ।
त्यारा जीव रो कार्य सझे नही, उलटी घाली गला मांहे रांत जी ॥ २२ ॥
लाडूआ साटे पौसा करावसी, अथवा धन देइ ने तांम जी ।
ते कहिवा ने पोसा करावीया, पिण सवर निरजरा रो नही ओ कांम जी ॥ २३ ॥
कर्म काटण ने करे मजूरीया, त्यांरा घट मांहे घोर अग्यांन जी ।
लाडू खवाय पोसा करावणा, ए तो कठेइ नही कह्यो भगवांन जी ॥ २४ ॥
कर्म काटण ने करे मजूरीया, त्यांरा घाट मांहे घोर अंधार जी ।
पइसा देई पोसा करावणा, ते नाही चाल्या सुतर मझार जी ॥ २५ ॥
मजूरीया करे खेत नेदाणवा, मजूरीया करे घर करवा कांम जी ।
कडव काटण करे मजूरीया, कर्म काटण नही चालीया तांम जी ॥ २६ ॥
खेत खडवा ने चाल्या मजूरीया, वले भार लेजावण कांम जी ।
धान खाडग करे मजूरीया, कर्म काटण ने नहि चाल्या तांम जी ॥ २७ ॥

विरक्त होय काम भोग थी, त्यांने त्याग्या छै सुध परिणांम जी।
मोष रे हेत पोसो करे, ते असल पोसो कह्यो तांम जी ॥ २८ ॥
इण विध पोसा ने कीजीये, तो सीझसी आतम काज जी।
कर्म रुकसी नें वले तूटसी, इम भाषीयो श्री जिणराज जी ॥ २९ ॥

व्रत बारहमों

(अतिथि संविभाग व्रत)

ढाल : १३

दुहा

अतिथ संविभाग चोथो सिख्या, ते बारमों व्रत रसाल ।
समण निग्रंथ अणगार ने, दांन देवे दगचाल ॥ १ ॥
ते फासू अचित ने सूझतो, कल्पे ते दरव अनेक ।
कल्पतां खेतर काल में, दान दे आंण ववेक ॥ २ ॥
जो उ दांन दे मुगत रे कारणे, और वछा नहिं काय ।
जव नीपजें व्रत बारमों, इम भाख्यो जिणराय ॥ ३ ॥
इग्यारे व्रत वस आपरे, मन मानें जव नीपजाय ।
बारमों व्रत सुध साध ने, प्रतिलाभ्यां थी थाय ॥ ४ ॥
लाखां कोडां खरचीया, जीव अनती बार ।
पिण दांन सुपातर दोहिलो, जीव तणो आधार ॥ ५ ॥
इण व्रत नीपावा कारणे, उदम करे नित नेम ।
भावे सार्धां री भावना, हाथे दान देवण सूं पेम ॥ ६ ॥
आलस छोडणो किण विधे, किण विध देणो दान ।
उदम करणो किण विधे, ते सुणो सुरत दे कांन ॥ ७ ॥

ढाल

[मोह अनुकम्पा न आणीए]

बारमो व्रत छै श्रावक तणो, तिणरो सांभल जो विसतार जी ।
समण निग्रंथ अणगार ने, देवो चउविध सुध आहार जी ॥
इम व्रत नीपावें बारमो ॥ १ ॥
इम वसत्र पातर ने कावलो, पायपूछणों देवे एम जी ।
पीढ फल्गग सेज्जा ने साथरो, देवे ओपध भेषद जेम जी ॥ इ० २ ॥
इत्यादिक वस्तु कल्पे तका, सार्धां ने दीधां हरपत होय जी ।
जाणे धिन दीहाडो ने धिन घडी, बारमो व्रत नीपनो मोय जी ॥ ३ ॥
करे चितवणा सार्धां तणी, घर मे देखें सुध आहार जी ।
वले भांणे वेठां भावे भावना, व्रत धारी रो ओ आचार जी ॥ ४ ॥

साधु आय उभा देखे आगणे, विकसे सगली रोमराय जी।
असणादिक देवे भाव सूं, घणों मन रलीयात थाय जी ॥५॥
काचा पांणी सूं थाली धोवे नही, वले सचित न राखे पास जी।
संघटे नहिं वेसे सचित रे, व्रत नीपजावण रो हुलास जी ॥६॥
कोई काम पडे आय सचित्त रो, जब पिण रीत राखे विख्यात जी।
दिस अवलोक्यां विण साध ने, नहिं घाले सचित्त नें हाथ जी ॥७॥
कल्पे ते वस्त पडी असुझती, कदे सहिजां सुझती होय जी।
तो उ खप कर राखे सुझती, सचित उपर न मेले कोय जी ॥८॥
जे जे दरब जाणे छे सुझता, कल्पे ते साधु ने जाण जी।
तिणरी भावे निरंतर भावना, एहवा श्रावक चतुर सुजांण जी ॥९॥
चित्त वित्त पातर तीनूं तणो, कदे आय मिले संजोग जी।
जब अढलक दान दे हाथ सू, पछे न करे पिछतावो सोग जी ॥१०॥
जे जे वरतधारी श्रावक हुवे, ते जीमे नहि जडे कमाड जी।
उवाइ ने सुयगडअंग में, त्यांरा चाल्या उघाडा दुवार जी ॥११॥
सहजे उघाडा हुवे बारणा, जब राखे उघाडा ताम जी।
नहिं जडे उघाडे बारणा, साध ने दांन देवा कांम जी ॥१२॥
ओर भेष उघाड मांहे घसे, साधु नावे खोल कमाड जी।
तिण सूं व्रतधारी श्रावक हुवे, ते तो राखे उघाडा दुवार जी ॥१३॥
सहिजे आयो छे घरे आपरे, नीपनो देखें सुध आहार जी।
जब काल जांणे गोचरी तणों, तो उ बाट जोवे तिण वार जी ॥१४॥
ज्यारे हूंस घणी छे मांहिली, पोते सहथ देवा दान जी।
त्यांरा हिरदा में साधु वस रह्या, त्यारो किण विध मूंके ध्यांन जी ॥१५॥
असणादिक थाल में लीधां पछे, तुरत घाले नही मुख माय जी।
दिस अवलोके भावे भावना, जाणे साध पधारे आय जी ॥१६॥
इण विध भावना भावतां थका, मिले सतगुर नी जोगवाय जी।
तो उ दान दे उलट परिणांम सूं, चूके नहि अवसर पाय जी ॥१७॥
सकत सारू दान दे साध ने, पिण न करे कूडी मनवार जी।
ठाला वादल ज्यूं गाजे नही, साचे मन बोले सुध विचार जी ॥१८॥
अढलक दान देई साध नें, पमावे नही ओरां पास जी।
गिरवा गमीर रहे सदा, त्यानें वीर वखांण्या तास जी ॥१९॥
अढलक दान देणो पातरे, नही जिण तिण नें आसान जी।
दांन देवा रो ध्यांन रहे सदा, एहवा विरला छे बुधवान जी ॥२०॥

आछी वस्त गोपव राखे नही, नांणे लोलपणों ने लोभ जी।
गमती वसत देवे साध ने, पिण कूड़ी न सावे सोभ जी॥ २१॥
आप खाए ते इविरत में गिणे, वंचता जांणे पाप कर्म जी।
तिण सूं दांन सुपातर ने दीया जांणें संवर निरजरा धर्म जी॥ २२॥
सुपातर दांन दे तिण अवसरे, लेखो नही करे मन मांहिं जी।
लेखो कीयां सूं लोभ उपजे, अढलक दांन दीयो नहि जाय जी॥ २३॥
लाडू घोवणादिक वेहरावतो, राखे एक धारा परिणांम जी।
व्रतधारी आघो काढे नही, रूडी जोगवाइ पाम जी॥ २४॥
कदा वेहरयां विण पाछा फिरे, काइ आय पडे अंतराय जी।
जब पिछतावो कीयांई पुन बंधे, वले कर्म निरजरा थाय जी॥ २५॥
पिछतावो कीयाई पुन बंधे, तो वेहरायां हुवे लाभ अनंत जी।
उतकष्टो तीर्थंकर पद लहे, इम भाष गया भगवंत जी॥ २६॥
सूझती वसत न करे असूझती, ते तो न देवा रे कांम जी।
असूझती ने न करे सूझती, वेहरावण रा आंण परिणाम जी॥ २७॥
जांणे ने नहीं देवे असूझती, करडे पिण वणीये कांम जी।
निरदोषण दीधां वस्त हाथ सूं, पाछी लेवण री नहीं हांम जी॥ २८॥
दांन देवण न देवण कारणे, अतिकरमे नही काल जी।
मछर मांन वडाइ छोड ने, दांन देवे ते दोषण टाल जी॥ २९॥
आपणी वस्त कहे पारकी, दांन देवा कांम जी।
धर्म ठिकांणे झूठ बोले नही, मूंढे कूडी न राखे मांम जी॥ ३०॥
इग्यारे व्रत तो त्यागन कीयां, बारमो व्रत दीधां होय जी।
तिण सूं कठण काम इण वरत रो, विरला नीपजावे कोय जी॥ ३१॥
सुपातर दांन देवे तेहने, नीपजे तीन बोल अमोल जी।
संवर निरजरा होय पुन बंधे, त्यांरा अर्थ सुणो दिल खोल जी॥ ३२॥
जे जे दरब वेहराया साध ने, तिण दरब री इवरत नही काय जी।
ते वरत संवर हूवो इन विधे, सुभ जोगां सूं निरजरा थाय जी॥ ३३॥
सुभ जोग वरत्यां हुवे निरजरा, सुभ जोगां सूं पुन बंध जात जी।
पुन्य सहजे हुवे निरजरा कीया, ज्यूं खाखलो हुवे गोहां रे साथ जी॥ ३४॥
उतकष्टा परिणामां दान दे, तो उतकष्टी टले कर्म छोत जी।
उतकष्टा बंधे पुन्य तेहने, वले बंधे तीर्थंकर गोत जी॥ ३५॥
जो उणरे पुन्य उदे हुवे इण भवे, तो दुख दालद्र दूर पलाय जी।
रिध सपत पामे अति घणी, सुख साता मे दिन जाय जी॥ ३६॥

जो उदे न आवे इण भवे, तो पर भव में संका मत आंण जी।
उंच गोतादिक सुख भोगवें, ईण दांन तणा फल जांण जी॥ ३७॥
पुन्य री बछा कर देवे नहि, समदिष्टी साधां नें दान जी।
देवे सवर निरजरा कारणे, पुन्य तो सहिजां बधे आसान जी॥ ३८॥
इविरत माहे दान देता थकां, पड़े श्रावक रे मन धड़क जी।
ज्यांनें दान दियां विरत निपजे, त्याने दीठाइ पामे हरख जी॥ ३९॥
काम पड़े अविरत में दान रो, जब देतो ही सरमा सर्म जी।
पछे करे पिछतावो तेहनो, कांयक ढीला पाड़े कर्म जी॥ ४०॥
इविरत में दान देवण तणो, टालण रो करे उपाय जी।
जांणे कर्म बंधे छे माहरे, मोंने भोगवता दुख थाय जी॥ ४१॥
इविरत में दान देतां थकां, बंधे आठोइ पाप कर्म जी।
सुपातर दान दियां हुसी, म्हारे सवर निरजरा धर्म जी॥ ४२॥
इविरत मे दान देवण तणो, कोइ त्याग करे मन सुध जी।
तिण पाप निरंतर टालियो, तिणरी वीर बखाणी बुध जी॥ ४३॥
कुपातर दान मोह कर्म उदे, सुपातर दान खयउपसम भाव जी।
व्रत नीपजे सुपातर नें दियां, तिणरो जाणे समदिष्टी न्याव जी॥ ४४॥
सहिजा जायगां पडी हुवे सूझती, जब जोवे साधा री बाट जी।
तिणरे कर्म तणी निरजरा हुवे, वले बध जाए पुन्य तणा थाट जी॥ ४५॥
बाट जोवता साधु पधारिया, सेज्जा दान दे हरखत थाय जी।
जाणे धिन दिहाडो ने धिन घडी, माहे साध उतरिया आय जी॥ ४६॥
सेज्जा दान देइ सुध साधु नें, केइ करे परत संसार जी।
केइ बंध पाड़े सुध गति तणो, ते तो पामे भव जल पार जी॥ ४७॥
सिज्जा थानक दे दे साधु नें, आगे तिरिया जीव अनत जी।
वले तिरे नें तिरसी घणा, इम भाप गया भगवंत जी॥ ४८॥
दीधा दरायां नें भलो जाणिया, निर्दोष सुपातर दान जी।
व्रत निपजे दीधां वस्त आपरी, इम भाख्यो श्री भगवान जी॥ ४९॥
पुत्र त्रियादिक मा बाप रा, परिणाम चढावे विशेष जी।
त्यांने दान देवा सनमुख करे, सीखावे सुध विवेक जी॥ ५०॥
पुत्र त्रियादिक मा बाप रा, दान देवा रा रहे परिणाम जी।
त्यासूं हेत राखे जिन धर्म नो, सुध श्रावक तिणरो नाम जी॥ ५१॥
अडलक दान देतो देखे ओर ने, त्यारा पाड़े नहिं परिणाम जी।
कदा देणी न आवे आप सू, तो कर दे तिणरा गुण ग्राम जी॥ ५२॥

गुण सहणी नावे दातार ना, पोते पिण दान दियो न जाय जी।
ए दोनूं अवगुण दूरा तजे, श्री जिनवर नो धर्म पाय जी॥ ५३॥
और नें दान दैता देखने, कोइ बरज पाड़े अन्तराय जी।
तो उ कर्म बांधे महा मोहणी, एहवो श्रावक न करे अन्याय जी॥ ५४॥
केइ अन्यतीर्थी जीमे नहि, यांरा ठाकुर ने विण दिया भोग जी।
नित बारे रसोड काढनें, पोषे पूजारादिक लोग जी॥ ५५॥
त्याने ठीक नहि त्यांरा देव री, देवे लेवे न लेवे भोग जी।
तोहि राखे छे त्यारी आसता, नित वरतावे त्यांरा जोग जी॥ ५६॥
तो व्रतधारी सुध श्रावक, धर्म सू रंग्यो तन मन जी।
ते गुर नी भावना भाया विना, मुख में किम घाले अन जी॥ ५७॥
केकारे गुरु छे अन्यतीर्थी, त्यारी करे साचे मन टेल जी।
तो साध पधारया आंगणे, त्यांने श्रावक न गिणे सेल जी॥ ५८॥
कोइ कहे दान घणो दढावियो, ए तो लेवा रो कीधो उपाय जी।
एहवा उधा बोले सुध बुध विना, एहवी श्रावक न काढे वाय जी॥ ५९॥
दान देवा रा परिणाम जेहना, ते तो सुण सुण हरषत थाय जी।
कहे व्रत निपजावा नी विधि, मोनें सतगुरु दीधी सिखाय जी॥ ६०॥
और व्रत कह्या छे देवल समा, सिख्या व्रत छे इडा समान जी।
त्यां मे सगलां सिरे व्रत बारमों, तिणरी बुधवंत करसी पिछांण जी॥ ६१॥
तिरया तिरे तिरसी घणा, इण दान तणे परताप जी।
तिण मे सका मूल न आणवी, श्री जिन मुख भाख्यो आप जी॥ ६२॥
सुतर पुराण कुराण मे, पातर दान तणो अधिकार जी।
पछे पातर कुपातर ओलखे, बुधवंत काढे निसतार जी॥ ६३॥
वले कहि कहि ने कितरा कहूं, इण दान तणा गुण ग्राम जी।
कोड़ जिभ्या करे वरणवे, पूरा कहणी न आवे ताम जी॥ ६४॥
जोड कीधी बारमा वरत री, ते तो गूंदोच सहर मझार जी।
सवत अठारे बतीसे समे, जेठ विद बीज सूर्य वार जी॥ ६५॥

●

रत्न : ३

कालवादी री चोपई

ढाल : १

दुहा

दसा सतखध सूयगडाअंग में, अकिरीया वादी रो विसतार।
नास्तक मत छें तेहनों, वले किरीया न मानें लिगार। १ ॥
तीर्थंकर चक्रवतादिक, वले साधु सती अणगार।
त्यांने जीव न माने सरवथा, उ जांणें भर्म संसार ॥ २ ॥
तिण नास्तकवादी रा मत तणों, कालवादी पिरवार।
तिण नास्तक पाडी जीवरी, ते भूलो भर्म गिवार ॥ ३ ॥
उ सरधा परूपें एहवी, कर २ खांच अतीव।
जे सिद्धां में गुण पावे नहीं, ते गुण सर्व अजीव ॥ ४ ॥
वले असासता दरब नें इम कहें, नहीं चेतन गुण परजाय।
उण कुण २ काल में घालीया, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा...]

तीर्थंकर गणधर धर्म रा नायक, आचार्य ने उवझाय मोटां अणगारो।
साध साववीयादिक च्यारूई तीरथ, त्यांने अजीव कहे मूढ विनां विचारो।
आ सरधा छें कालवादी री*॥ १ ॥
देव गुर धर्म तीनूं रतन अमोलक, त्यांरो सरणो लीयां उतरे भवपारो।
याने अजीव कहें कोइ मूढ मिथ्याती, तिण आंख मीचने कीयों अंधारो ॥ आ० २ ॥
गुर ही काल ने चेलो ही काल, कालरो विनों काल करे उछरंगो।
काल सूं काल सभोग करें छे, काल सू काल रो मन जाए भंगो ॥ ३ ॥
काल उपदेस दे सूतर वांचे, धर्म कथा कहें मोटे मंडांणो।
काल ही आय वखांण सुणें छे, काल कने काल लें पचखांणो ॥ ४ ॥
काल तिरे नें काल ही तारें, काल नें काल उतारें पारो।
काल डूबें नें काल डवोवे, काल नें काल करे छें खुवारो ॥ ५ ॥
चक्रवत वासुदेव मंडलीक राजा, ए मनष हूआं करणी कर मोटी।
भवी दरब देवादिक पांचोइ देवां ने, यांनें अजीव कहे तिणरी सरधा खोटी ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

वले ही काल नें केईक काल, काल रे काल वधे दिखालो।
काल वधन लेइ मोटो हुवे छें, पछें काल रे वधे छें दिष्ट विकालो ॥ ७ ॥
काल परणीजे नें काल परणावें, काल रे काल पावना आवें।
अशणादिक आहार काल नीपाए, काल जीमें नें काल जीमावें ॥ ८ ॥
अपर्यातो पर्यातो काल, काल छें बाल जुवांन नें बूढो।
दरदुखो निरोग मिनख नें देखो, ए सगला नें काल कहें छें मूढो ॥ ९ ॥
चाले ही काल नें बोले ही काल, काल करें छें विनज व्यापारो।
खेती करसण आदि दे काल करें छें, वले काल करें छें सगला नें राडो ॥ १० ॥
एकेंद्री आदि दे पंचेंद्री नें, छकाय कुण कर कहें छें कालो।
चवदेइ भेद छें जीवरा त्यांनें, यांनें अजीव कहें अन्यांनी कालो ॥ ११ ॥
हिंसक कूडाबोलो इ काल, चोर कुशीलीयां नें वटपाडर।
वले तीन सो तेसठ पाखंडीयां नें, यांनें इ काल कहें छें कुआचर ॥ १२ ॥
भोगी काल नें जोगी काल, वैरी नें मित्री ए पिण कालो।
मायावीया मिथ्याती नें काल कहें छें, इण सरधा रो बुधवंत करसी टालो ॥ १३ ॥
आरत रुद्र नें धर्म ध्यांन, ए च्यांरूंइ ध्यांन नें कहें छें कालो।
छ भाव लेस्या नें पिण काल कहें छें, मूरख रे सिर दे दे आलो ॥ १४ ॥
अग्यांन तीन नें च्यारूंई संना, वले चवदें गुणठांणा कहें छें कालो।
दुष्ट अकल्याण ए पिण काल, ते कर रह्या मूरख मूढी स्यालो ॥ १५ ॥
छ नियंठा नें पांचोंइ चारित, ठाणांग कल्पादिक ए पिण पांच।
वले आठमा च्यार नें सप्त निरवद, यांनें काल कहें मूढ कर रे खांच ॥ १६ ॥
इत्यादिक जीवरा बोल अनेक, त्यांनें निश्चेंइ काल कहें छें अन्यांनी।
जे जे सभाव सिद्धां में न पावें, ते सगला नें कर दीया काल री खांनी ॥ १७ ॥
असासता सगलाइ पाछें कह्या ते, त्यांनें तो जीव कहसी किन लेखें।
यांनें जीव कहें तो कूड बोले छें, आपरी सरधा सांची क्यूं नहीं देखें ॥ १८ ॥
जो वरता रो नांम पद्यां जीव कहें तो, असासता दरव री पूछा कीजें।
असासता दरव नें काल कहें छें, यांनें जीव कहें तो कूडो वाजीजें ॥ १९ ॥
असासता दरव नें जीव कहें छें, आपरी सरधा रो भार अजांणों।
सिद्धां में नहीं ते गुण नें जीव थापें, तो पोतेइ काय न दीसें पिछांणों ॥ २० ॥
हिवें कालवादी नें पूछा कीजें, संसार माहें दुख किण विध पावें।
कुण उपजावें नें कुण खपावें, करमां रो करता कुण कहावें।
ए प्रश्न कालवादी नें पूछीजें ॥ २१ ॥

जो करमां रो करता जीव ने थापें, तो उणरी सरधा जावक उठजावे।
करता अनेक असासता दीसे, वले सिद्धां में करता कंठासूं बतावें ॥ २२ ॥
जो करमां रो करता अजीव कहें तो, घणां लोक न मांनें तिणरी वातो।
असरधा हुवे तो पिण छानें राखें, एहवा कपटी रो झूठ ने गूढ मिथ्यातो ॥ २३ ॥
उणरी सरधा रा एलांण एहवा दीसे, करमां रा करता ने सरधें छें कालो।
कदा झूठ बोले ने जीव कहे पिण, सिद्धां में नही करता ते सरधा संभालो ॥ २४ ॥
सिद्धां मांहें तो करता मूल न दीसें, ते जीव नें करता कहसी किण लेखे।
एहवा प्रश्न पूछ्यां रा जाब न आवें, जब झूठ बोलण री सेरी देखें ॥ २५ ॥
केंतों झूठ जांणें ने बोलें छें, के आपरी भाषा रो आप अजांणो।
ए वातरो निश्चों तो केवली जांणें, पिण बुधवंत होसी ते करसी पिछांणो ॥ २६ ॥
श्री वीर कह्यो आचारंग मांहें, करमां रो करता छे निश्चे जीवो।
चेतन गुण पर्याय सहीत ओलखसी, त्यारे अभितर ग्यान खुलसी घट दीवो ॥ २७ ॥
हिंसादिक झूठ चोरी जीव करें छें, तिण किरतब सूं लागे जीवरे पापो।
तो छेदन भेदन जनम मरण रा, चिहूं गति में दुख भुगतें आपो ॥ २८ ॥
कालवादी री सरधा परगट कीधां, केइ क्रोध करें केइ मन मांहें लाजें।
जिण आगम लोपे विरुध परूपे, ते सींह तणी परें कदेय न गाजें ॥ २९ ॥
इण खोटी सरधा रो उघाड़ कीयां सूं, केइ बुधवंत सुण २ रहसी दूरा।
केइ विपरीत सरधा आदर नें छोडें, त्यांनें पिण वीर वखांण्या सूरा ॥ ३० ॥

ढाल : २

दुहा

आ कालवादी नीं सरधा वृरी, घोर रुद्र मिथ्यात।
हलुकर्मा जीव किम सरधसी, आ प्रतख झूठी बात ॥ १ ॥
चेतन गुण पर्याय नें, कहि २ अग्यांनी काल।
इवी करेय परूपणा, दीयां घणा सिर काल ॥ २ ॥
त्यांन साधु बतावें जूजूवा, जीव अजीव साख्यात।
पण गुरू सरीषा मांनवी, त्यांरे वीह तिकाइज रात ॥ ३ ॥
त्यांनें बुरसूं तो संत मिलिया नहीं, कीयो कालवादी रो प्रसंग।
जांणें तिरणें कोठें भूलीयो, काल नाग भूयंग ॥ ४ ॥
उणनें मिलें सतगुरु गारुडू, जो उ दूर करें पखेपात।
सूतर अरथ सुणाय नें, काढें जहर मिथ्यात ॥ ५ ॥
कालवादी नी सरधा उपरें, सूतर मांहि जावें अनेक।
पिण थोड़ग सा परगट करूं, ते सुणजो आण ववेक ॥ ६ ॥

ढाल

[पाखंड वधसी आरे पंचमें]

तीरथंकर गणधर उत्तम जीव छें रे, उत्तम छें आचारज नें उवझाय रे।
त्यांरा ग्यांन दरसण चारित्र छें निरमला रे, यांनें वांद्या सू पातक दूर पलाय रे।
ए अरिहंत वायक मनकर जांणजो रे* ॥ १ ॥

वले साधु साधवी श्रावक श्राविका रे, सूतर में भाख्या छें तीरथ च्यार रे।
त्यांनें पिण उत्तम जीव जिण कह्या रे, ग्यांनादिक गुण रतनां रा भंडार रे ॥ ए० २ ॥

त्यांनें कालवादी पाषंडी इम कहें रे, ए सगला छें जड़ अचेतन काल रे।
यांनें जीव चेतन कोइ मत जांणजो रे, ए दीयों अग्यांनी मोटो आल रे ॥ ३ ॥

च्यारूं तीरथ तीरथंकर देव में रे, पावें गुणठांणा परजा प्रांण रे।
जोग उपीयोग लेस्या तेहमें रे, यांनें अजीव कहें छें मूंढ अयांण रे ॥ ४ ॥

त्यांरो विनो वीयावच गुण कीरत कीयां रे, बांधे तीरथंकर गोतरपाल रे।
ते कह्यो छे गिनाता अधेन आठमें रे, लीजो वीसोंइ बोल संभाल रे ॥ ५ ॥

ओ काल वीयावच करसी किण विधें रे, काल वीयावच केम कराय रे।
ए कालवादी कूडो मत काढीयो, ए प्रतख चोडें भूलो जाय रे ॥ ६ ॥

---
*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

भवी दरब देवादिक पाचू देवमें रे, यामे करें केइ वेक्रे रूप रसाल रे।
यारी गति आगति ने यारो आतरो रे, याने अजीव कहे ते मूरख बाल रें॥ ७ ॥
ए पेहली गतमां सू उपजें आय नें रे, ए मरनें उपजे पेंहली गति मांय रे।
देवाधिदेव जावे छे मुगत में रें, याने अजीव सरधे ने बूडो कांय रे ॥ ८ ॥
परभव में जासी ते निश्चे जीव छें रे, काल गतागत करसी केम रे।
इतरोइ न सूझे मोह अंध जीव ने रे, उ बोले सूंने चित गहला जेम रे ॥ ९ ॥
भवी दरबादिक पाचूं देवरो रे, अरथ भगोती सूतर मांहि रे।
नवमे उदेसें सतक बारमें रे, ए निरणो करलेजो भवीयण ताहि रे ॥ १० ॥
एकद्री आदि पचिन्द्री जीव नें रे, छकाय धुरा धर कहे छे काल रे।
चवदेई भेद जीवरा तेहमे रे, याने अजीव कहे अग्यानी बाल रें ॥ ११ ॥
काल समायादिक वरते तेहने रे, नही कोइ खव देस परदेस रे।
तिण काल नें एकंद्रीयादिक जे कहे रे, ते करे अग्यानी कूड कलेस रे ॥ १२ ॥
एकद्री आदि पचिंद्री जीव नें रे, देस परदेस कह्या जिणराय रे।
ते देस परदेस चेतन दरब रा रे, जोवो भगोती सूतर मांय रे ॥ १३ ॥
ते दशमें उदेशें दूजा सतक मे रे, वले दशमां सतक रे पेहले जांण रे।
सोलमें सतक उदेशे आठमें रे, ए निरणो कर लेजो चतुर सुजाण रे ॥ १४ ॥
वले दसमें उंदेसे सतक इग्यारमे रे, तिहां पिण तेहीज छे निसतार रे।
जीव अजीव देस परदेस नो रे, रूपी अरूपी नो विसतार रे ॥ १५ ॥
नेरइयों तिरजंच मिनख ने देवता रे, त्यारे आठोई करम कह्या भगवत रे।
ए जीव हुसी तो यारे करम छें रे, त्याने निश्चेंइ जीव जांणो मतवंत रे ॥ १६ ॥
चोवीसोइ डंडक नियमा जीव छें रे, नियमा कह्यो ते वीसवावीस रे।
दसमें उदेशे छठा सतक मे रे, भगोती में भाष गया जगदीस रे ॥ १७ ॥
जीवरा चवदे भेद सिधत में रे, ते निश्चेइ जीव कह्या साख्यात रे।
याने मूढ मिथ्याती कहे अजीव छें रे, आ प्रतख भूठी तिणरीं वात रे ॥ १८ ॥
वले दशवीकालिक चोथा अधेन में रे, निश्चेंइ जीव कही छकाय रे।
तिणने अग्यांनी जीव न लेखवें रे, ते करें बूडण रो मूंढ उपाय रे ॥ १९ ॥
गिनाता सुतर रा तीजा अधेन मे रे, ठाणा अंग में तीजा ठाणा मांय रे।
छजीव नीकाय माहे सका कर रे, तो अहेत असुख ने समकित जाय रे ॥ २० ॥
छवभाव लेस्या ने जीव जिण कही रे, तिणरी अतर में करो पिछांण रे।
माठी लेस्या रा माठा लखण छें रे, रूडी लेस्या रा रूडा जांण रे ॥ २१ ॥
जीव रें मोह करम उदे हुवे रे, जब जीव वरते जो सावद्य कांम रे।
ते पाप उपजावे मेंला जोग सू रे, माठी लेस्या रा ए परिणांम रे ॥ २२ ॥

कदे मोह करम रो खयउपसम हुवें रे, जब जीव वरतें जो निरवद ठांम रे।
ते पाप खपाय उपजावें पुन नें रे, रूडी लेस्या रा ए परिणांम रे ॥ २३ ॥
ए लेश्या छें निश्चें लषण जीवरा रे, तो कांय भारी हुवो कहि कहि काल रे।
जोवों उतरारावेन चोतीसमें रे, वले पन्नावणा लेस्या पद संभाल रे ॥ २४ ॥
वले लेस्या परिणांम कह्या छेंजीवरा रे, ठांणा अंग दसमां ठांणा मांय रे।
वले जोग उपीयोग पावे तेहमें रे, तो निश्चेंइ जीव जांणों इण न्याय रे ॥ २५ ॥
मति सुरतादिक च्यारूं ग्यांन रा रे, कीधा अग्यांनी दोय दोय भेद रे।
सुतर अरथ विनां मुख सूं कहें रे, करमावस करें अणहुती खेद रे ॥ २६ ॥
मति सुरतादिक ने कहें काल छे रे, ग्यांन कहें छें यांसूं न्यार रे।
दोय २ भेद कीधां छें इण विधे रे, उण उंधी अकल सूं कीयों विचार रे ॥ २७ ॥
समदिष्टी री मति नें मतिग्यांन कह्यों रे, मिथ्याती री मति ते मति अनांण रें।
ए निरणो नदी सूतर में काढीयों रे, तो ही करें अग्यांनी कूड़ी तांण रे ॥ २८ ॥
पांच ग्यान ने तीन अग्यांन नो रे, वले च्यारूंई दरसण तणो विचार रे।
त्यांरा भेद कीयां छेंग्यांनी अतिघणां रे, ते दोय उपीयोग तणो विसतार रे ॥ २९ ॥
जे भेद कीयां छें जिण उपीयोग रा रे, ते भेद नें तेहीज उपयोग जांण रे।
त्यांमें काल रो भेद अग्यांनी घालीयो रे, ते नंदीय सूतर सूं करो पिछांण रे ॥ ३० ॥
वले अग्यांनने कही छे नियमा आतमा रें, नियमा ते निश्चेइ जीव जांण रे।
ए दसमें उदेसें सतक बारमें रे, भगोती मे जोय करो पिछाण रे ॥ ३१ ॥
उवाइ उपंग नें ठांणा अंग मे रे, च्यारूंई ध्यान तणो विसतार रे।
ध्यांन ध्यावे ते लषण जीवरों रे, यांनें अजीव कहे ते मूढ गिवार रे ॥ ३२ ॥
चवदें गुणठांणा लखण जीवरा रे, जोवो समवायंग सूतर मांय रे।
ए निश्चेइ चेतन गुण पर्याय नें रे, काल परूपें डूबो कांय रे ॥ ३३ ॥
च्यारूंई संज्ञा चेतन दरव छे रे, वीर कह्यो ठाणा अंग मांय रे।
जोवो चोथो दसमां अधेन में रे, संका मत आंणों भवीयण कांय रे ॥ ३४ ॥
जे जे दरव में जोग उपीयोग छे रे, वले लेस्या गुण ठांणा पर्याय प्राण रे।
ते तो दरव निश्चेंइ जीव छें रे, ए सरधा में संका मूल म आंण रे ॥ ३५ ॥

ढाल : ३

दुहा

कालवादी रा मति तणी, केइ कर रह्या कूडी तांण।
त्यांनें खुलवा जाब बतावीया, साख सूतर री आंण ॥ १ ॥
त्यांरी खोटी सरधा छुड़ायवा, काढ़ण मूल मिथ्यात।
कितराएक तो वले कहूं, ते सुणजो विख्यात ॥ २ ॥

ढाल

[निन्हव तेरासीया केड़ायत ओलखो]

छ नियठा नें पांचूंइ चारित भणी, यांनें कहें छें अग्यांनी काल हो।
ए निश्चेंइ चेतन गुण पर्याय छें, ते सुणजो सुरत संभाल हो॥
कालवादी रो मत कूडो घणों* ॥ १ ॥
छ नियठा नें पांचूंइ चारित तणा, छतीस छतीस छे दुवार।
पच्चीस में सतक उदेसे छठें सातमें, ए भगोती में कह्यों विसतार हो ॥ का० २ ॥
यांरा पजवा अंनता कह्या छें एक एक ना, त्यां पजवांरी अल्पा बोहत जांण।
ते संख असंख अनंत गुणा कह्या, ते पजवांरी करजों पिछांण हो ॥ ३ ॥
निग्रंथ सनातक नें यथाख्यात रा, यांरा पजवा बरोबर जांण।
सेष चारित नें नियठा मेंला कह्या, तिणसूं छें पजवांरी हांण हो ॥ ४ ॥
ए कुण दरबे मेंलो कुण उजलों, तिण दरब री करजों तहतीक हो।
यांने दरब षेतर काल भाव सूं ओलखों, यांरा गुणांरी पिण करजों ठीक हो ॥ ५ ॥
किण ही दोय जणां चारित साथें लीयो, समकाले छोड्या प्रांण हो।
काल सारिखों दोयां रा चारित तणों, पिण चारित गुण में फेर जांण हो ॥ ६ ॥
चारित नें जगन मझम उतकष्टों कह्यों, ते तो चेतन गुण पर्याय हो।
ते चारितावर्णी करम दुरा हूआं, निजगुण परगट थाय हो ॥ ७ ॥
ए संजया नें नियठा तों निश्चेंइ जीव छें, तिण मांहें संका म आंण हो।
यांनें काल परूपें करम वांधो मती, छोड दो कूडी तांण हो ॥ ८ ॥
सजती असंजती ने सजता संजती, एहवा बोल घणां छे ताहि हो।
ए सगलां ने जीव जिणेसर भाषीया, ते पन्नवणा भगोती मांहि हो ॥ ९ ॥
चारित आतमा श्री जिणवर कही, ते सूतर भगोती मझार हो।
ए दसमें उदेसे सतक बारमें, आतमा आठां रो विसतार हो ॥ १० ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

चारितावर्णी चारित नें विगाडीयो, ओ बिगड्यो ते निजगुण जाण हो।
परगुण आडो करम आवें नहीं, इणरी पिण करजों पिछांण हो ॥ ११ ॥
ए चारितावर्णी जेंणावर्णी करम कह्यों, तो चारित जेंणा जीव पर्याय।
ए नवमें सतक उदेसे इगतीस में, सूतर भगोती मांय हो ॥ १२ ॥
समाइ पचखांण संजम नें संवर, ववेक नें विउसग जांण हो।
ए सगला ने कही छे जिणेसर आतमा, तो कांय बूडो कर कर तांण हो ॥ १३ ॥
ए सूतर भगोती रा पेहला सतक में, नवमों उदेसो संभाल हो।
समाइ समता परिणांम गुण जीवरा, त्यांने भोलेइ म सरधो काल हो ॥ १४ ॥
ग्यांन दरसण चारित गुण कह्या जीवरा, ते अनुयोग दुवार मझार हो।
कोई जीव रो निजगुण चारित नही लेखवें, ते पूरो मूढ गिवार हो ॥ १५ ॥
दसमें अग छठा अधेन मांहें कह्यो, प्रथम संवर दया जांण हो।
ते दया ने नियमा निजगुण जिण कही, तिण गुण सूं पोहचें निरवांण हो ॥ १६ ॥
सुख दुख ग्यांन दरसण चारित तप, वले वीर्य उपीयोग वखांण हो।
ए आठ लखण कह्या चेतन दरब ना, ते अठावीसमा उत्तराधेन जांण हो ॥ १७ ॥
चारित परिणांम कह्या छें जीवरा, दसमेधेन ठांणाअंग मांय हो।
ते जीव परिणांम ने अजीव परूपनें, कोई मति करो बूडण रो उपाय हो ॥ १८ ॥
ठांणाअग चोथे कही छे. च्यार परवजा, धन पूंजीयादिक समांण हो।
ते करम न्यारा कीयां परवजा हुवे निरमली, तिण परवजा नें निजगुण जांण हो ॥ १९ ॥
वले ठांणाअंग चोथे च्यार चारित कह्या, भिन्नेजजरीए समांण हो।
छिदर सहीत नें रहित चारित कह्या, ते जीवनां गुण परमांण हो ॥ २० ॥
ए ग्यांन रो इंदर केवलग्यांन छे, समकत रो खायक समकत इंद हो।
जथाख्यात चारित इंद्र चारित तणों, ए तीजे ठांणे कह्यो छे छिणंद हो ॥ २१ ॥
उतकष्टा चेतन गुण ने इदर कह्या, तिणमें चारित गुण सूं पांमें निरवांण हो।
तिण चारित गुण ने काल परुपने, कांय बूडो कर कर तांण हो ॥ २२ ॥
जगन मझम उतकष्टी आराधना, ते ग्यांन दरसण चारित री जांण हो।
ते कुण दरब नें जीव आराधीयों, तिण दरब री करजो पिछांण हो ॥ २३ ॥
जिण जीव कीयां निजगुण ने निरमला, तिण मोह करम ने टाल हो।
जिण चारित आराध्यो ते निजगुण आपरो, तिणनें मूरख सरधे काल हो ॥ २४ ॥
देंस चारित नें सर्व चारित कह्यों, ते त्याग परमांणे गुण जोय हो।
काल दरब तो देस न चालीयो, तो काल चारित किम होय हो ॥ २५ ॥
चारितादिक गुण अनेक असासता, त्यांनें सरधे अग्यांनी काल हो।
उ भावें जीव न मांनें असासतो, ते तो सूतर सिरदें आल हो ॥ २६ ॥

दरबे सासतो नें भावे असासतो, जीव नें कह्यों जिणराय हो।
ते सूतर भगोती रे सतक सातमें, दूजा उदेसा मांय हो ॥ २७ ॥

दरबे सासतो जीव नें यूं कह्यो, जीव रो अजीव न थाय हो।
भावे जीव नें कह्यों छें असासतो, ते तो परजाय पलटें जाय हो ॥ २८ ॥

निजगुण फिरें नें परगुण झरपडें, ते परगुण पुदगल जांण हो।
परगुण झरीयां हुवें निजगुण निरमला, आ सरधा घट में आंण हो ॥ २९ ॥

असुध निजगुण फिरीयां सुध निजगुण हूवे, ते परगुण करदे दूर हो।
सुध निजगुण फिरीयां असुध निजगुण हुवे, तिणसूं परगुण लागें पूर हो ॥ ३० ॥

जे मेला निजगुण मोह वसें, त्यां निजगुण सूं करम बंधाय हो।
मोह रहित निजगुण हुवे निरमला, त्यांसूं परगुण दूर पलाय हो ॥ ३१ ॥

सात करम उदे सूं निजगुण मेंला हुवें, त्यांसूं पाप न लागें तांम हो।
ते करम झरीया हुवे निजगुण निरमला, त्यांरा गुण निपन छें नांम हो ॥ ३२ ॥

आठ करम उदे हूआं नीपजें निजगुण उदें भाव अनेक हो।
आठ करमां नें खय कीधां नीपनां, निजगुण खायक भाव वशेख हो ॥ ३३ ॥

च्यार करमां नें खयउपसम कीया नीपजें, निजगुण खयउपसम भाव हो।
मोह करम उपसमीयां परगटे, निजगुण उपसम भाव हो ॥ ३४ ॥

ए च्यारूंई भाव परिणांमीक जीव छें, ते चेतन गुण पर्याय हो।
ए भाव फिरें पिण दरब फिरे नही, ते पिण सुणजो न्याय हो ॥ ३५ ॥

तत सुध सरध्या हुवे जीव समकती, उंधा सरध्या मिथ्याती थाय हो।
उहीज ग्यांनी रो अग्यांनी हुवे, अग्यांनी रो ग्यांनी हुय जाय हो ॥ ३६ ॥

नारकी नें देवता रो मिनष तिरजंच हुवे, मिनख तिरजंच देवता थाय हो।
इत्यादिक जीवरा भाव अनेक ही, ते ओर रो ओर हुय जाय हो ॥ ३७ ॥

सासतो जीव दरब छे अनादरो, तिणरी पर्याय अनंती जांण हो।
ते पर्याय हांण विरध हुवे करम सू, पिण दरब री नही विरध हांण हो ॥ ३८ ॥

जे भाव फिरे पिण दूर पडे नहीं, त्यां भावां रा नांम अनेक हो।
इणविध भावे जीव असासतो, ते सरधों आंण ववेक हो ॥ ३९ ॥

उ जीव रा भाव न सरधे असासता, तिण काढ्यो छें मत कूर हो।
यांने काल कहें ते कुबद लगाय ने, तिणरी संगत करजों दूर हो ॥ ४० ॥

वले गोतम सांमी पूछा करी जीव री, सूतर भगोती मांय हो।
ते तीजा उदेसा छठा सतक मे, ते साभल जो चित्त ल्याय हो ॥ ४१ ॥

आदि नें अंत रहीत ए जीव छे, के आदि नही अत सहीत हो ॥ जिणेसर ॥
के आदि सहीत ने अंत रहीत छे, के आदि ने अंत सहीत वदीत हो ॥ जिणेसर ॥
ए गोतम सामी पूछ्यो श्री वीर ने*॥ ४२ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

श्री वीर जिणेसर कहें सुण गोयमा, ए च्यारूंई भांगा छें जीव हो।
त्यांरा भेद विसतार कहूं छूं जूजूआ, ए सरध्यां समकत री नींव हो ॥ ए० ४३ ॥
ए आदि रहीत नें अंत रहीत छें, ए अभव सिद्धीया जीव जांण हो।
आदि नहीं पिण अंत सहीत छें, ते भव सिद्धी जीव पिछांण हो ॥ ४४ ॥
जे करम खपाय नें सिद्धी गति मे गया, त्यांरी आदि छे पिण अंत रहीत हो।
नारकी तिरजंच मिनख ने देवता, ए आदि नें अंत सहीत हो ॥ ४५ ॥
ए च्यारूंई जीव जिणेसर भाषीया, त्यांनें जीव न सरधें मूंढ हो।
ते वूडें छे वीरनां वचन उत्थापनें, कर कर कूड़ी रूढ हो ॥ ४६ ॥

ढाल : ४

दुहा

कालवादी चेतन नही ओलख्यों, तिणमे खोट अनन्त।
तिमहीज पुदगल दरब में, कहितां न आवें अंत॥ १ ॥
एक वर्ण एक गंध छे, एक रस फरस छें दोय।
उ माने छें पुदगल एहनें, ते पिण सुध न कोय॥ २ ॥
पांच वर्ण दोय गंध छें, पांच रस फरस छें च्यार।
उ समचें पुदगल कहें एहनें, ते पिण असुध विचार॥ ३ ॥
भारी हलको सुहालो खरदरो, ए पुदगल दरब साख्यात।
यांने कालवादी कहे काल छे, ते प्रतख भूठ मिथ्यात॥ ४ ॥
खंध देस परदेस परमांणूओ, यांनें पुदगल मांनें नांहि।
त्यांनें पिण कहे काल छे, आ उंधी अकल घट मांहि॥ ५ ॥
ए प्रतख पुदगल दरब ने, कहे छें अग्यांनी काल।
उणरी सरधा नें सरधा रा उतर कहूं, ते सुणजो सुरत संभाल॥ ६ ॥

ढाल

[मम करो काया माया कारमी]

पुद्गल रूपी दरब तणा, च्यार भेद कीयां जिणराय रे।
खंद देस परदेस परमाणुओ, छतीसमां उत्तराधेन मांय रे।
कालवादी री सरधा सुणो* ॥ १ ॥
पुद्गल रा भेद च्यारूं भणी, यांने कहे छें अग्यांनी मूढ काल रे।
ए करमा वस सुध सूभे नही, अभितर फूटी आयां जाल रे॥ २ ॥
वीसामीसा वले पोगसा, ए पुद्गल री तीन जात रे।
यां पुदगलां नें काल दरब कहें, तिणरे छे. गूढ़ मिथ्यात रे॥ ३ ॥
अठारें पाप ठाणा चोफरसी कह्या, आठ करमे चोफरसी कह्या वीर रे।
मन वचन जोग दरवे लीया, चोफरसी कह्यों कारमण सरीर रे॥ ४ ॥
सब्द अंधारा उद्योत नें, प्रकास छाया तावरो जांण रे।
इत्यादिक एहवा सूक्ष्म खंद ने, चोफरसी पुद्गल ने पिछांण रे॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

छव दरब लेस्या च्यार सरीर नें, घणो दधी घणवाय तणवाय रे।
काय जोग नें केइ बादर खद ने, याने अठ फरसी कह्या जिणराय रे॥ ६॥

दीप समुदर देवलोक नें, मुगत सिला पिण तेह रे।
नरकावासा जाव वेमाणिया, ए सर्व अठफरसी दरब एह रे॥ ७॥

ए चोफरसी आठफरसी पुद्गल कह्या, ते वरण गंध रस सहीत रे।
यांनें काल कहे मूढ मूरख थको, तिणरी सरधा घणी विपरीत रे॥ ८॥

धर्म अधर्म आकाश नें, काल पुद्गल जीव वखांण रे।
यांमें पांच दरबे नें अरूपी कह्या, रूपी एक पुद्गल जांण रे॥ ९॥

ए भगोती रे सतक बारमें, पांचमें उदेने संभाल रे।
ज्यांनें पुदगल दरब श्री जिण कह्या, त्यानें मूरख परूपें छें काल रे॥ १०॥

हाट घर मिंदर मालीया, आसण सयण-सेंण जांण विमांण रे।
वसत्र गेंहणा आभूषण, हिरण सोवनादिक जांण रे॥ ११॥

गंध कसबोइ बाजंत्रादिक, असणादिक च्यार आहार रे।
ए उवभोग परिभोग आवे जीव रे, एक वार बहू वार रे॥ १२॥

त्यांमें सब्द रूप दोय कामा कह्या, गंध रस फरस तीन भोग रे।
ए कांम ने भोग रूपी जिण कह्या, ते आय मिलीयां जीव रे संजोग रे॥ १३॥

ए कांम नें भोग रूपी ते पुद्गल कह्या, त्यानें काल परूपे बूडो कांय रे।
ए भगोती रे सतक सात मे, सातमां उदेसा रे मांय रे॥ १४॥

घृत ने खांड मेदें करी, कोइ नीपजावे विविध पकवांन रे।
ए प्रतख वात सरधे नही, ओ पिण पूरों अग्यांन रे॥ १५॥

घी खांड मेदों तो कहें काल था, ए तीनूंइ गया विललाय रे।
यां तीना सूं पकवांन नही नीपनां, एतो काल परगट हुओ आय रे॥ १६॥

पकवांन नें काल दरब कहें, यांरां नांम दरब कहें एक रे।
इण विपरीत सरधां रा उत्तर कहू, ते सांभलो आण ववेक रे॥ १७॥

घृत ने खाड मेदे करी, कोइ निपजावे विविध पकवांन रे।
त्यांरा नांम एक २ रा अनेक छे, सूतरे भाख्यो भगवांन रे॥ १८॥

ए पकवांन तो पुद्गल दरब छे, तिणमें पांच वर्ण दोय गंध रे।
पांच रस आठ फरस छे, ते पुद्गल मिलीया छे बध रे॥ १९॥

त्यांरा नाम तो ओलखवा भणी, ते नांम छे सूरत ग्यान रे।
ते नांम नें दरब छे जूजूआ, ए वीर वचन सत मान रे॥ २०॥

ए नांम दरब जूदो सरधायवा, ओलखों दरब आकाश रे।
ते दरब छे लोक अलोक में, इणरो नांम छें जीव रें पास रे॥ २१॥

इण परें दरब अनेक छे, ते दरब छे दरब रे ठांम रे।
त्यां दरबां रा नाम जाणें जठे, जीव कनें सर्व नांम रे॥ २२॥

ढाल : ५

दुहा

चदरमा ने सूर्य नी चाल सू, नीपजे समयादिक काल।
तिणरी उतपत छे प्रवाह ज्यूं, निरन्तर दगचाल ॥ १ ॥
ते अढाई दीप दोय समुद में, सेष दीप समुद सर्वटाल।
पेतालीस लाख जोजन लगे, तिरछो वरतें काल ॥ २ ॥
उचो जोतक चकर लगों, ते नवसो जोजन परमाण।
सहंस जोजन नीचो कह्यो, दोय विचे उडी तांइ जांण ॥ ३ ॥
मेरू विचे उची दिस तिहां, प्रतिबब सूं वरते काल।
अठा बारे काल कठे नही, तिणरो सूतर माहे निकाल ॥ ४ ॥
कालवादी कहे लोक अलोक मे, सगले वरतें काल।
ते सूतर अर्थ विनां बके, वले देवे सूतर सिर आल ॥ ५ ॥
उधा अर्थ करे अकल विना, वले वोले आल पपाल।
हिवे काल दरब रो निरणो कहू, ते सुणजो सुरत सभाल ॥ ६ ॥

ढाल

[म्हारो सेणा रो साथी रे वीछीयो]

चाल सासती ले जोतष्यां तणी, जीव पुद्गल रो जघन व्यापार जी।
तिणने समो कह्यों तीथकरे, तिणरो सांभलजो विसतार जी।
काल वरते अढाई दीप मे* ॥ १ ॥
असंख्याता समां री आवलका हुवें, जाव पुदगल परावर्तन जांण जी।
अतीत अनागत वरतमान ने, काल दरब री करजों पिछांण जी ॥का० २ ॥
जिण खेतर में समों वरते नही, तठे आवलकादिक पिण नही जी।
आवलकादिक तो समां सू हुवे, अधा समों सगला रे मांहि जी ॥ ३ ॥
उतरावेन में छ दरबां तणा, चाल्या दरब खेतर काल भाव जी।
काल वरते समय खेतर मभे, तठे कह्यो उघाड़ो न्याव जी ॥ ४ ॥
समय खेतर क्हे सर्व खेतर ने, कालवादी सूतर रो अजांण जी।
समय खेतर चाल्यो सिद्धांत में, तिणरा पाठ री करजो पिछांण जी ॥ ५ ॥
अढ़ाई दीप दोय समुद ने, समय खेतर कह्यों जिणराय जी।
भगोती रे सतक दूसरें, जोवो नवमां उदेसा मांय जी ॥ ६ ॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सीमंत नांमा नरका वासो कह्यो, समय खेतर ने उडू विमांण जी।
वले मुगत सिला चोथी कही, ए तो च्यारूं बरावर जांण जी ॥ ७ ॥
च्यारूं पेंतालीस लाख जोजन तणा, ठांणाअंग चोथा ठांणा मांहि जी।
समय खेतर समय सहीत छे, गुण निपन नांम छें ताहि जी ॥ ८ ॥
परमांण[1] आहाउनिव्वत[2] काल छे, वले मरण[4] ने अधाकाल जी।
च्यारूं भेद छें अधाकाल ना, ठाणाअंग चोथो ठांणो संभाल जी ॥ ९ ॥
अधाकाल छें मिनख लोक मे, ते तो समयादिक जांणे एह जी।
आतो सूर्यादिक री चाल छे, अढी दीप बारे नही तेह जी ॥ १० ॥
इंदा[1] अगी[2] जमा[3] ने नेरइ[4], वारुणी[5] वायवा[6] दिस जांण जी।
सोमा[7] इसणीया[8] विमला[9] दिसि, दसमी दिस तमा[10] पिछांण जी ॥ ११ ॥
नव दिस मे अजीव अरूपी तणा, सात भेद तिहा वरते काल जी।
छत्र भेद नीची तमा दिस मझे, अधा समो दीयो जिण टाल जी ॥ १२ ॥
ए भगोती दसमां सतक मे, पेहले उदेसे जोय संभाल जी।
तो ही कालवादी झूठो थको, लोक अलोक मे कहे काल जी ॥ १३ ॥
नीचा तिरछा खेतर लोक में, अजीव अरूपी रा भेद सात जी।
छ भेद कह्या ऊंचा लोक में, अधाकाल टाल्यो साख्यात जी ॥ १४ ॥
ए भगोती रे सतक इग्यार मे, लेजो दसमें उदेसे सभाल जी।
उचा लोक मे काल निषेधीयो, तो अलोक मे किहां थी काल जी ॥ १५ ॥
छहूं दिस लोक नें अंत छेहडे, नही वरतें समयादिक काल जी।
अजीव अरूपी रा छ भेद छे, अधासमों दीयो जिण टाल जी ॥ १६ ॥
धर्म अधर्म नें आकास नां, देस परदेस कह्या जिणराय जी।
कालवादी कहे तिहां काल छे, तो तू सातमों भेद बताय जी ॥ १७ ॥
छ भेद अरूपी रा कह्या, रूपी रा कह्या छे भेद च्यार जी।
काल परूपें लोक रे छेहडे, तो तूं काढ बताय इग्यार जी ॥ १८ ॥
इग्यारे भेद तो काढ सके नहीं, लोक अलोक मे कहे काल जी।
उंधी परूपे सुध बुध बाहिरा, दे दे सूतर रे सिर आल जी ॥ १९ ॥
रूपी अरूपी विण वसतु नही, जीव अजीव विण नही काय जी।
त्यारो लेखो तो मूढ करे नही, यूंही कूड़ी करे बकवाय जी ॥ २० ॥
रूपी अरूपी जीव अजीव रो, रूडी रीत काढ्यों नीकाल जी।
भगोती रे सतक सोलमें, आठमें उदेसे संभाल जी ॥ २१ ॥
कालवादी कहें काल अलोक मे, ते बोले नही वचन विमास जी।
अजीव दरब रो देस अलोक में, अनंत भाग उणो छे आकास जी ॥ २२ ॥

दसमें उदेसे दूजा सतक मे, भगोती में काढ्यो नीकाल जी।
पिण कालवादी भूठ आदस्यो, अलोक में कहि २ काल जी ॥ २३ ॥
रात-दिन अनंता नीपजे, ते तो लोक असंखेग मांय जी।
अढी दीप में दरब अनत छे, इण लेखें अनता थाय जी ॥ २४ ॥
एक २ दरब उपर गिण्यां, एक २ रात दिन जांण जी।
इम अनता दरब उपर गिण्यां, अनता रात दिन पिछांण जी ॥ २५ ॥
वले तीनूंइ काल तणा गिण्यां, तो पिण अनंत हुवे दिन रात जी।
ए भगोती सतक पांचमे, नवमे उदेसे कह्या साख्यात जी ॥ २६ ॥
काल फरसे पांचू दरबा तणा, छ दिस ना परदेस चकवाल जी।
पिण परदेस पांचू दरब नां, केइ फरसे न फरसे काल जी ॥ २७ ॥
समय खेतर परदेस आगलो, तठा बारे न फरसे काल जी।
मांहे परदेस पांचू दरब ना, अधा समों फरसे दगचाल जी ॥ २८ ॥
जो काल हुवे लोक अलोक मे, तो सगला परदेस फरेस काल जी।
फरसे न फरसे जिण क्याने कहे, कोइ समझो सुरत संभाल जी ॥ २९ ॥
भगोती रे सतक तेरमें, चोथे उदेसे ए विसतार जी।
फरसे नही फरसे ते विवरो कह्यों, छ ही दरबां तणो निसतार जी ॥ ३० ॥
नीची दिस थी उची दिस मझे, दरब अनत गुणां तिण मांय जी।
छ दरबां री अल्पावोहत मे, तिणरो अर्थ सुणो चित्त ल्याय जी ॥ ३१ ॥
नीची दिस में काल वरते नही, उची दिस काल वरते तांहि जी।
ते काल दरब माहें मिल्यां, अनंत गुणां उंची दिस मांहि जी ॥ ३२ ॥
फिटकरलकरंड मेरु तणो, तिहां उंची दिस वरतें काल जी।
चंद सूर्य नी प्रभा पड़े तठे, समां नीपजे दग चाल जी ॥ ३३ ॥
उंचा लोक थी नीचा लोक में, दरब अनंत गुणां छे ताहि जी।
तठे समां अनंता नीपजे, दोय विजे उडी तिण मांहि जी ॥ ३४ ॥
उंचा लोक थी नीचा लोक मे, पुदगल जीव इधक विशेख जी।
अनता गुणां कह्यां ते काल सू, छ दरव री अल्पा वोहत देख जी ॥ ३५ ॥
उंचा लोक में काल वरतें नही, नीची दिस मे न वरते काल जी।
काल वरते कहे सर्व खेतर में, ते करे मूढ भूठी भखाल जी ॥ ३६ ॥
पन्नावणा रा तीजा पद मझे, तठे कह्यों घणों विसतार जी।
तिणरो निरणो करें घट भीत रे, कालवादी रो संग निवार जी ॥ ३७ ॥
लोक आकाशती सर्व लोक में, तिणरा देस ने फरसे काल जी।
तिमहीज फरसें देश लोक नों, ए तो अधा समो दगचाल जी ॥ ३८ ॥

आकाशती रा देस परदेस सू, अलोक ने फरस्यो जांण जी।
और दरब नही अलोक मे, ए श्री जिणवचन परमांण जी॥ ३९॥
अढाई दीप दोय समुद ने, अधासमो फरसें दगचाल जी।
सेष दीप समुदर तेहने, अधासमों न फरसे काल जी॥ ४०॥
समय खेतर बारे छे नही, आ तो जोतषीयां री चाल जी।
जेठ समयादिक नीपजे नही, तठे किहां थी फरसे काल जी॥ ४१॥
पन्नवणा सूतर रे पद पनरमे, कोइ बुधवंत लेजो संभाल जी।
पिण कालवादी करमां वसे, लोक अलोक मे कहे काल जी॥ ४२॥
नीपनें सूर्यादिक चालीया, समयादिक काल अनत जी।
ए भगोती रे सतक बारमे, छठे उदेसे कह्यों भगवंत जी॥ ४३॥
नरकादिक गति में वरतें नही, समो आवलिकादिक जांण जी।
त्यांरा आउषादिक ने मापवा, मिनष खेतर में मांन परमांण जी॥ ४४॥
आखा लोक मे काल वरते नही, तो अलोक मे किहांथी होय जी।
भगोती रे सतक पांच मे, लेजो नवमो उदेसो जोय जी॥ ४५॥
खेतर उजाड़ मे धांन नीपनो, कोइ कहे मण सो दोय च्यार जी।
तिणरा मापा तोला छे गांम में, उण उनमान कह्यों विचार जी॥ ४६॥
ज्यूं नरकादिक जीवां कने, आउषादिक पुद्गल पाय जी।
ते तो समें २ पुद्गल खिरे, त्यांरो मापो समय खेतर कांय जी॥ ४७॥
कपड़ो छे बजाज रा हाट में, गज दरजी रे घर ताहि जी।
ज्यूं आउषादिक जीवां कने, मापो छें समय खेतर मांहि जी॥ ४८॥
गाय भेंस उहाडै हांचले, कोइ कहे दूध सेर छें च्यार जी।
पिण तोला पड्या घर हाट में, इणरे उनमांन कह्यो विचार जी॥ ४९॥
ज्यूं ससारी जीवां तणा, आउषादिक सगलां तीर जी।
त्यांरा आउषादिक ने मापवा, समय खेतर में कह्यों कालवीर जी॥ ५०॥
जीव अजीव अवगाहे रह्या, तिणरो मापो छे खेतर आकास जी।
केइ उपजें विगसे केइ सासता, काळ सूं माप लेजो विनास जी॥ ५१॥
संचिठण गति च्यार मे, तिणरा अरथ री कीजो पिछांण जी।
सुन असुन मिश्रपणें रह्यों, तिणने काल सूं गिणीयो जांण जी॥ ५२॥
जीव नरक सूं गयो गति ओरमें, फेर पाछो आयो नरक मांहि जी।
जद नेरइय मेल गयो हुंतो, ते तो एक रह्यों नहीं ताहि जी॥ ५३॥
ते तो सुन सचिठण मे रह्यों, ते तो काल सूं गिणीयो वीर जी।
हिवें असुन संचिठण नें कहूं, तिणरो सुणजो अरथ सधीर जी॥ ५४॥

जीव नरक सूं गयो गति ओर में, फेर पाछो आयो नरक ताहि जी।
जद नेरइया मेल गयों हूँ तो, ते तो सगलाइ हुवें नरक मांहि जी॥ ५५ ॥
ते तो असुन संचिठण में रह्यो, ते तो काल सूं गिणीयो एम जी।
हिवें मिश्र संचिठण नें कहूँ, तिणरो अरथ सुणों धर पेम जी॥ ५६ ॥
जीव नरक सूं गयो गति ओर मे, फेर पाछो आयो नरक मांय जी।
जद नेरइया मेल गयो हूँतो, केइ उवेहीज केइ ओर आय जी॥ ५७ ॥
ते तो मिश्र सचिठण में रह्यो, तिणनें काल सू गिण्यो भगवंत जी।
पिण काल न वरते नरक में, तिणरो न्याय सुणो बुधवत जी॥ ५८ ॥
सुन असुन मिश्र काल नरक में, ते काल कह्या ओर न्याय जी।
तिणरो दिष्टन्त दे निरणो कहूँ, ते सांभल जो चित्त ल्याय जी॥ ५९ ॥
एक चाडो भरयो तेल तेहनें, कोइ कहें तेल सेर छ सात जी।
पिण सेर नही चाडा मझे, ज्यूं नरक में नही काल विख्यात जी॥ ६० ॥
कालवादी कूडो मत थापवा, नरक माहे परूपे काल जी।
सुन असुन मिश्र कालरो, भेद जांण्यां विण करे भ्रखाल जी॥ ६१ ॥
कालवादी रा मत तणी, एक इचरज वाली वात जी।
समझायो समझे नही, तिणरा घट मांहें गूढ मिथ्यात जी॥ ६२ ॥
हूं कहि २ नें कितरो कहूँ, कालवादी रा मत रो कूड़ जी।
इम सांमल नें नरनारीयां, कालवादी सू रहजो दूर जी॥ ६३ ॥
काल दरब ओलखायवा, जोड कीधीं खेरवा मझार जी।
समत अठारें बत्तीसें समें, आसाढ सुद एकम सोमवार जी॥ ६४ ॥

ढाल : ६

दुहा

कालवादी रे करम उदें हुवां, तिणसूं हूवों घणों विपरीत ।
तिणने छेडवीया उलटो पडें, नही न्याय मेलण री नीत ॥ १ ॥
अरिहंत देव ने आयरीया, वले उवभाय सगला साघ ।
त्यांनें अजीव कहें मूरख थको, वले भूठों करें विषवाद ॥ २ ॥
इण कालवादी पाषडी तणों, करडों घणों छे मिथ्यात ।
केइ भारीकरमा जीवडा, ते मांनें इणरी वात ॥ ३ ॥
केइ धेषी छे सुघ साधां तणां, त्यांरे घोर रूद्र मिथ्यात ।
त्यांनें समभ पड़े नही सर्वथा, तोही करें इणरी पखपात ॥ ४ ॥
तिरण तारण उत्तम पुरषा भणी, अजीव कहतो नांणें मूंढ लाज ।
हिवे साधु करे छे परूपणा, यांनें जीव सरधावण काज ॥ ५ ॥

ढाल

[धन्या श्री भाजनगर में वाइमे]

अरिहंत देव जिण सासण रा नायक, ते निश्चेइ उत्तम जीवो रे लो ।
त्यांनें अजीव कहे कोइ मूंढ मिथ्याती, तिण दीधी नरक री नीवो रे लो ॥
देखो रे आवा चेते नही* ॥ १ ॥
अरिहंत देव अरी करमां नें हणीया, त्या कीधी धर्म री आदो रे ।
त्यांनें अजीव सरधे कांय बूडो, कर २ कूडी विषवादो रे लो ॥ दे० २ ॥
अरिहत आप तिरे ओरां ने तारे, तिरण तारण उघाडों छे पाठो रे ।
याने अजीव सरधे उसभ उदे सूं, त्यारो भाग उगडीयो माठो रे लो ॥ ३ ॥
अरिहंत देव मुगत जावारा कामी, त्या दीधी संसार ने पूठो रे ।
त्यां अरिहंता ने जीव न सरधे, ते मत निश्चेंइ भूठो रे लो ॥ ४ ॥
सगला मुनीसरां रा टोला माहे, तीथकर देव मोटा रे ।
ते मुनीसरां ने तीथंकर देवा ने, अजीव सरधे तिण खाधा खोटा रे ॥ ५ ॥
साधां रा गण अधिपती गणधर, ते अनेक गुणां कर सहीतो रे लो ।
त्यांनें अजीव कहे केइ भारीकरमां, ते होसी चिहूंगति में फजीतो रे लो ॥ ६ ॥
आचार्य पिण मोटा मुनीसर, ते छत्तीस गुणां सहीतो रे लो ।
त्यांने अजीव कहे केइ मत हीण मांनव, त्यांरी विकल करें परतीतो रे लो ॥ ७ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

उवझाय पिण मोटां मुनीवर, ते पचीस गुणां सहीतो रे।
त्यांने अजीव कहें केइ अकल विहूंणा, ते नरभव खोय जासी रीतो रे लो ॥ ८ ॥
साधु रिषीसर मोटा मुनीसर, ते सत्तावीस गुणां करे पूरा रे।
त्यांनें अजीव कहे बाल अग्यांनी, तिणरी वात माने ते कूडा रे ॥ ९ ॥
अरिहंत आचार्य उवझाय ने साधु, ते सगलाई मोटा अणगारो रे।
त्यांनें अजीव सरधे उसभ उदे सूं, ते बूड गया काली धारो रे ॥ १० ॥
यां मोटां पुरषां नें अजीव सरधसी, तिणरें बधसी पाप रा पूरो रे।
उवे उदे आसी जद दुखीयो होसी, तिणमें म जांणों कूड़ो रे ॥ ११ ॥
जो इणहीज भव मे पाप उदें हुवे, तो पडे बाहलां रो विजोगो रे।
वले रिध संपत सगली विललावें, वले मिले दुसमण रो जोगो रे लो ॥ १२ ॥
कदा इण भव मांहें उदे पाप न होवे, तो परभव में संका मत आंणो रे।
उत्तम पुरषां नें अजीव सरधें त्यांनें, भव २ मे दुखीयों जांणो रे ॥ १३ ॥
उत्तम पुरषां नें अजीव सरधीयां, आसातणा लागे भारी रे।
उसभ करम लागे इण सरधा थी, तिण सूं भव २ में होसी खुवारी रे लो ॥ १४ ॥
अरिहंत आचार्य उवझाय ने साधु, त्यारो भजन करो दिन रातो रे।
त्यांने अजीव कहें छे कुपातर, तिणरी मूरख मांनसी वातो रे लो ॥ १५ ॥
अरिहत आचारज उवझाय ने साधु, यां सगलां ने ई जीव जांणो रे।
आगम संभालो नें जिणमत जोवों, इणमे संका मत आंणो रे ॥ १६ ॥
कालवादी री सरधा पुरमे परगट कीधी, भव जीवां रो करण उधारो रे।
समत अठारे बरस अडतीसे, वैसाख सुद पांचम बुधवारो रे लो ॥ १७ ॥

ढाल : ७

दुहा

अरिहंत आचार्य उवज्झाय नें, वले साधु मोटा मुनिराय।
त्यांनें भारमलजी कहै भाव छै, जुदा जुदा कहाय ॥१॥
अरिहंत नें अरिहंतनों, इम केय २ बोल कहाय।
मोक्ष नें पहुंच्या सर्व नें, त्यांनें अजीव दीया ठहराय ॥२॥
अरिहंतनों छूटे गयो, साधुनों पिण छूट जाय।
जीव हुवां सिद्ध तिण समें, जद ए कठे गया विललाय ॥३॥
जीव नें जीव ना गुण सासता, ते कदे नहीं विललाय।
ते विललाय गुणां हुवें, ते भाव दरब छै ताय ॥४॥
इम कहि २ भोला लोक नें, नांख्या भर्म जाल मांय।
तिण अरिहंत साधु नें सिद्ध हुवो, ते जाबक खबर न कांय ॥५॥
अरिहंत साधु थी सिद्ध हुवें, ते सूत्र में न्याय अनेक।
हिवें थोड़ा सा प्रगट करूं, ते सुणजो आण ववेक ॥६॥

ढाल

[चतुर विचार करो नें देखो]

नमोथुणं अरिहंत सिद्धां नें दीधो, ते अरिहंत थी हुआ सिधो रे।
अंम २ नमोथुणं संभालो, ओ चोड़े पाठ प्रसिधो रे।
चतुर विचार करें नें देखो ॥१॥
वे अरिहंत जेवंता विचरें, ते सूत्र जाबा रा कांमी रे।
ओ अरिहंत हुआ अनंता, त्यां सगलाइ सिव गति पांमी रे ॥२॥
पेंहलो नमोथुणं दीयो अरिहंत सिद्धां नें, बीजो नमोथुणं अरिहंतां नें रे।
त्यां अरिहंतां नें अजीव परूपें, तिणरी बात अग्यांनी मांनें रे ॥३॥
चोवीसां री अस्तुती लोगस गुणतां, ते अरिहंत सिव हुआ चोइसोंई रे।
त्यां अरिहंतां नें अजीव सरधें, ते गया जमारो खोई रे ॥४॥
अरिहंतां रा गुणां करें अरिहंत बाजें, साधां रा गुणां सूं साधु बाजे रे।
त्यां मोटा पुरषां नें अजीव कहतां, मूरख मूल न लाजें रे ॥५॥
ज्यां पुरषां रा नांम लीयां थी, कटें पाप अकूतो रे।
त्यां पुरषां नें अजीव परूपें, तिण दीधा नरक रा सूतो रे ॥६॥
भारमलजी कहै भाव जीव हुवें तो, सिद्धां में साधु बतावो रे।
भाव तो काल दरब पूरो हुवों, जब उननें साध बतावे छै त्यांनो रे ॥७॥

रूइ रो सूत करे कपडो कीयो, पिण उतपत रूइ री जांणो रे।
ज्यूं साध अरिहंत थई ने सिध हूआ, पिण यांरी उतपत साध पिछांणो रे॥ ८॥
तिण कपड़ा नें रूइ कहें त्यांने, मतहीण मांनव जांणों रे।
ज्यूं सिद्धां ने साध परूपे, ते मूढ मिथ्याती अयांणो रे॥ ६॥
रूइ रा गुण तो कपड़ा मे समाया, ज्यूं साध रा गुण सिधां में समावें रे।
पिण वरतमांन काले हुवें जिम कहणों, ते समझ विरलां ने आवें रे॥ १०॥
रूइ रो गराग आयां कपड़ो जोवे, पिण रूइ कठा सूं पावे रे।
ज्यूं कोइ साध सिधां मांहे पूछे, सिद्धां में साध किहां थी बतावे रे॥ ११॥
खांड रो बूरो करें कीधी मिश्री, पिण स्वाद न पडीयो जूओ रे।
ज्यूं वधता २ जीव रा गुण वधीया, जब ओ साध तणो सिध हुओ रे॥ १२।
मांखण ताएनें घृत कीधों, ते घृत हुओ छें चोखो रे।
ज्यूं साधां रा सिध हूआ करणी करें, त्यां सकल करम कीयां सोखो रे॥ १३॥
आखा लोक में धर्मास्तीकाय रा, खंध परदेस दोय भेद पावे रे।
आखा लोक में पूछे धर्मास्ती रो देस, तिणमें देस किहां थी बतावे रे॥ १४॥
खंध हुवें तिहां देस न हूवे, देस हुवे तिहां खंध न पावे रे।
आखो ते खध ने उणो ते देस, दोनूं भेला किहां थी बतावे रे॥ १५॥
ज्यूं आतमिक सुख पूरा सिद्धां में, देस सुख साधां मांहे पिछांणो रे।
सपूर्ण सुख ने सिध कहीजे, देस सुख ते साध नें जांणों रे॥ १६॥
संपूर्ण सुख तिहां नही अधूरा, अधूरा तिहां संपूर्ण नांही रे।
पूरा सुख सिधां में उणा सुख साधां में, दोनूं सुख नहीं एकण मांही रे॥ १७॥
जिण समे साध तिण समें देस सुख, सिध तिण समें देस सुख नांही रे।
जब साध मरे ने सिध हूवो जद, देस सुख आयो सर्व सुख मांही रे॥ १८॥
धर्मास्तीकाय रो खध हुवे तिहां, देस रो खय नहीं हूवों रे।
ज्यूं साध रो सिध हूवों जब, साध न पडीयो जूओ रे॥ १६॥
मोष री साधन करतों साध कहिवांणो, साधन कर चूका ने सिध जांणों रे।
उणहीज साध रो सिध हुवों छें, तिण मांहे संका मत आणो रे॥ २०॥
तिण साधु ने अजीव कहे छे अग्यांनी, ते बूड गयो काली धारो रे।
इण सरधा ने कोइ साची जांणे, ते पिण जासी जनम विगाडो रे॥ २१॥
साध रो सिध भगवंत हूवो छें, तिणरी खबर न कायो रे।
तिण साध ने अजीव कहें कालवादी, तिण गालां रो गोलो चलायो रे॥ २२॥
कोरा धांन ने कोरो धांन कह्यो छे, सीझता ने कहे सीझे धांनो रे।
सीझ गया ने कह्यो सीझ्यो धांन, ए तीनूं धान जांणो बुधवांनो रे॥ २३॥

[illegible] रे ।
[illegible] रे ॥८४॥
[illegible] रे ।
[illegible] रे ॥८५॥
[illegible] रे ।
[illegible] रे ॥८६॥
[illegible] रे ।
[illegible] रे ॥८७॥
[illegible] रे ।
[illegible] रे ॥८८॥
[illegible] रे ।
[illegible] रे ॥८९॥
[illegible] रे ।
[illegible] रे ॥९०॥
[illegible] रे ।
[illegible] रे ॥९१॥
[illegible] रे ।
[illegible] रे ॥९२॥
[illegible] रे ।
[illegible] रे ॥९३॥

रत्न : ४

इन्द्रियवादी री चौपई

ढाल : १

दुहा

केइ कहें इग्यारमें ने बारमें, दोय गुण ठांणा नव नव जोग।
च्यार च्यार जोग मन वचन रा, नवमों उदारीक रों छे प्रयोग ॥ १ ॥
इम कहें ते वीतराग नें, भूठाबोला कहें छे तांम।
ते ववेक विकल सुध बुध विना, भूठ बोले वेफांम ॥ २ ॥
त्यांरो भूठों मन वरते नही, मिश्र मन वरते नांहि।
वले भूठ न बोलें सर्वथा, मिश्र भाषा नही त्यारे मांहि ॥ ३ ॥
इग्यारमां गुण ठांणा सूं आदि दे, चवदमां गुण ठांणा लग जांण।
जथाख्यात चारित छे निरमलो, जथातथ गुण रत्नांरी खांण ॥ ४ ॥
ए च्यारां गुण ठांणां वीतराग छे, त्यांने पाप न लागे अंस मात।
कषायादिक जोग माठा नही, त्यांरी मूल न विगटे वात ॥ ५ ॥
इग्यारमें वारमे ने तेरमें, तीन गुण ठांण पुन बंधाय।
ते पिण निरवद जोग सूं, इरिया वही कर्म लागे आय ॥ ६ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आग्या मे]

जथतथ चाले वीतराग हूआ ते, त्यांनें भूठ लागतो मूल म जांणो।
भूठ सूं पाप निकेवल लागें छै, ते अभितर जोय करों पिछांणों।
वीतराग भाव अंतकरण ओलखजी* ॥ १ ॥
भूठो मन मिश्र मन त्यांरो न वर्तें, भूठी ने मिश्र भाषा मूल न बोले।
निरदोप अखंड चरित छे त्यांरों, करलों कांम परख्यां पिण मूल न डोलें ॥ २ ॥
भेषधारी कहे त्यांनें भूठ लागे छे, ते ऊठी जठा थी निकेवल भूठी।
वले तांणा तांण करे छे अग्यांनी, त्यांरी अभितर आंख हीया री फूटी ॥ ३ ॥
भूठा जोग सूं पाप निकेवल लागें छे, ते पाप न लागें च्यारूं गुण ठांणें।
भूठा जोग वरत्यां सूं पुन पिण न लागें, ते न्याय निरणा विण अग्यांनी तांणें ॥ ४ ॥
कदा कहिवा नें कहे पाप न लागें, जथाख्यात च्यारूं गुण ठांणें।
वले भूठाबोला त्यांनें कहिता न संकें, पोतारा बोल्या नें पोते नही पिछांणें ॥ ५ ॥
भूठ लागो कहे जथाख्यात चरित नें, त्यानें जाब पूछ्यां वोलें आल पंपालो।
ते भारीकर्मा जीव मूढ मिथ्याती, तीन काल रा अरिहंत नें दीयो आलो ॥ ६ ॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

अठारें पाप ठांणा मोह कर्म री प्रकृत, त्यांरा उदा सूं सेवे छे किरतब अठारो।
ज्यारे मोह कर्म उदे जावक नांही, ते सावद्य किरतब न करे लिगारो॥ ७॥

पापरा किरतब छे ससार में सगला, हिसा भूठ आदि दे सेवें अठारों।
ते जथाख्यात चारितीयों नही सेवें, त्यारें निरवद जोग तणो व्यापारो॥ ८॥

त्यानें निरवद जोग सूं पुन लागे छें, भूठ नें मिश्र जोग हूआ लागें पापो।
जब उ पण कहे त्यांने पाप न लागे, पिण भूठ बोलण री करें मूढ थापो॥ ९॥

कदा विण उपीयोगे कह्यों हुवें तिणनें समभतो देखें तो समभाय दीजें।
जो उ समभायों समभें नही मूरख, तिणनें न्याय करे नें भूठो घालीजें॥ १०॥

वीतराग नें भूठ लागो कहे तिणरें, घट मांहें घणो छे घोर अंधारो।
कदा तांण करंता टाको जलेतो, उतकष्टो भमे तो अनत संसारो॥ ११॥

ढाल : २

दुहा

आठ कर्म जिणेसरभाषीया, तिणमें घणघातीया कर्म च्यार।
ए च्यारूं पाप कर्म उदे हूआं, जीवरे हूवें बोहत विगाड़ ॥ १ ॥

ए च्यारूं कर्म षयोपसम हूआं, जब जीव उजल हुवें ताय।
जिम जिम च्यारूं कर्म पातला पडे, तिम तिम गुण परगट थाय ॥ २ ॥

ए च्यारूं कर्म षयोपसम हूआं, जीव पावें बोल वत्तीस।
ते वतीसोई षायक भाव मांहिला, चोखा उजला विसवावीस ॥ ३ ॥

उजला हूवा करमां सूं निवरते, ते उजला लेखे निरवद एह।
वले बीजों निरवद किरतब कह्यों, तिणसू कर्म रुके तूटे तेह ॥ ४ ॥

कर्म रोके आतमा वस करें, ते संवर निरवद जांण।
वले कर्म काटण करणी करें, ए बीजो निरवद वखांण ॥ ५ ॥

षयोपसम भाव छै निरमलो, तिणने कहे अग्यांनी आंम।
त्यांरा केयक बोल निरवद कहें, केइ सावद्य निरवद कहे तांम ॥ ६ ॥

षयोपसम भाव नें सावद्य कहे, तिणरी प्रतख झूठी वात।
तिण सावद्य निरवद नही ओलख्यो, तिणरा घट माहें घोर मिथ्यात ॥ ७ ॥

ढाल

[पुन नीपजे शुभ जोग सू रे लाल]

हिवें षयोपसम भाव ओलखो रे लाल, आंख हीयारी उघाड हो। भविक जण*
निरणों करो घट भितरे रे लाल, ते सावद्य नही छै लिगार हो ॥ भव० ॥
षयउपसम भाव निरवद जांणजों रे लाल* ॥ १ ॥

जो षयउपसम भाव सावद्य हुवै रे लाल, तो षायक भाव सावद्य वशेप हो।
षयउपसम षायकभाव मांहिलो रे लाल, यां दोयांरों छे निजगुण एक हो ॥ ष० २ ॥

ग्यांनावर्णी दर्सनावर्णी मोहणी रे लाल, चोथों घणघातीयो अंतराय हो।
ए च्यारूं कर्म घनघातीया रे लाल, ते धर्म आवा न दे ताय हो ॥ ३ ॥

आभ पडल ज्यूं घणघातीया रे लाल, देस थकी षय थाय हो।
जव जीव उजल हुवें देस थी रे लाल, ते सावद्य कठा थी आयो ताय हो ॥ ४ ॥

च्यारूं कर्म देस थी अलगा हूआं रे लाल, मांसू सावद्य निकलीयो कहे मूढ़ हो।
तिण सावद्यावर्णी कर्म थापियों रे लाल, तिणरे गाढी मिथ्यात री रुढ हो ॥ ५ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सावद्यजोगां कर्म बान्धो नहीं रे लाल, सावद्य जोग न्यारा कर्म मांहि हो।
तिण सूं पचखांण भाव नें रे लाल, सावद्य सरधे मत पड़जो फंद मांहि हो॥ ६॥
मोहणी कर्म जीव रे उदे हुआं रे लाल, जद तो सावद्य किरतब होय जात हो।
बाकी तीन कर्म उदे हुआं रे लाल, सावद्य नहीं नीपजें तिल मात हो॥ ७॥
उदे हुआंइ सावद्य न नीपजें रे लाल, तो कटीयां नहीं सावद्य अंसमात हो।
कर्म कटीयां सावद्य नीपनों कहे रे लाल, आ विकलां री इचरजवाली वात हो॥ ८॥
जीव उजला हुआं नें सावद्य कहे रे लाल, तो मेला हुआं सावद्य मिट जाय हो।
सावद्य कटीयां, कहे उपसम उदें हुआं रे लाल, उणरी सरधा निरखी इण न्याय हो॥ ९॥
उणरी सरधा रे लेखे सावद्य यूं मिटे रे लाल, ल्यारै कर्म उदे आयां पूर हो।
सावद्य लेवे ल्यारै कर्म बांध नें रे लाल, उदे आंणे सावद्य करणों दूर हो॥ १०॥
घनघातीया देस थी उजला हुआं रे लाल, सावद्य मूंडो नीपनों कहे तांम हो।
कर्म कटीयां सावद्य वधीयों कहे रे लाल, ते तों कूडे अग्यांनी बेफांम हो॥ ११॥
ए ल्यांरइ कर्म पातला पड्या रे लाल, कहे सावद्य नीपनों मत जांण हो।
कर्म पातला पड्यां सावद्य नीपजें रे लाल, आतो पाषंडीयांरी छे बांण हो॥ १२॥
कर्म उजला हुआं निरवद नीपजें रे लाल, आतो जिनजी रा मुख री वात हो।
तिण निरवद नें सावद्य कहे रे लाल, तिण रे उदें आयो छे मिथ्यात हो॥ १३॥
आठ कर्मां मांहे छै अति बुरा रे लाल, घनघातीया ल्यारूंई कर्म हो।
ते पातला पड्यां जीवरे औगुण कहे रे लाल, ते भूला अग्यांनी भर्म हो॥ १४॥
जिणनें अविनासिक औगुण कह्या रे लाल, तिणरी सरधा रहे नहीं सुध हो।
सिध गुन जीवन नें सावद्य कहे रे लाल, तिणरी मिट हुई छै बुध हो॥ १५॥

ढाल : ३

दुहा

कायक घणघातीया कर्म षय हूआ, वले उदे हूआ ते षय जाय।
बाकी दबीया छे ते उपसम्यां, षयउपसम कर्म हूआं इण न्याय ॥ १ ॥
च्यारूं कर्म षयउपसम हूआं, थोरो सो जीव उजल थाय।
ते उजलो खयउपसम भाव छे, ते चेतन गुण परजाय ॥ २ ॥
ग्यानावर्णी षयउपसम हूआं, आठ गुण परगट थाय।
च्यार ग्यान ने तीन अगिनान कह्या, सूत्रादिक नो भणवो ताय ॥ ३ ॥
ए आठ गुण छे केवल ग्यांन मांहिला, त्यामे सावद्य नही छे एक।
जो यां माहिलो कोई सावद्य हुवे, तो केवल ग्यांन सावद्य वशेष ॥ ४ ॥
ग्यांनावर्णी षयउपसम हूआं, ग्यान आयो कहे ते तो न्याय।
पिण अग्यान कठा थी आवीया, कोई एहवी पूछा करे आय ॥ ५ ॥
परमार्थ ग्यान अग्यांन रो, एक कह्यो जिणराय।
ते पिण आवे छे ग्यांनावर्णी घट्यां, तिणरो न्याय सुणो चित्त ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[जीव मोह अनुकम्पा न आणीये]

गिनान ने अगिनांन दोया तणों, षयउपसम भणवो तो एक जांणरे।
ते तो समदिष्टी रो ग्यांन जिण कह्यों, मिथ्याती रो कह्यो अनांण रे।
निरवद षयउपसम भाव छै* ॥ १ ॥
समदिष्टी भणे आगम गिनान ने, तेहिज भणे मिथ्याती गिनांन रे।
उणरो ग्यान छे उणरो अग्यान छे, तिणरो निरणो कीजो बुधवान रे ॥ नि० २ ॥
भारतादिक सास्त्र पर समे, त्याने भणे मिथ्याती जाणे रे।
तेहिज भणे समदिष्टी जाण ने, उणरे अनाण उणरे नांण रे ॥ ३ ॥
केइ निरवद कहे गिनांन ने, पछे सरधा वतावे विरुध रे।
सावद्य निरवद कहै छै अग्यांन नें, आतो प्रतष वात विरुध रे ॥ ४ ॥
अगिनांन ने सावद्य कहे, तिणरा घडा लगावै आंम रे।
खोटा सास्त्र भणे जांण जांण ने, उघाडे मुख धोखे ताम रे ॥ ५ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

अग्यान सावद्य हुवे इण विध भण्यां, तो ग्यांन पिण सावद्य होय रे।
एहीज भणें समदिष्टी इण विधें, ए दोनूं वरोवर सोय रे॥ ६ ॥
समदिष्टी खेती करें जांण नें, ग्यांन सूं जाणें होसी धांन रे।
नही जाणें तो खेत वावें नही, तो ही सावद्य नही छे ग्यांन रे॥ ७ ॥
समदिष्टी जांणे ग्यांन सूं, पुत्र होसी परणीज्यां नार रे।
पछे जांण परणीजे नार नें, पिण ग्यांन नही सावद्य लिगार रे॥ ८ ॥
समदिष्टी रे कोई वेरी हुवै, तिणनें मारण रो लग रह्यो ध्यांन रे।
ते पिण मारे छे ग्यांन सूं जांण ने, ते पिण सावद्य नही छे ग्यांन रे॥ ९ ॥
इत्यादिक अनेक सावद्य करें, समदिष्टी ग्यांन सूं जांण रे।
तो पिण ग्यांन सावद्य मत जांणजों, सावद्य किरतव लेजों पिछांण रे॥ १० ॥
एहीज किरतव मिथ्याती करे, अग्यांन सूं जांण पिछांण रे।
जो ग्यांन निरवद छे निरमलो, तो अग्यांन पिण निरवद जांण रे॥ ११ ॥
ग्यान अग्यान दोनूं छे उजला, त्यांरी धारणा निरवद जांण रे।
धारणा दोनूं री छे सारिपी, तिण में संका मूल म आंण रे॥ १२ ॥
ग्यांन ने अगिनांन तेह ने, जाणपणा तणों गुण जांण रे।
ओंर गुण ओगुण नही एह में, तिणरी वुघवंत करजो पिछांण रे॥ १३ ॥
जे जे कर राखी छे धारणा, ते तो धारणा निरवद जांण रे।
ते धारणा उंधी सरधीयां, मिथ्यात उदें भाव पिछांण रे॥ १४ ॥
शास्त्र भणवारो उदम करे, तेतो जोग तणो व्यापार रे।
सावद्य जोग उदें भाव मोह सू, निरवद जोगांरी करणी सार रे॥ १५ ॥
ग्यांन अग्यांन छता रुप जीव रे, तिणसू जाण रह्यो छे ताय रे।
जे जे कोइ सावद्य नीपजे, मोह उदा तणी परजाय रे॥ १६ ॥
वोलवा चालवादिक अति घणी, जीवरी परजाय अनेक रे।
जाण पणा विण ग्यान अग्यांन री, परजाय नहीं छे एक रे॥ १७ ॥
कोई अग्यांन ने सावद्य कहे, तिणरी प्रतष भूठी वात रे।
तिणरे उसभ उदे रा जोर सू, चोरें पडवजीयों मिथ्यात रे॥ १८ ॥

ढाल : ४

दुहा

दरसणावर्णी घणघातीयो, षयउपसम होय पड्यो खीन।
जब आठ गुण परगट हुवें, पांच इन्द्री नें दर्शन तीन॥ १॥
ए आठूं गुण निरदोष छे, उजला लेखे निरवद जांण।
ते केवल दर्शण माहिला, गुण रतनां री खांण॥ २॥
केई अग्यांनी इम कहे, आठोंई गुण निरवद नाहि।
यानें सावद्य निरवद दोनूं कहे, भोला ने न्हांखे फंद मांहि॥ ३॥
यां आठां गुणां में सावद्य हुवें, तो केवल दर्शण सावद्य विशेष।
ए तो केवल दर्शण मांहिला, यां सगलां रो गुण एक॥ ४॥
पांच इंद्री ने तीन दर्शण मभ्ने, सावद्य नही छे एक।
ते जथातथ परगट करूं, ते सुणजों आंण ववेक॥ ५॥

ढाल

[जोयजो रे समकित : आउखो टूटी नें साधो को नही रे]

चषू दर्शण मे चषू इंद्री अछें रे, अचषू दर्शण में आइ इंद्री च्यार रे।
यां विना देखें कोई मरजाद सूं रे, ते अविध दर्शण छे यां सूं न्यार रे।
षयउपसम भाव छे निरवद जिण कह्यो रे* ॥ १ ॥
सुरतइद्री सुने छे तीन शब्द ने रे, पांच वर्ण चपू इंद्री देखें ताहि रे।
यांरो तो ओहिज गुण सभाव छे रे, गुण अवगुण और नही त्यां मांहि रे॥ ष० २ ॥
घणइंद्री वेदे दोय गंध ने रे, रस इंद्री रस वेदे पांच सवाद रे।
फरस इंद्री वेदें आठ फरस ने रे, यासू नही विषे तणो विवाद रे॥ ३ ॥
ए त्रेवीस प्रकारे पुद्गल जूजूआरे, वेदे देखे ते दर्शण जांण रे।
यां में राग ने धेष सेव्यां विषें हुवे रे, तिणसूं तो पाप लागे छै आंण रे॥ ४ ॥
सुरतइंद्री में पुद्गल आए पडे रे, ते सुरतइंद्री रे नावे भोग रे।
चषू इंद्री देखें छे पुद्गल दूर थी रे, ते पिण नावे छे तिण रे भोग प्रजोग रे॥ ५ ॥
बाकी तीन इंद्री में पुद्गल आए परे रे, ते पुद्गल आवें छे त्यारे भोग रे।
गंध रस ने फरस भोगवे रे, त्यां पुदगल नो आय मिले संजोग रे॥ ६ ॥
सुरतइद्री ने चषूइद्रीयां रे, यांरे तो पुदगल आवे कांम रे।
भोग नही छै यांरे सर्वथा रे, तिणसू यारो कांमी इंद्री नाम रे॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

घणइद्री रसइंद्री नें फरस इंद्रीया रे, यारें तो पुदगल आवें भोग रे।
तिण सूं तीनूं इद्री भोगी कही रे, त्यानें पुदगल रों आय मिल्यां संजोग रे॥ ८॥
कांमी नें भोगी तो इंदय्यां कही रे, कामभोग नें पुदगल जांण रे।
त्यांसूं तो पाप न लागें सर्वथा रे, पाप लागे छे राग धेष सूं आंण रे॥ ९॥
कांमभोग सूं सुमता नही हुवै रे, असुमता पिण तिण सूं नही लिगार रे।
कह्यो छे उतराधेन बतीस मे रे, सो नें पहली गाथा मभार रे। १०॥
सजम निरवाहण राखण शरीर ने रे, पुदगल रो करे छे साधु आहार रे।
ते निरवद जोग तणो व्यापार छे रे, इदरयां रो नहीं छे विषे विकार रे॥ ११॥
त्यारे निरवद जोगा सू निरजरा हुवै रे, जब पुन्य पिण सेहजें नीपजे छें ताय रे।
त्यां साधा रे सावद्य नही राख्यो सर्वथा रे, त्याने आज्ञा दीधी छें श्री जिण राय रे॥ १२॥
ग्रहस्थ उदीरे पुदगल भोगवे रे, ते सावद्य जोग तणो व्यापार रे।
तिण शरीर प्रग्रहा नों कीयो जाबतो रे, वले इंदय्या री सेवा विषें विकार रे॥ १३॥
वले छ काय रो सस्त्र ने तीखो कीयो रे, इत्यादिक अवगुण छे तिण मांहि रे।
तिण सूं पुदगल ने भोगववा तणी रे, सुध साधां विण श्री जिण आग्या नांहिं रे॥ १४॥
सेह हजे इदय्यां में पुदगल आए पड़े रे, त्याने कोई वेदे देखे छे ताय रे।
जब पाप रो अस न लागे तेहनें रे, राग धेष सूं पाप लागें छें आय रे॥ १५॥
पुदगल ने भोगवे देखे उदीर ने रे, ते तो छे जोग तणों व्यापार रे।
तिणरो सावद्य निरवद किरतब ओलखों रे, जिण आग्या अणआग्या रो करो विचार रे॥ १६॥
जिण आग्या सहीत पुदगल नें भोगवे रे, ते निरवद जोग तणो व्यापार रे।
कर्म कटे छे तिण सूं आगला रे, वले नवो न लागे पाप लिगार रे॥ १७॥
जिण आगना विण कोइ पुदगल भोगवे रे, ते सावद्य जोग तणो व्यापार रे।
तिण सू पाप कर्म लागे छे तेहने रे, ते जीव नें दुखना आपणहार रे॥ १८॥
आंख्या सूं देखे कागादिक जीवने रे, जब करे सिकारी तिणरी घात रे।
तिणसूं चषू इद्री ने सावद्य कहे रे, ते प्रतष भूठी तिणरी वात रे॥ १९॥
चषू इद्री सू रूप देखें नारी तणो रे, जव करे अकारज तिण सूं तेह रे।
तिण सू चषू इंद्री ने सावद्य कहें रे, तिण पिण भूठ बोल्यो छे एह रे॥ २०॥
इत्यादिक रूप अनेक देखने रे, केइ जीवा रे उठे विषे विकार रे।
तिगसूं चषूइंद्री ने सावद्य कहे रे, ते निरणों न जाणें मूंढ गिंवार रे॥ २१॥
च्यारां इंदय्या मे पुदगल आए पडे रे, ते इंदय्यां वेद लेवे छें ताहि रे।
जब केयक जीवां रे अवगुण नीपजे रे, ते अवगुण बतावे इंदय्यां माहि रे॥ २२॥
चषूइंद्री पुदगल देखे दूर थी रे, ते देखणरो गुण छे तिण में तांम रे।
जब केयक जीवां रे आंगुण नीपजें रे, खोटा वरत्या तिणरा परिणांम रे॥ २३॥

सावद्य कहे पांचू इंदरयां भणी रे, तिणरें उदे छे मोह मिथ्यात रे।
ते इंदरयां ने निश्चें निरवद जिण कही रे, तिण में सका नही तिलमात रे॥ २४॥
जो देख्यां वेद्यां इंदरयां सावद्य हुवे रे, तो जांण्यां सूं ग्यांन सावद्य होय जाय रे।
ग्यांन दर्शण रा गुण दोईज छे रे, सावद्य निरवद छै ओर परजाय रे॥ २५॥
दर्शण रो सभाव छे देखण तणों रे, और गुण ओगुण नही तिणरो एक रे।
और गुण ओगुण नीपजें जीव रें रे, ते परजा छे जीव तणी अनेक रे॥ २६॥

ढाल : ५

दुहा

च्यार कर्म घणघातीया, तिण में मोटों मोंहणी कर्म।
तिणरा उदा सूं जीव पामे नही, समकत चारित धर्म ॥ १ ॥
तिणमे दर्शण मोहणी उदें हुवां, पड़े उंधी सरधा मांही आंण।
साची सरधा मूल सूझें नहीं, बूडें कूडी कर कर तांण ॥ २ ॥
चारित्र मोहणी रा जोग सू, करें सावद्य किरतब अनेक।
खोटा २ काम सर्व आवीया, बाकी सावद्य रह्यों नहीं एक ॥ ३ ॥
ते मोहणी षयउपसम हूआ, जब आठ गुण परगटें आय।
च्यार चारित्र देसविरत पांचमो, तीन दिष्ट पयउपसम थाय ॥ ४ ॥
ए आठोई बोल छें उजला, त्यांनें निरवद कह्या जिणराय।
ते आठोई षायक भाव माहिला, त्यांसू कर्म न लागें आय ॥ ५ ॥
षयउपसम भाव मिथ्यादिष्टनें, सावद्य कहें अग्यांनी तांम।
तिणरी जथातथ ओलखणा कहूं, ते सुणज्यो राखे चित्त ठांम ॥ ६ ॥

ढाल

[दुलहो मानव भव पावणो]

उंधो सरधे ते मिथ्यादिष्ट छें, ते दसविध कह्यो मिथ्यात हो। भविकजन।
ते आश्रव उपाय छे पाप रो, ते उदें भाव कह्यो जगनाथ हो ॥ भ० ॥
षयउपसम भाव छें निरमलो* ॥ १ ॥
दसोई उंधा बोल मांहिलो, कोइ सूधों सरधें बोल एक हो।
ते निरदोष षयउपसम भाव छे, पाछे सावद्य रह्या बोल शेष हो ॥ ष० २ ॥
जिम २ घट छे उंधो सरधवो, तिम २ घटें छे मिथ्यात हो।
उंधो घटयां वधे सूधो सरधवों, ते षयउपसम भाव साख्यात हो ॥ ३ ॥
ते षयउपसम भाव निरवद कह्यों, श्री जिणमुख सूं आप हो।
ते उजला लेखे निरवद कह्यो, वले रूकीया छें तिणसूं पाप हो ॥ ४ ॥
इम घटता २ सगला घटया, उंधा दसोई बोल जांण हो।
जब हूवो मिथ्याती रो समकती, एहवो पयउपसम भाव पिछांण हो ॥ ५ ॥
कोइ, षयउपसम निरवद भाव ने, सावद्य कहें छें कर २ तांण हो।
ते यूही बूडे छे बापड़ा, ते जिण मारग रा अजांण हो ॥ ६ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है

मिथ्यात मोहणी कर्म उदे हुआं, जब उदें भाव सावद्य मिथ्यात हो।
ते घटीयां सावद्य वधीयों कहें, ते विकलां वाली छें वात हो॥ ७॥
उदें भाव कही मिथ्यादिष्ट नें, ते मिथ्यात मोहणी सु जांण हो।
वले षयउपसम कही मिथ्यादिष्ट नें, ते मोह कर्म पस्थां हांण हो॥ ८॥
मोह कर्म उदे सावद्य नीपजें, षयउपसम हूआं सावद्य नांहि हो।
षयउपसम हूआं निरवद्य नीपजें, बुधवंत समझो मन मांहि हो॥ ९॥
मिथ्यादिष्ट षयउपसम भाव छे, समामिथ्या दिष्ट तिमहीज जांण हो।
षयउपसम भाव निरवद्य कह्यों, तिण मांहे संका मत आंण हो॥ १०॥
जो षयउपसम भाव सावद्य हुवे, तो षायक भाव सावद्य वशेख हो।
षयउपसम षायक भाव मांहिलो, यां दोयां रो छे निजगुण एक हो॥ ११॥
षयउपसम भाव सावद्य हुवे, तो उदे भाव सूं मिट जाय हो।
उणरी सरधा रो ओहीज न्याय छे, उदे भाव रो करणों उपाय हो॥ १२॥
तो मिथ्यात मोहणी कर्म बांधणों, तिण सूं षयउपसम मिट जात हो।
साची सरधा नें उंधी सरध ने, पाछो पडिवजणों मिथ्यात हो॥ १३॥

●

ढाल : ६

दुहा

चोथो कर्म घणघातीयो, भारी कर्म अंतराय।
जिण २ वसतुरी छे चावना, तिण आडो होय रह्यों ताय ॥ १ ॥
अंतराय कर्म तणा, पांच भेद कह्या जिणराय।
प्रथम दांना अंतराय छे, बीजों भेद लाभा अंतराय ॥ २ ॥
भोग उवभोग आडी होय रही, ते भोग उवभोग अंतराय।
वीर्य अंतराय कर्म थकी, सकत दबे रही ताय ॥ ३ ॥
षयउपसम हुवे अंतराय जब, आठ गुण परगटें आय।
पांच लब्द नें तीन वीर्य हुवे, ते निर्मल गुण परजाय ॥ ४ ॥
ए आठोंई गुण निरवद उजला, त्यां नें सावद्य कहे केइ मूंढ।
तिण-ऊंध मती री सरधा सुंणों, छोड हीया री रूढ ॥ ५ ॥

ढाल

[विनारा भाव सुण सुण गूंजे : डाभ मुंदिक नी डोरी]

धूर सूं तो दांना अंतराय, तिणरो षयउपसम थाय।
दांन आडी नही छे ताय, दांन लब्द परगट हुवे आय ॥ १ ॥
तिण लब्द नें निरवद जांणों, तिण मांहें संका मत आंणों।
तिणनें सावद्य कहे तांण तांण, ते तो जिण मारग अजांण ॥ २ ॥
इण लब्द में ओगुण नांहीं, लबद तो जिण आगना मांहीं।
गुण अवगुण दांन में जांणों, सावद्य निरवद भेद पिछांणों ॥ ३ ॥
इविरत में दान देवे जांणों, ते तो सावद्य जोग पिछांणों।
विरत में दांन देवे छे कोय, तिणरा निरवद जोग छे सोय ॥ ४ ॥
दान ने सावद्य निरवद जांणों, त्यांनें रूडी रीत पिछांणो।
सावद्य दांन तो प्रतष खोटो, लब्द गुण छे निरंतर मोटो ॥ ५ ॥
दान लब्द ने दांन छे न्यारो, तिणरो बुधवंत जाणे विचारो।
दान लब्द जतनज कीजे, सावद्य दान जाबक त्याग दीजे ॥ ६ ॥
दांन लब्द छै निरवद भावो, तिण मांहें संका मत ल्यावो।
दान लब्द सावद्य कहै कोय, उणरे लेखे निरवद किम होय ॥ ७ ॥
कर्म बांधे दांना अंतराय, सताव सूं उदे अणाय।
षयउपसम नें देणों घटाय, उणरे लेखे निरवद इम थाय ॥ ८ ॥

दांना अंतराय कर्म घटीयो, जीव उजल हूवों कर्म मिटीयो।
तिण उजल ने सावद्य कहे ते झूठो, मोह कर्म उदे हीयो फूटो॥ ९॥
सावद्य वधीयो कहे घटियां कर्म, ते भूला अग्यांनी भर्म।
ते सावद्यावर्णी कर्म थाप, यूं ही बांधे अग्यांनी पाप॥ १०॥
दूजी लाभा अंतराय, तिणरो षयउपसम थाय।
लाभ आडी नहीं छे ताय, लाभ लब्द परगट हुवे आय॥ ११॥
तिण लब्द ने निरवद जांणों, तिण मांहें सका मत आंणों।
तिणनें सावद्य कहे तांण २, ते तो जिणमारग रा अजांण॥ १२॥
इण लब्द में आंगुण नांही, लब्द तो जिण आगना मांही।
गुण आगुण लाभ लेंण मे जांणो, सावद्य निरवद भेद पिछांणो॥ १३॥
पुदगलादिक री छे चाय, इविरत में लेण रो उपाय।
तिणने मेल्यां मिले छे आय, तिणरा सावद्य जोग छे ताय॥ १४॥
पुदगलादिक री छे चाय, जिण आग्या सूं मेलण रो उपाय।
तिण ने मेल्या मिले छे आय, तिणरा निरवद जोग छे ताय॥ १५॥
सावद्य जोग सू पाप बधाय, निरवद जोग सू निरजरा थाय।
नही तूटे बधे लब्द सू कर्म, लब्द छे निरजरा धर्म॥ १६॥
इत्यादिक अनेक भेद जांण, दान लब्द ज्यूं लेजो पिछांण।
लाभ लब्द मे ओगुण नांही, गुण अवगुण पुदगल मेल्यां मांही॥ १७॥
तीजी भोगा अंतराय, तिणरो षयउपसम थाय।
भोग आडी नही छे ताय, भोग लब्द परगट हुवे आय॥ १८॥
तिण लब्द ने निरवद जाणों, तिण माहें संका मत आंणो।
तिणने सावद्य कहे तांण २, ते तो जिण मारग रा अजांण॥ १९॥
इण लब्द में आगुण नाही, लब्द तो जिण आगना मांही।
गुण ओगुण भोगवण मे जांणो, सावद्य निरवद भेद पिछांणो॥ २०॥
पुदगल भोगवण री छे चाहि, इविरत में भोगवे छे ताहि।
पुदगल भोगवले एक वार, तेतो सावद्य जोग व्यापार॥ २१॥
पुदगल भोगवणरी छे चाहि, जिण आग्या सूं भोगवे ताहि।
पुदगल भोगवले एक वार, ते तो निरवद जोग व्यापार॥ २२॥
सावद्य जोग सूं पाप बंधाय, निरवद जोग सूं निरजरा थाय।
नही तूटें बधे लबद सूं कर्म, लब्धि छे निरजरा धर्म॥ २३॥
इत्यादिक अनेक भेद जांणो, दांन लब्द ज्यूं लेज्यो पिछांणों।
भोग लब्द में ओगुण नांहीं, गुण ओगुण भोगवण रे मांही॥ २४॥

असणादिक च्यारूं आहार, ते भोग आवे एक वार।
ते उवभोग कह्यों जिणराय, तिण आडी नहीं छे ताय ॥ २५ ॥
वस्त्र गेंहणादिक अनेक प्रकार, ते तो भोग आवे वारूंवार।
ते परिभोग कह्यो जिणराय, तिण आड़ी नही छे ताय ॥ २६ ॥
उवभोग लब्द ज्यूं जाणों, परिभोग लब्द पिछांणों।
सगलोई कहणों विसतार, लब्द सावद्य नहीं छे लिगार ॥ २७ ॥
पांचमी वीर्य अंतराय, तिणरो षयउपसम थाय।
वीर्य आडी नही छे ताय, वीर्य लब्द परगट हुवे आय ॥ २८ ॥
तिण लब्द नें निरवद जांणो, तिण मांहें संका मत आंणो।
तिण नें सावद्य कहे तांण तांण, ते तो जिण मारग रा अजांण ॥ २९ ॥
इण लब्द मे ओगुण नांही, लब्द तो जिण आगना मांही।
गुण ओगुण किरतब मे जांणों, सावद्य निरवद भेद पिछांणो ॥ ३० ॥
संसार रो किरतब करे जांणों, ते तो सावद्य जोग पिछांणो।
निरवद किरतब करे कोय, तिणरा निरवद जोग छें सोय ॥ ३१ ॥
किरतब नें सावद्य निरवद जाणो, त्यां नें रूड़ी रीत पिछांणो।
सावद्य किरतब प्रतष खोटो, लब्द गुण छे निरंतर मोटो ॥ ३२ ॥
वीर्य लब्द ने किरतब न्यारो, तिणरो बुधवंत जांणें विचारो।
वीर्य लब्द रा जतन कीजें, सावद्य किरतब नें त्याग दीजें ॥ ३३ ॥
इत्यादिक अनेक भेद जांणो, दांन लब्द ज्यूं लीज्यो पिछाणो।
वीर्य लब्द में ओगुण म जांणों, गुण अवगुण किरतब मे पिछाणों ॥ ३४ ॥
कोइ कहे बल प्राकम नहीं हुवें ताय, तो खोटा किरतब केम कराय।
तिण सूं बल प्राकम सावद्य छे भूडो, इण सूं कर्म बांधे जीव बूडो ॥ ३५ ॥
उसभ उदें एहवी चरचा आंणे, ते बल प्राकम ने सावद्य जाणें।
एहवी उंधी करे बकवाय, इणरों न्याय सुणों चित ल्याय ॥ ३६ ॥
अंतराय रो षयउपसम थाय, बल वीर्य सक्त हुवे ताय।
ते उजला लेखे निरवद रूडा, त्याने सावद्य कहे ते कूडा ॥ ३७ ॥
यां सू किरतब करे भला भूडा, भला सू तिरे भूडा सू बूडा।
किरतब नें जोग व्यापार जांणों, सावद्य निरवद री करो पिछांणों ॥ ३८ ॥
बल वीर्य सकत प्राकम ताह्यो, वीर्य लब्द में सर्व समायो।
ए छता रूप जीव रे मांहि, तिणसूं कर्म तूटे बधे नाहि ॥ ३९ ॥
धर्मी पुरष छे बलवंत रूडा, करणी करे कर्म करे दूरा।
अधर्मी तो निरबल हुआ रूडो, नहीं बांधे पाप रा पूरो ॥ ४० ॥

ते तो बल छे किरतब रूप ताह्यो, सावद्य निरवद जोग में आयो।
जोवो सुतर भगोती रे म्हांयों, जयवंती नें वीर बतायो॥ ४१॥
सावद्य जोग उदे भाव भूडा, तिणसूं जीव अनंता बूडा।
लब्द षयउपसम भाव छे रूडो, ते पांमें छे कर्म हूवां दूरो॥ ४२॥
षयउपसम ने उदे भाव, त्यांरो छे जूदो जूदो सभाव।
षयउपसय ने सावद्य जांणे, ते अग्यांनी थका उधी तांणें॥ ४३॥
वले वीर्य सकत पिछांणो, ते जीवरा उजल गुण जांणो।
ते गुण जीव सूं नही छे जूआ, पिण शरीर रे प्रयोगे हूआ॥ ४४॥
जेहवा सरीर पुदगल बधाय, तेहवा बल प्राकम थाय।
बल प्राकम हीणो इधिको होय, ते शरीर काचे पाके सोय॥ ४५॥
शरीर गाढो हुवे अतंत, जब जीव में बल अनंत।
शरीर पुदगल घट जावे, जब प्राकम हीणो थावे॥ ४६॥
जीव शरीर सू हूवों न्यारो, जव नही बल प्राकम लिगारो।
जब गयो जीव मुगत रे माही, तठे बल प्राकम नही कांई॥ ४७॥
बल शरीर रे परसग, जोवो रायप्रसेणी उपंग।
तिणरो कह्यो घणो विसतारो, केसीकुमर मोटा अणगारो॥ ४८॥
भार ले जावे बूढो ने तरुणो, कावर दिष्टंत दे कीयो निरणो।
तरुणा ज्यूं बालक तीर चलायो, तीर कबांण रो मेल्यो न्यायो॥ ४९॥
आहार सिज्जा उपधादिक ज्यांने, सावद्य निरवद कह्या वीर त्यांने।
ते किरतब लेखे कह्या जांणो, तिण ने रूड़ी रीत पिछांणो॥ ५०॥
आहार सिज्जा उपधादिक जेह, ते तो पुदगल दरब छे एह।
ते तो सावद्य निरवद नाही, ते विचार करो मन मांही॥ ५१॥
ज्यूं बल प्राकम वीर्य पिछाणों, सावद्य जोग किरतब सूं जांणो।
माठी बुध मत कही छे ताय, ते पिण कही छे किरतब रे न्याय॥ ५२॥
बुध मत सू करे विचारो, ते पिण मन जोगरो व्यापारो।
माठो विचारयो माठो जोग पूरो, अछो विचारयो निरवद जोग रूडो॥ ५३॥
इत्यादिक बोल अनेक पिछांणो, त्याने किरतब लेखे सावद्य जांणो।
पिण षयउपसम भाव छे चोखो, ते निश्चै निरवद निरदोखो॥ ५४॥
बाल वीर्य गुण ठाणां च्यार, तिणमें पिण ओगुण नही लिगार।
तिण वीर्य सूं सावद्य रो आगार, तिण आगार सूं हुवे छे विगाड॥ ५५॥
तिण इविरत सूं पाप लागे, तिण ने माठी जांणे नें त्यागें।
पिण वीर्य लब्द छे षयउपसम भावो, ते तो निरजरा गुण छे चावो॥ ५६॥

पिंडत वीर्य नवगुणठांणा मांहीं, तिण सूं सावद्य न सेवणों कांई॥
सावद्य सेवण रो त्याग्यो आगारो, तिण सूं इविरत न रही लिगारो॥ ५७॥
जब चारित षयउपसम हुवो, ते चारित छे वीर्य सूं जूओ।
तिण चारित सूं पाप रुक जावे, लब्द उजल रही थिर भावे॥ ५८॥
बाल पिंडत वीर्य ने पिछांणो, तठें तो पांचमों गुण ठांणो।
देस थकी इविरत नें त्यागी, देस थकी हुवो वैरागी॥ ५९॥
इण त्याग सूं पंडित जांणो, इविरत रही सूं बाल पिछांणो।
बाल पिंडत इण लेखे हूओ, वीर्य रो गुण इण सूं जूओ॥ ६०॥

ढाल : ७

दुहा

सागार उपीयोग रा, आठ भेद कह्या जिणराय।
पांच ग्यांन तीन अग्यांन छे, और भेद नही कोई ताय ॥ १ ॥
त्यांमे केवल ग्यांन सारां सिरे, क्षायक भाव सागार।
ते पामें ग्यांनावर्णी क्षय हूआं, तिणरो कोइ न पामें पार ॥ २ ॥
सेष ग्यान अग्यांन रह्या तेह नें, कहिजे षयउपसम भाव सागार।
ते केवल ग्यांन मांहिली वांनगी, त्यामें अवगुण नही छे लिगार ॥ ३ ॥
च्यार ग्यांन केवल ग्यांन मांहिला, ते तो मिल गयो न्याय।
पिण अग्यांन केवल मांहिं किम मिलें, कोई एहवी पूछा करें आय ॥ ४ ॥
ग्यांन अग्यांन तो एकहीज छे, एकहीज उपीयोग सागार।
ते पामें ग्यांनावर्णी घट्यां, मिटे जीव तणों अंधकार ॥ ५ ॥
*समदिष्टी रो ग्यांन जिण कह्यों, मिथ्याती रो कह्यों छे अनांण।
षयउपसम भाव तो निरमलो, दोयां रो बरोबर जांण ॥ ६ ॥
ग्यांन अग्यांन षयउपसम भाव छें, यां में जांणपणा रों गुण जांण।
और गुण यां में एक पावे नहीं, ते सुणजों चुत्तर सुजांण ॥ ७ ॥

ढाल

[विनरा भाव सुण सुण गू जे]

उंधो सूधो जांणपणो सारो, ग्यांन सूं सर्व राखें धारो।
ए षयउपसम भाव छे चोखों, तिण में कोइ म जांणों दोखो ॥ १ ॥
जिण रीतें धारे सम्यदिष्टी, तिण रीते धारें मिच्छदिष्टी।
यांरी धारणा दोयां री एक, तिण में कोइ नही छे वशेष ॥ २ ॥
धारणा षयउपसम भाव छे आछो, धारणा मति ग्यांन छे साचो।
तिण सूं पाप रुके तूटे नांही, वले पाप न लागे कांई ॥ ३ ॥
ऊंधों सूधों जांणपणो सारो, धार्यां नहीं दोष लिगारो।
उंधो सरध्यां हुवे घणो विगाडों, जीवरो हुवे बहुत खुवारों ॥ ४ ॥
अधर्म नें धर्म सरधें ताय, धर्म नें अधर्म सरधाय।
अजीव नें जीव सरधें कोय, जीव नें सरधे अजीव सोय ॥ ५ ॥

---

* (मिच्छत्त समाजोगा, अणाण णाणत्ति ठाविया सण्णा।
उपओगों एक्कं जहा, माहण चंडाल घड सलिलं १ ॥

कुमारग नें मारग सरधें कोइ, मारग नें कुमारग सरधें सोइ।
असाध नें सरधें साध, साध नें सरधे असाध ॥ ६ ॥
अमूकांनां नें सरधे मूकांनां, मूकांनां सरधे अमूकांनां।
इत्यादिक ऊंधा बोल सरधाय, तिण सूं जीव मिथ्याती थाय ॥ ७ ॥
दंसण मोह उदे हूवां आय, ऊंधी सरधा लागो जाय।
जब हूवो जीव मिथ्याती, ऊंधी सरधा री पखपाती ॥ ८ ॥
सांची सरधा सांची जणाय, ते ऊंधा सरध्यां आवें मिथ्यात।
और ऊंधो सरधनी आवे, तो झूठ लागे तिण सरधा न जावें ॥ ९ ॥
मिथ्याती ऊंधी सरधा सूं वागे, तिण रे क्रिया मिथ्यात री लागे।
ते दंसण मोह उदे भाव जाणों, तिण नें ऊंधी रीत पिछांणो ॥ १० ॥
तिणरे खयउपसम भाव अनांण, तिण सूं पाप न लागे आंण।
खयउपसम भाव नें उजल जांणो, मिथ्याती रे छे तिण सूं अनांणो ॥ ११ ॥
ओहीज समदिष्टी रे छे नांणो, खयउपसम भाव दोयां रो एक जांणो।
ग्यांनावर्णी रो खयउपसम हूवो, तिण सूं दोयां रो गुण नहीं जूओ ॥ १२ ॥
समदिष्टी रे कह्यो छे ग्यांन, मिथ्याती रे कह्यो छे अग्यांन।
तिण सूं समदिष्टी वाजे ग्यांनी, मिथ्याती वाजे अग्यांनी ॥ १३ ॥
जिणरी सरधा छे सुध नांम, ते भणीयो पूर्व रो ग्यांन।
एक बोल ऊंधो सरधें जाय, जब निश्चै मिथ्याती थाय ॥ १४ ॥
तिणरो भणीयो पूर्व रो ग्यांन, तिणरा ग्यांन नें कहीजें अग्यांन।
इण ग्यांन नें औगुण नहीं लिगार, अग्यांन वाज्यों मिथ्यात रे लार ॥ १५ ॥
ओहीज बोल सुधो सरधें जाय, जब ओहीज समदिष्टी थाय।
तिणहीज अग्यांन नें ग्यांन जांणो, समकत लारे ग्यांन कहवांणो ॥ १६ ॥
मोहणी उदे भाव मिथ्यादिष्ट, निरवद खयउपसम भाव दिष्ट।
सावद सूं पाप लागे आय, निरवद सूं पाप कर्म सलाय ॥ १७ ॥
ग्यांन अग्यांन तो खयउपसम भाव, जांणवा देखवा रो सभाव।
यां में तो ओहीज गुण पिछांणो, उजला लेखे निरवद जांणो ॥ १८ ॥
त्यां सूं कर्म रुके नांहीं, त्यां सूं पाप न लागे कांई।
केवल ग्यांन नें दर्शन पिछांणो, त्यां मांहिली वांतणी जांणो ॥ १९ ॥
ग्यांन सागार उपीयोग जांणो, तिणरो दर्शन दोय वखांणो।
तिण में विवरो विचार विनांण, दर्शन विचे ग्यांन प्रधांन ॥ २० ॥
दर्शन उपीयोग छे अणागार, तिण में नहीं विनांण विचार।
तिण में देखन रो गुण छे ताहि, और गुण नहीं छे तिण मांहि ॥ २१ ॥

दर्शण देखवा रो गुण छे ताय, ग्यांन विना खबर नहीं काय।
तिण सूं ग्यांन कह्यो परधांन, दर्शण नें कह्यों सामान ॥ २२ ॥
यां री खबर जुदी जुदी पाडो, बुधवंत हीया में विचारो।
मतग्यांन रा अठावीस भेद, ते सुणजो आंण उमेद ॥ २३ ॥
सुरतइंद्री में शबद पडे आय, मतग्यांन विण खबर न काय।
उग्रह करे विचारें कोय, निरणों कर धारी राखें सोय ॥ २४ ॥
विचारणा निरणो करे सोय, ते तो सावद्य निरवद होय।
ते तो जोग तणों व्यापार, सावद्य निरवद लेजों विचार ॥ २५ ॥
धारणा कर राखें सोय, ते पिण सावद्य निरवद होय।
तिण में मन जोग रो व्यापार, ते पिण बुधवंत लेजों विचार ॥ २६ ॥
उग्रह इहा उवाय नें धारे, संसार नें हेत विचारे।
ते सावद्य जोग कह्या जिणराय, माठी बुध मत छे इण न्याय ॥ २७ ॥
उग्रह इहा अवाय नें धारे, निरजरा हेतें मन में विचारें।
ते निरवद जोग कह्या जिणराय, आछी बुध मत छे इण न्याय ॥ २८ ॥
बुधरो व्यापार मन जोग जांणो, मन विण नही कठे ठिकांणो।
बुध षयउपसम भाव छे न्यारो, तिण सूं नही सुधारो विगाड़ो ॥ २९ ॥
इम पांचूं इंद्री नें मन जांणो, उग्रहादिक च्यारूं सगलें पिछांणो।
च्यारूं इंद्री ना वंजण च्यार, त्यां में चषू नें मन कीयो न्यार ॥ ३० ॥
ए मतग्यान रा भेद अठावीस, सुतर में भाख्या जगदीस।
ते सुणवादिक सूं करे विचार, सावद्य निरवद जोग व्यापार ॥ ३१ ॥
जांण जांण सावद्य करें कोय, तो ही ग्यांन सावद्य नही होय।
ग्यांन षयउपसम भाव छे ताहि, सावद्य किरतब उदे भाव माहि ॥ ३२ ॥
ग्यान परिज्ञा समदिष्टी रे होय, पिण पचखांण परिज्ञा न कोय।
ते सावद्य कामा करें जांण, तिण सू पाप कर्म लागे आंण ॥ ३३ ॥

●

ढाल : ८

[चतुर विचार करी ने देखो]

शब्द रूप गंध रस नें फरस, रूडा उपर आंणें छे रागो रे।
पाडुवा उपर धेषज आंणें, तिणरे पाप कर्म आय लागो रे।
चुतर विचार करे नें देखो* ॥ १ ॥
शब्द रूप गंध रस ने फरस, रूडा उपर न आंणे रागो रे।
पाडुआ उपर धेष न आणें, तिणरें पाप रो अंस न लागा रे ॥ २ ॥
राग धेष आयां विण पाप न लागें, ते बुधवंत करो विचारो रे।
पांच इंद्रयां सूं पाप कदे नही लागें, यां में अवगुण नही लिगारो रे ॥ ३ ॥
इंद्री तो षयउपसम भाव छे चोखो, राग धेष उदे भाव जांणों रे।
ते चारित मोह उदे सूं नीपना, यां नें रूडी रीत पिछांणों रे ॥ ४ ॥
सागार नें अणागार उपीयोग, त्यांनें ओलखल्यो घट मांह्यों रे।
अनंता पदार्थ जाणे नें देखें, तिण सूं अनंती परजायो रे ॥ ५ ॥
जांणपणा नें सागर उपीयोग जांणो, और गुण आंगुण तिणमें नांही रे।
अणागार उपीयोग मे देखण रो गुण, और गुण अवगुण नहीं तिण मांहीं रे ॥ ६ ॥
उपीयोग उपीयोग री परजाय सूं, कर्म रूकें तूटे नांहीं रे।
वले उपीयोग सूं कर्म न लागें, जोवो द्रव गुण पर्याय मांहीं रे ॥ ७ ॥
केइ मांनव कहें उपीयोग सेती, रूके तूटे छे कर्मो रे।
वले कहें कर्म उपीयोग सूं लागे, ते भूला छें जावक भर्मो रे ॥ ८ ॥
द्रव गुण परजाय दुवार लोकां नें, रूडी रीत सीखावे रे।
पिण आपरा बोल्या री समभ पडे नही, तिण सूं गाला रा गोला चलावे रे ॥ ९ ॥
अनंता पदार्थ जाणें नें देखें, उपीयोग रा ए गुण बतावें रे।
द्रव गुण पर्याय भिन २ लोकां नें, रूडी रीत सीखावे रे ॥ १० ॥
वले कहें छे कर्म रोके नें तोड़े, ते तो सागार ने अणागारो रे।
वले कहें कर्म उपीयोग सूं बंधे छे, ओ प्रतप देखो अंधारो रे ॥ ११ ॥
षयउपसम इंद्रा नें सावद्य सरधें, हाथां सूं लगायो भूजों रे।
आपरी सरधा में आप अलूजें, जब डाहो कुण मांनसी दूजो रे ॥ १२ ॥
षयउपसम भाव नें सावद्य सरधें, जब सावद्य खोटो साख्यातो रे।
तिण सावद्य नें आस्रव कहिता लाजें, त्यांरी बिगडी सरधा वातो रे ॥ १३ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सावद्य कह्यो जब आश्रव निश्चै, कह दियों चोड़े साख्यातो रे।
तो ही सावद्य कहें पिण आश्रव न कहें, कूड़ी टेक झाल्यांरी आ वातो रे॥ १४॥
जब कहे म्हें षयउपसम भाव तिणंनै, उदा सूं कहां सावद्य तांमो रे।
सुध जाब नायां दूसरी ले उठे, तिणनें पाछो कहणो वले आंमो रे॥ १५॥
जो थे उदा सूं षयउपसम सावद्य जांणो, तो पिण सावद्य कह्यो षयउपसम भावो रे।
सावद्य कह्यो तिणनें आश्रव कहीजे, थारे मूढे थें कर दीयों न्यावो रे॥ १६॥
षयउपसम भाव नें सावद्य कहे पिण, आश्रव कहितां आंणे संको रे।
ते लीधी टेक छूटे नहीं तिण थी, ते कर्म तणे वस वंको रे॥ १७॥
आगे आश्रव में दोय भाव परुप्या, उदे नें परिणामीक भावो रे।
षयउपसम कह्यां उठे आगली सरधा, तिण सूं खेले छे खोटा डावो रे॥ १८॥
जाणे झूठ बोलूं पिण आगली सरधा, उवा पिण कुसले खेमें राखू रे।
तो दोय भाव आश्रव मांहें दाखूं, तीजो षयउपसम भाव न भाखूं रे॥ १९॥
पिण षयउपसम भाव ने प्रसिध चोडे, सावद्य तो कह चूको रे।
सावद्य कह्यो जद आश्रव कह दीयों, तो तीन भाव कहों मांन मूको रे॥ २०॥
तो पिण तीन भाव आश्रव माहें, मुख सूं कहणी न आवे रे।
इसडी ताण आले रह्या त्यां नें, किण न्याय करे समझावें रे॥ २१॥
जो आश्रव में तीन भाव नही कहो, तो षयउपसम ने सावद्य मत भाखो रे।
उदे ने परिणामीक कहे ने, आगली सरधा राखो रे॥ २२।
इणविध चरचा में बंध कीधां, जाव नायां बोले कूरो रे।
वले अकबक करनें उंधो बोलें, वले क्रोध करे भागे दूरो रे॥ २३॥
कोइ गहलो कहे म्हारी मा बांझडी छे, ते चोडे कहूं नहीं छाने रे।
मो पूत तणी मा बांझडी निश्चै, एहवी बातडा हो कुण मानें रे॥ २४॥
ज्यूं कोई षयउपसम नें कहे सावद्य, पिण सावद्य नें आश्रव कहे नांही रे।
म्हारी मां नें वले बांझडी छे तिम, एहवो अंधारो छे तिण मांही रे॥ २५॥
केइ मानव पांचूं इंदर्‍यां नें, सावद्य कहे छें लोकां नें रे।
कूडा २ कुहेत लगाए, चोडे कहे नही छे छाने रे* ॥ २६॥
सुरतइंद्री नों सभाव छे एहवो, भला ने भूंडा शब्द सुणायों रे।
और गुण आंगुण नही सुरतइंद्री में, तिण में संका म जांणो कोयो रे॥ २७॥
भला २ शब्द सुणने राग आणें, धेष आणे शब्द सुणे भूंडा रे।
ए प्रतष आंगुण राग धेष में, त्यां सूं पाप कर्म वांधे वूडा रे॥ २८॥

---

*ए २६ वी गाथा समूचे षयोपसशम भाव उपर कही छे।

चखू इंद्रीनों सभाव छै एहवो, भला भूंडा रूप देखें रे।
और गुण औगुण नहीं चखू इंद्री में, बुधवंत न्यांन सूं इम पेखें रे॥ २९ ॥
भला रे रूप देखनें राग आंणे, भूंडा देखनें आणे धेषों रे।
ए प्रतख औगुण राग धेष में, चखू इंद्रीनों कांई नहीं लेखो रे॥ ३० ॥
घाणइंद्री नों सभाव छै एहवो, भला नें भूंडा गंध वेदायो रे।
और गुण अवगुण नहीं घाणइंद्री में, सूधी समझ पारो इण न्यायो रे॥ ३१ ॥
भला रे गंध उपर राग आंणे, भूंडा गंध उपर द्वेष आंणे रे।
ए प्रतख औगुण राग धेष में, घाणइंद्री में अवगुण भोला जाणे रे॥ ३२ ॥
रसइंद्री नों सभाव छै एहवो, भला भूंडा वेदे रस सवादो रे।
और गुण औगुण नहीं रसइंद्री में, इण सूं मूल नहीं विषवादो रे॥ ३३ ॥
भला रे रस उपर राग आंणे, भूंडा रस उपर धेष आणें रे।
ए प्रतख औगुण राग धेष में, रसइंद्री में औगुण भोला जांणे रे॥ ३४ ॥
फरसइंद्री नों सभाव छै एहवो, भला भूंडा फरस वेदायो रे।
और गुण अवगुण नहीं फरस इंद्री में, इण नें ओलखल्यो इण न्यायो रे॥ ३५ ॥
भला फरस उपर राग आंणे, भूंडा फरस उपर आंणे धेषो रे।
ए प्रतख औगुण राग धेष में, फरसइंद्री नों नहीं कोई लेखो रे॥ ३६ ॥
राग धेष में अवगुण दीसे उघाडो, पिण इंद्री में अवगुण नांहीं रे।
यांरी गुण परजाय छै न्यारी २, विचार देखो मन मांहीं रे* ॥ ३७ ॥
कोई कहे छै औगुण सुरतइंद्री में, सबद सुणीयां राग धेष आयो रे।
इसड़ा २ कूडा कुहेत लगाए, सुरतइंद्री नें सावद्य कहे ताह्यो रे॥ ३८ ॥
इसड़ा कूडा कुहेत सुण नें, सुरतइंद्री नें सावद्य जांणे रे।
हिवे निरणो जाव सुणे भव जीवां, मन नें आंण ठिकांणे रे॥ ३९ ॥
किण ही ठामें पुरष अनेक बेठा था, त्यां सबद सुण्यो विषे कारी रे।
केकां रे तो सब्द गराज न आयो, त्यांरे गुण अवगुण न हूवो लिगारी रे॥ ४० ॥
केकां तो सब्द नें जथातथ जाण्यो, ते निरवद जोग व्यापारो रे।
केकां रे सब्द सुणे वैराग उपनों, त्यांनें संसार लागो खारो रे॥ ४१ ॥
केइक तो सब्द सुणनें रीझ्या, त्यांरा तो सावद्य जोग छै भूंडो रे।
केकां रे सब्द सुणनें द्वेष आयो, ते पिण सावद्य जोग सूं बूडा रे॥ ४२ ॥
सुणवो तो सगलां रो सगो सरीषो, सुरतइंद्री नों ओहीज सभावो रे।
खेप उदे खयउपसम भाव नीपना, ते सुणजों जथातथ न्यावो रे॥ ४३ ॥

*ए ३७ वें गाथा समचे इंद्री उपरे छै।

सबद सुण्यो पिण गराज न आयो, ते पिण सुरतइंद्री नों स्वभाव जांणो रे।
जथातथ जाण्यो तिण विचार करे ने, ग्यान दूजो निरवद्य जोग पिछांणो रे॥ ४४॥
जथातथ जाण्यो ते गिनान मे आयो, विचाख्यो ते निरवद जोग मांही रे।
ए दोनूई परजाय निरवद जाणो, ते तो सुरतइंद्री नों गुण नाही रे॥ ४५॥
वैराग भाव उपनो तिण रे, चारित मोहणी षयउपसम हूओ रे।
ओपिण सुरतइंद्री नों गुण छे नाही, वैराग भाव इण सूं जूओ रे॥ ४६॥
राग ने धेप आयो छे त्यारे, पाप कर्म वधाणा भारी रे।
ते पिण अवगुण नही छे सुरतइंद्री मे, ते बुधवत करज्यो विचारी रे॥ ४७॥
राग ने धेष आया ते मोह उदे सू, ते सुरतइंद्री नीं नही परजायो रे।
राग धेष तणी परजाय छे, ते सुरतइंद्री में केम समायो रे॥ ४८॥
राग ने धेष तणा परिणाम, वले वीतराग परिणांमो रे।
ए पिण परिणाम जूआ जूआ छें, त्यारा जूआ जूआ छें नांमो रे॥ ४९॥
एहवा भला भूडा परिणांम वरते छे, ते गुण अवगुण छें या मांही रे।
ते पिण सावद्य जोग वरत्या छे, ते तो सुरतइंद्री मे नाही रे। ५०॥
सुरतइंद्री सूं सवद साथे लगो सुणीयो, घणा मिनखां रो वृदो रे।
तिणा काले तो सम रह्या सारा, कोई न पड्यो विषे रे फंदो रे॥५१॥
हिवे के कारे अंतर मोहरत मांहे, परिणाम माठा आया रे।
के कां रे मोहरत दोय मोहरत पाछे, त्यां पिण माठा परिणाम चलाया रे॥ ५२॥
इम पोहर दो पोहर दिवस पख मास, तथा वरस छ मास रे मांही रे।
राग आवे तिण शबद रे उपर, ते सुरतइंद्री में अवगुण नांही रे॥ ५३॥
सुरतइंद्री सूं शब्द साभल लीधो, ते तो बीत गयो तिण कालो रे।
हिंवे तो शब्द ग्यान सू याद आयो छे, मोह उदे सूं हूवो मतवालो रे॥ ५४॥
ग्यान सूं याद आया विषे सेवा लागो, उणरे लेखे सावद्य ग्यांनो रे।
जो याद न आवें तो विषे न सेवत, आ सरधा क्यूं नही मांनो रे॥ ५५॥
जो शब्द सुण्यां सूं राग उपनों, सुरत इंद्री सावद्य होय जायो रे।
ज्यूं ग्यांन सूं याद आया राग आवे, तो ग्यांन सावद्य क्यूं नहीं थायो रे॥ ५६॥
सुरतइंद्री ने ग्यान तो सावद्य नांही, सावद्य तो राग धेप रो चालो रे।
तांणातांण छोडो भव जीवां, श्री जिण वचन संभालो रे॥ ५७॥
भूंडा भूडा शब्द सुणीयां धेष आवे, राग ज्यूं सगलोई कहणो रे।
रागरी ठोड तो धेष ने कहणो, रूडी रीत विचारी लेणो रे॥ ५८॥
कोइ कहे छे अवगुण चषू इंद्री में, रूप दीठां राग द्वेष आवे रे।
इसडा कूडा २ कुहेत लगाए, चषू इंद्री ने सावद्य बतावे रे॥ ५९॥

वले कहे जीव दीठो आंख्यां थी, जब कीधी जीवरी घातो रे ।
जो नहीं देखे तो क्यांनें हणतो, इण लेखे आंख्यां सावद्य साख्यातो रे ॥ ६० ॥
इत्यादिक अनेक करे छे अकारज, जो कीधा छें आंख्यां सूं देखो रे ।
ते सर्व अवगुण छे चषू इंद्री नो, इसरो बतावे छे लेखो रे ॥ ६१ ॥
इण लेखे म्हे चषू नें सावद्य कहां छां, चषू मांहें छे मोटो दोखो रे ।
ग्यांन रो जांणपणो छे निरवद, तिणसूं ओ उपीयोग छै चोखो रे ॥ ६२ ॥
इत्यादिक कूड़ा २ कुहेत सुणे नें, कोई चषू इंद्री ने सावद्य जांणें रे ।
हिवें तिणरो जाब सुणों भवजीवां, मन नें आंण ठिकाणे रे ॥ ६३ ॥
किण ही ठामें पुरष अनेक बेंठा था, त्यां रूप दीठो विषेकारी रे ।
के कारे रूप गराज न आयो, त्यांरे गुण अवगुण न हूवो लिगारी रे ॥ ६४ ॥
सुरतइंद्री नो विस्तार कह्यो तिम, चखुइंद्री नो पिण जांणो रे ।
उठे शब्द कह्यो अठे रूप नें कहिणो, ते पिण रूड़ी रीत पिछांणो रे ॥ ६५ ॥
वले चषू इंद्री नों विसतार कहूं छूं, ते सांभल ल्यो चित्त ल्यायो रे ।
कोई चक्षु दर्शण ने सावद्य म जांणो, तिणरो न्याय धारो मन मांह्यों रे ॥ ६६ ॥
चषू सूं देखनें करें सावद्य कामो, जो चषू सावद्य होय जायो रे ।
तो ग्यांन सूं जाण करे सावद्य कांमा, ते ग्यांन सावद्य क्यूं न थायो रे ॥ ६७ ॥
आंचे पुरष बेटा नें मोटो हूवो जाण्यो, तिण जाण्यो तो पूत परणायो रे ।
जो नहीं जाणतों तो नहीं परणावतो, उणरे लेखे सावद्य ग्यांन थायो रे ॥ ६८ ॥
ग्यांन सूं जांणने श्रावक खेती करे छै, सूर नेदाणादिक करावे रे ।
ते जाणे म्हारे धान इण विध होसी, उणरे लेखे सावद्य ग्यांन थावे रे ॥ ६९ ॥
कोइ श्रावक समायक कर बेठो, तिणनें थेली भूली याद आइ रे ।
याद आइ तो परिणांम चलीया, उठ चाल्यो भांग समाइ रे ॥ ७० ॥
जीव देख्यो तो हिंसा जीवरी कीधी, थेली जांणी तो भांगी समाइ रे ।
जो देखवो सावद्य तो जाणवो सावद्य, तिणमें कांइ घालो घुचलाई रे ॥ ७१ ॥
केइ समदिष्टी जांणने करावे, गढ कोट किलादिक भारी रे ।
हाट हवेली मेंहलादि करावे, नही जाणे तो न करे लिगारी रे ॥ ७२ ॥
जांण २ नें एहवा कामा करे छे, तो ही ग्यांन नें नहीं कहो छो भूंडो रे ।
देखनें करे छे सावद्य कामा, तो दर्शण ने सावद्य कहि कांय बूडो रे ॥ ७३ ॥
कोई ग्यान सूं जाण ने संचो करे छे, गुल तेलादिक घन धांनो रे ।
वले विदध प्रकार संचो करे तोही, सावद्य नहीं कहे ग्यांनो रे ॥ ७४ ॥
तो दर्शण सूं देखने करे संचो, तो दर्शन सावद्य कांय जांणो रे ।
जांण ने देखने कीया सावद्य कामा, दोयां री एक रीत पिछांणो रे ॥ ७५ ॥

समदिष्टी न्यातीलादिक नें मूंआ जांण्यां, बिगड्या जाण्यां काम अनेको रे।
तिण जाण्यां सूं आर्त्तध्यान ध्यावा लागो, ज्ञान नें दोष न कहो एको रे॥ ७६ ॥
तो एहीज कामा देखतां विगड्यां, जब पिण ध्यायो आरत ध्यानो रे।
जो देखनें कीधां दर्शण सावद्य कहों छो, तो जाणे कीधां सावद्य हूवों ज्ञानो रे॥ ७७ ॥
समदिष्टी घर में धन गडीयो जाणे, और माल मुलक वले ताह्यों रे।
जब याद आवे तब मन मांहे मूर्छे, नही जांणे तो नही मूरछायों रे॥ ७८ ॥
ग्यांन सूं जाण्यां तो मूर्छा आई, जब ग्यांन नें निरवद जांणो रे।
तेहीज सारा निजरां देख मूर्छे, जब उलटी कांय ताणों रे॥ ७९ ॥
जांण नें सावद्य कीयां ग्यांन छे निरवद, देखे सावद्य कीयां दर्शण चोखो रे।
अवगुण उदेभाव किरतब में छे, दोनूं उपीयोग छे निरदोषो रे॥ ८० ॥
काम भोग जथातथ ग्यांन सूं जाणें, त्यां नें भोगवे जांण पिछांणो रे।
जो नहीं जांणें तो नहीं भोगवतो, जब थें ग्यांन ने निरवद जांणो रे॥ ८१ ॥
तो चषू देखनें भोग भोगवे, जब चषू नें सावद्य कांय भाखो रे।
एक जांण भोगवे एक देख भोगवे, दोयां ने सरीषा क्यूं न दाखो रे॥ ८२ ॥
घन भूलो ते समदिष्टी नें याद आयो, तिण सूं कीधा उदंगल अनेको रे।
याद नही आवे तो नही करत उदंगल, जद ग्यांन कहो निरदोषो रे॥ ८३ ॥
तो चषू सूं देखने करे उदंगल, ते चषू नें सावद्य कांय भाखो रे।
जो जांण कीयां ग्यांन सावद्य हुवे तो, देख कीयां चषू सावद्य दाखो रे॥ ८४ ॥
माठी वस्त अजांण्यां खाधी, जाण्यो जब मन हूवो भूंडो रे।
तिणरे मन भूडो वरत्यां पाप बंधांणों, ते किसा उपीयोग सूं बूडो रे॥ ८५ ॥
देख खाधों जब मन भूंडो न वरत्यो, जाण्यो जब मन वरत्यो भूंडों रे।
तिण जाणपणा नें निरवद्य जाणो, तो चषू सावद्य कहे कांय बूडो रे॥ ८६ ॥
चास वटाउ देखने पीधी, पछे सुणनें जाण्यो जहर पीधो रे।
जाण्यो जब धसको पड्यो त्यां रे, पाप कर्म बाधें काल कीधो रे॥ ८७ ॥
बटाउ मूंआ ते धसको परयां थी, जहर सुणने ग्यांन सूं जांण्यो रे।
ते जांणपणा नें निरवद थापो, तो चषू सावद्य मत कहो तांणो रे॥ ८८ ॥
साधु अपछरा देख रह्यो समभावे, घणा दिनां पछे अणसण लीधो रे।
तिणरो रूप आछो जांण नें साधु, भोग वंछा नीहांणो कीधो रे।
तिणरा रूप री धारणा याद आई, तो साधु कीधो नीहाणों रे।
ते धारणा ग्यांन री निरवद जांणों, तो चषू मांहें अवगुण कांय जांणो रे॥ ९० ॥
धारणा याद आयां राग उपनो, देख्यो जब तो राग न आयो रे।
चषू इंद्री नों अवगुण मूल न दीसे, तिणरो काल वीत गयो ताह्यो रे॥ ९१ ॥

ज्ञान जोग सेव्यां है पाप आया जब, हुवो ज्ञान जोग ए नांगी रे।
जब तिण उदीयोग सूं पाप आया छै, तिण उदीयोग सूं पाप लागी रे ॥ ९२ ॥
ध्यांन सूं पाप आयो तो ध्यांन उवटो, जब ध्यांन मांड्यो ए खोटो रे।
वस्तु आदि ईण में साच थयो, सोधे चौडे बताये कूडो रे ॥ ९३ ॥
अस्त्री नो रूप देख विकार उपजे, तब लागे छे चौथो आडो रे।
ते तिण देखणे ध्यांन सूं आन्यो पाछे, आड लागी कर्मों विकारो रे ॥ ९४ ॥
पछे ते आड लागी ध्यांन सूं आन्यो पाछे, अणिवीजी तो उपजैं ध्यांनो रे।
तिण ध्यांन रे निरवद चोखो जांणो, जो कर्म सावद्य कर्म जावे रे ॥ ९५ ॥
देखणे करे ते छे तिण ध्यांन सूं जांणे, मन सूं करे विचारो रे।
ध्यांन में करे छे तिणुं देखण री मनसा, ए तिणनो खरी भेद थारो रे ॥ ९६ ॥
नेमकुमार हाथी रा रथ में, जातिसमरण सूं याद आयो रे।
जब पशु जीवनां बाडो दीठो, जब मोह उपाय्यो ताजो रे ॥ ९७ ॥
याद आयो जातिसमरण सेती, तिण नें ते कह्यो छो चोखो रे।
पहू पूं पछिलो भव याद न आवे, तिण में कांय बताबो खोटो रे ॥ ९८ ॥
जिण छे निरवद ज्ञांन कीयां सूं, ध्यांन सावद्य नहीं ताजो रे।
जिण छे निरवद देख कीयां सूं, करतन सावद्य जिण थायो रे ॥ ९९ ॥
जिण छे निरवद देख कीयां थी, सुध ध्यांन में नहीं हेतो रे।
खोटे उदे पाप देव उदेयात्, तिण सूं कहे छे पापनी पोतो रे ॥ १०० ॥
इत्यादिक अनेक करे सावद्य ध्यानां, त्यां में केइ ध्यांन सूं जांणें रे।
केइ कर्म सूं देख करे छे, त्यां में खरी रीत पिछांणो रे ॥ १०१ ॥
केई तो ध्यान तो हुवे पछे, और मसाण यां में न पावे रे।
और रहे में पच्चखाण नहीं कोइयां में, इन सन्ध्या पंथ मिट जावे रे ॥ १०२ ॥
केइ ज्ञांन करे केइ देख करे छे, सावद्य निरवद चारोई मंडो रे।
उदीयोग तो छै केइ निरवद ने, त्यां में सावद्य सरधे मत कूडो रे ॥ १०३ ॥
केइ उदीयोग पच्चखाण मांड छै चोखा, उत्तम लेखे निरवद जांणो रे।
वस्तु उदीयोग में सावद्य सरधे ते, कूड छै कर ७ जांणो रे ॥ १०४ ॥
जब केइ कहे नहीं नेह उठे सूं, पच्चखाण नें सावद्य जांणो रे।
तिणनें कहिजे इन उत्तर दीजे, इसडी ऊंधी मत तांणो रे ॥ १०५ ॥
चारित्र मोहनी उदे हुवे जब, वीतराग भाव विनसावै रे।
तिणसूं राग में देख रूप कहीयां, तिण सूं नाठा जोग बतावे रे ॥ १०६ ॥
मोह कर्म पच्चखाण हुवो जब, पच्चखाण भाव घटायो रे।
नेहीज मोहनी फेर उदे हुवें, नेहीज पच्चखाण छडायो रे ॥ १०७ ॥

चारितमोहणी कर्म उदे सूं, राग धेष उदे भाव थायो रे।
तो षयउपसम विगड्यो उदे भाव हूवों, तो षयउपसम नही छे ताह्यों रे॥ १०८॥
मोह उदे सूं मोहरो षयउपसम विगख्यो, ते षयउपसम भाव छे नांही रे।
ज्यूं साधु विगड्या ने साधु म जांणो, ते गिण लेजों असाध रे मांही रे॥ १०९॥
ज्यूं षयउपसम विगख्या नें उदेभाव जाणो, षयउपसम भाव म जांणो रे।
षयउपसम आछो उदे भाव खोटो, इम सावद्य निरवद पिछांणो रे॥ ११०॥
मोह उदे सूं नीपजें सावद्य सारा, निरवद नीपजें षयउपसम तेथी रे।
पाप लागे मोह उदे भाव सूं, नही लागे ते षयउपसम सेती रे॥ १११॥
मोह उदे हूआं मोह रो षयउपसम विगरे, और षयउपसम विगारे नांही रे।
चारित मोह सूं षिमादिक गुण विगरें, और गुण विगारे नहीं कांइ रे॥ ११२॥
दंसणमोह सूं सूधी सरधा विगाडे, ओर तो गुण विगाड़े नांहीं रे।
दंसण नें चारित मोहनों ओहीज होदो, ओर गुण विगाडे नही कांइ रे॥ ११३॥
अनंतानबंधी चोकरी उदे हूआं, कदा दंसण मोह साथे उदे होयो रे।
जब जीवरा दोनूंइ गुण विगरे, आप आपरा न्यारा लो जोयो रे॥ ११४॥
दंसण मोहणी उदे हूवें जब, चारित मोहणी उदे हूवे साथो रे।
जब पिण जीवरा दोनूंइ गुण विगरें, जोवो सूतर में साख्यातो रे॥ ११५॥
आधाकर्मी आहारादिक असुध कह्यो छे, ते तो किरतब आसरी जाणो रे।
ते आहार असुध सावद्य दोनू नाही, आहारादिक थी सावद्य पिछांणो रे॥ ११६॥
ज्यूं सुरत इद्रीयादिक आस्रव कह्यो ते, राग धेप आश्री जाणो रे।
पिण सुरत इंद्री तो आस्रव नांहीं, अहार ज्यूं लो इंद्रया पिछाणो रे॥ ११७॥
ज्यूं अजीव काय असंजम कह्यो छे, ते इविरत आश्री जांणो रे।
पिण अजीव तो असंजम नाही, असंजम इविरत आश्री पिछांणो रे॥ ११८॥
ज्यूं इंदख्या मोकली मेली ते आश्रव, ते विषें इविरत आश्री जांणो रे।
पिण इंद्रयां तो आश्रव छे नांहीं, ते अजीव असंजम ज्यू इंद्रयां पिछांणो रे॥ ११९॥
वले अजीव काय ने संजम कह्यो छे ते त्याग विरत लेखे वतायो रे।
ते अजीव तो संजम छे नांही, त्यांरी विरत लेखे ओलखायो रे॥ १२०॥
ज्यूं इंद्रयां नें वस करे ते संवर, ते विषे री विरत आश्री जांणो रे।
पिण इंदख्यां ने संवर विरत मति जांणो, अजीव सजम ज्यूं इंदख्यां पिछांणो रे॥ १२१॥
परिग्रहो कह्यो सचित अचित नें मिश्र, ते दुरगति मांहे डबोवे रे।
ते परिग्रहो तो डबोवे नांहीं, तिणरी मूर्छा विषे विगोवे रे॥ १२२॥
ज्यूं इंदरयां की विषे नें सावद्य कही ए, ते राग धेष आश्री जांणो रे।
पिण इंदख्यां तो सावद्य छे नांहीं, ते परिग्रहा ज्यूं इंदख्यां पिछांणो रे॥ १२३॥

यों तीन प्रकार को परिग्रहो कह्यो ते, पाप कर्म न लागे तेथी रे।
पाप लागे तिणरी मुर्छा भावां सूं, वले तिणरी इविरत तेती रे॥१२४॥
ज्यूं पांचूं इंदर्‍यां सूं पाप न लागे, पाप लागे विषे सूं जांणो रे।
केइ कहें इंदर्‍यां सूं ई लागें, ते प्रतख झूठ पिछांणो रे॥१२५॥
अन पुने पान पुने कह्यो सूतर में, नमसकार पुने नवमों बतायो रे।
तिण ए तो नवोंई पुन छे नांहीं, पुन नीपजें परिणाम सूं ताह्यो रे॥१२६॥
ज्यूं इंदर्‍यां नें वस करे ते संवर, तिण इंदर्‍यां नें संवर म जांणो रे।
विषे त्यागी ते परिणाम संवर नां छें, अन पुने ज्यूं इंदर्‍यां पिछांणो रे॥१२७॥
जोड़ कीधी इंदर्‍यां नी विधे ओलखावन, नेंणवा सहर मझारो रे।
संवत अठारे नें बरस छयालें, जेठ सुद तेरस बुधवारो रे॥१२८॥

ढाल : ९

दुहा

पांच भाव जिणेसर भाषीया, उदे[1] उपसम[2] क्षायक[3] भाव।
षयउपसम[4] ने परणांमीक[5] पांचमों, तिणरो जांणे समदिष्टी न्याव ॥ १ ॥
धूरला च्यार भावां तणो, जुवो जुवो गुण जांण।
परणामीक भाव छे पांचमों, ते मिले सगलां माहें आंण ॥ २ ॥
आठ कर्म उदे हूआं, त्यांसूं नीपनों उदे भाव जाण।
त्यांरो जूओ जूओ सभाव छे, तिणरी बुधवंत करजों पिछांण ॥ ३ ॥
उपसम एक मोहणी कर्म हुवे, जब नीपजे उपसम भाव।
तिण उपसम भाव तेह में, और भाव रो नहीं छे लगाव ॥ ४ ॥
आठ कर्म षय हूआं नीपजे, षायक भाव अनेक।
ते सगलाई षायक भाव में, और भाव न पावे एक ॥ ५ ॥
च्यार कर्म षयउपसम हूआ, नीपजे षयउपसम भाव अनूप।
ते षयउपसम भाव निरमलो, तिणरो जूओ जूओ छे सरूप ॥ ६ ॥
च्यांरू भावं समावे आप आप में, परिणांमीक सगलां में जांण।
समदिष्टी जथातथ ओलख्या, जिम छे तिम लीया छे पिछांण ॥ ७ ॥
पांच भाव पूरा नहीं ओलख्या, ते करे अग्यांनी तांण।
नव पदार्थ रो निरणो नहीं, ते मूंढ मिथ्याती अयांण ॥ ८ ॥
केइ ओलख नें उलटा पस्या, मोह कर्म उदे हूओ आंण।
तिण सू निन्व हूवा किण विधे, ते सुणजो चतुर सुजांण ॥ ९ ॥

ढाल

[पुन निपजे शुभजोग सू रे लाल]

इविरत ने कहे माठो ध्यान छे रे लाल, विरत ने कहे छें आछो ध्यान हो।
मणागार उपीयोग कहे तेहने रे लाल, तिणरा घट माहे घोर अग्यांन हो॥
सरधा सुणो निन्वां तणी रे लाल ॥ १ ॥
माठा ध्यान ने इविरत कहे रे लाल, आछा ध्यान ने कहे छे विरत हो।
मणागार उपीयोग त्यां नें पिण कहे रे लाल, एहवा कूड़ा करे छे निरंत हो ॥ २ ॥
विरत इविरत भला भूंडा ध्यान ने रे लाल, कहे छै मणागार उपीयोग हो।
उधी अकल हिया रा जोर सू रे लाल, तिणरी सरधा घणी छे अजोग हो ॥ ३ ॥

विरत इविरत भला भूंडा ध्यान नें रे लाल, कहे छे उपीयोग मणागार हो।
तिणरी खोटी सरधा छे सर्वथा रे लाल, ते बुधवंत करजो विचार हो॥ ४॥
विरत इविरत भला भूंडा ध्यांन नें रे लाल, जूदा जदा कह्या छें भगवांन हो।
त्यांरो विवरा सुध निरणो कहूं रे लाल, सुणो सुरत दे कान हो॥ ५॥
इविरत ने कहे माठो ध्यांन छे रे लाल, तिणरी सरधा घणी छे अजोग हो।
सूतर सू मिलती नहीं रे लाल, ते सुणजो देई उपीयोग हो॥ ६॥
इविरत तो अत्याग भाव जीवरा रे लाल, ते निरंतर लगती जांण हो।
तिण सू चेतन जीवरे रे लाल, पाप लागे निरंतर आंण हो॥ ७॥
इविरत तो अत्याग भाव जीवरा रे लाल, ध्यान तो ध्यावे जब होय हो।
तिण सू ए तो दोनूइ जू जूआ रे लाल, यां नें एकम जांणो कोय हो॥ ८॥
जो इविरत माठो ध्यांन हुवे रे लाल, तो छठे गुण ठाणे इविरत होय हो।
छठें गुण ठाणे आरत ध्यान छे रे लाल, जब तो विरत रो अंस न कोय हो॥ ९॥
जो विरत ध्यान आछो हुवे रे लाल, तो चोथें गुण ठांणे विरत होय हो।
धर्म ध्यान चोथें गुण ठाणे हुवे रे लाल, जब तो इविरत जावक न कोय हो॥ १०॥
जो इविरत माठो ध्यांन हुवे रे लाल, तो श्रावक रे निरंतर माठो ध्यान हो।
श्रावक रे इविरत छे सदा रे लाल, ते पिण निरणो कीजो बुधवान हो॥ ११॥
जो विरत ध्यान आछो हुवे रे लाल, तो श्रावक रे निरंतर आछो ध्यांन हो।
श्रावक रें विरत पिण छे सदा रे लाल, ओ पिण निरणो कीजो बुधवांन हो॥ १२॥
श्रावक रे दोनू निरंतर हुवे रे लाल, विरत ने इविरत दोय हो।
जो विरत इविरत ध्यान छे रे लाल, दोनूं ध्यांन निरंतर होय हो॥ १३॥
विरत इविरत भलो भूंडो ध्यान हुवे रे लाल, तो श्रावक रे निरतर दोय ध्यान हो।
वले ध्यावें ते ध्यांन तीसरो हुवे रे लाल, ओपिण निरणो कीजो बुधवांन हो॥ १४॥
तीन ध्यान एकण समे हुवे नही रे लाल, विरत इविरत एकण समें दोय हो।
हीया मांहे विचारे निरणो करो रे लाल, उंधी ताणकर बूडो मत कोय हो॥ १५॥
इविरत नें कहे माठो ध्यान छे रे लाल, विरत ने कहे छे आछो ध्यांन हो।
आ उंधी सरधा छे अति बुरी रे लाल, ते किण विध माने बुधवांन हो॥ १६॥
माठा ध्यान ने पिण इविरत कहे रे लाल, आछा ध्यान ने कहे छे विरत हो।
आपिण उंधी सरधा छें अति बुरी रे लाल, तिणमें करे अग्यांनी निरत हो॥ १७॥
धर्म ध्यांन थकी निरजरा हुवे रे लाल, धर्म ध्यांन सूं सवर न होय हो।
संवर तो हुवे छे विरत सू रे लाल, तिण सूं विरत ने ध्यांन छे दोय हो॥ १८॥
संवर ने निरजरा कहे रे लाल, निरजरा ने सवर कहे तांम हो।
दोनूं प्रकारे बूडे छे बापड़ा रे लाल, उंधी अकल सूं वेफांम हो॥ १९॥

विरत इविरत भला भूंडा ध्यान ने रे लाल, कहे छे मणागार उपीयोग हो।
ते पिण हीया रा जोर सूं रे लाल, आ पिण सरधा घणी छे अजोग हो ॥ २० ॥
इविरत तो उदे भाव अधर्म छे रे लाल, मोह कर्म उदे सूं जांण हो।
मणागार उपीयोग छे उजलो रे लाल, ते तो षयउपसम भाव पिछांण हो ॥ २१ ॥
मोह कर्म षयउपसम हुवां रे लाल, विरत नीपजें षयउपसम भाव हो।
तिण मणागार उपीयोग रो रे लाल, मूल नही छे लगाव हो ॥ २२ ॥
विरत सूं तो रुके कर्म आवता रे लाल, ते निश्चेइ संवर जांण हो।
मणागार तो देखण रो सभाव छै रे लाल, विरत में मिले नहीं आंण हो ॥ २३ ॥
विरत इविरत तो निरंतर हुवे रे लाल, मणागार निरंतर नांहि हो।
विरत इविरत मणागार किहां थकी रे लाल, ते निरणो करो घट मांहि हो ॥ २४ ॥
विरत इविरत नें कहे मणागार छे रे लाल, तिणरी सरधा में घोर अंधार हो।
ते भूठ बोले छे सर्वथा रे लाल, तिणमें सावद्य नहीं छे लिगार हो ॥ २५ ॥
आरत रुदर ध्यान माठा बेहूं रे लाल, त्यांनें कहे छे मणागार असुध हो।
धर्म शुकल ध्यांन बेहूं भला रे लाल, त्यांने कहे छे मणागार सुध हो ॥ २६ ॥
भला भूडा च्यारूंइ ध्यांन ने रे लाल, त्यांने कहे उपीयोग मणागार हो।
ओतो गालां सूं गोलो चलावीयो रे लाल, तिणमें साच नही छे लिगार हो ॥ २७ ॥
आरत रुदर ध्यान माठा बेहूं रे लाल, ते तो सावद्य जोग व्यापार हो,
ते सावद्य किरतब पारुओ रे लांल, ते निश्चे नहीं मणागार हो ॥ २८ ॥
मोहकर्म उदे सूं माठो ध्यान छे रे लाल, ते तो पाप कर्म रा उपाव हो,
मणागार षयउपसम भाव निरमलो रे लाल, तिणरो देखण रो इज सभाव हो ॥ २९ ॥
आरत रुदर ध्यांन माठा तेह ने रे लाल, त्याने कहें मणागार उपीयोग।
एहवी उधी करे छे परूपणा रे लाल, तिणरी सरधा घणी छे अजोग हो ॥ ३० ॥
धर्म शुकल ध्यांन बेहूं भला रे लाल, ते तो निरवद जोग व्यापार हो।
ते निरवद करणी निरजरा तणी रे लाल, ते पिण निश्चे नही मणागार हो ॥ ३० ॥
अंतराय ने मोहणी षयउपसम्या रे लाल, जब ध्यावे छे आछो ध्यांन हो।
तिण सूं कर्म कटे छे जीवरा रे लाल, मणागार तो देखण रो इज तांन हो ॥ ३२ ॥
धर्म शुकल आछा ध्यांन ने रे लाल, त्यांने कहें मणागार उपीयोग हो।
ते पिण उंधी करे छे परूपणा रे लाल, आपिण सरधा घणी छे अजोग हो ॥ ३३ ॥
हिंसा करे प्राणी जीव री रे लाल, वले बोले मूसावाय हो।
चोरी करे सेवे मइथुन ने रे लाल, परिग्रह मेलणरो करे उपाय हो ॥ ३४ ॥
करें क्रोध मान माया लोभ नें रे लाल, राग धेष कलहो करे तांम हो।
अभिषण पेसुण पर परवाद ने रे लाल, रति अरति माया मोसों आंम हो ॥ ३५ ॥

चोथे गुणठांणे एक भाव ग्यांन में रे लाल, समकत मांहें तो छें तीन भाव हो।
त्यांरी समकत नें ग्यांन म जांणजो रे लाल, यांरो जूओ २ छें सभाव हो॥ ५२॥
दंसण मोहणी कर्म उदे हूआं रे लाल, समकत रो हूओ छे मिथ्यात हो।
तिण मिथ्यात नें कहें सागार छें रे लाल, तिणरी खोटी सरधा साख्यात हो॥ ५३॥
सागार षयउपसम भाव निरमलो रे लाल, मिथ्यात उदे भाव अंधकार हो।
सागार उदे भाव हुवे नहीं रे लाल, ते बुधवंत करजो विचार हो॥ ५४॥
मिथ्यात उदे भाव तेहथी रे लाल, लागे छे किरीया मिथ्यात हो।
सागार षयउपसम भाव थी रे लाल, पाप न लागे तिलमात हो॥ ५५॥
समकत उपसमादिक तेह थी रे लाल, टल जाए किरीया मिथ्यात हो।
समकत रो मिथ्यात प्रतिपष छे रे लाल, बिगडयो सुधरयो होय जात हो॥ ५६॥
सागार वधीयां कर्म रुके नहीं रे लाल, घटीयां पाप न आवे लगार हो।
वले कर्म न तूटें सागार थी रे लाल, उजला लेखे निरवद सागार हो॥ ५७॥
सागार वधे ग्यांनावर्णी घट्यां रे लाल, ग्यांनावर्णी वधीयां घटे सागार हो।
सागार घटीयां सावद्य न नीपजें रे लाल, वधीयां निरवद न नीपजें लिगार हो॥ ५८॥
मिथ्यात सावद्य छे मोटको रे लाल, तिणसूं पाप लागे दग चाल हो।
तिण मिथ्यात नें सागार कहे केई रे लाल, ते बोले छे आल पंपाल हो॥ ५९॥
कोइ सागार नें समकत कहे रे लाल, वले कहे छे सागार नें मिथ्यात हो।
संवर आस्त्रव कहे छे सागार नें रे लाल, तिणरी प्रतष भूठी वात हो॥ ६०॥
सागार तो संवर आस्त्रव नही रे लाल, संवर आस्त्रव तो समकत मिथ्यात हो।
सागार नें संवर आस्त्रव कहे रे लाल, ते चोडे भूला जात हो॥ ६१॥
सागार उपीयोग रो विरहो पडे रे लाल, ते तो अंतरमोहरत मांहि हो।
समकत रहे त्यां लगे निरंतर रहे रे लाल, किण ही समें विरहो पडे नांहिं हो॥ ६२॥
मिथ्यात रहे त्यां लग निरंतर रहे रे लाल, किण ही समें विरहो पडे नांहिं हो।
सागार उपीयोग रो विरहो पडे रे लाल, सोच देखो मन मांहिं हो॥ ६३॥
मिथ्यात ने समकत बेहूं दिष्ट छे रे लाल, ते निरचें नही छे सागार हो।
बेहूं दिष्ट नें सागार म सरधज्यो रे लाल, करे हीया में विचार हो॥ ६४॥
बेहूं दिष्ट ने घाली सागार में रे लाल, तीजी दिष्ट किम राखसी न्यार हो।
जो इण नें ई कहे सागार छे रे लाल, तो अंधार मांहे फेर अंधार हो॥ ६५॥
समा मिथ्या दिष्ट छे तीसरी रे लाल, ते दिष्ट छे तीजे गुण ठांण हो।
दंसण मोहणी उदे षयउपसम हूआं रे लाल, मिश्र दिष्ट नीपजती जांण हो॥ ६६॥
मिश्र दिष्ट नें कहें सागार छे रे लाल, सागार नहीं मिश्र दिष्ट हो।
मिश्र दिष्ट ने कहे छे सागार छे रे लाल, तिणरी सरधा घणी छे भिष्ट हो॥ ६७॥

तीनां दिष्टां नें कहे सागार छे रे लाल, तिणरे उदे हूवो छे मिथ्यात हो।
आप डूबे ओरां नें डबोवता रे लाल, कर २ भूठी वात हो ॥६८॥
तीनूं दिष्ट ने सागार उपीयोग रा रे लाल, जूआ २ गुण तास हो।
ए सगला नें घाल्या सागार में रे लाल, तिणरी समकत रो हूवो छे विणास हो ॥६९॥
तीन दिष्ट ने सागार उपीयोग रो रे लाल, निरणों कीयो छे तांम हो।
हिवे निरणो कहू छूं मणागार नों रे लाल, ते सुणजों राख चित्त ठांम हो ॥७०॥
मणागार उपीयोग ने चारित कहे रे लाल, चारित नें कहे छे मणागार हो।
ते बेहूं विध सरधा उंधी घणी रे लाल, तिण में साच नहीं छे लिगार हो ॥७१॥
चारित मोहणी षयउपसम हूआं रे लाल, जब पामें चारित श्रीकार हो।
तिणसूं इविरतादिक री किरिया मिटी रे लाल, ते तो निश्चेइ नहीं मणागार हो ॥७२॥
मणागार तो दर्शण उपीयोग छे रे लाल, चारित ने तो त्याग भाव जांण हो।
तिण चारित नें कहे मणागार छे रे लाल, ते पिण पूरा मूढ अयांण हो ॥७३॥
छठा गुणठांणा थी बारमां लगे रे लाल, मणागार तो षयउपसम भाव हो।
तठा तांइ चारित में तीन भाव छे रे लाल, तिणरो सुणो विवरा सुध न्याव हो ॥७४॥
छठा गुणठाणा थी दसमां लगे रे लाल, षयउपसम चारित जांण हो।
उपसम चारित गुणठाणें इग्यारमें रे लाल, षायक चारित बारमें गुणठांण हो ॥७५॥
षायक उपसम षयउपसम चारित तिहां रे लाल, षयउपसम छे मणागार हो।
तिणसूं मणागार नें चारित जू जूआ रे लाल, तिणमें शंका म राखो लिगार हो ॥७६॥
चारित तो उपसम भाव जिण कह्यों रे लाल, मणागार उपसम भाव नांय हो।
ए न्यारा २ दोनूं जाण जो रे लाल, यां नें एक सरधे बूडो कांय हो ॥७७॥
दर्शणावर्णी कर्म षयउपसम हूआं रे लाल, जब नीपजे षयउपसम मणागार हो।
तिण मणागार ने चारित कहे रे लाल, तिणरा घट मांहे घोर अंधार हो ॥७८॥
चारित मोहणी कर्म उपसम हूआं रे लाल, जब उपसम चारित होय हो।
तेहीज चारितमोहणी षय हूआं रे लाल, षायक चारित पामें सोय हो ॥७९॥
चारित मोहणी षयोपसम हूआं रे लाल, षयउपसम चारित थाय हो।
यां तीनां ने कहे मणागार छे रे लाल, ते तो चोडे भूला जाय हो ॥८०॥
चारित मोहणी कर्म घटीयां थकां रे लाल, जब चारित पांमें श्रीकार हो।
दर्शणावर्णी कर्म घटीयो तेह सूं रे लाल, पामें छे षयउपसम मणागार हो ॥८१॥
तिण सूं मणागार नें चारित जू जूआ रे लाल, जूई जूई त्यांरी परजाय हो।
कोई चारित नें गिणें मणागार हो लाल, तिण गेंहला नें खबर न कांय हो ॥८२॥
षयउपसम ग्यांन छदमस्थ रो रे लाल, त्यांरा चारित मांहे तीन भाव हो।
तिण चारित नें मणागार म जांण जो रे लाल, यां रो जूओ २ छें सभाव हो ॥८३॥

चारित मोहणी कर्म उदें हूआं रे लाल, जब चारित रो अचारित हूवो जांण हो।
तिण अचारित नें कहे मणागार छे रे लाल, ते पूरा मूंढ अयांण हो॥८४॥
मणागार षयउपसम भाव निरमलो रे लाल, अचारित तो उदे भाव जांण हो।
मणागार उदे भाव हुवे नहीं रे लाल, से निरणो करो चतुर सुजांण हो॥८५॥
अचारित उदे भाव तेहथी रे लाल, इविरत किरीया लागे साख्यात हो।
मणागार षयउपसम भाव थी रे लाल, पाप न लागे अंसमात हो॥८६॥
चारित सामायिकादिक तेहथी रे लाल, टलजाए किरिया पात हो।
चारित रो प्रतिपक्ष अचारित हुवे रे लाल, विगड्यो सुधर्‌यो होय जात हो॥८७॥
मणागार बधीयां कर्म रुके नहीं रे लाल, घटियां पाप न लागे लिगार हो।
वले कर्म न तूटे मणागार थी रे लाल, उजला लेखे निरवद मणागार हो॥८८॥
दर्सणावर्णी कर्म घटे बधे रे लाल, जब बधे घटे मणागार हो।
मणागार बधीयां घटीयां थकां रे लाल, सावद्य नहीं नीपजे लिगार हो॥८९॥
इविरत तो सावद्य छे अति बुरी रे लाल, तिणसूं पाप लागे दग चाल हो।
तिण इविरत नें कहें मणागार छे रे लाल, ते बोले छें आल पंपाल हो॥९०॥
कोइ मणागार ने चारित कहे रे लाल, वले कहे मणागार नें इविरत हो।
संवर आश्रव कहे मणागार नें रे लाल, ते तो कूड़ा करे छें निरत हो॥९१॥
मणागार तो संवर आश्रव नही रे लाल, संवर आश्रव तो विरत इविरत हो।
मणागार नें संवर आश्रव कहे रे लाल, ते चोडे भूलो छें निसरत हो॥९२॥
मणागार उपीयोग रो विरहो पडे रे लाल, ते अंतर मोहरत मांहि हो।
चारित रहे त्यां लगे निरंतर रहे रे लाल, किण ही समें विरहो पडे नांहि हो॥९३॥
इविरत रहे त्यां लगे निरंतर रहे रे लाल, किणही समें विरहो पडे नांहि हो।
मणागार उपीयोग रो विरहो पडे रे लाल, ते विचार देखो मन मांहि हो॥९४॥
दसमें गुणठांणे चारित निरंतर हुवे रे लाल, दसमें गुणठांणे नहीं मणागार हो।
जो मणागार चारित हुवे रे लाल, तो चारित न हुवे तिणवार हो॥९५॥
मणागार उपीयोग हुवे जिण समें रे लाल, तिण समें नहीं सागार उपीयोग हो।
तिणसूं सागार नें मणागार नों रे लाल, समकाले वेहां रो नही जोग हो॥९६॥
मणागार नो उपीयोग नहीं हुवे रे लाल, जब विरत इविरत हुवे ताहि हो।
तिणसूं विरत इविरत मणागार नों रे लाल, मिलाप नहीं मांहो मांहि हो॥९७॥
विरत इविरत छे वेहूं जू जूइ रे लाल, ते निस्चेंइ नहीं मणागार हो।
यां दोयां नें मणागार म जांणजो रे लाल, करे हीया में विचार हो॥९८॥
विरत तो छे धर्म पक्ष मभे रे लाल, इविरत नें अधर्म पक्ष जांण हो।
विरताविरत मिश्र पख तीसरो रे लाल, यांरी पिण करज्यों पिछांण हो॥९९॥

दोय तो पक्ष घाल्या मणागार में रे लाल, मिश्र पक्ष किन राखसी न्यार हो।
जो इण नें इ कहे मणागार छे रे लाल, तो अंधारा में फेर अंधार हो ॥१००॥
मिश्र पक्ष छे तीसरो रे लाल, मिश्र पक्ष पांच में गुणठांण हो।
चारित मोहणी उदे षयउपसम हूवां रे लाल, मिश्र पक्ष नीपजतो जांण हो ॥१०१॥
मिश्र पक्ष मणागार निश्चें नहीं रे लाल, मणागार मिश्र पक्ष नांहि हो।
मिश्र पक्ष नें कहे मणागार छे रे लाल, ते पडीया मिथ्यात रे मांहि हो ॥१०२॥
तीनां पक्षां नें कहे मणागार छे रे लाल, तिणरे उदे हूवो छें मिथ्यात हो।
आप डूबें ओरां नें डबोवता रे लाल, कर २ कूडी वात हो ॥१०३॥
तीनूं पक्ष नें मणागार जोग रा रे लाल, जूआ २ गुण तास हो।
यां सगलां नें घाल्या मणागार में रे लाल, तिणरी समकत रो हुवो छे विणास हो ॥१०४॥
तीनों इ पष नें मणागार नों रे लाल, ए निरणों कह्यो छें तांम हो।
हिवें निरणो कहूं छूं तीनूं जोगां तणो रे लाल, ते सुणजो राख चित्त ठांम हो ॥१०५॥
अठारे पापथानक सेवे तेहनां रे लाल, ते तो सावद्य जोग व्यापार हो।
ते तो चारित मोहणी रा उदा थकी रे लाल, ते तो निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१०६॥
हिंसा करे छे प्राणी जीवरी रे लाल, ते तो प्रणातपात आश्रव दुवार हो।
ते पापथांनक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१०७॥
झूठ बोले कोई मोटो छोटको रे लाल, ते मिरषावाद आश्रव दुवार हो।
ते पिण पापथांनक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१०८॥
कोई छोटी मोटी चोरी करे रे लाल, ते अदत्तादान आश्रव दुवार हो।
ते पिण पापथांनक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१०९॥
अस्त्रीयादिक सूं सेवें मैथुन नें रे लाल, ते मैथुन आश्रव दुवार हो।
ते पिण पापथांनक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ मणागार हो ॥११०॥
सचित्त अचित्त मिश्र राखे परिग्रहो रे लाल, ते परिग्रह आश्रव दुवार हो।
ते पिण पापथांनक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१११॥
इम क्रोधादिक मिथ्यात अठारमों रे लाल, अठारोंइ आश्रव दुवार हो।
अठारे पापथांनक रा उदा थकी रे लाल, ते अठारोंइ नही मणागार हो ॥११२॥
सतरे पापथांनक छें चारित मोहणी रे लाल, अठारमों दंसण मोहणी जांण हो।
त्यांरा उदा सूं ए किरतब करे रे लाल, त्यांनें जूदा २ लो पिछांण हो ॥११३॥
हिंसादिक अठारेइ किरतब करे रे लाल, ते अठारेंइ सावद्य जोग हो।
ते अठारोंई आश्रव दुवार छें रे लाल, निश्चेंइ नहीं मणागार उपयोग हो ॥११४॥
हिंसा री इविरत निरंतर हुवे रे लाल, हिंसा रा जोग निरंतर नांहि हो।
हिंसा रा जोग तो हिंसा करे जदी रे लाल, विचार देखो मन मांहि हो ॥११५॥

हिंसादिक अठारे पाडूवा रे लाल, ज्यांरी इविरत निरंतर जांण हो।
हिंसादिक रा जोग वरते जदी रे लाल, यांरी करो हीया मे पिछांण हो॥११६॥
यां अठारां री इविरत तेहना रे लाल, पूरा भेद कह्या नही जाय हो।
यां अठारां रा किरतब माठा जोगना रे लाल, कहितो २ पार न आय हो॥११७॥
अठारां री इविरत नें माठा जोग नें रे लाल, कहीजे आश्रव दुवार हो।
ते मोहकर्म रा उदा थकी रे लाल, ते निश्चेइ नही मणागार हो॥११८॥
सागार मणागार उपीयोग नें रे लाल, केई कहे छे आश्रव दुवार हो।
तिणरी उंधी सरधा छे सर्वथा रे लाल, तिणमें साच नही छे लिगार हो॥११९॥
पनरे करमादांन सेवे जू जूवा रे लाल, आरंभ करे अनेक परकार हो।
विविध पणें किरतब पाडूआ करे रे लाल, त्यांनें कहे छे ग्यानी मणागार हो॥१२०॥
वले कूटवो पीटवो नें रोयवो रे लाल, वले घर रा कारज अनेक हो।
त्यां सगलां नें कहें मणागार छें रे लाल, त्यां विकलां नें नही छे विवेक हो॥१२१॥
आश्रव संवर ने निरजरा तणा रे लाल, त्यांरा भेदां रो नही छे कोइ पार हो।
यां सगलां नें कहे मणागार छे रे लाल, तिण मिथ्यात कीयो अंगीकार हो॥१२२॥
पसारी तणा हाट तेह में रे लाल, किराणों छे विवध परकार हो।
त्यांरी कोथलीयां छें जू जूइ रे लाल, यां में जूइ जूइ नो जांणकार हो॥१२३॥
तिण पसारी रो वेटों हीया फूट थो रे लाल, तिण विकल में नहीं छे विवेक हो।
तिण सगली कोथलीयां खोलने रे लाल, किरांणा रो कीयो ढिग एक हो॥१२४॥
दोय कोथला हुंता तिणरी हाट में रे लाल, ते किराणो घाल्यो दोयां मांहि हो।
ते मन में जांणे हूं डाहो घणो रे लाल, मो सरीषो म्हारो पिता पिण नांहि हो॥ १२५॥
पूत कपूत हुवो पसारी तणो रे, तिण कीयो नीवी रो नास हो।
इण दिष्टते निन्व हूआ रे लाल, त्यां कीयो समकत रो विणास हो॥ १२६॥
अनंती परजाय छें जीवरी रे लाल, ते मांहो मांहि न खाए मेल हो।
जे निन्हव हूआ उंधी अकल का रे लाल, त्यां कर दीधी भेल संभेल हो॥ १२७॥
समकत नें मिथ्यात नी परजाय ने रे लाल, त्यांने कहे छे सागार उपीयोग हो।
एहवा ववेक विकल निन्वां तणें रे लाल, लागो मिथ्यात रो रोग हो॥ १२८॥
वले चारित अचारत री परजाय ने रे लाल, त्यांने कहे मणागार उपीयोग हो।
एहवा हीया फूट निन्वां तणी रे लाल, आ सरधा घणी छे अजोग हो॥ १२९॥
इत्यादिक जीवरी परजाय ने रे लाल, कर दीधी भेल सभेल हो।
जूइ जूइ परजाय नही ओलखी रे लाल, ते वोले वालक जिम वेहल हो॥ १३०॥
सागार नों गुण जांणव तणा रे लाल, देखवा रो गुण छे मणागार हो।
और गुण अवगुण यांमें कोइ नही रे लाल, ते करो हीया में निस्तार हो॥ १३१॥

सागार मणागार उपीयोग नें रे लाल, संवर आश्रव म सरधो कोय हो।
जो संका पड़े इण बात में रे लाल, तों सूतर नें लो जोय हो॥ १३२॥
संवत अठारे सेंतालेस में रे, फागुण विद आठम शनीसर वार हो।
जोड कीधी भव जीवांनें प्रति बोधवा रे लाल, नेणवा सहर मझार हो॥ १३३॥

●

ढाल : १०

दुहा

च्यार कर्म घनघातिया, अभ्र पटल ज्यूं जीवरे ताय।
ग्यांनवर्णी दर्शणावर्णी मोहणी, चोथो कर्म अंतराय ॥ १ ॥
च्यार कर्म षयउपशम हुआं, नीपजे निरवद भाव।
ते निजगुण सुद्ध पर्याय छें, त्यांरो जूदो २ छें सभाव ॥ २ ॥
उजला लेखे सगलां भणी, निरवद कह्या भगवान।
केइ गुणा सूं पाप कर्म रुके, उजला लेखे सर्व निधान ॥ ३ ॥
ए च्यारूं कर्म उदे हुवां, पड़े गुणा री हाण।
जे २ गुण विगड़े जिण कर्म थी, ते जाणें चतुर सुजाण ॥ ४ ॥
गुण विगड़े जिण २ कर्म थी, ते भोला ने खबर न काय।
तिण सूं ऊंधी करे छें परूपणा, तिणरा जाब सुणो चित्तलाय ॥ ५ ॥

ढाल

[धीज करे सीता सती रे लाल]

ग्यांनवर्णी कर्म षयउपसम हुआं रे, आठ गुण पामें श्रीकार रे ॥ सुगणनर* ॥
च्यार ग्यांन ने तीन अग्यांन नें रे लाल, वले सूतर नों भणवो सार रे ॥ सु० ॥
निज गुण रो निरणो करो रे लाल* ॥ १ ॥
ग्यांनवर्णी कर्म रा उदा थकी रे, ग्यांन तणो छे विगाड़ रे।
और गुण नही विगडे एहथी रे, तिणमे संका नही छे लिगार रे ॥ सु० नि० २ ॥
दर्शणावर्णी कर्म षयउपसम हूआं रे, आठ बोल पामें श्रीकार रे।
पांच इन्द्री ने दर्शण तीन नें रे, और गुण नही पामें लिगार रे ॥ ३ ॥
दर्शणावर्णी उदे हूआं रे, मणागार दर्शण रो विगार रे।
और गुण इणथी विगारे नही रे, इणरो तो ओहीज विचार रे ॥ ४ ॥
मोहणी कर्म षयउपशम हूआं रे, आठ बोल नीपजे विशिष्ट रे।
च्यार चारित ने देश विरत पांचमों रे, वले क्षयोपशम तीन दिष्ट रे ॥ ५ ॥
ते मोहणी कर्म उदे हुवां रे, समकत नें चारित नों विगार रे।
तिण षयउपशम हुवां गुण नीपनां रे, त्यांरो विगारणहार रे ॥ ६ ॥
अंतराय कर्म षयउपसस हूआं रे, आठ बोल पामें तंतसार रे।
पांच लब्धि नें वीर्य तीन नें रे, आठ गुण उजला श्रीकार रे ॥ ७ ॥

*प्रत्येक गाथा के अन्त मे इनकी पुनरावृत्ति है।

अंतराय कर्म उदे हूआं रे, लब्धि नें वीर्य री पड़े हाण रे।
अनेक वस्तु आडी होय रही रे लाल, तिणरी चोखी करज्यो पिछाण रे॥ ८॥
केइ मूढ मिथ्याती इम कहें रे, मोह उदे सूं विगरे उपीयोग रे।
कर्म बांधे विगरया उपीयोग थी रे, तिण सूं बूड रह्या छे लोक रे॥
सरधा सुणों निन्वां तणी रे. लाल ॥ ९ ॥
दंसण मोहणी उदे हुवे रे, जब पामें जीव मिथ्यात रे।
तिण मिथ्यात नें कहे सागार छे रे, सागार विगरयो कहे छे साख्यात रे॥ स०१० ॥
दंसण मोहणी षयउपसम हुवे रे, जब पामें समकत सार।
तिण समकत नें कहे सागार छे रे, तिणमें साच नही छे लिगार रे॥ ११ ॥
चारित मोहरा उदा थकी रे, नीपजे माठी अविरत अजोग रे।
तिण अविरत नें कहे मणागार छे रे, तिणरे लागो मिथ्यात नों रोग रे॥ १२ ॥
चारित मोहिणी षयउपसम हूआं रे, चारित नीपजे सुखदाय रे।
तिण चारित नें कहे मणागार छे रे, एहवी कूड़ी करे बकवाय रे॥ १३ ॥
समकत तो सागार निश्चें नही रे, मिथ्यात पिण नही सागार रे।
चारित ते मणागार निश्चें नही रे, अचरित पिण नही मणागार रे॥ १४ ॥
मोह कर्म उदे सूं विगड़े नही रे, सागार ने मणागार रे।
दयादिक गुण विगरे मोह थी रे, कोइ बुधवंत करज्यो विचार रे॥ १५ ॥
मोहकर्म षयउपसम हूआं रे, दयादिक गुण नीपजे अठार रे।
त्यांरो जूओ २ निरणो कहूं रे, तो कहितां न आवे पार रे॥ १६ ॥
वले निपजावे तो नीपजे रे, मोहणी कर्म परीयां हाण रे।
निरवद्य जोग निपजावे तो नीपजें रे, वले धर्म नें शुक्ल ध्यान रे॥ १७ ॥
भली लेश्या निपजावे तो नीपजे रे, भला अध्यवसाय ने परिणाम रे।
इत्यादिक गुण निपजाया नीपजें रे, ते मोह दूरो हूआं ताम रे॥ १८ ॥
वले मोह कर्म दूरो हूआं रे, मिट जाए तिण रो मिथ्यात रे।
वले वीतराग भाव नीपजे रे, राग द्वेष षय जात रे॥ १९ ॥
इत्यादिक गुण निपजे अति घणा रे, ते सगलाई गुण श्रीकार रे।
ते पामें मोहणी षयउपसम हूआं रे, त्यांरो कहितां न पामें पार रे॥ २० ॥
ते मोहणी कर्म उदे हूआं रे, समकत नें चारित रो विगार रे।
मोह षयउपसम हूआं गुण नीपना रे, त्यां गुणरो विगारणहार रे॥ २१ ॥
समकत विगरे मिथ्याती हूओ रे, दंसण मोह उदे सूं जाण रे।
चारित मोह कर्म रा उदा थकी रे, पडी कुण २ गुणांरी हाण रे॥ २२ ॥
दया तणो गुण मिट गयो रे, हिंसा रो अवगुण प्रगट थाय रे।
झूठ चोरी मैथुन परिग्रहो रे, एइत्ता ओगुण बधे छे ताय रे॥ २३ ॥

*प्रत्येक गाथा के बाद यह आँकड़ी है।

क्षमा नरमाइ विगरे मोह थी रे, वले सरलपणो संतोष रे।
क्रोध मान माया लोभ परगटे रे, मोह कर्म उदे सूं एहवा दोष रे॥ २४ ॥
वीतरागपणो विगार दे रे, राग द्वेष वधे तिणसूं ताम रे।
घणा कर्म बंधे राग द्वेष थी रे, वले माठा वरते परिणाम रे॥ २५ ॥
वले मोह कर्म रा उदा थकी रे, अविरत नीपजे ताम रे।
सतरे पाप सेवण रो उद्यम करे रे, अनेक सावद्य करे काम रे॥ २६ ॥
सतरे पापथानक सेवे जीवड़ो रे, माठी लेस्या माठा अध्यवसाय रे।
ध्यावे आर्त्त रौद्र ध्यान नें रे, चारित मोह उदे सूं ताय रे॥ २७ ॥
माठा जोग वरते छे जीवरा रे, ते पिण मोह उदा सूं जाण रे।
कहि २ नें कितरो कहूं रे, ते करज्यो हिया में पिछाण रे॥ २८ ॥
मोहणी कर्म षयउपसम हूआं रे, गुण नीपजे श्रीकार रे।
ते उदे हूआं यांहीज गुणा तणों रे, ओहीज विगारणहार रे॥ २९ ॥
कोइ मूढ मिथ्याती इम कहे रे, ग्यान आडो छे मोहणी कर्म रे।
ते विवेक विकल सुधबुध विनां रे, ते तो भूलो अग्यांनी भर्म रे॥ ३० ॥
जो ग्यान आडो हुवे मोहणी रे, मोह बारमें गुणठाणे हुवे दूर रे।
जब केवलग्यान न उपजे रे, तो पडी सरधा में धूर रे॥ ३१ ॥
ग्यान आडो कहे कर्म मोहणी रे, ते पूरा मूढ गिंवार रे।
आप डूबे ओरांनें डुबोवता रे, साची सरधा सूं करे छे खुवार रे॥ ३२ ॥
नाण मोह चाल्यो सूतर मझे रे, तो ग्यान में उपजे व्यामोह रे।
ते ग्यानावर्णी रा उदा थकी रे, ते मोह निस्चेई न कोय रे॥ ३३ ॥
नाणमूढे कह्यो सूतर मझे रे, ग्यानावर्णी उदे सूं जांण रे।
व्यामोह पडे तिण जीव ने रे, तिणरी पूरी न करे पिछांण रे॥ ३४ ॥
ग्यानावर्णी रा उदा थकी रे, व्यामोह पामे छे ताय रे।
तिण व्यामोह नें थाप्यो मोहणी रे, भोलां नें खबर न काय रे॥ ३५ ॥
दिसामोहेण कह्यो आवसग मझे रे, ते दिसि नें पाम्यों व्यामोह रे।
ते पिण ग्यांनावर्णी रा उदा थकी रे, ते हिरदे विचारी जोय रे॥ ३६ ॥
ग्यांनावर्णी रा उदा थकी रे, ग्यांन भूले सांसो पर जाय रे।
दंसणमोहणी रा उदा थकी रे, पदार्थ उंधो सरधाय रे॥ ३७ ॥
मोहणी कर्म जाबक षय गयो रे, जब आयो बारमें गुण ठांण रे।
जो ग्यांन आडो हुवे मोहणी रे, ते षय गयां उपजे केवलनाण रे॥ ३८ ॥
मोहणी कर्म जावक उपशम्यों रे, इग्यार में गुणठाण रे।
जो ग्यांन आडो हुवे मोहणी रे, ते उपशम्यां उपजे उपशम नाण रे॥ ३९ ॥

जात कुल बल रूप नें, तप लाभ सुतर ने ठुकराय।
ए आठोंइ मदरा कारण कह्या, पिण एतो नही मदरा उपाय॥ ५ ॥
आठ बोल ज्यूं पांचूंइ इंदस्यां, ए पिण कारण कहि छे ताय।
आठ बोलां सूं पाप लागे नहीं, ज्यूं इंदस्यांसु पिण पाप न थाय॥ ६ ॥
जो पांचूं इंदरी सावद्य हुवे, तो ए पिण आठुंइ सावद्य होय।
जो ए आठूं बोल सावद्य नही, तो पांचूं इंदरी सावद्य नही कोय॥ ७ ॥
कोइ कहे आंधो हुवें छें तेहनें, देखण रो पाप टल जाय।
तो सुतर भण नें कोइ वीसस्यो, तिण रे टलीयो सुतर मद ताय॥ ८ ॥
कानें बहरो हूवो तेहने, सुणवारो पाप मिटियो ताय।
कोइ तप करनें भागल हुवो, तिणरे पिण तप मद मिट जाय॥ ९ ॥
इण विध पांचूं इंदरी हीणी पस्यां, त्यांरो पाप न लागे आय।
तो जात कुलादिक आंठूइ भिष्ट हुवें, तिणरे आठूंइ मद मिट जाय॥ १० ॥
पांच इंदरी तो सावद्य नही, जातादिक आठूं मद नहीं ताहिं।
रागद्वेष ओलखायो छे एहथी, ते निरणो करो घट मांहि॥ ११ ॥
इंद्री घटीयां सूं गुण वधीयो कहे, ते जिण मारग रा अजांण।
इंद्री घटे छे उसभ उदे हूवां, तिणरी विकलां नें नही छे पिछांण॥ १२ ॥
उणरी सरधा रे लेखे इंदरीहार नें, थावर में उपनां गुण होय।
जात कुलादिक आठां तणो, त्यांरे मद नहि आवे कोय॥ १३ ॥
उणरे लेखे मिनख छें दलदरी, हीयाफूट इंद्रीहीण होय।
जातादिक आठूं हीणा हुवां, तिणरे मद नहीं आवे कोय॥ १४ ॥
जीव नीच जाति माहे उपनो, तिणरे जात रो मद आवे नांहि।
जो नीच कुल में जीव उपनो, तो कुल मद नही आवे मन मांहि॥ १५ ॥
जो बल करनें निरबल हुवें, तो बल रो मद नावें लिगार।
जो रूप मे जीव कुरूप हुवे, तो रूप रो नही आवे अहंकार॥ १६ ॥
तपसा तिण सूं मूल हुवें नहीं, तिणरे तपसा रो मद नहीं आय।
असणादिक जावक मिले नही, तिण नें लाभ रो मद मावें ताय॥ १७ ॥
कोई ठोठ तो सुतर भणे नही, तो सूतर मद नावें ताय।
जो सिखादिक जावक मिले नहीं, तो ठकुराइ रो मद नहीं आय॥ १८ ॥
जातादिक आठूं पामें पाडूवा, ते उसभ कर्म सूं जांण।
पांचूं इंद्री हीणी पडे तेहनें, उसभ कर्म उदे हूआ आंण॥ १९ ॥
उसभ उदे सूं गुण नीपनां कहे, तिणरे उदे हूओ छें मिथ्यात।
उसभ घटीया सावद्य नीपणों कहे, आतो विकला वाली छें वात॥ २० ॥

कोई जीव दो भागी नें दल दलदरी, दुख भोगवे विविध परकार।
तिणनें चावे ते वस्त मिले नहीं, तिणरे गुण कहें मूढ गिवार।। २१ ।।
एतो उदें आया कर्म भोगवे, तिणरे गुण नहीं हुओ लिगार।
गुण तो होसी जद जीवरे, मिलीया त्यागसी तिण वार।। २२ ।।
रूडा रूप छे विविध प्रकार नां, त्यां ने देखे चषू इंद्री तांम।
रूप नें चषू इंद्री सावद्य नहीं, सावद्य छे खोटा परिणांम।। २३ ।।
रूडा शब्द विविध प्रकार नां, ते सुणे सुरत इंद्री तांम।
शब्द नें सुरत इंद्री सावद्य नही, सावद्य खोटा परिणांम।। २५ ।।
रूडा गंध छे विवध प्रकार ना, त्यांने वेदे घणेंद्री तांम।
गंध नें घाणेंद्री सावद्य नही, सावद्य खोटा परिणांम।। २५ ।।
रूडा रस विविध प्रकार ना, त्यांने वेदे रस इंद्री तांम।
रस ने रस इंद्री सावद्य नही, सावद्य खोटा परिणांम।। २६ ।।
रूडा फरस छे विविध प्रकार ना, त्याने वेदे फरस इन्द्री तांम।
फरस नें फरस इंद्री सावद्य नहीं, सावद्य खोटा परिणांम।। २७ ।।
शबदादिक पांचूं रूडा उपरे, राग ते सावद्य जांण।
शब्दादिक पांचूं पाडुआ उपरे, धेष आवे ते सावद्य पिछांण।। २८ ।।
साध मनोग्य आहार करतो थको, जो ग्रिधपणो करे कोय।
ते जिण अगना रो चोर छे, तिणरो चारित कोयला होय।। २९ ।।
साध मनोग्य आहार करतो थको, ग्रिधपणो करे नहीं कोय।
तिणरो चारित न हूवो कोयला, तिणरे कर्म निरजरा होय।। ३० ।।
रस इंद्री सावद्य नही, सावद्य नही मनोग्य आहार।
ग्रिधपणा ने सावद्य कह्यो, तिणसू चारित हूवो छार।। ३१ ।।
साधु अमनोग्य आहर करतो थको, जो उ धेष करे तिण वार।
तिणरे चारित में धूंवो उठीयो, हूवो श्री जिण आगना बार।। ३२ ।।
साधु अमनोग्य आहार करतो थको, जो उ धेष न आणे लिगार।
तिणरो चारित कुसले रह्यो, वले कर्म तूटा तिण वार।। ३३ ।।
रस इंद्री तो सावद्य नही, सावद्य नही अमनोग्य आहार।
धेष आयो तिण नें सावद्य कह्यो, तिणसूं हूवो चारित रो विगार।। ३४ ।।
देखो राग धेष सावद्य कह्या, ते सावद्य जोग व्यापार।
भगोतीरे सतक खंद सातमे, पेंहिला उदेसामें विसतार।। ३५ ।।
श्रेणिक राजा ने राणी चेलणा, त्यांरो रूप मनोहर देख।
साधु साधवियां नीहाणो कीयो, त्यांरा खोटा परिणांम विशेष।। ३६ ।।

ढाल : १२

दुहा

केइ भारीकर्मा जीवडा, ते कर रह्या कूडी टेक।
ते पांचूं इंदरयां नें सावद्य कहें, ते ब्रूडे छे विना ववेक ॥ १ ॥
जो इंदरयां सावद्य हुवे, तो इंद्री घटीयां सावद्य मिट जाय।
उणरे लेखे इंद्री हारीयां, लाभ अनंतो थाय ॥ २ ॥
इंद्रयां क्षयउपसम भाव छे निरमलो, केवल दरसण मांहिली चीज।
त्यां इंदरयां नें सावद्य कहे, ते रह्या मिथ्यात में भीज ॥ ३ ॥
कहे जो इंदरयां कायम रहे, तो पडे नरक में जाय।
दूसरो ओगुण कहे इंदरयां मभे, ते एकंत मूसावाय ॥ ४ ॥
अवगुण तो छें राग धेष में, ते दीया इंदरयां सिर नांख।
त्यांने किम समझावियें, ज्यांरी फूटी अभितर आंख ॥ ५ ॥
केइ शब्दादिक सुख भोगवे घणा, तो ही जाअे देवलोक मांय।
त्यांरी इंदरया पिण कुसले रहे, तिणरो जाणे समदिष्टी न्याय ॥ ६ ॥
इदरयां काम रह्यां कह नारकी, ते भूठ रा बोलणहार।
तिणरी खोटी सरधा रो निरणो कहूं, ते सुणजों विसतार ॥ ७ ॥

ढाल

[पाषण्ड वधसी आरे पांच में]

तीन पल आउषारा जुगलीया रे, त्यांरी तीन कोस री हूंती काय रे।
इंद्री पांचोंइ त्यांरी निरमली रे, ते मरनें निश्चेंइ देवता थाय रे।
इंदरयां ने सावद्य कोइ मत जांणज्यो रे* ॥ १ ॥
जुगलीया मरने हुवे छे देवता रे, त्यांरे हूंता शब्दादिक नां सुख पूर रे।
इदरी कायम रह्यां कहे नारकी रे, तिणरी सरधा रो प्रतष देखो कूड रे ॥ २ ॥
काम नें भोग जुगलीयां रे घणा रे, त्यांरा सुख पूरा केम कहवाय रे।
पिण राग नें धेष तीव्रर नहीं तेहने रे, तिणसूं जुगलीया नरक न जाय रे ॥ ३ ॥
कांम नें भोग उतकष्टा भोगवे रे, जो उतकष्टो राग तिणसूं होय रे।
तो जुगलीयो मरने जाए नारकी रे, देवता होय न सके कोय रे ॥ ४ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ते वांजत्र सुणे छे विविध प्रकार नां रे, वले विविध प्रकारे देखे रूप रे।
कसबोइ लेवे विविध प्रकार नां रे, भोजन करे छे विविध अनूप रे॥ ५॥
फरस भोगवे विविध प्रकार नां रे, त्यांरे कांमभोग घणा सुखदाय रे।
पिण राग नें धेष तिणा रें पातला रे, तिण सूं तो अल्प पाप बंधाय रे॥ ६॥
जुगलीयां रा सुख रे भाग अनंत में रे, केइ राजा नां सुख छें अल्प लिगार रे।
जो राग ने धेष त्यांरे प्रबल हुवे रे, तो पादरा जाए नरक मझार रे॥ ७॥
ए प्रतष अवगुण छे राग धेष में रे, ते इंदरयां रे माथे न्हांषें कांय रे।
पाप लागे छे सावद्य जोग थी रे, विचार करे देखो मन मांय रे॥ ८॥
घणा काम नें भोग जुलीयां भोगवे रे, ते तो न जाए नरक मझार रे।
केइ थोडा भोगवीयां जाए नरक में रे, तिणरो कोइ बुधिवंत करो विचार रे॥ ९॥
जुगलीयां रा सुख सूं सुख अनंत गुणा रे, एक सवार्थ सिद्ध देवतां रा जांण रे।
पिण मूर्छा नें तिसणा त्यांरे अल्प छें रे, तो अल्प कर्म लागे छें आंण रे॥ १०॥
भवणपति नें व्यंतर जोतषी रे, वले नर मनष सगलाइ नर नार रे।
त्यां सगला रा सुख सूं अनंत गुणा रे, एक देवता रा सवार्थ सिद्ध मझार रे॥ ११॥
त्यां रे सुख छें उतकष्टा शब्दादिक तणां रे, पिण राग नें धेष अल्प छे ताय रे।
त्यां रे अल्प कर्म लागे छे तेह सू रे, ते मिनष थइ ने मुक्ति में जाय रे॥१२॥
केइ दोनूंइ पुरष बरोबर भोगवे रे, काम ने भोग मनोग्य जाण रे।
पिण पाप न लागे त्यांने सारिखो रे, पाप परिणांमा लार पिछांण रे॥१३॥
कोइ काम नें भोग तीवर परिणांम सूं रे, भोगवे गाढी मूर्छा आंण रे।
तिण मूर्छा सूं पाप लागे छे चीकणा रे, ते पिण इंदरयां रो दोष म जांण रे॥१४॥
कोइ कांम ने भोग मनोग्य भोगवे रे, तिण उपर आणे अलपसो राग रे।
तो अल्प कर्म लागे तिण राग थी रे, ते पिण इंदर्‍यां रो नही विभाग रे॥१५॥
शब्दादिक पांचूं मिलिया पाडूवा रे, त्यां ऊपर करे जो गाढो धेष रे।
तिण धेष सूं कर्म लागे छे चीकणा रे, ते इंदर्‍यां रो काई नही विशेष रे॥१६॥
शब्दादिक पांचूं मिलीया पाडुवा रे, तिण उपर करे अल्प सो धेष रे।
तो अल्प कर्म लागे तिण धेष थी रे, ते पिण इंदर्‍यां रो नहीं विशेष रे॥१७॥
राग ने धेष करे छे जीवड़ो रे, जगन मझम उतकष्टो जाण रे।
जेहवो करे छे तेहवो पाप नीपजे रे, पिण इंदर्‍यां सू पाप न लागे आंण रे॥१८॥
धेष सूं तंदुल नामे माछलो रे, गयो छे सातमी नरक मझार रे।
ते एकंत सावद्य मन रा जोग थी रे, तिणरी इंदरी में दोष नही लिगार रे॥१९॥
नाटक पड़े छे विविध प्रकारना रे, तिहां बाजंत्र बाज रह्या धुंकार रे।
वले गीत ने नाद घणा रलीयामणा रे, ते तो सावद्य जोग तणों व्यापार रे॥२०॥

ते नाटक देखे छे गायां भेंसीया रे, वले तेहीज नाटक देखे नर नार रे।
वले गीत वाजंत्र सघला सांभले रे, थां में कुण २ कर्मां रा बांधणहार रे ॥२१॥
नाटक देखे छे गायां भेंसीयां रे, त्यांनें तो समझ पडी नही काय रे।
मनरो पिण जोग सावद्य नहीं वरतीयो रे, देख्यां सू पाप न लागे ताय रे ॥२२॥
गीत सुणियां छे गायां भेंसीयां रे, त्यांनें तो समझ पड़ी नहीं काय रे।
मनरो पिण जोग सावद्य नही वरतीयो रे, त्यांनें सुणीयां सूं पाप न लागो ताय रे ॥२३॥
त्यांरे सुणीयां देख्यांरी नही विचारणा रे, विचार्यां विन मन सूं हरष न थाय रे।
कदा कोयक विचारी नें हरखत हुवे रे, जब तिणरे पिण पाप कर्म बंधाय रे ॥२४॥
तेहीज नाटक देख्या नर नारीयां रे, ते मन सूं हूआ घणा गलतांन रे।
जब पाप लागो छे मनरा जोग थी रे, तिण पाप सूं होसी घणा हेरान रे ॥२५॥
तेहीज गीत सुण्यां नर नारीयां रे, वले सुणीयां वाजंत्र ना धुंकार रे।
जब केइ नर नारी मनसूं हरषीया रे, त्यां सघलां ने पाप लागो तिण वार रे ॥२६॥
ते नाटक देख ने कोइ हरष्यो नहीं रे, नही हरष्यो सुणने वाजंत्र गीत रे।
जब पाप न लागो तिणने सर्वथा रे, इंदरयां नें दोष नहीं इण रीत रे ॥२७॥
नाटक देख्यो छे गायां भेंसीयां रे, नाटक देख्यो नरनारी ताम रे।
यांमें पाप कर्म लागो छे जेहनें रे, जिणरा वरत्या खोटा परिणांम रे ॥२८॥
पाप न लागे सुणिया देपीयां रे, तिण माहें संका मूल म आंण रे।
पाप लागे छे सावद्य जोग थी रे, मोह उदे भाव नीपन सूं जांण रे ॥२९॥
च्यार कषाय नें तीन वेद थी रे, वले मिथ्यात इविरत सेती जांण रे।
माठी लेस्या ने माठा जोग सूं रे, यां बोलां सूं पाप लागे छे आंण रे ॥३०॥
वले कोइ मोह उदे सू नीपना रे, त्यांसूं पिण लागे पाप एकंत रे।
पिण पाप न लागे षयउपसम भावथी रे, विचार करे देखो मतवंत रे ॥३१॥
सात कर्म उदा सूं नीपनां रे, तिण सूं इ पाप न लागे आय रे।
तो षयउपसम कर्म हुआं गुण नीपनां रे, त्यां गुणा सूं पाप केम बंधाय रे ॥३२॥
पाप बधे कहे षयउपसम भाव थी रे, तिणरी सरधा में पूरो घोर अंधार रे।
ते आप डूबें ओरां ने बोवता रे, तिण जीतव जन्म दियो विगार रे ॥३३॥
पांचू इंदरयां ने मेहले मोकली रे, ते शब्दादिक माहें ग्रिधी थाय रे।
ते निश्चेइ राग तणी परजाय छे रे, तिणसूं सावद्य जोग वरते छे ताय रे ॥३४॥
पांचूं इंदरयां ने जो कोई वस करे रे, ते ग्रिधी शब्दादिक सूं नहीं थाय रे।
ते तो वीतराग तणी परजाय छें रे, जब निरवद जोग वरते छे ताय रे ॥३५॥
इंदरयां तो षयउपसम भाव छे निरमलो रे, तिण सूं तो पाप न लागे आय रे।
पाप लागे छे उदे भाव थी रे, ते राग ने वेष तणी परजाय रे ॥३६॥

पांचूं इंद्रयां नें राग धेष रो रे, सभाव जूओ २ छे तांम रे।
इंद्रयां रा सभाव मांहे अवगुण नही रे, कषाय तणा खोटा परिणाम रे॥३७॥
काम नें भोग शब्दादिक तेह थी रे, समता नही पामें जीव लिगार रे।
असमता पिण नहीं पामें छे एहथी रे, यां सूं मूल न पामें जीव विकार रे॥३८॥
जो राग ने धेष आणे त्यां ऊपरे रे, ते हिज विकार विषय कषाय रे।
ते कह्यो छे उत्तराधेन बत्तीस में रे, सो उपरली पहली गाथा मांय रे॥३९॥
इंद्रयां नें राग धेष ओलखायवा रे, जोड कीधी आंतरदा गांम मफार रे।
संवत अठारे सेंताले समें रे, वैसाख सुदि बारस ने रविवार रे॥४०॥

ढाल : १२

दुहा

केइ इंदरयां नें सावद्य कहे, ते जिणमारग ना अजांण।
ते आगम अर्थ अंवला करें, बूडे छें कर कर तांण॥ १ ॥
पांचूं इंदरी दमवी कही, निग्रह करवी कही छे ताय।
वले इंद्रयां नें संवरवी कही, तिणरो मूढ न जाणे न्याय॥ २ ॥
शब्द सुणें रूडा पाडुआ, राग घेष न करवो ताय।
निग्रह करवी कही छे इण विधे, दमणी संवरवी इण न्याय॥ ३ ॥
रूप दीठा रूडा पाडूआ, राग द्वेष न करवो ताय।
इण विध निग्रह करवी कही, दमवी संवरवी इण न्याय॥ ४ ॥
शेष इंदरी तीनां तणो, इण रीत सूं कहणो ताय।
निग्रह करणी दमणी ने संवरवी, सगलां रो छे ओहीज न्याय॥ ५ ॥
राग घेष उपजे जीव रे, शब्दादिक थी ताय।
ते इंदरयां कर ओलखावीयो, ते भोलां नें खबर न कांय॥ ६ ॥
ते आंगुण तो राग घेष में, पिण इंदरयां में आंगुण नांहि।
इंद्रयां हिंसादिक अठारा में नही, विचार देखो मन मांहि॥ ७ ॥
इंदरयां ने सावद्य निरवद कहे, ते परमारथ रा अजांण।
हिवे जथातथ निरणो कहूं, ते सुणजों चुतर सुजांण॥ ८ ॥

ढाल

[चन्दगुप्त राजा सुणो]

शब्द रूडा ने पाडुआ, ते सुणे सुरतइद्री ताह्यो रे।
तिण सूं हरष ने सोगरो आगार छे, ते इविरत कही जिण रायो रे।
कोइ इंदरयां नें सावद्य मत जांणजों॥ १ ॥
इविरत अत्यागभाव तेहसूं, पाप लागे निरतर आणो रे।
शब्द सुणियां रो कारण को नहीं, इविरत संबंधीयो पाप जाणो रे॥ को० २ ॥
शब्द रूडा ने पाडुआ, ते सुणियां हर्ष सोग थायो रे।
तिणरा सावद्य जोग वरतीया, मन वचन नें कायो रे॥ ३ ॥
तिण सावद्य जोग थी जीवरे, पाप कर्म आय लागे रे।
जोग वरते तठा तांई जांणज्यो, तिणरो नही निरंतर पाप आगे रे॥

शब्द रूडा नें पाडुवा, ते सुणे सुरत इंद्री ताह्यो रे।
त्यां सूं हरष नें सोगरा त्याग छे, तिणनें विरत कही जिण रायो रे॥ ५ ॥
ते विरत त्याग भाव तेहसूं, रुके निरंतर पापो रे।
शबद सुणीयां रो कारण को नहीं, थिर परिणांम राख्या थापो रे॥ ६ ॥
शब्द रूडा नें पाडुवा, जो सुणनें वेराग आंणे ताह्यो रे।
तिण रा जोग निरवद वरतीया, मन वचन नें कायो रे॥ ७ ॥
तिण निरवद जोग थी जीव रे, कटे छे पाप कर्मो रे।
ते जोग वरते छे त्यां लगे, ते पिण नहीं निरंतर धर्मो रे॥ ८ ॥
शब्द री विरत ने निरवद जोग थी, हुवे छे संवर निरजरा धर्मो रे।
शब्द री इविरत नें माठा जोग थी, लागे छे पाप कर्मो रे॥ ९ ॥
विरत नें निरवद जोग वरतीया, ए दोनूं इंदरयां नांही रे।
इविरत नें सावद्य जोग वरतीया, ते पिण इंदरया नहीं कांइ रे॥ १० ॥
शेष च्यारूं इंदरयां भणी, सुरत इंद्री जेम पिछांणो रे।
विरत इविरत सुभ उसुभ जोग थी, सघली इंदरयां नें न्यारी जांणो रे॥ ११ ॥
शब्दादिक रूडा नें पाडुआ तणा, इविरत नें उसुभ जोग भूंडा रे।
पिण इंदरयां नें भूंडी मत जांणजों, छोड मिथ्यात री रूडा रे॥ १२ ॥
पांचूं इंदरयां नें संवर कही, वले मन वचन ने काया रे।
भंड उवगरण ने सूची कुसग, ए दसोंई संवर बताया रे॥ १३ ॥
एहीज दसोंई असंवर कह्या, त्यां नें रूडी रीत पिछांणो रे।
एतो दसोंई संवर अंसवर नही, त्यांरो न्याय परमारथ जांणो रे॥ १४ ॥
शब्दादिक पांचूं विषें रा त्याग छे, मन वचन काया इम जांणो रे।
माठा वरतावण रा त्याग छे, संवर एह पिछांणो रे॥ १५ ॥
भंड उपगरण री ममता रो त्याग छे, वले अजयणा करवारो त्यागो रे।
सूची कुसग अजयणा रो त्याग छे, ए दसोंई संवर त्याग वेरागो रे॥ १६ ॥
शब्दादिक आदि सूची कुसग नों, नहीं त्याग्या दसोंई बोल तामो रे।
वले जोग बरतावे पाडुआ, ते असंवर खोटा परिणामो रे॥ १७ ॥
संवर नें आस्रव दोनूं तणो, ते इंद्रयां सूं कांइ लेखो रे।
संवर भांगा इंद्रयां भागे नहीं, इविरत पिण इमहीज देखो रे॥ १८ ॥
प्रथवी पांणी तेउ बाउ काय नें, वनसपती ने बेंइंद्री कायो रे।
तेइंद्री चोरिंद्री नें पचिंद्री, दसमों अजीव काय बतायो रे॥ १९ ॥
प्रथवी कायादिक दसां भणी, संजम कह्यो *ठाणाअंग* मांह्यो रे।
यां दसांई नें असंजम कह्यो, तिणरो मूढ न जाणे न्यायो रे॥ २० ॥

प्रथवी कायादि दसोंइ संजम नही, असंजम पिण नहीं छे दसोई रे।
यांनें हणवा रो त्याग संजम कह्यो, विना त्याग असंजम कह्यो सोई रे॥ २१ ॥
संजम असंजम नें इंद्रयां कहे, ते पूरा मूढ अयांणो रे।
संजम असंजम नें इंद्रयां भणी, निश्चेइ जूआ २ जांणो रे॥ २२ ॥
मोह उदे नें षयउपसम हूआं, संजम नें असंजम जाणो रे।
दर्शणावर्णी कर्म षयउपसम्यां, पांचूं इंद्रयां प्रगटी पिछांणो रे॥ २३ ॥
संजम नें तो संवर जांणजो, असंजम नें असंवर जांणो रे।
त्यांने इंदरयां कही किण कारणे, तिणरी करो हिया में पिछांणो रे॥ २४ ॥
सुरतइंद्री नें मेले मोकली, तिणनें सुरतइंद्री मत जांणो रे।
मोकली मेहले ते भाव और छे, तिण नें रूडी रीत पिछांणो रे॥ २५ ॥
सुरतइंद्री नों सभाव सुणवा तणो, मोकली मेले ते राग धेषो रे।
ए सांप्रत दोनूंइ जूजूआ, यां दोयां ने एक म लेखो रे॥ २६ ॥
सुरतइंद्री सुणे ते जीव छे, ते तो षयउपसम भाव छे चोखो रे।
मोकली मेले ते पिण जीव छे, ते तो उदे भाव सदोखो रे॥ २७ ॥
उदे नें षयउपसम भाव दोय छे, त्यां ने एक कोइ मत जांणो रे।
षयउपसम सूं कर्म लागे नही, उदे भाव सूं कर्म लागे आणो रे॥ २८ ॥
चषू इंद्री नें मेहले मोकली, तिणनें चषू इंद्री मत जांणो रे।
सुरतइंद्री जिम पांचूं इंदरयां भणी, इणहीज रीत पिछाणो रे॥ २९ ॥
पांचूं इंदरयां नें सत्रू कही, उत्तराधेन तेवीसमां मझारो रे।
ते राग धेष ओलखायो इंदरयां करी, तिणरो पिंडत जाणे विचारो रे॥ ३० ॥
चोर कही पांचूं इंदरयां भणी, उत्तराधेन बत्तीस मां मझारो रे।
ते विकार उलखायो इंदरयां करी, तिणरो बुधवंत जाणे विचारो रे॥ ३१ ॥
एक २ इंद्री रा विकार सूं, मरण पाम्यां छे अकालो रे।
ग्रिधी थका राग पीडीया, त्यांरी घात हुइ ततकालो रे॥ ३२ ॥
रूप रे विषे ग्रिधी घणो, ते पामें विणास अकालो रे।
जिम रागे पीड्यो पतंगीयो, रूप लंपटी मरे ततकालो रे॥ ३३ ॥
ग्रिधी घणो मनोग्य शब्द सूं, ते पामें विणास अकालो रे।
जिम रागे पीड्यो मिरगलो, शब्द लंपटी मरे ततकालो रे॥ ३४ ॥
मनोग्य गंध सूं ग्रिधी घणो, ते पामें विणास अकालो रे।
रागे पीड्यो सर्प गंध ओषधी, गंध लंपटी मरे ततकालो रे॥ ३५ ॥
मनोग्य रस सूं ग्रिधी घणो, ते पामें विणास अकालो रे।
रागे पीड्यो मछमांस नें ग्रहे, रस लंपटी मरे ततकालो रे॥ ३६ ॥

मनोग्य फर्श सूं ग्रिधी घणो, ते पामें विणास अकालो रे।
रागे पीड्यो महिप जल पडे, फरस लंपटी मरे ततकालो रे॥ ३७ ॥
मनोग्य भाव सूं ग्रिधी घणो, ते पामें विनास अकालो रे।
रागे पीड्यो हस्ती कामभोग सूं, लम्पटपणा सूं मरे ततकालो रे॥ ३८ ॥
एक २ इंद्री नां विकार थी, पामी अकाले घातो रे।
आतो इण भव केरी वानगी, कहे दिखाई छे वातो रे॥ ३९ ॥
एक २ इंद्री ना विकार थी, दुख पामें छे एमो रे।
तो पांचूं इंद्री ना विकार थी, दुखां नों कहिवो केमो रे॥ ४० ॥
इंद्रयां रा विकार राग धेष छे, ते इंदयां रा गुण थी न्यारा रे।
इंदरयां तो शब्दादिक सुणे देख ले, शब्दादिक राग सूं लागे प्यारा रे॥ ४१ ॥
शब्दादिक जथातथ जाण्यां देखीयां, पाप न लागे लिगारो रे।
पाप लागे छे राग धेष आणियां, राग धेष छे विषय विकारो रे॥ ४२ ॥
राग नें धेष दोनूं पय कियां, तो वितरागी गुण थावे रे।
इंदरयां तो कुसले रहे, ए तो केवल दर्शन में समावे रे॥ ४३ ॥
तिण सूं इंद्रयां तो सावद्य नहीं, सावद्य छे राग धेषो रे।
पाप कर्म लागे तेहथी, ते तो इंद्रयां रो नहीं लेखो रे॥ ४४ ॥
करलो वचन कह्यो श्रवणे सुण्यो, मन सूं जांण्यो जव जाग्यो धेषो रे।
तिणरो शरीर सघलोइ प्रजल्यो, आंख्यां हुई लाल वशेषो रे॥ ४५ ॥
विषेकारी वचन श्रवणे सुण्यो, मनसूं जांण्यो जव उपनो रागो रे।
सगलो सरीर विषे सूं फलफूलीयो, विकार सहित जोवा लागो रे॥ ४६ ॥
राग द्वेष छे सर्व प्रदेस में, तिणसूं सर्व प्रदेसां पाप लागें रे।
वले सावद्य जोग कषाय थी, पाप लागे नें निजगुण भांगे रे॥ ४७ ॥
वले कहि २ नें कितरो कहूं, इंदरयां नें सावद्य मत जांणो रे।
इंदरयां सूं पाप लागे नहीं, त्यांनें रूडी रीत पिछांणो रे॥ ४८ ॥
जोड कीधी इंदरयां नें ओलखायवा, इंद्रगढ सहर मझारो रे।
संवत अठारे सेंताले समें, जेठ विद चवदस सोमवारो रे॥ ४९ ॥

ढाल : १४

दुहा

केइ इंदरयां नें मूढ सावद्य कहे, कूडा २ कुहेत लगाय।
तिण श्री जिण वचन उथापने, खांच लीधी गलारे मांय ॥ १ ॥
कहे इंद्रयां निग्रह करणी कही, दमणी जीतणी कहीं ठांम २।
वस करणी नें संवरणी कही, सावद्य छे तो कही छे आंम ॥ २ ॥
इण विध करे छे परूपणा, तिणरो मूल न जाणे मरम।
तिण रहिस न जांण्यो सिद्धांत रो, भूला अज्ञानी भरम ॥ ३ ॥
पांचूं इंदरयां नें सावद्य थापवा, करे अनेक उपाय।
वले खोटी २ जोडां करे, भोला लोकां ने दीया भरमाय ॥ ४ ॥
इंदरयां नें निग्रह करणी कही, तिणरो न्याय न जाणे मूढ।
तिण सूं उंधी करे छे परूपणा, भूठी भाल रह्या छे रूढ ॥ ५ ॥
शब्दादिक पाचूं उपरे, राग धेष न करणा हेत पीत।
इम निग्रह करणी दमणी जितणी, वस करणी संवरणी इण रीत ॥ ६ ॥
वले वशेषें तेहनो, विवरो कहू छूं तांम।
चित्त लगाय ने सांभलो, ज्यूं सीझे आतम काम ॥ ७ ॥

ढाल

(आ अणुकंपा जिन आग्या में)

शबदरी चाहि करनें शब्द सुणे तें, शब्द सुणवा री चाहि विषे रस जांणों।
तिण विषे सेवण रा सुद्ध साधु नें, जीवे ज्यां लग छे पचखाणो।
इंद्रयां रो सभाव सुणो भव जीवां ॥ १ ॥
परमारथका जे शब्द सुण्या नहीं दोष, वले सहिजां सुणे तोही दोष न लागे।
गमता शबदरी चाहि अभिलाष करे तो, जब त्याग वैराग साधु रो भागे ॥ २ ॥
शब्दरी अभिलाषा ने शब्द रो सुणवो, एतो दोनूं सभाव जूआ २ जांणो।
अभिलाषा तो मोह उदे राग भाव छे, इंद्रयां नें षयउपसम भाव पिछांणो ॥ ३ ॥
मोह भाव अभिलाषा तिणने, मेट दीयां वीतरागी थाय।
षयउपसम इंदरी मेट हुवे तो, जाय पड़े अंध कूप रे मांय ॥ ४ ॥
सुरतइंद्री नें निग्रह इण विध करणी, मन गमता शबद सूं मगन न थाय।
अमनोगम उपरे धेष न आणें, तिण सुरतइंद्री निग्रह कीधी छे ताय ॥ ५ ॥
सुरतइंद्री नें निग्रह कही जिण रीते, दमणी ने जीतणी इमहीज जाणो।
इमहिज वस करणी नें संवर लेणी, या पांचां रो परमारथ एक पिछांणो ॥ ६ ॥

सचित्त अचित्त नें मिश्र परिग्रहो, तिणनें अनर्थ रो मूल कह्यो भगवांन।
ज्यूं इंदर्‍यां ने पिण सत्रू कही छे, त्यांरो न्याय न जांणे ते विकल समांन॥२३॥
सचित्त अचित्त नें मिश्र परिग्रह, ते तो निश्चेंइ अनर्थ रो मूल नांही।
ज्यूं पांचू इंदर्‍यां पिण सत्रू नहीं छे, ते न्याय विचारे देखो घट मांही॥२४॥
सचित्त अचित्त ने मिश्र परिग्रहो, तिणरी मूर्छा सावद्य जोग अनरथ जाणो।
ज्यूं शब्दादिक ऊपर राग आणे, तिण राग ने सत्रू लीजो पिछाणो॥२५॥
समचे शरीर नें नावा कही जिण, उत्तराधेन तेवीसमां धेन मांय।
ज्यूं इंद्रयां नें शत्रू तिहां इज कही छे, ते पिण विकलां नें खबर न कांय॥२६॥
ज्यूं शरीर तो नावा निश्चें नहीं छे, ज्यूं इंद्रयां पिण सत्रू निश्चेइ नांही।
त्यांरो परमारथ समदिष्टी जाणें, पिण भोलां ने खबर पडे नहीं कांई॥२७॥
शरीर थी सावद्य सेवण आगार जे, तिण आगार नें फूटी नावा जांणो।
ज्यूं शब्दादिक ऊपर राग आणे तो, तिण राग नें शत्रु लीजो पिछांणो॥२८॥
शरीर थी सावद्य रा त्याग छे त्रिविधे, ते त्याग छे नावा गुण रत्नां री खांणो।
ज्यूं शब्दादिक ऊपर राग न आणे, तिण त्याग ने मित्री कह्यो जिण जांणो॥२९॥
प्रथवीकाय नें संजम कह्यो जिण, ज्यूं इंदर्‍यां नें सत्रू कही भगवंत।
ते न्याय न जाणे मूंढ मिथ्याती, तिणरो परमारथ जाणे मतवंत॥३०॥
प्रथवीकाय तो संजम निश्चें नही छे, संजम छे प्रथवी हणवा रो त्याग।
ज्यूं इंदरयां पिण सत्रू निश्चे नही छे, सत्रू सब्दादिक सूं कीयां राग॥३१॥
प्रथवीकाय नें असंजम कह्यो जिण, ज्यूं इंदरयां नें सत्रू कही भगवंत।
ते पिण न्याय न जाणें मूंढ मिथ्याती, तिणरो परमारथ सुणज्यो मतवंत॥३२॥
प्रथवीकाय असंजम नहीं निश्चे, असंजम तो प्रथवी हणवारो अत्याग।
ज्यूं इंदर्‍यां पिण सत्रू निश्चें नहीं छे, सत्रू तो शब्दादिक सूं कीयां राग॥३३॥
सतरे भेदे संजम ने असजम, प्रथवीकाय ज्यूं सतरेइ जांण।
त्यांरो त्याग सजम ने अत्याग असंजम, त्यांरी जूदी २ कर लीजो पिछांण॥३४॥
काम ने भोग कह्या छे अनर्थरा मूल, त्यां नें कह्या छे महादुख ने दुख तणी षांन।
त्यां नें किंपाक फल री ओपमा दीधी, ज्यूं इंदर्‍यां ने सत्रू कही भगवांन॥३५॥
काम नें भोग कह्या छे अनरथ रा मूल, ते तो राग ने वेष आसरी जांणो।
ज्यूं इंदरयां नें पिण सत्रू कही छें, तिण ने लीजो रुडी रीत पिछांणो॥३६॥
काम ने भोग अनर्थ रा मूल नांहीं, त्यां सूं ग्रिध पणो अनर्थ रो मूल जाणो।
ज्यूं इंदरयां पिण सत्रू छे नांही, सत्रू तो शब्दादिक सूं राग पिछांणो॥३७॥
काम ने भोग थी जीव समता न पामें, काम ने भोग थी नही पामें विकार।
उत्तराधेन बत्तीसमें धेने, सो ऊपरली पेंहली गाथा मझार॥३८

ढाल : १५

दुहा

दरबे जीव छे सासतो, भावे जीव असासतो छे ताहि।
भगोती रे सतषंच सातमें, कह्यो बीजा उदेसा माहि॥ १ ॥
दरब तो तीन काल में सासतो, असंख्यात प्रदेसी जांण।
उपजे ने विणसे ते भाव जीव छे, तिणरी बुधवंत करजो पिछांण॥ २ ॥
दरब नें भाव दोनूं छे जूजूआ, ते जीव लेखे तो एक हीज जांण।
उदयादिक पांच भावां करी, भाव जीव नें लीजो पिछांण॥ ३ ॥
छ दरब जिणेसर भाषीया, त्यांनें सासता कह्या तीन काल।
ते तो गिणती रा छहुं दरबां ने गिण्यां, अठे भाव रो न कह्यो निकाल॥ ४ ॥
छ दरबां नें छ दरब कह्या, त्यांरीं गिणी नहीं परजाय।
परजाय तो एकीका दरब री, अनंती अनंती कही जिणराय॥ ५ ॥
जीव दरब री परजाय ने, भावे जीव कह्यो जिणराय।
ते परजाय तो नीपनी हुवे, दरब घटे बधे नहीं ताय॥ ६ ॥
दरब नें भाव जीव रो, विवरो कहूं छूं ताय।
ते जथातथ परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ७ ॥

ढाल

[आ अणुकंपा जिण आग्या मे]

दरब नें भाव जीव रो निरणो कीजो, वीर रा वचन आगम मांहे जोवो।
आगम नां उधा २ अर्थ करेनें, मानव नों भव कांय विगोवो।
दरब नें भाव जीवरो निरणो कीजो* ॥ १ ॥
नव पदारथ में धुर सूं जीव कह्यो जिण, तिणमें द्रब नें भाव दोनू ई आया।
कांई दरब गुण परजाय बारे न राखी, समचे जीव कह्यो तिण मे सर्व समाया॥ २ ॥
आश्रव संवर निरजरा नें मोष, ए च्यांरू पदारथ छे भाव जीवो।
यांने समदिष्टी ओलखिया अभितर, त्यांरे अभितर ग्यांन खुल्यो घट दीवो॥ ३ ॥
आश्रव संवर निरजरा ने मोष, यांने दरबे जीव कह्यी छे अग्यांनी।
तिण भाव जीव ने द्रब जीव सरध्या, तिण नें समदिष्टी किण विध जाणे ग्यांनी॥ ४ ॥
अधवसाय परिणांम ध्यांन नें लेस्या, त्यांरा भेद अनेक कह्या भगवंत।
ए जीवरा भाव असासता निश्चें, त्यांनें भावे जीव जांणो मतवंत॥ ५ ॥

---

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

वले जोग उपीयोग नें दिष्ट तीनोंइ, कषाय संज्ञादिक बोल अनंत।
ए पिण जीवरा भाव असासता निश्चें, त्यांनेंई भावे जीव कह्या भगवंत ॥ ६ ॥
नारकी तिरजंच मिनख नें देवा, वले चोवीस डंडक नें छकाय।
इत्यादिक अनेक असासता त्यांनें, भावे जीव कह्या जिण राय ॥ ७ ॥
द्रव आत्मा नें दरबे जीव कही . जे, सेप जीवरी परजाय आतमा सात।
तिण परजाय नें दरबे जीव सरधे, तिणरे निश्चेइ आय चूको छे मिथ्यात ॥ ८ ॥
भाव जीव नें दरब जीव सरधे, ते अन्हाखी थको करे भूठी भखाल।
ते आगम उथापने उंधी परूपे, अनंता अरिहंता पे सिर दीधो आल ॥ ९ ॥
दरबे तो जीव नें एक कह्यो छे, तिण एक रा दोय कदे नही होय।
तिण दरब रा लखणां नें भाव जीव कहीजे, तिण भाव री संख्या नहीं छे कोय ॥ १० ॥
सुखदेव सिन्यासी पृछा कीधी, तिणरो जाव दीयो थावचे अणगार।
दरब थकी तो हूं एक हो सुखदेव, ते हूं सासतो तीनोंइ काल मभार ॥ ११ ॥
नाणदंसणठ्या ए दोय पिण हूं छूं, प्रदेसठ्याए अषय पिण हूं छूं।
प्रजोगठ्याए अनेक पिण हूं छूं, ए तोने जाव सूत्र सूं देऊं छू॥ १२ ॥
वले सोमल नें कह्यो वीर जिणेसर, दरव थकी हूं सोमल एक।
अठारमां सतक रे दसमें उदेशें, भगोती सूतर जोय छोड दो टेक॥ १३ ॥
वले पारसनाथजी कह्यो सोमल नें, दरव थकी हूं सोमल एक।
निरावलिका सूतर जोय निरणो कीजो, परभव साहमों जोय नें छोड़ दो टेक ॥ १४ ॥
इत्यादिक सूतर में ठांम ठांम, दरव थकी जीव कह्यो छें एक।
तिण दरब रा भाव नीपनां त्यानें, भाव थकी जीव ने कहीजें अनेक ॥ १५ ॥
दरब थकी जीव तो सासतो कहीजे, भाव थकी असासतो केहणो।
भगोती रे सातमें सतक कह्यो छे, दूजा उदेसा मांहें जोय लेणो ॥ १६ ॥
जीव दरबे सासतो भावे असासतो, जमाली नें वीर कह्यो छें ताहि।
भगोती सूतर रा नवमां सतक में, तेतींसमां उदेसा रे मांहि ॥ १७ ॥
नरेइयो नरेइयो द्रव थी तूला, प्रदेस थकी पिण तूला जाणो।
अवग्राहणा नें थित आश्री तो, चउठाणवडीयो लेजो पिछांणो ॥ १८ ॥
नव उपीयोग आश्री छठाणवडीयो, तिणरी धारणा करनें रीत सूं कहीजे।
चउठाण नें छठाणवडीयो, त्यांनें भावे जीव पिछाण लीजे ॥ १९ ॥
दरब नें प्रदेस वधे घटे नांही, वधे घटे तिण नें भाव जीव कहीजे।
नारकी तिम डंडक चोवीसोइ कहणा, जिण जिण मे बोल पावे ते लीजे ॥ २० ॥
ए पन्नवणा रा पांचमां पद मांहें, तिण ठामें तो छे घणो विस्तारो।
इम सांभल नें उत्तम नरनारी, दरब भाव सरध लो न्यारो न्यारो ॥ २१ ॥

इत्यादिक सूतर में ठांम ठांम, दरबे जीव नें सासतो कह्यो वीर।
भावे जीव असासतो जीव कह्यो छे, दरब ने भाव जांण्या छे सरधा सधीर ॥ २२ ॥
भावे जीव असासतो तिण नें दरब नें भावे कहे छे दोनूं।
एहवी उंधी परूपणा करनें अग्यानी, उसभ कर्म उदे साची सरधा नें खोइ ॥ २३ ॥
दरबे जीव तो नित सासतो छे, तिण ने पिण कहे दरब नें भाव दोनूंइ।
यांने ओलखीयां विण उंधी परूपे, तांण कर कर ने यूंही आतम विगोइ ॥ २४ ॥
दरब रा लषणां ने दरव न कहीजे, लषणां रा दरबां ने लखण न कहीजे।
दरब नें लखण न्यारा न्यारा कहीजे, जीव रे लेखे दोयां ने एक गिणीजे ॥ २५ ॥
जिण दरब ने भाव ओलषीया नाही, ते खाय रह्या छे अग्यांनी झखोला।
त्याने प्रश्न पूछ्यां तो डिगता बोले, त्यांरी परतीत करने बूढे कोइ भोला ॥ २६ ॥
दरब री ठोर तो भाव बतावे, भाव री ठोर दरब नें बतावे।
तिणरी अभितर आंख हिया री फूटी, तिणसूं आमो सांहमो झखोला खावे ॥ २७ ॥
दरब ने भाव जीव ओलषीया नाही, तिणने समझावण पूछा कीजे।
दरब जीव ने एक के अनेक कहीजे, वले सासतो के असासतो कहीजे ॥ २८ ॥
जो उ दरब जीवने सासतो कहदे, वले दरब जीव ने कह दे एक।
तिणरो वचन गाढो कर चरचा कीजे, भाव जीव असासतो कहीजे अनेक ॥ २९ ॥
पछे दरब ने भाव री चरचा करने, समझतो जाणे तो समझाय लीजें।
जो समझायो समझे नही मूरख, तिणसूं विषवाद कदेय न कीजे ॥ ३० ॥
सासतो असासतो दोनूं न जांणे, वले दरब ने भावरा नही निवेरा।
अजांण थको उधी तांण करे छे, तिण नरक सूं सनमुख दीधा डेरा ॥ ३१ ॥
दरब ने भाव जीव ओलखावण काजे, जोड कीधी मावोपुर सहर मझारो।
समत अठारे ने वरस सेताले, चेत विद बीज ने सोमवारो ॥ ३२ ॥

ढाल १

दुहा

दसासतखंध सूयगडाअंग में, अकिरीया वादी रो विसतार।
नास्तक मत छे तेहनों, ओं जाणें भर्म संसार॥ १ ॥
तीर्थंकर चक्रवरतादिक, वले साधु सती अणगार।
त्यांनें जीव न सरधें सरवथा, ते भूलो भर्म गिंवार॥ २ ॥
तिण नास्तक वादी रा मत तणो, परजायवादी पिरवार।
तिण नास्तक पाडी जीवरी, तिणरा घट मांहें घोर अन्धार॥ ३ ॥
उ चेतन गुण परजाय नें, नहीं सरधें जीव अजीव।
एहवी उंधी करे छें परूपणा, कर २ खांच अतीव॥ ४ ॥
वले असासता दरब नें इम कहें, जीव अजीव दोनूंइ कहें नांहि।
जीव अजीव विनां तीजी वस्तु छें, ते तों नहीं गिणती रे मांहि॥ ५ ॥
नियमा निश्चें जीव तेहनें, जीव गिणे नही ताय।
तिणरी सरधा परगट करूं, ते सुणजों चित्त ल्याय॥ ६ ॥

ढाल

[आ अणुकंपा जिन आग्या में]

तीर्थंकर गणवर धर्म नां नायक, आचार्य उवझाय मोटां अणगारो।
साधु साधवीयांदिक च्यारूंई तीर्थ, यांनें जीव न सरधे ते मूंढ गिंवारो।
आ सरधा छें परजायवादी री*॥ १ ॥

देव गुर धर्म तीनूंइ रतन अमोलक, त्यांरों सरणों लीयां उतरें भवपारों।
यानें जीव न सरधे ते मूढ मिथ्याती, तिण आंख मीचीने कीयो अंधारो॥ आ० २ ॥
गुर नही जीव चेलों नहीं जीव, विनों अविनों करे ते पिण जीव नांहीं।
मांहोमां करे सभोग असणादिक नो, तिण मे पिण जीव रो अंस न कांई॥ ३ ॥
आठोइ करमां सूं मूकावे ते मोख, त्यांने तो कहीजें सिध भगवांन।
त्यांनें पिण जीव न सरधें अग्यांनी, त्यां विकलां में नही छे जाबक विगनांन॥ ४ ॥
सूतर बांचे ते जीव नही छे, धर्म कथा कहे ते पिण नहीं जीव।
वखांण सुणें ते पिण जीव नाही, त्यां दीधी मिथ्यात री उंडी नीव॥ ५ ॥
तिरण तारण जीवने नही सरधें, जीव नें जीव नही उतारें पारो।
जीव ने जीव डबोवे नाही, वले जीव ने जीव न करे खुवारो॥ ६ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

चक्रवत वासूदेव मंडलीक राजा, ए मिनख हुआ करणी कर मोटी।
भवी दरबादिक पांचूंइ देवां नें, जीव न कहें तिणरी सरधा खोटी॥ ७॥
बाप नही जीव बेटो नही जीव, वले जीव नही सगलो पिरवारो।
जीव जनमें नही जीव मरें पिण नांहीं, जीव नही भोगवें विषें विकारो॥ ८॥
परणीजे परणावे ते जीव नहीं छें, जांनी मांडी आया ते पिण नही जीव।
असगादिक नीनजावें ते जीव नही छे, जीमें जीमावें ते नही जीव अजीव॥ ६॥
अप्रजापतो होय प्रजापतो हुवों, पछे बाल जुवांन ने होय गयों बूढो।
नेरइय तिरजंच मिनख ने देवा, यां नें जीव न सरधें ते जाबक मूढो॥ १०॥
हालें चाले तिणनें जीव न कहीजे, वले जीव न करें छें विणज व्यापारो।
खेती करसणादिक करें ते जीव नही छें, जीव तो नही करें छें झगडा नें राडो॥ ११॥
एकिंद्री आदि दे पंचिंद्री ने, वले प्रथवी आदि देइ छकाय।
वले चउदें भेद छे जीवरा त्याने, यां सगलां ने जीव कहें नहीं ताय॥ १२॥
हिंसक भूठाबोलो नही जीव, वले चोर कुसीलीयों नें धनपातर।
वले तीनसों तेसठ पाषंडीयां ने, या सगलां नें जीव न सरधें कुपातर॥ १३॥
भोगी नही जीव जोगी नही जीव, वेरी ने मित्री ए पिण जीव नांही।
मायावीया मिथ्याती ने जीव न जाणे, इण खोटी सरधा माहे कला न काई॥ १४॥
आरत रूद्र धर्म नें सुकल, यां च्यारूं ध्यांना नें जीव न जाणें।
छ भाव लेंस्या नें पिण जीव न जाणें, अग्यांनी थका मूंढ उंधी ताणे॥ १५॥
बारें उपीयोग नें चवदे गुण ठांणा, त्यानें पिण जीव न जाणें अग्यानी।
जीव न जाणें चोवीस डंडक ने, तिणनें बुधवत कोइ न जाणें ग्यानी॥ १६॥
छव नियंठा नें पाचूंइ चारित, उठाण कमादिक ए पिण पाच।
वले आतमा सात ने सावद्य निरवद, याने जीव न माने करे कूडी खांच॥ १७॥
इत्यादिक जीव रा भेद अनेक, त्यानें निश्चेई जीव कह्या जिणराय।
त्याने जीव अजीव न कहे दोनूंइ, तीजी रास कहे छे ताय॥ १८॥
असासता सगलाइ पाछें कह्या ते, त्यांने तो जीव कहसी किण लेखे।
याने जीव कहें तो भूठ बोले छे, आपरी सरधा सांह्मा क्यूं नही देखे॥ १९॥
जो चरचा रो कांम पड्यां जीव कहे तो, असासता दरब री पूछा कीजे।
असासत दरब ने जीव न सरधे, याने जीव कहे तो भूठो घालीजे॥ २०॥
जो असासता दरब ने जीव कहे तो, आपरी सरधा रो आप अजाणें।
सूने चित्त हीयाफूट विकल ज्यूं, आपरी सरधां री पिण नही पिछाणों॥ २१॥
हिवें परजायवादी ने पूछा कीजे, संसार माहे दुख किण विध पावे।
कुण उपजावे ने कुण खपावे, करमा रो करता कुण कहावे।
ए प्रश्न परजायवादी ने पूछीजे* ॥ २२॥

---

*इस आंकड़ी को प्रत्येक गाथा के अन्त में समझें।

जो उ करमां रो करता जीव नें थापें, तो उणरी सरधा जाबक उठ जावे।
करता अनेक असासता दीसें, असासता नें जीव यूंही बतावें॥ २३॥
जो उ करम रों करता ने जीव नहीं कहें तो, घणां लोक न मानें तिणरी बातो।
जो सरधा हुवें तो पिण छांनें राखें, एहवा कपटी रो भूठ नें गूढ मिथ्यातो॥ २४॥
उणरी सरधा रा अहलांण एहवा दीसे छें, करमां रा करता ने गेबी जांणो।
करमां रो करता तो असासतो छें, गेबी जांणजो इण अहलांणो॥ २५॥
धर्म नें करम रो करता जीव छे, तिणनें जीव अजीव न कहें दोनूंइ।
जीव अजीव विनां तीजी वस्तु न कांई, तीजी कहे ते तेरासी होइ॥ २६॥
जीव अजीव विनां वस्तु थापें, तिणनें नियमाइ निश्चें तेरासीयो जांणों।
तिणनें कोइ तेरासीयों नही जांणें, ते पिण मूढमती छे अयांणो॥ २७॥
करमां रो करता सासतो नांही, तो उ जीव नें करता कहसी किण लेखे।
एहवा प्रश्न पूछयां रा जाब न आवें, जब भूठ बोलण री सेरी देखें॥ २८॥
के तो भूठ जांणी ने बोलें छें, के आपरी भाषा रो आप अजांणो।
ए वात रो निश्चों तो केवली जांणे, पिण बुधवंत हूसी ते करसी पिछांणो॥ २९॥
श्री वीर कह्यों आचांरग मांहें, करमां रो करता छे निश्चे जीवो।
चेतन गुण परजाय सहीत ओलखसी, त्यांरे अभितर ग्यांन खुलसी घट दीवों।
आ सरधा श्री जिणवर भाषी* ॥ ३०॥
हिंसादिक भूठ चोरी जीव करें छे, तिण किरतब सूं लागे जीवरे पापो।
ते छेदन भेदन जनम मरण रा, चिहूं गति मे दुःख भुगते आपो॥ ३१॥
परजायवादी री सरधा परगट कीधां, केइ क्रोध करें केइ मन मांहे लाजे।
जिण आगम लोप विरुध परूपे, ते सीह तणी परे कदेय न गाजे॥ ३२॥
इण खोटी सरधा रो उघाड कीयां सूं, केइ बुधवंत सुण २ रहसी दूरा।
केइ विपरीत सरधा आदर ने छोडे, त्यांने पिण वीर वखाण्या सूरा॥ ३३॥
केइ मूढ मिथ्याती इसडी परूपे, जीव ने जीव री परजाय नही छें एक।
जीवरी परजाय नें जीव न सरधें, ते अग्यांनी थको कूडी करे छे टेक॥ ३४॥
पीजणी पेडा नें वले नाभ नें ओघण, इत्यादिक जूआ जूआ नांम अनेक।
यां सगला ने गाडो निश्चेंइ कहीजे, गाडा री परजाय नें गाडो छे एक॥ ३५॥
जिम गाडा री परजाय ने गाडो कहीजें, तिम जीव री परजाय ने जीव छे एक।
जीवरी परजाय ने जीव न सरधें, तिण खोटी सरधा धारी विना ववेक॥ ३६॥
गाडां री परजाय तो भेली करी छे, ते तों कदेइ काले पड जाएं दूरी।
पिण जीवरी परजाय न पड़े छे दूरी, उपजे उपजे नें होय जाए पूरी॥ ३७॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

जे जे परजाय पूरी होय जाए, तिणरी प्रतख बीजी हुवे ताय।
जे मिनष मूओ ते देवादिक हुवो, इत्यादिक ओर रो ओर हुय जाय ॥ ३८ ॥
देस थकी दिष्टंत दीयो छे गाडां रो, ते बुधवंत जांण लीजों मन माय।
पिण जीव री परजाय ने जीव एक छे, तिण माहे संका म आंणजों कांय ॥ ३९ ॥

ढाल : २

दुहा

आ परजायवादी री सरधा बूरी, घोर रुद्र मिथ्यात।
हलुकरमीं किम सरधसी, ए प्रतख भूठ मिथ्यात ॥ १ ॥
चेतन गुण परजाय ते जीव छें, जोवों सूतर मांहीं संभाल।
चेतन गुण नें जीव सरधें नही, तिण दीयो अरिहंत सिर आल ॥ २ ॥
त्यांनें साध वतावें जूजूआ, जीव रा गुण जीव साख्यात।
पिण गुघू सरीखा मांनव मांने नहीं, त्यारें दिवस तकाइज रात ॥ ३ ॥
त्यानें धुर सूं तो संत मिलीयों नहीं, कीधों परजायवादी रो परसंग।
जांणें निरणें कोठें भूंब्रीयों, कालो नाग भूयंग ॥ ४ ॥
उणनें मिलें सतगुर गारलू, जो उ दूर करे पखपात।
सूतर अरथ सुणाय नें, काढे जेहर मिथ्यात ॥ ५ ॥
जीवरा गुण लखण परजाय छें, त्यांने जीव कह्यो जिणराय।
त्यांने जीव न सरधें सरवथा, ते चोडे भूला जाय ॥ ६ ॥
परजायवदी री सरधा उपरें, सूतर में जाव अनेक।
पिण थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो आंण ववेक ॥ ७ ॥

ढाल

[पाषंड वधसी आरे पाच मे]

तीर्थंकर गणधर उत्तम जीव छे रे, उत्तम छें आचार्य नें उवभाय रे।
त्यांरा ग्यांन दरसण चारित छें निरमला रे, यांने वांद्या सूं पातिक दूर पलाय रे।
ए अरिहंत वायक सतकर जांणजो रे* ॥ १ ॥
वले साध साधवी श्रावक श्रावका रे, सूतर में भाख्या छे तीरथ च्यार रे।
त्यांने पिण उत्तम जीव जिण कह्या रे, ग्यानादिक गुण रतनां रा भंडार रे ॥ ए० २ ॥
यां सगलां ने जीव न सरधे सरवथा रे, परजायवादी पाखंडी बाल रे।
वले एहवी करे छे मूढ परूपणा रे, तिण दीयो अग्यांनी मोटो आल रे।
ए परजायवादी रो मत रूडो नही रे ॥ ३ ॥
ए च्यारूं तीरथ तीर्थंकर देव में रे, पावें गुणठांणा परजा प्रांण रे।
जोग उपीयोग लेस्या तेहमें रे, याने जीव न गिणे ते मूंढ अयांण रे ॥ ए० ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

त्यांरो विनो वीयावच गुण कीरत कीयां रे, वांधें तीर्थंकर गोत रसाल रे।
ते कह्यों गिनाताधेन आठमे रे, लीजो बीसोंइ बोल सभाल रे॥ ५ ॥
विनों वीयावच करे ते निश्चें जीव छे रे, जीव विनां वीयावच कुण कराय रे।
यांनें परजायवादी जीव गिणे नही रे, ए प्रतख चोडे भूलों जाय रे॥ ६ ॥
भवी दरबादिक पांचूं देव में रे, यां में करे केइ वेक्रे रूप रसाल रे,
यारी गति आगति ने यांरो आंतरो रे, यांनें जीव न सरधे ते मूरख बाल रे॥ ७ ॥
ए पेंहली गति मां सूं उपजे आय नें रे, ए मरनें उपजे पेंहली गति मांय रे।
देवातदेव जाए छे मुगत में रे, यांनें सूतर में जीव कह्या जिणराय रे॥ ८ ॥
परभव मे जासी ते निश्चे जीव छे रे, जीव विनां गतागति करे केम रे।
इतलो न सूझे मोह अंध जीव नें रे, ओ बोले सूंणें चित गेहला जेम रे॥ ९ ॥
भवी दरवादिक पांचूं देव नों रे, विसतार भगोती सूतर मांहि रे।
नवमे उदेसे सतक बारमे रे, ए निरणो कर लीजो भवीयण ताहि रे॥ १० ॥
एकंद्री आदि पचिंद्री जीव छे रे, छ काय नें जीव कही जिण राय रे।
जीवरा चवदे भेद ते जीव छे रे, त्यांने जीव न गिणे अग्यांनी-ताय रे॥ ११ ॥
वले परजायवादी पाखंडी इम कहे रे, परजाय रे नही छें देस परदेस रे।
जीवरी परजाय नें जीव मांने नही रे, ते करें अग्यांनी कूड कलेस रे॥ १२ ॥
एकंद्री आदि पचिंद्री जीव ने रे, देस परदेस कह्या जिणराय रे।
ते देस परदेस चेतन दरब रा रे, जोवों भगोती सूतर मांय रे॥ १३ ॥
दसमें उदेसे दूजा सतक में रे, वले दसमां सतक रे पेहले जांण रे।
सोलमें सतक उदेसे आठमें रे, ए निरणों करलीजों चतुर सुजांण रे॥ १४ ॥
वले दसमें उदेसे सतक इग्यारमें रे, तिहां पिण तेहीज छे विस्तार रे।
जीव अजीव देस परदेस नों रे, रूपी अरूपी नों विस्तार रे॥ १५ ॥
नेरइयो तिरजंच मिनष ने देवता रे, त्यांरे आंठोंइ करम कह्यां भगवंत रे।
ए जीव होसी तो यारें करम छें रे, त्याने निश्चोइ जीव जांणों मतवत रे॥ १६ ॥
चोवीसोई डंडक नियमा जीव छे रे, नियमा कह्यों ते विसवावीस रे।
दसमे उदेसे छठा सतक में रे, भगोती में भाष गया जगदीस रे॥ १७ ॥
जीव रा चवदे भेद सिधंत मे रे, ते निश्चोंइ जीव कह्या साख्यात रे।
यांने मूंढ मिथ्याती जीव गिणे नही रे, आ प्रतख भूठी तिणरी वात रे॥ १८ ॥
वले दसवीकलिक चोथा अधेयन मे रे, निश्चोइ जीव कही छव काय रे।
तिणनें अग्यांनी जीव न लेखवे रे, ते करें बूंडण रों मूढ उपाय रे॥ १९ ॥
गिनाता सूतर रा तीजा अधेन मे रे, ठांणा अंग में तीजा ठांणा मांय रे।
छ जीव नीकाय माहे सका करे रे, अहेत असुख नें समकत जाय रे॥ २० ॥

अरिहंत कही छें आठूं आतमा रे, आतमा ते निश्चें जीव साख्यात रे।
कोइ सात आतमा नें जीव सरधें नहीं रे, तिणरा घट मांहें घोर मिथ्यात रे॥ २१ ॥
हिंसादिक अठारें थांनक पाप रा रे, त्यां अठारां रो वेरमण ते परिहार रे।
पांच थावर नें धर्म अधर्म आकासासती रे, वले सलेसी साध मोटां अणगार रे॥ २२ ॥
बादर कलेवर ने परमांणूओ रे, वले सरीर रहीत जीव छे ताय रे।
ए सारा अडतालीस बोलां भणी रे, जीव अजीव दरब कह्या जिणराय रे॥ २३ ॥
ए भगोती सूतर रे सतक अठारमें रे, कह्यो चोथा उदेसा माहि रे।
जीव अजीव री परजाय नें रे, जीव अजीव दरब कह्या छे ताहि रे॥ २४ ॥
जीव री परजाय नें जीव एक छे रे, जीवरी परजाय ते निश्चे जीव रे।
परजायवादी परजाय ने जीव गिणे नही रे, तिण दीधी खोटी सरधा री नीव रे॥ २५ ॥
चोथे उदेसे सतक तेरमें रे, भगोती में पूछयो गोतम सांम रे।
आप कहो सांमी किरपा करी जी रे, जीव रे जीव आवें छे कांम रे॥ २६ ॥
जब वीर कह्यो छें सुण तूं गोयमा रे, जीव रें जीव आवे छे कांम रे।
उपीयोग कांम आवे छें जीव रे रे, त्यां उपीयोगा रा छे बारे नांम रे॥ २७ ॥
जीव कह्यो छे वीर उपीयोग नें रे, निसक पणें कीयो निस्तार रे।
जे कोइ जीव नहीं सरधें छे उपीयोग ने रे, ते निश्चेइ पूरो मूढ गिवार रे॥ २८ ॥
केवल ग्यांन तणों विनों कीयां रे, कट जाए माठा पाप करम रे।
कोइ जीव न गिणे छे केवल ग्यांन नें रे, ते भूला अग्यांनी जाबक भर्म रे॥ २९ ॥
अगिनांन ने कही छें नियमा आतमा रे, नियमा ते निश्चेइ जीव जांण रे।
ए दसमें उदेसे सतक बारमें रे, भगोती में जोय करो पिछांण रे॥ ३० ॥
गिनांन ने नियमा कही छे आतमा रे, नियमा ते निश्चेइ जीव जांण रे।
दसमे उदेसे सतक बारमें रे, भगोती में जोय करो पिछांण रे॥ ३१ ॥
आतमा छे तेहीज निश्चें ग्यांन छे रे, ग्यांन छे तेहीज आतमा जांण रे।
ते आचारंग पांचमां अधेन में रे, पाचमें उदेसे जोय पिछांण रे॥ ३२ ॥
जे जे दरब में जोग उपीयोग छे रे, वले लेस्या गुणठांणा परजाय प्रांण रे।
ते तो दरब निश्चेंइ जीव छे रे, ए सरधा में सका मूल म आण रे॥ ३३ ॥

ढाल : ३

दुहा

परजायवादी रा मत तणा, केइ कर रह्या कूडी तांण।
त्यांने खुलवा जाब वतावीया, साख सूतर री आंण॥ १ ॥
त्यांरी खोटी सरधा छुडायवा, काढण मूल मिथ्यात।
कितरा एक तो वले कहूं, ते सूणजों विख्यात॥ २ ॥

ढाल

[पूज जी पधारो हो नगरी सेविया]

संजती असंजती ने संजतासंजती, एहवा बोल घणां छें ताहि हो।
ए सगला नें जीव जिणेसर भाषीया, ते पन्नवणा भगोती मांहि हो।
ए अरिहंत वायक सतकर जांण जो* ॥१॥
संजती असंजती नें संजतासंजती, एहवा बोल घणां छे ताय हो।
ते सगलाइ भावे जीव असासता, ते भाष्यों छें श्री जिणराय हो॥ए०२॥
समाइ पचखाण संजम ने संवर, ववेक नें विउसग जांण हो।
ए सगला नें कही छे जिणेसर आतमा, ए भावे जीव पिछांण हो॥३॥
ए सूतर भगोती रा पेहला सतक में, नवमां उदेसा मांय हो।
समाइ आदि छहु आतमा भणी, भावे जीव कह्यो जिणराय हो॥४॥
चारित परिणांम कह्या छें जीवरा, ठांणाअंग दसमां ठांणा मांय हो।
ते जीव रा परिणाम तो निश्चे जीव छे, तिणमे संका म आंणो कांय हो॥५॥
दरब कषाय जोग उपीयोग आतमा, ग्यांन दरसण चारित ताय हो।
वले आठमी कही छें वीर्य आतमा, आठोइ जीव कही जिण राय हो॥६॥
एक जीव गिणे छें दरब आतमा भणी, ते सासती नित सदीव हो।
सेष आतमा सात नही छे सासती, त्यांने जाबक न गिणे जीव हो॥७॥
आतमा आठोइ जीव जिणवर कही, ते सूतर भगोती मझार हो।
ए दसमे उदेसे सतक बारमें, आतमा आठां रो विसतार हो॥८॥
उ भावे जीव न सरधे असासतो, तिण सूतर दीया छें उथाप हो।
उ साप्रत जीव ने जीव गिणे नही, यूं ही कूडो करें छें विलाप हो॥९॥
दरबे सासतो ने भावे असासतो, जीव नें कह्यों जिणराय हो।
ते सूतर भगोती रे सतक सातमें, दूजा उदेसा मांय हो॥१०॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

दरबे सासतो जीव नें यूं कह्यों, जीव रो अजीव न थाय हो।
भावे जीव नें कह्यो छें असासतो, ते तो परजाय पलटे जाय हो ॥११॥
निजगुण फिरें नें परगुण भ्ररपडे, ते परगुण पुदगल जांण हो।
परगुण भ्रडीयां हुवें निजगुण निरमलो, आ सरधा घट में आंण हो ॥१२॥
असुध निजगुण फिरीयां सुध निजगुण हुवें, ते परगुण कर दे दूर हो।
सुध निजगुण फिरीयां असुध निजगुण हुवें, तिणसूं परगुण लागें पूर हो ॥१३॥
जे मेंला निजगुण मोहकरम वसें, यां निजगुणां सूं करम बंधाय हो।
मोह रहीत निजगुण हुवे निरमला, त्यां सूं परगुण दूर पलाय हो ॥१४॥
सात करम उदें सूं निजगुण मेंला हुवे, त्यां सूं पाप न लागें तांम हो।
ते करम भ्रस्यां हुवें निजगुण निरमला, त्यांरा गुण निपन छें नांम हो ॥१५॥
आठ करम उदे हूवां नीपजें, निजगुण उदें भाव अनेक हो।
आठ करमां नें षय कीधां नीपनां, निजगुण षायक भाव वशेख हो ॥१६॥
च्यार करमां नें षयोपसम कीयां नीपजे, निजगुण षयोपसम भाव हो।
मोह करम उपसमीयां परगटे, निजगुण उपसम भाव हो ॥१७॥
ए च्यारूंई भाव परणांमीक जीव छें, ते चेतन गुण परजाय हो।
ए भाव फिरे पिण दरब फिरे नही, ते पिण सुणजो न्याय हो ॥१८॥
तत्व सुध सरध्यां हुवें जीव समकती, उंधी सरध्यां मिथ्याती थाय हो।
उहीज ग्यांनी रो अगनांनी हुवें, अग्यांनी रो ग्यांनी हुय जाय हो ॥१९॥
नारकी देवता रो मिनष तिरजंच हुवें, मिनष तिरजंच देवता थाय हो।
इत्यादिक जीवरा भाव अनेक छें, ते ओर रो ओर होय जाय हो ॥२०॥
सासतो जीव दरब छें अनादरो, तिणरी परजाय अनंती जांण हो।
ते परजाय हांण विरध हुवें करम सूं, पिण दरब री नही विरध हांण हो ॥२१॥
जे भाव फिरे पिण दूर पडें नहीं, त्यां भावां रा नांम अनेक हो।
इण विध भावे जीव असासतो, ते सरधो आंण ववेक हो ॥२२॥
ओ जीव रा भाव न सरधें असासता, तिण काढयो छें मत कूर हो।
यांने जीव न सरधें मूंढ मूरख थको, तिणरी संगत करजो दूर हो ॥२३॥
वले गोतम सांमी पूछा करी जीव री, सूतर भगोती माय हो।
ते तीजा उदेसा छठा सतक में, ते सांभल जो चित्त ल्याय हो ॥२४॥
ए आदि ने अंत रहीत जीव छे, के आदि नही अत सहीत हो।
के आदि सहीत ने अंत रहीत छे, के आदि ने अत सहीत हो।
ए गोतम सांमी पूछयों श्री वीर नें ॥२५॥

श्री वीर जिणेसर कहे सुण गोयमा, ए च्यारूं भांगा छे जीव हो।
त्यांरा भेद विसतार कहूं छूं जूजूआ, ए सरध्यां समकत री नींव हो ॥२६॥

ए आदि रहीत नें अंत रहीत छें. ए अभव सिधीया जीव जांण हो।
आदि नहीं पिण अंत सहीत छें. ते भव सिधीया जीव पिछांण हो॥२७॥
जे करम खपाए नें सिव गति में गया, त्यांरी आदि छें पिण अंत रहीत हो।
नारकी तिरजंच मिनष नें देवता, ए आदि नें अंत सहीत हो॥२८॥
ए च्यारूंई जीव जिणेसर भाषीया, त्यांनें जीव न सरधें मूढ़ हो।
ते बूडें छें वीर ना वचन उथापनें, कर कर कूडी रूढ हो॥२९॥

●

रत्न : ६

टीकम डोसी री चौपई

ढाल : १

दुहा

अरिहंत सिध नें आयरिया, उवझाया सगला साध।
ए पांचूं पदां नें नमण कीयां, पांमें परम समाध ॥ १ ॥
नव पदारथ ओलख्यां विनां, निश्चेंइ समकती नांहि।
केइ ओलख नें उंधा पड्या, ते तो निनवां री पांत माहि ॥ २ ॥
एक एक वचन उथाप ने, निनव हूआं छें कर २ तांण।
तो अनेक वचन उथापे तके, ते तों निश्चेइ निनव जांण ॥ ३ ॥
करणी छे निरजरा तणी, तिणने संवर सरधे कोय।
ते समकत खोय मिथ्याती हुवों, जीतव जनम विगोय ॥ ४ ॥
प्रबल उदे छे दंसण मोहणी, तिणसूं विगडी दिष्ट अतंत।
विभ्रम पडीयो मिथ्यात रे, तिणरी मती हुइ भय भ्रंत ॥ ५ ॥
जिण अनेक वचन उथापीया, उंधा अर्थ करे ने ताय।
कुण कुण वचन उथापीया, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[साध म जाणो इण चल गत सू]

करडी सीखामण कहूं जोड नें, सुण नें मत धरजो धेष जी।
जो परभव री चिंता हुवे घट में, तो निरणों करों विशेष जी।
उंधी सरधा कोई म राखो* ॥ १ ॥

सुभ जोगां ने संवर सरधे, संवर नें सरधे सुभ जोग जी।
तिण रे दोनूं कांनी पड्यो दिवालो, आ सरधा घणी अजोग जी ॥ उ०२ ॥

धुरला पांच गुणठांणां तांइ, नही सरधे सुभ जोग जी।
इसडी उंधी सरधा छें तिणरे, मोटों मिथ्यात रो रोग जी ॥ ३ ॥

केवल ग्यांनी नें कहे अधरमी, त्यांरे सरधे सावद्य जोग जी।
वले सावद्य सूं पुन लागों सरधे, आ पिण वात अजोग जी ॥ ४ ॥

पाप ठाणो इविरत रो पय हूआं, कहे सर्व विरत आवे नांहि जी।
देस विरत नीपनी सरधे, आ सरधा नही जिणमत मांहि जी ॥ ५ ॥

पांच महावरतां ने कहें सुभ जोग, सुभ जोगां ने कहे महावरत जी।
आपिण प्रतख उंधी सरधा, तिण में मूल नही छे सत जी ॥ ६ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

पांच चारित ने कहें सुभ जोग छे, सुभ जोगां ने कहे चारित पांच जी।
ते समकत खोय नें नें हूआ मिथ्याती, कर कर उंधी खांच जी॥ ७॥
सुभ जोगां ने कहें उपसम भाव, ओ पिण वडो अन्याय जी।
तिणरे जोग तणी ओलखणा नांही, चोडे भूला जाय जी॥ ८॥
असुभ जोग तणा कीधा पचखांण, तिणसूं नीपना कहे सुभ जोग जी।
आपिण उंधी सरधा तिण री, ते किम सरधे डाहा लोग जी॥ ९॥
दरव जोग तीनूंइ रूपी, तिण सूं लागो कहे पुन जी।
पुनरो करता रूपी सरधे, आ सरधा घणी जबूंन जी॥ १०॥
वले सावद्य सूं पुन लागों सरधें, तिण सावद्य ने कहें अधर्म जी।
पुनरो करता कहें अधर्म, ते जावक भूलों मर्म जी॥ ११॥
जीव रा भाव थकी नही लागें, पुनरो एक प्रदेस जी।
ए प्रतख खोटी सरधा तिणमें, नही साच तणों लवलेस जी॥ १२॥
पुन ग्रहवारो किरतव नहीं कोइ, कहे विण कीधां पुन होय जी।
आ सरधा जिणमत सू न्यारी, तिणने मत धारो कोय जी॥ १३॥
कहे इरियावही किरीया छे धर्म, तिहां नीपनों कहे सावद्य जी।
तिण सावद्य नें अधर्म सरधे, ते कहितां न आवे लाज जी॥ १४॥
कहे असुभ कर्म रों परिग्रहण, सर्व सावद्य कहे छें तांम जी।
तिण सावद्य नें कहे अधर्म, ते यूंही बकें बेफांम जी॥ १५॥
कहे सुभ लेस्या ने सुभ जोगां विण, कहे धर्म ने निरजरा नांहि जी।
इसडी उंधी करें परूपणा, ते नही जिण आग्या मांहि जी॥ १६॥
केवलीयां रें सावद्य सरधें, तिण सावद्य ने कहें अधर्म जी।
तिणरी थित कहे दोय समां री, तिणरो मूढ न जाणे मरम जी॥ १७॥
पुन ग्रहवारो किरतव नही कोइ, इसडो परूपें कोय जी।
ते पिण श्री जिण आग्या बारे, च्यार तीर्थ में नही होय जी॥ १८॥
कहे सुभ जोगां ने आश्रव सरध्या, बीस संवर नो हुवों विछेद जी।
एहवी उंधी करें परूपणा, तिण पाड्यो धर्म में भेद जी॥ १९॥
कहे सुभ लेस्या ने आश्रव सरध्या, तो निरजरा नो थाए विछेद जी।
आपिण उंधी सरधा तिणरी, ओ घाल्यो धर्म में भेद जी॥ २०॥
महावीर ना सासण मांहें, निनव हूआं सात जी।
त्यां तो एकीको वचन उथाप्यो, पडवजीयो मिथ्यात जी॥ २१॥

एक वचन उथाप्यां निनव हुवें, तिण में संक म राखो कोय जी।
तो अनेक वचन उथापें ते तो, निश्चें निनव होय जी॥२२॥
तिण एहवी उंधी सरधा काढे, वले बोले आल पंपाल जी।
तिण तीन कालरा तीर्थंकरा नें, दीयो अग्यांनी आल जी॥२३॥

ढाल : २

दुहा

भारी कर्म छे जेहने, तिण सूं लीधी न छूटें टेक।
ज्यूं छेरवे ज्यूं उलटो पडें, साची वात न मांनी एक॥१॥
मोह कर्म पतलो पडीयां विना, नही जांणे सूतर रो न्याय।
मद छाक्या मतवाला नी परें, समझ पडें नही काय॥२॥
हिवे मांन वडाइ छोड ने, आणे समता भाव।
तो लीधी टेक म राखजो, जो समकत री हुवें चाव॥३॥
लारें खोटी सरधा कही तेहनो, उत्तर सुणो भव जीव।
जो सुण सुण नें निरणो करो, तो लागे मुगत री नीव॥४॥
खोटी सरधा रा एक एक बोल रो, उत्तर कहू सूतर रे न्याय।
जो मुगत जावा री हुवें चावना, तो सांभलजो चित्त ल्याय॥५॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आग्या मे]

चारित संवर नें सुभ जोग सरधें, इण सरधा सूं होसी घणा खराब।
सुभ जोग नें संवर जिण कह्या न्यारा, त्यारो सुणजों विवरा सुध जाब।
सुध सरधा रो निरणो कीजो* ॥१॥
तेरमें गुणठाणे आतमा सात, तिहा कषाय आतमा टल गइ ताय।
चवदमे गुणठाणे छ आतमा छे, तिहां जोग आतमा गइ छे विललाय॥सु०२॥
जोग आतमा मिटी चवदमें गुणठांणे, चारित आतमा तो मिटी नही कोय।
इण लेखे चारित नें सुभ जोग, प्रतख जूआ जूआ छे दोय॥३॥
चारित ने जोग एक सरधे तो, आठ आतमा री हुवें आतमा सात।
सुभ जोग ने चारित एक सरधे तिण, चोडेइ पडवजीयो मिथ्यात॥४॥
बारेमें तेरमें चवदमे गुणठांणें, षायक चारित छे जथाख्यात।
ते चारित निरंतर एक धारा छे, ते तो बधे घटे नही छे तिलमात॥५॥
चारित मोहणी षय हुवे जब, षायक चारित नीपजे ताय।
इण चारित संवर रो एक सभाव, सुभ जोग ते चारित कदेय न थाय॥६॥
चारित मोहणी उपसम हुवे जब, उपसम चारित नीपजें ताय।
षयउपसम हूआ षयउपसम चारित, खय हूआं षायक चारित थाय॥७॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

चारित मोहणी षय षयउपसम हूआं, तिण सूं तो सुभ जोग नीपजे नांही।
मोह घट्यां सुभ जोग नींपना सरधें, ते पड गया मोह मिथ्यात रे मांही ॥ ८ ॥
सुभ जोग नीपजण री विध न जांणें, असुभ जोग तणी पिण विध नही जाणे।
सुभ जोग ने ओलखीयां विण आंधा, पीपल बाथी मूरख ज्यूं ताणे ॥ ९ ॥
सुभ नें असुभ जोग नीपजें तिणरों, निरणो वीर सूतर मे बतायो।
त्यांरो थोडों सो विसतार कहूं छूं, ते सांभलजों भवीयण चित्त ल्यायो ॥ १० ॥
अंतराय करम षय षयउपसम हूआं, नीपजें षायक पयउपसम ताय।
ते लबद वीर्य छें उजलों निरमल, तिण वीर्य सूं करम न लागें आय ॥ ११ ॥
तिण लबद वीर्य सूं करम न रूकें, वले वीर्य सूं करम कटें नही ताय।
लबद वीर्य छें पुदगल नें संजोगें, तिण ने वीर्य आतमा कही जिणराय ॥ १२ ॥
लबद वीर्य तणों जीव करें व्यापार, ते व्यापार छें करण वीर्य जोग।
तिण व्यापार ने भाव जोग कहीजें, त्यांरो व्यापार छें पुदगल रे संजोग ॥ १३ ॥
सावद्य काम करें ते सावद्य जोग, निरवद कांम करें ते निरवद जोग।
तेतो दरब जोग पुदगल नें संघातें, दरब नें भाव जोग रों भेलो सजोग ॥ १४ ॥
सावद्य जोगां सूं पाप लागें छे, निरवद जोगां सूं निरजरा होय।
वले निरवद जोगां सूं पुन पिण लागें, सुभ जोगां ने संवर सरधो मत कोय ॥ १५ ॥
सुभ जोग छे करणी करम काटण री, संवर सूं तो रुकें छें करम।
सुभ जोगां ने संवर सरधे छें भोला, तेतो करमां तणे वस भूला छे भर्म ॥ १६ ॥
मन वचन जोग उतकष्टा रहे तो, अंतर मोहरत तांइ जांण।
चारित तो उतकष्टों रहे तों, देसउणों कोड पूर्व परमांण ॥ १७ ॥
सुभ मन वचन जोग चारित हुवे तों, चारित पिण अंतर मोहरत तांइ।
जो उ चारित री थित इघकी परूपे, तिणने आपरा बोल्यारी समझ न कांई ॥ १८ ॥
मन वचन रा दोय दोय तीन काया रा, ए सात जोग तेरमें गुणठांणे।
जोग ने संवर कहे तिण ने पूछा कीजे, तू किसा जोग ने सवर जांणे ॥ १९ ॥
कदेयक तो सत मन जोग वरतें, कदेयक वरते जोग ववहार मन।
एक एक समें दोनू मन नही वरते, इमहीज वरते दोनूं जोग वचन ॥ २० ॥
काया रा तीन जोग साथे नही वरते, एक समें वरते काया रो जोग एक।
चारित संवर तो निरतर एक, जोग तो जूजूवा वरते अनेक ॥ २१ ॥
जो उ सातोंइ जोगां ने संवर सरधे, ते सातोइ जोग नही एक साथ।
कदे कोइ वरते कदे कोइ वरते छें. संवर तो एक धारा रहे छे नाख्यात ॥ २२ ॥
संवर ने सुभ जोग जूजूआ दीसे, यां दोया ने एक कहे किण लेखे।
अभितर आंख हीया री फूटी, ते सूतर साह्मो चिण विध देखे ॥ २३ ॥

केवली समदघात करें तिण कालें, काया रा तीन जोग तणों व्यापार।
पेंहले नें आठमें ओदारीक जोग, बाकी रा जोग नही तिण वार॥ २४॥
बीजें छठे वले सातमें समें, ओदारीक नों मिश्र जोग व्यापार।
तीजें चोथें नें पांचमें ए तीन समां में, कारमण जोग वरते तिण वार॥ २५॥
ए कारमण जोग तो नवों नीपनो, आगें जोग हूंता ते गया विललाय।
सुभ जोगां नें चारित गिणें तिण लेखे, चारित पिण विलें होय गयों ताय॥ २६॥
जो उ कारमण जोग ने चारित सरधें, ते पिण मिटसी तेरमें गुणठांणे।
जब उणरे लेखे ते पिण चारित मिटीयों, जब उ किसा जोग नें चारित जांणे॥ २७॥
जो उ ओदारीक रा मिश्र नें चारित सरधें, ते पिण जोग जासी विललाय।
जब तिणरें लेखे ते पिण चारित विललांयो, आप री सरधा समझ देखों मन मांय॥ २८॥
वले पांच जोग नीपजे त्यांरे, त्यांरे पिण चारित सरघ उभों रहे ताय।
ते पिण जोग निरंतर नांहीं, त्यां जोगां नें चारित कहसी किण न्याय॥ २९॥
चारित निरंतर केवलीयां रे, जोग निरंतर नही छें एक।
ए प्रतख न्याय उघाडों दीसें, हलूकर्मी होसी ते छोडसी टेक॥ ३०॥
तेरमां थी जाअें चवदमें गुणठांणें, जब पेंहला तो मन जोग रों रुधें व्यापार।
तठा पछे रुधें छें वचन रो जोग, जब एक काय जोग रह्यों छें लार॥ ३१॥
जो उ मन वचन जोग संवर सरधें, तिणरे लेखें तो दोनूंइ संवर घट जाय।
अजोग संवर पिण नींपनो नांही, एक काया रो जोग बाकी रह्यो ताय॥ ३२॥
एहवा प्रश्न पूछयां रा जाब न आवें, जब हलूकरमीं हुवे तो सवलों सूझे।
भारीकरमो हुवें तो ऊंधो पड जाअें, वले उंधी सरधा मांहें इधको अलूझें॥ ३३॥
सुभ जोग ने संवर न्यारा न्यारा छें, यांने एक सरधें ते मूढ मिथ्याती।
वले दिन दिन इधिकी तांण करे तों, ते उंधी सरधा रो हुवो पखपाती॥ ३४॥

●

ढाल : ३

दुहा

सुभ जोग संवर निश्चें नही, सुभ जोग निरवद व्यापार।
ते करणी छें निरजरा तणी, तिण सूं करम न रुके लिगार॥ १॥
समदघात करें जब केवली, कांय जोग तणों व्यापार।
तिण सूं करम तणी निरजरा हुवे, पुन पिण लागे तिण वार॥ २॥
त्यारी निरजरा सूं पुदगल भस्या, त्यां सूं सर्व लोक फरसाय।
जोगा सूं निश्चे निरजरा हुवें, चोडे देखो सूतर रो न्याय॥ ३॥
सुभ जोगां सूं निरजरा हुवें, ते कह्यों सूतर रे मांय।
ते थोडा सा परगट करूं, ते सांभलजो चित्त ल्याय॥ ४॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

अकुसल जोग रुधतां निरजरा हुवे, ते निरजरा रुधें त्यां लग जांणों रे।
वले निरजरा हुवें कुंसल जोग उदीस्यां, ते प्रवरतें छे त्यां लग पिछांणो रे।
सुभ जोग छें निरजरा री करणी*॥ १॥

ओ तो परिसलीणीया तप कह्यों श्री जिणेसर, सूतर उवाई मांह्यो रे।
त्यां सुभ जोगां नें कोइ संवर सरधें, ते तो चोडे भूला जायो रे॥ सु० २॥
प्रसस्त जोग पडवजीयों सांधु, अणंतघाती करमां नें खपायो रे।
ए उत्तरावेन गुणतीसमे अधेने, सातमों बोल कह्यो जिणरायो रे॥ ३॥
सामायक रो फल सावद्य जोग निवरते, इणरो ए गुण नीपनो ताह्यो रे।
ए पिण उत्तरावेन गुणतीसमें धेनें, कह्यों आठमां बोल रें मांह्यो रे॥ ४॥
पांच परकार नी सभाय कीयां सूं, निरंजरा हुइ कटीया करमो रे।
सभाय करे ते निरवद जोगां सूं, जब नीपनो निरजरा धर्मो रे।
सुध सरधा रो निरणो कीजो॥ ५॥

ए पिण उत्तरावेन गुणतीसमें धेनें, उगणीस सू तेवीस तांइ रे।
त्यां सुभ जोगां नें संवर सरधे, ते भूल गया भर्म माही रे॥ ६॥
जोग तणा पचखांण कीयां सूं, अजोग संवर हुवो रे।
ते अजोग संवर चारित नांही, अजोग संवर चारित सू जूवो रे॥ ७॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

अजोग संवर सुभ जोग रुध्यां नीपनों, जब छुटो निरवद व्यापारो रे।
चारित नीपनो सर्व इविरत त्याग्यां, बाकी इविरत न रही लिगारो रे॥ ८॥
अजोग संवर हुवें निरवद जोग त्याग्यां, तिणमें सावद्य रो नहीं परिहारो रे।
चारित हुवें सर्व इविरत त्याग्यां, नव कोटी त्याग्यो सावद्य व्यापारो रे॥ ९॥
तीन करण जोगां सर्व सावद्य त्याग्यो, ते तो तीन गुपत संवर धर्मो रे।
पांच सुमति छे निरवद जोग व्यापार, त्यांसूं कटें छें आगला करमो रे॥ १०॥
गुपत संवर तो निरंतर साधु रे, पांच सुमत निरंतर नांही रे।
पांच सुमत तो निरतर नही छे, ए तो प्रवरते छें जठा तांइ रे॥ ११॥
इर्या सुमत तो चालें जठा तांइ, भाषा सुमत बोलें जठा तांइ रे।
एसणा सुमत तो प्रवरते छे त्यां लग, त्यांनें संवर कहीजें नाही रे॥ १२॥
आयाण भड मत निखेवणा सुमत, ते तो लेवें मूंकें तठा तांइ रे।
परठणा सुमति परठें जठा तांइ, त्यांनें पिण संवर कहीजें नाहीं रे॥ १३॥
सुमति छें सुभ जोग निरजरा री करणी, सुभ जोगां नें संवर कहें कोयो रे।
यांनें एक कहें तिणरी उंधी सरधा, संवर नें सुभ जोग छे दोयो रे॥ १४॥
सुभ जोग रुध्यां मिटें निरजरा री करणी, पुन ग्रहवारा दुवार रूंधांणा रे।
जब अजोग संवर नीपनों तिण कालें, करण वीर्य जोग मिटांणो रे॥ १५॥
जीव तणा प्रदेश चलावें, तेहीज जोग व्यापारो रे।
ते प्रदेश थिर हूआं अजोग संवर छे, सुभ जोग मिट्या तिणवारो रे॥ १६॥
सुभ जोग व्यापार सूं करम कटें छें, जब जीव रा प्रदेस चाले रे।
जीव रा प्रदेस चालें तठा तांइ, पुन रा प्रदेस झाले रे॥ १७॥
चारित ना परिणांम थिर प्रदेस, त्यांरो सीतलभूत सभावो रे।
तिण सू सुभ जोग नें चारित न्यारा न्यारा छें, ओंतों देखों उघाडो न्यावो रे॥ १८॥
वीयावच करण रो फल वतायो, बंधें तीर्थंकर नांम करमों रे।
ते वीयावच करें सुभ जोगां सू, त्यांसूं हुवों निरजरा धर्मो रे॥ १९॥
बंदणा करता नीच गोत खपावें, वले बांधें उंच गोते करमों रे।
बंदणा करे छे सुभ जोगां सूं, तिण सूं हुवो निराजरा धर्मो रे॥ २०॥
सावद्य जोगां सूं सेवे पाप अठारें, ते तों पाप री करणी जांणो रे।
ते सावद्य करणी करतां पिण निरजरा हुवे छें, त्यांरो न्याय हीया मे पिछाणो रे॥ २१॥
उदीरी उदीरी नें करे क्रोधादिक, जब लागे छे पाप ना पूरो रे।
उदीरी नें क्रोधादिक उदें आंण्या ते, करम झरे पडें दूरो रे॥ २२॥
पाप री करणी करतां निरजरा हुवे छे, तिण करणी में जाबक खांमी रे।
सावद्य जोगां पाप ने निरजरा हुवें छें, ते निरजरा तणों नही कांमी रे॥ २३॥

ज्यूं सुभ जोग छें निरवद व्यापार, ते करणी निरजरा री जांणो रे।
तिण करणी करतां पिण पुन लागे छें, त्यांरो न्याय हीया में आंणो रे॥ २४ ॥
उदीरी नें करणी निरवद करतां, लागे पुन रा पूरा रे।
करम उदीर उदीर उदें आंणी नें, करम झाटक करे दूरो रे॥ २५ ॥
निरजरा री करणी करतां पुन हुवें छें, तिण करणी मांहे नही खांमी रे।
निरवद जोगां सूं निरजरा ने पुन हुवे छे, ते पुन तणा नही कांमी रे॥ २६ ॥
सुभ जोग सूं निरजरा री करणी, तिणरो छे आगम साखी रे।
सुभ जोगां नें कोइ संवर सरधें, ते भारी करमां जीव अन्हाखी रे॥ २७ ॥
कहि कहि नें कितरो एक कहूं, सुभ जोग ते संवर नांहीं रे।
सुभ जोगा नें संवर सरधे, ते निनवांरी पांत माही रे॥ २८ ॥
सुभ जोग ने सुभ लेस्या सेती, पुन लागों सरधे नांही रे।
ते जिण मारग सूं न्यारा पडीया, ते पिण निनवांरी पांत मांही रे॥ २९ ॥
भली लेस्या ने उदे भाव में आंणी, अनुजोग दुवार सूतर मझारो रे।
वले भली लेस्या धर्म में पिण आंणी, तिणरों मूढ न जांणे विचारो रे॥ ३० ॥
भली लेस्या थी तो पुन ग्रहें छे, तिण सूं उदें भाव माहें आंणी रे।
निरजरा हुवें तिण सूं धर्म में आंणी, आ श्री जिणवरनी वांणी रे॥ ३१ ॥
लेस्या अधेन री धुरली गाथा में, करम लेस्या छहूं जिण भाखी रे।
वले भली लेस्या ने धर्म में आंणी, उत्तराधेन चोतीसमो साखी रे॥ ३२ ॥
करमां ने ग्रहे तिण सूं कही करम लेस्या, निरजरा हुवें तिण सू लेस्या धर्मो रे।
उदें भाव ते करम ग्रहवारो हेतूं, सुभ लेस्या सूं लागे पुन करमो रे॥ ३३ ॥
समचे जोगां नें उदें भाव में आंण्या, तिण में सावद्य निरवद दोनूं जांणो रे।
निरवद जोगा सूं तो पुन ग्रहे छे, सावद्य सूं पाप लागो छे आंणो रे॥ ३४ ॥
सुभ जोगां सूं निरजरा हुवे छे, तिण सू निरजरा री करणी में चाल्या रे।
वले सुभ जोगां सूं पुन पिण लागें, तिण सूं आश्रव माहें घाल्या रे॥ ३५ ॥
गोहूं नीपावे छें गोहां कें कारणें, पिण खाखला री नही चावो रे।
तो पिण साथे खाखलो नीपजे छे, बुधवंत समझो इण न्यावो रे॥ ३६ ॥
ज्यूं करणी करें निरजरा रे काजें, पिण पुन तणी नहीं चावो रे।
पिण पुन नीपजे छे निरजरा करतां, खाखला ने गोहां रे न्यावो रे॥ ३७ ॥
भली लेस्या ने भला जोगां सूं, निरजरा ने पुन होयो रे।
लेस्या ने जोगां मे कांयक फेर छे, तिण सूं लेस्या ने जोग छे दोयो रे॥ ३८ ॥
सुभ लेस्या ने सुभ जोगा सू पुन लागे, त्यांरो न कीयो घणो विसतारो रे।
जो इतरे कहे किण ने समझ न पडे तों, सूतर सूं करो निसतारो रे॥ ३९ ॥

ढाल : ४

दुहा

पेंहला गुणठांणा थी पांचमां लगें, कदे वरते नहीं सुभ जोग।
एहवी ऊंधी करें छें परूपणा, तिणरें लागों मिथ्यात रों रोग ॥ १ ॥
पेंहला गुणठांणा थी छठा लगें, सावद्य निरवद जोग छें ताहि।
सातमां थी तेरमां लगें, एक निरवद जोग त्यां मांहि ॥ २ ॥
केइ मूढ मिथ्याती जीवडा, कर रह्या ऊंधी तांग।
श्रावक रें सुभ जोग सरधें नहीं, ते पूरा मूढ अयांण ॥ ३ ॥
श्रावक रें सुभ जोग सरधें नहीं, ते भव भव में होसी खुराब।
श्रावक रें सुभ जोग जिण कह्या, ते सुणजों सूतर रो जाब ॥ ४ ॥

ढाल

[आणंद समकित उचरे रे लाल]

श्रावक सामायक व्रत उचरे रे लाल, सावद्य जोग रा करे पचखांण हो भविकजन*।
ते भणे सझाय बोल थोकडा रे लाल, वले बोलें निरवद वांण हो भविकजन
सुध सरधा रो निरणो करो रे लाल* ॥ १ ॥

श्रावक पांच पदां नें वंदणा करे रे लाल, त्यांरा वरतें निरवद जोग हो।
श्रावक रे सुभ जोग सरधें नहीं रे लाल, तिणरे मोटों मिथ्यात रो रोग हो ॥ भ० सु० २ ॥
आवो पधारो कहें साधां भणी रे लाल, ते ववहार वचन जोग सुध हो।
तिण वचन ने कहें असुभ जोग छें रे लाल, तिणरी भिष्ट हुइ छें बुध हो ॥ ३ ॥
वले साधां नें श्रावक दांन दें रे लाल, तिणरी तीनूंइ जोग हुवे सुध हो।
दांन देवा रा जोगां ने असुध कहें रे लाल, तिणरी विगड गइ सुध बुध हो ॥ ४ ॥
तीन मनोरथ मन चिंतवे रे लाल, ते सुध मन जोग निरदोष हो।
तिण मन नें कहे असुभ जोग छें रे लाल, तिणरी सरधा फोगट फोक हो ॥ ५ ॥
धर्म ध्यान ध्यावें श्रावक तिण समें रे लाल, जब सुभ जोगां रो छें व्यापार हो।
तिण व्यापार ने कहें असुभ जोग छें रे लाल, तिणरी खोटी सरधा नें विकार हो ॥ ६ ॥
श्रावक भावे साधां री भावना रे लाल, साध आवें तो देउं सुध आहार हो।
इण भावना रा जोगां नें असुध कहें रे लाल, तिण जीतब दीयों विगार हो ॥ ७ ॥
श्रावक सीलादिक बारें व्रत उचरे रे लाल, जब निरवद जोगां रो व्यापर हो।
तिण जोगां नें असुध कहें रे लाल, ते तो पूरा मूढ गिंवार हो ॥ ८ ॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

श्रावक निरवद किरतब करें रे लाल, ते निरवद जोगां सूं होय हो।
तिण जोगां नें सुध सरधे नहीं रे लाल, तिण समकत दीधीं खोय हो॥ ९ ॥
मन पुने वचन काय पुने कह्या रे लाल, ए तीनूंइ सुध जोग जांण हो।
या तीनां नें कहें असुध जोग छें रे लाल, ते तो जिन मारग नां अजांण हो॥ १० ॥
श्रावक तो जिहांइ रह्या रे लाल, मिथ्याती रे पिण सुभ जोग जांण हो।
जब परत संसार मिथ्याती करे रे लाल, तिणरा निरवद जोग पिछांण हो॥ ११ ॥
सुख विपाक सूतर में दस जणां रे लाल, दांन दे कीयों परत संसार हो।
त्यारा तीन करण जोग सुध था रे लाल, जोवो विपाक सूतर रे मझार हो॥ १२ ॥
दांन दीयों भगवांन नें रे लाल, विजें गाथापती आदि च्यार हो।
त्या पिण तीन करण तीन जोग सूं रे लाल, कीधो परत संसार हो॥ १३ ॥
ठांम ठांम सिधांत मांहे कह्यों रे लाल, मिथ्याती कीयों परत संसार हो।
त्यारे सुभ जोग मूल सरधे नहीं रे लाल, ते तो झूठ रा बोलणहार हो॥ १४ ॥
सूतर भगोती मांहे कह्यों रे लाल, इंद्र निरवद भाषा बोले जांण हो।
निरवद भाषा ते निरवद जोग छें रे लाल, तिणरी करों हीया में पिछांण हो॥ १५ ॥

●

ढाल : ५

दुहा

अरिहंत सिध ने आयरीया, उवझाय सगला साध।
ए मुगत नगर नां दायका, पांचूंई पद अराध ॥ १ ॥
पांच भाव जिणेसर भाषीया, उदें उपसम षायक जांण।
षयोपसम नें परिणामिक छे, त्यारी बुधवंत करजों पिछांण ॥ २ ॥
आठ करम उदे हूआं नीपजे, जीव तणा उदें भाव।
त्यानें भाव जीव जिणवर कह्या, त्यांरों जूओ जूओ छे सभाव ॥ ३ ॥
नारकी तिरजंच मिनष देवता, पृथ्वी आदि देइ छ काय।
क्रिस्नादिक भाव लेस्या छहूं, क्रोधादिक च्यार कषाय ॥ ४ ॥
तीन वेद मिथ्याती ने अविरती, असनी ने अनांण।
वले अहारथा नें संसारथा, असिध नें अकेवली जांण ॥ ५ ॥
छदमस्थ ने संजोगीपणों, ए बोल कह्या तेतीस।
ते सारा उदें भाव जीव छे, ते भाष गया जगदीस ॥ ६ ॥
त्यामे मोह उदें सू नीपनां, ते साराइ सावद्य जांण।
सेष करम उदें सूं नीपनां, त्यांसू पाप न लागे आंण ॥ ७ ॥
नाम करम उदे सूं नीपनां, त्यांमें केयक निरवद जाण।
केइ सावद्य निरवद दोनूं नही, त्यांसूं करम न लागें आण ॥ ८ ॥
छ करम उदे हूआं नीपनां, ते सावद्य निरवद नांहि।
त्यारा भाव भेद परगट करूं, ते निरणो करो घट मांहि ॥ ९ ॥

ढाल

[आ अणुकंपा जिण आग्या मे]

च्यार गति छ काय असनी नें अनांणी, संसारथा ते तो संसार रे माहि।
असिद्ध अकेवली ने छदमस्थ, ए सोलें बोल सावद्य निरवद नांही।
उदे भाव जीव अतेकरण ओलखजो* ॥ १ ॥
च्यार कषाय ने तीन माठी लेस्या, वले तीनो वेद मिथ्यात नें इविरत।
ए बारोइ बोल छें एकत सावद्य, त्यासूं एकंत पाप लागे छें निरत ॥ उ० २ ॥
तीन भली लेस्या छे एकत निरवद, त्यासूं निरजरा होय पुन लागे छे आय।
आहारीक ने सजोगी छें सावद्य निरवद, त्यासूं पुन नें पाप दोनूंइ बंधाय ॥ ३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

अंतराय करम षय षयउपसम हूआं, जब वीर्य लबद उपजें छें आय।
ते उजला लेखें छें एकंत निरवद, तिण सूं पुन पाप निरजरा क्यूंही न थाय ॥ ४ ॥
वीर्य चलावें छें नांम करम संजोगें, ते निरवद जोग तणो व्यापार।
जब करम कटें तिण निरवद जोगा सूं, पुन रो पिण ग्रहण हुवें तिणवार॥ ५ ॥
नांम करम संजोगें प्रदेस चलावें, ते भली लेस्या भला जोग व्यापार।
अववसाय परिणांमादिक सर्व रूडा, जब निरजरा पुन हुवें तिणवार॥ ६ ॥
भली लेस्या भला जोग करणी रे लेखें, षायक षयउपसम भाव छें ताय।
पुन रो पिण ग्रहण हुवें तिण लेखें, उदें भाव मांहे घाल्या जिणराय॥ ७ ॥
चवदमें गुणठांणे चवदें जोग सरधें, तीणमें कारमण जोग नें दीयों छे टालो।
ए सरधा छे विपरीत प्रतख खोटी, तिणरो मूढ मिथ्याती न कढें निकाल।
इण खोटी सरधा रो निरणो कीजो॥ ८ ॥

चवदमों गुणठांणो अजोगी कह्यों जिण, जो सका हुवें तो सूतर नें संभालो।
पिण भारी करमां ने सवली न सूझें, तिणरी अभितर फूटी आया करम जालो॥ इ० ६ ॥
तेरमें गुणठांणे पेंहला मन जोग रूंधे, पछें वचन रूंधे पछें रूंधे काया।
ए तीनूं जोग रूंधीं नें हूआ अजोगी, त्यांरें पाछा जोग कठी सूं आया॥ १० ॥
जब तो कहें प्रवर्तन जोग रूंधांणा, निरवरतन जोग छे तिण मांही।
ओ तों अणहूंतो गोलों चलायो, ते तो किण ही सूतर में दीसें नांहीं॥ ११ ॥
ए निरवतन जोग छें सुभ जोग सवर, ओ पिण अणहूंतो चलायो गोलो।
ते किण ही सूतर मांहें चाल्यों न दीसें, आ पिण मिथ्यात्यां रें मोटी भोलो॥ १२ ॥
सुभ जोग ने संवर सरधें मिथ्याती, आतो उठी जठा थी जाबक भूठी।
ते हीया फूट गधा रा साथी, त्यारी अभितर आंख हीया री फूटी॥ १३ ॥
जोग तो व्यापार जीव तणों छें, जीव रा प्रदेस हालें चालें त्यांही।
थिर प्रदेस ने जोग सरधें छें, तिणरें मोटो मिथ्यात रह्यो घट मांहि॥ १३ ॥
सुभ जोग ने संवर जूआ जूआ छें, त्यां दोयां रो जूओ जूओ छे सभाव।
त्यां दोयां नें एक सरधें अग्यांनी, तिण निश्चें इ कीधो छें मोटों अन्याव॥ १५ ॥
सुभ जोगां सूं पुन करम लागे छें, असुभ जोगां सूं लागें पाप करम।
सुभ असुभ करम संवर सूं रुकें छें, वले सुभ जोग सूं हुवें निरजरा धर्म॥ १६ ॥
सवर सूं जीवा रा प्रदेस बंध हुवें छें, जोग सूं जीव रा प्रदेस री हुवें छें छूट।
या दोयां ने एक सरधे छें अग्यांनी, ते निश्चे इ नेमा छें हीया फूट॥ १७॥

रत्न : ७

निषेपां री चौपई

ढाल : १

दुहा

अरिहंत सिध नें आयरिया, वले उवाझाय नें सर्व साध।
यांरा गुण ओलखनें वंदणा करें, ते पामें परम समाध॥ १॥
केइ हिंसाधर्मी जीवडा, मानें निगुणा देव गुर धर्म।
मारें छकाय रा जीव नें, बांधें उसभ करम॥ २॥
नांम थापना दरब भाव ने, ए मांनें नषेपा च्यार।
त्यांरी पिण समज पडे नही, घट मे घोर अंधार॥ ३॥
ए च्यार नषेपा रो नांम ले, भोलां ने दे भरमाय।
त्यांरी सरधा रा प्रश्न पूछीयां थकां, तो झूठ बोलें फिर जाय॥ ४॥
ते झूठ बोलें छें किण विधें, किण विध फिर फिर जाय।
हिवें नांम नषेपा रो निरणो कहूं, ते सुणजो चित ल्याय॥ ५॥

ढाल

[धीज करे सीता सती रे]

ढेढ डूंब थोरी नें सरगरा रे, भील मेणा ने मूसलमांन रे।
चंडाल धुरा धुर सर्व जात में रे लाल, कें कांरो छें नांम भगवांन रे।
नांम नषेपा रो निरणो सुणो रे लाल* ॥ १॥

जे गुण विण नांम माने तेहनें रे, सगला नांम भगवांन वंदणीक रे।
तिणने पूछणो सगली न्यात ने रे लाल, करणी नांम भगवांन री ठीक रे॥ ना०२॥
पछे गुण विण नांम भगवांन नें रे, जो उ न वांदें सगला रा पाय रे।
उण सरधा थापी ते उथप गइ रे लाल, पिण गहलां ने खबर न कांय रे॥ ३॥
केइ जोगी सिन्यास्यां रा नांम छे रे, सिधगिरी ने सिधनाथ रे।
जे गुण विणा नांम मांने तके रे लाल, सिधां ने क्यूं न वादे जोडी हाथ रे॥ ४॥
केइ करे मिनषां रो कारटा रे, ते पिण वाजे आचार्य लोकां मांय रे।
जे गुण विण नांम मांने तके रे लाल, क्यूं न वांदे तिण आचार्य रा पाय रे॥ ५॥
केइक ब्राह्मण लोक में रे, त्यांरी जात वाजें उपाध्याय रे।
जे गुण विणा नांम मांनें तके रे लाल, क्यूं न वांदें उण उपाध्याय रा पाय रे॥ ६॥
केइ साध वाजे भगत ढूंढीया रे, ते निगुण छें रहीत समाव रे।
जे गुण विण नांम मानें तके रे लाल, ते क्यूं न वांदें एहवा साध रे॥ ७॥
ए नांम नषेपा पांचूं गुण विणा रे, त्यांरा पूछे पूछे नें नांम रे।
जे गुण विणा नांम मांनें तेहने रे लाल, वादे पूजे करणा गुण ग्रांम रे॥ ८॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ए नांम नषेपा पांचूं गुण विणा रे, जो उ नमें तो सरधा में फूट रे।
भाव भगत करी वांदें नहीं रे लाल, तो नांम नषेपो गयो उठ रे॥ ९॥
नांम नषेपो मांने गुण विणा रे, पिण कांम पड्यां दे उथाप रे।
ते पग २ भूठ बोले घणां रे लाल, ते कर रह्या कूडा विलाप रे॥ १०॥
नांम वादण रो कह्यां थकां रे, तब ते बोले एम रे।
कहे नांम छे तो पिण गुण नहीं रे लाल, तिणनें सीस नमावां केम रे॥ ११॥
जे नांम नकेवल मांनता रे, ते गुण रो सरणो ले किण न्याय रे।
यांरी खोटी सरधा अटकें घणीं रे लाल, जब साच बोली आया ठाय रे॥ १२॥
ते कहवा नें ठाम आवीयों रे, पिण माहें न भीजे मूढ रे।
त्यारें लागा डंक कु गुरां तणा रे लाल, ते किण विध छोडें रूढ रे॥ १३॥
ए नांम नषेपो करें रह्यां रे, तिण री पिण समभ न काय रे।
भरमाया कुगुरा तणा रे लाल, ते चोडे भूला जाय रे॥ १४॥
सोनों रूपो दीयों नांम मिनष रो रे, ते कहवा ने छे नाम रे।
जो काम पडे गेंहणा तणो रे लाल, तो नावें गेहंणा रे कांम रे॥ १५॥
किण ही मिनष रो नांम हीरो पनों दीयों रे, ते पिण कहवा नें छे नांम रे।
जो कांम पडे जडाव रो रे लाल, तो नावें जडाव रे काम रे॥ १६॥
किण ही मिनष रो मांणक मोती नांम छे रे, ते पिण कहवा नें छें नाम रे।
जो पेहरें सिणगार करवा भणी रे लाल, तो नावें पेंहरण रे काम रे॥ १७॥
केसर किस्तूरा नांम दीयों मिनष रो रे, ते पिण कहवा नें छे नांम रे।
जो कांम पडे वलेपण गंध रो रे, तो नावें वलेपण गंध कांम रे॥ १८॥
किण ही मिनष रो नाम लाडू दीयों रे, ते पिण कहवा नें छें नांम रे।
पिण भूख लागें तिण अवसरे रे लाल, तो नावें खावण रे काम रे॥ १९॥
किण ही लकडी रो नाम घोडो दीयों रे, ते पिण कहवा नें छे नांम रे।
जो कांम पडें चालण तणो रे, तो नावें चढण रें कांम रे॥ २०॥
इत्यादिक जीव अजीव रा रे, दीयां नांम अनेक रे।
पिण गरज सरें नही ते नांम सूं रे लाल, समभो आण ववेक रे॥ २१॥
ज्यूं गुण विण नाम भगवांन छे रे, ते पिण कहवा नें छे नांम रे।
पिण धर्म नही तिण वांदीया रे लाल, ते तिरण तारण नहीं तांम रे॥ २२॥
नांम भगवांन सर्व जीव रो रे, दीयों अनंती वार रे।
पिण गुण विण नांम भगवान सूं रे लाल, न सरी गरज लिगार रे॥ २३॥
गुण विण नाम भगवांन सूं रे, न टलें आतम दोख रे।
जे त्यांने वाधां सुद गति हुवें रे लाल, तो सगलाइ जीव जाता मोख रे॥ २४॥

गुण विण नांम वांद्यां थकां रे, गरज सरें नही कांय रे।
गरज सरे एक भाव सूं रे लाल, जोवो सूतर रे मांय रे॥ २५॥
गुण विण नाम मांने तेहनें रे, बोली रो न दीसे बंध रे।
फिरती भाषा बोले घणां रे लाल, ते होय रह्या मोह अध रे॥ २६॥
गुण करने अरिहंत छें रे, गुण करनें सिध साध रे।
त्यांरा गुण नें नांम एक हीज छे रे लाल, त्यांने वांद्यां हुवे परम समाध रे॥ २७॥
किणरी माता रो नांम सरूपां छें रे, तेहीज नांम अस्त्री रो होय जांय रे।
जे गुण विण नाम माने तेहने रे लाल, दोयां ने गिण लेंणी माय रे॥ २८॥
के दोयां ने गिण लेणी अस्त्री रे, उणरी सरधा सांह्यो जोय रे।
जो उ अस्त्री ने मां जुदी गिणे रे लाल, तिण नांम नषेपो दीयों खोय रे॥ २९॥
किणरा बाप रो नाम धनरूप छे रे, त्यांरे मांहोमां हेत मिलाप रे।
जे गुण विणा नांम मांने तेहनें रे लाल, सगला छें धनरूप वाप रे॥ ३०॥
सगला धनरूप नांम तेहनें रे, संकतो नही लेखवें बाप रे।
ओर धनरूप सूं दुजागी करे रे लाल, तिण दीयो नांम नषेपो उथाप रे॥ ३१॥
बेन बेनोइ काका बाबादिके रे, यांरें नांम छे नांम अनेक रे।
त्यांने नांम परमाणे न लेखवे रे लाल, तो छोड देणी कूडी टेक रे॥ ३२॥
गुण ओर ने नांम ओर छें रे, ते कह वतलावण कांम रे।
कोई भोलेइ मत भूलजो रे लाल, सुण सुण एहवो नांम रे॥ ३३॥
केयक नांम कहिवा नें दीया रे, केइ गुण निपन छें नांम रे।
कहिवा रा नाम कहिवा भणी रे लाल, पिण गुण निपन आवें कांम रे॥ ३४॥
इम कहि कहि ने कितोक कहूं रे, नांम नषेपों रो विसतार रे।
जे गुण विण नांम वांदे नही रे लाल, तिण सफल कीयों अवतार रे॥ ३५॥

●

ढाल : २

दुहा

गुण विण नांम दीयों लोक में, ते प्रतख लेजो देख।
वले थोडा सा परगट करूं, ते सुण सुण म करो धेख ॥ १ ॥

ढाल

[देशी - चौपई नी]

नांम दीयों सुरो रणधीर, भागो जाअे दीठें तीर।
नांम दीयों छें राधाकिसन, सेवतो जाअें सातो विसन ॥ १ ॥
नांम दीयों छे गोंबिदराय, फिर फिर चरावे पराइ गाय।
बाई रो नाम दीयों छें लाछ, मांगी न मिले कुलडी छाछ ॥ २ ॥
सासु कहे म्हांरी कपूरदे बहू, भांभल नाम बोलावें सहू।
नांम दीयो कसतूरी जास, माहें न मिलें हीग री वास ॥ ३ ॥
टेट घणी ने बांको न्हाल, दुरभख पडीयो देस दुकाल।
नाम दीयो थो जगतपाल, पिण सगलां पेंहली बेच्या बाल ॥ ४ ॥
किण ही एकरो नाम सोनो दीयो, साथ विणा एकलो चालीयो।
घणों दलद वहेज लार, नाम नें कदेय न उठें धाड ॥ ५ ॥
बाइ रो नांम दीयों छें खुसाल, पिण मिट्यो नही सोक रो साल।
कुड कुड ने दिन पूरा करे, कूअें बावडी पड ने मरें ॥ ६ ॥
नांम दीयो छें धर्मोसाह, परभव नी नही छे परवाह।
कूड कपट लंपट चित धरें, इसडो घरमो नरकां पडें ॥ ७ ॥
लोक कहे आ लिछमी बाय, उगें सूर छांणां ने जाय।
किण ही एक रो नाम सरूपां दीयो, एक काली ने कुजस लीयो ॥ ८ ॥
सुंदर नांम दीयों छें अनूंप, खोटी बोलें वले कुरूप।
कुत्ता चाटे छे हांडीयां, सेडे करनें घर भाडीयां ॥ ९ ॥
ज्यूं नांम दीयों अरिहंत भगवांन, पिण मांहें न दीसें अकल गिनांन।
तिरण तारण री समझ न काय, तिणने मूरख वांदें जाय ॥ १० ॥
इण अनुसारे दीधा नांम अनेक, त्यांसूं गरज सरें नही एक।
ते सुणनें समझे चतुर सुजाण, पिण मूरख माडे तांणा तांण ॥ ११ ॥

ढाल : ३

दुहा

ए नांम नषेपो ओलखावीयो, हिवें थापना रो इधकार।
गुण विण देखी थापना, भूला भर्म संसार ॥ १ ॥
वादे पूजें तीर्थंकर री थापना, त्यांरें आकारें पथर कोराय।
सोनें पीतल धात अनेक सूं, त्यांरे आकारें बिंब भराय ॥ २ ॥
वले कागद कपडादिक उपरें, भगवंत रो मांडे आकार।
तिणनें सीस नमाय वंदणा करें, जांणे हुवो लाभ अपार ॥ ३ ॥
कहें जिण प्रतिमा जिण सारखी, फेर म जांणों कोय।
दोनां ने वांद्यां थकां, लाभ सरीखो होय ॥ ४ ॥
वले गुण लारें पूजा कही, निगुण पूजता जाय।
अें चोडें भूला मांनवी, त्यांनें किम आंणीजें ठाय ॥ ५ ॥
कदे तो कहें वांदां गुणा भणी, कदे कहे वांदां आकार।
त्यांरी सरधा में फूट फजीती घणी, ते कहतां न आवे पार ॥ ६ ॥
अें गुण विणा आकार नें वांदता, त्यांनें प्रश्न पूछें जाय।
तो फिर जाअें झूठ बोलें घणों, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या मे]

चक्रवत वासुदेव ने बलदेवा, ते तो छे तीन खड तणा सिरदार।
इत्यादिक केइ मिनष ने सर्व जूगलीया, ते सगलाइ छे भगवंत रे आकार।
थापना निषेपा रो निरणो सुणजो* ॥ १ ॥

भवनपती ने व्यंतर देवा, जोतकी देव ने विमांणीक वखांण।
ते पिण छें आरिहंत रें आकारें, समचोरस छे सगलां रो संठाण ॥ था० २ ॥

जे गुण विणा आकार भगवांन रो वांदे, तिणरे लेखें वांदणा कुण २ आकारो।
समचोरस संठाण रा मिनष ने देवा, त्यांनें हरष धरे वांदणा वारूं वारो ॥ ३ ॥

जो उ हरष धरे यांनें वांदे नहीं तो, उणरी सरधा उणरें लेखेंइ खोटी।
आप थापी ते आप उथापें, आ पिण आंधां रे भोलप मोटी ॥ ४ ॥

पथर धातु चितरांमादिक नां, कर कर वांदें भगवंत रो आकारो।
तो लाद गोबर धूर कोयलादिक नां, आकार करें वांदणा वारूं वारो ॥ ५ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

जो गोतमादिक नों आकार न वांदें, तो आनरी सरधा रो आल अजांणो।
पथर धातु चित्रांमादिक नों, आकार वेंदी मूढ मती भुलांणो ॥ ६ ॥
केई धातना जडित में अचित वस्त नीं, भगवंत रें आकार बनावें जेरो।
तिण आगें आय पांचूं अंग नमें नें, नमोथुणं गुणें मूढ होय होय घेरो ॥ ७ ॥
तिणरी सेवा पूजा करें साव भगत सूं, एहीज म्हांरी आचारज विचारें।
जिन तेतो एहवी जीव अजांणी, ए तिरें नहीं ते किण विध तारें ॥ ८ ॥
आचार्य उवझाय साध गुणवंता, त्यांरे आकारें ढूंढियादिक भेषधारी।
ते गुण बिना आकार वांदें छे, तो ओ क्यूं न वांदें थांरो देव आकारी ॥ ९ ॥
जे जे आकार जिनन तणा छें, तेहीज आकार साधां रा जांन।
जे गुण बिना आकार वांदें तें, सर्व मिनखां नें क्यूं नहीं वांदें अयांण ॥ १० ॥
जो उ सर्व मिनखां नें नहीं वांदें तो, तिण धातना आकार कीयो उथाप।
ओ अकल विहूणा सरधा पखें, ते पग पग कूड बोलें फिर जाय ॥ ११ ॥
जो आकार वांदन रो कहें कोइ उन नें, जब तो मूर्खो बोलें मुख सूं एम।
ए आकार छें तो जिन गुण नहीं मांहें, तिणनें म्हें सीस नमावां केम ॥ १२ ॥
जे धातना आकार मांनें निकेवल, ते गुण री सरधो लें छें किण न्याय।
थांरी सरधा सरध्यां लाज न आवें, जब साच बोली नें आवो छें ठाय ॥ १३ ॥
ते कहवा नें ठाय आया जांणी, जिण मन में न भीजें अयांनी मूढो।
त्यांरे कुगुरां रा कंद बन्धा लागा, ते किण विध छोडें खोटी रूढो ॥ १४ ॥
ए धातना धातना कर रह्या मूरख, तिण धातना री पिण समझ न कायो।
कुगुरां रा भरमाया अयांनी, ते चोडे मारग भूला जायो ॥ १५ ॥
जो उ हाथी मछल्यां मांड कपडो देवे जब, त्यांरा फाडी फाडी करें दोय दोय टूका।
जो उ गुन बिन आकार वांदें तिण लेखें, तो हाथी मछल्यां मारण कांय चूका ॥ १६ ॥
कहें हाथी मछल्यां मांड कपडो फाड्यां सूं, हाथी मछल्यां मार्‍यां रा न लागे पाप कर्मो।
तो भगवंत रे आकारें प्रतिमा वांद्यां, तिणनेंइ तिरवें न जांणों धर्मो ॥ १७ ॥
मिनख सगा सनेही ब्याही ब्याइला, तिण नें रेत रा लाडू बणाय नें मेलें।
भगवंत रे आकारे प्रतिमा पूजें, ते रेत रा लाडू पाछा कांय ठेलें ॥ १८ ॥
कहें रेत रा लाडू में सवाद नहीं छें, तो प्रतिमा में गुण मूल न जांनो।
गुण बिन वस्तु तो अर्थे न आवें, समझो रे समझो थे मूढ अयांणो ॥ १९ ॥
पथर कोरय नें प्रतिमा बनावें, तिण प्रतिमा नें भगवंत ज्यूं सेवें।
तिण नें तिणहीज पथर रा रूपीया देवें ते, ओ खोटा रूपीया नें क्यूं नहीं लेवें ॥ २० ॥
गुरु गोतमादिक नों सोचो देइ नें, पथर रा रूपीया लेइ पछें न वांदें।
तो नाणा तणा भगवंत बनाए, उ भगवंत ज्यूं किण लेखें वांदें ॥ २१ ॥

भाठा रा रुपीयां लेइ वसतु देवें, तो नींवी में पड जायें जांवक टोटों।
ज्यूं भाठा रा प्रभू वांदें तिणरो मत, खोटो रे खोटो निकेवल खोटो ॥ २२ ॥
रूपा तणां रुपीयां रे ठिकांणें, पथर रा रुपीयां कदे नही हाले।
ते तिरण तारण भगवंत री ठोरे, भाठा रा भगवंत किण विध चाले ॥ २३ ॥
भाठा रा रुपीया लेइ घालें खजानें, त्यारो कांम पडे जब घणो सीदावे।
ज्यूं भाठा रा भगवंत थापी वांदें ते, परभव मांहें घणो पिछतावे ॥ २४ ॥
कोइ परख विणा खाअें रुपीयां में खोटो, ते तो रूपा रा झोल तणो परतापो।
ए भगवंत में खोटा खावा किण लेखें, आ तो प्रतख दीसें पथर री थापो ॥ २५ ॥
कोइ कागद उपर कटक अलेकें, मांहे भलं घोरीया असवार वणावें।
त्यांमें सूरपणा रो अंस न दीसें, वेरी दुसमण हटावण रें अर्थ न आवें ॥ २६ ॥
ज्यूं चोवीस आदि अनेक तीर्थंकर, त्यांरा जथातथ आकार वणावे।
त्यांमें ग्यांनादिक गुण अंस न पावें, तें तरण तारण रें काज न आवें ॥ २७ ॥
जो उ राखें भरोसो कागद रा कटक रों, तो इजत जाय रहें नही आवो।
ज्यूं प्रतिमा नें वांदें तिरण रे भरोसें, ते चिहुं गति में होसी घणां खुरावो ॥ २८ ॥
पोल रे दोनूं कवलें हाथी वणाया, ते चढवा रें कांम कदे नहीं आया।
ज्यूं प्रतिमा कराय देवल में वेंसारी, आं पिण जांणजो थोथी माया ॥ २९ ॥
उण री अस्त्री मूआं जो फेर परणीजे, तो उ पिण उणरी सरधा गयो भूली।
गुण विण आकार वांदें तिण लेखें, अस्त्री रे आकारे कर लेंणी हूली ॥ ३० ॥
भरतार मूआं जो अस्त्री रोवें तो, उवा पिण सरधा गइ छें भूलो।
गुण विण आकार वांदें तिण लेखें, भरतार रें आकारे कर लेंणो हूलो ॥ ३१ ॥
अस्त्री री गरज हूली नही सारें, भरतार री गरज सारें नही हूलो।
इण दृष्टते गुण विण आकार वांदें, त्यांरी पिण जांणजो ओहीज सूलो ॥ ३२ ॥
वले बालपणें रमें डावडा डावडी, ते विकल पणें करें हूली नें हूला।
ज्यूं भगवंत री प्रतिमा कर वांदें, ते भूला रें भूला निकेवल भूला ॥ ३३ ॥
पापड रा लोया नें गधा रा लीडा, यां दोयां रो दीसें एक आकारो।
ज्यूं प्रतिमा छें भगवंत रे आकारें, अें गुण विण अर्थ न आवें लिगारो ॥ ३४ ॥
गधा रा लींडा रा पापड न थायें, कोरा खावां पिण विगडे मूंढो।
ज्यूं प्रतिमां ने वांद्यां धर्म किहां थी, छोडो रे छोडो ये खोटी रूढो ॥ ३५ ॥
इण लोक में मोह अंध मिनष घणां छें, जेहवी सूआडी मोह अंध गाय।
तिणरो वछडो हूंतो ते चल गयो चेतन, तिणरी खाल चाटी २ पावस जाय ॥ ३६ ॥
वछडा री खाल देखी गाय भूली, तो अें प्रतिमा देख भूला किण लेखें।
आ प्रतिमा नही भगवंत री काया, ते तो मोह अंध गाय सूं भूला वधेपे ॥ ३७ ॥

अरिहंत भगवंत मुगत गया जब, त्यांरो सरीर आकार लारें रही काय।
ते तो गुण विण जड अचेतन पुदगल, तिण नें कोइ वांदें तो धर्म न थाय ॥ ३८ ॥
त्यांरो असल आकार सरीर पड्यो ते, तिणनें इ वांद्यां बंधे निश्चें कर्मो।
तो ओर आकार वणाय नें वांदें, त्यां आंधां नें किण विध होसी धर्मो ॥ ३९ ॥
गुण विण आकार वादण वालो बोलें, आकार वांद्या कहें लाभ अनंत।
तिण सूं भगवत री प्रतिमा कर वांदा, तिण प्रतिमा नें लेखव ल्यां भगवंत ॥ ४० ॥
परिणांम चले कहे अस्त्री दीठां, मा बेंन दीठां रहे सुध परिणांम।
ज्यूं प्रतिमा दीठां भगवंत याद आवें, एहवा कुहेत लगावें तांम ॥ ४१ ॥
उण रें मा बेंन अस्त्री हुवें एक आकारें, कहें एक दीठां याद आवें तीनूंइ।
पिण एक तीनूंइ ज्यूं कांम न आवें, याद आइ पिण गरज सरी नही कोइ ॥ ४२ ॥
कदे प्रतिमा दीठां भगवंत याद आवें, कदे भगवंत दीठां प्रतिमा याद आवें।
पिण धर्म तो भगवंत रा गुण वांद्यां, प्रतिमा रा गुण वांद्यां करम बंध जावें ॥ ४३ ॥
मा बेंन आकारें अस्त्री तिण सूं, घर वासो करतो संक न आंणें।
जो उ गुण विण आकार वांदें तिण लेखें, तो अस्त्री नें मा बेंन क्यूं नही जांणे ॥ ४४ ॥
मा बेन आकारें अस्त्री तिण नें दीठां, हरखे ते विषें रे कांम।
ज्यूं प्रतिमा देखी मन हरष धरें तो, छ काय मारण रा उठें परिणांम ॥ ४५ ॥
मा बेंन रे आकारे अस्त्री हुवें ते, मा बेंन री गरज निश्चेंइ न सारें।
ज्यूं भगवंत रे आकारे प्रतिमा कीधी ते, आ पिण जांणजो कदेइ न तारें ॥ ४६ ॥
भगवंत रे आकारे प्रतिमा वांदें, तिण आगें करें वले अनेक विलापो।
तो उणरा बाप रे आकारे मिनष घणा छें, त्यां सगला नें लेखव लेंणा बापो ॥ ४७ ॥
जो सगला नें बाप लेखवतो लाजें, ओ मत उण रे लेखेंइ कूडो।
जो गुण विण आकार मानें अग्यानी, ते कर रह्यां मूरख फेन फितूरो ॥ ४८ ॥
उण री मा रे उणीयारे वीदणी हूंती, तिणनें धन खरचे परणीजे ल्यायो।
गुण विण आकार वादे तिण लेखें, दोयां नें लेखव लेंणी मायो ॥ ४९ ॥
कें दोयां नें अस्त्री लेखव लेंणी, आपणी सरधा रो देखी न्यायो।
वले मा रें उणीयारें अनेक लूगायां, त्यां सगल्यां नें लेखव लेंणी मायो ॥ ५० ॥
वले बेन बेंनोइ काका बाबादिक, यारें आकारें छें मिनष अनेक।
त्याने आकार परमाणे नहीं लेखवें तो, छोड देणी कूडी जाबक टेक ॥ ५१ ॥
कोइ बाइ छें हिंसा धर्मी अनार्य, तिण पुतर जायो ते पिता रे आकारो।
आकार वादें तिण बाइ रे लेखें, दोयां नें गिण लेंणा भरतारो ॥ ५२ ॥
कें दोयां नें बेटा लेखव लेंणा, तो उणरी सरधा में उवा परवीण दूरी।
जो भरतार नें बेटा जूदा गिणे तो, उण री सरधा लेखें आ पडसी कूडी ॥ ५३ ॥

इत्यादिक जीव अजीव तणा छें, कीधा अकीधा आकार अनेक।
पिण गरज सरें नही आकार वांद्यां, समझो रे समझो थे आंण ववेक ॥५४॥
गुण विण थापना भगवांन री छें, ते देखीं नें जांणे लेणो आकार।
पिण धर्म नही त्यानें सीस नमायां, तिरण तारण मत जांणो लिगार ॥५५॥
भगवंत रो आकार सर्व जीवां रे, हूवो छें अनंत अनंती बार।
पिण गुण विण आकार भगवांन रा सूं, किणरोइ हुवो न दीसें उद्धार ॥५६॥
गुण विण आकार भगवांन रा सूं, निश्चेंइ न टले आतम दोख।
जो आकार वांद्यां सू सुदगति जाअें तो, सगला जीव जाय विराजता मोख ॥५७॥
गुण विनां आकार वांद्यां सूं, निश्चेंइ गरज सरें नहीं कांय।
गरज सरें एक भाव नें वांद्यां, सांसो हुवें तो जोवो सूतर मांय ॥५८॥
गुण विण आकार वांदे तिणां रें, बोली में मूल न दीसें वंघ।
ते फिरती भाषा बोलें अग्यांनी, ते होय रह्या मतवाला ज्यूं अंध ॥५९॥
गुण करनें अरिहंत भगवंत छें, गुण करनें छें रखेसर साध।
त्यांरा आकार सूं गुण न्यारा नहीं छें, त्यांनें वांद्यां सूं पांमें परम समाध ॥६०॥
जे गुण विण आकार थाप राख्यो ते, कहि वतलावण आवें कांम।
भर्म म भूला आकार देखी नें, वले सुण सुण ने आकार रो नांम ॥६१॥
केयक आकार कहिवारा छें, केइ गुण निपन चारित परिणांम।
कहिवारा आकार कहिवा भणी छें, गुण निपन आवें वांदण कांम ॥६२॥
इम कहि २ नें कितरो एक कहीजें, इण थापना निषेपा रो विसतार।
गुण विण थापना वांदें नहीं, त्यां निश्चेंइ सफल कीयो अवतार ॥६३॥

ढाल : ४

दुहा

ए थापना नषेपो कह्यो, हिवें दरव री करजो पिछांण।
केइ दरव नषेपो सांभली, भूला लोक अजांण ॥ १ ॥
ते गुण विण वांदें दरव नें, कूडा कुहेत लगाय।
अतीत अनागत काल री, मांनें गुण परजाय ॥ २ ॥
कहे साघ हुवा श्री रिषभ नां, त्यां कीयो चोइसत्यो ले नांम।
चोवीस तीर्थंकर हुवा नहीं, त्यांने वांदें कीयां गुणग्रांम ॥ ३ ॥
इम कहि २ भोला लोक नें, करें निर्गुणा वांदण री थाप।
उंधी करें परूपणा, वोहला वांधें पाप ॥ ४ ॥
त्यांसूं कांम पडें चरचा तणो, तो भूठ वोलें फिर जाय।
त्यांरी सरधा ने भूठ परगट करूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[आउखो तूटा ने साधो नही]

तीर्थंकर होसी आगमीया काल में रे, त्यांनें वांदें नें करें अग्यांनी जाप रे।
ते भेल नमोथुणं में घालीयो रे, त्यां कीधी निगुणा वांदण री थाप रे।
ए दरव नषेपा रो निरणो सुणो रे* ॥ १ ॥

नमोथुणं चोवीसत्थो करतां थकां रे, कहे गुण रो मत जांणो कोइ कांम रे।
तो उणरी सरधा रें लेखें कुण कुण वांदणा रे, ते सुणजो राखे चित एकण ठांम रे ॥ ए० २ ॥
एक मूला मांसूं जीव नीकली रे, अनंता तीर्थंकर आगें थाय रे।
जे दरव तीर्थंकर वांदें गुण विनां रे, तो मूलां ने क्यूं नही वांदें जाय रे ॥ ३ ॥
पृथवी आदि देइ छ काय नें रे, दरवे तीर्थंकर अनंत पिछांण रे।
जे दरव तीर्थंकर वांदें गुण विनां रे, तो क्यूं नही वांदे यांनें जांण रे ॥ ४ ॥
अनंता दरवे सिध छें छ काय में रे, सिध होसी ग्यांनादिक पांमी रिध रे।
जो दरव तीर्थंकर वांदें गुण विनां रे, तो क्यूं नही वांदें दरवे सिध रे ॥ ५ ॥
अनताइ छे साघ छ काय में रे, भावे होसी चारित आराध रे।
जो दरवे तीर्थंकर वांदें गुण विनां रे, तो क्यूं नहीं वांदें छे साघ रे ॥ ६ ॥
ए दरवे तीर्थंकर सिघ साघ कह्या रे, त्यांनें ओहीज न वांदें सीस नमाय रे।
इण लेखे उण री सरधा खोटी पडी रे, पिण आंधां नें समझ पडे नही काय रे ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

भरत चक्री नो हुवो डीकरो रे, ते महावीर सांमी नो जीव मरीच रे।
ते घर छोडी नें हुवो तिरडंडीयो रे, तिण री सावद्य करणी ने सरधा नीच रे॥ ८॥
ते दरवे तीर्थंकर हुंतो तिण दिनें रे, श्री रिषभ जिणेसर दीयो वताय रे।
तो रिषभ जिणेसर रा साघ साघव्यां रे, क्यूं नहीं वांद्या तिण रा पाय रे॥ ९॥
जो चोइथो करतो वांदें तेहनें रे, तिण सूं तो भेलो करणो आहार रे।
वले रिषभ जिणेसर सरिषो लेखवी रे, अें करता वंदणा नें नमसकार रे॥ १०॥
श्री रिषभदेव रा साघ साघव्यां रे, त्या नही वांद्यो निगुण मरीच रे।
जे कोइ दरब तीर्थंकर वांदसी रे, तिण री पिण सावद्य करणी नीच रे॥ ११॥
वले भरतजी वांद्यो कहें मरीच नें रे, ते पिण नहीं छें सूतर मांय रे।
भोलां ने विगोए पाड्या भर्म में रे, ते निगुणां नें वादें हरषत थाय रे॥ १२॥
वले दरबे तीर्थंकर हूंता किसनजी रे, त्यांनें नेम जिणंद दीयो वताय रे।
पिण नेम जिणंद रा साघ साघव्यां रे, त्या किसन रा क्यूं नहीं वांद्या पाय रे॥ १३॥
त्यां उलटा किसन नें पगे लगावीया रे, पिण गुण विण दरबे न वांद्यो कोय रे।
तो चोइथो करतां निगुणा किम वांदसी रे, हिरदें विमासी बुध सू जोय रे॥ १४॥
वले दरवे तीर्थंकर हुंती देवकी रे, वले रोहिणी बलभद्रजी जांण रे।
पिण नेम जिणंद रा साघ साघव्यां रे, नही वांद्या ते गुण विण दरब पिछाण रे॥ १५॥
यां तीनां नें उलटा पगे लगावीया रे, पिण गुण विण दरब न वांद्यो कोय रे।
तो चोइथी करता निगुण किम वांदसी रे, हिरदें विमासी बुध सूं जोय रे॥ १६॥
वले दरबे तीर्थंकर श्रेणक राय थो रे, त्याने वीर जिणेसर दीयों बताय रे।
पिण वीर जिणेसर रा साघ सावव्यां रे, त्यां श्रेणक रा क्यूं नही वांद्या पाय रे॥ १७॥
त्यां उलटा श्रेणक ने पगे लगावीया रे, पिण गुण विण दरब न वांद्यो कोय रे।
तो चोइथो करता निगुण किम वांदसी रे, हिरदे विमासी बुध सूं जोय रे॥ १८॥
मोटी सतीयां थी रांण्यां किसन री रे, त्यांरे तीर्थंकर वादण रो घणों हुलास रे।
जो वे दरबे तीर्थंकर वादें गुण विनां रे, तो किसन सू नहीं करती घरवास रे॥ १९॥
वले मोटी सतीयां श्रेणक नी राणीयां रे, त्यारे तीर्थंकर वांदण रो घणो हुलास रे।
जो दरबे तीथकर वादे गुण विनां रे, तो श्रेणक सूं नही करती घरवास रे॥ २०॥
त्यां भरतार जांणी नें कीधी विटंबणा रे, वले त्यांसू पिणं सेव्या कांम नें भोग रे।
ते नमोथुणं गुणतां किम वांदसी रे, ते तो कुगुरां री सरधा जांण अजोग रे॥ २१॥
किसनजी ने श्रेणक री रांणीयां रे, ते तो समदिष्टी चतुर सुजांण रे।
त्यां सामायक पोसां में वदणा करी रे, ते तो भावें तीर्थंकर देव जांण रे॥ २२॥
जे दरबे तीर्थंकर वांदे गुण विना रे, त्यानें गुण विण वादणा दरवे साघ रे।
जो उ कह दे दरबे साघ न वांदणा रे, उण ने उण री सरधा री न पडी लाघ रे॥ २

केइ आगमीये काले सुध साध होसी रे, केइ भागल हुवा चारित विराध रे।
ते दरब छें गुण विण ठाली ठीकरा रे, त्यां सगला नें कहीजें दरबे साध रे॥२४॥
जो दरबे साधां ने वांदे गुण विनां रे, तो यां सगला नें वांदणा करणी तांम रे।
उणरी सरधा रें लेखे कुण कुण वांदणा रे, हिवें दरबे साध रा कहुं छूं नांम रे॥२५॥
तो गोसाला कुपातर नें पिंण वांदणो रे, ते पिण आगमीयो काले साध थाय रे।
जो उ दरबे साध ने वांदे गुण विनां रे, तो गोसाला नें क्यूं नही वादें ताय रे॥२६॥
वले इग्यारें श्रेणक राजा रा डीकरा रे, ते कोणक नें कालादिक कुमार रे।
अें साध होसी आगमीया काल में रे, यांनें पिण वांदणा वारुंवार रे॥२७॥
जमाली नें कुंडरीकादिक जे हुवा रे, ते बिगड्या समकत नें संजम खोय रे।
जे दरबे साध नें वांदे गुण विनां रे, तो यांनें पिण वांदणा नीचो होय रे॥२८॥
इत्यादिक भाँगल नें हुवा कुसीलीया रे, त्यांरो दरब नखेपो न गयो तांम रे।
जे दरबे साध नें वांदें गुण विनां रे, तो यांनेंई वांदणा ले ले नांम रे॥२९॥
जो उ न वांदें यांने भाव सूं रे, तो उण रो उणहीज दीयों उथाप रे।
वले दरबे साध ने वांदे गुण विनां रे, त्यारें छें पोतें बोहला पाप रे॥३०॥
उण अस्त्री परणी सूं घरवासो कीयों रे, ते माता हुंती पाछिल भव मांय रे।
जे मांनें निकेवल गुण विण दरब नें रे, तो अस्त्री नें लेखव लेंणी मांय रे॥३१॥
उण नें जनम देइ ने मा मोटो कीयों रे, ते तो अस्त्री थी पाछल भव मझार रें।
जे मांने निकेवल गुण विण दरब नें रे, तिण लेखे मा नें गिण लेंणी नार रे॥३२॥
मा नें तो लेखव लेंणी अस्त्री रे, अस्त्री नें लेखव लेंणी माय रे।
जे माने निकेवल गुण विण दरब ने रे, उणरी सरधा रो ओहीज उंधो न्याय रे॥३३॥
इण रें सगलाइ जीव हुवा छें अस्त्री रे, सगलाइ जीव हुवा मा बेन रे।
जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे, तिण रा किण विध चलसी कूडा फेन रे॥३४॥
वले बेटो इण रे घरे आय जनमीयो रे, तिण रो पाछल भव बेटो हुंतो आप रे।
जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे, तो बेटा नें इण लेखें गिणणो बाप रे॥३५॥
इण रो बाप ते पाछल भव बेटो हुंतो रे, तिणरोइज बेटो हुवों आय रे।
जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे, तो बाप ने बेटो गिणणो इण न्याय रे॥३६॥
थोरी मेंणादिक सर्व जीवां तणो रे, त्यांरे बेटो हुंतो पाछिल भव आप रे।
जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे, इण लेखें सगला जीव इण रा बाप रे॥३७॥
जो उ सगला नें बाप न लेखवें रे, तो उणरेंइ लेखेइ सरधा कूड रे।
जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे, त्यांरो चिहुं गति में होसी घणो फितूर रे॥३८॥
वले काका बाबादिक सगपण तेहनें रे, सगला जीव हुवा अनंती वार रे।
जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे, ए किण विध करसी मूढ विचार रे॥३९॥

वले अरिहंत सिध साध इण जीव रे रे, ते हुवा न्यातीला वार अनंत रे।
जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे, तिणरे लेखें छे सगला एकण पंत रे॥४०॥
ओ कुण कुण मारे नें कुण कुण पूजसी रे, तिण रो कहतां तो कदेय न आवें थाग रे।
ते बूडा अग्यांनी निगुणा वांद नें रे, त्यांरो भव भव में होसी घणो अभाग रे॥४१॥
अें दरब नषेपो वांदें गुण विनां रे, पिण कांम पड्यां देवें उथाप रे।
पगलें पगले भूठ बोले घणों रे, ते कर रह्या कूडा मूढ विलाप रे॥४२॥
यांने गुण विण दरब वांदण रो कह्यां रे, जब तो उवें सूधो बोले एम रे।
कहे दरब छे तो पिण गुण मांहे नही रे, तिणनें म्हे सीस नमांवा केम रे॥४३॥
जे दरब निकेवल वांदें तेहनें रे, ते गुण रो सरणो लेवे किण न्याय रे।
आ खोटी सरधा यांरी अटकी घणी रे, जब साच बोले नें आया ठाय रे॥४४॥
ते कहिवा नें ठाय अग्यांनी आवीया रे, पिण मांहे नही भीजे मूरख मूढ रे।
त्यादे डक करडा लागा कुगुरां तणा रे, ते किण विध छोडें खोटी रूढ रे॥४५॥
ए दरब नषेपो मुख सूं कर रह्यां रे, तिणरी पिण समभ्क पडें नहीं काय रे।
जे भरमाया लागा छें कुगुरां तणा रे, ते प्रतख चोडें भूला जाय रे॥४६॥
केइ दरब तीर्थंकर काल अनाद रा रे, त्यांरी पिण गरज सरी नही काय रे।
तो वदणा करें तिणनें किम तारसी रे, ववेक आंणी समभ्को इण न्याय रे॥४७॥
जे दरबे तीर्थंकर छें केइ गुण विनां रे, ते पिण कहिवा नें दरबे नांम रे।
पिण धर्म नही तिणांनें वांदीयां रे, ते तिरण तारण नहीं छें तांम रे॥४८॥
गुण विण दरबे तीर्थंकर तेहसूं रे, किण विध टलसी आतम दोख रे।
जो त्यांनेंइ वांद्यां सूं सुध गति हुवें रे, तो जीव सगलाइ जाता मोख रे॥४९॥
जे दरबे तीर्थंकर वांदें गुण विनां रे, त्यांरे मूल न दीसें बोलें बंध रे।
ते फिरती भाषें बोलें कपटी थका रे, ते होय रह्या पूरा मोह अंध रे॥५०॥
गुणा करे तीर्थंकर देव छें रे, गुण करनें कह्या छें सिध साध रे।
त्यांरा गुण ने दरब तो एक हीज छें रे, त्यांने वांद्यां सूं पामें परम समाध रे॥ ५१ ॥
गुण ओर नें दरब ओर छें रे, तै तो छें कह वतलावण कांम रे।
कोइ भोलें मत भूलो गुण विण दरब नें रे, सुण सुण दरब रो चोखो नांम रे॥ ५२ ॥
केइ दरबा रा नांम कहिवा नें दीयां रे, केइ गुण निपन दरबां रा नांम रे।
ते कहिवारा दरब जांणो कहिवा भणी रे, पिण गुण निपन ते आवे कांम रे॥ ५३ ॥
इम कहतां कहतां पूरो हुवे नहीं रे, इण दरब नषेपा रो विसतार रे।
जे गुण विण थोथा दरब वादें नही रे, तिण सफल कीयो निश्चे अवतार रे॥ ५४ ॥

●

ढाल : ५

दुहा

नांम थापना दरब तणो, यां तीनां रो कह्यों विसतार।
ए निगुणा भाव रहीत में, कण नही रे लिगार॥ १॥
गुण विण नांम निकेवलो, गुण विण थापना आकार।
दरब नषेपों गुण विनां, ए तीनूं नषेपो असार॥ २॥
तिण कारण मोटों कह्यों, गुण सहीत नषेपो भाव।
च्यारूं नषेपो तिण भाव में, तिणरो विरला जांणे न्याय॥ ३॥
भाव नषेपो रूडी रीत सूं, ओलखजो नर-नार।
इण नें ओलखीयां विनां जीव रे, घट में घोर अंधार॥ ४॥
जे जे दरब रो नांम छे, नांम जिसा छें गुण तिण मांय।
ए भांव नषेपो श्री जिण कह्यो, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ५॥

ढाल

(पूज्य जी पधारो हो नगरी सेविया)

अनंता तीथंकर आगें हुसी वले, ते हिवडां रुले च्यांरू गति माहि हो। भ० ज०।
दरबे तीथंकर कहिजे तेहनें, पिण भावें एकंद्रीयादिक ताहि हो। भ० ज०।
भाव नषेपो भवीयण सांभलो*॥ १॥
तीथंकर ग्रहवासें वसतां थकां, जद भोगी पुरष विख्यात हो।
दरब तीथकर त्यानेंइ जिण कह्या, पिण भावें ते गृहस्थ साख्यात हो॥ भ० भा० २॥
तीथंकर घर छोडे नें चारित लीयो, पाले छें सुध आचार हो।
तो ही दरबे तीथंकर कहीजें तेहने, भावे हूआं मोटां अणगार हो॥ ३॥
केवल ग्यान दरसण उपनां पछें, थापे तीरथ च्यार हो।
भावे तीथकर कहीजे तेहने, समझो आंण विचार हो॥ ४॥
चोतीस अतसय कर नें परवस्या, वाणी छें गुण पेतिस हो।
तीथकर ना गुण सगला छें तेह में, ते तीथंकर भावे जगदीस हो॥ ५॥
अनत अरिहत आगे हुसी वले, हिवडां तो चिहुं गति गोता खाय हो।
दरबे तो अरिहत त्यानेइ जिण कह्या, पिण भावे एकद्रीयादिक माय हो॥ ६॥
घर छोडे सुधो पालें साधपणो, पिण हणीया नही करम च्यार हो।
त्यां लगे दरबे अरिहत कह्या तेहने, तें भावे हुवा सुध अणगार हो॥ ७॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

च्यार करम घन घातीया छें अरि, ए अरी हणीयां सूं अरिहंत हो।
भावे अरिहत कहीजें तिण समें, ओलख नें वांदो मतवंत हो॥ ८॥
अनंत सिघ आगमीये काले हुसी, ते तो हिवडा चिहुं गत गोता खाय हो।
दरबे सिघ कहीजे तेहने, पिण भावें एकंद्रीयादिक माय हो॥ ९॥
वले अरिहंत साध मुगत ने नीकल्या, त्यांरा भाव परमाणे गुण रिध हो।
पिण ज्यां लग मुगत न पोहतां त्यां लगें, त्यांनें दरबे कहीजे सिध हो॥ १०॥
सकल कार्य साभी मुगते गया, त्यां आठोंइ करम षय कीध हो।
त्यां आवागमण मेट्यो गति च्यार नों, त्यांनें भावें कहीजें सिध हो॥ ११॥
अनंत आचार्य उवभाय साध होसी, ते हिवडां नरकांदिक में तांम हो।
ते आचार्य उवभाय साध दरबे कह्या, भावे नेरइयादिक नांम हो॥ १२॥
वले आचार्य उवभाय साध घर में थकां, ते दरबे छें भाव रहीत हो।
त्यामें गुण परगट हुवा घर छोड्यां पछें, जब भावे छें गुण सहीत हो॥ १३॥
केइ आचार्य उवभाय साध भागल थया, ते दरबे छें गुण रहीत हो।
त्यांमें आगमीयें काले गुण परगट्यां, जद होसी वले भाव सहीत हो॥ १४॥
छतीस गुणां आचार्य परवस्या, पचीस गुणां उवभाय हो।
सत्तावीस गुणां सहीत साध कह्या, ए सगला भावे मुनीराय हो॥ १५॥
ए भावे अरिहंत सिघ साध कह्या, त्यांनें वांद्यां निरजरा धर्म हो।
निगुणा तीन नषेधा वांदीया, बंधें सात आठ उसभ करम हो॥ १६॥
जो मात पिता रा अंग सूं उपनों, ते भावे पुतर साख्यात हो।
मात पिता पिण भावे तेहनां, जीव ज्यां लग त्यांरो अंगजात हो॥ १७॥
ते पुतर मरे ओर जायगां उपनो, जब थारो नही भावे अंगजात हो।
अें पिण मात पिता नही भावे तेहनां, भावे सगपण नही तिलमात हो॥ १८॥
कोइ अस्त्री परणे ग्रहवासो करे, ते भावें वरतों नार हो।
ते पाछिल भव में इण री माता हूंती, ओ सगपण न रह्यों लिगार हो॥ १९॥
इम भाइ भतीजा काका बावादिक, बेन बेनोइ आदि पिछांण हो।
जे जे सगपण वरतमांन काल में, ते भावे सगपण जांण हो॥ २०॥
भावे सगपण जे जे संसार में, आवे गुण परमांणे कांम हो।
दरबे सगा सगलाइ एक एक रे, त्यांरा कुण कुण कहीजे नांम हो॥ २१॥
भावे सगपण बीतां पछें तेहने, भावे ज्यूं अर्थ न आय हो।
दरब छे तो पिण गुण मांहे नही, तिण सू गरज सरे नही काय हो॥ २२॥
सगलाई जीव छे दरबे नेरीया, पिण भावे तो नारकी मभार हो।
तिहां छेदन भेदन खेतर वेदना, ते खाये अनंती मार हो॥ २३॥

जे देवता होसी आगमीया काल में, ते दरबे देवता पिछांण हो।
भवणपती वंतर जोतकी वेमाणीया, त्यांनें भावे देवता जांण हो॥ २४ ॥
नारकी आदि चोवीसोइ डंडक मझे, तिहां जीव उपनों जाय हो।
जे भावे तो कहीजें वरतें तेहवो, ते जोवो सूतर मांय हो॥ २५ ॥
अणघडीया रूपा नें दरबे रुपीयो कह्यों, तिण रो घडे आकार तेह हो।
पछें उपर सीको दीयो चलण हुवें जेहवो, जब भावे रुपीयो एह हो॥ २६ ॥
सूत पूंणी नें दरबे कपडो कह्यो, ते गुण विण तिण रो नांम हो।
भावे कपडो कहीजे वणीयां पछें, आवें पेहरण रे कांम हो॥ २७ ॥
इत्यादिक भाव नषेपा अनेक छें, ते पूरा केम कहिवाय हो।
पिण इण अणुसारे बुधवंत समझ ने, अटकल लेजो न्याय हो॥ २८ ॥

ढाल : १

दुहा

दुनीयां में भोलप घणी, ते कही कठा लग जाय।
अर्थ अनर्थ धर्म कारणें, हण रह्या जीव अथाय ॥ १ ॥
अर्थे हणें ते आठां कारणां, आतमा[1] न्यात[2] घर[3] परिवार[4]।
मित्र[5] नाग[6] भूत[7] नें जक्ष[8] यांरो, कह्यो घणो विसतार ॥ २ ॥
आठां कारणां विण हणें, ते अकल विना वेफांम।
ते अनर्थ डंड श्री जिण कह्यों, छ काय हणे विण काम ॥ ३ ॥
देव गुर धर्म कारणे, जांणें जीव हण्या छे धर्म।
धर्म हेते हणें छे इण विधे, ते भूला अग्यांनी भर्म ॥ ४ ॥
अर्थ अनर्थ धर्म कारणे, सगले ठांमे हण रह्या प्रांण।
ते दया किसी ठोर पालसी, अे मूढमती अयांण ॥ ५ ॥
जे हिंसा धर्मी जीवडा, त्यांरे उदे मिथ्यात अग्यांन।
त्यांरो छ काय मारण तणो, रहे निरंतर ध्यांन ॥ ६ ॥
देव गुर धर्म कारणे, किण विध हणे छ काय।
त्यांरी खोटी सरधा परगट करूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[देशी—विछियानी]

अरिहंत देव री करे थापना, हण रह्या जीव छ काय जी।
देव काजे हणें जीव किण विधे, ते सांभलजो चित ल्याय जी।
जीव मारें ते धर्म आछो नही* ॥ १ ॥
ते तो देवलादिक करावतां, लगावे हजारां दाम जी।
धन खरचे पूजा कारणे, वले करे अनेक हगांम जी ॥ जी० २ ॥
पथर खांन सूं काढे मंगावतां, तस थावर मरे अनेक जी।
त्यांरो लेखो करो घट भितरे, कोइ बुधवंत आंण ववेक जी ॥ ३ ॥
पथर फोड्या पृथवीकाया मरे, पांणी घालें चूनादिक मांय जी।
वायुकाय मरे लेतां मेलतां, टांची लागां उठें तेउकाय जी ॥ ४ ॥
वनसपति नें तस जीवडा, गाडादिक हेठें चीथ्या जाय जी।
नींव देइ देवल चूणतां थकां, तठें पिण मरें जीव छ काय जी ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

चूनो बाल उपर देतां थकां, तिहां पिण मरें जीव अथाग जी।
अनंता जीव मारे देवल कीयों, ओ तो नहीं छें मुगत रो माग जी॥ ६॥
देवल करावतां हिंसा हुइ, ते तो पूरी केम कहवाय जी।
पछें पूजादिक करावतां, नित रा नित मारें छ काय जी॥ ७॥
कठें टांची वाजें छें निरंतर, नित नित मारें पृथवीकाय जी।
त्यांनें दुख उपजें छें तिण समें, घणी अतुल वेदना थाय जी॥ ८॥
नित पांणी ढोलें न्हवरावतां, अग्न मारें दीवो उजवाल जी।
नितका वाउकाय मारें घणां, कूट कूट मजीरा ताल जी॥ ९॥
नित नित काची कलीयां तोड नें, माला गूंथें चढावें आंण जी।
दीवादिक सूं मरें पतंगीया, तसकाय रो करें घमसांण जी॥ १०॥
इण विध छ काय नें मारवा, करें छें नित का संग्राम जी।
वले कहें म्हांनें पाप लागो नहीं, हणीयां अरिहंत देव रे कांम जी॥ ११॥
आवें दया पालण रो पगथीयो, तिथ परव पजूसण मास जी।
ते तो तिण दिन जीव मारें घणां, करें अनेक जीवां रो विणास जी॥ १२॥
वले सतर भेदे पूजा रचें, तिणरो मांडें घणों विसतार जी।
तठें दया तणो सींचो नहीं, करें छ काय रो संघार जी॥ १३॥
वले बांधें पगां रे घूघरा, हाथ में ले मजीरा ताल जी।
ते तो गावें वजावें कूदता, करें छ काय रो खेंगाल जी॥ १४॥
देव काजें हणें जीव इण विधें, तिण में मूल न जांणें दोख जी।
जांणें लाभ हुवो जिण धर्म नो, तिण सूं नेडी छें अविचल मोख जी॥ १५॥
इत्यादिक देवल काजे हणें, तिणरो कहितां न आवे पार जी।
हिवें गुर काजें हणे जीव नें, ते सांभलजो विसतार जी॥ १६॥
देव रें काजें देवल करवंता, तस थावर लूंट्या प्रांण जी।
तिम गुर काजें थांनक कीयां, हुवें छ काय रो घमसांण जी॥ १७॥
थांनक करावतां हिंसा हुइ, ते तो देवल नी परें जांण जी।
छ काय मारें छें तिण विधें, तिण री बुधवंत करजो पिछांण जी॥ १८॥
वले बांधें पडदा परेच नें, चंदरवा तातादिक आंण जी।
इत्यादिक थांनक करें कारणें, हणें तस थावर रा प्रांण जी॥ १९॥
खीर खाड फीणा रोट्यां करें, पांणी उकाले भर भर ठांम जी।
ओर वसत अनेक करें घणी, गुर नें प्रतिलाभण कांम जी॥ २०॥
आहार पांणी आदिक निपजांवतां, करें छें काया रो विणास जी।
पछें तेड वहरावें तेहनें, वले करें मुगत री आस जी॥ २१॥

इत्यादिक गुर काजें हिंसा करे, ते तो पूरी केम कहिवाय जी।
धर्म काजें हिंसा करें जीव री, ते सांभल जो चित लाय जी ॥ २२ ॥
करे उजवणा नें पारणा, वले सांह्मी वछल जांण जी।
त्यांनें नहुत जीमावा कारणे, करें छें काय रो घमसांण जी ॥ २३ ॥
वले धर्म काजें धूंकल करें, संघ काढें ले जावें जात जी।
चोमासादिक में जातां आवतां, करें तस थावर री घात जी ॥ २४ ॥
तप माड्यो ते पूरो हूआं पछें, जीमण करें लोक जीमाय जी।
वले लाडू आदिक करें घणां, ते तो हण हण जीव छ काय जी ॥ २५ ॥
वले समदड होइ दान दें, उपर वाडा रा फल दें जांण जी।
आबादिक फल नीं चोवीसी दीयें, इत्यादिक दांन पिछांण जी ॥ २६ ॥
हणें अर्थे अनर्थे जीव नें, ते तो भारी हुवें बांधे पाप जी।
धर्म हेतें हणे छ काय नें, ओ तो कुगुर तणो परताप जी ॥ २७ ॥
पंखी आल्ला घालें देवल मझे, इंडा मेल वसें तिण मांय जी।
ते निजर पडे कुगुरां तणी, तो आला दें तुरत पडाय जी ॥ २८ ॥
केइ इंडा पखी जीवां मरें, केइ उड भागें आकास जी।
त्यामें धर्म परूपें पापीया, करावें जीवां रो विणास जी ॥ २९ ॥
अनार्य आवें देस उपरें, जब करे अकार्य कांम जी।
दुख उपजावें रांक गरीब ने, फिर फिर मारें नगर नें गांम जी ॥ ३० ॥
तिम कुगुर अनार्य सारिखा, त्यांरा दुष्ट घणां परिणांम जी।
ते पिण गामां नगरां फिरता थका, मरावें पंखीया रा गांम जी ॥ ३१ ॥
अनार्य देस मारे गयां पछे, वले गांम नगर वसें आंण जी।
कदे अनार्य फेर आवे तिहां, तो वले मार करे घमसांण जी ॥ ३२ ॥
ज्यूं कुगुर विहार कीयां पछे, पंखी फेरें आला घाले लाग जी।
वले कुगुर आवे तिण गांम में, जब पंख्यांरो जांणों अभाग जी ॥ ३३ ॥
मोटां विरद महाजन रा कुल मझे, वाजे जीव दया प्रतिपाल जी।
पिण कुगुरां तणा भरमावीया, पाडे पंखी जीवां रा आल जी ॥ ३४ ॥
अनार्य गांम नगर मार्यां पछे, कोइ आणे मन पिछताप जी।
कुगुर जीव मराय हरषत हुवें, त्यारे हिंसा धर्म री थाप जी ॥ ३५ ॥
अनार्य करे कतल जीवां तणी, ते पिण फेरे दुहाइ वेग जी।
कुगुर जीव मरावण नित नवा, त्यारो कठेय न दीसें थेग जी ॥ ३६ ॥
अनार्य विचें तो कुगुर वुरा, त्यांरी मूरख मांनें वात जी।
ते तो धर्म जांणें जीव मार नें, ओं तो करलों घणों छें मिथ्यात जी ॥ ३७ ॥

कुगुर कहें हिंसा कीयां विनां, धर्म न होवें कोय जी।
पोतें त्याग कीयों हिंसा तणों, त्यांनें धर्म किहां थी होय जी॥ ३८॥
जो हिंसा कीयां धर्म नीपजें, तो गृहस्थ होय जावें निहाल जी।
पिण साधां नें हिंसा करणी नहीं, त्यांरो होसी कुण हवाल जी। ३९॥
जीव मार्‍यां में धर्म कहें, अं तो कुगुर तणा छें वेण जी।
त्यांनें वादें पूजे गुर जांण नें, त्यांरा फूटा अभितर नेंण जी॥ ४०॥
जीतव्य नें परसंसा हेतें हणें, वले मांन वडाइ कांम जी।
हणें जनम मरण मूंकायवा, वले दुख दूरा करवा तांम जी॥ ४१॥
मारें छ कारणां छ काय नें, त्यांरे अहित रो कारण साख्यात जी।
धर्म हेतें हणें तिण जीव रे, समकत जाय आवें मिथ्यात जी॥ ४२॥
ए छ कारणे हिंसा कीयां, वधें आठ करम गांठ पूर जी।
निश्चे मोह नें मार वधे घणी, नहीं वरतें नरक सूं दूर जी॥ ४३॥
ए छ कारणा हिंसा करें, ते तो दुख पांमें इण संसार जी।
ए आचारांग पेंहला अधेन में, छ उदेसां कह्यों विसतार जी॥ ४४॥
केइ समण माहण अनार्य थका, करें हिंसा धर्म री थाप जी।
कहें प्रांण भूत जीव सत्व नें, धर्म हेतें हण्यां नही पाप जी॥ ४५॥
एहवी उंधी परूपें तेहनें, आर्य साध बोल्या केम जी।
तुम्हे भूंडो दीठों सांभल्यो, भूंडो मांन्यो भूंडो जांण्यो एम जी॥ ४६॥
जीव मार्‍यां रो दोष गिणें नही, ए तो वचन अनार्य रो जांण जी।
एहवा मूढ मिथ्याती दुरमती, त्यांरी सुध बुध नही ठिकांण जी॥ ४७॥
कोइ हिंसा धर्मी नें इम कहें, थांनें मार्‍यां हुवें धर्म कें पाप जी।
जब कहें मोंनें मार्‍यां पाप छें, साच बोली सुधी करें थाप जी॥ ४८॥
जो थांनें मार्‍यां रो पाप छे, तो इम सर्व जीव मार्‍यां जांण जी।
ओरां नें मार्‍यां धर्म परूप नें, थे कांय बूडो कर कर तांण जी॥ ४९॥
आचारांग चोथा अधेन में, बीजें उदेसें ए विसतार जी।
हिंसा धर्मी अनार्य तेहनें, कीधा जिण मारग सूं न्यार जी॥ ५०॥
धर्म होसी एकेंद्री मारीयां, तो बेंद्री मार्‍यां पाप न थाय जी।
इधके मार्‍यां इधको धर्म छें, उण री सरधा रो ओहीज न्याय जी॥ ५१॥
जो एकेंद्री मार्‍यां पाप छें, तो बेंद्री मार्‍यां पाप वसेख जी।
इधके हण्यां इधको पाप छें, इम जिण धर्म साह्मो देख जी॥ ५२॥
केइ हिंसा धर्मी चोडें कहें, हिंसा कीयां विण नही हुवें धर्म जी।
केइ चोडें न कहें कपटी थका, साचो कहितां आवें सर्म जी॥ ५३॥

केइ दया धर्मी वाजें लोक में, चालें हिंसा धर्मी री - रीत जी।
ते पिण छें तिण हीज पांत रा, बतलायां बोलें विपरीत जी ॥ ५४ ॥
सूतर सिधंत में इम कह्यो, जीव मार्‍यां सूं लागें पाप जी।
नही मार्‍यां पाप लागे नही, श्री जिण - मुख भाख्यो आप जी ॥ ५५ ॥
वले देहरा प्रतिमा करावतां, जीव हण रह्या पृथवीकाय जी।
त्यांनें मंद बुधी श्री जिण कह्या, दसमें अंग पेंहला अधेन मांय जी ॥ ५६ ॥
वले रुद्रमति कही तेहनी, ते तो जढ मूढ घणो अतंत जी।
ते दूरंत पंत लखण रो धणी, हिंसा धर्मी ने कह्यो भगवंत जी ॥ ५७ ॥
जीव हिंसा करें तेहनें, ओलखायो श्री जिणराय जी।
हिवें हिंसा धर्मी रा फल कहूं, ते सांभलजो चित ल्याय जी ॥ ५८ ॥
केइ हिंसा धर्मी जीवडा, मरी उपजें नरक मझार जी।
तिहां छेदन भेदन पांमें घणी, वले खाअें अनंती मार जी ॥ ५९ ॥
मार खाअें नरक थी नीकलें, पडें तिर्यंच गति में जाय जी।
तिहां पिण दुख पामें अति घणां, ते तो पूरा केम कहिवाय जी ॥ ६० ॥
वले निगोद में पडीयां पछे, दुख पांमें अनंतो काल जी।
परिभमण करे संसार में, जांणें अरट तणी घड माल जी ॥ ६१ ॥
इम रुलतो रुलतो संसार मे, कदे मिनष तणो भव पाय जी।
ते कुण कुण पांमे अवस्था, ते सांभलजो चित ल्याय जी ॥ ६२ ॥
त्यांरी बालपणें माता मरें, वले पिता रो पडे विजोग जी।
सेंण सगां रो विछोहो पडें, मिलें दुसमण रो संजोग जी ॥ ६३ ॥
बालक थकां मरे बेटा बेटीयां, वले घर भागें अधगाल जी।
दुखे दुखे जनम पूरो हुवे, माथे आवे अणहुंतो आल जी ॥ ६४ ॥
केइ होय जाअें टूटा पांगुला, केइ गुगा बहरा जांण जी।
केइ होय जाअें आंधा दलद्री, रहे दिन दिन तांणा तांण जी ॥ ६५ ॥
सोलें रोग सरीरे उपजें, तिण सूं पांमे दुख संताप जी।
जनम मरण जरा दुख पांमें घणां, हिंसा धर्मी तणें परताप जी ॥ ६६ ॥
सुयगडायंग अधेन अठारमें, ए भाव कह्या जिणराय जी।
इम जांणें नर नारीयां, धर्म काजे म हणो छ काय जी ॥ ६७ ॥
देवल हिंसा निषेधी सांभले, केइ पाछो उत्तर दे आंम जी।
पाप हुवें तो नहीं लगावता, लाखां कोडां हजारां दांम जी ॥ ६८ ॥
आगे वडा वडेरा भोला नही, धन खरचें लगावें पाप जी।
किण री उठाइ उठें नही, म्हांरा वडा वूढां री थाप जी ॥ ६९ ॥

आगें सिव मारगी हुवा घणां, ज्यांरो जोवो पुरांणे विचार जी।
त्यां पिण लाखां कोडां लगावीया, कराया देवल हरदुवार जी ॥ ७० ॥
आगे वडा वडेरा तुरकां तणा, मोटीं कराइ मसीत जी।
त्यां पिण लाखां कोडां लगावीया, त्यांरी पिण छें आहीज रीत जी ॥ ७१ ॥
ग्यांनी सिवी नें मुसलमांन रे, सगला वडां री आ रीत जी।
सगळा लाखां कोडां लगाय नें, कराया देवल आदि मसीत जी ॥ ७२ ॥
ओर देवल मसीत करावीयां, त्यांनें पाप बतावें पूर जी।
जिण रा देवल कीयां तेहनें, धर्म कहें ते एकंत कूड जी ॥ ७३ ॥
धर्म होसी तो सगला नें धर्म छें, पाप होसी तो सगला नें पाप जी।
ए लेखो कीयां तो लड पडें, खोटी सरधा री करवा थाप जी ॥ ७४ ॥
आप रा देवल री करें थापना, ओर देवल देवें उथाप जी।
पिण धर्म नही हिंसा कीयां, कोइ मत करो कूड विलाप जी ॥ ७५ ॥
दया धर्म छे जिणवर तणो, तिण में जीव न हणवो कोय जी।
जीव मार्‍यां धर्म न नींपजें, प्रवचन सांह्मो जोय जी ॥ ७६ ॥

रत्न : ८

निम्ब री चौपई

ढाल : १

दुहा

ठांणाअंग उवाइ उपंगमें, निन्व नो आचार।
वले सुयगडाअग तेरमें, अर्थ तणो विसतार॥ १ ॥
श्री वीर तणा सासण मझे, निन्व चाल्या सात।
त्यांरी सरधा नांम नगरी भणू, ते सुणजो विख्यात॥ २ ॥

ढाल

[राग—सल कोई मत राखजो]

जे कारज करवा माडीयो, काइ कीधो ने काइ करणो रे।
कीधा ने मूल मांने नही, भारी करमें न कीधों निरणो रे।
सरधा सुणो निन्वां तणी* ॥ १ ॥

ए जमाली[1] सिष्य भगवान रो, ओ सुध सरधा थी भागो रे।
वीर थकांइज विगटीयों, सावथी नगरी ने वागो रे॥स० २॥

असष प्रदेसी जीव छे, वीर सगले चेतन भाख्यो रे।
ए प्रभु वचन उथाप ने, एक प्रदेस ने जीव दाख्यो रे॥ ३ ॥

ए तीसगुत्त[2] निन्व दूजो, नगरी राजग्रही जाणो रे।
तिण चेतन दरब न ओलख्यो, पड गयो उलटी ताणो रे॥ ४ ॥

सजमादिक मे सका पडी, त्यां मांहोमां बंदणा छोडी रे।
साधा में सरधे देवता, ते नमें नही कर जोडी रे॥ ५ ॥

सुध ववहार उथापीयों, करम उदे वात विगडी रे।
ए आसाढ[3] निन्व तीजों, ते हूओ सेवीया नगरी रे॥ ६ ॥

नरकादिक च्यारूं गतां, थोडी थोडी घट जासी रे।
छेहडो आसी सर्व जीव रो, ओ संसार सूनों थासी रे॥ ७ ॥

मिथला नगरी ने मझे, परगइ मन मे भातो रे।
विछेद सरध्यो संसार नों, ए आसमित्त[4] निन्व चोथो रे॥ ८ ॥

संपराय इरियावही आद दे, एक समें किरिया दोय लागे रे।
विगट्यो बोल अनेक सू, परूप दी लोकां आगे रे॥ ९ ॥

ए गगे[5] निन्व पांचमा तणी, उत्पति. उलका तीर नगरी रे।
एक समे किरिया दोय थापतां, समकत सरधा विगडी रे॥ १० ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

जीव अजीव दोनूं जिण कह्या, तीजी रास तेरासीयें थापी रे।
बोध बीज विणासीयो, संकीयो नहीं मूरख पापी रे॥ ११ ॥
अंतरंजी नगरी मझे, ओ हुव गयो समकत भठो रे।
तीन रास परूपी ताण नें, ए छलूक[6] निन्व छठो रे॥ १२ ॥
खीर नीर ज्यूं आठोंइ करम छे, जिन कह्या लोलीभूतो रे।
ते कांचूवा नी परें करम नें, ओ उंधी सरध विगूतो रे॥ १३ ॥
दसनपुर नगरी तिहां, ते गोष्ठामाहिल[7] जांणो रे।
ए सातांइ निन्वां तणी, सरधा एह पिछांणो रे॥ १४ ॥
ए सात निन्व तो हुय गया, वले हुसी त्यांरी केडायत रे।
सरधा परगट कीयां तेहनीं, सुण नें हुवा रलीयायत रे॥ १५ ॥
जे आचार में ढीला पड्या, सुध सरधा थी पिण चूका रे।
भव जीवां नें देखी समझता, तो कर लोकां आगें कूका रे॥ १६ ॥
पाखंडीयां सूं मिल गया, सावां सूं अंतर देखो रे।
केडें चालें लोक रे, ए प्रतख निन्व देखो रे॥ १७ ॥
पूरा दांन दया नहीं ओलख्या, घालें अणहूंता घोचा रे।
सुध सावां नें निन्व कहें, ए कुगुरां भाल्या चोचा रे॥ १८ ॥
गोसाले आद्रक कुमार पें, वीर में दोष बताया रे।
संका नहीं आंणी भूठ री, कूडा गोला चलाया रे॥ १९ ॥
आद्रक कुमार उत्तर दीयां, तब पाछा जाब न आया रे।
कुल्ट करें घट भितरें, ओर पाषंडीयां नें लगाया रे॥ २० ॥
इम अजूणाइ काल में, नहीं न्याय मेलग री नीतो रे।
लोकां सूं करें लगावणी, त्यां लीधीं गोसाला री रीतो रे॥ २१ ॥
महाबरतां री चरचां कीयां, पगला मूल न मांडे रे।
सरणो लीयो संसार नों, भेष ले जिण मारग भांडे रे॥ २२ ॥
ग्यांन दरसण चारित तप विनां, धर्म बतावण लागा रे।
संके नहीं सावद्य बोलतां, ते बरत विहूणा नागा रे॥ २३ ॥

ढाल : २

दुहा

वंस गयो पांच निन्वां तणो, प्रसिध न सुण्यों कोय।
दोय तणा परगट हूआं, सांभलजो सहु लोय॥ १ ॥
दो किरिया निन्व पांचमो, छठो तेरासीयो जांण।
त्यांरा केडायत उठीया, प्रतख देखो अहलांण॥ २ ॥
माहोमांही निन्व कहे, ते रागा घेखो जांण।
लखणां कर ओलखाय दे, ते डाहा चतुर सुजांण॥ ३ ॥
कहूं थोडीसी वानगी, तेरासीया नी वात।
भव जीवां ने प्रति बोघवा, काढण मूल मिथ्यात॥ ४ ॥

ढाल

[देशी—पूजजी पधारो हो नगरी सेविया]

जीव अजीव दोनूंइ जिण कह्या, तीजी वस्तु न काय हो।
तीजी रास परूपी तेरासीये, तो निन्व कह्यो जिण राय हो।
निन्व तेरासीया केडायत ओलखो* ॥ १ ॥
धर्म अधर्म जिणेसर भाखीयो, तीजों पंथ न कोय हो।
तीन परूपे ते निन्व जांणजो, छलूक छठा जिम होय हो॥ नि० २ ॥
मिश्र पख ने तो मिश्र धर्म कहे, तिण रो न पायो भेद हो।
विरत इविरत दोनूं न्यारी कीयां, कुड कुड पांमे खेद हो॥ ३ ॥
सुयगडाअंग अधेन अठारमें, श्रावक धर्म विरत वखांण हो।
इविरत रही ते अधर्म जिण कही, तिण मे मांडी तांण हो॥ ४ ॥
इविरत सेवाया सेवीया भलो जांणीयां, तीनूंइ करणां पाप हो।
एहवो भगवंत वचन उथाप ने, कीधीं छे मिश्र री थाप हो॥ ५ ॥
सर्व विरत छे धर्म साधां तणो, देस विरत श्रावक जांण हो।
ए दोनूंइ धर्म मे जिणजी री आगना, तिण री न करे पिछांण हो॥ ६ ॥
तीजा गुणठांणा ने मिश्र धर्म कहे, भोलां ने दीयां भरमाय हो।
नाख्यां मोह मिथ्यात री जाल में, हिवे साभलों तिण रो न्याय हो॥ ७ ॥
साची सरधा तो समकत माहिली, तिण सूं न लागे करम हो।
कायक मिथ्यात रह्यो घट भितरें, तिण मे नहीं जिण धर्म हो॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ए दोनूं सरधा घट में जूजूइ, जूओ जूओ तिण रो सभाव हो।
समिमिथ्या दिष्टी तो समचें कह्यो, ए तीजा गुणठांणा रो न्याव हो॥ ९ ॥
मिश्र भाषा नें मिश्र धर्म कहे, एहवो चलायो भूठ हो।
करम बंधे इण थी महामोहणी, जो बोलें सभा में आकूट हो॥ १० ॥
तीसांइ बोलां बंधे महामोहणी, धर्म, रो अंस न कोय हो।
जो गुणतीस बोलां मे मिश्र न नीपजें, तो एकण में किम होय हो॥ ११ ॥
अराधवी विराधवी मिश्र भाषा कही, भूला तिण रें भर्म हो।
वीर कही छें बोलण आँसरी, पिण न कटें तिण सूं करम हो॥ १२ ॥
साची भाषा पिण सावज बोलतां, बंध जाय सात आठ करम हो।
ते साची भाषा ने कही छे आराधवी, तिणमेंइ न दीसे धर्म हो॥ १३ ॥
तो मिश्र भाषा में धर्म किहा थकी, भोलेइ म करजों तांण हो।
भूठ री नेश्राय साचो नीकलें, ते साच ही सावद्य जांण हो॥ १४ ॥
जो करमा वस इतरी समभ पडे नही, तो भेल सभेल म जांण हो।
साच नें भूठ दोनूइ न्यारा करो, सावद्य निरवद पिछांण हो॥१५॥
जमीकद खाधां खवाया भलो जाणीयां, तीनूंइ करणां पाप हो।
ए चोडे मारग श्री जिणराज रो, ते पिण दीयों छें उंथाप हो॥१६॥
मिश्र परूपें अग्यानी एह में, भोलां ने वतावें भेद हो।
खवाये तिरपत कीयो पर जीव नें, ए सरधो धर्म उमंद हो॥१७॥
करम वधास्या छें तिण जीव रें, जमीकंद खवाय हो।
जीव अनंता मार जूंहर कीयों, मिश्र किहां थी थाय हो॥१८॥
एक डबोयो अनंता मार नें, ते कुगुर जांणें उपगार हो।
ए प्रतख पाप लागों दोनूं विधें, तिणरोइ घट में अंधार हो॥१९॥
काचो पाणी छांण्या मिश्र धर्म कहे, ते भूठा चोज लगाय हो।
के धर्म हूओ तस जीव न्यारा कीयां, आ दया रही घट मांय हो॥२०॥
तस री दया ने घात पांणी तणी, मिश्र वतावे एम हो।
हिवे साध कहे ते भवीयण सांभलो, एक मना धर पेम हो॥२१॥
एक गले बीजो अणगल पीये, ते बुधवंत करसी नीवेर हो।
पांणी रो पाप दे.यां ने बरोबर, तस माहे पडीयो फेर हो॥२२॥
पाणी छाण्यां घात हूइ अपकाय री, देख दीयों तस ने गोताय हो।
ठिकांणा छुडाया अबला जीवां तणा, ते मिश्र किहां थी थाय हो॥२३॥
अणगल पीयां तो पाप लागें घणो, गल पीया अल्प करम हो।
थोडों घणो छे पाप दोनूं भणी, नही छेरवीयां छें धर्म हो॥२४॥

मिश्र अणहुंतो उठाय बेठो कीयो, विगटाया वोल अनेक हो।
ए बांकी गति छे मोह करम तणी, तिण सूं न छूटे टेक हो ॥२५॥
चाले चाल असल निन्वां तणी, ओरां सिर दे आल हो।
निरणो न काढे समता भाव सू, बोले आल पंपाल हो ॥२६॥

ढाल : ३

दुहा

हिवें पांचमां निन्व तणा, ओलखजो परिवार।
ते विगडायल जिण भेष में, ते न कहें धर्म विचार॥ १॥
कहें दया आंण ने जीव मारीयां, हिवें छें धर्म नें पाप।
ए करम उदे पंथ काढीयो, भगवंत वचन उथाप॥ २॥
पाप कीयां धर्म न नींपजे, धर्म थी पाप न होय।
एक करणी में दोय न नींपजें, ए संका म आंणो कोय॥ ३॥
धर्म अधर्म करणी जू जूइ, ते मांहोमांहीं नहीं मेल।
दो किरिया निन्व केडायतां, कर दीधी भेल सभेल॥ ४॥
एक सावद्य करणी करें तेह नें, धर्म अधर्म दोय बताय।
कुण कुण चाला चालव्या, ते सुणजो चित्तलाय॥ ५॥

ढाल

[देशी-धिग धिग काम विडम्बणा]

एक सावद्य करणी कीयां थकां, धर्म अंस न होय रे।
ए अरिहंत वचन मांने नहीं, ते सावद्य में सरधें दोय रे।
दोय किरिया निन्व केडायत सुणों* ॥ १॥

हंस्यादिक अठारेंइ सेवीयां, तीनूंइ करणां पाप रे।
ए न्याय मारग जिणराज रो, ते निन्वां दीयों उथाप रें॥ दो० २॥

खरच आवरणी जीमणवार में, वले नहत जीमावें लोक रे।
त्यांने धर्म अधर्म दोनूं कहें, ते निन्व सरधा फोक रे॥ ३॥

छकाय नां जीव विणासीया, ए जिण भाख्यो नहीं धर्म रे।
वले विषे सेवारी पर जीव नें, दोनूं विध बंधीया करम रे॥ ४॥

कहें अवड नां सिष्य सातसो, अण दीधों लीधो नांय रे।
त्यां आगना ले पांणी लीयों, वले ओरां क्यूंनोया कांय रे॥ ५॥

वले आणद आदि दे श्रावकां, मांगे ल्याया आहार रे।
ते सरलबुधो था जीवडा, त्यां कांय विगोया दातार रे॥ ६॥

इम कहें विरुध परुपता, हस्या दिढावे मूढ रे।
हिवें एहनो विवरों सांभलो, छोडो मिथ्यात री रूढ रे॥ ७॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

किण ही सूंस लीयों सतगुर कनें, जाव जीव न परणूं नार रे।
मोंनें बाप परणावे तो परणीज सूं, इतरो राख्यों आगार रे॥८॥
बाप परणावे तेह ने, तो हरष धरें मन मांय रे।
तो उण री सरधा रें श्रावकें, बाप डबोयो कांय रे॥९॥
ज्यूं अंबड आणंद आदि श्रावकां, वेरागें कीयां पचखांण रे।
मांगण री इविरत पेंहलां हुंती, ते नवो पाप म जाण रे॥१०॥
जाचीयो नें अण जाचीयों, सचित अचित आहार रे।
सुभतो ने अण सुभतो, सगलोइ थो आगार रे॥११॥
वले पूछ्या ने विण पूछीयां, पाप करता न आंणता लाज रे।
ते विरत करी विण पूछीयां, ते इविरत टालण काज रे॥१२॥
जे जे आगार त्यागें दीयो, ते श्रावक नों छे धर्म रे।
बाकी रह्यों आगार सेवारीया, ते निश्चें बंधसी करम रे॥१३॥
ए आगार तो पेहलां हुंतो, नवो न सीख्यो कोय रे।
इविरत सिची पार की, ते धर्म किहां थी होय रे॥१४॥
लेवाल रें इविरत लेण री, दातार रें देण री जांण रे।
ए दोयां रे काल अनादरी, ते त्याग्यां थी निरवांण रे॥१५॥
वले कोइ अभिग्रह ले एहवों, हूं रनवन खेतमें जाय रे।
विण कहें विरख वाढूं नही, ते पूछी न्हाखें ढाय रे॥१६॥
इम हिज फल फूल चार नों, तस थावर जीव अनेक रे।
विण आग्या हणवो नहीं, सूंस लीयों आंण ववेक रे॥१७॥
इण अनुसारे बोल अनेक छें, सावद्य किरिया करे कोय रे।
जे अधर्म री देसी आगनां, तो आछा फल नही होय रे॥१८॥
अंबरना सिष्यां नें दीधी आगना, कहें खपे स भरलों नीर रे।
तिण हिंसा में सिर घालीयो, न सरायों तिण ने वीर रे॥१९॥
हिसा तणी आग्या दीयां, नफो म जांणों कोय रे।
ए निरणो न कीयो घट भितरें, ते गया जमारो खोय रे॥२०॥
वरसी दांन दीयो तीर्थंकरे, एक कोड नें आठ लाख जांण रे।
ए प्रतख सावद्य सुभे नही, पर गया उलटी तांण रे॥२१॥
सोनइया लीधा तिण ने कहे, हुओ छें एकंत पाप रे।
दीया तीर्थंकर तेह ने, दो किरिया दीधी थाप रे॥२२॥
धर्म अधर्म दोनूं कहे, सोनइया दीवां दांन रे।
पाप जांणें तो देता नही, ते एहवा आंणे तांन रे॥२३॥

इम कहे भोलां लोक नें, धर्म सूं दीयां भिरकाय रे।
हिवें साध कहें ते सांभलों, वरसी दांन रो न्याय रे ॥ २४ ॥
एक कनक दूजी कांमणी, त्याग्यां सिव सुख होय रे।
पेहला नें पकरावीयां, धर्म म जांणों कोय रे ॥ २५ ॥
जो नफो जांणें सोंनइया दीयां, तो ओरां डबोया कांय रे।
लेवाल नें भारी कीयां, ए कपट रो मारग नांय रे ॥ २६ ॥
जो सो सो सोनइया दीयां एक नें, तिण लेखें वांध्यो तू मार रे।
दिन रा मिनप हूआं एतला, एक लाख नें आठ हजार रे ॥ २७ ॥
एक वरस तणा तीन कोड नें, अठ्यासी लाख नें असी हजार रे।
एहवे उनमांने मांनव्यां, पाप लगायो अपार रे ॥ २८ ॥
ए जस महिमां देव वधारवा, ते समझों चतुर सुजांण रे।
ए सासती थित छें तेहनीं, उत्तर एह पिछांण रे ॥ २९ ॥
आठ सहंस नें वले चोसठ, कलसा ढोल्या भर नीर रे।
वाजंत्र अनेक आरंभ कीयां, दीख्या लीधीं जिण दिन वीर रे ॥ ३० ॥
ए सगलाइ सावद्य जिण कह्या, राखों सूतर परतीत रे।
महोछव दांन सिनांन तो, ए गृहवासा री रीत रे ॥ ३१ ॥
ग्यांन दरसण चारित तप विनां, सर्व करणी अधर्म जांण रे।
ज्यां श्री जिणधर्म न ओलख्यो, ते कर रह्या उलटी तांण रे ॥ ३२ ॥
तीर्थंकर सोनइया दीयां लोक नें, कहें हूओं छे पाप नें धर्म रे।
सुध आहार गवेषे नें भोगव्यो, कहे बांध्या उसभ करम रे ॥ ३३ ॥
सुध आहार दीयों भगवंत नें, धर्म कहे ते तो न्याय रे।
पाप लागो कहे भगवंत नें, ए प्रतख मुसावाय रे ॥ ३४ ॥
आप तिरे ओरां नें डबोय नें, आप डूबे ओरा नें तार रे।
ए दोनूं बोल विरुध छे, ते बुधवंत करसी विचार रे ॥ ३५ ॥

ढाल : ४

दुहा

सुयगडा अंग तेरमें, जथातथ छें भाव।
साध ने निन्वां तणों, कह दीयों भगवंत न्याव ॥ १ ॥
एक मारग कह्यों मोष रो, बीजों कह्यों ससार।
किरिया भली नें पाडवी कही, भेल न राख्यो लिगार ॥ २ ॥
निन्व पाषंडी बोटकादिक, ते उठ्या दिवस नें रात।
ते सूतर भणे जिण भाखीया, पिण गिर रह्या गूढ मिथ्यात ॥ ३ ॥
प्रबलपणो अहंकार नों, वले चालें उलटी रीत।
समाध मारग सेवे नही, ते अपछंदा अवनीत ॥ ४ ॥
श्री जिण मारग उथपें, भाषे कुमारग जेह।
निन्व पापडी त्यांने कह्या, वले सांभलजो विध तेह ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या मे]

विसुध निरदोषण मारग मुगत रा रे, ग्यांन दरसण चारित तप च्यार रे।
ते छोड ने परीया करें कदागरो रे, ए निन्वां री सरधा ने आचार रे।
त्यांने पाषडी निन्व जिण कह्या रे* ॥ १ ॥
ग्यान दरसण चारित तप विनां रे, जे धर्म कहें छें ते विपरीत रे।
वले जोड करे हिंसा धर्म थापवा रे, 'त्यारे केडें पिण डूबे कर परतीत रे ॥ २ ॥
सवर सूं रूके छें करम आवता रे, निरजरा सूं कटें आगला करम रे।
शेष कारज सगला संसार नां रे, तिण में पाषडी थापे धर्म रे ॥ ३ ॥
ग्यांन आगम मे संका आणता रे, पिडत वाजें मन मे अभिमान रे।
प्रश्न पूछ्या रो जाब नें उपजे रे, जब आणे अग्यांनी कूडा तांन रे ॥ ४ ॥
विनों करावण ने आगा घणां रे, म्हें पदवीधर छां मोटा अणगार रे।
सतावीस गुण सूं वरते वेगला रे, वले सरधा मे पूरो घोर अधार रे ॥ ५ ॥
केइ हीण आचारी कुगुर छोडनें रे, सुध सरधा ने पाले वरत रसाल रे।
त्यानें कहि ए निन्व मायावीया रे, दे दे अणहूंतो भूठो आल रे ॥ ६ ॥
एहवा असाध साध कहावता रे, कपट सहीत त्यांरी वात रे।
ते तो भमण करसी ससार मे रे, उतकष्टी अनती पांमें घात रे ॥ ७ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

केइ गुर कनें भण नें गुर नें गोपवें रे, केइ प्रसिध आचार्य रो ले नांम रे।
केइ भूठ बोले कहे हूं पोतें भण्यों रे, ए भारी करमां जीवां रा कांम रे॥ ८ ॥
उस्न्नादिक पाषंडीयां आगें भण्यों रे, पिण भूठ न बोले उत्तम जीव रे।
खोटा जाण ने त्यांनें छोडणा रे, ए न्याय मारग छेसिध गति नीव रे।
ए अरिहंत वायक सतकर जांणजो रे* ॥ ९ ॥

केइ सूतर सिधंत भणे अभवी कने रे, तोही पूछ्यां तो कहि दे तिण रो नांम रे।
पिण जांणे मिथ्याती तिण नें मूलगो रे, नही कोइ गुर चेला रो कांम रे॥ ए० १० ॥
सिधत भणायो अनन्ता जीव नें रे, अनन्ता आगें भणीयो सिधंत रे।
गुर ने चेलों हूओ सर्व जीव नों रे, साची सरधा विन न मिटी भ्रत रे॥ ११ ॥
गद्या मे घाल्यो चदन बावनो रे, ते भार तणो विभागी जांण रे।
जे किरिया मे हीण थका सूतर भणे रे, समकत विण थोथा मूढ़ अयांण रे॥ १२ ॥
कोइ भणे भणावे करवा नाम नां रे, केइ प्रसंसा मांन वडाइ हेत रे।
सूने चित परमार्थ पायो नही रे, ए बीज विण रहि गयो खाली खेत रे॥ १३ ॥
सुध साध पें घर छोडे सूतर भणे रे, आचार सरधा में देखे चूक रे।
तो कांण न राखे चेला गुर तणी रे, भागल जांणे तो जाअे मूक रे॥ १४ ॥
अजांणपणें कुगुर नें गुर करे रे, पिण ठीक पड्यां छोडें ततकाल रे।
त्यागी वेंरागी त्यांने जिण कह्या रे, ए सांसो हुवें तो सूतर संभाल रे॥ १५ ॥
वले क्रोध घणो बोलें अलखामणा रे, उपसम्यों कलहो करवा त्यार रे।
खिमा रो मारग छोडे उभर पड्या रे, ते पिण दुख पामें संसार रे॥ १६ ॥
कोइ भेपले हलका बोलें एहवा रे, मो तुल कुण छूं ग्यांन भंडार रे।
हूं जीवादिक नवतत रो निरणो करूं रे, हूं तपसी छूं उतकष्टों अणगार रे॥ १७ ॥
एहवा अहंकारी साध भेष में रे, त्यां दीयां नरकादिक जावा सूत रे।
अनेरा उत्तम साध ने श्रावकां रे, जांणें आकार मात बिबभूत रे॥ १८ ॥
कुंडा भरीया जल सूं लाखां गमे रे, चंदरमा रो सगले छें प्रतिबिब रे।
सुध साध श्रावक नें एहवा लेखवे रे, आ भाली पाषंडीयां भूठी भब रे॥ १९ ॥
ते मिरग ज्यू परीया छे कुड जाल मे रे, जे चारित लेनें करे अहंकार रे।
ते भमण करसी गाढा दुखीया थकां रे, इण भाव कूट संसार मभार रे॥ २० ॥
ए दिष्टंत सुलटा रों उलटों करें रे, साध नें कहें असाध एम रे।
ए हिज निन्व म्हां मांसूं निकल्या रे, सगलां नें गिणीया प्रतिबिंब जेम रे॥ २१ ॥
इम कहि कुगुरु कुब्द चलाय नें रे, साधां ने घाले निन्व मांय रे।
चंद्रमा[1] ने प्रतिबिब[2] निन्व[3] साध[4] रो रे, ए च्यारां तणो सुणजो भवियण न्याय रे॥ २२ ॥
कुंडा भरीया जल सूं लाखां गमे रे, चंद्रमा रो सगले छे प्रतिबिब रे।
मूर्ख जांणें गिरलूं चंद्रमा रे, पिण ते तों आकासें अंतर लंब रे॥ २३ ॥

*यह ऑकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

प्रतिबिंब ने जे कोइ मांनें चंद्रमा रे, ते तों कहिजें विकल समांन रे।
ज्यूं गुण विण सरधे साधु भेष ने रे, ते खूता मिथ्याती पूर अग्यांन रे॥ २४ ॥
प्रतिबिंब ने प्रतिबिंब कह्यां थकां रे, भूठ म लागो जांणो कोय रे।
सतावीस गुण विहुणा सांग नें रे, असाधु कह्यां थी दोष न होय रे॥ २५ ॥
साध री गुण री चरचा माडीयां रे, जब तो कांनी दे जाअे दूर रे।
घणां लिंग धार्‍या सूं भेलप करे रे, सुध साध ने निन्व कहिवा सूर रे॥ २६ ॥
घणां रे भरोसे कोइ रहिजो मती रे, सरधा नें चलगति मीठी जोय रे।
लोक भाषा माहिं पिण इम कहे रे, घी खाधो पिण कुलडो न गयो कोय रे॥ २७ ॥
कोइ साधा म्हासूं निकल भागल हुवे रे, केइ भागल छोडे ने हुवे छे साध रे।
वले थोडा घणां रो कारण को नही रे, सुध करणी सूं पांमे सदा समाध रे॥ २८ ॥
सुध साधां ने छोडे सरधा विगटीया रे, ते गिणजो पापडो निन्व मांहिं रे।
सुध सरधा भाले ने छोड्या भागलां रे, आचार पाले ते निन्व नांहिं रे॥ २९ ॥
पूजा सलागा उचा गोत ने रे, पाम्या छे जीव अनती वार रे।
जे वेरागे घर छोडे संजम लीयो रे, गरब छूटों तो खेवो पार रे॥ ३० ॥

●

ढाल : ५

दुहा

केरायत दोय निन्वां तणा, ओलखाया रूडी रीत।
हिवें जमाली रा परगट करूं, ते सुणजो घर पीत॥ १ ॥
श्री वीर तणा सासण मझे, निन्व हूअ ासात।
तिण मे प्रथम निन्व जमाली हूओ, तिण री विगडी सरधा वात॥ २ ॥
काई कीधों ने काई करणो अछे, ते प्रसिध चावी वात।
काई कीवा नें मूल मांने नही, तिण रे इण विध आयों मिथ्यात॥ ३ ॥
सावथी नगरी नां वाग मे, इण रे रोग उपनो आय।
जव इण सावां नें तेडी कह्यो, मांहरें करो संथारो जाय॥ ४ ॥
जव सावां करणो माड्यों साथरां, काई कीधो ने करें तिणवार।
जव जमाली साधां ने कहे, अजे कीयो के न कीयों सथार॥ ५ ॥
जव सावां कह्यो न कीयो करां छां साथरो, तव आयो जमाली चलाय।
इण पूरों न दीठो साथरो, तिण सू उवी विचारी मन माय॥ ६ ॥
भगवत कहे करवा माडीयो, तिण ने कीधो कहे साख्यात।
वले चलवा माड्यां ने चलीयो कहे, ते एकंत भूठी वात। ७ ॥
तिण भगवत ने भूठा कहें, पडवजीयों मिथ्यात।
तिणरा केडायत उठीयां, ते सुणजो विख्यात॥ ८ ॥

ढाल

[देशी—आ अगुकम्पा जिग आगन्या में]

कांई कीधा ने काई करणो छे वाकी, तिण कीधां कारज ने जे नही मांने।
इसडी सरधे ते जमाली रा केडायत, ते वुधवंत आगे किण विध रहसी छांने।
आ सरधा जमाली निन्व री* ॥ १ ॥
पांच सेर तणी रोटी करणी छे, तिण मे सेर तणी कीधी छें रोटी।
सगली कीधा विना कहे कीधी न कहणी, तिणरी पिण सरधा जावक खोटी॥ आ० २ ॥
चोवीस हाथ रो थांन वणवा माड्यो, तिण माहे वणीयो छे एक हाथ।
आखो वणीयां विनां कहे वणीयो न कहिणो, तिणरो पिण जांणजो ओहिज मिथ्यात॥ ३ ॥
घर हाट हवेली करवा मांड्यां, काई कीधा पिण न कीयां छे पूरा।
अधूरा कीयां ने कहे कीयां न कहिणा, त्याने पिण जांणजों जिणजी री सरधा सूं दूरा॥ ४ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

दस कोस तणें गामंतरें चाल्यों, कांई चाल्यो नें कांई चालणो सेप।
थेट पोहता विना कहे चाल्यो न कहिणो, आ पिण खोटी सरधा जमाली री टेक ॥ ५ ॥
कोइ मास खमण चोखे चित कीधो, तिण गुणतीसमे दिन एक खाधी रोटी।
जमाली रे लेखे मास खमण न भागों, तिण सूं जमाली री सरधा खोटी ॥ ६ ॥
लाय लागी नें लाय लागी नही कहिणी, पूरी बलीयां पछे कहें बलीयो ताय।
इण अनुसारे छे बोल अनेक, आ खोटी सरधा पूरी केम कहवाय ॥ ७ ॥
सुदंसणा भगवंत री बेटी, तिण वीर कने लीयो संजम भार।
तिणरें सरधा जमाली री आई, ते पिण हुइ जमाली री लार ॥ ८ ॥
ते आहार करती थी परेच बाधे नें, ते आर्यां सहीत बेठी थी मांय।
त्याने ढीक श्रावक समभावण काजें, अग्न सूं परेच ने दीधी लगाय ॥ ९ ॥
जब केइ आर्यां कहे परेच बलें छें, जब ढीक श्रावक बोल्यो छें एम।
परेच बली कह्या थारी खोटी हुवे सरधा, पूरी बली विनां बली कहो छों केम ॥ १० ॥
इम सुदंसणा सांभल नें डरपी, जमाली री सरधा छोडी खोटी जांण।
वीर कने सुध हुइ आलोए, प्राछित ले पाछी आई ठिकांण ॥ ११ ॥
आ प्रतख खोटी जमाली री सरधा, ते सरधा भेष धार्‌यां रे आई।
जमाली रा थकां भगवंत रा बाजें, ते पिण विकलां ने खबर न कांई ॥ १२ ॥
दोष सेव्यों सेवे नें सेवसी आगें, तिणरोई चारित सरधे नही भागो।
वले करम तणे वस उंधा बोले, कहे वरत न भागों पिण दोपण लागों ॥ १३ ॥
किण ही साध सावद्य किरतब कीधों, पांच महावरत में दोपण लागो।
जे जे होसी जमाली रा केडायत, तिणरो संजम सरधें नही भागों ॥ १४ ॥
हिंसा कीयां पेंहलो वरत भांगे, झूठ बोल्यां दूजो वरत भागों।
जमाली रा केडायत कहें भेप धारी, वरत भागों नही पिण दोपण लागों ॥ १५ ॥
अदत लीया तीजों वरत भांगे, विषे परिणांम आयां चोथो वरत भागों।
तिण भागां ने भागो न सरधें अग्यांनी, ते पिण जमाली रे केडें लागो ॥ १६ ॥
उपगरण मरजादा सूं इधका राखें, थानकादिक उपर ममता रही लागों।
बंधो करावें दीख्या मो आगे लीजें, तिणरो पांचमों वरत न सरधें भागों।
ते निन्वां जमाली रा केडायत* ॥ १७ ॥
किवाड जड्या दोप लागों न सरधे, लागों सरधें तोड वरत भागों न सरधें।
निसंक थकां पापी जडे उघाडें, रात दिवस रांक जीवां ने मरदे ॥ ते० १८ ॥
ठांम ठाम थांनक मांडी ने बेठा केइ, आधाकरमी केइ मोल रा लीधा।
त्यांरो साधपणो भागो नहीं सरधें, त्यां नरक सूं सनमुख डेरा दीधा ॥ १९ ॥
असणादिक नित एकण घर वेहर्‌यां, वीर कह्यों तिण नें अणाचारी।
केइ आहार पांणी नित धोवण वेहरें, तिण ने सरधें मूंड मुंव आचारी ॥ २० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

पुस्तक पांना वले लोट नें पातरा, सांनी करें साध मोल लरावें।
थोड़ो घणों त्यांने मोल वतावे, वले साध रो मूरख विडद धरावें ॥ २१ ॥
जीमणवार आरा माहें जांवें, वेंठी पांत मा सूं पातरा भर ल्यावें।
सूतर माहे वरज्यो तोही नहीं मांनें, वले लोकां मांहें साध ज्यूं पूजावें ॥ २२ ॥
गृहस्थ रें घरे मेलें पोथी पांना, वले पडिलेह्यां विनां राखें वरस छ मासों।
जीवां रा जाल जमें तिण मांहें, एहवा साध वाजें त्यांरो दुरगत वासों ॥ २३ ॥
श्री पारसनाथ तणी साधवीयां, दोय सो नें छ साधपणो विगारी।
ते भिष्ट हुइ हाथ पग धोई ने, त्यांने सावत्रीयां सरवें भेषधारी ॥ २४ ॥
त्या समकत सहीत साधपणो खोयो, समकत रही हुवें तो देवी हुवें नांहि।
समदिष्टी विमांणीक देवता हुवें छें, त्यानें साध सरधे ते जमाली रे माहि ॥ २५ ॥
भेषधारी भिष्ट भागल होय वेठा, ते आप मे दोषां रो पार न देखे।
त्यांरी विकलाई देख फिरे लोक त्यांसूं, त्यांने सावत्रीयां सरधे इण लेखें ॥ २६ ॥
एहवी भागल विराधक नें सरधे सावत्रीया, त्याने वांद्यां पूज्या कहें एकत धर्मो।
त्यांरा विनां वीयावच में धर्म थापें, ते भूला मिथ्याती एकंत भर्मो ॥ २७ ॥
सेलग राय ऋषी ढीलों पऱ्यो जद, उस्नो कुसीलीयो कह्यो भगवंत।
वीर कह्यों इसडो साध हुवें तो, उतकष्टो रुले तो काल अनंत ॥ २८ ॥
हेलवा निंदवा जोग कह्यो सेलग नें, तिणनें वांद्यां वंधे पाप करमो।
तिणरी वीयावच पंथक कीधी, तिण नें भेषधारी कहे छें धर्मो ॥ २९ ॥
उस्नादिक वाद्या नसीत रे माहें, च्यार महीनां रो प्राछित आवें।
उस्नादिक पांचूं दोष सेलग में पावे, तिण नें वांद्यां धर्म मिथ्याती वतावें ॥ ३० ॥
सेलग ने पारसनाथ तणी सावत्रीयां, यारा साधपणा सगला रा भागां।
यांरा पूरा भागां विण भागां न सरधें, त्याने समकत विहूणा कहिजें नागां ॥ ३१ ॥
याने कहि कहि नें कितरो एक कहिजे, यारी सरधा रो छेह न आवे वेगो।
याने वुधवत जांण लेसी थोडा में, यांरी खोटी सरधा नें भूठ रो ठेगो ॥ ३२ ॥

●

ढाल : ६

दुहा

भेषधारी विगडायल जैंन रा, ते भूला सूतर वांच।
उंधा अर्थ करें घणां, त्यांरो विकल मांने ले साच ॥ १ ॥
सुध साधां नें निन्व कहें, ले ले सूतर रो नांम।
पोतें केडायत निन्वां तणा, ते पिण खबर नही छें तांम ॥ २ ॥
त्यांरी सुध बुध तो चलती रही, तिण सूं बोले आल पंपाल।
त्यांरे न्याय निरणो घट में नहीं, तिण सूं भाषें अग्यांनी अलाल ॥ ३ ॥
निन्व कहिजें केहनें, किण नें कहिजें सुध साध।
समचें ओलखाउं दोनूं भणी, त्यांरी विरलां परसी लाध ॥ ४ ॥

ढाल

[भव जीवां तुम्हें जिन धर्म ओलखो]

एक धर्म कहें जिण आगना मझे, एक कहें रे धर्म जिण आगना वार।
यांमें साची सरधा छें केहनी, किण री भूठी रे सरधा घोर अंधकार।
बुधवंता यांमें निन्व कहिजें केहनें* ॥ १ ॥

धर्म कहें श्री जिण आगना मझे, ते केडायत रे श्री जिणजी रा जांण।
जिण धर्म जिण आगन्या बारें कहे, ते केरायत रे निन्वां रा पिछांण ॥ बु० ॥ २ ॥
जिण करणी में जिण आगना नहीं, तिण करणी में रे साध साझे मूंन।
तिण में एक कहे मिश्र धर्म हवो, एक कहे रे ए तो करणी जबूंन ॥ ३ ॥
साध मूंन साझें पिण बोले नही, तिण करणी नें रे सावद्य जांणें तो ठीक।
मिश्र कहे ते केडायत निन्वां तणा, तेरासीया रे जिम जांणजों तहतीक ॥ ४ ॥
आहार पांणी कपडादिक आंण नें, जिण आग्या सूं रे भोगवें छें सुध साध।
तिण में एक कहे पाप लागे नही, एक कहे रे इविरत नें परमाद ॥ ५ ॥
साध आहार पांणी कपडादिक भोगव्यां, पाप न कहे रे ते तो जिणजी रा साच।
पाप कहें ते पाषंडी कें निन्वा, त्यारे होसी रे भव-भव मे असमाव ॥ ६ ॥
एक कहें जिण आगना दीयें तिहां, तिण करणी में रे पाप करम लागे नांहि।
एक कहें जिण आगना दीयें तिहां, पाप लागे रे तिण करणी रे मांहि ॥ ७ ॥
जिण आगना दीये तिण करणी मझे, पाप लागो रे न कहे ते साची वात।
जिण आगना सहीत करणी मझे, पाप कहे छें रे तिण रा घट में मिथ्यात ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

एक कहै छै अनुकम्पा [illegible], [illegible] पाप रे कहै नहीं [illegible]।
एक कहै [illegible] अनुकम्पा [illegible], यां दोयां में रे जिन री सरधा ठीक ॥९॥
अनुकम्पा [illegible] ते तो [illegible] नहीं, आ तो [illegible] रे मूढ मत री बात।
जिन री [illegible] रो [illegible] कहै, ते तो [illegible] रे जिन्हां री [illegible] ॥१०॥
एक कहै नव तत ओलख्यां नहीं, मिथ्या छै रे [illegible] करणी [illegible]।
एक कहै नव तत ओलख्यां बिना, मिथ्या [illegible] रे [illegible] करणी [illegible] ॥११॥
नवतत ओलखण [illegible] [illegible], इण माहै रे ते [illegible] [illegible]।
नवतत ओलख्यां बिना [illegible] कहै, इण माहै रे ते तो जिन्हां री [illegible] ॥१२॥
एक कहै [illegible] [illegible] [illegible], मिथ्या छै रे [illegible] करणी [illegible]।
एक कहै मिथ्या छै [illegible] [illegible], आप ज्यूं रे [illegible] [illegible] मांहि ॥१३॥
[illegible] [illegible] मिथ्या छै [illegible] [illegible], आ तो [illegible] रे सरधा छै ठीक।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], आ जिन्हां री रे सरधा [illegible] [illegible] ॥१४॥
एक कहै पाप [illegible] [illegible], [illegible] रे [illegible] [illegible] छै पाप।
एक कहै पाप [illegible] पाप छै, [illegible] रे [illegible] [illegible] [illegible] ॥१५॥
पाप [illegible] [illegible] [illegible], यां दोयां में रे पाप कहै ते [illegible] [illegible]।
[illegible] पाप [illegible] [illegible] कहै, तिण जिन्हां रा रे [illegible] [illegible] [illegible] ॥१६॥
एक धर्म कहै छै जिन रै, एक कहै रे धर्म अविरत में [illegible]।
[illegible] [illegible] जिन में [illegible] [illegible] छै, [illegible] जिन रे [illegible] [illegible] ॥१७॥
जिन नहीं धर्म कहै [illegible], सरधा [illegible] रे [illegible] रे [illegible]।
[illegible] नहीं धर्म कहै [illegible], सरधा [illegible] रे जिन्हां री छै [illegible] ॥१८॥
एक कहै [illegible] धर्म [illegible], नहीं [illegible] रे [illegible] न [illegible]।
एक कहै [illegible] धर्म [illegible], [illegible] में रे [illegible] जिन [illegible] ॥१९॥
[illegible] धर्म [illegible] [illegible] नहीं, [illegible] री रे [illegible] [illegible]।
इम कहै ते [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] कहै रे ते तो जिन्हां न [illegible] ॥२०॥
एक कहै [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], नहीं [illegible] रे जिन [illegible] [illegible]।
एक कहै [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], यां दोयां में रे जिन [illegible] जिन [illegible] ॥२१॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], नहीं [illegible] रे जिन [illegible] [illegible]।
जिन धर्म ओलख्यां [illegible] [illegible], [illegible] जिन रे [illegible] जिन [illegible] [illegible] ॥२२॥
एक कहै [illegible] जिन [illegible], जिन [illegible] में रे पाप [illegible] नांहि।
एक कहै [illegible] जिन [illegible], जिन में पाप रे [illegible] [illegible] नांहि ॥२३॥
[illegible] [illegible] जिन [illegible], पाप न [illegible] ते तो जिन्हां री [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] में पाप [illegible], ते तो जिन रे [illegible] [illegible] [illegible] ॥२४॥

साध ने वांदण जाता थकां, मारग में रे तस थावर री हुवे घात।
तिण रो एक तो पाप लागो कहे, एक कहे रे पाप नहीं अंस मात ॥२५॥
तस थावर मूंआ रो पाप लेखवे, ते तो सरधा रे सुध साधां री अटल।
जीव मूंआ त्यांरो पाप न लेखवें, त्यांने जांणों रे निश्चें निन्वां असल ॥२६॥

रत्न : ६

मिथ्याती री करणी री चौपई

ढाल : १

दुहा

अरिहंत सिध ने आयरीया, उवझाया सगला साध ।
मुगत नगर ना दायका, ए पांचूं पद अराध ॥ १ ॥
नमूं वीर सासण धणी, सासण नायक सांम ।
त्यां माथे हाथ देइ करी, सास्त्यां घणां ना कांम ॥ २ ॥
त्यां श्री जिण मुख सूं भाखीया, आगम सार सिधंत ।
त्यांरों हलूकर्मी निरणों कीयो, त्यां पायों छें मारग तंत ॥ ३ ॥
केई सूतर वान्चे जिण भाखीया, पिण पूरा मूढ अयांण ।
उंधा उंधा अर्थ करें, ते ववेक विकल समांण ॥ ४ ॥
पेहला गुणठांणा रो धणी, वेराग मन मांहे आंण ।
दांन सीयल तप भावनादिक, निरवद करणी करे जांण जांण ॥ ५ ॥
तिण करणी ने मूढ मूर्ख कहे, मिथ्याती री करणी नही सुध ।
उणरे संसार वधे करणी कीयां, उणरे प्राकम सर्व असुध ॥ ६ ॥
जो उ घणी घणी करणी करे, तो घणो घणो वधें संसार ।
तिणरी सरधा परगट करूं, ते सुणजो विसतार ॥ ७ ॥

ढाल

[आ अनुकम्पा जिण आगन्या में]

केई परकत रा भद्रीक मिथ्याती, वले विनेवंत साधां रा ताहि ।
दया तणा परिणांम छे चोखा, वले मच्छर नहीं तिणरा घट माहि ।
इण निरवद करणी रो निरणो कीजों ॥ १ ॥
तिणरे घर साधूजी गोचरी आया, ते साध ने देख हुवो हरख अपार ।
सात आठ पग सांह्मो आय ने, सीस नमाय वांद्या वारूंवार ॥ २ ॥
पछे रसोडा घर माहे लेजाए, प्रतिलाभ्यों उसणादिक च्यारूंइ आहार ।
तिणरो असुध प्राकम सरधें अग्यांनी, वले कहे तिणरे वधीयों संसार ॥ ३ ॥
मिथ्याती साधां ने असणादिक देवे, तिणरों तो उ प्राकम असुध जांणे ।
तो पिण उणरे घर जाए अग्यांनी, असणादिक किण लेखे आंणे ॥ ४ ॥
वले वस्त्र पातर आहार ने पांणी, साधां ने दीयां जांणे छे वधतो संसारो ।
तेहीज तिणरो असणादिक वेहरें, तो उणरे लेखे उ कांय पाडें छे धाडो ॥ ५ ॥

जिण नें आप जांणें छें निश्चें मिथ्याती, त्यांरों असणादिक जांणी जांणी नें ल्यावें।
असुध प्राक्रम जांणें छें त्यांरो, तो उणरें लेखे उ ठागों कांय चलावें॥ ६ ॥
जो मिथ्याती उणनें असणादिक देवें, तो ओ तूरत लेवण नें त्यांरी होवें।
उणरी करणी नें प्राक्रम असुध जांणे छें, तो साध थइ ओरां नें कांय डबोवें।
इण मूढ मती रो निरणों कीजो* ॥ ७ ॥

ज्यांरों आहार पांणी कपडादिक लेवें, त्यारें सांप्रत जांणें छें वधतो संसार।
आप रा मुतलब काज ओरां नें डबोवे, धिग धिग छें तिणरो जमवारो ॥ इ० ८ ॥
मन गमतों चोखो चोखो आहार वेंहरायों, वले मही मही चोखो कपडो वेंहरावें।
तिणरों दांन नें प्राक्रम असुध जांगें छें, वले तिण हीज दांन नें तेहीज सरावें ॥ ९ ॥
असणादिक नित ल्यावे छें घणा घरां रो, त्यां सगलां रें जांणे छे वधीयों संसार।
नित नित घणां रे संसार वधारें, ते तो नियमाइ निश्चें नही अणगार ॥ १० ॥
इण री सरधा रे लेखें मिथ्याती रा घर रो, असणादिक वेंहरणों नही कांइ।
वले सेज्या संथारो वस्त्र नें पातर, तिण मिथ्याती रो जाबक वेंहरणों नांही ॥ ११ ॥
जो अनेरी सरधा रों उग ने आय पूछे, म्हारों असणादिक थे वेंहरी वेंहरीने ल्यावों।
थांने दांन दीयां करणी सुध कें असुध, म्हारें फल लागें ते जथातथ बतावों ॥ १२ ॥
आप नें भारी भारी म्हें वस्त्र वेंहराया, मनगमतों वेंहरायो म्हें आहार नें पांणी।
म्हे कल्पे ते वस्त आप नें दीधी, म्हें तो आप नें दांन दीयों धर्म जांणी ॥ १३ ॥
आप नें दान दीयां री सुध करणी हुवें, तो सुध करणी मुख सूं कही आप।
जो सुध नहीं हुवे तो असुध कहों थे, यां दोयां में एकण री करो थाप ॥ १४ ॥
सुध करणी कह्यां निज सरधा उठे छें, असुध करणी कह्यां तो उ धेखी थावें।
प्रश्न पूछ्यां रो जाब तो देणी न आवें, जब पुन कहे ने उ पिंडों छुडावें ॥ १५ ॥
जब उ कहे म्हें पुन री तो पूछा न कीधी, थांनें दान दीयां री करणी कहो आप।
भली करणी कह्यां पुन नें धर्म जांणें, भूंडी कह्यां तो जांण सूं एकंत पाप ॥ १६ ॥
थांने दांन दीयां आछी करनी न जांणों, थांने दांन दीयां करणी जांणो थे भूंडी।
तिण सूं आप करणी हुवे ते बतावो, हिवें मती करों आप गला गोलो।
हूं कहवायां विनां आप ने नही छोडूं, मोनें पिण आप निपटम जांणो भोलो ॥ १७ ॥
थांनें दांन दीयां आछी करणी कहो, तो हूं जांण सूं थांनें मोटा अणगारो।
थांने दांन दीयां आछी करणी न कहो तो, हूं जाण लेसूं थाने पिण दगादारो ॥ १८ ॥
म्हें थांने दान दीयों ते करणी, आछी जांणो तो चोड़े कहिदो आछी।
म्हे तो म्हारें कारण पूछा करी छें, संका कांय आणो थे कहितां साची ॥ १९ ॥
थांने दांन दीयां री भूंडी करणीं छें, तो थे ठग ठग नें म्हारो स्वाधो छें मालों।
थे साध थइ इसरा कांम कीधां, थांरों परभव में होसी कूण हवालो ॥ २० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

थांनें दांन दीयां आछी करणी न जांणों, थाने दांन दीयां करणी जांणो थे भूंडी ।
वले भूंडी करणी कीयां पुन बतावों, ते निश्चें न चाले खोटी हूंडी ॥ २१ ॥
पुन सरधो थे भूंडी करणी मे, तो पाप होसी किण करणी माय ।
भूडी करणी कीयां निश्चे पाप लागे छें, ते पिण थानें समझ न कांय ॥ २२ ॥
जो इसडों मिलें कोइ पूछण वालो, तो पग पग सरचा मांहे अटकावें ।
जब अकल विकल थइ उघो बोलें, पिण पूछ्या रो जाब पूरो नही आवें ॥ २३ ॥
पेहले गुणठाणे दान साधां नें देइ ने, परत ससार कीधो छे जीव अनत ।
तिण दांन रा गुण देवतां पिण कीधां, ठांम ठांम सूतर में कह्यो भगवंत ॥ २४ ॥
सुपातर दान री कोइ करे दलाली, वले हर कोइ देवे सुपातर दांन ।
सुपातर दांन री कोइ करे परसंसा, यां तीनां री आछी करणी कही भगवांन ॥ २५ ॥
पेंहले गुणठांणे सील पाले छे, वेराग सहीत चोखे परिणांम ।
तिणरो सील असुध जांणें अग्यानी, वले ससार वधीयो जाणे छे ताम ॥ २६ ॥
पेंहलें गुणठांणे तपसा करे छें, उपवास वेलादिक चोखे परिणाम ।
वले हरी नीलोतरी त्याग करे छे, ते सगलाई असुध कहें छे ताम ॥ २७ ॥
दांन सील तप तणी भावना भावें, वले तिणने ससार लागें खारो ।
जो उ घणो घणो वेराग करें तो, उ घणो घणो जांणे वधतो ससारो ॥ २८ ॥
निरवद करणी करे पेहले गुणठांणे, तिण करणी ने जावक जांणे असुध ।
इसडी परूपणा करें अग्यांनी, तिणरी मिष्ट हुइ छे सुध ने बुध ॥ २९ ॥
पेहलें गुणठांणे निरवद करणी करे छें, तिणरी करणी सराया में दोषण जांणे ।
अतिचार लागो कहे समकत मांही, तिणरो न्याय जाण्यां विण मूर्ख तांणे ॥ ३० ॥
निरवद करणी कोइ करे मिथ्याती, तिणरे कहे गुण नीपजे नही कांइ ।
तिणने भगवत पिण आगना नही देवे, एहवी कहें छे अग्यांनी परपदा मांही ॥ ३१ ॥
मिथ्याती री करणी मांहें गुण नही जाणें, सरावे तिणने पिण दोष वतावे ।
वले तेहीज मिथ्याती ने सूंस करावे, त्यांरा वोल्या री परतीत किण विध आवे ॥ ३२ ॥
वले कहि कहि मिथ्याती ने हरी छुडावें, जमीकंदादिकना पिण सूंस करावे ।
उपवास बेलादिक कहि कहि ने करावे, तेहीज तिण करणी ने असुध वतावें ॥ ३३ ॥
वले मिथ्याती ने उपदेस देई ने, कुसीलादिक छोडे तो छोडावे ।
राती भोजनादिक रो पिण त्याग करावें, छकाय ने चवदे नेमादिक सीखावे ॥ ३४ ॥
वले वखांण सुणावें छें तिणने, वले कहि कहि ने तिणने ग्यांन सीखावे ।
संथारो पिण करावे उपदेस देइने, तेहीज तिणरी करणी असुध वतावे ॥ ३५ ॥
निरवद करणी करे पेहले गुणठांणे, तिणरी असुध करणी कहे छें वारम्वार ।
वले असुध प्राकम जांणे छे तिणरो, वले करणी कीयां जाणें वधीयो ससार ॥ ३६ ॥

ढाल : २

दुहा

जीव अजीव जाणे नही तेहनें, पेहलें गुणठाणे कह्यो जिणराय।
त्यांरा पचखांण दुपचखाण कह्या, तिणरो मूढ न जांणे न्याय॥ १॥
पेंहलें गुणठाणे विरत न नीपजे, तिण लेखे कह्या दुपचखाण।
पिण निरजरा लेखे पचखांण निरमला, उतम करणी बखांण॥ २॥
पेहले गुणठांणे करणी करे, तिणरे हुवे छे निरजरा धर्म।
जो घणो घणो निरवद प्राकम करे, तो घणा घणा कटे छे कर्म॥ ३॥
पेहले गुणठांणे दान दया थकी, कीयो छे परत संसार।
थोडासा परगट करू, ते सुणजो विस्तार॥ ४॥

ढाल

[पाखंड वधसी आरे पाच मे]

सुलभ थो सुमुख नामें गाथापती रे, तिण प्रतिलाभ्या सुदत्त नामें अणगार रे।
तिण परत संसार कीयो तिण दांन थी रे, विपाकसूतर मे छे विस्तार रे।
ए निरवद करणी मे छेजिण आगना रे* ॥ १॥
सुमुख गाथापति ज्यूं दसा जणा रे, त्यां पिण प्रतिलाभ्या अणगार रे।
त्या परत ससार कीयां सगला जणा रे, विपाक मे जूवो जूवो विस्तार रे॥ ए० २॥
जब देवता वजाइ थी देवदुदभी रे, तिण दान रा कीयां घणा गुणग्राम रे।
थे मिनष जन्म तणो लाहो लीयो रे, जस कीरत कीधीं छे तिण ठांम रे॥ ३॥
केइ मूढ मिथ्याती करें परूपणा रे, मिथ्याती तो न करें परत संसार रे।
जो मिथ्याती दान देवे साधां भणी रे, तिण करणी मे सार नही लिगार रे॥ ४॥
सुमुख ने आदि देइ दसां जणां रे, त्या दान थी न कीयों परत संसार रे।
ते साध ने देखे ने हरखत हूआं रे, उपसम समकत आइ तिणवार रे॥ ५॥
त्यां उपसम समकत थी दसां जणां रे, सगलाइ कीयों परत संसार रे।
ते समकत अंतरमुहरतमें वमी रे, पछे मिनष आउखो बांध्यो तिणवार रे॥ ६॥
इसडी वातां मन सूं उठाय नें रे, दांन री करणी कहे असुध रे।
ते सके नही सूतर उथापता रे, भिष्ट हुइ छे त्यारी वुध रे॥ ७॥
सांप्रत सूतर माहे इम कह्यो रे, दांनथी कीयों परत संसार रे।
मिनष रो आउखो बांध्यो दांनथी रे, जोवो विपाक सूतर मझार रे॥ ८॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

सुमुख नो विजय नामे गाथापति रे, तिण प्रतिलाभ्या भगवन्त श्री महावीर रे।
तिण परत संसार कीयो तिण वारनी रे, दांन सूं पांम्यो भवजल तीर रे ॥ ९ ॥
आणंद ने सुदर्शन [illegible] सीजें रे, वले बहुल ब्राह्मण तिमहीज जांन रे।
त्यां वीर ने दान देई संसार ऊणो रे, परत संसार कीयो कहूं केतो नाम रे ॥ १० ॥
ए च्यारू ने भागवंत री किरपा हुई रे, नाम वरद परगट्या ताम रे।
तिहां देव नगारा देवदुंदुभी रे, ए च्यारां रा कीया घणा गुणग्राम रे ॥ ११ ॥
वले बिन बिन कह्यो ते त्यांने देवता रे, थे सफल कीयो मानव अवतार रे।
दांन निरदोषण देई वीर ने रे, तिण रो जनम कीयो सुधार रे ॥ १२ ॥
जस कीरत कीधी त्यांरी देवता रे, वले तिण रा किया घणा गुण गाहि रे।
तिणरा विस्तार घणा छै इहां कह्यो रे, भगोती ना पनरमा सतक रे माहि रे ॥ १३ ॥
त्यांने दान दीधा छै मिथ्याती थकां रे, मिथ्याती थकां कीयो परत संसार रे।
इण करणी री निरजरी री छै आगना रे, तिण करणी मे अवगुण नही लिगार रे ॥ १४ ॥
विजे गाथापति आदि च्यारूं जणा रे, त्यां दांन थी न कीयो परत संसार रे।
ते जिन साध ने देई प्रतिलाभीया रे, उत्तम मनुष्य आउ निरधार रे ॥ १५ ॥
त्यां उत्तम मनुष्य पणां थी ऊपना रे, सगलाइ कीयो परत संसार रे।
देव नगो आउखों बांधीयो रे, ए मिथ्याती नही हुंता निरधार रे ॥ १६ ॥
उत्तम वाना मन सूं उतार ने रे, दान री करणी कहे असुध रे।
ते सके नहीं सूतर उथापता रे, भिष्ट हुई छै त्यांरी बुध रे ॥ १७ ॥
सांप्रत सूतर माहे इम कह्यो रे, दांन थी कीयो परत संसार रे।
देव आउखो बांध्यो दांन थी रे, भगोती ना पनरमा सतक मझार रे ॥ १८ ॥
घणा मिथ्याती श्री भगवान ने रे, हरख सूं दीयो निरदोषण दान रे।
तिण दांन री करणी ने कहे असुध छै रे, त्यां विकलां रा घट मे घोर अग्यान रे ॥ १९ ॥
अनंता तीर्थंकर हुआ तेहने रे, त्यांने हरख सूं दीयो अनता दांन रे।
त्यां सगलां री करणी कहे असुध छै रे, ते भवभव मे होसी घणा हिरांन रे ॥ २० ॥
रेवती वेहरायो विजोरा पाक ने रे, तिण दान सूं कीयो परत संसार रे।
वले देव आउखो बांध्यो दांन थी रे, ते विजय ज्यूं जांण लेजो विस्तार रे ॥ २१ ॥
जिग नें वाडे हरकेसी साध ने रे, ब्राह्मणा दीयो निरदोषण दांन रे।
तिण दान री जस महिमा कीधी देवता रे, ते सूतर माहें गूंथ्यो भगवांन रे ॥ २२ ॥
मिथ्याती अनता मातर दान थी रे, निरवेड कीयो परत संसार रे।
ए वीर ना वचन उथापे पापीया रे, झूठ बोले ने हूआ ख्वार रे ॥ २३ ॥
सीले आचार करें सहील छे रे, पिण सूतर ने समकत तिणरे नांहि रे।
तिणने आराधक कह्यो देसथी रे, विचार कर जोवो हीया मांहि रे ॥ २४ ॥

देस थकी तो आराधक कह्यो रे, पेंहले गुणठांणे ते किण न्याय रे।
विरत नही छें तिणरें सर्वथा रे, निरजरा लेखे कह्यों जिणराय रे॥ २५॥
जो पेहलें गुणठांणे असुध करणी हुवे रे, तो देस आराधक कहिता नांहि रे।
ते विस्तार भगोती सतकज आठमें रे, ए चोभगी दसमा उद्देसा माहि रे॥ २६॥
देस आराधक करणी जिण कही रे, ते करणी छे जिण आग्या माय रे।
कर्म कटे छे तिण करणी थकी रे, तिणने असुध कहे ने बूंडो काय रे॥ २७॥
तामलीतापस तप कीधो घणो रे, साठसहंस वरसां लग जांण रे।
बेले बेले निरतर पारणों रे, वेराग भावे सुमता आंण रे॥ २८॥
आहार वेहरी ने ल्यायों तेहने रे, पांणी सू धोयो इकवीस वार रे।
सार काढे ने कूकस राखीयो रे, एहवो पारणे कीयो आहार रे॥ २९॥
तिण संथारो कीयों भला परिणांम सूं रे, जब देवदेवी आया तिण पास रे।
त्यां नाटक पाडे विवध परकारना रे, पछे हाथ जोडी करें अरदास रे॥ ३०॥
म्हे चमरचंचा राजध्यांनी तणा रे, देवदेवी हूआ म्हे सर्व अनाथ रे।
इंद्र हूंतो ते म्हांरो चव गयो रे, थे नीहाणो कर हुवो म्हारा नाथ रे॥ ३१॥
इम कहे ने देवदेवी चलता रह्या रे, पिण तामली न कीयो नीहाणो ताय रे।
तिण कर्म निरजरीया मिथ्याती थकां रे, ते इसाण इद्र हुवो छे जाय रे॥ ३२॥
ते देवचवी नें होसी मांनवी रे, महाविदेह खेतर मझार रे।
ते साध थई ने सिवपुर जावसी रे, ससारनी आवागमण निवार रे॥ ३३॥
इण करणी कीधी छे मिथ्याती थके रे, तिण करणी सू घटीयो छे ससार रे।
इंद्र हुवो छे तिण करणी थकी रे, इण करणी सूं हुवो एकाअवतार रे॥ ३४॥
जो तामलीतापस तप करतो नही रे, तो तपसा विण इंद्र हूतों नाहि रे।
एकावतारी पिण हूंतो नही रे, विचार करे देखों मन माहि रे॥ ३५॥
जो निरवद करणी मिथ्याती करे रे, ते पिण कर्म करें चकचूर रे।
तिण निरवद करणी ने कहे असुध छे रे, तिणरी सरधा मे कूड कूड मे कूड रे॥ ३६॥
तामली बालतपसी तेहनी रे, करणी तणो करो निस्तार रे।
ए भगोती सूतर रे सतकज तीसरे रे, पेहला उद्देसा मे विस्तार रे॥ ३७॥
असोचा केवली मिथ्याती थकां रे, छठ छठ तप कीयो निरंतर जांण रे।
वले लीधी सूर्य सांह्मी आतापना रे, बांह दोनूइ उंची आंण रे॥ ३८॥
परकत रों भद्रीक ने वनीत छे रे, उपसंतपणो घणों छे ताहि रे।
क्रोध मान माया ने लोभ पातला रे, मांन ने मर्द लीयो तिण मांहि रे॥ ३९॥
इंद्री नें वस कर लीधी जांण नें रे, वले घणा छे गुण तिण माहि रे।
इसरा गुणा सहीत तपसा करे रे, करमां ने पतला पाडे छे ताहि रे॥ ४०॥

इम करतां एकन्त मन्दवें चेहलां रे, आया सुभ अध्यवसाय परिणाम रे।
जब करड़ी करणी करी, लेस्या विसुध हुई रे, विसुध विसुध हुवा भला परिणाम रे॥४१॥
ढवादसमें वर्ष पखअन्त हुवां रे, करवा लागो ते सुध विचार रे।
न्याय मारग नें करतां गवेषणा रे, विभंग अनांण उपनें तिणवार रे॥४२॥
ते थोड़ो जांणें विभंग अनांण सूं रे, अंगुल रे असंख्यात में भाग रे।
उत्कष्टो जांणें नें देखें देह सूं रे, असंख्यात जोजन तांई तिण भाग रे॥४३॥
वले जांणें विभंग अनांण सूं रे, जीव नें अजीव तणां द्रव रे।
पाखंडीयां नें जांण्या पाखंडी रे, त्यांनें दुखदा देख्यां नरकादि चूंप रे॥४४॥
नांणी सरिखां जांण्यां ठेहरें रे, संकलेस करतां जांण्यां छें तांम रे।
विसुध विसुधता हुंतां ठेहरें रे, त्यांनें तिण वांत कीया तिण ठांम रे॥४५॥
इम रीतें पेंहलो तो समकत पांमियो रे, विभंग अनांण रो हुवो अवधि गिनांण रे।
पछें अनुक्रमें हुवो केवली रे, पछें गयो पांचमी गति निरवांण रे॥४६॥
असोच्चा केवली हुआ इण रीत सूं रे, मिथ्याती थकां तिण करणी कीध रे।
कर्म पतला पड़्या मिथ्याती थकां रे, तिण सूं अनुक्रमें सिवपुर लीध रे॥४७॥
जो मिथ्याती थकां उद्यम करतों नहीं रे, मिथ्याती थकां नहीं लेतो आधार रे।
क्षायिक नहीं पावतो पातलां रे, तो किण विध जातो मुगत पंथ रे॥४८॥
जो लेस्या परिणांम भला हुंता नहीं रे, तो किण विध पांमत विभंग अनांण रे।
इत्यादिक बोलां सूं हुवो उजलो रे, अनुक्रमें पोहतो छें निरवांण रे॥४९॥
पेंहलें गुणठांणें मिथ्याती थकां रे, निरवद करणी कीधी छें तांम रे।
तिण करणी थी नींव लागी छें मुगत री रे, ते करणी चोखी ने सुध परिणांम रे॥५०॥
असोच्चा केवली री करणी तणो रे, विस्तार चालीयो सूतर मांहि रे।
नवमां सतक रें उदेसें इगतीस में रे, तिहां जोय निरणों कर लीजो ताहि रे॥५१॥
समकत बिन होवे न भव तरे रे, मुगत री दया पाली छें ताहि रे।
तिण परत संसार कीधों दया थकी रे, जोवों पेंहला अंग गिनाता मांहि रे॥५२॥
मिथ्याती निरवद करणी करतां थकां रे, समकत पाय पोहता निरवांण रे।
तिण करणी नें असुध कहें छें पापीया रे, ते निखेद पूरा मूढ अयांण रे॥५३॥

ढाल : ३

दुहा

सूयगडाअंग आठमा अधेन मे, दोय गाथा कही तिण मांय।
तेवीसमी ने चोवीसमी, तिणरो मूढ न जांणे न्याय ॥ १ ॥
जे ततवना अजांण छे, मोटा भाग सहीत।
ते वीर सुभट वाजे लोक में, पिण समकत कर ने रहीत ॥ २ ॥
ते करणी निरवद करे, दांन सीलादि निरदोष।
मास खमणादिक तपसा करे, तिणरी करणी कहे सर्व फोक ॥ ३ ॥
असुध प्राकम कहे तेहने, करणी कीयां वधें संसार।
कर्म बंध कहे तिणरे सर्वथा, निरजरा नही कहे लिगार ॥ ४ ॥
इण विध अर्थ उंधा करे, निरवद करणी ने कहे छे असुध।
ते ववेक विकल सुध बुध विनां, त्यांरी भिष्ट हुइ छे बुध ॥ ५ ॥
तेवीसमी गाथा तणो, तिण मूल न जांण्यो न्याय।
असुध प्राकम कह्यो तेहनो, तिणरो अर्थ सुणो चित्तल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[श्री नेम जिणंद समोसरया रे लाल]

असुध प्राकम कह्यो तेहनो रे, ते असुध करणी तणो कथन जांण रे।
सुध करणी रो कथन इहां नहीं रे लाल, तिणरी बुधवंत करजो पिछांण रे।
सुध सरधा रो निरणो करो रे लाल* ॥ १ ॥
जे खोटी करणी मिथ्याती करे रे, ते जिण आगना बाहिर जाण रे।
ते असुध प्राकम तिणरो कह्यों लाल, तिणसूं पाप कर्म लागे आंण रे ॥ सु० २ ॥
असुध करणी रो असुध प्राकम कह्यो रे, ते विकलां ने खवर न काय रे।
तिण सू निरवद करणी मिथ्याती तणी रे लाल, तिणनें असुध कहे ताय रे ॥ ३ ॥
सावद्य निरवद करणी मिथ्याती करे रे, यां दोनू ने कहे छे असुध रे।
तो उणरी सरधा रो लेखो कीया रे लाल, समकती रो प्राकम सर्व सुध रे ॥ ४ ॥
जे ततवतणा केइ जाण छे रे, ते मोटा भाग सहीत रे।
ते वीर सुभट बाजे लोक में रे लाल, ते समकत करने सहीत रे ॥ ५ ॥
ते करणी निरवद करे रे, दांनसीलादिक निरदोख रे।
मास खमणादिक तपसा करे रे लाल, तिण सू कर्म तणो हुवे सोख रे ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

निरवद करणी ते सुध प्राकम कह्यों रे, ते जिण आगना माहिलों जांण रे।
शेप करणी असुध प्राकम कह्यो लाल, तिण सूं पाप कर्म लागें आंण रे॥ ७ ॥
ते असुध प्राकम समदिष्टी तणो रे, तिणरो कथन नहीं तिण ठांम रे।
सुध प्राकम मिथ्याती तणो लाल, तिणरो पिण कथन नही छें तांम रे॥ ८ ॥
तिण ठांमें तो कथन इतलोंज छें रे, असुध प्राकम मिथ्याती रो तांम रे।
समदिष्टी रा सुध प्राकम तणो रे लाल, फल वतायो तिण ठांम रे॥ ९ ॥
सावद्य निरवद करणी मिथ्याती तणी रे, यां दोयां रो प्राकम हुवें असुध रे।
तो समदिष्टी री दोनूं करणी तणो रे लाल, प्राकम हो जाअे सुध रे॥ १० ॥
मिथ्याती निरवद करणी करें रे, तिणरी करणी कहें छें असुध रे।
ते ववेक विकल सुध वुध विनां रे लाल, त्यांरी भिष्ट हुइ छे बुध रे॥ ११ ॥
वले मूढ मिथ्याती इम कहें रे, समदिष्टी तणों परमाद रे।
मिथ्याती तणी करणी तणो रे लाल, यां दोयां ने कहें असमाद रे॥ १२ ॥
निरवद करणी मिथ्याती तणी रे, समदिष्टी तणो परमाद रे।
अे दोनूंइ दुरगत रो कारण कहे रे लाल, एहवो कूडों करें छें विवाद रे॥ १३ ॥
आचारंग पांचमां अचेयन रो रे, छठों उद्देसों वताय रे।
भोला नें न्हाखें भर्म में रे लाल, तिणरो उधो अर्थ वताय रे॥ १४ ॥
आचारंग तिण ठांमें तो इम कह्यो रे, सावद्य करणी जिण आगना वार रे।
तिण करणी करण रों उदम करे रे लाल, ते पडीया कुमारग मझार रे॥ १५ ॥
निरवद करणी जिण आगना सहीत छे रे, तिणमें उदम नही छें लिगार रे।
ते पिण कुमारग में पड्या रे लाल, करमां रा वधारण हार रे॥ १६ ॥
अठें कुमारग री करणी कही रे, सनमारग रों कह्यो परमाद रे।
अें दोनूं कुगति रा कारण कह्या रे लाल, ए साची सरध्यां होसी समाद रे॥ १७ ॥
अठें मिथ्याती ने समदिष्टी तणों रे, कथन नही छे लिगार रे।
उठे करणी निखेधी आग्या वारली रे लाल, दुरगति नी पोहचावण हार रे॥ १८ ॥
वले निखेध्यों परमारद नें रे, करणी न करे जिण आगना सहीत रे।
तिणने दुरगतिनों कारण कह्यो लाल, तिहां जोय लो रूडी रीत रे॥ १९ ॥
करणी जिण आगना मांहिली रे, तिहां वीर कही निरदोष रे।
जे करसी ते सुख पावसी रे लाल, आग्या वारे करणी सर्व फोक रे॥ २० ॥
एहवो कथन आचारंग नें मझे रे, तिणरों अर्थ न जांण्यो ताय रे।
तिणसूं निरवद करणी मिथ्याती तणी रे लाल, तिणनें कही दुरगति रों उपाय रे॥ २१ ॥
निरवद करणी मिथ्याती करे रे, तिणने कहे दुरगति रो उपाय रे।
समदिष्टी रा परमाद सरिखी कही र लाल, वले पुन वतावें तिण मांय रे॥ २२ ॥

समदिष्टी रा परमाद थी रे, पाप लागें छें आय रे
तो मिथ्याती री करणी मझे रे लाल, पुन क्यूं वतावे ताय रे ॥ २३ ॥
उणरी करणी दुरगति रो कारण कहे रे, तिण लेखें तों पुन नांहि रे।
पुन सूं तो जावें सुदगति मझे रे लाल, ते पिण निरणो नही घट माहि रे ॥ २४ ॥
मिथ्यात्वी निरवद करणी करें रे, तिणनें दुरगति रो कारण कहे मूढ रे।
परमाद कहे अन्हाखी थकां रे लाल, तिण झाली मिथ्यात री रूढ रे ॥ २५ ॥
मिथ्याती दान देवे साधां भणी रे, तिणरे जांणे दुरगति रो उपाय रे।
वले तेहीज वेहरे तिणरो जांण नें रे लाल, इसडो कांय करे छे अन्याय रे ॥ २६ ॥
मिथ्याती देवे वस्त्र पातरा रे, वले देवे असणादिक च्यारूं आहार रे।
तिणरें जांणे उपाय दुरगति तणो रे लाल, तो लेवा नें कांय हुवे तयार रे ॥ २७ ॥
घणा मिथ्यात्यां रा घर तणो रे, नित्य नित्य ल्यावे आहार रे।
त्यांरे दुरगति वधारें जांण जांण ने रे लाल, त्यांने किम कहिजें अणगार रे ॥ २८ ॥
शील पालें मिथ्याती वेराग सूं रे, तपसा करें वेराग सूं ताय रे।
हरियादिक त्यागे वेराग सू रे लाल, तिणरे कहे दुरगत रो उपाय रे ॥ २९ ॥
इत्यादिक निरवद करणी करें रे, वेंराग मन माहें आंण रे।
तिणरी करणी दुरगत रो कारण कहें रे लाल, ते जिण मारग रां अजांण रे ॥ ३० ॥
वले तेहीज मिथ्याती जीव ने रे, उपदेस दे दे वारूंवार रे।
कुसील छोडावे तेहनें रे लाल, वले तपसा करावण ने त्यार रे ॥ ३१ ॥
वले तिणने छोडावें नीलोतरी रे, वले छोडावे वस्त अनेक रे।
तिणरी करणी रा फल दुरगति कहे रे लाल, त्या विकलां में नही छें ववेक रे ॥ ३२ ॥
निरवद करणी मिथ्याती करे रे, तिणनें कहें दुरगति ने परमाद रे।
ते ववेक विकल सुध वुध विनां रे लाल, बोलें छे मिरखावाद रे ॥ ३३ ॥
निरवद करणी ओलखायवा रे, जोड कीधी नेणवा मझार रे।
समत अठारे सेंतालें समें रे लाल, वेसाख विद वारस थावरवार रे ॥ ३४ ॥

●

ढाल : ४

दुहा

मिथ्याती निरवद करणी करे, तिणरें निरजरा कही जिणराय।
तिण माहें संक म राखजो, जोवो सूतर रें मांय॥ १॥
मिथ्याती आछी करणी कीयां विनां, किण विध पामें समकत सार।
सुध प्राकम सूं समकत पांमसी, तिणमें संका म राखो लिगार॥ २॥
धूर सूं तो जीव मिथ्याती थकां, सुणें साधां री वांण।
ग्यांन समकत पाय साधां कनें, अनुक्रमें पोहचें निरवांण॥ ३॥
साधां री संगत कीयां थका, दस बोलां री प्राप्त जाण।
धुर सूं तो सुणवो सिधंत रो, पछें ग्यान विगनान पचखाण॥ ४॥
सजम नें आश्र रहीत पणो, तपसा ने कर्म बोदाण।
नवमो क्रीया रहीत पणों, दसमों सिध निरवांण॥ ५॥
संका हुवें तो भगोती में जोय लो, दूजें सतक पांचमें उद्देस।
सुणीयां सूं समकत पांमसी, इणमे कूड नही लवलेस॥ ६॥
जो मिथ्याती री करणी असुध हुवें, वले असुध प्राकम हुवें ताय।
जब सुणवोइ तिणरो असुध हुवे, तो उ समकती कदेय न थाय॥ ७॥
मिथ्याती निरवद करणी करें, तिणने असुध कहें ते अयांण।
तिणरा जाब कहूं सूतर थकी, ते सुणजों चतुर सुजांण॥ ८॥

ढाल

[जगत गुरू तिसला नदन वीर]

किल्यांण कारणी वारता, सुणीया सूं जाणे साख्यात।
वले जाणे सुणीया थकी, अकिल्यांण कारणी वात।
चतुर नर समझों ग्यांन विचार* ॥ १॥

किल्यांण ने अकिल्यांण री, सुणीयां सूं दोयां री ठीक होय।
दसवीकालिक चोथा अधेयन में जी, इग्यारसी गाथा जोय॥ च० २॥

मिथ्याती सुणे साधां कने, पछे करे छें मन मे विचार।
निरणों करे घट भितरें, तिण सूं पामें समकत सार॥ ३॥

जो मिथ्याती रो प्राकम असुध हुवे, तो विचारणा सुध नही होय।
असुध प्राकम ने असुध विचार थी, समकत नहीं पामें कोय॥ ४॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

समकत पामे सुध विचारीया, ते निश्चे सुध प्राक्रम जाण।
तिण प्राकम ने असुध कहें, ते तो पूरा मूढ अयाण॥ ५ ॥
सकडाल पुत्र श्री वीर नें जी, वदणा कीधी सीस नमाय।
वले जायगा माहे उतारीया, पाट पाटला दीधा वेंहराय॥ ६ ॥
तिण दान दीयो श्री वीर ने, मिथ्याती थकें निरदोष।
अनुक्रमे समझ श्रावक हुवो, तिण कीयो कर्मा रो सोप॥ ७ ॥
तिणरा प्राकम ने कहे असुध छे, वले असुध करणी कहे ताय।
कर्म बंधवा रों कारण कहे, ते तो चोडे भूला जाय॥ ८ ॥
धर्म करवा ने जावक न उठीया, धर्म सुणवो न वांछे ताहि।
तिणने पिण धर्म सुणावणो, जोवो आचारग मांहि॥ ९ ॥
जिणरो सुणवा रो असुध प्राकम हुवे तो, सीखणों पिण असुध होय।
जव धर्म न सुणावणो तेहने, ग्यान सीखावणो नही कोय॥ १० ॥
मिथ्याती निरवद सीखे सुणे, तिणरी करणी जांणे छे असुध।
तेहीज सुणावे सीखावे तेहने, उणरे लेखे उणरी भिष्ट बुध॥ ११ ॥
सोगधीया नगरी वाहिरे, नीलासोग वाग मझार।
तिहा सुखदेव सिन्यासी आवीयो, साथे ल्यायो सीप हजार॥ १२ ॥
तिण थावरचा अणगार ने जी, पूछ्या प्रश्न अनेक।
त्यांरा जाव सुणे हरखत हुवो जी, घट माहे आयो ववेक॥ १३ ॥
पछे वाणी सुणे हीये सरध ने, समकत पामी तिण ठाम।
तिण संजम लीयो एक सहस सू जी, सार्‍या आतम कांम॥ १४ ॥
तिण प्रश्न पूछ्या मिथ्याती थके, मिथ्याती थके सुणीया जाव।
मिथ्याती थकां कीधी विचारणा, तिण सूं समकत पायो सताव॥ १५ ॥
जो मिथ्याती रो सुणवो असुध हुवे तो, समकत नही पांमतो ताम।
तिणरो सुणवारो प्राकम सुध हूतो, तिण सू समकत पायो तिण ठाम॥ १६ ॥
खधक नामे सिन्यासी हूतो जी, सावथी नगरी माय।
तिणने प्रश्नज पूछीया जी, पिंगल नियठे आय॥ १७ ॥
जब तिणने जाव न उपनो, तिण सू आयो वीर ने पास।
तिणने वीर आगूच वतावीयो, ते सुणने पांम्यो हुलास॥ १८ ॥
तिण मिथ्याती थकें वाणी सुणे, पाम्यो समकत सार।
श्रीवीर जिणेसर आगले, तिण लीधो सजम भार॥ १९ ॥
तिणरो सुणवारो प्राकम सुध थो, तिण सू पामीयो समकत सार।
तिणरा प्राकम कोइ असुध कहे, ते पूरा मूढ गिवार॥ २० ॥

हथणापुर नगर नों वासीयो, सिवराज रखेश्वर जांण।
ते राज छांडे तापस हुवों, तिणलें उपनो विभंग नांण॥ २१॥
सातद्वीप समुंदर देखीया, इतलोइज जांण्यों संसार।
असख धीप समुंदर सुण्या जब, संका पडी तिणवार॥ २२॥
संका पड्यां इतरोइ देखें नही, जब आयो वीर नें पास।
वीर वचन सुणे हीये सरधीया, जब समकत पांमीयों तास॥ २३॥
वीर वचन सुण्या मिथ्याती थकां, तो पांमीयो समकत सार।
तिणरो सुणवारों प्राक्रम सुध छे, तिणमें सका नही लिगार॥ २४॥

रत्न : १०

एकल री चौपई

•

ढाल : १

दुहा

आरंभ जीवी ग्रहस्थी, फिरे त्यांरी नेश्राय।
अणतीर्थी पासथादिक, ते पिण तेहवा थाय॥ १ ॥
केइ वेरागे घर छोड ने, राचें विषे रस रंग
राग धेख व्याकुल थकां, करे व्रत नो भंग॥ २ ॥
रित पांमें पाप कर्म मे, सावद्य सरणो मान,
गण छोडी हुवें एकला, कुड कपट री खान॥ ३ ॥
न्यात लजावे पाछली, वले भेख लजावण हार।
एहवा मानव फिरें एकला, धिग त्यारो जमवार॥ ४ ॥
घणां में रहे सकें नही, ते एकलडा थाय।
कुण कुण दोख तिणमें कह्या, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ५ ॥

ढाल

[समरुं मन हरखे तेह सती]

आप छांदे फिरे जे एकला, ते जिण मारग में नही भला।
साध श्रावक धर्म थकी टलीया, ससार समुद्र में कलिया॥ १ ॥
एकलो देख ने लोक पूछा करें, घणो क्रोध करी तिण सूं रे लडे।
कोइ वादे नही तब मांन वहे, करला वचन तिणने रे कहे॥ २ ॥
कपटाइ घणी छे एकल तणी, सूतर माहे भाखी त्रिभुवन धणी।
वले लोभ घणो छे वोहल पणे, श्री वीर कह्यो छे एकलतणे॥ ३ ॥
बहु आरंभ ने विषे रक्त घणो, संचो करें बजर पाप तणों।
नट नी परे अर्थी भोग तणो, वहु भेख धरे माहे ग्रिधपणो॥ ४ ॥
घणे प्रकारे करे धुरतपणो, संके नही करतो कर्म रिणो।
अधवसाय मन रा अतही घणा, माठा वर्ते छें एकल तणा॥ ५ ॥
बहु[1] कोहे[2] माणे[3] माया[4] लोभ[5] पणो, रते[6] नडे[7] सढे संकप घणों।
ए आठ आगुण घट मे वर्ती, हिंसादिक आश्रवना अर्थी॥ ६ ॥
वले साधु नो लिंग लीयां रहे, कर्मे आछाद्यो एम कहे।
हूं सुध चारितीयो आचारी, सतरे भेदे संजमधारी॥ ७ ॥
रखे कोइ देखे अकार्य करतों, आजीवका अर्थी रहे डरतो।
अग्यांन परमाद दोख भर्यो, निरंतर मूढ मोह्यों कुपंथ पर्यो॥ ८ ॥

जिणधर्म न जांणें अपछांदें रह्या, त्यांनें कर्म बांधण नें पिडत कह्या।
पाप करण सूं अलगा रे नही, तिणनें संसार में भमण कही॥ ९ ॥
आचारंग पांचमें अधेनें आख्यों, पेंहले उदेसें जिण भाख्यो।
ए चिरत कह्या छे एकल तणा, इण अनुसारें अतहि घणा॥ १० ॥
एहवा अपछंदा अवनीत, त्यां छोडी धर्म तणी रीत।
निरलजा भागल विपरीत, किम आवें तिणरी परतीत॥ ११ ॥
उस्नादिक पाचूं रे तणी, संगत वर्जी छे त्रिभुवन धणी।
ए मोख मारग ना छे फदा, एहवा छें जेंन तणा जिदा॥ १२ ॥
त्या छोडी लोकीक तणी लजीया, सकों नहीं आणें करता कजीया।
दोखणे काढ्यां तो तपता रहे, ते आया परिसा केम सहें॥ १३ ॥

ढाल २

दुहा

ठाणाअंग माहें कह्यो, एकल रो ववहार।
आठ गुणा सहीत छे, ते सुणजो विसतार॥ १॥
सरधा में सेंठो घणो[1], न सके देव डिगाय।
सतवादी[2] प्रज्ञासूर[3] छे, बोले नही अन्याय॥ २॥
सूतर ग्रहवा सक्त घणी, मरजादा वंत वखांण।
बहुश्रुती[4] नवमा पूर्व तणी, तीजी आचार वथू नो जांण॥ ३॥
पांचमें पाचू समरथा[5], तप सूतर एकलपणो जांण।
सत्व करी सेंठो घणों, वले समरथ सरीर वखांण॥ ४॥
कलहकारी[6] छठें नही, सातमे धीरज[7] ताहि।
अनुकूल प्रतिकुल उपसग्र सहे, आठमें वीरज[8] अछाहि॥ ५॥
ए आठां गुणां सहीत छें, तो करणो उग्र विहार।
तो पिण गुर आग्या दीयां, फिरें एकलमल अणगार॥ ६॥
ए आठा गुणां विण एकला फिरे, ते अवक्त मूढ अयांण।
वले आचारंग में निखेधीयो, ते सुणजो चतुर सुजांण॥ ७॥

ढाल

[पाखड बधसी आरे पाच में]

एकल ने मुनी रो भाव नखेधीयो रे, अवक्त ने कह्यो छें घणो विगाड रे।
दुष्ट पराकम नो थांनक तेहने रे, दुष्ट कह्यों तिणरो विहार रे।
अवक्त ने नखेध्यो रहणो एकलो रे॥ १॥
धुर सूं तो लोपी अरिहत आगना रे, एक तो आहीज मोटी खोड रे।
वले नांम धरावे एकल साध रो रे, ए तो छे जिण सासण मे चोर रे॥ ए २॥
सूतर अवक्त वय अवक्त पणे रे, तिणरी चोभंगी चित्त में धार रे।
यां दोनू वोला माहे काचो नही रे, तो नचित रहो एकल अणगार रे॥ ३॥
कोइ गण मांहे रहतां पडीयो चूक मे रे, तिणने गुर हित सूं दीधी सीख रे।
अवक्त क्रोध तणे वस आय ने रे, वचन न बोलें गुर ने ठीक रे॥ ४॥
कहे सगला साध तो इमहीज चालता रे, त्यांनें सीखांमण न दीए कांय रे।
हू घणा माहे तो रहे सकूं नही रे, ओघट घाट घणी मन मांय रे॥ ५॥

अभिमांनी आपणपो मोटो मांनतो रे, प्रबल मोह मांहें मुरझाय रे।
कार्य अकार्य सुध सूझें नहीं रे, ववेक विकल ते एकल थाय रे॥६॥
गांमानुगांम विचरतां तेहनें रे, घणी आबाधा उपजें आय रे।
आबाधा एकल नें खमतां दोहिली रे, खमवा रो जांणें नहीं उपाय रे॥७॥
वीर कह्यों म्हांरा उपदेस थी रे, तोनें सीष एकलपणो म होय रे।
ए तो सरधा तीर्थंकर देव री रे, गण मत छोडो सूतर जोय रे॥८॥
आचारंग पांचमां अधेन में रे, चोथें उद्देसें छें ए भाव रे।
उपसर्ग थी आबाधा उपजें तेहनों रे, विसतार कहूं छूं तिणरो न्याव रे॥९॥

●

ढाल : ३

दुहा

सास खास ताव तेज रो, रोग उपजें अनेक विध आय।
वले गरढापो आयां थकां, विवध पणें दुख पाय ॥ १ ॥
वले परिणांम चल विचल हूआं, किण री हटक न कांय।
ज्यां एकलपणों आदर्यो, त्यांने परभव चिंतन कांय ॥ २ ॥
जो साधां री संगत करे, तो वधें घणों वेराग।
आप छांदे एकला फिर्यां, जाए संजम थी भाग ॥ ३ ॥
भागण रा उपाय छे अति घणा, ते पूरा कह्या न जाय।
पिण कहू थोडी सी वानगी, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ४ ॥

ढाल

[सत्य कोइ मत राखजो]

ताव चढे कदा आकरो, वाचा रुके बोल्यो न जायो रे।
तिरखा अतुल वाय भिडकीयां, कुण सखाइ थायो रे।
धिग धिग अवक्त एकलो* ॥ १ ॥
कर्म जोगे कुत्तो डसे, तो ठरलें मात्र किम जावे रे।
डांवरू जांन्हौ वालादिक हुवां, आहार पांणी कुण ल्यावें रे ॥ धि० २ ॥
जब केइ कायर सीदावला, आप छांदें करें मन जांण्यो रे।
भूख त्रिषा ना पीडीया, खाये ग्रहस्थ नो आंण्यों रे ॥ ३ ॥
केइ आरत ध्यांन माहे मरे, नरक तिरजंच मे जायो रे।
उतकष्टो अनंता भव भमें, चिहूं गति गोता खायो रे ॥ ४ ॥
अस्त्री आय बकारीयां, तो लाग जाए तिण चाले रे।
विटल हुवा होसी घणा, किणरी लज्जा सील पाले रे ॥ ५ ॥
विखे अतत पीड्या थकां, वेस्यादिक नें घरे जायो रे।
माठी भावना भावीया, कुण आंणें तिणने ठायो रे ॥ ६ ॥
अकार्य करतो संकें नहीं, थोडा सुखां नें काजे रे।
वात चावी हुवां लोक में, कने वेसणवाला पिण लाजे रे ॥ ७ ॥
यूं जांणे नर नारीयां, एकल दूर ताजीजे रे।
घरे हांण हांसो हुवे लोक मे, इसरो कांम न कीजें रे ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

क्या सूं प्रकत पाछी वलें नही, किण सूं न मिलें सभावो रे।
दुख वेदी हुवें एकला, केइ करे घणो अन्यावो रे॥ ९॥
क्यां सूं पोते आचार पलें नही, वले कूड कपट रो चालो रे।
गण छोडी हुवें एकला, ओरां रें सिर दे आलो रे॥ १०॥
क्यां सूं पोते आचार पले नहीं, पिण समकत राखें चोखो रे।
गण छोडी हुवे एकला, नही काढे ओरां में दोखों रे॥ ११॥
पछे मोह कर्म उदें हुवां, कुड कपट चलावे रे।
फिरती भाषा बोलें घणी, अणहूंता आगुण गावें रे॥ १२॥
गावां नगरा विचरतां, लोक पूछें हर कोइ रे।
थे साधा मांसूं नीकले, आतम कांय विगोइ रे॥ १३॥
जब केयक बोलें पाधरा, केइ बोलें आलपंपालो रे।
केइ क्रोध करें केइ परजले, केइ मूंह करें विकरालो रे॥ १४॥
केइ दोखण ढाके आपणा, ओरां में बतावें चूकों रे।
पूछ्यां न बोले पाधरो, पूजा सलागा रो भूखों रे॥ १५॥
कोइ लालालोलो करे, आहारदिकनां लपटी रे।
पूरो निकालो काढे नहीं, अैसा एकल कपटी रे॥ १६॥
आए साधां नें वंदणा करे, माहें माठा परिणांमो रे।
विनो नरमाइ करें घणी, ए पेट भरण रो कामो रे॥ १७॥
समभू नर नार वादे नहीं रे, आगना लोप एकल देखी रे।
आहार पांणी न दे भाव भगत सूं, तो हुवें साधां रो धेखी रे॥ १८॥
छल छिद्र जोवतों रहें, दुष्ट परिणामां दिन काढे रे।
च्यार तीरथ सूं तपतो रहे, मोख तणी विरत वाढे रे॥ १९॥
दगध बीज करें आप रो, वले घाले ओरां रे संका रे।
भर्म में पाडे लोक नें, अैसा छे एकल वंका रे॥ २०॥
चित भरम्यों फिरतो रहें, तिणनें साची सरधा नावे रे।
कदाच जो आइ हुवें, तो थोडा माहे गमावें रे॥ २१॥
मागे न खाणो पार को, वले कनें साधां रो भेखो रे।
सरधा राखे निरमली, केयक विरला देखो रे॥ २२॥
च्यार तीरथ नें ओर लोक में, फिट फिट सगले कहिवाणो रे।
जो अवगुण जाणें आप में, साची सरधा रो एह अहलांणो रे॥ २३॥
वले अवगुण काढें गुर तेहनां, तो ही कुलष भाव नहीं आंणे रे।
अभितर समकत परगामी, ते तो मोटां उपगारी जाणे रे॥ २४॥

बोध समकत पायो त्या कनें, त्या दीठां हरपत थायो रे।
विनों भगत करें घणीं, साची सरधा दीसे तिण माह्यो रे॥ २५॥
साघ साघवी ने सरधा तणा, पूठ पाछे गुण गावे रे।
एकण घारा बोलतां, परतीत इण विघ [आवे रे॥ २६॥

ढाल : ४

दुहा

भला कुल री विगरी तका, जोवे विरांणा साध।
ज्यूं साध विगस्यों आचार थी, ते किण विध आवें हाथ ॥ १ ॥
आग्या लोपें सतगुर तणी, तिणनें ओपम छें गलीयार।
आप छांदें एकलो भमें, ज्यूं ढोर फिरें रुलीयार ॥ २ ॥
विगस्यां धांन री पाखती, बेठां दुरगंध आय।
ज्यूं एकल री संगत कीयां, बुधवंत अकल पत जाय ॥ ३ ॥
जो एकल नें आदर दीए, तो वधें मिथ्यात।
फूट परें जिण धर्म में, ते सुणजो विख्यात ॥ ४ ॥

ढाल :

[भव जीवा तुम जिए धर्म ओलखो]

जिण सासण में आग्या वडी, आ तों बांधी रे श्री भगवंत पाल।
अें तो सजन असजन भेला रहे, छांदे चालें रे प्रभु वचन संभाल।
बुधवंता एकल संगत न कीजिए* ॥ १ ॥
छांदो रूंध्यां विण संजम नीपजें, तो कुण चाले रे परनी आग्या मांय।
सहु आप मतें हुवें एकला, खिण भेला रें खिण वीखर जांय ॥ बु० २ ॥
आप मतें एकला हुवां, तो सासण में रे पर जाए घमडोल।
एहवा अपछंदा री करें थापना, ते पिण भूला रे भेद न पायो रही भोल ॥ ३ ॥
ई राग घटें तिणरी पाखती, कें उण संगत रे आवें मूल मिथ्यात।
कें साध सूं उतर जाय आसता, साची सरध्यां रे एकल तणी वात ॥ ४ ॥
अें तो भिड्कावे साधां रा समदाय थी, आपस में रे बोलें विरुवा वेंण।
वले छिद्र धरावें एक एक नें, साध दीठां रें वलें अंतर नेंण ॥ ५ ॥
नकटादिक चोर कुसीलीया, वधी चावें रे आप आपणी न्यात।
ज्यूं भागल ने भागल मिल्यां, घणों हरपे रे करें मनोगत वात ॥ ६ ॥
चोरी जारी आदि खूंन अकरज कीयां, राजा पकडे रे करें छवी छेद खोड।
वले देस नीकालो दें काढीयां, त्यांने राखें रे भील मेंणादिक चोर ॥ ७ ॥
ते विगाड करे तिण देसनो, भीलमेंणा रे त्यांनें आंणी साथ।
दुख उपजावे रेंत गरीव नें, धन लेजावें रे करे करें त्यारी घात ॥ ८ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

त्यांनें असणादिक आदर दीयां, लफरो लागे रे भांग्यां राजा तणी आंण।
कदा राय कोपे तो धन खोस लें, जीवां मारे रे तिणरा अें फल जांण॥ ६॥
इण दिष्टते साधां रा समदाय में; दोखण सेव्यां रे साध काढे गण बार।
ते आप छांदे एकला रहे, के भागल रे आगें पाछे फिरें लार॥ १०॥
अे तो साधां रा ओगुण बोलता फिरे, मुख मीठा रे खेले अंतर घात।
ओछी बुधवाला नें विगोवता, कूडी कथणी रे कूडी कर कर वात॥ ११॥
त्यांरी भाव भगत संगत कीयां, तिण भागी रे भगवंत नीं आंण।
ते तो दुख पांमें इण ससार में, उतकष्टां रे अनंत जांमण मरण जांण॥ १२॥
चोर नें तो आहार आदर दीयां, इह लोके रे धन जीतव नों विणास।
भेष धारी ने भागल एकल तणी, संगत कीधां रे बंधे करम तणी रास॥ १३॥
उसनां कुसीलीया पासथा, अपछंदा रे ससत्तादिक जांण।
त्यांने तीरथ मे गिणवा नहीं, ओ कर लीजो रे जिण वचन परमाण॥ १४॥
अें तो हेलवा निंदवा जोग छे, खिष्ट करवा रे तिणरी ग्याता में साख।
त्यांरो संग परचो करणो नहीं, सूतर मांहे रे भगवत गया भाख॥ १५॥
यां तो अनत ससार आरे कीयों, इह लोके रें परलोके हुसी भंड।
त्यांनें आहारपांणी उपध दीयां, तिणनें आवे रे चोमासी नों दंड॥ १६॥
भेला बेस सभाय करवी नही, नही करणो रे त्यांरे साथे वीहार।
.यांरो संग परचो करतां थकां, ग्यांन दरसण रे चारित नों विगार॥ १७॥

●

ढाल : ५

दुहा

केइ भेषधास्यां रा टोलां थकी, लड झगड नीकलें बार।
ते आप छांदें फिरें एकला, ज्यूं ढोर फिरे रूलीयार॥ १ ॥
तिणनें हीर हटक किणरी नही, स इछाचारी फिरे छे सदीव।
वले प्रवल उदे तिणरे मोहणी, एहवा एकल भारी करमां जीव॥ २ ॥
ते नांम धरावें साध रो, पिण मूंक दीधी मरजाद।
वले वाड लोपी व्रह्म वरत री, करतों फिरें मूढ उपाध॥ ३ ॥
आठां गुणां विण एकलों, साध नें रहिवों नांहि।
श्री वीर जिणेसर भाखीयो, जोवों आगम रे मांहि॥ ४ ॥
जे आप छांदें फिरें एकला, श्री जिण वचन विराध।
जिण लोक लज्या पिण परहरी, तिणनें मूरख सरधें साध॥ ५ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

वावीस टोलां वाजे त्यांरी आ सरधा, साधां नें एकलो नहीं रहणो रे।
हिवें तेहीज एकल ने साध थापें, त्यांरी विकलाइ रो कांइ कहणो रे।
एकल भेषधारी रो संग न कीजे॥ १ ॥
जो एकल ने चोडे साध परूपें, तो लागें लोकां मांहें भूंडी रे।
जो एकल नें गिणे वावीस टोलां में, तो सगला री सरधा बूडी रे॥ २ ॥
त्यां वीर नां वचन तो हेठा मेल्या, तो एकल सूं पीत वांधें रे।
एकल ने कोइ साध सरधे तिण, आगम उथाप्या आंधे रे॥ ३ ॥
क्यांरों नेव चवें क्यांरी चवें नेवाली, ते तो रहे एकल सूं डरता रे।
जांणें एकल म्हांरो उघाड करें ला, तिण सूं संकता रहे लाजां मरता रे॥ ४ ॥
त्यांरा श्रावक श्रावका वांदें एकल ने, त्यांने इतरो पिण कहणों काठो रे।
थे एकल ने वांदों किण लेखें, गुणें तोखुतो रा पाठो रे॥ ५ ॥
एकल तो जिण आगना वारें, तिणने वांद्यां तो नहीं छे धर्मो रे।
थे सीस नमाय एकल नें वांदें, कांय वांधों चीकणा करमो रे॥ ६ ॥
इतरी कहेंनें एकल री वंदणा छडावे, तो एकल घणो दुख पावें रे।
जव एकल पिण यांरा खोटा खोटा किरतव, चोडें लोकां में वतावें रे॥ ७ ॥

केइ इण कारण डरता थकां भेषधारी, राखें एकल सूं मिलापो रे।
वले उलटी खुसामदी करें एकल री, न करे एकल री उथापो रे॥ ८ ॥
केइ तो भेषधास्या रे ओहीज कारण, ते एकल ने उथापे केमो रे।
वले बीजों कारण भेपधास्यां रे, ते सांभलजो धर पेमो रे॥ ९ ॥
एकला रा श्रावक भेषधास्यां ने, साध सरधे वादे पूजे रे।
वले आहार पांणी भावभगत सू देवें, तिणसूं एकल रा अवगुण न सूझे रे॥ १० ॥
वले एकल रा श्रावक श्रावका पासे,, एकल रा गुण गावें रे।
तेतों पेटभरा इहलोक रा अरथी, एकला ने साध सरधावें रे॥ ११ ॥
मन माहें तों आछों न जाणे एकल ने, पिण मुख सूं खोटो कहणी नावे रे।
पिण निज मुतलब रे काजें भेषधारी, एकल ने नही रीसावे रे॥ १२ ॥
अे तों कूड कपट कर कांम चलावे, त्याने पूछ्या करे गालागोलो रे।
यासूं एकल ने असाध चोडे कहणी नावे, यारे पिण ताबा उपर झोलो रे॥ १३ ॥
कठेक तो एकल ने साध कहे छे, कठें कहे एकल ने असाधो रे।
यारें कांम पडे जेहवी भाषा बोले, त्याने किम कहिजे वीर नां साध्रो रे॥ १४ ॥
जो एकल भेषधास्यां रे काम न आवे, तो तुरत दे तिणनें उडायो रे।
खोटो सरधाय ने वंदणा छोडावें, घाले असाध तणी पात मायो रे॥ १५ ॥
जिण एकल मे पाणी मरे विवध परकारे, ते तो ओरा ने केम उथापे रे।
भागल एकल नें भेषधारी, त्या सगला ने साध थापें रे॥ १६ ॥
ते एकल भेषधास्या सूं मिलतो चालें, वले करें त्यांसूं नरमाइ रे।
आप रा किरतब आपने सूझे, मन छानी चोरी नही काइ रे॥ १७ ॥
एहवो एकल भागल भेषधास्या सूं, डरतो रहे दिन रातो रे।
वले झूठ बोलें त्यारा अवगुण ढाके, त्यांरी कूडी करे पखपातो रे॥ १८ ॥
इमहीज भेषधारी भागल एकल सू, डरता रहे दिन रातो रे।
ते पिण झूठ बोली दोष ढाके एकल रा; वले कूडी करे पखपातो रे॥ १९ ॥
एकल पिण भेषधस्या रो न करें उघाड, अे पिण न करें एकल रो उघाडो रे।
गालागोलो करें ठग खाअें लोकाने, धिग्रधिग्र त्यारो जमवारो रे॥ २० ॥
कांम पड्या एकल सूं करे आहार पाणी, कांम पड्यां उतर जाअें भेला रे।
कांम पड्या देवो लेवो करें एकल सू, काम पडया वादें किण वेला रे॥ २१ ॥
कांम परजाए तो भेषधारी एकल सू, करे बारेंइ संभोगो रे।
एकल पिण भेषधास्या सू करें संभोग, ते मेल दें सर्व सजोगो रे॥ २२ ॥
कदेक तो एकल सूं करें संभोग, कदेक न करे एकल सूं सभोगो रे।
एकल सू संभोग करे छे त्यांरा, वरत छें माठा जोगो रे॥ २३ ॥

कदेक तो एकल सूं होय जाए जूदा, कदेक होय जाए भेला रे।
ए साधां रा भेष में प्रतख देखो, जांणें नाचें कुबडी खेला रे॥ २४॥
गधा रा कंठ नें उंट बखांणें, उंट रो रूप गधा बखांणें रे।
ए तो दोनूं जणां मांहोमां हिलमिलीया, ते तो परमारथ नहीं पिछांणें रे॥ २५॥
ज्यूं भेषधाऱ्यां नें एकल सरावें, एकल नें भेषधारी सरावें रे।
ए पिण मांहोमां हिलमिल एक हूआ, ठगठग लोकां नें खावें रे॥ २६॥
चोर मांहोमां मिलनें चोरी करें नें, पर धन कुसले ल्यावें रे।
ज्यूं एकल नें भेषधारी मिल चालें, तो भोलां नें ठग ठग खावें रे॥ २७॥
जो चोरां रे मांहोमां फाट पडें तो, पर धन हाथ न आवें रे।
ज्यूं यांरे पिण मांहोमां रे फाट पडें तो, यां आगें पिण कुण ठगावें रे॥ २८॥
एकल नें भेषधारी भेला मिल चालें, ओ प्रतख देखो पोलांणो रे।
ए ठग-ठग नें माल खावें लोकां रो, त्यांरी बुधवंत करें पिछांणो रे॥ २९॥
भेषधाऱ्यां रा श्रावक नें एकल रा श्रावक, त्यांरा घट मांहें घोर अंधारो रे।
ते साध असाध रा गुण नहीं जांणें, नहीं जांणें साधां रो आचारो रे॥ ३०॥
ते एकल नें पिण साध सरधें, यांरें आ पिण सुध बुध नांहि रे।
समझाया पिण समझें नही भोला, परीया एकल रा फंद मांहि रे॥ ३१॥
भेषधाऱ्यां रा श्रावक त्यांरी, सुधबुध जावक बिगडी रे।
ते एकल नें वांदें तीखुतों करनें, मस्तक पगां रे रगडी रे॥ ३२॥
केइ एकल नें भेषधाऱ्यां रा श्रावक, ते पिण एकल रा दोष ढांकें रे।
सुध साधां रे आल देतां अग्यांनी, भारी करमा मूल न सांकें रे॥ ३३॥
साधां रे आल दे एकल रा दोष ढांके, ते तों दोनूं परकारें बूडा रे।
ते तों नरक निगोद रा बीज बण्यां छें, त्रिहूंगति मांहें दीसे सी भूंडा रे॥ ३४॥
त्यांरा गुर में हूंता दोष बतावें, तो लडवा नें छें तयारो रे।
निकाल काढण री तो बात न कांइ, उलटा करें कजीया ने राडो रे॥ ३५॥
त्यांनें परभव री चिंता नहीं कांइ, त्यांरा मत मांहि गाढा खूलीया रे।
त्यांरें न्याय निरणो तो मूल न दीसें, जेंसा हूंता जिसा गुर मिलीया रे॥ ३६॥

ढाल : ६

दुहा

केइ भेषधारी एकला फिरे, अवक्त मूढ अयांण।
ववेक विकल सुधबुध विनां, जिण मारग रा अजांण॥ १ ॥
सगला एकल नही सरिखा, सगलां री सरधा नहीं एक।
चलगत पिण त्यारी जूजूइ, त्यारा चाला चिरत अनेक॥ २ ॥
केइ एकल छे भोलीया, केइ विकल छे ताम।
केइ एकल छे पेटारथी, केकांरा छे दुष्ट परिणांम॥ ३ ॥
केइ एकल छें धूरत अति घणा, कूड कपट री खान।
केइ एकल छे कुसीलीया, त्यांरो एकत विषे सूं ध्यांन॥ ४ ॥
केइ एकल तपसा करें, लोकां नें ठिगण रे कांम।
ते छानो खाअे तपसा मभे, ते तो थोथा करे छे हगाम॥ ५ ॥
केइ एकल दुष्ट छे अति घणा, निज दोषण देवे ढांक।
मोटा मोटां अकार्य पोते करे, देवे ओरां सिर न्हांख॥ ६ ॥
एकल माहे तो अवगुण घणां, ते पूरा कह्या न जाय।
थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ७ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

केइ एकल कुपातर कुसीलीया छे, ते तो बुगल घ्यांनी वणजायो रे।
तिणरे ठांम ठांम बायां सू परचो, ते करता फिरें विषें रो उपायो रे।
एकल भेषधारी रो सग न कीजे* ॥ १ ॥
बुगला रो ध्यांन तो मछल्या उपर, ज्यूं एकल रे विषे सूं ध्यानो रे।
तिणने भोला लोक तो साधु जांणे छे, पिण पिडत सूं नही छे छानो रे॥ए०२॥
एहवा एकल उतरे खूणें खचूणे, ते जायगा छे अप्रतीतकारी रे।
तिण ठांमें रात री अस्त्री रहे तों, लोकां ने न पडे ठीक लिगारी रे॥ ३ ॥
वले रात रो आडो जडे सूअे एकल, जब कुण जाणें अस्त्री छे मांहीं रे।
इण वात रो कुण करें गवेसो, गवेसो कीया मिले त्याने कांइ रे॥ ४ ॥
घणा साघ रहे कदा एहवें ठिकांणे, तो अस्त्री नो जोर न लागें रे।
जो एकल एहवे ठिकांणें रहें तो, ब्रह्मव्रत तिणरो भागे रे॥ ५ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

जिन एकल रा परिणांम नहीं छै जिणांनें, ते उतरें एहवी जायगां रे।
जे उतरें अप्रतीतकारी जिणांनें, ते तो व्रत बिहुना नागा रे॥ ६॥
जिन एकल रें सील पलनों नहीं, ते तों अजोग जिणांनें जोवें रे।
तिन ठांमें निसंक सूं करें अकारज, एकल आतम बिगोवें रे॥ ७॥
कुमें लखणां उतरें ते जिणांनें, घणी अस्त्रियां तिन तिन ठांमें आवें रे।
त्यांनें हासा कतुहल री वातां सुणाए, घणी अस्त्रां नें मोह उपजावें रे॥ ८॥
त्यांनें मोली बातां केयक इम बोलें, आनां नें ओपरी नहीं जांणें रे।
जांणीजें रो आनां सूं मोह घणों छै, ते एकल रा चाला चारित न पिछांणें रे॥ ९॥
त्यांनें केयक अस्त्री कुपातर हुवें ते, एकल सूं छिड लगावें रे।
तिनरी निजर चेष्टा देख नें एकल, तिणनें बिबें लहीत बतलावें रे॥ १०॥
तिनरी लाज सरम छोडाय नें एकल, अकारज करतों नांणें संका रे।
भला कुल री नें छिद्र करतों नहीं सकें, केइ एहवा छै एकल बंका रे॥ ११॥
गांम गांम बिचरें तिहां एकल, ठांम ठांम जोहीज चालो रे।
एकल अकारज करें छै तिनरी, कुण काढें नीकालो रे॥ १२॥
टोलाबद्ध भेखधारी भेला रहें छै, ते तो साथ वाजे भली भांतो रे।
त्यां मांहें पिण कोइ कपटाइक देइ, बिषें सेवी पूरें मन खांतो रे॥ १३॥
टोलां मांहिलों बिषें सेवें इण रीतें, तो एकल रो कांइ कहणो रे।
घणां भेला रहें ते तों संकोच पांमें, तो एकल नें तो एकलो रहणों रे॥ १४॥
घणां भेला रहें ते तो अकारज करतों, रालें ओरां री संको रे।
एकल भेषधारी अकारज करें ते, निडर थको निसंको रे॥ १५॥
टोलां मांहिलों कपटो दे करें अकारज, तिणनें पूछें कोइ टोला वालो रे।
थारे कपडां हुंतो किणनें दोसें, इम पूछी नें काढें नीकालो रे॥ १६॥
एकल कपटाइक देइ करें अकारज, तिणनें कुण पूछें काढें नीकालो रे।
तिणसूं एकल नें डर किणरो न दीसें, ते बिषें रो क्रिम करतो चालो रे॥ १७॥
टोलो मांहिलो नेडेरो आवें जिणांनें, तिणनें पूछें तूं हुंतों कठें रे।
जो एकल मोडों आवें तो कुण पूछें, तिणसूं ओ फिरें छै मनमांनें जठे रे॥ १८॥
कुटंबवाली अस्त्री रा परिणांम चालीया, तो सरमा सरमी पिण न करें अकाजो रे।
जो आगें पाछें तिणरे कोइ न हुवें, तो छोड दें सरम नें लाजो रे॥ १९॥
ज्यूं एकल रें आगें पाछें कोइ न दीसें, तिणरे किणरी न दीसें लाजो रे।
तिन एकल रा परिणांम चल जाजें, तो सके नहीं करतों अकाजो रे॥ २०॥
एकल तो गुर नें गुर भायां सूं न्यारा, वले संभोगी पिण तिणरें नांहीं रे।
तिणसूं ओर नीकाल काढें क्यांरे तांइ, यांनें दोष न लागे कांइ रे॥ २१॥

जो घणां भेला हुवे तो कोइ काढें नीकालो, सारां ने दोष लागतों जांणी रे।
तिण एकल री चिंता नही किणनें, तिणरो निकाल काढे कुण तांणी रे॥ २२॥
केइ करमां रे जोगे फिरे एकला, दोष सेवें छें विवध परकारो रे।
पिण लोक लज्या सूं सील पालें छे, ते तो उतरें मझ बाजारो रे॥ २३॥
ते खूणें खचूंणें उतरतों सके, रखें आवे अण हूतो आलो रे।
तो एकल नें कुण साचो जाणे, कुण काढे एकल रो नीकालो रे॥ २४॥
यूं जांणे नें केयक एकल भेषधारी, नही उतरे अप्रतीत कारयें ठांमो रे।
ओर ओगुण तो अनेक छे तिणमें, पिण कुसील रा नहीं परिणांमो रे॥ २५॥
वले सेसतों परचो न करे बायां सूं, वले न करे आलाप सलापो रे।
केइ तो एकल एहवा फिरे छे, तिणरे कुसील री नही थापो रे॥ २६॥
एकल होय नें करे बायां सूं परचो, तिण तो हाथां सूं बात बिगाडी रे।
तिणरा उघाडा अहलांण दीसें भागल रा, तिण ने कुण कहसी ब्रह्मचारी रे॥ २७॥
आजूंणा काल मे पांचमें आरे, केइ अवक्त रहे एकलो रे।
ते तों निस्चेइ छे च्यार तीरथ बारे, एहवो एकल कदेय न भलो रे॥ २८॥
इण विध फिरे एकल भेषधारी, तिणमें साध तणी नही रीतो रे।
तिणरी तपसा ने आचारसील वरतरी, किम आवे परतीतो रे॥ २९॥
ए तों एकल कुपातर कुसीलीया रे, कह्या उतरवा रा ठांमो रे।
हिवे फिरवा रा चिरत कहूं छूं एकल रा, ते सांभलजो सुध परिणांमो रे॥ ३०॥
केइ एकल घर घर फिरें एकला, ज्यूं ढोर फिरे रुलीयारो रे।
ते विषे रों वाह्यों फिरें एकलो, तिणरो बुधवंत करजो विचारो रे॥ ३१॥
केइ एकलो पातरो घाले पडला में, फिरें छे घर घर बारो रे।
ते तो विषे विकार रो पीडीयो एकल, करतों फिरे बायां रों दीदारो रे॥ ३२॥
बायां ने दरसण देवा रो नांम लेवे छे, ते पिण झूठ बोले छें तांमो रे।
बायां ने देखण री चावना पोतें, तिणसूं घर घर फिरे इण कांमो रे॥ ३३॥
जो बायां रे चावना दरसण री छे, तों बायां आय दरसण करसी रे।
जो एकल रे चावना बायां देखण री, तो एकल घर घर फिरसी रे॥ ३४॥
तिण एकल नें केयक इम पूछे, थे क्यू फिरो घर घर आंमो रे।
थे आहार पांणी वेहरता न दीसो, ओर थांरे कांइ कांमो रे॥ ३५॥
जब एकल कहें बाया ने दरसण देवा, घर घर फिरूं जाणें उपगारो रे।
ओर तो मांहरे कांम न कोइ, इम कहिने उतर जाओं पारो रे॥ ३६॥
निरलज घर घर फिरें एकलो, बायां नें दरसण देतो रे।
आ चलगति खोटी प्रतख दीसे, ए अजोग एकल रो पेंतो रे॥ ३७॥

बायां नें दरसण देवा घर घर फिरणो, आ तों सुध साधांरी नहीं रीतो रे।
आ तों रीत काढी छें एकल भागल, ते तो उघाडी दीसें विपरीतो रे ॥ ३८ ॥
कोइ गरढी गिलांण छें तपसण बाइ, कोइ करती जांणें पचखांणो रे।
इत्यादिक कोइ उपगार जांणें तो, कारण पडीया दरसण देवा जांणो रे ॥ ३९ ॥
घर घर फिरें बायां ने दरसण देवा, ते तो सूतर में नहीं पाठो रे।
दरसण देवा नें फिरें घर घर एकलो, तिणरो सील आचार छें माठो रे ॥ ४० ॥
दरसण देवा ने फिरें घर घर एकलो, ते पिण गोचरी री वेला टालो रे।
अकाल वेला में फिरे घर घर एकलो, ओ प्रतख दाल में कालो रे ॥ ४१ ॥
एकल घणां घरां फिरें खोज भांगण नें, दरसण देवा रों ले ले ओटो रे।
विवध पणें चाला चारित करें नें, करें निसांणें चोटो रे ॥ ४२ ॥
जो उणहीज घर जाअें दरसण देवा, तो पडजाअें हाथां सूं कूरो रे।
ओर बाया पिण मांहोमां माडें किचाकिच, वले करें एकल रो फितूरो रे ॥ ४३ ॥
जो एकल विकलां ने मूड करे चेला, त्यांनें तो म्हेलें तिण गामो रे।
आप तो एकलो परगांवां जाअें, बायां नें दरसण देवा कांमो रे ॥ ४४ ॥
एकल चेला नें राखें ठिकांणें, एकलो जाअें परगांमो रे।
ते पिण जाअें बायां नें दरसण देवा, तिणरा कुण जाणें सुध परिणांमो रे ॥ ४५ ॥
दरसण देवा बाया नें जाअें एकलो, चेलां राखें ठिकांणें रे।
पांच सात रात तिहां रहे एकलो, तिणने ब्रह्मचारी कुण जाणें रे ॥ ४६ ॥
लखण तो उणरा ओ ही जांणें, कें केवल ग्यानी जाणें रे।
छदमस्थ तो बारलो ववहार देखी, खोटो जांणें छें तिणनें अलाणें रे ॥ ४७ ॥
एहवा धूरत केइ एकल भागल, त्यारी कुण करसी प्रतीतो रे।
तिण एकल नें कोइ साधु जाणें, ते भव भव में होसी फजीतो रे ॥ ४८ ॥
एकल घर घर फिरे कुवेला, किण सूं करें विषें री वातो रे।
किण किण सूं करें अंग कुचेष्टा, किण किण रे फेरें मस्तक हाथो रे ॥ ४९ ॥
छोटी डावरीयां रे माथे हाथ फेरे, ते तों मोह उपजावण कामो रे।
जो तुरणी रा माथा उपर हाथ फेरे, जब तो दीसें विषें रा परिणांमो रे ॥ ५० ॥
जो उण लखणी कोइ बाइ हुवे तो, ते तो वात न काढें बारें रे।
एकल सूं हिलमिल करे अकारज, उ विगरुयो ओरां नें विगाडें रे ॥ ५१ ॥
कोई जातवंत कुलवंत हुवे बाई, ते तो कर दें एकल रों उघाडी रे।
जाणें रखे मोने आल आवे अणहूंतों, तिण सूं आ तो कहिनें हुवे न्यारी रे ॥ ५२ ॥
जब एकल कहे मोनें आल देवे छें, जब आ पाडे एकल ने कूडो रे।
वले कहे एकल नें थे भूठ बोलो ला, तो इधको होसी वले फितूरो रे ॥ ५३ ॥

ए वात सुणें एकल रा श्रावक श्रावका, तो उलटा मांडे तिणसूं कजीया रे।
वले बंदी करे दरबारां तांइ, त्यां छोडी लोकीक री लोजीया रे॥ ५४॥
तिणने भेला होय दबकावे अग्यांनी, देदे अणहूंता दाबा रे।
म्हांरा गुरां नें तूं आल देवें छे, वले करें लोकां में हाबा रे॥ ५५॥
तिणनें अनेक परकारे करी ते डरावे, तिणरो कर कर लोकां में फितूरो रे।
त्यांरे निरणो काढण री तो वात न कांइ, खपे छें बोलावण कूडो रे॥ ५६॥
जांणें इण आगा सू भूठ बोलाए, उतारा गुरां रो आलो रे।
पिण इसरी तो विकलां रें मन में आवें, आपां काढां इणरो नीकालो रे॥ ५७॥
तिणमें कोयक वाइ काची हुवे ते, डरती थकी भूठ वोलें रे।
जब विकल जांणें गुर रो आल उतरीयो, पिण अभितर री आंख न खोले रे॥ ५८॥
जो केयक बाइ गाढी हुवें हीया री, वले साची हुवें साहस पूरो रे।
तिणनें एकल रा श्रावक श्रावका पूछे, तो डरती न बोलें कूडो रे॥ ५९॥
तिणसू धेष धरें पिण निकाल न काढे, यांरे दोष ढांकण री रीतों रे।
एहवा मत ग्राही मांनव मत माहे घुलीया, त्यारे न्याय तणी नही नीतो रे॥ ६०॥
अे तों दोष जांणे तोही दावे राखें, जाणें लागे लोकां मांहें भूंडी रे।
वले पड जाअेला म्हांरा मत में विखेरो, तो जावक जायला वात बूडी रे॥ ६१॥
इम जाणें ने एकल रा दोष ढाके, नही काढें तिणरों नीकालों रे।
एकल रें बदले भूठ बोली ने, आतमा नें लगावे कालो रे॥ ६२॥
वले एकल घर घर फिरें तो अग्यांनी, साता पूछे वायां री रे।
त्यांरे सुखीअे सुखी त्यांरे दुखीअे दुखी हुवें, वरग वहे छें आछा खांया री रे॥ ६३॥
साता पूछे बाया सूं माया मोह बांधे, त्यांसूं कर कर गमती वातां रे।
जे विकल वायां तिणनें गुर जाणे, ते करे एकल री पखपातां रे॥ ६४॥
जो गृहस्थ री साता साध पूछे तो, ते तों साध निश्चे अणाचारी रे।
तिण अणाचारी ने गुर जांण वांदे, ते गया जमारो हारी रे॥ ६५॥
कोइ गृहस्थ बाइ भाइ मांदो हुवे तो, त्यांरी फिर फिर पूछे समाधो रे।
एहवो विकल एकल भेषधारी, ते तों निमाइ निश्चें असाधो रे॥ ६६॥
ए तों एकल रो विषे विकार वतायो, थोडीसी कही विकलाइ रे।
हिवें लोलपणा री विध कहूं एकल री, ते सांभलजो चित्तलाइ रे॥ ६७॥

ढाल : ७

दुहा

केइ खावा पीवा रों अति लोलपी, ते घणां भेलो रहें केम।
गण छोडी एकलो फिरें, तिणरे खावा रो ध्यांन नित नेम ॥ १ ॥
आप छादें एकल गोचरी करें, ते बुगल ध्यानी बण जाय।
ताजे आहार तूटों परें, लांबों देख्यां तुरत फिर जाय ॥ २ ॥
एकल जांणें आहार नितकों करूं, तो न मिलें सरस आहार।
तपसा करू तो आहार ताजों मिलें, वले जस फेले लोक मझार ॥ ३ ॥
इम जाणी एकल तपसा करें, तिणरी तपसा री किसी परतीत।
तिणरी विकलाइ वेंहरण तणी, दीसें घणी विपरीत ॥ ४ ॥
रस ग्रिधी री तपसा तणी, परतीत आवें केम।
तिणरी वेंहरण री विध परगट करूं, ते सुणजो धर पेम ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अनुकम्पा जिण आग्या में]

एकल ने आखी रोटी जवा री वेंहरावें, जब तों घणां गाढ सूं लेवें बटको।
जो लाडू सेरेक वेहरावें एकल नें, तो तुरत वेहरी ने करजाओ गटको।
एकल भेषधारी रा चारित ओलखजो* ॥ १ ॥
आखी रोटी न लेवें नें बटको लेवें, ते तो आखो लाडू वेहरे किण लेखें।
बटका रे लेखे तो डली लेणी लाडू री, आपरी सरधा साह्मो क्यूं नही देखे ॥ए० २॥
आखी रोटी न लेवे नें बटको लेवें, तिणरो भेद भोली बाया नहीं जाणे।
आहार थोडो वेहरयो तिणसूं गुण गावे, तिणरो परमारथ पूरो न पिछाणे ॥ ३ ॥
आतो घर घर फिरें आछा आहार ने रिगतों, तिण तो आछे आहार खाणे चित्त दीधो।
ते जवां री रोटी आखी किम खावें, तिणसू जवा री रोटी रो बटको लीधो ॥ ४ ॥
किणरेइ घरे तो बटकोइ न लेवे, गाला गोलो करे जवां री रोटी देख।
आगले घर गया आहार चोखो देवे तो, प्रतिपूर्ण आहार लेवे वशेख ॥ ५ ॥
कोइ तो बाइ कहें म्हारे बटको लीधो, कोइ कहें म्हारे मूल न लीयों आहार।
ते तों मिल मिल ने एकल रा गुण गावे, ते एकल रा चावा चारित न जाणे लिगार ॥ ६ ॥
यारे दया रा लाडू जाणें तिण ठामे, उरला घर छोडी ने तिण घर जावें।
तिहां एकल ने बाइ लाडू वेहरावे, तो भावे जिता एक घर ना ल्यावें ॥ ७ ॥

---

*यह ऑकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

जब रोटी रो तों बटको बटको वेंहरें, लाडू वेंहरावें तो लेवें भरपूर।
बटको बटको वेंहस्यो तिणसूं महिमा वधारे, ते तों समझ पड्यां विण बोलें कूर॥ ८॥
किणरे खरच विवाह रा लाडू वच्यां हुवें, तिण नें आपरो रागी दातार जांणे।
ओर दातार छोडी ने तिण घर जावें, खपें जिता एकण घर रा आंणें॥ ९॥
पारणें पारणें तिणहीज घर जावें, बोहत लाडू वेहरावे छें जिहां तांई।
लाडू पूरा हुआं पछें जावें आगा ज्यूं, तिण री भोलां नें खबर पडे नही काई॥ १०॥
जवां री रोटी रो तो बटको वेहरे, लाडू वेंहरावे तो लगाय दें भींकों।
ताजा आहार उपर तो तूटो पडे छें, एहवा एकल नें कदेय म जांणो नीको॥ ११॥
जवां री रोटी रें तो बटको लेवें, गोहां री देवे तो लेवे दोय च्यार रोटी।
वले फिरतों फिरतों ताजा घर सोझें, आ एकल री चलगत देखलों खोटी॥ १२॥
घणा लाडू वेहस्यां तो दोष न कोइ, गोहां री रोटी घणी वेंहस्यां दोष नांही।
दोष तों छे आहार असुध वेंहस्यां में, कें दोष छें लोलपणा रे मांही॥ १३॥
घणी रोटी वेंहस्यां कोइ दोषण जांणें, घणां लाडू वेहस्यां कोइ दोषण जाणें।
ते मूढ मिथ्याती ववेक रा विकल, ते पीपल बांघी मूरख ज्यूं तांणें॥ १४॥
जवां री रोटी रो तो बटको वेहरे, ताजों आहार देवे तो लेवे भरपूरों।
वले वेरांगी वाजें बटको वेंहस्यां सूं, एहवा कपटी रो वेराग कूडी फितूरों॥ १५॥
आखी रोटी न वेंहरें ने वटको वेंहरे, जांणे आछों आहार मिलसी ओर ठांम।
इण कारण एकल घणां घरां भटके, ताजों ताजों आहार गवेषण कांम॥ १६॥
आखी आखी रोटी वेहस्या थोडा घरा में आवे, जब विगें सुखडी पिण थोडीज आवे।
दूध दही पिण थोडोइज आवें, जब थोडा सूं एकल संतोष न पावे॥ १७॥
तिणसूं घर घर रोटी रो बटको वेंहरे, जब तो वीस तीस घरां वेंहर ल्यावें।
जब विगे पिण आवें छें घणां घरां नों, सुखडी दूध दही अे पिण घणां आवें॥ १८॥
विगें सुखडी घणी खाधां हुवें राजी, वले टाल राखे छे त्यांरा दातार।
सरस आहार रे कारण घणां घरां भटकें, तिणरें किणरी हटक न दीसें लिगार॥ १९॥
केइ धूरत एकल छें मायावीया कपटी, ते तो कूड कपट कर कांम चलावे।
ते एकंत आछों आहार खावा रें तांइ, तिणसूं वटको वटको वेहरी नें ल्यावें॥ २०॥
जिण गांव में थोडो आहार मिलतो जांणे, तो जवां री रोटी वेंहरे दोय च्यार।
जब लांवो पातलों आहार न छोडें, जांण नें अणोदरी न करें लिगार॥ २१॥
केइ एकल महिमा वधारण काजें, तपसा कर लोकां मांहे पमावें।
वले तपसा जगाय ताजो आहार ल्यावें, पछें छांने छानें तपसा माहे खावें॥ २२॥
किणही कनें तो कपडादिक देवें, किणही रे घर मेले सुखडियादिक सार।
अथवा कोइ वाइ हुवें रागण एकल री, ते छांनें छांनें देवें एकल नें आहार॥ २३॥

कोइ एकल राखे आप तणा थांनक में, ते मेल दे एकंत गुप्त ठिकाणे।
ते तो रातेवासी राखे तपसा में खावें, एहवा एकल रा चारित तो केवली जांणें ॥ २४ ॥
एकल कहें मोंनें वीस वरस हुआं छे, निरंतर वेलें बेलें पारणों करतां।
तिणरों डील तों दीसें आगा जिम पुष्टो, वले थाको नही वीहार करतां विचरतां ॥ २५ ॥
जो बेले वेले पारणो कहें निरंतर, तो पिण हीणों कुमलाणो दीसे नांहीं।
तिणरी तपसा री परतीत किण विध आवें, कोइ चतुर विचार देखों मन मांही ॥ २६ ॥
तिणरो डील पिण दीसे चिलका करतो, वले लोही ने मांस तूटा दीसे नाही।
चाल तों पिण दीसे सेठो थको एकल, तिणरे तपसा रा लखण न दीसे कांई ॥ २७ ॥
तिणरा सरीर रो गोलो दीसे एक धारा, वले वल प्राकम पिण तिणरो दीसे छें गाढो।
बेला तेला तिणरा किण विध कहीजें, पेट में पिण परीयों न दीसे खाडो ॥ २८ ॥
इणरा डील तणा अेलांण देखतां, तपसा रो अंस न दीसें लिगार।
एहवा एकल भागल छे भेषधारी, ते तो निश्चेइ छे जिण आगना वार ॥ २९ ॥
एकल री तपसा री नही परतीत, वले एकल रा सील री नही परतीत।
तपसा नांम लेवें छे ठगण लोका ने, एहवा एकल होसी भव भव मे फजीत ॥ ३० ॥

ढाल ८

[सेवो रे साध सयाणा]

के कांसूं तो घणां भेलो रहणी न आवे, तिणसूं फिरे एकलो आपे।
ते सुध साधा ने पिण कहे असाध, ते करे एकल री थाप रे। भवीयण।
जोवों हिरदय विचारी, थे छोड दों तिणरी लारी रे। भवीयण।
एकल छे जिण आगना बारी* ॥ १ ॥

केइ विषे रा वाया फिरें एकला, तिणसूं घणां भेलो रहणी नावे।
वले खावा रो ग्रिधी रसनो लोलपी छे, घणां मे केम खटावे रे॥ए०२॥
ज्यांने साच सरधे त्यांसूं न रहे भेला, आप छांदे फिरे एकलो।
एहवो भागल फिरे एकलो, तिणनें कदेय म जाणजो भलों रे॥ ३ ॥
अनेक टोलाधर फिरे छे त्याने, साधु सरधे वांदे कर जोड।
त्यासूं भेलो न रहे ने फिरे एकलो, तिणमे जाणजो मोटी खोड रे॥ ४ ॥
घणा भेला रह्यां परतो दीसे उघाड, तिणसूं एकला फिरें अधर्मी।
तिणरा अहलांण तो उघाडा दीसे, जाणीजे साचेलो कुकरमी रे॥ ५ ॥
तिण एकल ने पूछे थे टोलो कांय छोडयो, जब एकल बोलें छे आमो।
म्हे ढीला जाणे ने छोडया छे त्याने, म्हांरे नहीं छें घणां सू कामो रे॥ ६ ॥
मो सरीखो जे कोइ आय मिले तो, जब तो करूं तिणने चेलो।
जी मों सरीखो कोइ नही मिले चेलो, तो आपरे मेले रहू एकलो रे॥ ७ ॥
इम कहि कहि एकल आपो जणावे, ते पिण बोले वच न काई।
तिण एकल ने विकल मिले चेला, त्यांने पिण मूड लेवे माही रे॥ ८ ॥
ओ कहितों मो सरीखा ने करसू चेलो, तिण मूड लीया विकला ने माही।
ओ पिण भूठ उघाडो एकल रो, ते पिण विकलां ने खबर न काई रे॥ ६ ॥
थे पेहला कहिता हूं चेलो करूं तो, मों सरीखो करसू सुवनीत।
हिवे चेलो कीयां भोला विकलां ने, थांरा बोल्यां री किसी परतीत॥ १० ॥
एहवा चतुर विचक्षण श्रावक हुवें तो, इम पूछ करे तिणने खिष्ट।
भारीकरमा मूढ श्रावक त्यांने, गुर मिलीयो एकल भिष्ट॥ ११ ॥
एकलपणा रो खोज भागण ने, विकलां नें मूड कीयां भेला।
जो उणरा श्रावक ने समझ पड़े तो, तुरत करे तिणरी हेला रे॥ १२ ॥
चेला ने रात रा न्यारा राखे, आप रात री रहे एकलो।
तिण एकल री अपरतीत दीसे उघाडी, एहवो एकल कदे नही भलो रे॥ १३ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

तिण एकल रा चेला ववेक विकल छें, त्यांनो इतरी समझ छें नाही।
म्हारो गुर म्हांसूं रात रो रहें एकलो, किसा मुतलब रें ताइ रे॥ १४॥
एहवा कुकरमी फिरें एकल, तिणरें कुकरम रो छें चालो।
ते चेलो करें तो ही रहें एकलो, ते नही सकें लगावतों कालो रे॥ १५॥
एहवां एकल गयें कारले हुआ अनंता, अनंता होसी आगमीयें कालो।
केइ वरतमांन कालें पिण एहवा छें एकल, तिणरो कुण काढें नीकालो रे॥ १६॥
एकल रा चारित तो एकल जांणें, के केवलग्यांनी रह्या जाणों।
छदमस्थ तो अहनांणा सूं जांणें, कोइ आप म लेजो तांणों रे॥ १७॥
केइ भेषधारी फिरें एकला, अपछंदा अवक्त मूढ।
तिणनें पिण साध सरधें केइ भोला, कर कर कूडी रूढ रे॥ १८॥
ओ तों साध सरधें छें अनेक टोलां नें, त्यानें वादें छें सीस नमाय।
वले त्यासू पिण संभोग करें छें, वले मुख सूं करें गुण ग्रांम रे॥ १९॥
त्यासूं भेलों पिण रहें नहीं एकल, रहें एकलडो न्यार।
गांमां नगरा पिण फिरें एकलो, वले करें एकलडो वीहार रे॥ २०॥
ओ किण कारण फिरें एकलडो, ते तो भोलां नें नही ठीक।
तिणरा कूड कपट ने दोष सेवण री, कुण करें तहतीक रे॥ २१॥
तिण एकल माहे अनेक अवगुण छें, वले कूडकपट रो भंडार।
ते एकल रहें छें सगला थी डरतो, रखें करें म्हांरो उघाड रे॥ २२॥
विण कारण फिरें घर घर एकलो, पातरो लेइ हाथ।
अवसर देखनें एकल पापी, फेरें बायां रे माथें हाथ रे॥ २३॥
घर घर फिरतों तपसा जणावें, ताजो आहार पिण गली आवें।
पछें पारणा रे दिन तिण घर सेती, ताजों आहार ताकी ल्यावें रे॥ २४॥
तिण एकल री सील आचार तपसा री, भोला करसी परतीत।
कोइ चतुर विचक्षण डाहा होसी ते, एकल नें जांणें विपरीत रे॥ २५॥
केइ क्रोधी कपाइ लोलपी होसी, ते फिरसी एकला।
वले विषें तणा वाया फिरें एकलो, एहवा एकल कदेयन भला रे॥ २६॥
ठांम ठांम सूतर मांहे वीर नषेद्यो, साध नें एकलो रहणों नांही।
केइ एकल नें साध सरधें ने वांदें, ते पडीया मोटां फंद माही रे॥ २७॥
इम साभल नें उत्तम नर नारी, एकल दूर तजीजें।
उत्तम साध हुवे सुध आचारी, त्यानें हरख सहीत गुर कीजें रे॥ २८॥
इण पाचमें आरें फिरें एकलो, ते नीमाइ निश्चें भिष्टी।
ते ववेक विकल जिण आगना बारें, तिणनें साध न सरधें समदिष्टी रे॥ २९॥

रत्न : ११

जिनाग्या री चौपई

ढाल : १

दुहा

श्री जिण धर्म जिण आगना मझे, आगना बारें नही जिण धर्म।
तिण सूं पाप कर्म लागे नहीं, वले कटे आगला कर्म ॥ १ ॥
केइ मूढ मिथ्याती इम कहे, जिण आगना बारे जिण धर्म।
जिण आगना माहें कहे पाप छे, ते भूला अग्यांनी भर्म ॥ २ ॥
जिण आगना बारे धर्म कहे, जिण आगना मांहे कहे पाप।
ते किण ही सूतर मे चाल्यों नही, यूं ही करें मूंढ विलाप ॥ ३ ॥
केइ कहे धर्म तिहां देवां आगना, पाप छे तिहां करां नखेद।
मिश्र ठिकाणें मून छे, एह धर्म नो भेद ॥ ४ ॥
इसडी करें छे परूपणा, ते करे मिश्र री थाप।
ते बूडा खोटों मत बांध ने, श्री जिण वचन उथाप ॥ ५ ॥
केइ मिश्र तो मांने नही, मांने हिंसा में एकंत धर्म।
ते पिण बूडा छे बापडा, भारी करे छे कर्म ॥ ६ ॥
जिण धर्म तो जिण आगना मझे, आगना बारे नही धर्म लिगार।
तिणरी साख सूतर री दे कहूं, ते सुणजो विस्तार ॥ ७ ॥

ढाल

[जीव मोह अणुकम्पा न आणीये]

आग्या में जिण धर्म जिणराज रो, आगना वारे कहे ते मूढ रे।
ववेक विकल सुध बुध विनां, ते बूडे छे कर कर रूढ रे।
श्री जिण धर्म जिण आगना मझे* ॥ १ ॥
ग्यांन दर्शण चारित ने तप, ए तो मोख रा मारग च्यार रे।
या च्यारां में जिणजी री आगना, या विना नही धर्म लिगार रे ॥ श्री २ ॥
या च्यारा महिला एक एक री, आगना मागे श्री जिण पास रे।
तिण ने देवे जिणेसर आगना, जब उ पिण पामे मन मे हूलास रे ॥ ३ ॥
यां च्यारा विण मागें कोइ अगना, तो जिणेसर साझे मूंन रे।
जिण आगना विण करणी करे, ते करणी जावक जबून रे ॥ ४ ॥
वीसां भेदां रूके कर्म आवता, बारे भेदां कटे वाध्या कर्म रे।
त्यांरी देवे जिणेसर आगना, ओहीज जिण भाख्यो धर्म रे ॥ ५ ॥

---

*यह ऑकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

कर्म रुकें तिण करणी में आगना, कर्म कटे तिण करणी में जांण रे।
यां दोय करणी विनां नही आगना, ते सगली सावद्य पिछांण रे॥ ६॥
देव अरिहंत नें गुर साध छें, केवलीयें भाख्यो ते धर्म रे।
ओर धर्म में नही जिण आगना, तिण सूं लागें पाप कर्म रे॥ ७॥
जिण भाष्या में जिण आगना, ओर रो भाख्यो ते ओर जांण रे।
तिण सूं सुद गत जायें नही, पाप कर्म लागें छें आंण रे॥ ८॥
केवली भाख्यो धर्म मंगलीक छे, ओहीज धर्म उत्तम जांण रे।
सरणों पिण लेणो इण धर्म रो, तिणमें जिण आगना परमांण रे॥ ९॥
ठांम ठांम सूतर में देखलों, केवली भाख्यों ते धर्म रे।
मूंन साझें तिहा धर्म कह्यों नहीं, मूंन साझें तिहां पाप कर्म रे॥ १०॥
मूंन साझणीयों धर्म माठो घणों, भेष धाख्यां परूप्यों तांण रे।
खाच खांच बूडें छे बापडा, सूतर रा मूढ अजाण रे॥ ११॥
धर्म नें सुकल दोनूं ध्यांन में, जिण आग्या दीधी वारूंवार रे।
आरत रूद्र ध्यांन माठा बेहूं, यानें ध्यावें ते आग्या बार रे॥ १२॥
तेजू पदम सुकल लेस्या भलीं, त्यांमें जिण आग्या नें निरजरा धर्म रे।
तीन माठी लेस्या में आग्या नही, तिण सूं बंधे पाप कर्म रे॥ १३॥
भला परिणांम में जिण आगना, माठा परिणांम आग्या बार रे।
भला परिणांमा निरजरा नीपजें, माठा परिणांमा पाप दुवार रे॥ १४॥
भला अधवसाय में जिण आगना, आग्या बारे माठा अधवसाय रे।
भला अधवसाय सूं निरजरा हुवें, माठा अधवसाय सूं पाप बंधाय रे॥ १५॥
ध्यांन लेस्या परिणांम अधवसाय, च्यारूं भलां में आग्या जांण रे।
च्यारूं माठा में जिण आगना नहीं, यांरा गुणां री कीजो पिछांण रे॥ १६॥
च्यार मंगल च्यार उत्तम कह्या, च्यार सरणा कह्या जिणराय रे।
ए सगला छे जिण आगना मझे, आग्या विण आछी वस्त न काय रे॥ १७॥
सर्व मूल गुण उत्तरगुण, देस मूल उत्तर गुण दोय रे।
यां दोनूं गुणां में जिण आगना, आगना बारे गुण नहीं कोय रे॥ १८॥
अर्थ परमअर्थ जिण धर्म छें, उवाइ सूयगडाअंग मांय रे।
तिण माहे तो श्री जिण आगना, सेख अनर्थ में आग्या न कांय रे॥ १९॥
सर्वविरत धर्म साध तणों, देसविरत श्रावक रो धर्म रे।
यां दोनूं धर्म में जिण आगना, आग्या वारें तो बंधसी कर्म रे॥ २०॥
उजल धर्म छे श्री जिणराज रो, ते तो श्री जिण आग्या सहीत रे।
मुगत जावा अजोग साध कह्यों, ते जिण आगना सूं विपरीत रे॥ २१॥

आग्या लोपी चाले छादे आप रें, ते ग्यांनादिक धन सूं ठालो थाय रे।
आचारंग अधेन दुसरे, जोवो छठा उदेसा मांय रे॥ २२॥
आग्या सूं करूं ते धन मांहरो, एहवो चिंतवें साधु मन मांय रे।
आगना विण करवो जिहांइ रह्यों, रूडों बोलवो पिण नही कांय रे॥ २३॥
आग्या माहिलो ते धर्म मांहरों, ओर सर्व पारको थाय रे।
आचारग छठा अधेन में, दूजें उदेसें कह्यों जिणराय रे॥ २४॥
आगना मांहें सजम ने तप, आगना में दांन परमांण रे।
आगना रहीत धर्म आछों नही, जिण कह्यो पलाल समाण रे॥ २५॥
आश्रव निरजरा रो ग्रहण जूदो कह्यों, ते जाणसी जिण आग्या रो जाण रे।
आचारंग चोथा अधेन में, पेंहलें उदेसें जोय पिछांण रे॥ २६॥
निरवद धर्मी चतुरविध संघ छे, ते आग्या सहीत वांछे अनुष्ठान रे।
ते आचारंग चोथा अधेन में, तीजें उदेसें कह्यों भगवांन रे॥ २७॥
तीर्थंकर धर्म कीधो तको, ते मोख रो मारग सुध वेस रे।
ओर मोख रो मारग को नही, पाचमे आचारंग तीजे उदेस रे॥ २८॥
जिण आगना बारली करणी तणो, उदम करे अग्यांनी कोय रे।
आग्या मांहिली करणी रो आलस करे, गुर कहे सीष तोनें दोनूं म होय रे॥ २९॥
कुमारग तणी करणी करें, सुमारग रो आलस करे कोय रे।
दोनूं कारण दुरगत तणा, आचारंग पाचमो धेन जोय रे॥ ३०॥
जिण मारग रा अजाण ने, जिण उपदेस रो लाभ न होय रे।
ते आचारंग नां चोथा अधेन में, तीजा उदेसा में जोय रे॥ ३१॥
जो दांन सुपातर नें दीयो, तिणमे श्री जिण आग्या जांण रे।
कुपातर दांन मे आगना नही, तिणरी बुधवंत करजो पिछाण रे॥ ३२॥
साध विनां अनेरा सर्व ने, दांन न दे साध माठो जाण रे।
दीधां भमण करें संसार में, तिणसूं साधां कीया पचखांण रे॥ ३३॥
सूयगडाअग नवमां अधेन मे, तेवीसमी गाथा जोय रे।
वले दीधां भागे वरत साधु रा, जिण आगना पिण नही कोय रे॥ ३४॥
पातर कुपातर दोनूं ने दीयां, विकल जांणे दोयां मे धर्म रे।
धर्म होसी सुपातर दांन में, कुपातर नें दीयां पाप कर्म रे॥ ३५॥
खेतर कुखेतर श्री जिणवर कह्या, चोथे ठांणे ठांगाअंग माय रे।
सुखेतर मे दीयां जिण आगना, कुखेतर मे आग्या नही कांय रे॥ ३६॥
आहार पांणी ने उपधादिक, साध देवे गृहस्थ ने कोय रे।
तिणने चोमासी डंड नसीत मे, पनरमें उदेसे जोय रे॥ ३७॥

गृहस्थ नें दांन दें तिण साध नें, प्रायछित आवें छें कीधां अधर्म रे।
तो तेहीज दांन गृहस्थ दीयें, त्यांने किण विध होसी धर्म रे॥ ३८ ॥
असंजम छोडें संजम आदर्यों, कुसील छोडें हूवो ब्रह्मचार रे।
अकलपणीक अकारज परहरे, कल्प आचार कीयों अंगीकार रे॥ ३९ ॥
अग्यांन छोडे नें ग्यांन आदर्यों, माठी किरीया छोडी माठी जांण रे।
भली किरीया नें साचां आदरी, जिण आग्या सूं चतुर सुजांण रे॥ ४० ॥
मिथ्यात छोडे समकत आदर्यों, अबोध छोडें नें आदरीयो बोध रे।
उनमारग छोडें सनमारग लीयों, तिणसूं आतम होसी सोध रे॥ ४१ ॥
आठ छोड्या ते जिण उपदेस सूं, पाप कर्म तणो बंध जांण रे।
जिण आगना सूं आठ आदर्या, तिणसूं पांमें पद निरवांण रे॥ ४२ ॥
ठांम ठांम सूतर में देख लो, जिण धर्म जिग आग्या में जांण रे।
ते मूढ मिथ्याती जांणें नहीं, यूंही बूडे छें कर कर तांण रे॥ ४३ ॥
हूं कहि कहि नें कितरो कहूं, आग्या बारें नही धर्म मूल रे।
आग्या बारे धर्म कहें तेहनी, सरधा कण विण जांणों धूल रे॥ ४४ ॥

ढाल : २

दुहा

केइ साधु वाजे जेन रा, ते कूड - कपट री खान।
ते आगना बारे धर्म कहे, त्यारा घट माहें घोर अग्यांन ॥ १ ॥
त्याने ठीक नहीं जिण धर्म री, जिण आग्या री पिण नही ठीक।
त्यांने परिवार ववेक विकल मिल्यों, त्यामे बाजें पूज महिढीक ॥ २ ॥
ते वडा उट ज्यूं आगे चलें, लारे चालें जेम कतार।
ते बोहला वूडें छे बापडा, बडा वूढां री लार ॥ ३ ॥
हिवें वले वशेखे जिण आगना, ओलखजो बुधवांन।
तिणरा भाव भेद परगट करूं, ते सुण सुरत दे कांन ॥ ४ ॥

ढाल

[बालम मोरा हो]

साध सामायक वरत उचरें, तिणमें सावद्य रा पचचांण।
तेहीज सावद्य गृहस्थ करे, तिणमें श्री जिण धर्म म जांण ॥
श्री जिण धर्म जिण आगना तिहां* ॥ १ ॥
श्रावक सामायक पोसो करे, तिणमे पिण सावद्य रा पचखांण।
तेहीज सावद्य कांमा छूटो करे, तिणमें पिण जिण धर्म म जांण ॥ श्री० २ ॥
धर्म कहे साध जिण आगना मझे, आग्या बारे धर्म कहे मूढ।
तिण श्री जिण धर्म न ओलख्यो, तिण झाली मिथ्यात री रूढ ॥ ३ ॥
जिण धर्म री जिण आगना दीये, जिण धर्म सिखावे जिणराय।
आग्या बारे धर्म किण सिखावीयो, इणरी आग्या देवे कुण ताय ॥ ४ ॥
केइ आगना बारे मिश्र कहें, केइ धर्म पिण कहे आग्या वार।
तिणने पूछीजे ओ धर्म किण कह्यो, तिणरो नांम चोडे तूं पार ॥ ५ ॥
इन मिश्र नें धर्म रो कुण धणी, इणरी आग्या कुण दे जोड्यां हाथ।
देव गुर मूंन साझे न्यारा हूवा, उणरी उतपत रो कुण नाथ ॥ ६ ॥
केइ वेस्या रा पुत्र नें पूछा करें, थारी मा कुण नें कुण तात।
जब ओ नाम बतावे किण तात रो, ज्यूं आ मिश्र वाला री छे वात ॥ ७ ॥
वेस्या रा अंग रो उपनों, तिणरो कुण हुवें उदीरी ने वाप।
ज्यूं आग्या बारे धर्म ने मिश्र री, जिण धर्मी कुण करसी थाप ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

वेस्या रा अंग रो उपनो, उण लखणो हुवे उदीरी नें बाप।
ज्यूं जिण आग्या बारें धर्म नें मिश्र री, केइ करें छें पाषंडी थाप॥ ९ ॥
बाप विण बेटो निश्चे हुवे नही ज्यूं जिण आगना विण धर्म न होय।
जिण आग्या होसी तो जिण धर्म छें, आगना विण धर्म न कोय॥ १० ॥
कोइ कहें मांहरी मा तो छें बांझडी, तिणरो हूं छूं आतम जात।
ज्यूं मूर्ख कहे जिण आगना विनां, करणी कीधां धर्म साख्यात॥११॥
मा विण बेटा रो जनम हुवें नहीं, जनमें ते वांझ न कोय।
ज्यूं आग्या विण धर्म हुवे नही, जिण आग्या तिहां पाप न होय॥१२॥
गूघू पंखी नें चोर दोनूं भणी, गमती लागें अंधारा री रात।
ज्यू भारी करमा जीव तेहनें, जिण आग्या बारलो धर्म सुहात॥१३॥
काग नीबोली में रित करें, भंडसूरा रें भिष्टो आवे दाय।
ज्यूं काग भंडसूरा जेहवा मांनवी, रीझें आग्या बारली करणी मांय॥१४॥
चोर परदार सेवण कुसीलीया, ते तो सेरी जोवें दिन रात।
ज्यूं आग्या बारें धर्म सरधायवा, उंची कर कर अग्यांनी वात॥१५॥
दुष्ट जीव मंजारा नें चीत रा, छल सूं करें पर जीवां री घात।
एहवो दुष्ट मिश्र सरधा रो धणी, छल सूं घालें विकलां रे मिथ्यात॥१६॥
सतगुर री आग्या मांनें नही, ते तो अपछंदा ने अवनीत।
ज्यूं कोइ जिण आग्या विण करणी करे, ते करणी पिण छे विपरीत॥१७॥
विगडायल हुवां न्यात बारे करे, ते विगडायल फिरे न्यात रे बार।
जेहवो धर्म जिण आग्या बारलो, तिणमें कदे मत जांणो भली वार॥१८॥
न्यात बारें ते न्यात मांहें नही, तिणनें नहीं बेसाणे एक पांत।
ज्यूं जिण आग्या विण धर्म अजोग छें, कीयां पूरीजें नही मन खात॥१९॥
जो आग्या विण करणी में धर्म छें, तो जिण आग्या रो कांम न कोय।
तो मन मांनी करणी करसी तेहने, सगली करणी कीयां धर्म होय॥२०॥
जिण आग्या बारली करणी कीयां, पाप नही लागें नें धर्म थाय।
तो किण करणी सूं पाप नीपजें, तिण करणी रो तू नांम वताय॥२१॥
ग्यांन दरसण चारित ने तप, ए च्यारूंइ छे आगना माय।
या च्यांरा माहे तो धर्म जिण कह्यो, यां विनां ओर नाम वताय॥२२॥
इम पूछ्यां रो जाब न उपजे, झूठ बोले वणाय वणाय।
विकलां ने विगोवें छे पापीया, जिण आग्या बारें धर्म सरधाय॥२३॥
जिण धर्म जिण आग्या बारें कहे, ते पिण छे जिण आगना बार।
इण सरधा सूं वूडे छें बापडा, ते भव भव में होसी खुवार॥२४॥

जिण आगना बारे धर्म कहे, ते विगडायल जेन रा जांण।
त्यांरी अभितर फूटी छे माहिली, ते अंधारा ने कहे भाण॥२५॥
जिण आगना विण करणी करे, ते तो दुरगतना आगेवाण।
जिण आग्या सहीत करणी कीयां, तिण सूं पामें पद निरवाण॥२६॥
आग्या बारे धर्म कहे तेहनी, जोड कीधी खेरवा मझार।
सवत अठारें चालीसे समें, असोज विद पांचम थावरवार॥२७॥

ढाल : ३

दुहा

केइ पाखंडी जैंन रा, साध नांम धराय।
ते पाप कहें जिण आगना मझे, कूडा कुहेत लगाय ॥ १ ॥
आहार पांणी साध भोगवें, ते श्रीजिण आगना सहीत।
तिण में परमाद ने इविरत कहें, त्यांरी सरधा घणी विपरीत ॥ २ ॥
वले वसत्र पातर कांवलो, इत्यादिक उपध अनेक।
ते पिण जिण आगना सूं भोगवे, त्यांनें पाप कहें ते विगर ववेक ॥ ३ ॥
त्यां श्रीजिण धर्म न ओलख्यों, जिण आगना पिण ओलखी नांहि।
तिणसूं अनेक वोलां तणों, पाप कहें जिण आगना मांहि ॥ ४ ॥
कहे नंदी उतरें तिण साध नें, आगना दे जिण आप।
ते प्रतख हिंसा देख लो, जिण आगना छे पिण पाप ॥ ५ ॥
इत्यादिक वोल अनेक मे, आगना दे जिणराय।
तिहां हिंसा हुवे छें जीव री, तिण सूं पाप लागें आय ॥ ६ ॥
इम कहि कहि जिण आगना मझे, थापे छे पाप एकंत।
हिवें ओलखाउ जिण आगना, ते सुणजों मतवंत ॥ ७ ॥

ढाल

[मगध देस को राजा राजे]

जे जे कारज जिण आगना सहीत छें, ते उपयोग सहीत करे कोय।
जे कारज करतां घात जीव तणी हुवें, तिणरों साध नें पाप न होय रे। भवीयण।
जोवो हिरदय विचारी, थे कांय करों रूढ हीया री रे। भवीयण।
जिण आगना सुखकारी ॥ १ ॥

जीव तणी घात हुवे साध थी, तिणरो साध नें पाप न लागें।
जिण आगना पिण लोपी न कहीजें, वले साध रो वरत न भागें रे ॥ भ० जि० २ ॥

ए इचर्य वाली वात उघाडी, काचां रे हीयें केम समावें।
ज्यां जिण आगना ओलखी नही पूरी, ते जिण आग्या में पाप वतावें रे ॥ ३ ॥

नंदी उतरें जव सुध सावां नें, आगना दे जिण आप।
जों नंदी उतरें त्यांनें पाप हुवें तो, आगना दीधी त्यांनें पिण पाप रे ॥ ४ ॥

छद्मस्थ साध नंदी उतरें त्यांने, केवली आगना दे सोय।
पोतें पिण केवली नंदी उतरें छे, पाप होसी तो दोयां ने होय रे ॥ ५ ॥

जे नंदी उतरें छें केवलग्यांनी, त्यांने पाप न लागें लिगार।
तो छदमस्थ ने पाप किण विध लागे, या दोयां रों छें एक आचार रे॥६॥
छदमस्थ नें केवली नदी उतरे जब, दोयां सूं हुवे जीवां री घात।
जो जीव मूआ त्यांरी हिंसा लागे तो, दोयां ने लागें परणातिपात रे॥७॥
केवल ग्यांनी नंदी उतरे त्यांने, पाप न लागें कोय।
तो छदमस्थ साध नंदी उतरे जब, त्यांने पिण पाप न होय रे॥ ८॥
कोइ कहें केवली नें पाप न लागे, नंदी उतरतां जोग सुध।
पिण छदमस्थ ने पाप लागे नंदी रो, ए प्रतख वात विरुध रे॥ ९॥
जिण विध केवली नंदी उतरे जिम, पिण छदमस्थ उतरें जो नांहि।
तो खांमी छे तिणरे इरज्या सुमत में, पिण खांमी नही किरतब मांहि रे॥ १०॥
ते खांमी पडे ते अजांण पणे छें, इरियावही पडिक्रमण री थाप।
वले इधकी खांमी जाणे इर्या सुमत में, तो प्राछित ले उतारे पाप रे॥ ११।
साध नदी उतरे ते किरतब, सावद्य म जांणों कोय।
जो सावद्य हुवें तो संजम भांगे, ते विराधक री पांत होय रे॥ १२॥
आगे नंदी उतरतां अनंता साधां ने, उपनो केवलग्यांनो।
ते नंदी मांहे आउपों पूरो करने, गया पांचमी गति परधांनो रे॥ १३॥
कोइ कहे साध नदी उतरे ते, इतरी हिंसा रो छे आगार।
तिणरों पाप लागे पिण व्रत न भांगें, इम कहे ते मूढ गिवार रे॥ १४॥
जो साध रे हिंसा रो आगार हुवे तो, नदी उतरतां मोख न जावे।
हिसा रो आगार नें पाप लागे जव, चवदमोइ गुणठांणो नावे रे॥ १५॥
कोइ कहे नंदी उतरे जब साधने, लागे असक हिसा परीहार।
तिणरो प्राछित विण लीयां सुध नही छे, इम कहे तिणरेंई अंधार रे॥ १६॥
जो नदी उतस्या रो प्राछित विण लीधां, साध सुध न थावें।
तो नंदी मांहें साध मरे तो असुध, ते मोख माहें क्यूं जावे रे॥ १७॥
साध नंदी उतस्या माहे दोप हुवे तो, जिण आगना दे नांहि।
जिण आगना देतां पाप नही छे, थे सोच देखो मन माहि रे॥ १८॥
नंदी उतरे त्यांरो ध्यांन कीसो छे, किसी लेश्या किसा परिणाम।
जोग किसा अधवसाय किसा छें, भला भूडां री करो पिछांण रे॥ १९॥
ए पांचूं भला छे तो जिण आगना छें, माठा में जिण आग्या न कोय।
ए पांचूं माठा सूं पाप लागे छे, भलां सूं पाप न होय रे॥ २०॥
छदमस्थ ने केवली नंदी उतरे जब, लारे छदमस्थ केवली आगें।
छदमस्थ उतरें केवली री आग्या सूं, त्यांने पाप किसे लेखे लागे रे॥ २१॥

श्रावक माहोमांहि वीयावच कीधी, तिण दीयो सरीर रो साज।
छकाय रो ससतर तीखो कीधो, तिणसू आग्या न दे जिणराज रे ॥ ५४ ॥
गृहस्थ री वीयावच कीधी तिणरो, अठावीसमो अणाचार।
साता पूछ्यां रो अणाचार सोलमो, तिण मे धर्म नहीं छे लिगार रे ॥ ५५ ॥
सरीरादिक ने श्रावक पूंजें, मातरादिक परठें पूज।
इयादिक कारज री नही जिण आग्या, तिणमें धर्म कहे ते अबूज रे ॥ ५६ ॥
सरीर पूंजे मातरादिक परठें, ते तो सरीरादिका रों छें काज।
जो धर्म तणो ए कारज हुवें तो, आगना देतां जिणराज रे ॥ ५७ ॥
जो पूंजणो परठणों न करे जावक, तो काया थिर राखणी एक ठांम।
हस्तादिक ने विनां चलाया, रहणी न आवे तांम रे ॥ ५८ ॥
लघू वडी नीत तणी अवाधा, खमणी ठामणी नावे तांम।
पूंज ने परठें तोही कामो सावद्य, तठे जिण आग्या रों नहीं कांमरे ॥ ५९ ॥
कदा थोडी बुध ज्यानें समझ पडे नही, त्यांनें राखणी जिण परतीत।
आगना मांहे पाप आग्या बारे धर्म, इसडी न करणी अनीत रे ॥ ६० ॥
जिण आगना माहे पाप कहे ज्यांरी, मति घणी छे माठी।
जिण आगना बारे धर्म कहे छे, त्यांरी अकल आडी आई पाटी रे ॥ ६१ ॥
जिण आगना मांहें पाप कहितां, मूर्ख मूल न लाजें।
वले धर्म कहे जिण आगना बारे, ते पिडत पाखंड्यां मे वाजें रे ॥ ६२ ॥
जिण आगना माहें पाप कहे छें, ते बूडे कर कर तांण।
जिण आगना बारे धर्म कहे छे, ते पिण पूरा मूढ अयांण रे ॥ ६३ ॥
संवत अठारे वरस इकतीसे, जेठ सुदि तीज सुकरवार।
श्री जिण आगना ओलखावण, जोड कीवी पर उपगार रे ॥ ६४ ॥

ढाल : ४

दुहा

पाप अठारे कह्या अति बुरा, श्री जिण मुख सू आप।
ते सेव्यां सेवायां भलो जांणीयां, तीनूंइ करणा पाप॥ १ ॥
ए श्री जिण वचन उत्थापने, केई उंधी परूपे ताहि।
कहे करण जोग मिले नही, पाप अठारां माहि ॥ २ ॥
पाप कीयां पाप नीपनों कहे, पाप करायां कहे छें धर्म।
इण विध करे छे परूपणा, ते भूला अग्यांनी भर्म॥ ३ ॥
त्याने प्रश्न पूछे इण वात रो, पाप करायां धर्म किध थाय।
जब कल्प वतावें साध रो, पिण सूधो बोल्यो नही जाय॥ ४ ॥
तिण जिण आगना नही ओलखी, साधरो कल्प ओलख्यो नांहि।
त्या करण जोग विगटावीया, पाप कहे जिण आगना माहि॥ ५ ॥
कहे साध न पेहरे कांचूवो, पेंहर्‌यां लागे पाप कर्म।
पिण साधवी ने आगना दीया, हुवे छे निकेवल धर्म॥ ६ ॥
इत्यादिक अनेक वोल कल्प रा, त्यामें घालें घुचलाई मूढ।
करण जोग उथापे अग्यांनी थकां, त्यां झाली मिथ्यात री रूढ॥ ७ ॥
कल्प साध सावनी तणो, जुदो जुदो बांध्यो जिणराय।
तिण कल्प मे जिणजी री आगना, तिणमें पाप कीहां थी थाय॥ ८ ॥
साधने कल्पे ते साध करे, साधवी करे कल्पे ते तांम।
पाप नही त्यारा कल्प में, करण जोग रो अठे नही काम॥ ९ ॥
हिवें कल्प साध साधवी तणो, सांभलजो नर नार।
निरणो कीजे घट भिंतरें, ज्यू उतरो भवपार॥ १० ॥

ढाल

[मगध देस को राज राजे]

साध साधवी रा कल्प माहे अग्यानी, पाप कहे मूढ कोय,
तिण कल्प माहे श्री जिणजी री आग्या, तिहां पाप रो अस न होय रे॥
भवीयण जोवो हिरदय विचारी, कांय करो आतम भारी रे।
जिण बांध्यो कल्प सुखकारी* ॥ १ ॥
साध साध्वी रो कल्प श्री जिण बांध्यो, तिणरी श्री जिण आगना दीधी।
तिण मांहे पाप वताए अग्यानी, खाच गला ने लीधी रे॥ जि० २ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

तीन पिछोवडी साध नें कल्पे, साधवी नें कल्पें च्यार।
यां देयां नें छें श्रीजिण आग्या, तिणमें पाप नही छे लिगार॥ ३ ॥
च्यार पछोवडी साधवी राखें तो, साध आग्या देवें भलीभांत।
जो पोतेई साव च्यार राखें तो, भागल री छे पांत रे॥ ४ ॥
कांचूओ नें जांघीयो साधवी राखे, तिणनें आग्या दे साध रखावें।
जो साव पेहरे कांचूओ जांघीयो, तो जिण आग्या रो चोर कहावें रे॥ ५ ॥
गांमां नगरां साधवी नें कल्पें, शेखाकाल रहिणो मास दोय।
जो शेखा काल साध रहे दोय महीना, तों जिण आगना रो चोर होय रे॥ ६ ॥
साधवीयां कमाड जडें नें उघाडे, सील व्रत राखण रे काजें।
जो साध कमाड जडें नें उघाडें, तो पेहिलो माहावरत भाजें रे॥ ७ ॥
साधवीयां किवाड जडे नें उघाडें, त्यांनें जिण आगना दें सोय।
साध नें किवाड जडण उघाडण री, जिण आगना नही कोय रे॥ ८ ॥
कदा साधवी राखे उघाडो दुवार, तिणने प्राछित दे करें सुध।
तिणने आगना दे किवाड जडण री, साव पोतें जडें तो असुध रे॥ ९ ॥
पेहला नें छेहला तीर्थंकर त्यांरा, ते वाजे कपठीया साध।
त्यांरे धवला नें अल्पमोला कपडा, वले गिणती मे पिण मरजादा रे॥ १० ॥
विचला तीर्थंकर बावीस त्यांरा, ते वाजें अकपठीयां साध।
त्यांरें पांच वर्णा नें बहुमोला कपडा, वले गिणती में नही मरजाद रे॥ ११ ॥
जे कपठीया ने नही कल्पें ते कपडा, भोगवे तो लागे पाप कर्म।
तेहीज कपडा अकपठीया नें कल्पें, त्यांनें भोगवीयां छे धर्म रे॥ १२ ॥
पांच वर्णा नें बहु मोंला कपडा, अकपठीया राखे भली भांत।
त्यांनें कपठीया आगना दें तो ही धर्म, पोते राखे तो चोरां री पात रे॥ १३ ॥
कपठीया साव साधवी नें, गांमा नगरां मरजाद सूं रहिणो।
अकपठीया रहे विण मरजादा, जिण आग्या परिमांणे वहिणो रे॥ १४ ॥
असणादिक सेज्जा संथारो उद्देसी, कीधो कपठीयां रे ताई।
ते कपठीया सर्व साध ने न कल्पें, अकपठीया ने दोष नांही रे॥ १५ ॥
असणादिक सेज्जा संथारो उद्देसी, कीधो एक कपठीया ताई।
तो पिण कपठीया ने न कल्पे, अकपठीया नें दोष नाही रे॥ १६ ॥
असणादिक सेज्जा संथारो, कीधो अकपठीया रे ताई।
तो कपठीया अकपठीया बेहूं नें, कल्पे नही मूल काई रे॥ १७ ॥
असणादिक सेज्जा संथारो उद्देसी, कीधो एक अकपठीया ताई।
तो अकपठीया ने कल्पे उण विनां, कपठीया साध नें कल्पे नाही रे॥ १८ ॥

संघटो साधवी रो साध नें न करणों, कारण पडीया कीयां दोष नांही।
ओ पिण कल्प जिणेसर बांध्यो, पाप नही तिण माही रे॥ १९॥
साध साधवी नें राते भेलों न रहिणों, कारण पडीयां तो रहिणो भेलों।
जिण रीते वीर कह्यों तिण रीते, रहितां ने कोइ मत हलो रे॥ २०॥
साध साधवी नें साथे विहार न करणों, कारणे करणों साथे विहार।
त्यांनें आगना दे हर कोइ साध, तिणने पिण नही पाप लिगार रे॥ २१॥
साध ने तो एकलो रहिणों न कल्पे, साधवी ने न कल्पें दोय।
त्यांने पिण रहिणों कल्पें कारण पडीयां, जिण आगना पिण छे सोय रे॥ २२॥
साधवी दिखत घणा काल री छे, तो ही नव दिखत साध ने वदे।
साधवी पद तीथकर पांमी, तिणनें साध वादे आंणदे रे॥ २३॥
दिख्या वडी साधवी साध ने वादे, साध पिण साधवी ने वांदे।
ओ पिण कल्प तीर्थंकर बांध्यों, ओर नही बांध्यो आप छादे रे॥ २४॥
दोय कोस उपरंत आहार च्यारूंई, साध ने भोगवणो नाहि।
पेहला पोहर तणो आहार छेहला पोहर में, ते पिण नही घालणो मुख माहि रे॥ २५॥
जो गाढा गाढ रो कारण पडे तो, पेंहला पोहर तणों पोहर छेहले।
ओषधादिक जिम जाणे नें साधु, मुख मांहे निसंक सूं मेलें रे॥ २६॥
ओ पिण कल्प छे कपठीयां रो, अकपठीयां रो केवली जाणें।
ते पिण त्यांरा कल्प मांहे रहिसी, ते निश्चो काढे कुण तांणें रे॥ २७॥
इत्यादिक कल्प रा बोल अनेक, ते सूतर सूं कीजो पिछांणों।
आप आप तणा कल्प माहे चाल्यां, तिण में जिण आगना थे जांणो रे॥ २८॥
साधरा कल्प में साध चालें, त्यांने लागें नाही पाप कर्म।
यांनें आगना दे कोइ यांरा कल्प री, तिणनें हुवें छे निरजरा धर्म रे॥ २९॥
साधवी रा कल्प में साधवी चाले, यानें पिण नही छे पाप कर्म।
याने पिण आगना दें यांरा कल्प री, तिणनें पिण निरजरा धर्म रे॥ ३०॥
एहवो कल्प तीथकर बांध्यो, तिण कल्प परमांणे चालो।
इण कल्प मे पाप म सरधो कोइ, आ सरधा सेठी कर झालो रे॥ ३१॥
करण जोग विगटावण अग्यांनी, करें साध रा कल्प री वात।
जे जे कल्प तिथंकर बांध्यो, तिणमे पाप नहीं तिलमात रे॥ ३२॥
तीथंकर कल्प बाध्यों तिण माहे, पाप हुवें तो कल्प छे भूंडो।
तिण कल्प तणी कोइ आगना देसी, ते पिण जावक बूडो रे॥ ३३॥
जे मोटा पुरुषां रो कल्प वांध्यों छें, तिणमें पाप कहें ते पापी।
ते बूड गयो मांनव भव पाए, वीरनो वचन उथापी रे॥ ३४॥

तीथंकरे कल्प बांध्यों छें तिणरी, तीथंकर आगना दे आप।
त्यांरी आग्या नें कल्प में पाप हुवें तो, किणरी आग्या नें कल्प निपाप रे॥ ३५॥
साध नें आगना दे साध रा कल्प री, त्यांरी निरवद भाषा जांणो।
निरवद भाषा सूं निश्चें हुवें निरजरा, तिणमें संका मूल म आंणो रे॥ ३६॥
साधां तो सावद्य सगलोइ त्याग्यो, त्यारें पाप रो नहीं आगार।
त्यांरा कल्प में आगार पाप तणो हुवें, तो निश्चें नही अणगार रे॥ ३७॥
हिंसा झूठ चोरी मइथुन परिग्रह, इत्यादिक पाप थांनक अठारें।
ते सेव्यां सेवायां नें भलो जांण्या, तिणमें धर्म नही छें लिगारे रे॥ ३८॥
जे जे किरतब कीधाई पाप छें, तो कराया अणूमोध्यांइ पाप।
इणमेई घोचो घाले अग्यांनी, श्री जिण वचन उथाप॥ ३९॥
कीधांइ पाप करायांइ पाप, अणुमोद्यां पिण हुवें पापो।
इण मांहें संका मूल म जाणों, श्री जिण भाख्यो छे आपो रे॥ ४०॥
साधु रो कांम करें कोइ श्रावक, श्रावक रो कांम करें जो साध।
यां दोयां नें श्री जिण आग्यां नाहि, या दोयां रे नही समाध रे॥ ४१॥
कोइ श्राविका कांम करें साधु रो, श्राविका रो करें साधु कांम।
यां दोयां नें पिण जिनाग्या नाहिं, वले धर्म नही छे तांम रे॥ ४२॥
कोइ श्राविका साधु रो पेट मसल नें, साधु नें जीवां बचावे।
मुरछी मसले पीड्यां करें पगचंमी, साधु नें बाई साता उपजावे रे॥ ४३॥
वले कांटो काढे बाई साधु रा पग थी, फांटो काढे आंख्यां थी बारे।
इत्यादिक साधु रो कांम बाई करें तो, तिणनें जिनाग्या नही लिगारे रे॥ ४४॥
श्राविका साधु रो कांम करें तिम, श्रावक करें साधवियां रो काम।
यां दोयां नें पिण जिण धर्म नांहीं, जिनाग्या नही छे तांम रे॥ ४५॥
साधवी रो पेट मसल नें श्रावक, साधवी मरती नें बचावे।
मुरछी मसले पीड्यां करें पगचंपी, साधवी नें सांता उपजावे रे॥ ४६॥
साधवी रो कांटो श्रावक पग थी काढे, फाटो काढे आंख्यां बारे।
इत्यादिक साधवी रो करें कांम श्रावक, जिनाग्या नहीं लिगारे रे॥ ४७॥
श्रीजिण पाल बांधी ते भांगे, तिणने साधु तो न कहे धर्म।
केई धर्म बतावें भेषधारी भागल, ते तो भूला ग्यानी भर्म रे॥ ४८॥
जे जिनाग्या बारे धर्म कहें त्यां, जिनाग्या दीधी छें भागो।
एतो उंधी श्रद्धा रा मूढ मिथ्याती, त्यां पहर विगाड्यो सांगो रे॥ ४९॥
साधु साववी नें श्रावक जीवां बचावे, अथवा वले साता उपजावे।
अरिहंत भगवंत कह्यो तिण रीते, कर्मां री कोड खपावे रे॥ ५०॥

अरिहंत भगवंत री आग्या लोपें, करे साधु साधवियां रो कांम।
तिण मांहें धर्म कहे भेषधारी, ते तो यू ही बकें बेफांम रे॥ ५१॥
संवत अठारे वरस बयांले, असाड विद एकम सोमवार।
साधु साधवी तणो कल्प ओलखायो, नाथ दुवारा सहर मझार रे॥ ५२॥

ढाल : ५

दुहा

केई जैंनी नांम धराय नें, वांचें सूतर सिद्धंत।
पिण सवलो न सूझे तेहनें, उंधा उंधा अर्थ करंत॥ १॥
त्यांमें केई उघाडे मस्तकें, केई पोतीया मस्तक बंध।
ते वचन उथापें वीर ना, ते होय रह्या मोह अंध॥ २॥
ते साध उथापण सांतरा, बोलें आलपंपाल।
नांम लेइ सूतर तणों, देवे अणहुंतो आल॥ ३॥
ते चवदे उपगरण कहे छे साध रे, इधकों राखणो कहें छें नांहि।
इधको राखें छें तेहनें, न गिणे सावां तणी पांत मांहि॥ ४॥
एहवी उंधी करे छें परूपणा, घणा लोकां रें मांय।
सुध सावां सूं भिडकावीया, कर कर कूडी बकवाय॥ ५॥
उपगरण इधकां रो नांम ले, सुध साधां ने दीयां छे उथाप।
वले वीर वचन उथापनें, कर रह्या मूढ विलाप॥ ६॥
श्री वीर वचन सतमेव छें, त्यांनें उथापजों मत कोय।
एक वचन उथापें जांण नें, तो अनंत संसारी होय॥ ७॥
भंड उपगरण कह्या छे साध नें, ते वीर गया छे भाख।
चित्त लगाय ने साभलो, तिणरी सूतर में छें साख॥ ८॥

ढाल

[पाखंड वधसी आरे पाच मे रे]

उपगरण उगणीस तो लगता कह्या रे, दसमां अंग दसमां अधेन मांय रे।
ते नांमें परनांमें कह्यां छे जूजूआ रे, सांभलों एकमना चित्त ल्याय रे।
उपगरण भाख्या छें भगवंत साध ने रे* ॥ १॥

भोजन भड नें वले पातरा रे, संग्रह सबद में तीन पातरा जांण रे।
जो तीनां पातरा तणी संका पडें रे, तो तीनां सूतरां सूं करों पिछांण रे॥ उ० २॥

तीन पातरा कह्यां सूतर ववहार में रे, दूजा उदेसा मे जिणराय रे।
वले पातरा कह्यां छे तीन नसीत में रे, उदेसा अठारमां रें मांय रे॥ ३॥

भंड कह्यो छे ते माटी तणों रे, ते उचारादिक रें आवे छे कांम रे।
तिणरों कांम पडें छें अचाचूक रो रे, तिण सूं भड कह्यों छे तिणरों नाम रे॥ ४॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

झोली कही छें पातरा बाधवा रे, पाय केसरीया पातरा पडिलेहण जांण रे।
पाय ठवणंच ते कह्यो भंडल्यो रे, तीन पडिला कह्या छें ते परमांण रे॥ ५॥
रसतांन गोछो नें तीन पिछोवडी रे, रजोहरणों नें चोलपटों कह्यो तांम रे।
मुहपती चाली छें मुख बांधवा रे, पायपुछणो कह्यों विछावण कांम रे॥ ६॥
पायपुछणादि कह्यो तेहमें रे, आदि मांहे उपगरण छें अनेक रे।
ते सूतर जोय जोय परगट करूं रे, सांमलजों भवीयण आंण ववेक रे॥ ७॥
पातरा लूहवा नें चाल्यों लूहणो रे, दसवीकालिक पांचमा मांहि रे।
गलणों कह्यों छे पांणी छांणवा रे, कल्प सूतर में जोवो ताहि रे॥ ८॥
बांह परमांणें डांडो नें वले लाकडी रे, पगे कादो लूहवा नें कही खपाट रे।
वांसादिक नी पिण सूइ कही रे, नसीत रें पेंहलें उदेसे पाठ रे॥ ९॥
सूत नी डोरी नें वले रासडी रे, चिलमिली आडी बांधवा जांण रे।
ते नसीत सूतर मांहे जिण कही रे, पेंहलें उदेसें में जोय करो पिछांण रे॥ १०॥
डोरा चाल्या छे कपडो सींववा रे, ते कह्या छे सूतर आचारंग मांय रे।
ते पिण उनमांन जांण नें राखणा रे, तिणरी संका मत राखो कांय रे॥ ११॥
दोय वार सुच लेणो कह्यों खंडीया थकी रे, नसीत रें चोथा उदेसा मांहि रे।
ते खंडीया तो गिणती में दीसें नहीं रे, जीत ववहार सूं जांणे लेसी ताहि रे॥ १२॥
आर्ज्यां रे च्यार उपगरण इधका कह्या रे, कांचूओ जांघीयो पिछोवडी एक रे।
वले साडी मांहें कपडो इधको कह्यो रे, वेतकल्प आचारंग लीजों देख रे॥ १३॥
साठ वरसा में हूआं नें थिवर कह्यों रे, त्यांनें उपगरण इधका वशेख रे।
ते ववहार सूतर उदेसे आठमें रे, संका पडें तो लेजो देख रे॥ १४॥
छत्तंवा कह्यो छे ते तो छत्तरडो रे, ते कंबलादिक नों कर राखे तांम रे।
ते राखें छें सी तापादिक टालवा रे, ओर मूतलब रो नही छे कांम रे॥ १५॥
सरीर परमाणें डांडो कल्पें छें तेहनें रे, माटी नो भंड कल्पें छे ताहि रे।
ते राखे वडी नीतादिक कारणें रे, वले मात्रीयों राखें इधक सवाय रे॥ १६॥
लाठी राखणी कलपे तेहनें रे, ते कही छें दोड हाथ परमांण रे।
ते बेसतां उठतां आधार छें रे, एहवें कारण कही छे जांण रे॥ १७॥
पाटली कही दीसें बेसवा भणी रे, गरढा नें वायादिक हुवेती जांण रे।
रोग उपजतो जांणी नें कही रे, सूतर सूं कर लेजों परमांण रे॥ १८॥
वस्त्र इधको कल्पें कह्यों थिवर नें रे, मसतकादिक बांधवा रे कांम रे।
रोग वधतो जांण्यों तिण सूं कह्यों रे, चोखा रहता जांण्या परिणांम रे॥ १९॥
वडी नीतादिक रो कारण वेगो पडें रे, वारें जांणो पडतो जांणे अकाल रे।
तिण सूं चिलमिली कही दीसे छें थिवर ने रे, आडी बांधेनें दीयें आबाधा टाल रे॥ २०॥

चर्म नें चर्म तणी वले कोथली रे, चर्म तणों वले कटकों जांण रे।
ए पिण कह्या वायादिक टालवा रे, सरीरादिक कारण जांण पिछांण रे॥ २१॥
ए इग्यारें उपगरण इधका छें थिवर ने रे, गरढ़पणा तणी वय जांण रे।
कह्या छें संयम थिर रहवा भणी रे, तिण मांहे संका मूल म आंण रे॥ २२॥
तीस उपगरण साधु रे सूतर थी कह्या रे, आरज्या रे उपगरण इधका च्यार रे।
इग्यारें उपगरण थिवर ने कह्या रे, सूतर सूं जोय कीयां छे न्यार रे॥ २३॥
खेल करवानें अवस चाहिजें खेलीयो रे, पायपुछणादि सवद मे जांण रे।
एहवा उपगरण राखें ते आदि सवद में रे, अल्पमात्र राखें उनमांन परमांण रे॥ २४॥
वले उपगरण सूतर माँहें नीकले रे, ते पिण कर लेणों परमांण रे।
वीर वचनां नें कुण उथापसी रे, ओर कर लेंणा साचा जांण रे॥ २५॥
केइ मूढ मिथ्याती ते बकवोकरे रे, सूतर अरथ तणा अजांण रे।
चवदें उपगरण सूं इधका राखें तेहनें रे, सुध साध न सरधे मूढ अयांण रे॥ २६॥
सूतरां री तो पूरी समझ पडें नहीं रे, वले सूतरां रा अर्थ मरोड मरोड रे।
चवदें उपगरण सूं इधका राखें तेहनें रे, सरधे छें तीर्थंकर ना चोर रे॥ २७॥
उपगरण चवदें सूं तो इधका कह्या रे, ते सूतर में भाख गया भगवांन रे।
ते वचन उथापें बूडा बापडा रे, त्यांरा घट मांहें पूरो घोर अग्यांन रे॥ २८॥
त्यां तीर्थंकर उथाप्या छें तीन काल ना रे, तीन काल रा दीवा साध उथाप रे।
वले सूतर उथाप्या भगवंत भाखीया रे, मत बांधण नें कीधी खोटी थाप रे॥ २९॥
तीन काल रा अरिहंत ने सावां भणी रे, दीयों अग्यांनी अछतो आल रे।
ते कर्म बांधे नें बूडा बापडा रे, त्यांरे भव भव में होसी घणों जंजाल रे॥ ३०॥
घणा भोलां नें भिडकाया सुध साधां थकी रे, चवदें उपगरण रो ले ले नांम रे।
ते पेट भरा अन्हाखी पापीया रे, त्यांरे एकंत मत बांधण रो कांम रे॥ ३१॥
त्यां घणा लोकां नें बोया पापीया रे, ते पिण मांनी छें तिणरी बात रे।
तांण करें चवदें उपगरण नी रे, सुध साधां सूं पडवजीयो मिथ्यात रे॥ ३२॥
ते सूतर रा वचन न मांनें पापीया रे, सुमता आंणे नें काढें नहीं निकाल रे।
यां पीढ्यां लग आल दीयों सावां भणी रे, कर कर झूठी मूढ झखाल रे॥ ३३॥
केइ मूढ मिथ्याती जीव इम कहें रे, साध नें लिखणों कलपें नांहि रे।
पानां पिण साध नें नही राखणा रे, इम कहें छे घणा लोकां रे मांहि रे॥ ३४॥
चवदें उपगरण सूं इधका नहीं राखणा रे, पांना राख्यां तो उपगरण इधका थाय रे।
उपगरण इधका राखे ते साध निश्चें नहीं रे, एहवी उंधी परूपें लोकां मांहि रे॥ ३५॥
एहवी झूठी झूठी करें परूपणा रे, घणा लोकां नें दीयां डबोय रे।
त्यांनें सुध साधां सूं तो भिडकावीया रे, परभव सूं तो मूल न डरीयो कोय रे॥ ३६॥

लिखणो चाल्यों छें सुध साधां भणी रे, तिणरी छें सूतर मांहे साख रे।
तिणरी संका कोइ मत आंणजो रे, भगवंत आगम में गया भाख रे॥ ३७॥
आचार्य री चाली छें आठ संपदा रे, तिण मांहे लिखणों कह्यों साख्यात रे।
दसासुतखंध सूतर जोय निरणो करो रें, छोड दो भवीयण झूठ मिथ्यात रे॥ ३८॥
वले प्रश्न व्याकरण में लिखणों चालीयो रे, साच बोलें ज्यूं लिखणों साच रे।
दूजे संवर ते अधेन सातमो रे, संका काढो ते सूतर बांच रे॥ ३९॥
वले नसीत सूतर पूरों हुवे जठे रे, तिहां पिण लिखणों चाल्यो छें ताम रे।
वले नंदी सूतर मे लिखणों कह्यो रे, नरकादिक अलंकार चित्राम रे॥ ४०॥
लिखणों चाल्यो तो लेखण राखणी रे, स्याही आदि दे रंग राखणी रे।
नालेरी आदि स्याही गालण नें राखणी रे, पाटी पाटला पांना बांधण रे कांम रे॥ ४१॥
पांना राखे ते ग्यांन रे कारणे रे, पांना रा उपगरण छें अनेक रे।
त्यां पांना तणा जतन करवा भणी रे, मेणीयादिक राखें वले वशेख रे॥ ४२॥
पांना विण ठीक किसी आचार री रे, पांना विण किम पाले आचार रे।
पांना तणी पूरी परतीत छे रे, आंजूणा पाचमा काल मझार रे॥ ४३॥
घूर सूं तो पांना लिख्या आचारीया रे, तिणसूं पाना री छे परतीत रे।
अणाचार्यां रा लिख्या जो सूतर हुवे रे, तो सूतर पाठ हुवे विपरीत रे॥ ४४॥
जिण सासण चालसी आरे पांचमे रे, तिणमे मत जांणों कोइ सक रे।
जो आचार सरधा मे संका पडे रे, जब पांना जोय ने हुवें निसंक रे॥ ४५॥
साध नें लिखणों निषेधे पापीया रे, त्यांरी भिष्ट हुइ छे सुध नें बुध रे।
ते यूंही बूडे छे अन्हाखी थका रे, कर कर खोटी परूपणा विरुध रे॥ ४६॥
सरधा नें आचार थकी भिष्टी हूआं रे, त्यां खोटां घाली सूतरा मझार रे।
त्यां खोटा नें समदिष्टी जथातथ जांण ने रे, कर दीधा दूध पांणी ज्यूं न्यार रे॥ ४७॥
साधु रा उपगरण नें लिखणा तणी रे, जोड कीधी नाथदुवारा सहर मझार रे।
समत अठारे छपना वरस मे रे, फागुण विद छठ सनीसरवार रे॥ ४८॥

रत्न : १२

पोतिया बन्ध री चौपई

ढाल : १

दुहा

अंरिहंत सिद्ध नें आयरिया, उवझाय सगला साध।
मुगत नगर नां दायका, ए पांचूं पद आराध ॥ १ ॥
ए पांचूं पद वादे भाव सूं, पातक दूर पलाय।
शिव रमणी वेगा वरे, जनम मरण मिट जाय ॥ २ ॥
केइ अग्यांनी इम कहे, इम बांधां नही जिण धर्म।
उलटो लागे अविनो आशातना, तिण सूं बंधे पाप कर्म ॥ ३ ॥
पेहला वांदे अरिहंत नें, पछें वांदे सिद्ध भगवांन।
तिण सू लागे सिद्धां री आशातना, एहवा करे अग्यानी तांन ॥ ४ ॥
वले सर्व साधां ने वांद्यां थकां, आ पिण न लागे ठीक।
वडा साधु हुवे तेहनें, छोटा किम वंदनीक ॥ ५ ॥
इम कहि कहि भोला लोक ने, सका घाले घट मांय।
पाचूं पद वांदण तणी, पाडे मोटी अंतराय ॥ ६ ॥
सिद्धा पेहली अरिहंत ने वांदणा, सिद्धां पेंहली अरिहत रा नांम।
सूतर शाख दे वरणवू, ते सुणजो राखे चित्त ठांम ॥ ७ ॥

ढाल

[धीज करे सीता सती रे]

पेंहली अरिहंत रा गुण करे रें, पछे करे सिद्धां रा गुण ग्रांम रे। सुगुण नर।
तो बधे तीथंकर गोत तेहने रे लाल, जो आवे उतकष्टो रस तांम रे ॥ सुगुण नर ॥
बांदो पांचू पद भाव सूं रे लाल* ॥ १ ॥
ए ग्याता सूतर रे अधेन आठमें रे, वीसां बोलां रो विस्तार रे। सु०।
सिद्धां पेंहली अरिहंत रा गुण कीया रे, ते जीवो आंख उघाड रे ॥ सु० बां० २ ॥
सिद्धां पेहलां अरिहत ने बांदियां रे, कहे न हुवो विने मूल धर्म रे।
तों उ बीस बोल गुणसी जदी रे, उणरे लेखेइ बंधसी उणरे कर्म रे ॥ ३ ॥
इम कह्यां संवली सूझे नही रे, त्यारा घट मांहे गूढ मिथ्यात रे।
ते गुघू सरिषा होय रह्या रे लाल, त्यांरे दिवस तिकाइज रात रे ॥ ४ ॥
जब केइ कहे पांचूं पद तणा रे, लगता काढो सूतर में नांम रे।
तो मे मानां नवकार नें रे लाल, तो सुणो राखे चित्त ठांम रे ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

अरिहंत सिद्ध नें आयरिया रे, उवझाय सगला साध ताहि रे।
ए पांचूं पद लगता कह्या रे लाल, चंदपनत्ती सूतर मांहि रे॥ ६ ॥
इरियावही कहेनें काउस्सग्ग ठावणो रे, पारणो कहेनें नमोकार रे।
दसवेकालिक अधेन पांचमें रे लाल, तेराणूमीं गाथा मझार रे॥ ७ ॥
वले आवसग सूतर विषे कह्यो रे, लगतो पांचूं पदां नें नमस्कार रे।
त्यांमें पेंहली अरिहंत पछे सिद्ध कह्या रे, ते जोय करो निस्तार रे॥ ८ ॥
वले आसातना टालण तणा रे, घणा बोल कह्या जिणराय रे।
त्यां पेंहली अरिहंत सिद्ध पछे कह्या रे, ते पिण आवस्सग्ग मांय रे॥ ९ ॥
साधु समचे वांदे सर्व साध नें रे, ते पाठ छें आवस्सग्ग मांय रे।
तिणरी बुधवंत करजो विचारणा रे लाल, जोए सूतर रो न्याय रे॥ १० ॥
जे पांचूं पद लगता मानें नही रे, त्यां काउस्सग्ग दीयों उत्थाप रे।
त्यां कीधी आसातना अरिहंतनी रे लाल, त्यांरे जांणजों जाडा पाप रे॥ ११ ॥
च्यार मंगलीक कह्या लोक में रे, अरिहंत सिद्ध साधु धर्म रे।
तिहां पिण पेंहली अरिहंत छे रे लाल, ते जोय मेटो मन भर्म रे॥ १२ ॥
च्यार उत्तम कह्या लोक में रे, अरिहंत सिद्ध साधु धर्म रे।
तिहां पिण पेंहली अरिहंत छे रे लाल, ते जोय मेटो मन भर्म रे॥ १३ ॥
च्यारूं सरणा लेणा कह्या साध ने रे, अरिहंत सिद्ध साध धर्म रे।
त्यांनें पेहलों सरणो अरिहंत नों कह्यो रे लाल, ते जोय मेटो मन भर्म रे॥ १४ ॥
च्यार मंगलीक च्यार उत्तम छें रे, वले च्यारूं शरणा कह्या ताहि रे।
तिहां पेंहली अरिहंत पछे सिद्ध कह्या रे लाल, ते पिण आवस्सग्ग मांहि रे॥ १५ ॥
सिद्धां पेंहली अरिहंत रो नांम छे रे, सूतर में जायगां अनेक रे।
संका म घालो लोकां भणी रे, छोड दो कूडी टेक रे॥ १६ ॥
दोनूं टंका साध पडिक्कमणो करे रे, ते पडिक्कमणो आवस्सग्ग सूत रे।
ते आवस्सग्ग सूतर मांनें नहीं रे, ते जिण सासन में कपूत रे॥ १७ ॥
साध आवस्सग्ग सूतर वांच्यां विनां रे, जो वांचे ओर सिद्धांत रे।
नसीत उद्देसें उगणीस में रे लाल, चोमासी दंड कह्यो भगवंत रे॥ १८ ॥
ए पडिक्कमणो आवस्सग्ग सूतर छे रे, नित करणो साधु नें दोय वार रे।
ते नें कीयां विराधक जिण धर्म नों रे, जोवो अनुयोग दुवार मझार रे॥ १९ ॥
आगे सूतर भण्या साधु साधवी रे, जोवो सूतर में ठांम ठांम रे।
ते सामायक सूतर आदि दे रे, ते सामायक छे आवस्सग्ग रो नांम रे॥ २० ॥
केइ आवस्सग्ग मोलो कही रे, जाबक दीयों उत्थाप रे।
ते डरे नही झूठ बोलता रे, त्यांरे भव भव में होसी संताप रे॥ २१ ॥

दोनूं टकां आवस्सग्ग कीयां रे, टले करमा री छोत रे।
जो आवे उतकष्टो रस तेहनें रे, तो वंधे तीथंकर गोत रे॥ २२ ॥
ए ग्यातारा आठमां अध्येन मे रे, बीस बोलां में इग्यारमों बोल रे।
जे आवस्सग्ग सूतर मानें नहीं रे, त्यांरे पूरी जाणजो पोल रे॥ २३ ॥
नमस्कार लगतो पाचू पद भणी रे, ए मानें नहीं किण न्याय रे।
जो साचा हुवो तो सूतर में बताय दो रे, नहीं तो मत करो कूडी वकवाय रे॥ २४ ॥
नमस्कार लगतो पांचूं पद भणी रे, कीधां कहे अविनों होय रे।
एहवी ऊंधी करें परूपणा रे लाल, पिण पोते अविनां री खबर न कोय रे॥ २५ ॥
देव अरिहंत गुर साधुजी रे, ए चोडे सूतर रो न्याय रे।
गुर बाजे श्रावक थकां रे, ओ प्रतख मांड्यो अन्याय रे।
ते श्रावक नही भगवांन रा रे॥ २६ ॥

ते चेला चेली करता फिरे रे, श्रावक नांम धराय रे।
भोला नें भरमाय नें रे, तिक्खुता सूं बंदावे पाय रे॥ २७ ॥
आगे श्रावक हुआ भगवांन रा रे, आणद आदि अनेक रे।
ते घर में थकां पडिमा बुहा रे, पिण चेलो न कीधो एक रे।
ए साचो मत जिणराज रों रे॥ २८ ॥

ते पडिमा बुहा जब कीधी गोचरी रे, आपणी न्यात में जाय रे।
पिण ओर कुल में कीधी नही रे, जोवो दसासुतखंध उपासग दसा मांय रे॥ २९ ॥
चेला चेली करतां फिरे रे, घणा कुल री रोटी खाये मांग रे।
आगे श्रावक हुवा भगवांन रा रे लाल, एहवो किण ही न काढ्यो दीसे सांग रे॥ ३० ॥
अंबड संन्यासी रे चेला सातसो रे, ते रीत संन्यास्यां री जांण रे।
पछे समझे श्रावक हुवा रे, इणरी म करजो कोइ तांण रे।
ते रीत संन्यास्यां री मूलगी रे लाल॥ ३१ ॥

त्यां संन्यासी थकां चेला कीयां रे, ते कुल री रीत परमांण रे।
त्यां सांग न पलट्यो मूलगो रे लाल, तिणरी बुधवंत करजो पिछांण रे॥ ३२ ॥
श्रावक श्रावक नें नमें रे, वले नेंहत जीमावे त्यांरू आहार रे।
त्यांनें अरिहंत री आग्या नही रे लाल, ए लोकिक रो व्यवहार रे॥ ३३ ॥
साधु साधवियां नीं परे रे, श्रावक श्रावका री थापी रीत रे।
ते पिण रीत चाले नही रे, यांरे लेखेई ए अवनीत रे॥ ३४ ॥
श्रावक वेसें आंगणे रे, श्रावका वेसें पाट रे।
यांरो विनों मारग यां उत्थापियो रे, त्यांरे लेखेई होसी भूंडो घाट रे॥ ३५ ॥

वले श्रावक वांदे श्रावकां भणी रे, यांरे लेखे आ ऊंधी रीत रे।
यांरे लेखे यां विनों उत्थापियो रे, ते चिहूं गति होसी फजीत रे॥ २६॥
ए विनों विनों कर रह्या रे, पिण विनां री खबर न कोय रे।
त्यांसूं लेखो कीयां तो लडपडे रे लाल, त्यांनें किम आणीजे ठाय रे॥ २७॥
नोकार री कुण्सी चली रे, यां उथाप्यां बोल अनेक रे।
ते थोडासा परगट करूं रे लाल, ते सुणजो आंण ववेक रे॥ २८॥

ढाल : २

दुहा

याने छता साध सूझे नही, घट मे घोर अंधार।
पोथा पांना बांच ने, भूला भर्म गिवार ॥ १ ॥
वले केइ अग्यांनी इम कहे, कठे अबारू साध।
ते भूठा थका बकवोकरें, त्या परमारथ नहीं लाध ॥ २ ॥
प्रतख आरे पांचमें, साध कह्या जिणराय।
सांसो हुवे तो देख लो, सूतर भगोती मांय ॥ ३ ॥
साध हुंता तो सूतर छे, जेन जतीको वेस।
यांहीज साधु देख लो, ओहीज आरज देस ॥ ४ ॥
जेवंतो जिण धर्म छे, आंधा करे अधेर।
छेहूडा सूधी चालसी, तिण में म जांणो फेर ॥ ५ ॥
कुमती चालणी सारीखा, त्याने किहां लगे उपदेस।
सार सार तो गेर दे, ग्रहे तूंतडा केस ॥ ६ ॥
एक साव नें उथपे, तिणरें बधे घणो संताप।
तो घणा साधा नें उथपे; तिणरे पोते वोहला पाप ॥ ७ ॥
जे देवाळियो हुवे ते इम कहे, आज नही साहुकारा री रीत।
ज्यांसूं पोते संजम पले नही, ते उतारे साधां री परतीत ॥ ८ ॥
साहुकार होसी तिके, छता दिखावसी साह।
ज्यूं साधुपणो सुध पाळसी, ते खरो दिखावसी राह ॥ ९ ॥
केइ मूढ मिथ्याती मूरख थकां, श्रावक श्राविका नांम धराय।
ते कुण कुण बोल उथापिया, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ १० ॥

ढाल

[बे बे मुनिवर वहरण पागुरया रे]

त्यां समाई पडिक्कमणो उथापियो रे, वले दशमां व्रत ने दीयो उथाप रे।
वले पोसो उथाप्यो व्रत इग्यारमो रे, त्यारें होसी परभव में घणो सताप रे।
त्याने श्रावक मत जांणो भगवांन रा रे* ॥ १ ॥
सुध आचारी साधा ने माने नही रे, तिण थी भाव सूं दांन दीयो नही जाय रे।
इण लेखे व्रत उथाप्यो बारमो रे, वले साधु वांदण रा सूंस दिराय रे ॥ त्या० २ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

वले व्रत उथाप्यों मूरख आठमों रे, तिण में अर्थ विन पाप करण रा त्याग रे।
ते पोतें पिण एहवो त्याग करें नहीं रे, ओर करें त्यारो पाडे वेंराग रे॥ ३ ॥
जे मागे नें खाए रोटी पार को रे, तो ही अनर्थे पाप करण आगार रे।
त्यांनें वादे अग्यांनी सतगुरु जांण नें रे, त्यां दोयां रो विगड गयो जमवार रे॥ ४ ॥
वले समाई पडिक्कमणो करे नहीं रे, नहीं पोसो करवा सूं त्यांरो पेम रे।
वले सुध आचारी साधु सूझे नहीं रे, त्यां विकलां नें श्रावक कहीजें केम रे॥ ५ ॥
उतारे साधा री मूरख आसता रे, वले कनें जातां नें राखे पाल रे।
जाणे खोटा सरधेला मो भणी रे, आ चोडें रेणा देवी री चाल रे॥ ६ ॥
मिनकी फिरे छे घर घर बारणे रे, तिणरी ऊंदरा ऊपर खोटी दिष्ट रे।
ज्यूं समाई पोसा पडिक्कमणा करे रे, तिण नें संका घाले ने करदे भिष्ट रे॥ ७ ॥
कोइ समाई पोसा पडिक्कमणा करे रे, तिणरे संका घाले नें पाडे धडक रे।
जद केयक भोला सामायक छोड दे रे, तब पामें अग्यांनी मन में हरष रे॥ ८ ॥
सामायक पचखण री विध जाणे नही रे, वले पालण रो जांणे नहीं विचार रे।
पचखाण पालण री विध जाणयां विनां रे, संका घालण ने पापी त्यार रे॥ ९ ॥
समाई करे त्यांरो मन भांग दे रे, वले भिष्ट करण रो करे उपाय रे।
परिणांम पेलारा पारण सांतरा रे, दोष बत्तीस सुणाय सुणाय रे॥ १० ॥
ए समाई रा दोष बत्तीस कहे तिके रे, किण ही सूतर में दीसें नाही रे।
तो ही मान्या सामायक ने उथापवा रे, त्यांरे घोर अंधारो छे घट मांही रे॥ ११ ॥
त्यांरी परतीत नें संगत करे तेहनें रे, बत्तीस दोषण देवे सीखाय रे।
जाणे रखे समाई पडिक्कमणो करे रे, इसडो धडको त्यांरे मन मांय रे॥ १२ ॥
कोइ समाई पडिक्कमणो करे रे, तिण सूं धरे अग्यांनी द्वेष रे।
कोइ समाई पोसो करणो छोड दे रे, जब पामें प्रापीडा हर्ष वशेष रे॥ १३ ॥
कोइ समाई पोसा पडिक्कमणा करे रे, वले वांदे साधां ने जोडी हाथ रे।
तो भिष्ट परूपे मूरख तेहनें रे, ओ चोडे देखो त्यांरो मिथ्यात रे॥ १४ ॥
कोइ समाई पोसा रो बंधो करें रे, त्यांरा पिण देवे सूंस भंगाय रे।
तिण नें कूड कपट केलव करे आपणो रे, वले समाई करवा न देवे ताय रे॥ १५ ॥
कोइ समाई पोसा पडिक्कमणा करे रे, तिण ने भिष्ट करे बोले आल पंपाल रे।
ओछी अकल रा भोला मिनष नें रे, माहे न्हांखण नें चोडे मांड्यो जाल रे॥ १६ ॥
केइ मागे नें खाए रोटी पारकी रे, ते बोले अग्यांनी एहवी वांण रे।
म्हे करां सामायक पोसा किण विधे रे, म्हांरो नही रे मन रो जोग ठिकांण रे॥ १७ ॥
थांरी सरधा रा सगला इमहीज बोलता रे, त्यांरी ववेक विचार नही छें सुध रे।
त्यां समाई पोसा करणा उथापिया रे, आ भिष्ट हुइ सगलां री बुद्ध रे॥ १८ ॥

केइ मांगे ने खाए रोटी पारकी रे, तो ही सुध न रहे त्यारा परिणांम रे।
त्यांसूं एक घडी पिण मन बस हुवे नहीं रे, ते घर छोडी नें खोटी हुवा बेकांम रे॥ १६॥
आगे हुवा मोटा मोटा राजवी रे, वले सेठ सेनापती आदि पिछांण रे।
त्यांरा घर में आरभ नें परिग्रहो अति घणो रे, त्यां पिण कीधी सामायक समता आंण रे॥ २०॥
त्यांरे राजविणज रा विभा था घणा रे, वले तरह तरह रा हूंता कांम रे।
त्यां पिण सामायक ने पोसा कीया रे, ते थोडासा कहे बताऊं नाम रे॥ २१॥
राय उदाइ हूंतो मोटको रे, ते सोले देसां री करतो राज रे।
तिण समाई पोसा पडिकमणा कीया रे, छोडे सगलाइ घर रा काज रे॥ २२॥
अदीनसत्तु राजा रो डीकरो रे, कुमर सुबाहू तिणरो नांम रे।
पांचसो राण्या हूंती तेहने रे, तिण कीधी समाई सुध परिणांम रे॥ २३॥
कुमर सुबाहु आदि दस जणां रे, ते सगलाई मोटा राजकुमार रे।
त्यां सगलां रे पांचसो पांचसो राणियां रे, त्यां कीधी सामायक समता धार रे॥ २४॥
राय परदेशी हूंतो पापियो रे, तिण समझे नें लीधा व्रत रसाल रे।
उण पिण घर मांहे बेठां थकां रे, कीधी सामायक दोषण टाल रे॥ २५॥
सुबुद्धी प्रधान आगे समझियो रे, जितशत्रु नामें राजेंद रे।
तिण पिण सामायक नें पोसा कीयां रे, ग्याता में भाख्यो वीर जिणंद रे॥ २६॥
कासी नें कोशल देस तणा धणी रे, हूंता अठारे मोटा राय रे।
श्रीवीर निरवांण गया तिण अवसरे रे, त्यां पोसा कीयां था तिण दिन आय रे॥ २७॥
आणंद आदि दे श्रावक दस हुवा रे, त्यांरा घर में हूंतो कोडां रो धन रे।
हजारां गमें त्यांरे गायां हूंती रे, त्यां कीधी सामायक चोखे मन रे॥ २८॥
वले तुंगीयां नगरी नां श्रावक मोटका रे, त्यांरा घर मांहे धन हूंतो परभूत रे।
त्यां समाई पोसा पडिकमणा करे रे, मुक्ति जावा नां दीधा सूत रे॥ २९॥
इत्यादिक राजा सेठ सेनापति रे, त्यांरो कहतां कहतां नही आवें पार रे।
त्यां समाई पोसा पडिकमणा कीयां रे, त्यां घर मे बेठां पाल्या व्रत बार रे॥ ३०॥
तो घरबार छोडे नें गेहला थकां रे, न करे सामायक मूढ अयांण रे।
ते कहवा नें श्रावक बाजें मोटका रे, पिण श्री जिण धर्म तणा अजांण रे॥ ३१॥
श्रावक रा बारे व्रतां मांहिलां रे, व्रत उथाप्या मूरख पांच रे।
बाकी सात व्रतां मे मन पचखे नही रे, कर्मां वस कर कर कूडी खांच रे॥ ३२॥
वले उत्थापी इर्यावही नें तस्सुत्तरी रे, वले लोगस उथाप्यों जिण सतूत रे।
खबर विना उथाप्यां खामणा रे, त्या दीवा दुरगति जावा ना सूत रे॥ ३३॥
एक वचन उथाप्यां श्री भगवंत रो रे, उतकष्टो रुलें तो अनंतो काल रे।
तो घणा उथापें बोल सिद्धांत रा रे, ते भमसी ज्यूं अरट तणी घड माल रे॥ ३४॥

चिरमी नें उडद दोनूं देख्या थकां रे, भिड्कें पूर्वीया भगत वशेख रे।
इण दिष्टांते भरमाया भोला लोक नें रे, ते भिडके साधां नें निजरां देख रे॥ ३५॥
ते वरत पचखांण करें ते मन विनां रे, पिण मन सूं तो जावक नही पचखांण रे।
त्यांरा विकल्पणा री विध परगट करूं रे, ते विवरा सुध सुणजो चतुर सुजांण रे॥ ३६॥

ढाल : ३

दुहा

आप छांदे उवी अकल सूं, काढ्यों मत विपरीत।
त्यां सूंस पचखांण कीयां तिके, सगलाई मन रहीत॥ १ ॥
त्यारे सिष्य शिष्या हुआं तिके, राखी उणरी परतीत।
ते पिण भूला भर्म में, ते चाले उणहीज रीत॥ २ ॥
बडो ऊंट आगे चलें, पाछे चले कतार।
ज्यूं बहुला बूडा वापडा, या बडां बूढां री लार॥ ३ ॥
लीधी टेक छूटे नही, घट में घोर मिथ्यात।
गुघू सरिषा होय रह्यां, त्यांरे दिवस तिकाइज रात॥ ४ ॥
कूआ तणो डेडक कूए रंजे, तिण सायर लहर न दीठ।
ज्यूं साधा री संगत करी नही, त्यानें लागें पाषंड मत मीठ॥ ५ ॥
त्यां जिण मारग नही ओलख्यो, नही ओलखिया सुध साध।
वले श्रावक विध समझे नही, यूंही करता फिरें विषवाद॥ ६ ॥
जिण वस्तु सू कांम पडे नही, तिणरो पिण न करे नेम।
त्यां कुण कुण आगार राखिया, ते सुणजो धर पेम॥ ७ ॥

ढाल

[जिण धर्म आराधीये ए]

त्यांरा मत मांहे संका मोटकी ए, ते मन सूं न करे पचखांण।
परमारथ जाण्या विनां ए, ए बूडा करें करे तांण।
भविक जन सांभलो ए* ॥ १ ॥
मुरगी गाडर बाकरा ए, वले हिरण सूंसा नें गाय।
त्यांनें मारण तणी ए, मन सूं विरत न कीधी कांय॥ भ० २ ॥
वले जलचर थलचर खेचरा ए, वले उरपर भुजपर जाण।
यांनें मारण तणो ए, मन सूं न कीयो पचखांण॥ ३ ॥
वले मात-पिता सुत बंधवाए, सेंण सगा मित्र विचार।
त्यांनें पिण मारण तणो ए, मन सूं राख्यो आगार॥ ४ ॥
वले इडा जात अनेक रा ए, त्यांनें मन सूं मारण रो नही नेम।
एहवा मूरखां भणी ए, विकल वांदे धर पेम॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

तीड पतंग मकरा माखियां ए. कीडी मकोडा लट नें गींडोल।
मन सूं राख्या मारणा ए. त्यां विकलां रे मोटो सोल॥ ६॥
पृथ्वी पांणी अग्नि नें वाय रो ए. वले वनस्पती नें त्रस जांन।
ए छकाय नें हणवा तणा ए. मन सूं न कीयां पचखांन॥ ७॥
जीव अनंत छकाय नें ए. त्यांरी विवध परकारे छें घात।
त्यांनें हणवा तणी ए. मन सूं विरत नहीं तिलमात्र॥ ८॥
ओर जीव तो जिहांई रह्या ए. गुर री पिण न छोडी घात।
हणवा ने मन मोकलो ए. ए इचरज वाली वात॥ ९॥
देव अरिहंत गुर साधजी ए. यांनें हणवा रो मन सूं आगार।
इसरोई सूंस कीयों नहीं ए. त्यांरा जीतब नें धिकार॥ १०॥
वले चेला चेली आपरा ए. गुर भाई गुर बहिन पिछांन।
त्यांनेंई हणवा तणो ए. मन सूं न कीयों पचखांण॥ ११॥
मोटो झूठ पांच परकार नों ए. वले छोटो विवध परकार।
मन सूं बोलण तणो ए. सगलोई राख्यो आगार॥ १२॥
मोटी चोरी पांच परकार नीं ए. वले छोटी रा भेद अनेक।
ते सगली चोरी मोकली ए. तिण मन सूं न छोडी एक॥ १३॥
देव देवांगणा मिनष मिनषणी ए. वले तिर्यंच तिर्यंचणी विचार।
त्यांनें सेवण तणो ए. मन सूं सगलोई आगार॥ १४॥
जिण माता री कूखे उपनों ए. वले बहिन बेटी आदि जांन।
चेली गुर बहिन नें ए. मन सूं सेवा रा नहीं पचखांण॥ १५॥
हीरा माणक मोती मूंगीया ए. सोनों रुपादिक सर्व धात।
कंकर पत्थर घणां ए. वले रत्नां री सोले जात॥ १६॥
सर्व परिग्रहो छें त्रवजात रो ए. तीनूंई लोक मझार।
ते मन रा जोग सूं ए. यांरे सगलोई आगार॥ १७॥
पाप अठारें सेवण तणो ए. तीनूंई लोक मझार।
ते मन रा जोग सूं ए. श्रावक नहीं परिहार॥ १८॥
गेंहणा कपडा विवध परकार नां ए. खावा पिवा री जात अनेक।
फूल बहु जात रा ए. यां मन सूं न छोड्यो एक॥ १९॥
मद पिवण मांस खावन तणो ए. वनस्पती अठारें भार।
जमीकंद सर्व रो ए. मन सूं राख्यो सर्व आगार॥ २०॥
हाथी घोडादिक वाहण तणो ए. घणी जात रा पीठ मरदन।
चूनादिक खेवणों ए. त्यांमें सगलेई मोकलो मन॥ २१॥

सर दह तलाव फोडण तणो ए, दवदे करें जीवां रो संघार।
गामांदिक बालण तणो ए, यारे मन सूं सगलो आगार ॥ २२ ॥
मोटां मोटा वृष बाढण तणो ए, वले कटावणा बाग।
घाणी फेरण तणो ए, मन सूं न कीधो त्याग ॥ २३ ॥
पनरे कर्मांदांन में ए, आयो सगलोई विणज व्यापार।
तिणरा भेद अति घणा ए, ते सगलोई मन सूं आगार ॥ २४ ॥
इत्यादिक कुकरम घणा ए, ते तों पूरा कह्यां न जाय।
ते मन सू न पचखिया ए, त्यांरे बंधसी कर्म अथाय ॥ २५ ॥
अर्थे कांम करणो तो ज्यांही रह्यो ए, अर्थ विनां न करणो पाप।
ते मन सू न त्यागियो ए, आ खोटा मत री थाप ॥ २६ ॥
मन सूं तंदुल माछलो ए, अशुभ कर्म उपाय।
अंतर महुरत मझे ए, पडे सातमी नरक मे जाय ॥ २७ ॥
ज्यांरो सदा काल मन मोकलो ए, सगलाई कुकरम मांय।
त्यांरो कांई पूछणो ए, ए चोडे बूडा जाय ॥ २८ ॥
माठी माठी वस्तु खावा भणी ए, चलता न दीसे परिणांम।
तिणमेई मन मोकलो ए, ओ राख्यो अग्यांनी किण कांम ॥ २९ ॥
आखा जनम में करणा पडे नही ए, माठा माठा अकारज अनेक।
ते मन सू न पचखिया ए, आ खोटा मत री टेक ॥ ३० ॥
एहवा ववेक विकलां भणी ए, पूछा कीजे आंम।
अकारज करवा भणी ए, मन मोकलो राख्यो किण कांम ॥ ३१ ॥
इम पूछ्यां जाब न उपजे ए, जब क्रोध करे घट माय।
चरचा करवा थकी ए मूह टालो दे जाय ॥ ३२ ॥
कदा लाजां मरता मन पचख दे ए, छोडे खोटा मत री रूढ।
इण लेखे यांरा वडवडा ए, सगला हुआ ते मूढ ॥ ३३ ॥
इम कहि कहि ने कितरो कहूं ए, इण मत रो घोर अंधार।
समझ पड्यां विनां ए, ए भूला भरम गिवार ॥ ३४ ॥
त्यां आपो न ओलख्यो आपणो ए, तो ही साधु उत्थापण शूर।
भोला ने भरमायवा ए, कर रह्या फेन फितूर ॥ ३५ ॥
ते जिण मारग रा घारवी ए, कूडो उठायो धंध।
जिण वचन उथाप ने ए, चोडे मांड्यो फंद ॥ ३६ ॥
इम सुण ने नर नारियां ए, छोडो कूडी टेक।
साधां री सेवा करो ए, मन मे आंण ववेक ॥ ३७ ॥

ढाल : ४

दुहा

केइ श्रावक वाजें घर छोडनें, मांगे ल्यावे आहार।
पिण न्याय मारग सूझें नहीं, घट में घोर अंधार॥ १॥
चेला चेली करतां फिरें, वले साधां ज्यूं रह्या पूजाय।
वले खोटी करे छे परूपणा, ते पिण खबर न कांय॥ २॥
अधर्म करें करावे त्यांरे कारणे, तिण नें बतावें धर्म।
कोइ धर्म करे जिण भाषियो, तिणनें कहे छें अधर्म॥ ३॥
एहवी ऊंधी करे परूपणा, ते पूरी केम कहिवाय।
पिण थोडीसी परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ४॥

ढाल

[सल कोइ मत राखो जी]

यांरा कपडा धोवे कोइ गृहस्थी, तिणमें कहे विनें मूल धर्मो रे।
एहवी ऊंधी करे परूपणा, भोलां नें पाड्या भर्मो रे।
सरधा सुणजो विकलां तणी*॥ १॥

जब केयक गृहस्थ बापडा, कपडा धोवें जीवां ने मारी रे।
तिणनें कहे ओ तो बनीत छे, धर्मी पुरुषां ने साताकारी रे॥ स० २॥

ए हिंसा धर्म परूपियो, अभितर री आंख मीचो रे।
कोइ चतुर पुरूप होसी तिको, एहवो कांम न करसी नीचो रे॥ ३॥

यांरा कपडा धोवे तेहनें, निश्चेंई बंधसी कर्मो रे।
जे धर्म कहे इण कांम में, तिण थाप्यो अधर्म ने धर्मो रे॥ ४॥

नमस्कार करें पांचूं पद भणी, सीस नमी जोडे हाथो रे।
यांनें वांचां पाप लागे कहे, त्यांरा घट मांहें घोर मिथ्यातो रे॥ ५॥

यांरा कपडा धोवे पांणी आंण ने, तिण ने लाभ बतावें मोटो रे।
नोकार गुण्या कहे पाप छे, ओ मत निश्चेंई खोटो रे॥ ६॥

वले जूंवां कढावे गृहस्थ कने, काढणवाला नें मुख थी सरावे रे।
विने मूल धर्म कहें तेहनें, ए तो इसडा गोला चलावे रे॥ ७॥

साधु सूतर लिखे जेणां करी, ते तो ग्यांन वधारण हेतो रे।
तिण साधु ने पाप लागो कहें, त्यांरा फूटा अभितर नेतो रे॥ ८॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

यांरी जूंआं काढ्यां तो धर्म कहे, साधु सूतर लिख्यां कहें पापो रे।
ते दोनूं विध बूडे बापडा, कर कर कूड विलापो रे॥ ६ ॥
यांने वेसावे गाडे घोडे पीठी ए, करे तस थावर नी घातो रे।
तिण वेंसाण वाला ने धर्म कहे, आ ऊंधी सरधा साख्यातो रे॥ १० ॥
साधु सूतर रा न्याय सूं, जोडें तवन सझायो रे।
तिणमें पाप वतावे झूठा थकां, कर कर कूडी बकवायो रे॥ ११ ॥
यांने गाडे घोडे वेसाणिया, तिणने धर्म कहे छे अग्यांनी रे।
साधु जोड कीयां अधर्म कहे, त्यांने किण विध कहीजे ग्यांनी रे॥ १२ ॥
ए तो अधर्म नें धर्म कहे, धर्म ने अधर्म कहे अन्हाखी रे।
त्यांने निश्चे मिथ्याती जिण कह्या, ठाणांग दसमो ठांणो साखी रे॥ १३ ॥
यांने थांनक देवे असूझतो, तिणमे धर्म कहे निसंको रे।
त्यां ववेक विकल भोला मिनष रे, लगाया मिथ्यात रा डंको रे॥ १४ ॥
थांनक दडे लीपे यारे कारणे, वले केलू सारे छांन छावे रे।
ते मारे अनता जीवां भणी, तिणमे धर्म वतावे रे॥ १५ ॥
इत्यादिक यांरे कारणे, जीव छकाय रा हतिया रे।
वले धर्म सरधे जीव मारने रे, ते बूड गया त्यांरा मतिया रे॥ १६ ॥
याने आहार पांणी दें असूझतो, तिणने कहे निकेवल धर्मो रे।
ते भोलां नें समझ पडे नहीं, ते तों भूला अग्यांनी भर्मो रे॥ १७ ॥
कहिवा ने कहे त्यां म्हे सूझतो, तिणरो पूरो न जांणे विचारो रे।
जांण जाण ने लेवें असूझतो, ते सांभलजो विस्तारो रे॥ १८ ॥
यांरे गांम पर गाम थी बीदडी, चोमासा दिक में चाली आवें रे।
जब जीव अनेक मरें घणां, तिणमेई धर्म वतावें रे॥ १९ ॥
आहार पांणी वस्त्र पात्रादिक, यांरे कारणे मोल ले आंणे रे।
इण विध वेहरावे असूझतो, तिण दातार ने धर्म जाणे रे॥ २० ॥
घी - खाड लाडू आदि चोर ने, वहू ले आवे सासू छांने रे।
त्यांने आंण वेहरावे तेहमें, धर्म निकेवल माने रे॥ २१ ॥
ए बात चावी हुवे लोक मे, तो दोनूंई दीसें भूंडी रे।
चोरी कर ने वेहरायो असूझतो, ते तो दोनूं प्रकारे वूडी रे॥ २२ ॥
जाये ग्रहस्थ रे घरे गोचरी, जब मांडे फेन वशेषे रे।
कहे असूझतो मांहरे लेणों नही, मांने वेहरायजो सुध देखे रे॥ २३ ॥
साहमों आंण दे वरसता मेह में, तिणरो तो न करे टालो रे।
धूर्तवादी करे गृहस्थ ने घरे, एहवो कूड कपट रो चालो रे॥ २४ ॥

जांनें इन विध वैहरता देख नें, कोई खूंचणो काढे ताणो रे।
जब तो कहै म्हें छां गृहस्थी, सेख्यां ऊठे मूढ अयांणो रे ॥ २५ ॥
जो असुध लेवां गृहस्थी थकां, तो गुर किण लेखे करणो रे।
ओछा जीतव रे कारणे, इसडो कांय करो अणहुंतो रे ॥ २६ ॥
देव अरिहंत गुर साधु निग्रन्थ छै, तो श्रावक गुर किण लेखे रे।
मोह मिथ्यात में मूढा थकां, ते तो मूरख आंख्यां न देखे रे ॥ २७ ॥
आहार असुध वैहरे जांण नें, त्यांरो होसी कांई हूवो रे।
वले असुध दीयां में धर्म कहो, थे जिन मारग गया मूवो रे ॥ २८ ॥
श्रावक नें आहार देवे असूजतो, तिणरो जिन ओहीज हूवो रे।
धर्म जांणे तो पाप अजाणसी, ते रह्या मिथ्यात में सूतो रे ॥ २९ ॥
साधां नें आहार देवे असूजतो, तिण नें कहावे पापो रे।
श्रावक नें देवे असूजतो, तिण नें कीधो धर्म री थापो रे ॥ ३० ॥
साधां नें आहार असुध वैहरावियां, पाप कहे तो सत वांणी रे।
धर्म कहै श्रावक नें असुध दीयां, आ सरधा कठा सूं आंणी रे ॥ ३१ ॥
साधां नें आहार पांणी असुध दीयां, पाप लागे इव्वे अत छूटो रे।
श्रावक नें असुध दीयां धर्म कहै, ओ इसडो कांई छै लेखो रे ॥ ३२ ॥
साधां नें आहार पांणी असुध दीयां, एकांत पाप निश्चांणो रे।
ज्यूं श्रावक नेंई असुध दीयां, निश्चेंई धर्म न जांणो रे।
आ साची सरधा सुजांण री* ॥ ३३ ॥

श्रावक वांदे श्रावकां भणी, गुण नें निकळता रो पाठो रे।
धर्म जांन त्यांनें वांदियां, ओ मत निश्चेंई माठो रे ॥ आ० ३४ ॥
इसा श्रावक वाजें वरतां करी, ते तो छोटा श्रावक नें धोरे रे।
थारे लेखेंई ए मूढा थकां, कर्म तणा पुंज बांधे रे ॥ ३५ ॥
इम कह्यां लाज न आवें, तब कूर कपट कलावें रे।
कहे नें घर बार छोड न्यारा हूआ, वले छ काय छोडी बतावें रे ॥ ३६ ॥
छ काय छोडी कहे सर्वथा, वले छोड्यो कहे घर बारो रे।
ए न्हूं बोले छै दोनूं विधें, ते सांभळजो विस्तारो रे ॥ ३७ ॥
घर छोड्यो कहे मुख थकी, तिन गांम गांम बैठा घर मांडी रे।
तिण घर रो नांम थांनक दीयों, आ तो यूंही आतमा भांडी रे ॥ ३८ ॥
तिण थांनक रे कारणे, विविध पणे जीव मारे रे।
तिण थांनक नें कीयो आसरो, ए कोई देखो घरबारी रे ॥ ३९ ॥
छ काय छोडी कहै सर्वथा, तो रात पड्यां कांय हाले रे।
तिहां जीव अनेक मरे घणां, वले विनां जोयां तिन चाले रे ॥ ४० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

वले वेसें गाडे घोडे पोठीए, करें अनंत जीवां री घातो रे।
छकाय छोडी कहे सर्वथा, ते चोडें बोले झूठ साख्यातो रे॥ ४१ ॥
वले छांटां में ऊठे गोचरी, साह्मों आंण दीयों पिण लेवें रे।
तिहां जीवां री हिंसा हुवे घणी, वले बुहारी सूं बुहारो देवें रे॥ ४२ ॥
इत्यादिक कामां करतां थकां, विवध पणे जीव मारे रे।
वले छ काय छोडी कहे सर्वथा, ते झूठ बोली जनम बिगाडे रे॥ ४३ ॥
इम कह्यां जाब न ऊनजे, जब सूघा बोले तिण वारो रे।
में छोडी जिती म्हारे विरत छे, बाकी रह्यो आगारो रे॥ ४४ ॥
तो ग्रहस्थ छोडी छ काय देस थी, ते पिण हुवो वरत धारो रे।
तिण लेखें तो ऊ श्रावक बडो, तिण बडा नें पगे कांय पारो रे॥ ४५ ॥
जब कहे में छ काय छोडी घणी, इण श्रावक छोडी छे थोडी रे।
इण श्रावक सूं मों में गुण घणां, म्हाने तिण सूं बांदे हाथ जोडी रे॥ ४६ ॥
एहवी ऊंधी करे परूपणा, बडा श्रावक नें पगे लगावे रे।
इण बात रो प्रश्न पूछियां, ते पिण जाब न आवे रे॥ ४७ ॥
किण ही गृहस्थ संथारो कीयो, च्यारूं आहार दीयां वोसरायो रे।
जब यांसूं तो उण में गुण घणां, तिणनें क्यूं नही बादे जायो रे॥ ४८ ॥
गुर रे पचखाण हुवे मोकला, लारे चेलो हुवें इधक वेंरागी रे।
घणां गुण वाला ने कहे बादणो, तो चेला ने बांदणो पगे लागी रे॥ ४९ ॥
चेला ने बांदणी आवे नही, जब करे बडा री थापो रे।
ते न्याय निरणो कीयां विनां, कर रह्या कूड विलापो रे॥ ५० ॥
तो बरतां वडो छे ऊ गृहस्थी, ऊ पिण श्रावक बाजें रे।
आप छोटा छे उण श्रावक थकी, तिण बडा नें वांदता कांय लाजे रे॥ ५१ ॥
कदे करे बडा री थापना, कदे करे गुणा री थापो रे।
ते बंदणा रा भूखा थकां, ओरां नें डबोय डूबसी आपो रे॥ ५२ ॥
एहवा पाखडी लोक में, गृहस्थ थकां गुर बाजें रे।
करावे तिक्खुत्ता सूं बंदणा, पिण निरलजा मूल न लाजे रे॥ ५३ ॥
जिम अरिहंत सिघ नें बंदणा करे, तिमहिज आप बंदावे रे।
ए गुण विण ठाली ठीकरा, अरिहंत सिघ रे जोडे किम आवे रे॥ ५४ ॥
त्यानें तिक्खुत्ता सूं बंदणा करे, ते जिण मारग गया भूलो रे।
ज्या गुर कीधा गृहस्थी भणी, ते रह्या मिथ्यात में भूलो रे॥ ५५ ॥
इम सांभल ने नर नारियां, पाषंड मत निवारो रे।
सुध साधां ने ओलख गुर करो, ज्यूं उतरो भव पारो रे॥ ५६ ॥

●

रत्न : १३

निम्न रास

ढाल : १

दुहा

भेषधारी भागलां थकी, पले नही आचार।
वले सरधा पिण त्यांरी बुरी, तिणमे अतंत अंधार॥ १ ॥
केइ नांम धरावे साध रो, पिण वरत न पाले एक।
ते भिष्ट थया आचार थी, सेवण लागा दोष अनेक॥ २ ॥
ते आचार तणी वातां सुणे, तो लागे अभितर लाय।
तलतलाट करता थकां, बोले मूंसावाय॥ ३ ॥
सुध साधा ने निन्व कहे, वले बोलें फिरता वेण।
सिकल विकल बुध बाहिरा, त्यांरा फूटा अभितर नेण॥ ४ ॥
त्यांरे सरधा छे निन्वां तणी, ते अरू वरू ल्यों देख।
वले भिष्ट थया आचार थी, त्यां पेहर विगाड्यो भेख॥ ५ ॥
मांहोमां निन्व कहे, ते तों रागा धेषो जांण।
लखणा कर ओलखाय दे, ते डाहा चतुर सुजांण॥ ६ ॥
त्यारा टोला अनेक छे जूजूआ, जूइ जूइ सरधा छें तांम।
जूइ जूइ करे छे परूपणा, ते पिण साध धरावे नाम॥ ७ ॥
ते आचार में हीणा घणां, वले लोप दीधी मरजाद।
साची सूतर री वात मांने नही, कूरो करे रह्या विषवाद॥ ८ ॥
ते दोष सेवे छे अति घणां, ते पूरा केम कहिवाय।
थोरा सा परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ९ ॥

ढाल

[हू वलीहारी जादवा]

अरिहंत सिध ने आयरिया, उवभाय नें उत्तम सुध साध के।
मुगत नगर नां दायका, ए पांचू पद ने लीजो अराध के।
रास भणूं निन्वां तणो* ॥ १ ॥

नमूं वीर सासण धणी, वले नमूं गणधर गोतम सांम के।
त्यां मोटां पुरुषां ने नमीया थकां, सीझे मन वछत आतम कांम कें॥ र० २ ॥

इण दुषम आरे पांचमें, सांग पेहरे वाजें साध अणगार के।
सरधा त्यांरे निन्वां तणी, वलें छे त्यांरो भिष्ट आचार के।
नीचो मत निन्वां तणो॥ ३ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

त्यांरा चेंहन लखण परगट करूं, कोइ म धरजो मन मांहें धेष कें।
निरणों कीजों घट भितरें, जे जे कहूं ते निजरां लेजो देख कें॥ ४॥
कोइ मिनष आंतरीयों जूतों धुरल कें, ते धन उदकें छे थांनक रें काज कें।
ते दांन लेइ थांनक करें, त्यां छोड दीधी लोकां री लाज कें॥ ५॥
वले थानक करावण कारणें, अउत तणों लेवें छें माल कें।
तिण थांनक मांहें रहें, ओ प्रतख जांणों खांपण वालो ख्याल कें॥ ६॥
लिंगडा लिगड्यां कारणें, जागां वाधी छें मठ जेम कें।
मठवासी ज्यूं मांहें वसें, त्यां विकलां नें साध कहीजें केम कें॥ ७॥
आधाकरमी थांनक भोगवें, वले मोल रा लीया में रहें छें ताहि कें।
वले भाडे लीया पिण भोगवें, त्यांनें निश्चेंइ जांणों निन्वां री पांत मांहि कें॥ ८॥
कोइ मिनप आंतरीयो जूतों धरल कें, ते घर री जायगां नें थांनक दे थाप कें।
तिण थापीता थांनक में रहें, तिण थानक रा धणी होय बेंठा आप कें॥ ९॥
एहवा थांनक भोगव्यां, बुध अकल पत त्यांरी जाय कें।
त्यां भेष भांड्यो छें भगवांन रो, ते बूडा साध नांम धराय कें॥ १०॥
ए चाला तो पोतें चालवें, कांम पड्यां कपटी होय जाए दूर कें।
थांनक भायां निमते कहें, जांणे जांणें ने मूरख बोले कूर कें॥ ११॥
दडें लीपे साधां रें कारणें, ओडीयां ओडीयां आंणें छें गार कें।
ते पिण बूड गया बापडा, वले गुर रो इ जनम दीयों छें विगाड कें॥ १२॥
केइ भेषधारी नें भेषधास्यां, हाथां दडें लीपें छें गार कें।
त्यां भेष भांड्यों भगवांन रों, त्यांनें वादें ते पिण मूढ गिवार कें॥ १३॥
साध काजें वांदें चंदरवा, वले वांधें पडदा परेच कनात कें।
ते पिण बूडे गया बापडा, वले गुर नें भिष्ट कीयां साख्यात कें॥ १४॥
केलू फेरें साधां रे कारणें, जमीया उखेलें छे जीवां रा जाल कें।
नीलण फूलण कुलायता, अनंत जीवां रा छे खेंगाल कें॥ १५॥
छपरा करें साध कारणें, वले उपर चढ छावें छें छांन कें।
ते गुर नें सेवग बेहूं जणां, भव भव में होसी घणां हिरांन कें॥ १६॥
मुरड न्हांखे नीलो उखणें, अनंत जीवां री करें छें घात कें।
जब साध श्रावक बेहूं जणां, चोडेंइ बूड गया साख्यात कें॥ १७॥
थांनक री भीत पड गइ, जब श्रावक फेर चुणावें भीत कें।
तिण हिंसा रा पाप उदें हूआं, चिहुं गति में होसी घणा फजीत कें॥ १८॥
साध रेत आंणे नें पाथरें, ते रहें रों छार उपर बरसें मेह कें।
जीव अनंत मरें तिहां, तिण रा साधपणा रो आए गयो छेह कें॥ १९॥

वले टांची वजावे सिलावटां, साधां रें थांनक सुधारण काज के।
तिण जायगा मे साधु रहे, त्या छोड्यो संजम नें लोकां री लाज कें॥ २०॥
पका थांभा मंगावे पर गांम थी, तिहां अनंत जीवां रो करे छे संघार के।
ते बूडो जीवां थी वेर वाघ ने, गुर रो पिण दीधों जनम विगाड के॥ २१॥
नवी जायगां उठाय बेंठी करे, थेट सूं नवी दराए नीव कें।
साधा निमते हिसा करे, ते तों निश्चेइ हिसक दुष्टी जीव के॥ २२॥
हिसा करे साधां रे कारणे, त्यां जीवां रो जाणजो पूरो अभाग के।
तिण विध विध सूं जीव मारीया, त्यारो कहितां कहितां न आवें थाग के॥ २३॥
गरथ दीयों छे थानक करायवा, तिण अनंत जीवा रों करायों छे नास के।
पाप रो मूल मूदे तो तेहिज छें, तिणनें निश्चेइ जाणजो दुरगति वास के॥ २४॥
एहवा थांनक भोगवें, ते निश्चेइ छें भगवत रा चोर के।
आचाराग नसीत सूत्तर मभे, तिहां वीर जिणंद कीयों छे निचोड के॥ २५॥
नवो थांनक त्यारे मोल लें, जब आगलो थांनक वेचे करे दांम के।
ते व्याज देवें सामग्री मभे, ते थांनक तालके कहे छे ताम कें॥ २६॥
मुरदादिक रो माल ले भेलो करे, ते व्याज देइ नें वधारें माल के।
तिणने पिण कहे थांनक तालके, ते बूडा देवाल लेवाल दलाल के॥ २७॥
जिणरो थांनक तिणरो परगरो, ओर रो परगरो म जांणो कोय कें।
ते थांनक छें भेषधार्‍यां तणो, त्यांरो इज परगरो जांणो लीजो सोय के॥ २८॥
वले थापीता थांनक मे रहें, ओ पिण छे उघाडो दोष कें।
तिण दोष नें दोष जाणें नही, ते मिथ्याती किण विध जावसी मोख के॥ २९॥
कहि कहि ने कितरो कहूं, इण अनुसारे बोल अनेक के।
एहवा थानक भोगवे, त्यामें आखो वरत न पावे एक के॥ ३०॥
राते किवाड जड्या उघाडीयां तिहां पिण हुवें छे जीवां री घात के।
तिणरो पाप नें दोष गिणे नही, त्यांने निन्व जांणो साख्यात कें॥ ३१॥
नित को वेहरे एकण घरे, धोवण पाणी असणादिक आहार के।
ते भिष्ट हूआ जिण धर्म थी, विगड गयो विकला रो आचार के॥ ३२॥
साध नाम धराय नें, बेठी पांत आरा माहे जाय के।
त्या भेष भांड्यो भगवांन रो, त्या विकलां ने जाणजो निन्वा रे माय के॥ ३३॥
कलाल ना घर नो पांणी पीयें, ते पिण दोष सहीत असुध के।
एहवो पांणी पीयें तेहनी, भिष्ट हुइ छे सुध नें बुध कें॥ ३४॥
पाणी वेहरें कलाल नां घर तणो, ते पिण मोल रो लीधो छे तांम के।
वले रुपीया नें व्याज दे तेहनें, ते पांणी वेहरें ते निन्वां रो कांम कें॥ ३५॥

विण पडिलेह्यां गिज पोथ्यां तणो, त्यांमें अनंत जीवां री हुवें छें घात कें।
त्या जीवां रों पाप गिणें नहीं, ते तों असल निन्व साख्यात कें ॥ ३६ ॥
ववेक विकल बालक विरध छें, ते तों समकत विरत जाणें नही ताहि कें।
वले साधपणों नही ओलख्यों, एहवा विकलां नें मूडे ले माहि कें ॥ ३७ ॥
सात आठ वरस रों डावडों, समकत विण हीण बुधीयो जीव कें।
तिणनें दिख्या दे आहार भेलो करें, त्यां पिण दीधी छें नरक री नीव कें ॥ ३८ ॥
तिण बालक नें न्यातीला पकड नें, पाछो गृहस्थ करें तिण रो भेष उतार कें।
तिणनें पाछें निन्व जाय नें, धरणो पाडे वारूंवार कें ॥ ३६ ॥
पूछ्यां कहें म्हें धरणो पाड्यों नही, जाणें जाणें नें बोले सांप्रत कूड कें।
एहवा किरतब तो निन्व करें, त्यारो लोकिक मे पिण हुवो फितूर कें ॥ ४० ॥
कोइ निरधन घर छोडे त्यां कनें, तिणनें घर रा आगना देवे नही ताम कें।
जब निन्व आमना करें, गृहस्थ कनाथी दरावें छें दाम कें ॥ ४१ ॥
दांम दरावण री दलाली करें, त्यांरो पाचमों वरत हूवों चकचूर के।
दसवीकाल कें देखलो, साधपणो गयो वेहतीरे पूर के ॥ ४२ ॥
मूंआ गयां रा पातरा, इधका राखें थानक रे माय कें।
त्यांनें पूछे तो कहे गृहस्थ ना, साप्रत बोलें मूंसावाय कें ॥ ४३ ॥
ते पडिलेह्यां विण पडीया रहे, जाल जमे जीवा री हुवे घात कें।
इधका राख्यां भागों वरत पांचमो, त्यांनें जाणजों निन्व साख्यात कें ॥ ४४ ॥
इधका थांन राखें कपडा तणा, ते पिण विण पडिलेह्या तांम कें।
त्यानें आला में घालें मूंद दे, अे तो भेषधारी निन्वा रा काम कें ॥ ४५ ॥
आरा मां सूं साधां रें कारणे, धोवण मांड मेले अनेरे घर आण कें।
ते दोखीलों वेंहरें जाण ने, एहवो भिष्ट आचार निन्वा रो जाण कें ॥४६॥
धोवण मांहे नीलोतरी, तिण धोवण नें वेंहरे जाण कें।
वले दोष गिणें नही तेह मे, ते निन्व छे पूरा मूढ अयाण के ॥ ४७ ॥
भूरी धोवे छें जुवार री, तिण धोवण मे जुवार रा दाणा अनेक कें।
ते धोवण वेंहरे छे जाण ने, त्यां छोड दीधी जिण धर्म री टेक के ॥ ४८ ॥
बायां घर घर नों धोवण भेलो करें, साधां ने वेहरावण रें काज के।
ते धोवण वेंहरें साध जांण नें, त्यानें किम कहिजे मुनिराज कें ॥ ४६ ॥
छती सकत फिरवा तणी, तोही लिगडा लिगडी थाणे वेसे ताहि के।
कल्प मरजादा भांगी छें पापीयां, त्यांनें गिणो निन्वा री पात माहि के ॥ ५० ॥
सहर मे फिरें गोचरी उतावला, वले हाथ मांहे लीयां चाले छे भार कें।
वले मेड्यां चढें नें उतरें, त्या विकला नें छें तीन धिकार कें ॥ ५१ ॥

थाणे बेंठा छे खावा घालीया, ते थाणें न बेंठा खांणे बेंठा जांण के ।
ते रस ग्रिधी नगर पिडोलीया, त्या भेपधार्‍यां भांगी छे जिणवर आंण के ॥ ५२ ॥
एक दिन माहे एकण घर मझें, वेहर ल्यावें छे तीन च्यार वार के ।
ते पिण सख्या छें नही, त्या विकला रो विगड गयों आचार कें ॥ ५३ ॥
ते पिण विनाइ कारण वेहरता, त्या भागे दीधी छें कल्प मरजाद के ।
एहवा भेषधारी भागल फिरें, विकल थका बाजे छें साध के ॥ ५४ ॥
माहोमाहि साध सरचे नही, त्यारा मूंओ गयो करे माहोमा मूकांण के ।
आदर भाव नही आयां तणी, ते निन्व जिण मारग रा अजांण के ॥ ५५ ॥
वले ग्रहस्थ ने बेंसण री आमना करे, जायगा वतावे बेंसण सुवण नें ताय के ।
तिण कीयो संभोग गृहस्थ सू, तिणरी पिण विकलां ने खबर न काय कें ॥ ५६ ॥
प्रश्न व्याकरण दसमा अग मझे, साव ने न राखणो चसमो कांच के ।
ते राखे छे सूतर उथाप ने, त्यां निन्वा रो विकल मांने छे साच के ॥ ५७ ॥
एकलो साव चोमासो करे, वले एकलो रहे छे सेषे काल के ।
तिणने अव्यक्त भगवत भाखीयो, साधपणा थी दीयो छे टाल के ॥ ५८ ॥
दोय साववीया चोमासो करे, दोय जणी रहे सेखा काल के ।
कारण विण विचरे दोय जणी, तिण लोपी मरजादा-भागे दीधी पाल के ॥ ५९ ॥
पाणी ठारे गृहस्थ रा ठाम मे, भोगवी पाछा सूंप दे ताहि के ।
त्यांने अणाचारी जिणवर कह्या, दसवीकालिक तीजा अवेन रे मांहि के ॥ ६० ॥
मातरीयादिक रों नाम ले, पातरो इधको राखे छे ताहि के ।
तिण माहे दोष जांणे नही, त्याने जांणो निन्वा री पात माहि के ॥ ६१ ॥
कारण विनाइ साधव्या, काजल घाले आख्यां रें माहि कें ।
अणाचारणी त्याने कही, दसवीकालक तीजा अधेन रे मांहि के ॥ ६२ ॥
केइ आर्यां पेहरे छे कांचूओ, मिश्रू आदि वले खीनखांप के ।
ते विगड़ायल छे जेन री, त्याने वांद्या पूज्या छे निकेवल पाप के ॥ ६३ ॥
वंधो करावे गृहस्थ ने, तू दिख्या ले तो लीजे म्हांरे पास कें ।
ओर साध कने लीजे मती, तिण श्री जिण आगना लोपे दीधी तास के ॥ ६४ ॥
मोल लरावे लोट पातरा, वले पांना परत लारावे मोल के ।
वले मोल वतावें थोडो घणो, ओ देखो निन्वां रो पोल के ॥ ६५ ॥
लोट पातरा वसतर पोथीयां, सेठी घाले भुंयरा रे माहि के ।
त्यारी पडिलेहण करे नही, एहवा भिष्टआचारी छे निन्व ताहि के ॥ ६६ ॥
लोट पातरा वसतर ने पोथीयां, गृहस्थ रे घरे मेले छे ताम कें ।
त्यांरी भलावण देवे गृहस्थ ने, पछे विहार करे जाओ ओर गाम के ॥ ६७ ॥

मोल ले राखें साधां नें वेहरायवा, घी खांड आदि दे वस्तु अनेक कें।
ते वेंहर आंणें लोलपी थकां, त्या पेंहर विगाडयो साध तणो भेख कें॥ ६८॥
गृहस्थ नें देवें लोट पातरा, पूठा पांना नें परत वगेष कें।
वले देवे ओघो नें पूंजणी, ते भिष्ट हूआ ले साध रो भेष कें॥ ६९॥
थोडोइ उपधि गृहस्थ नें दीयो, त्यांरो आखो वरत रह्यो नही एक कें।
नसीत रे पनरमें उद्देसे कह्यों, ओ पिण नही विकलां रे ववेक के॥ ७०॥
इधका राखें छे लोट नें पातरा, इधका राखे कपडा लोपें मरजाद के।
वरत भागों त्यांरो पांचमों, त्यां विकलां ने विकल जांणें छे साध कें॥ ७१॥
कागद लिखावे गृहस्थ कनें, ओर गांम मेंलण ने ताहि कें।
तिण मांहे समाचार आपरा, ते पिण छें निन्वां री पांत मांहि के॥ ७२॥
केइ तों कागद हाथां लिखे, मेंल देवे गृहस्थ रे साथ के।
कहें ओर किणही ने दीजो मती, छांने दीजों साध साधव्यां रे हाथ के॥ ७३॥
कपडा वेंहरावे त्यांनें मोल ले, ते जांण ने वेंहरे छे ताहि के।
ते भिष्ट हूआं जिण धर्म थी, त्यांने निश्चेइ जाणजों निन्वां रे मांहि के॥ ७४॥
मोल लीधो थांनक भोगवें, मोल रो लीधो भोगवें आहार के।
कपडा पिण मोल लीधा भोगवें, त्यांने निश्चेंइ मत जांणजो अणगार के॥ ७५॥
सिजातर पिंड भोगवें, ते सरस आहार तिणरो आवतो देख के।
धणी छोडे आग्या ले ओर नी, तिण पेहर विगाड्यो साध तणो भेख के॥ ७६॥
त्यांरा श्रावक खाअें केइ मांग ने, त्यांने सांनी करें दरावे दाम के।
तिणमें मुतलब जांणे आपरों, इणरे होसी ते आवसी म्हांरे कांम के॥ ७७॥
ओ मोल ल्यावें घी खांड ने, वले चिरक पणो मेवा मिष्टांन के।
ओ पिण खाअें मन मांनीयो, गुर नें पिण दे अडलक दांन के॥ ७८॥
उणरे निंठे खांतां ने देवतां, जब फेर त्यारी करें दातार के।
जब ओ पिण वेहरावें उण रीत सूं, एहवो छे भेषधारयां रें अंधार के॥ ७९॥
कोइ घर सूं आयों बोलायवा, वेहरायवा असणादिक आहार के।
तिण घर जाए तेडीया, त्यां विकला रो विगड गयों आचार के॥ ८०॥
घर हाट सूं आयो चलाय नें, कपडो वेहरण नें ले जावें बोलाय के।
तिहां पिण जाये तेडीया, त्यांमे पिण कला मत जांणजों काय के॥ ८१॥
साह्मो आंण्यो ले जाए तेडीयो, ए दोनूंइ दोष कह्या भगवांन के।
ते पिण वेंहरे निसक सूं, त्यांने भिष्ट आचारी जाणे बुधवांन के॥ ८२॥
पाट बाजोट आंणें गृहस्थ रा, पाछा देवण री नही छे नीत के।
मरजादा लोपी नें भोगवें, आ तो निश्चेइ जांणो निन्वा री रीत के॥ ८३॥

केइ पाट बाजोट मोल रा लीया, केइ आधाकरमी पाट बाजोट के।
केइ तो सांह्या आंणें दीया, ओ पिण त्यांमें मोटकों खोट कें॥ ८४॥
भांगां तूटा करावें त्यांने सांतरा, खाती रे पासे पागादिक दराय कें।
केइ पाट बाजोट आगा लीयें, केइ थांनक ज्यू थापे राख्या ताय के॥ ८५॥
गृहस्थ नें लिखावें बोल थोकडा, आप तणों पांनो दे उतारण ताय के।
ते उतारे छे पानो देख ने, इण दोष री विकलां ने खबर न कांय के॥ ८६॥
पेंहलों करण लिख दीयां में पाप छें, तो लिखायां पिण होसी पाप कें।
तिणमें निन्व जाणें धर्म छे, त्यां श्री जिण वचन ने दीयां उथाप कें॥ ८७॥
पुस्तक पातरा आदि दें, मोल लरावें ले ले नांम कें।
आछा भूंडा कहें तेहनें, अे पिण छे भागलां रा कांम के॥ ८८॥
गराग नें तो कइयो कह्यों, कुगुर छें तिण विच दलाल के।
वेंचण वालो वाणीयो कह्यों, यां तीनां रो जांणजों एक हवाल के॥ ८९॥
क्रय विक्रय मांहें वरते साधजी, त्यांने महा दोषण छे एह के।
उत्तराधेन पेंतीसमें, तिणने तो साध न कह्यो छे तेह कें॥ ९०॥
जो मोल लरावें अचित वस्त ने, तो सुमत गुप्त होय जाअें खंड कें।
पांचूं महावरत भागें गया, तिणरो आवे चोमासी डंड कें॥ ९१॥
ए भाव कह्या छें नसीत में, संका हुवें तो जोवो उगणीस मे उद्देस कें।
सुध साधा विण कुण कहे, सूत्तर तणी उंडी रेस के॥ ९२॥
पोथां रा गिज राखे पडिलेह्या विनां, त्यां माहे जमें छे जीवां रा जाल के।
पडे कंथुया माकड उपजें, नीलण फूलणादिक जीवां रो हुवे खेगाल के॥ ९३॥
जोवे वरस छे मास नीकल्यां थकां, तों पेहलां वरत तणों हुवे खंड के।
नसीत रे दूजें उद्देसे कह्यो, एक मास रों आवें डंड के॥ ९४॥
गृहस्थ रें साथें सदेसों कहे, जब गृहस्थ सू भेलो कीयो संभोग कें।
ते साध नही भगवांन रा, त्यांरे लागो मिथ्यात रो रोग के॥ ९५॥
भेषधारी मांहोमां कजीया करें, धरणा पाडें दरावें आंण के।
आंम्हा सांह्या बेसें बाजार में, अन खावा रा दरावें पचखांण कें॥ ९६॥
अन पांणी छोडावे आंण दे, कदा होय जाअे तिण मिनष री घात कें।
एहवा किरतब करें तेह मे, साधपणो रह्यो नही अंसमात कें॥ ९७॥
धरणो पाडें साध रा भेष में, त्यां छोड दीधी लोकां री लाज कें।
ते वेसरमा सर्म वाहिरा, त्यां विकलां ने विकल कहें मुनीराज कें॥ ९८॥
त्यांने वांदे पूजें ते भोलीया, त्यांने साधपणा री खबर न कांय कें।
ते पिण बूडें गया वापडा, कुगुर तणी पखपात रें मांय के॥ ९९॥

डोला बारें काढें तुरकां तणें, जब मोटें मोटें सब्दें करें आइधोय कें।
ज्यूं निन्वां रो मत विखरें जबे, आहिज रीत जांणें लेजो सोय कें॥११६॥
सैंद मार्‍या तुरकां तणा, तिण सूं आए बरस करें छें आइधोय कें।
ज्यूं ज्यांरा खेतर श्रावक फिरें, आइधोय ज्यूं करें छें हाय बोय कें॥११७॥
सूतर विरुध जोडां करे, तिणरा कागदियां लिख दीधा हाथ कें।
आइधोय ज्यूं करता थकां, बकता फिरें हाटां में दिन रात कें॥११८॥
सुध साधां नें निन्व कहें, निन्वां नें कहें सुध साध कें।
ते दोनूं विध बूडा बापडा, त्यांरा घट में उपनी मिथ्यात री व्याध कें॥११९॥
नवकरवाली निंद्या तणी, कुगुरां दीधी छें त्यांनें पकडाय कें।
जाप जपें नित तेहनों, रात दिवस करें छें बूडण रो उपाय कें॥१२०॥
सुध साधां तणी निंद्या करें, वले अणहूंता देवे आल कें।
गेहला ज्यूं बकबोकरे, साच भूठ तणो नहीं काढे निकाल कें॥१२१॥
ओरां रें माथें आल दें, तिणसूंइ पांमें भव भव में आल कें।
ज्यूं साधां रे आल देवें तिको, उतकष्टों रुलें तो अनंतो काल कें॥१२२॥
जो पाप उदें हुवें इण भवे, तो घर मांहे आवें दलदर भूख कें।
विजोग पडें वाहलां तणों, वले दिन दिन उपजें दुख मांहे दुख कें॥१२३॥
रोग सोग संताप वधें घणों, जीवें जां लग रहें खांचा तांण कें।
वले दुख पांमे नरक निगोद नां, सुध साधां री निंदा रा ए फल जांण कें॥१२४॥
जिहां विचरें साधजी, तिहां तिहां मिलें परषदा रा थाट कें।
तिहां भेषधारी ने निन्वां, रात दिवस करें छें तलतलाट कें॥१२५॥
जिहां जिहां निन्व संचरें, तिहां तिहां हुवें जिण धर्म री हाण कें।
कजीयो कलेस वधें घणों, तिहां मूरख बूडे छे कर कर तांण कें॥१२६॥
जिहां जिहां सूर्य उदें हुवें, तिहां तिहां हुवें चोरा तणी घात कें।
जिहां जिहां विचरें साधजी, तिहा तिहां पतलों पडें छें मिथ्यात कें॥१२७॥
साध रो आचार परगट करें, जब भेषधार्‍यां रे लागें दाह कें।
रोम रोम तिणां रा परजलें, ओर लोकां रें तो नही परवाह कें॥१२८॥
कजीया कलेस तो अेहिज करें, अेहीज करें जिण धर्म री हांण कें।
अेहीज निंद्या करें पारकी, ते पिण विकलनें नही छे पिछांण कें॥१२९॥
मत विखरतो देखे आप रो, वले परती देखें छें मत माहे फूट कें।
जब निन्व नें निन्वां रा श्रावका, मिल मिल नें चलावें छें भूठ कें॥१३०॥
स्वांन भुसें छें मुख उचो करें, कानां सुणे भालर रो भिणकार कें।
ज्यूं साधां रा सब्द कानां सुणें, स्वांन ज्यूं निन्व करें भुसवार कें॥१३१॥

माठी वस्त नें ज्यूं ज्यूं उकरालीयां, ज्यूं ज्यूं नीकलें दुरगंध वास के।
ज्यूं ज्यूं निन्वां नें छेडवे, ज्यूं ज्यूं उंधा बोलें छें तास कें ॥१३२॥
नीब फले जब कागलो, घणों हरखें नींबोंली देख के।
ज्यूं काग सरीषा मांनवी, मिश्र री सरधा सूं हरखे वशेष के ॥१३३॥
ते मल मल नें गावें मिश्र ने, जाणें सार काढ्यों इण सरधा मांय के।
न्याय निरणों त्यांरे नहीं, यूंही करें थोथी बकवाय के ॥१३४॥
मिश्र दांन उठाय बेंठो कीयों, ते सरधा छें एकंत भूठ मिथ्यात के।
ते किण किण में मिश्र कहे, ते सांभलजो छोडी पखपात के ॥१३५॥
आठ दांन कह्या संसार नां, तिण मांहे कहे जिण धर्म रो भेल के।
आ उंधी सरधा निन्वां तणी, ते जिण मारग सूं नहीं खाओ मेल कें ॥१३६॥
अणुकंपा आंण गाजर मूला दीयें, वले सर्व नीलोतरी ने जमीकंद के।
ते पिण दीयां मिश्र कहें, एहवो छे निन्वां री सरधा रो फंद के ॥१३७॥
बंदीवांनादिक नें दांन दें, सचित्तादिक नीलोती अनेक के।
तिणमें भेल कहे जिण धर्म रो, आ खोटी सरधा भाले रह्या टेक कें ॥१३८॥
ग्रह करडा आयां भय रो घालीयों, थावरीयादिक ने देवे दांन के।
तिणमें भेल कहे जिण धर्म रो, आ निन्वां री सरधा घोर अग्यांन के ॥१३९॥
खरच मूंआ रे केडें करें, ए चोथो दांन लोकिक ववहार कें।
तिणमें भेल कहें जिण धर्म रों, आ निन्वां री सरधा छे घोर अंधार के ॥१४०॥
सांकडे पडीयो लज्या सू दांन दे, ते सासरादिक में जमाइ ज्यूं जांण के।
तिणमें भेल कहे जिण धर्म रो, एहवा निन्वां छें मूढ अयांण के ॥१४१॥
गरब चढ्यों दांन दे जेह भणी, मुकलावो पेंहरावणी मूसालों रंगरेल के।
रावलीयादिक नें दांन दें, तिण मांहे कहें जिण धर्म रो भेल कें ॥१४२॥
हांती नेतो देवो नेत घालवो, इत्यादिक आमों सांह्यो देवो लेवो तांम के।
ए नवमों दसमों दांन छें, तिणमें जिण धर्म रो भेल कहें छे अलाम के ॥१४३॥
पीहर वाजें छकाय नां, छकाय खवायां कहे मिश्र दांन के।
जब पीहर तों पूरो पड्यों, दया रहीत छे विकल समांन के ॥१४४॥
एक करणी करे तेहमें, नीपनो कहे छे धर्म नें पाप के।
एहवी करे छें परूपणा, मिश्र दांन री कीधी छे थाप के ॥१४५॥
जीव खाधां खवायां भलो जांणीयां, तीनूंइ करणा कह्यो जिण पाप के।
जीव खवाया मिश्र कहे, त्यां निन्वां रे होसी भव भव माहे संताप के ॥१४६॥
भात वरोटी जीमणवार में, नेत जीमावें सगा नें सेण के।
तिणमें भेल कहें जिण धर्म रो, त्यांरा फूट गया अभितंर नेण के ॥१४७॥

छही छकाय जीवां तणी, कोइ मंडावे छही दांन साल के।
त्यांमे किणहीक में तो मिश्र कहें, किणहीक रों नही काढें निकाल के॥ १४८॥
बावीस टोलां ने कहे साध छे, त्यां पिण मिश्र री सरधा जांणे लीधी कूड के।
खोटी जांणे ने परहरी, ज्यूं माठी वस्त उपर दे धूर के॥ १४९॥
बावीस टोलां ने कहे साध छे, ओ पिण भूठ बोले जांण जांण के।
पिण मन माहि साध जांणे नही, त्यां भूठा बोलां री करजो पिछांण के॥ १५०॥
जो साध सरधे छे तो तेहनी, बंदणा छडावे छे किण न्याय के।
एहवा प्रश्न पूछे सांकडें लीयां, जब तो जीभ पडे नही ठाय के॥ १५१॥
कदे करडे काम सांकडे पड्यां, बावीस टोलां ने कहिदे साध के।
ओं पिण भूठ बोले छे जांण जाण ने, पिण अंतरग माहे जाणे असाध के॥ १५२॥
मिश्र दांन उथापे तेहने, हिंसाधर्मी कहे छे तांम के।
हिसा धर्मी तो निश्चेइ असाध छे, जब तो बावीस टोलां री पाडी मांम के॥ १५३॥
मिश्र दान ने उथपे, त्यांने पाखडी कहे छे तांम के।
वले हिंसाधर्मी त्याने कहे, वले भूठाबोलां कहे छे ठाम ठांम के॥ १५४॥
वले खोटो मत कहे तेहनो, वले अग्यांनी कहे छें तांम के।
ग्यान विना आधा कहे, विध विध सूं पाडे छे माम के॥ १५५॥
जोड कीधी छे त्या उपरे, तिणमे निषेद्या छे विवध परकार के।
साधपणा ने समकत तणो, खेरो मूल न राख्यो लिगार के॥ १५६॥
ज्याने भिन भिन कर ने नषेधीया, वले त्यानेइज कहे छे साध के।
एहवा भूठाबोलां छे निन्वां, त्यां विकलां रे किण विध होसी समाध के॥ १५७॥
वावीस टोलां मे केइ भोलीया, त्यां भूठावोलां ने कहे छे साध के।
ते पिण सुध बुध वाहिरा, त्यांरे पिण कदेय म जांणों समाव के॥ १५८॥
सील भागे निन्वां रा टोला मझे, तिणने कहिवा ने तो दिख्या दे फेर के।
पिण वडो ज्यूं रो ज्यूं राखीयो, एहवो छे निन्वा रा मन में अधेर के॥ १५९॥
कुसीलीया भागल भेला रहे, त्यांरो तो किण विध काढे निकाल के।
पांणी भरे सगलां मझे, कण रहीत भेलो कीयो छे पराल के॥ १६०॥
साध साधवी सूं वरत भाग दे, तिणनें दसमो प्राछित कह्यो जिण आप के।
ते ठांणाअग वेदकल्प में, ते प्राछित निन्वां दीयों उथाप के॥ १६१॥
सील भागे साध साधवी थकी, तिणने न्याय करण नें दिख्या दे फेर के।
तिण ने वडो ज्यू रो ज्यूं राखीयों, ओ पिण निन्वा रे अतंत अंधेर के॥ १६२॥
फेर दिख्या दे सगला सू छोटो कीयो, जब सगलां वादणा सीस नमाय कें।
तिणरी वदणा तो जिहाइ रही, उल्टा वडां ने पाडे छे पाय के॥ १६३॥

रत्न : १४

विनीत अविनीत री चौपई

ढाल : १

दुहा

नमूं वीर सासन धणी, ते पाम्यां पद निरवांण।
त्यां विनो परूप्यो सद्गुर तणो, बांधी मरयाद परमांण ॥ १ ॥
केइ साधु नांम धरावतां, ते बोलें आल पंपाल।
सुध आचार श्रद्धा थी वेगला, ज्यूं कण रहित पराल ॥ २ ॥
एहवा भेषधारी भिष्टी थकां, मुख सूं कहे म्हे साध।
ते विनों परूपें भागल तणो, श्री जिण वचन विराध ॥ ३ ॥
त्यांसूं महाव्रतां री चरचा कीयां, तो भागें मृग ज्यूं दूर।
घणा आडंबर करे पूजावता, वले भाखें अनेक विध कूड ॥ ४ ॥
त्यांरो विनो करे गुर जांण ने, भोला लोक अयांण।
केडे लागा कुगरां तणे, ते बूडें कर कर तांण ॥ ५ ॥
कुगुर आदर ने छोडण तणो, कठिन घणो ए कांम।
कोइ छोडे हिरदे ग्यांन परगट्यां, त्यांने वीर वखाण्या तांम ॥ ६ ॥
विनो करणो छे सतगुर तणो, त्यांरा गुणा री करी पिछांण।
उत्तराधेन पेहले कह्यो, ते सुणजो चतुर सुजांण ॥ ७ ॥

ढाल :

[पाषड वधसी आरे पांचमें रे]

संजोग छोड्या अभिंतर बाहिरला रे, ते मोटा ऋषिश्वर छे अणगार रे।
ते सर्व सावद्य त्यागे ने नीकल्या रे, त्यांरे पाप करण रो नही आगार रे।
विनों कीजे एहवा सतगुर तणो रे ॥ १ ॥
ते करणी कर भेदे भिक्खु कर्म ने रे, निरदोषण भिख्या ना लेवणहार रे।
विनो परूप्यो एहवा सतगुर तणो रे, सूत्तर में श्रीवीर कह्यो विस्तार रे। वि० २ ॥
जे चाले निरंतर गुर री आगनां मझे रे, समीपे रहे तो रूडी रीत रे।
ते जाण वरते गुर री अंग चेष्टा रे, तिणनें श्रीवीर कह्यो सुविनीत रे ॥ ३ ॥
विनो तो जिण सासन रो मूल छें रे, विनो निरवांण साधन रो काज रे।
जे विनों करण सूं उपराठा पड्या रे, ते गया संजम नें तप सूं भाज रे।
ते अविनीत भारी कर्मा एहवा रे ॥ ४ ॥
केइ गुर री नहीं पाले मूरख आगनां रे, समीपे रहिता संके मन माय रे।
रखे-करावे कारज मोक ने रे, एहवो बूडण रो करे उपाय रे ॥ ते० ५ ॥

ते अत्यन्तीक अनुरक्त नें गुर नीं पालियो रे, उन विनों न जांण्यो कदी चीत रे।
उणरे कूड़ कपट ने वेठ्यागो घणो रे, तिणनें श्रीवीर कह्यो अविनीत रे॥ ६॥
जो काम करे अविनीत गुर तणो रे, तो जांणे अण्यांयी वेठ समान रे।
तिण वचन जिणवर नों नहीं ओलख्यो रे, ते चिहुं गति में होसी घणो हेरान रे॥ ७॥
जो दुरकर क्रिया करे अति घणी रे, ते सब दीसति के ज्ञाता ध्यांन रे।
के पूजा श्लाघा री भूखो थको रे, तिण विनों करणो तो नहीं आसान रे॥ ८॥
जो करावे गृहस्थ नें वेला थोकड़ा रे, ते तिण मान वडाई काज रे।
जो आवे अमर्ष अवर ने निरखतो रे, ते अविनीत निकल्यो नांमे लाज रे॥ ९॥
अविनीत नें आलो लागो कोड़िलो रे, तिणरा अथिर परिणांम रहे सदीव रे।
जो तिण विध चाले गुर री आगन्यां रे, जे क्रोधी अहंकारी दुष्टी जीव रे॥ १०॥
उणरे वेलो करण री मन में अति घणी रे, तिणसूं गुर सगुण सूं ग्यान नाय रे।
गहे नांन छोड़ शिष्या नें गुर करे रे, एहवी ओखट थाट घणी मन मांय रे॥ ११॥
कोइ गुर करें सिष्या के तो जांन ने रे, तो कारण रो करे कूड़ उपाय रे।
कुल ख्यांति ज्यूं बन्ने तिण करे रे, नाहर नाहर ज्यूं आंतो वैथे छिपाय रे॥ १२॥
उणरे वेला नें गुर री आसता रे, मान चानिविया पावे नाय रे।
जो परभव रो डर नहीं आंण वालियो रे, वेला करणा री मन में चाय रे॥ १३॥
अविनीत रे वेला री हुवे चावना रे, तिण गुर नें आग्या देवा नहीं जांन रे।
ते वेलो हुवो देहि जो आपणो रे, तो गुर सूं तिण तोड़े कूड़ अयांन रे॥ १४॥
अविनीत आंणे घर छोड़े देहुनें रे, ते अविनीत करे वेलो तडकाव रे।
वले कुलमा सिखाय सिक्षा देगुर थकी रे, ते हैं अनहुंता कूड़ा झाल रे॥ १५॥
अविनीत आणे घर छोड़े देहुनें रे, तिणनें तो पूछे खबर न काय रे।
जो गुर नहीं पूछे सिष्य अविनीत नें रे, तो कुण कुण करें अकारज ताय रे॥ १६॥
जो अचाव पालें कृपा भाव नें रे, वले गुर सूं तिण चाले कुरब वेर रे।
वले कांन न सुणे वाती देहुनी रे, तिण पहल विगाड्यो साहु रो नेह रे॥ १७॥
कोइ गुर री आग्या लोपे वेलो करे रे, तिण छोडी छे जिन सासन री रीत रे।
ते छिद्र छिद्र हुसी मनुष्य लोक में रे, परभव में तिण होसी घणो फजीत रे॥ १८॥
वेलो कह्यो ते आतो कुछ नहीं रे, तिणरे रहे वेला करण रो ध्यांन रे।
उणनें सिष्य सिखियां सूं तो सिथल पड़े रे, वले वले बोलणो में अभिमांन रे॥ १९॥
विनीत सिष्य रे सिष्य री मन में उठी रे, तिण गुर री आग्या बिन न करे चाव रे।
तिण आत्मा वसनें कृपा वश करी रे, सिष्य सिष्यां न सिख्यां सरल स्वभाव रे॥ २०॥
जो विनीत आंणे घर छोड़ें देहुनें रे, तो विनीत बोले गुर रे न्याय रे।
हुं गुर री आग्या बिन वेलो किम करूं रे, हुं शिष्या दे सूंपूं गुर नें ताय रे॥ २१॥

कोइ उपगारी कंठ कला धर साधु री रे, प्रशंसा जश कीरति बोलें लोग रे।
अविनीत अभिमानी सुण सुण परजले, उणरे हरख घटे नें वधें सोग रे ॥ २२ ॥
जो कठ कला न हुवे अवनीत री रे, तो लोकां आगें बोलें विपरीत रे।
यां गाय गाय रीझाया लोक ने रे, कहे हू तत्व ओलखाउं रूडी रीत रे ॥ २३ ॥
एहवा अभिमानी अविनीत ते लोकां कने रे, एहवी जणावे ऊंधी रेस रे।
उना रे उत्तम साधा री आसता रे, तिण छोड्यो छे सतगुर नों आदेस रे ॥ २४ ॥
ओ गुर रा पिण गुण सुण नें विलखो हुवे रे, ओ गुण सुणे तो हरषत थाय रे।
एहवा अभिमांनी अविनीत तेहने रे, ओलखाऊं भव जीवां ने इण न्याय रे ॥ २५ ॥
कोइ प्रत्यनीक ओगुण बोले गुर तणा रे, अविनीत गुर द्रोही पासे आय रे।
तो उत्तर पडउत्तर न दे तेहने रे, अभिंतर मे मन रलियायत थाय रे ॥ २६ ॥
प्रत्यनीक ओगुण बोलें तेहनी रे, जो आवे उणरी पूरी परतीत रे।
तो अविनीत एकठ करे उण सं घणी रे, ओ गुर रा ओगुण बोले विपरीत रे ॥ २७ ॥
वले करे अभिमानी गुर सूं बरोबरी रे, तिणरे प्रबल अविनों नें अभिमांन रे।
ओ जद तद टोलां में आछो नही रे, ज्यूं विगड्यो विगाडे सडियो पांन रे ॥ २८ ॥
ओ खिण माहे रग विरंग करतो थको रे, वले गुर सूं पिण जाए खिण मे रूस रे।
जब गूंथे अग्यांनी कूडा गूंथणा रे, ओर अविनीत सू मिलवा री मनहूस रे ॥ २९ ॥
जो अविनीत ने अविनीत भेला हुवे रे, तो मिल मिल करे अग्यांनी गूझ रे।
क्रोध रे वस गुर री करें आसातना रे, पिण आपो नही खोजे मूढ अबूझ रे ॥ ३० ॥
जो अविनीत अविनीत सू एकठ करे रे, ते पिण थोडा मे विखर जाय रे।
त्यारे क्रोध अहंकार ने लोलपणो घणो रे, ते तो साधां मे केम खटाय रे ॥ ३१ ॥
उणने छोटा ने छादे चलावण तणी रे, ते पिण अकल नही घट माय रे।
वडा रे पिण छादे चाल सके नही रे, तिण अविनीत रा दुख माहे दिन जाय रे ॥ ३२ ॥
पुस्तक पाना वसतर ने पातरा रे, इत्यादिक साधु रा उपधि अनेक रे।
गुर ओर साधा ने देता देख ने रे, तो गुर सू पिण राखे मूरख धेख रे ॥ ३३ ॥
जब करें मांहोमां खेदो ईसको रे, वले वांछे उत्तम साधां री घात रे।
तिण जनम विगाड्यो करे कदागरो रे, करे माहोमां मन भांगण री वात रे ॥ ३४ ॥
एहवा अभिमानी नें अविनीति री रे, करे भोला भारी कर्मां परतीत रे।
उणरा लषण परिणाम कह्या छे पाडुआ रे, कोइ चतुर अटकलसी तिणरी रीत रे ॥ ३५ ॥

ढाल : २

दुहा

टोलां मांहें रहिवा री आसा नहीं, क्रोधी अविनीत जांणे एम।
तिण सूं छाने छाने लोकां कनें, बोले थावरिया जेंम ॥ १ ॥
गर्भवती नें कहें डाकोत रो, थारें होसी पुत्र अनूप।
पाडोसण ने कहें होसी डीकरी, ते पिण अतंत करूप ॥ २ ॥
गुर भगता श्रावक श्रावका कनें, गुर रा गुण बोले तांम।
आपो वश हुवो जांणें तिण कने, ओगुण बोले तिण ठांम ॥ ३ ॥
थावरिया डाकोत ज्यूं, बोलें अनेक विध कूर।
इह लोक तणो अरथी घणो, वले मांनें आपण पो सूर ॥ ४ ॥
कनें रहे तिण साधु तणो, वैर बुद्धी ज्यूं जांण।
खीटोरखेडाइ करें घणी, पग पग तांणा तांण ॥ ५ ॥
कलहगारा अभिमांनी अविनीत ने, निषेध्यों सूतर मांय।
तिणनें माठी माठी दीधी ओपमा, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[रावण दिगजय चालियो]

कुह्या कानां री कूतरी, तिणरे भरे कीडा राध लोही रे।
सगले ठांम सूं काढें हुड हुड करे, घर में आवण न दे कोइ रे।
धिग धिग अविनीत आतमा* ॥ १ ॥

कुत्ती विगाडे रमणीक आंगणो, न्हांखे कीडा राध ने लोही रे।
वास दुरगंध आवे अति बुरी, तिणनें धुर धुर करें सर्व कोइ रे ॥ धि० २ ॥
जेहवी कुह्या कानां री कूतरी, तेहवा अविनीत ने अभिमांनी रे।
तिणरो पाडुओ शील ने मुख अरी, तिण सूं सगलाइ दे जाए कांनी रे ॥ ३ ॥
अविनीत रा मुख मां सू नीकलें, ते तो कुवचन कीडा सम जांणो रे।
रमणीक आंगणा ज्यूं सुध साध ने, पाप लगावे क्रोध उठाणो रे ॥ ४ ॥
थिर करण मांहे राखे तेहने, छिद्र ग्रहे हुवे द्रोही रे।
तिणने कुह्या कांना री कूतरी ज्यूं, गण बारें काढे सर्व कोइ रे ॥ ५ ॥
कण सहित कुंडो छोड नें, भिष्टो भखे भंडसूरो रे।
तिण भंडसूरा री ओपमा, अविनीत ने दीधीं वीरो रे ॥ ६ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ते अविनो छैं भिष्टा सारिखो, तिणनें अविनीत आचर लीधो रे।
विनां धर्म सू अलगो पडें, अनंत संसार आरे कीधो रे॥ ७ ॥
हरिया जव तो मिलें खावा भणी, पीवा नें मिलें पाणी ताह्यो रे।
तिण सूं भिडके मूढ मिरगलो, पछे जाय पडे जाल मांह्यो रे॥ ८ ॥
ते अविनीत छैं मिरग सारिखो, ते तों विनों करतो संक आंणे रे।
अविनां रूपणी जाल में पडे, ते पिण मूढ न जांणे रे॥ ६ ॥
तिण भंडसूरा ने मिरग री, ए ओपमा अविनीत नें छाजे रे।
तिणरो विगड्यो इहलोक परलोक, तोही निरलज मूल न लाजें रे॥ १० ॥
गलियार गधो घोडो अविनीत ते, कूट्यां विन आगो न चालें रे।
ज्यूं अविनीत ने काम भलावियां, कह्यां नीठ नीठ पार घाले रे॥ ११ ॥
गलियार गधो घोडो मोल ले, खाडेती घणो दुख पावे रे।
ज्यूं अविनीत ने दिख्या दीया पछें, पग पग गुर पिछतावे रे॥ १२ ॥
बुटकने गधेडे दुराचरी, तिण कीधी घणी खोटाई रे।
आप छांदे रह्यो उजाड मे, एक बलद नें कुबद सीखाई रे॥ १३ ॥
तिण अविनीत बलद ने तुरकियां, मार गाडा में घाल्यो रे।
बुटकनां ने आंण जोतस्यो, हिवें जाये उतावल सूं चाल्यो रे॥ १४ ॥
ज्यू अविनीत ने अविनीत मिल्या, अविनीतपणो सिखावे रे।
पछे बुटकनां ने बलद ज्यू, दोनू जणा दुख पावे रे॥ १५ ॥
कुशिष्य रो चेलापणो, जेहवो वेश्या नों घरवासो रे।
खिण खिण आय विनों करे, खिण खिण हुवे उदासो रे॥ १६ ॥
ते वेश्या मुतलब आपणे, करे सोले सिणगारो रे।
पुरष रीझावे पारका, किणरी म जाणो नारो रे॥ १७ ॥
ज्यूं अविनीत बाजे विनो करें, ते तो मुतलब रों छे यारो रे।
जो स्वारथ देखे असीझतो, तो खिण माहे हुय जाय न्यारो रे॥ १८ ॥
वेश्या सूं घर वासो करे तिके, धन खूटां पछें पिछतावे रे।
ज्यू अविनीत ने कनें राखियां, ते तो कांम पड्यां सीदावे रे॥ १६ ॥
वेश्या नें अविनीत री, यां दोयां री एकज रीतो रे।
त्यांरो इहलोक परलोक विगडियो, वले भव होसी फजीतो रे॥ २० ॥
अंगीकार न करे गुर वचन ने, विरूओ बोले पाडें विरोधो रे।
मृदु सुकुमाल गुर छे खिम्यावंत, उणरी सगत सू करे क्रोधो रे॥ २१ ॥
तिणने चूक पड्यां गुर सीख दें, तो अविनीत नें द्वेप जागे रे।
वले कलहो करे उलटो पडे, पिण गुर री सीख न लागें रे॥ २२ ॥

ते सीख छें किल्याण कारणी, ते अविनीत एहवी धारी रे।
मोने मारे चपेटा नें टाकरा, देवें डंडादिक परिहारी रे॥ २३॥
बाध्यो कालारी पाखती गोरियो, वर्ण नावें पिण लखण आवे रे।
ज्यूं विनीत अविनीत कने रहे, तो उ कांयक कुबद सीखावें रे॥ २४॥
अभिमानी अविनीत सूं, सुध विनो कीयो नहीं जावे रे।
कोइ विनीत गुर रो विनों करे, जब आप घणो सीदावे रे॥ २५॥
अविनीत दुखदाई केहवो, जेहवी सोक वरते दुखदाई रे।
ते छल छिद्र जोवतो रहे, खुद्र परिणाम रहे सदाई रे॥ २६॥
ज्यू सोक रो सोक लोकां कने, करें चावत नें वाछें घातो रे।
ज्यूं अविनीत वरते गुर थकी, आहिज रीत विख्यातो रे॥ २७॥
काई जात कुजात री उपनी, भरतार सूं लडे रीसावें रे।
पछे ताके कुवा नें बावडी, के ओर साथे उठ जावे रे॥ २८॥
ज्यू अविनीत गुर सूं रूठो थको, करे संलेखणा माडे मरणो रे।
ते मरणो अविनीत नें दोहिलो, तिणसूं ताके ओरां रो सरणो रे॥ २९॥
तिणरो संथारो ज्यू कूवो बावडी, तिण सूं मरे तोहि बाल मरणो रे।
ओर साथे उठ जावे अस्त्री, ज्यूं ओर अविनीत री ले सरणो रे॥ ३०॥
सोर ठडो लागें मुख मे घालियां, अग्नि माहे घाल्या हुवें तातो रे।
ज्यू अविनीत नें सोर री ओपमां, सोर ज्यूं अलगो पडे जातो रे॥ ३१॥
आहार पाणी वस्त्रादिक आपियां, तो उ श्वान ज्यूं पूछ हलावे रे।
करडो कह्यां उठे सोर अग्नि ज्यू, गण छोडी एकल उठ जावे रे॥ ३२॥
सोर आप बले बालें ओर नें, पछें राख थइ उड जावे रे।
ज्यू अविनीत आप ने परतणा, ग्यांनादिक गुण गमावें रे॥ ३३॥
सोर सोरीगर रा घर थकी, लोक बुधवत रहे छें दूरा रे।
ज्यूं अविनीत सूं अलगा रहे, ते तों परमेश्वर रा पूरा रे॥ ३४॥
उत्तराधेन पेहलां अधेन सू, अविनीत ने ओलखायो रे।
वले तिण अनुसारे निषेधियो, ते तों ले ले सूतर रो न्यायो रे॥ ३५॥

ढाल : ३

दुहा

वले अवनीत ने ओलखावियो, दशविकालिक मांय।
निरणो कहूं नवमां अधेन सूं, ते सुणजो चित्तल्याय॥ १ ॥
अहंकारे करी क्रोधे करी, जात्यादिक मद तास।
वले पांच परमाद रे वस पड्यो, विनों न सीखे गुर पास॥ २ ॥
यां च्यार बोलां अविनीत रे, हुवे ग्यांनादिक रो विणास।
ज्यूं वंस फल विणासे वंस ने, ज्यूं अविनें सू निजगुण नास॥ ३ ॥
कोइ अविनीत मद मूरख थकों, गुर ने बालक जाण।
वले थोडा भण्या गुर तेहनो, अविनों करे मूढ अयांण॥ ४ ॥
जे गुर री हेला निंदा करे, तिण पडवजियों मिथ्यात।
तिणरे दरसण मोह उदे हुवां, संवली न सूझे वात॥ ५ ॥
केइ बालक गुर बुधवत छे, केइ बालक अल्प बुद्धिताय।
पिण चारित पाले निरमलो, वले गुण घणां त्यां मांय॥ ६ ॥
त्यारी हेला निंदा कीयां थकां, सकल गुण खय थाय।
तिणने उपमा देने निषेधियो, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ७ ॥

ढाल

[निन्हव तेरासिया केडायत ओलखो]

ज्यूं अग्न मे रूडी वस्त घाल्यां थकां, तो बल जल भस्म होय जाय हो। भविक जन
ज्यू अविनें रूपणी अग्न सू गुण वले, ओगुण परगट थाय हो। भविक जन
श्रीवीर कह्यो अविनीत ने अति बुरो* ॥ १ ॥

कोइ बालक नाग जागे ने खीजावियो, तो पामें तिण सूं घात हो। भ०।
इण दृष्टान्ते गुर री हेला निंदा कीयां, पामे एकेन्द्रियादिक जात हो॥ भ० श्री० २ ॥
आसी विष सर्प अतंत रूठां थकां, जीव घात सूं इधको न थाय हो।
पिण गुर रा पग अप्रसन हुआं थकां, अबोध ने मुगत न जाय हो॥ ३ ॥
कोइ अग्नि प्रजलती ने चांपे पग थकी, कोइ सर्प ने क्रोधे चढांण हो।
कोइ ताल पुट विष खाये जीवणा भणी, ज्यूं गुर नी आसातना जांण हो॥ ४ ॥
कदा अग्नि न बाले मंत्रादिक जोग सूं, कदा कोप्यो इ सर्प न खाय हो।
कदा ताल पुट विष न मारे खाधां थकां, पिण गुर हेलणा सूं मुगत न जाय हो॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

कोइ पर्वत वांछे सिर सूं फोडवो, कोइ सूतोइ सिह जगाय हो।
कोइ भाला री अणी नें मारें छें टाकरां, ज्यूं गुर नी आसातना थाय हो॥ ६ ॥
कदा पर्वत पिण फोडे कोइ मस्तकें, कदा कोप्योइ सिह न खाय हो।
कदा भालोइ न भेदे टाकर मारियां, पिण गुर हेलणा सूं मुगत न जाय हो॥ ७ ॥
कोइ क्रोधी कुशिष्य अग्यांनी अहंकार सूं, बोलें विगर विचारी वांण हो।
ते मायावियो धुरत तांणीजसी संसार में, काष्ट बूहो जाये पांणी में ज्यूं जांण हो॥ ८ ॥
अविनीत नें सीख दीये हेत जुगत सूं, तो उ क्रोध करें तिण वार हो।
ते आवती लिखमी नें ठेले डांडे करी, ते तो पूरों छें मूढ गिंवार हो॥ ९ ॥
केइ हस्ती घोडा छें अविनीत आतमा, त्यांनें प्रतख दीसे छे दुख हो।
तो अविनीत धर्माचारज तेहनो, ते किण विध पामें सुख हो॥ १० ॥
वले अविनीत आतमा दुख पामें घणो, लोक माहें नरनार हो।
ते विकलेंद्रिय सारिखा छें सुध बुध बाहिरा, त्यांरों विगड्यो दीसें आकार हो॥ ११ ॥
ते तों डांडे शस्त्रकरी मारीजता, भूख तिरखा रा दुख सहीत हो।
तो गुर रा अविनीत ने सुख किहां थकी, तिण छोडी छें जिण धर्म रीत हो॥ १२ ॥
वले अविनीत देव दाणव गंधव्वा, ते पिण खाये छे मार हो।
तो गुर रा अविनीत नें मार अनंत गुणी, नरक निगोद मझार हो॥ १३ ॥
अविनीत ग्यांन दरसण चारित तणो, उ दिन दिन पामें विणांस हो।
उणने ऊंधोई सूझे नें ऊंधो अरथ करें, वले बुध ने अकल रो हुवे नास हो॥ १४ ॥
केइ विनीत अविनीत भण्या दोनूं गुर कनें, पिण विने सहीत भणियो विनीत हो।
तिणनें सूधोई सूझे नें सूधो अरथ करे, भण भण ऊंधो पडे अविनीत हो॥ १५ ॥
ते विनीत अविनीत मारग जातां थकां, हथणी रो पग देखी तांम हो।
अविनीत कहे हाथी गयो इण मारगे, ओ बोल्यो निसंक पणे आंम हो॥ १६ ॥
विनीत कहे हथणी पिण कांणी डावी आंख री, उपर राजा री राणी सहीत हो।
वले पुत्र रतन छे तिणरी कूख में, विवरा सुध बोल्यो विनीत हो॥ १७ ॥
वले आगे गयां एक बाइ प्रश्न पूछियो, ते ऊभी सरवर पाल हो।
म्हारो पुत्र प्रदेश गयो ते मिलसी किण दिने, जब अविनीत कहे कीधो उण काल हो॥ १८ ॥
हूं काटूं रे चाढूं जीभडली तांहरी, तू विरूओ बोले केम रे दो भागी।
तूं धसको क्यूं नांखे रे पापी एहवो, जब विनीत बोले छे एम हो॥ १९ ॥
विनीत कहे पुत्र थांरो घरे आवियो, आज मिलसी तोसूं निसंक हो।
इणरो साच न माने ओ भूठ बोले घणो, इणरी जीभ वेरण रो वंक हो॥ २० ॥
ए दोनई बोला में अविनीत भूठो पड्यो, साच उतरियो विनीत हो।
जब अविनीत धेष धर्यो गुर ऊपरे, कहे मोनें न भणायो रूडी रीत हो॥ २१ ॥

एहवी ऊंधी करें विचारणा, आए गुर सूं झगड्यो अविनीत रे।
कहे मोनें न भणायो थें कूड कपट करी, वले बोलें घणो विपरीत रे॥ २२॥
अविनीत ने बोल्यो जांण बुरी तरें, तिण सूं गुर पूछ्यो दोयां नें विचार हो।
निरणो करे संका काढी अविनीत री, पिण उणरो तो उहिज आचार हो॥ २३॥
इहलोक तणा गुर रा अविनीत री, अकल विगड गई एम हो।
तो धर्माचारज रा अविनीत री, ऊंधी अकल रो कहिवो केम हो॥ २४॥
नकटी बूटी कुलखणी नार नें, तिणनें परहरी निज भरतार हो।
तिण विगडायल ने जोगी भखडादिक आदरे, ते पिण जाए तिणहिज लार हो॥ २५॥
नकटी तो आप सरिखो आवे मिल्यां, घणो हरष धरे मन पीत हो।
ते इधको न वाछे आपणपो खोजियां, तिमहिज जांणो अविनीत हो॥ २६॥
नकटी सरिखो छे अविनीत कुलखणो, तिण सूं निज गुर न धरे पीत हो।
तिणनें आप सरिखो को एक आए मिलें, तिणसूंई इधको अविनीत हो॥ २७॥
नकटी तो जोवे जोगी भखडादिक, ज्यूं अविनीत जोवे अजोग हो।
जो अशुभ उदें हुवें घणो अविनीत रे, तो मिल जाए सरिखो संजोग हो॥ २८॥
कांदा ने सो वार पाणी सू धोवियां, तो ही न मिटे तिणरी वास हो।
ज्यूं अविनीत ने गुर उपदेश दीये घणो, पिण मूल न लागें पास हो॥ २९॥
कांदा री तो वास धोया मुवरी पडें, निरफल छें अविनीत नें उपदेश हो।
जो छोडवे तो अविनीत अंवलो पडे घणो, उणरे दिन दिन इधक कलेश हो॥ ३०॥
कोइ गुर भक्ता छे सुविनीत आतमा, गुर छादे रो चालणहार हो।
जो हेत देखें तिण ऊपर गुर तणो, तो अविनीत मुख दे विगाड हो॥ ३१॥
विनीत ऊपर घणो हेत हुवें गुर तणो, तो अविनीत नें दुख हुवे साख्यात हो।
जब ओगुण सूझे अणहूताइ गुर तणा, वले वाछें विनीत री घात हो॥ ३२॥
अविनीत जांणे विनीत मूआ थकां, पछे म्हारोईज हुसी आग हो।
एहवा परिणामा घात वाछे सुविनीत री, तिण लीधो कुगति रो माग हो॥ ३३॥
वले ओषध भेषज आहार पांणी तणी, ओ जांणे ने पाडे अन्तराय हो।
दुख ने असाता वांछे सुविनीत री, अविनीत ने ओलखो इण न्याय हो॥ ३४॥
ओरां री अंतराय असाता दुख चिंतव्यां, तिणरे बंधे महा मोहणी कर्म हो।
सितर कोडा कोड सागर त्यां लगे, नही पांमें जिणवर धर्म हो॥ ३५॥
ते तो जिहां जिहां उपजें तिहा तिहां दुख हुवें, उतकष्टो अनंतो काल हो।
अंतराय अविनीत पणो छें एहवो, कोइ बुधवंत देसी टाल हो॥ ३६॥
जो पाप उदें हुवे अविनीत रे इण भवे, तो सगला नें लागे जहर समांन हो।
वले गमतों न लागे इणरो बोलियो, आगे खुलसी दुखां री खांन हो॥ ३७॥

गुर बारा सूं आयां उठ ऊभो हुवें, पग पूंज नेमें सुविनीत हो।
अविनीत ने इतरो ही करणो दोहिलो, कदा करें तोही भूंडी रीत हो॥ ३८॥
पग पूंज वीयावच करणी अविनीत ने, ते तों कठण घणो छे कांम हो।
ते कांम पड्यां अविनीत टालो दीये, तिणरे प्रबल अविनो नें अभिमांन हो॥ ३९॥
गुर भक्ता उपर द्वेष अविनीत रो, वले ईसको ने खेदो अतंत हो।
उणरा छिद्र जोवें छे उतारणा आसता, तिणरा चारित जांणे मतवंत हो॥ ४०॥
वले करे विनीत सू मूढ बरोबरी, पिण विनो कीयो मूल न जाय हो।
वले अवगुण न सूझें अविनीत ने आपरा, तिण सूं दिन दिन दुखियो थाय हो॥ ४१॥

●

ढाल : ४

दुहा

छ बोलां करी सहित नें, करणो गण अधिकारी जांण।
ते तों करें बधोतर गण तणी, ते गुण रतनां री खांण॥ १ ॥
कलहगारी अभिमांनी अविनीत नें, जो करे आगेवांण।
तो पाडे विखेरो गण मझे, करे साधां री हाण॥ २ ॥
केयां नें लडलड ने दूरा करे, वले वांछे केयां री घात।
गुणवंत साधां रा गुण सुणे, ते पिण सह्या न जात॥ ३ ॥
उ आंमी साहमीं वातां करें, उठावें मांहोमां धेष।
करें मांहोमां लगावणी, ते अविनीत लेजों देख॥ ४ ॥
इसडा अजोग अविनीत सूं, कोइ करे अग्यांनी प्रीत।
ते पिण घणो पिछतावसी, होसी घणो फजीत॥ ५ ॥
आगें अविनीत हुवा घणा, त्यांरो सूतर में छें नांम।
इण अनुसारें अवर ने, ओलख लेजो तांम॥ ६ ॥

ढाल

[धीज करे सीता सती रे लाल]

धनावो सेठ सुत च्यारे बहू रे, उझिया ने भोगवती जांण रे। सुगण नर*।
रखिया ने वले रोहिणी रे लाल, त्यांरी सेठ कीधी छे पिछांण रे। सुगण नर।
भाव सुणो अविनीत रा रे लाल*॥ १ ॥
पांच पांच साल दाणा सूंप नें रे, मांग्या किते एक काल रे। सु०।
उझिया कण उछाले दीया रे, भोगवती गिल गई साल रे॥ सु० भा० २ ॥
रखिया जतन कर राखिया रे, रोहिणी कीधी वधोतर भरपूर रे।
ते तो सुसरे मांग्यां सूंपे दीया रे लाल, धुरली दोयां रो विगड्यो नूर रे॥ ३ ॥
सेठ च्यारां ने साच बोलाय ने रे, यांरा न्यातीला उभां आंण रे।
सेठ सूंप्यो कांम च्यारां भणी रे, यांरा गुण परिणांमें जांण रे॥ ४ ॥
गोबर वासीदो उझिया भणी रे, भोगवती रसोइदार रे।
कोठार सूंप्यो रखिया भणी रे लाल, रोहिणी नें सगलो घर वार रे॥ ५ ॥
उझिया भोगवती दुखणी थई रे, धरती मन मांहें रोस रे।
ते हेला निंदा पांमी लोक में रे लाल, पिण सुसरो हुवो निरदोप रे॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ज्यूं गुर गण सूंपे सुविनीत नें रे, ते छे रखिया नें रोहिणी समांन रे।
जब अविनीत दुख पामें घणो रे लाल, उभिया भोगवती ज्यूं जांण रे॥ ७॥
उभिया नें भोगवती दुखणी हुई रे, ते तों एकण भव मभार रे।
पिण अविनीत दुखियो हुसी घणो रे, तिणरो कहितां नावें पार रे॥ ८॥
उभिया भोगवती नें घर सूंपियां रे, ते करें खजानो खुराब रे।
ज्यूं अविनीत नें गण सूंपियां रे, तो जाए टोलां री आब रे॥ ९॥
जिण टोलां में अविनीत छे रे, तिणसूं आछो कदेय म जांण रे।
तिणरी खप करने ठांम आंणजो रे, नहीं तो परिहरो चतुर सुजांण रे॥ १०॥
किण ही गाय दीधीं च्यार ब्राह्मणां भणी रे, ते वारे वारे दूहे ताय रे।
तिणनें चारे न नीरे लोभी थकां रे, म्हांरे काले न दूजें आ गाय रे॥ ११॥
त्यारें मांहोमां लागो इसको रे, तिण सूं दुखे दुखे मूइ गाय रे।
ते फिट फिट हुवा ब्राह्मण लोक में रे, ते दिष्टंत अविनीत नें ओलखाय रे॥ १२॥
गाय सारिखा आचारज मोटकां रे, दूध सारिखो .दे ग्यांन अमोल रे।
कुशिष्य मिल्या तो ब्राह्मण सारिखा रे, ते ग्यांन तो लेवें दिल खोल रे॥ १३॥
आहार पांणी आदि वीयावच तणी रे, ए न करें सार संभाल रे।
एहवा अविनीतां रे वस गुर पड्या रे, त्यां पिण दुखे दुखे कीयो काल रे॥ १४॥
ब्राह्मण तो फिट फिट हुवा घणां रे, ते-तों एकण भव मभार रे।
तो गुर रा अविनीत रो कहिवो किसूं रे, तिणरो भव भव हुसी विगाड रे॥ १५॥
ज्यांरे सिखां रो लोभ लालच नहीं रे, तै तो दूर तजें अविनीत रे।
ते गरग आचारज सारिखा रे, गया जमारो जीत रे॥ १६॥
गरग आचारज नें मिल्या रे, पांचसो शिष्य अविनीत रे।
ते गुर वचनें उलटा पड्या रे, हिवें सुणजो त्यांरी रीत रे॥ १७॥
गुर नें रोग उपना थकां रे, पडियो ओषधादिक रो कांम रे।
अविनीत मेल्या जाये नहीं रे, ते तों जुआ जुआ बोलें आंम रे॥ १८॥
एक कहें मोंनें नही ओलखो रे, बीजो कहें न देसी मोय रे।
तीजी कहें घरे हुसी नहीं रे, चोथो कहे मेलो थें ओर जोय रे॥ १९॥
केइ सुण सुण उत्तर दे नहीं रे, मूंन साभे कपट सहीत रे।
केइ अलगा जाय बेसें गुर थकी रे, कार्य करवा सूं डरिया अविनीत रे॥ २०॥
केइ राय बेठियां री परें मानता रे, केइ बतलायां मुख दे विगाड रे।
एहवा अविनीतां ऊपरे रे, गुर खेद पाम्या तिणवार रे॥ २१॥
म्हे दिख्या दे सूतर भणाविया रे, भात पांणी सूं पोख्या अविनीत रे।
मारे कांम न आया दिन आजरे रे लाल, यां लीधीं पंखियां वाली रीत रे॥ २२॥

पंखी इंडा पाल मोटा करे रे, पछें उड जाये आयां पांख रे।
ज्यू ए अविनीत भण भण विगडिया रे, म्हारी मूल न मांने सांक रे॥ २३॥
सीदावें छे म्हारी आतमा रे, या अविनीतां रे परसंग रे।
इहलोक परलोक मांहरो रे, रखे विगड जाये यारें संग रे॥ २४॥
एहवा शिष्य छे मांहरा रे, गलियार गधा ज्यूं अविनीत रे।
त्यानें दूर तजे अलगो रहे रे, सुध संयम पालू रूडी रीत रे॥ २५॥
छोड्या पांचसो अविनीत नें रे, आण्यो मन संतोष रे।
करणी करे कर्म काट नें रे, पहुंता अविचल मोख रे॥ २६॥
ज्यू अविनीत ने छोड्यां थकां रे, ग्यांनादिक गुण वधता जाण रे।
मिट जोय कलेश कदागरो रे लाल, त्यांने नेडी हुसी निरवांण रे॥ २७॥
केइ अविनीत नरके गया रे, केइ जाय पड्या छे निगोद रे।
आप छादे ऊंधी अकल सू रे लाल, गमाय नें समकित बोध रे॥ २८॥
अविनीत मे अवगुण घणा रे, ते तो पूरा कह्या न जाय रे।
पिण इण अनुसारें अनेक छे रे, ते बुधवंत देसी बताय रे।॥ २९॥
अविनीत रा भाव सांभले रे, घणो हरख पामें नरनार।
केइ भारी करमा उलटा पडे रे, त्यारे घट माहे घोर अधार रे॥ ३०॥

ढाल : ५

दुहा

केइ अविनीत एकल फिरे, विटल हुआं बेकार।
ते बीठ निरलज लोक में, त्यांरो बिगड गयो जमवार ॥ १ ॥
तिण एकल नूं अविनीत बुरो, सांगो न गन मांय।
ते स्वामद्रोही सेवग जिसो, न डरे करतों अन्याय ॥ २ ॥
दुमनों चाकर दुसमण सारिखो, ते प्रसिद्ध लोक वदीत।
ज्यूं छिद्री थकों टोल्यां माहें रहे, ते आछो नहीं अविनीत ॥ ३ ॥
ओ भेलो रहे कपटी थकों, ते करे घणो अन्याय।
छल बल खेलें चोर ज्यूं, करें बुगल रो डाव ॥ ४ ॥
तिणरी चरचा उपदेश छे अति बुरो, ते फाडा तोडा रें काम।
अभिमानी अविनीत री रीत नें, कहि बताऊं तांम ॥ ५ ॥

ढाल

[जिन धर्म आराधिये रे]

अविनीत समझावे तेहनें ए, आपरो कर [illegible] [illegible]।
ओरां नूं करें ओपरो रे, तिणरो आगे वस नहीं [illegible]।
अविनीत एहवा ए* ॥ १ ॥

ओर साधां रा कोई गृहस्थ खूंचणा ए, तिण नूं बात करें छिद्र [illegible]।
अंतर में जाणें आपरो ए, तिणनें सीखावे चरचा बोल [illegible] ॥ २ ॥

केइ ओर साधां रा गुण करें ए, तो अविनीत नूं मजा रे न दाय।
तिन नूं तत बोल नें ए, तिणनें ग्यान चरचा न सीखाय [illegible] ॥ ३ ॥

जो सतगुर आगे समझियो ए, सतगुर री घणी छै [illegible]।
तिणरेई ओगुन नीपजे ए, जो बात [illegible] [illegible] ॥ ४ ॥

तिणनें आज [illegible] बोल पूछ नें ए, तिणरी [illegible] [illegible]।
आगे [illegible] करे ए, जोड चरचा [illegible] [illegible] ॥ ५ ॥

[illegible] [illegible] बोल सीखाय नें ए, [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] समझनी ए, तिणरे [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ६ ॥

[illegible] [illegible] [illegible] आवे ए, [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] ए, [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ७ ॥

*[illegible] प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

तिणनें आप तणो करें रागियो ए, शंका ओरां री घाल।
अभिमांनी अविनीत री ए, एहवी छे उंधी चाल ॥ ८ ॥
कोइ गुर गुर भायां आगें समझियों ए, तिण व्रत लीया तिण पास।
वांदें त्यांरों नांम ले ए, जब अविनीत पामे उदास ॥ ९ ॥
अविनीत रो नांम लेवां दे नही ए, तो तिण सूं राखें धेष।
भूखो घणो नाम रो ए, तिण पहिर विगाड्यों भेष ॥ १० ॥
कोइ विनीत आगे व्रत आदरे ए, तो विनीत बोले एम।
म्हारें सो गुर थांहरे रे, हिवें अविनीत बोलें केम ॥ ११ ॥
जो अविनीत आगें व्रत आदरे ए, तो उ न ले गुर रो नांम।
पोतेंइ गुर ठेहरे ए, ते पिण मान बडाई कांम ॥ १२ ॥
विनीत सीखावे करणी वंदणा ए, तो धुर सूं ले गुर रो नांम।
अविनीत सीखावता ए, ते तो आपरो नांम ले तांम ॥ १३ ॥
विनीत तणा समझाविया ए, साल दाल ज्यूं भेला होय जाय।
अविनीत रा समझाविया ए, ते कोकला ज्यूं कांनी थाय ॥ १४ ॥
समझाया विनीत अविनीत रा ए, त्यामे फेर कितोयक होय।
ज्यूं तावडो नें छांहडी ए, इतरो अन्तर जोय ॥ १५ ॥
कोइ अविनीत आगे समझियो ए, पिण ग्यांन रो होय गराग।
को एक हुवें समकती ए, नही लागो अविनीत रो दाग ॥ १६ ॥
कोइ कंठ कलाधर साध जी ए, ते तों करे घणो उपगार।
हेत नें जुगत करी ए, समझावें नर नार।
उपगारी साध एहवा ए ॥ १७ ॥
केयां ने साध पणो अदरावतां ए, केयां नें श्रावक व्रत दराय।
केया ने करे समकती ए, नवतत्व निरणो कराय ॥ १८ ॥
केयां ने जिण धर्म सू सनमुख करें ए, तिणसूं दान देवें निरदोख।
संसार परित्त करे ए, तिणसू पामें अविचल मोख ॥ १९ ॥
केइ दयासत सील आदरे ए, केइ तप कर करम दें तोड।
ते पिण सुण्या सांभल्यां ए, वले पामे आणंद कोड ॥ २० ॥
केइ सुण सुण ने सुलभ पडे ए, घणो हरप पामें भवि जीव।
उपदेश सुणिया थकां ए, घणा जीव दे मुगत री नीव ॥ २१ ॥
ते तों जिण मारग करे दीपतो ए, धर्म कथा रे सजोग।
महिमा फेले अतिघणी ए, त्यांने धन धन करे वहुलोग ॥ २२ ॥
अविनीत सुणे तो मुंह मचकोड ने ए, करे हासो मसकरी ठेक।
कहे म्हें सगला देखिया ए, समकती न दीठो एक ॥ २३ ॥

पेला रा गुण सहिवा दोहिला ए, तिण सूं ऊंधो बोलें अविनीत।
करें घणी इरखा ए, तिणमें होसी घणी रे कुपीत ॥ २४ ॥
तिणनें चतुर विचक्षण अटकले ए, ए गुर भार्यां रो अविनीत।
ओलख ने परहरे ए, राखें सतगुर री परतीत ॥ २५ ॥
कोइ अविनीत आगें समझियो ए, जो उ राखें उणरी परतीत।
ओरां री नही आसता ए, तो उणरी पिण आहिज रीत ॥ २६ ॥
अविनीत समझायो तेहनें ए, जो उ मानें अविनीत री वात।
ओरां सूं रहे ओपरो ए, तिणरे मांहें रह्यों मिथ्यात ॥ २७ ॥
अविनीत नें अविनीत श्रावक मिले ए, ते पामें घणो मन हरख।
ज्यूं डाकण राजी हुवे ए, चढवा नें मिलिया जरख ॥ २८ ॥
डाकण जरख चढी फिरें ए, ज्यूं अविनीत अविनीत रे साथ।
डाकण मारें मिनष नें ए, ज्यूं अ करें समकत री घात ॥ २९ ॥
डाकण चोर राजा तणी ए, तिणनें राजा मारें तो एक बार।
अविनीत चोर जिण तणो ए, ते भव भव में खासी मार ॥ ३० ॥
केइ काछ लपटी कुशिलिया ए, ते न गिणे जात कुजात।
गृद्धि घणा रूप रा ए, नीच रे घरे जाये साख्यात ॥ ३१ ॥
ते फिट फिट हुवे सांगली न्यात में ए, वले राजा लेवे डंड।
कुजरबी बणे घणी ए, हुवें देश विदेश में भड ॥ ३२ ॥
ए काछ लपटी री ओपमां ए, अविनीत नें दीधीं इम जांण।
गिरधी घणो खांण रो ए, तिणसूं विकलां नें मूंडे तांण ॥ ३३ ॥
ओर आगे विकलाइ कर सकें नहां ए, तिणसूं चेला री भूख अतंत।
सके नहीं दोष सूं ए, ते कुण कुण करें विरतंत ॥ ३४ ॥
पेला रो शिष्य फटावतो ए, ओ न करे जेज लिगार।
को एक आए मिले ए, तो लेजाअें धाडोपाड ॥ ३५ ॥
पेला रो शिष्य फाड आपणो करे ए, तिणनें भारी प्रायश्चित्त आय।
ते पिण सूझें नही ए, तिणरे लग रहि चेला री चाय ॥ ३६ ॥
कोइ अजोग अविनीत गिरधी घणो ए, तिणरी परतीत नही रे लिगार।
इसडो इ शिष्य सूंपियां ए, करवा ने होय जाय त्यार ॥ ३७ ॥
विकल नें शिष्य पणे आदरे ए, ते तों अभिमांनी के अविनीत।
कें गिरधी छें आहार रो ए, त्यांरी किम आवें परतीत ॥ ३८ ॥
उणनें विकल अजोग जाण्यां पछें ए, तिणनें चेलो करें मतहीण।
निरलज सके नही ए, ते तो करम बांधण परबीण ॥ ३९ ॥

ज्यांरे चेला री तृष्णा अति घणी ए, त्यांरा अथिर रहे परिणांम।
चरित नें आराधणो ए, तिणरो छें काठो कांम ॥ ४० ॥

ढाल : ६

दुहा

ए अविनीत साध ओलखाविया, इमहिज साधवी जांण।
वले श्रावक श्रावका तणी, तिमहिज करजो पिछांण ॥ १ ॥
केयक ग्रहस्थ अजोग छें, श्रावक श्रावका नांम धराय।
ते अविनीत थया साधां तणा, संके नहीं करता अन्याय ॥ २ ॥
त्यांनें विनों धर्म सूझें नहीं, प्रबल अविनों नें अभिमांन।
दगाबाजी करें जिन धर्म में, वले कूड कपट री खांन ॥ ३ ॥
ते करें साधां री आसातना, वले बोलें घणा विपरीत।
त्यांरी ओगुन ग्राही छें आतमा, अतिही घणा अविनीत ॥ ४ ॥
एहवा अविनीतां में अवगुण घणां, कहितां नावें पार।
तिण थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो आंख उघाड ॥ ५ ॥

ढाल

[मत करो कूड माया करमी]

केइ अविनीत श्रावक श्रावका, संके नहीं बांधता कर्म रे।
करें धर्म ठिकांणे कलागरो, नहीं टलस्यो तिणे मूल धर्म रे।
केइ अविनीत श्रावक एहवा ॥ १ ॥
ते साध साधव्यां री निंदा करे, अवगुण बोले विपरीत रे।
ते सूंस कराय ग्रहस्थ नें, त्यांरी भोला मांनें परतीत रे ॥ २ ॥
ते सूंस री संका रो मारियो, किण विध काढें निकाल रे।
जो प्रतीत राखें एहवा अजोग री, ते बांधे असुभ कर्म जाल रे ॥ ३ ॥
उंधा सूंस दीया अविनीत रा, ते राख्यां हुवे समकित नास रे।
एहवा कुपत्र खांणा दूरा करें, आलोवण करें गुर पास रे ॥ ४ ॥
उण कही ते सगली कहे गुर कनें, गोपवी नहीं राखें लिगार रे।
नहीं कह्यां तो सल्य मांहें रहें, ते मतवंत करज्यो विचार रे ॥ ५ ॥
बात अविनीत री मानियां, उणरे कुण कुण अवगुण थाय रे।
उतर जावे साधां री आसता, सुध वंदणा पिण कीधीं न जाय रे ॥ ६ ॥
दांन पिण देणी नावे भाव सूं, असणादिक च्यार आहार रे।
संका सहित वेंहरावियां, किम करें परित संसार रे ॥ ७ ॥

हुलास न आवे साधु देखियां, अनेक गुणां री पडें हांण रे।
दग्ध बीज दाधा रीगा हुवे, तिणरी संगत रा एकल जांण रे॥ ८ ॥
जो उ सूंस भागण सूं डरतो थको, नहीं काढे तिणरो निकाल रे।
तो उ भमण करे इण संसार में, ज्यूं अरट तणी घड माल रे॥ ९ ॥
सूंस दराय नें अवगुण कहे, काढण न दे निकाल रे।
एहवा अविनीत अजोग ने, बुधवंत जांण देसी टाल रे॥ १० ॥
कोइ अविनीत हुवे साधु साधवी, तिण सूं मिलें मूढ जाय रे।
ओ अणहूंता अवगुण कहे तिके, धार राखे मन मांय रे॥ ११ ॥
ते गुर कने आय कहे नही, अविनीत रो न करें उघाड रे।
वले ओगुण बोलावण कारणे, तिण जनम कीयों छे खुवार रे॥ १२ ॥
उ साच माने अविनीत रो, वले तिणरी करें पखपात रे।
सुध साधां री निंदा करतो फिरें, तिणरे न मिट्यो मूल मिथ्यात रे॥ १३ ॥
अविनीत नरमाइ करें उण कने, वले बोलें मीठा मीठा वेंण रे।
करे खुसामदी तेहनी, रोवें घणो भर भर नेंण रे॥ १४ ॥
पछें अवगुण बोलें ओ गुर तणा, केइ एहवा छें दुष्ट अविनीत रे।
गरीब होय आपो छिपाय दे, तिणरी मूरख माने परतीत रे॥ १५ ॥
जो साच मानें अविनीत रो, घणां री न मानें परतीत रे।
पखपात करे अविनीत री, ते चिहुंगति में होसी फजीत रे॥ १६ ॥
अविनीत नरमाइ करे घणी, तिणरी वात राखें सर्व दाब रे।
तिण ने साध लेखव नें विनों करें, तिणरी पिण जावसी आब रे॥ १७ ॥
आप सूं आय मिले तेहना, ओगुण दे सर्व ढांक रे।
रहितो जांणें आप सूं ओपरो, तो उणने आल देतो नांणें सांक रे॥ १८ ॥
ए राग नें धेष रो घालियो, कर रह्यो कूडी पखपात रे।
एहवा अजोग श्रावक तणी, कोइ मूरख मानसी वात रे॥ १९ ॥
एहवा जनम कदागरी अजोग सूं, गूज्झ करे मतिहीण रे।
कर्म बंधे उणरी संगत कीया, तिणनें दूर तजें परवीण रे॥ २० ॥
कोइ अविनीत अजोग साधु तिण कने, लीया श्रावक व्रत पचखांण रे।
वले सीख्यो सझाय बोल थोकडा, पिण तिणरी न कीधी पिछांण रे॥ २१ ॥
जो उ निंदा करे सुध साध री, तो उ मांन लेवे ततकाल रे।
उणनें श्रद्धे सत्यवादी भोलो थको, वले संकतो नहीं काढे निकाल रे॥ २२ ॥
अविनीत ओगुण कहे ओर नां, जो जांण राखे घट मांय रे।
पिण कोइक उणरा ओगुण कहे, तो कह दे उ तिण कने जाय रे॥ २३ ॥

ते भणियां नें वरत लीयां तणी, ए कूडी करे पखपात रे।
ओ आछो जांणे छे अविनीत नें, ते तो निश्चेंइ वूडो साख्यात रे॥ २४॥
केइ एह्वा छे श्रावक श्रावका, वले लड पडे काढ्यां निकाल रे।
ते तो राग नें धेष मांहें कल्या, ते निफल गमावे छे काल रे॥ २५॥
वले गृहस्थावास मांहें थकां, उणरे स्वारथ पूगो छे एक रे।
तिणनें साचो करवा भणी, तांण करें मूढ अनेक रे॥ २६॥
एक स्वारथ पूगो थो आपणो, तिण सूं डस राखें मन मांय रे।
तिण साचा नें भूठो करवा भणी, करे ओ अनेक उपाय रे॥ २७॥
उणरा गुण कीरत जग सांभले, तो लागे अभिंतर लाय रे।
तिणरा अणहुंता ओगुण परगट करें, गुण गुण दे रे उडाय रे॥ २८॥
वले छल छिद्र जोवतो रहे, सदा रहे दुष्ट परिणांम रे।
उणरी आसता उतारण खप करे, यूंही जनम गमावे वेकांम रे॥ २९॥
ए दोष आलोयां विनां मरे, ते मरणो छे सल्य सहीत रे।
पछे पाप उदें हुवां तेहने, भव भव होसी कुपीत रे॥ ३०॥
जिण उपर धेष हुवे तेहनों, छिद्र जोवें दिन रात रे।
उणरा दोप अणहुंताइ कहें गुर कनें, करें मन भांगण तणी वात रे॥ ३१॥
साधु कहे दोष लागो नहीं, ओ कहे लागो दोप साख्यात रे।
डंड दो एहनें निसंक सूं, तिणमें कूड नहीं तिलमात रे॥ ३२॥
साधु कहें डंड लेवूं नहीं, जब गुर वोल्या छे आंम रे।
डंड ले नें संका काढो एहनीं, ते तों भगडो भांजण कांम रे॥ ३३॥
उणनें डंड दीयो गुर समभाय नें, वले केतव न राख्यो लिगार रे।
डंड दिरायो तिणनें कहे, ओर नें नहीं कहिणो लिगार रे॥ ३४॥
जो कह्यो तो तोनें भूठो जांण स्यां, वले जांण लेस्यां थांरो वेख रे।
एहवी कीधीं छें थापना, ते सर्व ग्यांनी रह्या देख रे॥ ३५॥
तिण अंतर द्वेष हुवे तेहनों, पिण सूं कह्यां विण केम रहिवाय रे।
उ कहे छानें छानें लोकां कनें, सूंस दराय दराय रे॥ ३६॥
पछें आल देवे मन मानियो, वले वोलें घणो विपरीत रे।
वेंर जाग्यो तिण उपरें, तिणरी किण विध आवे परतीत रे॥ ३७॥
उणरी वात चालें तो पडती कहे, घणी निंदा करे परपूठ रे।
उणनें चतुर हुंता त्यां जांणें लीयो, ओ द्वेष वस वोलें छे भूठ रे॥ ३८॥
छद्मस्थ एहनांण सूं अटकल्यो, ओ अजोग घणो अविनीत रे।
कदा साच कहे पिण तेहनीं, पूरी नावें परतीत रे॥ ३९॥

उणरो वचन न माने तिण ऊपरे, क्रोध करे मूंह दे विगाड रे।
उण लारे बोल्या हरषित हुवे, तो धिग धिग तिणरो जमवार रे॥ ४० ॥
वले आपो जणावे भूठो थकों, वले भूठो दरायो छें डंड रे।
एहवा अविनीत अजोग छे, ते चिहुंगति में होसी भंड रे॥ ४१ ॥

ढाल : ७

दुहा

कूडा कूडा आल सांधा रे दीयां, महामोहणी करम बंधाय।
समकित बोध गमाय नें, पडे नरक निगोद में जाय॥ १ ॥
तिहां छेदन भेदन पामें घणी, कहितां नांवें पार।
उतकृष्टा अनंता भव करे, तिहां खाअें अनंती मार॥ २ ॥
केइ खाअें श्रावक घर तणो, केयक मागे खाय।
पिण अविनीत पणो छूटे नही, तो गरज सरे नही कांय॥ ३ ॥
केइ पेढी जमावे आपणी, मागे नें ल्यावे आहार।
त्यां सूं विनों करणो छे दोहिलो, छोडे नें गरब अहंकार॥ ४ ॥
पिण सगला नही छे सारिसा, सुविनीत नें अविनीत।
त्यांनें जथातथ परगट करूं, त्यारी सुणजो भवियण रीत॥ ५ ॥

ढाल

[चन्द्रगुप्त राजा सुणें]

ज्यांरे मांगे नें खावणो पारको, त्यांरे श्रद्धा रो कठिन छे कांमो रे।
वले मांन वडाइ रा भूखा थकां, त्यानें न गमें साधां रा गुण ग्रांमो रे।
केइ अविनीत श्रावक एहवा॥ १ ॥
जो लोक न देवे खावा पहिरवा, ऊंचो हाथ न करे त्यानें देखो रे।
वले आदर सनमान देवें नही, तो साधां उपर करे धेखो रे॥ के० २॥
साध साधवियां ने दीठां थकां, उठे अभितर आलो रे।
वले पेट रे कारण पापिया, डरे नही देता भालो रे॥ ३ ॥
म्हाने दीधां में अविरत कहे, तो म्हे उठाय दां यांरी परतीतो रे।
तिणसूं लोकां रा मन भांगता थकां, बोलें घणा विपरीतो रे॥ ४ ॥
साधां री छे लोकां में आसता, तिणसूं नही छे म्हांरो आघो रे।
आध विना वेहरासी म्हाने किण विधें, यांनें पेट भरण रो सोच लागो रे॥ ५ ॥
त्यांने दीधां में पुन परूपियां, तो श्वान ज्यूं पूंछ हलायो रे।
वले दरावे कर कर आमना, तो वांदे लुल लुल पायो रे॥ ६ ॥
केइ अविनीत हुवे साध साधवी, कदा गुर दे लोकां ने जतायो रे।
ते जनम कदागरी सांभले, तो तुरत कहदे तिण कने जायो रे॥ ७ ॥

अविनीत नें तीखो करे घणो, विगड्या नें ...
तिणरो मन भागे कूड कपट करी, टोलां माहे भेद ...
अविनीत नें पोगां चढाय ने, अवगुण बोले तिण पागे ...
ते सुण सुण ने हरखत हुवे, ते तो बांधे करमा री रागां रे ॥ ...
उ छांनो विगड्यो थो घणा दिनां, पिण लोकां मे न पड्यो उघाडो रे।
अविनीत सू एकठ कीयां पछे, प्रगट हुवो लोक मझारो रे ॥ १० ॥
जो दोष लागो देखे साध नें, तो कहे देणो तिणनें एकंतो रे।
जो उ मानें नही तो कहिणो गुर कने, ते श्रावक छे बुद्धिवंतो रे।
सुविनीत श्रावक एहवा ॥ ...
प्रायश्चित दराय नें सुध करे, पिण न कहे ओरां रे पासो रे।
ते तों श्रावक गिरवा गमीर छे, त्यांनें वीर वखाण्या तासो रे ॥ ...
उणरे मूंढे तो दोष कहे नही, उणरा गुर नें पिण न कहे जाय ...
ओर लोकां आगें कहतो फिरे, तिणरी परतीत किण विध आय ...
वले साधां ने आय वंदणा करे, साधवियां ने न वादे हठी ...
त्यांनें श्रावक श्रावका म जांणजो, ते तों मूढ मति छे अविनीत ...
तिण श्री जिण धरम न ओलख्यो, वले भण भण करे अभिमान ...
आप छांदे माठी मत उपजे, तिणने लागा नही गुर ...
कोइ साप पड्यो थो उजाड में, चेत नही सुध ...
तिण सर्प री अणुकंपा आंण नें, मिश्री घाले नें दूध ...
भाव सुणो ...
ते सर्प सचेत थयां पछे, आडो फिरियो खाय ...
जो उ लूंठो हुवे तो उणनें दाव दे, काचो हुवे तो डक ...
सर्प सारिखो अविनीत कोइ मांनवी, एकल फिरे ज्यूं ...
त्यांने समकित चारित पमाड ने, कीधो मोटो ...
एहवो उपगार कीयो तिको, ततकाल भूले ...
वले उलटा अवगुण बोलें तेहनां, उणरे सर्प वाली ...
केइ अविनीत ...
आहार पांणी कपडादिक कारणे, ते पिण झूठो ... ॥
इणनें उपरलो हुवे तो दाबे डंड दे, आघो ... तो ...
सर्प ने मिश्री दूध पायां पछे, डक ... तो ... ॥
ज्यूं ओ समकित चारित लीया पछे, हुवो ...
वले खाणा पीणा रो हुवो लोलपी, ... ॥
छेडवियां सूं साह्मों मडे,

तिणने दूर करे तो दुसमण थको, बोलें घणो विपरीतो रे।
असाध परूपे सगला साध ने, साच बोलण री नही नीतो रे॥ २३ ॥
वले प्रायश्चित्त देनें मांहे लिये, तो मांहें आवे ततकालो रे।
इसडा अजोग अविनीतरो, साच मानें अग्यांनी बालो रे॥ २४ ॥
त्यांने भागल असाध परूपिया, त्यामें प्रायश्चित्त लेई माहें आवे रे।
कदे कर्म जोगे हुवे एकलो, तिणनें बुधवंत मूढे न लगावे रे॥ २५ ॥
सुगरा सांप ने दूध पायां थकां, तो उ करे पाछो उपगारो रे।
तिणने धन देई ने धनवंत करे, वले दीठां हुवे हरख अपारो रे॥ २६ ॥
ज्यूं कोई आप छादे थो एकलो, सरल परिणांमी ने सुध रीतो रे।
तिणने समझाय ने संजम दीयो, ते आग्या पाले रूडी रीतो रे ॥ २७ ॥
कीधो उपगार कदे नहीं वीसरे, सर्व देही त्यारे काजे सूंपे रे।
त्यांरो दरसण देख हरषत हुवे, सर्व कांम मे धोरी ज्यूं जूपे रे॥ २८ ॥
तिणनें समकित ने संजम वेहूं, रुचिया अभितर पूरो रे।
ते चलावे ज्यूं चाले छांदो रूंध ने, पाछो उपगार करण ने सूरो रे॥ २९ ॥
वले गामां नगरा फिरता थका, सदा काल करे गुण ग्रांमा रे।
ते सुविनीत गुण ग्राही आतमा, त्यांने वीर वखाण्या तांमो रे॥ ३० ॥
ए भाव कह्या अविनीत रा, सांभल ने नरनारो रे।
सतगुर रो विनो करो, तो पामो भव जल पारो रे॥ ३१ ॥

दुहा

ढाल : ८

ज्यांरी विनेवंत छे आतमा, ते हलु करमी छे जीव।
ते विनो करण उद्यमी घणा, त्यां दीधी मुगत री नींव॥ १ ॥
ते विनो करें सत गुर तणो, त्यारा गुणां री करे पिछांण।
भेषधारी भागल ने परहरे, ते डाहा चतुर सुजांण॥ २ ॥
सतावीस गुणा सहित छे, तारण तिरण जिहाज।
एहवा गुरां रो विनों कीयां थकां, सीझे आतम काज॥ ३ ॥
भेषधारी भागल तणो, विनों कीयां बंधे कर्म रास।
धर्माचार्य सुध गुर तणो, विनों कीयां हुवे सुघ गतिवास॥ ४ ॥
ते तो सर्व सावद्य तज नीकल्या, नही पाप करण रो आगार।
विनो करणो कह्यो छे वीर तेहनों, ते सूतर में विस्तार॥ ५ ॥
त्यांरो विनों करणो छे किण विधे, वले करणो कितोयक काल।
त्यारी आग्या पालणी किण विधें, ते सुणजो सूतर संभाल॥ ६ ॥

ढाल

[रे जीव मोह अणुकम्पा न आणिये]

पालें गुर री निरंतर आगना, कने राख्यां हुवे हरख अपार जी।
वले वरते गुर री अंग चेष्टा, जिण सफल कीयो अवतार जी।
श्री वीर वखाण्यो विनीत ने*॥ १॥
तिण अभितर छोडी कषाय नें, नही मुख तणो लवाल जी।
एहवा गुर समीप रह्यां थकां, छता गुण दीपे रसाल जी॥श्री २॥
तिणनें करडे काठे वचने करी, गुर सीख देवे किणवार जी।
तो उ खिम्या करे धर्म जांण ने, पिण न करें क्रोध लिगार जी॥ ३ ॥
सुकुमाल कठोर वचने करी, गुर दीधी सीखावण मोय जी।
सुविनीत हुवे ते इम चिंतवे, मोने हेत रो कारण होय जी॥ ४ ॥
कदा क्रोध करे करमा वसे, तो ओलवे नहीं राखे विनीत जी।
आलोवे ने प्रायश्चित्त ले गुर कने, नही विचरे सल्य सहीत जी॥ ५ ॥
भद्र किलाणकारी घोडे चढ्या, असवार रे हरख आणंद जी।
ज्यूं सीख दीयां सुविनीत नें, गुर पामें परमानन्द जी॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

विनीत घोडो आकीर्ण जात रो, चाबखो धनी रे हाथ देख जी।
मन गमतो चाले असवार रे, चाबखाणी न खाए एक जी॥ ७॥
इण दृष्टान्ते सुविनीत नें ओळखो, ते तो चाले गुर अनुसार जी।
चाबखा रूप वचन लागां बिनां, वेगी वरतें गुर रो आकार जी॥ ८॥
ते तो मन वचन काया करी, विन चोखे छांडे परिणांम जी।
मारवाड नां थोरी नी परें, बिन कह्यां करें गुर कांम जी॥ ९॥
जे जे गुर नें कारज करणां, जब सुविनीत रो आकार जी।
एहवा गुर सगला विनीत रो, जग कीरती बोलें संसार जी॥ १०॥
गुर नां चित केडें चालतो, कार्य करें विलंब रहीत जी।
कदा क्रोधी गुर हुवे आकरा, तिन प्रसन्न करें सुविनीत जी॥ ११॥
क्रोध न चढावे गुर नें सर्वथा, सुविनीत गुनां रो भंडार जी।
ते तो घात न वांछें गुर तणी, न हुवें छिद्र गवेषणहार जी॥ १२॥
विनीत जांणें गुर नें कोपिया, तो उपजावें पूरी परतीत जी।
दोनूं हाथ जोडी गुर नें कहे, हूं कदेय न चालूं कुरीत जी॥ १३॥
विनीत बनी छे आतमा, तिण संजम तप सूं सोय जी।
तिन जनम सुधार्यो आपनो, देहूं लोक में सुखियो होय जी॥ १४॥
दोनूं पासां बरोबर बेसें नहीं, नहीं बेसें पूठ अडाय जी।
साथळ सूं साथळ संघटे नहीं, नहीं बेसें पसारी पाय जी॥ १५॥
पग उपर पग चढाय नें, गुर पासें नहीं बेसें आय जी।
वले ढांमली मार बेसें नहीं, ऊंचे आसन न बेसें जाय जी॥ १६॥
विनीत नें गुर बोलावियां, बेठो नहीं रहे मूंन साझ जी
आसन छोडी आय ऊभो रहे, नीसूं क्रिया करी गुर आन जी॥ १७॥
आसन बेठो न लेवे वांचनी, वांचनी लेवे खडो रीत जी।
सनमुख आय बेसें ऊकडू, दोनूं हाथ जोडी सुविनीत जी॥ १८॥
आहार पांणी कपडादिक भोगवे, ते तिन गुर री आग्या सहीत जी।
निश्चे तिन न करे बिन आगना, पालें जिन आगन री रीत जी॥ १९॥
वले उपवासादिक नों जावबो, इत्यादिक कांम अनेक जी।
वले देवो लेवो ओर साध नें, गुर आग्या विन न करें एक जी॥ २०॥
उपवास बेलादिक तप करें, करें रसादिक परिहार जी।
ते तिन न करें आगनां बिना, वले सलेखना संथार जी॥ २१॥
करें वयावच्च ओर साध री, ओर पासें करावे आप जी।
ते पिन गुर आगनां हुवां, एहवी जिन आगन री थाप जी॥ २२॥

अंसमात्र करणो करावणो, ते पिण आग्या लें सुविनीत जी।
सर्व कारज में लेणी आगनां, एहवो बाधी छे अरिहंत रीत जी ॥ २३ ॥
सुविनीत टोला मांहे रह्यां, ते तों सगलां ने गमतो होय जी।
ओर साधु साथे मेल्यां थकां, तिणने पाछो न ठेले कोय जी ॥ २४ ॥
आतमा दमें इंद्रचां वस करे, उपजावे साधां नें परतीत जी।
वले लोक वतावें आंगुली, एहवो कांम न करे विनीत जी ॥ २५ ॥
विनीत सू गुर प्रसन्न हुवे, तो आवे ग्यांन अमूल जी।
तिण सूं शिव रमणी वेगी वरें, रहे साश्वत सुख में झूल जी ॥ २६ ॥
अग्नहोत्री ब्राह्मण अग्न ने, नमस्कार करे हाथ जोड जी।
घृतादिक सीची ने मत्र भणे, तिणने आरावे मांन मोड जी ॥ २७ ॥
इण दिष्टान्ते गुर ने अराधतां, केवली थयो शिष्य सुविनीत जी।
तो पिण सेवा भगत करे गुर तणी, विनो साचवे आगली रीत जी ॥ २८ ॥
राज मे हाथी घोडा विनीत छे, ते तो सुख पामें रूडी रीत जी।
नरनारी रिद्ध सम्पत करी, सुखी दीसे छे सुविनीत जी ॥ २९ ॥
वले सुखी दीसे देवी देवता, जगवत् मोटी रिद्ध पाय जी।
जावजीव लगे सुख भोगवे, लोक जस कीरति थाय जी ॥ ३० ॥
ते पाछिल भव पुन्य बांध्या तिके, भोगवे उदे आयां आप जी।
पिण प्रतख दीसे लोक मे, जांणे विना तणो परताप जी ॥ ३१ ॥
ज्यूं कोइ गुर ने रिझावे विनो करी, कारज कर उपजावे संतोष जी।
तिणरा ग्यान दरसण चारित बधे, वेगो पामे अविचल मोख जी ॥ ३२ ॥
केइ पेट भराइ कारणे, सीखे शिल्प कला विग्यांन जी।
ते तो संसार ना गुर कने, ते पिण विनों करे मूंके मांन जी ॥ ३३ ॥
इहलोक तणां अरथी थका, भणे राजादिक नां कुमार जी।
गुर करडा वचन कहे तेहने, देवे इडादिक परिहार जी ॥ ३४ ॥
ते पिण तिण गुर नां पग पूज ने, देवें सतकार ने सनमांन जी।
वले घणा सतोषे तेहने, वले देवें प्रीतीदांन जी ॥ ३५ ॥
तो सिद्धांत भणावे तेहनी, विनेवत किम लोपे कार जी।
ते तो गुर वचने लीनो घणो, तिण सफल कीयो अवतार जी ॥ ३६ ॥
इहलोक नां गुर नो विनो कीयां, कदा सीझे इहलोक काज जी।
पिण सतगुर नो विनो कीयां, पामे मुगतपूरी नो राज जी ॥ ३७ ॥
मूल ने खंध थी वृक्ष उपजे, पछे साखा पडिसाखा वखांण जी।
पांन फूल फल रस नीपजे, ते उत्पत्ति सहु मूल री जांण जी ॥ ३८ ॥

इण दिष्टान्ते जिण धर्म विरख रे, विने रूपियो मूल वखांण जी।
समकित रूप थाणो तेहनें, धीरज रूपियो खंध पिछांण जी॥ ३९॥
जश रूप खंध विने वेद का, शील रूपियो गंध वखांण जी।
शुभ ध्यांन रूपी छे कूंपलां, पंच महाव्रत शाखा जांण जी॥ ४०॥
प्रति शाखा ते पचीस भावनां, बहु गुण रूपियो छे फूल जी।
पंच संवर रूप फल तेहनें, दया रूपियो रस अमूल जी॥ ४१॥
मोष रूपियो बीज तिण फल मझे, एहवो धर्म विरख छे अखोभ जी।
ते समदृष्टि रे हियें विराजतो, विने मूल सूं रह्यो सोभ जी॥ ४२॥
ज्यूं विरख रो मूल सूकां थकां, शाखादिक सगला सूक जाय जी।
ज्यूं विने रूप मूल खिस गयां, सगलाइ गुण खय थाय जी॥ ४३॥
गुर गुरभाई नें टोलां तणा, गुण बोलें रूडी रीत जी।
लोक पिण गुण ग्रांम करतां थकां सुण सुण हरखे सुविनीत जी॥ ४४॥
शिष्य शिष्यणी मिले ओर साध नें, मिले उपधादिक अनेक जी।
वले कंठ कला देखी ओर नीं, विनीत तो हरखे वशेष जी॥ ४५॥
किण ही साध रो न करे ईशको, सर्व साध नें हुवे हितकार जी।
एहवा सुविनीत री वंसावली, फेले तीनूंइ लोक मझार जी॥ ४६॥
गमतो लागें तीरथ च्यार में, जिण शासन रो सिणगार जी।
एहवा सुविनीत पासे रह्यां, सीखावे विनो आचार जी॥ ४७॥
ज्यांरी जात माता री निरमली, पिता रो कुल छें निरदोष जी।
ते पिण लज्या कर सहीत छे, ते विनो कर लेसी मोख जी॥ ४८॥
ते पिण मोह कर्म पतलो पड्यां, सुध रीत जांणें बुधवांन जी।
हाड मिंजा रंगी जिण धर्म सूं, तिणनें विनों करणो आसान जी॥ ४९॥
केइ क्रोधी अहंकारी निरलजा, भेष पहिरी करे कपटाय जी।
इहलोक तणा अरथी घणा, त्यां सूं विनो कीयो किम जाय जी॥ ५०॥
अविनीत में अवगुण घणा, ते तों जाबक छोडे विनीत जी।
विनां रा गुण सगला आदरे, ते तों गया जमारो जीत जी॥ ५१॥
उतराधेन पेंहला अध्ययन में, दसविकालिक नवमें जांण जी।
वले ओर अनेक सिद्धांत मे, कीया विनीत रा वखांण जी॥ ५२॥
सतगुर तणा विनीत में, गुण भाख्या श्री भगवंत जी।
ते कोड जीभ्या कर वरणवे, पिण कहितां न आवे अंत जी॥ ५३॥

●

ढाल : ६

दुहा

अविनीत रा भाव सांभले, अविनीत घणो दुख पाय।
केइ कुगुर सुध बुध बाहिरा, ते पिण हरषत थाय॥ १॥
विनीत तणा गुण साभले, विनीत रे आणंद ओच्छाव।
ते पिण कुगुर हरषत हुवे, त्यांरे विनों करावण चाव॥ २॥
ते तो विनो परूपे निसंक सूं, मन में आणंद कोड।
शिष्यां ऊपर हुकम चलावतां, कर कर मन रो जोड॥ ३॥
ज्यांनें समझ नही जिण धर्म री, सूतर री खबर न कांय।
त्यांरो विनो करे भोला थकां, करे बूडण रो उपाय॥ ४॥
एहवा कुगुरां ने वीर निषेधिया, तो ही विनों सुणी हरखंत।
त्याने जथातथ परगट करूं, ते सुणजो कर खंत॥ ५॥

ढाल

[डाभ मूं जादिक नी डोरी]

विनां रा भाव सुण सुण गूंजे, आपरा किरतब नही सुझे।
ते तो व्रत बिहूणा नागा, ते पिण विनों करावण आगा॥ १॥
देखो कुगुर हीण आचारी, हुवा विनों करावण त्यारी।
आपण किरतब नही देखे, विनों करावसी किण लेखे॥ २॥
हसली नी देखी हाल, बुगली पिण काढी चाल।
पिण बुगली सूं चाल न आवे, तिणसूं हंसली उपर दुख पावे॥ ३॥
एहवा कुगुर साधा नें देखी, ते पिण करवा लागा शेखी।
आडम्बर कर विनों करावे, पिण आचार पाल्यो नही जावे॥ ४॥
सुण कोयल रा टहुकारी, कां कां काग करे तिण वारी।
सतियां रा सुण सोभागी, केइ कुसत्यां कुडवा लागी॥ ५॥
काग बोले कुराले गाढें, पिण कोयल जेहवो शब्द न काढें।
कुसती लजा करे किण वारे, सती रे तुले नावे लिगारे॥ ६॥
काग कुसती जेहवा भेषधारी, ते तों विटल थया बेकारी।
ठाला बादल ज्यूं थोथा गाजें, विनो करावता नही लाजे॥ ७॥

गति गयवर की देखी श्वान, भूसवा लागा ऊंचा कर कान।
ज्यूं सावां नें देखे भेषधारी, श्वान ज्यूं बोले मूंह बिगारी॥ ८ ॥
ते पिण विनो करावण भूखा, वले बोलें अग्यांनी अचूका।
कने राखें साधु रो भेष, तिण सू बूडे लोक अनेक॥ ९ ॥
ते तो व्रत न पाले एक, तोही कर रह्या कूडी टेक।
वले चढ गया मांन रे छाजे, एहवा पिण लोक में गुर बाजे॥ १० ।
विनो परूपता तो गाजे, आचार बतावता लाजे।
त्यांमें दोखां रा छेह न पारा, त्यांरे चिहुं दिसि पडिया बधारा॥ ११ ॥
सीप सिवोटिया रा साथी, थेट रा मूलगा छे मिथ्याती।
कूडा कर रह्या पापड फेन, एहवा पांचमां आरा रा चेन॥ १२ ॥
बाध्या थांनक भिष्टाचारी, वले माया ममता धारी।
ते पिण नाम धरावे पूज, ते तो पूरा मूढ अबूज॥ १३ ॥
नहीं जिण शासन री ठीक, त्यां नरक ने कीधी नजीक।
एहवा ने पिण गुर कर पूजे, समकित विन संवली न सूझे॥ १४ ॥
त्यांरा मत मांहे मोटी भोलो, जाणे मड रह्यो गागी रोलो।
फेल्यो कूड कपट रो चालो, त्यांरो कुण काढे निकालो॥ १५ ॥
नव तूंबा तेरे नेगदारो, तिण राज में पूरो अधारो।
ए पोपां बाई रो राज पिछांणो, ए तो दष्टांत लोकिक जांणो॥ १६ ॥
एहवो भेषधार्‍यां रे अंधारो, ते तो फेल्यो लोक मझारो।
ठग ठग खाए लोकां रो माल, चिहुंगति में होसी हवाल॥ १७ ॥
ज्यांरा गुर छे भिष्ट आचारी, त्यांरें हुइ नरक नी त्यारी।
दुख में दुख पामे अथागा, कुगुर बांधां रा ए फल लागा॥ १८ ॥
कुगर वादे पग झाल, मुख सूं करे लाल ने पाल।
वले साधां री निंदा ने सूरा, ते तो डूबसी मूरख पूरा॥ १९ ॥
एक सत गुर रो अविनीत, एक कुगुर रो सुविनीत।
ए दोनूं मारग गया भूल, रह्या पाप कर्म मे भूल॥ २० ॥
कुगुरा रा तो दोषण ढांके, सावां रे आल देतो न सांके।
ते तो करे बूडण रो उपाय, भव भव मांहे दुखिया थाय॥ २१ ॥
साधा रा गुण सुणे मिथ्याती, के का री बल उठे छाती।
ओ पिण छे बूडण रो उपाय, सेजे दलद्र लीयो बुलाय॥ २२ ॥
कुगुर बांधां सूं हुवे छे खुवारी, सुगुर हेल्यां हुवे अनंत संसारी।
कुगुर छोडे ने सतगुर वादे, ते तों शिवपुर सूं पीत साधे॥ २३ ॥

कुगुर निषेध्या सुणे अविनीत, ऊंधा अर्थ करे विपरीत।
नही विनो करण री नीत, तिण सू वोले कपट सहीत ॥ २४ ॥
उण सूं विनों कीयो नही जावे, तिणसूं गुर ने कुगुर सरधावे।
आपणा दोष सगला ढाके, साधां सिर आल देतो न साके ॥ २५ ॥
ते तो गुर सू पिण नही गुदरे, त्यांरा कारज किण विध सुधरे।
तिण ने करे टोलां सू न्यारो, तो उ चोर ज्यूं करे विगाडो ॥ २६ ॥
सगला साधां ने कहे असाध, वले करे घणो विषवाद।
सर्व साधां रो होय जाय बेरी, केइ एहवा छे अविनीत गेरी ॥ २७ ॥
तिणने लोक आरे करे नाही, तो उ प्राछित्त ले आवे मांही।
ज्यांने असाधु परूप्या था मुख सूं, त्यांरा वांदे पग मस्तक सूं ॥ २८ ॥
जो उ वले न चाले सूवो, तो उण ने कर देवे गुर जूदो।
जब अविनीत रे उवाइज रीत, त्यांरो कीया बोले विपरीत ॥ २९ ॥
लोका ने साधां सूं भिड़कावे, आप बुगल ध्यानी होय जावे।
वले कूड कपट रो चालो, आतमा ने लगावे कालो ॥ ३० ॥
ओतो ओगुण काढे अनेक, बुधवत न माने एक।
एहवा अविनीत छे गुर द्रोही, तिण आतम पूरी विगोई ॥ ३१ ॥
जे माने अविनीत री वात, त्यांरे घट में आवे मिथ्यात।
एहवा अविनीत अवगुणगारा, त्यां सूं बुधवंत रहसी न्यारा ॥ ३२ ॥
इम सुण सुण ने नरनारी, छोडो कुगुर हीण आचारी।
अविनीत सू रहसी दूरा, ते तों परमेस्वर नां पूरा ॥ ३३ ॥
विनीत सुण सुण पामें हरष, पडे अविनीत रे मन धडक।
ते तो रहे चोर ज्यूं राच, लेवे आपण ऊपर खांच ॥ ३४ ॥
विनीत अविनीत रा अेहलाण, इम ओलख कीजो पिछांण।
रूडी रीत सू काढे नीकालो, अविनीत सूं दीजो टालो ॥ ३५ ॥
विनां अविना रो ए विस्तार, कीधो खेरवा शहर मभार।
वत्तीसे वरष सवत अठारो, भादवा सुद छठ सुकरवारो ॥ ३६ ॥

●

रत्न : १५

विनीत अविनीत री ढाल

ढाल : १

दुहा

केइ अविनीत छे दुष्ट आतमा, ते संके नहीं करता अन्याय।
त्यांनें जथातथ प्रगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ १ ॥

ढाल

[समरू मन हरखे तेह]

छिद्रपेही छिद्रधारी राखे, कदे कांम पडे जब कहे दाखें।
तिणरे चारित पालण री नही नीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १ ॥
ओर साधां ने दोष लागो देखी, जो उ तुरत कहे तो निरापेखी।
आ सुध साधां री छोडी नीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ २ ॥
गुर री निंदा करे छाने छानें, तिण अविनीत री वात अविनीत मांनें।
ते चिहुंगति में होसी फजीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ३ ॥
छाने छाने टोलां में जिलो बांधे, गुर आग्या विण आपरे छादे।
तिण संजम सहीत खोई परतीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ४ ॥
गुर सूं चेला रो मन फाडे, वले टोलां में मूरख भेद पाडे।
कूड कपट कर कर बोले विपरीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ५ ॥
सतगुर री वात देवे ठेली, अविनीत रो तुरत हुवे वेली।
तिण छोडी सतगुर सूं प्रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ६ ॥
गुर ने वादे तिक्खुत्ता रो पाठ गुणी, पिण मन मांहे ओघटघाट घणी।
वले खेले कपट दगा सहीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ७ ॥
जिण सूं हेत राखे तिणरा दोष ढांके, तूटां हेत देतो आल नही सांके।
पछे मन मानें ज्यूं बोले नचीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ८ ॥
ते नागा निरलज्ज होय वेठा, त्याने वतलायां वचन बोलें धेठा।
त्यारे संजम रूप खिस गई भीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ९ ॥
पेला ने कुसावण रे कांमो, पोते नाक काटे नें मिले साह्मों।
ज्यूं अविनीत री छे आहिज रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १० ॥
सुध साधां ने उत्थापण काजे, पोते असाध हुवतो पिण नही लाजे।
त्यां जनम खोयो पिण वे रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ११ ॥
अविनीत साधां रा ओगुण गावे, ते तो भेष धाय्यां रे मन भावे।
त्यारें लारे ए पिण गावें गीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १२ ॥

त्यां लाज सरम अलगी मेली, त्यांरा भेषधारी भागल बेली।
अविनीत नें यांरी एकहीज रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १३ ॥
अविनीत भण भण उलटो बूडे, कर कर अभिमांन वेसें तूडें।
तिणरे विनो नरमाइ नही घट भीत, इसडा भारीकर्मां अविनीत ॥ १४ ॥
इसडा अविनीत जाबक भूंडा, त्यांरे केडें लागा ते पिण बूडा।
त्यांमें पिण हुसी घणी कुपीत, इसडा भारीकर्मां अविनीत ॥ १५ ॥
अविनीत नें हाथ जोडी वादे, ते तों सात कर्म निश्चें बाधे।
तिणनें सतगुर री नही परतीत, इसडा भारीकर्मां अविनीत ॥ १६ ॥
अविनीत रो वखांण सुणवा जावे, तिणरे मिथ्यात वेगो आवे।
तिणनें पिण कर देवे विपरीत, इसडा भारीकर्मां अविनीत ॥ १७ ॥
अविनीतां आगें करें समाई, तिणरे पिण जांणजो भोलाई।
तिण अविनीतां री नही जांणी रीत, इसडा भारीकर्मां अविनीत ॥ १८ ॥
अविनीतां सूं जे कोइ प्रीत बांधे, तिण धर्म न ओलखियो आंधे।
समकित जावण री आहिज रीत, इसडा भारीकर्मां अविनीत ॥ १९ ॥

ढाल : २

दुहा

साध साधवी सर्व नें, सतगुर नी ए सीख।
आदर जो आछी तरे, चित्त नें राखे ठीक॥ १ ॥

ढाल

[डाभ मूंजादिक नी डोरी]

गुर उभो सूकावे तो उभो सूके, ओ पिण अवसर नही चूके।
गुर करावे शिष्य नें संथारो, ते पिण आग्या न लोपे लिगारो॥ १ ॥
शक्ति न हुवे तो कहे जोडी हाथ, म्हांरी शक्ति नहीं सांमी नाथ।
शक्ति हुवे तो आघो नही काढ़ं, आप कहो ते सिर उपर चाढूं॥ २ ॥
एहवा शिष्य गुर रा सुविनीत, आगन्यां पाले इण रीत।
ते पिण जीवे ज्यां लग जांण, गुर को वचन करे परमांण॥ ३ ॥
गुर पिण अवसर का जाण, ते पिण एहवी क्यांने करें तांण।
सूस करावे अवसर देख, किण सूं मूल न राखे धेख॥ ४ ॥
अपछंदा मे घणा छे दोष, छांदो रूंध्यां सूं पामें मोष।
उतराधेन चोथा अधेन मझारो, कोइ बुधवंत करज्यो विचारो॥ ५ ॥
गुर ने शिष्य री उपजे अपरतीत, विनांदिक में जांणें विपरीत।
जो उ शिष्य हुवे सुविनीत, तो उपजावे गुर ने परतीत॥ ६ ॥
जिण जिण बोलां री गुर ने संक, ते संका काढें ने करें निशंक।
करडा करडा सूंस खावे, गुर ने परतीत उपजावे॥ ७ ॥
सूंस कीधांई परतीत नांणे, सूंसां नें पिण लोपतो जांणे।
तो सूंस लिख दे कोरे पाने, ते किण सूं न राखें छाने॥ ८ ॥
हूं इण लिख्या परमाणो हालूं, आगन्यां लोप कदे नही चालूं।
जो शिष्य हुवे सुविनीत, इम उपजावे परतीत॥ ९ ॥
सूंस लिखत री नांणे परतीत, आगें गुर ने घणी अपरतीत।
तोही हाथ जोडे सुविनीत, विने सहित बोले रूडी रीत॥ १० ॥
थें म्हांरी परतीत मूल न राखी, तो हिवें च्यार तीरथ देउं साखी।
म्हांरा सूंस कागद में लिखाय, च्यार तीरथ नें देउं वंचाय॥ ११ ॥
हू चालूं इण लिख्या परमांणो, कदा चूक में पडियो जांणो।
तो च्यार तीरथ ने देजो जताय, मोने हेलें निंदे आंणे ठाय॥ १२ ॥

जो यांरे कहे न चालूं सूधो, तो मोनें कर देजो गण सूं जूदो।
पिण मोसूं किरपा करो स्वांमी नाथ, म्हांरे मस्तक राखो हाथ॥ १३॥
हूं मरजादा नही चूकूं, आपरो शरणो नहीं मूंकूं।
आपरो छे मोनें आधार, मोनें उतारो भव पार॥ १४॥
जब गुर कहे तूं बोले सूधो, हिवडां मूल न दीसें ऊंधो।
रखे हुवेला विश्वासघाती, बांवलिया रा बीज रो साथी॥ १५॥
बांवल बीज वाया पाणी पूगे, तो उ सूलां लीयाईज उगे।
बांवल बीज सुहालो थो आगे, हिवे ज्यूं बधें ज्यू शूला लागे॥ १६॥
ज्यूं तूं रहे छे गण मांय, घणो विनों करे छे ताय।
रखे साध साधुवियां फारे, गुर सूं परिणाम उतारे॥ १७॥
पछे आल दे नीकलेला बारें, ओरां ने ले जावेला लारें।
पाछला नें परूपे असाध, करेला घणो विपवाद॥ १८॥
घणा जीवां रे घाले ला संका, लगावे ला मिथ्यात रो डंक।
ओ तो भारी अकारज मोटो, इसडो मन में म राखे खोटो॥ १९॥
आ पिण शंका छे थांरी मोने, वारवार कहूं हिवे तोने।
आ परतीत उपजाव तू गाढी, करडा सूंसादिक काढी॥ २०॥
जो तूं सरल छे नही अनाखी, तो तूं च्यार तीरथ दे साखी।
जो थांरे रहिणो छे गण मांय, तो इण विध परतीत उपजाय॥ २१॥
इम साभल नें सुविनीत, विने सहित बोले रूडी रीत।
आप कहो तिणने साखी देऊं, आप कहो तिको सूंस लेऊं॥ २२॥
कदा कर्म जोगे पडू न्यारो, तो ओरां नें न ले जाऊं लारो।
कोइ आफे आवे म्हांरे लार, तिण सूं भेलो न करूं आहार॥ २३॥
गण में रहूं निरदावे एकलो, किण सूं मिलें न बाधूं जिलो।
किणने रागी करे राखूं म्हांरो, एहवो पिण न करूं विगाडो॥ २४॥
साध साधवियां री वात, उतरती न करूं तिल मात।
वले मांहोमां कलहो लागे, किणरी नही कहूं किण आगे॥ २५॥
इण विध रहूं गण मझारो, किणरो ओगुण न बोलूं लिगारो।
एहवा सूस करावो आप, च्यार तीरथ नें शाखी थाप॥ २६॥
कदा कर्म जोगे पडूं न्यारो, तो हूं मुख में न घालूं आहारो।
ओ पिण सूंस करावो मोय, तिणरा साखी करो सहु कोय॥ २७॥
च्यार तीरथ नें दो थे जताय, मो छूटकरी न माने वाय।
याने ही दो सूस कराय, पिण मोनें राखो गण माय॥ २८॥

गुर नें उपनी जांणें अपरतीत, तो इम उपजावे परतीत।
ज्यांरे मुगत जावा री नीत, गुर ने आरावे इण रीत ॥ २६ ॥
जे समता रस में रह्या भूल, ते तो मरणो कर दें कबूल।
पिण गुर कुल वासो नहीं मूके, विनांदिक गुण सूं नहीं चूके ॥ ३० ॥
सुविनीत गुर नें आराधे, ते आतम कारज सार्धे।
विनों कर गुर नें रीझावे, ते मुगत तणा सुख पावे ॥ ३१ ॥

रत्न : १६

उरण री ढाल

ढाल : १

दुहा

मात पिता सूं उरण किण विध हुवे, सेठ सूं उरण हुवे केम।
वले गुर सूं उरण किण विध हुवे, ते सुणजो धर पेम॥ १ ॥

ढाल

[डाभ मूंजादिक नीं डोरी]

मात पिता जनम रा दातार, करे संसार नों उपगार।
तिणने पाले पोसे रुडी रीत, त्यांरो कोयक हुवे सुविनीत॥ १ ॥
त्यांने गमता भोजन खवावे, गमता गेहणा वस्तर पेहरावे।
पीठी मरदन सिनांन करावे, गमती सेज्या में जाय पोढावे॥ २ ॥
वले कावड माहे वेसाय, कावड खांधे लीयां फिरें ताय।
घणो विनों करे जोडी हाथ, ते उरण हुवो नहीं तिलमात॥ ३ ॥
माइतां रो जाणे उपगार, त्यांरो विनो करे वारूंवार।
जाव जीव रहे आगन्यांकारी, तोही उरण न हुवे लिगारी॥ ४ ॥
इसडो माइतां ने हितकारो, जीव हुवो अनंती वारो।
मुगत जावा रो उपगार, तिण न कीयो मूल लिगार॥ ५ ॥
मात पिता सूं उरण थावे, जो उ जिण धर्म त्यांनें पमावे।
समझाय मेले मुगत में ताय, ते मा बाप सूं उरण थाय॥ ६ ॥
कोइ दलद्री दलिद्र सहीत, धन धानादिक सूं रहीत।
नीठ नीठ भरे छे पेट, तिणने राख्यो गुमासतो सेठ॥ ७ ॥
दलद्री तिणने सेठ वधास्यो, तिणरो दलिद्र दूर निवास्यों।
तिणने कीधो रिधिवंत भारी, सेठ इसडो हुवो उपगारी॥ ८ ॥
कदे सेठ न्यारो कीयो ताय, जब ओ ओर सहर रह्यो जाय।
तो पिण सेठ री आगन्यां मांय, त्यांरो नांम धरावे ताय॥ ९ ॥
वले लाखां कोडां पामी आथ, हुवो घणा नरां नो नाथ।
तिणरे गुमासता बोहत कमावे, सगलां ऊपर हुकम चलावें॥ १० ॥
आप हुवो घणा रो सेठ, तोही निज सेठ सूं वरते हेठ।
त्यांरो गुमासतो आप वाजे, मुख सूं पिण कहतो न लाजे॥ ११ ॥
मूलगा जांणे उपगारी, त्याने किण विध घालें विसारी।
त्यांरो सिक्को धारे रह्यो सेठो, त्यांरो थको तिहां रहे बेठो॥ १२ ॥

लारे सेठ रे दिन आयो खोटो, तिणरे पड गयो जाबक तोटो।
वले घर में आई पूरी खाल, बाकी क्यूं ही रह्यो नही माल॥ १३॥
सेठ रा पुन पड गया माठा, गुमासता पिण धन ले नाठा।
कांनी कांनी रह्या धन दाब, थोडा में छेडो आयो सताब॥ १४॥
माथे पिण ऋण हुवो पूरो, सेण सगा हुवा सरब दूरो।
उपर सूं पडियो दुरभख ताही, खावा धांन नही घर मांहीं॥ १५॥
लोकां मांहे पिण पडियो उघाडो, तिणसूं माथेई न मिले उवारो।
अन्न विण मरतां मेली नाकी, जब गुमासता री दिशि ताकी॥ १६॥
तिण दलद्री रो सेठ कीधो, तिणरो शरणो लेवा मन कीधो।
अशुभ उदे विपद रो घाल्यो, तिणरी दिशि नें चाल्यो॥ १७॥
तूटो डील नें तूटी सफाई, मुख वदन गयो कुमलाई।
पगां लिगतरा वाजें ताहि, इण रीते आयो शहर रे मांहि॥ १८॥
निज सेठ ने आवतो देखी, हरख्यो मन मांहें वशेखी।
गादी तकिया छोडी साह्मों जाय, सेठ रा पगां में पडियो आय॥ १९॥
विने सहीत बोलें जोडी हाथ, मोनें आज कीयो थें सनाथ।
थांरो दरसण मे दीठो आज, म्हांरा सरिया वंछित काज॥ २०॥
म्हांरे आज भलो दिन ऊगो, मन रो मनोरथ पूगो।
घणी अतंत कीधी लघुताई, इण कुमिय न राखी कांई॥ २१॥
विनो नरमाई करता देख, लोक इचरज पाम्यां वशेख।
त्यांनें उत्पति धुर सूं बताय, सगलां ने दीया समझाय॥ २५॥
पछे निज सेठ ने घरां ल्याय, मरदन सिनांन कराय।
मोय मूंहगा ने हलका तोल मांय, एहवा वस्त्र गेहणा पहिराय॥ २३॥
पछे मन गमता भोजन कराय, रूडी सेज्या में आंण पोढाय।
वले भोजन अनेक रसाल, नित्य जीमावे काल रा काल॥ २४॥
डीलां में चाका कीयो जरूरो, सूरत में घणो सनूरो।
गादी तकिया वेंसाणे आंण, हिवे बोले किण विध वांण॥ २५॥
आप पधास्या इण ठांम, ते मोने फुरमावो कांम।
जब सेठ बोले इम वाय, मोमें विपत पडी छे आय॥ २६॥
देश दुरभख पडियो ताय, खावा धांन नहीं घर मांय।
माथे पिण न मिले उवारो, जब हूं आयो थारी दिशि थारो॥ २७॥
आ हूं आप कनें करूं अरज, कांयक तो करो म्हांरी गरज।
जब ओ बोल्यो सीस नमाय, इसडी भोले म काढजो वाय॥ २८॥

आप तो म्हांरा सिर धणी सेठ, हूं तो गुमासतो थांरो नेठ।
हूं दलद्री तिणनें आप वधारयो, म्हांरो मिनष जमारो सुधारयो ॥ २६ ॥
म्हे आ पांमी रिधि विस्तार, ओ सगलो आप तणो उपगार।
हिवे सगली अवेरलो आथ, रिधि सहित सगलां रा थें नाथ ॥ ३० ॥
आ रिधि खावो पीवो उडावो, सगलां ऊपर हुकम चलावो।
मोने पिण ऋजक रोटी दो आप, हूं पिण इधका क्याने करू टाप ॥ ३१ ॥
सेठ नें सगली सोपे आथ, सेवग थको रहे जोडी हाथ।
वले कदेय न हुवे त्यांसूं जूओ, तो पिण सेठ सूं उरण न हूवो ॥ ३२ ॥
इसडो सेठ नें हितकारो, जीव हुवो अंनती वारो।
मुगति जावा रो उपगार, तिण न कीयो मूल लिगार ॥ ३३ ॥
जे कोइ सेठ सूं उरण थावे, ते सेठ ने जिण धर्म पमावे।
समभाय मेले मुगत रे मांय, इम सेठ सू उरण थाय ॥ ३४ ॥
सेठ नें माईत कीयो उपगार, तिणसूं उलटो बधे ससार।
ए तो सावद्य रो दातार, तिणमे धर्म नही छे लिगार ॥ ३५ ॥
जो उ मुगत गांमी जीव होवे, तो एहवा उपगार साह्मों न जोवे।
जो इण उपगार में धर्म जांणे, ते तों भर्म में भूला ताणे ॥ ३६ ॥
एहवा उपगारी ने देखे ताय, थोडो घणो हरपे मन मांय।
तिणरे निश्चे बधें कर्म सात, आ तो जिणजी रा मुख री वात ॥ ३७ ॥
एहवो पाछो करे उपगार, तिणरें पिण बधे ससार।
एहवा आह्मां साह्मां उपगार, कीधा नही पामें भव पार ॥ ३८ ॥
कोइ हुंतो जीव मिथ्याती, खोटा देव गुर रो पखपाती।
करें अधर्म ने धर्म जांणे, महामूढ थको ऊंधी ताणे ॥ ३९ ॥
तिणनें मिल्या मोटा मुनिराय, समदिष्टि कीयो समभाय।
वले श्रावक करे साधु कीधो, मुगत गामी निश्चे कर दीधो ॥ ४० ॥
ते साधपणो सुध पाल, पछे कीयो तिहां थी काल।
ते उपनों देव लोक में जाय, गुर भगता घणो छे ताय ॥ ४१ ॥
तिण उपयोग दे जोयो तांम, गुर ने देख लीया तिण ठांम।
गुर चोमास कीयो तिणवार, काल पडियो ते देश मंझार ॥ ४२ ॥
गोचरी गयां न मिले आहार, जावक तूट गया दातार।
लोक होय गया हेरान, खावा नें पूरो न मिले धांन ॥ ४३ ॥
ओर देश मे सुणियो सुगाल, पिण मारग मे दुरभख काल।
तिहां पिण जावा रो काठो काम, विच में उज्जड होय गया गांम ॥ ४४ ॥

जब कष्ट घणो गुर मांय, मोत घात आए लागी ताय।
जब उ शिष्य देवलोक मझार, कष्ट देखी नें कीयो विचार ॥ ४५ ॥
म्हांरा गुर में पडी इसडी वेला, तो हूं जाय करूं अन्न भेला।
इम चिन्तव सताब सूं आय, गुर ने मेल्या सुगाल रे मांय ॥ ४६ ॥
गुर नो कष्ट मेट्यो शिष्य आय, अन्न विण मरता राख्या ताय।
वले हरख्यो घणो मन मांय, तो पिण शिष्य उरण हुवो नांय ॥ ४७ ॥
वले गुर भूला मोटी अटवी मांय, मारग री पिण खबर न कांय।
वले भूख तिरखा लागी आय, पग भर आघो खिसियो न जाय ॥ ४८ ॥
अन्न पांणी विनां अटवी मांय, जुदा हुवे जीव ने काय।
सिंघ चित्तादिक तिहां आय, उपसर्ग देवा लागा ताय ॥ ४९ ॥
जब उ शिष्य देवलोक थी आय, गुर नें वसती में मेल्या उठाय।
गुर नें जीवां मरता राख्या ताय, तो पिण शिष्य उरण नही थाय ॥ ५० ॥
वले गुर रा शरीरे मांय, सोले रोग उपनां आय।
तिण रोग सूं हुवे जीव घात, वले सुख नहीं तिल मात ॥ ५१ ॥
जब उ शिष्य देवलोक थी आय, सोलेई रोग दीया गमाय।
सुख साता कीधी जीवां बचाय, तो पिण गुर सूं उरण नही थाय ॥ ५२ ॥
काल रा मेल्या सुगाल रे मांय, अटवी सूं मेल्या वसती मे ताय।
रोग कीया शरीर थी न्यार, तोही उरण न हुवो लिगार ॥ ५३ ॥
जो इसडा करे अनेक उपाय, तोही गुर सू उरण नही थाय।
उरण न हुवो ते किण लेखे, ते परमारथ विरला देखे ॥ ५४ ॥
जो उ शिष्य आए इम न करंत, तो पेंहले छेहडे गुर जीवां मरत।
मरनें संसार में न पडंत, कष्ट सही कर्म दूर करंत ॥ ५५ ॥
तो पिण वले नही हुआ कर्म, वले घटतो नही त्यारो धर्म।
मुगत जावा रो न कीयो उपाय, उरण न हुओ ते इण न्याय ॥ ५६ ॥
गुर धर्म थी भिष्ट हुवे ताय, ने आंणे शिष्य ठाय।
पडता राख्या भव कूआं मांय, जब गुर सूं उरण हुवो ताय ॥ ५७ ॥
कदा गुर भिष्ट होय बेंठा ताय, ग्यांनादिक गुण सर्व गमाय।
रात दिवस हणे छे छ काय, जावक खूता संसार रे मांय ॥ ५८ ॥
जब उ शिष्य देवलोक थी आय, खपकर आंणे गुर नें ठाय।
पाछा साधु करे समझाय, ते गुर सूं उरण हुवे ताय ॥ ५९ ॥
जो गुर भगता हुवे शिष्य सुविनीत, गुर सूं उरण हुवे इण रीत।
ए ठाणां अंग सूतर माय, तीजे ठांणे कह्यो जिणराय ॥ ६० ॥

गुर कीधो भारी उपगार, गुर उतास्यो संसार थी पार।
कीधो मुगत तणो अधिकारी, त्यानें किण विध घालें विसारी ॥ ६१ ॥
रात दिवस गुर रो ध्यांन ध्यावे, रात दिवस गुर रा गुण गावे।
गुर रो कीधो उपगार बतावे, गुर रा गुण किण विध गावे ॥ ६२ ॥
गुर मोसूं कीयो मोटो उपगार, ग्यांनादिक गुण रा दातार।
हूं तो हुंतो जीव अग्यांनी, मोने सतगुर कीधो ग्यानी ॥ ६३ ॥
हूं अनाद काल रो हुंतो मिथ्याती, हिंसा धर्म तणो पखपाती
ते म्हांरी श्रद्धा खोटी छुडाय, गुर समकित दे आएयो ठाय ॥ ६४ ॥
हूं खूतो थो संसार मझार, जब हूं सेवतो पाप अठार।
मोनें दीख्या दे कीयो साध, म्हांरी भव भव री मेटी व्याध ॥ ६५ ॥
हूं डूबो इण संसार मांह्यो, गुर बारें काड्यो बांह संभायो।
सुध श्रावक रो धर्म पमायो, त्यांसूं उरण किण विध थायो ॥ ६६ ॥
हूं अनंत ससारी जीव थो भारी, ते मोनें गुर कीयो परित संसारी।
हूं दुर्लभ बोधी जीव थो करलो, गुर मोनें सुलभ बोधी कीयो सरलो ॥ ६७ ॥
हू तो कृष्ण पखी जीव थो कुकरमी, हिंसाधर्मी ने पूरो अधर्मी।
मोनें शुकल पखी गुर कीधो, मुगतगढ रो पट्टो लिख दीधो ॥ ६८ ॥
हू तो अचरम मिथ्यात सहीत, संसार नां छेहडा रहीत।
गुरां चरम करे सिर चाढ्यो, म्हांरा संसार नों छेहडो काढ्यो ॥ ६९ ॥
मोने गुर कीधो मुगत नजीक, इन्द्र नों पिण कीयो पूजनीक।
म्हांरो जीतब जनम सुधास्यो, मोने संसार पार उतास्यो ॥ ७० ॥
शिष्य सुविनीत हलुकर्मी होवे, तो गुर रा उपगार साह्मो जावे।
जिण आगम सीखामण सूधी धारी, हिवे कुण कुण करे विचारी ॥ ७१ ॥
कोइ पट्टो राजा रो खावे, कोइ रोजगार नित पावे।
ते पिण विनों करे जोडी हाथ, वले लेखवे सिर धणी नाथ ॥ ७२ ॥
तिणनें करडी मूहम धणी मेले, तो पिण धणी रो वचन नही ठेलें।
मर जाये तिणरा मूंढा आगे, धणी ने मेल पाछो नही भागे ॥ ७३ ॥
तिण धणी रो पिण काचो आधार, थोडा में पट्टो देवे उतार हो।
वले काढ दे देश रे बार, कदा जीवां पिण नांखे मार ॥ ७४ ॥
तिण धणी रो वचन न लोपें, मरण साह्मो मडे पग रोपें।
जाणें आउं धणी रे कांम, तो हू नही होऊं लूण हराम ॥ ७५ ॥
रिजक रोटी पट्टा रे काजे, मर जाये पिण पाछो न भाजें।
तो हूं मुगत जावा रे काज, पिंडत मरण करतो नाणू लाज ॥ ७६

गुर शिष्य नें मुगत गांमी कीधो, मोष रो पट्टो अविचल दीधो।
दलिद्र दीयो दूर गमाय, ग्यांन दरसण चारित पमाय ॥ ७७ ॥
जो उ शिष्य हुवे सुविनीत, गुर री आग्या पालें रूडी रीत।
ते गुर रो वचन किम लोपें, मरण सांह्यों तुरत पग रोपें ॥ ७८ ॥

●

रत्न : १७

मोहणी कर्म बंध री ढाल

ढाल

दुहा

महामोहणी कर्म री, स्थिति लांबी कही जिणराय।
सितर कोडा कोड सागर तणी, ते भोगवतां दुख थाय ॥ १ ॥
आठ कर्मां मांहे राजवी, मोटो मोहणी कर्म।
इण कर्म उदे वस जीवडो, पामें नहीं जिण धर्म ॥ २ ॥
जे जे माठा किरतब करे, मोह कर्म उदे वस जीव।
पाप कर्म उपजावे अति घणा, तिणसूं पामें दुख अतीव ॥ ३ ॥
इण मोह कर्म रा जोर सूं, माठी माठी अकल बुद्धि थाय।
साधु श्रावक धर्म सूं चूक नें, पडें नरक निगोद में जाय ॥ ४ ॥
जे कर्म बंधे महामोहणी, तिणरा छे तीस बोल।
ते चित्त लगाय नें सांभलो, आंख हीया री खोल ॥ ५ ॥

ढाल

[बिछियानी]

दुष्ट परिणामां तस जीव नें, डबोवें पांणी रे मांय रे।
तिणनें मारे पांणी में बुरी तरें, जुदा करे जीव ने काय रे।
इम कर्म बंधे महामोहणी* ॥ १ ॥
मुख भींच मारे तस जीव नें, वले मारे नाकादिक भीच रे।
मारे गले देई गल भीचियो, इण विध मारे भूंडी कुमीच रे ॥ इ० २ ॥
घणा जीव बाडा मे घाल ने, देवे चोफेर अगन लगाय रे।
मारे अगन धूंआ रा जोग सूं, खोटां परिणामां ताय रे ॥ ३ ॥
मारे खडग सूं मस्तक भेद ने, मारे मुगदरादिक सिर मार रे।
अथवा मस्तक फाडे विदार ने, करे जीव ने काया न्यार रे ॥ ४ ॥
तस जीव तणा मस्तक मझे, आलो बांध वीटे तांण तांण रे।
पछे आंण वेसाणे तावडे, इण विध हणे प्रांणी रा प्रांण रे ॥ ५ ॥
काला गेहला ने मारे हसे, कतोहल करवा कांम रे।
वले कपट करी भेष पालटे, ते आपो छिपावण कांम रे ॥ ६ ॥
खोटो आचार गोपवे आपरो, देखाडे रूडो आचार रे।
वले माया ढांकण माया केलवे, भूठ बोली गोपे वारुवार रे ॥ ७ ॥
अणाचार सेव्यो नही तेहनें, हेले देदे भूठा आल रे।
आप दोष अणाचार सेव ने, ओर रे सिर देवे राल रे ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

भरी सभा में बेठो थको, संके नही करतो अन्याय रे।
मिश्र भाषा बोले तिण अवसरे, भूठ ने भूठ जांणतो नांय रे॥ ६॥
राजा रे रूंवे लिखमी आवती, द्रोही प्रधांन कपट सहीत रे।
वले भेद पाडें सुभटां थकी, राजा नें करे राज रहीत रे॥ १०॥
राज लिखमी गयां विल विल करे, तिणनें बोले मरम मोसावाय रे।
वले भोग भोगवतां तेहनें, जोरी दावे देवे अंतराय रे॥ ११॥
आचारज गणनायक अधपति, त्यांरे शिष्य कोइ दुष्ट अविनीत रे।
ते मन भांगे ओर साधां तणो, गुर नें करे पदवी रहीत रे॥ १२॥
जश कीर्ति घटावे गुर तणी, देवे पूजा श्लाघा घटाय रे।
वले शिष्य हो तो देखनें वरज दे, उपधादिक री देवे अंतराय रे॥ १३॥
राजा रे रूंधे लिखमी आवती, तिणमें दरबे चोरी री खोड रे।
इण विध गुर सूं चेलो करे, ते तीर्थंकर रो चोर रे॥ १४॥
बाल ब्रह्मचारी नहीं ते कहे, हूं तो बाल ब्रह्मचारी अकन कवार रे।
वले अस्त्री सेवण गिरधी घणो, विषय पिण वांछे वारूंवार रे॥ १५॥
ब्रह्मचारी नही वले इम कहे, हूं छूं शीलवंतो ब्रह्मचार रे।
जिम गधो भूंके गायां मझे, तिम ओ बोले साधां रे मझार रे॥ १६॥
जिणरी नेश्राय करे आजीवका, धन वधियो तिणरी नेश्राय रे।
जश कीरति वधी तिणरी नेश्राय सं, तिणरो धन लूंवे जाय रे॥ १७॥
वधियो राजादिक री नेश्राये, त्यांनेंईज दगो दे ताय रे।
वले छल बल खेले तेह सूं, उपगारी नें हुवे दुखदाय रे॥ १८॥
गुण वधिया गुर री नेश्राये, त्यां सूं दगो करे मन मांय रे।
छल छिद्र जोवे चोर नी परे, शिष्य शिष्यणी लेवे फंटाय रे॥ १९॥
साधु साधवी श्रावक श्रावका, त्यांनें फाडण रो करे उपाय रे।
गुर सूं मन भांगे तेहनों, भूठा भूठा अवगुण दरसाय रे॥ २०॥
करे विश्वासघात मांहे थको, मुख मीठो खोटो मन मांय रे।
वले जिल्लो वांधे ओर साध सूं, आपरो कर राखे ताय रे॥ २१॥
राजा नही तिणनें राजा कीयो, राज दीधो मोटे मंडाण रे।
ते तो उपगारी छे मूलगो, तिणनेंइज दुख दुख देवे जांण रे॥ २२॥
सर्पणी इंडा गिले आपरा, अस्त्री मारे निज भरतार रे।
वले चाकर मारे ठाकर भणी, गुर नें शिष्य नांखे मार रे॥ २३॥
मारे देश तणा नायक भणी, सेठ नें हणे माठे ध्यांन रे।
कोइ मारे अधिकारी पुरुष नें, कुल में दीवा समांन रे॥ २४॥

कोइ सत रिखेश्वर मोटको, घणा जीवां रो तारणहार रे।
द्वीपा समांन डूबता जीव नें, त्यांने हणे कोइ धेपधार रे॥ २५॥
केई चारित लेवा उठिया, केइ चारित पाले ताय रे।
तिण चारितीया नें चारित थकी, भिष्ट करवा रो करे उपाय रे॥ २६॥
उतकष्टा ग्यानी केवली, त्यांरे संजम तप री समाध रे।
ते तों प्रतिबोधे भवि जीव ने, त्यांरा बोले अवगुणवाद रे॥ २७॥
न्याय मारग छे सुध मुगत रो, तिणसूं तपतो रहे दिन रात रे।
तिण मारग सूं घणा ने चूकाय दे, खोटी श्रद्धा हिया मे घात रे॥ २८॥
आचार्य उवझाय त्यां कने, साव हुवो छोडे माया जाल रे।
वले भणियो सिद्धात त्या कनें, त्यानेइज निंदे मूरख बाल रे॥ २९॥
आचार्य उवझाय तेहनें, न करे सेंवा भगत मन सुध रे।
विनो वियावच पिण करे नही, अहमेव पणा री बुद्ध रे॥ ३०॥
आचार्य उवझाय त्या कनें, ग्यान दरसण चारित पाय रे।
त्यां सू पिण करे मूढ बरोबरी, वले सनमुख झगडे आय रे॥ ३१॥
आचार्य उवझाय त्यां कने, समझे कीयो परित्त ससार रे।
वले सजम रे सनमुख कीयो, त्यारा अवगुण बोले वारूंवार रे॥ ३२॥
आचार्य उवझाय गण थकी, अविनीत ने देवे दूर टाल रे।
जब अविनीत क्रोध तणे वसे, हेले दे दे झूठा आल रे॥ ३३॥
आचार्य उवझाय तेहनी, वंदणा छोडावे संका घाल रे।
उत्तमा री उतारे आसता, दुष्ट अविनीत री आ चाल रे॥ ३४॥
आचार्य उवझाया ऊपरे, कोइ पडिवजियो मिथ्यात रे।
तिण अविनीत ने सवलो सूझे नही, करे जोम ने गाढ री वात रे॥ ३५॥
कोइ बहुश्रुती तो निश्चे नही, ते कहे हूं छू बहुश्रुती साध रे।
मो बरोबर सूत्तर कुण भण्यो, अभिमांनी करे झूठो विवाद रे॥ ३६॥
कोइ तपसी तो निश्चे नही, ते कहे हू छूं तपसी घोर रे।
तिणने तीन लोक रा चोर सूं, उतकष्टो कह्यो वीर चोर रे॥ ३७॥
बालक तपसी गरढा गिलाण छे, त्यांरी न करे वियावच देख रे।
ते छती सगत घेठो थको, वले राखे त्यां ऊपर धेख रे॥ ३८॥
वले कपट केलव झूठो कहे, हू करूं छू वियावच ताय रे।
पिण दुष्ट परिणामां तेहने, उलटी देवे अतराय रे॥ ३९॥
कलह कारणी कथा कहे, वले घाले मांहोमां खेद रे।
आह्मी साह्मी करे लगावणी, पाडे च्यार तीरथ मे भेद रे॥ ४०॥

चेला रो मन भांगे गुर थकी, गुर रो चेला सूं दे मन भांग रे।
यांनें भेद घाली न्यारा करे, तिण पहर विगाड्यो सांग रे॥ ४१॥
गुर मोटा उपगारी मुगत रा, त्यां सूं दूर करे भरमाय रे।
जीवे ज्यां लग भेला हुवे नहीं, एहवी मोटी देवे अंतराय रे॥ ४२॥
गण मांहें वसे साधु साधवी, त्यांमें पाडें विखेरो कोय रे।
चित्त भंग करे यांरो एहवो, कदे फेर मिलाप न होय रे॥ ४३॥
साधु साधवी गुर सूं फाड नें, आपरा कर राखे ताय रे।
गुर सूं छानें छानें बांधे जिल्लो, मूरख चोरी करे गण मांय रे॥ ४४॥
जोतिष निमित्तादिक भाखे घणा, वले हिंसा कीयां कहे धर्म रे।
वले पूजा श्लाघा रे कारणे, करे वसीकरणादिक कर्म रे॥ ४५॥
कांम भोग मिनष देवता तणा तिणमें रहे अतृप्तो ताय रे।
तिणरे वंछा घणी कांम भोग री, वले लंपट रहे तिण मांय रे॥ ४६॥
मोटी रिध संगत पांमी देवता, ते संजम तप रे प्रसाद रे।
इसडा मोटका देवता तणा, कोइ बोले अवगुण वाद रे॥ ४७॥
देवता नहीं देखे ते कहें, हूं देवता देखूं साख्यात रे।
वले अग्यांनी थको लोकां मझे, जिणेसर ज्यूं पूजावे विख्यात रे॥ ४८॥
तीसां बोलां बंधे महामोहणी, एतो कह्यो तीर्थंकर देव रे।
त्यांनें साधु तो वरजे सर्वथा, त्यांरी करे इंद्रयादिक सेव रे॥ ४९॥
संवत अठारे सेंतीसे समें, सावण विद सातम रविवार रे।
कर्म बंधे छे महामोहणी, जोडी पादू गांम मझार रे॥ ५०॥
भवि जीवां ने समझायवा॥

रत्न : १८

दसवें प्राछित्त री ढाल

ढाल

दुहा

ठाणाअंग तीजे न पांचमें, दशमों प्राछित्त कह्यो जिणराय।
जघन्य मझिम प्राछित्त किण ही बोल में, ते पिंडत जांणें न्याय॥ १ ॥
कोइ दशमो प्राछित्त सेवनें, ए आलोए तो मतिवंत।
ते जथातथ प्रगट करूं, ते सुणजो कर खंत॥ २ ॥

ढाल

[समरूं मन हरखे तेह सती]

दुष्ट परिणामां ऊंधी धारे, गुरवादिक मूवां रा दांत पाडे।
तीव्र कषाय वस समता नावें, तिणनें दशमों प्राछित्त आवें॥ १ ॥
करे प्रमाद वस अकार्य मोटो, ते प्रतख लोक विरुध खोटो।
तिणरो लोकिक पिण विगडी जावे, तिणने दशमों प्राछित्त आवे॥ २ ॥
साध साधवियां रो पेहरण सांग, मांहोमां चोथो व्रत देवे भांग।
ते च्यार तीर्थ में फिट फिट थावें, तिणनें दशमों प्राछित्त आवें॥ ३ ॥
रहें एक आचार्य रा शिष्य भेला, कुल मांहे वसें सहु मनमेला।
त्यांमें भेद पाडण उधमी थावे, तिणने दशमों प्राछित्त आवे॥ ४ ॥
रहे दोय आचार्य रा शिष्य भेला, गण मांहे वसे सहु मनमेला।
त्यामें भेद पाडण उधमी थावे, तिणने दशमों प्राछित्त आवे॥ ५ ॥
गुरवादिक री वांछे घात, एहवो ध्यांन रहे दिन नें रात।
ते मन में पिण नही पिछतावे, तिणनें दशमों प्राछित्त आवे॥ ६ ॥
ओर साधां रा छिद्र जोवे तांम, तिणने हेलवा निंदवा रे कांम।
दोष भेला कर कर पछे उडावे, तिणने दशमो प्राछित्त आवे॥ ७ ॥
प्रश्न पूछे हिंसादिक वारूंवार, तिण चारित बाल कीयो छार।
ते इहलोक रो अरथी थावे, तिणनें दशमों प्राछित्त आवे॥ ८ ॥
कुल गण मे भेद पाडे केइ, हिंसा नें छिद्र तणो पेही।
सावध प्रश्न वारूंवार बतावे, तिणने दशमो प्राछित्त आवे॥ ९ ॥
दुष्ट प्रमाद ने अनमन सेवे, तिणरो प्राछित्त हाथ जोडी लेवें।
जे आलोव न सुध थावे, तिणनें दशमों प्राछित्त आवे॥ १० ॥
ठाणांअग तीजे ने पाचमे ठांणे, त्यांरा भेद अनेक पिंडत जांणे।
जघन्य मझिम भेद न्यारा थावे, उतकृष्टो प्राछित्त दशमो आवें॥ ११ ॥

रत्न : १६

जिण लखणा चारित आवे न आवे तिण री ढाल

ढाल

दुहा

चारित आवे चोखो चित्त हुवां, पतलो पड्यां मोह कर्म।
आतम वस छे आपरे, ते पालें छें जिण धर्म ॥ १ ॥
जे तीखी बुद्धि रा मानवी, सरल सभाव मतिवंत।
ते समझ सताव संयम लीयो, त्यांरी पूरीजे मन खंत ॥ २ ॥
केइ समझ्या छे सतगुर कने, पिण न मिटी मन री भोल।
त्यांने चारित आवे किण विधे, माहें मोटी कर्म किलोल ॥ ३ ॥
त्यांने संसार खारो लागो नहीं, लपट रह्या तिण मांय।
ते संजम री भावे भावना, पिण संजम आवे नांय ॥ ४ ॥
जिण लखणा चारित आवे नही, जिण लखणा चारित आय।
त्यांरा भाव भेद परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[समरु मन हरख तेह सती]

त्यारे समकित री सेंठी नींव, विनेवंत हलुकर्मी जीव।
ते ससार सूं रहे निरदावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ १ ॥
जे वेराग मांहे भीना पूरा, ते लोभ लालच सूं रहे दूरा।
वेरी वाहलां ऊपर रहे समभावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ २ ॥
त्यारे न्यातीलां सूं नेह थोडो, वले मोह कर्म रो नहीं जोरो।
दिन दिन चोकडी घटावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ३ ॥
ते आगूंच मोह माया मूंके, वले सतगुर मिल्यां अवसर नही चूकें।
कर्म काटण ने तप तेज संभावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ४ ॥
त्यांरे मुगत जावण री लग रही आस, ते काल रो नहीं करे विश्वास।
ते आगूंच आपो संभावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५ ॥
केइ सजम लेवा करे टाला टोला, पल पल में ऊठे अनेक डोला।
खिण में रंग विरंग होय जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ६ ॥
लोभ लालच त्यांरे नही छूटो, न्यातीलां सूं नेह पिण नही तूटो।
माया मेलण री मनसा ल्यावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ७ ॥
वेंराग विनां निरथक वेठा, त्यांनें वतलायां वचन बोलें धेठा।
शूर वीरपणो त्यांमें नही पावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ८ ॥

वले दिन दिन इधक मेले तांता, आऊखा मांसूं दिन नहीं जांणे जाता।
हलफल में यूंही दिन गमावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ ९ ॥
वले नवा नवा सगपण सांधे, आगला सूं नेह इधको वांधे।
त्यांरे काजे कर्मबंध कमावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ १० ॥
ज्यांनें संसार लागे छे अति मीठो, त्यांरो निश्चेंई वेंराग जांणो फीटो।
ते अंतरंग भावना किम भांवे, यां लखणा चारित नही आवे॥ ११ ॥
आरा मोसर आरंभ में आघो, छकाय मारण केडे लागों।
वले मांन बडाई में नहीं मावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ १२ ॥
जिण आगन्यां पालण सूं दूरा, वले सावद्य कांम करण शूरा।
तिणनें सरायां फल फूल होय जावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ १३ ॥
मूंढे मीठा पिण नहीं समभावा, घणा जीवां सूं राखे कावा दावा।
रात दिवस पेला रो भूडो चावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ १४ ॥
संसार में राड झगडा कजिया, तिण माहे नितका सजिया।
थोडा मे पेला रो घर गमावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ १५ ॥
आह्यों साह्यो घणा सूं डस राखे, वले मांन वडाई मुख भाखे।
वले कुबुद्धि करे कलह लगावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ १६ ॥
वेंराग रहित वोलें पोला, त्यांरो मनडो खाय रह्यो झोला।
त्यांरे चारित री चित्त मे नावें, यां लखणा चारित नही आवे॥ १७ ॥
अथिर सभावी घर छोडण री कहें, त्यांरो आरंभियो तो यूहीज रहे।
घडी घडी में परिणांम फिर जावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ १८ ॥
वरस छमास में छोडूं गृहपासा, ते दिन आयां ओर वांधे आसा।
आगे लगा दिन चलिया जावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ १९ ॥
संसार नीं वातां सुण सुण हरखे, संजम री वात कीयां धडके।
संजम लेवा सूं नही उमावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ २० ॥
केइ कर रह्या संजम लेऊं, जांणें गृहवासो जोग साभूं वेहूं।
इम करतां करता ने काल गटकावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ २१ ॥
संजम लेवा करे गाथा गूथा, ते तों यूंही रहे घर में खूता।
परिणांम चढ चंढ नें पड जावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ २२ ॥
काचे मन चारित री वात काढे, ते तो कांम सिराडे किम चाढें।
पांणी पर पोटा ज्यूं वेंराग विललावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ २३ ॥
केइ आपरा मन सूं शूरा वाजे, कांम पड्यां डेरो नांखे भाजे।
इण दिष्टान्ते केइ पडिया पोमावे, या लखणा चारित नही आवे॥ २४ ॥

घर छोडतां करें थागा थेगो, त्यांरे नही वेंराग रस संवेगो।
थागा थेगा कर दिन गमावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २५ ॥
इसडा जीव आगे अनंत हुवा, उवे आसा अलुधा यूंहीज मुवा।
ते तों चिहुंगति में गोता खावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २६ ॥
केइ घर छोडण मन वेराग धरे, जव ओरां नें मांहे लेऊं वंधो करे।
पछे परिणाम पडे जव सीदावें यां लखणा चारित नही आवे ॥ २७ ॥
उणरो वेली घर छोडण री करे, जब कायर रे मन धडक पडें।
वंधो करनें पडियो पिछतावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २८ ॥
जव उणरा परिणांम पाडण खपे, घणो कूड कपट मुख सूं रे जपे।
कर्म वंधवा रो डर नही ल्यावे, यां लखणा चारित नहीं आवे ॥ २९ ॥
आप घर छोडण सूं मन उमावे, जव उणरा पिण परिणांम चढावे।
आप डिगियो ओरा नें डीगावे, या लखणा चारित नहीं आवे ॥ ३० ॥
चारितिया ने चारित सूं भिष्ट करे, तो महामोहणी कर्म रो बंध पडे।
ते तो संसार में दुखियो थावे, यां लखणा चारित नहीं आवे ॥ ३१ ॥
साधु सुव उपदेश दे सुविचारी, उणरा वेली ने करे सजम सूं त्यारी।
जब ऊ साधां ऊपर पिण दुख पावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ ३२ ॥
के उ- भागण री ओर ताके सेरी, घणो झूठ बोले भाषा फेरी।
ते वधो भांग ने भागल थावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३३ ॥
भागल थई झूठ वोले भारी, केइ होय जाय अनंत संसारी।
पछे दडी दोटा ज्यूं झीकां खावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३४ ॥
वंधो भांग सत वोले निरापेंखो, इरडा तो केयक विरला देखो।
भारीकर्मां सूं साच वोलणी नावे, यां लखणा चारित नहीं आवे ॥ ३५ ॥
सूंस भागे ने घर में रहिवा री करे, ते तो साधां रा छिद्र जोवतो रे फिरे।
मिनकी उदर ज्यूं माठी भावना भावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३६ ॥
कोइ घर छोडण री चित्त में धारे, जब ओरां रा परिणांम ढीला पाडे।
जांणे रखे मोसूं वडो होय जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३७ ॥
केइ सूंस वरत देवे भंगो, जब मूरख पामें उछरंगो।
भागल ने भागल बधिया चावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३८ ॥
घर छोडण रा सूंस भागे, जव साधां ने असाधु श्रद्धण लागे।
आल देतो पिण डर नही ल्यावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३९ ॥
निर्लज सूंस वरत देवे भाग, त्यांरा चिहुंगति में नीकले सांग।
वले लोकिक पिण विगड जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४० ॥

लज्यावंत उत्तम नरनार, सूंस वरत करे ते घाले पार।
त्यांरा तीर्थंकर पिण गुण गावे, यहां लखणा चारित नही आवे ॥ ४१ ॥
दोय दोय तरवार बांधे गाढी, वरसो वरस खुरसाण चाढी।
कांम पड्यां बारे काढणी नावें, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४२ ॥
ज्यूं त्यागी वेंरागी बाजें पूरा, घर छोडण निमित्त दीसे शूरा।
कांम पड्या ते पिचक जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४३ ॥
गोला बांण वहे तलवारयां भलकी, तिण ठांमें कायर जाए सलकी।
विरुदावली बोलतांई नाठो जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४४ ॥
ज्यूं परीसा रूप वहे बांण गोला, ते कायर सुण भाग जाये भोला।
तिण भागल ने वेराग विरुद न सुहावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४५ ॥
गोला बांण वहे तलवारयां भलके, तिण ठामें शूरा हुवे ते नही सलके।
ते तों मरण रो डर मूल नही ल्यावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ४६ ॥
ते परीसा रूप गोला बांण वहे, ते सुण सुण उत्तम जीव दृढ रहे।
घर छोड्तां परीसा रो डर नही ल्यावे, या लखणा चारित बेगो आवे ॥ ४७ ॥
केइ कायर सग्राम मांहे जावे, तिणनें न्यातीलादिक याद आवे।
ते सनमुख लोह किण विध खावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४८ ॥
यू घर छोडण री चित माहें धरे, ते न्यातीलादिक ने याद करे।
त्याने छोडी नें किम हुवे निरदावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४९ ॥
शूर संग्राम चढे शस्तर झाले, न्यातीला मे चित्त नही घाले।
आप जीते ओरा नें हठावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५० ॥
ज्यूं घर छोडण नें शूरा होवे, ते न्यातीला साहमो नही जोवे।
संजम लेनें कर्म वेरी खपावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५१ ॥
संसार शूरा पिण सेंठी धारे, नासण भागण री नहीं विचारे।
मरण सूं साहमो मंड जावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५२ ॥
इण दिष्टाते वेराग मांहे पूरा, मुगत जावण ने हुवे शूरा।
ते घर छोडण रो डर नही ल्यावे, त्यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५३ ॥
कर्म रोकण तोडण री सेठी धारे, ओर आल पपाल नही विचारे।
आड दोढ चित्त में मूल नही ल्यावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५४ ॥
एक मुगत जावण री रखे आसा, ओर छोड दे सर्व आसापासा।।
ससार सुखां मे रति नही पावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५५ ॥
इम सुण नें उत्तम नरनार, सूंस वरत पालो निरतीचार।
ज्यूं जनम मरण दुख मिट जावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५६ ॥

वरस पेतीसे संवत अठारे, महासुदि चोथ दिन बुधवारे।
देश मेवाड वनेडे गांम, जोड पूरी कीधी छे तिण ठांम ॥ ५७ ॥

रत्न : २०

सूंस भंगावण रा फल री ढाल

ढाल

दुहा

वनस्पति टाल ने पांच काय थी, अनत गुणां अभवी जांण।
त्यांसूं पडिवाई समदिष्टी अनंत गुणां, समकित भिष्ट अयांण॥ १ ॥
त्यामे केकां तो भांग्यो साधपणो, केका भांग्यो श्रावकपणो जाण।
केइ भिष्ट हुवा समकित थकी, होय गया मूढ अयांण॥ २ ॥
ते पडिया छे नरक निगोद मे, तिहां खाये अनती मार।
अनत काल लगे दुख भोगवे, तिणरो वेगो न आवे पार॥ ३ ॥
भागल हुवा छे वापडा, दीधो जीतब जनम विगाड।
थोडा सुखां रे कारणें, गया जमारो हार॥ ४ ॥
भागल भिष्ट्यां ने निषेधियां, सूतर सिद्धांत रे माय।
थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ५ ॥

ढाल

[भवियण सेवो रे साध सयाणा]

छोटो मोटो सूंस व्रत आदरो तो, पालज्यो रूडी रीत।
जे सूंस भांग ने भिष्ट हुवा ते, चिहू गति मे होसी फजीत रे।
भवियण सूंस म भागो लिगारी, सूंस भांग्यां सूं घणी खुवारी रे॥ भ० ॥
टांको भले तो अनंत संसारी*॥ १ ॥
छोटोइ सूस भागे छे तिणमें, हवाल पडे छे अतंत।
तो मोटा मोटा सूंस भागे छे तिणरो, होसी कुण विरतंत रे॥भ० २॥
हिसा भूठ चोरी मैथुन ने परिग्रहो, त्यांने त्यागे छे आंण वेरागो।
त्यारा त्याग जांण ने भागे, तिणरो छे पूरो अभागो रे॥ ३ ॥
छकाय हणवा रा त्याग करे ने, पहस्यो साध रो सांग।
शीलादिक आदर्यो रूडी रीते, वले रोटी खाए छे मांग रे॥ ४ ॥
करडा करडा सूस कीया छे त्याने, भांग करे चकचूर।
ते बूडा छे वापडा जीव अग्यानी, ते पड गया मुगत सूं दूर रे॥ ५ ॥
केइ सूंस भांगी ने परणीजे पापी, वले चोथो व्रत देवे भांग।
तिण पापी जीव रा चिहुगति मांहे, घणा निकलसी सांग रे॥ ६ ॥
चोथो व्रत शील आदर ने भागे, तिण दीधी नरक नी नीव।
तिणने परमाधांमी मार देसी जब, करसी नरक मे रीव रे॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

शीलव्रत आदर नें सर्व अस्त्री नें, थापी छे मा बेंन सामांन।
तिणनें परणीजे तिणसूं करे गृहवासो, ते चिहुंगति में होसी हेंरान रे॥ ८॥
शील आदरियो जब सर्व अस्त्री नें, मूख सूं कही छे मा बेंन।
तिणसूं हीज पाछो करे ग्रहवासो, ते किण विध पांमसी चेंन रे॥ ९॥
व्रत भांग नें भागल हुवा तिण, दीयो जीवत जनम बिगाड़।
नरक निगोद तणो पाहुणो होय बेठो, गयो जमारो हार रे॥ १०॥
सूंस तणा भागल छे त्यांनें, जक कठे नहीं होय।
दुख भोगवसी नरक में निरंतर, तिहां सुख नों संचार न कोय रे॥ ११॥
सूंसा रो भागल संसार मांहें रुले तो, उतकष्टो अनंतो काल।
ते तो नरक निगोद में भींकां खासी, तिणरो बेगा न आवे निकाल रे॥ १२॥
अनंतेइ काले मिनष हुवे तो, गूंगो मूंगो दुखियारो होय।
आछो खाणो पीणो मिले नहीं तिणनें, रहे हींजरतो सोय रे॥ १३॥
वाल्हां रो विजोग पडे ऊगतां रे, मिले दुगमण तणो संजोग।
आदर भाव कठे नहीं पामें, नित्य रहे संताप ने सोग रे॥ १४॥
कहि कहि नें कितरा एक कहूं, तिणरा दुखां रो छेह न पार।
छेदन भेदन पामें संसार रे मांहें, तिणरो कहणी नावें विस्तार रे॥ १५॥
इहलोक मांहें पिण फिट फिट हुवे, सूंस व्रत रो भांगणहार।
मस्तक नीचो घाले लोकां में, तिणने सहु कोइ देवे धिक्कार रे॥ १६॥
लज्या रहित निरलज्या मानव, सूंस भांगता मूल न लाजे।
तिणनें परलोक नी परवाह नहीं छे, वकारवांई गीदड जिम भाजे॥ १७॥
शील व्रत भांगो छे तिणरा, पांचूं व्रत हुवा चकचूर।
मानव नो भव खोए अग्यांनी, गयो बहती रे पूर रे।॥ १८॥
पाप करे त्यांनें पापी कहीजें, पाप्यां तणी पांत मांय।
पिण सूंस व्रत भांगे ते महापापी छे, महा पाप्यां री पांत मांहे गिणाय रे॥ १९॥
तिणरे पाप उदे हुवे इण भव मांहें, तो वधें घणो रोग सोग।
रिधि संपति रो छेहडो आवे इण भव में, पडे वाल्हां तणो विजोग रे॥ २०॥
जातिवंत लज्यावंत कुलवंत तिणरो, कर्म जोगे गयो व्रत भागी।
ते परभव ने लोकिक सूं डरतो, पाछो ऊठ खडो रहे जागी॥ २१॥
भागल होय होय नें पाछा उठ्या अनंता, टाल्या आतम ना सर्व दोष।
सूंस भांगा ते पाछा सताव सूं सांधे, उणहिज भव पोहता मोष॥ २२॥
सूंस भांग नें भागल भिष्ट हुआ ते, धर्म सूं होय गयो रीतो।
काल कीयो आलोयां पडिकमियां विण, तिणमें भव भव में होसी कुरीतो रे॥ २३॥

केइ भागल भिष्टी छें भारीकर्मा, ते तो भागल बधिया चावे।
घर छोडण रो बघो कीयो आप साथे, तिणरोई बंधो भंगावे रे॥ २४॥
सूंस भांगे ने भागल भिष्ट हुआ छे, त्यां सूं साघपणो लेणी नावे।
तिणने आपरा अवगुण तो मूल न सूझे, उलटा साधां में दोष बतावे रे॥ २५॥
केइ टोला तणा टालोकड भिष्टी, त्यां साधां सूं पडिवजियो मिथ्यात।
ते पिण साधां मे दोष कहे अणहुंता, झूठ सूं न डरे तिलमात रे॥ २६॥
केइ साघपणो लेवा ने ऊठ्या, सूंस भांग रह्या घर मांय।
ते पिण साधां में दोष कहे अणहुता, निज अवगुण देवे छिपाय रे॥ २७॥
टोलां रा टोलाकड भागल भिष्टी, त्यांरा बोल्या री नही परतीत।
त्यांरी समदिष्टी ने संगत न करणी, आजिण मारग री रीत रे॥ २८॥
केइ तो सूंस भागे नें बेठा, केइ पेला रा सूंस भंगावे।
त्यांरी पिण आहिज रीत जांणों, नरक निगोद मे दुख पावे रे॥ २९॥
कोइ चढता परिणामां सूस पाले छे, चढता परिणामां अधिक वेरागो।
चारित लेवा उद्यमी थया छे, मुगत जावा सूं चित्त लागो रे॥ ३०॥
तिणरा कोइ सूंस भंगावण दुष्टी, करे अनेक उपाय।
ते डूब गया बापडा अग्यांनी, त्याने भव भव मे दुख थाय रे॥ ३१॥
केइ सूंस भगावे उपसर्ग कर ने, दुख देइ विवध परकार।
चारित लेवा ने ऊठ्या छे तिणने, कर दे थोडा में खुवार रे॥ ३२॥
केइ चारित लेवा ऊठ्या छे तिणने, कु कलाकार देवे चलाय।
विषय री वातां सुणाए तिणने, संसार नां सुख बताय रे॥ ३३॥
कोइ चारित लेवा ने उठ्यो छे तिणने, भिष्ट करण ने तांम।
साधां में दोष अणहुता बताए, पाडे तिणरा परिणांम रे॥ ३४॥
साधां री आसता उतारण ने उणरा, परिणांम करे चकचूर।
चारितियां ने भिष्ट करे चारित सूं, ते तों गया बहती रे पूर रे॥ ३५॥
सुघ साधां ने असाघु सरघा ए पापी, करे चारित सूं भिष्ट।
एहवा कांम करे ते मिथ्याती, भूंडी छे तिणरी दिष्ट रे॥ ३६॥
सुघ साधां ने असाधु कह्या तिण, मोटो कीयो अन्याय।
वले भिष्ट कीयो चारित लेवा सूं, ओ तो पूरो बूडण रो उपाय रे॥ ३७॥
छकाय हणवा रा त्याग करने, रोटी तिण माग ने खावे।
वले पांच आश्रव नां त्याग छे तिणरा, जोरी दावो करे भंगावे रे॥ ३८॥
पांच आश्रव नां त्याग भगाए पापी, साघपणो लेवा दे नांय।
तिण मोटो अकार्य कीधो अग्यानी, बूडो संसार समुद्र रे मांय रे॥ ३९॥

साधु रो भेप उतरावे पापी, माथे बंधावे पाग।
छकाय मारण ने सरु कीयो छे, तिणरो पिण जांणो पूरो अभाग रे ॥ ४० ॥
भेप उतारण री कोइ करे दलाली, तिण दलाली सूं होसी खुराव।
ते पिण चिहुं गति मांहे गोता खासी भव भव मांहे जासी आव रे ॥ ४१ ॥
परतणा सूंस भंगावे पापी, मोप जावा री दे अतराय।
तिणरे चीकणा कर्म बंधे छे भारी, तिणसूं भव भव में दुख थाय रे ॥ ४२ ॥
चारितीया ने भिष्ट करे चारित सूं, इणसूं इधको नहीं कोइ पाप।
एहवा पाप सूं जाए पडे नरक मांहि, तिहां होसी घणो सोग संताप रे ॥ ४३ ॥
चारितिया ने भिष्ट चारित सूं, करवा ने, खोटी काढे मूंढा सूं वांणी।
तिणरी परमाधामी नरक रे मांहें, जीभ काढे जडां सूं तांणी रे ॥ ४४ ॥
नरक तणा दुख सहे अनंता, सूंसा रो भंगावणहारो।
छेदन भेदन मार अनंती, तिणरो कहितां न आवे पारो रे ॥ ४५ ॥
उतकष्टो रुले तो काल अनंतो, नरक निगोद मझार।
अनंता काल में दुख सहे अनंता, सूंसा रो भंगावण हार रे ॥ ४६ ॥
कदा पाप उदे हुवे इण भव मांहे, तो वधे घणो रोग सोग।
वले छेहडो आवे रिध संपत केरो, पडें वाल्हां तणो विजोग रे ॥ ४७ ॥
केइ तो आंधा होय जाअें इण भव में, जावक होय जाअें निराधार।
भीख भमता हुवे इण भव में, सूंसा रा भंगावण हार रे ॥ ४८ ॥
केइ तो मर जाअें अन्न विहुणा, करता थकां विल विलाट।
परतणा सूंस भंगावे तिणरा, भव भव में हुवे एहिज घाट रे ॥ ४९ ॥
सर्व संसार नां कांमा चालू कीया छे, सूंसा रो भंगावण हार।
तिण महामोटो पाप में सीर घाल्यो, ते तों बूड गयो काली धार रे ॥ ५० ॥
इम सांभल उत्तम नरनारी, पेला रा सूंस मति भंगावो।
इण कुकरम री दलाली मत करज्यो, जो जीव नें सुख चावो रे ॥ ५१ ॥
कोइ धर्म थकी डिगतो हुवे तिणने, पाछो समझाय ने थिर कीजे।
यूं कीयां तो कर्म तणी निरजरा हुवे, डूबता ने पिण उद्धर लीजे रे ॥ ५२ ॥
धर्म सूं डिगता ने थिर कीयां सूं, टल जाए कर्म री छोत।
जो उतकष्टो रस आवे तो जिण रे, बंधे तीर्थंकर गोतर रे ॥ ५३ ॥
सूंस भंगावे तिण रा फल उपर, जोडी पादू गांम मझार।
संवत अठारे नें चोपनें वरसे, चेत सुद तेरस नें गुरवार रे ॥ ५४ ॥

रत्न : २१

सांम धर्मी सांमद्रोही री ढाल

ढाल

[म्हैं तो भार लियो सो लियो]

ऊंदर ऊपर मिनकी आपी जांण, जब जोगी ऊंदर री अणुकंपा आण।
तिण जोगी मंत्र पढ्यो ततकाल, उंदर ने कीयो घोघड विकराल ॥ १ ॥
जब मिनकी न्हाट्टी घोघड ने देख, घोघड देख नें आप्यो स्वांन वशेख।
जोगी घोघड नी करुणा लीध, कुत्तो सिकारी ततक्षण कीध ॥ २ ॥
अहो कर्म गति इधकी देख, जोगी मोह्यो राग वशेख।
स्वांन देखी चीत्तो आप्यो आय, जब स्वांन नें जोगी सिंह कीयो ताय ॥ ३ ॥
जब चीत्तो नाठो सिंघरी देख हाक, सींकंप हुवो पडी मन में धाक।
हिवे तिण सिंह ने भूख लागी छे तांम, तिण जोगी ने खावा उठ्यो तिण ठांम ॥ ४ ॥
जब जोगी देख मन इचरज थात, देखो नीच उंदर री जात।
इणरी मिनकी करती अकाले घात, ते म्हे बचा लियो साख्यात ॥ ५ ॥
म्हांरो उपगार कीयो न गिण्यो तिलमात, म्हांरी उलटी मांडी करवा घात।
म्हें नीच ऊंदर ने ऊंचा लियो, सिंघ नी पदवी दे ने मोटो कीयो ॥ ६ ॥
नीच ने वधास्यां आछो हुवे नांहि, ते भाख्यो छे नीति सास्त्र माहि।
तो इणने पाछो ऊंदर करू मंत्र राल, सिंघ ने ऊंदर कीयो ततकाल ॥ ७ ॥
ते ऊंदर जावक हुवो अनाथ, तिण री मिनकी वले करवा माडी घात।
जोगी देख अणुकपा कीधी नांहि, किरतघन मुवो ते बिल रे मांहि ॥ ८ ॥
ज्यूं नीच नें ऊंच पदवी जीखे नांहि, जोय देखो लोकिक लोकोत्तर मांहि।
किण ही राय वधास्या अमराव दोय, वले कीया पदवी धर मोटा सोय ॥ ९ ॥
यामे एक तो सांम धर्मी सुवनीत, वले राजनीति जांणे सर्व रीत।
तिण सूं राय रूठो किणवार, पट्टो उतार काढ्यो देश बार ॥ १० ॥
जब राय ऊपर इण न कस्यो रोस, जांण लियो निज कर्म रो दोष।
अलगो रहे तोही मांने कीयो उपगार, राजा तणो सदा रहे हितकार ॥ ११ ॥
कदा राजा नें भीड पडी सुण कांन, भीड आयो लेइ साथ सामांन।
वले मुख सूं कहे म्हांरा सिर धणी आप, सारो दीसे ते आप तणो परताप ॥ १२ ॥
इम सुण ने तिण सूं रीझ्यो राय, आगे विचेइ घणो वधास्यो ताय।
वले घणो वधास्यो तिणरो मांन, आगेवांण कीयो सगली ठांम ॥ १३ ॥
बीजो हरामखोर लूणहराम, सांमद्रोही रा दुष्ट परिणांम।
तिण सू पिण राय रूठो किणवार, तिणरो पट्टो उतार काढ्यो देश बार ॥ १४ ॥

जब ऊ धाडा करे वले करे उजाड़, राय तणा देस में करे बिगाड़।
फिर फिर मारे वले नगर नें ग्रांम, वलि राय सूं सनमुख करे संग्रांम ॥ १५ ॥
राजा सूं दुष्ट करे तांण तांण, देखो नीच वधार्‍यां रा ए फल जांण।
ज्यां वधार्‍यो त्यांसूं ही मांड्यो गर्व, उपगार कीयो ते भूल गयो सर्व ॥ १६ ॥
जब राजा अनेक करनें उपाय, हरांमखोर नें पकड लीयो राय।
इणरा हाथ पांव कांन नाक नें काट, गांम वोले फेर्‍यो गधे चाढ ॥ १७ ॥
वले विवध परकारे दीधी मार, फिट फिट हुवो लोक मझार।
एतो लोकिक कह्यो दिष्टंत, हिवे लोकोत्तर सुणो मन सांत ॥ १८ ॥
एक आचार्य मोटो अणगार, दोय जणा सूं कीयो उपगार।
त्यांनें समकित पमाय नें कीया साध, वले त्यांन भणाय नें करी छे सनाथ ॥ १९ ॥
यांमें एक तो गुर भगता सुवनीत, तिण में असल साध री रीत।
घणो भणे तोही न करे मांन, अवनीत री बात सुणे नहीं कांन ॥ २० ॥
तिणनें गुर करडे वचनें देवे सीख, तो पिण अविनो साहीं न करे वीख।
वले गुर निखेदे वारूंवार, तो पिण न करे क्रोध लिगार ॥ २१ ॥
गुर नें देखी करडी निजर क्रूर, तो पिण न विगाडे मुख नो नूर।
गुर राखे तो रहे गुर नीं हजूर, गुर दूरो राखे तो सुखे रहे दूर ॥ २२ ॥
सदा गुर सूं राखे सुध परिणांम, रात दिवस करे गुर रा गुण ग्रांम।
याद आवे गुर नों कीयो उपगार, ते तो कदेय न भूले लिगार ॥ २३ ॥
एहवा गुणां करे कर कर्मां नो सोख, अनुक्रमें पांनें अविचल मोख।
एहवा उत्तम जीव ऊंच पदवी लही, त्यांरा सुख रो कोइ पार नहीं ॥ २४ ॥
दूजा अवनीत री ऊंधी रीत, घणो भणे ज्यूं घणो अवनीत।
गुर सूं पिण घो करे अभिमांन, और अवनीत ने लगावे कांन ॥ २५ ॥
तिणनें गुर सीख देवे चूको देख, तो तुरत जागे अवनीत नें धेख।
घणो छेडवे तो करे विगाड, क्रोध करे नें होय जाए न्यार ॥ २६ ॥
वले दूजो अवनीत हुवो टोलां मांय, तिणनें पिण देवे भरमाय।
गुर सूं मन भागे कूडी कर कर वात, तिण अवनीत नें ले जावे साथ ॥ २७ ॥
गुर ना अवगुण बोले दिन रात, संका पिण नांणे तिलमात।
अवनीत वधारे अति ही मिथ्यात, झूठी कर कर मुख सूं वात ॥ २८ ॥
टोलां नें गुर सूं जागे वेर, अविनीत हुवे छे एहवा गेर।
केयक एहवा हुवे अवनीत, त्यांने छेडवियां बोले विपरीत ॥ २९ ॥
ते फिट फिट हुवो इहलोक मझार, आगे नरक निगोद में खाए मार।
घणो भ्रमण करे संसार मझार, तेहनों कहितां नावे पार ॥ ३० ॥

नीच ने वधार्‍यां आछो नांहिं, ज्यूं अविनीत जाण लेजो मन मांहिं।
इम सांभल नें उत्तम नर नार, अवनीत ने नीचनो संग निवार॥ ३१ ॥

रत्न : २२

शील की नव बाड

ढाल : १

दुहा

श्री नेमीसर चरण जुग, प्रणमूं उठ परभात।
बावीसमां जिण जगत गुर, ब्रह्मचारी विख्यात ॥ १ ॥
सुंदर अपछर सारिखी, विद्यु सम राजकुमार।
भर जोबन मे जुगति सूं, छोडी राजल नार ॥ २ ॥
ब्रह्मचर्य जिण पालीयो, धरतां दूधर जेह।
तेह तणां गुण वरणव्या, पामें भव जल छेह ॥ ३ ॥
कोड केवली गुण करें, रसना सहस वणाय।
तो ही ब्रह्मचर्य नां गुण घणां, पूरा कह्या न जाय ॥ ४ ॥
गलित पलित काया थई, तो ही न मूकें आस।
तरुणपणें जे वरत धरें, हूँ बलीहारी तास ॥ ५ ॥
जीव विमासी जोय तूं, विषय म राच गिवार।
थोडा सुखां रे कारणे, मूरख घणा म हार ॥ ६ ॥
दस दिष्टंते दोहिलो, लाधो नर भव सार।
सील पालो नव बाड सूं, ज्यूं सफल हुवे अवतार ॥ ७ ॥
सील मांहे गुण अति घणा, ते पूरा कह्या न जाय।
थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ८ ॥

ढाल

[मन मधुकर मोही रह्यो]

सीयल सुर तरुवर सेवीये, ते वरतां मांहे गिरवो छे एह रे।
सीयल सूं सिव सुख पामीये, त्यां सुखां रो कदे नावें छेह रे।
सीयल सुर तरुवर सेवीये* ॥ १ ॥
सीयल मोटो सर्व वरत में, ते भाख्यो छे श्री भगवंत रे।
ज्यां समकित सहीत वरत पालीयो, त्यां कीयो संसार नों अंत रे ॥ सी० २ ॥
जिण सासण वन अति भलो, ते नंदण वन अनुसार रे।
जिणवर वनपालक तेह में, ते करुणा रस भंडार रे ॥ ३ ॥
विरख तिण वन में सील रूपीयो, तिणरें मूल दिढ समकित जांण रे।
साखा छें महावरत तेहनी, प्रति साखा अणुवरत वखांण रे ॥ ४ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

साधा साधवी श्रावक श्रावका, त्यांरा गुण रूप पत्र अनेक रे।
महुकर करम सुभ बंध नों, परमल गुण वशेख रे॥ ५॥
उत्तम सुर सुख रूप फूलडा, सिव सुख ते फल जांण रे।
तिण सीयल विरख रा जतन करो, ज्यूं वेगी पांमों निरवांण रे॥ ६॥
संसार सीयल थकी उधरे, जो पाले नव कोटी अभंग रे।
तो स्वयंभू रमण जितलों तिस्थों, सेष रही नदी गंग रे॥ ७॥
उत्तराधेन रें सोल में, बंभ समाही ठांण रे।
कीधी तिण विरख नें राखवा, नव बाड दसमों कोट जांण रे॥ ८॥

ढाल : २

दुहा

हिवें कहूं छूं जू जूइ, सील तणी नव वाड।
दसमों कोट ते चिहुं दिसा, माहे ब्रह्मचर्य वरत सार॥ १॥
खेत गांव रे गोरवें, ते न रहे कीधां राड।
रहिसी तो खेत इण विधे, दोली कीधां वाड॥ २॥
ज्यूं ब्रह्मचारी विचरे तिहा, ठांम ठांम छे नार।
तिण कारण इण सील री, वीर कही नव बाड॥ ३॥
बाड न लोपे तेहने, रहे वरत अभंग।
ते वेरागी विरकत थका, ते दिन दिन चढते रंग॥ ४॥
हिवे पेहली बाड मे इम कह्यो, नारी रहें तिहां रात।
तिण ठामे रहिणो नही, रह्यां वरत तणी हुवे घात॥ ५॥
अथवा नारी एकली, भली न संगति तास।
धर्मकथा कहवी नही, वेसी तिणरे पास॥ ६॥
तिण थी ओगुण उपजे, संका पांमें लोक।
आवे अछत्तो आल सिर, वले हुवे वरत पिण फोक॥ ७॥
तिण सू ब्रह्मचारी भणी, रहिणो छे एकंत।
हिवे कुण-कुण जायगां वरजवी, ते सुणजो मतिवंत॥ ८॥

ढाल

[नणदल नी देशी]

भाव धरी नित पालीये, गिरउ ब्रह्म वरत सार हो। ब्रह्मचारी·
जिण थी सिव सुख पांमीये, तू वाड म खडे लिगार हो।
आ पेंहली वाड ब्रह्मचर्य नी* ॥ ब्रह्मचारी १॥

मंजारी संगत रमे, कूकड मूसग मोर हो। ब्र०।
कुसल किहा थी तेहने, मारे घांटी मरोड हो॥ ब्र० आ० २॥
अस्त्री पसु निपूसक जिहां वसे, तिहा रहिवो नहीं वास हो।
तेहनी संगत वारीए, वरत नो करे विणास हो॥ ३॥
हाथ पांव छेदन कीया, कान नाक छेद्या तास हो।
ते पिण सो वरस नी डोकरी, रहिवो नही तिहां वास हो॥ ४॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सझ सिणगार देवांगणा, आई चलावण तास हो।
तिण आगे तो चलीयो नहीं, तो ही रहिणों एकंत वास हो ॥ ५ ॥
अस्त्री हुवें तिहां वासो रहें, कदा चल जाअें परिणांम हो।
जब दिढ रहिणों दोहिलों, भिष्ट हुवें तिण ठांम हों ॥ ६ ॥
सीहं गुफावासी जती, रह्यों वेस्या चित्रसाल हो।
तुरत पड्यों वस तेहनें, गयो देस नेपाल हो ॥ ७ ॥
कुल बालूरो साध थो, तिण भाग्यो वरत रसाल हो।
कोणक री गणका वस पड्यों, ते रूलसी अनंतो काल हो ॥ ८ ॥
मंजारी जिहां उंदर रहें, ते घात पांमे ततकाल हो।
ज्यूं नारी तिहां ब्रह्मचारी रहें, भांगे सीयल रसाल हो ॥ ९ ॥
बाड सहीत सूध पालीयें, पूरीजे मन खांत हो।
आ सीख दीधी छें तो भणी, तूं रहिजे जायगां एकंत हो ॥ १० ॥

ढाल : ३

दुहा

कथा न कहणी नार नी, ते जिण कही दूजी बाड।
जो नारी कथा कहे तेह सूं, हुवे वरत विगाड ॥ १ ॥
जे भूल रह्या ब्रह्म वरत मे, त्यारे विषे नही मन माय।
ते ब्रह्मचारी नें नारी कथा, करवी सोभे नांय ॥ २ ॥

ढाल

[कपूर हुवे अति उजलो ए]

जात रूप कुल देसनी रे, नारी कथा कहे जेह।
वार वार कथा करे रे, तो किम रहे वरत सू नेह रे।
भवीयण नारी कथा निवार, तू तो दूजी बाड विचार रे* ॥ १ ॥
चद मुखी मिरग लोयणी रे, वेणी जाणे भूयग।
दीप सिखा सम नासिका रे, होठ प्रवाली रे रग रे ॥ भ० २ ॥
वाणी कोयल जेहवी रे, हाथ पाव रा करे वखाण।
हंस गमणी कटी सीह समी रे, नाभि ते कमल समाण रे ॥ ३ ॥
कूख छे जेहनी अति भली रे, वले अग उपंग अनेक।
त्यांने वारवार न सरावणा रे, आंणी मन में विवेक रे ॥ ४ ॥
जथातथ कहितां थका रे, दोष नही छे लिगार।
पिण विना काम कहिवा नही रे, नारी रूप वर्ण सिणगार रे ॥ ५ ॥
नारी रूप सरावता रे, बधे छे विषे विकार।
परिणांम चल विचल हुवे रे, हुवे वरत नो विगाड रे ॥ ६ ॥
मली कुमारी नो रूप सांभल्यो रे, छहू राजा रा चलीया परिणाम।
त्यां सगाई करण नें दूत मेलीयो रे, विगड्यो मांहोमाही तांन रे ॥ ७ ॥
मिरगावती रो रूप साभल्यो रे, चडप्रद्योत राजांन।
तिण कोसंबी नगर घेरो दीयो रे, करायो मिनषा रो घमसाण रे ॥ ८ ॥
तिणरे हाथे न आई मिरगावती रे, ते यूही हुओ खुराब।
फिट फिट हुओ लोक में रे, घणी पडाइ आब रे ॥ ९ ॥
पदमोतर राजा नारद कने रे, द्रोपदी रा रूप री सुण बात।
देव कने मंगाई तिण द्रोपदी रे, तो इजत गमाई साख्यात रे ॥ १० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

नारी कथा सुणनें विगड्या घणां रे, त्यांरा कहितां न आवें पार।
ते भिष्ट हुवां वरत भांग नें रे, ते हार गया जमवार रे॥११॥
नीबू फल नीं वारता सुण्यां रे, मुख पांणी मेलें छें ताय।
ज्यूं अस्त्री कथा सुणीयां थकां रे, परिणांम थोडा में चल जाय रे॥१२॥
संका कंखा वितिगछा मन उपजें रे, सीयल वरत पालूं के नांहीं।
तिण सूं नारी कथा करवी नहीं रे, दूजी बाड रें मांहीं रे॥१३॥
वार वार अस्त्री तणी रे, कथा न कहणी तांम।
ए बीजी बाड सुध पालसी रे, ते पांमसी अविचल ठांम रे॥१४॥

ढाल : ४

दुहा

हिवे तीजी बाड में इम कह्यों, ब्रह्मचारी नार सहीत।
एकण सय्या नही बेसवो, ए जिण सासण री रीत॥ १ ॥
अगन कुड पासें रहे, तो प्रगले घृत नो कुभ।
ज्यू नारी संगति पुरुष नों, रहें किसी पर बंभ॥ २ ॥
ब्रह्मचारी जोगी जती, न करें नार प्रसंग।
एकण आसण बेसतां, थावे वरत नो भंग॥ ३ ॥
पावक गालें लोह ने, जो रहें पावक संग।
ज्यूं एकण आसण बेसतां, न रहें वरत सूरंग॥ ४ ॥

ढाल

[अभिया राणी कहे धाय नें]

तीजी बाड हिवे चित्त विचारो, नारी सहित आसण निवारो लाल।
एकण आसण बेठां कांम दीपें छे, ते ब्रह्मचारी ने आछो नही छे लाल।
तीजी बाड हिवे चित्त विचारो॥* १ ॥
एकण आसण बेठा आसंगो थावे, आसगे काया फरसावें लाल।
काया फरस्यां विषे रस जागे, इम करतां जाबक वरत भागे लाल॥ती०२॥
पाट बाजोट सेज्या सथारो जांणो, एहवा आसण अनेक पिछांणों लाल।
तिहा नारी सहीत बेसों मत कोइ, जिण वचनां साह्यो जोई लाल॥ ३ ॥
अस्त्री सहीत बेंसें एकण आसण, तो वले लोक पडे छे विमासण लाल।
अछतोई आल दे करें फितूरो, वले बोलें अनेक विध कूडो लाल॥ ४ ॥
जिन ठामे बेठी हुवे नारी, तिण ठामे न बेंसे ब्रह्मचारी लाल।
बेंसे तो अंतर मूहरत टाली, वेद सभाव संभाली लाल॥ ५ ॥
नारी वेद रा पुदगल तिण थी, नर वेद विकार वेदें जिण थी लाल।
यूंहीज नारी ने पुरष सूं जाणो, मांहोमां वेद विकार पिछांणो लाल॥ ६ ॥
नारी फरस वेद्यां हुवे भोग रो रागी, जब जावे वरत सूं भागी लाल।
इण कारण एकण आसण वेसणो नाही, नारी फरस सूं डरणों मन मांही लाल॥ ७ ॥
श्री राणी सम्भूत वांद्यो आणी मन रागों, कर फरस मुनी तन लागों लाल।
तिण चारित्र खोय नीहांणो कीधो, दुरगत नो पंथ लीधो लाल॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ते देव थई चक्रव्रत हुवों, भोग मांहें ग्रिधी थकों मूंओ लाल।
सातमीं नरक मांहें जाय पडीयों, पाप सूं पूर्ण भरीयो लाल ॥ ९ ॥
नारी फरस वेद्यां सूं ओगुण अनेक, तिण सूं आसण न बेंसणों एक लाल।
संका कंखा वितिगछा उपजें मन मांहीं, सील वरत पालूं के नाहीं लाल ॥ १० ॥
ए वाड लोपी तिण बात विगोई, तिण दीयो ब्रह्म वरत खोई लाल।
ते नरक निगोद मांहें जाय पडीया, ते संसार में रडवडिया लाल ॥ ११ ॥
काचर कोहलो फाड्यां कर फाटों, तिण सूं वाक तूट हुवें आटो लाल।
ज्यूं अस्त्री सूं एकण आसण बेंठां तांम, ब्रह्मचारी रा चलें परिणाम लाल ॥ १२ ॥
मा बेंन बेटी पिण इम हीज जाणों, एकण आसण मतीय बेंसाणों लाल।
त्यां सूं पिण भाग गया छें अनंत, ते भाख्यो छें श्री भगवंत लाल ॥ १३ ॥
इम सांभल तीजी वाड म लोपो, ब्रह्मचर्य में थिर पग रोपो लाल।
तो सिव रमणी नें वेगी वरसों, आवागमण न करसों लाल ॥ १४ ॥

ढाल : ५

दुहा

नारी रूप नही विरखणो, ए जिण कही चोथी वाड।
ए सुध मांन जे पालसी, तिण सफल कीयो अवतार ॥ १ ॥
चित्र लिखित जे पूतली, ते पिण जोयवी नांहि।
केवलग्यांनी इम कह्यो, दशवेकालिक मांहि ॥ २ ॥

ढाल

[मोहन मूंदडी ले गयो]

मनहर इंद्री नार नी रे, तिण दीठांई वधे विकार।
मिरग जाल ज्यूं नर भणी रे, पास रच्यों संसार।
नारीं रूप न जोईये, जोईये नहीं धर राग* ॥ १ ॥
नारी रूप दीवलो रे, भोगी पुरष पतंग।
झपे सुख रे कारणे रे, दाझें कोमल अंग ॥ ना० २ ॥
कांमणगारी कांमणी रे, वस कीयो सर्व संसार।
आखी अणी कोयक रह्यां रे, सूर नर गया सर्व हार ॥ ३ ॥
रूपें रंभा सारिषी रे, वले मीठा बोली हुवे नार।
ते निजर भरे ने निरखतां रे, वरत ने होवे विगाड ॥ ४ ॥
रूप में रूडी देखनें रे, मांहे पडे काम अंध।
सुख मांणे जाणें नहीं रे, ते पाडें दुरगत नों बंध ॥ ५ ॥
रूप घणों रलीयांमणो रे, वले अपछरें रे उणीयार।
ते देखे रीझो किसूं रे, आ मल मूतर रो भंडार ॥ ६ ॥
अशुच अपवित्र नों कोथलो रे, कलह काजल नों ठांम।
बारे श्रोत वहे सदा रे, चरम दीवडी नांम ॥ ७ ॥
देह उदारीक कारमी रे, खिण में भंगुर थाय।
सपत धात रोगाकुली रे, जतन करतां जाय ॥ ८ ॥
अबला इंद्री निरखतां रे, बाधे विषे रस प्रेम।
राजमती देखी करी रे, तुरत डिग्यों रहनेम ॥ ९ ॥
नारी वेद नरपति थयो रे, वले चखू कूसीलीयो ते थाय।
बाड भांग लाखां भवां रे, रलीयो रूपी राय ॥ १० ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सेठ घरे जांमो लीयो रे, नांम इलापुतर जांण।
ते नटवी रूपें मोहीयो रे, ते वसीयो नटवां घरे आंण॥ ११॥
ते वांस उपर चढ़ नाचतो रे, ते मन मांहें हरष न मात।
ओ वांछें धन राय नों रे, राय वांछें इणरी घात॥ १२॥
मणरथ बंधव मारीयो रे, मेणरेहा रो देखी रूप।
मरण पांम्यों तिण जोग सूं रे, वले जाय पड्यों अंध कूप॥ १३॥
अरणक संजम आदर्यो रे, दीधी संसार नें पूठ।
ते नारी रूपें मोहीयो रे, ते नारी लीयो तिण लूट॥ १४॥
एक पत्री आंणों लेजावतां रे, मारग मांहें मिलीयो चोर।
तिणनें पत्री वांण वाया घणां रे, चोर फरसी सूं न्हांख्या तोड॥ १५॥
हिवें एक वांण वाकी रह्यो रे, जब अस्त्री निज रूप दिखाय।
ते चोर तिणरे रूप विलंबीयो रे, जब पत्री वांण सूं दीयो ढाय॥ १६॥
चोर पड्यों ते देखनें रे, पत्री करवा लागों मांण।
चोर कहें गरवे किसूं रे, म्हांरे नारी नेणां रा लागा वांण॥ १७॥
इत्यादिक बहू मांनवी रे, त्यांरो कहितां न आवे पार।
जे नारी रूप में रीझीया रे, ते गया जमारो हार॥ १८॥
नारी रूप कांनें सुणी रे, भिष्ट हुआ छें अनेक।
तो दीठां गुण होसी किहां रे, समझों आंण विवेक॥ १९॥
काची कारी आंख नीं रे, सूर्य सांह्मों जोयां अंध होय।
ज्यूं नारी नेंणा निरखीयां रे, ब्रह्म वरत देवे खोय॥ २०॥
ब्रह्मचारी निरखे मती रे, नारी रूप सिणगार।
आ सीख दीधी छें तो भणी रे, रखे चूकेंला चोथी वाड॥ २१॥

ढाल : ६

दुहा

भीत परेच ताटी आंतरें, जिहां रहिता हुवें नर नार।
तिहां ब्रह्मचारी ने रहिवो नही, ए जिण कही पांचमी वाड ॥ १ ॥
संजोगी पासे रहे, ब्रह्मचारी दिन रात।
तेह तणा सब्द सुण्यां थका, हुवें वरत नी घात ॥ २ ॥
जेवर नेउर खलकती, ते सब्द पडे तिहां कांन।
जब चल जाअे ब्रह्म वरत थी, लागे विपे सूं ध्यांन ॥ ३ ॥

ढाल

[आणद समकित उचरे रे लाल]

वाड सुणों हिवे पांचमी रे लाल, सील तणी रुखवाल ब्रह्मचारी रे।
ज्यं वरत कुसल रहे ताहरों रे, वले नावे अछतो आल।
वाड सुणो हिवे पांचमीं रे लाल* ॥ १ ॥
भीत परेच ताटी आंतरे रे लाल, अस्त्री पुरप रहिता हुवे रात।
तिहां कुण कुण दोपण उपजे रे लाल, ते सांभलजे चितलाय ॥ वा० २ ॥
केल करे निज कत सू रे लाल, ते वोलती जगावे छे कांम।
कुई सब्द करें तिहां रे लाल, रुदन सब्द करे तिण ठांम ॥ ३ ॥
कोयल जिम बोले कत सूं रे लाल, गावे मधूरे साद।
काम वसे हंडि हडि हसे रे लाल, वोल्ती करे उनमाद ॥ ४ ॥
वले थणित क्रंदित सब्द तिहां रे लाल, वले विलपति सब्द हुवे तांम।
तिहा रहितां एहवा सब्द सांभले रे लाल, जब चल जाअे तुरत परिणांम ॥ ५ ॥
गाज तणो सब्द सुणी रे लाल, रित पांमे पपहीया मोर।
ज्यूं भोग समे रा सब्द सांभल्यां रे लाल, लागे वरत ने खोड ॥ ६ ॥
इम सांभल ने रहिवो नही रे लाल, सब्द पडें तिहां कांन।
ए पांचमी वाड पालीयां रे लाल, पामे मुगति निवांन ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

ढाल : ७

दुहा

हिवें छठी बाड में इम कह्यों, चंचल मन म डिगाय।
खाधो पीधों विलसीयों, ते मत याद अणाय ॥ १ ॥
मन गमता भोग भोगव्या, ते याद कीयां गुण नांहि।
ए बाड भांग्यां वरत खंड हुवें, वले अजस हुवें लोक मांहि ॥ २ ॥

ढाल

[रे जीव मोह अनुकम्पा नाणीए]

हाव भाव सब्द नारी तणा, त्यां सुणीयां बधे विषें विकार रे।
एहवा सब्द आगें सुणीया हुवें, त्यांनें याद न करणा लिगार रे।
छठी बाड सुणो ब्रह्मचर्य नीं* ॥ १ ॥
वर्ण गोरादिक सरीर नों, रूप सोभायमांन अतंत रे।
एहवी अस्त्री सूं भोग भोगव्या, चीतारें नही वरतवंत रे ॥ २ ॥
गंध चोवा नें चंदणादिक, रस मधूरादिक अनेक रे।
ते पिण अस्त्री संघातें भोगव्या, ते पिण याद न करणों एक रे ॥ ३ ॥
हाथ पग सुखमाल नारी तणा, सुखमाल सरीर सुखदाय रे।
एहवी अस्त्री सूं कीला करी, ते चीतारें नही मन मांय रे ॥ ४ ॥
सब्द रूप गन्ध रस नें फरस, पांच परकार नां कांम भोग रे।
ते तों अस्त्री संघातें भोगव्या, त्यांनें याद करणा नही जोग रे ॥ ५ ॥
रम्या सारी पासा सोगटादिक, जूवटादिक रांमत अनेक रे।
ते अस्त्री संघातें रांमत करी, त्यांनें याद न करणी एक रे ॥ ६ ॥
सब्द सुणीयां भांगे बाड पांचमीं, रूप सूं चोथी बाड विगाड रे।
फरस सूं भांगे बाड तीसरी, अस्त्री कथा सूं दूजी बाड रे ॥ ७ ॥
एक याद करे यां मांहिलों, तिण सूं भोगें छठी बाड रे।
तो सगलाई याद कीयां थकां, ब्रह्म वरत ने हुवे विगाड रे ॥ ८ ॥
मन गमता कांम भोग भोगव्या, तिण सूं हरखत हुवें सभाल रे।
तिण बाड सहीत वरत खंडीया, पांणी किम रहें फूटां पाल रे ॥ ९ ॥
पूर्वला कांम भोग चीतार नें, कीधी रेणा देवी सूं पीत रे।
जब जिन रिष नें जब न्हांखीयों, रेंणा देवी मास्यो वेंरीत रे ॥ १० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

जहर सहीत चास पीये चालीयां, त्यांरो वाकोई न हुवो वाल रे।
त्यांने घणां वरसां पछे कह्यो, तिण सूं मरण पांम्यो ततकाल रे॥ ११॥
भाई ने पवन भूंल्यो देख ने, भाई ने न जणायों ताय रे।
जणायो जिण दिन घसकों पडे, ततकाल छोडी तिण काय रे॥ १२॥
ए मूंआ जहर याद अणावीयां, पांमी अणचिंतवी असमाध रे।
ज्यूं भागे ब्रह्मचारी सील सूं, कांम भोग नें कीधां याद रे॥ १३॥
कांम भोग ने याद कीयां थकां, संका कंखा उपजे मन माय रे।
सील पालूं के पालूं नहीं, वले जावक पिण भिष्ट थाय रे॥ १४॥
इम सांभल ने नर नारीयां, मत लोपो छठी वाड रे।
तो सील वरत सुघ नीपजे, तिण सूं हुवें खेवो पार रे॥ १५॥

ढाल : ८

दुहा

नित नित अति सरस आहार नें, वरज्यों सातवीं बाड़।
ते ब्रह्मचारी नित भोगवें, तो व्रत नें हुवें बिगाड़ ॥ १ ॥
घृतादिक सूं पूरो भर्यो, एहवो नाणें आहार।
ते धातु दीपावें अति घणीं, जिण सूं वधें छें विकार ॥ २ ॥
खाटा खारा चरपरा, वले मीठा भोजन जेह।
वले विविध पणें रस नीपजें, ते रसना सब रस लेह ॥ ३ ॥
जेहनी रसना वस नहीं, ते चाहें सरस आहार।
ते व्रत भांगे भागल हुवें, खोवें ब्रह्म व्रत सार ॥ ४ ॥

ढाल

[हूँ तो करूं म्हारी वंदना]

रुखो करें आहार उतारतां, कुत बिन्दू चरतो आहार नाणे रे।
एहवो आहार सरस वार वार नें, नित नित न करें ब्रह्मचारी रे।
ए बाड़ म लोपो सातवीं* ॥ १ ॥
जब तुरणी काया रोग रहित छें, ते करें सरस आहारो रे।
ते आहार रूडो नीत परणमें, जिण सूं वधें अतंत विकारो रे ॥ २ ॥
विकार वध्यां ब्रह्म व्रत नें, दोष अनेक विध लागें रे।
वले अंग कुचेष्टा उपजें, जाबक व्रत तिण भांगे रे ॥ ३ ॥
सरस आहार नित चाँप कीधां, व्रत भांगे विणसें केहुं लोपो रे।
संसार में दुखियो हुवें, वधतो जाए रोग नें सोगो रे ॥ ४ ॥
जब तुरणी काया कीणी पड़ी, ते करें सरस आहारो रे।
जो पेट फाटे पर्यो तब वले, वले आवें अजीरण डकारो रे ॥ ५ ॥
वले विविध पणे रोग उपजें, नित सरस आहार कीधां नारी रे।
अकाले मरे वले सोच नें, पछे होय जाए अनंत संसारी रे ॥ ६ ॥
जब तुरणी रो घणीं इण विध मरें, नित कीधां सरस आहारो रे।
तो बुध रो कहिवो किसूं, इणरे पेट तुरत फाटे नारो रे ॥ ७ ॥
दुध दही विविध पकवान नें, सरस आहार भोगवे रहें सूतो रे।
पाप समण कह्यों उतराधेन में, ते साधना थी बिगूतो रे ॥ ८ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

चक्रवत नी रसवती भोगवे, भूदेव ब्राह्मण छोडी लाजो रे।
काम विटंवणा तिण लही, बेन बेटी सूं कीयों अकाजो रे॥ ९॥
सरस आहार तणो लपटी घणो, मंगू आचार्य तेहो रे।
मरने गयों व्यंतरीक में, संजम लारे उडाई खेहो रे॥ १०॥
वले सेलग रांय रिखीसर, सरस आहार तणो हुवो ग्रिधी रे।
ते जिभ्या वस पडीये थके, किरीया अलगी घर दी रे॥ ११॥
कुडरीक रस लोलपी थकों, पाछो घर में आयो रे।
भारी आहार सू रोग उपज मूंओ, पडीयो सातमी नरक में जायो रे॥ १२॥
इत्यादिक बहू साव नें साधवी, लोपी ने सातमी वाडो रे।
ब्रह्मचर्य वरत खोय ने, गया जमारो हारो रे॥ १३॥
सनीपातीयो दूध मिश्री पीये, तो सनीपात वधतो देखो रे।
ज्यू ब्रह्मचारी ने सरस आहार सूं, विकार वधे छे वशेखो रे॥ १४॥
इम सांभल ब्रह्मचारीयां, नित भारी म करजो आहारो रे।
सील वरत सुध पाल ने, आवा गमण निवारो रे॥ १५॥
सरस आहार तो जीहांई रह्यों, लूखोई पिण आहारो रे।
चांप चांप दिन प्रतें करणों नही, ते कहिसूं आठमी वाडो रे॥ १६॥

ढाल : ९

दुहा

आठमीं वाड में इम कह्यों, चांप चांप न करणो आहार।
प्रमांण लोप इधको करें, तो वरत नें हुवें विगाड ॥ १ ॥
अति आहार थी दुख हुवें, गलें रूप बल गात।
परमाद निद्रा आल्स हुवे, वले अनेक रोग होय जात ॥ २ ॥
अति आहार थी विषें वधें, घणोइज फाटें पेट।
धांन अमाउ उरतां, हांडी फाटें नेट ॥ ३ ॥
केइ बाड लोपे विकल थकां, करसी इधक आहार।
त्यांरे कुण कुण ओगुण नीपजें, ते सुणजो विसतार ॥ ४ ॥

ढाल

[विमल केवली एक रे चम्पा नगरी]

भर जोवन रे मांहि रे, देह निरोगी हुवें।
मांहे तेजस रो जोरो घणों ए ॥ १ ॥
ते चांपे करे आहार रे, ते पचें सताब सूं।
तो विषें वधें तिण रे घणी ए ॥ २ ॥
जब गमता लागें भोग रे, ध्यांन माठो रहे।
वले गमती लागें अस्त्री ए ॥ ३ ॥
हूं सील पालूं कें नांहि रे, ए संका उपजें।
पछें भोग तणी वंछा हुवें ए ॥ ४ ॥
मोंनें लाभ होसी कें नांहि रे, सील वरत पालीयां।
ए पिण सांसो उपजे ए॥ ५ ॥
जब भिष्ट हुवें वरत भांग रे, भेष मांहें थकां।
केइ भेष छोडी हुवें गृहस्थी ए ॥ ६ ॥
जे चांपे कीयां आहार रे, पचें आछी तरें।
तो इसडो अनरथ नीपजें ए ॥ ७ ॥
के कां रें हुवें रोग रे, आहार इधको कीयां।
वधे असाता वेदनी ए ॥ ८ ॥
फाटें पेट अतंत रे, बंध हुवें नाडीयां।
वले सास लेवे अबखो थकों ए ॥ ९ ॥

वले हुवे अजीरण रोग रे, मुख वासें बूरों।
पेटें भालें आफरो ए॥ १०॥
वले उठें उकाला पेट रे, चालें कलमली।
वले छूटें मुख थूकणी ए॥ ११॥
डील फिरें चकडोल रे, पित घूंमे घणां।
चालें मुजल वले मुलकणी ए॥ १२॥
आवें माठी घणी डकार रे, वले आवें गूचरका।
जब आहार भाग उलटो पडें ए॥ १३॥
वले चाले मरोडा पीड रे, पेट दुखें घणो।
लोही ठांण फेरो हुवें ए॥ १४॥
वले नाड्यां में हुवें रोग रे, ते आहार झेलें नहीं।
ज्यूं खाये ज्यूं नीकले ए॥ १५॥
वले ताव चढ़ें ततकाल रे, बंघ हुवें मातरो।
आहार इधको कीयां थका ए॥ १६॥
घणी देही पडे कथाय रे, आहार भावें नही।
जब मांस लोही दिन दिन घटें ए॥ १७॥
खीण पडें जब देह रे, निबलाई पडें।
हाथ पगां सोजों चढे ए॥ १८॥
जब ठमे अतीसार रे, ओषघ करें घणां।
दिन दिन फेरो इधको हुवे ए॥ १९॥
पछे जावक छूटे अन रे, चूकें धर्म ध्यान थी।
वले बोलें घणों दयामणो ए॥ २०॥
वले हुवे सांस ने खास रे, जलोदर वधें।
सूंन बूंन देही पडे ए॥ २१॥
वधे अपचों रोग रे, आहार पचे नही।
ओषघ को लागे नही ए॥ २२॥
वले उपजें दाह सरीर रे, बलण लागी रहे।
पेट सूल चालें घणी ए॥ २३॥
वेदन हुवें आंख नें कांन रे, खाज हुवें घणीं।
वले रोग पीतंजर उपजें ए॥ २४॥
इत्यादिक बहु रोग रे, उपजें आहार थी।
कहि कहि नें कितरो कहूं ए॥ २५॥

ए हुवै आहार थी रोग रे, पछै ताव तै खस तां।
कूड कपट बहु करतां ए ॥ २६ ॥

जे खावे घणो आहार रे, तिणरो पेट दो।
त्यांनें ताव वेदना वेहेदे ए ॥ २७ ॥

कोइ साध रहै एम रे, जो आहार इसको करै।
तो करां कुंडे तिन करै ए ॥ २८ ॥

जो निरतें रहै अतेक रे, तूं आहार इस्यौं करै।
तो ही कहीं न जावै हेळो ए ॥ २९ ॥

कोइ पूरन भरै नित पेट रे, इसको चौर नें।
जब पांणी पूरो मावै नहीं ए ॥ ३० ॥

जब तिरखा लागै अनंत रे, पेट फाटै घणों।
जब उत्कण्ठ करै घणां ए ॥ ३१ ॥

वले खावें आंवला ढीक रे, जद नहीं ठेहरै।
उलक घणी वले लेहवै ए ॥ ३२ ॥

इसडी पडै विपत रे, तो ही छिपी पेट रो।
तिण अनुप छोडै नहीं ए ॥ ३३ ॥

जब रोग पीडै आंग रे, मरै नाठो डरै।
श्री जिन धर्म पलाय गें ए ॥ ३४ ॥

पछै ज्याई गति रे माँहि रे, जनम मरै घणों।
अनंत काल दुख भोगवै ए ॥ ३५ ॥

कुंडरीक रे उदगों रोग रे, आहार इसको कीधों।
ते मरनें गयो नरक सातमीं ए ॥ ३६ ॥

हांडी फाटै पेट रे, इसको उदियो।
तो पेट न फाटै किन विधें ए ॥ ३७ ॥

ब्रह्मचारी इन न्याय रे, इसको नहीं दीजियें।
ऊणोदरीए तप करो ए ॥ ३८ ॥

ए उत्तम ऊणोदरी तप रे, करतां दोहिली।
वैराग बिनां हुवै नहीं ए ॥ ३९ ॥

ए कही आठमीं वाड रे, ब्रह्मचारी सुणी।
चोखे चित्त आदरो ए ॥ ४० ॥

ढाल : १०

दुहा

नवमीं बाड ब्रह्मचर्य नी, विभूषा न करणी अंग।
विभूषा कीयां थकां, थाये वरत नों भंग॥ १ ॥
सरीर विभूषा जे करे, ते करे तन सिणगार।
वले रहे घटास्या मठारीया, त्या लोपी ब्रह्म व्रत बाड॥ २ ॥
सरीर विभूषा जे करें, ते संजोगी होय।
ब्रह्मचारी तन सोभवें, ते कारण नही कोय॥ ३ ॥
वाड भांग्यां किण विध रहे, अमोलक सील रतन।
तिण सूं ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य नां, किण विध करें जतन॥ ४ ॥

ढाल

[धीज करें सीता सती रे लाल]

सोभा न करणी देह नी रे लाल, नही करणो तन सिणगार ब्रह्मचारी रे।
पीठी उगटणों करणो नही रे लाल, मरदन नही करणो लिगार ब्रह्मचारी रे।
ए नवमी बाड ब्रह्म वरत नी रे लाल* ॥ १ ॥
ठंडा उन्हा पांणी थकी रे लाल, मूल न करणो अंगोल।
केसर चंदण नही चरचणा रे लाल, दांत रगे न करणा चोल॥ए॰२॥
वहू मोलां ने उजला रे लाल, ते वसत्र ने पेहरणा नांहि।
टीका तिलक करणा नही रे लाल, ते पिण नवमी वाड रे मांहि॥ ३ ॥
कांकण कुंडल ने मूंदडी रे लाल, वले माला मोती ने हार।
ते ब्रह्मचारी पेंहरें नही रे लाल, वले गेहणा विवध परकार॥ ४ ॥
नही रहणो घटास्यों मठारीयो रे लाल, केसादिक ने समार।
वले वसत्रादिक पिण पेहरने रे लाल, मूल न करणो सिणगार॥ ५ ॥
विभूषा अंग छें कुसील नों रे लाल, तिण सूं चीकणा करम बंधाय।
तिण सूं पडें संसार सागर मझे रे लाल, तिणरो पार वेगों नहीं आय॥ ६ ॥
सिणगार कीयां रहे तेहनें रे लाल, अस्त्री देवे चलाय।
भिष्ट करें सील वरत थी रे लाल, ठालो कर देवें ताय॥ ७ ॥
रतन हाथे आयो रांक रे रे लाल, ते दीठां खोस ले राय।
ज्यूं ब्रह्मचारी विभूषां कीयां रे लाल, अस्त्री सील रतन खोसे ताय॥ ८ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ब्रह्मचारी इम सांभली रे लाल, सील विभूषा मत करजे सिंगार।
ज्यूं सीयल रतन कुसलें रहें रे लाल, तिण सूं उतरें भव जल पार॥ ६॥

●

ढाल : ११

दुहा

ए नव वाड कही ब्रह्मचर्य री, हिवें दसमों कहे छे कोट।
ए वाड लोपी वीटे रह्यो, तिणमें मूल न चाले खोट॥ १॥
कोट भांगा जोखो छे वाड ने, वाड भांगा वरत ने जांण।
तिण सूं कोट भिलण देवे नही, ते डाहा चतुर सुजांण॥ २॥
कोट भांग वघारा पडीयां थकां, वाड भांगता किती एक वार।
तिण सूं वशेष कोट रो, करवो जतन विचार॥ ३॥
सेर कोट सेठो हुवे, तो चिंता न पामें लोक।
ज्यूं अडिग कोट ब्रह्मचर्य रो, तिण सूं सील न पामें दोख॥ ४॥
ते कोट करणो किण विघ कह्यों, किण विध करणो जतन।
ते ब्रह्मचारी विवरा सुध, साभलजो एक मन॥ ५॥

ढाल

[डाभ मुंजादिक नी डोरी]

मन गमता सब्द रसाल, अण गमता सब्द विकराल।
गमता सब्द सुण्यां नही रीझें, अण गमता सुण्यां नही खीजें॥ १॥
काला नीला राता पीला घोला, पाच परकार ना रूप बोहला।
राग नाणें भला रूप देख, माठा देख न आंणणो घेख॥ २॥
गध सुगंध दुगध छे दोय, गमता अण गमता सोय।
गमता सू नही रति सोय, अण गमता सूं अरति न कोय॥ ३॥
रस पाच परकार नां जाणों, त्यांरा स्वाद अनेक पिछांणो।
गमता सूं राग न करणो, अण गमता सूं धेष न धरणो॥ ४॥
फरस आठ परकार नां ताम, त्यांरा जूआ जूआ छे नांम।
रागी गमता रो अण गमता रो घेखी, यां दोयां सूं रहणो निरापेखी॥ ५॥
सब्द रूप गन्ध रस फरस, भला भूंडा हलका भारी सरस।
यां सूं राग धेष करणो नांही, सील रहसी एहवा कोट मांही॥ ६॥
सील वरत छे भारी रतन, तिणरा किण विध करणा जतन।
सगला व्रतां मांहे वरत मोटो, तिणरी रिख्या भणी कह्यो कोटो॥ ७॥
जो सब्दादिक सू हुवे राजी, तो कोट जाओ छे भाजी।
कोट भांगां वाड चकचूरो, ब्रह्म वरत पिण पर जाओ पूरो॥ ८॥

तिण सूं कोट रा करणा जतन, तो कुसले रहे सील रतन।
टल जाअें सगल दोख, जब पांमें अविचल मोख॥ ९ ॥
इम सांभल नें ब्रह्मचारी, तूं कोट म खंडें लिगारी।
ज्यूं दिन दिन इधको आणन्द, इम भाख्यों छें वीर जिणंद॥ १० ॥
ए कोट सहित कही नव बाड, ते सांभल नें नर नार।
इण रीत सूं ब्रह्म वरत पालों, ज्यूं मिटे सर्व आल जंजालो॥ ११ ॥
उतराधेन सोलमां मझारों, तिणरो लेई नें अनुसारो।
तिहां कोट सहीत कही नव बाड, ते संखेप कह्यों विसतार॥ १२ ॥
इगतालीसें नें समत अठार, फागुण विद दसमीं गुरवार।
जोड कीधीं पादू मझार, समझावण नें नर नार॥ १३ ॥

●

रत्न : २३

समकित री ढालां

ढाल : १

[म्हारो मनडो उमाह्यो प्रभुजी नें बादवा]

राय सिद्धार्थ नें घर जनमिया, रांणी तिसलादे अंग जात।
छेहला तीर्थंकर श्री महावीर जी, चावा तीनूं लोक विख्यात।
श्री वीर जिणेश्वर सुणज्यो मोरी वीनती* ॥ १ ॥

त्यां अथिर संसार छोडी संजम लियो, तोड्या घनघातिया कर्म।
तीरथ चलायो हो केवली थयां पछे, परूपियो निरवद्य धर्म ॥ श्री० २ ॥
चवदें सहस्र मुनिश्वर तारिया, वले आर्यां छतीस हजार।
पाप अठारे हो सर्व पचखाय नें, उतार्‍या भव पार ॥ ३ ॥
एक लाख गुणसठ सहस्र श्रावक हूवा, त्यांनें कीया बारें व्रत धार।
श्रावका तीन लाख अठारे हजार नें, त्यांरो पिण कीयो उद्धार ॥ ४ ॥
ग्यांन दरसण चारित तप निरमला, ए शिवपुर मारग च्यार।
ए साध श्रावक नो धर्म बताय नें, पहुंता मुक्त मझार ॥ ५ ॥
अधेन अठावीसमां उत्तराधेन में, मोष मार्ग कह्या च्यार।
ग्यांन दरसण चारित ने तप विनां, नहीं श्रद्धुं धर्म लिगार ॥ ६ ॥
देव अरिहंत निर्ग्रंथ गुर मांहरे, केवलीए भाखित धर्म।
ए तीनूंई तत्व सेंठा कर झालिया, ओर छोड दीया सहु भर्म ॥ ७ ॥
ए तीनूं ही तत्व मांहि जिणजी री आगन्या, मैं कर लीधी परमांण।
धर्म शुक्ल ध्यांन ध्यावे आ आत्मा, हूं इम पालूं तुम आंण ॥ ८ ॥
केवल ग्यांनी भरत में को नहीं, वले पूर्व ग्यांन विच्छेद।
कुबधी कदाग्रही उठ्या अति घणा, त्यां घाल्यो धर्म में भेद ॥ ९ ॥
वले उंचा तो कुल नां हो मोटा राजव्यां, त्यां छोड दीयो जिण धर्म।
वले लिंगडा नें लिंगडी साधु रा भेष में, त्यांरो पिण निकल गयो भर्म ॥ १० ॥
द्रव्य जेनी केइ साधु कहावतां, त्यां सूं चरचा कीजे जाय।
त्यां शरणो लियो हो सगला दरशण्या तणो, त्यांने किम आणिजे ठाय ॥ ११ ॥
जिण धर्म माहे साहेबा विखो पड्यो, मांहें राजा न दीसे एक।
गुण विनां भेष वध्यो भगवांन रो, त्यांरी सरखा चाल अनेक ॥ १२ ॥
एक एक री उतारे मांहोमांहि आसता, वंदना रा सूंस दिराय।
न्याय री चरचा रो कांम पड्यां थकां, झूठ बोलें एक होय जाय ॥ १३ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

त्यांरी सरधा रो मुंह माथो को दीसें नहीं, चले बोलें घणा विपरीत।
पिण मांहरे तो आधार छे प्रभु ए बडो, एक सूतर री परतीत॥ १४॥

ढाल : २

[कद ठाकुर फुरमायो]

देव तणो आचार न जाणें, गुर री खबर न कांई रे।
धर्म तणो तूं नांम न जांणे, तूं राखे घणी ठसकाई रे।
प्राणी समकित किण विध आई रे॥ १ ॥

नव तत्व नां भेद न आवे, कूडी करे लपराई रे।
धर्म तणो धोरी होय बेठो, तोमें दीसे घणी भोलाई रे॥ प्रा० २ ॥
जीव न जाणे अजीव न जांणें, पुन्य नी पारखा नांई रे।
पाप तणी प्रकृति नही धारी, थे कीधी घणी नहुराई रे॥ ३ ॥
आश्रव नाला छूटा नही देखे, संवर सुमता नांई रे।
निरजरा तणो निरणो नही कीधो, कठे गइ चतुराई रे॥ ४ ॥
बंध मोष वेहू नो जोडो, तिणरी समझ न पाई रे।
समदिष्टी तू नांम धरावे, तोनें कुगुरां दीयो भरमाई रे॥ ५ ॥
हाथ जोडी नें समकित लेवे, कुगुरां पासे जाई रे।
अजाण पणो मिटियो नही अंतर, मिथ्यात दीयो बोसराई रे॥ ६ ॥
न्याय री बात हृदय मे नहीं वेसें, थोथी करे बडाई रे।
आग्या वारे धर्म परूपें, बूड गई चतुराई रे॥ ७ ॥
करण जोग भांगा नही धास्या, वतां री खबर न कांई रे।
अव्रत माहिं धर्म परूपें, या ही नरक री साई रे॥ ८ ॥
पाप धर्म नो नही निवेडो, अकल गई दपटाई रे।
जब तोनें कोइ जांण पणो पूछे, तो उलटी करे लडाई रे॥ ९ ॥
पोथा पानां काढ ने बेठो, भोला नें दे भरमाई रे।
कूड कपट कर फंद मे पाडे, ते मांडी पेट भराई रे॥ १० ॥
सांगधारी नें साधज सरधें, पडे पगा मे जाई रे।
तिखुत्ता सूं करे वंदणा, मन मे हरषित थाई रे॥ ११ ॥
सावद्य करणी सू पापज लागे, तिण री विगत न पाई रे।
निरवद्य मे धर्म पुन्य दोनूंई, ते पिण अटकल नांई रे॥ १२ ॥
द्रव्य खेतर काल भाव न धास्या, गुण विण वस्तु न कांई रे।
च्यार निषेपा नो निरणो नही कीधो, ते मिनष जमारो पाई रे॥ १३ ॥
सगला मे तू बडेरो बाजें, मन मे मगज न माई रे।
न्याय मार्ग तोनें किण विध आवे, कुगुरा दीया डंक लगाई रे॥ १४ ॥

सरधा दुर्लभ जिणेश्वर भाखी, सूतर मे दीयो जताई रे।
चतुर हुंता त्यां निरणो कीधो, ते मिनष जमारो पाई रे॥ १५॥
जीव अजीव ए छ द्रव्य कीधा, नव कीया न्याय बताई रे।
समदिष्टी ओलखिया अंतर, त्यांने नही सके देव डिगाई रे॥ १६॥

ढाल : ३

दुहा

नव पदार्थ ओलख्या विनां, समकित नही तिण मांहि।
समकित विण साधपणो नही, सावपणा विण शिवपुर नाहिं ॥ १ ॥
तिण सूं वशेष समकित तणी, खप करज्यो भव जीव।
समकित सहीत करणी करे, त्यारे निश्चय मुक्ति री नीव ॥ २ ॥

ढाल

[पायो मिनष जमारो मति हारो]

देव गुर धर्म री पारखा करो, पखपात मांहि कोइ मति परो।
छोडो कुगुरां तणी लारो, सगलां मांहें समकित सारो* ॥ १ ॥
भावे जितरा ताप तपो, वले भावे जितरा जाप जपो।
पिण समकित विण न हुवे उद्धारो ॥ स० २ ॥
मीढी अनेक माडी देखो, आंक विनां नही लागे लेखो।
ज्यूं आका जिसी समकित धारो ॥ ३ ॥
साधु रो आचार पूरो पाले, दोषण सगला विव सू टाले।
ते समकित विण नही पामें पारो ॥ ४ ॥
केइक उजाड मांहे रहे, सी तापादिक नां दुख सहे।
पिण समकित विण पूरो अंधारो ॥ ५ ॥
सूस आंखडी सांकडा कीधा, वले साधु श्रावक ना व्रत लीधा।
समकित विण वरत नही लिगारो ॥ ६ ॥
उणा पूर्व दश भण बाजे ग्यांनी, पिण समकित विण छे अग्यांनी।
तिणरे तत्व तणो नहीं विचारो ॥ ७ ॥
श्रेणिक राय घर मे बेठों, ते समकित मांहि रह्यो सेठो।
तिण सू होसी तीर्थंकर अवतारो ॥ ८ ॥
अरणक ने वले कांम देवो, त्यां धर्म तणी नही छोडी टेवो।
ज्यां कने देव गया हारो ॥ ९ ॥
सस्कृत प्राकृत भणियो टीका, पिण समकित विण सगला फीका।
तिण सू तत्व तणो निरणो धारो ॥ १० ॥
व्याकरण भणियो मोटें मंडाण, वले षट विव भापा रो जांण।
पिण तत्व विनां सगला छारो ॥ ११ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

विद विद पाठ करे नाचे, त्यांरा अर्थ करे शुद्ध विचारे।
　　　　　　　　　　जिन मत तत्त्व नांहि तुरो अंधारो॥१२

केइ मन मन में उलटा दूडे, उंधा अर्थ करे वेंन कूडे।
　　　　　　　　　　ते वर्म कहे जिन आज्ञा बारे॥१३

सरधा दुर्लभ जिन भाखी, उतराधेन आदि देखो साखी।
　　　　　　　　　　ज्यांरा होसी ते करसी विचारे॥१४

अनन्ता जीव मिथ्यात सेवी डूबे, ते गोथा खासी जीव होय कूबो।
　　　　　　　　　　इसडो समकित नो आधारो॥१५

मिथ्यात्व का परकारों, त्यांमें एक रह्यो बाकी सारो।
　　　　　　　　　　तो ही समकित पांमे पेंड न्यारो॥१६

रत्न : २४

गणधर सिखावणी

ढाल : १

[सत्य कोइ मत राखज्यो]

श्री वीर कहे सुण गोयमा, इण जीव तणी नही आदो रे।
हिवें नीठ नीठ नर भव लह्यो, समो एक म कर परमादो रे॥ श्री०* १ ॥
वृक्ष तणो जिम पानडो, पंडुर थइ झड जायो रे।
इम अथिर आउखो मिनष रो, खिण मे वेरंग थायो रे॥ २ ॥
डाभ अणि जल जेहवो, वले अथिर सुपना री माया रे।
ज्यूं अथिर आऊखो मिनष रो, खिण में धूल धांणी हुवे काया रे॥ ३ ॥
अथिर धजा देवल तणी, अथिर पांणी में पतासो रे।
ज्यूं अथिर आऊखो मिनष रो, जेहवो चेर बाजी रो तमासो रे॥ ४ ॥
अथिर वेग नदी तणो, वले अथिर बादल नीं छायां रे।
ज्यूं अथिर आऊखो मिनष रो, जेहवी जुवारी री माया रे॥ ५ ॥
अथिर वचन का पुरष रो, वले अथिर सीख अवनीतो रे।
ज्यूं अथिर आऊखो मिनष रो, अथिर नारी री प्रीतो रे॥ ६ ॥
अथिर फूस नों तापवो, अथिर उन्हाला रो मेहो रे।
ज्यूं अथिर आऊखो मिनष रो, अथिर कन्या धन जेहो रे॥ ७ ॥
अथिर रंग पतंग रो, ते जातां न लागे वारो रे।
ज्यूं अथिर आऊखो मिनष रो, जांणें आंख तणो टिमकारो रे॥ ८ ॥
अथिर धनुष आकाश रो, अथिर कुंजर नो कानो रे।
ज्यूं अथिर आऊखो मिनष रो, जेहवो संध्या रो वांनो रे॥ ९ ॥
अथिर परपोटो पांणी तणो, अथिर झालर रो झिणकारो रे।
ज्यूं अथिर आऊखो मिनष रो, जांणे विजली तणो चमतकारो रे॥ १० ॥
एहवो अथिर आऊखो मिनष रो, तिणमें घणो उदवेगो रे।
इम जांण परमाद ने परहरो, मरण आवे छे वेगो रे॥ ११ ॥
मिनष तणो भव पाय नें, आंणे वेराग संवेगो रे।
काल अनंतो दोहिलो, वार वार न पांमसी वेगो रे॥ १२ ॥

●

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ढाल २

[आऊखो टुटा नें साधो को नहीं रे]

श्री जिणवर गणधर मुनिवर नें कहे रे, एक समो पिण मत कर परमाद रे।
सुमति गुप्ति आठूं सुध पालजे रे, ज्यूं तोने उपजे परम समाध रे॥ १॥
भूसर परमांणें इरिया सोधजे रे, ऊंची तिरछी दिष्टी म जोय रे।
दश बोल वरजे तूं मारग चालतो रे, ज्यूं जीव तणी हिंसा नही होय रे॥ २॥
भाषा विचारी निरवद बोलजे रे, करकस कठोर मूल मत बोल रे।
सावद्य भाषा मत बोले सरवथा रे, मीठो बोले तूं पेहली तोल रे॥ ३॥
दोष बयांलीस सगला टाल ने रे, असणादिक वेहरे च्यारूं आहार रे।
पांच दोषण टाले मंडला तणा रे, ज्यूं तोनें पाप न लागे लिगार रे॥ ४॥
वस्त्र पातर लेतां मेलतां रे, जोय पूंजे तू रूडी रीत रे।
हिंसा हुवे तिम कीजे मती रे, दया सूं राखे अंतरंग पीत रे॥ ५॥
उचार पासवणादिक नें परठतां रे, जायगां जोय ने परठे ताम रे।
त्यां पिण जयणा कीजें जीव नी रे, सिझे निकेवल आतम काम रे॥ ६॥
मन वचन काया शुद्ध तूं गोपवे रे, ज्यूं तोने मूल न लागे पाप रे।
ए आठूंई प्रवचन पाले निरमला रे, तो मिट जाय जनम मरण संताप रे॥ ७॥
जयणा सूं चाल्यां जयणा सूं बोलियां रे, जयणा सूं कीधां शुद्ध आहार रे।
जिण आग्या सहित करणी कीयां रे, तोने पाप न लागे मूल लिगार रे॥ ८॥
पांच महाव्रत पाले निरमला रे, वले पाले तू पांच आचार रे।
पांचूं इंद्री नें वस कर राखजे रे, तेवीसूंई विषय परिनिवार रे॥ ९॥
छ काय जीवां री जयणा राखजे रे, निरभय रहिजे भय सात निवार रे।
मद रा थांनक आठूंई परहरे रे, वले शील तणी पाले नव वाड रे॥ १०॥
वीस थांनक वरजे असमाधिया रे, इकवीस सबला दोषण टाल रे।
बावीस परिषह जीते जुगत सूं रे, सतावीस साधु रा गुण पाल रे॥ ११॥
तीसां बोलां बंधे महा मोहणी रे, तीसूंई टाले विसवावीस रे।
जोग संग्रह नां बोल बतीस छे रे, टाले तूं आसातना तेतीस रे॥ १२॥
आहार सेज्या नें वस्त्र पातरा रे, लीजे बयांलीस दोषण टाल रे।
अनाचार विध टाले सरवथा रे, श्री जिण आग्या चोखी पाल रे॥ १३॥
सेवा भक्ति कीजे शुद्ध साध री रे, अणाचारी सूं रहिजे दूर रे।
ए दोनूं सीखामण सेंठी धारजे रे, ज्यूं कर्म आठूंई हुवे चकचूर रे॥ १४॥

प्रीति पुराणी विणसे क्रोध सू रे, मांन सूं विनय तणो हुवे नास रे।
मित्रीपणो विणसे माया कपट सूं रे, लोभ सू सर्व तणो हुवे नास रे॥ १५॥
क्रोध मांन माया नें लोभ सूं रे, लागे छे निश्चे पाप कर्म रे।
तिण कर्मा सूं भमण करे संसार में रे, पांम न सके श्री जिण धर्म रे॥ १६॥
ए च्यारूंई चंडाल तणी छें चोकडी रे, तिण सूं तप संजम नो हुवे नास रे।
इहलोक परलोक विगडे एह थी रे, त्यानें मत राखे लगता पास रे॥ १७॥
शब्द रूप गध रस फर्श छे रे, राग धेख मत धरज्यो कोय रे।
पांचू इन्द्री ने वस कीयां थकां रे, संवर निरजरा दोनूं होय रे॥ १८॥
शब्द रूप रस गध फर्श छे रे, गमता सूं राग म धरो लिगार रे।
धेख मत धरज्यो भडा ऊपरे रे, ज्यूं पामें भव सागर रो पार रे॥ १९॥
शरीर जीरण पडे छें तांहरो रे, केश पण्डूर पडे छे वशेख रे।
इन्द्री पिण हीणी पडे छे ताहरी रे, परमाद मत कर तू समो एक रे॥ २०॥
कपडा रो तार तूटे इता विचे रे, असंख्याता समा वहे अगाध रे।
एहवो सूक्ष्म समो छे काल रो रे, एक समो पिण मत करजे परमाद रे॥ २१॥
एक समा तणा परमाद में रे, सात आठ लागे पाप कर्म रे।
प्रदेश अनंता एकीका कर्म नां रे, त्यां कर्मां सू खोवे श्री जिण धर्म रे॥ २२॥
ज्यां लग पाचं इंद्री परवरी रे, जरा न व्यापी तोने आय रे।
वले देही में रोग न फेल्यो ज्यां लगे रे, कर्म काटे ए अवसर मांय रे॥ २३॥
जोड कीधी गणधर सीखामणी रे, केलवा सहर माहिं हित ल्याय रे।
समत अठारे तयांलीस में रे, पोष महिना सुध पख माय रे॥ २४॥

रत्न : २५

दांन री ढाळां

ढाल : १

[पूज पाषड न देता छड]

दान थी दलदर दूर, दान थी दोलत पूर आज हो।
दान थी जोत कांति हुवे डील नी जी ॥ १ ॥

दांन सू पामे रिध, दांन सूं पामे विरध आज हो।
दांन सू दीपे तीरथ च्यार मे जी ॥ २ ॥

भरिया रिध भडार, ते जावा ने हुवा तैयार आज हो।
दांन थी थिर लिखमी रहे तेहनी जी ॥ ३ ॥

दान सू रहे मुख सनूर, रोग सोग रहे सहु दूर आज हो।
दान सू कदेय न आवे आपदा जी ॥ ४ ॥

दान सू करे परत ससार, दांन सू पामे भव पार आज हो।
दांन सूं पामे शिव सुख सासता जी ॥ ५ ॥

दान सू पामे सर्व थोक, दांन सूं जावे देवलोक आज हो।
दांन सू जावे सिद्ध गीत पांचमी जी ॥ ६ ॥

दान सू टले कर्मा री छोत, वले बावे तीर्थंकर गोत आज हो।
दान थी पामे पदवी मोटकी जी ॥ ७ ॥

दान थी पावे नव ही निधांन, दान सुखा री खांन आज हो।
मन रा मनोरथ सीझे दांन थी जी ॥ ८ ॥

इसो छे सुपातर दान, नहीं जिण तिणने आसान आज हो।
कृपण ने दांन सुपातर दोहिलो जी ॥ ९ ॥

मिले सुपातर आंण, जब मन में उजम आण आज हो।
अडलक दांन दीया उद्धरे जी ॥ १० ॥

भरत नरेशर जांण, पाछल भव दीयो दान आज हो।
चक्रव्रत पदवी पांमी दांन थी जी ॥ ११ ॥

सुबाहु कुमर आदि जाण, सुखे सुखे जासी निरवाण आज हो।
परत संसार कीधो दान थी जी ॥ १२ ॥

दीयो रेवती पाक, तिण सूं वीरजी हो गया चाक आज हो।
परत संसार करी ने उद्धरी जी ॥ १३ ॥

संख नामें राजांन, दीयो धोवण रो दान आज हो।
तीर्थंकर हुवा जिण बावीसमां जी ॥ १४ ॥

ढाल : २

दुहा

दांन शील तप भावना, ए च्यारूं जिण आग्या सहीत।
जे समदिष्टि जिण धर्म में, याने ओलखो रूडी रीत॥ १ ॥
कडुवा फल छे कुपातर दांन रा, तिणसूं भ्रमण करे संसार।
आछा फल छे सुपातर दान रा, तिणसूं पामे भव पार॥ २ ॥
दांन सुपातर ओलख्यो, तो ही देता धूजे हाथ।
कुपातर दांन दे हर्ष सू, आ इचरज वाली वात॥ ३ ॥
पाप जांणे कुपातर दांन में, सुपातर दान मे जाणे छे धर्म।
तो ही सुपातर दांन मे कृपण हुवे, तिणरे बहुत भारी छे कर्म॥ ४ ॥
कर्म बान्ध्या छे भव पाछिले, ते उदय हुवा छे आय।
ते छते जोग मिलिया थकां, पातर दांन दीयो नही जाय॥ ५ ॥
दातार ने कृपण तणी, ठीक पाडे वुधवान।
हिवे ओलखाउं कृपण भणी, सुणो सुरत दे कांन॥ ६ ॥

ढाल

[नणदल हे नणदल]

दांनान्तराय निकाचित बंध्यो, वले मोह कर्म उदय जोर। भवियण।
तिण कर्मा कर कृपण हुवो, त्यांने देवण रो नही कोड॥ भवियण।
कृपण ने दान देणो दोहिलो ॥ १ ॥

घर रो माल देणो तो दोहिलो, ओरा आडा अतराय ने तयार। भ०।
इणरा कृपणपणा रा प्रताप थी, संवलो न सुझे लिगार॥ भ० कृ० २॥

सुपातर दांन में कृपणपणो, कुपातर दांन मांहि सूर।
ते दोनूं प्रकारे हुवे दलद्री, त्या सू दुरगति नही छे दूर॥ ३ ॥

कृपण ने दांन देता थकां, कोइ देख लेवे दातार।
तो सरधा घटे तिणरे दांन री, करतो रहे परत संसार॥ ४ ॥

कोइ कृपण साधा रे पातरे, जो देखे सरस आहार।
तो दोप अणहुंतो जांणे साध में, ऊधो सूझे तिण वार॥ ५ ॥

कोइ दांन दे उलट परिणाम सू, असणादिक सरस आहार।
ते निजर पडे कृपण तणे, तो मूढो दे तुरत विगाड॥ ६ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

पोते वेरावणो तो जिहाइ रह्यो, देखणो पिण जिहां रह्यो तांम।
सरस आहार वेहस्यो काने सुणे, तो विगडे तुरंत परिणांम ॥ ७ ॥
कृपण रो कृपणपणो, कृपण नही जाणे लिगार।
आपो न सूझे आपरो, हूं सूम छूं के दातार ॥ ८ ॥
साधु समचे निपेधे कृपणपणो, समचे करे दान रा गुण ग्रांम।
ए दोनूं वात कृपण सुणे, गमती न लागे तांम ॥ ९ ॥
कृपण भाणे वेठ न भावे भावना, ते कृपणपणा नो प्रताप।
साधु विण वेहरयां घर सूं पाछा फिरे, तो पिण मूल न करे पिछाताप ॥ १० ॥
कदा कृपण भावे भावना, ते तों तिण वेला हरप।
जो ऊ साधु आया देखे वारणे, तो पड जाय मन में धडक ॥ ११ ॥
कृपण आदरे व्रत वारमो, तोही भावना नहीं भाय।
हाथ सू दांन देवण तणी, हूंस नही मन माय ॥ १२ ॥
कदा कृपण हाथां सूं वेंहरावतां, मन में नही हरप वशेष।
जो न कहे नाकारो साधु तो, साधां ऊपर करे धेष ॥ १३ ॥
कृपण जो लोलपी हुवे, वले हुवे लोभ असमान।
ए तीनूंई दोप तिण मे हुवे, ते किण विध देवे दांन ॥ १४ ॥
जो कृपण अति मानी हुवे, तो धन खरचे जग कीर्ति कांम।
पिण दान सुपातर देवण तणा, आघा चाले नही परिणांम ॥ १५ ॥
तिणने राजा खोसे के घरे गिले, तसकर लगे के लाय।
कृपण ने कापुरुप री खाटवा, माल मस्करा खाय ॥ १६ ॥
कण कण सचो कीडी करे, ते कण तीतर चुग जाय।
ज्यूं कृपण रो धन संचियो, यूं ही जावे विललाय ॥ १७ ॥
केइ धनवत पिण कृपण हुवें, केइ निरधन हुवे दातार।
छते जोग मिल्यां कृपण थकी, लाहो लेणी न आवें लार ॥ १८ ॥
कृपण दांन दे तिण समे, कोइ देखे अनेरो ताम।
ते कृपणपणो पिण आदरे, उतर जावे दान सू परिणाम ॥ १९ ॥
दातार दांन दे तिण समें, कोइ देखे अनेरो ताम।
तो दांन देवां सूं तेहना, चढे घणा परिणांम ॥ २० ॥
दातार री संगत कीयां थकां, ते पिण हुवे दातार।
कृपण री संगत कीयां, कृपणपणो छे तयार ॥ २१ ॥
दांन शील तप भावना, यासू सीझे आतम अर्थ।
तीनां में कवडी लागे नही, दांन दीयां घट जाय गर्थ ॥ २२ ॥

केइ धनवंत पिण कृपण हुवे, केइ निरधन ही हुवे दातार।
ते धनवंत रह गयो दरिद्री, निरधन करे परत संसार ॥ २३ ॥
घर में धन माल छतां थकां, वले छती जोगवाइ पांम।
लाहो लेणी न आवे दांन रो, ओ कृपण रो कांम ॥ २४ ॥
आगे दांन थकी तिरिया घणा, कृपण ने कहे बात मांड।
तो पिण टूब न लागे तेहनें, ज्यूं रेत री न हुवे खांड ॥ २५ ॥
कृपण नें दांन देवण तणो, साधु उपदेश दे दगचाल।
ज्यूं लाखां प्रकारां हुवे नही, कदे गेहूं री दाल ॥ २६ ॥
बुद्धि पाम्यां फल तत्व विचारणा, देह पाम्यां रो फल व्रत धार।
धन पाम्यां फल दांन सुपातरां, वाचा फल बोले हितकार ॥ २७ ॥
मोटका नें खिम्या करणी दोहिली, कृपण नें दोहिलो दांन।
भर जोवन में शील दोहिलो, कायर नें दोरो चारित निधांन ॥ २८ ॥
एक सूम नी त्रिया कहे, आज कांई पीऊ मुख दीन।
के कछु ही खोयो गयो, के किण ही ने दीन ॥ २९ ॥
ना कछु ही खोयो गयो, ना किण ही नें दीन।
एक पाडोसी नें देतां देखने, मांहरो मुख थयो दीन ॥ ३० ॥
जब सूमन की त्रिया कहे, थांरा धन पाम्यां ने धूर।
थां सूं दांन देणी तो आवे नहीं, थें देख विगाड्यो कांय नूर ॥ ३१ ॥
जब सूम कहे त्रिया भणी, मोनें न गमे दांन री बात।
दांन देणो तो जिहांइ रह्यो, कानें सुणियो पिण न सुहात ॥ ३२ ॥
आवे अगगाट करतो अहंकार जब, कृपणपणो गयो वहती रे पूर।
षय उपशम री तयारी हुवां, जब कृपणपणो छे हजूर ॥ ३३ ॥
कांम पडें सावद्य दांन रो, जब कृपणपणा रो हुवे नास।
षयउपसम देखे आवतो, जब कृपणपणो छे पास ॥ ३४ ॥
दातार नें कृपण बेहूं, रहे एकण घर माय।
जो दातार डरे कृपण थकी, तिण सूं दांन दीयो नही जाय ॥ ३५ ॥
दातार नें कृपण वेहूं, रहे एकण घर मांहि।
जो कृपण डरे दातार थी, देतां वरजणी आवे नांहिं ॥ ३६ ॥
घर में दातार नें कृपण वेहूं, त्यांरे आय ऊभा साधु वार।
जब दातार उठ्यो वेहरायवा, तिण पेंहली कृपण हुवो तयार ॥ ३७ ॥
जो सगलाइ घर में कृपण हुवे, त्यांरे साधु ऊभा वार।
जब सगलां रे हुलास वेहरावण तणी, मांडे मांहोमां मनवार ॥ ३८ ॥

कृपण रे धसको दातार नों, रखे ओ देला बहुत वेंहराय।
दातार रे धसको कृपण तणो, रखे ओ देला मोने अन्तराय ॥ ३९ ॥
घर मे सगला कृपण हुवें, के सगलाइ हुवें दातार।
तो कजियो न लागे दांन रो, पछें किरतब्र सारू फल लार ॥ ४० ॥
किणरे दांन देवण री मन में घणी, पिण मिलियो कृपण रो जोग।
ते मन री मन मांहि ले गयो, इसडो छे कृपण रो संजोग ॥ ४१ ॥
दाता धनवंत रो निरधन हुवे, तो ही दांन देवण रो हुलास।
घर मे वस्तु न हुवे तेहनें, तो ही करे दलाली ओरां पास ॥ ४२ ॥
असली राजा रो राज गयां थकां, तो ही ओ राखे राज री रीत।
ज्यूं दातार रो धन खूटे सरवथा, तो पिण दांन देवण सूं पीत ॥ ४३ ॥
कदे कृपण निरधन रो धनवंत हुवे, तो ही देणी न आवे दांन।
वले वरजे घर रां ने कहे द्यो मती, वात न गमे दांन री कांन ॥ ४४ ॥
कमसल रे राज घरे थकां, तो ही शुद्ध नहीं राज रीत।
ज्यूं कृपण ने धन मिलियां थकां, दान देवण री नहीं पीत ॥ ४५ ॥
एक मेह गाजे नें वरसे घणो, एक गाजे पिण वरसे नही कांय।
एक गाजे नही पिण वरसे घणो, एक गाजे वरसे नांय ॥ ४६ ॥
ज्यूं एक दातार गाजे नें वरसे घणो, एक गाजे पिण नहीं छे दातार।
एक गाजे नही पिण दातार छे, एक न गाजे न वरसे लिगार ॥ ४७ ॥
केइ कृपण थोथा गाजें घणा, पिण मूल नहीं दातार।
केइ कृपण मूल गाजें नही, दांन पिण नही देवे लिगार ॥ ४८ ॥
केइ कृपण पिण एहवा, थोथा करे गुमांन।
ठाला बादल ज्यूं गाजे घणा, पिण देणी नांवे दांन ॥ ४९ ॥
केइ ओरां ने देतां देखनें, मुरझ रहे मन मांय।
हाथ न चाले आपरो, तिण सूं वोल्यो पिण नहीं जाय ॥ ५० ॥
कृपण दांन देवे नही, तिण उपर साधु करें धेख।
दोनूं बूडें छें वापडा, त्याने ग्यांनी रह्या छें देख ॥ ५१ ॥
वार वार कृपण भणी, निषेधण रो नही कांम।
राग धेख बधे घणो, न रहे शुद्ध परिणांम ॥ ५२ ॥
कोइ दातार रो कृपण हुवे, कोइ कृपण रो हुवे दातार।
पछे कर्मां गति छे बांकडी, तिण सूं जीव न रहे एक धार ॥ ५३ ॥
सुपातर दांन दे तेहनें, बरज्यां बंधे भारी अन्तराय।
तिण सू दुख असाता हुवे अति घणी, चिहुंगति गोता खाय ॥ ५४ ॥

नींठ नीठ नर भव लह्यो, इण जग में नर नार।
पिण कर्म जोगे कृपण हुवा, महा लोभी परले पार॥ ५५॥
कृपण नें दांन दोहिलो, हुवा सत हीणा नर सूम।
दिते फरग फूटरा, हलका थोथा बूम॥ ५६॥
सूमा केरी संपदा, चोडें कुपातर खाय।
के रोकीले रावले, पिण हाथां सूं दीयो नही जाय॥ ५७॥
सूम सावां नें आया देख नें, मूहडो फेर दे पूठ।
कला करी वस्तु छिपाय दे, के कोइ बोले भूठ॥ ५८॥
घर में धन पिण दलद्री, जिके न देवे दान।
भार भूत धन तेहनों, कोरो करे गुमांन॥ ५९॥
जीव कटे कृपण तणो, देतां लडथड धूजे हाथ।
कृपण काठो भाठा सारीषो, कपिला दासी वाली जात॥ ६०॥
सात थोक देवे सूमडा, कृपण आडा देवे किंवाड।
के आडा पग दे आंण ने, वेठो उत्तर देवण ने तयार॥ ६१॥
कृपण सीख दे दातार ने, कहे नहीं दीजें दान।
जो घर रा मिनषां ने देता देखने, तो तोडे जांसूं तांन॥ ६२॥
देखे साधु आया नें अन्न सूभतो, देखे वेहरावूं एकण वार।
भाले कुडछी वल्तो थको, वले पाछा नहीं आवे दुजी वार॥ ६३॥
कृपण करे कदागरो, करे सावां ने भांड।
मांहरो असूभतो आहार ले गया, कहे काचा पांणी कने मांड॥ ६४॥
दातार ने दांन देता देख नें, मूंहडो दे कुमलाय।
पारका दुखां हुवे दुवलो, भांणे वेठो रोटी नहीं खाय॥ ६५॥
कृपण रो धन कारमों, धर्‍यो रहे घर मांय।
लेखे क्यूं ही लागे नहीं, धन पापी रो परले जाय॥ ६६॥
कीडी सिंचे कहे लोक में, तेहनो तीतर खाय।
कृपण कीडी सारिषो, कहे लोक दुनियां रे मांय॥ ६७॥
छाती फाटें सूम री, जो देता देखे दान।
दांन तणा गुण वरणवे, तो कृपण कदे न मांडें कान॥ ६८॥
घणो उपदेश दे दांन रो, कृपण नें किरपाल।
लाखां प्रकारां न हुवे, कदे गेहुं तणी दाल॥ ६९॥
मूल कदेही मानें नहीं, कृपण केरी वात।
कृपण आयां कोइ हरषे नहीं, जिम अमावस री रात॥ ७०॥

कदे सूम री सोभा हुवे नहीं, देखो सहु संसार।
जात न्यात ने लोक में, सहु देखलो नर नार॥ ७१ ॥
लाहो मिनष जन्म तणो, कृपण न लीनो कोय।
धन माल सहु मेल नें, चाल्यो कलदर होय॥ ७२ ॥
परलोके पाप परगटें, भरे नेणा भरे नीर।
हाय में दांन दीयो नहीं, अब कुण बटावे पीड॥ ७३ ॥
कृपण रांक ते बापडा, बाधी पूर्व भव अतराय।
तिण कारण तिण जीव सू, दांन दीयो नही जाय॥ ७४ ॥
कृपण ओलखणी प्रगट करी, कहिज्यो अवसर देख।
जो कृपण नें सुणावोला माड ने, तो तुरत जागेला धेख॥ ७५ ॥
सवत अठारे बयांलीस मे, कार्तिक मास मझार।
कृपण ने ओलखावीयो, सरीयारी सहर मझार॥ ७६ ॥

रत्न : २६

वैराग री ढालां

ढाल : १

[श्री जिणवर गणधर मुनिवर ने कहै रे]

वृक्ष तणो ज्यूं पाको पांनडो रे, ते पडतां कांय न लागे वार रे।
ज्यूं तूटे आउखो मरतां मिनष नों रे, जब कोइ न सके राखण हार रे॥
ढील मत करज्यो चतुरां धर्म नी रे* ॥ १ ॥

मात पितादिक ऊभा मेलने रे, पर भव में जासी एकलडो आप रे।
विछडियां ने पाछो मिलणो दोहिलो रे, कुण गति में जासी मा बेटो बाप रे ॥ ढी० २ ॥
जीवडो तो अलुझ रह्यो माया मझे रे, वले स्त्री मात पितादिक मांय रे।
तांणा वेजा तिणरे लागे रह्या रे, पिण आसा अलधा छोडी जाय रे॥ ३ ॥
जीव काया छोडे तिण अवसरे रे, चित्तवे मन माहे अनेक जंजाल रे।
म्हे धन जोवन रो लाहो लीयो नहीं रे, इम विल विल करतो कर जाये काल रे॥ ४ ॥
जीवडो तो जांणे केइ दिन थिर रहू रे, पिण मरण आगे नही लागें जोर रे।
जन्म मरण री सगला जगत में रे, मुदे तो आहिज मोटी खोड रे॥ ५ ॥
काया माया सगली छें कारमी रे, कारमो छे सगलो परिवार रे।
ते मिल मिल विलावे वादल नी परे रे, एहवो छे सगलो अथिर संसार रे॥ ६ ॥
धन गडीयो घर माहे लेंणो लोक में रे, जांणे पुत्रादिक ने देऊं सर्व बताय रे।
जीभ थकी जब न आवे वोलणी रे, ते पिण रह गइ मन री मन मांय रे॥ ७ ॥
कांइ कीधो कांइ करणो अछे रे, घर हाटादिक विणज व्यापार रे।
वले माया मेलूं मेलू करतो फिरे रे, पिण काल अण चित्यो न्हांखे मार रे॥ ८ ॥
घर रा कारज पूरा कर नही सके रे, अध बीच छोड चल्या सहु कोय रे।
घचा माहिं कलिया रहे सदा रे, ते गया निरर्थक मानव भव खोय रे॥ ९ ॥
मिनष तणो भव छे अति दोहिलो रे, उतकष्टो पामे अनते काल रे।
ते अल्प सुखा रे कारण पड्यां रे, हारे मानव भव मूरख बाल रे॥ १० ॥
एहवो अथिर आऊखो जांण ने रे, करो जिणेश्वर भाष्यो धर्म रे।
जो शुद्ध गति जावा री छे चावनां रे, तो दिन दिन पतला पाडो कर्म रे॥ ११ ॥
हू कहि कहि नें कितरो कहूं रे, संसार छे सगलो अतत असार रे।
ग्यान दरसण चारित तप विनां रे, सार म जांणो मूल लिगार रे॥ १२ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

बूढला रा पुन्य परवाख्या, तिणसूं वचन जाए माख्या।
जब बूढलो मन में खीजे, बेटा बहु मूल न भीजे॥ ६॥
बूढा रे बालपणा रा हेवा, जांणे खावूं मिष्टान नें मेवा।
मन गमता भोजन खावूं, लाडू पेडा जलेबी मंगावूं॥ १०॥
उन्हों सीरो मगद वले खाजा, एहवा भोजन भावे ताजा।
जांणे नरमसी खीचडी खावूं, दही दूध ने बूरो मगावूं॥ ११॥
बूढा ने आछा भोजन भावे, पुन्य विनां कहो कुण खवावे।
ओ तो स्वारथ किणरे न आवे, तिण सूं घर रां नें मूल न सुहावे॥ १२॥
घर सूं सूखी लूखी रोटी आवे, ते तों दातां सूं खाइ न जावे।
जब बूढो हुवो दिलगीर, काढे आंख्यां मां सूं नीर॥ १३॥
जां की बोली पिण न सुहावे, मीठा भोजन कुण खवावे।
बूढे हाथां सूं द्रव्य कमाया, वेटा दाब रह्या धन माया॥ १४॥
जब ओ कर कर लोकां ने भेला, करे बेटा बहुं नी हेला।
म्हांरा कह्या में को नही चाले, पूरो धान खावानें न घालें॥ १५॥
जब लोक हसें पीटें ताल्यां, बोले बेटा बहु नें गाल्यां।
कहे बेटा बहु नें एम, डोकरा नें दुख दो केम॥ १६॥
केइ केहवा लागा आम, थे तो मत हुवो लूण हराम।
जब बेटा बहु इम बोले, डोकरा रा परदा खोले॥ १७॥
ओ तों लोका सूं एकठ मांडे, म्हांने यूं ही अनाखी भांडे।
म्हे तो आछा भोजन नित घालां, इणरे केडें सगला चालां॥ १८॥
इणरे पीत मुरीद न कांई, ओ तो यूं ही करे विकलाई।
इणरी गइ अकल विग्यांनो, इणरी वात कोइ मत मांनो॥ १६
बूढा रो कुण ऊठे बेली, उणरी बात गइ सर्व ठेली।
बूढा रा पुन्य पड गया पूरा, तिण सूं सैंण सगा हुवा दूरा॥ २०
निज नारी री आहिज रीत, बूढा सूं न घरे प्रीत।
वले ओर सगा सैंण सारा, बूढा सूं होय जाय न्यारा॥ २१
कदे घी गुल सूंघा होय जात, जब वाछे बूढा री घात।
घर रां तो मांड्यो अति आंचो, ओ तो मरे न छोडे मांचो॥ २
बाल जवान तो मर जावे, इण बूढा ने मरण न आवे।
ओ तो नित नवो होय रह्यो सैंठो, म्हांरे वारणे रिणाइ ज्यूं बेठो॥
म्हे तो सगला हुवां छां काया, इण डोकरे वोहत सताया।
थारी ...ंई नां पर गया विरखो, ओ तों अजे न मुंवो जरखो॥

म्हांरे उवडी पाप री खांनो, इण बूढा सूं पडियो पानो।
एहवा वचन बूढा नें सुणावे, जब बूढो अनंत दुःख पावे ॥ २५ ॥
बूढे कर्म कीया था जाडा, ते तों आया कुवेलां मे आडा।
ते भोगवतां दुख पावे, समता विण पडियो सीदावे ॥ २६ ॥
बूढा री विपत अनेक, पूरी कहणी नावें वगेख।
थोडीसी कही वांनगी मात, देखो अस्वल माल्यात ॥ २७ ॥
इणरी सुणज्यो लोक लुगाइ, एहवी विपत बूढापे आई।
जो ऊ पैंहली धर्म करतों, एहवी विपत मे क्यानें पडतो ॥ २८ ॥
बूढो पैंहलां बूढो मद छकियो, जिण धर्म ओलख नहीं सकियो।
हिवे रह्यो आरत ध्यांन ध्याय, तिण सूं धर्म कीयो किम जाय ॥ २९ ॥
बूढे पैंहलां कीवी कूडी मेखी, रह्यो धर्म तणो नित वेखी।
करतो साधु श्रावकां री हेला, हिवे आय पडी छे वेलां ॥ ३० ॥
पैंहलां कीवी न्यातीलां ठेलो, जिण धर्म ने जांणियो मेलो।
हिवें न्यातीला आडा न आवे, जब आप पड्यो पिछतावे ॥ ३१ ॥
मोह माया में रह्यो कलियो, दुरगति नों टांको झलियो।
जोबन हुंतो ते दीवो गमाय, हिवे कागी न लागे कांय ॥ ३२ ॥
पछें मरनें माठी गति जावे, चिहुंगति में गोता खावे।
पाप आगे न चाले जोरो, पाछो नर भव पावणो दोरो ॥ ३३ ॥
केइ बूढा घर रा नें डगावे, लड झगड नें आछो खावे।
वले कर कर लोकां नें साखी, बेटा वहु ने भांडे अन्हांखी ॥ ३४ ॥
वले करे खीटोर खोराई, घर रा नें घणो दुखदाइ।
केइ बूढा छे एहवा पापी, रह्या घर रा ने नित संतापी ॥ ३५ ॥
केइ बूढा मूवा हुवे जोग, बेटा वहु मिलिया अजोग।
कदा आछी वस्तु बूढो खावे, तो उवे खूणे घाली धुरकावे ॥ ३६ ॥
कहे तूं तो हुवो गटकायो, म्हांरे धन नहीं घर मांयो।
मूवो बेठो रोटी क्यूं न खावे, म्हांनें कांय अन्हाखी सतावे ॥ ३७ ॥
जब बूढो भंके लाजां मरतो, वारे वचन न काडे टरतो।
बूढे कीयो विचारज ऊंडो, रखे दीसूं लोकां में भूंडो ॥ ३८ ॥
एतो कर रह्या फेल फितूरो, म्हांरे धोलां मे घालें धूरो।
यांनें छेडवियां नहीं बाकी, रखे जावे बूढापे नाकी ॥ ३९ ॥
म्हांरो कांण कुख थो भारी, रखे लोकिक विगडे म्हांरी।
इम जांणी बूढे मूंन साझी, जांण्यो राखूं बूढापे बाजी ॥ ४० ॥

जो न हुवे दोयां मांहे लजिया, तिणरा घर मांसूं न मिटे कजिया।
कुड कुड काढे राता डोला, नीकले नित सांग बनोला ॥ ४१ ॥
वात करतां माथे सल चाढे, नितका दुख में दिन काढे।
देखो नीठ मानव भव पायो, राग धेख में यूंही गमायो ॥ ४२ ॥
संसार नां सगा सर्व काचा, त्यांने जांण रह्या मूढ साचा।
तिण री वुधवत करज्यो पिछांणो, यांने जांणज्यो वैरी समाणो ॥ ४३ ॥
केइ वूढा रे पुन्य रहे बाकी, घर रा कार न लोपे जांकी।
जिण रे पूर्व पुन्य छे भारी, तिणरी मरजादा राखे नारी ॥ ४४ ॥
जिण पूर्व पुन्य उपाया, त्यांरे हाथ जोड रे जाया।
जो ऊ थोडीसी वस्तु मंगावे, तो उवे थाल भरी वेगा ल्यावे ॥ ४५ ॥
सर्व जी जी कारे बतलावे, वले बूढा को हुकम चलावे।
मन गमता भोजन खवावे, सारां पेहली बूढा ने जीमावे ॥ ४६ ॥
जिण पूरी कीधी पुन्याई, बेटा वहु मिल्या सुखदाई।
रूडा रूडा वस्त्र पहरावें, सुख सेज्या माहे पोढावे ॥ ४७ ॥
वले कांण कुख राखे भारी, सगला रहे आगन्या कारी।
देव परमेश्वर ज्यूं पूजे, करडी नजर कीया सर्व धूजे ॥ ४८ ॥
एहवा सुख में वूढो रति पामे, वले रही लौकिक लोका मे।
वूढो एहवी साता सुख पाय, घणो मगन हुवो मन मांय ॥ ४९ ॥
एतो सारा मिल्या सुखदाय, पिण त्राण शरण नही थाय।
एतो इण भव केडे चाले, परभव जाता साथे न हाले ॥ ५० ॥
साथ आवे पुन्य नें पाप, सुख दुख भोगवे आपोआप।
इम सांभल ने नर नारी, करज्यो मन मांहि विचारी ॥ ५१ ॥
एहवा सुख तो सगलाइ फीका, त्याने कदे म जांणो नीका।
ते तो थोडा माहे विललावे, सुपना जिम आल माल होय जावे ॥ ५२ ॥
त्यामे कदे म जांणज्यो सार, ते तो मिलिया अनती वार।
एहवा सुख ऊपर निजर न दीजे, करणी कर लाहो लीजें ॥ ५३ ॥
आचारंग रो ले अनुसारो, कह्यो वूढा तणो विस्तारो।
इम जाणी करो जिण धरम, ज्यूं पामो मुगत सुख परम ॥ ५४ ॥
संवत अठारे चोतीसे वरस, अषाढ विद तिथ इग्यारस।
सनीसर वार विचारो, जोड किधी सरियारी मझारो ॥ ५५ ॥

●

ढाल : २

[इण पुर कंबल कोई न लेसी]

देखो नारी कादे में खूंता, लोक फिरे सहु हा हा हूंता।
जल थल देश प्रदेशां जावे, तो पिण नारी सुख कर ध्यावे॥ १॥
आन कुंकन कहा नी हूंस, ज्यूं ज्यूं धन ल्यावूं लूंस।
ऐसा भाव अनेक उपावे, पिण पूर्व पुण्य हुवे ते पावे॥ २॥
किण ठहां बैठे कोड़ी कमाई, पिण पाछा घर न सक्या आई।
किण नें किहे ठगाइज नाख्या, देखो नर नव पूंहिज हाख्या॥ ३॥
केइ आय परणीज्या नारी, धन खूटां बले हुवा उधारी।
किण ही द्रव्य ब्याहइज कमाया, पिण निश्चे छे काची माया॥ ४॥
खांग मांग छे कर्म कमाय, पेहलां स्वाद बिगड़े जाय।
ज्यूं विष चढ़िया नें नींब ही भावे, पांव रोगी नें खाज सुहावे॥ ५॥
एहवा काचा सुख सहु फीका, अंत लागु छे निश्चे जी का।
इसी कहे तृष्णा नहीं होवे, यूं ही मूरख जमारो खोवे॥ ६॥
नरक तणो भय न मिट्यो जेह, काम सुख भुगतेलो तेह।
मोह्यो विषे नार नों वास, कुण कुण कांम करावे त्रास॥ ७॥
फिर फिर वस्तु घणी जो आंणी, तो पिण आपण नार रीसाणी।
हूं तुझ केहे लागी फोक, कांइ न आंणे गरिमा रोक॥ ८॥
गेहणा गांठा मुझ नें जोइजे, तुझ थी कारज कोइ न सीझे।
किण हुंस तें मुझ नें परणी, घर किम चालसी थांरी करणी॥ ९॥
हुंतो करूं सहु घर नों कांम, तूं जाय बैसे दीठी ठांम।
ए तुझ नें किण बात सीखाइ, घर री चित न जांणे कांई॥ १०॥
आज तो जोइजे घर में हांडी, चूलो मांज गयो घर मांडी।
ईंधन री मारी गई खूंटी, धांन गयो नाचा री तूटी॥ ११॥
धांन पीसण जोगी नहीं घरटी, आंण आप मुझ गेहुं करटी।
साल दाल घृत ल्यावण पाछो, तुझ नें लावे आछो आछो॥ १२॥
काजल कूंकूं डाबी हार, गेहणा आंण सहु सिणगार।
टीकी राखड़ी तेल सुगंध, पेइ आरसी मेल मंजन॥ १३॥
मेला वस्त्र धोई नें ल्याव, जूना जोय हूं देख उपाव।
मुई सूत बीजणो छाज, जोडी आंण मुझ पहरवा काज॥ १४॥

साजी लूण हीग मिरच्च वेसवार, खुवारो बुहारी दातणा चार।
ऊंखल मूसल आछी गाय, कुडछी डोयला छुरी मोलाय॥ १५॥
ढहिया घर तूं नवा कराय, डावडा रमवा दडी वणाय।
गुडी गुली तीर घुणी नें हटरी, टोपी झगो रूण झलियो कुलडी॥ १६॥
एता ल्याव सताब संभाल, कानां हेटे मती फुजाल।
अजे न ल्यायो कदकी कूकी, थांरी अकल गइ छे चूकी॥ १७॥
मोर मसल थाकी कहे कांमण, वेटो आज छे आंमण दूमण।
वेस तूं इण ने खोले लेइ, कांम कर न सकूं हूं वेई॥ १८॥
दोहिली हुवे नें ए में जायो, हिवें तूं पालीस कांय उपायो।
सवा नव मास वूही हूं भार, तूं दोरो लेतो खिणवार॥ १९॥
किण ही काज रीसाणी नार, मनावे पगे लाग तिवार।
डावा पगरी दे सिर लात, तो पिण मूरख तजे न तात॥ २०॥
पाप तणे वस पडियो समणी, रुदन करावे छे वलि रमणी।
भेष लेइ केइ विषें विगूता, ते पिण यूं घर गे भार जूता॥ २१॥
भांत भांत रा सुख मधु विंद, आगे नरक तणा छिद भिद।
इण परे रोलवे पुरुष ने नारी, नीचा काम करावे भारी॥ २२॥
दास तणी पर आगे ध्यावे, तो पिण विरत न काचित आवे।
जीव तो थोडा सुखां ने काजे, गुलामपणो करतो नही लाजे॥ २३॥
एहवा दुख नें सुख कर माने, यूंही वूडा जाय अग्यानें।
भटके तलफे सुख के ताई, ज्यूं ज्यूं अलूझ पडे दुख मांही॥ २४॥
नचित होय बेठा नर अंध, वाधे पर घर केरा वध।
परणीजे जांणे घर मांड्या, इसडा घर अनंता छांड्या॥ २५॥
तो ही तृप्त न हूवो जीव, नीकल्यो दे दे काची नीव।
घर जलाय तीरथ जे करसी, सो साधु जग माहे तिरसी॥ २६॥
केइ श्रावक नां व्रत पाले, ते पिण नरक तिर्यंच दुख डाले।
देश थकी ते पिण ब्रह्मचारी, साधु तजिया सर्व विकारी॥ २७॥
नरक दिखावण दीवी नार, मोप जावण ने आडी किवाड।
सुयगडायंग तदुल वियालिए साख, तिण मे वीर गया छे भाख॥ २८॥
स्त्री दोष जिण कह्या अनेक, तिण न्याए मेल्या क्यूंत्री एक।
बुरो मती मानें नर नारी, निश्चे देखो ग्यांन विचारी॥ २९॥
छेदाणा जस हाथ ने पाय, कांप्या कांन ने नांक कहाय।
ते पिण सो वरसां नी नारी, दूर तजे रहे ब्रह्मचारी॥ ३०॥

विषें दिष्टी वरजी चित्रनारी, तो किम निरखे सोले सिणगारी।
सूर्य साह्मो जोयां घटें तेज, ज्यूं ब्रह्मचर्य घटें इण हेज॥ ३१॥
उंदर बेठो मिनकी पास, जीव तिहां राखे किण आस।
तिम नारी संगे शीलवंत, विरलो कोइ वचे बलवंत॥ ३२॥
इम जांणी रहे साधु एकंत, आपनें हित वांछे ते संत।
शील संजम दिढ पाले ठीक, त्यांनें जांणो मुगत नजीक॥ ३३॥

●

ढाल : ४

[तारा हो प्रतख मोहणी]

स्वारथ सहु ने बाल हो, स्वारथ जग मंडाण। चतुरनर।
उद्यम जीव करे घणो, प्राप्ति भाग परमांण॥ चतुरनर॥
स्वारथ जग मंडाण*॥ १॥

पीहरियां सूं पुत्री राजी रहे, ज्यां लग विवध पणे आवे माल।
मुतलब पूगे त्यां लगे, त्यांनें दिठां हुवे अतंत कुशाल॥ २॥

जो पीहरियां होय जाय दरिद्री, पुत्री नों घर ताजा देख।
जो मांगे कांयक पुत्री कने, तो तुरत जागे तिण ने धेख॥ ३॥

पुत्र नें पाल मोटों करे, सूंपे सारो घर धन माल।
ते गरढापणे पिता भणी, पुत्र जांणे पिता ने साल॥ ४॥

घर रे कांम न आवे सर्वथा, निकमो बेठो खावे धांन।
जब गमतो न लागे केहने, खारो लागे विष समांन॥ ५॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

रत्न : २७

जुआ री ढाल

दुहा

विसन सातोंई छे अति बुरा, त्यांनें छोडे उत्तम जीव।
त्यांनें सेवे भारीकर्मा जीवडा, त्यां दीधी नरक री नींव॥ १॥
प्रथम विसन जूवा तणो, तिण खेल्यां बंधे छे कर्म।
मतिभ्रष्ट हुवे तेहथी, वले खाय देवे जिण धर्म॥ २॥
जूवे रमे ते मांनवी, गया जमारो हार।
इह लोक परलोक विगाड नें, गया नगर निगोद मभार॥ ३॥
तिण जूवा में अवगुण घणा, ते पूरा केम कहिवाय।
थोडा सा परगट करूं, ते सुणज्यो चित ल्याय॥ ४॥

ढाल

[रे भवियण सेवो रे साध सयाणा]

जूवे रमे त्यारो रहे माठो ध्यांन, माठी लेश्या नें माठा परिणांम।
वले माठाइ जोग ने माठा अध्यवसाय, वले चित्त न रहे एक ठांम रे। भवियण।
जूवो मत रमजो कोइ, इण जूवा थी आछो न होइ रे। भवियण।
हीये विमासी जोइ॥ १॥
जूवे रमे तिणरे भूठ नें चोरी, दोनूं लारे लागी रहे नित। भ०।
थोडा में दरिद्री होय जावे, थोडा में हार दें सर्व वित्त रे॥ भ० ही० २॥
वले धसको निरंतर न मिटे तिणरो, वले न मिटें सोग संताप।
वले विलखे मूंढे फिरे लोकां में, इन जूवा तणे परताप रे॥ ३॥
जुवारी रा घर मे धन माल हुवे तो, थोडा में हार दें ततकालो।
वले लोका री माथे उधारो ल्यावे, मांग्यां काढें तुरत देवालो रे॥ ४॥
लोक आय मांग्यां माथो नीचे घाले, तिण सूं पाछो तो देणी न थावे।
कोइ लाजा मरतो कूवो वावडी ताके, केइ परदेशां उठ जावे रे॥ ५॥
जूवे रमें जुवारी तिणरो, घर रा पिण न करे विश्वास।
जाणे रखे घर मासू चोर लेजावे, रखे नींवीं तणो करे नास रे॥ ६॥
तिणरा सगा संबंधी नें मंत्री न्यातीला, त्यांरे घरे जुवारी आवे।
जब त्यांरे पिण धसको पडे तिणरो, रखे कांयक चोरे लेजावे रे॥ ७॥
मात पिता सासू नें सुसरा, वले [illegible] गया छे मांहि।
वले सजन नें [illegible] नगर में, जुवारी री परतीत नांहि रे॥ ८

कोइ जुवारी नें बेटी देतो सके, इणरे जूवा रो कलंक लागो।
इण नें बेटी परणाए क्यांने विगोऊं, ओ तों धन खोय हुंतो दिसे नागो रे॥ ९॥
कोइ जुवारी ने ब्याज देवे छे, कोइ जूवारी नें देवे उधारो।
कोइ जुवारी सूं सीर मांडे छे, यां तीनां रो हुवे विगाडो रे॥ १०॥
कोइ जुवारी री संगत करे छे, ते पिण जुवारी होवे।
ते पिण धन माल खोय ने होय जाय रीतो, पछे छाने-छानें घणो रोवे रे॥ ११॥
जुवारी री संगत कीधी ते बोले, हूं इण री संग सू गाढो बूडो।
घर में धन माल हुंतो ते सारोई हास्यो, वले दीठो लोकां मे भूंडो रे॥ १२॥
जुवारी जूवे रमे ते व्यसनी, बाप दादा ने मेंहणी बोलावे।
उवे जुवारी तणी बात कांना सुणे जब, त्यां सूं पिण पूरो बोल्यो न जावे रे॥ १३॥
जुवारी रा बेटा नें पोता सुधी, मेंहणी बोलावे लोकां माहि।
इण रो वाप दादो जुवारी हुंतो, जब ए नीचो माथो घाले ताहि रे॥ १४॥
जुवारी रो आबरू घटे लोका मे, वले कांण कुख जावक घट जावे।
वले जुवारी री संगत करे छे, तिण रा पिण विसवा हीणा थावे रे॥ १५॥
वले जुवारी री स्त्री जूवा थी, दुखे दुखे काढे दिन रात।
इण भरतार लारे आयां पछे मोने, कदे सुख न हुवो तिलमात रे॥ १६॥
वले जुवारी रा माता ने पिता, जुवारी थी सारा हुवा काया।
ओ पापी म्हांरे घर आय ऊपनो, इण निठाय दीनी म्हांरी माया रे॥ १७॥
जुवारी रे कुटंब कबीलो, सगलाइ दुखिया थाय।
जुवारी सारो धन हार जावे जब, न्यातीला पिण सीदावें ताय रे॥ १८॥
जुवारी जूवे रमतो हार जावे, सारो धन स्त्री ने माल।
पछे भीख भमतो फिरे लोकां में, रोतां रा पिण पडे हवाल रे॥ १९॥
जुवारी रे घर कोइ थापण मेले, तिण ने जुवारी हार देवे।
तो पाछो आय मांग्यां कठा सूं देवे, जब ऊ घणा धमेडा लेवे रे॥ २०॥
जुवारी जूवे रमें तिण काले, तिणनें देवे कोइ उधारो।
ते पिण दूजें तीजें करण जुवारी, ते जुवारियां रो सिरदारो रे॥ २१॥
जूवा रो पट्टो कराय सही कराई, ते सगला जूवा तणा अधिकारी।
तिण सगला जुवास्यां रे छूट कराई, तिण रे नरक तणी छे तयारी रे॥ २२॥
केइ चोपड रमे छे गरथ अडे नें, ते पिण निश्चें जुवारी साख्यात।
मार-मार करे मुख बोले रीणोइ, तिण री पिण विगडी छे वात रे॥ २३॥
भेला करे पासा ने सारी, मुख वोले मार मारी।
चोपड रमें कर्म बांध्या भारी, ते हुवा नरक ने तयारी रे॥ २४॥

जूवे रमे केइ माल अडे ने, हारी ने वले रोवे।
इण भव पर भव मे दुख पावे, दोनूंई जन्म विगोवे रे॥ २५॥
जिण गांव में जुवारी घणा हुवे ते, गांव री पेठ गमावे।
भला भला मिनष छे तिण गांम माहे, ते सगलां ने भूंडा दिखावे रे॥ २६॥
जुवारी गांम रा सगला लोकां नें, देगां देशां में मेंहणी बोलावे।
जो जुवारी सगला ने कहावे, गांम री हलकी घणी लगावे रे॥ २७॥
जान बरात पर गांम में जाये, जो तिण मांहें जुवारी होवे।
तठे पिण तिण गांम री हलकी लगावे, जानियां रो पिण आबरू खोवे रे॥ २८॥
जुवारी जूवे रमें धन माल हारे, तिणनें मुख मुख दे फिटकारो।
शोभा तो लोकां मे कठेय न दीसे, धिग धिग छे तिण रो जमवारो रे॥ २९॥
जूवे रमें तिण रे उतकष्टे भांगे, विसन सातोई आवे।
आगला नें पाछला न्यातीलां ने, जुवारी सगला ने लजावे रे॥ ३०॥
नल राजा तो जूवो रमे ने, सर्व राज ने स्त्री हारी।
देश नगर साराइ छोडी ने, एकलो चाल्यो मूंह विगाडी रे॥ ३१॥
पाचोई पांडव जूवे रमें ने, हाऱ्यो हथनापुर नों राज।
देग प्रदेशा भमता फिरिया, त्यां गमाई लोकां मे लाज रे॥ ३२॥
आगे वडा वडा राजा अनेक हुवा ज्यां, जूवा थी राज हाऱ्यो।
भीख मंगता हुवा भिख्यारी, त्यां जीतब जनम बिगाड्यो रे॥ ३३॥
जूवे रमे जुवारी तिण रे, अजक रहे दिन रात।
ताणा वेजा लागा रहे चित्त में, तिण रा दुख मांहे दिन जात रे॥ ३४॥
पछे जुवारी मरने माठी गति जावे, तिहां पावे दुख अनंत।
नरक निगोद मे भीकां खावे, इम भाख्यो छे श्री भगवंत रे॥ ३५॥
साहुकार रो वेटो जूवे रमें नित्त को, साहुकार सूं वरजणी नावे।
जाण्यो वरजूं तो वेटो अपघात करने, रखे अकाले मर जावे रे॥ ३६॥
रैसे रैसे वेटा ने समझायो घणो, पिण वेटा सूं जूवो छोडणी नावें।
जव साहुकार वेटा थी डरियो, रखे सारो धन जुवा मे गमावे रे॥ ३७॥
म्हारो कह्यो बेटो मूल न माने, इणने छेडवूं तो दूणो दूणों।
ओ तो कपूत उठ्यो म्हांरा पाप रे उदे, करतो दीसे छे घर रो पूणो रे॥ ३८॥
इतले साहुकार मांदो पड्यो जब, बेटा ने कहे एकंत बोलाय।
मो काल कीयां पछे हू कहूं ज्यू कीजे, ज्यूं तोने सुख थाय रे॥ ३९॥
म्हांरा खरच ऊपर देगां देशां रा, जूवाऱ्यां ने लीजे बोलाय।
खरच कीया पछे तूं पाट वेसे जब, जुवाऱ्यां कने टीको कढाय रे॥ ४०॥

जुवारयां में वडा जुवारी पासें, तिण कनें तूं टीको कढाय।
तूं चोडें कहीने न्यातीलां सारां नें, मोनें तात कह्यो छें बोलाय रे॥ ४१॥
इम कही नें काल साहुकार कीयो, जूवो छोडावण रो कीयो उपाय।
तिणरी बेटा नें समम्क पडी नहीं कांई, पिण त्यांन सूं दीयो सममाय रे॥ ४२॥
हिवें साहुकार रे- खरच रे ऊपर, जुवारी ल्यिा अनेक बोलाय।
सारो खरच करे सारी न्यात जीमाए, पछे जुवारी सर्व जीमाय रे॥ ४३॥
साहुकार रो बेटो पाट बेठो जब, न्यातीलां नें कह्यो संभलाय।
म्हारे पिता कह्यो तूं पाट बेसे जब, जुवारी आगें टीको कढाय रे॥ ४४॥
इम न्यातीलां रा कानां में काढें, सारा जुवारियां नें बोलाय।
थां में पक्का में पक्को जुवारी हुवे ते, म्हारे टीको काढो आय रे।
भायां मत करो जेज लिगार॥ ४५॥
एक कहे हूं पक्को जुवारी, जुवारी मांहि पक्का सूं पक्को।
म्हारे धन माल हुंतो ते सगलोई हास्यो, होय बेठो छूं फक्कम फक्को रे।
टीको तो हूं लेसूं॥ ४६॥
दूजो कहे हूं थां थकी पक्को जुवारी, जुवारयां मांहें वडो जुवारी।
म्हें पिण धन माल हुंतो ते सगलोइ हास्यो, हाट हवेली म्हें अधिकी हारी रे॥ ४७॥
तीजो जुवारी कहे थां थकी म्हारो, सुणो थें सगलाइ हालो।
हाट हवेली म्हें पिण हास्या, वले म्हें अधिको काढ्यो दिवालो रे॥ ४८॥
चोथो जुवारी कहे हूं थां थकी पक्को, थांनें खबर नहीं छे म्हांरी।
थें हास्यो छे ते म्हें पिण हास्यो, थां सूं स्त्री म्हें अधिकी हारी रे॥ ४९॥
पांचमों कहे हूं थां सूं पक्को जुवारी, मोनें गांव बारे काढ्यो कूटो।
थें हास्या छे ते म्हें पिण हास्या, अधिकाइ रो ठिकांणो छूटो रे॥ ५०॥
छठो कहे थां थकी पक्को जुवारी, थें हास्यो ते म्हें पिण हास्यो।
मोनें गधे चढाय गांम बारे काढ्यो, वले ऊपर जूतां सूं मास्यो रे॥ ५१॥
सातमों कहे हूं थां थी पक्को जुवारी, थां में बीती ते सारी मो मांयो।
थांनें संका हुवे तो निजरां देखल्यो, म्हे हाथ अधिकेरो कटायो रे॥ ५२॥
आठमों कहे हूं सारां सिरे जुवारी, तिणरो लेखो तूं सुण रे भाया।
थां सगला में बीतीं ते मो में बीतीं, म्हें हाथ ने नाक दोनूं कटाया रे॥ ५३॥
जुवारयां रे मांहोमांहि वाद लागो, त्यांरो देखी माहोमां तांण।
जब साहुकार तणो बेटो डरियो, जुवारी लागा जहर समांण रे॥ ५४॥
तिण जुवारी आगे टीको नहीं कढायो, त्यांनें काढ दीया घर बारो।
जूवो रमवो तिण जावक छोड्यो, हीया में कीयो शुद्ध विचारो रे॥ ५५॥

म्हांरे बाप मरते थके कह्यो थो मोनें, तूं जुवारी आगे टीको कढाय।
ते तो एकत म्हांरो जूवो छोडावण, त्यां इण विध मोनें समझाय रे॥ ५६॥
जो हूइज वले जूवो रमू, इण सारिखो हूं पिण थाऊं।
तो जीतब जन्म विगाडूं म्हारो, धन माल पिण सगलो गमाऊं रे॥ ५७॥
जुवारी मर नें माठी गति जावे, पावे दुख अनंत।
नरक निगोद मे झीका खावे, इम भाख्यो श्री भगवंत रे॥ ५८॥
कही-कही ने कितरो एक कहूं, जूवा मांहे अवगुण अनेक।
इम सांभल ने उत्तम नर नारी, जूवा नें छोडो आण ववेक रे॥ ५९॥
कोइ जूवा तणा अति अवगुण सुण नें, जूवो छोडे साधां हजूर।
ते सूस भांग नें जूवे रमे पापी, तिणरा जीतव जनम नें धूड रे॥ ६०॥
जूवा ने ओलखावण काजे, जोड कीधी पुर सहर मझार।
संवत अठारे वरस सतावनें, सावण सुदी पंचमी शनिसर वार रे॥ ६१॥

रत्न : २८

व्याहुलो

ढाल

उठांण।
साखी शब्द कहे घणा, सीखी अकल
परमारथ खोजे तिके, ते नर विरला जांण ॥ १ ॥
कद कूंपल बोली हंसी, पांन दीयो कब जाब।
वीर वखांणी ओपमां, समझे लोग सताब ॥ २ ॥
नवा नवा लोक जांण ने, कह्या घणा प्रस्ताव।
करज्यो मती कदागरो, जोयजो सूतरां न्याव ॥ ३ ॥
अछता ने ओपमा छती, छते अछती होय।
इम जांणी नें गुण ग्रहो, झगडो म करो कोय ॥ ४ ॥
मति ग्यांन रा भेद छे, सुणज्यो चित्त लगाय।
एक सूतर नेश्राय छे, बीजो विण नेश्राय ॥ ५ ॥
अणदीठो अणसांभल्यो, मेले वचन रसाल।
जेसो नर देखे तिसो, उत्तर दे ततकाल ॥ ६ ॥
इसी बुद्धि उत्पात की, वीर वखाणी ताहि।
सगंय हुवे तो देखलो, नदी ठांणाअग मांहि ॥ ७ ॥
लोक तिके पिण यूं कहे, कनक कांमणी फंद।
साधु कहे तिण में किसूं, इण छलिया नर इद ॥ ८ ॥
कहे लोक जांणें नहीं, पूरो परमारथ।
विषे रूपिया फद रो, सुणज्यो अवे अरथ ॥ ९ ॥
जोगी जोग सेठो रहे, भोगी तजे विकार।
तिण उपर दिष्टान्त छे, सुणज्यो रोस निवार ॥ १० ॥
प्राणी चाल्यो परणवा, जब आगूच दीयो जताय।
तोरण तारा छांहडी, किम कर वांध्यो जाय ॥ ११ ॥
जो तूं वेटो शाह नों, करें कसाई कांम।
तो तुमने परणावस्यां, इण विच मेले दांम ॥ १२ ॥
तोही विषे मे अंध हुओ, तुरंत छडी ले देत।
साला न्हांखे धूल सिर, चेत अवें ही चेत ॥ १३ ॥
तव थोडोसो वोलियो, मुंहडे पोत्यो देय।
पाछो पिण जावे नही. उभो छे हठ लेय ॥ १४ ॥

सासू म्हांसूं सलसली, आई मोडा वार।
चोडें लोकां देखतां, मांड्यो कोण विचार ॥ १५ ॥
नाक तांण दही चोडियो, अब तो हुवो अविराज।
भोग थकी नरके गयो, नकटा अब तो लाज ॥ १६ ॥
साले थूलो न्हांखियो, सासू खांच्यो नाक।
सालो सुसरो स्यूं करे, डर लाग्यो तिण धाक ॥ १७ ॥
रुपिया सेती राजवी, बस हो जावे तेह।
तो स्यूं छे आ बापडी, नांणे घरसी नेह ॥ १८ ॥
इम चिंतव आघा कीया, घाल्या रुपिया रोक।
तुरंत उतारे आरती, इचरज पाम्यां लोक ॥ १९ ॥
मिल नें मांहे लेगया, माया दराई धोक।
कोइक जूती मेलके, हांसी करेज लोक ॥ २० ॥
अनमी भूम्यां ज्यूं नम्यां, चाकर ऊभो आय।
आपो परवश वेचियो, तिणरी खबर न कांय ॥ २१ ॥
हाथी हलकां आवज्यो, मोत्यां चोक पुराय।
पग हेठे गंगा वहे, कूडी करें सराय ॥ २२ ॥
केशरियो वनडो कहे, घणो लडायो जोर।
गाल्यां गावा ओसरी, जांणें दीधी भाटा री ठोर ॥ २३ ॥
कोइ कहे तुझ मा इसी, तो करे रावला लग।
साल्यां भांडे तब हंसें, तिण जीतव नें धिग ॥ २४ ॥
बोल्यो तव मोल्यो कह्यो, पांणी लावण दास।
कुटुम्ब कबीलो भांडियो, तोइ न हुयो उदास ॥ २५ ॥
भोला कहे गाया भला, रीझ गया घर पीत।
ग्यांनी मन में मुलकिया, ए गेल्यां वाला गीत ॥ २६ ॥
जातादिक तेडाव सूं, दुनियां हरखित थाय।
मन लागो छे मुगत सूं, तिण और न आवे दाय ॥ २७ ॥
घर में सेंठो घाल नें, नांख्यो माया जाल।
आगे मेल्यो भूस रो, अब तो सुरत संभाल ॥ २८ ॥
बदल तणी परि खांचसी, सगला घर नों भार।
आलस करनें बेससीं तो, देसी वचन प्रहार ॥ २९ ॥
छेहडे छेहडो बांधियो, नास न सके जाय।
[illegible] [illegible] ठाव को, तो सेठो हाथ संभाय ॥ ३० ॥

बीच मेंदी घाली वली, दागल कीयो तिवार ।
देखो कांम विडम्बनां, ओ लाजे नही लिगार ॥ ३१ ॥
ओलख लेस्यां आप स्यूं, मेदी रे एलांण ।
लाखां हजारां लोक में, पकडे लेसां तांण ॥ ३२ ॥
चिहुंगति चवरी जांणज्यो, बंधन डोर छे कर्म ।
थोथा तीनूं वांसडा, कुगुर कुदेव कुधर्म ॥ ३३ ॥
हिसा धर्म वताय नें, घणो रुलावसी तोय ।
पांच थावर च्यार त्रस, ए नव घाटी जोय ॥ ३४ ॥
होम तणी पर होमसी, पापी नरकां मांय ।
रंक राव सब एकसा, कारण किसका नांय ॥ ३५ ॥
नरक पंथ जाणें नही, आव बतावूं नाह ।
तीन फेरा आगें लीया, चोथे चलियो जाह ॥ ३६ ॥
खीच तणी पर खांडसी, भूरे जेम कपास ।
इण विध बेला बीतसी, तो पिण जीवण री आस ॥ ३७ ॥
जुवारी जिम जांणज्यो, हार्‍यो जाय गिंवार ।
कर्म गांठ काठी होसी, जातां मोष किवार ॥ ३८ ॥
पेहला हुतो माणसियो, अवे हुवो छे ढोर ।
बाया पिण गावें खरी, ओ हिज इचरज जोर ॥ ३९ ॥
ढोल घुरावे जीत रा, देखो उलटी चाल ।
मानस खोडे मार ने, गावे ढोडर माल ॥ ४० ॥
जीत्वो नही पिण हारियो, इम भावे धन खूट ।
पइसा भर भर नीठ सूं, देव देव कर छूट ॥ ४१ ॥
आगेवाणी तूं होसी, पापे मेलसी आथ ।
दोरो काकण दोरडो, ते खुलसी एकण हाथ ॥ ४२ ॥
विणज पाप नारी तणो, थोडा कर्म बंधाय ।
तिण सू खोले दोरडो, दोनूं हाथ लगाय ॥ ४३ ॥
सूंक पाक दीधी घणी, दे जाचकां दांन ।
इतरो थोकां परणियो, तोइ करे छे मांन ॥ ४४ ॥
घर चिंता लागी घणी, दिन झूरंता जाय ।
अछते छते तिरपतो, तडफे फासी मांय ॥ ४५ ॥
चोर कसाई रिण दगो, झूठ गुलामी वेठ ।
इतरा बानां ... नीठ भरीजे ...

एक कवलियो जद होसी, अनंता जीव संहार।
दोटो ले दोली फिरी, इण विध दां ला मार ॥ ४७ ॥
कद सासू मुख सूं कह्यो, कहो कुण दीयो जताय।
नरक दीवी श्री जिण कही, तिण स्यूं मेल्यो न्याय ॥ ४८ ॥
नारी सेती नेह करी, रुलियो काल अनंत।
इम सांभल नें थडहस्या, शूर वीर गुणवंत ॥ ४९ ॥
तडके मोहज तोडियो, चित्त लागो निरवांण।
आज पछे विषें सेववा, मोनें देव गुर री आंण ॥ ५० ॥
तोरण सूं पाछा फिस्या, बावीसमां जिण चंद।
जानी जोवंत रह्या, छोड दीया घर फंद ॥ ५१ ॥
चोसठ सहस्र अंतेवरू, पायक छिन्नू कोड।
भरत चक्रवर्ति सारिखा, छिन में दीधा छोड ॥ ५२ ॥
एकीका नर बोलिया, ए आगली रीत।
मोटा मोटा मांनवी, मांडी इण सूं पीत ॥ ५३ ॥
तिणरो जाब सुणो तुमें, क्रोध कषाय निवार।
आगम वेद कुरान में, भाख्यो दोषण नार ॥ ५४ ॥
मोटा मोटा मांनवी, मांड्यो इण सूं प्यार।
थोडा सुखां रे कारणें, भव भव हुआ खुवार ॥ ५५ ॥
महाभारत इण थी हुओ, आतो बात वदीत।
रावण सारिखा जीवडा, बहुला हुआ फजीत ॥ ५६ ॥
लंका कोट चितोड पिण, मार कीया पेमाल।
नारी हंदा नेह सूं, कुण कुण पड्या हवाल ॥ ५७ ॥
लोक तिके जांणें घणा, परे मांडे छें रांत।
मांडे झेलू भोज री, कराइ बकडावतां री घात ॥ ५८ ॥
नारी घर आई तरे, करे कवण वृतंत।
भेद घाल पर भावसी, चिंता गले पडत ॥ ५९ ॥
माता जण मोटो कीयो, पिता पोषियो देह।
भाई बहन रमाडता, त्यांसूं तोडायो नेह ॥ ६० ॥
नारी बोली नाह सूं, घर री कांम चलाय।
आरों अवसर आवियो, हिम्मत हिवें संभाय ॥ ६१ ॥
के तो जावो चाकरी, के जावो परदेस।
के करषण व्यापार कर, बेंठा कांय अजेस ॥ ६२ ॥

[illegible] हुओ

[illegible] [illegible] करे,, हाकिम

ज्यूं त्यूं कर धन आण नें, मेटो दहे हमेश ।
उत्सर्ग आरो आवियो, घर परो कलेश ॥ ६३ ॥
दिन दिन चिता मे गले, किण मे नही दरव ।
सगा सेण सूं मांगणी, जाये विच रहे गरव ॥ ६४ ॥
म्हांरी शर्म थांसूं रहिस, क्यूंडक करो अरज ।
तीण पुन्नी कोडक स्त्री, धर्म करण करो गरज ॥ ६५ ॥
वेर काढे भरतार सू, न्हांखे दे नांय ।
चाकर नी पर चूकले, हुकम नारकी मांय ॥ ६६ ॥
दिल केडें चाले पिऊ, तो चलावे वार ।
परण्यो जव उजम हुतो, अवे पिण विरचे नार ॥ ६७ ॥
वांधी गले कलेषणी, रुपिया गयो तन सोस ।
लीधा खोस ॥ ६८ ॥

रत्न : २६

तात्त्विक ढालां

ढाल : १

[जिण मारग मे धुर सूं आदि जिणंद के]

जिण मारग में धुर सूं आदि जिणंद के, त्यां आदि काढी जिण धर्म री जी।
त्यांरी सेवा सारे सुर नर चोसठ इद कें, त्यां सारां पेहली संजम लियो जी ॥जि०*१॥
जिण मारग में रिखभ देव जी को पूत के, भरतेश्वर छ खण्ड नो धणी जी।
त्या पिण दीधा मुगति नगर नां सूत के, त्यागी चउसठ सहस्र अन्तेवरू जी॥ २ ॥
समुद्र विजय सुत नेम महा बलवान के, तीथंकर बावीसमां जी।
त्या तोरण सेती पाछी वाली जान के, तेल चढी तज नीकल्या जी॥ ३ ॥
जिण मारग मे प्रगट्या पारस नाथ के, जश नांमी थया जगत में जी।
दिख्या लीधी तीनसो पुरषां सघात के, जिण शासण ना अधिपती जी॥ ४ ॥
जिण मारग मे भगवत श्री वरधमांन के, त्या सूर पणे संजम लियो जी।
कष्ट सही उपजायो केवल ग्यान के, आज शासण वरते तेहनो जी॥ ५ ॥
शाति जिणेश्वर ऊपना गर्भ मे आय के, देश नगर मे शांति हुई जी।
एकण भव मे छहुं पदवी पाय के, मुगत गया तीरथ थापने जी॥ ६ ॥
जिण मारग मे शाति कुंथु अरनाथ के, तीरथ धर्म दीपायने जी।
दिख्या लीधी सहस्र पुरुष सघात के, मास संथारे शिव लह्या जी॥ ७ ॥
जिण मारग मे तीथकर चोवीस के, क्षत्रिय कुल नां ऊपनां जी।
त्या सगला चारित पाल्यो विसवा बीस के, च्यारूं तीरथ थापने जी॥ ८ ॥
जिण मारग में सागर नामें राय के, साठ सहंस सुत मुवा सुणी जी।
दीधी सगली छ खण्ड रिद्धि छिटकाय के, वेरागे मन वालने जी॥ ९ ॥
जिण मारग मे चक्रव्रती सनत कुमार के, तस रूप देखण देव आवियो जी।
रोग ऊपनो जाणी देही असार के, चारित ले मुगते गया जी॥ १० ॥
जि० भरत सगर मघव सनत-कुमार के, शाति कुंथु अर जाणिये जी।
महापद्म हरिखेण जय विचार के, दसूंई चक्रवर्ती मोटका जी॥ ११ ॥
त्यारे लख चोरासी हय गय रथ ना थाट के, चोसठ सहस्र अन्तेवरू जी।
ते छोड्या पाय दल छव खण्ड रिद्धि गहघाट कें, जिण मारग कीयो दीपतो जी॥ १२ ॥
जिण मारग मे नवूं ही वलदेव के, राज रमण सर्व परिहरी जी।
मुगत पहुता श्री जिण मारग सेव के, वलभद्र गया सुर पांचमें जी॥ १३ ॥
जिण मारग में दशारण नांम नरेद के, देश दशारण को धणी जी।
तास पारखा करवा आयो शकेंद्र के, वीर समीपे दिख्या ग्रही जी॥ १४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

ढाल : २

[सल्य कोइ मत राखज्यो]

गणधर गोतम स्वांम जी, समरूं सुख दातारो जी।
चोवीस डंडक ऊपरे, पदवी रो विस्तारो जी।
भाव धरी भवियण सुणो ॥* १ ॥
समदिष्टी श्रावक मुनि, केवली जिणवर जांणो जी।
चक्री हलधर केशवा, मंडलीपती राजानो जी ॥भा०२॥
सेनापति गाथापति, बढही प्रोहित जोयो जी।
इत्थी हय गय जांणज्यो, ए रत्न पचेन्द्री होयो जी ॥ ३ ॥
चक्र छतर चरम डंड, असी मणी कागणी सातो जी।
सातूं नरक रो नीकल्यो, ए न लहे पदवी विख्यातो जी ॥ ४ ॥
पेहली नरक रो नीकल्यो, पदवी सोले पावे जी।
दुजी रा पनरा लहे, चक्रवर्त्त नही थावे जी ॥ ५ ॥
तीजी रा तेरा लहे, टलिया बल वासुदेवो जी
चोथी रा बारा लहे, न हुवे देवाधिदेवो जी ॥ ६ ॥
पांचमीं नरक इग्यार छे, केवलग्यांनी न होयो जी।
छठी रा दश रिध लहे, साधु न थाये कोयो जी ॥ ७ ॥
सातमीं नरक रा नीकल्या, तिर्यंच मांहि आवे जी।
हय गय समकित जाणज्यो, पदवी तीनज पावे जी ॥ ८ ॥
पृथवी पांणी वनस्पति, तिर्यंच मिनष वखाणो जी।
काल करी ने रिध लहे, संख्या उगणीस परमाणो जी ॥ ९ ॥
तीर्थंकर चक्रवर्ति नी, टलिया बल वासुदेवो जी।
तेवीस पदवी माहिली, च्यार पदवी नही लेवो जी ॥ १० ॥
बे ते चोइन्द्री जीवडा, रिधि अठारे पावे जी।
च्यार बोल ल्यो पाछला, वले केवलग्यानी न थावे जी ॥ ११ ॥
तेउ वाउ रा नीकल्या, पदवी नव बखाणो जी।
एकेन्द्री साते सही, वले घोडो ने हाथी जाणो जी ॥ १२ ॥
भवन पति व्यंतर ज्योतिषी, पदवी इम इकवीसो जी।
तीर्थंकर वासुदेव नीं, वे न लहे कही जगदीसो जी ॥ १३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

पेहला वीजा देवलोक रा, पदवी तेवीस पावे जी।
तीजा सू आठमां लगे, एकेन्द्री नही थावे जी॥ १४॥
च्यार देव लोक नव ग्रीवेक नां, रिधि लहे दग च्यारो जी।
घोडो ने हाथी टल गया, लेज्यो चतुर विचारो जी॥ १५॥
पांच अनुत्तर विमाण रा, पदवी आठज पावे जी।
चवदे रत्न चक्रवर्त्ती नां, वले वासुदेव न थावे जी॥ १६॥
ए तेवीस पदवी जिण कही, भव जीवां रे भागो जी।
भणे गुणे सुणे सांभले, आंणज्यो घट वेरागो जी॥ १७॥

●

ढाल : ३

दुहा

एक आंधो नें एक पांगलो, दोनूं पड़िया अटवी मांय।
इणरे आंख नहीं उणरे पग नहीं, त्यां सूं नगर गयो नही जाय ॥ १ ॥
आंधो डूंडाटी मारतो थको, आमो साहमों भमल्टा खात।
पांगलो पड़ियो तिहां आवियो, दोनूं करे मांहोमांहि वात ॥ २ ॥
पांगलो कहे हूं दुखियो घणो, हूं पड़ियो छूं अटवी मांय।
दोनूं पग नहीं भाई मांहरे, मोसूं नगर गयो नहीं जाय ॥ ३ ॥
जब आंधो कहे हूं पिण दुखियो घणो, हूं पिण मारूं अटवी में डूंडाट।
आंख्यां विण नगर पोहचूं नहीं, मोनें कुण बतावे वाट ॥ ४ ॥
जो तूं खांधे बेसे मांहरे, तूं मोनें मारग चलाय।
तो आपां दोनूं जणा, नगरी पहुंचा जाय ॥ ५ ॥

ढाल

[डाभ मुंजादिक नी डोरी]

पांगलो सुण हरख्यो ताहि, मिसलत कीधी मांहोमांहि।
पांगला ने उठायो आंधे, बेसाण्यो पोतारा खांधे ॥ १ ॥
पांगलो ते आंधा नें चलावे, सांनोकर मारग बतावे।
इण विध अटवी लांघी ताहि, दोनूं आया छें नगरी मांहि ॥ २ ॥
नगरी आया तो सुखिया हुआ, अन्न पांणी विनां नहीं मुआ।
ए दिष्टान्त रूडी रीत जांणों, संसार ने मुगत पिछांणो ॥ ३ ॥
मोटी अटवी जिम संसार, तिण में दुखिया जीव अपार।
नगर जिम मुगति नें जांणो, तिण नें रूडी रीत पिछांणो ॥ ४ ॥
आंधा ज्यूं जीव ग्यांन रहित, अग्यांनी मिथ्यात सहित।
तिण रे क्रिया रूप नहीं पाय, ते मुगत नगर किम जाय ॥ ५ ॥
ते जीव क्रिया करवा लागो, पिण नहीं जांणे मुगत रो मागो।
जिण आगम नों जांण नांहीं, जीवादिक न जांणे कांई ॥ ६ ॥
ते मुगत नगर किम जावें, संसार में झोला खावें।
ते तो आंधा जेम अलूझे, ग्यांन विनां संवलो न सूझे ॥ ७ ॥
कदा जीवादिक नो हुवो जांण, मोष मारग लियो पिछांण।
पिण क्रिया करणी नहीं आवे, तो पिण मुगत नहीं जावे ॥ ८ ॥

मिलिया आंधो ने पांगलो दोय, सुखे नगर पोंहता सोय।
ज्यूं ग्यान क्रिया नों सयोग थाय, तो जीव मुगत मांहे जाय॥ ९ ॥
क्रिया तो ग्यान छे नांही, क्रिया तो जांणे देखे नहीं काइ।
क्रिया तो सुमता रस भाव, कर्म रोकण तोडण रो सभाव॥ १० ॥
ग्यांन दरसण छे उपयोग, ते जांणे देखे लोक अलोक।
कोइ क्रिया नें कहे उपयोग, तिण ते मोटो मिथ्यात रो रोग॥ ११ ॥
ग्यांन क्रिया छे दोय, त्यां ने एक म जांणो कोय।
त्यांरो सभाव जूवो जूवो जांणो, त्याने रूडी रीत पिछांणो॥ १२ ॥

●

ढाल : ४

दुहा

केइ अग्यांनी इम कहें, एकेन्द्रिय ना पुन्य अल्प मात।
त्यांनें मार पचेन्द्री पोषियां, तिण में कहें धर्म साख्यात॥ १॥
तिण एकेन्द्री नें वेदना हुवे, ते भोलां नें खबर न कांय।
तिणरी गोतम स्वांमी पूछा करी, जब दीवी वीर बताय॥ २॥

ढाल

[स्वांमी म्हांरा राजा नें धर्म सुणाज्यो]

हाथ जोडी विनती करे, नीचो शीष नमाय हो। स्वांमी॰।
पृथवी काय हणियां थकां, वेदना केहवी थाय हो। स्वांमी॰।
अरज करूं छूं विनती॰॥ १॥
तिणरे आंख कांन नासिका नहीं, जिभ्या पिण नहीं ताय हो। स्वा॰।
वले मन वचन विण वेदना, भोगे छे किण न्याय हो॥ स्वा॰ अ॰ २॥
बल्ता वीर इसडी कहे, अति वेदन हुवे ताय हो। गोतम।
दिष्टंत देइ नें कहुं तो भणी, सुण तूं चित ल्याय हो। गोतम।
उपकारी इम उचरिं॥* ३॥
कोइ गुंगो पुरुष छे जन्म रो, बहरो जन्म रो जांण हो।
ते पिण आंधो ने पांगुलो, वले रोग घेरित छे अंग हो॥ गो॰ उ॰ ४॥
तिण अंध पुरुष नें भालां करी, भेदें जायगां बत्तीस हो।
वले बत्तीस जायगां खडगे करी, छेदे कर कर रीस हो॥ ५॥
तिण अंध पुरुष नें हुवे वेदनां, छेदे भेदे तिण वार हो।
एहवी वेदन पृथवी काय नें, हुवे छे दीयां परिहार हो॥ ६॥
ते रांक गरीब छें बापडा, त्यांरी करे हर कोइ घात हो।
त्यांरी पुकार लागें किण आगले, ए इसडा जीव अनाथ हो॥ ७॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ढाल : ५

दुहा

मेण लाख लकडा तणों, चोथो माटी रो ताहि।
ए च्यारूंइ गोला कह्या, सूतर ठांणायंग मांहि ॥ १ ॥
ज्यूं च्यार जात रा मांनवी, इण संसार मझार।
केइ गीदड केइ सूरमां, ते सुणज्यो विस्तार ॥ २ ॥
साधां री वांणी सुणी च्यारूं जणा, आयो मन वेराग।
आपे इतला दिन आंधां वूहा, अबे उघडिया भाग ॥ ३ ॥
हिवें थांनक बारे नीकल्या, केइ लोक बोल्या छे तडकी।
थे बेठा मूंढो बांध नें, भली गमाइ घरकी ॥ ४ ॥
केइक तो इम बोलिया, केइकां दीधी गाल।
मेण गोला ज्यूं परगल्यो, ताप लागो ततकाल ॥ ५ ॥
मेंण गोलो सूर्य रा ताप थी, गल ने हुवो नरम।
ज्यूं इण लोकां रा ताप थी, छोड दीयो जिण धर्म ॥ ६ ॥
तीन पुरुष गाढा रह्या, त्यांने पाछा उत्तर आप।
पोता पोता रे घरे आवियां, जिहां बेठा छे मा बाप ॥ ७ ॥
मात पिता ने इम कहे, म्हें सुणी साधां री वांण।
त्यां वचन अमोलक वागस्या, म्हांने लागा अमिय समांण ॥ ८ ॥
जब माता त्रिसूलो चाढ नें, बोली मुख सूं गेर।
निकल म्हारा घर थी, लेने थांरी वेर ॥ ९ ॥
ते हाथ जोडी ने इम कहे, तूं म्हांरे जन्म री दाता।
हूं साधां कने जाऊं नही, आज पछे हे माता ॥ १० ॥
सूर्य ताप थी नही पिगलियो, तिण ने लागी अग्नि री झाल।
लाख तणो गोलो हुतो, पिगलियो ततकाल ॥ ११ ॥
माता वचन करडा कह्या, तिण ने अग्नि जिम झाल।
पोते लाख गोला जिसो, ते भिष्ट हुवो ततकाल ॥ १२ ॥
दोय पुरुष गाढा रह्या, न हुवा मूल उदास।
माता पिता ने उत्तर दीया, हिवे आया नारी रे पास ॥ १३ ॥
नारी पूरी कलेसणी, तिण रे धर्म न आवे दाय।
तीन लिलाडी सल चाढ ने, किण विध बोले वाय ॥ १४ ॥
तडक भडक बोली इसी, कर आवे ज्यूं दाय।
ओ घर ने ए टावस्या, हूं कूवे पड स्यूं जाय ॥ १५ ॥

हूं जीमण रांधूं जुगत सूं, तूं आवे खांण नें हूंस्यो।
तूं जाय बेठो मुख बांध नें, बडो धर्म को घूंस्यो ॥ १६ ॥
ए वचन सुणी नारी तणा, भय पाम्यो छे अतंत।
आ मरसी मो ऊपरे, तो करवो कुण विरतंत ॥ १७ ॥
आ मरती दीसें खरा खरी, तो हिवें छोड देवूं जिण धर्म।
ज्यूं सगा संबंधी लोकां मझे, रहे ज्यूं म्हांरी सर्म ॥ १८ ॥
ओ नारी सूं डरतो कहे, राखो म्हांरी सर्म।
थें कूवे कदे पडज्यो मती, हूं कदे न करसूं धर्म ॥ १९ ॥
सूर्य अग्नि रा ताप सूं, पिगल्यो मेंण नें लाख।
त्यां काठ गोलो काठो रह्यो, ते हुवो अग्नि सूं राख ॥ २० ॥
हूं कोड घणो परण्यो हुंतो, घणां लोका री साख।
काठ गोला सारिखो थो गीदस्यो, ते बल नें होय गयो राख ॥ २१ ॥
स्त्री अग्नि जिसी कही, तिण री भरे सहु कोइ साख।
काठ गोला जिसो हुंतो, तिण नें बाल कीयो छे राख ॥ २२ ॥
जे आग्याकारी नार नां, ते पडिया इण रे पास।
ते नित डरता रहे तेह सूं, जांने आग्याकारी दास ॥ २३ ॥
उठ वेस आव जाव रो, कर अमकडियो काम।
बानर जेम नचावियो, जांणे असल गुलाम ॥ २४ ॥
इसडा गीदड बापरा, तिण सूं धर्म कीयो किम जात।
हिवें चोथो गार गोला जिसो, सुणज्यो तिण री वात ॥ २५ ॥
तिण लोका ने उत्तर दीया, कर मा बाप सूं जाव।
निज स्त्री बेठी तिहां, आयो तुरत सताव ॥ २६ ॥
तिण स्त्री ने मांडी कही, मैं जिण धर्म जाण्यो आज।
हिवें सामायक पोसा करी, सारूं आतम काज ॥ २७ ॥
ए वचन सुणी ने स्त्री, कीधो क्रोध अपार।
अगल डगल बोली घणी, तीन लीटी चाढी निलाड ॥ २८ ॥
थे मूंडे बांधी मुंहपती, मांड्यो घर में फेन।
हूं जहर फांसी खाये मरूं, थे किसो एक पावो चेन ॥ २९ ॥
पापंड छोडी चालो पादरा, थें मानों म्हांरी वात।
नहीं तो हूं थां ऊपरे, मर सूं कर अपघात ॥ ३० ॥
जब इम जांण्यो आ पापणी, नाहरी सम छे नार।
कह्यो करूं जो एहनों, तो न्हांखे नरक मझार ॥ ३१ ॥

जो हूं नरमाइ करूं, तो आ उलटी पाड आबे।
तो वणसी म्हांरा भाग री, हिवे देऊं पादरा जाब ॥ ३२ ॥
तूं कूवे बावडी पड मरे, थारे उदे हुआ छे कर्म।
पिण हूंतो थांरे कारणे, छोडूं नहीं जिण धर्म ॥ ३३ ॥
म्हारे बंधन छे एक तांहरो, तो तुट जावे इणवार।
तूं कूवे बावडी पड मरे, तो हूं लेसूं संजम भार ॥ ३४ ॥
कंत वचन इसडो कह्यो, जब पीहर गइ रीसाय।
घणो ओसीयालो होय नें, मोनें ले जासी मनाय ॥ ३५ ॥
स्त्री आगे मूल चलियो नही, ओ अडिग रह्यो व्रत भाल।
ओ तों गार गोला जिसो, ज्यूं घमे ज्यूं लाल ॥ ३६ ॥
इण लारे तेलो करे, आडा जडे किवाड।
तीन पोसा ठाय नें, धर्म ध्यांन ध्यावे तिणवार ॥ ३७ ॥
स्त्री बाट जोए रही, मनाय लेजावे मोय।
तीन दिन विचे गया, पिण अजे न आयो कोय ॥ ३८ ॥
छोरा छोरी पीहर तणा, भेला कर मेल्या सोय।
थांरो बेनोंइ कांई करे, पाछो आय कहिज्यो मोय ॥ ३९ ॥
ते भेला होय ने आविया, जोवे छेकली मांहि।
मस्तक उघाडे मुंह मुंहपती, बेठो दीठो घर मांहि ॥ ४० ॥
ते देखी पाछा आय ने, मांड कही सर्व बात।
जब धसको पड्यो तेहने, घर गयो दीसे साख्यात ॥ ४१ ॥
बेंन भाइ मा बाप ने, साथे ले आइ तेह।
हिवें हाथ जोडी ने इम कहे, मोने कदे म दीजो छेह ॥ ४२ ॥
टाबरियां घर तणी, थांनें छे आशर्म।
उवे मुनिवर मोटा जती, थे करो जोख सूं धर्म ॥ ४३ ॥
मैं संजम री सुणी बारता, म्हारा गल गल हुवा नेंण।
थें बुरो मूल मांनो मती, म्हे हसती बोल्या बेंण ॥ ४४ ॥
हूं कह्यो न लोपूं तुम तणो, हूं रहसूं आग्याकार।
थें घर बेठांइ करो धर्म, मत लो सजम भार ॥ ४५ ॥
जब कंत कहे सुण कांमणी, ओ हूं करूं नही करार।
जब म्हांरो मन ऊठसी, तब लेसूं संजम भार ॥ ४६ ॥
जब स्त्री मन मांहे जाणियो, ओ रखे छोडेला मोय।
तो विनय भक्ति करूं घणी, इण री कह्यो न लोपूं कोय ॥ ४७ ॥

ढाल : १

दुहा

अणुकंपा नें आदरे, कीजों घणा जतन।
जिणवर ना धर्म मांहिली, समकत पाय रतन ॥ १ ॥
गाय भेंस आक थोंर नों, ए च्यारूंई दूध।
तिम अणुकंपा जांणजों, राखे मन में सूध ॥ २ ॥
आक दूध पीघां थकां, जुदा करे जीव काय।
ज्यूं सावद्य अणुकंपा कीयां, पाप कर्म बंधाय ॥ ३ ॥
भोलेंई मत भूलजों, अणुकंपा रे नांम।
कीजो अंतरंग पारखा, ज्यूं सीझें आतम कांम ॥ ४ ॥
अणुकंपा में आगन्यां, तीर्थंकर नी होय।
सावद्य निरवद ओलखों, सूतर साह्मां जोय ॥ ५ ॥

ढाल

[समकित वमियो नन्दश०]

मेघ कुंमर हाथी ना भव में, श्री जिण भाषी दया दिल आई।
उंचो पग राख्यों सुसीयो न मार्‌यों, या करणी श्री वीर सराई।
या अणुकंपा जिण आगन्या में* ॥ १ ॥
कष्ट सह्यो तिण पाप सूं डरतें, मन दिढ सेंठी राखी तिण काया।
बलता जीव दावानल जांणी, सूंड सूं गिर गिर बारे न ल्याया ॥ या० २ ॥
परत संसार कीयो तिण ठामें, उपनो श्रेणक नें घर आई।
भगवंत आगला दीष्या लीघी, पेंहला अधेन गिनाता मांहि ॥ ३ ॥
मांडलो एक जोजन रो कीघो, घणा जीव बचीया तिहां आई।
तिण वचीयां रो धर्म न चाल्यो, समकत आयां विण समझ न कांई।
या अणुकंपा सावद्य जांणो ॥ ४ ॥
नेम कुंमर परणीजण चाल्या, पसू पंखी देख दया दिल आंणी।
एहवो कांम सिरें नहीं मोनें, म्हांरे काज मरें वहु प्रांणी ॥ ५ ॥
परणीजणा सूं परिणांम फिरीया, राजमती नें उभी छिटकाई।
कर्म तणा बंध सूं नेम डरीया, तोडी आठ भवां री सगाई ॥ ६ ॥
आप सूं मरता जीव जांणी नें, कडवा तूंबा रो कीघों आहारो।
कीडीयां री अणुकंपा आंणी, धिन धिन धर्म रूची अणगारो ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

फोडवी लब्द अणुकंपा आंणी, गोसाला नें वीर बचायो।
छ लेस्या छदमस्थ हूंता, मोह कर्म वश रागज आयो।
या अणुकंपा सावद्य जांणों ॥ ८ ॥
असंजती गोसालो कुपातर, तिणनें साहज सरीर रो दीधो।
धर्म जांणे तो जगत दुखी था, वले वीर ए कांम कांय न कीधों ॥ या० ९ ॥
तेजु लेस्या मेल गोसालें, बाल्या दोय साध भसम करी काया।
लब्द धारी था साध घणाई, मोटा पुरुषां नें क्यूं न बचाया ॥ १० ॥
जिण राखियें अणुकंपा कीधी, रेणा देवी तिण साह्मों जोयो।
सेलग जष हेठो उतास्यों, देवी आंण खडग में पोयों ॥ ११ ॥
भगता हिरण गमेषी नी सुलसा, कीधी अणुकंपा विलखी जांणी।
छ बेटा देवकी रा जाया, सुलसा रें घर मेल्या आंणी ॥ १२ ॥
जगन वाडे हरकेसी आया, असणांदिक तेहनें नहीं दीधो।
जषदेव अणुकंपा आंणे, रुद्र वमंता ब्राह्मण कीधां ॥ १३ ॥
मेघकुमर गर्भे हूंता जब, सुख रें तांई कीधां अनेक उपायो।
धारणी रांणी कीधी अणुकंपा, मन गमता असणांदिक खायो ॥ १४ ॥
अभयकुमार रो मित्री देवता, तिण अभयकुमर री अणुकंपा आंणी।
धारणी रांणी रो डोहलो पूस्यों, अकाले विरखा कर ने वरसायो पांणी ॥ १५ ॥
किसनजी नेम वंदण नें जातां, एक पुरुष नें दुखीयों जांणी।
साज दीयो अणुकंपा कीधी, इंट उठाय उणरे घर आणी ॥ १६ ॥
दुखीया दोहरा देख दलद्री, अणुकंपा उणरी किण आणी।
गाजर मूलादिक सचित्त खवावें, वले पावे काचों अणगल पांणी ॥ १७ ॥
दुखीया जीव मारग मांहें देखी, टल जाए साध संकोची काया।
आप हणे नही पाप सूं डरता, अणुकंपा आंण न मेले छाया ॥ १८ ॥
उपाडे नें जो छाया मेले तों, असंजती नीं वीयावचा लागी।
या अणुकंपा साध करें तो, जाए पांचूंई महावरत भागी ॥ १९ ॥
सो साध ग्रिषमकाल उन्हालें, पांणी विनां हुवे जुदा जीव काया।
अणुकंपा आंणे नें असुध वेंहरावें, छ काया रा पीहर साधु बचाया ॥ २० ॥
गज सुखमाल ले नेम री आग्या, काउसग कीयो मसांणा में जाई।
सोमल आंण खीरा सिर घाल्या, सीस न धूण्यों दया दिल आई ॥ २१ ॥
साधु विनां अनेरा सर्व जीवां री, अणुकंपा आंणे साध वांधे बंधावें।
तिणनें नसीत रे बारमें उद्देसें, तिण साध नें चोमासी प्राछित आवे ॥ २२ ॥

रासडीयादिक सू तस जीव बध्या छे, ते तों भूख तिरषादि सूं अतंत दुख पावे।
त्याने अणुकंपा आंणे ने छोडे छोडावे; तिण साध ने चोमासी प्राछित आवे॥ २३॥
व्याध कसटादिक रोगीलो सुण ने, तिण उपर वेद चलाए नें आवें।
साजो करे अणुकंपा आणें, गोली चूरण दे रोग गमावें॥ २४॥
लबदधारी. ना खेलादिक थी, सोलेई रोग जडां सूं जावें।
वले जाणे साध ए रोग सू मरसी, अणुकंपा आणे रोग नही गमावे॥ २५॥
जो अणुकपा साध करे तों, उपदेस देई वेराग चढावे।
चोखे चित पेलो हाथ जोडे तो, च्यारूंई आहार नां त्याग करावे।
या अणुकंपा निरवद जांणों॥ २६।
गृहस्थ भूलो उजाड वन मे, अटवी ने वले उजड जावे।
अणुकपा आंणे साध मारग बतावे, तो च्यार महीनां रो चारित जावे॥ २७॥
अटवी मे भूला ने अतंत दुखी देख, च्यारूंई सरणा साघ दिरावें।
मारग पूछे तो मुनज साझें, बोले तो भिन भिन धर्म सुणावें।
या अणुकंपा निरवद जांणों॥ २८॥

सिंघ वाघादिक मंजारी, हिंसक जीव देखी आचारी।
त्यानें मार कह्यां हिंसा लागे, पेंहलोई महावरत भागें ॥ १० ॥
मत मार कह्यां उणरो रागी, तीजे कारण हिंसादिक लागी।
सूयगडाअंग छें साखी, श्री वीर गया छे भाखी ॥ ११ ॥
गृहस्थ नां सरीर ममता में, साधु बेठों समता में।
रह्या धर्म सुकल ध्यांन ध्याई, मूंआ गयां फिकर न कांई ॥ १२ ॥
इह लोक नें पर लोक, जीवणो मरणो कांम भोग।
ए तो पांचूंई छे अतिचार, वांछ्यां नही धर्म लिगार ॥ १३ ॥
आपणोई वांछें तो पाप, पर नो कुण घाले संताप।
घणों जीवणो वांछे अग्यानी, समभाव राखें ते ग्यांनी ॥ १४ ॥
वायरो विरषा सी ताप, रह्यो न रह्यो चावे तो पाप।
राज विरोध रहीत सुकाल, उपद्रव जावो ततकाल ॥ १५ ॥
साता बोलां रो ए विसतार, ओलखीयो ते अणगार।
घट माहें जो सुमता आवे, हुवा न हुवा एको ही न चावे ॥ १६ ॥
एकण रे दे रे चपेटी, एकण रो दे उपद्रव मेटी।
ए तो राग द्वेष नों चालो, दसवीकालक संभालो ॥ १७ ॥
साध बेठो नावा में आई, नावडीए नाव चलाई।
नावा फूटी माहे आवे पाणी, साध देखे लोकां नही जांणी ॥ १८ ॥
आप डूबे अनेरा प्रांणी, किणरी अणुकंपा नांणी।
वतायां वरत रो भंग, तिणरो साखी आचारग ॥ १९ ॥
सांनी कर साध जतावे, लोक कुसले खेमें घर आवे।
डूबा पिण साध न चावें, रह्या चावे तो तुरत वतावे ॥ २० ॥
मूंन साध रह्या ते संत, तिके करे संसार नो अंत।
परिणांमज राखे सेठा, धर्म ध्यांन माहे रहे बेठां ॥ २१ ॥

ढाल : ३

दुहा

वांछें मरणों जीवणों, तो धर्म तणों नहीं अंस।
ए अणुकंपा थकां, वधें कर्म नों वंस ॥ १ ॥
मोह अणुकंपा जे करे, तिणमें राग नें धेष।
भोग वधें इंद्र्यां तणो, अंतर उंडो देख ॥ २ ॥
दया अणुकंपा आदरे, तिण आतम आंणी ठाय।
मरतो देखे जगत नें, सोच फिकर नही कांय ॥ ३ ॥
कष्ट सह्या घर में थकां, पाल्या वरत रसाल।
मोह अणुकंपा श्रावकां, त्यां पिण दीधी टाल ॥ ४ ॥
काचा था ते चल गया, ते होय गया चकचूर।
के सेठां रह्या चलीया नहीं, त्यांनें वीर वखांण्या सूर ॥ ५ ॥

ढाल

[तुम जायेज्यो रे स्वारथ ना सगा]

चंपा नगरी नां वांणीयां, ज्याज भर नें समुदर में जाय-रे।
हिवें तिण अवसर एक देवता, त्यांनें उपसर्ग कीधो आय रे।
जीव मोह अणुकंपा न आणीए* ॥ १ ॥
मिनका सीयाल खाधें वेसांण नें, गलें पेंहरी छे रूंड माल रे।
लोही राध सूं लीप्यो सरीर नें, हाथे खडग दीसें विकराल रे ॥ जी० २ ॥
लोक धड धड लागा धूजवा, ओर देव रह्या मन ध्याय रे।
अरणक श्रावक डरीयो नहीं, तिण काउसग दीधो ठाय रे ॥ ३ ॥
सागारी अणशण कीयों, धर्म ध्यांन रह्यो चित्त ध्याय रे।
सगलां नें जांण्या डूबता, अणुकंपा न आंणी कांय रे ॥ ४ ॥
अरणक श्रावक ने डिगायवा, देव वदि वदि बोले वाय रे।
जो अरणक धर्म न छोडसी, तो ज्याज डबोवूं जल माय रे ॥ ५ ॥
उंची उपाड नें उंधी न्हांख नें, कर सूं सगलां री घात रे।
काली बोली अमावस रा जण्या, मांन रे तूं अरणक वात रे ॥ ६ ॥
ग्यांन दरसण म्हांरा वरत नें, इणरो कीधो विघन न थाय रे।
हूं सेवग छूं भगवांन रो, मोने कोइ न सकें चलाय रे ॥ ७ ॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

लोक विल विल करता देख नें, अरणक रो न विगड्यो नूर रे।
मोह करुणा न आंणी केहनी, देव उपसर्ग कीधो दूर रे॥ ८॥
देव धिन धिन अरणक ने कहे, तू तो जीवादिक नो जाण रे।
थांरा सुधर्मी सभा मझे, इंद्र कीया घणा वखाण रे॥ ९॥
अरणक श्रावक रा गुण देख नें, आया देव री दाय रे।
दोय कुंडल री जोडी आप ने, देव आयो जिण दिस जाय रे॥ १०॥
नमीराय रिषि चारित लीयो, ते तों उभो बाग में आय रे।
इंद्र आयो तिणनें परखवा, ते किण विध बोलें वाय रे॥ ११॥
थांरी अगन करी मिथला बले, एकर सू साह्यों जोय रे।
अतेवर बलतो मेलसी, ए वात सिरें नही तोय रे॥ १२॥
सुख वपराय सारा लोक में, विलखा देख पुत्र रतन रे।
जो तूं दया पालण नें उठीयो, तो कर तूं थांरा जतन रे॥ १३॥
नमी कहे वसूं जीवूं सुखे, म्हारी पल पल सफला जात रे।
या मिथला नगरी दाझतां, म्हांरो बले नही तिलमात रे॥ १४॥
मोने हरख नही मिथला रह्यां, बलीयां नहीं सोग लिगार रे।
मैं सावद्य जांण त्यागी जका, रही बली न चावे अणगार रे॥ १५॥
नमिराय रिषी आंणी नही, मोह अणुकंपा नी वात रे।
समभाव राखे मुगते गयां, करे अष्ट कर्मां री घात रे॥ १६॥
श्री केसव केरो बंधवो, यो तो नांमे गजसुखमाल रे।
तिण दीख्या ले काउसग्ग रह्यो, सोमल आयो तिण काल रे॥ १७॥
माथे पाल बांधी माटी तणी, माहे घाल्या लाल अंगार रे।
कष्ट ऊपनों वेदन अति घणी, नेम करुणा न आंणी लिगार रे॥ १८॥
श्री नेम जिणेसर जांणता, होसी गज सुखमाल री घात रे।
पिण अणुकंपा आंणी नही, ओर साध न मेल्या साथ रे॥ १९॥
श्री वीर जिणद चोवीसमां, कल्पातीत मोटा अणगार रे।
त्याने देव मिनष तिरजंच ना, उपसर्ग उपनां अपार रे॥ २०॥
संगम देवता भगवंत ने, दुख दीधा अनेक प्रकार रे।
अनार्य लोकां पिण वीर ने, स्वानादिक दीधा लार रे॥ २१॥
चोसठ इंद्र मोहछव आवीया, दीख्या दिन भेला होय रे।
पिण कष्ट पड्यो भगवांन नें, नायो उपसर्ग टालण कोय रे॥ २२॥
दुख देता देखी जगनाथ ने, किण अलगा न कीधा आय रे।
संमदिष्टी देव हुंता घणां, त्यां करुणा न आंणी कांय रे॥ २३॥

देवता जांण्यों श्री विरधमांन रे, उदे आया दीसें छे कर्म रे।
अणुकंपा आंण विचें पड्यां, ए जिण भाख्यो नही धर्म रे॥ २४॥
धर्म हुवें तो आघों नही काढता, वले वीर नें दुखीया जांण रे।
परीसो देवण आवे तेहनें, देव अलगो करता तांण रे॥ २५॥
मछ गलागल मंड रही, सारा दीप समुद्रां मांय रे।
भगवंत कहे जो इंद्र नें, तो थोडा में दीयें मिटाय रे॥ २६॥
पडती जांणें अंतराय नें, तो अचित खवारें पूर रे।
एहवी सकत घणी छे इंद्र नीं, पिण कर्म न हुवे दूर रे॥ २७॥
चूलणी पीया ने पोसा मर्भे, देव दीधा छें दुख आय रे।
कुण कुण हवाल तिण कीया, ते सांभलजो चित्त ल्याय रे॥ २८॥
तीन बेटां रा नव सूला कीया, तिणरा मूंहढा आगें लाय रे।
तेल उकाल नें मांहें तल्या, बलबलता सूं छांटी काय रे॥ २९॥
समें परिणामां वेदना सही, जांणी आपणा संच्या कर्म रे।
अणुकंपा नांणी अंगजात री, तिण छोड्यो नहीं जिण धर्म रे॥ ३०॥
मत मारण रो कह्यों नहीं, ते तो जांण्यों सावद्य वाय रे।
करुणा नांणी मरता देख ने, सेंठों रह्यों धर्म ध्याय रे॥ ३१॥
जो तूं धर्म न छोडसी, तो थारें देव गुर जिम छे माय रे।
तिणने मारूं विध आगली, थांरा मूंहढा आगें ल्याय रे॥ ३२॥
जद आरत ध्यांन तूं ध्याय नें, परसी माठी गति में जाय रे।
सुणनें चूलणीपीया चल गयो, मानें राखण रो करें उपाय रे॥ ३३॥
ओ तों पुरष अनर्थ करे जिसो, झाल राखूं ज्यूं न करे घात रे।
ते तों भद्रा वचावण उठीयो, इणरें थाभो आयो हाथ रे॥ ३४॥
अणुकंपा आंणी जणणी तणी, तो भागा वरत ने नेम रे।
देखो मोह अणुकंपा एहवी, तिणमें धर्म कहीजें केम रे॥ ३५॥
चूलणीपीया नें सूरादेव नां, चलशतक ने सकडाल रे।
यां च्यांरा रा मार्या दीकरा, देव तलीया तेल उकाल रे॥ ३६॥
बेटां नें मरता देखीया, नांणी मोह अणुकंपा प्रेम रे।
उठ्या मात त्रियादिक राखवा, तो भागा वरत ने नेम रे॥ ३७॥
मात त्रियादिक राखतां, भागा वरत नें बंध्या कर्म रे।
तो साध विचे जाए पडीयां थकां, यांनें किण विध होसी धर्म रे॥ ३८॥
चेडा ने कोणिक री वारता, निरावलिका भगोती साख रे।
मांनव मूंआ दोय संगरांम में, एक कोड़ ने असी लाख रे॥ ३९॥

भगवंत अणुकंपा आंण नें, पोतें न गया न मेल्या साध रे।
यांनें पेंहला पिण वरज्यां नही, घणा जीवां री जांणे विराध रे॥ ४० ॥
ए दया अणुकंपा जांणता, तो वीर बडालें जाय रे।
सगला ने साता वपरावता, थोडा में देता चकाय रे॥ ४१ ॥
कोणिक भगता भगवांन रो, चेडो बारें वरतधार रे।
इंद्र भीडी आयो ते समकती, अें किण विध लोपता कार रे॥ ४२ ॥
ग्यांन दरसण चारित माहिलों, वधतो जांणें किणरों उपाय रे।
तो करें अणुकंपा भव जीव री, वीर विनां बोलायां जाय रे॥ ४३ ॥
समुद्र पाली सुखां में झिल रह्यो, संसार विषें रस लाग रे।
चोर ने मारतो देखी ऊपनो, उतकष्टो परम वेंराग रे॥ ४४ ॥
चारित लीयो कर्म काटवा, जांणें मोष तणो उपाय रे।
पिण करुणा न आंणी चोर नी, छोडावण री न काढी वाय रे॥ ४५ ॥
साध श्रावक नीं एक रीत छें, तुमे जोवो सूतर नों न्याय रे।
देखो अंतर माहे विचार नें, कूडी कांय करों बकवाय रे॥ ४६ ॥

●

ढाल : ४

दुहा

दुखीया देखी तावडें, जो नही मेलें छाय।
साध श्रावक न गिणें तेहनें, ए अन तीरथी नीं वाय॥ १ ॥
मार्‍यां मरायां भलो जांणीयां, तीनूंई करणां पाप।
देखण वाला नें जे कहें, ते खोटा कुगुर सराप॥ २ ॥
करमां कर नें जीवडा, उपजें ने मर जाय।
असंजम जीतब्य तेहनों, ते साध न करें उपाय॥ ३ ॥
देखें मांहोमांहि विणसता, अलगो करदां जाय।
एहवो कहें तिण उपरें, साध बतावें न्याय॥ ४ ॥

ढाल

[दुलहो मानव भव काई तुमें]

नाडो भरीयो छे डेडक माछल्यां, मांहें नीलण फूलण रो पूर हो। भविकजण।
लट फूहांरा आदि जलोक सूं, तस थावर भरीया अरूड हो। भविकजण।
करजों पारख जिण धर्म री*॥ १ ॥

सुलीया धांन तणो ढिगलो पर्‍यो, मांहें लटां ने ईल्यां अथाय हो।
सुलसल्यां इंडादिक अति घणा, किल विल करें तिण मांय हो ॥क०२॥

एक गाडो भर्‍यों जमीकंद सूं, तिणमें जीव घणा छे अनंत हो।
च्यार प्रज्या च्यार प्रांण छें, मार्‍यां कष्ट कह्यो भगवंत हो॥ ३ ॥

काचा पांणी तणा माटा भर्‍या, घणा जीव छें अणगल नीर हो।
नीलण फूलण आदि लटां घणी, त्यामें अनंत वताया छे वीर हो॥ ४ ॥

खात भीनों उकरडी लटां घणी, गीडोला गधईया जांण हो।
टलबल टलबल कर रह्या, याने कर्मां नांख्या छे आंण हो॥ ५ ॥

कांयक जायगां में उंदर घणा, फिरें आमां ने सांह्या अथाग हो।
थोडों सो खडकों सांभलें, तो जाअें दिशोदिश भाग हो॥ ६ ॥

गुल खांड आदि मिसटांन में, जीव चिहुं दिस दोड्या जाय हो।
माख्यां नें मांका फिर रह्या, ते तों हुचकें मांहोमा आय हो॥ ७ ॥

नाडों देखी नें आवें भेंसीयां, धांन ढूकें बकरा आय हो।
गाडें आवें बलद पाधरा, माटो आय उभी छें गाय हो॥ ८ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

पखी चूगें उकरली उपरे, उंदर पासें मिनकी जाय हो।
माखी ने माका पकड ले, साधु किणने बचावें छोडाय हो॥ ९ ॥
भेस्यां हाकल्यां नाडा माहिलां, सगलां रें साता थाय हो।
बकरां ने अलगा कीयां, इंडादिक जीव ते बच जाय हो॥ १० ॥
थोडा सा बलदां ने हाकल्यां, तो न मरें अनंत काय हो।
पांणी फूंहारादिक किण विध मरें, नेंडी आवण न दें गाय हो॥ ११ ॥
लट गीडोलादिक कुसले रहे, जो पंखी ने दीये उडाय हो।
मिनकी छछकार नसार दे, तो उंदर घर सोग न थाय हो॥ १२ ॥
मांका ने आघो पाछो करे, तो माखी उड नाठी जाय हो।
साधां 'रे सगला सारिषा, ते तों विचे न पडे जाय हो॥ १३ ॥
मिनकी धाकल उदर बचाय ले, माखी राखे माका ने धकाय हो।
ओर मरता देख राखें नही, यामें चूक पड्यो ते बताय हो॥ १४ ॥
साध पीहर बाजे छ काय नां, एक छोडावे तस काय हो।
पांच काय मरती राखें नही, तो पीहर किण विध थाय हो॥ १५ ॥
रजूहरण लेई ने उ उठीयों, जोरी दावे दीयो छुडाय हो।
ग्यांन दरसण चारित मांहिलो, यांरें बधीयो ते मोय बताय हो॥ १६ ॥
ग्यांन दरसण चारित तप विनां, ओर मुगिति रो नहीं उपाय हो।
छोडा मेला उपगार संसार नां, तिण थी सद गति किण विध जाय हो॥ १७ ॥
जितरा उपगार संसार नां, ते तो सगलाइ सावद्य जांण हो।
श्री जिण धर्म मे आवे नही, कूडी म करो तांण हो॥ १८ ॥
अग्यांनी रो ग्यानी कीया थकां, हुवो निश्चें पेला रो उधार हो।
कीयो मिथ्याती रो समकती, तिण उतारीयो भव पार हो॥ १९ ॥
असंजती नें कीयो संजती, ते तों मोष तणा दलाल हो।
तपसी कर पार पोहचावीयो, तिण मेट्या सर्व हवाल हो॥ २० ॥
ग्यात्त दरसण चारित्त ने तप, यांरों करें कोइ उपगार हो।
आप तिरें पेलो उधरे, दोयां रो खेवो पार हो॥ २१ ॥
ए च्यार उपगार छें मोटका, तिणमे निश्चेई जांणों धर्म हो।
शेष रह्या कार्य संसार नां, तिण कीधां बंधसी कर्म हो॥ २२ ॥

ढाल : ५

दुहा

जीव दया छें उपरें, मुलगा तीन दिष्टंत।
आगें विसतार करें जितों, ते सुणजो कर खंत ॥ १ ॥

ढाल

[सहेल्या ए वादो रुडा साध नें]

एक चोर चोरें धन पार को, वले दूजो हों चोरावें आगेंवांण।
तीजों कोइ करें अनुमोदनां, ए तीनां रा हो खोटा किरतब जांण।
भव जीवां तुमें जिण धर्म ओलखों* ॥ १ ॥
एक जीव हणें तसकाय ना, हणावे हो बीजों पर नां प्रांण।
तीजों पिण हरखे मारीयां, ए तीनूंई हो जीव हिंसक जांण ॥ भ० २ ॥
एक कुसील सेवें हरख्यों थको, सेवाडे हो ते तो दूजे करण जोय।
तीजों पिण भलो जांणें सेवीयां, ए तीनां रे हो कर्म तणों बंध होय ॥ ३ ॥
ए सगला नें सतगुर मिल्या, प्रतिबोध्या हो आंण्या मारग ठाय।
किण किण जीवां नें साधां उधस्या, तिणरो सुणजो हो विवरा सुध न्याय ॥ ४ ॥
चोर हिंसक नें कुसीलीया, यांरें तांई रे दीधो साधां उपदेस।
त्यांनें सावद्य रा निरवद कीया, एहवो छें हो जिण दया धर्म रेस ॥ ५ ॥
ग्यांन दरसण चारित तीनूं तणों, साधां कीधो हो जिण थी उपगार।
ते तो तिरण तारण हुआं तेहनां, उतास्या हो त्यांनें संसार थी पार ॥ ६ ॥
ए तो चोर तीनूं समझ्यां थकां, धन रह्यो रे धणी नें कुसले खेम।
हिंसक तीनूं प्रतिबोधीयां, जीव बचीया हो कीधो मारण रो नेम ॥ ७ ॥
सील आदरीयो तेहनी, अस्त्री पडी हो कूआ माहें जाय।
यांरो पाप धर्म नहीं साध नें, रह्या मूंआ हो तीनूं इविरत मांय ॥ ८ ॥
धन रो धणी राजी हुवों धन रह्यां, जीव वचीया हो ते पिण हरखत थाय।
साध तिरण तारण नहीं तेहनां, नारी नें पिण हो नहीं डबोई आय ॥ ९ ॥
कोइ मूंढ मिथ्याती इम कहें, जीव वचीया हो धन रह्यो ते धर्म।
तो उणरी सरधा रे लेखें, अस्त्री मूंई हो तिणरा लागें कर्म ॥ १० ॥
जीव जीवें ते दया नहीं, मरें ते हो हिंसा मत जांण।
मारण वाला नें हिंसा कही, नहीं मारे हो ते तों दया गुण खांण ॥ ११ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

नींब आंबादिक विरष नो, किण ही कीधो हो वाढण रो नेम।
इविरत घटी तिण जीव नी, विरष उभो हो तिणरो धर्म केम ॥ १२ ॥
सर द्रह तलाव फोडण तणों, सूंस लेइ हो मेट्या आवता कर्म।
सर द्रह तलाव भस्या रहें, तिण माहि हो नही जिणजी रो धर्म ॥ १३ ॥
लाडू घेवर आदि पकवांन नें, खाणा छोड्या हो आतम आंणी तिण ठाय।
वेंराग वध्यों तिण जीव रें, लाडू रह्यो हो तिणरो धर्म न थाय ॥ १४ ॥
दव देवो गांम जलायवो, इत्यादिक हो सावद्य कार्य अनेक।
ए सर्व छोडावें समझाय नें, सगला री हो विध जांणों तूमें एक ॥ १५ ॥
हिवें कोइक अग्यांनी इम कहें, छ काय काजें हो द्यां छां धर्म उपदेस।
एकण जीव नें समझावीयां, मिट जाए हो घणा जीवां रो कलेश ॥ १६ ॥
छ काय घरे साता हुइ, एहवो भाषे हो अण तीरथी धर्म।
त्यां भेद न पायो जिण धर्म रो, ते तो भूला हो उदें आयो मोह कर्म ॥ १७ ॥
हिवें साध कहे तुमे सांभलो, छ काया रे हो साता किण विध थाय।
सुभ असुभ बांध्या ते भोगवे, नही पाम्यां हो त्यां मुगत उपाय ॥ १८ ॥
हणवा सूंस कीया छ काय नां, तिणरे टलीया हो मेला असुभ कर्म पाप।
ग्यांनी जांणें साता हुई एहने, मिट गया हो जनमं मरण संताप ॥ १९ ॥
साध तिरण तारण हुआ एहना, सिध गति में हो मेल्यों अविचल ठांम।
छ काय लारे झिलती रही, नही सझीया हो तिणरा आतम कांम ॥ २० ॥
आगें अरिहंत अनंता हुआ, कहतां कहतां हो कदे नावे त्यांरो पार।
आप तिस्या ओरां ने तारीया, छ काया रे हो साता न हुइ लिगार ॥ २१ ॥
एक पोतें बच्यो तें मरवा थकी, दूजे कीधो हो तिणरें जीवण रो उपाय।
तीजों पिण हरष्यों उण जीवीयां, यां तीनां में हो कुण सुघ गति जाय ॥ २२ ॥
कुसले रह्यो तिणरे इविरत घटी नही, तो दूजा ने हो तुमें जांणजो एम।
भलो जांणें तिणरे विरत न नीपजी, ए तीनूंई हो सुध गति जासी केम ॥ २३ ॥
जीवीयां जीवायां भलो जांणीयां, ए तीनूंई हो करण सरीपा जांण।
कोइ चतुर होसी ते परखसी, अणसमझ्यां हो करसी तांणा तांण ॥ २४ ॥
छ काया रो वांछें मरणो जीवणों, ते तो रहसी हो संसार मझार।
ग्यांन दरसण चारित तप भला, आदरीयां हो आदरायां खेवो पार ॥ २५ ॥

ढाल : ६

दुहा

पोतें हणें हणावें नहीं, पर जीवां ना प्रांण।
हणें जिणनें भलो जांणें नहीं, ए नव कोटी पचखांण॥ १॥
ए अभय दांन दया कही, श्री जिण आगम मांय।
तो पिण द्वंध उठावीयों, जैंनी नांम धराय॥ २॥
अभय दांन न ओलख्यो, दया री खबर न कांय।
भोला लोकां आगलें, कूडा चोज लगाय॥ ३॥
कहें साध बचावें जीव नें, ओरां नें कहें तूं बचाय।
भलों जांणें वचीयां थकां, पिण पूछ्यां पलटे जाय॥ ४॥

ढाल

[जगत-गुरु तिसला नन्दन वीर]

इण साधां रा भेष में जी, बोलें एहवी वाय।
म्हें पीहर छां छ काय नां जी, जीव वचावां जाय।
चतुर नर समझो ग्यांन विचार॥ १॥
एहवी करें परूपणा जी, बोले बंध न होय।
पलट जाए पूछयां थकां जी, भोलां खबर न कोय॥ चु० स० २॥
पेट दुखे सो श्रावकां जी, जुदा हुवें जीव काय।
साध आया तिण अवसरे जी, हाथ फेर्‌यां सुख थाय॥ ३॥
साध पधार्‌यां देख नें जी, गृहस्थ बोल्या वाय।
थें हाथ फेरो पेट उपरें जी, अें श्रावक जीवां जाय॥ ४॥
जब कहें हाथ न फेरणो जी, ए साध नें कल्पें नांय।
थें कहिता जीव वचावणो, तो बोल ने बदलो कांय॥ ५॥
गोसाला नें वीर वचावीयो जी, तिणमें कहे छे धर्म।
सों श्रावक नहीं वचावीयां, त्यांरी सरधा रो निकल्यों भर्म॥ ६॥
गोसाला रे कारणें जी, लब्द फोडी जगनाथ।
सो श्रावक मरता देख नें, ते कांय न फरो हाथ॥ ७॥
धर्म कहे भगवंत नें, पोतें कांय छोडी रीत।
सो श्रावक नहीं वचावीयां, त्यांरी कुण मांनें परतीत॥ ८॥

गोसाला ने वचावीयां मे, धर्म कहे साख्यात।
तो सों श्रावक नही वचावीयां, त्यांरी विगडी सरधा वात॥ ९॥
इम कह्यां जाब न ऊगजें, जब कूडी करें बकवाय।
हिवे साघ कहें तुमे सांभलो जी, गोसाला रो न्याय॥ १०॥
साघ नें लब्द न फोडणी, कह्यों सूतर भगोती रे मांय।
पिण मोह कर्म वस राग थी जी, लीयो गोसालो वचाय॥ ११॥
छ लेस्या हूती जद वीर में जी, हूता आठूंई कर्म।
छदमस्थ चूका तिण समें जी, मूर्ख थापें धर्म॥ १२॥
छदमस्थ चूक पड्यों तिकों जी, मुंढे आंणे बोल।
निरवद कोइ म जांणजो जी, अकल हीया री खोल॥ १३॥
ज्यूं आणंद श्रावक नें घरे जी, गोतम बोल्या कूड।
पडीया छदमस्थ चूक मे जी, सुघ हुवा वीर हजूर॥ १४॥
इम अवस उदे मोह आवीयो, नही टाल सक्या जगनाथ।
ते तो न्याय न जांणीयो, त्यांरे मांहे मूल मिथ्यात॥ १५॥
गोसाला ने नही वचावता तो, घटतो अछेरो एक।
निश्चे होणहार टले नहीं जी, समभो आंण ववेक॥ १६॥
गोसाला नें वचावीयो तो, वधीयो घणों मिथ्यात।
लोहीठांण कीयो भगवंत नें, वले दोय साधां री घात॥ १७॥
गोसाला ने वचावीयां में, धर्म जांणें ए सांम।
तो दोय साघ वचावत आपणा, वले करता ओहिज कांम॥ १८॥
गोसाला नें वचायने जी, धर्म जांणें जिणराय।
दोय साघ न राख्या आपणा, यो किण विध मिलसी न्याय॥ १९॥
जगत नें मरता देख नें जी, आडा न दीघा हाथ।
धर्म जाणें तो आगो न काढतां, अें तिरण तारण जगनाथ॥ २०॥
ए विवरा सुघ वतावीयो जी, सूतर भगोती रे न्याय।
कुबर्दी करें कदागरों जी, सुबुघी री आवे दाय॥ २१॥
साघां रा मुख आगलें, पंखी पडीयों माला थी आय।
कहे मेहलां ठिकांणे हाथ सूं तो, दया रहें घट मांय॥ २२॥
तपसी श्रावक उपासरे जी, काउसग दीयो ठाय।
तांगी मिरगी आय ढहि पड्यो जी, गावड भांगे जीव जाय॥ २३॥
कोइ गृहस्थ आंण ने कहें जी, थे मोटां मुनिराज।
थें बेठों न कर्‍यों एहने जी, ओ मर छे गावड भांज॥ २४॥

जब तो कहें म्हें साध छां जी, श्रावक बेठों करां केम।
मांहरे कांम कांई गृहस्थ सूं जी, बोलें पाधरा एम॥ २५॥
श्रावक बेठों करें नहीं जी, पंखी मेले माला मांय।
देखो पूरो अंधारों एहनें जी, ए चोडें भूला जाय॥ २६॥
पंखी माला में मेल्तां जी, संके नहीं मन मांय।
तो श्रावक नें बेठों कीयां में, धर्म न सरधे कांय॥ २७॥
इतरी समझ पडे नहीं, त्यांनें समकत आवे केम।
छकीया मोह मिथ्यात में, बोलें मतवाला जेम॥ २८॥
कहें साध नें उंदर छोडावणो जी, मिनकी पाछें जाय।
श्रावक नें बेठों करें नहीं, अं किण विध मिलसी न्याय॥ २९॥
मुंसादिक बचावतां जी, मिनकी नें दुख थाय।
श्रावक नें बेठां कीयां जी, नहीं किण रे अंतराय॥ ३०॥
मुंसादिक नें कारणें जी, मिनकी नें न्हसावें डराय।
श्रावक मरें मुख आगलें, बेठों न करें हाथ संभाय॥ ३१॥
ए प्रतख वात मिलें नहीं जी, तावडा छांया जेम।
श्री जिण मारग ओलख्यों, त्यांरें हिरदे वेसें केम॥ ३२॥
लाय लागें तो ढांढां खोल नें, साध काढें उघाडें दुवार।
श्रावक नें बेठों करें नहीं, आ सरधा करसी खुवार॥ ३३॥
ढांढां नें तो खोलतां जी, खप घणी छें ताय।
सों श्रावक हाथ फेर्यां बचें, त्यांरी नांणे कांई मन मांय॥ ३४॥
कहें ढांढां खोल बचावसां, पिण श्रावक रें न फेरां हाथ।
एह अग्यांनी जीव री जी, कोइ मूर्ख मानें वात॥ ३५॥
गाडा नीचें आवें डावडों, कहें साध ने लेणों उठाय।
श्रावक नें बेठो करे नहीं, ओ उंधों पंथ इण न्याय॥ ३६॥
रित वरसाला नें समें जी, जीव घणा छें ताय।
लटां गजायां नें कातरा जी, पडीया मारग मांय॥ ३७॥
साध वारे नीकल्या जी, जोय जोय मूंकें पाय।
लारें ढांढां देख्या आवतां, पिण साध न लेवें उठाय॥ ३८॥
जे बालक लेवें उठाय नें, यां जीवां नें न ले उठाय।
तो उणरी सरधा रें लेखें, उणरे दया नहीं घट मांय॥ ३९॥
जो बालक नें लेवें उठाय नें, ओर जीव देखी ले नांय।
इण सरधा रो करजों पारिखो, कोइ रखे पडों फंद माय॥ ४०॥

ढाल : ७

दुहा

मछ गलागल लोक में, सबला ते निबलां नें खाय।
तिण में धर्म परूपीयो, कुगुरां कुबुद्ध चलाय॥ १॥
मूला जमीकंद खवावीयां, कहें छें मिश्र धर्म।
आ सरधा पाषंड्यां री आदरयां, जाडा बंधसी कर्म॥ २॥
मूला खवायां पांणी पावीयां, ओर सचित्तादिक अनेक।
खाधा खवायां भलो जांणीयां, यां तीनां री विध एक॥ ३॥
ए तो न्याय न जांणीयो, उजड पडीया अजांण।
करण जोग विगटावीया, अे मिथ्यादिष्टी अेलांण॥ ४॥
कुहेत लगाए लोक नें, हिंसा धर्म भाषंत।
हिवे सात दिष्टंत साध कहे, ते सुणजो धर खंत॥ ५॥
मूला पांणी अन्न नों, चोथो हूका रो जांण।
तस जीव कलेवर तस तणों, सातमो मिनष वखांण॥ ६॥
यामें तीन दिष्टंत करडा कह्या, जांणे अग्यानी विरुध।
समदिष्टी जिण धर्म ओलख्यो, ते न्याय सूं जांणें सुध॥ ७॥
केशी कुमर दिष्टंत करडा कह्या, तो छोडी प्रदेसी रूढ।
न्याय मेले हुवो समकती, झगडो झाले ते मूढ॥ ८॥
जिणरी बुध छे निरमली, ते लेसी न्याय विचार।
सुणे भारीकर्मां जीवडा, तो लडवा ने छे तयार॥ ९॥
ए सात दिष्टंत धुर सूं चले, आगें घणों विसतार।
भिन भिन भवियण सांभलो, अंतर आंख उघाड॥ १०॥

ढाल

[वीर सुणो मोरी वीनती]

मूला खवायां मिश्र कहें, लगावे हो खोटा दिष्टंत एह।
कहे पाप लागो मूलां तणो, धर्म हूवो हो खावां बचीया एह।
भवियण जिण धर्म ओलखो*॥ १॥
कहे कूआ वाव खणावीयां, हिंसा हूइ हो तिणरा लागा कर्म।
लोक पीये कुसले रह्यां, साता पामी हो तिणरो हूवो धर्म॥ भ० २॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

इम कहें मिश्र परूपतां, नहीं संके हो करता बकवाय।
इण सरधा रो प्रश्न पूछीयां, जाब नावें हो जब लोक लगाय॥ ३॥
हिवें सात दिष्टंत री थापनां, त्यांरी सुणजो हो विवरां सुध बात।
निरणो करजों घट भितरें, बुधवंता हो छोड नें पखपात॥ ४॥
सो मिनषां नें मरता राखीया, मूला गाजर हो जमीकंद खवाय।
वले कुसले राख्या सो मांनवी, काचो पांणी हो त्यानें अणगल पाय॥ ५॥
पोह माह महीनें ठारी परें, तिण काले हो वाजें शीतल वाय।
अचेत पड्या सो मांनवी, मरता राख्या हो त्यांनें अग्न लगाय॥ ६॥
पेट दुखें तलफल करें, जीव दोरो हो करे हाय विराय।
साता वपराइ सो जणा, मरता राख्या हो त्यांनें होको पाय॥ ७॥
सो जणा दुरभख काल में, अन्न विनां हो मरें उजाड मांय।
कोइ एक मारें तसकाय ने, सो जणा नें हो मरता राख्या जीमाय॥ ८॥
किण ही कालें अन्न विनां, सो जणा रा हो जुदा हुवें जीव काय।
सहजें कलेवर मूंओ पड्यों, कुसले राख्या हो त्यांनें एह खवाय॥ ६॥
मरता देखी सो रोगला, ममाइ विण हो ते तो साजा न थाय।
कोइ ममाइ कर एक मिनष री, सो जणां रे हो साता कीधी बचाय॥ १०॥
जमीकंद खवायां पांणी पावीयां, त्यामें थापें हो धर्म ने पाप दोय।
तो अगन लगायां होको पावीयां, इत्यादिक हो सगले मिश्र होय॥ ११॥
जो धर्म सरधे बचीया तिकों, हिसा तिणरा हो लागा जाणे कर्म।
तो सातूंई सारिषा लेखवे, कहि देगों हो सगलें पाप नें धर्म॥ १२॥
जो सातां में मिश्र कहे नहीं, तो किम आवे हो इण बोल्या री परतीत।
आप थापें आप उथपें, तो कुण मांनें हो आ सरधा विपरीत॥ १३॥
जो सातांइ में मिश्र कहे, तो नही लागें हो गमती लोकां ने बात।
मिलती कह्यां विण तेहनीं, कुण करे हो कूडां री पखपात॥ १४॥
एक दोय बोलां में मिश्र कहें, सगलां में हो कहितां लाजें मूंढ।
एहवो उलटों पंथ झालीयों, त्यांरें केडें हो तांणें मूर्ख रूढ॥ १५॥
सो सो मिनष सगलें बच्या, थोडी घणी हो सगलें हुइ घात।
जो धर्म बरोबर न लेखवें, तो उथप गई हो मूला पांणी री वात॥ १६॥
बात उथपती जांण नें, कदा कहिदें हो सगलें पाप नें धर्म।
पिण समदिष्टी सरखे नही, ए तों काढ्यों हो खोटी सरधा रो भर्म॥ १७॥
असंजती रों मरणो जीवणो, वंछा कीधां हो निश्चें राग नें धेष।
ओ धर्म नहीं जिण भाखियों, सांसो हुवें तो हो अंग उपंग देख॥ १८॥

काच तणा देखी मिणकला, अण समझा हो जाणे रतन अमोल।
ते निजर पड्यो सराफ री, कर दीधो हो त्यांरो कोड्या मोल ॥ १९ ॥
मूला खवायां मिश्र कहे, या सरधा हो काच मणी समांन।
तो पिण झाली रतन अमोल ज्यूं, न्याय नं सूझे हो चाला कर्मां रा जांण ॥ २० ॥
जीव मारें झूठ बोल ने, चोरी करने हो पर जीव बचाय।
वले करें अकार्य एहवा, मरता राख्या हो मइथुन सेवाय ॥ २१ ॥
धन दे राखें पर प्रांण ने, क्रोधादिक हो अठारे सेवाय।
ए सावद्य कांम पोते करी, पर जीवा ने हो मरता राखें ताय ॥ २२ ॥
जो हिंसा करे जीव राखीयां, तिणमें होसी हो धर्म ने पाप दोय।
तो इम अठारेंइ जाणजो, ए चरचा में हो विरलो समझे कोय ॥ २३ ॥
जो एकण में मिश्र कहे, सतरां में हो भापा बोले ओर।
उवी सरधा रों न्याय मिलें नही, जब उलटी हो कर उठे झोड ॥ २४ ॥
जीव मारें जीव राखणा, सूतर में हो नही भगवत वेंण।
उंधो पंथ कुगुरा चलावीयो, सुध न सूझे हो फूटा अतर नेण ॥ २५ ॥
कोइ जीवता मिनष तिर्यंच नां, होम करे हो जुध जीतण संगराम।
एक तो ओ पाप मोटको, जीव होम्या हो वीजों सावद्य कांम ॥ २६ ॥
कोइ नाहर कसाइ मार नें, मरता राख्या हो घणा जीव अनेक।
जो गिणें दोयां ने सारिखा, त्यारी विगडी हो सरधा वात ववेक ॥ २७ ॥
पेहला कहिता जीव बचावणा, तिण लेखें हो बोले सुध न कांय।
जीव बचीया रों धर्म गिणें नही, खिण थापें हो खिण में फिर जांय ॥ २८ ॥
देवल धजा तेहनी परे, फिरता बोले हो न रहे एकण ठाम।
त्यांनें पाषंडी जिण कह्या, झगडो झाल्यो हो नही चरचा रो कांम ॥ २९ ॥
जो एकण नें अधर्म कहे, तो दूजा ने हो कहणो धर्म ने पाप।
ए लेखो कीयां तो लड पडे, त्यांरा घट मे हो खोटी सरधा री थाप ॥ ३० ॥
वले सरणो लेइ श्रेणक तणो, सावद्य बोले हो तिणरी खबर न काय।
जोरी दावे पेला नें बरजीया, तिण मांहे हो जिण धर्म बताय ॥ ३१ ॥
कहे श्रेणक फड्हो फेरावियो, हणों मती हो फेरी नगरी मे आण।
तिण मोष हेते धर्म जांणीयों, एहवो भाषे हो मिथ्या दिष्टि अजाण ॥ ३२ ॥
कहे राय श्रेणक तो समकती, धर्म विनां हो किम करसी ए काम।
इम कहि कहि भोला लोक नें, फंद में न्हाखे हो श्रेणक रो ले नाम ॥ ३३ ॥
श्रेणक नें करे मुख आगले, आह्मी साह्मी हो माडे खांचा ताण।
आप छादें उटंका मेलतां, कुण पाले हो श्री जिणवर आंण ॥ ३४ ॥

समदिष्टी तणों कोइ नांम ले, भरमावे हो अणसमझ्या अजाण।
तो सकंद्र समदिष्टि देवता, जिण भगता हो एका अवतारी जांण॥ ३५॥
ते भीड आए कोणक तणी, जुध कीधा हो तिण सावद्य जांण।
एक कोड असी लाख उपरें, मिनषां रो हो कर दीयो घमसांण॥ ३६॥
श्रेणक राय फड्हो फेरावीयों, ए तो जांणो हो मोटां राजां री रीत।
भगवंत न सरायो तेहनें, तो किम आवें हो तिणरी परतीत॥ ३७॥
फड्हो फेरयों हणो मती, इतरी छें हो सूतर में बात।
कोइ धर्म कहें श्रेणक भणी, ते तो बोलें हो चोडें भूठ विख्यात॥ ३८॥
लोकां सूं मिलती बात जांण नें, कर रह्या हो कूडी बकवाय।
मिश्र कहे ते पिण अटकलां, साचा हुवें तो हो सूतर मे दे बताय॥ ३९॥
ए तो पुत्रादिक जायां परणीयां, ओछवादिक हो ओरी सीतला जांण।
एहवो कारण कोइ उपजे, श्रेणक राजा हो फेरी नगरी में आण॥ ४०॥
ते रुकीया नहीं कर्म आवतां, नही कटीया हो तिणरा आगला कर्म।
नरक जातो रह्यो नही, न सीखायो हो तिणनें भगवत धर्म॥ ४१॥
भगवते मोटा मोटा राजवी, प्रतिबोध्या हो आण्या मारग ठाय।
साध श्रावक धर्म बतावीयों, न सीखायो हो फड्हो फेरणो ताय॥ ४२॥
तो श्रेणक सीख्यो किण आगलें, भगवंत हो पूछ्या साझे मूंन।
वले न जणावें आंमना, आग्या विण हो करणी जाणो जबून॥ ४३॥
वासुदेव चक्रवत मोटकां, त्यांरी वरती हो तीन छ खंड में आण।
जो फड्हो फेरयां मुगत मिले, तो कुण काढें हो आघो जिण धर्म जाण॥ ४४॥
कोउ रांगण दीवादिक सिनांन नें, विसन-सातू हो विना मन दे छोडाय।
जो इण विध जिण धर्म नीपजे, तो छ खड मे हो वरजे आंण फेराय॥ ४५॥
फल फूल अनंत काय ने, हिंसादिक हो अठारें पाप नें जाण।
जोरी दावें पेंला नें मना कीयां, धर्म हुवे तो हो फेरे छ खंड में आण॥ ४६॥
तीर्थंकर घर मे थकां, त्यांने हुता हो तीन ग्यान वशेष।
हाल हुकम थो लोक में, त्या नही फेरयो हो फड्हो सूतर देख॥ ४७॥
वल देवादिक मोटा राजवी, घर छोडी हो कीया पाप पचखाण।
श्रेणक जिम फड्हो न फेरीयो, जोरी दावे हो न वरताइ आण॥ ४८॥
ब्रह्मदत्त चक्रवत तेहने, चित्त मुनी हो प्रतिबोधण आय।
साध श्रावक नो धर्म कह्यों, फड्हा री हो न कही आंमना काय॥ ४९॥
बीसां भेदां रुकें कर्म आवतां, बारें भेदा हो कटें आगला कर्म।
ए मोष रा मारग पाधरा, छोडा मेला हो सगला पाषंड धर्म॥ ५०॥

दोय वेस्या कसाइवाडें गइ, करता देख्या हो जीवां रा संघार।
दोनूं जण्यां मतो करी, मरता राख्या हो जीव एक हजार॥ ५१॥
एकण गेंहणो देइ आपणो, तिण छोडाया हो जीव एक हजार।
दूजी छोडाया इण विधे, एकां दोया हो चोथो आश्रव सेवार॥ ५२॥
एकण नें पाषंडी मिश्र कहे, तो दूजी ने हो पाप किण विध होय।
जीव बरोबर बचावीया, फेर पडीयो हो ते तो पाप में जोय॥ ५३॥
एकण सेवायो आश्रव पांचमो, तो उण दूजी हो चोथो आश्रव सेवाय।
फेर पड्यो तो इण पाप में, धर्म होसी हो ते तो सरीषो थाय॥ ५४॥
एकण ने धर्म कहितां लाजें नही, दूजोडी नें हो कहितां आवे संक।
जब लोकां सूं करे लगावणी, एहवो जाणो हो चोडे कुगुरां रा डंक॥ ५५॥
एक वेस्या सावद्य कांमो करी, संहस्र नांणो हो ले वडी घर मांय।
दूजी किरतब करी आपणा, मरता राख्या हो सहस्र जीव छोडाय॥ ५६॥
धन आण्यो खोटा किरतब करी, तिणरें लागा हो दोनूं विध कर्म।
दूजी जीव छोडाया तेहने, उण लेखे हो हुवो पाप ने धर्म॥ ५७॥
पाप गिणें मइथुन मे, जीव बचीयां हो तिणरो न गिणे धर्म।
पोतें सरधा री खबर पोते नही, ताणे ताणे हो बांधे भारी कर्म॥ ५८॥
ए प्रश्नां रो जाब न उपजे चरचा मे हो अटके ठांम ठांम।
तो पिण निरणो करे नही, वक उठे हो जीवां रो ले नांम॥ ५९॥
जीव जीवे काल अनाद रो, मरे तेहनीं हो पर्याय पलटी जांण।
संवर निरजरा तो न्यारा कह्या, ते ले जावें हो जीव ने निरवांण॥ ६०॥
पृथवी पांणी अग्न वाय ने, वनस्पति हो छठी तसकाय।
मोल ले ले छोडावें तेहने, धर्म होसी हो ते तों सगलां में थाय॥ ६१॥
तसकाय छोडायां धर्म कहे, पांच काय में हो नहीं बोलें निसक।
भर्म में पाड्या लोक ने, त्यां लगाया हो मिथ्यात रा डक॥ ६२॥
त्रिविधे त्रिविधे छकाय हणवी नही, एहवी छे हो भगवंत री वायं।
मोल लीयां धर्म कहे मोष रो, ए फंद माड्यो हो कुगुरा कुबद चलाय॥ ६३॥
देव गुर धर्म रतन तीनूं, सूतर में हो जिण भाख्या अमोल।
मोल लीयां नही नीपजें, साची सरधो हो आंख हिया री खोल॥ ६४॥
ग्यान दरसण चारित नें तप, मोष जावा हो मारग छें च्यार।
त्याने भिन भिन ओलखे आदरें, सुध पालें हो ते पामे भव पार॥ ६५॥

ढाल : ८

दुहा

दया दया सहको कहै, ते दया धर्म छै ठीक।
दया ओलख नें पालसी, त्यांनें मुगत नजीक॥ १॥
आ दया तो पहिलो व्रत छै, साध श्रावक नों धर्म।
पाप रुकें तिण सूं आवता, नवा न लागें कर्म॥ २॥
छ काय हणावें नहीं, हणीयां भलो न जांणें ताय।
मन वचन काया करी, आ दया कही जिनराय॥ ३॥
आ दया चोखें चित्त पालीयां, तिरें घोर रुद्र संसार।
बले आहीज दया परूपनें, भव जीवां उतारें पार॥ ४॥
एक नांम दया लोकीक री, तिणरा भेद अनेक।
तिणनें भेषधारी भूला घणा, ते सुणजों आंण ववेक॥ ५॥

ढाल

[पाखंड मत रो निरणों कीजे]

द्रबे लाय लागी भावे लाय लागी, द्रबे कूवो नें भावेइ कूवो।
ए भेद न जांणें मूंढ मिथ्याती, संसार नें मुगत रो मारग जूओ।
भेष धर नें भूला रो निरणों कीजो*॥ १॥

कोइ द्रबे लाय सूं बलतों राखें, द्रबे कूवो पड़ता नें झाल बचावें।
ओ तो उपगार कीयो इण भव रो, जो ववेक विकल त्यांनें खबर न कायो॥भे०॥
घट में ग्यांन घाल नें पाप पचखावें, तिण पड़तो राख्यो भव कूआ मांही।
भावे लाय सूं बलता नें काढें रिषेस्वर, ते पिण गेहलां भेद न पायो॥ ३॥
सूंनें चित सूतर वांचे मिथ्याती, त्यांरे द्रब नें भाव रा नहीं निवेरा।
परिवार सहीत कुपंथ में पड़ीया, त्यां नरक सूं सनमुख दीया डेरा॥ ४॥
गृहस्थ नें ओषध भेषद देइ नें, अनेक उपाय करे जीवां बचावें।
ए संसार तणा उपगार कीयां सें, मुगत रो मारग मूंढ बतावें॥ ५॥
करें नितर जंतर झाड़ा नें झपटा, सरपादिक नों जेहर देवें उतारी।
काढें डाकण सांकण भूत जखादिक, तिणमेंइ धर्म कहें सांगधारी॥ ६॥
एहवा किरतब सावद्य जांणें, त्रिविधे त्रिविधे साधां त्याग कीधो।
भेषधारी लोकां सूं मिलनें अग्यांनी, त्यां जीव ज्यावन रो सरणों लीधो॥ ७॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

उवे जीव बचावण रो मुख सूं कहें पिण, कांम पड्यां बोलें फिरती वांणों।
भोला नें भर्म में पाड विगोया, ते पिण डूबें छे कर कर तांणो॥ ८॥
कीड्यां मकोडा नें लटां गजायां, ढांढां रा पग हेठें चींथ्या जावें।
भेषधारी कहे म्हें जीव बचावां, तो चुण चुण जीवां ने क्यूं न बचावें॥ ९॥
कोइ आखो चोमासो उपदेस देवें तो, दश पांच जीवां नें दोहरा समभावें।
जो उद्यम करें च्यार महीनां माहे, तो लाखां गमे जीव तेह बचावें॥ १०॥
सो घर रे आंतर कोइ लेवे संथारों, तो तुरत आलस छोडी देवण जावें।
सो पगलां गयां जीव लाखां बचें छे, त्यां जीवां नें जाए क्यूं न बचावें॥ ११॥
घर छोडतों जांणे सो कांसों उपरें, तो सांग पेहरावण सताब सूं जावें।
एक कोस गयां जीव कोडां बचे छें, त्यां जीवां जाय क्यूं न बचावें॥ १२॥
जब तो कहें म्हारो कल्प नहीं छे, म्हें तो संसार सूं हूआ न्यारा।
कब ही कहे म्हें जीव बचावां, उवे वांणी न बोलें एकण धारा॥ १३॥
साध तो आपरा व्रत राखण नें, त्रिविध त्रिविध जीव नही सतावें।
संसार मांहे जीव पच रह्या छे, त्यांसूं तो साध हुव निरदावे।
आ सरधा जिणवर भाखी॥ १४॥
जीवणों मरणों त्यांरो नही चावें, समभतो देखें तो साध समभावें।
ग्यांनादिक गुण घट मांहे घाले, मुगतनगर मे साध पोहचावे॥ १५॥
गृहस्थ रा पग हेठे जीव आवें तो, भेषधारी कहें म्हे तुरत बतावां।
ते पिण जीव बचावण काजें, म्हे सर्व जीवां रों जीवणो चावां॥ १६॥
इविरती जीवां रो जीवणो वांछें, तिण धर्म रो परमारथ नही पायो।
आ सरधा अग्यानी री पग पग अटके, ते सांभलजों भवियण चित ल्यायो॥ १७॥
गृहस्थ रे तेल जाजें मूंण फूटां, ते कीड्या रा दर माहे रेलो आवे।
बिच मे जीव आवे ते तेल सूं वहिता, वले तेल वुहो वुहो अगनि में जावें॥ १८॥
जो अग्न उठें तो लाय लागें छे, तो तस थावर जीव मास्या जावें।
गृहस्थ रा पग हेठे जीव बतावे, तो तेल ढूलें ते बासण क्यूं न बतावें॥ १९॥
पग सूं मरता जीव बतावें, तेल सूं मरता जीवां नें नही बतावें।
आ खोटी सरधा उघाडो दीसें, पिण अभितर आंधां रे निजर न आवें॥ २०॥
वले भेषधारी विहार करतां मारग में, त्यानें श्रावक साह्यां मिलीया आयो।
ते मारग छोड नें उज्जड पडीयां, तस थावर जीवां नें चीथता जायो॥ २१॥
श्रावकां ने उज्जड पडीयां जाणें, तस थावर जीवां नें मरता देखें।
गृहस्थ रा पग हेठे जीव बतावे, तो मारग बताय देणो इण लेखें॥ २२॥

एक पग हेठें जीव मरें ते बतावें, तो थोडा सा जीवां नें बचता जांणो।
श्रावकां नें उज्जड सूं मारग घाल्या, घणां जीव वचें तस थावर प्रांणो॥ २३॥
एक पग हेठें जीव बचावे अग्यांनी, ठाला बादल अंबर ज्यूं गाजें।
त्यांनें श्रावक उजाड में मारग पूछें तो, मोन साझें बोलता कांय लाजें॥ २४॥
थोडी दूर बतायां थोडो धर्म हुवें तो, घणी दूर बतायां घणो धर्म जांणों।
घणी दूर रों नांम लीयां बक उठें, त्यांरी खोटी सरधा रो ए अहलांणो॥ २५॥
कोइ आंधो पुरुष गामांतरें जातां, ऊ आंख विनां जीव किण विध जोवें।
कीड्यां माकादिक चीथतो जाअें, तस थावर जीवां रो घमसाण होवें॥ २६॥
भेषधारी सहजांइ साथे जातां, आंधा रा पग सूं जीव मरता देखें।
जो पग पग जीवां नें नहीं बतावें, तो खोटी सरधा जांणजों इण लेखें॥ २७॥
त्यांनें बताय बताय नें जीव बचावणा, कें पूंजी पूंजी नें करणा दूरो।
इण धर्म करण सूं तो पोतेंइ लाजें, तो दूजें कुण मांनसी यो मत कूडो॥ २८॥
वले इल्यां सुल सलीयां सहीत आटो छे, ते गृहस्थ रे ढुलें मारग मांयो।
तपती रेत उनाला री तिण में, ते परत पांण जुदा हुवें जीव कायो॥ २९॥
गृहस्थ नहीं देखे आटो ढुलतों, ते भेषधार्‍यां री निजऱ्या आवे।
उवे पग सूं मरता जीव बतावें, आटे ढुलतें मरता जीव क्यूं न बतावें॥ ३०॥
इत्यादिक गृहस्थ रा अनेक उपध सूं, तस थावर जीव मंआ नें मरसी।
ते पग हेठें जीव बतावें त्यांनें, सगली ठोड बतावणा पडसी॥ ३१॥
किण हीक ठोडें जीव बतावें, किण हीक ठोड संका मन आंणें।
समझ पड्यां विण सरधा परूपें, पीपल बांधी मूर्ख ज्यूं तांणें॥ ३२॥
ए पग पग जीव अटकता देखें, कदा सर्व आरे हुवें अग्यांनी थूलो।
कूड कपट करे मत कुसले राखण नें, पिण बुधवंत बात न मानें मूलो॥ ३३॥
गृहस्थ रों न वांछणों जीवणो मरणों, ते वाछें बतायां लागें पाप कर्मो।
राग धेष रहीत रहिणो निरदावे, एहवों निकेवल श्री जिण धर्मो॥ ३४॥
समोसरण ते एक जोजन मांडला में, तठें नर नार्‍यां रा ब्रंद आवें नें जावें।
अरिहंत आगें वांणी सुणवा त्यानें, भगवत भिन भिन भाव सुणावे॥ ३५॥
च्यार कोस माहे तस थावर हूंता, मर गया जीव उराणें आया।
नर नार्‍यां रा पगां सूं विण उपीयोगे, पिण भगवत कठेय न दीसे बताया॥ ३६॥
नंद मिणीयारो डेडकों हुय नें, वीर वांदण जांतो मारग मायों।
तिणनें चींथ मार्‍यों श्रेणक रे वछेरे, वीर साध साह्मां महली क्यू न बंचायो॥ ३७॥
गृहस्थ रा पग हेठे जीव आवे ते, साधां नें बतावणों कठेय न चाल्यों।
भारी कर्मां लोकां नें भिष्ट करण नें, ओ पिण घोचो कुगुरा रो घाल्यों॥ ३८॥

जब साधां रो नांम तो अलगों मेलें, श्रावकां री चरचा मुख ल्यावे।
साध सूं मरता जीव साध बतावें, ज्यूं श्रावक श्रावकां नें जीव बतावे॥ ३६॥
सिधंत रा बल विण बोलें अग्यानी, श्रावका रो संभोग साधां ज्यूं बतायो।
अें गालां रा गोला मुख सूं चलाया, ते न्याय सुणो भवीयण चित ल्यायो॥ ४०॥
साधां रा पग हेठें जीव मरे ते, सभोगी साध देखी जो नहीं बतावे।
तो अरिहंत नी आग्या लोपावें, पाप लागो नें विराधक थावें॥ ४१॥
साध तो साधां ने जीव बतावें, ते पोता रो पाप टलावण रे काजे।
श्रावक श्रावकां ने जीव नही बतावें, तो किसो पाप लागो किसो वरत भाजें॥ ४२॥
श्रावक श्रावकां ने न बतायां पाप लागो कहे, ओ भेषधारयां मत काढ्यो कूडो।
श्रावकां रें सभोग साधा ज्यूं हुवें तो, पग पग बंध जायें पाप रा पूरो॥ ४३॥
पाट बाजोटादिक साध बारे मेले, ठरलें मातरादिक कारज जावे।
लारें ओर साध त्यांनें भीजतो देखें, जो ओ न ल्यावें तो प्राछित आवे॥ ४४॥
रोगी गरढा गिलांण साध री वीयावच, साध न करे तो श्री जिण आगना बारें।
महा मोहणी कर्म तणो बंध पाडें, इह लोक नें परलोक दोनूं बिगाडे॥ ४५॥
आहार पांणी साध वेहरे आणें, संभोगी साध नें बांटे देवा री रीतों।
आप आंण्यो जांण इधिको लेवें तो, अदत्त लागें ने जावें परतीतो॥ ४६॥
इत्यादिक साध साध रे अनेक बोलां रो, संभोगी साध सूं न कीयां अटकें मोषो।
याहिज बोलां रो श्रावक श्रावकां रे, न करे तो मूल न लागें दोषो॥ ४७॥
श्रावकां रे संभोग साधां ज्यूं हुवें तो, श्रावक श्रावकां नें पिण इण विध करणों।
ए सरधा रो निरणों न काढें अग्यांनी, त्यां विटल थइ लीयो लोकां रो सरणों॥ ४८॥
जो ए श्रावक श्रावकां रा नही करें तो, भेषधारयां रे लेखें भागल जाणो।
त्यां श्रावकां रें संभोग साधां ज्यूं परूप्यो, ते पड गया मूर्ख उलटी तांणो॥ ४६॥
श्रावक रें सभोग तो श्रावक सूं छे, वले मिथ्याती सूं राखें भेलापो।
त्यांरो संभोग तो अविरत में छें, ते त्याग कीया सूं टलसी पापो॥ ५०॥
त्यांसूं सरीरादिक रो सभोग टाले नें, ग्यांनादिक गुण रो राखें भेलापो।
उपदेस देइ निरदावे रहिणो, पेंलो समझे नें टालें तो टलसी पापो॥ ५१॥
लाय लागी जो गृहस्थ देखे तो, तुरत बुझावें छ काय नें मारी।
ए सावद्य किरतब लोक करे छें, तिण मांहें धर्म कहे सांगधारी॥ ५२॥
अगन पांणी छ काय मूई त्यांरों, थोडो सो पाप कहे हुवें कांनी।
ओर जीव बच्या त्यारो धर्म बतावे, लाय बुझावण री करें सांनी॥ ५३॥
ए पाप नें धर्म रो मिश्र परूपे, तोटा विचें लाभ घणों बतावे।
त्यां भेषधारयां री परतीत आवे तो, लाय बुझावण दोस्या जावें॥ ५४॥

ढाल : ६

दुहा

जीव हिंसा छे अति बुरी, तिण माहें ओगुण अनेक।
दया धर्म मे गुण घणा, ते सुणजो आंण ववेक ॥ १ ॥

ढाल

[थो मल रे सीता पति आयो]

दया भगोती छे सुखदाई, ते मुगत पुरी नीं साइ जी।
साठ नांम दया रा कह्या जिण, दसमां अंग रे माहि जी।
दया धर्म श्री जिणजी री वांणी* ॥ १ ॥
पूजणीक नांम दया रो भगोती, मंगलीक नाम छे नीको जी।
जे भव जीव आया इण सरणें, त्यांने छें मुगत नजीको जी ॥ द० २ ॥
त्रिविधे त्रिविधे छ काय न हणवी, आ दया कही जिणरायो जी।
तिण दया भगोती रा गुण छे अनंता, ते पूरा केम कहवायो जी ॥ ३ ॥
त्रिविवे त्रिविधे छ काय जीवा ने, भय नही उपजावे तामो जी।
ए अभयदान कह्यो भगवते, ए पिण दया रो नांमो जी ॥ ४ ॥
त्रिविवे त्रिविधे छ काय मारण रा, त्याग करे मन सुधे जी।
आ पूरी दया भगवते भाषी, तिण सूं पाप रा बारणा रूंघे जी ॥ ५ ॥
त्याग कीया विण हिंसा टाले, तो कर्म निरजरा थायो जी।
हिंसा टाल्या सुभ जोग वरते छे, तिहां पुन रा थाट वधायो जी ॥ ६ ॥
इण दया सू पाप कर्म रुक जावे, वले कर्म करे चकचूरो जी।
यां दोय गुणा में अनंत गुण आया, ते पालें छें विरला सूरो जी ॥ ७ ॥
आहीज दया छे महावरत पहलो, तिणमें दया दया सर्व आई जी।
ते पूरी दया तो साध जी पाले, बाकी दया रही नही कांई जी ॥ ८ ॥
छ काय नें हणें हणावें नही, वले हणतां ने नही सरावे जी।
इसडी दया निरतर पालें, त्यारे तुले बीजों कुण आवे जी ॥ ९ ॥
आहीज दया चोखे चित पाले, ते केवलीयां री छे गादी जी।
आहीज दया सभा में परूपे, तिणनें वीर कह्यो न्यायवादी जी ॥ १० ॥
आहीज दया केवलीयां पाली, मन-परयव अवधि ग्यांनी जी।
वले मति ग्यांनी नें सुरत ग्यांनी, आहीज दया मन मांनी जी ॥ ११

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

आहीज दया लब्द धारयां पाली, आहीज पूर्व घर ग्यांनी जी।
संका हुवें तो निसंक सूं जोवो, सूतर में नहीं छे बात छांनी जी ॥ १२ ॥

देस थकी दया श्रावक पालें, तिणनें पिण साध बखाणें जी।
ते श्रावक हिंसा करें घर बेठां, पिण तिण माहें धर्म न जांणें जी ॥ १३ ॥

प्राण भूत जीव नें सतव, त्यांरी घात न करणी लिगारो जी।
या तीन काल नां तीर्थंकर नीं वांणी, आचारंग चोथा अधेन मभारो जी ॥ १४ ॥

मत हणों मत हणों कह्यों अरिहंतां, अें जीव हणे किण लेखें रे।
ज्यारी अभितर आंख हीया री फूटी, ते सूतर साह्मों न देखें रे ॥ १५ ॥

जीवां री हिसा छे महा दुखदाई, ते नरक तणी छे साई जी।
खोटा खोटा नांम तीस हिंसा रा, कह्या दसमां अंग रे मांहि जी।
हिंसा धर्म कुगुरां री वांणी* ॥ १६ ॥

प्रांण घात हिसा छे खोटी, ते सर्व जीव नें दुखदायो जी।
तिण जीव हिसा मांहें अवगुण अनेक, ते पूरा केम कहवायो जी ॥ १७ ॥

केइ कहें म्हें हिंसा कीयां में, जांणां छां पाप एकंतो जी।
पिण हिंसा कीयां विण धर्म न हुवें, म्हे किण विध पूरा मन खंतो जी ॥ १८ ॥

केइ कहें म्हें हणां एकेंद्री, पंचेंद्री जीवां रे तांइ जी।
एकेंद्री मार पंचेद्री पोष्यां, धर्म घणों तिण माहि जी ॥ १९ ॥

एकेंद्री थी पंचेंद्रीय नां, मोटां घणा पुन भारी जी।
एकेद्री मार पंचेंद्री पोष्यां, म्हानें पाप न लागें लिगारी जी ॥ २० ॥

केइ इसडों धर्म धारे नें बेठा, ते तो कुगुरां तणा सीखायो जी।
निसंक थका छ काय नें मारें, वले मन मांहे हरषत थायो जी ॥ २१ ॥

कोइ पांच थावर नें सहल गिणी नें, मारयां न जांणें पापो जी।
तिण सूं त्यांनें हणतां संक न आंणें, ओ तो कुगुरां तणो परतापो जी ॥ २२ ॥

पांच थावर नां आरंभ सेती, दुरगत दोष बवारें जी।
कह्यो दसवीकालक छठें अधेने, तो बुधवंत किण विध मारें जी ॥ २३ ॥

छ काय जीवां ने जीवां मारे नें, सगा सेंण न्यात जीमावें जी।
ए प्रतख सावद्य संसार नों कांमो, तिण मांहे धर्म बतावें जी ॥ २४ ॥

जीवां नें मारे जीवां नें पोषें, ते तो मारग संसार नों जांणो जी।
तिण माहें साध धर्म बतावें, ते पूरा छें मूंढ अयांणो जी ॥ २५ ॥

मूला गाजर सकरकंद कांदा, इत्यादिक नीलोती अनेको जी।
ते पिण दांन दीयां में पुन परूपें, ते बूडें छें विना ववेको जी ॥ २६ ॥

केइ जीव खवायां में पुन परूपें, केइ मिश्र कहें छें मूढो जी।
ए दोनूंइ हिसा धर्मी अनार्य, ते बूडें छें कर कर रूढो जी ॥ २७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

जीवां री हिंसा में पुन परूपें, त्यांरी जीभ वहे तलवारो जी।
वले पहरण सांग साधु रो राखे, धिग त्यांरो जमवारो जी॥ २८॥
केइ साध रो विडद धरावें लोकां मे, वले वाजे भगवंत रा भगता जी।
पिण हिंसा मांहें धर्म परूपें, त्यारा तीन वरत भागे लगता जी॥ २९॥
छ काय मारयां माहें धर्म परूपें, त्याने हिंसा छ काय री लागे जी।
तीन काल री हिंसा अणुमोदी, तिण सूं पेहलो महावरत भागें जी॥ ३०॥
हिंसा में धर्म तो जिण कह्यो नांही, हिसा धर्म कह्यां भूठ लागें जी।
इसडी भूठ निरंतर बोलें, त्यांरो बीजोइ महावरत भागें जी॥ ३१॥
ज्या जीवां ने मारयां धर्म परूपे, त्यां जीवां रो अदत्त लागो जी।
वले आग्या लोपी श्री अरिहंत नी, तिण सूं तीजोई महावरत भागो जी॥ ३२॥
छ काय मारयां मांहे धर्म बतावे, त्यारी सरधा घणी छें उंधी जी।
ते मोह मिथ्यात मे जडीया अग्यानी, त्याने सरधा न सुझे सूधी जी॥ ३३॥
त्यानें पूछ्यां कहे म्हे दयाधर्मी छां, पिण निश्चे छ काय रा घाती जी।
त्या हिसाधर्म्यां ने साध सरधे केइ, ते पिण निश्चे मिथ्याती जी॥ ३४॥
केइ कहें साध जीव बचावे, राखे रखावे भलो जांणें जी।
ते जिण मारग रा अजांण अग्यानी, इसडी चरचा आंणे जी॥ ३५॥
साध तो जीवां ने क्याने बचावे, ते पचे रह्या निज कर्मों जी।
कोइ साध री संगत आय करें तो, सीखाय देवे जिण धर्मो जी॥ ३६॥
छ काय रा सख्र जीव इविरती, त्यांरो जीवणो मरणो न चावे जी।
त्यारो जीवणो मरणो साध वंछे तो, राग धेष बेहूं आवे जी॥ ३७॥
छ काय रा सख्र जीव इविरती, त्यांरो जीवणो मरणो खोटों जी।
त्यानें हणवा रो त्याग कीयो तिण माहे, दया तणों गुण मोटों जी॥ ३८॥
असंजम जीतब नें बाल मरण, या दोयां री वछ्छां न करणी जी।
पिंडत मरण नें संजम जीतव, यांरी आसा वछ्छां मन धरणी जी॥ ३९॥
छ काय रा सहस्र जीव इविरती, त्यारो असंजम जीतव जाणो जी।
सर्व सावद्य त्याग कीया त्यारो, संजम जीतव एह पिछांणों जी॥ ४०॥
त्रिविधे त्राइ छ काय रा साध, त्यांरी दया निरंतर राखे जी।
ते छ काय रा पीहर छ काय नें मारयां, धर्म किसे लेखे भाषे जी॥ ४१॥
छ काय रा जीवां नें हणे ससारी, त्यारें विचे पडें नही जायो जी।
विचें पड्यां वरत भागे साध रो, ते विकलां ने खबर न कायो जी॥ ४२॥
केइ तो कहे साधां ने विचे न पडणो, केइ कहे विचें पडणो जी।
साधां ने समभावे रहणो, ते विकलां रे नही छें निरणो जी॥ ४३॥

साधां नें बिचें पडणों त्रिविधे निषेध्यों, ते हणतां बिचें न पडें जायो जी।
पिण गृहस्थ नें धर्म कहे बिचें पडीयां, तो घर रों धर्म कांय गमायो जी ॥ ४४ ॥
हणे जीतब नें परसंसा रे हेतें, हणें मांन नें पूजा रे कांमो जी।
वले जनम मरण मूंकावा हणे छें, हणें दुख गमावण तांमो जी ॥ ४५ ॥
यां छ कारणां छ काय नें मारें तो, अहेत रो कारण थावें जी।
जनम मरण मूंकावण हणे तो, समकत रतन गमावें जी ॥ ४६ ॥
ए छ कारणें छ काय ने मार्‍यां, आठ कर्मां री गांठ बंधायो जी।
मोह नें मार वधें घणी निश्चें, वले पडें नरक में जायो जी ॥ ४७ ॥
अर्थ अनर्थ हिंसा कीधा, अहेत रो कारण तासो जी।
धर्म रें कारण हिंसा कीधां, बोध बीज रो नासो जी ॥ ४८ ॥
ए छ कारणें छ काय नें मारें, ते तो दुख पांमें इण संसारो जी।
ए तो आचारंग रे पेंहलें अधेनें, छ उदेसा में कह्यो विसतारो जी ॥ ४९ ॥
केइ समण माहण अनार्य पापी, करें हिंसा धर्म री थापो जी।
कहें प्रांण भूत जीव नें सतव, धर्म हेतें हण्यां नही पापो जी ॥ ५० ॥
एहवी उंधी परूपणा करे अनार्य, त्यानें आर्य बोल्या धर पेमों जी।
थें भूडो दीठो ने भूंडो सांभलीयों, भूंडो मांन्यो भूंडो जांण्यों एमो जी ॥ ५१ ॥
जीव मार्‍यां मे धर्म परूपे, ए तो अनार्य री वाणो जी।
ते तो मूंढ मिथ्याती भारीकर्मां, त्यांरी सुध बुध नही ठीकांणो जी ॥ ५२ ॥
त्यां हिंसाधर्मी नें आर्य पूछ्यों, थांनें मार्‍या धर्म कें पापो जी।
जब तो कहें म्हांनें मार्‍यां छे पाप एकत, साच बोले कीधी सुध थापो जी ॥ ५३ ॥
जब आर्य कहे थांने मार्‍यां पाप छे, तो सर्व जीवां नें इम जांणो जी।
ओरां नें मार्‍यां धर्म परूपें, थें कांय बूडो कर कर तांणो जी ॥ ५४ ॥
इम हिंसाधर्मी अनार्य त्यांने, कीधा जिण मारग सूं न्यारो जी।
जोवो अचारंग चोथा अधेन मांहे, बीजें उद्देसें विसतारो जी ॥ ५५ ॥
ओरां ने मार्‍यां धर्म परूपें, आप नें मार्‍यां पापो जी।
आ सरधा विकलां री उंधी, तिणमें कर रह्या मूंढ विलापो जी ॥ ५६ ॥
अर्थ अनर्थ धर्म रे काजें, जीव हणें छ कायो जी।
तिणनें मंद बुधी कह्यों दसमा अंग में, पेंहला अधेन रे मायो जी ॥ ५७ ॥
छ काय जीवां रो घमसांण करनें, श्रावकां ने जीमावें जी।
उणनें मंद बुधी तो कह दीयो भगवंत, तिणनें धर्म किसी विध थावे जी ॥ ५८ ॥
कोइ तो जीवां नें मार खवावें, कोइ जीव खवावे आषा जी।
तिण मांहें एकंत धर्म परूपें, ते अनार्य री भाषा जी ॥ ५९ ॥

केइ जीव मास्यां माहें धर्म कहें छे, ते पूरा अग्यांनी उंधा जी।
त्यानें जाण पुरष मिले जिण मारग रो, किण विध बोलावे सूधा जी॥ ६० ॥
लोह नों गोलो अगन तपाए, ते अगन वर्ण करें तातो जी।
ते पकड संडासे आयो त्यां पासें, कहें बलतो गोलो थें झालो हाथो जी॥ ६१ ॥
जब पाषडीयां हाथ पाछो खांच्यो, जब जांण पुरुष कहें त्यानें जी।
थे हाथ पाछो खांच्यो किण कारण, थांरी सरधा म राखों छाने जी॥ ६२ ॥
जब कहे गोलो म्हे हाथे ल्यां तों, म्हांरो हाथ वलें लागे तापो जी।
तो थांरो हाथ बाले तिणने पाप के धर्म, जब कहे उणनें लागो पापो जी॥ ६३ ॥
थारो हाथ बाले तिणने पाप लागे तो, ओरां नें मास्या धर्म नाही जी।
थें सर्व जीव सरीपा जांणों, थें सोच देखों मन माहि जी॥ ६४ ॥
जे जीव मास्यां मे धर्म कहे ते, रूले काल अनतो जी।
सूयगडा अंग अधेन अठारमें, तिहां भाष गया भगवंतो जी॥ ६५ ॥
स्थांनक करावे छ काय हणे ते, करे अनत जीवां री घातो जी।
अहेत नो कारण निश्चे हुवो छे, धर्म जाणे तो आवे मिथ्यातो जी॥ ६६ ॥
जब कहे म्हे स्थांनक करावां तिणमें, जांणां छा एकंत पापो जी।
तिण कहिवा ने पाप कह्यो झूठ बोले, सरधा गोप विगोयो आपो जी॥ ६७ ॥
कोइ मिनष आंतरीयो छे तिण काले, धन उदके स्थानक काजो जी।
जो उ पाप जांणे तो पर भव जातें, इसडो कांय कीयो अकाजो जी॥ ६८ ॥
घर रो धन देने जीव मराया, ते अर्थ न दीसे कांई जी।
अनर्थ पिण जांण्यो नही दीसे, धर्म जाण्यो दीसे तिण मांहि जी॥ ६९ ॥
हिंसा री करणी मे दया नही छे, दया री करणी मे हिंसा नांही जी।
दया ने हिंसा री करणी छे न्यारी, ज्यू तावडो नें छांही जी॥ ७० ॥
ओर वसत मे भेल हुवे पिण, दया में नही हिंसा रो भेलो जी।
ज्यू पूर्व ने पिछम रो मारग, किण विध खाये मेलो जी॥ ७१ ॥
केइ दया ने हिंसा री मिश्र करणी कहे, ते कूडा कुहेत लगावे जी।
मिश्र थापण ने मूढ मिथ्याती, भोला लोका ने भरमावे जी॥ ७२ ॥
जो हिंसा कीयां थी मिश्र हुवे तो, मिश्र हुवे पाप अठारो जी।
एक फिस्यां अठारे फिरे छे, कोइ बुधवंत करजो विचारो जी॥ ७३ ॥
जिण मारग री नीव दया पर, खोजी हुवे ते पावे जी।
जो हिंसा माहे धर्म हुवें तो, जल मथीयां घी आवे जी॥ ७४ ॥
संवत अठारे ने वरस चमालें, फागुण सुद नवमी रिववारो जी।
जोड कीधी दया धर्म दीपावणां, वगडी सहर मझारो जी॥ ७५ ॥

●

ढाल : १०

दुहा

नमूं वीर सासण धणी, गणधर गोतम सांम।
त्यां मोटा पुरुषां रा नांम थी, सीझे आतम कांम॥ १ ॥
त्यां घर छोडे संजम लीयो, भगवंत श्री विरधमांन।
बारे वरस नें तेरे पखे, छदमस्थ रह्या भगवांन॥ २ ॥
त्यां गोसाला ने चेलो कीयो, ते तो निश्चे अजोग साख्यात।
सराग भाव आयों तेह थी, ते पिण छदमस्थ पणा री बात॥ ३ ॥
तीथंकर साध छदमस्थ थकां, चेलो न करें दीख्या देवे नाही।
धर्मकथा पिण कहे नहीं, नव मे ठांणे अर्थ मांही॥ ४ ॥
बारें वरस नें तेरें पख मझे, दीख्या दे चेलों न कस्यो कोय।
एक गोसाला अजोग नें चेलो कीयों, निश्चें होणहार टलें नही सोय॥ ५ ॥
तीथंकर साथें दीख्या लीयें, तिणने दीख्या दे जिणराय।
पछें केवली हुवें नही त्यां लगें, कीण नें दीख्या देवें नांय॥ ६ ॥
गोसाला नें वीर बचावीयो, छदमस्थ पणा रो सभाव।
मोह राग आयो तिण उपरे, तिणरो विकल न जांणें न्याव॥ ७ ॥
गोसाला ने वीर बचावीयों, तिणनों मूर्ख थापे धर्म।
सूनें चित बकबो करें, ते भूला अग्यांनी भर्म॥ ८ ॥
कहे भगवंत दीख्या लीयां पछें, न कीयो किंचित परमाद ने पाप।
जांणतां नें अजांणतां, कदे दोष न सेव्यों जिण आप॥ ९ ॥
इम कही भोला लोकां भणी, न्हांखे छे फंद मांय।
तिणरो न्याय निरणो जथा तथ कहूं, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ १० ॥

ढाल

[पाखड वधसी आरे पाचमे]

गोसाला नें बचायों वीर सराग थी रे, तिण मांहें धर्म नही लिगार रे।
ओ तो निश्चें होणहार टलें नहीं रे, तिणरो भोला नहीं जांणें मूल विचार रे।
कुपातर नें बचायां धर्म किहां थकी रे* ॥ १ ॥
कुपातर नें बचायो वीर सराग थी रे, तिणमें म जांणों कोइ कूड रे।
संका हुवें तो भगोती रों अर्थ देखनें रे, खोटी सरधा नें कर दो दूर रे॥ कु० २ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

भारीकर्मां जीवा ने समझ पडे नही रे, ते तो कुगुरां रे बदले बोले कूड रे।
ताणा ताण मे जासी ताणीया रे, वेहती अगाव नंदी रे पूर रे॥ ३ ॥
गोसालो तो अधर्मी अवनीत थो रे, भारीकर्मो कुपातर जीव रे।
वले दावानल छे जिण धर्म रो रे, दुष्टया में दुष्टी घणो अतीव रे॥ ४ ॥
भगवत ने भूठा पाडण पापीये रे, तिल नें उखणीयो पापी जांण रे।
मिथ्यात पडवजीयो श्री भगवांन थी रे, त्यांरी मूल न राखी पापी कांण रे॥ ५ ॥
जगत तणा सगला चोरां थकी रे, गोसालो छे इधको चोर निसंक रे।
वले कुड नें कपट तणो थो कोथलो रे, तिणरे करडो मिथ्यात तणों छे डंक रे॥ ६ ॥
तिणनें वीर वचायो वलतों जाण ने रे, लवद फोडवे सीतल लेस्या मूंक रे।
राग आण्यो तिण पापी उपरे रे, छदमस्थ गया तिण काले चूक रे॥ ७ ॥
केइ भेषधारी भागल इसडी कहे रे, गोसाला ने वचायां हूवो धर्म रे।
त्या धर्म जिणेसर नो नही ओलख्जो रे, ते तो भूल गया अग्यांनी भर्म रे॥ ८ ॥
वले कहे छे भगवत तो घर छोड्या पछे रे, दोष न सेव्यो मूल लिगार रे।
परमाद किंचत मात्र सेव्यो नही रे, वले आश्रव न सेव्यो किण ही वार रे॥ ९ ॥
इम कहि कहि नें सचवादी हुवे रे, पिण एकंत बोले छे मूसावाय रे।
त्या धर्म जिणेसर नों नही ओलख्यो रे, फूटा ढोले ज्यूं बोलें विरुआ वाय रे॥ १० ॥
ते भूठ बोले छे सुध बुध वाहिरो रे, त्यांरी सरधा री त्यांने खबर न काय रे।
त्या विकला री सरधा ने परगट करू रे, ते भवीयण सांभलजो चित ल्याय रे॥ ११ ॥
भगवंत आहार कीयो छे जाण ने रे, तिणमें कहे छे परमाद ने आश्रव पाप रे।
वले निद्रा लीधां में कहे पाप छे रे, ते निद्रा पिण लीधी भगवंत आप रे॥ १२ ॥
परमाद न सेव्यो कहे भगवान ने रे, वले कहितां जाणें पापी परमाद रे।
न्याय निरणो विकला रे छे नही रे, यूही करे कूडो विषवाद रे॥ १३ ॥
मोह करम उदय सू सावद्य सेवीयो रे, छदमस्थ थकां श्री भगवांन रे।
अजाणपणें ने विण उपीयोग छे रे, ते बुधवत सुणो सुरत दे कांन रे॥ १४ ॥
दस सुपना पिण भगवत देखीया रे, दश सुपना रो पाप लागो छे आंण रे।
ते पिण दसू सुपनां रो पाप जुओ जुओ रे, तिणरी सका मत करजो चतुर सुजांण रे॥ १५ ॥
कोइ कहे भगवत तो घर छोड्या पछे रे, पाप रो अंस न सेव्यों मूल रे।
जो उवे सुपना देख्यां मे पाप परूपसी रे, तो त्यांरे लेखे त्यांरी सरधा मे धूल रे॥ १६ ॥
सात प्रकारे छदमस्थ जाणीये रे, कह्यो छें ठांणाअंग सूतर मांहि रे।
हिंसा लागें छे प्रांणी जीव री रे, वले लागे मृपा ने अदत्त ताहि रे॥ १७ ॥
शब्दादिक आस्वादे रागे करी रे, पूजा सतकार वांछे छें मन मांय रे।
कदे असणादिक पिण सावद्य भोगवे रे, वागरें जेसो करणी नावे ताय रे॥ १८ ॥

ए सातोंइ सावद्य रा थांनक कह्या रे, छदमस्थ सेवें छें किण ही वार रे।
त्यांरो पिण प्राछित जथायोग छें रे, जांण अजांण सेव्यां रो करें विचार रे॥ १६॥
ए सातोंइ बोल न सेवें केवली रे, छदमस्थ पिण निरंतर सेवें नांहि रे।
सेवें तो मोह कर्म उदें हुआं रे, संका हुवें तो जोवों सूतर माहि रे॥ २०॥
गोसाला नें वीर बचायो तिण दिनें रे, छदमस्थ हुंता जिण दिन भगवांन रे।
मोह राग आयों भगवंत नें तिण दिनें रे, निश्चें होणहार टालण नहीं आसांन रे॥ २१॥
छदमस्थ थकां पिण श्री भगवांन नें रे, समें समें लागता कर्म सात रे।
मोह कर्म वशेष थकी उदें हुवो रे, कुपात्र नें बचाय लीधों साख्यात रे॥ २२॥
गोसालो दावानल श्री जिण धर्म नों रे, ते दुष्टां में दुष्टी घणो अतीव रे।
वले कोथलो कूड कपट रो तेहनें रे, बचायां रा फल सुणों भव जीव रे॥ २३॥
गोसाले तेजू लेस्या मेलनें रे, दोय साधां री कीधी घात रे।
उंधो अंवलों बोल्यो भगवांन नें रे, वीर सूं पडवजीयो मिथ्यात रे॥ २४॥
वले लेस्या मेली पापी वीर नें रे, त्यांरी पिण एकंत करवा घात रे।
तिण जांण्यों जमाउ सासण मांहरो रे, एहवो गोसालो दुष्ट कुपात रे॥ २५॥
तिल रो, प्रश्न पूछ्यां भगवंते कह्यो रे सुगली माहें तिल बताया सात रे।
जब वीर ने भूठा घालण पापीयें रे, तिल उखण नें कीधी घात रे॥ २६॥
तेजू लेस्या सीखाइ गोसाला भणी रे, तिण लेस्या सूं कीधी साधा री घात रे।
वले लोही ठाणे कीधो भगवंत नें रे, इसडा कांम कीया पापी साख्यात रे॥ २७॥
गोसाला पापी नें वीर बचावीयों रे, तो बधीयो भरत में घणो मिथ्यात रे।
घणा जीवां नें पापी बोवीया रे, उंधी सरधा हीया में घात रे॥ २८॥
कूड कपट करे ने पापीयें रे, भूठोइ सासण दीयो थाप रे।
अणहूतों तीर्थंकर वाज्यो लोक में रे, वीर नो सासण दीयो उथाप रे॥ २६॥
गोसाला नें वीर बचायो तठा पछे रे, घणा जीवां रें हुवो बिगाड रे।
ओ पापी धाडायत हूवो धर्म रो रे, इण गुण तो न कीधो मूल लिगार रे॥ ३०॥
गोसाला पापीडो बचीयां पछें रे, तिण कीधा पापीडे अनेक अकाज रे।
तिण दुष्टी नें बचायां धर्म किहा थकी रे, विकलां नें मूल न आवें लाज रे॥ ३१॥
गोसाला नें बचायां धर्म कहे तके रे, गोसाला रा केडायत जाण रे।
त्यां धर्म न जांण्यों श्री जिणराज रो रे, यूं ही बूडें अग्यांनी कर कर तांण रे॥ ३२॥
जो धर्म होसी गोसाला ने बचावीयां रे, तो छ ही काय बचायां होसी धर्म रे।
जो उवे जीव बचायां धर्म गिणें नही रे, तो विकलां री सरधा रो निकल्यों भर्म रे॥ ३३॥
गोसाला नें वीर बचायो जिण विधे रे, श्रावक ने तिण विध बचावें नांहि रे।
कहें छें तिण हीज विध करे नहीं रे, तो धूर छें त्यांरी सरधा मांहि रे॥ ३४॥

पेट दुखे छें सो श्रावकां तणो रे, जूदा हुवे छे जीव नें काय रे।
साध पधास्या छे तिण अवसरे रे, त्यांरें हाथ फेरें तो साता थाय रे॥ ३५॥
लब्धधारी तो साध पधास्या देख नें रे, गृहस्थ बोल्या छे इम वाय रे।
हाथ फेरो त्यांरा पेट उपरे रे, नहीं फेरो तो श्रावक जीवां जाय रे॥ ३६॥
जब कहे म्हांने तो हाथ न फेरणा रे, अें मरो भावें दुखी घणा हुवो तांम रे।
मरणो जीवणो मूल न वाछे तेहनो रे, म्हांरें गृहस्थ सूं काई कांम रे॥ ३७॥
तो गोसाला दुष्टी ने वीर बचावीयो रे, तिण मांहे कहो छो निकेवल धर्म रे।
तो श्रावक मरतां ने नही वचावीयां रे, त्यांरी सरधा रो त्याहीज काढ्यो भर्म रे॥ ३८॥
श्रावक ने बचायां धर्म गिणे नही रे, गोसाला ने बचायां गिणें धर्म रे।
ते ववेक विकल छे सुध बुध बाहिरा रे, उंधी सरधा सू बांधे पाप कर्म रे॥ ३९॥
गोसाला पापी दुष्टी रे कारणे रे, लबद फोडी छे श्री जगनाथ रे।
तो सो श्रावक जीवा मरतां देख नें रे, थे काय न फेरो त्यारे हाथ रे॥ ४०॥
धर्म कहे गोसाला ने बचावीयां रे, तो पोते कांइ छोडी धर्म री रीत रे।
सो श्रावक मरता ने बचावे नही रे, त्यां विकलां री विकल करे परतीत रे॥ ४१॥
गोसाला दुष्टी ने वीर बचावीयो रे, तिण मांहे धर्म कहे साख्यात रे।
सो श्रावक मरता ने नही बचावीया रे, त्यां विकलां री बिगडी सरधा बात रे॥ ४२॥
श्रावक आवड नें पड मरतो हुवे रे, जिण ने पडता झेले राखे नाहि रे।
गोसाला ने बचायां में कहे छे धर्म रे, ओ पिण अंधारो त्यारे माहि रे॥ ४३॥
ग्यान दरसण ने देस चारित श्रावक मझे रे, गोसालो तो एकत अधर्मी जाण रे।
तिणने बचाया धर्म किहा थकी रे, तिणरो न्याय न जाणे मूढ अयांण रे॥ ४४॥
गोसाला ने बचाया रो कहे धर्म छे रे, श्रावक ने बचायां कहे पाप रे।
एहवो अंधारो छे विकला तणे रे, उंधी सरधा री कर राखी छें थाप रे॥ ४५॥
बारे वरस नें तेरे पख मझे रे, छदमस्थ रह्या छे श्री भगवान रे।
तिणमे एक गोसाला ने बचावीयो रे, किणने न बचायां श्री विरधमान रे॥ ४६॥
गोसाला दुष्टी नें बचावीया रे, जो धर्म कठेइ जाणे सांम रे।
तो दोनूइ साध बचावत आपणा रे, वले रात दिन करता ओहीज कांम रे॥ ४७॥
गोसाला दुष्टी ने बचावीयां रे, तिण मांहे धर्म जाणे जिणराय रे।
दोय साध मरता नही राख्या आपणा रे, ओ पिण किण विध मिलसी न्याय रे॥ ४८॥
अकाले जगत ने मरतो देखीयो रे, पिण आडा न दीधा भगवंत हाथ रे।
धर्म हुवे तो भगवत आघो नही काढता रे, निश्चेइ तिरण तारण जगनाथ रे॥ ४९॥
अनंत चोवीसी तो आगें हुइ रे, हिवडां तो रिखभादिक चोवीस रे।
त्यां तास्या भव जीवां ने समझाय ने रे, पिण मरता न राख्या श्री जगदीस रे॥ ५०॥

एक गोसालो वीर बचावीयो रे, ते तो निश्चेइ होणहार रे।
मोह राग आयो भगवांन ने रे, तिणरो न्याय न जांणे मूढ गिंवार रे ॥ ५१ ॥
संवत अठारे तेपने समें रे, आसाड विद इग्यारस मंगलवार रे।
गोसाला कुपातर नें ओलखावीयो रे, जोड कीधी छें माढा गाव मझार रे ॥ ५२ ॥

ढाल : ११

दुहा

दोय उपगार श्री जिण भाषीया, त्यांरो बुधवंत करजो विचार।
तिणमे एक उपगार छे मोष रो, बीजो संसार नो उपगार ॥ १ ॥
उपगार करें कोइ मोष रो, तिणरी जिण आगनां दे आप।
उपगार करें ससार नों, तिहां आप रहे चुपचाप ॥ २ ॥
उपगार करे कोइ मोष रो, तिणने निश्चेंइ धर्म साख्यात।
उपगार करे ससार नों, तिणमें धर्म नही तिलमात ॥ ३ ॥
दोनूं उपगार छे जुवा जुवा, ते कठेंइ न खाअें मेल।
पिण मिश्र पाषड्यां परूप नें, कर दीयो मेल समेल ॥ ४ ॥
कुण कुण उपगार छे मोप रो, कुण कुण ससार ना उपगार।
त्यांरा भाव भेद परगट करूं, ते सुणजो विसतार ॥ ५ ॥

ढाल

[श्री अणुकम्पा जिण आगना में]

ग्यान दरसण चारित ने वले तप, या च्यारां रो कोइ करे उपगार।
तिणने निश्चेइ निरजरा धर्म कह्यो जिण, वले श्री जिण आगना छे श्रीकार।
ओ तो उपगार निश्चेइ मुगत रो ॥ १ ॥
ग्यान दरसण चारित ने तप, या च्यारा विना कोइ करे उपगार।
तिणने निश्चेइ धर्म नही जिण भाख्यो, वले जिण आगना पिण नही छे लिगार।
ओ तो उपगार संसार तणो छें* ॥ २ ॥
ससार तणो उपगार करे छे, तिणरे निश्चेइ ससार वधतो जांणो।
मोष तणो उपगार करे छे, तिणरे निश्चेइ नेडी दीसें निरवांणो ॥ ३ ॥
कोइ दलदरी जीव ने धनवत कर दे, नव जात रो परिग्रहो देइ भर पूर।
वले विवध प्रकारे साता उपजावे, उणरो जावक दलदर कर दे दूर ॥ ओ० ४ ॥
छ काय रा सस्त्र जीव इविरती, त्यारी साता पूछी ने साता उपजावे।
त्यारी करे वीयावच विवध प्रकारे, तिणने तीथकर देव तो नही सरावे ॥ ५ ॥
गृहस्थ री साता पूछ्यां ने वीयावच कीधां, तिण सूं साध तो होय जाअे अणाचारी।
तो त्यारी साता पूछ्या ने वीयावच कीयां में, जिण आगना पिण नही छे लिगारी ॥ ६ ॥

*यह आकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

साता पूछ्यां तो साव नें पाप लागे छें, तो साता कीधां में धर्म किहां थी होवें।
पिण मूढ मिथ्याती ववेक रा विकल, ते श्री जिण आगनां साह्यों न जोवें ॥ ७ ॥
कोइ मरता जीव नें जीवां बचावें, झाडा झपटा करें ओषध देइ तांम।
वले अनेक उपाय करें नें तिणनें, मरतों राख्यों साजो कीयो तमांम ॥ ८ ॥
कोइ मरता जीव नें सूंस करावे, च्यारूं सरणा देइ नें करावें संथारों।
ग्यांन ध्यांन मांहें परिणांम चढावें, न्यातीलां सूं देवें मोह उतारो ॥ ९ ॥
श्रावक नों खांणों पीणो छे सर्व इविरत में, ते सेवें तो सावद्य जोग व्यापारो।
वले नव ही जात रो परिग्रहो इविरत में, तिणनें सेवारें छें कोइ वारुवारो ॥ १० ॥
श्रावक नों खांणो पीणों छे सर्व इविरत में, तिणरों त्याग करावें चढाय वेंरागों।
वले नव ही जात रों परिग्रहो इविरत में, ते छोडें छोडावे त्यारे सिर भागो ॥ ११ ॥
कोइ लाय सूं बलतां नें काढ बचायों, वले कूअें पडता नें झाल बचायों।
तलाब मांहे डूबा नें बारें काढें, वले उंचा थी पडतां नें झाले लीयो ताह्यों ॥ १२ ॥
जनम मरण री लाय थी बारें काढें, भव कूआ माहि थी काढें बारे।
नरकादिक नीची गति माहे पडतां नें राखें, संसार समुद्र थी बारें काढ उधारे ॥ १३ ॥
किणरें लाय लागी घर बले छें, तिणमें नांन्हा मोटा जीव बलें लाय मांहि।
कोइ लाय बुझाय त्यांनें बारे काढें, घणां रें साता कीधी लाय बुझाई ॥ १४ ॥
किणरें तिसणा लाय लागी घर भितर, ग्यांनादिक गुण बलें तिण मांय।
उपदेस देइ तिणरी लाय बुझावें, रूंम रूंम में साता दीधी चपराय ॥ १५ ॥
कोइ टाबर पाले नें मोटा करें छें, आछी आछी वस्त तिणनें खवाय।
वले मोटें मंडाण करे परणावें, वले धन माल देवें कमाय कमाय ॥ १६ ॥
कोइ बेटा नें रूडी रीत समझाए, धन माल सगलोइ देवें छोडाय।
कांम भोग अस्त्रीयांदिक खावों नें पीवों, भली भांत सूं त्याग करावे ताय ॥ १७ ॥
मात पिता री सेवा करे दिन रात, वले मन मान्यां भोजन त्याने खवावें।
वले कावड कांधे लीयां फिरें त्यांरी, वले बेहूं टकां रो सिनान करावे ॥ १८ ॥
कोइ मात पिता नें रूडी रीतें, भिन भिन कर नें धर्म सुणावे।
ग्यांन दरसण चारित त्यानें पमावें, कांम भोग शब्दादिक सर्व छोडावें ॥ १९ ॥
जिणरो खांणो पीणो गेंहणो इविरत में, तिणनें मन मांने ज्यूं खवावे पीवावे।
वले मांगे जिको तिणनें धन धांन आपें, वले विवध पणें तिणने साता उपजावें ॥ २० ॥
जिणरों खांणो पीणों गेहणो इविरत मे छें, तिणने उपदेस दइ ने परहो छोडावे।
तिणरें ग्यांनादिक गुण घट में घाले, तिणरी तिसणा लाय ने परी मिटावें ॥ २१ ॥
किणरा वाला काढे किणरा कीडा काढे, वले लटा जूंआदिक काढें छे ताहि।
कानसिलाया बुगादिक काढे, घणी साता उपजावें शरीर रें माहि ॥ २२ ॥

किणरे बाला कीडा ने लटां जूंआदिक, शरीर में उपनां जीव अनेक।
तिणने बारे काढण रा त्याग करावे, कहे सरीर बारे काढणो नही छे एक॥ २३॥
गृहस्थ भूलो उज्जड वन में, अटवी ने वले उजाड जावे।
तिणने मारग बताय ने घरे पोहचावे, वले थाको हुवें तो काधें बेसावे॥ २४॥
संसार रूपणी अटवी में भूला ने, ग्यांनादिक सुघ मारग बतावे।
सावद्य भार ने अलगो मेलाए, सुखे सुखे सिवपुर मे पोंहचावे॥ २५॥
नाग नागणी हुता बलता लकडा में, त्याने पारसनाथ जी काढ्या कहे छे बार।
अगन मे बलता ने राख्या जीवता, पांणी ने अगनादिक रा जीवां ने मार॥ २६॥
पारसनाथ जी घर छोडे काउसग कीधों जब, कमठ उपसर्ग कर वरपायो पांणी।
जब पदमावती हेठे कीयों सिंघासण, धर्णिद्र छत्र कीयों सिर आंणी॥ २७॥
नाग नागणी ने नोकार सुणाए, च्यारूं सरणा ने सूंस दराया जांणी।
ते सुभ परिणांमां सूं मरने हूआ, धर्णिद्र ने पदमावती रांणी॥ २८॥
सूग्रीव सूं उपगार कीयों राम लछमण, जब सुग्रीव हुवो त्यांरो सखाइ।
सीता री खबर आणे रावण ने मरायो, तिण पाछो उपगार कीयों भीड आइ॥ २९॥
कोइ दुष्टी जीव जूं ने मारतो थो, तिणने वरजे ने जूं ने वचाइ।
ते जू रो जीव मिनष हुवों जब, इणरो कजीयो इण पिण दीयो मिटाइ॥ ३०॥
धणी रा मूंढा आगे सेवग मरे ने, धणी ने जीवतो कुसले खेमें काढे।
जब धणी तूठो थको रिजक रोटी दे, इणरो इहलोक रो कांम सिराडें चाढे॥ ३१॥
दोय इदर आयां कोणक री भीडी, कोणक रे साता कर दीधी तांम।
एक कोड असी लाख मिनषां ने मारें, कोणक रो सुधार्‌यो कांम॥ ३२॥
एकीका जीव ने अनंती वार बचाया, त्यां पिण इणनें अनती वार बचायो।
आमां साह्मां उपगार ससार नां कीधां, त्यांसू तो जीव री गरज सरी नही कायो॥ ३३॥
हांती नेहतादिक देवे आमां साह्मा, लाडू खोपरादिक देवे आमां साह्मां।
अथवा कोइक आघाइ पिण देवे, इत्यादिक छे अनेक संसार नां कांमा॥ ३४॥
संसार नों उपगार करे जिण सेती, कदा ते पिण पाछों करे उपगार।
ए तो उपगार एकीका जीवां सूं, कीधा छें अनंत अनंती वार।
आ सरधा श्री जिणवर भाषी॥ ३५॥

संसार नां उपगार सब ही फीका, ते तो थोडा मांहे विलें होय जावें।
संसार नां उपगार फीका छें, त्यांसू सुगति तणा सुख कोयन पावें॥ आ० ३६॥
संसार तणा उपगार कीयां में, केइ मूढ मिथ्याती धर्म वतावे।
ते श्री जिण मारग ओलखीयां विण, मन मानें ज्यूं गालां रा गोला चलावे॥ ३७॥
जितला उपगार संसार तणा छे, जे जे करे ते मोह वस जांणो।
साध तो त्यांनें कदे न सरावे, संसारी जीव तिणरा करसी वखांणों॥ ३८॥

संसार तणा उपगार कीयां में, जिण धर्म रो अंस नहीं छै लिगार।
संसार तणा उपगार कीयां में, धर्म कहै ते तो मूढ गिंवार ॥ ३९ ॥
किण ही जीव नें मरत कर नें बचायो, किण ही जीव उपाय नें कीधो मोटो।
जो धर्म होसी तो दोयां नें धर्म होसी, जो टोटो होसी तो दोयां नें टोटो ॥ ४० ॥
जन्मावण बाप जिवें तो उपजावण वाळो, सांप्रत दीसें उपगारी मोटो।
यांरो निरणो कीयां बिन धर्म कहै छै, त्यांरो तो मत निकेवळ खोटो ॥ ४१ ॥
जन्मावण वाळो नें उपजावण वाळो, ऐ तो दोनूं संसार तणा उपगारी।
मूरख उपगार करे आंनो माहों, तिनें केवळी रो धर्म नहीं छै लिगारी ॥ ४२ ॥
जीव नें जीवां बचावें तिण सूं, धर्म जाणें तिणरें राग सनेह।
जो पर भव में उ आय मिलें तो, देखत पांण जागे तिण सूं नेह ॥ ४३ ॥
जीव नें जीव मारे छै तिण सूं, धर्म जाणें तिण सूं द्वेष बसेख।
ते पर भव में उ आय मिलें तो, देखत पांण जागें तिण सूं द्वेष ॥ ४४ ॥
मित्री सूं मित्रीपणों चलीयो जावें, वेरी सूं वेरीपणों चलीयो जावें।
ऐ तो राग द्वेष कर्मां रा चाळा, ते श्री जिण धर्म मांहे नहीं आवें ॥ ४५ ॥
कोइ अपुत्रीया आंणी घर मंडावें, कोइ मंडता घर नें देवें भंगाय।
ओ मंडाड़ राग नें द्वेष उपाडो, ते आगें लगा दोनूं चलीया जाय ॥ ४६ ॥
कोइ तो पैसा रा कांम भोग बधारें, कोइ कांम भोग री दे अंतराय।
ओ पिण राग नें द्वेष उपाडो, ते आगें लगा दोनूं चलीया जाय ॥ ४७ ॥
कोइ पैसा रो धन गमीयो ल्यावें, वळे अस्त्रीयादिक तिण गमीयां ल्यावें।
कोइ आस नें तोटो लोकां रें करावें, तिण सूं आगें लगो राग चलीयो जावें ॥ ४८ ॥
कोइ वेंकारो करे करे ने लोकां रो, रोग गमाय नें जीवां बचावें।
ओ उपगार लोकां सूं कीधो, आगे लगो राग चलीयो जावें ॥ ४९ ॥
कहि कहि नें कितरोएक कहूं, संसार तणा उपगार अनेक।
ग्यांन दरसण चारित नें तप बिनां, मोष तणो उपगार नहीं छै एक ॥ ५० ॥
संवर ना भेद बीस कह्या जिण, निरजरा तणा भेद कह्या छै बार।
ऐ बतीसूंइ भेद उपगार मुगत रा, ओर मोष रो उपगार नहीं छै लिगार ॥ ५१ ॥
संसार नें मोष तणा उपगार, समदिष्टी हुवें ते न्यारा न्यारा जांणें।
तिण मिथ्याती नें खबर पडें नहीं सूधी, तिण सूं मोह कर्म वस उंधी ताणें ॥ ५२ ॥
संसार नें मोष रो मारग ओळखावण, जोड कीधी छै खेरवा सहर मझार।
संवत अठारें नें बरस चोपनें, आसोज सुदि बीज नें सुकरवार ॥ ५३ ॥

ढाल : १२

दुहा

चोवीसमां जिणवर हुआ, महावीर विख्यात।
त्यांरी पहली वांणी निरफल गई, ते हुवो अछेरो इचरज वात॥ १ ॥
जंभीक गाम नें बाहिरें, सांम नांम करषणी रे खेत।
तिहां साल नांमा विरख थो, गहर गभीर पांन समेत॥ २ ॥
तिण साल विरख हेठें आवीया, भगवंत श्री विरधमांन।
वेसाख सुदि दसम दिनें, उपनो केवल ग्यांन॥ ३ ॥
केवल महोछव करवा भणी, तिहां देवता आया अनेक।
पिण मिनषा ने ठीक पडी नही, तिणसूं मिनष न आयो एक॥ ४ ॥
देवता आगे वाणी वागरी, थित साचववा कांम।
कोइ साध श्रावक हुवो नहीं, तिणसूं वांणी निरफल गई आम॥ ५ ॥
जो धन थकी धर्म नीपजे, तो देवता पिण धर्म करंत।
वीर वांणी सफली करे, मन माहे पिण हरख धरंत॥ ६ ॥
वरत पचखाण न हुवे देवता थकी, धन सूं पिण धर्म न थाय।
तिण सूं वीर वांणी निरफल गई, तिणरो न्याय सुणों चित्त ल्याय॥ ७ ॥

ढाल

[जीव मोह अणुकम्पा न आणिये]

जिण धर्म हुवें सोनइयां दीयां, तो देवता देता हाथो हाथ जी।
पुरत मनोरथ मन तणा, वीर वांणी निरफल न गमात जी।
भव करजों परख जिण धर्म री* ॥ १ ॥
रतन हीरा ने माणक पना, मन मांने ज्यूं देवता देत जी।
वीर री वाणी सफल करे, देवता पिण लाहो लेत जी॥ भ० २ ॥
धन दीयां हुवें धर्म जिण भाखीयों, देवता दान दे दग चाल जी।
यूं कीयां वीर वांणी सफल हुवें, तो अछेरो नही हुवे तिण काल जी॥ ३ ॥
धन धानादिक लोकां नें दीयां, ए तो निश्चेंइ सावद्य दांन जी।
तिणमे धर्म नही जिण राज रो, ते भाख्यों छें श्री भगवान जी॥ ४ ॥
जो जीव बचायां जिण धर्म हुवे, ओं तो देवता रे आसांन जी।
अनंता जीवां नें बचाय ने वांणी सफल करता देवां न जी॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

असंख्याता समदिष्टि देवता, एकीको बचावत अनंत जी।
जो धर्म हुवें तो आघो न काढता, वीर नीं वांणी सफल करंत जी॥ ६॥
साध श्रावक रो धर्म छै विरत नें, जीव हणवा रा करें पचखांण जी।
ए धर्म देवता थी हुवें नहीं, तिणसूं निरफल गई वीर वांण जी॥ ७॥
जीवां नें जीवां बचावीयां हुवें, संसार तणों उपगार जी।
यूं तो सफल न हुवें वांणी वीर नीं, धर्म रो नहीं अंस लिगार जी॥ ८॥
असंजती नें जीवां बचावीयां, वले असंजती नें दीयां दांन जी।
इन कीयां वीर वांणी सफल हुवें, ओ तो देवतां रे पिण आसांन जी॥ ९॥
कुपातर जीवां नें बचावीयां, कुपातर नें दीयां दांन जी।
ओ सावद्य किरतब संसार नों, भाख्यो श्री भगवांन जी॥ १०॥
उत्तराधेन अठावीसमें कह्यों, मोष नां मारग भाख्या च्यार जी।
बाकी सर्व कांमा संसार नां, सावद्य जोग व्यापार जी॥ ११॥
जो धर्म हुवें सावद्य दांन में, असंजती नें बचायां हुवें धर्म जी।
तो निरचेंइ समदिष्टी देवता, ओ धर्म करे काटें कर्म जी॥ १२॥
कर्म कटें इण सावद्य धर्म सूं, एहवा सावद्य कांमा अनेक जी।
ते तो थोडा सा परगट करूं, ते सुणजों आंण ववेक जी॥ १३॥
मछ गलागल लग रही, सारा दीप समुद्रां मांय जी।
मोटो मछ छोटा नें मलें, उणसूं मोटों उणनेंइ खाय जी॥ १४॥
जो उद्यम करे एक देवता, तो एक दिन में च्यावें अनेक जी।
धर्म हुवें तो आघो काढें नहीं, ओ तो छें देवता नें ववेक जी॥ १५॥
जीव बचायां अभय दांन हुवें, तो अभय दांन घणां नें देत जी।
धर्म जांणें जीव बचावीयां, देव भव में पिण लाहो लेत जी॥ १६॥
मछला बचावें एक दिन मझे, लाखां कोडाइ गिणिया न जाय जी।
इणमें धर्म हुवें जिण भाषीयों, तो देवता देवें मछला छुडाय जी॥ १७॥
मच्छ आगा सूं मछ छोडावीयां, उणरे परती जांणे अंतराय जी।
तो अचित्त मछ उपजाय नें, उणनें पिण देवें खवाय जी॥ १८॥
जो धर्म हुवें मछला नें बचावीयां, मछला नें पोख्यां हुवें धर्म जी।
एहवा धर्म तो हुवें देवता थकी, यूं कर कर काटें कर्म जी॥ १९॥
जो धर्म हुवें तो देवता, असंख्याता मछला ने बचाय जी।
असंख्याता पोषें माछला, आलस पिण न करें ताय जी॥ २०॥
पृथवी पांणी तेउ वाउ मझे, जीव कह्या छें असंख्यात जी।
वनसपती में अनंत छें, यांनें पिण देव बचात जी॥ २१॥

तीन विकलेंद्री मिनष तिर्यंच ने, बचायां धर्म जांणे जो देव जी।
तो त्यानेइं बचावण री खप करें, समदिष्टी देवता स्वमेव जी॥ २२॥
नाहर चित्तादिक दुष्ट जीव छें, करें गायांदिक री घात जी।
गायादिक ने तो खावा दें नही, त्यांनें पिण देव अचित्त खवात जी॥ २३॥
जीव जीव तणो भक्षण करें, त्यानें बचावें अचित्त खवाय जी।
जो यूं कीयां में धर्म नीपजें, तो देवता करे ओहीज उपाय जी॥ २४॥
अढाइ दीप मिनषां तणें, घर घर आरंभ करें जांण जी।
ते तो कतल करे जीवां तणी, छ ही काय तणो घमसांण जी॥ २५॥
नित एकीका घर मे जूजूओ, आरंभ हुवें दिन रात जी।
छेदन भेदन करे निलोतरी, करें अनंत जीवां री घात जी॥ २६॥
दलणो पीसणो नें पोवणो, घर घर चूहलो धुकावे तास जी।
आवट कूटों करें छ काय नों, करें अनंत जीवां रो विणास जी॥ २७॥
एकीका समदिष्टी देवता, त्यांरी शक्त घणी छे अतंत जी।
अढी दीप रों आरभ मेट ने, बचावें जीव अनंत जी॥ २८॥
अढी दीप तणा मिनषां भणी, भूखा तिरषा न राखे कोय जी।
अचित अन पाणी नीपजाय ने, सगला ने करे तिरपत सोय जी॥ २९॥
विवध प्रकार नां भोजन करे, विवध प्रकार नां पकवांन जी।
खादिम सादिम विवध प्रकार नां, विवध प्रकारे सीतल पांन जी॥ ३०॥
साग व्यंजण विवध प्रकार नां, फल नीलोती विवध प्रकार जी।
मनसा भोजन सगला मिनषां भणी, करावें देवता वार वार जी॥ ३१॥
ठांम ठांम अचित्त पाणी तणा, कूंड भर भर राखे तांम जी।
वले भोजन विवध प्रकार नां, त्यांरा ढिगला करे ठांम ठांम जी॥ ३२॥
च्यारूइ आहार अचित्त नीपाय नें, दीधां हुवें धर्म ने पुन तांम जी।
वले धर्म हुवे जीव बचावीयां, तो देवता करें ओहीज कांम जी॥ ३३॥
देवता खांणों देवे मिनषां भणी, तो खेती रो आरंभ टल जाय जी।
वले गेंहणा कपडा देवें देवता, तो घणा जीव मरे नही ताय जी॥ ३४॥
घर हाट हवेली मेंहलायतां, इत्यादिक कमठाणा ताय जी।
अे पिण निपजाय देवे देवता, तो अनंता जीव मरता रहि जाय जी॥ ३५॥
ते छावणा लीपणा ना पडे, ते तो सुदर ने सोभाय मांन जी।
ते पिण दिसें घणा रलीयांमणा, देवता ने करता आसान जी॥ ३६॥
एहवी करणी कीयां धर्म नीपजें, तो देवता आघो नही काढंत जी।
आ करणी करे कर्म काट ने, कांम सिराडे देता चाढंत जी॥ ३७॥

दांन दीयां नें जीव बचावीयां, जो कर्म तणों हुवें सोख जी।
तो दांन दे जीव बचाय नें, देवता पिण जाअे मोष जी ॥ ३८ ॥
अनेरा नें दीयां पुन नीपजें, देवता रे हुवें पुन रा थाट जी।
वले धर्म हुवें जीव बचावीयां, तो देव मोष जावें कर्म काट जी ॥ ३९ ॥
असंजती जीवां रो जीवणों, ते सावद्य जीतब साख्यात जी।
तिणनें देवे ते सावद्य दांन छें, तिणमें धर्म नहीं अंसमात जी ॥ ४० ॥
धर्म हुवें तो सगला मिनषां तणें, रतनां जड्या कर दे मेंहल जी।
ते पिण थोडा में नींपजाय दें, देवता नें करता सेंहल जी ॥ ४१ ॥
खांणो पीणो गेंहणों कपडादिक, गृहस्थ तणा सारा कांम भोग जी।
त्यांरी करें वधोतर तेहनें, बंधें पाप कर्म नो संजोग जी ॥ ४२ ॥
कांम नें भोग सारा गृहस्थ नां, दुख नें दुख री छे खांन जी।
त्यांनें किपाक फल री ओपमां, उतराधेन में कह्यों भगवांन जी ॥ ४३ ॥
त्यांनें भोगवावें धर्म जांण नें, तिणरें बंधे छे पाप कर्म जी।
तिणमें समदिष्टी देवता, अंसमात न जांणें धर्म जी ॥ ४४ ॥
केइ अग्यांनी इम कहे, श्रावक नें पोष्यां छें धर्म जी।
लाडू खवाए दया पलावीयां, तिणरा कट जाए पाप कर्म जी ॥ ४५ ॥
लाडूआ साटें उपवास बेला करे, तिणरा जीतब नें छे धिकार जी।
तिणनें पोषें छें लाडू मोल लें, तिणमें धर्म नहीं छें लिगार जी ॥ ४६ ॥
लाडूआ साटें पोषा करे, तिणमें जिण भाख्यों नही धर्म जी।
ते तो इह लोक रे अरथे करे, तिणरो मूरख न जांणें मर्म जी ॥ ४७ ॥
धर्म हुवें तो समदिष्टी देवता, अचित्त लाडुआदिक नींपजाय जी।
वले पांणी पिण अचित्त नीपजाय नें, श्रावकां नें जिमावें ताहि जी ॥ ४८ ॥
जाव जीव सगला श्रावकां भणी, लाडूआदिक अचित खवाय जी।
अढी दीप तणा श्रावकां भणी, दया पलावें पोषा कराय जी ॥ ४९ ॥
त्यांने आरम्भ करवा दें नही, त्यांनें कल्पे ते देवता देत जी।
धर्म हुवे तो आघो नहीं काढता, ओ पिण देवता लाहो लेत जी ॥ ५० ॥
श्रावकां नें वस्त दें चावती, उणायत राखें नही कांय जी।
धर्म हुवे तो आघों काढें नही, त्यारें कुमीय न दीसे कांय जी ॥ ५१ ॥
जो धर्म हुवें श्रावक ने पोषीयां, तो देवता पिण करें ओ धर्म जी।
असंख्याता श्रावकां नें पोष नें, काटता निज पाप कर्म जी ॥ ६२ ॥
असंख्याता दीप समुद्र में, असख्याता श्रावक छें तांम जी।
त्यांनें पोषें समदिष्टी देवता, जो जांणें धर्म नो कांम जी ॥ ५३ ॥

श्रावक रो खांणो पीणों सरवथा, इविरत में कह्या छे आंम जी।
तिण सूं समदिष्टी देवता, एहवो किम करसी कांम जी॥ ५४॥
सकेंद्र नें इसांण इंद्र छें, तिरछा लोक तणा सिरदार जी।
हाल हुकम छें सगलां उपरें, असंख्याता दीप समुद्र मझार जी॥ ५५॥
मछ गलागल लग रही, सारा दीप समुद्रां मांय जी।
जो धर्म हुवें जीव बचावीयां, तो इंद्र थोडा में देवें मिटाय जी॥ ५६॥
भगवंत कह्यों हुवें इंद्र नें, जीव बचायां धर्म होय जी।
तो दोनूं इंद्र जीव बचावता, आलस नही करता कोय जी॥ ५७॥
मछ आगा सूं मछ छोडाय नें, मछां नें देता जीवां बचाय जी।
त्यांने पिण भूखा नहीं राखता, अचित्त मछ कर देता खवाय जी॥ ५८॥
यूं कीयां जिण धर्म नीपजें, तो भगवंत सीखावत आप जी।
वले आगना देता तेहनें, वले चोडें करता आहीज थाप जी॥ ५९॥
जीव ने जीवां बचावीयां, ओ तो संसार नों उपगार जी।
तठें जिण आगना जावक नहीं, धर्म पिण नहीं छे लिगार जी॥ ६०॥
छ काय नां सस्त्र बचावीयां, छ काय रो वेरी होय जी।
त्यांरो जीतब पिण सावद्य कह्यो, त्याने बचायां धर्म न होय जी॥ ६१॥
असंजती रा जीवणां मझे, धर्म नही ३ समात जी।
वले दांन देवें छे तेहनें, ते पिण सावद्य साख्यात जी॥ ६२॥
दांन देवों नें जीव बचायवों, यो तो देवता नें आसांन जी।
यूं कीया धर्म हुवे तो देवता, जाअें पांचमी गति परधांन जी॥ ६३॥
जीव बचावणो नें सावद्य दांन नें, ओलखायो पुर सहर मझार जी।
सवत अठारें वरस सातवनें, काति विद चोदस नें सुकरवार जी॥ ६४॥

रत्न : ३१

विरत इविरत री चौपई

ढाल : १

[चतुर विचार करी ने देखो]

साध नें श्रावक रतना री माला, एक मोटी दूजी नांनी रे।
गुण गुंथ्या च्यारूं तीरथ नां, इविरत रह गइ कांनी रे।
चतुर विचार करी नें देखो* ॥ १ ॥
समणोवासग पडिमा आदर नें, आपणी न्याति में लीधो रे।
तिणनें च्यारूं आहार वेहराए, परित संसार न कीधो रे ॥च०२ ॥
ए तो गोचरी आपणे छांदे, जोवो सिधंत संभाली रे।
दातार ने लेवाल वेहू मे, जिण आग्या किण पाली रे ॥ ३ ॥
श्रावक नो खांणो पीणो नें गेंहणो, इविरत मांहे घाल्यो रे।
उवाइ सुयगडा अंग मांहें, पाठ उघाडो चाल्यो रे ॥ ४ ॥
सेवायां इविरत कर्मज लागें, ए तो सरधा सुंधी रे।
कर्म तणें वस धर्म परूपें, अकल तिणां री उंधी रे ॥ ५ ॥
करण जोग विगटावे अग्यांनी, लाग रह्या मत भूठें रे।
न्याय करे समभावें तिण सूं, क्रोध करे लडवा उठें रे ॥ ६ ॥
खायां पाप खवायां धर्म, ए अन्य तीर्थी री वायो रे।
विरत इविरत री खवर न कांई, भोलां ने दे भरमायो रे ॥ ७ ॥
कहें ममता उतरीया धन सूं, दे उपजावे साता रे।
इसडो धर्म वतावें लोकां मे, जके मोह मिथ्यात मे राता रे ॥ ८ ॥
द्रव्ये साता नें भावे साता, मूरख भेद न जांणें रे।
सावद्य साता जिण धर्म बारें, ग्यांनी विण कुण पिछांणे रे ॥ ९ ॥
कहे श्रावक रतनां रो भाजन, तिण पोष्यां नहीं तोटो रे।
च्यारूं आहार वेहराय ने हर्षे, तिण ने लाभज मोटो रे।
कुगुर तणे उपदेस म भूलो ॥ १० ॥
ए तो सरधा अनारज केरी, लोक रीझावण लागा रे।
जे कोइ साध कहे तो उणरा, पाचूंइ महाव्रत भागा रे ॥ ११ ॥
रतनां रो भाजन अतां करनें, गुण आदरीया हूवो रे।
खावो पीवो लेवो ने देवो, ए तो मारग जूवो रे ॥ १२ ॥
श्रमण निग्रंथ नें दांन रा दाता, बारमा व्रत में आण्या रे।
परित संसार कीधो सुख देनें, ज्यांनें श्री मुख वीर वखाण्या रे ॥ १३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सामायक संवर पोषां में, साधां नें हर्ष वेहरावें रे।
सो श्रावक तेला रे पारणें, त्यांनें क्यूं न जीमावें रे॥ १४॥
आ करणी जिण आग्या बारें, व्रतां मांहें न आवें रे।
सावद्य जोग रा त्याग कीया तिण, श्रावक केम जीमावें रे॥ १५॥
श्रावक नां च्यार विस्रामा तिण में, छोड्यो ते माठो जांणी रे।
सावद्य भार नें अलगो मेल्यो, जिण आग्या आगेवांणी रे॥ १६॥
वार वार दांन नें प्रसंसे, भेद न जांणें मिथ्याती रे।
सुयगडा अंग अधेन इग्यारमें, कह्यो छकाय रो घाती रे॥ १७॥
दांनसाला मांडी प्रदेसी, मोष रो हेत न जांण्यो रे।
च्यारूं भाग राज रा कीधा, साधां नहीं वखांण्यो रे॥ १८॥
तीन भागां में पाप कह्यो थें, एकण री कांय तांणी रे।
केसी कुमार तो मुनज साजी, च्यारूं वरावर रा जांणी रे॥ १९॥
आणंद श्रावक व्रत आदर नें, एहवो अभिग्रहो लीधो रे।
अन्य तीरथी नें दांन न देवूं, श्री जिण आगल कीधो रे॥ २०॥
छ छंडी रो आगारज राख्यो, आपणी जांण कचाइ रे।
सामायक संवर पोषा में, ते पिण दे छिटकाइ रे॥ २१॥
एक तो त्याग करे नें वेठों, एक दांनसाला मंडावें रे।
भगवंत री आगना किण पाली, साधु किण नें सरावें रे॥ २२॥
असंजती दांन दीयां में, धर्म नें पुन कांय थापो रे।
वीर कह्यो भगोती मांहें, निरजरा नहीं एकंत पापो, रे॥ २३॥
जिणनें अन दीयां नींपजें पुन, नमसकार इम जांणी रे।
उल्टा पड पड कर्म म बांधो, कर कर तांणा तांणी रे॥ २४॥
निरणो न कीधो नव बोलां रो, तिणरें मोल्प मोटी रे।
नव ही बोल सरीषा न थापें, तिणरी सरधा खोटी रे॥ २५॥
जिनरा द्रव्य सुपातर वेंहरें, तेहीज द्रव्य वताया रे।
गायां भेंस्यां धन धांन धरती, त्यांनें क्यूं न जनाया रे॥ २६॥
करता पाप देखी म्हें वरज्यां, धर्म करावां माडांणी रे।
मिश्र ठिकांणें मुनज साभ्मां, ए कुंदंसण्या नी वांणी रे॥ २७॥
साध श्रावक नों एकज मारग, दोय धर्म वताया रे।
ते पिण दोनूं आग्या मांहें, मिश्र अणहूंतो ल्याया रे॥ २८॥
मिश्र पष नें मिश्र भाषा, मिश्र गुणठांणो चाल्यो रे।
इणरो ले ले नांम अग्यांनी, झूठो झगडो झाल्यो रे॥ २९॥

या तीनां रो तार काढ्यो तिण, जिण सीखावण मांनी रे।
मिश्र धर्म नें किण विध सरधे, भगवंत रा संतानी रे॥ ३०॥
हाथी घोडां रथ बेसीं नें, वीर वांदण नें चाल्या रे।
सिनान कीया गेंहणा फूल पहरया, श्री मुख सूं नही पाल्या रे॥ ३१॥
पाप तणा फल कडवा बताया, ए वायक जगनाथो रे।
सुण सुण नें वेराग हूंता ज्यां, सूंस लीया जोडी हाथो रे॥ ३२॥
मूला गाजर ने काचो पांणी, कोइ जोरी दावें ले खोसी रे।
जे कोइ वस्त छोडावें बिनां मन, इण विध धर्म न होसी रे॥ ३३॥
भोगी नां कोइ भोगज रूंधें, वले पाडें अतरायो रे।
माहामोहणी कर्मज बांधें, दसाश्रुतखंध मांहि बतायो रे॥ ३४॥
देव गुर धर्म नें कारण, मूंढ हणे छकायो रे।
उलटा पडीया जिण मार्ग थी, कुगुरां दीया बेहकायो रे॥ ३५॥
धर्म हेतें श्रावक नेंतरीयो, मन मे अधिक हूलासो रे।
आरंभ कर जीमायां धर्म जांणें, तो वोध वीज रो नासो रे॥ ३६॥
वीर कह्यो आचारंग मांहें, जिण ओलखीयो तत सारो रे।
समदिष्टी धर्म नें कारण, न करें पाप लिगारो रे॥ ३७॥
एकंद्री मारे पचंद्री पोषे, ते निरचें बांधें कर्मो रे।
मच्छ गलागल चोडे मांडी, ए पाषडीयां रो धर्मो रे॥ ३८॥
लोही खरड्यो जो पितंबर, लोही सू केम धोवायो रे।
तिम हिंसा में धर्म कीयां थी, जीव उजलो किम थायो रे॥ ३९॥
कहे म्हे पाप करां थोडो सो, पछे होसी धर्म अपारो रे।
सावद्य कांम करां इण हेते, तिणथी खेवो पारो रे॥ ४०॥
चोखी सिन्यासण धर्म कह्यो तिण, दान सिनान बतायो रे।
आठमा अधेन गिनाता मांही, घणा लोक दीया भरमायो रे॥ ४१॥
जिम कोइ सावद्य दान दिढाइ, मन मे हुवें रलियायत रे।
लोकां रे मन गमता बोले, चोखी जोगण ना केडायत रे॥ ४२॥
आ सरधा सुखदेव सिन्यासी री, सहस जणा सिप्य जाणी रे।
सेठ सुदंसण तिण रो भगता, हाड मिंजा रगाणी रे॥ ४३॥
कर्म थोडा नें सुलटो सुझ्यो, अतर गति निरणो कीधो रे।
थावचे अणगार प्रतिबोध्यो, खोटी छोड सजम लीधो रे॥ ४४॥
चतुरविध सघना कोठा ठारया, पाछल भव दांन बतायो रे।
सनत कुमार इंद्र हूवो तेथी, ए पिण मूंसा वायो रे॥ ४५॥

ए तो पूछ्या वर्तमान काले, पाछिल भव री नहीं चाली रे।
फंद में नांखे अजांण लोकां ने, कुव्द हीया में घाली रे॥ ४६॥
तीनां काल री समझ पडे नही, तो हेत ने सुख वतावों रे।
च्यारूं आहार नो नांम लेइ नें, गोला कांय चलावो रे॥ ४७॥
अंबर ना सिष्य सात सो हूंता, अण दीधो नही लीधो रे।
काचो पांणी अधर्म जांण पीता, अण मिलीयां अणसण कीधो रे॥ ४८॥
जे कोइ मिलतो दातार तिणा नें, हर्षे वेहरावत पांणी रे।
लेवाल तो अविरत में लेता, इमहीज दातार जांणी रे॥ ४९॥
न्यांनी पुरषां दोनूं जणां री, सावद्य करणी जांणी रे।
दातार ने कोइ धर्म कहें तो, अन्य तीर्थ नी वांणी रे॥ ५०॥
समकत वमीयो नंदणमणीयारे, साची सरधा भागी रे।
तेलो करे तीन पोपा ठाया, भूख तिरषा अति लागी रे॥ ५१॥
संगत पाषंडीयां री करने, उलटो मारग लीधो रे।
चिन चिन कूआ तलाव खणावे, तिण सफल जमारो कीधो रे॥ ५२॥
पोषो पार श्रेणक नें पूछे, पोखरणी वाव खणाइ रे।
धन खरचे जस लीयो लोकां में, वले दांनसाला मंडाइ रे॥ ५३॥
सोलें रोग सरीरे उपनां, मूओ अति ध्यांन ध्यायो रे।
आप खणाइ में जाये पडीयो, डेडक रो भव पायो रे॥ ५४॥
आर्द्र कुमार नें ब्राह्मण बोल्या, छोड तूं सगला परचा रे।
म्हांरो धर्म उतम नें उजल, सुण तूं मोरी चरचा रे॥ ५५॥
दोय सहंस ब्राह्मण जीमाड्यां, परलोक में सुख दायक रे।
देव हूवे पुन खंत्र उपार्जी, वेद तणो ए वायक रे॥ ५६॥
आर्द्रकुमार कह्यो अपात्र ने, नित जिमाडे तेही रे।
दोय सहंस ब्राह्मण ने दाता, नरक पहुंचें वेही रे॥ ५७॥
मंजारी जिम रसना गिरधी, कहि दीयो सर्म न राखी रे।
धर्म ने पुन रो अंस न भाख्यो, सूयगडा अंग छे साखी रे॥ ५८॥
भगू पिरोहित कहे बेटां नें, सांभल मोरी सिष्या रे।
वेद भणी ब्राह्मण जीमाडी, लेजो थे पछे दीख्या रे॥ ५९॥
ब्राह्मण जीमाड्यां ए फल लागें, पहुंचाडें तमतमा रे।
उत्तराधेन चवदमें भाख्यो, ए तो सावद्य धर्मा रे॥ ६०॥
खोटी सरधा नें हीण आचारी, पूजा श्लागा रा भूखा रे।
कर्म घणा नें संचली न सूझें, कदागरो करवा ढुका रे॥ ६१॥

राते भूला तो आसा राखें, दीयां सूझसी सूला रे।
कहो ने आसा राखे किण विध, दीयां दोपारां रा भूला रे॥ ६२॥

भाव मारग थी भूला अग्यांनी, उजड चलीया जायो रे।
मन में आसा मुगत री राखे, दिन दिन अलगा थायो रे॥ ६३॥

सूतर नी चरचा अलगी मेले, लोक कीया पखपाती रे।
साची सरधा किण विध आवें, हूआ घणा रा साथी रे॥ ६४॥

जो थारें दिल काय न वेसें तो, सगलो झगडो चूको रे।
समता आदर ने कजीया छोडो, जिण तिण आगे म कूको रे॥ ६५॥

इविरत ओलखो उतम प्राणी, छोड द्यो राग ने धेखो रे।
मानव नों भव अहल म हारो, परभव सांमो देखो रे॥ ६६॥

ढाल : २

[चतुर विचार करी नें देखो]

संख नें पोखली जिमण कीवो, ते तो आपणों छांदो रे।
तिणनें सरावें मूंड अग्यांनी, कर्मां रा पूंज बांधें रे॥ १ ॥
तिण जीमण नें माठो जांणी, पोषो कर दीवो त्यागी रे।
पखी रे दिन पाप नें पचख्यो, संख वडो वेरागी रे॥ २ ॥
उपला श्रावका पोखली घर आयां, विनों कीयो सीस नमायो रे।
ते तो छांदो आपणों जांण्यों, भगवंत नहीं सिखव्यो रे॥ ३ ॥
नमसकार अंतर नें कीयो चेलां, ते तो सूतर उवाइ में चाल्यो रे।
भगवंत भाव दीठा जिम भाष्या, जिण धर्म मांहि न घाल्यो रे॥ ४ ॥
नवकार ना पद पांच परुप्या, श्रावक नें दीयो टालो रे।
जिण आग्या नहीं ग्रहस्थ वांदण री, भगवंत वचन संभालो रे॥ ५ ॥
मांहोंमांहि वीनों वीयावच कीवां, भगवंत नहीं वखाण्यां रे।
ग्रहस्थ ना कार्य सावद्य दीठा, मनकर भला न जाण्या रे॥ ६ ॥
कहें म्हें अविरत सेवां जिण में, जाणां छां बंधता कर्मो रे।
पिण कोइ सेवारें इविरत मांने, जिणनें हुवें छें धर्मो रे॥ ७ ॥
आ सरधा श्रावक नहीं राखें, न दें किण नें दगो रे।
धर्म ठिकाणे भूठ वोल्तो, जिण सासण में ठगो रे॥ ८ ॥
आपतो अविरत मांहिं आंणें, भोला नें धर्म वताइ रे।
श्रावक एहवो भूठ न वोलें, जिण धर्म मांहे आइ रे॥ ९ ॥
साव नें कोइ असुव वेंहरावें, ते गर्भ में आडो आवें रे।
श्रावक नें कोइ सचित खवरावें, ते सुद गति किण विव जावें रे॥१०॥
एक एक मांनव कर्म तणें वस, कर रह्या उंधी तांणो रे।
सचित असुव रोकड छों मांनें, होसी धर्म संका म आंणो रे॥११॥
पेट रें कारण अनरथ भाषें, परभव सांमो न जोवे रे।
वले पखपात करे कुगरां री, मांनव नो भव खोवे रे॥१२॥
दांन सील तप भावना व्याइ, मुगत नगर ले जावें रे।
तिण में दांन सुपातर आयो, ते इविरत मांहिं न ल्यावे रे॥१३॥
समचें दांन में धर्म कहें तो, नांइ जिण धर्म सेली रे।
आक नें गाय रो दुव अग्यांनी, कर दीयो भेल समेली रे॥१४॥

इविरत मे दांन ले पेंलां रो, मोष रो मार्ग बतावें रे।
धर्म कह्यां विण लोक नहीं दे, जब कूर कपट चलावें रे॥१५॥
कहें ओर जायगां धन देता देखें, खरच हूं लेखे लेखें रे।
ए श्रावक सुपातर त्यानें, दांन दे तूं वसेखे रे॥१६॥
कल्पें ते वस्त श्रावक नें देनें, गोत तीर्थंकर बांधे रे।
एहवो धर्म अनारज भापें, ते किण विध लागे सांचो रे॥१७॥
आगार ने सुपातर कहि कहि, सांनी कर साधु दरावें रे।
तिण रें दीसे घोर अंधारो, समकत किण विध आवें रे॥१८॥
खेती करे व्याज वोहरावे पालें, घर रो कांम चलावें रे।
करें सगपण आरा ने मोसर, वेटा वेटी परणावें रे॥१९॥
साधां रें आहार नें पाणी वधें तो, परठ दें एकंत जायो रे।
इग्यारमी पडिमा रो श्रावक मांगे तो, तिण नें न दें किण न्यायो रे॥२०॥
धरती परठ्यां तो व्रत रहे छें, दीधा दोप उघाडा रे।
पांच महाव्रत मूलगा तिण में, सगला पडीया वधारा रे॥२१॥
धरती परठ्यां तो अरथ न आवें, ए करणी नही नीची रे।
दीधां दराया ने भलो जाण्या, सावद्य इविरत सीची रे॥२२॥
जगन मझिम उतकष्टा श्रावक, तीनां री एकज पांतो रे।
इविरत छे सगलां री माठी, तिणमे म राखो भ्रांतो रे॥२३॥
कोइ श्रावक ना व्रत ले साधां पे, आयो जिण दिस जायो रे।
मार्ग मा दोय मित्री मिलिया, ते वोल्या जूदी जूदी वायो रे॥२४॥
एक कहे व्रत चोखा पाले, ज्यूं कटें आठोइ कर्मों रे।
काल अनादि रे भमते भमते, पायो जिणवर धर्मों रे॥२५॥
एक कहें तूं आगार सेवे, सचितादिक सर्व संभाली रे।
जतन घणा कीजें डीलां रां, वले कूटंब तणी प्रतपाली रे॥२६॥
व्रत पालण ही आग्या दीधी, ए तो धर्म रो मित्री मोटो रे।
अविरत आग्या दीधी तिण नें, ग्यांनी तो जांणे खोटो रे॥२७॥
गुर तो मिलिया जावक आंधा, चेला पूरा निरंदो रे।
ए तो जाल रच्यो तिण चोडें, कोइ आय पडें तिण फंदो रे॥२८॥
न्याय री चरचा रो कांम पडें तो, एके होय मांडें लडणों रे।
पाषंडीयां सूं जाय मिल्या वले, लीयो लोकां रो सरणो रे॥२९॥
अत ही दूष्ट हुवे हिंसाधर्मी, निन्दा करे परपूठे रे।
कोइ खांच तांण साधां पें आणें, तो अवगुण लेनें उठें रे॥३०॥

कहें दांन दीयो तीथंकर तिण में, जांणां छां कटीया कर्मो रे।
ते तो सोनइयां देवां आंण दीधा, त्यानें पिण हुसी धर्मो रे॥३१॥
कर्म कटें सोनइयां साटें, तो करणी नहीं करता रे।
ए मारग थी सिवपुर पोहचें, तो घर छोड दुख में न पडता रे॥३२॥
सोनइयां दीधां कर्म कटें तो, वरस री जेज न पाडत रे।
लोकां रा घर भर सोनइयां, देता कर्म विडारत रे॥३३॥
कहें लीधा पाप ने दीधां धर्म, तिण लेखे रह गया कोरा रे।
देवां कनें ले मिनष नें दीधा, पडीया अणहूंता फोडा रे॥३४॥
एक कोड आठ लाख सोनइया, निकल्या वर्सीदांन देइ रे।
मुगत रों मारग तिणमें न जांण्यो, संवर निरजरा न बेइ रे॥३५॥
वर्सी दांन महोछव सगला, केवलीयां नहीं वखांण्यो रे।
तीथंकर नें देव दोनूं इविरती, त्यां पिण धर्म न जांण्यो रे॥३६॥
भगवंत दीख्या लीधी तिण कालें, चढीया अतंत वेंरागो रे।
सावद्य दांन सिनांन सोनइयां, माठा जांणी दीधा त्यागो रे॥३७॥
भगू पिरोहित धन छोड निकलीयों, इखुकार राजा मंगायो रे।
धन सूं धर्म ने कर्म कटे तो, अेंली साटें कांय गमायो रे॥३८॥
घर छांडें त्यांमें अकल घणी थी, आलस कर आघो न काढत रे।
धन सू धर्म हुवें ते करनें, कांम सिराडें चाढत रे॥३९॥
धर्म री धुरा धन सूं न चालें, भगू नें कह्यो बेटां दोइ रे।
मांहोमां धन दीयां धर्म थापें, ते गया जमारो खोइ रे॥४०॥
रिषभदत्त ब्राह्मण ने देवानंदा, वांणी सुण आयो वेंरागो रे।
त्यां पिण धन नें छोड्यो अधर्म जांण, धर्म हुवें तो न काढत आघो रे॥४१॥
कहें आरा मोसर डायचादिक में, मिश्र धर्म कर रह्या तांणो रे।
राय उदाइ राज दीयो भाणेजा नें, तिण लेखें तो मोटो लाभ जांणो रे॥४२॥
ए परिग्रह छे अनरथ रो मूल, करें बोध बीज री घाता रे।
वीर कह्यो छें दसमां अंग में, ए नरक तणों छें दाता रे॥४३॥
ठांम ठांम सूतर सिद्धांतां में, धन सूं धर्म न थाप्यो रे।
किण विध कर्म कटें दाता रा, ए तो अविरत मांहें आप्यो रे॥४४॥
जंबूकुमर आठ परणे आयो, डायचे रिध लीयो अपारी रे।
कोड निनाणू तो पेंरावणी रो, वले घर में हुंती रिध भारी रे॥४५॥
कनक कांमणी सूं विरक्त भावें, उत्तम चारित लीधो रे।
वेंराग आंणे धन छोड दीयो पिण, धन सूं धर्म न कीधो रे॥४६॥

वीस हजार सोना रुपा ना आगर, खूटें नही अखूट भंडारो रे।
चक्रवत छे खंडकेरो साहिब, तिणरी रिध रो घणो विस्तारो रे॥ ४७॥
एहवी रिध मे काल कीयो तिण, नरक पड्या बांधो कर्मो रे।
दुरगति टल जाय धन दीधां, तो दे दे करता धर्मो रे॥ ४८॥
श्रावक तो जिण कालेइ हुंता, धन लेवा नें तयारो रे।
यांनें दीयां उधार हुवें तो, दे उतरें भव पारो रे॥ ४९॥
चित मुनी संभूत समझावा, साध श्रावक धर्म बतायो रे।
धन सूं सुद गति जाय विराजें, इसडो न कह्यो उपायो रे॥ ५०॥
कहें साध आहार करें इविरत में, संजम नो छें ओटो रे।
एतो वचन अनारज केरों, तिण आदरीयों मत खोटो रे॥ ५१॥
इविरत नें परमाद बेहूं नें, संजम नों छें धको रे।
ओटो कहें तिणरी उंधी सरधा, तिण गिरीयो मिथ्यात नें पको रे॥ ५२॥
साधां सावद्य सगलो त्यागयो, पाप रो नहीं आगारो रे।
इविरत में आहार ल्यावें खावें, ते निश्चें नहीं अणगारो रे॥ ५३॥
च्यार गुणठांणां में अकेली इविरत, श्रावक में दोनूं पावें रे।
साधां रे इविरत मूल न दीसें, कुब्दी कूड चलावें रे॥ ५४॥
इविरत में साध आहार करें तो, जिण आग्या नहीं देता रे।
पाप जांणें तो मुनज साभेंत, ए पिण आग्या न लेता रे॥ ५५॥
प्रतख पाप जांणें आहार कीधां, कर्म तणो बंध होवें रे।
तो आग्या ले गुरनी मुरख, गुर नें कांय डबोवे रे॥ ५६॥
गुर नी आग्या ले पाप करण री, ते तो मलेछ अनारज रे।
विनें सहित कोइ सावद्य सेवें, तिण मोटो कीयों अकारज रे॥ ५७॥
त्यांने गुर पिण मिलीयो अतंत अग्यांनी, कर्मां कर सुझ्यो भूंडो रे।
पाप करण री आग्या देनें, पोते अली साटें कांय बूडो रे॥ ५८॥
चेला नें आग्या इविरत री दे, घाल्यो पाप में सीरो रे।
देखो अकल गइ तिण गुर री, इण नें कांई पडी थी भीरो रे॥ ५९।
पाप करण री आग्या देसी, ते निश्चें होसी भारी रे।
कुण चेलो गुर ने गुर भाइ, जोवो अंतर मांहें विचारी रे॥ ६०॥
साध आहार कीयां परमाद नें इविरत, तो दातार नें नहीं धर्मो रे।
इविरत री इविरत में घाल्यो, तो दोयां रे बंधसी कर्मो रे॥ ६१॥
कर्म तणे वस मूंढ अग्यांनी, सवली सीख न धारें रे।
आप डूबे इविरत में ल्याइ, ते ओरां नें किण विध तारें रे॥ ६२॥

साध आहार कीयां में पाप परूपें, त्यांरें मोह मिथ्यात रो चालों रे।
तीन काल रा मुनीसरां नें, दीयो अणहूंतो आलो रे॥ ६३॥
आहार करण री सुध साधां नें, भगवंत आग्या दीधी रे।
तिण में पाप वतावे अग्यांनी, खांच गला में लीधी रे॥ ६४॥
जो थांनें समझ पडे नहीं पूरी, तो राखो जिण परतीतो रे।
आग्या मांहें पाप परूपें, एहवी म करो अनीतो रे॥ ६५॥
जिण आग्या में पाप परूपें, ते भूला भरम अग्यांनी रे।
आग्या वारे धर्म कहें त्यांनें, किण विध कहिजें ग्यांनी रे॥ ६६॥
गुण विण भेख धरे साधु री, करें विकलां री थापो रे।
छ कारणां विण आहार करसी, तिणनें छें एकंत पापो रे॥ ६७॥
छ कारणें साध आहार करें तो, जिण आग्या नहीं लोपी रे।
पाप तिणां ने किण विध लागें, संवर कर आतम गोपी रे॥ ६८॥
निरवद गोचरी रिषेसरां री, मोष री साधन भाखी रे।
पाप कर्म आहार करतां न लागे, दसवीकालक साखी रे॥ ६९॥
सात कर्म साध ढीला पाडें, आहार करे तिण कालो रे।
सुध भोगवीयां ए फल लागें, सूतर भगोती संभालो रे॥ ७०॥
सेलक जप रे कांचें वेस नीकलीयो, राखी रेंणा देवी सूं पीतो रे।
अणुकंपा आंणें साह्मो जोयो, जिणरिष हूवो फजीतो रे॥ ७१॥
सेलक जप जिम संजम जांणो, रेंणा देवी ज्यूं इविरत मेंली रे।
मुगत नगर नें संत नीकलीया, त्यां इविरत छोडी पेंली रे॥ ७२॥
सेलक जप ने रेंणादेवी रे, मांहोमां नहीं मेलापो रे।
विरत सूं धर्म ते पार पोहचावे, इविरत लगावें पापो रे॥ ७३॥
रेणा देवी एक भव दुखदायक, इविरत अनंतो कालो रे।
सांसो हुवे तो गिनाता मांहें, नवमों अधेन संभालो रे॥ ७४॥

ढाल : ३

[चतुर विचार करी ने देखो]

सुयगडां अंग अधेन इग्यार में, त्यां दान रो कीधो निचोडो रे।
मूंढ मिथ्याती ववेक रा विकल, ते करे अणहूंती भोडो रे॥ १ ॥
चतुर विचार करी ने देखो*।

सोलमी गाथा सू लेइ इकवीसमी तांई, ए छव गाथा रा अर्थ छे सूंघा रे।
तिहा सावद्य दांन मे मिश्र थापण नें, अर्थ करे छे उंधा रे॥ च० २ ॥

ते सावद्य दांन संसार नां कारण, तिण में निरवद रो नही भेलो रे।
ससार ने मुगत रा मारग न्यारा, ते कठें न खावे मेलो रे॥ ३ ॥

ए छ गाथा रा अर्थ छें भारी गूढा, त्यांरो निरणो कीजों बुधवांनो रे।
ते अर्थ विवरां सुध त्यांरो, सुणजों सुरत दे कांनो रे॥ ४ ॥

दांन रे अर्थे जीव हणें त्यांने, साधु तो भलो न जांणे रे।
देवे पो सतूकार खोदावे कूवादिक, लाभ जांणें सरधा परमांणे रे॥ ५ ॥

ते आय साधां नें प्रश्न पूछे, ते आरंभ लीयां बोले वांणी रे।
इण करणी में पुन हुवे के नाही, जब साध करे मून जांणी रे॥ ६ ॥

पुन पिण साध न कहे तिणने, वले न कहे थारे पुन नांही रे।
वेहू प्रकारें माहा भय रो कारण, मून करे ते कारण कांई रे॥ ७ ॥

दान रे कारण लोक करे छे, तस थावर री घातो रे।
पुन कह्यां त्यांरी दया उठे छे, दया विण नही पुन साख्यातो रे॥ ८ ॥

असंजती नें उदीरी उदीरी, आरभ कर जीमावे अन पांणी रे।
पुन नही कह्या अंतराय पडे छे, ओहीज कारण जांणी रे॥ ९ ॥

साधु तो अंतराय किणने न देवे, उण वेलां जीभ क्यांने हलावें रे।
चरचा रो कांम पडें तिण काले, हुवे जिसा फल बतावें रे॥ १० ॥

जे कोइ दांन प्रससे तिणने, कह्यो छकाय रो घाती रे।
तो देवें दिरावें त्यांरो स्यूं कहिवों, ए पिण उणरा साथी रे॥ ११ ॥

हिंसा भूठ चोरी कुसील प्रसंसे, ते बूड गया काली धारो रे।
तो करण करावण वाला रों, किण विध होसी उवारो रे॥ १२ ॥

कोइ गांव जलावे ने गायां कटावे, इत्यादिक कारज सव भूंडां रे।
त्यांने सरावे ते वूड गया छें, तो करण वाला तो वशेष बूडा रे॥ १३ ॥

ज्यू सावद्य दांन प्रसंसे तिणने, कह्यो छे छकाय रो घाती रे।
देवें तिणने धर्म मिश्र कहे त्यांनें, कहीजें मूंढ मिथ्याती रे॥ १४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

माठो कांम सरायां वूडें छें, तो कीयां वूडसी गाढो रे।
आ सरधा सुण सेंठी धारो, थें सल अभितर काढो रे॥ १५ ॥
सावद्य दांन प्रसंसें तिणरा, माठा फल कह्या जिण रायो रे।
हिवें दांन नपेधणों नहीं साधु नें, तिणरो पिण सुणजों न्यायो रे॥ १६ ॥
दातार दांन देवें तिण कालें, लेवाल लेवें घर पीतो रे।
जब साध कहे तूं मत दें इणनें, नपेधणों नहीं इण रीतो रे॥ १७ ॥
जो दांन देता नें साध नपेदें तो, लेवाल रे पड़ें अंतरायो रे।
अंतराय दीयां फल कडवा लागें, तिणसूं नपेध न करें इण न्यायो रे॥ १८ ॥
अंतराय सूं डरतो साधु न बोलें, ओर परमारथ मत जांणो रे।
ते पिण मूंन छें वरतमांन कालें, बुधवंत कीजों पिछांणो रे॥ १९ ॥
उपदेस देवें साध तिण कालें, दूध पांणी ज्यूं करें नीवेडो रे।
विनां बतायां च्यार तीरथ में, किण विध मिटें अंधेरो रे॥ २० ॥
दोनूं भापा साधु नहीं बोलें, पुन छें अथवा पुन नांही रे।
ते वरज्यों वरतमांन काल आसरी, थें सोच देखों मन मांहीं रे॥ २१ ॥
कोइ कहें पुन कहणों न कहणों वरज्यों, तो पुन में पाप रो भेल जांणो रे।
तिणसूं मिश्र ठिकांणों ले उठ्या अग्यांनी, ते कर कर उंधी तांणो रे॥ २२ ॥
पुन छे कें नहीं रो प्रश्न पूछ्यों, पाप रो कथन न चाल्यो रे।
मिश्र री सरधा वाले अग्यांनी, घोचो मिश्र रो वाल्यो रे॥ २३ ॥
दांन में मिश्र नहीं जिण भाख्यों, पुन होसी कें पापो रे।
सुपातर सूं पुन कुपातर सूं पाप, पिण खोटी मिश्र री थापो रे॥ २४ ॥
वले सुयगडा अंग अधेन इकवीसमें, दोय वातां जिण भाखी रे।
त्यां पिण न कह्यो छें मिश्र ठिकांणों, जोवों वतीसमीं गाथा साखी रे॥ २५ ॥
दातार नें देतां लेवाल नें लेतां, साधु इसडों देखें विरतंतो रे।
जब गुण अवगुण न कहें तिण कालें, तिहां मूंन करें एकंतो रे॥ २६ ॥
तिण दांन तणा साधु गुण करें तो, असंजम री अणुमोदनां लागें रे।
असंजम छें ते एकलो अधर्म, ते अणुमोद्यां संजम भागें रे॥ २७ ॥
जिण दांन नें साधु भलो न जांणें, भलो जांण्यां बंधें पाप कर्मो रे।
तो तिणहीज दांन तणा दाता नें, किण विध होसी मिश्र नें धर्मो रे॥ २८ ॥
पाप अणुमोद्यां तो पाप हुवें छें, धर्म अणुमोद्यां धर्म होयो रे।
तो मिश्र अणुमोद्यां मिश्र चाहीजें, ते मिश्र न दीसें कोयो रे॥ २९ ॥
दांन देवें दिवरावें भलो जांणें, यां तीनां री एकज पांतो रे।
पुन पाप मिश्र होसी तो तीनां नें, तिणमें म राखों भ्रांतो रे॥ ३० ॥

जिण दांन तणा गुण कीधां साधु नें, असंजम री अणुमोदनां लागे रे।
ते दांन असंजम में जिण घाल्यो, ओगुण कह्यां रो बोलतों आगें रे॥ ३१॥
दांन तणा ओगुण कीधां में, लेवाल रें पडें अंतरायो रे।
अंतराय देंणी ते साधु नें न कल्पें, तिण सूं मूंन करें मुनीरायो रे॥ ३२॥
इण न्याय साध नें मूंन कही छे, पिण मिश्र न जांणें तिणमें रे।
इण दांन में मिश्र ने धर्म थापें तो, कोरो मिथ्यात छें तिण में रे॥ ३३॥
गुण कह्यां असंजम अणुमोदीजे छें, अवगुण कहितां लागें अंतरायो रे।
यां दोयां सूं डरतो साधु न बोलें, अठे मिश्र किहां थी थायो रे॥ ३४॥
साधु मूंन करे वरतमांन कालें, पिण उपदेस में मूंन न राखे रे।
द्रव्य खेतर काल भाव देखें तो, हुवे जिसा फल दाखें रे॥ ३५॥
मिश्र थापण नें मूंढ अग्यांनी, छल छिद्र रह्यो नित देखो रे।
सूतर में ओर बोल घणा छें मिश्र रा, त्यांमें मिश्र दान दे टेकों रे॥ ३६॥
कोइ कहे पाप कहे तिण देतां पाल्यों, इसडी बोलें छे वांणों रे।
ए दोनूं भाषा ने एकज सरधें, ते भाषा तणा मूढ अयांणो रे॥ ३७॥
कोइ कहे पाप कहे तिण दांन निषेद्यो, ते पिण भाषा रा अजांणो रे।
सावद्य दांन नें थापण अग्यांनी, बोले छे उंधी वांणो रें॥ ३८॥
दांन देता नें कहे तूं मत दें इण ने, तिण पाल्यों निषेद्यों दांनो रे।
पाप हुतो ने पाप बतायो, तिणरो छे निरमल ग्यांनो रे॥ ३९॥
असजती ने दांन दीयां में, कहि दीयो भगवंत पापो रे।
त्या दांन नें वरज्यो निषेद्यो नांही, हुंती जिसी कीधी थापो रे॥ ४०॥
किण ही साधु ने कह्यो आज पछे तूं, म्हारे घर कदे मत आयो रे।
किणही ए करडा वचनज बोल्यो, हिवे साधु किसे घर जायो रे॥ ४१॥
साधां ने वरज्यो तिण घर में न पेसें, करडा कह्या तिण घर मांहे जावे रे।
निषेद्यों ने करडो बोल्यां ते, दोनूं एकण भाषा मे न समावे रे॥ ४२॥
ज्यूं कोइ दांन देतां वरज राखे, कोइ दीधा में पाप बतावे रे।
ए दोनूंई भाषा जुदी जुदी छे, ते पिण एकण भाषा में न समावे रे॥ ४३॥
कोइ रांक गरीब ने मरता देखी नें, त्यारी अणुकंपा मन मांहे आवे रे।
जब पेंला रों माल चोरी कर पोते, रांका ने हाथ सूं पकडावें रे॥ ४४॥
धणी नें विण पूछ्यां चोरी कर देवें, रांकां री अणुकंपा काजें रे।
उणरी सरधा रे लेखें तो इणनेइ मिश्र, अठें मिश्र कहितां कांय लाजें रे॥ ४५॥
माल धणी रे दाह दीधी तिणरो, हुवो एकंत पाप कर्मो रे।
तो रांकां नें दीयो ते अणुकंपा आंणे, उणरें लेखें ओ प्रतख धर्मो रे॥ ४६॥

पेंलां रो धन खोस रांकां नें देवें, तिणमें मिश्र कहें नांही रे।
तो उठ गई मिश्र री सरधा, थें सोच देखो मन मांहीं रे ॥ ४७ ॥
पर रो धन चोर रांकां नें दीधां, तिण में मिश्र हुवें नांहीं रे।
तो जाबक जीव हणे रांक नें पोषे, अठें मिश्र कठें तिण मांहीं रे ॥ ४८ ॥
कोइ चोरी कर रांकां नें पोषें, कोइ जीव हण नें पोषें रांको रे।
इण एकंत पाप में मिश्र कहे, त्यांरी सरधा में पूरो छे बांको रे ॥ ४९ ॥
रांकां नें पोषे घणा जीव हणे ने, तिणनें चोरी हिंसा लागें दोयो रे।
ते चोरी तो त्यांरा सरीर री लागी, जीव हणीयां री हिंसा होयो रे ॥ ५० ॥
रांकां नें पर धन चोर देवें त्यांने, एक चोरी तणों पाप होयो रे।
ए दोनूं किरतब करें अणुकंपा आंणे, ते गया जमारो खोयो रे ॥ ५१ ॥
पर नीं चोरी करे रांकां ने देवे, इण किरतब सूं जो बूडें रे।
तो हिंसा कर ने कुपातर पोषे, ते क्यूं नही बेंससी तूडें रे ॥ ५२ ॥
कहे आराधवी विराधवी मिश्र भाषा छें, ते भाषा छें धर्म अधर्मो रे।
आराधवी जितरो छे एकलो धर्मो, विराधवी सूं लागे पाप कर्मो रे ॥ ५३ ॥
इम कहि कहि मिश्र करणी थापें, तिण करणी में कहें धर्म पापो रे।
इम आंटी घालें सावद्य दांन माहे, करे मिश्र री थापो रे ॥ ५४ ॥
ते मिश्र भाषा छे एकंत सावद्य, तिम बोल्यां बंधें पाप कर्मों रे।
महामोहणी कर्म बंधें तिण सूं, तिणमें किहां थी धर्मों रे ॥ ५५ ॥
आराधवी विराधवी मिश्र भाषा कही, ते तो बोलवा लेखें रे।
अठें पाप धर्म रो कथन न चाल्यो, तिणरा सुणजो भेद वशेखें रे ॥ ५६ ॥
आराधवी कही छें सत भाषा नें, ते पिण बोलवा लेखें पिछांणो रे।
ते साची भाषा छें सावद्य निरवद, तिण सावद्य में धर्म म जांणो रे ॥ ५७ ॥
साची भाषा सावद्य तिणने, आराधवी कही बोलवा लेखें रे।
पिण एकंत पाप बधें तिण बोल्यां, ते मिश्र में मूढ पाप न देखें रे ॥ ५८ ॥
ववहार भाषा नें कही छे जिणेसर, आराधवी विराधवी नांही रे।
ते पिण कही छे बोलवा लेखें, धर्म अधर्म लेखो नही यांहीं रे ॥ ५९ ॥
धर्म अधर्म लेखे तो ववहार भाषा, आराधवी विराधवी जांणो रे।
निरवद ने आराधवी जांणो, विराधवी सावद्य नें पिछांणो रे ॥ ६० ॥
जो मिश्र भाषा धर्म अधर्म लेखें, आराधवी विराधवी होइ रे।
तो ववहार भाषा बोलसी तिणनें, धर्म अधर्म नही कोइ रे ॥ ६१ ॥
जो साची भाषा बोले धर्म रे लेखे, थापे आराधवी कोयो रे।
तो साची भाषा सावद्य बोल्या, एकंत धर्मज होयो रे ॥ ६२ ॥

जो मिश्र भाषा माहे मिश्र हुवें तो, सत भापा मे एकंत धर्मो रे।
ववहार भाषा तो सुन होय जावें, वोल्यां नही धर्म ने पाप कर्मो रे॥ ६३॥
ए तो बोलवा आश्री च्यांरूई भाषा, आराधवी विराधवी जांणो रे।
अठे धर्म अधर्म रो कथन न चाल्यो, पनवणा सूं करो पिछांणो रे॥ ६४॥
सत असत मिश्र ने ववहार, ए च्यार भाषा जिण भाखी रे।
त्यामें असत नें मिश्र तो जाबक सावद्य, जोवो दसवीकालक साखी रे॥ ६५॥
सत भाषा ने ववहार भाषा, ए तो सावद्य निरवद दोई रे।
ते सावद्य टाले ने निरवद बोलें, तो पाप न लागें कोई रे॥ ६६॥
असत ने मिश्र तो जावक छोडणी, ते बोल्यां बूडे जावे वहिता रे।
जो मिश्र भाषा मांहे मिश्र धर्म हुवे तो, जावक छोडणी नही कहितां रे॥ ६७॥
धर्म अधर्म आश्री च्यारूंइ भाषा, बोलवी नही वोलवी चाली रे।
सत ने ववहार विचार बोलवी, असत मिश्र ने सरवथा पाली रे॥ ६८॥
तीसां बोलां वंधे महामोहणी कर्म, ते एकंत छे पाप कर्मों रे।
तो मिश्र भाषा वोले तिण माहे, किण विध होसी पाप ने धर्मो रे॥ ६९॥
जो गुणतीस बोलां में एकलो पाप, तो मिश्र भाषा मे एकत पापो रे।
कोइ मिश्र भाषा माहे मिश्र धर्म कहे, तिण आगम दीया उथापो रे॥ ७०॥

●

ढाल : ४

दुहा

श्री जिण आगम मांहें इम कह्यों, धर्म अधर्म करणी दोय।
धर्म करणी मांहे जिण आगना, अधर्मकरणी मेंआगना नकोय॥ १ ॥
धर्म अधर्म करणी जुई जुई, ते कठें न खावें मेल।
जे मूढ मिथ्याती जीवडा, त्यां कर दीधी भेल सभेल॥ २ ॥
चतुर व्यापारी विणज करें, जेंहर ने इमृत दोय।
मांगें ते वसत देवें गराक नें, पिण ओर न देवें कोय॥ ३ ॥
ववेक विकल व्यापारी हुवें, तिणनें वस्त री खबर न कांय।
जेंहर घालें इमृत मझे, इमृत घालें जेंहर रे मांय॥ ४ ॥
ज्यांनें वसत री ठीक पड़ें नहीं, ते घालें ओर री ओर मांय।
ते नाश करें नीवी तणों, तिम जांणों धर्म री न्याय॥ ५ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

जिम कोइ घ्रत तंबाखू विणजें, पिण वासण विगत न पाडें रे।
घ्रत लेई तंबाखू में घालें, ते दोनूंई वसत विगाडें रे॥ १ ॥
चतुर विचार करी ने देखो*।
ज्यूं इविरत रो दांन विरत में घालें, पिण विरत री विगत न पाडें रे।
विरत री विगत पाड्यां विण बांगा, सूंनें चित दांन पूकारें रे॥ च० २ ॥
श्रावक मांहोमांहि जीमें जीमावें, ते तो एकंत आश्रव जांणो रे।
तिण मांहे धर्म परूपें अग्यांनी, ते पूरा मूंढ अयांणो रे॥ ३ ॥
जीभ रो ओषद आंख्यां में घाल्यों, आंख्यां रो ओषद जीभ में घाल्यो रे।
तिण री आंखई फूटी नें जीभइ फाटी, दोनूंइ इंद्री खोय चाल्यो रे॥ ४ ॥
ज्यूं अधर्म रा कांमा धर्म मांहें घाल्या, धर्म रा कांमा अधर्म में घाल्या रे।
दोनूंई विध कर्म बांधे अग्यांनी, दुरगत मांहे चाल्या रे॥ ५ ॥
सावद्य किरतब में धर्म जांणें, निरवद में पाप जांणें रे।
सावद्य निरवद में नहीं समझें, अग्यांनी थका उंधी तांणें रे॥ ६ ॥
सचित अचित्त दीधां कहें पुन, वले सुध असुध दीधां कहे पुनो रे।
वले पुन कहे पातर कुपातर नें दीधां, ओ मत जाबक जबूंनो रे॥ ७ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

पातर कुपातर दोनां नें दीधां, पुन कहे छें कर कर तांणी रे।
तिण पातर कुपातर गिणीया सारीषां, आ पाषंडीयां री वांणी रे॥ ८ ॥
कूडाधर्मी कूंडें वेंस जीमें जब, भेला जीमें एकण कूंडा माह्यो रे।
जात कुजात नें चोखा अचोखा, त्यांरी भिन न राखे कांयो रे॥ ९ ॥
ज्यूं पातर कुपातर सर्व नें दीधां, पुन कहे एक धारो रे।
ओ मत कूंडापंथी जिम जांणो, किण सूं भिन न राख्यों लिगारो रे॥ १० ॥
केइ डाहा हुवें ते कूंडा पंथ्यां ने, न्यात जात सूं जांणें भिष्टी रे।
ज्यूं पून कहे दांन कुपातर दीधां, त्यांनें ग्यांनी जांणे मिथ्यादिष्टी रे॥ ११ ॥
श्री वीर कह्यों पातर दांन दीधां, धर्म ने पुन दोनूं होयो रे।
कुपातर दांन में पुन कहे ते, गया जमारो खोयो रे॥ १२ ॥
श्रावक नें एकंत सुपातर कहे नें, तिण पोख्यां में धर्म बतावे रे।
इसडी परूपणा कर कर अग्यांनी, भोला लोकां ने इम भरमावें रे॥ १३ ॥
श्रावक ने एकंत सुपातर कहे छें, ते पूरा मूंढ अग्यांनी रे।
त्यानें श्रावक पिण इसडाइज मिलीया, त्यां पिण सरधा साची कर मांनी रे॥ १४ ॥
नांव मातर श्रावक ववेक रा विकल, त्यांनें निज अवगुण नहीं सूझें रे।
त्यानें गुर पिण मिलीया त्यांहीज सरीषा, तिण सूं दिन दिन इधका अलूझें रे॥ १५ ॥
श्रावक ने एकंत सुपातर कहे, ते तो उठी जठाथी झूठी रे।
सावद्य किरतब मूल न सूझे, त्यांरी हीया नीलाडी री फूटी रे॥ १६ ॥
आधा मिनष ने आंधो मिलीयो, जब कुण बतावे वाटो रे।
ज्यूं श्रावक ने एकंत सुपातर कहे छें, त्यारे आयो अभितर पाटो रे॥ १७ ॥
श्रावक सुपातर विरता रे लेखे, इविरत लेखे जेंहर रो बटको रे।
इविरत रो इणरे काम पडे जब, छकाय रो कर जाय गटको रे॥ १८ ॥
श्रावक सुपार वरतां सूं हूवो, इविरत सूं अधर्मी जांणो रे।
इविरत रो इणरें कांम पडे तो, छकाय रो करें घमसांणो रे॥ १९ ॥
छकाय जीवां रो गटको करे छें, छकाय रो करें घमसांणो रे।
इण किरतव ने सुपातर जांणे, ते जिण मारग रा अजाणो रे॥ २० ॥
श्रावक अस्त्री सेवे सेवावे, वले परणें नें परणावें रे।
तिणनें एकत सुपातर थापे, ते तो गाला रा गोला चलावे रे॥ २१ ॥
केइ श्रावक रे हुवें अस्त्री हजारां, पासवांन खवासण अनेको रे।
एहवा भोगी भमर नें सुपातर जांणे, त्या विकला नें नहीं ववेको रे॥ २२ ॥
हिंसा झूठ चोरी मइथुन सेवे, परिग्रह मेले विवध प्रकारो रे।
तिणनें एकत सुपातर परूपे, त्यांरा मत मांहे पूरो अंधकारो रे॥ २३ ॥

श्रावक लाखां बीघां घर खेती करें छें, कोडां मण काढें अणगल पांणी रे।
त्यांनें पिण एकंत सुपातर कहें छें, ते तो पाषंडीयां री वांणी रे॥२४॥
दमडी काजें पागडा पाडें पडावें, आंमी साह्मीं पेजारां चलावें रे।
एहवा श्रावक नें सुपातर कहितां, विकलां नें लाज न आवें रे॥२५॥
कजीयाखोर बथोकडा बगींया, मन मांनें ज्यूं बोलें भूंडा रे।
ममा चचा री गाल्यां तो बस रही मूंढें, त्यांनें सुपातर सरधे कांय बूडा रे॥२६॥
केइ नागडा निरलज फीटा बोलें, ते दीसें उघाडा कुपातर रे।
केइ एहवा कुपातर नें कहें छें सुपातर, त्यांने पिण कहीजें एहवा सुपातर रे॥२७॥
केइ दगा दगी रो विणज करें छें, कपडादिक बेचें नग बदलावें रे।
त्यांनें एकंत सुपातर कहि कहि, ते विकलां नें विकल रीझावें रे॥२८॥
श्रावक तो घर मांहें बेठों, करें छें अनेक अकाजो रे।
तिण घरबारी नें सुपातर कहितां, विकलां नें न आवे लाजो रे॥२९॥
आगें मोटा मोटा राजा श्रावक हुआ, जीवादिक नवतत रा जांणो रे।
ते रिण संगराम चढ्या तिण काले, घणां मिनषां रा कीयां घमसांणो रे॥३०॥
एक कागादिक मारण रा त्यांग कीयां, ते पिण श्रावक री पांत मांहीं रे।
बाकी रा सर्व किरतब खोटा करें छें, ते सुपातर पणां में नांही रे॥३१॥
श्रावक नें सुपातर किण न्याय कहीजें, किण न्याय अधर्मी कुपातर रे।
सूतर मांहे जोए भव जीवां, हीया मांहें करो जमें खातर रे॥३२॥
सूयगडांग अधेन अठारमें, तीन पष तणो विसतारो रे।
धर्म अधर्म मिश्र पष तीजों, यां तीनां रो सुणो भेद न्यारो रे॥३३॥
सर्व विरत नें धर्म पष कहीजें, इविरत नें अधर्म पष जांणो रे।
कांयक विरत नें कांयक इविरत, मिश्र पष एह पिछांणो रे॥३४॥
धर्म पष मांहें एकंत साधां नें घाल्या, त्यांरे सर्व थकी विरत जांणो रे।
अधर्म पष मांहे असंजती घाल्या, त्यांरें जावक नही पचखाणो रे॥३५॥
मिश्र पष मांहें श्रावक नें घाल्या, तिणरो न्याय सुणो चित ल्यायो रे।
जे विरत कीया ते धर्म पष मांहें, इविरत छें अधर्म पष माह्यों रे॥३६॥
तिण सूं श्रावक नें कहीजें धर्मी अधर्मी, संजती नें असंजती जांणों रे।
वले श्रावक नें कहीजें विरती इविरती, पिंडत नें बाल दोनूं पिछांणो रे॥३७॥
श्रावक नें वरतां कर संजती कहीजें, गुण रतनां री खांणो रे।
वरत आदरतां इविरत राखी, तिण सूं कोरों असंजती जांणों रे॥३८॥
श्रावक रो खांणों पीणों नें गेंहणों, इविरत मांहें जांणो रे।
तिण इविरत नें असंजती कहीजें, तिण मांहें धर्म म जांणो रे॥३९॥

कोइ श्रावक नें असणांदिक देवें, ते तो असंजतीपणा माह्यो रे।
असंजती नें दांन दें त्यारें, आछा फल नही लागे ताह्यों रे॥४०॥
असंजती ने दान दीयां में, पाप कह्यों छें एकंतो रे।
भगवती आठमें सतक छठे उद्देशें, इम भाष गया भगवंतो रे॥४१॥
साध श्रावक विण सर्व संसारी, एकंत असंजती जांणो रे।
श्रावक री इविरत पिण असंजती छें, ते रुडी रीत पिछांणो रे॥४२॥
अधर्मी जीव च्यारां गुण ठांणां, श्रावक रो पांचमो गुण ठांणो रे।
बाकी नव गुण ठांणा साध रिषेसर, ए संसार में सर्व जीव जांणो रे॥४३॥
पांचूं इंद्री मोकली मेल्यां पाप, मेलायां पिण लागे छें पापो रे।
पाचूं इंद्री नी तेवीस विषे सेवायां, पाप कह्यों जिणेसर आपो रे॥४४॥
कोइ श्रावक नी रस इंद्री पोषें, पांचूं रस मन गमता जीमावे रे।
तिण रस इंद्री नी विषे सेवाइ, तिण में धर्म अग्यांनी बतावे रे॥४५॥
कोइ श्रावक री पांचूं इंद्री पोषे, विषे सेवारे तेवीसो रे।
तिण मांहे धर्म परूपें मिथ्याती, ते वूडा छे विसवावीसो रे॥४६॥
केइ मूढ मती जीव अतंत अग्यांनी, ते इसडी चरचा आणे रे।
जो श्रावक एकंत सुपातर न हुवे, तो च्यार तीरथ मे क्यूं जाणे रे॥४७॥
च्यार तीरथ ने कही रतनां री माला, तिण माला रा भेद न जाणे रे।
गुण अवगुण सर्व माला में घाल्या, ग्यानी थकां उंधी ताणे रें॥४८॥
च्यार तीरथ छे गुण रतना री माला, तिण मे इविरत नही लिगारो रे।
माला माहें श्रावक रा वरत घाल्या, इविरत ने काढे दीधी बारो रे॥४९॥
इविरत ने एकलो अधर्मी कहीजें, तिणरा अनेक माठा माठा नांमो रे।
ते रतनां री माला में किण विध घाले, ते तो सगलाई सावद्य कांमो रे॥५०॥
श्रावक ने एकंत सुपातर थापण, कोइ इसडी चरचा ल्यावे रे।
जो श्रावक एकंत सुपातर न हुवे, तो देवलोकां किम जावे रे॥५१॥
श्रावक जावे छे देवलोक माहे, ते तो समकत वरत सूं जांणो रे।
एक समकत सूं पिण देवलोक जावे, तो श्रावक रे छे समकत पचखांणो रे॥५२॥
इविरती समदिष्टी चोथे गुण ठांणे, ते एकत असंजती जांणो रे।
ते पिण देवलोक माहें जावे छे, ते समकत गुण पिछांणो रे॥५३॥
श्रावक देवलोक मांहें जावे छे, ते तो समकत वरत मे पूरा रे।
त्यारे पुन वंधे छे शुभ जोगां सूं, वले पाप कर्म करे दूरा रे॥५४॥
जे देवलोक जावे ते निरवद गुण सूं, अवगुण लेजावे दुरगत तांणो रे।
ज्यूं श्रावक पिण देवलोक जावे छे, ते तो गुणां री वोहलता जांणो रे॥५५॥

अभवी जीव एकंत मिथ्याती, ते निश्चें सुपातर नांही रे।
ते पिण कष्ट तणें परतापें जावे छें, नवमा ग्रीवेक तांइ रे॥ ५६॥
ते तो समदिष्टी साध श्रावक पिण नांही, ते पिण नवमे ग्रीवेक जावें रे।
वले सिन्यासी नें गोसाला मती पिण, ते पिण विमांणीक थावे रे॥ ५७॥
वले कृष्ण पषी तिरजंच मिथ्याती, ते पिण आठमें देव लोक जायों रे।
जो देवलोक जावें ते सर्व सुपातर, तो ए पिण सुपातर माह्यो रे॥ ५८॥
बारे देवलोक ने नव ग्रीवेक मांहे, जीव गयों अनंती बारो रे।
जे देवलोक गया ते सुपातर हुवे तो, नहीं रुले अनंत संसारो रे॥ ५९॥
समदिष्टी नें पिण कहीजे सुपातर, ते तो समकत ग्यांन सूं जांणो रे।
उणरी इविरत नें खोटा किरतब कीधां, एकंत कुपातर पिछांणो रे॥ ६०॥
वले मिश्र पष में पाषंड्यां ने घाल्या, कष्ट नें कहिवा रे लेखें जांणो रे।
ते समकत विण छें एकंत इविरती, अधर्मी पेंहलो गुण ठांणो रे॥ ६१॥
जो किरतब सूं मिश्र पष हुवें तो, साधु पिण हुवे मिश्र पष माह्यो रे।
साधु नें पिण कषाय माठी लेस्या आवे, माठा जोग पिण वरते ताह्यो रे॥ ६२॥
कदे आरत ध्यांन साधां ने पिण आवे, माठा आवे अधवसाय परिणांमो रे।
तो पिण साधां नें मिश्र पष में न घाल्या, ते तो सगला सावद्य था कांमो रे॥ ६३॥
माठा किरतब ने कुमारग कहीजें, इविरत ने अधर्मी कही ताह्यो रे।
अधर्म नें कुमारग न्यारा कह्या छे, ठाणांग दशमा ठाणा माह्यो रे॥ ६४॥
धर्मी अधर्मी ने धर्माधर्मी, मिनषां मांहे तीनूंई जांणो रे।
तिरयंच मांहें छें धर्मी अधर्मी, बाकी सर्व अधर्मी पिछांणो रे॥ ६५॥
जो किरतब सूं धर्माधर्मी हुवें तो, देवता पिण धर्माधर्मी होयो रे।
देवता पिण निरवद किरतब करे छें, जोग लेस्या भला हुवे सोयो रे॥ ६६॥
देवता ने एकंत अधर्मी कह्या छें, ते तो इविरत रे न्याय जांण्यो रे।
ज्यूं धर्मी अधर्मी धर्माधर्मी, विरत इविरत में तीनूं आण्यो रे॥ ६७॥
संवत अठारें वरस तयालें, आसोज विद दसम रिववारो रे।
पातर कुपातर ओलखावण काजें, जोड कीधी नाथ दुवारा मझारो रे॥ ६८॥

ढाल : ५

दुहा

आगना श्री अरिहंत नी, निरवद दांन में जांण।
सावद्य दांन नें थापवा, मूरख मांडे तांण॥ १॥
मिश्र धर्म परूपीयो, ते नही सूतर रो न्याय।
न्हाखे फद में लोक नें, कूडा कुहेतु लगाय॥ २॥
इविरत आश्रव में कही, श्री जिण मुख सूं आप।
सेव्यां सेवायां भलो जांणीयां, तीनूंई करणां पाप॥ ३॥
विरत में धर्म श्री जिण तणो, इविरत अधर्म जांण।
मिश्र मूल दीसें नही, करे अग्यांनी तांण॥ ४॥

ढाल

[अधर्मी अवनीत...]

जिण भाख्या पाप अठार, सेव्यां नही धर्म लिगार।
संका मत आंणजो ए, साचो कर जाणजो ए॥ १॥
जो थोडो घणो करो पाप, तिण थी हुवें संताप।
मिश्र नही जिण कह्यों ए, समदिष्टी सरधियों ए॥ २॥
कहे अग्यांनी एम, श्रावक नही पोखां केम।
भाजन रतनां तणो ए, नफो अति घणो ए॥ ३॥
इणरो नही जांणे न्याय, त्याने किम आंणी जे ठाय।
भगडो भालीयों ए, बेदो घालीयो ए॥ ४॥
हिवे सुणजो चतुर सुजान, श्रावक रतनां री खांण।
व्रतां कर जांणजो ए, उलटी मत तांणजो ए॥ ५॥
केइ रूंख बाग मे होय, आंब धतूरा दोय।
फल नही सारिखा ए, करजो पारिखा ए॥ ६॥
आबा सूं लिवलाय, सीचे धतूरो आय।
आसा मन अति घणी ए, अंब लेवा तणी ए॥ ७॥
पिण आंब गयो कुमलाय, धतूरो रह्यो डहिडाय।
आय ने जोवे जरे ए, नेणा नीर भरे ए॥ ८॥
इण दिष्टते जाण, श्रावक व्रत अंब समांण।
इविरत अलगी रही ए, धतूरा सम कही ए॥ ९॥

सेवारे इविरत कोय, व्रतां साह्मों जोय।
ते भूला भर्म में ए, हिंसा धर्म में ए ॥ १० ॥
इविरत सूं बंधे कर्म, तिणमें नहीं निश्चें धर्म।
तीनूं करण सारिखा ए, ते विरला पारिखा ए ॥ ११ ॥
कहे खाधां बंधइ कर्म, खवायां मिश्र धर्म।
ए भूठ चलावीयो ए, मूरख मन भावीयो ए ॥ १२ ॥
ए मिश्र नहीं साख्यात, तो कांय सरधे ए बात।
अकल नही मूढ मे ए, ते पडिया रुढ में ए ॥ १३ ॥
पोतें नहीं बुध प्रकास, लागों कुगरां रो पास।
ते निरणों नही करे ए, ते भव कूवे पडे ए ॥ १४ ॥
साधु संगत पाय, सुणें एक चित्त लगाय।
पखपात परहरें ए, खबर बेगी पडें ए ॥ १५ ॥
आणंद आदि दे जांण, श्रावक दसूंई वखांण।
त्यां पडिमा आदरी ए, ते चरचा पाधरी ए ॥ १६ ॥
जे जे कीधो छे त्याग, आंणी मन वेंराग।
ते करणी निरमली ए, करने पूरी रली ए ॥ १७ ॥
पिण बाकी रह्यों आगार, इविरत मे आंण्यो आहार।
आपणी न्यात में ए, समझो इण बात में ए ॥ १८ ॥
इविरत मे दे दातार, ते किम उतरे भव पार।
मारग नहीं मोष रो ए, ए छांदो लोक रो ए ॥ १९ ॥
दाता नें अन सुध थाय, पिण पातर इविरत में त्याय।
ते किम तारसी ए, पार उतारसी ए ॥ २० ॥
जूनो छे गूढ मिथ्यात, तिणरें किम बेसे ए बात।
कर्म घणा सही ए, समझ पडे नहीं ए ॥ २१ ॥
उपासग उवाई उपंग, वले सूयगड़ाअंग।
सूतर थी उघरी ए, इविरत अलगी करी ए ॥ २२ ॥
आगम नी दे साख, श्री वीर गया छें भाख।
भवीयण निरणो करें ए, तो भव सागर तिरे ए ॥ २३ ॥
देइ सुपातरां दांन, न करें मन अभिमांन।
संसार परत करे ए, सिव नगरी वरे ए ॥ २४ ॥
दांन सू तिरया अनंत, भाख्यो श्री भगवंत।
ते दांन न जांणीयो ए, न्याय न छांणीयो ए ॥ २५ ॥

ढाल : ६

दुहा

दस दांन भगवंते भाषीया, सूतर ठाणांग मांय।
गुण निपन्न ज्यांरा नांम छे, पिण भोलां नें खबर न कांय ॥ १ ॥
धर्म अधर्म दोय मूलगा, प्रसिध लोक में एह।
आठां रो अर्थ उंधो करे, मिश्र धर्म कहे तेह ॥ २ ॥
मिश्र धर्म परूप नें, कूडो वाद करंत।
पिण आठे अधर्म में जिण कह्या, सांभलो एक दिष्टंत ॥ ३ ॥
आंबा ने नींब रूंख नो, जूदो जूदो विसतार।
नींबभर नीबोली तेल खल, ए नींब तणो पिरवार ॥ ४ ॥
इम आठेइ दांन जांणज्यो, अधर्म तणो पिरवार।
धर्म दांन में आवें नही, श्री जिण आग्या बार ॥ ५ ॥
इतरे समभ पडे नहीं, तो सुणो जूजूआ भेद।
विवरो सुध बतावीयां, म करो क्रोध नें खेद ॥ ६ ॥

ढाल

[जाणे छे राय तूं एत]

किरपण दीन अनाथ ए, मलेछादिक त्यांरी जात ए।
रोग सोग नें आरत ध्यांन ए, त्यांने दे ते अणुकंपा दांन ए ॥ १ ॥
देवें मूलादिक जमीकंद ए, त्यांमें अनंत जीवां रा फंद ए।
इण दीधां कहें मिश्र धर्म ए, ज्यांरे उदें आयो मोह कर्म ए ॥ २ ॥
लूण आदि दे पृथवी काय ए, आपें अगन पांणी ढोले वाय ए।
देवें सस्त्र विवध प्रकार ए, ए दांन थी रूलें संसार ए ॥ ३ ॥
बंदीवांनादिक नें काज ए, त्यांनें कष्ट पड्यां दे साभ ए।
थोरी बावरी भील कसाइ नें ए, सचित्तादिक द्रव्य खवाइ नें ए ॥ ४ ॥
छोडावें गर्थ दे तांम ए, संग्रह दांन छे तिण रो नांम ए।
ए तो संसार नों उपगार ए, अरिहंत नीं आग्या बार ए ॥ ५ ॥
ग्रह करडा आया जांण ए, सुणी लागी पनोती आंण ए।
फिकर घणी मरवा तणी ए, वले कुटंब तणा जतन भणी ए ॥ ६ ॥

भय रो घालीयो देवे आंम ए, भय दांन छे तिणरो नांम ए।
ते ले छे कुपातर आय ए, तिण में धर्म किहां थी थाय ए॥ ७॥
खरच करे मूंआ नें केडे ए, जीमावे न्यात नें तेडें ए।
तीनां बारां दिना उनमांन ए, ते चोथो कालुणी दांन ए॥ ८॥
वले वरस छ मासी सराव ए, जिम जिम छे कुल मरजाद ए।
मूआ पेंली खरचे कोय ए, घणा नें करे तिरपत सोय ए॥ ९॥
आरंभ कीयां नही धर्म ए, जीमायां पिण बंधइ कर्म ए।
बुधवंत करो विचार ए, नही संवर निरजरा लिगार ए॥ १०॥
घणा नी लज्या वस थाय ए, साकडे पडीयो देवें ताय ए।
देवें सचितादिक धन धांन ए, ते पांचमो लज्या दांन ए॥ ११॥
ए सावद्य दांन साख्यात ए, ते दीयो कुपातर हाथ ए।
कोइ कहे हुवो मिश्र धर्म ए, ते निश्चे बांधें कर्म ए॥ १२॥
मूकलावो परंणी मुसाल ए, सगा ने जूआ जआ संभाल ए।
जे द्रव्य दे जस रे काम ए, गरब दांन छें तिणरो नांम ए॥ १३॥
किरतनीया वादी मल ए, रावलिया रांमत चल ए।
नट भोपा आदि वशेष ए, दांन दे त्यानें द्रव्य अनेक ए॥ १४॥
ए दांन थी वधे कर्म ए, मूरख कहे मिश्र धर्म ए।
ज्यांरी प्रतख भूठी वात ए, खोटी सरधा मूल मिथ्यात ए॥ १५॥
गणिकादिक सेवा कुशील ए, दांन दें त्यानें करवा कील ए।
ए प्रतख खोटो कांम ए, अधर्म दान छें तिणरो नांम ए॥ १६॥
सूतर अर्थ सीखाय ए, सुध मारग आंणे ठाय ए।
आपे समकत चारित एह ए, धर्म दांन छें आठमों तेह ए॥ १७॥
वले मिले सुपातर आंण ए, देवे निरदोषण द्रव्य जांण ए।
ए दान मुगत रो माग ए, दीयां दलदर जावे भाग ए॥ १८॥
छकाय मारण रो त्याग ए, कोइ पचखें आंण वेंराग ए।
अभय दान कह्यो जिणराय ए, धर्म दांन में तिलियो आय ए॥ १९॥
सचितादिक द्रव्य अनेक ए, उधारा जिम देवें वशेष ए।
पाछो लेवा रो मन ध्यांन ए, नवमों कायंति दांन ए॥ २०॥
लेणात ने जिम दे जेह ए, हांती नेहतादिक दे तेह ए।
पाछो लेवा रो एकत काम ए, कतंती दांन तिणरो नांम ए॥ २१॥
नवमे दसमे दान ए चाल ए, धुर वोहरा वालो ख्याल ए।
ग्यांनी जांणें सावद्य माय ए, तो मिश्र किहां थी थाय ए॥ २२॥

ए दस दांन तणों विचार ए, संखेप कह्यों विसतार ए।
वीर नीं आग्या में एक ए, आग्या बारे दांन अनेक ए॥२३॥
असंजती श्रावक घरे आवियो ए, निरदोषण आहार वेहरावियो ए।
तिनें दीयां एकंत पाप ए, भगोती में कह्यों जिण आप ए॥२४॥
इम सांभल करो विचार ए, आठे अधर्म तणो परिवार ए।
घना सूतरां नीं साख ए, श्री वीर गया छें भाख ए॥२५॥
धर्म अधर्म दांन छें दोय ए, तिण मिश्र म जांणो कोय ए।
जिण सरधे मिथ्याती जीव ए, मूल में नहीं समकत नींव ए॥२६॥

ढाल : ७

दुहा

केइ भेषधारी भागल थकां, त्यांरें दया नही घट मांय।
हिंसा धर्म परुपीयो, ते नही सूतर रो न्याय ॥ १ ॥
दया दया मुख सूं कहें, पिण दया री खबर न कांय।
भोला नें पाड्या भरम में, ते हणें जीव छकाय ॥ २ ॥
उवें हिंसा धर्म दिढावता, वले वोलें फिरता वेंण।
आप डूबें ओरां नें डबोवता, फूटा अभिंतर नेण ॥ ३ ॥
हिंसाधर्मी री परतीत सूं, डूबा जीव अनेक।
त्यांरी खोटी सरधा परगट करूं, ते सुणजों आंण ववेक ॥ ४ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिरा आगना मे]

श्रावक नें मांहोमांहि छकाय खवावें, वले छकाय मारे नें जीमावे।
ए जीव हिंसा रो राहज खोटो, तिण मांहें धर्म अनारज बतावे।
यां हिंसा धर्म्यां रो निरणो कीजो* ॥ १ ॥
छ काय जीवां रो तो धमसांण कीधो, जीमाय कीयो उणनें कर्मा सूं भारी।
दोनूं कांनी जोयां दीसें दिवालो, इण मांहें धर्म कहे भेषधारी ॥ २ ॥
छ काय जीवां नें खाधां खवायां, अरिहंत भगवंत पाप बतावें।
ए वचन उथापें ने मिश्र परूपे, तिण दुष्टी रे दिल दया न आवें ॥ ३ ॥
रांकां ने मार धींगां नें पोख्यां, ए तो बात दीसे घणी गेंरी।
तिण मांहें दुष्टी धर्म बतावे, ते रांक जीवा रा उठ्या वेंरी ॥ ४ ॥
पाछिल भव पाप उपाया तिण सूं, ते हुआ एकेंद्री पुन पखारी।
त्यां रांक जीवां रे उसभ उदें सूं, लोकां सहित लागू उठ्या भेषधारी ॥ ५ ॥
कुपातर दांन में पुन परूपें, तिणसूं लोक जीवां ने हणें वसेष।
कुगुर एहवा चाला चलावें, ते भिष्ट हुआ लेइ साधु रो भेष ॥ ६ ॥
कोइ पूछें तो कहे मून साझां म्हे, पिण सांनी कर जीव मरावण लागा।
हेठलो जोबरो खेंच अलगा हुवें, ते विरत विहुणा कहीजे नागा ॥ ७ ॥
कोइ माली रे ओडो भूखो आय उभों, तिणनें मूला गाजर धपाय खवावें।
ए एकंत पाप उघाडो दीसें, तिणमेंइ मूरख धर्म बतावे ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ढाल : ८

दुहा

जिण आगना बारली किरिया करें, तिहां जीव तणी हुवें घात।
जे हिंसाधर्मी छें जीवडा, तिणरो पाप न गिणें तिलमात ॥ १ ॥
जीव मारें छें छ काय रा, तिणरो पाप न गिणे लिगार।
त्यांरी खोटी सरधा परगट करूं, ते सुणजो विसतार ॥ २ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

अति ही दुष्टी हुवें हिंसाधर्मी, ते तो हिंसा धर्म दिढाव रे।
दया धर्म तिणसूं भिडकावें, दुरगति मांहें पोंहचावे रे।
हिंसा धर्मी रो संग न कीजें* ॥ १ ॥
साध नें तपावें अगन सूं अग्यांनी, ते तो पाप अठारां में पेंहलो रे।
तिण मांहें पुन परूपें अग्यांनी, तिणनें पिंडत कहीजें के गेंहलो रे ॥ हिं० २ ॥
साधु नें तपायां में पुन परूपें, ते तो मूढ मिथ्याती छे पूरो रे।
अगन री हिंसा में पाप न जांणें, ते मत निश्चेंइ कूडो रे ॥ ३ ॥
सभाय स्तवन कहें मुख उघाडे, जब वाउ जीवां री हुवें घातो रे।
केइ कहें वाउकाय रो पाप न लागें, आ उंध मती री छें बातो रे ॥ ४ ॥
श्रावक नें मांहोमां छ काय खवावें, छ काय मारे नें जीमावें रे।
ए प्रतष पाप उघाडो दीसें, तिणमें कुगुर धर्म बतावें रे ॥ ५ ॥
साधां नें वांदण जाता मारग में, तस थावर री हुवें घातो रे।
ज्यां सूं जीव मूआ ज्यानें पाप न सरधें, त्यांरा घट मांहें घोर मिथ्यातो रे ॥ ६ ॥
विण उपीयोगे मारग मांहे चालें, जब मरें जीव छ कायो रे।
ए प्रतष पाप उघाडो दीसें, पिण विकलां नें खबर न कांयो रे ॥ ७ ॥
विण उपीयोगें मारग मांहें चालें, कदे न मरें जीव किण बारो रे।
तो पिण वीर कह्यों छें तिण नें, छ काय रो मारणहारो रे ॥ ८ ॥
जो जीव मूआ त्यांरो पाप न लागें, तो जोय जोय नें कुण हालें रे।
निसंक थकां छ काय जीवां नें, मरदता मरदता चाले रे ॥ ९ ॥
मोटा मोटा राजा गया वीर वांदण नें, चउरंगणी सेन्या ले साथो रे।
त्यां आरंभ कीधा अनेक प्रकारे, तिहां हुइ छ काय री घातो रे ॥ १० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

कोइ कहें जीव मूआ रो पाप न लागो, ते तो उठी जठा थी भूठी रे।
ए प्रतष पाप उघाडो न सूझे, त्यांरी हीया निलाड री फूटी रे॥ ११ ॥
जो वांदण जावें ईया जोवतां, तो जीवां री हिसा न थायो रे।
विण जोयां चालें तो प्रतष हिंसा, तिण सूं निश्चे लागे आयो रे॥ १२ ॥
कूंडापंथी रो आचार कूंडापंथी सूं, चोडे लोकां में कहणी न आवें रे।
एको दुको मिले कोइ आप सारीषो, तिण आगे कांयक बतावें रे॥ १३ ॥
उणने भरमाय भरमाय कूंडे वेसावें, माठी माठी वसत खवावें रे।
पछें धीरां धीरां ओ पिण इसडो हुवें, जब ओ पिण कूंडा धर्म दिढावें रे॥ १४ ॥
ज्यूं जीव खवायां में पुन कहे त्यांसूं, चोडे लोकां में कहणी न आवें रे।
एको दूको कोइ आय मिलें जब, थोडोसों रहस्य बतावें रे॥ १५ ॥
इम भोलां नें भरमाय मत मांहे घालें, पछे हिंसा में धर्म सीखावें रे।
पछें ते पिण त्यां सा रीषो होय जावें, जब जीव मारतां संका न आवें रे॥ १६ ॥
कूंडाधर्मी कूंडे बेंस जीमें जब, मन रलीयायत थायो रे।
ज्यूं हिंसाधर्मी हरखें जीव खवायां, पुन नीपनो जांणें तिण माह्यों रे॥ १७ ॥
जीव खवाया में पुन जांणे छे, त्यांरी दया घट मांहीं सूं न्हाठी रे।
वले छ काय हणें जीमायां धर्म जांणें, एहवी कुगुरां दीधीं मति माठी रे॥ १८ ॥
जीव खवायां पुन कहे छें, पिण पूछ्यां पलटे वांणो रे।
ते छांनें छांनें सरधा सीखावे, ते तो जार गरभ जिम जांणों रे॥ १९ ॥
जमीकंद मे जीव अनंता, ए भगवंत वायक जांणी रे।
मूला खवायां में पुन परूपें, आ कुगुरां री वांणी रे॥ २० ॥
कर्म घणा नें बोहल संसारी, आ सरधा साची कर मांनी रे।
कुगुर तो वीद वण्या नरक जावा, विकलां नें साथे लिया जांणी रे॥ २१ ॥
ढाका बंगाला ने कांगरु देस रा, वीद्या मंतर धुतारो रे।
इण सरधा रो इचरज आवें, ओ धर्म सीखायो कें धारो रे॥ २२ ॥
खरच आगरणी ने भात व रोटी, सगा सेंण नेहत जीमायो रे।
इण लूंटा लूंट में पुन परूपें, ओ कुगुरां कूड चलायो रे॥ २३ ॥
आ सरधा घराए लोकां नें, हुवा नरक अधिकारी रे।
वडा उंट जिम आगें चालें, विकलां लारें बांधी कतारी रे॥ २४ ॥
छ काया रा तो पीहर वाजें, सांग साधां रो धरीयो रे।
जीव खवायां में पुन परूपें, ओ पीहर पूरो पडीयो रे॥ २५ ॥
गृहस्थ ने मांहोमां छ काय खवावे, ते पाप थांनक छें पेंहलो रे।
तिण मांहें मूरख धर्म बतावें, ते पिंडत कहीजें कें गेहलो रें॥ २६ ॥

संवत अठारें नें वरस तयाले, आसोज विद आठम सुकरवारो रे।
हिसाधर्मी ओलखावण काजें, जोड कीधी नाथ दुवारा मझारो रे॥ २७॥

●

ढाल : ९

दुहा

जिण आगम मांहे इम कह्यों, श्री जिण मुख सूं आप।
अर्थ अनर्थ धर्म कारणें, जीव हण्या छें पाप॥ १॥
केइ अग्यांनी इम कहें, धर्म काजें हणें जीव कोय।
चोखा परिणांमां जीव मारीयां, त्यांरो जाबक पाप न होय॥ २॥
जीव मारे छे उदीर नें, तिणरा चोखा कहे परिणांम।
ते ववेक विकल सुध बुध विनां, वले जेंनी धरावें नांम॥ ३॥
साधा नें वादण जातां ने वेहरावतां, तिहां जीव तणी हुवें घात।
तिणरों कहें पाप लागों नही, एहवी उंध मत्यां री छें बात॥ ४॥
इण विध करें छें परूपणा, ते विकलां मांने लीधी बात।
त्यारी खोटी सरधा परगट करूं, ते सुणजो विख्यात॥ ५॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

कोइ गाडी जोतर साधां नें वांदण, चोमासा में सो कोसां जावें रे।
जब लटां गजायां ने कीडी मकोडा, मारग मांहें बोहत चिंथावें रे।
यां हिंसा धर्म्या रो संग न कीजें* ॥ १॥
वले नीलो आलो नीलण फूलण चोमासें, ते पिण जीव चीथ्या जावे रे।
वले नदीयां अनेक उतरे मारग में, ठांम ठांम रसोई नीपजावें रे॥ यां० २॥
इत्यादिक हिंसा कीधी अनेक प्रकारें, तिण रो पाप लागों कहें नांही रे।
इण विध हिंसा माहे धर्म थापे, ते विकलां री परषदा मांहीं रे॥ ३॥
कहे साधां ने वांदण चाल्यो जठाथी, सगलोई धर्म कारज जांणो रे।
विचें जीव मूआ त्यांरो पाप न लागें, आ पाषंडीयां री वांणो रे॥ ४॥
पाणी री झीक पडे तिण कालें, कोइ वरसतां बांदण जावें रे।
पाणी रा जीव मूआ छे त्यांरो, पाषंडी कहे पाप न थावें रे॥ ५॥
वले उघाडे मुख वातां करतां चालें, सगपण सोदा करे मारग मांही रे।
इत्यादिक सावद्य करे छे वांदण जातां, तिणरो पिण पाप कहे छे नांही रे॥ ६॥
इण विध जीव मूआं रो पाप न जांणें, तिण रो नियमा निश्चें मत कूडो रे।
ते भूठा थका जेंनी नांम धरावे, पिण जिण मारग थी दूरो रे॥ ७॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

केइ ईर्यां जोवतां वांदण जावें, केइ जीवां नें मरदता जावें रे।
केइ गाडें घोडे रथ बेंसनें जावें, कहें किणनेंइ पाप न थावें रे॥ ८॥
इण लेखें तो इर्या जोवण वाला नें, लाभ हुवो नहीं कांई रे।
हिवें इसडो हिंसा धर्म्या री सरधा रा, जाब धारों मन मांहीं रे॥ ९॥
सामायक संवर पोषा में, साधां नें वांदण जावें रे।
जब जीव तणी कोइ घात हुवें तो, ते प्राछित ले सुध थावें रे॥ १०॥
सामायक मांहें वांदण जातां हिंसा हुवें, तिणरो पाप लागां प्राछित आवें रे।
तो ओर वांदण जातां हिंसा हुवें छें, तिण ने पाप क्यूं नही थावें रे॥ ११॥
साधां नें वांदण जातां मारग में, करें जिसा फल पावें रे।
सावद्य निरवद तीनूं जोगां सूं, पुन पाप न्यारा न्यारा थावें रे॥ १२॥
वांदण जातां मन जोग सुध हुवें तो, एकंत निरजरा थायो रे।
वचन नें काया असुध हुवें तो, तिण सूं पाप लागें छें आयो रे॥ १३॥
कदे काया नें वचन दोनूं जोग सुध हुवें, त्यांसूं पिण हुवें निरजरा धर्मो रे।
एक मन रो जोग असुध रह्यो बाकी, तिण सूं लागें पाप कर्मो रे॥ १४॥
कदे तीनूंइ जोग सुध हुवें तो, पाप न लागें लिगारो रे।
इण विध वांदण जातां मारग में, तीनूं जोगां रो व्यापार न्यारो रे॥ १५॥
उसभ जोगां सूं पाप सुभ जोगां सूं पुन, तिण मांहें म जांणों फेरो रे।
सावद्य निरवद रा फल जूवा जूवा छें, दूध पांणी ज्यूं जांणो निवेडो रे॥ १६॥
पछें भाव सहीत तिण साधां नें वांद्या, करमां री कोड खपावें रे।
उतकष्टो पद तीर्थंकर पांमें, मुगत में बेगो सिधावें रे॥ १७॥
साधां नें वांदण जावण आवण रो, ए पिण दोनूं किरतब न्यारो रे।
वले तीजो किरतब वंदणा रो न्यारो, यां तीनां रो सुणों विसतारो रे॥ १८॥
साधां नें वांदण जावें ते वंदणा रे कारण, पाछो घर रे कारण घरे आवें रे।
साधां नें वंदणा कीधी तिखुतो करनें, ए तीनूं करणी भेली न थावें रे॥ १९॥
कोइ उघाडे मुख बोल साधां नें वेंहरावें, जब मारें छें वाउकायो रे।
ते वाउकाय मूआं रो कहें पाप न लागें, इम बोलें पाषंडी वायो रे॥ २०॥
कोइ साधां नें असणांदिक आहार वेंहरावें, ते बोलें छें मुख उघाडे रे।
काया रो जोग तो निरवद तिणरो, वचन सूं वाउकाय नें मारें रे॥ २१॥
उघाडें मुख बोलें वाउकाय मार्‍यां, तिणरो लागें पाप कर्मो रे।
काया रा जोग सूं जेंणां करनें वेंहरायों, तिणरो छें एकंत धर्मो रे॥ २२॥
काया रा जोग सूं साधां नें वेंहरावें, जो काया सूं हुवें जीव घातो रे।
जब तो साधु तिण रा हाथां सूं, वेंहरें नही तिल मातो रे॥ २३॥

काया रा जोग सूं करतो अजेंणा, साधां नें असणादिक देवे रे।
फूंक देवे करे झटको फटको, जब तो साधु मूल न लेवे रे॥ २४॥
मन वचन तणा जोग दोनूं असुध, एक काया तणों जोग चोखो रे।
तिणरा हाथां सूं साध वेहरें तो, मूल नहीं छे दोखो रे॥ २५॥
साधु वेंहरें काया रो सुध जोग हुवें तो, जब वेंहरयां वेंहरायां धर्म निसंक धर्मी रे।
मन वचन रा जोग असुध हुवें तो, तिणरो तिणनें इज लागें कर्मो रे॥ २६॥
संवत अठारें नें वरस तयांलें, आसोज सुद चवदस सनीसर वारो रे।
हिंसाधर्मी ओलखावण काजे, जोड कीधी कोठारयां मझारो रे॥ २७॥

●

ढाल : १०

दुहा

केइ साधु बाजें लोक में, त्यांरी सरधा अतंत अजोग।
ते जयातय परगट करूं, ते सांभलजो सहू लोग॥ १ ॥
जीव मारे नें जीव बचावीयां, कहें धर्म नें पाप।
ए कर्म उदें पंथ काढ नें, कीवी मिश्र री थाप॥ २ ॥
इम मिश्र कहें छें तेहनें, न्याय निरणों नहीं घट माय।
वले अंत्र नहीं त्यारें बोलीयें, प्रश्न पूछ्यां तुरंत फिर जाय॥ ३ ॥
त्यांरी सरधा छें मिल्ती लोक सूं, जिण मारग थी विपरीत।
त्यांरी एक धारा वांणी नहीं, बोली मांहें फूट फजीत॥ ४ ॥
सरधा परमांणें बोलें नही, बोलें आवें ज्यूं मन दाय।
हिवें सरधा कहूं छूं तेहनीं, ते सुणजो चितल्याय॥ ५ ॥

ढाल

[एक चोर चोरें धन पार को०]

काचो पांणी पावें अणुकम्पा आंण नें, तिण रो कहें छें रे मिश्र धर्म ने पाप।
धर्म अणुकम्पा रो पाप पांणी तणों, इण विवरें करें मिश्र री थाप।
भव जीवां तुम्हे मिश्र म मांनजों *॥ १ ॥

जो काचो पांणी पायां मिश्र धर्म हुवें, ते पांणी खोस्यां रे तो पिण मिश्र धर्म होय।
अणुकम्पा आंणे पांणी रा जीवां तणी, पाप लागो रे अंतराय तणों सोय॥ भ० २॥
कोइ अणुकम्पा आंण पंखिया तणी, मुख आगें रे न्हाखें एकंद्री आंण।
कोइ अणुकम्पा आंण एकंद्री तणी, उरा लेई रे मेलें एकंत जांण॥ ३ ॥
पंखियां री अणुकम्पा आंण नें, एकंद्री न्हाख्यां रे धर्म नें पाप होय।
तो एकंद्री नी पिण अणुकम्पा आंण नें, पंखी आगा सूं रे उरा लीयां मिश्र जोय॥ ४ ॥
जमीकंद आदि देंगण आलोल नें, दांन देवें रे अणुकम्पा आंण।
कोइ अणुकम्पा आंण जमीकंद री, खोस लेवें रे खातां आगा सूं तांण॥ ५ ॥
अणुकम्पा आंण जमीकंदादिक दीयां, तिण नें होसी रे धर्म नें पाप दोय।
तो जमीकंदादिक री अणुकम्पा आंण नें, खोस लीयां रे दोनूं क्यूं नहीं होय॥ ६ ॥
कोइ अणुकम्पा आंण रांक गरीब री, छ ही काया रे हणनें देवें सतुकार।
कोइ अणुकम्पा आंण छकाय री, वरज राखें रे कहें तूं मत दें लिगार॥ ७ ॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

छ ही काय हण रांकां नें पोखीयां, तिण नें होसी रे धर्म नें पाप दोय।
तो अंतराय दे राखी छ काय नें, तिण नें होसी रे धर्म नें पाप दोय॥ ८॥
खरच व रोटी आदि जीमण करे, छ काय हण नें रें पोपें घणां जीवा नें ताय।
तिण नें धर्म ने पाप दोनूं कहे, पाप आरंभ रो रे धर्म पोष्यां रो थाय॥ ९॥
छ काय हणे नें न्यात पोषीयां, तिण ने होसी रे धर्म नें पाप दोय।
तो अंतराय दें राखे छ काय नें, मिण ने पिण रे धर्म नें पाप होय॥ १०॥
खणावें कूवा बाव तलाव ने, तिण नें पिण रे कहे मिश्र धर्म।
घणा रे साता हुइ रो धर्म हुवों कहे, हिंसा हुइ रे तिण रो लागो कहे पाप कर्म॥ ११॥
तो कूवा तलाव खणावे तेह ने, बरजें राख्यां रे हुवे मिश्र धर्म।
घणा जीव वच्यां रो धर्म हुवे, अंतराय दीधी रे तिणरो लागे पाप कर्म॥ १२॥
जिण जिण किरतब मे मिश्र कहे, तिण किरतब नें रे बरज्यां पिण मिश्र जोय।
जो अतराय तणों पाप लागसी, तो जीव बचीयां रे तिणरो धर्म क्यू न होय॥१३॥
धर्म पाप हुवे एक करणी कीयां, ते करणी रे करायां पिण दोनूं होय।
ते बरज राख्यां पिण दोनूं नीपजें, ते पिण निरणो रे तिणरे नही कोय॥ १४॥
पाप छूटा रे छूटें छे धर्म तेहनों, धर्म छटा रे छूटे छे तिण रो पाप।
इसडी दोघड लागी मिश्र धर्म मे, तिण मिश्र ने रे कीधां बोहत संताप॥ १५॥
दान दीधां धर्म पाप दोनू हुवे, ते तो देसी रे जब होसी पाप धर्म।
तिण में सदा इविरत तिण रे पापी री, तिण सू बधे रे समें समें सात कर्म॥ १६॥
असजती इविरती जीव तेहने, दांन दीधां रे होसी एकंत पाप।
भगोती रे सूत खध आठ में, छठें उद्दे सें रे कह्यो श्री जिण आप॥ १७॥
तिण दांन ने साधां जावक छोडीयो, देवे नही रे दरावें नही कोय।
भलो पिण नही जाणे तिण दान ने, तिण मांहे रे धर्म किहाथी होय॥ १८॥
इण दांन तणी परससा करे, तिण ने कह्यो रे छ काय रो घाती वीर।
सूयगडा अग अधेन इग्यार में, तिण मांहे रे साधु किम घाले सीर॥ १९॥
तिण दान नें परसंसे अग्यांनी थकां, तिण माहे रे कहे धर्म ने पाप।
श्री वीर वचन उथाप ने, खोटी कीधी रे निश्चे मिश्र री थाप॥ २०॥
मिश्र करणी माहे लेस्या किसी, ध्यांन किसो रे किसा वरते अधवसाय।
परिणांम मिश्र मे बरतें केहवा, इम पूछीजे रे मिश्रवालां नें ताय॥ २१॥
लेस्या ध्यान अधवसाय परिणांम ते, ए तो च्यांरू रे भला के भूंडा जांण।
धर्म भला माहे पाप भूंडा मभे, मिश्र नही रे तिणरी करजो पिछांण॥ २२॥
इम पूछ्या रो जाव न उपजे, जब उ जांणे रे पिडताइ में पडती धूड।
तिण सूं आल पंपाल बकें घणो, मिश्र थापण ने रे वोलें अनेक विध कूड॥ २३॥

हूं कहि कहि नें कितरो कहूं, घणी खोटी रे सरधा मिश्र री जांण।
भारी कर्मां जीवां त्यां आदरी, कर्मां वस रे बूडें कर कर तांण ॥ २४ ॥

ढाल : ११

दुहा

केइ भेषधारयां री सरघा बुरी, तिण सूं कर रह्या मूंढ विलाप ।
त्यांरे उसभ उदेंरा जोग सूं, किघी मिश्र री थाप ॥ १ ॥
त्यां गाला मांसूं गोला करे, फेंक्या लोकां मांय ।
ते मिश्र कहे छें मूंन में, ते पिण समझ न कांय ॥ २ ॥
कहें म्हें करणों न करणो कवां नहीं, आगना पिण न द्यां कोय ।
ते करणी ग्रहस्थ करें, तिण में पाप धर्म हुवें दोय ॥ ३ ॥
जो धर्म हुवे तो द्यां आगना, पाप हुवें तो वरजां तांम ।
पाप धर्म दोनूं हुवें, तठें मून करां तिण ठांम ॥ ४ ॥
इण विध करें छें परूपणा, मिश्र कहें छें निसंक ।
त्यांनें त्यां सारिखा आए मिल्या, त्यांरें लागा मिथ्यात रा डंक ॥ ५ ॥
कहिवा नें मिश्र मुखसूं कहे, त्यांनें पूछ्यां रा नावें जाब ।
जब बंध नही त्यांरें बोलीयें, फिर जावें तुरत सताब ॥ ६ ॥
पाप धर्म रो मिश्र कहें मून में, तिणरी सरधा में घोर अंधार ।
हिवें किण किण ठिकांणें मुन छें, ते सुणजों विसतार ॥ ७ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

कोइ धुर नें दांन दें वांवी सारें, ते पिण निनांण नें काजें रे ।
त्यांनें देतां लेतां साधु निजरा देखे तो, बोलें नही मून सामें रें ।
मून में मिश्र कहें छें अग्यांनी* ॥ १ ॥
कोइ साधु देखतां करे सगाई, तिहां साधु तो रहे मून साझो रे ।
जो मून साझे तिहां मिश्र होसी तो, इणरेइ मिश्र छें ताजो रे ॥ मू० २ ॥
कोइ थोरी बावरी ने ससतर देवें, ते साधु देखे तो साझें मूनो रे ।
जो मून में मिश्र होसी तो इणरेंइ मिश्र छें, यो किम रहसी निमूनो रे ॥ ३ ॥
कोइ धांन पीसण ने देवें घरटी, वले उखल मूसल देवें कोयो रे ।
तो साधु देखें तो मून करें छें, तो इणरें पिण मिश्र होयो रे ॥ ४ ॥
कोइ घास काटण नें देवे दांतरलो, कोइ विरख काटण नें देवें कुहारो रे ।
जो साध मून साझ्यां मिश्र हुवें तो, इणरेइ मिश्र छें तयारो रे ॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

साध कसी कूदालादिक देतां देखें तो, मून साझें निरदोषों रे।
जो मून साझें तिहां मिश्र होसी तो, इणरेंइ मिश्र छें चोखों रे॥ ६॥
ससतर अनेक साध देतां देखें तो, साध न बोलें तिण ठोडें रे।
जो मून साझें तिहां मिश्र होसी तो, इणरेंइ मिश्र छें चोडें रे॥ ७॥
कोइ होको पीवण नें देवें तमाखू, कोइ अगन पांणी घालें तांमो रे।
कोइ भांग तिजारो घोटी पावें, साध रे मून सगली ठांमो रे॥ ८॥
घांणी अरटको सीटों खडवा, वले गाडा हल खडवा काजें रे।
त्यांनें बलद कोइ मांग्या देवें, ते साध देखें तो मून साझें रे॥ ९॥
कोइ रोटी करण ने चूलो देवें, कोइ छांणा देवें बालण काजें रे।
कोइ छ काय हणी नें कर दें रसोड, कोइ साध देखे तो मून साझें रे॥ १०॥
कोइ अणगल पांणी रात रो पावें, सूलीयों धान खवावे रांधी रे।
कोइ भडभूंजा नें धांन देवें सूलीयो, ते साध देखें नें मून सांधी रे॥ ११॥
कोइ गेंहणा कपडा फूल पेंहरावें, करावें मरदन पीठी रे।
वले काचा पांणी थी सिनांन करावें, ते साध देखे तो मून मीठी रे॥ १२॥
कोइ सोर सीसों सिकारी नें देवें, मछीगर नें सूत जाली काजें रे।
कसाइ नें नांणों दें जीव ल्यावण नें, ते साध देखे तो मून साझें रे॥ १३॥
कोइ अर्थ अनर्थ हिंसक जीव पोपें, कोइ पांणी काढण नें देवें नांणो रे।
कोइ चोर नें धांन दें चोरी करावण, साध रे तो अठेंइ मून जांणो रे॥ १४॥
कोइ सावण करण नें तेल खरीदें, कोइ लोहडो देवें ससतर काजों रे।
कोइ लोह धवण नें धवण देवें छें, तिहां मून करें ते मुनीराजो रे॥ १५॥
कोइ हाट हवेली आदि व्याह थापणा रा, मोहरत देवें विवध प्रकारो रे।
इसडो वरतमांन साधु देखे तो, तिहां साधु न बोलें लिगारो रे॥ १६॥
कोइ लूण पांणी देवें अणुकंपा आंणे, वले घालें अगन नें वायो रे।
वले वनसपती तस काय देता देखे, मून करें ते मुनीरायो रे॥ १७॥
कोइ सचित देवें बंदीवांनादिक नें, डाकोतादिक नें देवें भय काजें रे।
वले खरच करें छें मूआ नें केडें, साधु तो सगलेई मून साझें रे॥ १८॥
लज्या रो घाल्यों देवें मलेछादिक नें, रावलीयादिक नें देवे मांन आंणो रे।
कोइ देवें उधारों कोइ पाछो देवें, तिहां साधु रे मूंन पिछांणो रे॥ १९॥
कुसील सेवण नें देवें गणकादिक नें, ते साध देखें तो मूंन साझें रे।
जो मूंन में मिश्र तो इणरेंइ मिश्र छे, इणनें मिश्र कहितां कांय लाजें रे॥ २०॥
सुरियाभ देवता नाटक करण री, आग्या मांगी भगवंत पासो रे।
जब भगवंत मून साझी नही बोल्या, त्यां एकंत जांण तमासो रे॥ २१॥

जमाली आग्या मांगी विहार करण री, वीर समीपे आंणों रे।
कांई कारण देखी भगवंत नही बोल्या, पिण नही जांण्यो मिश्र ठिकांणो रे॥२२॥
शिष्य होण रो कह्यो भगवंत नें गोशालो, भगवंत कीधी मून तांमो रे।
अजोग जाणी वीर आरे न कीधो, पिण मिश्र न जांण्यों तिण ठांमो रे॥२३॥
चित्तजी विनती कीधी केशी कुमार नें, आप सेवीया नगरी पधारो रे।
नहीं जांण रा परिणांम तिण सूं न वोल्या, पिण मिश्र न जांण्यों लिगारो रे॥२४॥
इत्यादिक मून रा बोल अनेक छें, ते कहितां न आवें पारो रे।
जो मून में मिश्र तो सगलें मिश्र छें, कहि देणो एकण धारो रे॥२५॥
किणहीक मून में मिश्र कहि दें, किणही मून मांहे कहें पापो रे।
जो सगलेंई मिश्र कहितां लाजें, तो उड गई मिश्र री थापो रे॥२६॥
जे मून मे मिश्र कहे छें चोडे, ते पाप कहसी किण लेखें रे।
जो पाप कहें तो मिश्र उठें छें, जब किसी सरधा साह्मों देखें रे॥२७॥
जो सगले मिश्र कह्यां लोक न मानें, होय जावें जावक फितूरो रे।
जब किण ही मून मांहे पाप पिण कहि दे, तो पडी मिश्र मांहें धुडो रे॥२८॥
यो मिश्र अणहुंतों चलायो अग्यांनी, ते सूतर मांहें कठेय न चाल्यो रे।
भारी कर्मां जीवां ने डबोवण, धोचो अणहुंतो घाल्यो रे॥२९॥
देव गुर तो मिश्र न होवें, तो धर्म मिश्र किण लेखें रे।
अभिन्तर आंख हीया री फूटी, ते सूतर सांह्मो न देखें रे॥३०॥
मून में मिश्र कहे छ अग्यांनी, ते उठी जठाथी भूठी रे।
एक करणी मे पाप धर्म दोनूं कहे त्यांरी, हीया निलाड री फूटी रे॥३१॥
मून मे पाप धर्म दोनूं कहि कहि, घणां लोकां नें विगोया रे।
वले सिष सिषणी पोता रा हुता, त्यांने तो जावक बोया रे॥३२॥
मून मे मिश्र री करें परूपणा, ते खोटों घणों छें दिल को रे।
ते श्री जिण आगना उलंघे अग्यांनी, ते थोथो जमायो खिलको रे॥३३॥
अधवसाय परिणांम ध्यांन नें लेस्या, च्यारूं भला के भूंडा जांणों रे।
भला में धर्म भूंडा में अधर्म, मिण मिश्र रो नही छे ठिकांणो रे॥३४॥
विरत मांहे धर्म इविरत माहें अधर्म, पिण मिश्र रो नही छे ठिकांणो रे।
इविरत सेवायां एकंत अधर्म, तिण माहे शंका मत आंणो रे॥३५॥
पाप अठारे सेव्यां एकंत पाप, ते सेव्यां नहीं धर्म होयो रे।
पाप धर्म री करणी छे न्यारी, पिण मिश्र करणी नही कोयो रे॥३६॥
इण मिश्र रो मुंहमाथो नहीं दीसें, ओ निश्चें अणहुंतो गोलो रे।
ते जिण मारग सूं चोडे भूला, त्यां लीयों मिश्र रो ओलो रे॥३७॥

कुपातर दांन ते एकंत सावद्य, तिणमें श्री जिण आगन्यां नांहीं रे।
अंतराय पड़ें तिण सूं मूनज साझें, पिण धर्म नही तिण मांहीं रे ॥ ३८ ॥
कुपातर दांन नें साधां त्रिविधे त्याग्यों, तिणनें मन करे भलोई न जांणें रे।
तिण दांन में धर्म परूपें, ते जिण धर्म केम पिछांणें रे ॥ ३९ ॥
सामायक पोषां मांहें श्रावक, साध विनां ओरां नें देवा त्यागो रे।
जो उ ओर कनें सांनी करे दिरावें, तो सामायक पोषों भागों रे ॥ ४० ॥
जिण दांन सूं भागें समायक पोषों, वले साधपणों पिण भागें रे।
एहवो सावद्य दांन छे खोटो, तिणरा आछा फल किम लागें रे ॥ ४१ ॥
अन पुने पाण पुने कह्यों सूतर में, लेंण सेंण वसतर पुन चाल्यो रे।
ते पातर सूं पुन कुपातर सूं पाप, ओ घोचों मिश्र रो काई घाल्यो रे ॥ ४२ ॥
अन मिश्रे पाण मिश्रे न चाल्यो, लेंण सेंण वसतर मिश्र नही रे।
मिश्र धर्म भगवंते न भाख्यों, किणही सूतर रे मांही रे ॥ ४३ ॥
दस दांन कह्या ठाणांग मांहें, गुण जिसाइ त्यांरा नांमो रे।
आठां दानां रा अर्थ उंधा करे नें, मिश्र ले उठ्या तांमो रे ॥ ४४ ॥
कहे धर्म अधर्म दांन कर दीया न्यारा, आठ दांना रो विवरो नांही रे।
तिण सूं मिश्र कहां धर्म अधर्म रो, आठूंइ दांन रे मांही रे ॥ ४५ ॥
इण विध मिश्र कहें छें अग्यांनी, ते गाढो रह्या मत झाली रे।
साची बात सूतर री न मांनें, त्यांरें आडी छें कर्म रूप राली रे ॥ ४६ ॥
नव पदारथ मांहे जीव अजीव, न्यारा न्यारा बतावे रे।
इण सरधा रे लेखें सात पदारथ, जीव अजीव रों मिश्र थावें रे ॥ ४७ ॥
नव पदारथ में धुर सूं जीव अजीव, बाकी गुण जिसा नांम सातोंइ रे।
जो आठ दांन मांहें मिश्र होसी तो, ए पिण सातोंई मिश्र होइ रे ॥ ४८ ॥
जो सात पदारथ मांहें मिश्र न थापें, तो दांन मिश्र नहीं आठो रे।
उठें जीव अजीव अठें धर्म अधर्म, बाकी समचे सूतर रो पाठो रे ॥ ४९ ॥
पुनादिक सात पदारथ मांहें, जीव अजीव रो भेल नांही रे।
ज्यूं भेला नहीं छें धर्म अधर्म, आठूंइ दांन रे मांहीं रे ॥ ५० ॥
दांन साला मंडावें लूंण पांणी अगन री, वाउ वनसपति ने तसकायो रे।
आय मांगें त्यांने दांन दें दगचाले, खावा पीवा भोगववा ताह्यो रे ॥ ५१ ॥
छ काय रा जीवां नें जीवां मारी नें, मन मांनें त्यांनें खवावें रे।
अथवा हाथां सूं छ काय जीवां रो, कहि कहि नें गटको करावें रे ॥ ५२ ॥
जो पाप होसी तो सगलां नें पाप, मिश्र होसी तो सगलां नें मिश्रो रे।
जो किणही एक बोल में पाप कहें तो, मिश्र होय गयो फिसरो रे ॥ ५३ ॥

जीव ने जीव खवावण नें देवें, वले हाथां सूं मार खवावें रे।
ए प्रतष पाप उघाडो दीसें, तिणमें मिश्र किहाथी थावें रे॥ ५४ ॥
जीव खवाया में मिश्र परूपें, ते सरधा घणी छे खोटी रे।
इण सरधा सूं नरक गया अनता, त्यां लीधी छे अटवी मोटी रे॥ ५५ ॥
इण मिश्र मे ओगुण अनेक कह्या जिण, ते पूरा कहणी न आवें रे।
इम साभल उतम नरनारी, मिश्र रे संग न जावें रे॥ ५६ ॥

ढाल : १२

दुहा

जिण शासण में जिण आगन्यां बडी, ते ओलखे बुधवांन ।
ज्यां जिण आगन्यां ओलखी नहीं, ते जीव विकल समांन ॥ १ ॥
दोय करणी संसार में, सावद्य निरवद जांण ।
निरवद करणी में जिण आगन्यां, तिणसूं पामें पद निरवाण ॥ २ ॥
सावद्य करणी संसार नी, तिणमें श्री जिण आगन्यां नांही ।
संसार वधें छें तेहथी, धर्म नही तिण मांही ॥ ३ ॥
हिवें किहां किहां छें जिण आगन्यां, किहां किहां आगन्यां नांहिं ।
बुधवंत करे विचारणा, निरणों करों मन मांहिं ॥ ४ ॥

ढाल

कोइ करें पचखांण नोकारसी, तिणरी आगन्यां द्यो जिण आप हो ।
कोइ दांन दें लाखां संसार में, पूछ्यां आप रहो चुपचाप हो ।
हूं बलिहारी हो श्री जिणजी री आगन्यां* ॥ १ ॥
जिण आगन्यां सहीत नोकारसी, कीधां कटें सात आठ कर्म हो ।
कोइ दांन दें लाखां संसार में, ते तो आपरो भाख्यों नही धर्म हो ॥ हूं० २ ॥
अंतर मोहरत त्यागें एक भूंगडो, तिणरी आग्या द्यो थे जिणराज हो ।
कोइ जीव छुडावें लाखां दांम दें, तठे आप रहो मूंन साफ हो ॥ ३ ॥
अंतर मोहरत त्यागें एक भूंगडों, ते तो आपरों सीखायो छें धर्म हो ।
तिण सूं कर्म कटें तिण जीव रे, उतकष्टा पामें सुख परम हो ॥ ४ ॥
कोइ जीव छुडावें लाखां दांम दे, ते तो आपरो सीखायो नही धर्म हो ।
ओ तो उपगार संसार नों, तिणसूं कटता न जाण्या आप कर्म हो ॥ ५ ॥
कोइ साधां नें वेंहरावें एक तिणखलो, तिणरी आग्या द्यो आप साख्यात हो ।
कोइ श्रावक जीमावें कोडांग में, तिणरी आग्या न द्यो अंसमात हो ॥ ६ ॥
साधां ने वेंहरावें एक तिणखलो, तिणरें बारमों वरत कह्यो आप हो ।
तिण सूं आग्या दीधी आप तेहनें, वले कटता जांण्या तिणरा पाप हो ॥ ७ ॥
कोइ श्रावक नें जीमावें कोडांग में, ते तो सावद्य कामो जांण्यों आप हो ।
उण छ काय रो सस्त्र पोखीयो, तिण में धर्म री न करी थे थाप हो ॥ ८ ॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

कोइ करें वीयावच श्रावकां तणी, तठें पिण आपरें छें मूंन हो।
उण तीखो कीयों सस्त्र छ काय रो, ते किरतब जांणों आप जबूंन हो॥ ९॥
उघाडे मुख गुणें छें सिधंत ने, वले कोडांग में गुणे छे नवकार हो।
जिण मे आप तणी आगन्यां नही, तिण मे धर्म न सरधूं लिगार हो॥ १०॥
उघाडे मुख गुणें छे नवकार नें, तिण वाउ काय मास्या असंख हो।
तिणमे धर्म सरधें भोला थका, तिणरें लागा कुगुरां रा डंक हो॥ ११॥
जेणा सूं गुणें एक नवकार ने, तिण सूं कोडा भवां रा कटें कर्म हो।
तिणमे आप तणी छे आगन्यां, तिणरे निश्चे छे निरजरा धर्म हो॥ १२॥
केइ साधु नांम धराय ने, प्रससे छे सावद्य दांन हो।
त्या भेष भांड्यो भगवांन रो, त्यारा घट माहे घोर अग्यांन हो॥ १३॥
मून कही थे साधु रें सावद्य दांन मे, ते तो अंतराय पडती जाण हो।
तिणरो फल ते सूतर में बतावीयो, तिणरी बुधवंत करसी पिछांण हो॥ १४॥
प्रदेसी राजा कह्यों केसी सांम ने, म्हारे तो छें चढतों वेराग हो।
म्हारे सात सहंस गाम छे खालसे, तिणरा करे च्यार भाग हो॥ १५॥
एक भाग राण्यां निमते करे, बीजो भाग करे खजांन हो।
तीजो भाग घोडा हाथ्या निमते करें, चोथो भाग करे देवा दांन हो॥ १६॥
च्यारू भाग सावद्य कांमो जांण नें, मून साझे रह्या केसी सांम हो।
जो उवे धर्म कठेइ जांणता, तो करता तिणरा गुणग्रांम हो॥ १७॥
सावद्य किरतब च्यारू भाग राज रा, त्यामें जीवां री हिंसा अतंत हो।
तिण सू च्यारूं बरोबर जाण ने, मून साझी मतवंत हो।
हूं बलिहारी हो श्री जिणजी री मून में॥ १८॥
दान देवा मांडी दांनसाल नें, परदेसी राजांन हो।
सात सहंस गांम हुता खालसे, तिणरो चोथो भाग दीयों दांन हो॥ १९॥
च्यारूं भाग करे आप न्यारो हुवो, तिण जाण्यो संसार नो माग हो।
तिण तिथ न कीधी तिण राज री, रह्यो मुगत सं सनमुख लाग हो॥ २०॥
ओ तो दान ओरां ने भलाय ने, तिणरी पूछी न दीसे वात हो।
चवदें प्रकार नो दांन साध ने, ओ तो राख्यो निज पोता रे हाथ हो॥ २१॥
चोथो भाग ते दांन रे ताल के, नही राख्यों पोता रे हाथ हो।
तीन भाग ज्यूं इण ने पिण थापीयो, छ काय जीवां री जांणी घात हो॥ २२॥
साढा सतरेसो गांम दांन ताल के, दिन दिन प्रते मठेरा पांच गांम हो।
त्यांरा हासल रो धांन रंधाय ने, दानसाला माडी ठांम ठांम हो॥ २३॥
टालवा गांम जांणीजें खालसे, ते तो चोथा आरा रा था गाम हो।
हासल आयो ते तो जाणीजे घणो, नेपे हुंती घणी अमांम हो॥ २४॥

हासल आयो हुवें एकीका गांम रो, दस सहंस मण रें उनमांन हो।
दिन दिन प्रतें मठेरा पांच गांम रो, उणो पचास हजार मण धांन हो॥ २५॥
इण लेखें हुवो एक वरस तणों, पूणा दोय कोड मण धांन हो।
इधको ओछो तो आप जांणें रह्या, म्हे तो अटकल सूं बांध्यो उनमांन हो॥ २६॥
पांणी लागें पांच कोड मण आसरें, पूणा दोय कोड मण रांध्यां धांन हो।
अगन पिण एक कोड मण जांणीजें, लूण छ लाख मण रें उनमांन हो॥ २७॥
नित धांन हजारां मण रांधतां, अगन पांणी हजारां मण जांण हो।
तठें लूण मणा बंध लागतो, वाउकाय रो ई बोहल घमसांण हो॥ २८॥
फूंहारादिक अनेक पांणी मझे, वले वनसपती पांणी मांय हो।
धांन हजारां मण रांधतां, तिहां अनेक मूआ तसकाय हो॥ २९॥
दिन दिन प्रतें मारी छें छ काय नें, कीधी अनत जीवां री घात हो।
त्यांरी हिंसा रो पाप गिणें नहीं, तिणरे हिंसा धर्मी रो मिथ्यात हो॥ ३०॥
एहवा दुष्ट हिंसाधर्मी जीव नें, केइ जाणे छें अग्यांनी साध हो।
तिणरें पिण घट में घोर अंधार छें, ते पिण नीमाइ निश्चें असाध हो॥ ३१॥
केइ जीव खवायां मे पुन कहे, केइ मिश्र कहे छे मूढ हो।
ए दोनूंई बूडें छे बापडा, कर कर मिथ्यात री रूढ हो॥ ३२॥
जीव खाधां खवायां भलो जांणीयां, तीनूंई करणां पाप हो।
आ सरधा परूपी छें आपरी, ते पिण दीधी आगन्यां उथाप हो॥ ३३॥
केइ कहें जीवां नें मार्‌यां बिनां, धर्म न हुवें तांम हो।
जीव मार्‌यां रो पाप लागें नही, चोखा चाहीजे निज परिणांम हो॥ ३४॥
केइ कहें जीव मार्‌यां बिनां, मिश्र न हुवें छे तांम हो।
पिण जीव मरण री सांनी करे, ले ले परिणांमां रो नांम हो॥ ३५॥
केइ धर्म नें मिश्र करवा भणी, छ काय रो करें घमसांण हो।
तिणरा चोखा परिणांम किहां थकी, पर जीवां रा लूटें छें प्राण हो॥ ३६॥
कोइ जीव खवावें छे तेहनां, चोखा कहे छें परिणांम हो।
कहें धर्म नें मिश्र हुवें नहीं, जीव खवायां विण तांम हो॥ ३७॥
जीव खांण रा परिणांम छें अति बुरा, खवावण रा पिण खोटा परिणांम हो।
यूंही भोलां नें न्हांखें भरम मे, ले ले परिणांमां रो नांम हो॥ ३८॥
जिण ओलख लीधी आपरी आगन्यां, जिण ओलख लीधी आपरी मूंन हो।
तिण आप नें पिण ओलखे लीया, तिणरी टलगी माठी माठी जूंन हो॥ ३९॥
जिण आग्या न ओलखी आपरी, आपरी नहीं ओलखी मूंन हो।
तिण आपनें ओलख्या नही, तिणरें बधसी माठी माठी जूंन हो॥ ४०॥

केइ जिण आगन्या बारें धर्म कहे, जिण आग्या मांहे कहे छें पाप हो।
ते दोनूं विध बूडे छे बापडा, कूडों कर कर अग्यांनी विलाप हो॥ ४१॥
आपरो धर्म आपरी आग्या मझे, आपरो धर्म नहीं आपरीआग्याबार हो।
जिण धर्म जिण आग्या बारे कहे, ते पूरा छे मूंढ गिवार हो॥ ४२॥
आप अवसर देखी नें बोलीया, आप अवसर देखे साझी मूंन हो।
जिहा आप तणी आगन्यां नही, ते करणी छें जाबक जबूंन हो॥ ४३॥
भेषधारी थापे सावद्य दांन नें, तिण दांन सूं दया उठ जाय हो।
वले दया कहे छ काय बचावीयां, तिण सूं दांन उथप गयों ताय हो॥ ४४॥
छ काय जीवां ने जीवां मार ने, कोइ दांन दे संसार रे मांय हो।
तिणरे तो छ काय जीवां तणी, घट मे दया रहे नही कांय हो॥ ४५॥
कोइ दांन देवें तिणने वरज नें, जीवां बचावें छ काय हो।
ते जीव बचायां दांन उथपें, त्यांसूं न्यारा रह्यां सुख थाय हो॥ ४६॥
छ काय जीवां नें मारें दांन दें, तिण दांन सूं मुगत न जाय हो।
वले फिर फिर बचावे छ काय ने, तिण सूं कर्म कटे नही ताय हो॥ ४७॥
सावद्य दांन दीयां दया उथपें, सावद्य दया सूं उथपें अभय दांन हो।
ते सावद्य दया दान संसार नां, त्यांने ओलखे ते बुधवांन हो॥ ४८॥
त्रिविधे त्रिविधे छ काय हणवी नही, आ थें दया कही जिण राय हो।
दान देणों सुपातर ने कह्यो, तिण सूं मुगत सुखे सुखे जाय हो॥ ४९॥
दांन दया दोनूं मारग मोष रा, ते तो आपरी आगन्यां सहीत हो।
याने रूडी रीत आराधीयां, ते गया जमारो जीत हो॥ ५०॥
आप तणी आगन्यां ओलखायवा, जोड कीधी धेनावस मझार हो।
संवत अठारे चमालेसमे, माहा सुदि सातम विसपतवार हो॥ ५१॥

ढाल : १३

दुहा

केइ भेषधारी कहें म्हें धर्म री, आगन्यां द्यां छां तांम।
पाप करतां नें वरज द्यां, मूंन करां मिश्र नें ठाम॥ १ ॥
राइ पाप नें धर्म मेरू जितों, धर्म राइ नें मेरू सम पाप।
अनेक भांगा छे इण मिश्र ना, तठे रहां चुप चाप॥ २ ॥
पाप करण री आगन्यां द्यां नहीं, मिश्र री पिण आग्या द्यां नांय।
मिश्र करता नें पिण वरजां नही, म्हें जांण रहां मन मांय॥ ३ ॥
इण विध करें छें परूपणा, पिण बोले नही बंध लिगार।
प्रश्न पूछ्यां रा जाब न उपजें, जब फिरतां न लागें बार॥ ४ ॥
कहें एकंत धर्म री द्यां आगन्या, पाप करतां नें वरजां साख्यात।
मूंन करां मिश्र नें बोलां नहीं, पिण यां तीनूंइ में फिरजात॥ ५ ॥
हिवें कुण कुण प्रश्न पूछीयां, त्यांरी सरधा रो पडें उघाड।
ते चित लगाय नें सांभलो, अल्प मातर कहूं विसतार॥ ६ ॥

ढाल

[तीजी सुमत छे एषणा ए]

श्रावक श्रावक री वीयावच करें, सामायक नें पोषा मांही रे।
तिणमें धर्म कहें छें निसंक सूं, तिणरी आगन्यां देवें नांही रे।
सरधा सुणजो निनवा तणी* ॥ १ ॥
पेंहला कहिता धर्म री द्यां आगन्यां, धर्म सरधें आग्या देवें नांही रे।
त्यांरा बोल्यां री ठीक त्यांनें नही, सुध ववेक नही त्यां मांहीं रे॥ स० २ ॥
श्रावक श्रावक री पडिलेहण करें, साता पुछें करें नमसकारो रे।
तिण में पिण धर्म चोडे कहें, तिणरी पिण आग्या नही दे लिगारो रे॥ ३ ॥
श्रावक श्रावक नें देवें समायक मझे, पूंजणी कपडादिक जांणी रे।
तिण ने धर्म जांणें पिण न दें आगन्यां, ते तो पूरा छें मूढ अयांणो रे॥ ४ ॥
इत्यादिक बोल अनेक में, कहें छे एकंत धर्मों रे।
तिण धर्म री नहीं दें आगन्यां, जब नीकल गयो सरधा रो भर्मो रे॥ ५ ॥
कहें म्हें धर्म करण री द्यां आगन्यां, यूंही बोलें अनांखी कूडो रे।
जो धर्म करण री आगन्यां दें नहीं, जब सरधा में पड गइ धूडो रे॥ ६ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

करणी करण रो उपदेस दें, तिणरी प्रसंसा गुणग्रांम करता रे।
वले धर्म निकेवल कहें तेह में, तिणरी आगन्यां नहीं दें डरता रे॥ ७॥
पाप लागो जाणे आगन्यां दीयां, प्रससा कीयां जांणे धर्मो रे।
एहवी उंधी सरधा छें तेहनीं, त्यांरे मोटों मिथ्यात नो भर्मो रे॥ ८॥
पाप कहें धर्म री आगन्यां दीयां, ते उठी जठाथी भूठी रे।
धर्म करण री आगन्या देतां डरें, त्यांरी हीया निलाड री फूटी रे॥ ९॥
कदा जाव अटकता जाण नें, तो उ फिर जाअे करें तांना मांना रे।
धर्म कह्यो पाछिलां बोलां मभे, त्यामे कहि दे मिश्र दोय बांना रे॥ १०॥
दोय बाना मिश्र कहें तेह नें, न्याय चरचा माहे बांध लीजें रे।
त्यानें पाछो जाब न उपजें, एहवा प्रश्न पूछीजे रे॥ ११॥
तो सामायक पोषा मभे, राख्यो छे तिण उपरंत त्यागो रे।
ते दोय बांना मिश्र कीयां, सामायक ने पोषो भागो रे॥ १२॥
जब उ कहे दोय बाना मिश्र कीयां, सामायक पोषो भागें नांहीं रे।
एहवी उंधी ले उठे तेहनें, भूठ बोलण री संक न कांई रे॥ १३॥
मिश्र कीयां सामायक भागें नहीं, ते पिण चोडें कूड चलायो रे।
तो उवे मिश्र सरधें छें सावद्य दांन में, ते पिण देणों सामायक माह्यो रे॥ १४॥
आठ दांना ने पिण मिश्र कहे, ते पिण एकंत मूसावायो रे।
मिश्र दान भगवंते न भाषीयो, ओ पिण गाला सूं गोलो चलायो रे॥ १५॥
जो मिश्र कीया सामायक भागे नांहीं रे, तो आठ दांन सामायक में देणा रे।
जो आठ दांन सामायक में दे नहीं, त्यां विकलां री बोली रा क्या कॆणा रे॥ १६॥
श्रावक ने अनेक दरब दीयां, दोय बांना मिश्र कहें ताह्यो रे।
मिश्र कीयां सामायक भागे नहीं, तो श्रावक ने देणा सामायक माह्यो रे॥ १७॥
धर्म तणी तो नहीं देवे आगन्यां, ते मत जाबक कुडो रे।
वले पाप तणी देवें आगन्यां, तिण सरधा रो सुणजों फितूरो रे॥ १८॥
कहें म्हे पाप करता ने वरज द्यां, ते पिण थोडा मांहें फिर जायों रे।
त्यारी सरधा री समभ त्यांनें नहीं, आ पिण कूडी करें बकवायों रे॥ १९॥
साध चेला चेली करें तेहमें, पाप जांणें छें मूढ अग्यांनी रे।
पाप जांणे नें देवें आगन्यां, त्यांनें किण विध कहीजे ग्यांनी रे॥ २०॥
साध सावबी असणादिक भोगवे, कपडादिक दरब वशेष रे।
तिणमें पाप जांणें नें देवे आगन्यां, निज बोल्या साह्मो नहीं देखे रे॥ २१॥
वीयावच करावें तिण साध नें, तिणमें पाप निकेवल थापें रे।
तिणरी पिण देवें छें आगन्यां, आपरी सरधा आप उथापें रे॥ २२॥

साध नदी उतरें छें तेहमें, पाप निकेवल जांणे रे।
तिणरी पिण आग्या देतां थकां, संका मूल न आंणे रे॥ २३॥
इत्यादिक साधां रा कांम करावतां, ते पिण निरवद नें निरदोषों रे।
तिणमे पाप जांणे दें आगन्यां, त्यांरा बोल्या गया सर्व फोको रे॥ २४॥
पेंहला कहितां वरजां निसंक सूं, पाप करतां नें जोयों रे।
ते वरजणों तो जिहांइ रह्यो, उलटा आगन्यां देवें छें ताह्यों रे॥ २५॥
पाप री करणी जांणे छें तेहनें, तिणरी आगन्यां देवण सूरा रे।
धर्म करणी जांणे न दें आगन्यां, दोनूं परकारें मूढ छें पूरा रे॥ २६॥
हरीया जव देखे नें भिडकें मिरगला, डरता थका दूर जायो रे।
पास मांड्या देख डरे नांहीं, जाय पडें जाल माह्यों रे॥ २७॥
मिरग सरीषा अग्यांनी जीवडा, धर्म जांणें आगन्यां दे नांहीं रे।
पाप करणी जांणें देवें आगन्यां, ते खूता मिथ्यात रे मांहीं रे॥ २८॥
कहितां धर्म करण री द्यां आगन्यां, पाप करता नें वरजां ताह्यों रे।
यां दोयां बोलां में भूठा पड्यां, मिश्र में भूठा किण विध थायो रे॥ २९॥
उघाडे मुख गुणें छे नोकार ने, वले सूतर बोल सभायो रे।
तिणमें दोय बांना मिश्र कहे, मिश्र में मूंन कहें छे ताह्यो रे॥ ३०॥
उघाडे मुख गुणें छें तेहनें, कहें मत गुण उघाडें मूढें रे।
कहे मूंन करां म्हें मिश्र में, तो ए मूंन भागे कांय बूडे रे॥ ३१॥
सामायक वालों छूटा रो विनो करें, वले वीयावच ने नमसकारो रे।
तिणमे मिश्र सरधें नें वरज दें, जब पड गयो मूंन में बगारो रे॥ ३२॥
इत्यादिक बोल अनेक मे, मिश्र जाणे छें मूंढ अयांणो रे।
ते पिण मिश्र करतां नें वरज दे, मूंन भांग दीधी मूंढ जांणो रे॥ ३३॥
कहे म्हे मिश्र ठिकांणे बोल बोलां नहीं, तेहीज वरजें मिश्र ने जांणो रे।
मूंन छोडे नें लागा बोलवा, त्यांरे ते पिण नहीं छें पिछांणो रे॥ ३४॥
दोय बांना तो मुख सूं कहें दीया, तो ए मूंन कहें किण लेखें रे।
दोय बांना कह्यां तो मूंन उड गइ, तिण साह्यों मूढ न देखें रे॥ ३५॥
दोय बांना मिश्र जाबक नही, ए तो यूं हीं चलावे कूडो रे।
तेहीज मिश्र करतां नें वरज दें, जब पड गइ मूंन में धूडो रे॥ ३६॥
मूंन मे दोय बांना मिश्र कहें, ते तो उठी जठाथी भूठी रे।
सावद्य में पुन पाप दोनूं कहे, त्यांरी हीया निलाडी री फूटी रे॥ ३७॥
मूंन वाला नें मूल बोलणो नही, कोइ परूपें क्यूं ही रे।
मिश्र थाप्या तो मूंन उठे गइ, ए तो मूंन बतावें यूं ही रे॥ ३८॥

मून करो भावे मिश्र कहो, यांरो परमारथ एक जांणो रे।
एहवी उंधी करे छे परूपणा, मिश्र थापण नें मूढ अयांणो रे॥ ३९॥
कोइ प्रश्न पूछें साध नें, लोकां ना मारग सूं मिलता तांमो रे।
जब जांणें नही तिणनें समभता, जब मूंन करें तिण ठांमो रे॥ ४०॥
जो जाब देवें जथातथा तेह नें, तो उ करे जिण धर्म री हेला रे।
प्रवचन तणी थावें हीणता, जब मूंन साफें तिण बेलां रे॥ ४१॥
इत्यादिक अनेक कारण पड्यां, जब साधु तो मूल म बोले रे।
पिण मिश्र न जांणे तेह ने, अवसर देखें तो बोले मूंन खोले रे॥ ४२॥
मिश्र दांन कहें छे तेह नें, घट मांहे घोर अंधारो रे।
आप डूबे ओरां ने डबोवता, ते गया जमारो हारो रे॥ ४३॥
दस दांन भगवते भाषीया, त्यांमें मिश्र दांन नही कोइ रे।
कोइ आठ दांनां में मिश्र कहें, ते गया जमारो खोइ रे॥ ४४॥
दस दांन कह्या छें तेह में, केयक आछां ने केयक भूंडा रे।
पिण मिश्र दांन जाबक नही, मिश्र सरधे अग्यांनी कांय बूडा रे॥ ४५॥
कहि कहि नें कितरो कहूं, दांन मिश्र तो नांही रे।
ज्यां मिश्र दांन परूपीयो, ते खूता मिथ्यात रे माही रे॥ ४६॥
मिश्र दांन मिथ्यात ओलखायवा, जोड कीधी पाली सहर मभारो रे।
संवत अठारे वरस बावने, सांवण विद तेरस मगलवारो रे॥ ४७॥

ढाल : १४

दुहा

केइ भेष धार्‍यां तणी, सरदहणा खोटी घणी छें अतंत।
वले खोटी करें छे परूपणा, हीयाफूट ज्यूं मूढ बकंत ॥ १ ॥
श्रावक श्रावक रों विनो वीयावच करें, तिण में कहें छें धर्म।
वले धर्म कहें साता पूछीयां, ते भूला अग्यांनी भर्म ॥ २ ॥
साध साध रो विनों वीयावच करें, तिणरें कटें छें पाप कर्म।
ज्यूं श्रावक श्रावकां रों विनों वीयावच करें, तिणनें पिण छें धर्म ॥ ३ ॥
साध साध रों विनों वीयावच करें, तिम श्रावक श्रावक रो जांण।
यो विनें मूल धर्म जिण भाषीयों, इसडी कहें छें मूढ अयांण ॥ ४ ॥
त्यांरी सरधा री खबर त्यांने नही, यूंही करें बकवाय।
त्यांरी खोटी सरधा परगट करूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[श्रा श्रणुकम्पा जिण श्रागन्या मे]

साध रो विनों वीयावच साध करें छें, ज्यूं श्रावक ने श्रावक रो करणों।
केइ मूढ मिथ्याती इसडी परूपें, त्यांरी खोटी सरधा रो सांभलजो निरणों।
इण उंधी सरधा रो निरणों कीजों* ॥ १ ॥

एकण कागादिक मारण रो नेम कीधो, ते समदिष्टी हुवो श्रावक व्रतधारी।
तिण पाछें एकण बारे व्रत लीधा, सांकडा सांकडा सूंस कीधा भारी ॥ इ० २ ॥
कागादिक मारण रो सूंस पेंहला कीयों छें, ते तो श्रावक छें उण सेती मोटों।
तिणरो विनों करणों साधां रे रीत छें तिम, न करे तो यांरें लेखें यारो मत खोंटो ॥ ३ ॥
उणने आवतों देख उभो होणों, आसण छोड विनों करणों सीस नमाय।
साता पूछणी दोनूं हाथ जोडी नें, आपथी उंचें आसण बेंसावणों ताय ॥ ४ ॥
इत्यादिक विनों साध रो साध करें तिम, श्रावक रो विनो श्रावक नें सारोइ करणों।
न करे तो यांरो मत याहीज उथाप्यो, आप रा बोल्यां रो नहीं आप रें निरणों ॥ ५ ॥
छोटा साध नें साध री आग्या में रहणों, ज्यूं श्रावक नें श्रावकां री आग्या मांहें रहणों।
छोटा साध नें साध आग्या में चलावें, ज्यूं श्रावक नें श्रावकां री आग्या पालण रो कहिणों ॥ ६ ॥
छोटा साध बडा री आग्या में न चालें, ते तो च्यार तीरथ दीसे छें भूंडा।
ज्यूं यारा श्रावक उणरी आग्या नहीं पालें, तो यांरा श्रावक यांरें लेखें सगलाई बूडा ॥ ७ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

छोटा साधां ने बडा सर्व साधां री, आसातणा टालणी छे तेतीस।
ज्यूं यांरा श्रावक ने बडा सर्व श्रावकां री, आसातणा टालणी निसदीस॥ ८॥
यारा छोटा श्रावक बडा सर्व श्रावकां री, आसातणा न टाले रूडी रीत।
तो यांरे लेखे यांरां सगलाइ श्रावक, चोड़ें दीसे उघाडा अवनीत॥ ९॥
बडा श्रावक रो करें विनो वीयावच, यांरें लेखें तो ओहीज विने मूल धर्म।
धर्म कहे पिण आगन्या न देवे, थें भूला रे भूला अग्यांनी भर्म॥ १०॥
कोइ मा बाप पेहली बेटो श्रावक हुवों, पछें मा बाप श्रावक हुआ वरत धार।
यांरे लेखे बेटा री आग्या मांहें रहणों, नित नित बेटा ने करणों नमसकार॥ ११॥
पेहिला श्रावक रा व्रत बेटें लीया छे, ते मा बाप थी तो छे श्रावक मोटों।
तिणरो विनों करणों साधां रे रीत छें तिम, न करें तो यांरें लेखें यांरों मत खोटो॥ १२॥
बेटा ने आवतों देख ऊभो हुणो, आसण छोड विनो करणों सीस नमाय।
साता पूछणी दोनूंइ हाथ जोडी ने, आप थी उंचे आसण बेंसावणों ताय॥ १३॥
मन गमती वियावच करणी बेटा री, सेवा भगत करणी बेटा री दिन रात।
वले रेकारो बेटा ने कदे नही देणों, बात करतां विचे नही करणी वात॥ १४॥
इत्यादिक साध रो साध विनों करे तिम, बेटा रो विनो मा बाप ने सारोइ करणों।
न करे तो यारो मत यांहीज उथाप्यो, आप रा बोल्यां रों नही आप रे निरणों॥ १५॥
छोटा साध नें बडा साधां री आग्या में रहिणो, ज्यू मा बाप ने बेटा री आग्या मे रहिणो।
जो छोटा साध नें बडा साध आग्या में चलावे, तो बाप ने बेटा री आग्या पालण रों कहिणों॥१६॥
छोटा साध बडा री आग्या ने न चालें, ते तो च्यार तीरथ माहे दीसे छे भूंडा।
जो उ बाप बेटा री आग्या नहीं पाले, तो यांरे लेखे मा नें बाप दोनूंइ बूडा॥ १७॥
छोटा साध ने बडा सर्व साधां री, आसातणा टालणी तेतीस।
ज्यू बाप थकी बेटो बडो श्रावक छे, तिणरी आसातणा टालणी निसदीस॥ १८॥
जो मा बाप थकी बेटो बडो श्रावक छे, तिणरी आसातणा न टालें रूडी रीत।
तो यांरें लेखे मा ने बाप दोनूंइ, चोडे दीसें उघाडा अवनीत॥ १९॥
कोइ बाप पेहली बेटो साध हुवो छे, तिणरों विनो करे दिप्या में वडो जाण।
ज्यूं यांरे लेखे विनो करणों बेटा रो, आप सूं वरतां मांहें वडो पिछांण॥ २०॥
पेहला तो बेटा री बहुआं श्रावका हुइ, पछे सासू हुइ बारे व्रत धारी।
यांरी सरधा रें लेखे सासू ने बहुआं रो, विनो करणों रहिणो आगन्या कारी॥ २१॥
बडा साध रो विनो वियावच करे तिम, बहुआ रो विनो सासू ने करणों।
न करें तो सासू अवनीत बहुआं री, विने मूल धर्म गयो किम तरणों॥ २२॥
जो उवा सासू वहूआं ने पगे लगावे, जव तो यांरें लेखें सासू गाढी वूडी।
यारे लेखें तो इण अवनीत पणा सूं, सासू ने वहुआं सारी जासी नरक नी तूडी॥ २३॥

राजा रा अमराव नें चाकर बांदा, वले ढोली डूंबादि सरगडा तांम।
राजा सूं पेंहला श्रावक व्रत लीधा, त्यांरो राजा नें विनो करणों सीस नांम ॥ २४ ॥
वले छतीस पवन माहें श्रावक बडा छें, त्यांरो राजा नें पूछ नें काढणो निरणों।
त्यांरो विनो करणों साधां री रीत छें तिम, ज्यूं आप सूं बडा श्रावक रो विनो करणों॥ २५॥
चक्रव्रत सूं बडो छें दास रो दास, तिणरो चक्रवत विनों करें बडो जांण।
ज्यूं यांरें लेखें राजा नें छतीस पवन रों, विनों करणो वरतां माहें बडा पिछांण ॥ २६ ॥
छोटो श्रावक सामायक पोषां मांहें बेठों, कोइ बडो श्रावक तिणरें पासें आयों।
तिणरों विनों करणो साधां रे रीत छें तिम, यारें लेखे तो कमीय न राखणी कायों ॥ २७ ॥
जब तो कहे ओ तो सामायक माहें वेठों, बडो श्रावक तो इविरत मांहे छूटो।
इण बंधीया नें छूटा रें विनों न करणों, इण ही लेखें पिण यांरो हियो फूटों ॥ २८ ॥
बडो श्रावक तो छोटा नें नही वादें, छोटो श्रावक पिण बडा नें वांदे नांही।
ए दोनूंइ मांहोमां अंठठ हुआ छे, हिवें तो यांरें विनों न दीसे कांई ॥ २९ ॥
जब तो यांरे लेखें छोटां नें बडां रो, कारण मूल न दीसें कांई।
सांकडा पचखांण वाला श्रावक ने, बडा श्रावक नें वांदणा नांही ॥ ३० ॥
छोटा श्रावक रे विरत मेरु जिती छे, बडा श्रावक रे विरत राइ समांन।
जो सामाइ में बडां रो विनों न करे तो, ओ पिण बडां रों विनो करसी किण न्यांन॥ ३१ ॥
छोटें श्रावक तो सील रतन आदरीयो, बडां रे सीलादिक नही विरत वशेखें।
जो सामाइ में बडां रों विनों न करें तो, ओ पिण बडां रो विनों करें किण लेखें ॥ ३२ ॥
बडां श्रावक रें वरत पचखांण छें थोडा, छोटा रें वरत पचखांण सूंस वशेखें।
जो सामाइ में बडां रो विनों न करणों तो, इण बडां रो विनो करणो किण लेखें ॥ ३३ ॥
पेंहला तो छोटें श्रावक सामाइ कीधी छे, पछें बडे सामाइ कीधी छें आय।
जब तो छोटो बडां रों विनों करें छें, तिण बडां रो विनों करे किण न्याय ॥ ॥ ३४ ॥
वरतां लेखें तो बडां रो विनो न कीधों, सामाइ लेखे पछें कीधी ते छोटों।
इण बडां रो विनों कीयो किण लेखे, सामाइ लेखे तो छोटो श्रावक मोटों ॥ ३५ ॥
सामायक में सामायक वालो वांदें छे, तो वरता बडां रो कारण नही कांई।
जिण पेंहली सामाइ करी ते बडो छे, तो उ किण लेखे पडे बडां रा पगा माहीं॥ ३६ ॥
सामाइ में तो बडा रो विनों न कीधो, जब तो बडा श्रावक रो बडपण गमायो।
पछे वरता मे बडा ने सामायक वादे, हिवे बडां रो बडपण कठा सूं आयो ॥ ३७ ॥
साधा रो विनों साध करें तिम, श्रावक रो विनो करणो श्रावक नें थापे।
तो श्रावक श्रावक ने तीखूता सूं वांदे, तो तीखूता री वदणा ने काय उथापे ॥ ३८ ॥
घणो विनों कीया घणो धर्म होसी, थोडो विनों कीया छे थोडोइज धर्म।
श्रावक री तीखूता सू वदणा उथापे, त्यांरी सरधा रो त्यांहीज काढियो भर्म ॥ ३९ ॥

केइ भेषधाऱ्यां रे इसडी छे सरधा, सामाइ में छोटा नें तीखूता सूं वांदे ।
सामाइ ने पोसा तो उतर गुण विरत, मूल गुण वाला वडां रें चालणो छांदें ॥ ४० ॥
मूल गुण तो श्रावक रे जाव जीव छे, उत्तर गुण विरत इधकाइ रा तांम ।
मूल गुण विरत जिण पेहली कीया छे, जाव जीव छोटा सूं बडो छें तांम ॥ ४१ ॥
तिण लेखें सामाइ ने पोसा रे मांहें, बडां श्रावक रो विनों साधां ज्यूं करणो ।
जो सथारो करे तो बडां श्रावक रे, सीस नमाय ने पगां में पडणो ॥ ४२ ॥
या तो छोटा रा विनो सामाइ में थाप्यो, यां छोटा रा विना में पाप वतायों ।
यामे किण री साची किण री खोटी सरधा छे, ते पिण विकलां ने खवर न कायो ॥ ४३ ॥
श्रावक रों विनो थापें छें साध तणी पर, ते मत निश्चेंइ जांणजो कूडो ।
त्यां विकलां री सरधा तो पग पग पर अटकें, त्यांरी खोटी सरधा रो सुणजो फितूरो ॥ ४४ ॥
श्रावक श्रावक रो विनों साध तणी पर, करतां तो किण ही नें निजरां न दीठो ।
यूंही वकरोल करे छे अन्हाखी, तिणनें प्रश्न पूछ्यां पडे पग पग फीटो ॥ ४५ ॥
छोटो श्रावक भारी भारी वसतर पेंहरे, बडां रे लीलर कपडा ने लीलर पागो ।
जो उ वडां ने आछा वसतर नही देवें तो, जब यांरे लेखे छोटा रो पूरो अभागो ॥ ४६ ॥
यांरां छोटा श्रावक रे भारी भारी गेहणा, वडां श्रावक नें गेहणो नही एक मासो ।
जब छोटो बडां श्रावक ने गेंहणों न देवें, तिण तो कीयो विनें मूल धर्म रो न्हासो ॥ ४७ ॥
छोटो श्रावक जीमें साल दाल ने मोदक, बडो श्रावक जीमें छे कूकस कूर ।
यारें लेखें आछो आहार न दे वडा नें, तो विने मूल धर्म में पड गइ धूर ॥ ४८ ॥
छोटा श्रावक रें चोखा हाट हवेल्यां, वडां रे छोटी टपरी छे तो पिण तूटी ।
जो उ हाट हवेल्या वडां नें न आपे, जब यांरो विनों धर्म गयो उठी ॥ ४९ ॥
छोटा श्रावक तो हाथी घोडें रथ बेठां, वडो श्रावक मूढा आगें चाले पालो ।
त्यां पिण खोयो त्यारो विने मूल धर्म, इण लेखे यांरी सरधा ने लागे छें कालो ॥ ५० ॥
छोटो श्रावक चाले छे पालखी बेठो, वडो श्रावक पालखी लीधी छें कांधें ।
यारें लेखे पिण छोटके श्रावक, विने मूल धर्म ने खोयो छे आंधें ॥ ५१ ॥
छोटा श्रावक रे घर में धन घणो छें, बडो श्रावक दलदरी तिणने न आपे ।
यारे लेखें यांरा छोटा श्रावक ने कहिणो, तूं विने मूल धर्म ने काय उथापे ॥ ५२ ॥
इत्यादिक छोटा श्रावक रे वसत अनेक, ते 'वडो श्रावक मांगे तो देवें नांहीं ।
जब यो पिण यारें लेखे अवनीत श्रावक, तिणमें विने मूल धर्म न दीसे कांई ॥ ५३ ॥
विनों विनों कर रह्या मूरख, ते विनों करणो तो साधां रो चाल्यों ।
श्रावक रो विनो करणों कहे साध तणी परें, ओ तो धोचो अणहूंतो कुगुरां रो घाल्यो ॥ ५४ ॥
यांरो वडो श्रावक पिण छोटा श्रावक ने, उलटो सीस नमाय करे नमसकार ।
जब धूल पडी त्यांरा विने धर्म में, यांरी सरधा नें दीजें तीन धिकार ॥ ५५ ॥

श्रावक रो विनों थापें साध तणी परें, आ तो सरधा उठी जठाथी भूठी।
ग्रहस्थ रा विनां मांहें धर्म कहें त्यारी, हीया निलाड री दोनूंइ फूटी ॥ ५६ ॥
श्रावक तो निश्चें ग्रहस्थ सागे, वले अधर्मियां सूं करें संभोग।
तिणरो विनो थापें मूढ साध तणी परें, त्यांरे मोटो छे मिथ्यात रो रोग ॥ ५७ ॥
श्रावक तो मांहोमां पागडी पाडें, कांम पड्यां मांहोमां करें जीव घात।
तिणरो विनो थापें मूढ साध तणी परें, त्यांरो गाढो घट मांहें घोर मिथ्यात ॥ ५८ ॥
छ काय जीवां रो करें घमसांण, वले छ,काय जीवां रो कर जाय गटको।
तिणरो विनों थापें मूढ साध तणी परें, त्यांरी सरधा नें जांणजो जेंहर रो बटको ॥ ५६ ॥
केइक तो मिथ्यातां बिचेंई, केइ श्रावकां रे त्यांसूं इधको आरंभो।
त्यांरो विनों थापें मूढ साध तणी परें, त्यां विकलां री सरधा रो जोयजो अचंभो ॥ ६० ॥
श्रावक मांहोमां करें छें विनों वीयावच, वले हाथ जोडी साता पूछें वशेख।
नमसकार करें नीचो सीस नमाए, ते जिण आगन्यां मांहीलो नही एक ॥ ६१ ॥
इत्यादिक सगलाइ छें सावद्य कांमा, तिणमें श्री जिण आगन्यां नही छें लिगार।
तिण मांहें धर्म कहें छें अग्यांनी, त्यांरा घट मांहे छें पूरो घोर अंधार ॥ ६२ ॥
श्रावक श्रावक रा करणा गुण ग्रांम, छता गुण ढांक न राखणा तिणरा।
उणरा दीपावणा ग्यांनादिक गुण ने, जिण आग्या सहीत गुणग्रांम करणा तिणरा ॥ ६३ ॥
सुसरका विनों तो साध रो करणों, श्रावक रा तो करणा गुणग्रांम।
इमहीज विनों मतग्यांनादिक रो, जोय लेवो सूतर में ठांम ठांम ॥ ६४ ॥
श्रावक मांहोमां आरंभ कर जीम्या, नमसकार कीयों ते सूतर में चाल्यो।
भगवंत भाव दीठा जिम भाष्या, ते जिण धर्म में भेषधार्‍या घाल्यों ॥ ६५ ॥
जोड कीधी सावद्य विनों ओलखावण, पाली सहर मे कीयो विचार।
संवत अठारे वरस बावनें, आसोज विद पाचम शुकरवार ॥ ६६ ॥

ढाल : १५

दुहा

भेषधारी भिष्ट भागल हुआ तिके, करें असुध वेंहरण री थाप।
चोर ज्यूं असुध अर्थ हेरता, थोथा करें अग्यांनी विलाप ॥ १ ॥
किहां एक पाठ छे सूतर में, तिणरो न्याय मेलें नहीं मूढ।
साधा नें असुध वेंहरायां धर्म कहें, एहवी कर रह्या पापी रूढ ॥ २ ॥
एक पाठ छें भगोती मझे, शतक आठमा मांय।
अर्थ करण वालो पिण डरपीयों, तिण केवलीयां नें दीयो छें भलाय ॥ ३ ॥
साधां नें सचित असुध दीयां, कहें निरजरा बोहत अल्प पाप।
ते उंधी सरधा रों निरणों कहूं, ते सुणजो चुपचाप ॥ ४ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या में]

अफासू आहार ने सचित कहीजें, अणेसणीजेणं ते असूझतों जांणों।
ते दीधां कहे अल्प दोष नें बोहत निरजरा, त्यां विकलां री सरधा री करजो पिछांणों।
भेषधर ने भूलां रो निरणो कीजो* ॥ १ ॥

काचो पाणी कोरों अन साधु नें वेंहरावें, वले खादिम सादिम सचित वेंहरावे।
ए च्यारूइ आहार सचित ने असुध वेंहरावें, तिणरें अल्प दोष नें बोहत निरजरा बतावें ॥भे० २॥
अफासू नें अणेसणी पाठ छें चोडें, तिण पाठ रों अर्थ सूधो कहणी नावें।
जयातथ तिणरो अर्थ करें तो, घणा लोका मांहें सेखी उड जावे ॥ ३ ॥
तिणरा भूठा भूठा अर्थ अनेक बतावें, कदे कारण पडियां रो नांम बतावें।
कदे ओर सूतर सं घुचलाइ घालें, भारीकर्मा भोला लोकां नें भरमावें ॥ ४ ॥
ओ तो पाठ भगोती सूतर में घाल्यों छें, पिण आंधां रें अंतरंग नही छें पिछांणों।
च्यारूं आहार सचित नें असुध वेंहरायां, बोहत निरजरा किहांथी होसी रे अयांणो ॥ ५ ॥
फासू एसणीक साधु ने देवे श्रावक, ठांम ठांम बहू सूतरां रें मांही।
ते सचित असुध सुध जाणें किम देवें, वले बोहत निरजरा जांणें किम ताहि।
असुध वेंहरण री थाप करो मत कोइ ॥ ६ ॥
इण पाठ नें मूंढे आंणे वारुंबार, त्यांरा सचित ने असुध खावा रा परिणांम।
जो असुध वेंहरण रा परिणांम नही छें, तो यूंही क्यांनें बकसी बेकांम ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

च्यारूं आहार सचित नें असुध वेंहरावें, तिणरे तो अल्प आउखों बंधाय।
भगोती पांचमें सतक छठें उद्देशें, वले तीजें ठांणें ठांणाअंग मांय ॥ ८ ॥
साधु जांण नें भोगवे आधाकर्मी, ते तो बांधें छें उसभ कर्म रा जाल।
ते तो नरक निगोद में भींका खासी, उतकष्टों रुलें तो अनंतो काल ॥ ९ ॥
साधु नें जांण नें आधाकर्मी वेंहरावें, ते तो चारित धर्म रो लूंटणहार।
ते पिण नरक निगोद में भींका खावें, उतकष्टों रुलें तो अनंतो काल ॥ १० ॥
आधाकर्मी वेंहरायां छें एकंत पाप, सचित नें असुध वेंहरायां ओ पिण पाप।
च्यारूं आहार सचित नें असुध वेंहरायां, तिणनें मूढ करे बोहत निरजरा री थाप ॥ ११ ॥
साधां ने असुध आहार तो अभष कह्यों जिण, ते अभष आहार देवें दातार।
तिणरें अल्प दोष बोहत निरजरा कहें ते, ते तो भूला रे भूला थें मूंढ गिवार ॥ १२ ॥
साधां ने आहार असुध देवण रों, ओ त्याग करावें छें किण न्याय।
अल्प दोष नें बोहत निरजरा जांणें छें, तिणरें निरजरा री कांय देवें अंतराय ॥ १३ ॥
वले साधां नें अंतराय आहार री पाडी, दातार नें अंतराय आहार दीधी वशेखें।
अल्प दोष थकी बोहत निरजरा हुंती थी, तिणनें सूंस करायों छें किण लेखें ॥ १४ ॥
श्रावक साधां नें असुध जांण नें वेंहरावें, तिणनें धर्म नें पाप दोनूंइ जांणों।
ते दोय वांना नें मिश्र दांन कहो थें, तिण दांन रा क्यूं करावो पचखांणों ॥ १५ ॥
थें कहो छों मिश्र दांन तणा म्हे, किणनेंइ सूंस करावां नांही।
इण मिश्र दांन रा सूंस करायां, थांरी सरधा री वरग बूहा नही कांई ॥ १६ ॥
मूला गाजर जमीकंद दांन देवे छें, तिणमें धर्म थोडों नें घणों कहो पाप।
तिण दांन रा सूंस करावो नांही, मिश्र दांन जांणी रहो चुपचाप ॥ १७ ॥
अल्प दोष नें बोहत निरजरा जांणों छों, तिण दांन तणा पचखांण करावो।
बोहत पाप नें निरजरा अल्प जांणों थें, तिण दांन रा सूंस न करावो छों किण न्यावो ॥ १८ ॥
साधां नें असुध वेंहरावें तिणरो, बारमों व्रत भागों कें नांय।
जब ओ कहें तिणरों बारमो व्रत भागों, तो बोहत निरजरा नही छे तिण मांय ॥ १९ ॥
जो असुध वेंहरायां बारमों व्रत भागें छें, तो बोहत निरजरा तिण मे कदे म जांणों।
व्रत भांग्यां तो निश्चेंइ भूंडों होसी, तिणरी बुधवंत हीया में करसी पिछांणों ॥ २० ॥
साधां नें असुध वेहरावें जांण नें, तिणनें एकंत पाप कह्यां नही कूड।
केइ अल्प दोष ने बोहत निरजरा कहें छें, त्यांरी सरधा तो जांणजो फेंन फितूर ॥ २१ ॥
मिश्र तणा बोल अनेक चाल्या छे, मिश्र दांन तो कठेय न चाल्यों।
भारीकर्मा जीवां रे उसभ उदें सूं, मिश्र दांन रो घोचों पाषंड्यां घाल्यो ॥ २२ ॥
मिश्र पष नें मिश्र भाषा कही जिण, मिश्र गुण ठांणों नें मिश्र परिग्रह दाख्यों।
वले मिश्र पांणी नें मिश्र शब्द कह्या छें, वले मिश्र जोग भगवंते भाख्यो ॥ २३ ॥

इत्यादिक दोय मिलीयां सूं मिश्र हुवें छें, त्यांरा नांम सूतर में जूवो जूवो चाल्यो।
पिण मिश्र दांन सूतर में न चाल्यो, ओ तो भेष धार्यां भूठो भगडो भाल्यों॥ २४॥
सुपातर ने कुपातर दांन तो चाल्या, पिण मिश्र दांन तो सूतर में नांही।
पिण हीया फूट गधा रा साथी, ते खूता छे मिश्र दांन री सरधा रे मांहीं॥ २५॥
श्रावक ने नेहत जीमावे तिण ने, केइ भेषधारी मिश्र दांन बतावे।
भोला ने भिष्ट करण नें अग्यांनी, कुण कुण कूडा कुहेत लगावें॥ २६॥
नीव रा रूख में आंबो रूंख उगो, तिण नींव रा रूंख में पांणीं पावें।
जब दोनूंई रूखा मे पाणी पोहचे छे, नीब नें आंबो दोनूंई फल फूल थावें॥ २७॥
ज्यूं श्रावक ने असणादिक आहार जीमावे, जब विरत नें इविरत दोनूं सीचांणी।
तिणरे दोय वाना मिश्र दांन नीपनों, एहवा कूहेत लगावें छें मूंढ अयांणी॥ २८॥
जो जीमावण वाला ने दोय वांना मिश्र छे, तो जीमण वाला नें इण लेखें मिश्र होय।
इण पिण इण री विरत नें इविरत सीची छें, यांरे लेखें इण नें एकंत पाप न कोय॥ २९॥
श्रावक तो अनेक नीलोती खायें छें, वले पीयें छें काचों अणगल पांणी।
इत्यादिक भोगवे छे दरब अनेक, यारें लेखे तो विरत इविरत दोनूं सीचांणी॥ ३०॥
श्रावक ने दरब अनेक खवावे तिणने, विरत ने इविरत दोनूंइ सीची वतावे।
श्रावक घर रा दरब खावें छे तिण ने, विरत इविरत सीची कहतां लाज क्यूं आवे॥ ३१॥
घर रा दरब खाधा कहे इविरत सीचांणी, पार को खाधां दोनूं कठाथी सीचांणी।
विरत इविरत पोखी कहे श्रावक जीमायां, ते पूरा छे मूरख मूंढ अयांणी॥ ३२॥
जो श्रावक असणादिक आहार खाधां थी, जो विरत इविरत दोनूं पोखांणी।
इण लेखे श्रावक रे कुसील सेव्या थी, विरत ने इविरत दोनूं सींचांणी॥ ३३॥
श्रावक असणादिक सू साता पावे छें, तो कुसील सूं साता पांमें वशेखो।
असणादिक सू विरतने इविरत सीचांणी, तो अस्त्री सेव्यां पिण ओहिज लेखो॥ ३४॥
यारें लेखें तो असणादिक रो त्याग कीधो, वले कुसीलादिक रों कीयों पचखांणों।
जव पिण श्रावक रे विरत इविरत पोषांणी, यांरी सरधा रे लेखे तो ओहीज जांणो॥ ३५॥
जो आगार सेव्या विरत इविरत सीचांणी, तो त्याग कीयां पिण दोनूं सीचांणी।
ओ तो उंधी मत्या री सरधा रो लेखों, त्यां विरत इविरत हीया मे नही पिछांणी॥ ३६॥
उपभोग परिभोग श्रावक भोगवें छें, तिण सूं तो एकंत इविरत सीचांणी।
तिणरो त्याग कीया थी विरत वधे छे, विरत सीची कहे ते पाखंडी री वांणी॥ ३७॥
श्रावक रे वारें विरत ने वारे इविरत छे, त्यांरा फल कोड वृषवंत लेसी पिछांणो।
इविरत सेव्या सेवाया छे एकत पाप, विरत सेवायां एकंत धर्मज जांणो॥ ३८॥
विरत इविरत सीचे कहें छेश्रावक ने जीमायां, आ तो सरधा उठी जठाथी भूठी।
श्रावक नें जीमाया मिश्र दांन कहे छे, त्यांरी हीया नीलाडी री दोनूंइ फूटी॥ ३९॥

श्रावक रा कांम भोग तो इविरत में छें, ते तो भोगव्यां उसभ कर्म लागें छें आंणो ।
ते किंपाक फल री छें ओपमा त्यांनें, तीनूंइ करण सारीषा जांणो ॥ ४० ॥
किंपाक फल तो भोगवतां मीठा, तिणरो सवाद लागें जांणें अमीय समांणो ।
नाडो नाड परगमीया पाछें, जूदा हुवें जीव काया प्रांणो ॥ ४१ ॥
ज्यूं कांम भोग भोगवतां मीठा, ते भोगवतां लागें अमीय समांणो ।
तिण सूं कर्म लागें ते उदें आवें जब, भव भव में दुख उपजें आंणो ॥ ४२ ॥
किंपाकफल तो एक भव दुखदाइ, कांम नें भोग भव भव में दुखदायो ।
ते कांम नें भोग श्रावक नें सेवायां, धर्म नें मिश्र किहांथी थायो ॥ ४३ ॥
किंपाकफल खवावें तिणनें, ववेक विकल जांणें मित्री छें म्हारो ।
जे चतुर विचषण डाहा हुवें ते, वेंरी जांणें घात रों करणहारो ॥ ४४ ॥
ज्यूं कांम नें भोग भोगवावें छें तिणनें, ववेक रा विकल जांणें ओ मित्री छें रूडो ।
जो चतुर विचषण डाहा हुवें ते, पाप कर्म रो दाता वेंरी जांणें पूरो ॥ ४५ ॥
श्रावक तो जीवादिक पदार्थ जांणें, वले सावद्य निरवद भिन भिन पिछांणे ।
ते तो श्रावक मांहोमां जीमें जीमावें, तिणमें धर्म तणो अंस कदेय न जांणें ॥ ४६ ॥
श्रावक रा कांम भोग शब्दादिक छें त्यांनें, किंपाकफल री ओपमा जांणी ।
तीनां करणां नें पाप जांणें छें एकंत, तिण श्री जिण आग्या नें रूडी पिछांणी ॥ ४७ ॥
रूंख बाढण नें साध कूहाडो दीधो, तिण कुहाडा सूं रूंख बाढें छें आंणो ।
रूंख बाढें तिणनें साज दीयो छें, त्यां दोयां नें एकंत पापज जांणो ॥ ४८ ॥
धांन पीसण नें साझ घरटी दीधी, तिण घरटी सूं धांन पीसें छे आंणो ।
धांन पीसें तिणनें साझ दीयो छें तिणनें, यां दोयां नें एकंत पापज जांणो ॥ ४९ ॥
गांम बालण नें साझ अगन रो दीधो, तिण अगन सूं गांम बाले छें आंणो ।
गांम बालें तिणनें साझ देवें तिणनें, यां दोयां रो लेखो बरोबर जांणो ॥ ५० ॥
इत्यादिक अनेक सावद्य रो साझ देवें छें, तिण सूं सावद्य काम करें छें जांणो ।
सावद्य करें तिण नें साझ दीयो छें तिणनें, यां दोयां नें एकंत पाप पिछांणो ॥ ५१ ॥
ज्यूं श्रावक नें साझ असणांदिक रो दीधो, ते असणांदिक भोगवें अन पाणो ।
खायें पीयें तिणनें साझ दीयो छें तिणनें, यां दोयां रो लेखो बरोबर जांणो ॥ ५२ ॥
पाप करण रो साझ देसी तिणनें, एकंत पाप लागें छे आणो ।
पाप रो साझ दीयां नहीं धर्म नें मिश्र, समझो रे समझो थें मूंढ अयांणो ॥ ५३ ॥
विरत इविरत पोषी कहो श्रावक जीमायां, तो मिथ्याती पोष्यां इविरत पोषी जांणो ।
इविरत पोष्यां एकंत पाप उघाडो, तिणरी पिण मूरख करें छें तांणो ॥ ५४ ॥
तो मिथ्याती नें पोष्यां मिश्र किण लेखे, इणरी तो एकंत इविरत पोषांणी ।
इविरत पोष्यां रो थें पाप बतायो, हिवे मिश्र कठा थी आयो अयांणी ॥ ५५ ॥

श्रावक भोगवें छें दरब अनेक, ते तो एकंत इविरत मांहें जांणो।
जीमावण वालों पिण इविरत में जीमावें, तिणमें .धर्म नही छें रे मूढ अयांणों ॥ ५६ ॥
श्रावक जीमायां नें मूढ मिथ्याती, विरत नें इविरत दोनूं पोषांणी जांणें।
जिण मारग रा अजांण अग्यानी, पीपल बांधी मूरख जिम तांणें ॥ ५७ ॥
श्रावक रा शब्दादिक भोग ओलखावण, जोड कीधी पाली सहर मभार।
सवत अठारे नें वरस बावनें, आसोज विद अमावस सोमवार ॥ ५८ ॥

ढाल : १६

दुहा

भेषचारी भूला जिण धर्म थी, ते कहे छें मिश्र दांन।
सूतर विण करे छें परूपणा, त्यांरां घर मांहें घोर अग्यांन॥ १ ॥
सूतर ठाणांग तेह में, दस दांन कह्या भगवांन।
गुण निपन त्यांरा नांम छे, पिण मिश्र न कह्या जिण दांन॥ २ ॥
देवा नो नांम दांन छें, लेवा रो नांम लाभ।
मिश्र दांन ने मिश्र लाभ नों, कठे नही सूतर में जाव॥ ३ ॥
मिश्र दांन उठाय वेठों कीयो, त्यांरी सरधा नहीं छें सुध।
ते तो माठी मत रा मांनवी, त्यांरी भिष्ट हुइ छें वुध॥ ४ ॥
सावद्य निरवद दोनूं दांन चालीया, सुतर में ठांम ठांम।
मिश्र दांन पाषंडीयां परूपीयों, भूठा ले ले सूतर रो नांम॥ ५ ॥
निज मत उथपतों जांण ने, थाप्यों छें मिश्र दांन।
त्यांरी खोटी सरधा परगट करूं, ते सुणो सुख दे कांन॥ ६ ॥

ढाल

[रे भवियरा सेवो रे]

दुरवल दुखीया री अणुकंपा आंणे, तिणनें दे ते अणुकंपा दांन।
तिग दांन नें मिश्र दांन कहें त्यांरो, भिष्ट हुवो विगनांन रे।
भवियण मिश्र दांन कोइ मत मांनो, ओ गूढ मिथ्यात छे छांनो रे। कुमत्यां*।
आ सरधा छें जहर समांनों॥ १ ॥

तिणनें सचित अचित दोनूंइ देवें, छ ही काय हणी दें कोय।
यो दांन संसार नो दीसे उघाडो, तिण में मुगत रो भेल न होय रे।
मिश्र दांन कठा न थी काढयों, इण मिथ्यात थी जगत ने दाढ़यों रे। कु०।
आत्मा नें कलंक कांय चाढयो रे॥ २ ॥

वंदीवांनादिक नें दांन दे तिणनें, संग्रह दांन कह्यो जिण आप।
तिण दांन नें मिश्र दांन कहे, तिण वीर ना दीया वचन उथाप रे॥ ३ ॥

ओ पिण दांन संसार नों तिण में, मोष मारग रो भेल नहीं।
कोइ चतुर विचषण डाहा हुवें ते, विचार देखों मन मांही रे॥ ४ ॥

भय रो घालीयों दांन दे तिणनें, भय दांन कह्यो भगवांन।
ए एकंत दांन संसार तणो छें, तिणनें मूढ कहे मिश्रदांन रे॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ग्रह करडा जांण भय रो घाल्यों, देवें थावरीयादिक रें हाथ।
तिणमें जिण धर्म रो भेल बतावें, तिणरे बुकसीयों मिथ्यात रे॥ ६ ॥
खरच करें मूआं रें केडें, ते तो चोथो कालुणी दांन।
ए तो एकंत दांन संसार नों तिण सूं, वधे लोकां में मांन रे॥ ७ ॥
ए दांन संसार तणों किरतब छें, तिणमें मोष रो मारग नांही।
तिणमें तो मोष रा मारग रो भेल बतावें, ते तो भूल गया भर्म मांहीं रे॥ ८ ॥
सांकडें पडीयो दे लज्या रो घाल्यों, तिणनें जिण कह्यो लज्या दांन।
तिण दांन नें मिश्र दांन कहें त्यारें, घट मांहे घोर अग्यांन रे॥ ९ ॥
सासरा में जमाइ लज्या तणें वस, देवें जाचकादिक रे तांई।
ओ पिण एकत दांन संसार तणों छें, तिणमें जिण धर्म रो भेल नांही रे॥ १० ॥
देवें रावलीया भांड भवइयादिक नें, भोपादिक नें देवें घर मांन।
मुकलावों पेंहरावणी देवें मूसालों, गरब सूं देवें ते गरब दांन रे॥ ११ ॥
ओ एकंत दांन संसार नो, तिणमें संवर निरजरा नहीं अंसमात।
इणमें मोष रा मारग रो भेल बतावें, तिण पडिवजीयों मिथ्यात रे॥ १२ ॥
गणिकादिक नें दांन देवें छें, कुसीलादिक सेवण कांम।
ओ तो दांन उघाडो सावद्य, अधर्म दांन छें तिणरों नांम रे॥ १३ ॥
आठमो धर्म दांन छें मोष रो मारग, तिण सूं उतर जायें भव पार।
सासता सुख पांमे सिव रमणी रा, तिणरो सांभलजो विसतार रे॥ १४ ॥
आपे ग्यांन दरसण चारित नें तप, तिण सूं पांमें पद निरवांण।
ए च्यारूंइ दान धर्म दांन में घाल्या, केवल ग्यांनीयां ग्यांन सूं जांण रे॥ १५ ॥
छ ही काय हणवां रा त्याग करें छे, ते अभेदान कह्यो जिण राय।
तिण सूं आवता पाप कर्म रुक जावें, तिणने घाल्यो धर्म दांन रे मांय रे॥ १६ ॥
निरदोषण दरब साधां ने देवें, तिणने कह्यों सुपातर दांन।
तिण दांन नें पिण धर्म दांन में घाल्यो, भगवंत श्री विरघमांन रे॥ १७ ॥
छ काय हणवा रो त्याग करें छें, सुपातर दांन देवे छे तांम।
आपे छें ग्यांन दरसण ने चारित, धर्म दांन छें तिणरों नांम॥ १८ ॥
हांती नेहतादिक देवें सेण सगां ने, नेंहत घालें वनोला दें तांम।
तिण पाछो लेवा री आसा सूं दीधो, कायती दांन तिणरो नांम रे॥ १९ ॥
हांती नेंहतादिक देवे सेण सगां ने, नेहत घाले बनोला दे तांम।
पेंहलां दीधो त्यानें पाछों देवें छे, कतंती दांन तिणरो नांम रे॥ २० ॥
आंमी साह्मी हांती देवे जीमे जीमावे, नेंहत पिण घालें आंमी साह्मी।
ए तो एकंत दांन संसार ना दोनूं, लेवा ने देवा रा छे कांमी॥ २१ ॥

नवमों दसमों दांन देवो नें लेवो, ख्याल छें धुर वोहरा वालों।
तिणमें जिण धर्म रों भेल बतावें, तिण सरधा रो कीजो टालो रे॥ २२॥
ए दस विध दांन कह्या भगवंते, मिश्र दांन कह्यों नहीं एक।
केइ आठ दांनां नें मिश्र कहें छें, ते बूडें छें विनां ववेक रे॥ २३॥
त्यारें बडा बडेरा आगें हुआ त्यां, मिश्र दांन कह्यों दीसें नांही।
मिश्र दांन परूपें बडां नें विगोया, पडीया पाषंड पंथ रें मांहीं रे॥ २४॥
मिश्र दांन रों थापण वालो, झूठ बोलतों संक्यों नांही।
झूठी २ साख सूतर री दीघी छें, पिण नहीं छें सूतर रे मांहीं रे॥ २५॥
सूयगडाअंग इग्यारमें अधेनें, तिणरी साख दीधी ते कूडा।
जो तिण ठांमें मिश्र दांन न काढें, तो मूंढे पडसी धूड रे॥ २६॥
सूयगडाअंग दूजें पांचमें अधेनें, मिश्र दांन कहें छें तांम।
बतीसमी गाथा री साख दीधी छें, साचा हुवें तो काढों तिण ठांम रे॥ २७॥
जो तिण ठांमें मिश्र दांन काढों, तो सरधा फेन फितूरों।
केइ चतुर विचषण डाहा होसी ते, थांरो जांण लेसी मत कूडो रे॥ २८॥
आठ दांनां में मिश्र दांन बतावें, ठांणाअंग दसमें कहें तांम।
जो साची साख सूतर री दीधी हुवें तो, काढ दिखावो तिण ठांम रे॥ २९॥
वले तीजा ठांणा री साख देइ नें, कहें छें मिश्र दांन।
जो तिण ठांमें मिश्र दांन न काढें, तो यूंही बकें जिम स्वांन रे॥ ३०॥
वले घणा सूतरां नांम बतावें, मिश्र दांन कहें छें साष्यात।
जो किण ही सूतर में मिश्र दांन न काढें, तो सरधा छे झूठ मिथ्यात रे॥ ३१॥
मिश्र दांन परूपण वालें, घणा जीवां नें विगोया।
वले सिष सिषणी छें निज पोता रा, त्यांनें तो जावक वोया रे॥ ३२॥
मिश्र दांन नें मिश्र धर्म, ए तो सूतर मांहे न चाल्या रे।
भारीकर्मा जीवां रें उसभ उदे सूं, ए तो घोचा अणहूंता घाल्या रे॥ ३३॥
मिश्र दांन कहो भावे मिश्र धर्म कहों, ए तो परमारथ एक।
मिश्र दांन होसी तो मिश्र धर्म छें, समझों आंण ववेक रे॥ ३४॥
किणही मिश्र दांन तो कह दीयो चोडें, तिण कह दीयों मिश्र धर्म।
हिवें मिश्र दांन तो कहितां न लाजें, मिश्र धर्म कहितां आवें सर्म रे॥ ३५॥
सावद्य दांन नें निरवद दांन, दोनूं दांन तो सूतर माह्यो।
पिण मिश्र दांन सूतर में नांहीं, ओ तो गाला सूं गोलो चलायो रे॥ ३६॥
आठ दांनां नें पिण सावद्य कहें छें, वले सावद्य में सरधें छे दोय।
सावद्य कह्यो तिण अधर्म कह्यो छें, ते पिण विकलां नें खवर न कोय रे॥ ३७॥

मिश्र दांन कहे तिणरी सरधा रें लेखें, सावद्य दांन न कहणो।
मिश्र सावद्य के मिश्र निरवद कहिणो, पुछयां रो जाब सुधो देणो ॥ ३८ ॥
सावद्य नें तो मिश्र कहितां लाजे, निरवदनेइ मिश्र कहितां लाजें।
दान मिश्र कहितां नही लाजें, ते तो पिंडत भोलां में बाजे रे ॥ ३९ ॥
सावद्य खोटों नें निरवद आछों, आ तो सरधा छें सूधी।
सावद्य मे धर्म ने पाप सरधे, अकल तिणां री उंधी रे ॥ ४० ॥
सावद्य किरतब ने अधर्म जांणो, अधर्म नें सावद्य जांणो।
सावद्य मे कोइ मिश्र जांणे छे, ते बूडें छें कर कर तांणो रे ॥ ४१ ॥
सावद्य कह्यो तिण कह दीयो अधर्म, निरवद कह्यों तिण कह दीयो धर्म।
पिण पोता रा बोल्या री समभ न पोतें, ते तो भूला अग्यानी भर्म रे ॥ ४२ ॥
असणादिक दातार देवें छे, तिणने दान कह्यो जिणराय।
तिणमें पातर में पुन कुपातरे पाप, ते तो जोय लों सूतर माय रे ॥ ४३ ॥
अन्न पाण पुने लेण ने सेण पुने, वत्थ पुने कह्यो जगनाथ।
यांनें मिश्र कहसी कोइ मूंढ मिथ्याती, तिणरी प्रतष भूठी बात रे ॥ ४४ ॥
अन्न मिश्र पाण मिश्र न चाल्यो, लेंण ने सेण मिश्र नांही।
वत्थ मिश्र भगवंते न भाख्यो, जोवो सूतर रे मांही रे ॥ ४५ ॥
ए पांचूं बोला मिश्र दांन हुवे तो, आश्रव संवर मिश्र होय जाय।
वले निरजरा पिण मिश्र होय जावें, जोवो सूतर रें माय रे ॥ ४६ ॥
आठ दांन देवण री भावना भावें, तिणरा किसा अधवसाय परिणांम।
तिणरी लेस्या किसी नें ध्यांन किसो छे, च्यारां मांयलो कह द्यो ताम रे ॥ ४७ ॥
ध्यांन लेस्या अधवसाय परिणांम, ए तो मिश्र चाल्या नही कोय।
ए च्यारूं भला कें च्यारूं भूंडा छें, मिश्र हुवें तो बतावो मोय रे ॥ ४८ ॥
ए आठूइ दांन संसार ना दांन, त्यामे सवर निरजरा नांही।
यामे मोष रा मारग रो भेल बतावे, ते तो खूता संसार ने मांही रे ॥ ४९ ॥
पातर कुपातर हर कोइ ने देवे, तिणने कहीजे दातार।
तिणमें पातर दान मुगत रो पावडीयों, कुपातर सूं रूले संसार रे ॥ ५० ॥
खिम्यां सूरा कह्या अरिहंता, तवे सूरा कह्या अणगार।
दांने सूरा कह्या वेसमण देवता ने, जूभे सूरा वासुदेवा धार रे ॥ ५१ ॥
यामे दोय सूरा तो संसार ना सूर, ते तो जस कीरत रा कांमी।
बाकी दोय सूरा निज आतम जीते, कर्म काटें हुवें सिव गामी रे ॥ ५२ ॥
संसार नो दांन ने मुगत रो दांन, पिण मिश्र दांन न कोय।
मोष रा दांन सूं हुवें संवर निरजरा, संसार ना दांन सूं आश्रव होय रे ॥ ५३ ॥

आठ दांन री साध परसंसा करें तो, छ काय रों वध वंछणहारो।
देण वाला रे फल लागें ते, बुधवंत लेजों विचारो रे॥ ५४॥
ए बावीस टोलां नें साध कहें छें, ते पिण मिश्र दांन न मानें।
मिश्र दांन कहें तिणनें झूठो जांणें छे, सुध सरधा सूं कर दीयो कांनें रे॥ ५५॥
अधर्मी जीवां नें दांन देवें छें, ते एकंत अधर्म दांन।
धर्मी नें दांन निरदोषण देवे, ते धर्म दांन कह्यों भगवांन रे॥ ५६॥
सुपातर नें दीयां ससार घटें छें, कुपातर नें दीयां वधे संसार।
ए वीर वचन साचा कर जांणों, तिणमें संका नही छे लिगार रे॥ ५७॥
संसार ना दांन नें साध परसंसें, तिणनें कह्यो छ काय रों घाती।
तिणमे मुगत रा मारग रो भेल बतावें, ते तो पूरा छे मूंढ मिथ्याती रे॥ ५८॥
जोड कीधी मिश्र दांन निषेदण, सोझत सहर मझारो।
संवत अठारे ने वरस तेपने, सावण सुदि छठ नें सोमवारो रे॥ ५९॥

ढाल : १७

दुहा

भेषधारी भूला फिरे जेन रा, बाजे लोकां मे अणगार।
ते धर्म कहे हिंसा कीयां, ज्यांरी जीभ बहे ज्यूं तरवार ॥ १ ॥
ते खोटी करे छे परूपणा, जावक सूतर विरुध।
त्या जिण मारग नही ओलख्यो, त्यांरी भिष्ट हुइ छे बुध ॥ २ ॥
जीव दया त्यांरा घट में नही, हिसा रो उपदेस दे तांम।
त्यांरो उपदेस सुणे छे तेहनों, रहे जीव मारण रा परिणाम ॥ ३ ॥
सावद्य दांन संसारी जीवां तणों, तिणमें छ ही काय री घात।
तिणमे धर्म ने पुन परूपता, पापी सके नहीं तिलमात ॥ ४ ॥
वेरी उठ्यां छें पापी छ काय ना, धर्म कहि कहि हणावे छ काय।
किण विध करें छे परूपणा, ते सुणजो चितल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[श्रा श्रनुकम्पा जिरा श्रागन्या मे]

छ काय रा पीहर बाजे लोकां मे, पिण सानी करे छ ही काय ने मरावे।
छ काय हणे कोइ दांन देवे छे, तिण में एकत धर्म ने पुन वतावे।
आ सरधा केइ भेष धारयां री ॥ १ ॥
मुरड माटी खडी आदि अनेक पृथवी छें, त्यारी जूदी जूदी दांन साला मडावे।
दगचाल पाड्यां त्यांरो दांन देवें छे, तिण में एकत धर्म ने पुन बतावे ॥ २ ॥
कूआ बाव खणावे तलाव खोदावे, अथवा पाणी री पिण पो मंडावें।
दगचाल पाड्यां दांम देवे पांणी रो, तिण मे एकत धर्म ने पुन बतावे ॥ ३ ॥
अगन रा खीरां भोभर ने भरसाड, इत्यादिक अगन री दानसाला मंडावे।
दगचाल पाड्यां दान देवे अगन रो, तिण मे एकंत धर्म ने पुन वतावे ॥ ४ ॥
आया गया ने वायरो घालण, वीजणां री दानसाला मडावे।
दगचाल पाड्या सहु ने वायरों घालें, तिण में एकंत धर्म ने पुन वतावे ॥ ५ ॥
प्रतेक ने साधारण वनसपती री, त्यांरी जुदी जुदी दांनसाला मंडावे।
दगचाल पाड्यां दांन देवे वनसपती नो, तिण में एकत धर्म नें पुन वतावे ॥ ६ ॥
लावा तीतरादिक तस जीव अनेक, त्यांरी जुदी जुदी दांनसाला मंडावे।
तस जीव रो दांन देवें दगचाल, तिण मे एकंत धर्म नें पुन वतावे ॥ ७ ॥

अथवा छ काय जीवां नें जीवां हणे नें, त्यारीं जुदी जुदी दांनसाला मडावें।
दगचाल पाड्यां दांन देवें जीव हणी ने, तिण में एकत धर्म नें पुन बतावें॥८॥
कोइ छ काय जीवां रो गटकों करावें, अथवा छ काय मारे ने खवावें।
ओ जीव हिंसा नों राहज खोटों, तिण में एकंत धर्म नें पुन बतावें॥९॥
कोइ श्रावक री अणुकंपा आंणी नें, कोरी नीलोती सचित खवावें।
अथवा नीलोती रांध खवावें, तिण में मूरख धर्म बतावें॥१०॥
बेगण बालोदिक अनेक नीलोती, राध रांध जीमावें श्रावक जांणी।
तिण मे इ धर्म कहे भेषधारी, त्यांरी भाषा छें जांणें बहती घाणी॥११॥
गाजर मूला ने सकरकंद कांदा, इत्यादिक जमीकंद श्रावक ने खवावे।
अथवा जमीकंद नें रांध रांध खवावें, तिण माहें धर्म अनारज बतावें॥१२॥
केइ बेगण बालोदिक भडथा करे नें, श्रावक ने जीमावण त्यारी कीधा।
तिण मे भेषधारी धर्म बतावे, त्या नरक सूं डेरा सनमुख दीधा॥१३॥
कोइ धर्म जांणे श्रावक रे काजें, कोरी कवली नीलोती छमक वघारी।
तिण माहे दुष्टी धर्म बतावे, त्यारें नरक जावा री हुइ तयारी॥१४॥
श्रावक ने नीलोती विवध प्रकारें, कोरी काची खवावे वघार धूगारी।
तिण मांहे धर्म कहें भेषधारी, त्यांरी भव भव में होसी घणी खवारी॥१५॥
कोइ कोडां मण जमीकंद रांधी नें, श्रावक श्रावक ने देवें अणुकंपा आणी।
तिण दातार री लेस्या नें भली कहें छें, केइ भेषधारी बोलें एहवी वांणी॥१६॥
श्रावक नें उन्हों पांणी कर पावे, वले पावें काचो अणगल पांणी।
तिण में धर्म कहें भेषधारी अनारज, त्यांरी जीभ बहें जाणें बहती घाणी॥१७॥
श्रावक री अणुकंपा आंणी नें, खपें सो देवें अणगलीयो पाणी।
हरकोइ कांम करवा रें काजें, तिण में धर्म कहें छें मूंढ अयांणी॥१८॥
श्रावक ने कल्पें ते वस्त दीयां में, धर्म कहें भेषधारी दिढाय दिढाय।
श्रावक तो हरकोइ वसत लेवें छें, आ पिण विकलां नें समभ न कांय॥१९॥
श्रावक तो वसत इविरत मे लेवें छे, देवाल पिण इविरत में दीधी।
इण बात रो निरणों कीयां विण विकलां, खोटी खोटी परूपणा पापीयां कीधी॥२०॥
अंबडना सिष्य सातसों हुंता, त्यानें काचा पाणी री आगन्यां दीधी।
तिण माहे धर्म कहें भेषधारी, आ पिण खोटी परूपणा कीधी॥२१॥
आगन्या रे देवाल तो निसंक पणा सूं, सर्व नदी री आगन्या दीधी छें तांम।
सर्व नंदी री आगन्या दीधी छें तिण रा, भेषधारी कहें चोखा परिणाम॥२२॥
असंख्याता जीव तो पांणी तणा छें, वले नीलण फूलण रा जीव अनंत।
त्यारो गटकों करण री आगन्या दीधी, तिण नें भेषधारी धर्म भाखंत॥२३॥

काचा पाणी री आगन्या दीधी छे तिणनें, साधु तो त्रिविधे त्रिविधे नही सरावे।
भेखधारी भागल सरधा रा मिष्टी, ते निसंक पणे तिण ने धर्म बतावे ॥ २४ ॥
जिण भाषीया तो सूतर बांचे, वले लोकां में जेंन रा साध बाजे।
नंदी रा पांणी री आगन्या दीधी, तिण नें धर्म कहितां मूल न लाजें ॥ २५ ॥
कोडां मण काचो अणगल पांणी, तिणरी आगना देवे हर कोइ।
तिण मांहें पुन कंहे भेषधारी, त्यां मांनव नो भव दीधो खोइ ॥ २६ ॥
जीव खवायां में पुन परूपें, त्यां विकलां री सरधा छे जेहर समांन।
तिण सूं आप डूबे अनेरां नें डबोवे, ते भव भव मे होसी घणा हिरांन ॥ २७ ॥
जीव खवायां मे पुन परूपे, आ तो सरधा उठी जठाथी भूठी।
पर जीव री पीडा न ओलखी त्यांरी, त्यारी हीया नीलाड री दोनूंइ फूटी ॥ २८ ॥
जीव खवाया में पुन परूपे, त्यां दुष्टयां ने कहिजे निश्चे अनारज।
त्यारी जीभ बहे तरवार सूं तीखी, त्यां विकला रा किण विध सीभसी कारज ॥ २९ ॥
जीव खवायां में पुन परूपे, वले चिठाय चिठाय नें बोले सेठा।
ते दया रहीत छें दुष्ट अनारज, नरक निगोद रा प्रावण होय बेंठा ॥ ३० ॥
जीव खवायां पुन कहे जेनी होय ने, ते नरक निगोद नें त्यारी हुवों।
समकित श्रावक नें साध पणों हुवे, त्यारे तीनूंइ बोलां में उठीयो धूंओ ॥ ३१ ॥
जीव खवायां में पुन परूपे, त्या सुध बुध अकल ने जाबक खोइ।
इण सरधा सूं नरक में भीका खासी, तिहां छोडावण वालो नही छे कोइ न कोइ ॥ ३२ ॥
जीव खवायां में पुन परूपे, त्यांरे बाहला तणो पडजाय विजोग।
वले दुसमन रो जोग मिलसी तिणां ने, वले वधतो जासी त्यारे रोग ने सोग ॥ ३३ ॥
जीव खवाया पुन कहे भेषधारी, मुहपती बांधी री पिण वरग न बूहां।
पापीया जेन रो भेष लजायों, विरत विहूणा नागडा निरलज हुआ ॥ ३४ ॥
जीव खवायां में पुन परूपे, त्यांने पूछ्यां थकां पलटे जावे वांणों।
छांने छाने तो सरधा सीखावें, त्यांरी सरधा ने जार गरभ जिम जांणो ॥ ३५ ॥
जीव खवायां में पुन परूपे, ते सीह तणी परे कदे न गूंजें।
परगट कहितां भूंडा दीसे, त्यांने प्रश्न पूछ्यां गाडर जिम धूजें ॥ ३६ ॥
जीव खवायां पुन कहे त्यांरी सरधा, चोडे निसंक सू निश्चेइ उधी।
ते जेंन तणा विगडायल पापी, त्यांरी भाषा पिण किण विध नीकले सूंघी ॥ ३७ ॥
कदे तों पुन कहे जीव खवायां, कदे कहें जीव बचायां पुन।
यां दोयां रो निरणो न कीयो विकलां, यूं ही बके गेहला ज्यूं हीयासून ॥ ३८ ॥
चोर चोरी री वसत छानें छानें बेचे, चोडे धाडें तिण सूं वेचणी नावे।
ज्यूं जीव खवायां पुन कहे त्यांसूं, चोडे लोकां में वतावणी नावे ॥ ३९ ॥

जीव खवायां पुन परूपें, त्यांरी सरधा अतत छे माठी सूं माठी।
आ उंधी सरधा बेंठी उसभ उदें सू, त्यांरी सुध बुध अकल जाबक गइ न्हाठी ॥ ४० ॥
जीव खवायां पुन कहें त्यांरी सरधा, मांस अहारी ने हिसा धर्म्यां सूं मिलती।
एहवा अनारज तो आ सरधा सरासी, पिण जिण मारग सूं तो जाबक टलती ॥ ४१ ॥
जीव खवायां पुन कहें ते पापी, पाधरा नरक निगोद में जासी।
तिहां छेदन भेदन विवध. प्रकारे, वले मार मे मार अनती खासी ॥ ४२ ॥
जीव खवायां पुन कहें त्यां पापीयां नें, तातो ताबो उकाल नें नरक में पासी।
वले जीभ काढसी त्यांरी जड सूं तांणी नें, खाल उतार नें वले खार लगासी ॥ ४३ ॥
जीव खवायां पुन कहे भेषधारी, त्यांनें नरक री मार रों छेह न पारों।
छदमस्थ सूं पूरी कहणी न आवें, पल सागरा लग खासी मारों ॥ ४४ ॥
ते नरक मांसूं नीकल नें पापी, पछे रुलतो रुलतो निगोद में जासी।
तिहां जन्म नें मरण करसी अनंता, अनतों काल तिहां दुख पासी ॥ ४५ ॥
नरक निगोद ने तिरजंच गति मे, आमां साह्मां घणा गोता खासी।
तिणरी मार तणो छेह वेगो न आवे, अनंतो काल तिहां दुख पासी ॥ ४६ ॥
नरक निगोद सूं नीकल नें पापी, नीठ नीठ नर नो भव पासी।
घणो दो भागीयों ने दलदरी होसी, तिणनें निजरां दीठां पिण किण ने न सुहासी ॥ ४७ ॥
उगता रा मात पिता मर जासी, वले बाहलां तणो पड जासी विजोग।
दुसमण तणों संजोग आए मिलसी, वले वधतो जासी तिणरे रोग नें सोग ॥ ४८ ॥
जीव खवायां पुन कहें भेषधारी, त्यां दुष्टया री रुगत दूर निवारो।
दया धर्मी री संगत कर नें, तिरण तारण गुर माथें धारो ॥ ४९ ॥
वले कहि कहि नें कितरा एक केहूं, जीव खवायां पुन कहे त्यारा दुख।
ते भमन करसी अरट घटकारे न्याये, तिण पापी नें किण विध होसी सुख ॥ ५० ॥
हिंसाधर्मी ओलखावण काजें, जोड कीधी पाली सहर मझारे।
संवत अठारे ने पचावनें वरसें, आसोज सुद एकम . नें बुधवारे ॥ ५१ ॥

ढाल : १८

दुहा

केइ भेषधारी भागल थया, त्यांरी भिष्ट हुइ सुघ वुघ।
त्यां पेट भरण रे कारणे, कीघी परूपणा असुघ॥ १ ॥
ग्रहस्थ लाडू आदि मोल आंण नें, अथवा घरे नीपाए तांम।
ते जीवावे त्यांरा श्रावकां भणी, तिणरो दया दीयों छे नांम॥ २ ॥
एहवो धर्म सीखायों श्रावकां भणी, तिण सूं उलटा बांधे छे कर्म।
जेंसा कूं तेसा मिल्या, भूला अग्यांनी भर्म॥ ३ ॥
लाडू खवायां धर्म परूपीयो, ते आप रे मुतलव कांम।
रस गिघी जीभ्या रा लोलपी, यारें आछा खावां री मन हांम॥ ४ ॥
दया पलाइ मुख सूं कहे, पिण प्रतप दीसें गोठ।
तिण गोठ रो नांम दया दीयों, ते चोडें चलायो खोट॥ ५ ॥

ढाल

[रे भवीयण सें०]

केइ दया पलावण चोखां रे तांइ, मूसलां सूं साल खंडावे।
एकीका मूसलरें धमकें, असंख्याता वाउकाय मर जावे।
रे भवीयण आ दया कठा थी काढी, ओछा वेवज पेट रें कारण।
जिण धर्म तणी वरत वाढी रे, थे समझाया पिण समझो नांही।
थारें चोकडी दीसें जाडी रे*॥ १ ॥
जंबूदीप भरें तिजारा रा दांणां थी, ते तो गिणती रा जीव असंख्यात।
तिण थी असंख्यात गुणा वाउ रा जीवां री, एकें धमके हुवें घात रे॥ रे० २ ॥
पछें छाज में घाले झाटक पछाटे, तुसनें चावल करे जुआ।
तिहां पिण एकीका छाज रें फरके, असंख्याता वाउकाय मूआ रे॥ ३ ॥
दया पलावण चोखा पीसें ते, घरटी नें धमकावें।
एकीका घरटी रा फेरा में, असंख्याता वाउकाय मर जावे॥ ४ ॥
वले घरटी फेरयां तेउकाय उठें छें, तिण अगन तणी हुवे घात।
एकीका घरटी रा फेरा में, तेउकाय मरे असंख्यात रे॥ ५ ॥
वले मेदां में घी ऊन्हों करे घाले, तिहां तेउ तणी हुवें घात।
खांड घाले दया रा लाडू वणावे, तठे दया नही तिलमात रे॥ ६ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

केइ लाडू भुजीया नें मुरमुरीयां, दया पालण ने मोल मंगावें ।
ओ पिण क्रय विक्रय नों दोष छे भारी, अठें पिण हिंसादिक थावें रे ॥ ७ ॥
वले दया पलावण नें सूंठ भीजोवे, वले अथाणो मोल मंगावें ।
वेंसवास्या भूंगडा पिण ल्यावें, केइ पापड पिण सेकावें रे ॥ ८ ॥
हलवाइ तो लाडू मोल बेचण कीधा, मोल लेवें त्यारें आधाकर्मी ।
एहवा लाडू खावे खवावें, त्यांनें निश्चे जांणो अधर्मी रे ॥ ९ ॥
गांम परगांम थी दही मोल मंगावें, नदी वाहला उलंघी ल्यावें ।
नीलण फूलण रा जीव मारें अनंता, पांणी फूंवारादिक मास्या जावे ॥ १० ॥
वले जातां नें आवतां नीलो चीथ्यो, तस थावर तणी हुवें घात ।
वाउकाय मरें उघाडें मुख वोल्यां, तठे पिण दया नही तिलमात रे ॥ ११ ॥
साध साधवीयां नें श्रावक श्रावकां रो, सारां रो भेलों बांधें तुमार ।
दया पलावण धर्म रे लेखें, इण विध नीपजावें आहार रे ॥ १२ ॥
मुदें तो रातां हाथ री बायां बुलावें, आप म्हांरें आंगण पधारो ।
थें दया धर्म रा लाडू खाय नें, म्हांरा जीवां रो करो उधारो रे ॥ १३ ॥
ए तो निरलजीयां इण कांमां ने बेंठी, ते तो सुणनें हरषत थावें ।
पेलां रे घरे जाय उमाइ, दया धर्म रा लाडू खावें रे ॥ १४ ॥
भेषधास्यां नें घर सूं जाय बोलावें, म्हांरें घरे आप पधारों ।
बारमो वरत नीपजावों म्हारें, तिणसूं म्हांरो होसी उधारो रे ॥ १५ ॥
त्यांनें तेड्यां ततकाल जावें तिण घर, जांणे डोरी तांण्यों स्वांन ।
ताजे आहार तूटा पडें पापी, यारें पेट भरण रो तांन रे ॥ १६ ॥
लाडूआं री दया तो यांहीज सीखाइ, ते तो आधों काढसी केम ।
ए सगला लाडू खाए ते वेहरे, पूरे मन रा मनोरथ एम रे ॥ १७ ॥
बायां नें लाडू दया रा खवायां, त्यांसूं उपवास रो करे करार ।
भेषधास्यां नें लाडू तेड बहराया, त्यांसूं करार न कीधों लिगार रे ॥ १८ ॥
लाडू खाती खाती लेवे दही रा सबडका, सवाद सूं खावे मुरमुरी भुजीया ।
धर्म रा लाडू खाती नही लाजें, ते तों छोडो लोकीक री लजीया रे ॥ १९ ॥
उपवास री वांथवा कर लाडू खवावें, ते खावा री ओछ राखें किण लेखें ।
भीकों उडावे लाडू खावारों, चांप चांप खावें वशेखे रे ॥ २० ॥
ताजी ताजी वसतां खावे ग्रिधीपणा सूं, जो एक वसत मांहें हुवे कजी ।
तो भांड ज्यूं भांडें तिणनें भांडोंकाडीयां, तिणरी निंदा करें निरलजो रे ॥ २१ ॥
ताजों आहार सराय सराय नें खावे, ते तो कर्म तणा पूंज बांधें ।
त्यां विकलां नें जीमायां धर्म जांणें, तिण धर्म न ओलख्यो आछे ॥ २२ ॥

आछो आछो खाये तिणरी दया सुधारे, उणी रहे तो उवा दया बिगाडें।
एहवी रस ग्रिधणीयां जीभ्या री लपटण, ते पेला नें कदेय न तारे रे॥ २३॥
मिनष आंतरीयो घुरल कें जूतों, तिण उपर दया पलावे।
उणरें प्रांण छुटण री त्यारी हुइ छे, तिण घर बेठी लाडू खावें रे॥ २४॥
उण मांदा तणा सुर बाज रह्या छे, दोहरा लेवें छे सांस उसांस।
ए लाडू खाती दही रा लेवे सबड़का, वले मन मे आंण हुलास रे॥ २५॥
तिण मादा नें तिण दिन मरतों जांणें ने, लाडू दही तिहां थी उठावे।
दूजे टक खावा रे तांइ, ओर जायगा आंणे नें खावें रे॥ २६॥
मिनष आंतरीयो घुरलके जूतो, तिणरा मुख सूं दया बोलावे।
ते मूंआ पछे तिणरा न्यातीलां रे घर, घूरलाका रा दांन रा लाडू खावे रे॥ २७॥
एहवी रीता हाथा री बायां बारणें बेंसाणे, त्यांनें जीमाया भलो न होगा।
ए प्रतप कुसावण दीसें लोकां रे लेखें, जांणे मांदा उपर नाचें मोगा॥ २८॥
मंजारी जिम फिरती रहे छे, जीमणवार री खबर रें तांइ।
आछा खावा रो ध्यान लग रह्यों त्यारो, तांणां बेजा लागा तिण मांहीं॥ २९॥
किणरे आरो मोसर जीमण करतां, बारदांनो वधीयो सुणें ताय।
जब रस ग्रिधणीयां जिभ्या री लपटण, तिण दोली फिरें छें जाय॥ ३०॥
कहे मोनें लाडू खवाय नें दया पलावें, थाने इण बात रो होसी धर्म।
म्हे लाडू खाय ने उपवास करस्या, तिणसूं थारे पिण कटसी कर्म॥ ३१॥
जब वा बाइ थोडो हुंकारो भरे तो, ए खावा ने होय जावे तयार।
धर्म रा लाडू खाती नही लाजें, त्यां विकलां ने तीन धिकार रे॥ ३२॥
ठडी रोटी ने घाट सूं दया पलावें, तो मुख सूं कर दें नाकारो।
ताजा माल साटें त्यांने दया पलावे, तो ए तुरत हुवें खावा ने तयारो रे॥ ३३॥
ओ तो खावा तणी गटकायां उघाडी, त्यांने पोष्यां बंधे पाप कर्मो।
तिणमें धर्म जाणे कुगुरां रा कह्या थी, ते पिण भूला अग्यांनी भर्मो रे॥ ३४॥
एहवी खावा तणी गटकाइ त्यांने, बुधवत जांणे धर्म ठगो।
धर्म रे ओलें खाएं ते धर्म ठगारी, भोला लोकां नें देवे छें दगों॥ ३५॥
दस बीस कोस उपर पकवांन सुणें तो, हींडोला खावां ने दोड्या जावे।
ए तो घरे बेठी गुर री दलाली सूं, दोनू टका लाडूडा खावे रे॥ ३६॥
हींडोला मे बीस कोस खावा पड्या जब, एक टक पिण नीठ सूं खावे।
याने घरे बेठा मिले दोनूं टक लाडू, त्यांसूं लाडू छोड्या किम जावे रे॥ ३७॥
हींडोला तो जाये जीमें न्यात रे लेखें, ते पिण निरलज हीडोला बाजे।
ए पिण धर्म रा लाडू खावे निरलजीयां, बेसरम्यां मूल न लाजे॥ ३८॥

ओसर मोसर विनां पेंलारें घरे, जाए वेंठी पग पसार।
हीडोला जिम जीमें धर्म रे लेखे, धिग त्यांरो जमवार रे॥ ३६॥
मोटका घर रा केइ डाहा हुवें ते, विचार करें मन मांही।
आंपरा घर री लाडू खावा जाती हुवे, तिणनें पर घर जावा दें नांहीं॥ ४०॥
खलीयार ढोर ज्यूं खलीयार हुवे ते, वरजें तोही वरजी न लागें।
दया पलावण रा लाडू कांने सुणें तो, होय जाए सगला रे आगे रे॥ ४१॥
दया रा लाडू खावा ने उमाइ, आंमी सांमी घणी जण्यां भटकें।
त्यांसूं जिभ्या तणो चट रस नही छूटे, गटकायां हिली छें गटकें रे॥ ४२॥
यांरें मूदें तो रीता हाथा री वायां, कदा कांयक सुहागण आवें।
तिणनें पिण कर दे गटकाड, तिण सूं आ पिण त्यांमें जावें रे॥ ४३॥
वीजासणीयां में खेतलो देवें, खेतला विण विजासणीयां नांहीं।
ज्यूं रीता हाथां री दया पालें छे, तो ही भेषधारी त्यां मांही रे॥ ४४॥
यांनें दया तणा लाडू खावा री, भेषधार्‍यां कुवद सीखाइ।
आप तणा मुतलव रें तांइ, आ कुगुरां कुवद चलाइ रे॥ ४५॥
गाय सुखी हुवां गर्भ सुखी हुवें, कूए हुवें तो अवालें आवे।
जांणें यांनें खवावसी तो मांनेंइ वेंरासी, तिण कारण ए चाला चलावें रे॥ ४६॥
कोई पांच तिथां उपवास करती न दीसें, न करे एक टक पोहर वेपारी।
तिणनें लाडूआ साटे उपवास करावें, तिथां विनां हुवें उपवास नें तयारी रे॥ ४७॥
जो यांरें दया पालण रा परिणांम हुवें तो, घर री रोटी खाए दया पालो।
उपवास करें वले करदों पोसो, छ काय तणो करो टालो रे॥ ४८॥
ए सांप्रत लाडू खाए धर्म लेखें, त्यांनें पूछ्यां बोल जाए कूर।
मूहपती वांधे नें भूठ वोलें छें, त्यांरी दया में पड गइ धूर रे॥ ४९॥
ब्राह्मण तो मनसा भोजन धर्म रो जीमें, त्यांरो तो कुल में चेहरो न थाय।
माहजन री वेट्यां धर्म रा लाडू खाए तो, त्यांरी निंद्या हुवें लोकां मांय रे॥ ५०॥
ब्राह्मण तो धर्म रे लेखे भाता लेवें, दिषणा दीयां लेवें धन धांन।
इत्यादिक यांने देवें ते लेवें, ते तो लेता न करे अभिमांन रें॥ ५१॥
यांने मनसा भोजन आदि देवें नें लेवें, यांरा कुल री छें आहीज रीत।
जो इण रीते दांन महाजन री वेट्यां लेवे, तो लोकां मे हुवें फजीत रे॥ ५२॥
आंतरीया ऊपरला लाडू खावे, त्यांने भातादिक देवें सर्व लेंणों।
ब्राह्मण तो दातार नें धर्म कहेलें, ज्यूं यांनें पिण धर्म कंणो रे॥ ५३॥
धर्म रा लाडू तो खाती नहीं लाजें, तो भातादिक लेती लाजे कांय।
धर्म रो लेंणो मांड्यो तो सब ही लेणों, लेखो कर देखो मन मांय रे॥ ५४॥

ब्राह्मण तो दातार नें आसीस देवें छे, दोनू हाथ जोडी नमे सीस।
ज्यू ए पिण धर्म रा लाडू खाए ने, दातार ने देणीं आसीस रे॥ ५५॥
आणद आदि देई श्रावक अनेक हुआ त्या, एहवी दया तो किण ही न पलाइ।
किण ही सूतर में चाली नही दीसे, थे आ कुबद कठाथी चलाइ रे॥ ५६॥
त्यारे कोडाग में धन घर माहें हुंतो, जीव रा पिण किरपण नांही।
एहवी दया पलाया मे धर्म जांणे तो, आघो न काढता कांई॥ ५७॥
आगे गोतमादिक साध अनेक हुआ त्यां, एहवी दया पालणी कही नांही।
लाडू खाधा खवायां तो हिसा उघाडी, तिणमें कला मत जाणो कांई रे॥ ५८॥
एहवी दया भेषधार्‍यां सीखाई, तिणमें दया नही तिलमात।
लोलपणो तो उघाडो दीसे, वले छ काय तणी हुवे घात॥ ५९॥
लाडूवा खांणी दया ओलखावण, जोड कीधी नाथ दुवारा मझार।
सवत अठारे ने वरस छपन्ने, पोह विद बीज सनीसरवार रे॥ ६०॥

ढाल : १९

दुहा

अंबरसिन्यासी श्रावक थयो, ते हुवो साधां रो सुवनीत।
तिण लीधा व्रत चोखा पालीया, पिण छोडी नही मत रीत॥ १ ॥
तिणरे भगवा वसतर पेंहरणें, डंड कमडल तिणरें हाथ।
ओर उपगरण सिन्यासी तणां, ते लीया फिरें छें साथ॥ २ ॥
काचों पाणी नदी तणों, ते पिण निरमल बेंहतों जांण।
ते पिण दीधो दातार नो, ते पिण पांणी लेणो छांण॥ ३ ॥
ते पिण पांणी सावद्य जिण कह्यो, तिण पांणी रों अंबर नें आगार।
अचित पांणी ने उन्हां पांणी तणो, तिण त्याग कीयो परिहार॥ ४ ॥
आ रीत छें सिन्यासी तणी, छूटती नहीं दीठी तास।
तिण श्रावक रा व्रत आदरयां, श्री वीर जिणंद रें पास॥ ५ ॥
तिणरें विरत आदरतां इविरत रही, ते एकंत अधर्म जाण।
ते आश्रव पाप ना बारणा, तिण सूं पाप लागें छें आण॥ ६ ॥
तिणरों खांणों पीणों नें पेंहरणों, वले उपधि उपभोग परिभोग।
ते सगलाइ राख्या ते इविरत में, त्यांनें भोगव्यां सावद्य जोग॥ ७ ॥
भोगवे ते पेहले करण पाप छें, भोगवावे ते दूजे करण जांण।
सरावे ते करण तीसरें, सारां रे पाप लागे छें आंण॥ ८ ॥
केइ अग्यांनी इम कहें, अंबर नें जीमायां धर्म।
त्यां जिण मारग नही ओलख्यों, ते भूला अग्यांनी भर्म॥ ९ ॥
अंबर कीधो छें सों घरां पारणों, ते निश्चेइ इविरत में जांण।
ते जथा तथ परगट करूं, ते सुणजो चतुर सुजाण॥ १० ॥

ढाल

[दया भगवती छे सुख दायी]

केइ कहें अंबर सिन्यासी श्रावक, सो घरां पारणों कीधो तांमो जी।
सो घरां रात रों बासो कीधों, ते धर्म दीपावण कामो जी।
बुधवंत ग्यांन करी ने देखो* ॥ १ ॥

सो घरां अंबर पारणों कीधों, सों घरां बासों लीयों ताह्यो जी।
कोइ धर्म दीपावण रो नांम लेवें छे, ते एकंत मूषावायो जी ॥ बु० २ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सो घरा अंबर पारणो कीधों, सो घरा बांसों लीयों ताह्यों जी।
तिणरो न्याय न जाणे अग्यानी, थोथी करे बकवायो जी॥ ३॥
अंबर सिन्यासी सों घरां पारणों किधो, सो घरां बींसो कीयो छे तांमो जी।
तिण घणां लोकां नें विसमय उपजावण, वेक्रे लबध फोरवी इण कांमो जी॥ ४॥
वेक्रे लबध फोरवी ते सावद्य जोग, वेक्रे सरीर कीयो तिण कालो जी।
वेक्रे सरीर करतां पांच किरीया लागी, तिण सूं पाप लागो दग चालो जी॥ ५॥
काइया अहिगरणीया नें पाउसीया, पारितावणीया पाणाइवायो जी।
ए पांच किरीया लागे वेक्रे कीधां, पन्नवणा छतीसमां पद माह्यो जी॥ ६॥
वेक्रे करने सों घरां बासो लीधो, वेक्रे कर सों घरा कीयो आहारो जी।
ए तीनूं किरतब जिण आगन्या बारे, ते सावद्य जोग व्यापारो जी॥ ७॥
धुर सू वेक्रें कीयो ते सावद्य जोग, दूजो सो घरा कीयो आहारो जी।
तीजो सों घरां वासो लीधों, ए तीनूं सावद्य जोग व्यापारो जी॥ ८॥
ए तीनूइ किरतब सावद्य कीधा, ते तो विसमे उपजावण कांमो जी।
कोइ कहे धर्म दीपावण कीधा, ते भूठ बोले बेफांमो जी॥ ९॥
धर्म दीपावण सो घरां पारणों कीधो, तो थे सूतर में काढ बतावो जी।
जो थे सूतर मांहे नही काढो तो, गाला रा गोला मती चलावो जी॥ १०॥
पारणो कीधों सो घरां धर्म दीपावण, आ तो उठी जठाथी भूठी जी।
ते जिण मारग रा अजांण अग्यानी, त्यारी हीया निलाड री फूटी जी॥ ११॥
सो घरां पारणो कीयो विसमय उपजावण, ते तो उघाडो सावद्य साख्यातो जी।
तिण माहे धर्म कहे छें अग्यांनी, ते प्रतख भूठ मिथ्यातो जी॥ १२॥
लवध फोडवीयां जिण मारग दीपे तो, गोतमादिक साध अनेको जी।
त्यामें तो लवध घणेरी हुंती, ते तो मारग दीपावत वशेखो जी॥ १३॥
साधु आप नें ओरां नें विसमय उपजावे, तिणने चोमासी प्राछित आवे जी।
नसीत रें इग्यारमे उदेसें, तिणमे धर्म किहांथी थावे जी॥ १४॥
विसमे नें इचरज कतोहलादिक विद्या, मंत्र इद्रजालादिक जांणो जी।
ते विसमे उपजावण अंबर सिन्यासी, फोडवी लबद पिछांणो जी॥ १५॥
साधु विसमें उपजावें तों प्रायछित आवे, लागे एकंत पाप कर्मो जी।
तो अंबर सिन्यासी विसमय उपजाइ, तिणने किण विध होसी धर्मो जी॥ १६॥
केइ कहे श्रावक रतना रो भाजन, तिण पोख्यां छे एकंत धर्मो जी।
पाप रों अंस तो मूल न लागे, कटें निकेवल कर्मो जी॥ १७॥
जो श्रावक ने पोख्यां में पाप हुवे तों, अंबर ने पारणों नही करावत जी।
अंबर सिन्यासी पिण श्रावक हूतो, सों घरां पाप नही लगावत जी॥ १८॥

यूं कहि कहि अग्यांनी श्रावक जीमायां, थापें छे एकंत धर्मो जी।
तिणनें विरत इविरत री खबर न कांई, भूला अग्यानी भर्मो जी॥ १९॥
अंबर सिन्यासी सो घरां पारणो कीधो, तिणने सों घर रो पाप लागो जी।
तिणरें खांणो पीणों सारो इविरत में थों, इविरत सेवी पिण वरत न भागो जी॥ २०॥
अंबर सिन्यासी सो घरां पारणो कीधो, सो घरां रो लागो छे पाप कर्मो जी।
तिणनें पारणो कराय पाप लगायो, त्यांनें किण विध होसी धर्मो जी॥ २१॥
अंबर नें पेंलें करण पाप हूवो छें, तो करावण वालो दूजें करण जाणो जी।
सरावण वालों तीजे करण पापी, यानें रूडी रीत पिछाणो जी॥ २२॥
अंबर नें काचो पांणी लेवण री, सर्व नदी री आगन्या दीधी जी।
तिणने धर्म कहे छें अग्यांनी, तिण हिंसा धर्म री थापना कीधी जी॥ २३॥
जीव रो गटको करण री आगन्या देसी, तिणरें निश्चें बंधसी पाप कर्मो जी।
तिण मांहे धर्म कहे छें पाखंडी, ते भूला अग्यानी भर्मो जी॥ २४॥
तीन काल रा श्रावक त्यांरो, खांणो पीणो एकंत अधर्मो जी।
ते अंबर ने पारणो करायां, किण विध होसी धर्मो जी॥ २५॥
अंबर पारणो कीधो छें तिणरो, अंबर ने पाप लागो छे तामो जी।
करावण वाला नें करावण रों पाप, यांरा जूआ जूआ परिणामो जी॥ २६॥
पेंला रों लगायों तो पाप न लागें, आपरो लगायों पापज लागे जी।
सावद्य जोग दोया रा जूआ जूआ वरत्या, त्यारों पाप लागो छे सागें जी॥ २७॥
अंबर तो सो घरां पारणो कीधों, तिणनें सिन्यासी जांण करायो जी।
करणवाला ने करावणवाला नें, भगवते नहीं सरायो जी॥ २८॥
अंबर सो घरां पारणो कीधो, सो घरा वासो लीयो ताह्यो जी।
तिण सावद्य कांम कीयो जब लोकां, सिन्यास्यां रो मारग दीपायो जी॥ २९॥
जिण मारग माहें कोइ लबध फोडवी तो, भगवंत नही सरावें जी।
तो अंबर सिन्यासी फोडवी लबध, तिण में धर्म केम बतावें जी॥ ३०॥
अनेरा भेष मे केवल ग्यांन उपजे, ते तो नहीं बागरें वाणी जी।
त्यां कने दिख्या लेवे तो दिख्या न देवें, मिथ्यात वधतो जाणी जी॥ ३१॥
वाणी वागरीया लोक सुणे इम बोले, यामेंइ उपजे केवल नाणो जी।
अनेरा मत री वधे परससा, वाणी नहीं बागरें इम जाणो जी॥ ३२॥
केवल ग्यानी अनेरा मत री, महिमा वधती जाणी जी।
पाखड मत ने वधतो देख्यो, यूं जाणे नही बागरी वाणी जी॥ ३३॥
तो अंबर सिन्यासी फोडवी लबद, तिणने लवध जीरवी नांही जी।
तिण विसमे उपजावणा फोडवी लबद, तिणमे धर्म नही छें काई जी॥ ३४॥

सिन्यासी रा भेप मे लवद फोडवी, तिण सिन्यासी री महिमा वधारी जी।
आपरे छांदे लवद फोडवी तिणनें, जिण आगन्यां नही छे लिगारी जी ॥ ३५ ॥
जव कोइ कहे अबर ने कह्यो अराधक, तिणनें वीर जिणंद सरायो जी।
पांचमें देवलोकें देवता हूवो, ते मिनष थइ मोप जायो जी ॥ ३६ ॥
अबर तो अराधक हूवो, चोखा वरत पाल्यां सूं जांणो जी।
पिण लवध फोडवी तिण सूं नही हूवो, तिणरी सूतर सूं कीजों पिछांणों जी ॥ ३७ ॥
अनेरा भेप मे केवल ग्यांन उपनो, ते भेप छें पेहरण तांमो जी।
त्यानें साध श्रावक जाणे केवल ग्यानी छे, पिण वादे नही सीस नांमो जी ॥ ३८ ॥
तिण भेप थका साध श्रावक वांदे, तिण मत रा पाखंडी गूंजें जी।
जांणें म्हाराइ मत मे केवल ग्यांन उपजे, त्यानें उंडी तो मूल न सूझे जी ॥ ३९ ॥
कदा साध श्रावक जो त्यांनें वांदे, तो विगडे छे जावक वातो जी।
घणा लोक त्यांरी देखा देख वांदे, जव वधें घणो मिथ्यातो जी ॥ ४० ॥
गोतम सांमी पूछ्यो भगवत ने, अंवर सिन्यासी छें तांमो जी।
इण कांई करणी करे लवध पाइ छे, लवद फोडवे छे किण कांमो जी ॥ ४१ ॥
जव वीर जिणेसर कहें गोतम ने, सुण तूं अवर री बातो जी।
अंवर सिन्यासी प्रकत रो भद्रीक छे, जाव विनेवंत साख्यातो जी ॥ ४२ ॥
अंवर सिन्यासी वेले वेलें निरंतर, आंतरा रहीत तपसा कीधी जी।
दोनूंइ बाह्यां उंची राखी नें, सूर्य सांमी आतापना लीधी जी ॥ ४३ ॥
आतपना भूम नदी तट मांहे लेतां, आया सुभ परिणांमो जी।
भला अधवसाय आया तिण काले, निरमली लेस्या वरतीं तांमो जी ॥ ४४ ॥
एकदा प्रस्ताव तदावर्णी कर्म, षयोपसम कर्म हूवा चकचूरी जी।
विचारणा करता तिण काले, वीर्य लवद पांमी छे रूडी जी ॥ ४५ ॥
वेक्रें करवा री सक्त पांमी, वले पामीयो अवधि गिनांनो जी।
वीर्य लवद छता रूप सकत, वेक्रे सूं करे रूप असमांनो जी ॥ ४६ ॥
वेक्रें लबद फोडवे वेक्र रूप कर नें, सो घरा पारणो कीयो तांमो जी।
वले वासो सो घरां मे लीधो, ते विसमे उपजावण कांमो जी ॥ ४७ ॥
वले गोतम सामी पूछ्यो भगवत ने, अंवर मरनें किहां जासी जी।
जव वीर कहे पाचमें देवलोकें, महीढीक देवता थासी जी ॥ ४८ ॥
देव चवी महाविदेह षेतर में, चारित पाली निरदोषो जी।
आठोई कर्म तणो षय कर नें, पाधरो जासी मोखो जी ॥ ४९ ॥
अंबर सिन्यासी री वेक्रें लवद ओलखावण, जोड कीधी गोघूदा मझारो जी।
सवत अठारे सतावने वरसें, चेत सुदि चोथ ने बुधवारो जी ॥ ५० ॥

ढाल : २०

दुहा

केइ हिंसा धर्मी जीवडा, ते जीव मार्‍यां कहें धर्म।
ववेक विकल सुध बुध विनां, भूला अग्यांनी भर्म॥ १॥
जिण आगम अर्थ ऊंधा करें, वले कूडा कुहेत लगाय।
हिंसा कराय जीवां तणी, घणो हरस धरे मन मांय॥ २॥
टीका चूर्ण भास निर्युक्ति नां, यांरा करे घणा वखांण।
ए च्यारूंई नही जिण भाखीया, त्यांरी बुधवंत करजो पिछांण॥ ३॥
एबारें काली पछें कीया, भिष्ट आचार्‍यां आप रे छंद।
त्यांमें विवध पणे भूठ गूंथ नें, चोडें मांड्यों भोलां नें फंद॥ ४॥
ज्यूं ज्यूं अणाचार सेवीयां, ज्यूं ज्यूं घाल्या टीकादिक मांहि।
वले उंधी उंधी सरधा घणी, ते घाली टीका में ताहि॥ ५॥
जीव हणवा रों उपदेस दें, घणी खोटी परूपें छें ताय।
थोडी सी परगट करूं, ते सुणजों चित्त ल्याय॥ ६॥

ढाल

[रे प्राणी कर्म समो नही···]

देव गुर संघ काजें चक्रव्रत री सेना, कहे साध करे चकचूरों।
जो नही करें तो दसमो प्राछित आवें, थे इसडो म भाखो कूडो रे।
कुमत्यां हिंसा धर्म कांय थापो रें*॥ १॥

थे भगवंत भाख्या सूतर बाचो, वले साध लोकां मांहे बाजों।
जीव मार्‍यां में धर्म परूपों, इसडो म करों अकाजो रे॥ कु० २॥
गोसाले दोय साध भगवंत रा बाल्या, वले वीर नें कीयां लोही ठांण।
त्यां साधां में सकत थी गोसाला बालण री, पिण खमता कीधी सुमता आंण रे॥ ३॥
ओ प्रतख गोसालो प्रतणीक हुवो, तिणरी साधां न करी घात।
थे प्रतणीक मार्‍यां में धर्म बतावों, ते मूरख मांनें बात रे॥ ४॥
प्रतख गोसालो प्रतणीक नें, जो नहीं हणीया प्राछित आवें।
तिण लेखे भगवंत रा साध लब्द धारी, प्राछित लीयां सुध थावें रे॥ ५॥
सुमगल आचार्य गोसाला नें बालसी, ते पिण मुख सूं बोलसी न्याय।
हुं छती सकत्त समर्थ नहीं खमवा, अवगुण काढसी आप मांय रे॥ ६॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

वले दोय साधां रा ने वीर रा गुण गावसी, कहसी तोनें न बाल्यो तिण वार।
त्यांरी छती सकत चोखें चित खमीयो, ते धन मोटां अणगार रे॥ ७ ॥
सुमगल आचार्य गोसाला नें बालसी, तिणनें बतावो थे धर्म।
ते क्रोध करे घात करसी राजा री, तिणरे बंधसी निकेवल करम रे॥ ८ ॥
कोइ लब्द धारी साध लब्द फोड नें, करें मिनषांदिक नीं घात।
ते जिण आग्या लोपे हुवो विराधक, तिणमें धर्म कहे ते मिथ्यात॥ ९ ॥
निंदक जीवां नें मार्‍यां धर्म थापो थें, ते चोडे कहो छो लोकां नें।
वले धर्म कहो निंदक ने मार्‍या, ते तो मूढ मिथ्याती मांने रे॥ १० ॥
तीन सो तेसठ पाखंडी हुंता, त्यां घणां जीव मिथ्यात में पाड्यां।
वले निंदक पूरा श्री जिण धर्म रा, त्यांने साधां क्यूं नहीं मार्‍यां रे॥ ११ ॥
देवल काजे बलद मूंआ तिणने, आठमो सरग बतावो।
एहवा गोला थें गाला मां सूं फेको, भोलां ने कांय थे भरमावों रे॥ १२ ॥
काजी मुल्ला जबें करे छें, ते कहे म्हे करां छां हलाल।
म्हे जीव मारां ते भिसत पोंहचावां, एहवो थें पिण मांड्यो छे ख्याल रे॥ १३ ॥
थे बलदां नें मारे देवलोक पोंहचावों, ते एकत मूसा वायो।
हिवें ओहीज प्रश्न पूछीयां थानें, मत करजो बकवायो रे॥ १४ ॥
थांरा गुर गुर भाई कुटंब न्यातीला, त्यांने संथारो कांय करावो।
यारे पिण माथे मोटी सिला देई नें, सुध गति क्यूं नही पोंहचावो॥ १५ ॥
थे देवल काजें पथर आणो जब, यांरे माथें पिण आंण्यां किम दोष।
यानें पिण बलदां जिम मारें, क्यूं नही मेलो मोख रे॥ १६ ॥
देवल काजें साध श्रावक मारें, तिणनें किम गिणसो दोखो।
तो ही श्रावक नें बारमें देवलोक नही मेलो, साधां नें पिण नही मेलो मोखो रे॥ १७ ॥
साध श्रावक ने इम सुध गति नही मेलो, त्यांरो जीतव नही थे सुधारो
तो रांक गरीब बापडा बलदां ने, देवल काजें कांय मारो रे॥ १८ ॥
जो बलद मरे आठमें सरग जावे, आ बात जांणो थे साची।
तो पथर रा जीवां री देवल प्रतिमा हुई, यांरी पिण गति होसी आछी रे॥ १९ ॥
वले छ काय मूई मरे नें वले मरसी, ते पिण देवल रे कांमें।
जो बलद मूंआ आठमें सरग जावें, तो सगलाई सदगति पांमें रे॥ २० ॥
बलद मरे ते पर वस दुखीया, यांरे उसभ उदे हूआ आयो।
त्यांने विनां परिणामा सदगति किम होसी, वले इम हीज जांणों छ कायो रे॥ २१ ॥
सिलावट मरे कोइ देवल करतो, तिणनें कहो बारमों देवलोक।
ओ पिण गोलो निकेवल गालां रो, ते पिण जांणों फोको रे॥ २२ ॥

हिसाधर्मी जीव मरायां रो, मूल गिणें नही दोख।
भोलां नें भरमावें अग्यांनी, वले कहें यांने होसी मोख रे॥ २३॥
पेंलां नें मास्यां धर्म परूपें, आप नें मास्यां न कहें धर्मो।
ववेक विकल सुध बुध विनां बोले, ते भूला अग्यांनी भर्मो रे॥ २४॥
धर्म रे कारण जीव हणें त्यांरो, मत छें जाबक भूंडो।
त्यांरो सरधा कोइ मूरख मांनें, ते पिण नर भव खोय बूडो रे॥ २५॥
केइ ब्राह्मण कहें बकरा होमण रो, मुख सूं किण विध कहिसो।
जे थांरे करणो छें होम बकरा रो, तो थें सावधांन थकां रहिसो रे॥ २६॥
म्हें वेद भणतां भणतां बोलां जब, कहां अजा होमण रो पाठ।
जब थें अजा होम छाली रा जायां रो, होम में न्हांखज्यों सिर काट रे॥ २७॥
ज्यूं थें पुफांरो हण नें फलां रो हणवा रो, पाठ कहें नें समझावो।
उवें जीव होमें नें जज्ञ करावें, ज्यूं थें पिण पूजा करावो रे॥ २८॥
यांरा यज्ञ होम में थें पाप बतावो, तो थांनें धर्म होसी किण लेखें।
ओ तो किरतब छें दोयां रो बरोबर, निज खोटी सरधा नहीं देखें रे॥ २९॥
उवें सिर कटाय होम मांहें नखावें, थें प्रतिमा काजें हणावों।
जो यांनें पाप तो थांनेंई पाप छें, ओ जोवो उघाडो न्यावो रे॥ ३०॥
केइ सिरदार चोरादिक नें मरावें, जब कहें दूध पीवा जाय।
जब अटवी मांहे तिणनें ले जावें, जुदा करें जीव काय रे॥ ३१॥
ज्यूं थे पिण छ काय रा जीव मरावो, जब पूजा रो नांम बताय।
जब गृहस्थ तो छ काय जीवां रा, जुदा करें जीव काय रे॥ ३२॥
चोरादिक मरावें ते खून कीयां थी, ते मन मांहें पिण पिछतावें।
थें हर्ष धरी धर्म हेत मरावो, थानें पिछतावो पिण नहीं आवें रे॥ ३३॥
कसाई जीव हणियां तो पाप जांणें छें, तिणसूं मरावें छें गरथ देई।
थें जीव हण्यां रो पाप न जांणों, तो क्यूं नही मरावो छो थेंई रे॥ ३४॥

रत्न : ३२

श्रद्धा री चौपई

ढाल : १

दुहा

ठांणा अंग मांहें कह्यो, दस प्रकार रो मिथ्यात।
त्यांरो विवरा सुध निरणो कहूं, ते सुणजो विख्यात॥ १॥
अधर्म ने धर्म सरदहे, धर्म नें सरधे अधर्म।
ते मूढ मिथ्याती जीवडा, भूला अग्यांनी भर्म॥ २॥
अजीव ने जीव सरदहे, जीव ने सरधे अजीव।
उण जीव अजीव न ओलख्या, ते पिण मिथ्याती जीव॥ ३॥
कुमारग ने मारग जांणे मोष रो, मारग ने कुमारग जाणें मूंढ।
ते मिथ्याती सुध बुध बाहिरा, कर रह्या कूडी रूढ॥ ४॥
केई असाध ने साध सरधता, केई साध ने सरधे असाध।
ते बूडा मोह मिथ्यात मे, श्री जिण वचन विराध॥ ५॥
मोष न गया कर्म खपाय ने, त्यांने सरधे अग्यांनी मोष।
मोष गया ने मोष सरधे नही, ते सरधा घणी छे सदोष॥ ६॥
ए दस प्रकार नां मिथ्यात में, ऊंधो सरधे एक बोल।
त्यांनें निश्चें मिथ्याती सरधजो, आंख हीया री खोल॥ ७॥
भेषधारी ववेक रा विकल घणा, त्यांरो जुदो जुदो समदाय।
उंधी सरधा पिण यांरी जू जूई, पिण आधां नें खबर न कांय॥ ८॥
त्यांरो सरधा आचार नही सारिखो, तोही सरधे माहोमां साध।
त्यांरे बोलेइ बंध दीसें नही, मांहोमां पिण करें विषवाद॥ ९॥
अंधकार घणो यारा भेष मे, तिणरो कुण काढे नीकाल।
हिवे थोडोसो परगट करू, ते सुणजो सुरत संभाल॥ १०॥

ढाल

[धीज करे सीता सती रे लाल]

यांरे पेहरण सांग साधा तणो रे, वले रह्या लोकां मे पूजाय रे सुगुणनर*।
ए कुबदी खेला ज्यूं नाचता रे लाल, पिण विकलां ने खबर न कांय रे सुगुण नर।
जोयजो अंधारो भेष में रे लाल॥ १॥
केई सूतर सिद्धांत रा न्याय सूं रे लाल, जोड करे सुध मान रे। सु०।
तिणमे केयक तो अधर्म कहें रे लाल, केई सरधे एकंत धर्म ध्यांन रे॥ सु० जो० २॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

जोड करणी निपेदे ते यांनें गिणें रे लाल, निन्हवां री पांत मांय रे।
ते नांम ले सुयगडा अंग नो रे लाल, तेरमों अधेन वताय रे॥ ३॥
वले जोड करे त्यांनें घालीया रे लाल, वेस्या रा करंडिया मांय रे।
पलमां रा गेंहणा सरीषा कीयां रे लाल, ठांणा अंग चोथो ठांणो वताय रे॥ ४॥
इत्यादिक अवगुण कहे घणा रे लाल, जोड करे तिण मांय रे।
वले भूठा बोला सरवे तेहनें रे लाल, यांनें जावक दीया उडाय रे॥ ५॥
जोड करणी थापें ते यांनें इम कहें रे लाल, ए भूठ वोले वेफांम रे।
जोड करणी उथापे अन्हाखी थकां रे लाल, भूठा भूठा ले सूतरां रा नांम रे॥ ६॥
कहे साधु तो जोडे जुगत सूं रे लाल, सूतर केरे न्याय रे।
पिण कुवदी करे कदाग्रहो रे लाल, पिण सुवुधी रे आवे दाय रे॥ ७॥
वीर वखाणी वुध उतपात री रे लाल, नन्दी सूतर रे मांय रे।
वले श्रुत गिनांन रा भेद सूं रे लाल, म्हे जोड करां इण न्याय रे॥ ८॥
वले ठांणा अंग नवमां ठांणा मझे रे लाल, उत्तराधेन गुणतीसमां मांय रे।
यांरा अर्थ तणा विसतार सूं रे लाल, म्हें जोड करां इण न्याय रे॥ ९॥
इत्यादिक अनेक सूतरां तणा रे लाल, नांम ले ले थापे करणी जोड रे।
जोड करणी उथापे तेहमें रे लाल, सरधे छे मोटी खोड रे॥ १०॥
एक थापें एक उथपे रे लाल, इण विध करे मांहोमां विवाद रे।
यांरे भगडो लागो पीढीयां लगे रे लाल, यांमें कुण छे साध असाध रे॥ ११॥
यांमें कुण साचो कुण भूठो अछे रे लाल, कुण सूतर रो जांण अजांण रे।
यांमें साची सरधा रो कुण समकती रे लाल, यांमें कुण छे मिथ्याती अयांण रे॥ १२॥
भूठ वोल्यां भागे विरत दूसरो रे लाल, उंधो सरध्यां आवे मिथ्यात रे।
सूतर जोय निरणों करो रे लाल, आ मूंढा री नही छे वात रे॥ १३॥
केई अधर्म नें धर्म सरदहे रे लाल, धर्म नें सरधे अधर्म सदीव रे।
त्यांनें ठांणा अंग दसमें ठांणे कह्यो रे लाल, ये दोनूं मिथ्याती छें जीव रे॥ १४॥
यांरे लेखें उवे भूठ वोले घणो रे लाल, यांरे लेखें उवे वोले भूठा वाय रे।
वले सरधा पिण मांहोमां उंधी कहे रे लाल, चोडे असाध कहे छे मांहोमांय रे। १५॥
त्यांरे कांम पडे मुतलव तणो रे, जव यांनें पिण कह दे असाध रे।
ए कूड कपट केलवे घणो रे लाल, यांरे किण विध होसी समाध रे॥ १६॥
उंधी सरधा नें भूठा वोला तेहनें रे, साध सरधे ते मूंढ अयांण रे।
ते निश्चे मिथ्याती जीव छे रे लाल, जिण मारग रा अजांण रे॥ १७॥
मांहोमांहीं साध थापें ने उथपें रे, करे विकलां वाली वात रे।
ए सूने चित्त वकवो करें रे, यांरा घट मां सूं न गयो मिथ्यात रे॥ १८॥

यामें केयक तो करे घणा रे, नरकादिक ना चितरांम रे।
तिणमें केयक तो अधर्म कहे रे लाल, केई धर्म कहें छें तांम रे॥ १९॥
चितरांम निषेधे करणा साध नें रे, वरज्यो कहे नशीत रे मांय रे।
चितरांम करणा थापें साध नें रे, ते देवे नन्दी सूतर मे बताय रे॥ २०॥
यामे कुण साचो कुण भूठो अछे रे, कुण सूतर रो जांण अजांण रे।
यामे कुण मिथ्याती नें कुण समकती रे, आ पिण न करे पिछांण रे॥ २१॥
एक वचन उथापें सिघात नों रे, रुले उतकष्टो काल अनंत रे।
तो अनत संसारी कुण एह मे रे, इणरो निरणो करो बुधवंत रे॥ २२॥
वले साध मांहोमां ए सरदहे रे, ए इसडा छे मूंढ अजांण रे।
यानें वादे पूजें गुर जाण नें रे, ते पिण विकल समाण रे॥ २३॥
वासी ठंडी रोटी लालरी मझे रे, केई कहे छें बेइंद्री जीव रे।
केई कहे जीव निश्चे नही रे लाल, इम कर रह्या ताण अतीव रे॥ २४॥
ठंडी रोटी में जीव सरधे तिके रे, टाले ग्रीषम रित ने चोमास रे।
ठंडी रोटी मे सरधे नही रे, ते वेहरे बारोई मास रे॥ २५॥
ठंडी रोटी लेनी थापे साध ने रे, ते बतावें अचारंग री साख रे।
वले नाम ले दसमां अंग नो रे लाल, यामे वीर गया छे भाख रे॥ २६॥
ठंडी रोटी न लेणी कहे साध नें रे, ते बतावे रस चलित रो पाठ रे।
एक थापें एक उथापे रे लाल, यारे ओ पिण माहोमा छे फांट रे॥ २७॥
ठंडी रोटी में कहे छें बेइंद्री रे, त्यांरे लेखे उवे साध न होय रे।
जीवां ने खाय भूठ बोले तेह सूं रे, कहे भागा महावरत दोय रे॥ २८॥
एकद्री जीव खाए तेहने रे, साध सरधे त्यांरे छे वूड रे।
तो ए खाए यांरे लेखे बेइंद्री रे, त्याने साध सरधे तो एहीज मूंढ रे॥ २९॥
ठंडी रोटी में जीव सरधे नही रे, त्यारे लेखे उवे साध न होय रे।
ए भूठ बोले छे घणा दिनां रे, यां दूजो वरत दीयों खोय रे॥ ३०॥
ठंडी रोटी मे कहे छे बेइंद्री रे, त्यांनें निश्चे जाणे छे देता आल रे।
जो एहीज यांने साध लेखवे रे, तो ए पिण अग्यांनी बाल रे॥ ३१॥
इण विध करे मांहोमा निषेधणा रे, वले सरधें मांहोमाहिं साध रे।
ए दोनूं बूडे छे वापडा रे, ए कर कर कूडो विषवाद रे॥ ३२॥
यारे न्याय निरणो तो दीसे नही रे, कूडी मांड रह्या घमडोल रे।
वले वेन्ध नही यांरे बोलीए रे, यांरा मत मांहे मोटी भोल रे॥ ३३॥
कहिवा ने लोकां आगे तो इम कहे रे, म्हे तो साध सरधां माहोमांय रे।
पिण जावक उडावे जडां मूल सूं रे, तिणरी रेस सुणो चित्त ल्याय रे॥ ३४॥

ज्यांनें साध चोडें मुख सूं कहें रे, त्यांरी बंदणा देवें छुडाय रे।
आप आप तणा श्रावकां कनें रे, अवगुण अनेक दरसाय रे॥ ३५॥
पछें श्रावक त्यांनें वांदे नहीं रे, केइ उंचोई न करें हाथ रे।
तो साध मांहोमां सरधण तणी रे, विखर गई विकलां री बात रे॥ ३६॥
यांरे श्रावक त्यांनें वांदे नहीं रे, जब मूल न राखी त्यांरी आब रे।
तोही कहें म्हांनें साध लेखवें रे, आब पाडी ते पिण देवे दाब रे॥ ३७॥
सुध साधां री संका घाल नें रे, त्यांरी वंदणा छुडावें कोय रे।
ते बूडा भव सागर मझे रे, केई अनत संसारी होय रे॥ ३८॥
ए साध मांहोमां चोडें कहें रे, वले वंदणा छुडावे मांहोमांय रे।
ओ पिण न्याय निरणों नहीं रे, ए चोडें भूला जाय रे॥ ३९॥
यांमें आवें त्यांरा टोलां मांहिलो रे, तिणनें दिख्या दे लेवें मांय रे।
जब तो यांनें असाध निश्चें गिण्या रे, यांरी कांण न राखी कांय रे॥ ४०॥
वले केकण नें दिख्या विण मांहें लीए रे, जब यांरी पिण नही परतीत रे।
कदे थापें कदे उथपें रे, यांरे गेंहलां वाली छे रीत रे॥ ४१॥
दिख्या नही आवे तिणनें दिख्या दीये रे, दिख्या आवे तिणने देवें नांहि रे।
तिणनें दिख्या आवे इण डंड में रे, जोवो वेतकल्प रे मांहि रे॥ ४२॥
इसडा दोष यांमें बतायां थकां रे, तिणरो नहीं काढे नीकाल रे।
कुड कुड नें कूके घणा रे, जांणें सीयाला रा स्याल रे॥ ४३॥
यांरे साध कहितां विरीयां नही रे, असाध कहितां नहीं कोइ बार रे।
ज्यांनें रात दिवस निषेदतां रे, त्यांसूं प्राछित विनांइ कर ले आहार रे॥ ४४॥
आहार पांणी भेलो कीयां पछें रे, जब तो सरधे मांहोमां साध रे।
वले आहार पांणी तूटां पछें रे, करे मन मांनें ज्यूं विषवाद रे॥ ४५॥
यांरे उसभ उदे रा जोग सूं रे, दिन दिन इधको बधें छें मिथ्यात रे।
वले वेधा उठायां रे नव नवा रे, ते इचरज वाली बात रे॥ ४६॥
धर्म अधर्म टाले आठ दांन में रे, केई कहें छें निकेवल धर्म रे।
केई मिश्र कहें छें आठ दांन में रे, ए तो भूला मांहोमांहि भर्म रे॥ ४७॥
नव प्रकारे पुन नीपजें रे, यांरे ते पिण सरधा नही एक रे।
उंधी करें मांहोमां परूपणा रे, तिणमें विगटें छें बोल अनेक रे॥ ४८॥
केइ कहें सुपातर कुपातर भणी रे, सचित्त अचित देवें हर कोय रे।
तिणमें एकंत धर्म पुन नीपजें रे, केइ कहे मिश्र धर्म होय रे॥ ४९॥
कोरो काचो अनादिक रांध सेक ने रे, सर्व जीवां नें देवें कोय रे।
तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई कहें धर्म नें पाप दोय रे॥ ५०॥

आधाकर्मी वेंहरावे कोइ साध नें रे, जो उ कर कर छ काय री घात रे।
तिणमे केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छें साख्यात रे॥ ५१॥
कोई नेंहत जीमावें श्रावकां भणी रे, जो उ कर कर छ काय री घात रे।
तिणमे केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें छे साख्यात रे॥ ५२॥
भात वरोटी खरचादिक जीमण करे रे, आरंभ कर कर जीमावे सारी न्यात रे।
तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें छे विख्यात रे॥ ५३॥
गाजर मूलादिक सर्व नीलोतरी रे, सगलां ने देवे अणुकम्पा आंण रे।
तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे कर कर तांण रे॥ ५४॥
गाजर मूलादिक सर्व नीलोतरी रे, राधे रांधे सगला ने देवे कोय रे।
तिणमे केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई कहें छे धर्म ने पाप दोय रे॥ ५५॥
खणावें तलाव कूआ बावडी रे, घणा जीवां री अणुकम्पा आंण रे।
तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे तांण तांण रे॥ ५६॥
कोइ काचो पांणी पावे सकल नें रे, ते पिण अणगलीयो तिणमें तसकाय रे।
तिणमे केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छें तिण माय रे॥ ५७॥
काचो पांणी उकाले भर भर ठांमडा रे, साधां ने वेहरावण ताहि रे।
तिणमे केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे तिण माहि रे॥ ५८॥
काचो अणगल पाणी उंनो करे रे, सगलां ने पावा कांम रे।
तिण में केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र धर्म कहे तांम रे॥ ५९॥
केई जायगां करावे छे जू जूइ रे, सगलां ने माहे रहवा कांम रे।
तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे तिण ठांम रे॥ ६०॥
मठ आसन बंधावे जोगी कारणे रे, भगत काजे मढी ने धर्मसाल रे।
तकीयो बंधावे फकीर रें रे, जती काजे उपासरो पोसाल रे॥ ६१॥
थांनक करावे केई साध रें रे, श्रावक काजे पोषध साल रे।
घर हाटादिक भवन मेंहलायतां रे, करावे जथाजोग संभाल रे॥ ६२॥
इत्यादिक जायगां कर कर देवें सकल नें रे, ते हण हण जीव छ काय रे।
तिणमे केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे तिण मांय रे॥ ६३॥
पाट बाजोट करावे विरष वाढ नें रे, पछे देवे सगला नें दांन रे।
तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छें कर कर तांन रे॥ ६४॥
केई वसतर वणाय धोवाय ने रे, पछे देवे सगलां ने ताहि रे।
तिणमे केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छें तिण मांहि रे॥ ६५॥
केई दोपद चोपद देवें सकल ने रे, देवें सोना रूपादिक सारी धात रे।
तिणमे केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे साख्यात रे॥ ६६॥

देवें लूणादिक पृथवी काय नें रे, वले सगलां नें घालें तेउकाय रे।
तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें छें तिण मांय रे॥ ६७॥
इत्यादिक दांन देवें छे ग्रहस्थी रे, त्यां दरबां रा नांम अनेक रे।
तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र री कर रह्या टेक रे॥ ६८॥
उंधी सरधा मांहोमां यांरे दांन री रे, तिणरो कहितां कहितां न आवें पार रे।
उंधो सरधें छें बोल अनेक में रे, यांरे इसडो छें मांहोमां अंधार रे॥ ६९॥
सुध असुध सगलां ने देवें तेह में रे, जोग वरतें मन वचन नें काय रे।
तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें तिण मांय रे॥ ७०॥
सुध साधां नें असुध देवें तेहमें रे, जोग वरतें मन वचन काय रे।
तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें तिण मांय रे॥ ७१॥
धर्म कहें कुपातर दान में रे, ते गमावें मिश्र रो खोज रे।
कहें मिश्र री सरधा माठी घणी रे, तिणनें छोड दो सूतर सोभ रे॥ ७२॥
कहे ध्यांन लेस्या मिश्र नही रे, मिश्र नहीं अधवसाय परिणांम रे।
ए च्यारूं भला के च्यारूं बूरा रे, जोवो सूतर में ठांम ठांम रे॥ ७३॥
सचित अचित सगलां ने दांन देवतां रे, भला परिणांम भला अधवसाय रे।
वले ध्यांन भलो लेस्या भली रे, जे मिश्र कहें ते मूसावाय रे॥ ७४॥
छ काय हणे पोपें सकल नें रे, तिणमें धर्म कहां म्हें इण न्याय रे।
उण रा परिणांम दांन देवां तणा रे, जीव हणवा रा नहीं अधवसाय रे॥ ७५॥
दांन देवां काजे हणे छ काय नें रे, तिणनें पाप न लागें अंस मात रे।
सर्व जीवां नें पोष्यां धर्म एकलो रे, मिश्र कहें ते मिथ्यात रे॥ ७६॥
मिश्र कहें कुपातर दांन में रे, धर्म कहे त्यांने करें भंड रे।
उणरी सरधा उठावे जडां मूल थी रे, वले देवें प्रायछित डंड रे॥ ७७॥
छ काय हणे छे उदीरनें रे, तिणरो मूल न सरधें छें पाप रे।
ए तो मारग छोड उजड पड्या रे, करे हिंसा में धर्म री थाप रे॥ ७८॥
धर्म कहें कुपातर दांन में रे, त्यांने जाबक भूठा ठहराय रे।
करे मिश्र धर्म री थापना रे, कूडा कूडा कूहेत लगाय रे॥ ७९॥
छ काय हणी ने पोषें सकल ने रे, हिंसा हुई तिणरा लागा कर्म रे।
धर्म हूवो साता पाई तेहनों रे, इण लेखें कहां छां मिश्र धर्म रे॥ ८०॥
इण विध करें मिश्र री थापना रे, धर्म कहें त्यांने भूठा घाल रे।
एक एक री करे उथापना रे, यांरे सोकां वालो जांणों साल रे॥ ८१॥
यांरे सरधा परूपणा तो जू जूई रे, रह्या जूदो जूदो मत भाल रे।
वले साध मांहोमांहि लेखवे रे, आ तो चोडें पाषंडीयां री चाल रे॥ ८२॥

थांनें कहे मांहोमां साच लेखवें रे, कदे लेखवें मांहोमां असाच रे।
थांनें गेहलो बालो जाणो पेहरणो रे, ए तो मांहोमां करे उपाव रे॥ ८३॥
गेहलो कहे तो पेहरे सुंप सूं रे कहे नगन हुवे कपडा न्हांख रे।
ज्यूं ए साव थाप नें वले उथपे रे, थांरी फूटी अभितर आंख रे॥ ८४॥
कु न्याय त्यांनी नें पेपें सकल नें रे, तिणमें कोई कहें धर्म एकंत रे।
कोई मिश्र कहें पाप धर्म नें रे, ए दोनूंई कूडा मतवंत रे॥ ८५॥
मिश्र कहे कुपातर दान में रे, तिण गाला मांहूं गोला फेक रे।
इण न्याय उठे पंथ काढियो रे, तिणमें लोक रह्या कोई वेक रे॥ ८६॥
मिश्र कहे कुपातर दान में रे, ते मिश्र नहीं सूतर में नहीं बात रे।
ओ मिश्र सूत्र रो पडूतीयों रे, तिणरा घट मांहि घोर मिथ्यात रे॥ ८७॥
जिणरी मात पिता री न्यात सूं जुड़ रे, तिणनें कहे छै कुपात जात रे।
ज्यूं कोइ मिश्र परूपे पाप धर्म नें रे, तिणनें कुलीयां मिथ्यात रे॥ ८८॥
मिश्र कहे कुपातर दान में रे, तिणरा कूड कपट रो नहीं थाग रे।
इण छिद्र तिण मांहि अंगे बधा रे उण रे कुबुध कदाग्रह रो भाग रे॥ ८९॥
मिश्र नें दान जिणचन रो मत करे रे, जब रहे जितो कहे पाप रे।
धर्म कहे नेक जितो रे, करे एहवा मिश्र री थाप रे॥ ९०॥
जिणनें दान जिणचन रो मत नहीं रे, जब नेक जितो कहे पाप रे।
धर्म कहे रहे जितो रे, करे एहवा मिश्र री थाप रे॥ ९१॥
कोई कहे लाभ थोड़ो नें टोटो घणो रे, कदे कहे थोडो घणो लाभ रे।
इण रा कूड कपट रो छेहडो नहीं रे मन मानें ज्यूं नाखे जाब रे॥ ९२॥
कोई चोरी कर ल्यावे बाड़ा पाड नें रे, पछे न्हांखे सागे सेरी केल रे।
ज्यूं मिश्र परूपे दान में रे काल तिणरा चाला चरित अनेक रे॥ ९३॥
सोवर कैरा सींग में रे, सींग सींग में सींग रे।
ज्यूं मिश्र परूपे त्यांरी बात में रे, बींग बींग में बींग रे॥ ९४॥
बादल बाजे आसमान रे जब उडे धूर धूर में धूर रे।
ज्यूं मिश्र परूपे त्यांरी बात में रे, कूर कूर में कूर रे॥ ९५॥
बालर ऊंट बाबै नरे रे, ढूंढ ढूंढ में ढूंढ रे।
ज्यूं मिश्र परूपे त्यांरी बात में रे, कूड कूड में कूड रे॥ ९६॥
चोर मिले उजाड में रे, करे झपट झपट में झपट रे।
ज्यूं मिश्र परूपे त्यांरी बात में रे, कपट कपट में कपट रे॥ ९७॥
गोरख धांन सूले तिहां रे, डंक डंक में डंक रे।
ज्यूं मिश्र परूपे त्यांरी बात में रे, वंक वंक में वंक रे॥ ९८॥

कपटी आलोवण करे तेहनें रे, रहे सल सल में सल रे।
ज्यूं मिश्र परूपें त्यांरी बात में रे, गल गल में गल रे॥९९॥
थोरी नेवर नें मगरे छेड्व्यां रे, लागे तोट तोट में तोट रे।
ज्यूं मिश्र परूपे त्यांरी बात में रे, खोट खोट में खोट रे॥१००॥
बलतो दीवो तिहां आय नें रे, मरे पतंगीयो झांफ रे।
ज्यूं मिश्र धर्म नें थापवा रे, पापी मारे फांफां मे फांफ रे॥१०१॥
धर्म अधर्म करणी जू जूई रे, वले जुदा जुदा छे पुन ने पाप रे।
एक करणी में दोय न नींपजे रे, झूठी कीधी मिश्र री थाप रे॥१०२॥
ध्यांन लेस्या मिश्र नहीं रे, मिश्र नहीं अधवसाय परिणांम रे।
ए च्यारूं भला के च्यारूं बुरा रे, जोवो सूतर में ठांम ठांम रे॥१०३॥
छ काय हणी पोषे कुपातरां रे, त्यांरी माठी लेस्या माठो ध्यांन रे।
अधवसाय परिणांम माठा तेहना रे, ते निरणो करो बुधवांन रे॥१०४॥
धर्म अधर्म मारग दोय छे रे, पिण तीजो पंथ न कोय रे।
तीजो मिश्र मिथ्याती भूठो कहे रे, आप डूबें ओरां नें डबोय रे॥१०५॥
छ काय हणे पोषें कुपातरां रे, तिणमें कहे निकेवल धर्म रे।
ते मारग छोड उजड पड्या रे, भूला अग्यांनी भर्म रे॥१०६॥
छ काय हणे पोषें कुपातरां रे, तिणरा चोखा कहे अधवसाय रे।
ध्यान लेस्या परिणांम पिण चोखा कहे रे, ते तो चोडें भूला जाय रे॥१०७॥
पाप न गिणे छ काय हणी तेहनो रे, धर्म गिणे कुपातर पोष्यां मांय रे।
ते दोनूं विच बूडा बापडा रे, साधु नांम धराय रे॥१०८॥
प्रतष हणी छ काय उदीर नें रे, त्यांरा हणवा रा न गिणे अधवसाय रे।
ओ मत साकमती पाषंडी तणो रे, जोवो सूयगडा अंग मांय रे॥१०९॥
साकमती पाषंडी इम कहे रे, कोइ हणे बालक जांणी सोय रे।
जो उ राखें परिणांम तूंबडा तणा रे, तो बालक रो पाप न होय रे॥११०॥
इत्यादिक यांरी उंधी सरधा सुणी रे, जब आदर कुमार बोल्यो तांम रे।
प्रतष बालक मारे उदीरनें रे, त्यांरा चोखा किहां थी परिणांम रे॥१११॥
बालक मार्‍यां रो पाप थे गिणो नही रे, तो थें बूडा खोटो मत झाल रे।
याने आदर कुमार निषेध्यां घणा रे, जावक भूठा घाल रे॥११२॥
ज्यूं केई हणे छ काय उदीरनें रे, पछे पोषे कुपतरां रा थाट रे।
तिणमें धर्म निकेवल कहे तिके रे, साकमती पाषंडी रे पाट रे॥११३॥
ज्यूं केई जीव हणे छ काय नां रे, पोषें कुपातरां ने ताय रे।
त्यांरा ध्यांन लेस्या खोटा घणा रे, वले खोटा घणा परिणांम अधवसाय रे॥११४॥

धर्म कहे कुपातर पोषीयां रे, त्यांरी प्रतष भूठी बात रे।
जीव हिंसा रा पाप न लेखवें रे, त्यारे भारी छें गूढ मिथ्यात रे॥११५॥
आगे हिंसाधर्मी हुवा घणा रे, त्यां हिसा धर्म री कीधी थाप रे।
पिण ए सगला हिंसा धर्म्यां सिरे रे, ते जीव मार्‍यां रो न गिणे पाप रे॥११६॥
नमसकार पुन कह्यो सिधंत में रे, यारे ते पिण सरधा नही एक रे।
करे जुदी जुदी परूपणा रे, तिणमें विगटे छे बोल अनेक रे॥११७॥
नमसकार कुपातर नें करे रे, नीचो सीस नमी जोडे हाथ रे।
तिणमें केई कहे पुन एकलो रे, केई पाप कहे छे विख्यात रे॥११८॥
सात नरक में नेरीया रे, ते खाऐ छें मार अनंत रे।
केई पुन कहें त्याने वादीयां रे, केई पाप कहे छें एकंत रे॥११९॥
भड सूरा गधा कुता कागला रे, त्यानें नमसकार करे कोय रे।
तिणमें केई कहे पुन एकलो रे, केई कहे एकंत पाप होय रे॥१२०॥
जलचर मछ कछादिक डेडका रे, थलचर चोपदादिक जाण रे।
वले उरपर भुजपर ने षेहचरा रे, ए तिरजच भेद पिछांण रे॥१२१॥
इत्यादिक तिरजंच ने तिरजंचणी रे, त्यांरो कहितां कहितां नावे अंत रे।
केई पुन कहे त्यांने वांदीयां रे, केई पाप कहे छे एकंत रे॥१२२॥
भील कसाई थोरी बावरी रे, तुरक मेर मेंणादिक जांण रे।
वले भंगी ढोली ने सरगरा रे, ढेढ जटीया अनेक पिछांण रे॥१२३॥
वले तीनसो तेसठ पाषंडीयां रे, उच नीच सगला मिनष नांम रे।
केई पुन कहे त्यानें वांदीया रे, केई पाप कहे छे तांम रे॥१२४॥
च्यार जात रा देवी नें देवता रे, त्याने वादें कोइ सीस नाम रे।
तिणमे केई कहे पुन एकलो रे, केई पाप कहे छे तांम रे॥१२५॥
भवानी भेरूं ने खेतला रे, गोगा मोगा अनेक विध जांण रे।
जष भूतादिक चूरामणी रे, ए विन्तर जात पिछांण रे॥१२६॥
इत्यादिक मेला देवी ने देवता रे, त्याने वादे पूजे कोइ ताहि रे।
तिणमें केई कहे पुन एकलो रे, केई पाप कहे तिण मांहि रे॥१२७॥
जीव अजीव री सगली थापना रे, त्यांने वांदे पूजे कोइ ताहि रे।
तिणमे केई कहें पुन एकलो रे, केई पाप कहे तिण मांहि रे॥१२८॥
नमसकार पुन में यांरे वेदो घणो रे, ते कहितां कहितां नावें पार रे।
एक थापे एक उथपें रे, यांरे इसडो छे मांहोमांहि अंधार रे॥१२९॥
ते न्याय निरणो यांरे नही रे, ए बूडे छे कर कर रूढ रे।
वले साध मांहोमांहिं लेखवें रे, ए इसडा अग्यांनी छे मूढ रे॥१३०॥

पातर कुपातर उंच नीच नें रे, सगलां नें कीयां नमसकार रे।
तिण मांहें लाभ कहें तिके रे, विनेंवादी पाषंडी रो परिवार रे॥१३१॥
विनेवादी पाषंडी इम कहे रे, सगलां नें नम्यां गुण होय रे।
ज्यूं पुन कहें सगलां नें नम्यां रे, त्यांने पिण जांणो तिमहिज सोय रे॥१३२॥
नमसकार सगलां नें कीयां थकां रे, केई कहें बंधे पुन थाट रे।
ते विनेंवादी पाषंडी तणो रे, यां राख्यो अग्यान्यां पाट रे॥१३३॥
केई वांदे पूजें छें कुपातरा रे, वले वांदे अजीव नें कोय रे।
तिणमें पुन परूपें विकल थकां रे, त्यांमें निश्चें समकत न होय रे॥१३४॥
साधु आहार करें छ कारणें रे, तिणमें कहे छें पाप रे।
केई कहे धर्म एकलो रे, यांरे ये पिण नहीं छें मिलाप रे॥१३५॥
साधु आहार करें छ कारणें रे, तिणमें पाप कहे ते बोलें भूठ रे।
त्यां भेष भांड्यो भगवांन रो रे, दीधी मुगत मारग ने पूठ रे॥१३६॥
यांरे सरधा सामग्री तो जू जूइ रे, जुदी जुदी परूपणा छें ताहि रे।
कदे आय पडें यांमें सांकडी रे, जब भूठ बोली मिल जाय रे॥१३७॥
परदल कटक देखें आवतो रे, जब सगला नूंनर एके हो जाय रे।
परदल कटक पाछो फिर्यां रे, सगला नूंनर बीखर जाय रे॥१३८॥
ज्यूं साधु आयां देख गांम नगर में रे, सगला भेषधारी एके थाय रे।
वले साधु वीहार कीयां पछें रे, ये पिण खोटा कहें मांहोमांय रे॥१३९॥
ए कदेक मांहोमां उथपें रे, कदेक देवें मांहोमां थाप रे।
मोह कर्म उदे रा मतवाल सूं रे, ए बांधे छें बोहला पाप रे॥१४०॥
यांरे सरधा सामग्री मत जू जूओ रे, त्यांरे विगटें छे बोल अनेक रे।
पिण सुध साधां नें निषेधवा रे, हुवे मांहोमांहि पापीडा एक रे॥१४१॥
मांहोमां करें कलेस कदाग्रहो रे, यांरे सरधा खोटी घणी गेंर रे।
यारे साधु तो निजर पड्यां थकां रे, जांणे जाग्यो पूर्वलो वेंर रे॥१४२॥
जो तुरक देखे करकांटीयो रे, तो जागे तुरकां नें धेष रे।
ज्यूं भेषधारी देखें साध ने रे, त्यांनें जागे धेष वशेष रे॥१४३॥
तुरक कहे इण करकांटीये रे, म्हांरा सेंद मराया इण बताय रे।
तिणसूं वेंरी म्हांरो करकांटीयो रे, उ बेर मांगां छा ताय रे॥१४४॥
ज्यूं भेषधारी कहे छे साधां भणी रे, यां कीधो छे म्हांरो उघाड रे।
करडी कर कर परूपणा रे, म्हांरा श्रावक लीधां पाड रे॥१४५॥
किरकांटीयां नें तुरक देख नें रे, मारें कूटे बोले घणा गेंर रे।
ज्यं भेषधारी देखें साध ने रे, तो जागें अभिंतर बेंर रे॥१४६॥

श्रद्धा री चौपई : ढाल १

भेष अंधारी परगट करी रे, बागडी सहर मझार रे।
संवत अठारें छतीसे समें रे, काती सुद पुनम मंगलवार रे॥१४७॥

ढाल : २

[धीज करे सीता सती रे लाल]

केई आहार न मांनें केवली भणी रे, केई कहें केवली करे आहार रे सुगुणनर*।
यांमें साची भूठी सरधा केहनीं रे लाल, ते पिण विकलां रे नहीं छें विचार रे। सु० न०।
जोयजो अंधारो भेप में रे लाल* ॥ १ ॥

यां दोयां जणां में एकण तणी रे, खोटी सरधा साख्यात रे। सु०।
वले साध मांहोमांहि लेखवें रे, ते दोयां जणां रे मिथ्यात रे॥ सु० जो० २ ॥

देस उणो कोड पूर्व लगे रे, विनां कीयांई आहार रे।
बोलें चालें जीवें किण विधे रे लाल, आ पिण नहीं समझ लिगार रे॥ ३ ॥

केई कहें तीथंकर बोले नही रे, यांरे अतिसय गूंजे रह्यो मांय रे।
केई कहें तीथंकर बोलता रे लाल, ववहार भाषा नें सत वाय रे॥ ४ ॥

यांमें एक तो भूठो असाध निश्चें खरो रे, तो ही गिणे मांहोमां साध रे।
ते निरणों नही घट भितरे रे, त्यांरे किण विध होसी समाध रे॥ ५ ॥

जो तीथंकर बोले नहीं रे, तो किण कह्यो पूर्व ग्यांन रे।
लोक अलोक तणा भाव किण कह्या रे, केवली विण किण नें आसांन रे॥ ६ ॥

केई अछेरा दस मांनें नहीं रे, केई मांनें अछेरा तीन काल रे।
यांमें एक तो भूठो निसंक सूं रे लाल, ते पिण विकलां रे नही छे नीकाल रे॥ ७ ॥

अछेरा दस मांनें नहीं रे, तिणरी सरधा कहें छें असुध रे।
वले तेहीज तिणनें साधु गिणे रे लाल, तो दोनूं जणां री भिष्ट बुध रे॥ ८ ॥

अछेरा दस मांनें नहीं रे, तिण सूतर दीया उथाप रे।
ते आप छांदे उंधी अकल सूं रे लाल, ते कर रह्या कूड विलाप रे॥ ९ ॥

केई कहें केवल ग्यांन साध नें रे, उपजें बारा थी आय रे।
केई कहें केवल ग्यांन उपजें रे, ते तो मांहि थी परगट थाय रे॥ १० ॥

केवल ग्यांन बारा थी उपनों कहे रे, तिणरी खोटी छे मिथ्यादिष्ट रे।
तिण जीव नें ग्यांन न्यारो गिण्यो रे, तिणनें साध गिणे ते ही भिष्ट रे॥ ११ ॥

केई कहें महावरत देसथी रे, तिणमें इविरत रो आगार रे।
केई कहें महावरत सर्व थी रे लाल, साध रे नहीं इविरत लिगार रे॥ १२ ॥

जिण साधु रे महावरत देसथी रे, ते नियमा निश्चें नहीं साध रे।
तिण देस विरती नें साध कहे रे, ते पिण निश्चें असाध रे॥ १३ ॥

साधु रे महावरत सर्व थी रे, ठांणा अंग दसवीकाल मांय रे।
वले उवाइ सुयगडा अंग में रे, साधु रे नहीं इविरत कांय रे॥ १४ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

पाच महावरत सर्व थी रे, तिणमें कूड नही तिल मात रे।
केई कहे महावरत देस थी रे, ते निश्चे मिथ्याती साख्यात रे॥ १५॥

देस महावरत तो हुवे नही रे, महावरत तो सर्व थी होय रे।
देस विरत कीयां श्रावक हुवे रे, तिणने साध म जांणों कोय रे॥ १६॥

कोइ देस विरती ने साधु कहे रे, ते पूरा मूंढ गिवार रे।
ते निश्चे मिथ्याती मूलगा रे लाल, साधु श्रावक री पात वार रे॥ १७॥

आहार उपध साधु भोगवे रे, तिणमे केई कहे निरजरा धर्म रे।
केई परमाद ने इविरत कहें रे, तिण सूं लागो कहे पाप कर्म रे॥ १८॥

आहार उपध साधु भोगवे रे, तिणमें जांणे मिथ्याती पाप कर्म रे।
तिण मूंढ मती ने साधु गिणे रे, ते पिण भूला अग्यांनी भर्म रे॥ १९॥

साध आहार कीयां मांहे पाप छें रे, पाप नीपजें तो बूडो दातार रे।
तिण साधु नें पाप भेला कीयां रे, तिणरो किण विध होसी उधार रे॥ २०॥

नवपदारथ छें जूआ जूआ रे, जूओ जूओ छे त्यारो सभाव रे।
यांने रूडी रीत न ओलख्या रे, त्यांरो मूढ न जाणे न्याव रे॥ २१॥

केई नवपदारथ ने इम कहे रे, आठ जीव ने एक अजीव रे।
एहवी करे छें परूपणा रे लाल, कर कर खांच अतीव रे॥ २२॥

केई नव पदारथ मे इम कहे रे, एक जीव ने एक अजीव रे।
सात जीव तणी परजाय छे रे, ते तो नही छे जीव अजीव रे॥ २३॥

केई नवपदारथ मे इम कहे रे, पाच जीव ने च्यार अजीव रे।
एहवी करे छे परूपणा रे, कर कर खांच अतीव रे॥ २४॥

ए तीनोइ सरधा छे जू जूइ रे, एकण टोला मझार रे।
वले साध मांहोमां सरध ने रे, भेलो करे अग्यांनी अहार रे॥ २५॥

त्यांरी सरधा तो मांहोमां जू जूइ रे, नही मांने एक एक री बात रे।
तोही करे संभोग साध सरध ने रे, त्यारो प्रतष देखो मिथ्यात रे॥ २६॥

यांने इतरी तो समझ पडे नही रे, ते तो पूरा छे मूंढ गिंवार रे।
ते ववेक विकल सुध बुध विनां रे, त्यांने मूर्ख सरधे अणगार रे॥ २७॥

त्याने श्रावक पिण इसडा मिल्या रे, त्यांरा घट मांहे घोर अंधार रे।
त्यांने इतरी पिण समझ पडे नही रे, ते पिण पूरा छे मूढ गिंवार रे॥ २८॥

केई कहे पुन पाप जीव छें रे, केई कहे पुन पाप अजीव रे।
केई कहे जीव अजीव दोनू नही रे लाल, यांमें कुण छे मिथ्याती जीव रे॥ २९॥

जो तीनोइ ने कहे समकती रे, तो वूड गई छे त्यांरी वात रे।
खोटी ने साची सरधा रो निरणो नही रे, त्यांरे आय चूकों छे मिथ्यात रे॥ ३०॥

केई आश्रव नें कहे जीव छें रे, केई आश्रव नें कहें अजीव रे।
केई कहें जीव अजीव दोनूं नहीं रे लाल, जूआ जूआ बोलें छें निसदीव रे॥ ३१॥
संवर निरजरा मोष नें रे, केई कहें छें जीव साख्यात रे।
केई कहें जीव अजीव दोनूं नहीं रे, ते पिण वद वद बोलें छें विख्यात रे॥ ३२॥
केई कहें छें बंध अजीव छें रे, केई कहें छें बंध छें जीव रे।
केई कहें जीव अजीव दोनूं नहीं रे, ते पिण कर कर तांण अतीव रे॥ ३३॥
इण विध सरधा छे जू जूइ रे, वले भेलो छें त्यांरो संभोग रे।
त्यांमें संजम समकत किहां थकी रे, त्यांरे मोटो मिथ्यात रो रोग रे॥ ३४॥
यांरे सरधा तो मांहोमांहि जू जूइ रे, वले सरधे मांहोमां साध रे।
सुध साधां ज्यूं लोकां में पूजावता रे, त्यांरे किण विध होसी समाध रे॥ ३५॥
यांने श्रावक वांदे साध जांण नें रे, ते श्रावक विकल समांन रे।
यूंही वूडे छे बापडा रे, त्यांरा घट मांहें घोर अग्यांन रे॥ ३६॥
वले तिरण तारण जांणें एहनें रे, इसडी गाढी बेठा छे धार रे।
ते सुध बुध विनां जीव बापडा रे, भव भव में होसी खुवार रे॥ ३७॥
त्यां विकलां ने छेरव्यां थकां रे, तो लडवा नें छे तयार रे।
त्यां सूं न्याय निरणो हुवे नहीं रे, करवा वेठा छे झगडो ने राड रे॥ ३८॥
यांरे सरधा रो मूंह माथो नहीं रे, वले भिष्ट छे आचार रे मांहि रे।
ते विकलां नें समझ पडे नहीं रे, कूडी पख झाले रह्या ताहि रे॥ ३९॥
साधां रे आल देतां संके नहीं रे, वले निन्दा करण नें सूर रे।
भागल भिष्ट नें वांदे गुर जांण ने रे लाल, त्यां सूं दुरगति नहीं छे दूर रे॥ ४०॥
खोटी सरधा रा भिष्टी ओलखायवा रे, जोड कीधी माधोपुर मझार रे।
संवत अठारे अडतालेसमें रे लाल, आसोज सुद छठ ने सोमवार रे॥ ४१॥

ढाल : ३

दुहा

नमूं वीर सासण धणी, ते पोंहता पद निरवांण।
जनम मरण दुख षेय करी, मेट्या आवण जाण ॥ १ ॥
जे भाव भगवंते परूपीया, ते गणधरे गूंथ्या जाण।
ते भेषधार्यां रे पाने पड्या, उंधा करे अर्थ अयांण ॥ २ ॥
ते छठे गुण ठांणे निरंतर कहें, आरत ने धर्म ध्यांन।
ते परमारथ पायां विनां, बोले विकल समांन ॥ ३ ॥
श्री वीर कह्यों एकण समें, दोये ध्यान न ध्यावे कोय।
आरत ध्यांन ध्यावे तिण समें, धर्म ध्यान किहा थी होय ॥ ४ ॥
एहवी पिण समझ पडे नही, वले ओर परूपें विरुध।
आरत ध्यांन ध्यावे तिण समें, कहे लेस्या तीनूंई सुध ॥ ५ ॥
आरत ध्यांन ध्यावे तिण समे, आछी लेस्या किहां थी होय।
जे ववेक विकल हुवा तेहने, आ पिण खबर न कोय ॥ ६ ॥
लेस्या नें आरत ध्यांन री, यारा लखणा सू खबर पडंत।
त्यांरा भाव भेद परगट करू, ते सुणजो कर खत ॥ ७ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या मे]

आरत ध्यांन ध्यायां माठी लेस्या आवें, तिण मांहे संका मूल म आणो।
आ प्रतष साची बात उथापें, कांय बूडो कूडी कर कर तांणो।
माठो ध्यांन ध्याया माठी लेस्या आवें* ॥ १ ॥

कहे छठे गुणठांणे आरत ध्यांन ध्यायां, जब पिण कहे लेस्या वरते छे रुडी।
इसडी परूपे लोकां में अग्यानी, त्यांरी प्रतष सरधा कूडी रे कूडी ॥ मा० २ ॥
ज्यांरे भावे किस्नादिक माठी लेस्या आवे, त्यांने तो जाबक साव न सरधे।
ए प्रतष लोकां आगे परूपी, ते तो छानी वात न राखी पडदे ॥ ३ ॥
भावे किस्नादिक माठी लेस्या आवे, त्यांने जो उ साध सरधे तो दीससी भूडो।
जो छ लेस्या वाला नें साध सरधे वांदे, तो उ आप री सरधा रे लेखेंई बूडो ॥ ४ ॥
कदे उसभ जोग साधु रा वरतें, जब लेस्या पिण साधु रे माठी आवें।
तिण उसभ जोगां में मूंढ मिथ्याती, लेस्या तिनंई रूडी बतावें ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

कदे साधु चारितीयो मोहकर्म वस, सुपनां मांहें सेवे कांम नें भोग।
खेती करसंण आदि करे सुपनां में, जब माठी लेस्या नें माठा जोग॥ ६॥
वले विणज करे सुपनां में साधु, वले पड जाए सुपनां में आल जंजाल।
वले माठाई जोग नें माठीई लेस्या, थें समझो रे समझो सुरत संभाल॥ ७॥
कदे विषे कषाय माठा जोग वरतें, कदे मईथुन संग्या साधुरे आवें।
हस्त कर्मादिक कोइ करे कुचेष्टा, जब पिण माठी लेस्या साधु में पावें॥ ८॥
कदे कलहो करे साधु कर्म तणें वस, आहार पांणी सिखादिक रे कांम।
करडा काठा वचन काढे कर्म तणें वस, जब माठी लेस्या ने माठा परिणाम॥ ९॥
कदे लोलपणो आवे आहारादिक सूं, कदे आंसू पिण मोह कर्म वस आवे।
कदे फोरवे लब्द कतूहल निमते, जब पिण माठी लेस्या साध में पावे॥ १०॥
कदे शब्दादिक गमता अणगमता, त्यांसूं पिण कदे थाए हरष ने सोग।
कदे इरषा मांन बडाई पिण आवे, जब माठी लेस्या ने माठा जोग॥ ११॥
इत्यादिक जागतां सूतां सुपनां माहे, कदे साधु रा वरते छे उसभ जोग मेला।
जब माठोई ध्यांन माठी लेस्या आवे, ते परमारथ जांणे नही गेला॥ १२॥
उसभ जोग आरतध्यांन सरधे साधु रे, पिण लेस्या नें सरधे साधु माहें भूडी।
ते सूने चित सूतर बांचे मिथ्याती, परमारथ आयां विण त्यांरी पिडताई बूडी॥ १३॥
आगे आगे हुआ मोटा साध रिषेसर, त्यांने माठी लेस्या आई उघडी।
त्यां आलोई पडिकमे प्रायछित लीधो, ते सांभलजो भवीयण विसतारी॥ १४॥
सीहो मुनी मोटें मोटें शब्दे रोयो जब, आरतध्यांन ने माठी लेस्या आई।
जब पिण सीहा में आछी लेस्या बतावे, त्यां विकलां नें सूतर री समझ न काई॥ १५॥
बाल भाव एमंता मुनीसर नें आयो, जब पांणी पातरो दीयो तिराई।
ए प्रतष सावद्य किरतब कीधो, जब माठोई ध्यांन माठी लेस्या आई॥ १६॥
रहनेम चलो देख राजमती नें, खोटा मन सूं काढी खोटी वाय।
त्यांनें पिण माठो ध्यांन माठी लेस्या आई, तिण मांहें संका मत आंणो कांय॥ १७॥
इत्यादिक मोटा मोटा संत रिषेसर, त्याने कर्म जोगे माठी लेस्या आई।
ते आलोइ पडिकमी प्रायछित लीधा, पिण ववेक विकला नें खबर न कांई॥ १८॥
केई भेष धार्‍यां री एहवी सरधा, कहे साधां नें माठी लेस्या नही आवे।
ते सूतर अर्थ जांणें नही भोला, गाला रा गोला घड घड चलावे॥ १९॥
पेहले सतक भगोती रे पहले उद्देसे, वले ठांणां अंग रे तीजे ठांणे।
तिणरा पाठ अर्थ री समझ पड्यां विण, पीपल बांधी मूरख ज्यूं ताणे॥ २०॥
द्रव ने भाव लेस्या रा गुण नहीं जांणें, ते तो द्रव लेस्या री ठोड भाव लेस्या वतावे।
भाव लेस्या री ठोड कहे द्रव लेस्या, ते ववेक विकल भोलां ने भरमावें॥ २१॥

भाव ने द्रव लेस्या जिणेसर भाषी, त्यांरा लखण जूआ जूआ ओलख लीजे।
त्यारो विवरो कहूं सूतर में भाख्यो जिम, ते सुण सुण घट मांहे निरणो कीजे॥ २२॥
भूडा भला वरण गन्ध रस परस छे, एहवा गुण सूं दरब लेस्या पिछांणो।
जब जीव रा लखण भूडा भला आवे, ते गुण सूं भाव लेस्या ने जांणो॥ २३॥
पांच आश्रव परमाद आरभ ना जोग, इत्यादिक लषणां किस्न लेस्या पिछांणो।
यां माहिला केयक छठे गुणठांणे, साधु नें कदेयक लागता जांणो॥ २४॥
इरषा ने मिरषा विषे अभिलाषा, वले धेष परमाद बोले भूठ वाय।
रस रा लोलपी ने साता रा गवेषी, ए लषणां सूं लेस्या नील कहवाय॥ २५॥
वचनें करे बाकां ने बंक आचरले, वले कपट ने दोष रो ढांकण हारो।
वले राग नें धेष अदत मछर भाव, इत्यादिक माठा लषण कापोत रा धारो॥ २६॥
तीन माठी लेस्या मांहिला लषण, तेहीज लषण आरत ध्यांन रा जांणो।
जो छठे गुणठांणे आरत ध्यांन सरधो, तो माठी लेस्या सरधण री कांय मांडी तांणो॥ २७॥
आरत ध्यान नें तीन माठी लेस्या रा, कोइ लषण मीढी जोय करो विचारा।
जो मिले सारिषा तो सरधलो एक, न मिले तो सरधलो न्यारा॥ २८॥
आरत ध्यांन रा च्यार भेद कह्या जिण, ते सांभलज्यो भवीयण चित ल्याय।
अणगमता शब्दादिक आय मिलीया, जब तिणरों विजोग बाछे धेष ल्याय॥ २९॥
मन गमता शब्दादिक आय मिलीया, ते संजोग वाछे रागी थको जांण।
आतंक रोग आय सरीरे उपनों, तिणरो विजोग वाछे धेष आंण॥ ३०॥
सेवीया काम भोग रा संजोग मिलीयां, ते पिण संजोग वांछे राग आंण।
ए आरत ध्यांन रा भेद चारूंई माठा, त्यांरा लषणां री बुधवंत करजो पिछांण॥ ३१॥
जे करे आक्रंद मोटे मोटे सब्दे, वले दीन पणो करे सोग संताप।
दलगीर होय आंसू न्हाखे रोवे, वले करे अनेक विध मोह विलाप॥ ३२॥
ए च्यारूं माठा लषणां आरत ध्यान जाणो, च्यार भेद कह्या ते पिण माठा जांणो।
ए माठो ध्यांन ध्यायां माठी लेस्या आवे, तिण मांहे संका मूल म आंणो॥ ३३॥
कदे आरत ध्यांन साधु रे आवे जब, लेस्या पिण साधु रे माठी आवे।
आरत ध्यांन ध्यावे साधु तिण मांहे, मूढमती लेस्या आछी वतावे॥ ३४॥
ए तो आरत ध्यांन रा भेद ने लषण, उवाइ उपंग ने ठांणाअग मांय।
एहवो आरत ध्यांन साधु ध्यावे जब, लेस्या पिण माठी व्यापें आय॥ ३५॥
आरत ध्यान आयो साधु रे वतावे, जब माठी लेस्या आई नही वतावे।
कोइ एहवी परूपे मूढ मिथ्याती, इसडा अन्हाखी ने कुण समभावे॥ ३६॥
भेषधारी कहे म्हांरा सर्व टोला मे, माठी लेस्या कदे नही व्यापे आय।
त्यांनें आप तणा किरतव नही सूभे, त्यांरा टोला रा चारित सुणो चित ल्याय॥ ३७॥

आहार पांणी रे कारण करे लडाई, वले लडतां विढतां लोट पातरा फूटे।
जब पिण कहें माठी लेस्या न आई, ते निश्चें अग्यांनी लागा मत भूठे॥ ३८॥
वले चेला चेली आप करवा काजें, करे मांहोमांहि भूठा झगडा।
जब पिण कहे माठी लेस्या न आई, एहवा भूठ बोले पाषंडी बगडा॥ ३९॥
त्यांरा टोला में पग पग इसको खेचो, वले पग पग कर रह्या झगडा ने राड।
ए प्रतप उघाडी माठी लेस्या देखो, पिण समझे नही मूंढ मिथ्याती गिवार॥ ४०॥

ढाल : ४

दुहा

केई भेषधारी जेंन रा, ते भाषे अग्यांनी अलाल।
त्यांने श्रावक ववेक विकल मिल्या, ते पूरा अग्यांनी वाल ॥ १ ॥
ते सूतर अर्थ उंधा करी, भाषे हिंसा धर्म।
त्यांरी सरधा सुण सुण वापडा, बांधे बोहला कर्म ॥ २ ॥
कहे साधां री अणुकम्पा आंण नें, जीव मारे मिथ्याती कोय।
तिणरे एकंत पुन नीपनो कहे, पाप रो बंध न होय ॥ ३ ॥
साधु कंपतो देखे सीतकाल में, कोइ गृहस्थ अगन लगाय।
पकड तपावे तिण साध ने, तिणरे पुन तणो बंध थाय ॥ ४ ॥
इण विध पुन कहे हिंसा कीयां, ते विकलां नें खबर न काय।
त्यांरी सरधा परगट कीयां थकां, ते फिरतां पिण वार न कांय ॥ ५ ॥
यांरी सरधा ने कूड कपट री, कही कठा लग जाय।
हिवे थोडी सी परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[रे प्राणी कर्म समो नही कोइ···]

साधु ने कंपतो देख सीयाले, कोइ अणुकम्पा मिथ्याती आंणे।
तिण अगन लगाए साधु ने तपायो, तिणमे पुन अग्यानी जांणे रे।
कुमत्यां हिंसा मे धर्म काय थापो* ॥ १ ॥
तिण अगन लगाय साधु ने तपायो, ते हूंतो जीव मिथ्याती।
साध थई इण में पुन परूपे, ते पिण उणरो साथी रे ॥ कु० २ ॥
साधु तो मुख सूं नां नां कहिता, तोही पकड वेंसाण तपायो।
तिण मोटो अकार्य कीयो अग्यांनी, तिणमे पुन किहां थी थायो रे ॥ ३ ॥
साधु अगन रो आरंभ अनर्थ जांण्यो, जब कह्यो मोनें कल्पे नांही।
तोनें पिण ए कांम जुगतो नही छे, पाप जांण निषेद्यो त्यांही रे ॥ ४ ॥
जो पुन जांणे तो साधु नही निषेधता, निषेधो जब जांण्यो छे पाप।
अनर्थ पाप जांण्यो तिण मांहें, पुन री किम करसी थाप रे ॥ ५ ॥
साधु ने तपावे अगन लगाए, तिणमे साधु तो पुन कहे नांहि।
केई जेन तणा भेषधारी अग्यानी, पुन कहे तिण मांहि रे ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

साधु तो पेंहलां अनर्थ जांण निषेद्यो, पछें कह्यों थांरे पुन बंधाणो।
इसडो भूठ साधु किम बोलें, थानें आ पिण नही छे पिछांणो रे॥ ७॥
साधु ने अगन लगाए तपाए, तिणमें पुन कहे छे पाषंडी।
वले साधपणा रो नांम धरावे, तिण भेष ले आतम भंडी रे॥ ८॥
साधु ने अगन लगायो तपायो, तिणरी लेस्या कहे छे रुडी।
वले परिणांम ध्यांन आछा कहे तिणरी, सरधा छे जाबक कूडी रे॥ ९॥
साधु ने अगन लगाय तपायो, तिणरी लेस्या घणी छे भूंडी।
वले परिणांम ध्यांन आछा कहे तिणरी, बुध अकल गई बूडी रे॥ १०॥
एक चिरमी जितरी तेउकाय में, जीव असंष बतावें।
तो अगन जाले नें साधु नें तपायो, पुन कहितां लाज न आवें रे॥ ११॥
अगन रा आरंभ सूं दुरगत बधे छे, दसवीकालिक छठो धेन जोय।
तो साधु नें तपावण अगन जलायां, पुन किहांथी होय रे॥ १२॥
केइ जनम मरण मूंकावण काजें, तेउकाय हणे छे कोय।
अहेत ने अबोध कह्यो छे तिणरें, आचारंग पेंहलो धेन जोय रे॥ १३॥
आठ कर्म गांठ बंधे अगन आरंभ सूं, वले मोह मार नरक होय।
इसडा फल लागे अगन हण्यां सूं, तो पुन किहांथी होय रे॥ १४॥
अर्थ अनर्थ धर्म रे हेतें, मदबुधी हणे तेउकाय।
वले मार अनंती नरक निगोद में, ते जोवो दसमां अंग मांय रे॥ १५॥
साधु नें तपायां में पुन जांणे ते, रुद्रध्यांन तणो भेद तीजो।
जो बंध पडे तो पडे नरक रो, ठांणाअंग उवाई जोय लीजो रे॥ १६॥
साधु रे काजें अगन लगाए, पछे साधु ने पकड तपावे।
तिणरी आछी लेस्या नें पुन बंध कहितां, विकलां नें लाज न आवे रे॥ १७॥
कोइ त्रिषा सूं पीड्या साधु नें पकड नें, मुख फाडे काचो पांणी पावे।
जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरे पिण पुन थावें रे॥ १८॥
कोइ भूख सूं पीड्या साधु नें पकड नें, मुख फाड ने सचित खवावे।
जो अगन तपायां पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थावे रे॥ १९॥
उजाड मांहे थाका साधु नें पकड नें, गाडे उंट घोडे बेंसावे।
जो अगन तपयां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थावे रे॥ २०॥
कोइ सीयां मरता साधु नें पकड नें, अगन अणमिलीयां राली ओढावे।
जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थावे रे॥ २१॥
कोइ साधु रो पेट दुख्यो जांणे जब, अजमादिक उकाली पावे।
जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरे पिण पुन थावे रे॥ २२॥

कोइ साधु रो शरीर मेलो देखी ने, पकडे सिनांन करावे।
जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थावे रे॥ २३॥
कोइ साधु रा कपडा मेला देखी नें, खोस नें काचा पांणी सूं धोवे।
जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन होवे रे॥ २४॥
कोइ साधु रा काजें जायगां कराए, साधु नें राखे तिण मांय।
जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, तिणरो पिण पुन थाय रे॥ २५॥
इत्यादिक अनेक बोलां में, साधु काजें हणें छे काय।
जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, सगलां में पुन थाय रे॥ २६॥
जो किण ही बोला में पुन वतावे, किण ही में कहे पुन नांहीं।
तो उण रे लेखें उण री बोली में, अंधारो घणो घट मांही रे॥ २७॥
पुन कहे साधु नें अगन तपायां रे, ते उठी जठाथी भूठी।
तेउकाय मार्‍यां रो पाप न जांणें, त्यांरी दया दिल सूं गइ उठी रे॥ २८॥
कोइ संथारा माहें मुख फाडे ने, असणादिक घाले मुख मांय।
जो अगन तपायां रो पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थाय रे॥ २९॥
कोइ त्यागवाला रो मुख फाडे नें, त्यागी वसत घाले मुख मांय।
जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थाय रे॥ ३०॥
त्याग वालां रो त्याग भंगावे, ते जीव छे भारी कर्मों।
सूंस भाग्या भंगायां निश्चें पाप बंधे छे, पिण निश्चें नही पुन धर्मों रे॥ ३१॥
ओर रो सूंस भंगायांइ बूडे छे, बंधे छें पाप कर्म।
तो साध रा सूंस भंगावे तिण रे, किण विध होसी पुन नें धर्म रे॥ ३२॥
सूंसवालो जो सेठों रहेसी, तिणरो तो सूंस न भांगो।
पिण सूंस भंगावण वालो तो बूडो, तिणरे निश्चेंइ पाप कर्म लागो रे॥ ३३॥
आहार सेज्या वसतर नें पातरा, साधु नें असुध वेंहरावे।
तिणनेंइ एकंत पाप हुवे छे, तो अगन तपायां पुन किम थावे रे॥ ३४॥
साधु नें अगन सूं तपावे तिणमें, पुन कहे तिणरी बुध माठी।
ते कहिणवालां ने सरधवालां रे, हीया आडी आइ छें पाटी रे॥ ३५॥
साधु नें अगन तपावें तिणमें, पुन कहे मिथ्याती कोय।
तिणनें सूतर ससतर ज्यूं परगमीया, ते बूडा मांनव भव खोय रे॥ ३६॥
साधु ने अगन सूं तपावें तिणमें, पुन कहे ते भारी कर्मा जीव।
तिण आल दीयो अनता अरिहंत ने, घणी करसी नरकां में रीव रे॥ ३७॥
साधु ने अगन सूं तपावे तिणमें, पुन कहे ते बोले छें कूड।
ते प्रतष हिंसाधर्मी अनारज, त्यांरा पिंडतपणा में धूड रे॥ ३८॥

साधु नें तपायां में पुंन परूपें, तिणरी अकल में घणो छे अंधारो।
वले विवध मिथ्यात छे तिणरा मत में, कहितां न आवें पारो रे॥ ३९॥
मिथ्याती साधु नें तपावे अगन सूं, तिणने थें पुन बतायो।
श्रावक तपावे तिणनें पाप बतावो, ओ किण विध मिलसी न्यायो रे॥ ४०॥
श्रावक ने पाप मिथ्याती नें पुन, ए उंधी सरधा कांय थापो रे।
अगन रो आरंभ दोनूं जणा नें, कीधां छें एकंत पापो रे॥ ४१॥
साधां ने अगन सूं तपावे श्रावक, तिणनें पाप कहो ते तो न्याय।
मिथ्याती तपावे तिणनें पुन कहें छें, ओ तो निश्चें उघाडो अन्याय रे॥ ४२॥
ए हिंसा धर्मी ओलखावण काजें, जोड कीधी नाथ दुवारा मझारो रे।
संवत अठारे वरस तयांले, सावण विद अमावस मंगलवारो रे॥ ४३॥

●

ढाल : ५

दुहा

केयक विगडायल जैंन रा, त्यारे ग्यांन नहीं घट मांय।
झूठ बोले अग्यांनी निडर थकां, त्यांनें परभव चिंता न कांय ॥ १ ॥
कोइ तपसा करे साध साधवी, त्यांरी निंद्या करे दिनरात।
आल अणहूंता टेक दे, त्यारी मूरख माने वात ॥ २ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

धोवण पाणी चास आछ राखे नें, कोइ तपसा करें मोटी नानी रे।
तिण तपसा ने मूरख खोटी जांणे, ते पूरा मूंढ अग्यांनी रे।
यां झूठाबोलां रो संग न कीजें* ॥ १ ॥
चास पाणी राखे ओर सगलोई त्याग्यो, ते तो अणोदरी तप मोटों रे।
तिण तपसा री निंद्या करे पापडी, त्यांरों नीमा निश्चे मत खोटों रे ॥ यां० २ ॥
तपसी तणा गुण ग्रांम करे तो, करमां री कोड खपावे रे।
उतकष्टो पद तीथकर पामे, तिणरा ओगण अग्यांनी गावे रे ॥ ३ ॥
तपसी तणा गुण कीधांई धर्म, तो तपसा कीधा में इधको छे धर्मो रे।
कोइ तपसा करे त्यांरी निंद्या करे छे, ते तो निश्चे बाधे जाडा कर्मों रे ॥ ४ ॥
तपसी तणा गुण हर कोइ गावे, ते गुण खमणी न आवें रे।
तिण सूं अजांण लोका ने कर कर तीखा, त्यां आगा सूं ओगुण बोलावें रे ॥ ५ ॥
तपसी रा ओगुण बोले बोलावे, ते तो दोनूं परकारे बूडे रे।
ते माठी गति जावा ने बीद बण्या छे, भारी होय जासी नरक रे तूंडे रे ॥ ६ ॥
भगवंत भाषी बारे भेदे तपसा, तिणरो मूरख न्याय नें जांणें रे।
तिणसूं मूंढ मिथ्याती भारीकर्मा, निंद्या करता संक न आंणें रे ॥ ७ ॥
एक सीत मातर कोइ ओछो खाए, ते जिगन अणोदरी जांणो रे।
जिम जिम उदर उणो इधकों राखे, तिम तिम अणोदरी तप पिछांणो रे ॥ ८ ॥
पांच विगें एक विगें किण त्यागी, ते पिण तपसा जांणों रे।
तो पांचोइ विगें सर्वथा त्यागी, ए रस त्याग तपसा पिछांणों रे ॥ ९ ॥
इण अणुसारे तपसा रा भेद घणा छे, तिण में लाभ कह्यो जिणराया रे।
तो चास पांणी राखें सगला दरब त्याग्यां, तिणमें तो बोहत निरजरा थायो रे ॥ १० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

एक सीत त्याग्यां एक विगें त्याग्यां में, तिणमें पिण कटें छें कर्मो रे।
तो चास उपरंत सारी वसत त्यागी, ते मोटो तप निरजरा धर्मो रे॥ ११॥
एक दिन चास राखें सारी वसत त्याग्यां, तिणमेंइ निरजरा थावे रे।
तो चास राखें त्याग करें महीना लग, ते कर्मा री कोड निश्चें खपावें रे॥ १२॥
तिण तपसा रा कोइ ओगुण बोलें, आतमा नें लगावे छे कालो रे।
तिण अरिहंत वचन उथाप्यो अग्यांनी. दे दे अणहूंतो आलो रे॥ १३॥
चास टाले ओर सगली वसत त्यागी, ते गुण मूले न सूझें रे।
मोह मिथ्यात ने उसभ उदें सूं, दिन दिन इधका अलूझें रे॥ १४॥
तिणनें श्रावक मिलीया अतंत अग्यांनी, त्यांनें आंधा ज्यूं मूल न सूझें रे।
त्यां आगें मन मांनें ज्यूं गोला चलावें, तो पिण बलतो जाब न बूझें रे॥ १५॥
थांरा मत मांहें कोयक बुधवंत हुवें तो, तुरत जांणें तिणनें कूडो रे।
तो छोड देंत ततकाल खोटो जांणी, झूठा बोला रे मुख देइ धूडो रे॥ १६॥
तपसी तणा गुण कानें सुणे जब, वलें अग्यांनी री छाती रे।
वले उलटा ओगुण काढें तपसा, ते निश्चें जीव मिथ्याती रे॥ १७॥
संवत अठारें वरस तयालें, आसोज विद नवमी सनीसर वारो रे।
मड मती ओलखावण काजें, जोड कीधी नाथ दुवारा मझारो रे॥ १८॥

ढाल : ६

दुहा

च्यार साधवियां चोमासो कीयों, पादू गांम मझार।
तिण में दुष्टी पापी जीवडा, आल दीधा विवध प्रकार ॥ १ ॥
कुण-कुण आल उठाय नें, दीया लोकां में फैलाय।
थोडा सा प्रगट करूं, ते सुणज्यो चित्त ल्याय ॥ २ ॥

ढाल

[आगाद समकित उचरे रे लाल]

दीख्या लेवा नें उठियो, तिणरो लेले अग्यांनी नांम।
तिण वेंहराइ वस्तु असूझती, सूंखडियादिक तांम रे।
दुष्टी आल देता संक्या नहीं* ॥ १ ॥
पचास रुपियां री सूंखडी, साधवियां नें वेहराइ आंण रे।
मोल मंगाए मेडता थकी, इसडी कहे छे कर कर तांण रे ॥ दु० २ ॥
मोल आंण वेहराइ सूंठनें, ते पिण वेहर लीधी ततकाल रे।
वले वासी राखी कहे सूंठ नें, ओ पिण दीयो अग्यांनी आल रे ॥ ३ ॥
साधवियां काजें सीरो कराय नें, साधवियां नें दीधो वेंहराय रे।
ओ पिण आल दीयो छे पापियां, वले दीयो लोकां में फेलाय रे ॥ ४ ॥
घृत ने खोपरादिक मोल ले, साधवियां ने वेंहराया तांम रे।
एहवी बात उठाए पापिया, बकवो करे ठांम ठांम रे ॥ ५ ॥
डावडा नें सूंस आर्यां दीया, परणवा रा कराया त्याग रे।
ओ पिण आल दीयो छे पापियां, त्यारो जांणज्यो पूरो अभाग रे ॥ ६ ॥
छकाय हणवा रा सूंस कराविया, घर में रहिवा रा त्याग कराय रे।
यां तीनां नें उचकाया आर्यां, ओ पिण एकंत मूसावाय रे ॥ ७ ॥
भोज पत्र राख्यो कहे साधव्यां, वसीकरणादिक करवा ताहि रे।
ओ पिण आल देइ नें पापियां, फेलायो लोकां मांहि रे ॥ ८ ॥
राते थांनक मे राख्या डावडा, ओ पिण बोल्यो हलाहल झूठ रे।
तिणरे धेख घणो आर्यां थकी, लोकां में कीयो झूठो फितूर रे ॥ ९ ॥
एक जणी आल इसडो दीयो, फीणा रोट्यां कर कर च्यार रे।
म्हे तो वेंहराइ आर्यां भणी, एकण दिन मझार रे ॥ १० ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

इत्यादिक आल दीया घणा, फेलाया लोकां रे मांहि रे।
कर्मां वश बकिया बापडा, पर भव सूं पिण डरिया नांहि रे॥११॥
दीख्या लेवा नें उठिया तेहनां, न्यातीलां उठाइ बात रे।
त्यां आल दीया छे अन्हांखी थकां, प्रसिद्ध कीधा लोकां में विख्यात रे॥१२॥
वले भेषधारयां री श्रावका, त्यां पिण दीधा अणहुंता आल रे।
ते आल फेलाया लोक में, बुद्धि विण कुण काढे निकाल रे॥१३॥
केइ टोला री टालोकर फिरें, त्यांरे साधां सूं धेष अतंत रे।
त्यांनें अणहुंता दोष उतराय नें, त्यांरी पिण पूरी मन खंत रे॥१४॥
ते तो आगे पिण आल देतीं घणा, अवगुण बोलती थी दिन रात रे।
ते तो दोष उतार हरषी घणी, जाणें खरची आइ म्हांरे हाथ रे॥१५॥
फिरे छें ठांम ठांम बंचावती, अवगुण बोलें छें ठांम ठांम रे।
आर्यां री उतारण आसता, यांरा दुष्ट घणा परिणांम रे॥१६॥
केइ दोष उतारे आंणिया, केइ मुख सूं जोडी करे बात रे।
साधवियां नें आल देती फिरे, त्यां पूरो पडिवजियो मिथ्यात रे॥१७॥
झूठा दोष उतारया पापियां, ते पापणी लिया उतार रे।
त्यांरी बात साची कर मांनसी, ते पिण बूडसी कालीधार रे॥१८॥
दोष उतारिया त्यांनें पूछणों, थें दोष उतारिया किण कांम रे।
ए थे साचा उतारिया जांण नें, के थें झूठा जांणें नें तांम रे॥१९॥
ए तो दोष कहे लोकां मझे, त्यां दोषां नें साचा ठहराय रे।
आर्यां री उतारनें आसता, पांनो बंचाय बंचाय रे॥२०॥
त्यांनें लज्जा नहीं इण लोक री, परभव री चिता न काय रे।
झूठ बोलती पिण संके नहीं, मन मानें ज्यूं बोले ताय रे॥२१॥
आल उतार आर्यां तणा, पांमी मन मांहे हरष रे।
जांणें डाकण पाली फिरें तेहनें, चढवा नें मिलियो जरख रे॥२२॥
ए तो आगेइ चारित भांग नें, आरे कर बेठीं अनंत संसार रे।
ए साच किसी तरह बोलसी, यांरी परतीत नहीं छें लिगार रे॥२३॥
आहार अशुद्ध वेंहरयो छे जांण नें, वले कहे मैं वेंहरयो निरदोष रे।
इम झूठ बोले जांण जांण नें, एहवा भिष्टी न जाए मोष रे॥२४॥
आहार पांणी वेंहरयो छे सूझतो, वले पूछ करे निरधार रे।
त्यांनें भारीकर्मां केइ जीवडा, आल देता न संके लिगार रे॥२५॥
यां दोषां रो निकालो काढियो, पादूगांम मझार रे।
घणा बाई भाई बेठां थकां, आर्यां में नहीं दोष लिगार रे॥२६॥

आल दीयो अन्हांखी पापियां, त्यांरो हुवो घणो फितूर रे।
तोंही नागा निरलज लाजें नहीं, त्यांरा जन्म जीतब ने धिकार रे॥२७॥
यां आल दीयो अन्हांखियां, त्यांरी मांनी छे साची वात रे।
ते पिण बूड गया छे वापडा, तिण में संका नही तिलमात रे॥२८॥
एहवा आल सुणे भेषधारियां, साचा कर मांन लीधा ताय रे।
ए पिण गांम नगर कहता फिरें, मन में हरखत थाय रे॥२९॥
भेषधाय्यां ने वोया पापियां, आर्यां ने भूठा दे आल रे।
ए पिण पापी बकवो करें, पूरो काढें नही निकाल रे॥३०॥
यां पोते पिण आल दीया घणा, वले दीसें एहिज परिणांम रे।
ए दोष सुण ने हरखे घणा, जांणें सरिया मन वछित कांम रे॥३१॥
त्यांनें परभव री चिंता हुवे, तो इण बात रो काढें निकाल रे।
वले नागडा भडंग हुवा तिके, सके नही देता आल रे॥३२॥
ओर जीवां नें कोड आल दे, ते पिण रुले घणो संसार रे।
जिहां जाए तिहां परजले, पाछो आल पामें वारूंवार रे॥३३॥
तो साधां नें कूडा कूडा आल दे, तिण पापी रो पूरो अभाग रे।
भारी कर्म वांध्या तिण पापिए, तिण सूं पांमे दुख अथाग रे॥३४॥
कदा बंध पडे जे नरक रो, तो जावे नरक मभार रे।
तिहां दुख असाता हुवे घणी, वले खाये अनंती मार रे॥३५॥
साधां रे आल देवे पापिया, मन मांहे उजम आंण रे।
तिणरी परमाधांमी देवता, जीभ काढें जडां सूं तांण रे॥३६॥
साधां नें आल देवे पापिया, तिण छोडी लाज ने सर्म रे।
घणा मे मिश्र भापा बोलता, बांधे महा मोहणी कर्म रे॥३७॥
केइ भूठ बोले ने पापिया, साधां ने देवे आल रे।
ते भ्रमण करे संसार मे, उतकष्टों अनतो काल रे॥३८॥
ते दुख भोगवे नरक निगोद में, तिणरो कहितां न आवें पार रे।
ते तो प्रश्न व्याकरण मांहे कह्यो, दूजा आश्रव द्वार मभार रे॥३९॥
कदा पाप उदे हुवे इण भवे, तो बधें घणो रोग सोग रे।
छेहडो आवे रिद्धि संपति तणो, पडे बालां तणो विजोग रे॥४०॥
केइ आंधां होय जावे इण भवे, जाबक होय जावे निराधार रे।
भीख भमता होवे इण भवे, साधां नें आल रो देवणहार रे॥४१॥
केइ तो अन्न विहूंणा मरे, करता थकां विल विलाट रे।
साधां नें आल देवे तेहनां, भव भव में हुवे ओहिज घाट रे॥४२॥

साधु साधवियां नें आल दे, तिणरो भव भव मांहि अभाग रे।
ते दुख भोगवे नरक निगोद में, तिणरो बेगो न आवे थाग रे॥४३॥
इम सांभल नें नर नारियां, किणनेंइ म दिज्यो आल रे।
आल दीधां रा फल छे पाडुवा, श्री जिण वचन संभाल रे॥४४॥
आल दीधां रा फल ओलखायवा, जोड कीधी ईडवा मझार रे।
संवत अठारे वर्ष चोपनें, चेत विद चोथ नें बुधवार रे॥४५॥

ढाल : ७

दुहा

केई अग्यांनी इम कहे, साधु नें जोड करणी नांहि।
ते अन्हाखी बकवोकरें, त्यांरे ग्यांन नहीं घट मांहि ॥ १ ॥
त्यां सावद्य निरवद्य न ओलख्यो, नही ओलखी भाषा च्यार।
ते जोड करणी उथापवा, हुवा अग्यांनी त्यार ॥ २ ॥
श्री अरिहंत भाख्या अर्थ नें, ते गणधरे गुथ्यो सिधंत।
त्या जोड करी सूतरां तणी, त्यारो अर्थ करे मतवंत ॥ ३ ॥
रिषभ देवजी रा साधां जोडीया, पइना चोरासी हजार।
श्री वीर तणा साधां कीयां, चवदे हजार पइना सार ॥ ४ ॥
वले विचला बावीस तिथंकरां तणां, साधां कीधां पइना अनेक।
तो हिवडां जोड निरवद्य करें, त्यांमें दोष म जांणो एक ॥ ५ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

केई कहें साधां ने जोड न कहणी, कहितां बधे ग्यांनावरणी कर्मो रे।
दरसणावरणी कर्म बंधे जोड सुणीयां, तिण जोड कह्यां नही धर्मो रे।
चतुर विचार करी ने देखो* ॥ १ ॥
पेंहलां तो साधां ने जोड कहणी नषेधी, ते ही जोड कहिवा लागा रे।
त्यां विकलां ने साधु किण विध कहिजे, ए तो वरत विहूंणा नागा रे ॥ च० २ ॥
जोड कह्यां ग्यांनावरणी कर्म बंधे छें, सुणे ते दरसणावरणी बांधे रे।
हिवे तेहीज जोड कहे तिणरे लेखे, समकत चारित खोयो आंधे रे ॥ ३ ॥
वले जोड कहे त्यांनें इण विध कहितां, गीतेरण ज्यूं गावें गीतो रे।
ते पिण जोड नें मिल मिल गावे, त्यारी विकल मांने परतीतो रे ॥ ४ ॥
जोड कहणी नषेधे ने कहिवा लागा, त्यांने आय कहे कोइ आमो रे।
थे साधा ने जोड कहणी नषेधी, थे जोड कहो किण कामों रे ॥ ५ ॥
जब कहे म्हे जोड नें भली न जाणां, म्हे कहां अनेरा नी कीधी रे।
परनी कीधी जोड कहां परपेखा, म्हानें आय मिली छे सीधी रे ॥ ६ ॥
भूठ लागें जोड करणवाला नें, म्हाने तो कहितां भूठ न लागें रे।
म्हे तो जिसी हुवे जिसी कहे बतावां, लोक सुणे त्यां आगें रे ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

पेंलां री जोड कीधी जोड भूंडी जांणों छो, तो थें कांय कहो लोकां आगें रे।
लोक पिण जोड सुण नें घणी सरावे, जब सगलां नें भूठ लागें रे॥ ८॥
जो पर नी कीधी जोड कहो परपेखा, तो कहि देणों लोकां आगें रे।
खोटी जोड नें थें मतीय सरावो, जब किणनेंई भूठ न लागें रे॥ ९॥
खोटी जोड कहे नें थें धिन धिन कहावों, जब बकता सुरता दोनूं बूडा रे।
अठें तो ठागा सूं कांम चलावे, आगे चिहूं गति में दीससी भूंडा रे॥ १०॥
पर नी कीधी जोड कहो परपेखा, पिण मन मांहें खोटी जांणों रे।
तो होली रा गीत नें गाल परपेखा, ते कहितां संक क्यूं आंणों रे॥ ११॥
यांरा कहिण रे लेखें सगली जोड भूंडी, तो कांय करो टाला टोलो रे।
कांई जोड कहो कांई कहिता संको, आ पिण थांरे लेखें थांमें भोलो रे॥ १२॥
जोड कहणी निषेधे ने कहिता जाए, त्यां विकलां री नहीं परतीतो रे।
सावद्य निरवद्य विण ओलखीयां, यूंही बोले घणा विपरीतो रे॥ १३॥
केई सावद्य चोरी अनेरा नी कीधी, ते पिण चोप्या कहवा लागा रे।
तिण मांहें भूठ छें विवध प्रकारें, ते पिण जोड कहिवा नें आगा रे॥ १४॥
एहवी पिण खोटी जोड कहे नें, लोक रीभावण लागा रे।
वले साधु रों विडद धरावें अग्यांनी, ते पिण विरत विहूणा नागा रे॥ १५॥
वले जोड कहे त्यानें निनव कहें छें, वले भूठाबोलां कहें तांमो रे।
सुयगडाअंग तेरमाधेन रो, ले ले अणहूंतो नांमो रे॥ १६॥
वले जोड कहें त्यांनें वदवद घाल्या, वेस्या रा करंडीया माह्यों रे।
ठांणाअंग चोथा ठांणा रो नांम लेइ नें, ते पिण मूंसावायो रे॥ १७॥
निन्व ने वले भूठाबोला कहें छें, वले वेस्या जोडे दीधा रे।
वले दोष अनेक कहे जोड कीधां, त्यांरा वचन विकलां मांन लीधा रे॥ १८॥
जोड करे त्यांनें कहें खोटा नें निन्व, जोड ने पिण कहें छें खोटी रे।
तेहीज जोड नें पोते कहें छें, ते विकलां रे भोलप मोटी रे॥ १९॥
वले जोड करें त्यांसूं संभोग भेलो, तिणनें साध गिणें आप सारिखो रे।
ते पिण रेलो आप में आवें, त्यांनें आ पिण नहीं छे ठीको रे॥ २०॥
साधां नें निरवद्य जोड करणी उथापें, ते पूरा मूंढ गिंवारो रे।
निरवद्य न्याय करे जोड साधु, तिणमें नहीं दोष लिगारो रे॥ २१॥
मतिग्यांन तणा दोय भेद कह्या जिण, नंदी सूतर रे माह्यों रे।
सूतर री नेश्राय सूं अर्थ बधारें, सूतर विण बुध फेंलावें तांह्यों रे॥ २२॥
सूतर विनां कोइ बुध फेंलावें, ते जोड करें निरदोषो रे।
च्यार भाषा तणा जे जांण होसी ते, जोड करसी तिको ग्यांन चोखो रे॥ २३॥

ते उतपात री बुध वीर वखांणी, ते तो मेल दे वचन रसालो रे।
जिसरो नर देखे जिसरोइज साचों, उतर दे ततकालो रे॥ २४॥
सूतर विनां कोइ. बुध फेंलावे, ते तो बुध घणी छे भारी रे।
सावद्य निरवद्य अकल सूं जांणो, ते तो करसी जोड विचारी रे॥ २५॥
अणदीठो अणसांभल्यो काने, मन में पिण न कीयो विचारो रे।
एहवो प्रश्न कोइ आय पूछे जब, ततषण जाव दे तिणवारो रे॥ २६॥
भारत रामायणादिक सास्त्र अनेक, ते अनतीर्थी कीया ग्रंथो रे।
ते साधु भणें सम सूतर हुवें, ते बुध सूं संवलो करे अर्थो रे॥ २७॥
अण तीरथीयां रा कीधा सासत्र, त्यांने हुता ज्यू रा ज्यूं जांणों रे।
तो पोते जोड करसी तिण मांहे, सावद्य किणं विध आंणो रे २८॥
केई मिथ्याती जोड करे तिण मांहे, कांई सांच कांई कूडो रे।
ते सुणीयां थकां रंग किण विध आवे, जाणे मिली केसर मांहे धूरो रे॥ २९॥
साधु तो कुड ने काने करेनें, साच कहे सुखदायो रे।
जांणे गंगोदक में केसकर घाली, ज्यूं रग दीये चढायो रे॥ ३०॥
साधु तो जोड करे छे जुगत सूं, सूतर केरे न्यायो रे।
पिण कुबदी जीव कदागरो माडे, सुबदी री आवे दायो रे॥ ३१॥
अनतीरथी री कीधी जोड मांहिलो, कूड काने करे ताह्यो रे।
तो इसडी ओलखणा घट ज्यारे, ते न करें जोड अन्यायो रे॥ ३२॥
आचारंग आदि दे सूतर अनेक, ते भाष्या अरिहत भगवानो रे।
तेहीज सूतर जाणें मिथ्याती, तिणरे हुवे मति अग्यानो रे॥ ३३॥
पुराण कुराण नें श्री जिण आगम, मिथ्याती जांणे तो अग्यांनो रे।
तेहीज समदिष्टी जांणें तो ग्यांन, तिणरो निरमल मति गिनानो रे॥ ३४॥
सत असत नें वले मिश्र ववहार, ए च्यारूंई भाषा जांणे सोयो रे।
ते जोड करणी क्यांनें उथापे, साधु ने भाषा बोलणी दोयो रे॥ ३५॥
सत नें ववहार भाषा दोय बोले, ते पिण निरवद्य ने निरदोषो रे।
यां दोय भाषा सूं जोड करे छे, त्यांरो मति ग्यांन छे चोखो रे॥ ३६॥
ए दोय भाषा बोलण री साधां ने, भगवंत आग्या दीधी ताह्यो रे।
दसवीकालक सातमा अधेने, तीजी गाथा माह्यो रे॥ ३७॥
केई जोड करें केई जोड कहे छे, अथवा केई जोड सरावे रे।
जो धर्म होसी तो सगलां ने होसी, पाप होसी तो सगलां ने थावे रे॥ ३८॥
वले उतराधेन गुणतीसमें धेने, तिहां अर्थ में गाथा विसतारों रे।
जोड करे प्रवचन दीपावें, तिणने होसी लाभ अपारो रे॥ ३९॥

ववहार समकत रा सतसठ बोल, तिणमें पिण ओहीज न्यायो रे।
तिणमें आठां बोलां प्रवचन दीपावें, तिहां जोड करणी तिण माह्यो रे॥ ४० ॥
वले ठांण अंग नवमां ठांणां मांहें, तिहां अर्थ कह्यो छे आंमो रे।
नवूं ही पाप सासत्र साध भणें तो, धर्म पुसटों करें तांमो रे॥ ४१ ॥
वले चोथें ठांणें च्यार काव्य कह्या छें, गदबंध कथा गीतो रे।
ते जोड कह्यां विण किण विध गांवें, ते पिछांण कीजों रूडी रीतो रे॥ ४२ ॥
किण ही जेंहर नीपाए नें पीधों, किणही जेंहर पीधों जाणें सीधो रे।
तिण जेंहर थकी दोनूं जणा ततषण, अकाले आउषो पूरो कीधो रे॥ ४३ ॥
ज्यूं कोइ जोड करे नें कहें छें, कोइ जोड कहे सीधी जांणों रे।
जो जेंहर सरीषी जोड भूठी छे, तो दोयां नें पाप लागसी आंणों रे॥ ४४ ॥
जिण जेहर नीपाए नें पीधो ते मूंओ, सीधो जेंहर पीधो तेही मूंओ रे।
ज्यूं जोड करे नें कह्यां पाप लागें, तो सीधी कही त्यांनेंइ पाप हूवो रे॥ ४५ ॥
जो निरवद्य जोड हुवें इमरत सरीषी, ते कह्यां थकां कटे कर्मो रे।
एहवी जोड करे नें कह्यां धर्म निश्चें, सीधी कहणवालानेंई धर्मो रे॥ ४६ ॥
त्यां जोड करणी साधां नें निषेधी, तेहीज जोड करवा लागा रे।
ते प्रतष चोडें भूठाबोला छें, ते वरत विहूंणा नागा रे॥ ४७ ॥
पेंहलां तो कहितां साधां नें जोड न करणी, ते पिण जोड करवा नें ढूका रे।
वेण सगाइ तो मेल न जांणें, यूंही कुडीया थका करें कूका रे॥ ४८ ॥
त्यांरा बडा बडेरा आगें हूवा ते, साधां नें जोड करणी न थापी रे।
त्यानें पिण जाबक भूठा घाले नें, खोटी जोड करवा लागा पापी रे॥ ४६ ॥
कोइ निरवद जोड सूतर न्याय करता, त्यांरी निंद्या करता दिन रातो रे।
हिवें जोड करें त्यांनें आछा जांणें, तिण लेखें आगें हूंतों मिथ्यातो रे॥ ५० ॥
संवत अठारे नें वरष तयांले, काती सुदि तेरस नें सनीवारो रे।
निरवद्य जोड करणी ओलखावण काजें, जोड कीधी कोठारया मभारो रे॥ ५१ ॥

ढाल : ८

दुहा

केई मूंढ मिथ्याती जीवडा, ते तों बूडें छें कर कर तांण।
ते ववेक विकल सुध बुध विनां, जिण मारग रा अजांण॥ १ ॥
च्यार पाटी नें काउसग कीयां विनां, कहे सामायक नहीं होय।
एहवी उंधी करे छे परूपणा, त्यां सुध बुध दीधी खोय॥ २ ॥
पेंहिली करणी छें इरीयावइ तसोतरी, पछे काउसग करणो एक ठांम।
पछे लोगस्स कहे सामायक पचखणी, पछे कहिणों नमोथुणं तांम॥ ३ ॥
ए च्यार पाटी नें काउसग कीयां विनां, सावद्य जोग रा करे पचखांण।
तिणरे सामायक नही नीपजें, इसडी कहे मूंढ अयांण॥ ४ ॥
सका घालें लोकां नें अन्हांखी थका, सामाइ री देवें अंतराय।
रात दिवस बकवोकरें, तिणरा जाब सुणो चितल्याय॥ ५ ॥

ढाल

[रे भवियण सेवो रे साध सयाणा]

च्यार पाटी कह्यां विण समाइ न करणी, इम कहें त्यांरी सरधा खोटी।
ते जिण मारग रा अजांण अग्यांनी, त्यांरी अकल मे खांमी छें मोटी रे।
भवियण जोवो हिरदय विचारी, थें काय करो आतम भारी रे।
भवियण थें छोड दो रूढ हीया री*॥ १ ॥
छ आवसग मांहे पेहली समाइ, पछें चोवीसत्थो चाल्यो।
ते वीर वचन उथापे अग्यानी, ओ घोचो अणहुंतो घाल्यो रे॥ भ० २ ॥
उतराधेन गुणतीसमे धेने, पेंहलां सामायक रो फल भाख्यो।
पछे चोवीसत्था सूं पचखांण लग, त्यांरो फल अनुक्रमें दाख्यो रे॥ ३ ॥
अनुयोग दुवार मे छ आवसग चाल्या, पेहिलो आवसग समाइ जांणों।
पछे चोवीसत्थो वंदणा पडिकमणो, पछे काउसग नें पचखांणो रे॥ ४ ॥
समाइ चोइत्थो वंदणा पडिकमणों, काउसग नें पचखांणों।
थे सांझ सवेर रो करो पडिकमणो, जव थें इम काय बोलो वांणों रे॥ ५ ॥
थांरे लेखें यांने पेहलां कहिणों चोइत्थो, पछे कहिणी थांनें समाइ।
जो थे पेंहलां नांम सामायक रो लेसो, तो थां में समझ न दीसें कांई रे॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

च्यार पाटी कह्यां विण पचखें समाइ, तिणरी थें न गिणों समाइ।
जो थें साचा हुवों तो सूतर में बतावो, नहीं तो कूडी कुबद चलाइ रे॥ ७॥
यांरें लेखें तो च्यार पाटी समाइ, ते पिण विकलां नें समझ न कांई।
सामायक चोइत्थो ओलख्यां विण, यूंही करे लपराइ रे॥ ८॥
च्यार पाटी नें काउसग कीयां विण, आतमा सुध नहीं होय।
आतमा सुध कीयां विण करे समाइ, तो सामायक नही नीपजें कोय रे॥ ९॥
एहवी उंधी परूपणा कर कर लोकां में, सामायक री देवें अंतराय।
त्यांनें सूतर सस्त्र ज्यूं परगमीया, तिण सूं कूडी करें वकवाय रे॥ १०॥
एहवा मूंढ मिथ्याती नें पूछा कीजें, जिण भाष्या बारें वरत सोय।
च्यार पाटी नें काउसग कीयां विण, किसों किसों वरत नहीं होय रे॥ ११॥
हिंसा झूठ चोरी मैथुन परिग्रह, ए पांचूंइ आश्रव जोय।
च्यार पाटी नें काउसग कीयां विण, किसा आश्रव ना त्याग न होय रे॥ १२॥
हिंसादिक अठारे पाप रो सेवण, ते सर्वथा सावद्य जांण।
च्यार पाटी नें काउसग कीयां विण, किसा पाप रा न हुवें पचखांण रे॥ १३॥
एहवा प्रश्न पूछ्यां रा जाब न आवे, जब बोलें अग्यांनी ऊंधा।
त्यांरे कर्म जोगें डंक लागा कुगुरां रा, ते किण विध बोलें सूंधा रे॥ १४॥
त्याग वेंराग री जेझ न करणी, पाप रो क्यांसूं होसी समाद।
वीर कह्यों उतराधेन दसमें अधेन नें, एक समों न करणो परमाद रे॥ १५॥
सामायक चारित वीर लीयों जद, च्यार पाटी तो गुणी न दीसें।
सर्व पाप करणो नही मोनें, इम कह्यों छें श्री जगदीसें रे॥ १६॥
इरीया तसोतरी कहे काउसग कीधो, पछें लोगस कह्यों तिण ठांम।
इतला मांहे घर कांम उपनों, तो उ जाय करें घर कांम रे॥ १७॥
पेंहला सावद्य जोग रा त्याग करे नें, समाइ कर बेंठो एक ठांम।
तठा पछें कोइ घर कांम उपनों, तो उ जाय न करे घर कांम रे॥ १८॥
च्यार पाटी कहितां नें काउसग करतां, समा वहें असंषज कालो।
जब लग आश्रव नाला छूटा राख्यां, त्यांमें पाप आवें दगचालो रे॥ १९॥
ते तो समे समें सात कर्म लागें छें, हिंसादिक नाला करे प्रवेस।
एक एक कर्म रा प्रदेस अनंता, जीव रें लागे एक प्रदेस रे॥ २०॥
किणनें वेंराग आयो समाइ करण री, ते हुवो समाइ नें तयार।
त्यांरें लेखे तो तिणनें समायक न करणी, उणनें पाटी न आवे च्यार रे॥ २१॥
कोइ तो च्यार पाटी विनां कह्यांइ, सामायक करे हरषत होयो।
तिण यांरी सरधा सुण छोडी सामाइ, तिणनें तो यां जाबक बोयो रे॥ २२॥

च्यार पाटी' विनां जो न हुवें सामाइ, आ सरधा धारे बेंठो कोइ।
तो इण लेखें तो च्यार पाटी कह्यां विण, वरत न हुवें वारोंइ रे॥ २३॥
च्यार पाटी कह्यां विण दस वरत न सरधो, नही सरधो सामाइ नें पोसों।
ओ तो अपछांदें ने उंधी सुझी, ओ तो कर्म तणो छे दोषो रे॥ २४॥
इरीयावही तसोतरी काउसग, ए तो पडिकमणा री पाटी।
त्यांनें कह्यां विनां सामाइ न सरधे, त्यांरी अकल कर्म सूं दाटी रे॥ २५॥
लोगस नें नमोत्थुणं त्यांमें, अरिहंत रा गुणग्रांम।
त्यांनें कह्यां विण सामाइ न सरधें, ते तो यूंही बके बेफांम रे॥ २६॥
यानें मोह मिथ्यात ने उसभ उदें सूं, संवली तो मूल न सुझें।
वले प्रवल राग ने धेष उदें छें, तिणसूं दिन दिन इधिक अलुझें रे॥ २७॥
वावल छुटी घर में आवे कजोडो, ते घर सुध किण विध थायो।
त्यामें केई चतुर करें थोडा में, विकलां सूं सुध कीयों न जायो रे॥ २८॥
केई घर मांसूं काढे कजोडो, जब पेंहलां जडे आडा किंवाडो।
पछे कजोडो बुहारे करें भेलो, पछें न्हाख दे घर रे बारो रे॥ २९॥
केई किंवाड जड्यां विण बुहारो देवें, ते कचरो उड उड पाछो आवें।
वुहारो देवे पिण कचरो न रहें आवतो, ते घर सुध किम थावे रे॥ ३०॥
ज्यूं जीव रूपीया घर में कर्म कजोडो, समें समे निरंतर आवें।
त्यामें केइ चतुर चतुराई करें तो, जीव रूपीयो घर सुध थावें रे॥ ३१॥
घर जिम तालाव ने रीतो करणों, जब तो नाला रूंधणा पेंहला।
मांहिलो पांणी मोरीयादिक सूं काढे, जब तालाब खाली हुवेला रे॥ ३२॥
जीव रूपीयों तलाब छे तिणरें, पेहला आश्रव नाला रूंध।
पछें तपसा करे ने कर्म खपावें, जब निरमल हुवें जीव सुध रे॥ ३३॥
ए उतराधेन रे तीसमें अधेनें, पेहला तो आश्रव रूंधवा चाल्या।
ज्यू आश्रव रूंधे च्यार पाटी कह्यां विण, तिणमेंइ घोचा कुमतरां घाल्या रे॥ ३४॥
संवर निरजरा गुण छें दोनूंइ, पेला पछे कीयां नहीं दोष।
च्यार पाटी कह्यां विण समाइ न सरधे, आ उंधी सरधा छे फोक रे॥ ३५॥
समायक उथापण नें मूंढ मिथ्याती, कूडा कुहेत लगावें अनेक।
पिण जिण मारग ओलखीयों छे त्यांरे, यांरी वात न मांने एक रे॥ ३६॥
च्यार पाटी ने काउसग कीयां विण, नही सरधे छे मूंढ समाइ।
त्यांरी खोटी सरधा ओलखावण काजें, जोड कीधी सिरीयारी मांहि रे॥ ३७॥
संवत अठारे नें वरष पचासे, आसाढ सुद बीज नें रिववारो।
ते सुण सुण नें उत्तम नरनारी, कोइ संका म राखो लिगारो रे॥ ३८॥

ढाल : ६

दुहा

सासण श्री विरधमांन रों, ग्यांनादिक गुण भंडार।
साध साधवी श्रावक श्रावका, ए तीरथ कह्या जिण च्यार ॥ १ ॥
सर्व विरत धर्म साध रो, देस विरत श्रावक धर्म जांण।
ए दोनूंइ धर्म छें निरमला, समदिष्टीयां लीया छे पिछांण ॥ २ ॥
बीस भेद कह्या संवर तणा, बारां भेदां निरजरा जांण।
संवर निरजरा में श्रीजिण आगन्या, तिणसूं जीव पोंहचें निरवांण ॥ ३ ॥
साध श्रावक रा धर्म में, हिंसादिक नहीं तिलमात।
ओ निरवद्य धर्म परूपीयो, चोवीसमें जगनाथ ॥ ४ ॥
इण दुषम आरें पांचमें, गुण विण वधीयो भेष।
ते भिष्ट छें सरधा आचार में, अरू बरू लो देख ॥ ५ ॥
ते पिण साधु बाजें छें लोक में, भूला अग्यांनी भर्म।
हिंसा भूठ चोरी अबंभ परिग्रह, यांमें कहे छें धर्म ॥ ६ ॥
हिंसा भूठ चोरी अबंभ परिग्रहो, यांमें जिण कह्यो एकंत पाप।
त्यांमें धर्म परूप्यों अनार्यां, श्री जिण वचन उथाप ॥ ७ ॥
ते चोरें कहितां तो लाजा मरे, वले कांम पड्यां फिर जाय।
ते सरधा कहे छें किण विधें, ते सुणजों चित ल्याय ॥ ८ ॥

ढाल

[रे भवियण जिण आगन्या...]

कहें समदिष्टी नें पाप न लागे, जो उ करे हर कोइ कांम।
इसडी परूपणा करे अग्यांनी, भूठो ले ले सूतर रो नांम रे।
कुमत्यां आ सरधा कठा सूं धारी रे, थें कांय करो आतम भारी रे।
इण सरधा सूं घणी खुवारी* ॥ १ ॥
कहें समदिष्टी सतरें पाप सेवें, त्यांनें पाप रों अंस न लागों।
इसडी उंधी सरधा परूपें छें त्यांरे, मोटो लागों मिथ्यात रो दागों रे ॥ ई० २ ॥
कहें समदिष्टी देवता नें देवी, भोग भोगवें विवध प्रकार।
वले कीला करै छें अनेक प्रकारें, त्यांनें पाप न कहो लिगार रे ॥ ३ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सक्र इन्द्र कोणक री भीड आए ने, दोय दोय संगराम कीधा भारी।
एक कोड असी लाख मांनव मूंआ, इंद्रां ने पाप न कहो लिगारी रे॥ ४॥
काली कुमरादिक दसोंइ भायां नें, चेडे मास्या एकेकें बांण।
थें चेडा राजा नें पाप लागो नही जांणों, तो थें पूरा छो मूंढ अयांण रे॥ ५॥
भरतादिक चक्रवत हुआ समदिष्टी, राज कीधो छ षंड रो आपो।
वले अनेक अस्त्रीयां सूं भोग भोगवीया, त्यांनें मूल न सरधो थें पापो रे॥ ६॥
सकडाल पुतर थो वीर नो श्रावक, तिण घाल्या सइकडां निहाव।
थें तिणमेंइ पाप न सरधो रे विकलां, थें पको कीधो वुडण रो उपाव रे॥ ७॥
वीर तणो श्रावक आणंद हुंतो तिण, पांचसो हलवा खेती कीधी।
तिणने खेती रो पाप लागो नहीं सरधें, तिण नरक तणी नींब दीधी रे॥ ८॥
समदिष्टी श्रावक घर मांहें बेंठा, त्यां आरंभ कीधा अनेक।
त्यांने आरंभ कीयां रो पाप न जांणें, ते बूडें छें विनां ववेक रे॥ ९॥
त्यांनें चोडे प्रश्न पूछ्यां लाजां मरें जब, दरबे पाप लागो बतावे।
कूड कपट करे निज सरधा ढांकण ने, ज्यूं त्यूं कर नें पार होय जावे रे॥ १०॥
दरबे पाप तो पाप छें नांहीं, दरबे साध ते साधु नाही।
दरब तीथंकर ते तीथंकर नाही, विचार देखो मन मांही रे॥ ११॥
दरबे साध ने दरबे तीथंकर, त्यांने गिणती में गिणीया नांहीं।
ज्यूं दरबे पाप कहिवा नें कहीजें, तिण सूं दुख उपजें नही कांई रे॥ १२॥
त्यां विकलां ने वले पूछा कीजे, पाप कहो थे दरब ने भावो।
तो थे दोनूंइ पाप रा जूआ जूआ फल, जथातथ कहि बतावो रे॥ १३॥
भावे पाप तणा फल कडवा बतावो, दरबे पाप रा फल कहो मीठा।
ए विरुध बात बताया लोकां में, परोला हार्थां सूं फीटा रे॥ १४॥
दरबे नें भावे दोय बतावो, जो दोया रा फल कडवा बतावो।
जब तो दरब भाव एक कह्या थे, दोय कह्या किण न्यावो रे॥ १५॥
आ भूठी बकरोल करे लोकां में, भोलां नें कांय भरमावो।
दरबे ने भाव रो नांम लेइ नें, गोला कांय चलावो रे॥ १६॥
समदिष्टी ने पाप लागो न सरधो, पाप लागो कहो किण लेखे।
थें तो हीयाफूट गधा रा साथी, निज सरधा साह्मों क्यूं नही देखें रे॥ १७॥
थारी अंतरग में सरधा उंधी, जावक खोटी जवूंन।
समदिष्टी भोग भोगवें त्यांनें, सरधो छो निरजरा पुन रे॥ १८॥
सतरे पाप सेवे समदिष्टी तिणमे, थें जाणो छो कटता कर्म।
वले पुन तणा थाट बंधीया जांणो, थांरे मूंदे तो ओ तंत धर्म रे॥ १९॥

समदिष्टी श्रावक र इण विध, नीपनों जांणो छो धर्म।
कांम भोग तणी अभिलाषा हुवें जब, भोग भोगवे ने तोडें कर्म रे॥ २०॥
समदिष्टी आरंभ करें अनेक प्रकारें, खेती आदि दे विणज व्यापार।
इण किरतब में निरजरा पुन जांणें, यांरी सरधा नें तीन धिकार रे॥ २१॥
केई समदिष्टी तो घर हाट करावें, करें छ काय संघार।
तिणमेइ पाप न जांणों रे कुमत्यां, थें बुड गया काली धार रे॥ २२॥
समदिष्टी श्रावक रे कांम पडें तो, करें संगराम अनेक।
तिणमेंइ थें धर्म ने पुन जांणों, थें बुडों छो विनां ववेक रे॥ २३॥
केई समदिष्टी खाएं चुगली नें चाडी, पेंला रो घर देवें गमाई।
तिणमें धर्म जांणों पिण पाप न जांणों, आ पूरी थांरी विकलाइ रे॥ २४॥
केई समदिष्टी करें सिनांन सपाडा, रंगा चंगा रहें नित न्हाइ।
त्यांनें पिण पाप लागो नही सरधो, थांरी अकल गइ दपटाइ रे॥ २५॥
श्रावक समदिष्टी मइथुन सेवे, ते भोग तणी छें लील।
श्रावक रा मइथुन नेश्चें कुसील, तिण कुसील नें जांणो सुसील रे॥ २६॥
हिवें कहि कहि नें कितरोंक कहूं, समदिष्टी करें अनेक आरंभो।
तिणनें पाप लागो नहीं सरधो, थांरी सरधा रो बडो अचंभो रे॥ २७॥
समदिष्टी नें पाप लागो नहीं सरधो, आ तो उठी जठाथी भूठी।
प्रतष पाप कीयां में पाप न जांणों, थांरी हीया निलाड री फूटी॥ २८॥
समदिष्टी श्रावक नें पाप लागो न सरधो, आ सरधा कठा सूं काढी।
आगम उथाप नें अंवला पडीया, मोष तणी वरत वाढी रे॥ २९॥
श्रावक नें सुसीलीयो कह्यो छे, तिणरो थें भेद न जांणो।
थें कुसील ने सुसील जांणों नें, पींपल बांधी मूर्ख जिम तांणो रे॥ ३०॥
इविरती समदिष्टी अधर्मी, श्रावक धर्मीअधर्मी दोनूंइ।
श्रावक नें एकंत धर्मी सरधें, ते गया जमारो खोइ रे॥ ३१॥
इविरत रो पाप लागें श्रावक नें, किरतव करें जिसों पाप होइ।
श्रावक रें पाप लागो न सरधें, ते चाल्या जनम विगोइ रे॥ ३२॥
उवाइ सुयगडाअंग मांहें, श्रावक धर्मीअधर्मी चाल्यो।
श्रावक नें एकलो धर्मी कहेनें, थें घोचो अणहूंतो घाल्यो रे॥ ३३॥
श्रावक नें पाप लागो न कहे मिथ्याती, त्यांनें ओलखावण ताहि।
भव जीवां नें समभावण काजें, जोड कीधी गुदवच रे मांहि रे॥ ३४॥
संवत अठारें नें वरस एकावनें, वेंसाष सुदि इग्यारस वार बुध।
ते सुण सुण नें उतम नर-नारी, सरधा धार राखो सुध रे॥ ३५॥

ढाल : १०

दुहा

केई भारीकर्मा जीवडा, त्यांरा घट माहे घोर अग्यांन।
त्यांरा बोल्यां री समझ त्यांने नही, ते जीव विकल समांन ॥ १ ॥
नारकी देवता में भेद जीव रा, तीन तीन कहे छे अयांण।
इग्यारमो तेरमों ने चवदमों, इण लेखे विकल समांण ॥ २ ॥
ते सूतर बांचे छे जिण भाषीया, त्यांरी रहस न जांणें मूंढ।
ते तांण करे छें झूठा थकां, पिण लीधी न छोडें रूढ ॥ ३ ॥
त्यांरी पीढ्यां खपी झूठ बोलतां, पिण किण ही न काढ्यो निकाल।
ववेक विकल सुध बुध विनां, झूठी करे छे झखाल ॥ ४ ॥
कदा अजाणपणे झूठ बोलीयो, पछेइ निरणो करे सोय।
ते आलोएनें सुध हुवो, रूढ राखे ते बूडा सोय ॥ ५ ॥
नारकी ने सर्व देवता मझे, दोय भेद कह्या जिणराय।
तेरमो नें वले चवदमो, तिणमे सका न जाणो कांय ॥ ६ ॥
तीन भेद कहे छें तेहनें, झूठा घालीजे एम।
त्यांरा भाव भेद परगट करूं, ते सुणजो धर पेम ॥ ७ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या मे]

जीव रा तीन भेद कहे देवतां में, ए वात उठी छे तठायी झूठी।
इण बोल रो निरणो न करें छे त्यांरी, हीया ने निलाड री दोनूंइ फूटी।
इण झूठाबोला रो निरणो कीजो* ॥ १ ॥
इग्यारमों भेद जीव रों निश्चें निपुंसक, देवता नहीं छे निश्चे निपुंसक तांम।
देवता मे इग्यारमों भेद कह्यो तिण, देवता ने निपुंसक कहि दीया आंम ॥ २ ॥
देवता ने तो निपुंसक कहितां लाजे, तो इग्यारमों भेद कहे किण लेखे।
त्यांरी अभितर आख हीया री फूटी, ते सूतर साह्मो मूल न देखें ॥ ३ ॥
इग्यारमो भेद कहे पिण न कहें निपुसक, एहवो छे भेष धार्यां रे अंधारो।
वले पिंडत नांम धरावे मूर्ख, त्या विकलां ने विकल मिल्या परवारो ॥ ४ ॥
इतरी पिण समझ पडें नही त्याने, साची सरधा किण विध आवें।
सरधा तो परम दुलभ कही छे, एहवा विकलां ने कुण समझावे ॥ ५ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

वले देवता नें असनी कहे छें, इग्यारमों भेद जीव रों त्यांमें बतावें।
त्यांरी अभितर आंख हीया री फूटी, त्यां ववेक रा विकलां नें कुण समभावें॥ ६॥
असनी पचिद्री 'रो अप्रजापतो छें, तिणमें जीव रो भेद इग्यारमो जांणो।
परजाय बांधे तो बारमों भेद होसी, ते चवदमो किहां थी होसी रे अयांणो॥ ७॥
इग्यारमो भेद परजाय बांध्यां बारमों हुवे, चवदमों हुवें तो कदेय म जांणो।
इग्यारमो परजाय बांध्यां चवदमो कहे छे, ते तो जिण मारग रा निश्चे अयांणो॥ ८॥
पेहला भेद परजाय बांध्यां बीजों हुवे, तीजो भेद बांध्यों चोथो होय।
पांचमो भेद परजाय बांध्यां छठो होवें, सातमो परजाय बांध्यां आठमो जोय॥ ९॥
नवमो भेद परजाय बांध्यां दसमों हुवे छे, इग्यारमो परजाय बांध्यां बारमों जांणों।
इग्यारमो परजाय बांध्यां थी न हुवे चवदमों, चवदमो भेद कहे ते विकल समांणो॥ १०॥
तेरमो जीव रो भेद परजाय बांधें ते, जीव तणो भेद चवदमो जांणो।
पिण इग्यारमां भेद रो न हुवें चवदमों, समभो रे समभो थें मूंढ अयांणों॥ ११॥
इग्यारमो भेद कहे नारकी देवतां में, त्यांनें एकंत भूठाबोला जांणो।
इग्यारमां सूं चवदमों हुवो कहें छें, ते यूं ही बूडें छें कर कर तांणो॥ १२॥
पाचसो ने तेसठ जीव रा भेद, पोतें सीखे नें ओरां नें पिण सीखावे।
जब तो नारकी नें सर्व देवतां में, जीव रा दोय दोय भेद बतावें॥ १३॥
कठेक तो नारकी देवतां में, जीव रा तीन भेद कहें छें ताय।
कठेंक त्यांमें कहे दोय भेद छें, त्यांरा बोल्यां री त्यांनेइ समभ न कांय॥ १४॥
ए पीढीयां खप भूठ बोलता आवें, पिण इण बोल रो किण ही न काढ्यों निकालो।
जेसा हुंता तेसा चेला पिण आय मिलीया, अभितर फूटी आडा आया कर्म जालो॥ १५॥
सातमे आठमें नें दसमें, वले इग्यारमें नें बारमें गुण ठांणें।
त्यारे सुभ जोग नें सुभ लेस्या वरतें छें, त्यांरा माठा जोग अग्यांनी जांणें॥ १६॥
त्यांने पिण भूठाबोला जांणें अग्यांनी, मिश्र भाषा पिण बोलता जांणें छें थांनें।
वले भूठो मन परवरतावता जांणे, मिश्र मन परवरतावता जांणें छें त्यांने॥ १७॥
ज्यांरा माठा जोग वरतें छे ते तों, ते अपरमादी निश्चेइ न थाय।
अपरमादी साध नें भूठाबोला कहे छे, ते तो निश्चेंइ चोडे भूला जाय॥ १८॥
जथा तथ चाले जथाख्यात चारितीयों, तिणनें पाप रो अंस न लागें ताहि।
त्यांनें पिण भूठा बोलता कहें अग्यांनी, ओ पिण अंधारो विकलां रे मांहि॥ १९॥
इग्यारमें बारमें गुणठांणें त्यारें, जथाख्यात चारित श्रीकारो।
भूठ बोलें छें त्यांनें तो पाप लागे छें, पिण यांनें तो पाप न लागें लिगारो॥ २०॥
भूठ बोलें कहें जथाख्यात चारितीयो, आ पिण विकलां रे भोलप मोटी।
भूठ बोलें पिण पाप न लागें, आ पिण सरधा छे जाबक खोटी॥ २१॥

आरंभ री किरीया लागे छठे गुणठाणें, ते तो उसभ जोगां सूं लागे छे तांम।
उसभ जोग न वरतें जब अणांरंभी छे, आगे सुभ जोग नें सुभ लेस्या परिणांम ॥ २२ ॥
सातमां गुणठांणा थी अणारंभी छे, त्यांरे तो उसभ जोग वरतें नही तांम।
ज्यूं ज्यूं आगले गुणठांणे चढे जव, चढती लेस्या नें ध्यांन चढता परिणांम ॥ २३ ॥
अप्रमादी ने अणारंभा कह्या छे, त्यारा उसभ जोग तो वरतें छे नांहीं।
संका हुवे तो भगोती सूतर मांहे जोवों, पेहला सतक रा पेहला उद्देसा मांही ॥ २४ ॥
सातमां सूं ले ने वारमे गुणठांणे, त्यांरा जोग कदे वरते नहीं भूंडा।
त्यांने भूठाबोला कहे मूढ मिथ्याती, ते तो पीढीयां खप जाए छे वूडा ॥ २५ ॥
त्यांरा श्रावक त्यारे बदले भूठ बोलें, समभ पड्यां विण करे छें तांणों।
ते पिण वूड गया त्यारे केडे, न्याय निरणा विण वोले छे विकल समांणो ॥ २६ ॥
वले अनेक भूठ त्यारे वासठीया मे, ते सांभलजो भवीयण चित ल्यायो।
जीव रा तीन भेद कहे नारकी मे, तीन भेद कहे वले देवता माह्यो ॥ २७ ॥
दस भवण पती ने वांण मंतरा मे, वले कहे पेहली नरक रे माह्यो।
जीव रा तीन तीन भेद वतावें, ओ पिण वोले छे मूंसावायो ॥ २८ ॥
अवेदी में जोग इग्यारे वतावे, अकसाइ में जोग नव बतावे।
ओ पिण भूठ वोले छे अग्यांनी, दर पीढ्यां भूठ बोलता आवें ॥ २९ ॥
सुषम सपराय ने जथाख्यात चारित मे, यांमे पिण नव नव जोग बतावें।
ओ पिण निरणो कीयां विण अग्यांनी, गालां रा गोला मुख सूं चलावे ॥ ३० ॥
तीन तीन भेद कहे नारकी देवता मे, सूतर भगोती देवे छे साख।
त्यारी पिंडताइ मांहे पड गइ धूर, यूही अलाल भाखे छें अन्हांख ॥ ३१ ॥
देवता ने निपुंसक कहे छे त्यांनें, एकंत भूठा बोला जांणे।
पोते निपुसक कहे तिणरी ठीक नही छे, पीपल वाधी मूर्ख ज्यूं तांणें ॥ ३२ ॥
देवता माहे तो कहे छे मूंढ मिथ्याती, जीव तणो इग्यारमों भेद।
जव देवता ने कह्या निश्चे निपुंसक, इग्यारमो भेद असनी निपुंसक वेद ॥ ३३ ॥
देवता तो निपुंसक निश्चे नही छे, वले असनी पिण नही देवता तांम।
देवता ने असनी ने निपुंसक कहे छे, ते तो निश्चेइ भूठ बोलें बेफांम ॥ ३४ ॥
सतावन भेद सवर रा कहे छे, त्यांमें पिण खोटा छे वोल अनेक।
ते पीढीया खप चालीया जाए छे, ते पिण विकलां रे नही छें ववेक ॥ ३५ ॥
बावीस परीसां पांच सुमत तीन गुप्त, दस विध जती धर्म नें भावना बारे।
पाच चारित घाल्यां ए बोल सतावन, यां सारां नें संवर कहें विनां विचारे ॥ ३६ ॥
बावीस परीसां ते जीव री सक्त छे, विचार खमें ते चोखा परिणांम।
चोखा परिणाम ते निरजरा री करणी, त्यांनें संवर कहे ते भूठाबोला आंम ॥ ३७ ॥

पांच सुमत नें संवर कहें छें अग्यांनी, ओ पिण भूठ उघाडो बोले ।
पांच सुमत तो छें निश्चें निरजरा री करणी, आ पिण आंख हीया न खोले ॥ ३८ ॥
दस विध जती धर्म जिणेसर भाख्यों, त्यांमें पिण केई बोल निरजरा रा जांणो ।
दसूंइ बोलां नें संवर सरधें छें, त्यांनें पिण जांणजों मूंढ अयांणों ॥ ३९ ॥
बारें भावना निरजरा री करणी छे निश्चें, त्यांनें पिण संवर सरधें छें मूंढ मिथ्याती ।
त्यांनें संवर री ओलखणा नांहीं, त्यां विकलां रें निरणा तणी नहीं वाती ॥ ४० ॥
संवर रा बोलां नें निरजरा में घालें, निरजरा रा बोलां नें संवर में घालें ।
त्यांरी अभितर आंख हीया री फूटी, ते मारग छोडी नें उजड चालें ॥ ४१ ॥
कर्म ग्रंथ सेतम्बर दिगम्बरा कीधा, तिण मांहें बोल घणा छें विरुध ।
ज्यां जिण मारग ओलखीयों होसी, ते विरुध टाले नें कर लेसी सुध ॥ ४२ ॥
कर्म ग्रंथ मांहें कर्मां री प्रकृत, पुन पाप री प्रकृत न्यारी ठहराई ।
तिण मांहें पिण छें भूठ अनेक, ते पिण विकलां नें खबर न कांई ॥ ४३ ॥
तिरजंच नें मिनष तणों आउखों, तिणनें कहें छें एकंत पुन ।
तिणमें असनी मिनष तणों आउखों, आ तो पाप तणी प्रकृत छें जबून ॥ ४४ ॥
पांच थावर सुषम अपरयापता छें, त्यांरा पिण आउखा नें कहे छें पुन ।
यांरो पिण छें तिरयंच रो आउखों, पाप री प्रकृत नावक जबून ॥ ४५ ॥
पांच थावर नें वले तीन विकलेंद्री, त्यां अप्रज्यापता रो आउखों जबून ।
आ पिण पाप री प्रकृत उघाडी, सूतर में कठेय न दीसें पुन ॥ ४६ ॥
इत्यादिक छें तिरजंच रो आउखों, विवध प्रकार कह्यों जिणराय ।
त्यांमें केकां रों आउखों पाप री प्रकृत, केकां रों आउखों दीसे पुन रे मांय ॥ ४७ ॥
च्यारें प्रकारें बांधें तिरजंच रो आउखों, ते च्यारूंइ बोल सावद्य नहीं रूडा ।
त्यांसूं तो पाप री प्रकृत बंधे छें, त्यांरो आउखों पुन कहे ते कूडा ॥ ४८ ॥
तिरजंच जुगालीयां रो सुभ आउखों, ते तो पुन री प्रकृत दीसती जांणों ।
अन तिरजंच रो आउखों पाप री प्रकृत, ते सूतर सूं बुधवंत करसी पिछांणों ॥ ४९ ॥
माठा माठा अधवसाय सूं बंधे आउखों, ते आउखों पाप री प्रकृत जांणो ।
संका हुवें तो भगोती सूतर में जोवों, चोवीसमें सतक मांसूं पिछांणों ॥ ५० ॥
देवता नें नपुंसक कहे त्यांनें ओलखावण, जोड कीधी छे खेरवा शहर मझारो ।
संवत अठारे वरस तेपनें, आसोज विद अमावस नें बुधवारो ॥ ५१ ॥

●

ढाल : ११

दुहा

केई साधु नांम धरावतां, पिण हीया फूट ढोर समांन।
त्यांरी बोल्यां री समझ त्याने नही, त्यांरा घट मांहे घोर अग्यांन ॥ १ ॥
कहे साधां नें नही राखणों, रात वासी रोगांन।
पिण तेहीज रोगांन राखे रात रो, यूंही करे छे अभिमांन ॥ २ ॥
रात वासी राखे छे रोगांन ने, पूछ्यां कहे म्हें राखां नांहि।
कपट सहीत झूठ बोलता, ते पिण समझे नहीं मन मांहि ॥ ३ ॥
रोगांन वासी राखें रात रों, वले बोलें झूठ मिथ्यात।
ते जथातथ परगट करूं, ते सुणजो विवरा सुध बात ॥ ४ ॥

ढाल

[जिण आगन्या सुखदायी]

टोपसी में रोगांन वेंहरे आंण्यों, पातरा रें देवें लगाय।
ते रोगान रात रों नीलो रहे छे, ते निश्चे रात राख्यो ताय रे।
भवीयण बोलवो वचन विचारी, थे कांय करो आतम भारी रे।
भवियण छोड दो रूढ हीया री* ॥ १ ॥

पातरा में राखो भावें टोपसी में राखों, उहीज रोगांन राख्यो रात।
पातरा मे राखो ने टोपसी में न राखों, आ किसा सूतर री बात रे ॥भ०२॥

पातरा रे रोगांन जाडों लगावे, बीजें दिन लूही लूही रोगांन।
ते रोगांन ओर ठांमां रे लगावें, एहवा कांय करो तोफांन रे॥ ३ ॥

लोट ने पातरा रे रोगांन लगावे, सुकतां लागें दिन दोय च्यार।
ज्यां लगतो राते नीलो रोगांन राख्यो, इणमें तो नहीं संका लिगार रे॥ ४ ॥

थें रात रो रोगान राखता जावों, वले कहो म्हें राखां नांही।
ए सांप्रत झूठ उघाडो बोलो, हीया फूटा ने खबर न कांई रे॥ ५ ॥

रोगांन सूको पातरा रे राखो, घणा वरसां लग तांइ।
सूका रोगांन ने पिण रोगांन कहीजे, तिणमें फेर न दीसें कांई रे॥ ६ ॥

रोगांन वासी राखे छे तिणने, न गिणे ग्रहस्थ नें साग मांहीं।
वले दसवीकालक री गाथा बोलाए, त्यांने जावक दीया उडाई रे॥ ७ ॥

रोगांन ने वासी राखणों निषेधें, ते तो गिणें छे आहार रे मांहीं।
तिण लेखे तो नीलों सूको रोगांन, लागो न राखणों कांई रे॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

रोगांन नें आहार गिणी पातरा रे, लागो राखें किण लेखें।
अभितर आंख हीया री फूटी, लागों अरु वरु नहीं देखें रे ॥ ६ ॥
जब कहे नीलो रोगांन छे तिणनें, गिणां छां आहार रे मांही।
सूको रोगांन पातरा रे लागो, तिणनें आहार में गिणे नांहीं रे ॥ १० ॥
तिण लेखें तो नीली चासणीयादिक, राखणी पातरा रे लगाय।
नीली छे त्यां लग आहार में गिणणी, सूकां पछे नही आहार रे मांय रे ॥ ११ ॥
इत्यादिक वस्त अनेक नीली ते, लोट ने पातरा रे लगाय।
त्यांनें पिण आहार मांहें जावक नही गिणणी, जब तो वासी राखणा छे ताय रे ॥ १२ ॥
सूकां नें नीला रो नांम लेइ नें, भोला लोकां नें भरमावें।
पिण सूकों रोगांन ने नीलों रोगांन दोनूंइ, वासी राखता जावें रे ॥ १३ ॥
रोगांन ने आहार मांहे गिणे नें, वासी राखता पिण जावें।
इसरा हीयाफूटेरा मांनव, त्यांनें साधु किम समझावें रे ॥ १४ ॥
वले रोगांन वासी राखें छें त्यांसूं, भेलो करे छे आहार।
त्यांरा बोल्या री परतीत मूर्ख करसी, त्यांरे अकल में घणों अंधारो रे ॥ १५ ॥
रोगांन ने वासी राखें छें त्यांसूं, प्राछित दीयां विण कीयों संभोग।
त्यांरें बोलीयें बंधतो मूल न दीसें, त्यांरें लागों जोग नें रोग रे ॥ १६ ॥
त्यांमें केई तों कूड नें कपट करेनें, वासी राखें छें रोगांन।
असेक रोंगांन में भेल घालें, इण विध वासी राखें छें तांम रे ॥ १७ ॥
वले रोगांन नें वासी राखें इण विध, रोगांन सहीत ठांम नें ल्यावें।
आंण मेलें आप रा थांनक में, लोट नें पातरां रे लगावें ॥ १८ ॥
अनेक दिन लग रोगांन रो ठांम, वासी राखें थांनक मांय।
लोट नें पातरां रे संपूरण लगाए, पाछो सूंपें धणी ने जाय रे ॥ १६ ॥
जो रोगांन नें आहार माहें गिणें तों, इण विध राते राखणो नही।
इण विध आहार थांनक मांहें राख्यां, ते तो नहीं साधां री पांत मांही ॥ २० ॥
इण लेखें तो घ्रतादिक रा ठांम, आंण मेलणां थांनक मांय।
खातां खातां बाकी रह्यो घ्रतादिक, ग्रहस्थ नें पाछो सूंपणों जाय ॥ २१ ॥
रोगांन नें आहार गिण इण विध राखें, इण विध राखणा च्यार आहार।
रोगांन ज्यूं आहार तणी रुखवाली, करणी दिन रात मझार ॥ २२ ॥
रोगांन नें आहार मांहें गिणें छें, अकल तिणां री उंधी।
आहार गिण नें लागों राखें पातरा रे, भिष्ट हुइ छे त्यांरी बुधी ॥ २३ ॥
आहार तो लेप मातर लागों न राखें, जोवो दसवीकालक मांय।
रोगांन नें आहार गिणे नें, लेप लगाय राखें किण न्याय रे ॥ २४ ॥

कहि कहि ने कितरो एक कहूं, आहार मांहें गिणें रोगांन।
ते सूंनें चित्त बके दिन राते, त्यांरा घट मांहे घोर अग्यांन रे ॥ २५ ॥
रोगांन राखणो निषेधें तिण उपर, जोड कीधी मेडता मझार।
संवत अठारें वरस चोपनें, वेंसाखी अमावस सोमवार रे ॥ २६ ॥

ढाल : १२

दुहा

आजुणा काल आरें पांच में, तीर्थंकर तों निश्चें नही होय।
सुरत केवली पिण दीसें नही, आगम वीहारी पिण नही कोय ॥ १ ॥
घणा भारीकर्मा जीव उपनां, इण पांचमां आरा मांहि।
त्यांरे न्याय निरणा री बातां नही, पख झाल रह्या छे ताहि ॥ २ ॥
त्यांनें समकत सरधा तो परम दोहिली, ते किण विध करें तहतीक।
मोटो परव पजूसण सवंछरी, तिणरी पिण नहीं ठीक ॥ ३ ॥
केई करें सावण में सवंछरी, केई करें भादरवा मांय।
ओ गच्छवास्यां रें पिण बेदो पड्यो, त्यांरो कुण निवेडे न्याय ॥ ४ ॥
त्यां पाछें लूंका नीकल्या, त्यांरे पिण वेदो पड गयो ताहि।
केई करें सांवण में संवछरी, केई करें भादरवा मांहि ॥ ५ ॥
त्यां मांसूं नीकलिया ढूंढीया, त्यांरें पिण पडी मांहोमां तांण।
केई करें सावण में सवंछरी, केई करे भादरवे जांण ॥ ६ ॥
गछवास्यां रा झगडा मझे, साधु नें परणों नांहि।
उवें तों बांधी चाले छें रीत गछ तणी, आप आप तणा गछ मांहि ॥ ७ ॥
पिण ए साधु नांम धरावता, बाजें लोकां मे अणगार।
ते पिण करें सावण में सवंछरी, यांरें पिण घोर अंधार ॥ ८ ॥
न्याय निरणो तो सवंछरी तणों, चाल्यों सूतर मांय।
ते जथातथ परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ९ ॥

ढाल

[रे भवीयण सेवो रे]

सवंछरी पडिकमीयां पाछे, सितर दिवस तिहां रहणो।
ए समवायंग रे सितरमें ठाणें, भगवंत नां ए वेणों रे।
भवीयण जोवो हिरदें विचारी, छोड दो तांण हीयारी रे।
भवियण तांण सूं घणी खुवारी रे* ॥ १ ॥
चोमासी पडिकमीयां पाछें, बीतो छे महीनों नें दिन बीस।
जद सवंछरी पडिकमणो करणों, इम भाख्यों छें श्री जगदीस रे ॥ २ ॥
बीस दिन ने महीनो सवंछरी पेंहलां, सितर दिन दीया पाछिला भेल।
इण रीतें भगवते भाख्यो, च्यार महीनां रो मेल रे ॥ ३ ॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

जो सवंछरी पेहली महीनो बधें तो, तिणने तो त्यांहीज गलत करणों।
कदा सवछरी पाछे इधकों महीनो हुवें तों, तिणनें पिण त्याहीज नही गिणणो रे॥ ४॥
उन्हाला में इधिकों महीनों हुवे तो, उन्हाला में गलत करणो।
चोमासा में महीनो बधें तों, चोमासा मांहें नही गिणणो रे॥ ५॥
जो सवछरी पेहलां इधिक महीनो हुवे, तो तेरें महीने सवंछरी ठवणी।
जो सवंछरी पाछे महीनो बधे तो, आगली तेरे महीने करणी रे॥ ६॥
ओ तो न्याय उघाडो दीसे, तिणमे संका मूल म आंणों।
थे अंतर हीया में जोय विमासों, मत करों कूडी तांणो रे॥ ७॥
कोइ रिष पाचम ने भादरवा महीनां री, सवंछरी दीधी उथापी।
विनां विचास्यां आप रे छादे, सावण माहें सवंछरी थापी रे॥ ८॥
त्यांने पूछ्यां कहे म्हे चोमासो ठायां थी, दिन काढें गुणचास पचास।
सवछरी करां म्हें विनां भादरवे, इणमें दोष नहीं छे तास रे॥ ९॥
गुणचास पचास दिन कहे ने, सवंछरी करें सावण मांहि।
सितर दिन सवंछरी पाछे चाल्या छे, त्यांनें जावक दीया उडाय रे॥ १०॥
गुणचास पंचास दिन सूतर मे चाल्या, सितर दिन पिण सूतर में चाल्या।
गुणचास थापे सितरां नें उथापे, ए तो घोचा अणहूता घाल्या रे॥ ११॥
गुणचास पचास री थापनां कर ने, सितर दीनां ने दीया उथापी।
प्रतष सूतर रों पाठ उथापे, सावण मांहे सवंछरी थापी रे॥ १२॥
गुणचास पचास दिन काढेनें, सवंछरी करी सावण में तांम।
पाछिला सितर दिन काढेने, त्यांनें छोड देणो ते गांम रे॥ १३॥
सावण री सवंछरी कीधी तिणनें, रहिणो नही तिण गांव मझार।
आसोजी पूनम रो कर पडिकमणो, काती विद पडिवा करणों विहार रे॥ १४॥
यारे लेखें काती में रहें ते अन्याइ, अन्हाखी थकां न करे निरणो।
तो यारे लेखे यांने कातकी पूनम, पंच मासी पडिकमणो करणों रे॥ १५॥
इधिक महीना रा दिन गिणेने, सावण मांहे सवंछरी थापी।
तो महीनों पिण गिणने आसोज महीना रो, चोमासी कांय उथापी रे॥ १६॥
कातकी पूनम रो चोमासो करें जव, इधिक मासो न गिणीयों लिगार।
इधिक महीना रा दिन सवंछरी कीधी, ते महीनो कांय घाल्यो विसार रे॥ १७॥
मेद गूंवडो नें मसादिक बधे ते, तिणने दूर करे छे काटी।
तिणरे बदलें नाक कांनादिक काटे, तिणरी अकल आडी आइ पाटी रे॥ १८॥
ज्यूं किणहीक वरस में मास वधे जव, त्यारो त्यांहीज गलत करणां।
तिणरे वदले आगों पाछो गलत करे छे, त्या जावक न कीयो निरणो रे॥ १९॥

असाढी पुनम नें कातकी पुनम, तीजी फागण री पुनम जांणों।
यां तीनां मासां विण न हुवें चोमासी, तिणमें संका मूल न आंणों रे ॥ २० ॥
ज्यूं भादरवा विण सवंछरी न हुवे, तिण मांहें पिण संका मत आंणों।
ज्यां सावण मांहें सवंछरी कीधी, ते जिण मारग रा अजांणों रे ॥ २१ ॥
किण ही साहुकार रे पांच पूतर छें, तिणमें च्यार पूतर श्रीकारो।
पांचां में दूजों पूतर निपूंसक तिण रों, मंडें नहीं घरवारो रे ॥ २२ ॥
ओ तो मरत गलत पूरो पड जासी, तिणरों वंस न वधें लिगार।
तिणनें जन्म्यों जठा सूं एसोइ जांण्यों, कदे जांणी नहीं भली वार रे ॥ २३ ॥
कोइ निपुंसक रो घर मंडावे, ते तो छें विकल समांन।
तिणरें बदलें ओर नें राखे कवारों, ते जीव छें अगाध अग्यांन रे ॥ २४ ॥
ज्यूं किणही एक चोमासें पांच महीनां हुवें जब, लूण महीनो वधीयो कहें लोग।
तिण लूंड महीना नें निपुंसग जिम जांण, तिणनें यूंही गमावणो फोक रे ॥ २५ ॥
कोइ लूण महीना नें गिणती में गिण नें, सांवर्ण मांहें सवंछरी थापी।
त्या विनां विमासीयों घोचों घालें, संवंछरी भादरवा री उथापी रे ॥ २६ ॥
कहि कहि नें कितरोएक कहूं, भादरवा विण सवंछरी नांहीं।
सूतर कथा न्याय निरणों जोए, विचार देखो मन मांहीं रे ॥ २७ ॥
सवंछरी ओलखावण काजें, जोड कीधी पाली मझार।
संवत अठारें पचावनें वरसें, चोमासा मांहें सुध विचार रे ॥ २८ ॥

●

ढाल : १३

दुहा

केई भेषधारी भूला फिरे, त्याने जिण धर्म री नही सुध।
उंची उंची करे छे परूपणा, त्यांरी भिष्ट हुइ सुध बुध ॥ १ ॥
साधां दिष्या दीधी चोमासा मझे, कीयो ग्रहस्थ नो अणगार।
तिण सू भेषधारी बकता फिरे, त्यामें सुध न दीसे लिगार ॥ २ ॥
केई तो कहे चोमासा मझे, साधां ने दिष्या देणी नांहि।
दिष्या दीधी त्यांमें दोष छे, एहवो अधारो छे घट मांहि ॥ ३ ॥
त्यां श्रावक पिण केई विकल थां, त्यां माने लीधी त्यांरी बात।
त्यांरा गुर नें त्यांरा श्रावक तणों, घट मांहे घोर मिथ्यात ॥ ४ ॥
दिप्या देणी निषेधी चोमासा मझे, ते अंध अग्यांनी बाल।
त्यांमें फोडा पडे संसार मे, उतकष्टो अनंतो काल ॥ ५ ॥
दिष्या देणी कही चोमासा मझे, तिणमें संका म जांणो कोय।
थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो चितल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या में]

बावीसमां श्री नेम जिणेसर, त्यां पिण दिष्या लीधी चोमासा मांहि।
सांवण सुदि चादणी छठि तणें दिन, सहंस पुरप साथे दिष्या लीधी ताहि।
चोमासा में दिष्या निसंक सूं देणी* ॥ १ ॥
राजमती दिष्या चोमासा में लीधी, तीनसो जणीया दिष्या लीधी त्यांरी लार।
तिणने नेम जिणेसर मुदे थापी, तिण सूं छोटी आर्यां चालीस हजार ॥ २ ॥
पदम प्रभूनाथ छठा तीथंकर, त्यां पिण दिष्या चोमासा मे लीधी।
काती विद तीज रे दिन सहस जणा सूं, चोमासे दिष्या लीधी त्यां आछी कीधी ॥ ३ ॥
अनंता तीथकर चोमासा मांहे, त्यां पिण दिष्या लीधीं सयमेव।
वले अनता ने पिण दीख्या दीघी, जेज नहीं कीधी दिष्या दीधी ततखेव ॥ ४ ॥
इम कह्यां उंधा बोले भेषधारी, तीथंकर नी बात क्याने चलावों।
साधां ने चोमासा मे दिष्या न देणी, दिष्या देणी हुवें तो सुतर में बतावो ॥ ५ ॥
इणरो जाब कह्यो आचारंग मांहे, केवलीये कीधो ते छदमस्थ ने करणों।
जे केवलीया चोमासा में दिष्या दीधी, ओ छदमस्थ रों पिण काढीयो निरणों ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

केवलीयें कीधो ते छदमस्थ कीधो, यांनें पाप कठाथी लागो रे पापी।
यां तो चोमासा मांहे दिष्या लीधी छें, थें चोमासे में दिष्या देंणी कांय उथापी॥ ७॥
कुमती कदाग्रही साधां रा निंदक, साधां रें आल देता सके नहीं पापी।
केई भेषधारी भूठा बोला अन्हाखी, त्यां चोमासे में दिष्या देणी उथापी॥ ८॥
उत्तराधेन रे दशमें अधेनें कह्यों जिण, एक समों पिण नही करणो परमाद।
तो चोमासा में दिष्या देणी निषेधी, त्यां विकलां रें किण विध होसी समाद॥ ९॥
दिष्या देणी निषेधे चोमासा मांहें, तिण भूठा बोला नें पूछीजें ताय।
तूं चोमासा में दिष्या देणी निषेधे, ते सूतर मांहें तूं काढ बताय॥ १०॥
जो उ सूतर मांहें नहीं बतावें, तिण मूरख नें घालीजें कूरो।
वले घणा लोकां मांहें फिट फिट कीजें, समभू लोकां में करणों घणों फितूरो॥ ११॥
घणा टोलां तणा साध बाजें लोकां में, ते तो चोमासा में दिष्या देवें।
त्यां माहें तो दोष न सरधें लिगार, सुध साध रो नांम अणहूंतो लेवें॥ १२॥
चोमासा मांहे दिष्या देवे छें त्यांनें, साध सरधे नें मुख सूं सरावें।
सुध साध चोमासा में दिष्या दीधी, तिण मांहें पापी दोष बतावें॥ १३॥
वले कहें दिष्या दीधी तिण गांम नें ठांम, तिण गांम नें ठांम तिणनें नहीं रहणो।
ओ पिण भूठ बोलें भेषधारी, त्यां विकलां री सरधा तणों कांई कहणों॥ १४॥
चोमासा मांहें दिष्या देणी निषेधें, त्यां श्री जिण वचन दीया छें उथापी।
तिण जिण धर्म नही ओलखीयों आंचें, तिणनें जांण लीजे महा पापी॥ १५॥
चोमासा मांहें दिष्या देणी निषेधी, तिण मूरख री करसी मूरख परतीत।
उण उंधी सरधा तणें परतापें, चिहूं गति मांहें हुसी फजीत॥ १६॥
चोमासा में दिष्या देणी निषेधें, ते तो अंध अग्यांनी जाबक बूडा।
त्यांमें दुख में दुख संसार में पडसी, वले चिहूं गति मांहें दीससी भूंडा॥ १७॥
चोमासा में दिष्या देणी निषेधें, आ तो उठी जठा थी भूठी।
ते जिण मारग रा अजांण अग्यांनी, त्यांरी अभितर आंख हीया री फूटी॥ १८॥
चोमासा में दिष्या देणी निषेधें, त्यांनें साध सरधें ते पिण मूढ मिथ्याती।
त्यां विकला नें साध सरधे नें बूडा, वले बूड गया त्यांरा पखपाती॥ १९॥
चोमासा में दिष्या देणी निषेधें, ते तो नीमाइ निश्चें विकल समांन।
ते पिंडत बाजें छें विकल लोकां में, पिण घट मांहें त्यांरे छें घोर अग्यांन॥ २०॥
चोमासा में दिष्या देणी निषेधे, ते भूठा भूठा ले सुतर रो नांम।
त्यां तीन काल रा तीर्थंकरां नें, पापी आल देंता डरीया नहीं ताम॥ २१॥
चोमासा माहें दिष्या देंणी निषेधें, ते निमाइ निश्चे मूंढ मिथ्याती।
सूनें चित सूतर बाचें अग्यांनी, हीया फूट गधा रा साथी॥ २२॥

चोमासा मे दीष्या देणी निषेधें, तिणरा श्रावक पिण सुण सुण ने गूंजें ।
ए पिण हीया फूट गधा रा साथी, इण बात रो न्याय निरणों न बूझे ॥ २३ ॥
अनंता साधां दिष्या चोमासा में दीधीं, तिण मांहे दोष बतावें पापी ।
इसडा केई भेषधारी अन्हाखी, त्यां चोमासा में दिष्या देणी उथापी ॥ २४ ॥
केई भेषधारी चोमासा मे दिष्या देवे, त्यानें तो मूरख सरधें छे साध ।
साध चोमासा मांहें दिप्या देवे, त्यांने असाध कहे नें करे विषवाद ॥ २५ ॥
चोमासा मांहें साध दिष्या दीधी, त्यां किसो अकारज कीधो रे पापी ।
आ तो पाप सेवण रा पचखांण कराया, थें चोमासा मे दिष्या देणी कांय उथापी ॥ २६ ॥
चोमासा मे दिप्या देणी निषेधें, त्यां विकलां री विकल राखे परतीत ।
ते तो चोडे भूला छे अंध अग्यांनी, ते तो चिहूंगति मांहें होसी फजीत ॥ २७ ॥
चोमासा मांहें दिष्या देणी ओलखावण, जोड कीधी छें केलवा सहर मझार ।
संवत अठारें पचावने वरस, फागुण विद एकम नें गुरवार ॥ २८ ॥

ढाल : १४

दुहा

केई मूढ मिथ्याती जीवडा, ते वोलें नही वचन विचार।
साधां नें विहार/ करणो नहीं, चोमासे रे मझार॥ १॥
कारण पडियां साधु नें, चोमासा मांहें करणो विहार।
श्री वीर जिणेसर भाषियो, ठांणा अंग सूतर मझार॥ २॥
केई पिंडत वाजें लोक में, पिण घट में घोर अंधार।
ते पिण कहें छें चोमासा मझे, साधां नें नहीं करणो विहार॥ ३॥
ते निदक छे साधां तणा, तिणसूं संवलो न सुझें लिगार।
परती करवा साधां तणी, तुरत होय जाय तयार॥ ४॥
चोमासा में विहार करण तणा, कारण कह्या जिणराय।
ते जथातथ प्रगट करूं सुणजो चितल्याय॥ ५॥

ढाल

[जीव मोह अणुकम्पा न आणिये]

दुष्ट राजादिक वेरी नो भय हुवे, जांणे उपधादिक ना लूसणहार जी।
त्यां उपधादिक नें राखवा भणी, चोमासा मे करे विहार जी।
श्री वीर निणेश्वर भाषियो* ॥ १॥
साधु भिख्या नें अभावे करी, नही मिले पांणी नें आहार जी।
जव थिर परिणांम रहे नही, चामासे में करे विहार जी॥ २॥
कोइ प्रत्यनीक छे साधां तणो, तिण ग्रामादिक मझार जी।
ते साधु ने काढे तिहां थकी, चामासे में करे विहार जी॥ ३॥
गंगादिक ने उन्मार्गे, पाणी आवतो जाणे तिणवार जी।
तिण पाणी सूं जाणे डूवता, चामासे में करे विहार जी॥ ४॥
कोइ आवे छे मोटे आडम्बरे, जीतव चारित्र ना लूसणहार जी।
ते म्लेच्छादिक दुष्ट जाणेलिया, चोमासे में करे विहार जी॥ ५॥
ए पांच वोला मांहिलो हुवे, तो चोमासा में करे विहार जी।
तिण री जिन आग्यां छे साधु ने, तिणमें दोष नहीं छ लिगार जी॥ ६॥
वले पांच प्रकारां करी चोमासामें करणो विहार जी, ते पिण कह्यो छे घणा आगम मझे।
ते सांभलज्यो विस्तार, चामासे में करे विहार जी॥ ७॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

कोइ अनेरो आचार्य मोटको, अपूर्व ग्यांन तणो भंडार जी।
त्यां कने जाये ग्यांन भणवा भणी, चोमासे में करे विहार जी॥ ८ ॥
वले दरसण प्रभावना कारणे, ते पिण सास्त्र नो छे भंडार जी।
ते शास्त्र भणवा कारणे, चोमासे मे करे विहार जी॥ ९ ॥
आचार्य उवभाय मुनिसरू, त्यां कीधो सुणियो संथार जी।
त्यांनें वांदवा ने कारणे, चोमासे में करे विहार जी॥ १० ॥
आचार्य उवभाय रह्या तिहां, साध छे ओर क्षेत्र मभार जी।
त्यांरी वैयावच करवा भणी, चोमासे में करे विहार जी॥ ११ ॥
गगा यमुना नें सरस्वती कोसिया नें एरावती जाण जी, ए पांचूं नदी नावा सूं उतरे।
महीना मे एकवार प्रमाण जी, चोमासे में करे विहार जी॥ १२ ॥
वले पांच कारण पडियां थकां, नदी उतरे वार अनेक जी।
एक दोय वारनो कारण नही, ते सुणज्यो आण ववेक जी॥ १३ ॥
भयनें भिख्याने अभावे करी, कोइ काढे गामादिक वार जी।
पाणी रो आगम जाण नें, वले म्लेछादिक नी सुण मार जी॥ १४ ॥
एहीज पांचूं कारण करी, चोमासे मे करे विहार जी।
तेहीज कारण पडियां साध ने, ए नदी पिण उतरे वारूं बार जी॥ १५ ॥
इत्यादिक कारण पडियां साध नें, चामासा मे करणो विहार जी।
त्यानें अरिहंतनी छे आगन्या, साधु नें नहीं दोष लिगार जी॥ १६ ॥
साधु विहार करे चोमासा मझे, तिणमें दोष नही तिल मात जी।
तिणमें दोष कहे अन्हाखी थका, त्यां साधां सूं पडिवजियो मिथ्यात जी॥ १७ ॥
ते तो दोष अणहूतो काढता, बकवो करे दिन रात जी।
त्यांने परभव री चिंता नही, न डरे भूठी करता बात जी॥ १८ ॥
चोमासा में विहार करण तणी, जोड कीधी गुरला गाम मभार जी।
संवत अठारे नें वरस सतावनें, काती विद पांचम मंगलवार जी॥ १९ ॥

ढाल : १५

दुहा

भेषधारी थांनक ने रात रों, जडें उघाडें कमाड।
तिहां हिंसा करे जीवां तणी, पिण संक न आंणें लिगार॥ १ ॥
वेतकल्प मांहें कह्यो साध नें, रहणो उघाडें दुवार।
ए वीर वचन नें आराधसी, ते किम जडे आडा कंवाड॥ २ ॥
वले उत्तराधेन में वर्जीयों, पेंतीसमांधेन मांहि।
हाथां सूं तो जडवो जिहांइ रह्यो, मन सूं पिण वांछणो नांहि॥ ३ ॥
केइ श्री जिण आग्यां लोप नें, जडें उघाडें कमाड।
त्यांनें छेडवीयां अवला पडें, वले वक उठें तिणवार॥ ४ ॥
पाछो जाव देवा तो समर्थ नहीं, दोष छोडणरा नही परिणांम।
तिण सूं कवाडीया रो नांम लें, दोष ढांकण रे कांम॥ ५ ॥
मोटा किवाड नें कवाडीयों, थापें अग्यांनी एक।
वले वदलतां विरीयां नहीं, ते सुणजो आंण ववेक॥ ६ ॥

ढाल

[श्रा श्रणुकम्पा जिण श्रागन्या मे]

भेषधारी कमाड नें जडें उघाडें, त्यांमें खूंचणो काढ्यां घणों दुख पावें।
ते आपणा दोष ढांकण ने मूर्ख, कवाडीया मांहे दोष वतावे।
कुगुर चिरत सुणो भव जीवां* ॥ १ ॥
केइ भेषधारी कहें कवाड जडयां में, जो ओ म्हांनें दोष लागें छें मोटो।
तो कवाडीया रो आहार लेवें छें, त्यांने पिण दोष लागें छें छोटो॥ २ ॥
किवाडीया मांहें दोष वतावें, ते तो कवाड री थाप करवा काजें।
जो भूठ बोलीनेंइ दोष वतायों, तो एं दोषीलो आहार लेता क्यूं न लाजे॥ ३ ॥
कवाडीया मांसूं आहार लीयां रो, कह दीयो चोडें दोष उघाडो।
त्यांनें भारी परसी ए दोष परूपां, ते सांभलजो भवीयण विस्तारो॥ ४ ॥
जिण जाणेनें आहार दोषीलो वहरयो, तिण रा साध पणारी हूइ धूर धांणी।
तिण खावारें कारण जन्म विगोयो, दोषीलो आहार लीयो जांणी २॥ ५ ॥
जांणी ने आहार दोषीलो लेवें, ते निरलज परभव सांह्यों न देवें।
तो यांरा श्रावक अकल रा मूंढ मिथ्याती, ते वारमों वरत भांगें किण लेखें॥ ६ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

कवाडीया मांहे तो दोष बतावे, तो यांरी पीढीयां लग सगलाइ बूडा।
त्यां दोषीलो आहार खाए दिन काढ्यां, ते चिहुं गति मे दीससी अति भूंडा॥ ७॥
वले परूपण करता इम बोले, साधां ने आहार असुध वहरावें।
ते तो चारित धर्म रो लूटणहारो, ते दातार गर्भ में आडा आवे॥ ८॥
साधा नें आहार असुध वहरावे, त्यांरे कर्म बधे घर रो माल खूटे।
उणरे दरबेइ तोटो ने भावेइ तोटो, ते तो सतगुर रा संयम ने लूटें॥ ९॥
एहवी परूपणा करता नही संकें, ते सूरपणो लोकां नें मनावे।
जो उवे कवाडीया माहे द्रोष बताए, तो कवाडीया रो वेहरे क्यूं ल्यावे॥ १०॥
यारी सरधा रे लेखे यांरा साध श्रावकां मे, च्यांरूं तीर्थ में छे मोटी खामी।
या असुध आहार जांणी वेहर्यो वेंहरायो, ते सगला छे दुरगत जावा रा कांमी॥ ११॥
कोइ आप रो नाक काटे नकटो हुवे, ते तो पेंला ने कुसवण करवा काजे।
ज्यूं साधां ने दोषीला करण भेषधारी, आप दोषीला हुंता नहीं लाजें॥ १२॥
उ तो ओर सवण ले गांव सिधायो, ते तो कुसले खेमें माल कमाय ल्याओ।
पिण नकटो दुखी हूओ जीवे जठा लगें, पिण नाक गमायो ते पाछो न आयो॥ १३॥
ज्यू साध तो कवाड किवाडीया ने, यां दोयां ने सरधें छे जुआ जुआ।
भेषधारी कवाडीया में दोष बताए, पीढीयां लग दोषीला हाथां सूं हूआ॥ १४॥
ते तो रातरो कवाड जडवारे काजे, कवाडीया माहे दोष बतायों।
ए पहिला तो दोष कदे नही सुणीयो, ए गाला सूं गोलो घडनें चलायो॥ १५॥
ते तो किवाडीया माहे दोष बतावें, वले वतलायां बोलें अन्हाखी ऊधा।
यांरा श्रावक मिल यांरी परख करे तो, भेषधारी मुख बोलें सूधा॥ १६॥
यांरा श्रावक यांने इण विध पूछे, म्हारे साधां नें सुध वहरावण रा त्यागो।
किवाडीयो खोल ने आहार वहरायां, म्हांरो सूंस रहेंसी के जासी भागो॥ १७॥
म्हांरो सूंस न भागे तो हूं खोल वेहराऊं, हिवे उण वेला किण विध बोले ऊधा।
जब तो कहें इण रो दोष म जांणो, वेहरण रे काम पडयां बोले सूधा॥ १८॥
यारा श्रावक यांने वले इण विध पूछे, म्हारे साधां ने असुध वेंहरण रा छे त्यागो।
कवाड खोल ने आहार वेहरायां, म्हारो सूंस रहसी के जासी भागो॥ १९॥
म्हारो सूंस न भागे तो हूं खोल वहराउ, जब तो पिण केयक बोलें सूधा।
साच बोले कहे दोष कमाड खोल्यां, चोडे धाडे किम बोलें ऊंधा॥ २०॥
ए साच बोले ते तो सांकड़े पडीया, त्यांने सतवादी कदे मत जांणो।
भूठ बोलण री काइ सेरी न दीसे, तिण सूं साच बोले पिण न छोडे तांणो॥ २१॥
कवाड नें कवाडीयो एक कहंता, पिण अठे तो कर दीया जू जूआ दोइ।
कवाड मांहे तो दोष वतायो, कवाडीया मांहे तों कह्यो दोप न कोइ॥ २२॥

यांरा श्रावक चतुर विचषण हुवें तो, इम भूठा घाली मुख देवें धूडो।
थे कवाडीया मांहे दोष वताए, इतरा दिन कांय वोलीयो कूडो ॥ २३ ॥
इणविध वुधवंत काढे निकालो, ते तो भूठावोलां नें जांण ले भूंडा।
पिण आंधां नें साचो वात न सूझे, ते तो कुगुर तणी तांण कर कर वूडा ॥ २४ ॥
जे प्रतष भूठा नें साचो कहे छें, ते दिन दिन कर्म वांधे हुवे भारी।
जे कुगुर तणी पषपात करें त्यांरे, टांको भले तो हुवे अनंत संसारी ॥ २५ ॥
वले कंवाडीयों नषेधवा काजे, मोटी छोटी लुगाइ रो दिष्टंत देवें।
यां दोयां रो साधु नें संघटो न करणो, ज्यूं कवाडीया रोइ आहार न लेवें ॥ २६ ॥
इत्यादिक भूंडा भूंडा दिष्टंत देइ, कवाडीयां नें नषेधण सूरा।
वले आपतो आहार कवाड्या रो वहरें, ते हाथां सूं मूरख पडे छें कूडा ॥ २७ ॥
छोटी नें मोटी दोनूंइ अस्त्री त्यागी, ते कवाडीया रो आहार लेवें किण लेखें।
कवाड नें कवाडीयो एक कहे ते, आपरी सरधा सांह्मो क्यूं नहीं देखें ॥ २८ ॥
छोटी डावडी ज्यूं कवाडीयो जांणो, वले आहार लेवें खोलाए कोठो ने आलो।
कवाडीयारो दोप जांण जांण सेवें, ते छोटी ढावडी रो किम करसी टालो ॥ २९ ॥
साधु तो कवाड कवीडीया नें, यां दोयां नें सरखें छें जूंआ जूआ।
भेषधारी कवाड्या में दोष वताए, पीढीया लग दोषीला हाथां सूं हूवा ॥ ३० ॥
वले केयक भेषधारी इम वोलें, साधु ने रहणो कह्यों छें उघाडें दुवारो।
पिण जडणो उघाडणों वरज्यो न दीसें, तिणरे लेखें तो दोष नही छें लिगारो ॥ ३१ ॥
दोप नही कहें हाथां सूं जडीयां, तिण भूठ वोले कीधी जडवा री थाप।
तिणनें ग्रहस्थ उघाडे नें आहार वहरावें, तो तिण वहस्थां में कांय परूपें पाप ॥ ३२ ॥
इम भूठ वोलेनें कांम चलावें, पिण छोडें नहीं आडो जडवो कवाड।
ते निरलज्ज भारी करमा अग्यांनी, त्यां गहलां नें सीख न लागें लिगार ॥ ३३ ॥
केइ भेषधारी कहे कवाड जडयां सूं, साधां नें दोष जाबक नहीं लागे।
जो पहलो महावरत भागे कवाड जडयां सूं, तो साधवीयां रो पिण पेंहलों महावरत भागे।३४।
इम साधवीयां रो नांम लेइनें, ते निसंक सूं जडवा लागा कवाडो।
ते कल्प न जांणें साधवीयां रो, ते सांभल जो भवीयण विस्तारो ॥ ३५ ॥
साधवीयां तो च्यार पछेंवडी राखें, त्यांनें तो दोष लिगार न लागें।
जो च्यार पिछेवडी साधु राखें तो, जिण आग्यां लोप्यां तीजो वरत भागे ॥ ३६ ॥
वले जांगीयों कांचूओ राखे साधवीयां, त्यांरो पिण दोष भगवंत न कह्यों लिगारो।
जो जांघीयों कांचूओ साध राखें तो, हुइ जाएं श्री जिण आज्ञा वारो ॥ ३७ ॥
वले साधवीयां एकण गांव माहे, ए तो सेषाकाल रहे दोय मास।
जो सेषाकाल साधु जो बिमास रहें तो, जिण आगन्या लोप्यां हुवे वरत विणास ॥ ३८ ॥

साध तो राते रहे चोहटा विच में, ते पिण खुलीए अवंग दुवारे ।
साधवीयां राते रहें चोहटा विचें तो, ते तो हुवे जाए श्री जिण आगन्या बारे ॥ ३६ ॥
इत्यादिक कल्प रा बोल अनेक, ते तो साध साधवीयां रा न्यारा न्यारा ।
त्यानें आपण आपण कल्प में रहणो, पिण साधु नें न जडणो साधवीयां री लारा ॥ ४० ॥
साधवीयां नें कल्पें ते राखे साधवीयां, उतरा साधु राख्यां साधु रा वरत भागें ।
ज्यूं साधां ने कल्पे कह्यो दुवार उघाडे, जडे जिण साधु नें दोष क्यूं नही लागें ॥ ४१ ॥
जब केयक बापडा पाधरा बोलें, किवाड जडयां मांने लागें छे दोषो ।
केइ कहे जडीयां दोष न लागें, ए भूठा बोला किम जासी मोखो ॥ ४२ ॥
इम सांभल ने उतम नर नारी, एहवा भूठाबोलां सूं रहजो दूरा ।
जो कुगुरां ने छोडें नें सतगुर सेवे, ते तो चतुर विचषण प्रवीण पूरा ॥ ४३ ॥
केई भेषधारी इम बोलें अग्यांनी, म्हे उतरां ओरा साल नें पोल मभारो ।
उघाडो राख्यां माल जाए ग्रहस्थ रो, तिण कारण आडा जडा कवाडो ॥ ४४ ॥
ग्रहस्थ रो माल जो चोर ले जावे, तो उ ग्रहस्थ दुख पावें छे गाढो ।
ग्रहस्थ रो माल रुखवालवा काजे, म्हे सेठो जड राखां कवाड नें आडो ॥ ४५ ॥
ग्रहस्थ रो माल जो साध रुखालें, तो प्रतष पांचमों माहावरत भागो ।
वले हिंसा सुं पहिलोइ माहावरत भागो, जिण आगन्या लोप्यां अदत पिण लागो ॥ ४६ ॥
घर रो धन माल जहर जांणी छोडयों, जो उ ग्रहस्थ रा धन रो करे रुखवालो ।
तिण समकत सहित साधपणो खोयों, तिणने सासण मासूं दीयो बीर टालो ॥ ४७ ॥
ग्रहस्थ रा माल रुखवालवा काजें, भेषधारी आडा जडें कवाड ।
कदा जाबतो करतां ढांढा मांहे आवे, तिण लेखें तों धाकल काढणा बार ॥ ४८ ॥
ग्रहस्थ रो माल रुखवालवा काजे, भेषधारी आडा जडे कवाड ।
कदा जाबता करतां माहे चोर आवे, तो धणीने जाय कहणो तिणवार ॥ ४९ ॥
नालेर कोपरादिक वस्त अनेक, त्यां उपर स्वांनादिक ढूकें आय ।
धन राखवा काजें कवाड जडें त्यांने, यानें पिण अलगा कर देणा जाय ॥ ५० ॥
ग्रहस्थ रा धन काजें जडसी कवाड, त्यांने पोहरो देइ कांढणो दिन रात ।
ढुले फूटे उजाड हुवे तो, विगडवा नही देणों तिलमात ॥ ५१ ॥
ग्रहस्थ रे परिगरो नव जात रो छे, त्यारी भेषधारी करे रुखवाली ।
ते भोला लोकां ने गमता लागें, जांणें वावो रो वावो ने हाली रो हाली ॥ ५२ ॥
केइ भेषधार्यां नें जाव न आवे, जब भूठ बोले वात लेवें संवार ।
माने ग्रहस्थ घर मांहे रहिवा न दे छें, तिण कारण आडा जडां कवाड ॥ ५३ ॥
ते सूंनो घर हाट उपाश्रों थांनक, उठें किण लेखे जडे छें कवाड ।
एहवा प्रश्न पूछयां रा जाव न आवे, जब आलल भाषण नें हुय जाय तयार ॥ ५४ ॥

सवत अठारें वरस तेतीसें, जेठ सुद बारस मंगलवार।
ए कुगुर तणा चरित परगट कीधी, सहर पीपाड तणें रें मझार॥ ५५॥

ढाल : १६

दुहा

केइ साधु नांम धरायनें, आडा जडे छें किवाड।
त्यांमे केइ तो कहे दोष छे, केइ न कहें दोष लिगार॥ १॥
त्यांमें दोष बतावे कमाड नो, तिण रो जाब न देवे तांम।
दोष कहें कवाड्या तणो, बकता फिरे गांम गांम॥ २॥
कमाड तणों दोष ढांकवा, लेवे कवाडया रो नांम।
कहे कवाड कवाडयों एक छे, एहवो बेदो घाल्यों छें तांम॥ ३॥
कहिवाने एक कह दीयो, पिण त्यांहीज कर दीया दोय।
कवाड उघाड देवे तो लेवे नही, किवांड्या रो न छोडें कोय॥ ४॥
दोष वतावें कवाड्या तणो, पिण वेहरे किवाड्यो खोलाय।
एहवा विकला री वात में, कला म जाणो काय॥ ५॥
साधु दोष जांणें कवाडया तणों, तो छोंड दे तुरत सताव।
हिवे कवाड ने कवाडया तणो, सुणो सुरत दे जाब॥ ६॥

ढाल

[रे भवियण सेवो रे साध सयाणा]

कवाड जड्वो तो साधूने वरज्यो सुतरमें ठांम ठांम, कवाड्या रों तो आहार कठेंइ न वरज्यों।
वरज्यो हुवे तो बतावो ताम रे, भवीयण जोवो हिरदय विचारी।
म करो तांण हीया री रे, तांण कीधां सूं घणी खुवारी* ॥ १॥
पूरे मासे बाइ उठ बेस वेहरावे, तो साधु नें वेहरणों नांही।
ओछा गर्भ री उठ बेस वेहरावे, ते वरज्यो नही सूतर रे मांही॥ भ० २॥
कोइ कहे कवाड्यों कठे चाल्यो छे, तिण रों जाब सुणो चित्त ल्याय।
कवाड वरज्यो कवाड्यो नही वरज्यो, ओ देखों उघाडों न्याय रे॥ ३॥
ज्यूं पूरे मासें बाइ उठ वेहरावे, ते तों वरजी सूतर रे मांहि।
ओछा गर्भ वाली रो वरज्यो नांही, जब लेणो ठहरायों छे ताहि रे॥ ४॥
इण दिष्टंते कवाड्यां रो आहार, वेंहर्यां में दोषण नांही।
छोटा गर्भ री ने कवाड्यां रो आहार, वरज्यों नहीं सूतर मांही रे॥ ५॥
ज्यूं मोटा ने छोटा गर्भ मे फेर जांणो, ज्यूं कवाड किवाड्यो में जांणो।
कवाड्यो खोले साधु नें वेहरावे, तिणरी म करो तांणों रे॥ ६॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ज्यांरा बज बडेरा आगे हूआ ते, वहस्यों कवाड्यां रो आहार।
तिण में दोष कह्या त्यांरा बज बडेरा, गया जमारो हार रे॥ ७॥
थोडा नें घणा उंचा थी वेंहरण रों, सूतर में नहीं उनमांन।
थोडा नें घणा विच आंतरों नांहीं, ते पिण जांण लेसी बुधवांन रे॥ ८॥
हाथ रें आसरें उंचा थी वेंहरावें, साधु नें अन पांणी।
जब तो साधु वेंहरतो संक न आंणें, वेंहर छें निरदोष जांणी रे॥ ९॥
घणा उंचा थी आहार साधू ने वेंहरावें, जब तों साधु करे छें टालों।
आसरों उनमांन अटकल ने वेंहरें, तिणरो सूतर में नही निकालो रे॥ १०॥
थोडा उंचा थी वेंहरायां दोष न जांणें, दोष जांणें उंचा थी वेंहरायां।
तिम कवाड्यां रा दोष तणी ताण, छूटें न्याय हीया में आयां रे॥ ११॥
धीरें धीरें चालें साधु नें वेंहरावें, तो साधु वेंहरें अनादिक पांणी।
जों उतावलों ने दोडे वेंहरावें, तो नहीं वेंहरें अजेंणा जांणें रे॥ १२॥
उतावल सूं चाल्या नें कमाड खोल्या रों, अें तो दोष उघाडों दीसें।
धीरें चाल्या नें कवास्यों खोल्या रों, दोष नहीं कह्यो जगदीसें॥ १३॥
बावन अनाचार कह्या दशवीकालक में, चोथो अणाचार साह्यों आंण्यों।
तिण सूं साह्यों आंण्यों तो साधू न बहरें, मोटों दोष अणाचार जांण्यों॥ १४॥
समचें तों कह्यों साह्यों आंण्यों न लेंणों, इण ठांमे तो मरजाद न कांइ।
थोडी दूर सूं तो साह्यों आंण्यो वेंहरें, ज्यूं कवाड्यों जांणों मन मांहि रे॥ १५॥
तीनां घरां थकी साह्यों आंण्यों वेंहरें, तिण दूरी री विगत न कांइ।
तिमहीज कवाड्या नें जांणो, विचार करो मन मांहीं रे॥ १६॥
तीनां घरां सूं तों साह्यों आंण्यो वेहरे छें, ते पिण कदा घणी दूर जांणें।
तो पिण साधु नें वेंहरणों नांहीं, अकल सूं उनमांन पिछांणें रे॥ १७॥
ज्यूं कवाड उघाडे नें आहार देवें तों, लेंणो वरज्यों सूतर रे मांही।
किवाड्या रों आहार कठें नहीं वरज्यों, सूतर मांहें नकार छें नांही॥ १८॥
घणी दूर सूं साह्यां आंण्या रा दोष, थोडी दूर रो दोष म जांणों।
ज्यूं कवाड रो दोष कवाड्या रो नांहीं, ए रूडी रीत पिछांणो रे॥ १९॥
इण अणुसारे किवाडीया उपर, दिष्टन्त छें रे अनेक।
कहि कहि नें कितराएक कहूं, समझों आंण ववेक रे॥ २०॥
कोइ कहे किवाड्यों कितोएक मोटो, तिणरो सूतर में नहीं उनमांन।
इणरो उनमांन तों जीतववहार सेती, थाप करसी बुधवांन रे॥ २१॥
हाथ सवा हाथ रे आसरें लांबो नें पेंहलो, एहवो बांध्यों उनमांन।
इण वात रो निश्चों केवली जांणें, उनमांन सूं जांणें बुधवांन॥ २२॥

ज्यूं साध साधवी रे पिछेवरी रो, पेंहली तीन हाथ उनमांन ।
पिण लांबी रो निकाल तों नही सूतर मे, पांच हाथ थापी बुधवांन रे ॥ २३ ॥
ज्यूं कवाडीया लांबा नें पेंहला री, आ पिण थाप करी छें तांम ।
ते निश्चों तों केवलग्यांनी जांणे, तिणरी खांच तणो नही कांम रे ॥ २४ ॥
कवाडीयो खोले आहार वेंहरावें, तिणमें कोइ दोष मत जांणो ।
कवाड कवाड्यो शरीषा नांहीं, हिवे तिणरों न्याय पिछांणों रे ॥ २५ ॥
कवाडीयो नहीं धरती लगतो, कवाडीयो तो उंचो जांणों ।
कोठा कोठी ने आलादिक में, तठे जीव रो नही ठिकांणों रे ॥ २६ ॥
कीडी मकोडादिक जीवां रो ठिकांणो, धरती उपर फिरता जांणो ।
आंमा साहमा फिरे भवलेटी खाता, तठे हिंसा तणो छे ठिकांणो रे ॥ २७ ॥
कमाड रो चूलीयो तो धरती उपर फिरे छें, तठें हिंसा तणों छे ठिकांणो ।
तिणसूं कवाड नें जडवो वरज्यो छें, तिम कवाड्यां नें मत जांणो रे ॥ २८ ॥
उंची तो कीड्यां चीगटादिक परसंगे, कीड्यांदिक री नाल वंधावे ।
पिण कवाड्यां रा चूलीया हेठें, चीगट किहांथी पावें रे ॥ २६ ॥
जो कवाडीया रो आहार टाले तिण ने, टालणा पडसी बोल अनेक ।
तिण अनुसारे तिण सरीषा कहूं छुं, ते सुणज्यो आंण ववेक रे ॥ ३० ॥
दही दूध री जावणी कोठा मासू काढे, साधु नें वेंहरावें आय ।
जो कवाडीया मा सूं आहार न लेवे, तिणने ए पिण न लेणा ताय रे ॥ ३१ ॥
घ्रत रो चाडों कोठा मा सूं काढे, साधु ने वेंहरावें आय ।
जो कवाडीया मा सूं आहार न लेवें, तिणने घी पिण न लेणो ताय रे ॥ ३२ ॥
कवाडीया री चूक ने चूलियां फिरीयां, आहार न वेहरे कांइ ।
तो जावणीयां रो तूंडो कोठा फिरीयां, दही ने दूध वेंहरणों नांही रे ॥ ३३ ॥
वले कोठा मांहे घी रा चाडा रो तूंडो, फेर नें बारे आंण वेंहरावे ।
कवाडीया रो चूलीयो फिरियां न लेवे, तो घी पिण न लेणो इण न्यावें रे ॥ ३४ ॥
इत्यादिक ठांम कवाडीया मांहे, त्यांरा तूंडा फेरी देवे ताय ।
कवाडीया रो आहार न लेवें, त्यांनें ओ पिण लेणो नही इण न्याय रे ॥ ३५ ॥
कोठी उपरला ठांम ने फेर वेहरावें, फेरें ठांम उपर ला ठांम ।
कवाड्या फेर्‌या रो आहार न लेवे, त्यांनें ओ पिण लेणो नही तांम रे ॥ ३६ ॥
केइ कहे कवाड्यो उघाड्यां, हिंसा तणी छें संक ।
इण लेखें तो तिण ने अनेक बोलां रों, किण विध करसी निसंक रे ॥ ३७ ॥
केइ वाइ भाइ चालेने वेंहरावे, केइ उभा ते वेस वेहराय ।
जूंआदिक री हिंसा री संका, ते संका कम कढाय रे ॥ ३८ ॥

किणही भाइ री पाग में धांन रो दांणों, उछल नें पडीयो आय।
तिणरा हाथ सूं वेंहरतां संका पडें तो, ते संका केम कढाय रे॥ ३९॥
खांडादिक वेंहरावें तिणमें, सचित्त री खबर न काय।
माहे धांन रा दांणा री संका पडें तो, ते संका केम कढाय रे॥ ४०॥
घ्रत री गोली मां सूं घ्रत वेंहरावें, तिणरें विच में फूलण होवें ताय।
ते वेंहरतां संका पडें साधू रे, ते संका केम कढाय रे॥ ४१॥
इम इत्यादिक अनेक वस्त में, संका पडें मन मांहि।
पिण ववहार में सुध हुवें तों, साधु वेंहर लेवें ताहि रे॥ ४२॥
तिम कवाड्यां रो ववहार सुध जांण नें, साधु वेंहरें छें तांम।
इण बात रों निश्चे तों केवली जांणें, खांच तणों नही कांम रे॥ ४३॥
जो कवाडीयां रा दोष री संका, तो इण लारें छें संका अनेक।
लारें संका कही ते सगली टालणी, समझों आंण ववेक रे॥ ४४॥
आगें लूंका नें ढूंढीया नीकलीया, जब तों हुंता वेंरागी विशेषों।
त्यां पिण कवाड्यो टाल्यों न दीसें, हीयें विमासी देखो रे॥ ४५॥
सुध साधु तों यांरो सरणों न लेवें, पिण सूतर में वरज्यो नांही।
जो कवाडीया रो दोष कहों छो, ते काढो सूतर रे मांहीं रे॥ ४६॥
सूतर मांहें तो मूल न वरज्यो, परम्परा मे पिण वरज्यो नांही।
तिण सुं जीत ववहार निरदोष थाप्यां री, संका म करों मन मांही रे॥ ४७॥
जो कवाडीयां री संका पडें तो, संका छें ठांम ठांम।
ते कहि कहि नें कितराएक केहूं, संका रा ठिकांणा तांम रे॥ ४८॥
साधु तो हिंसा रा ठिकांणा टालें, छदमस्थ तणें ववहार।
सुध ववहार चालतां जीव मर जाएं, तो विराधक नही छें लिगार रे॥ ४९॥
जिण जिण बोलां रो नीकालो नही छें, ते केवलीयां नें भलावों।
कवाडीया री तांण करेनें, मत कोइ झूठ लगावो रे॥ ५०॥
मोनें तो कवाड्यां रो दोष न भासें, जांणे नें, सुध ववहार।
जे निसंक दोष कवाड्यां मे जांणों, ते मत वहरजो लिगार रे॥ ५१॥
कवाड्या रो दोष कहे तिण उपर, जोड कीधी पादू मझारे।
संवत अठारें नें वरस चोपनें, वेंसाख विद दसम ने मंगल वारो रे॥ ५२॥

●

ढाल : १७

दुहा

केइ नांम धरावें साध रों, पिण पूरा मूढ अयांण।
त्यांरी ववेक विकल छे साधव्यां, ते पिण जिण मारग री अजांण ॥ १ ॥
त्यानें समझ नही त्यांरे वोलीये, कूडी करें बकरोल।
त्याने खबर नहीं त्यांरा वरतरी, करे रही करम किलोल ॥ २ ॥
सूध साधां ने उथापण भणी, उंधी कीधी परूपणा तांण।
तिण सूं उलटो उघाड हूओ आपरो, पडी गला ने आंण ॥ ३ ॥
इण रें वडा वडेरा आगे हूआ, दर पीढ्यां लग वाज्या साध।
इण सूतर अर्थ उंधा करे, कीया सगलां ने असाध ॥ ४ ॥
इण किण विध कीधी परूपणा, असाध ठहराया इण केम।
इण चोडे करी छे परूपणा, ते सांभलजो धर प्रेम ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या मे]

कठोतरी हाडादिक रा धोवण ने, दोय घडी तांइ कहे काचो पांणी।
एहवी परूपणा कीधी पांना वाचेने, निसंक थका कहे कर कर तांणी।
आ सरधा छे मूंढ मती री* ॥ १ ॥
तिण सू सावां ने धोवण पूछेने लेणों, दोय घडी तांइ धोवण काचो पांणी।
विण पूछ्या लीयो तिण काचों पांणी वेहर्‍यो, वले अरिहंत नी आगना लोपांणी ॥ आ० २ ॥
जे सूतर न्याय चाले छे तिणने, दोय घडी हूआ पछें वेहरणो धोवण।
पेहला वेहर्‍यों तिण तो काचो पाणी वेहर्‍यों, ते तो अरिहत री आगनारा खोवण ॥ ३ ॥
एहवी परूपणा कीधी तिणनें पूछ्यो, थे दोय घडी पहिली वेहरो के नांय।
जब निसक थका कह्यो म्हें तो वेहरां, ए उतकष्टा बाजे ने वहरो कांय ॥ ४ ॥
जब लोकां पूछ्यो थे किण लेखे वेहरो, सांप्रत जांणने काचो पांणी।
जब कहे म्हांरे वडा वडेरें वहर्‍यो, तिणसूं म्हे पिण वेंहरां त्यांरी परतीत आंणी ॥ ५ ॥
पिण धोवण तो निश्चेइ करने, दोय घडी तांइ काचो पांणी।
तिण सूं सुध साधांने वेहरणों नांही, एहवी अरिहंत बोली छे वांणी ॥ ६ ॥
म्हारें तो थेट सूं वेहरतां आवां, म्हां ढीला पड्या सांहमों ए क्यूं देखे।
म्हे तो आगना लोपी नें लोपी कहां छां, आं आगना लोपी किण लेखे ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ए कहें म्हें आगना मांहें चालां छां, तो एं जिन आगना स्हांमों क्यूं नहीं देखें।
दोय घडी तांइ धोवण काचो पांणी छें, तिण धोवण नें वेंहरें किण लेखें॥ ८॥
सुध साधां नें उथापण काजें, आप तणा वडेरां नें कांय विगोया।
दोय घडी धोवण नें काचो पांणी थापे, साधपणा सगलां रा खोया॥ ९॥
ज्यूं कोइ पेंला नें कुसवण करण नें, आपरो नाक काटे नें करे असमाध।
ज्यूं सुध साधां नें असाध थापणनें, आप री पीढीयां खप हुवां असाध॥ १०॥
काचो पांणी जांणे जांणे नित वहरें, वले साधपणा रो नांम धरावें।
एहवा भेषधारी भिष्ट भोला लोकां में, सुध साधां ज्यूं वंदावें पूजावें॥ ११॥
दोय घडी पेहली म्हें धोवण पीयां ते, काचों पांणी कहों ते तो वात न भूठी।
इम सांभल नें त्यांनें साध सरधें छें, त्यांरी हीया निलाड री दोनूंइ फूटी॥ १२॥
साध होय नें काचो पांणी वेहरी बूडा, वेंहरावण वाला पिण बूडा छे विशेष।
एं तों दोनूं जणां च्यार तीर्थ बारें छें, जों सांसों हुवें तो सूतर मांहें देखो।
आ सरधा श्री जिणवर भाषी*॥ १३॥
साधां नें काचो पांणी जांणेनें वेंहरायों, तिण श्रावक रो बारमों व्रत भागों।
साध पिण जांण वेंहरें काचो पांणी, ते तो निश्चें वरत विहूणा नागो॥ आ० १४॥
एहवी परूपणा कीधी तिण लेखें, इण रा वड वडेरा तो निश्चें नहीं साधो।
वले बावीस टोला रा साध वाजें छें, त्यांनें पिण दर पीढ्यां कीया असाध॥ १५॥
काचा पाणी रे संघटें तो आहार न वेंहरें, काचों पांणी रो जांणनें कर जाएं गटकों।
एहवाइ विकल साध वाजें लोकां में, त्यांनें विकल होसी ते करसी लटकों॥ १६॥
असुध आहार साधु नें अभष कह्यों छें, तिणमें सचित नें अभष कह्यों छें विशेषों।
भगोती गिनाता नें निरावलिका में, जो सांसो हुवें तों तीनूंइ सूतर देखों॥ १७॥
असुध आहार साधुनें अभष कह्यों छें, तिण मांहें संका नही छें लिगार।
जांण जांण असुध आहार अभष वेंहरें छें, ते तो नियमाइ निश्चें नहीं अणगार॥ १८॥
दोय घडी धोवण नें कह्यों काचो पांणी, साधां में दोष ढाकण नें चलायो भूठों।
काचो पाणी कहे नें पीता जाएं, त्यांरों साधपणों तो जाबक गयो उठों॥ १९॥
धोवण नें दोय घडी काचो पांणी जांणें, ते तो भूठा थका करें फेंन फितूरों।
तेहीज पांणी पोंतें जांण पीयें, त्यांरा संजम सरधा मे पड गइ धूरो॥ २०॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ढाल : १८

दुहा

केइ नांव धराव साध साधवी, पिण उभ्रड चलीया जाय।
उंधी उंधी करें छें परूपणा, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ १ ॥

ढाल

[साधु मत जाणो इण चलगत सु]

कहे सुध साधां ने आहार वहरणो, तीजा पोहर मझार जी।
जे च्यांरू पोहरमें करे गोचरी, ते श्रीजिण आग्या बार जी।
आ सरधा छे मूंढ मत्यां री* ॥ १ ॥

तिण मूढमती ने पूछा कीधी, थे साधु नांव धराय जी।
थे च्यारू पोहर मे करो गोचरी, ते किण लेखे किण न्याय जी ॥ २ ॥
जब कहे म्हे तो जिण आग्या बारे, ओ दोषण छे म्हारे मांय जी।
एं उतकष्टा होय दोषण कांय सेवें, वले आग्या लोपी कांय जी ॥ ३ ॥
तीजें पोंहरे गोचरी थापें, साधां ने उथापण काज जी।
त्यांरे उलटी आय पडी गलामें, त्यां छोडी संजम लाज जी ॥ ४ ॥
तीजे पोहरे गोचरी थापे, करे च्यारूं पोहर मझार जी।
वले मुख सूं कहे म्हें आग्यां लोपी, त्याने कुण कहसी अणगार जी ॥ ५ ॥
तीजे पोहरे गोचरी थापें, करे च्यारूं पोहर मझार जी।
ते पेटभरा उघाडा दीसे, ध्रिग त्यांरो जमवार जी ॥ ६ ॥
च्यारूं पोहर तणी गोचरी साध ने, कहि दीधी श्रीजिण आप जी।
ते वीर वचन उथाप्यो त्यांरें, उदे हुआ छे पाप जी ॥ ७ ॥
साधु च्यांर पोहर में करें गोचरी, त्यांरो झूठो करें फितूर जी।
पोतें च्यारूं पोहर में करें गोचरी, त्यांरा साध पणामे धूर जी ॥ ८ ॥
कहे सुध साधां ने एकण दिनमें, आहार करणो एक वार जी।
दोय नें तीन वार आहार करे ते, श्री जिण आग्या बार जी ॥ ९ ॥
जब लोकां इणनें प्रश्न पूछ्यों, थे एकण दिन मझार जी।
थे कितरी विरीयां आहार करो छो, ए उत्तर दो इण वार जी ॥ १० ॥
जब कह दीयों म्हें एकण दिन में, आहार करां घणी वार जी।
म्हे चोडे कहां जिण आग्या लोपी, दोष सेवे करां म्हे आहार जी ॥ ११ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

पिण एंतो कहें म्हें उतकष्टां छां, जिण आग्या रा पालण हार जी।
तो एं आग्यां लोप दोषण कांय सेवें, कांय करें घणी वार आहार जी॥ १२॥
म्हें तो दर पीढ्यां लग करता आया, च्यारूं पोहर में आहार जी।
एक दोय विरीयां रो कारण नांहीं, म्हांरो तो ओहीज आचार जी॥ १३॥
इण रें लेखे इण री दर पीढ्यां में, साध हुवो नहीं एक जी।
त्यां पिण असणादिक एकण दिन में, कीयों वार अनेक जी॥ १४॥
जो भगवंत कह्यों हुवें सुध साधां नें, बीजी वार न करणो आहार जी।
अनेक वीरीयां आहार करें छे, त्यांनें कुण कहिसी अणगार जी॥ १५॥
एकवार साधनें आहार परूपें, तिण चोडे चलायों कूड जी।
आप तो आहार करें बहु वीरीयां, तिण रा साधपणां में धूर जी॥ १६॥
साध नें आहार छ कारणां करणों, कारण विण करणों नांहि जी।
एक दोय वार रो नांम न चाल्यों, जोवो सूतर रे मांहि जी॥ १७॥
कहे नितको साध नें आहार न करणों, करें ते आग्या बार जी।
जब उण नें पूछ्यो थें कांय करो नित, असणादिक च्यारूं आहार जी॥ १८॥
जब कह्यो म्हें तों जिण आग्या लोपी, ओ दोषण छे म्हांरें मांय जी।
एं उतकष्टा वाज दोषण कांय सेवें, जिण आग्या लोपी कांय जी॥ १९॥
म्हें तो दर पीढ्यां लग खाता आवां छां, नितरा नित च्यारूं आहार जी।
वले कह दियों चोडें लोकां में, म्हें तो जिण-आगन्यां बार जी॥ २०॥
तीजा पोंहर टाल गोचरी न करणी, एक टक विण न करें आहार जी।
वले नित रो नित आहार नहीं करणो, ओ साध तणों आचार जी॥ २१॥
म्हें कहां म्हें तों पूरों नहीं पालां, म्हें तों पालां जिसों फल होय जी।
इसी कहे नें पलो छुडावें, पिण भोलां खबर न कोय जी॥ २२॥
उंधी सरधा भेष धार्‌यां नी परगट कीधी, सिरियारी सहर मझार जी।
संवत अठारें वरस एकावने, काती विद चवदस बुधवार जी॥ २३॥

ढाल : १६

दुहा

भेषधारी भागल भिष्टी थया, त्यासूं पले नही आचार।
ते ववेक विकल सुध बुध विना, ते बोले नही मूंढ विचार॥ १ ॥
वधोतर देखे जिण धर्म री, जब लागें अभितर लाय।
जब कूडा कूडा आल दे साधां भणी, पछे लोकां माहें देवें फेंलाय॥ २ ॥
पोते तो हूआ ठाला ठीकरा, पांचूं महाव्रत दीया छें बोलाय।
धीग होय बेंठा छें बाबा तणा, त्यांरे भूठ री सूग न काय॥ ३ ॥
मत विखरतों देखे आप रो, फिरता देखें श्रावकां नें ताय।
तिणसुं छल छिदर जोवे साधां तणा, आल देवण रो करें छें उपाय॥ ४ ॥
जस कीरत देखे साधां तणी, त्यांसूं ए दुख सह्यों रे न जाय।
तिण सूं आल दीयो अन्हारवी थकें, ते सुणजों चित ल्याय॥ ५ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या में]

मेंला चीगटा कपडा मेह तां भीना, तिण में ज्यां लग सचित्त तणी हुवें संक।
तिण संका सहीत साधु कपडों नीचोवें, तिण साधु नें दोष लागें छें निसंक।
भेषधारी तो आल देता नहीं संके*॥ १ ॥
भूठ बोलण री त्यांरें सूग नही छें, ते जेंन तणा विगडायल गेरी।
ते नरक निगोद तणा होय बेंठा, सुध साधां तणो छें अंतरंग वेरी॥ २ ॥
मेंला चीगटा कपडा मेह सूं भीना, तिण मे सचित री संका न हुवें लिगार।
तिण कपडा ने निसंक निचोवें साधू, तिण में दोष वतावे छे मूंड गिवार॥ ३ ॥
संका रहीत कपडा नें साध नीचोवें, त्यांरा पांचोइ महाव्रत कहें छें भागा।
केई भेषधारी तो इसडी परूपें, ते तों समकत विरत बिहूणा नागा॥ ४ ॥
पांणी सचित हूवो अथवा अचित पांणी हुवों, साधु नें कपडो नीचोवणो नांहीं।
नीचोयां साधपणा रो खेरोइ न रहें, इण सूं इधिको आकार्य नही छें कांई॥ ५ ॥
म्हांरा बावीस टोला मांहे विगडायल, ते पिण कपडो नही नीचोवें।
एहवी उंधी परूंपणा कर कर पापी, भोला लोकां नें निसंक डबोवे॥ ६ ॥
किणही ववेक रें विकल आय कह्यों जब, तिणरो तो पूरों न काढें निकालों।
अंतरंग धेष रो घालीयो पापी, सुध साधां नें दीयो अणहूंतो आलो॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

बावीस टोला कहें छें तिणमें, ढीला में ढीलों टोलों विशेप।
तिण टोला तणा टाणोकड भिष्टी, आप रा किरतव स्हांमों मूल न देखें ॥ ८ ॥
आप रो मत थापण मूढ मिथ्याती, सुध साधां ने दीयों अणहूंतों आलो।
तिण रा श्रावकां पासें बकें दिन राते, ते पिण साच नें भूठ रो न काढें निकालो ॥ ९ ॥
इण भूठाबोलां री बात मांने छें, ते पिण तिण करे जावक बूडा।
तिण भूठाबोलां री पषपात करसी, ते पिण चिहूं गति मांहे दीससी भूंडा ॥ १० ॥
मेंमंत वरसात मंडीयों तिण काले, मेंला चीगटा कपडा भीना राखें जांण।
तिण मांहे तो नीलण फूलण रा जीव, समें समें अनंता उपजें छें आंण ॥ ११ ॥
सरदी मिटें नही तठा तांइ कपडा में, समें २ अनंता उपजें छें तांम।
समें समें पिण विणसें छें अनंता, निरंतर मंडीयों रहें संग्राम ॥ १२ ॥
पांणी अचित्त हूआ कपडो नही नीचोवें, तो अनंत जीवां री हिंस्या साधु नें लागें।
तिण हिंसारा पाप थकी साध रें, पेंहलो माहाव्रत निश्चेंइ भागें ॥ १३ ॥
पहिलों महाव्रत राखण रें तांइ, पांणी अचित्त हुआ साधु कपडों नीचोवें।
तिण मांहें दोप कहें छें अग्यांनी, साधां नें आल देइ नें आत्मा डबोवें ॥ १४ ॥
अचित्त पांणी हूआं साध कपडों नीचोवें, तिण मांहें दोष कहें छे पापंडी।
ते ववेक तणो विकल छें मूर्ख, तिण भेषलइ आत्मा नें भंडी ॥ १५ ॥
अचित पांणी हूआं पछें कपडों नीचोवें, तिणमें दोष कहें छें मूढ मिथ्याती।
ते जिण मारग रा अजांण अग्यांनी, तिण विकलां री अकल रही छें जाती ॥ १६ ॥
अचित्त पांणी हूआं पछें कपडों नीचोवें, तिणमें दोष कहें तिण री भिष्ट छें बुध।
तिण ववेक रा विकल नें साध सरधें छें, त्यांमें पिण काइ म जांणजो सुध ॥ १७ ॥
अचित्त पांणी हूआं पछें कपडो नीचोवें, तिण मांहें तो दोष माठी मत रों जांणें।
तिण जीवां री दया तों ओलखी नांही, पीपल बांधी मूर्ख जिम तांणें ॥ १८ ॥
अचित्त पांणी हूवां पछें कपडों नीचोवें, त्यांरा पांचोइ माहावरत कहें छें भागा।
ते सुनें चित्त हीयाफूट ज्यूं बोलें, ते विरत विहूणा कहीजें नागा ॥ १९ ॥
एहवो आल अन्हाखी साधां नें दीधो, ते निश्चेंइ बूड गयों कालीधार।
कदा टांकों भलें इण आल दीयां थी, तो पाधरो जाए नरक निगोद मभार ॥ २० ॥
एहवों आलदेइ लोकां में फेंलायों, तिण दुष्टी रे संसार दीसें छें जादा।
तिणरा सेवग सुण सुण हरष हूआ छें, जांणें पगां रें गूगरा बांधा ॥ २१ ॥
आल देणवाला नें हरखणवाला, साराइ कर्म तणा पूंज बांधें।
ते हीयाफूट गधां रा साथी, त्यां श्री जिण धर्म न ओलख्यों आंधें ॥ २२ ॥
भेषधारी आल अणहूंतों दीधों, अणहूंताइ माहावरत साधां रा उडाया।
इण लेखें उण नें इतरो प्राछित आवें, कह्यों छे वेतकल्प नें ठांणाअंग मांहि ॥ २३ ॥

उणमे साधपणो तो आगेंइ न दीसें, पिण सावां नें आल दीयों छें अन्हाखी।
पिण उणरें लेखे उण ने साधपणो आवे, ठांणाअंग ने वृहतकल्प छें साखी॥ २४॥
तिणने साधपणों फेर दीधां विनाई, इण सूं केइ भेलो करसी आहार।
एहवा प्राछित रो गाला गोलो करे त्यांमें, साधपणा रो खेरो न दीसें लिगार॥ २५॥
जिण टोला मे दसमो प्राछित सेव्यो, अकार्य अकार्य हूआ विशेषें।
एहवा पिण प्रायछित गउ कर बेठा, ते तो प्राछित लेसी किण लेखें॥ २६॥
अचित पांणी हूआं पछें कपडा नीचोवे, त्यांरा पांचोइ महावरत भागा ठेहराया।
तिण तीनोइ कालना रखेसरां नां, पांचोंइ माहावरत जाबक उडाया॥ २७॥
अचित्त पाणी हूवा निसंक सूं सावां, कपडा ने नीचोया छें गयें कालो।
वले आगमीयें काल साध कपडा नीचोसी, त्यां सगला ने दुष्टी दीयों छे आलो॥ २८॥
अचित्त पांणी हूआं कपडा नही नीचोवे, तो नीलण फूलण रा जीव अनंता रों घाती।
आ पिण समझ नही विकलां ने, ते हीयाफूट गधां रा साथी॥ २६॥
अचित्त पांणी हूआ कपडा नही नीचोवें, भीनो राखें ते कारण कांइ।
नीचोयां थकां पाप किसो लागे छे, ओ पिण विकलां रे निरणों छे नांही॥ ३०॥
साधु तो पाप अठारेइ त्याग्या, चोखी छें त्यांरी सुमत ने गुपती।
अचित्त पांणी हूआं पछे कपडा नीचोवें, त्यांनें पाप कठा सूं लागे रे कुमती॥ ३१॥
अचित्त पांणी हूआं सावां कपडों नीचोवे, त्यारो साधपणों पापी कहें छे भागों।
तो पाप अठारे जिण कह्यां तांमें, ते किसों पाप साधां ने लागो॥ ३२॥
पांणी सचित्त हूवो अथवा अचित्त पाणी छे, पिण सावां ने कपडो नीचोवणों नांही।
माहें नीलण उपजो भावे फूलण उपजो, तिणरो साधु ने पाप न लागें कांई॥ ३३॥
नीलण फूलण सहीत कपडो सूके जब, साधू नें कपडा ने लगावणो हाथ।
अचित्त पांणी हूओ छे तोही कपडा ने, साधू ने नीचोवणो नहीं अंसमात॥ ३४॥
अचित्त पांणी हूआं पछें कपडो नीचोवें, ते नीचोवणो किण ही सुतर में न चाल्यों।
इम कहि कहि अग्यांनी भोला लोकां रे, हीया में घोचो अणहूंतों घाल्यो॥ ३५॥
जब तो वरस तो मेह उभो रह्यां पछें, पांणी वहे छे बजार रे मांहि।
जब तो तिण पांणी में पग नहीं देणों, ओ पिण सुतर में चाल्यों नांही॥ ३६॥
ग्रहस्थ रे घरे धोवण रो कूंडो भस्यो छे, काचो पांणी घाल्यों तिण धोवण मांहीं।
तिण लेखे तों धोवण नही वहरणो, ओ पिण सुतर में चाल्यो नांही॥ ३७॥
दूव दही चास आदि अनेक दरब छे, काचों पांणी घाल्यो छें त्यां मांही।
तिण लेखें या दरबां ने वहरणो नांहीं, ओ पिण सुतर में चाल्यों नांहीं॥ ३८॥
इम प्रस्न पूछ्यां रा जाब न आवें, जब तो कहे म्हें तो अचित हुआं ल्या छों।
तो अचित्त पांणी हूआं पछे कपडो नीचोयों, तिणमें दोष कहें आल किण लेखेंचो छो॥ ३६॥

अचित्त पांणी हूआं पछें कपडों नीचोयों, त्यांनें कहो थें सुतर में काढ दिखावो।
तो थे पिण पाछे बोल कह्या त्यांरों, सुतर मांसूं काढ बतावो ॥ ४० ॥
अचित्त पांणी हुआं कपडो नीचोयों तिणमें, दोस कहें त्यांरे पूरों अंधारो।
तिण साधपणों ओलखीयें न दीसें, भेष पहर नें आत्म कीधी खुवारो ॥ ४१ ॥
पातरा माहे दूध दही चास धोवण, तिण मांहे काचों पांणी पडीयो छें आयों।
त्यांनें तो खाता पीता नहीं संकें, तो कपडों नीचोयां दोष कह्यो किण न्यायों ॥ ४२ ॥
गोचरी करतां छांट पूंहरा आया, जब उभा रहें ग्रहस्थ रा घर माह्यो।
तो अचित पांणी हूआं पछें कपडों नीचोवें, तिण माहे दोष कह्यो किण न्यायों ॥ ४३ ॥
अचित पांणी हुआं पछें कपडो नीचोयो, तिणमें दोष कहें छें ते बोलें छें उंधा।
अण विचार्या आल पाषंडीयां दीधो, ते भारीकमाँ किम बोलसी सूधा ॥ ४४ ॥
अचित्त पांणी हूआं पछें कपडों नीचोयों, तिणमें दोष कहें मूंढ विना विचारों।
त्यांनें वांदें पूजें सुध साध जांणेने, त्यांरें पिण जाणजों पूरों अंधारो ॥ ४५ ॥
इण भूठाबोलां री परतीत न करणी, ओं तों कायों हूओ कहि दे काचो पांणी।
तिण पूछ्या रा जाब न आवे पूरा, जब थोडां में बोलें फिरती वांणी ॥ ४६ ॥
इण भूठाबोलां री परतीत करसी, ते भव २ मांहे घणा पिछतासी।
न्याय निरणा विना आल साधां नें देसी, ते नरक निगोद में भीका खासी ॥ ४७ ॥
मेंला चीगटा कपडा मेह सूं भीना, पांणी अचित्त हुआंइ नीचोवणों नांहीं।
तिणमें नीलण फूलणादिक कंथूआ उपजें, तिणरो साधू ने पाप न लागो कांइ ॥ ४८ ॥
दोय च्यार महीना तिण कपडा माहें, नीलण फूलणादिक जीव उपजें आय।
जीव उपजें तो नचित सूं उपजों, पिण कपडा ने नीचोवणों नही ताय ॥ ४९ ॥
मेंला चीगटा कपडा मेह सू भीना, पोहर हुवें तथा आधीरात।
तो पिण कपडा ने भीनों राखणों, पिण नीचोवणा नही अंसमात ॥ ५० ॥
अचित्त पांणी हूआं पछे कपडो नीचोवे, तिण में दोष कहे छें मतहीण भिष्टी।
इतरी पिण ओलखणा नही तिणनें, निश्चेंइ साध न जांणें समदिष्टी ॥ ५१ ॥
अचित्त पांणी हूआं पछें कपडो नीचोवेणो, ते ओलखायो पुर सहर मभार।
समत अठारें सतावने वरसें, आसोज विद नवमी नें सुकरवार ॥ ५२ ॥

ढाल : २०

दुहा

केइ भेषधारी सुध बुध विना, बोले नही वचन विचार।
कहे हिवडा आरो छे पांचमो, पूरों पले नहीं आचार ॥ १ ॥
म्हे दोष सेवां छा भारी २ जांण ने, तिणरो प्रायछित्त पिण न ल्यां तिलमात।
तो पिण म्हे सुध साध छां, प्रसिद्ध लोक विख्यात ॥ २ ॥
म्हे बाजार में परठां मातरो, तिणरों चोमासी प्राछित साख्यात।
ते म्हे परठ्यों परठां परठसां, तिणरो प्राछित न ल्यां अंसमात ॥ ३ ॥
कोइ आवें नही ने देखे नही, तठे मातरो परठणों विचार।
ते म्हे परठा छा लोकां देखता, तिणरो प्राछित नही ल्यां लिगार ॥ ४ ॥
इत्यादिक दोष अनेक छे, ते पिण सेवां छा वारूंवार।
ते म्हे दोष सेवां छां जांण २ ने, तिणरो प्राछित नही ल्यां लिगार ॥ ५ ॥
बाजार में परठां छां मातरो, भारी दोष जांणे तिण मांय।
तिण लेखे त्यांमें साधपणो नही, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[भ० जिण आग्या०]

दस पांच वार एकण दिन मांहे, मातरों परठे बाजार मांय।
यांरी सरधा रे लेखे जिती वार परठे, जितरा चोमासी प्रायछित आय रे।
भवीयण जोवो हिरदय विचारी, थे काय करों आत्म भारी रे।
भवीयण सूत्र जोय करो निसतारी* ॥ १ ॥
एक दिन मातरो परठे तिणरो, चोमासी प्रायछित आवे।
इण लेखे एक दिन रा मातरा परठण मे, अनेक दिनां रो साधपणो जावे रे ॥ २ ॥
तो ए नित २ अनेक चोमासी रो प्राछित, जाण २ सेवे दिन रात।
इण लेखे तो यामे साधपणा री, बाकी रह्यो नही असमात रे ॥ ३ ॥
इण बिचे तो अनेक भारी २ दोष, नित २ सेवे छे ताहि।
यारो साधपणों वहि गयो जाबक, मातरा परठण रा दोष मांहि रे ॥ ४ ॥
यां मातरा परठण मे दोष बतायों, तिण लेखें त्यां साधपणों खोयो।
तो बीजा भारी २ दोषां रो प्रायछित्त, त्यांरी तिथ न करणी कोयों रे ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

एक पइसा रा लेंणायत आगें, देवालों कांढे दीयों नागें।
जब भारी २ वोहरा हुता ते, तिण पासे आयनें कांइ मागे रे॥ ६॥
तो एक मातरों परठें बाजार में तिणरों, यांहीज दोष अणहूंतो बतायो।
इण लेखें तो यांहीज यांरो साधपणों, अभारे धूएं जाबक उडायो रे॥ ७॥
साधां नें दोषीला थापण नें, आपरोंइ साधपणों गमायो।
बाजार में मातरो परठण रो, अणहूंतो दोष बतायो रे॥ ८॥
कोइ पेंला नें कुसावण करवा, आपरो नाक देवें कटाय।
ज्यूं ए साधां नें दोषीला थापण, आप दोषीला होय जाय रे॥ ९॥
यांरा वडवडेरा आगें हुआ त्यां, मातरों परठ्यों बाजार माह्यो।
तिण मांहें चोमासी दोष बताए, यांरा बडां नें दीया उडायो रे॥ १०॥
यांरा बडा बडेरा आगें हूआ ते, ओं तो दोष किणही न बतायो।
बाजार मांहें मातरा परठण रों, ओं तो यांहीज दोष बतायो रे॥ ११॥
साधु तो बाजार में मातरो परठें, घणा लोकां देखंता ताहि।
तिण मांहें दोष अणहूंतों बतायो, तिण रो मूढ न जांणें न्यायो रे॥ १२॥
उच्चार पासवण परठण रों प्राछित कह्यों ते, उच्चार आश्री प्राछित्त जांणों।
पासवण परठ्यां रो प्राछित नही छें, तिणनें रूडी रीत पिछांणों रे॥ १३॥
पासवण तो कही छें उच्चार रें सहचर, एकली पासवण कही छें नाही।
तिणरों निरणों कहूं छूं नसीत सूतर सूं, ते विचार करे देखों मन मांही रे॥ १४॥
नसीत सूतर रे चोथें उदेशें, उचारपासवण परठ्यां पछे सुच करणों।
कह्यो छें उचार रों असुच टालण नें, तिणरो बुधवंत कीजो निरणों रे॥ १५॥
उचारपासवण परठीयां पछें, कपडा सूं लूहें नांही।
तिणनें मासीक प्रायछित आवें, नसीत सूतर रे मांही रे॥ १६॥
उचारपासवण परठीयां पछें, लकडी नें वांस तण खपाट।
वले आंगुली ने सिलका करी लूहें, तिणनें मासीक प्राछित रो पाठ रे॥ १७॥
कपडा सूं लूहणों चाल्यो, लकडादिक सूं लूहणो नांही।
ते पिण उचार आश्री कह्यों छें, पासवण रो लूहसी कांइ रे॥ १८॥
उचारपासवण परठीयां पछें, सुच नहीं लेवें ताय।
असुच तणों लेप लागों राखें, तिणनें मासीक प्रायछित आय रे॥ १९॥
लेप टालणों कह्यों छें सुच लेइ नें, ते तों उचार आश्री छें तांम।
पासवण तो पोतेंइज सुच छें, इणरो सुच तणों कांइ कांम रे॥ २०॥
उचारपासवण परठीयां पछें, तिण उपर सुच लेवें ताहि।
तिणनें मासीक प्राछित कह्यों छें, नसीत सूतर रे मांहि रे॥ २१॥

उचारपासवण परठीयां पछे, तिहांइज सुच लेवणो नांही।
ते पिण उचार उपर लेणो वरज्यो, अठे पासवण रों कांम कांइ रे॥ २२॥
उचारपासवण परठीयां पछे, सुच लेवे घणों अलगो जाय।
तिणनें पिण मासीक प्रायछित आवे, ते पिण उचार आश्री छें ताहि रे॥ २३॥
उचारपासवण परठीयां पछें, सुच लेणो कह्यो जिणराय।
तीन पुसली सूं पाणी इधको लेवे, तिणने मासीक प्रायचित्त आय रे॥ २४॥
तीन पुसली सूं सुच लेणो चाल्यो छें, उचार आश्री कह्यो छे तांम।
पासवण तों पोतेंइ सुच छे, पासवण ने सुच रो नही कांम रे॥ २५॥
इतरा तो बोल नसीत में चाल्या, चोथा उदेसा मांहि।
वले चोमासी प्राछित रा बोल अनेक, पनरमे उदेशें छें ताहि रे॥ २६॥
कोइ आवे नहीं वले देखें नही, तिहां परठणों कह्यो जिणराय।
उत्तराधेन चोवीस में धेने, तिणरो पिण न जांण्यो न्याय रे॥ २७॥
उचारपासवण तो लघू बडी नीत, खेल ते मुख नो वलखों जाणो।
संघाण ते नाक नो छे सलेषम, जल ते मेल लीजों पिछांणो रे॥ २८॥
आहार ते असणादिक च्यारूं, उपधि ते सारा उपगरण जांणो।
देह सरीर जीव सूं रहीत हूवो ते, इत्यादिक दरव अनेक पिछांणो रे॥ २९॥
यांमें तथाविध छे परठवा जोग, सुध थडले परठणा तांम।
जेणा ने उपयोग सहीत सूं, राखेने सुध परिणाम रे॥ ३०॥
कोइ आवे नही वले देखे नाही, तिहां परठणो कह्यों जिणराय।
तिणमे किणही एक दरब आश्री कह्यों छे, उचारपासवण रे न्याय रे॥ ३१॥
ज्यूं मिनष में उपीयोग वारे कह्या छे, पिण एकण मे वारें छे नांही।
ज्यूं समचे कह्यों आवे देखे नांही, तिहां परठण री विध जांणजों यांही रे॥ ३२॥
कोइ आवे नहीं वले देखें नही तिहां, सरीरादिक परठणो जाय।
तिण सग्रह शब्द में सगला कह्या पिण, सगला नही छे ताय रे॥ ३३॥
आहार उपधि गृहस्थ रे कांम आवे छे, तिण देखतां परठणों नांही।
अथवा तिण देख्यां हेला निंद्या हुवें, ते विचार करणों मन मांही रे॥ ३४॥
जब कोइ कहे ग्रहस्थ देखतां, परठणो नही लिगारो।
उत्तरावेन मे सगलो वरज्यो छे, ओ देखलो पाठ उघाडो रे॥ ३५॥
इम कहे तिणनें ग्रहस्थ देखतां, काजो पिण परठणो नांही।
पग पूजें नें रज दूर न करणी, राखादिक नही परठणी कांइ रे॥ ३६॥
पांणी नीतारीया पछें लारलो गरदो, ते पिण देखता परठणो नांही।
भोलो लूहणों गलणो धोया पछे, धोवण देखतां परठणो नही कांई रे॥ ३७॥

वधे धोवण पांणी पीतां बधें तों, ते पिण देखतां परठणों नांहीं।
वले फूफदांदिक नें सरीर मेंल, देखतां नहीं परठणो कांइ रे॥ ३८॥
देखतां नहीं धोवण खोलीयादिक नें, पगादिक पिण धोवणा नांही।
गोबरादि पगां रे लागों हुवें तो, देखतां अलगो करणों नहीं त्यांही रे॥ ३९॥
भाठो ढलीयों बगदो नें रेत, ए पिण देखतां परठणा नांही।
वले खेल संघाण नें मातरादिक, देखतां परठणो नहीं कांइ रे॥ ४०॥
जो सगला दरब देखतां वरज्या छें, तों ए परठें छे किण लेखे।
त्यांरी अभितर आंख हीयारी फूटी, पोतें बोल्या री पोतें न देखें रे॥ ४१॥
जब तों कहें म्हे दोष जाणे नें सेवां, तिण सूं देखतां परठां छा ताय।
पिण ए सुध साध बाजें लोकां में, ते दोष सेवें किण न्याय रे॥ ४२॥
इम कहे नें अग्यानी पार होय जावें, साधां नें उथापण विशेषें।
परठण रो दोष अणहूतो बतावें, पिण सूतर साह्मों न देखें रे॥ ४३॥
साधां ने दोषीला थापण, पोतें पिण दोषीला जाय।
आपरो साधपणो जाबक उठें छे, तिणरी खबर न काय रे॥ ४४॥
पिण एंतों अनेक दरब देखतां परठे, एक दिन माहें वार अनेक।
वले साधपणां रो नांव धरावें, ते बूडे छे विनां ववेक रे॥ ४५॥
ओर तो भारी भारी दोष अनेक, सेवें छे दिनरात।
पिण यां परठण रो दोष बतायो तिणमें, साधपणों न रह्यो अंस मात रे॥ ४६॥
अंग उपंग उघाडा करनें, उचार परठणो एकंत जाय।
तिहां आवे नहीं देखे नहीं ग्रहस्थ, तो निंद्या लोकां में न थाय रे॥ ४७॥
आहार सुखडी खादिम सादिम घणा हुवें, ते पिण देखतां परठणों नाही।
ते असणादिक ग्रहस्थ रें कांम आवें, वले निंद्या पामें लोका मांही रे॥ ४८॥
उपधि कपडादिक घणा हुवें तों, लोकां देखतां परठणों नांही।
ए पिण ग्रहस्थ रें कांम आवें छे, वले निंदा पामें लोकां मांही रे॥ ४९॥
जीव रहीत सरीर हुवे जब, ते पिण देखतां परठणों नाही।
ते एकंत जायगा नहीं परठें तो, हेला निंद्या पांमें लोकां मांही रे॥ ५०॥
त्यामें केइ दरब तो मारग मांहे परठ्यां, बेइन्द्रीयादिक आवें साख्यात।
तिण सूं मारग टाले नें एकंत परठे, तो टलें जीवां री घात रे॥ ५१॥
जे जे दरब देखतां परठ्यां, ग्रहस्थ रे कांम नावें कांइ।
वले हेला निंदा अजेंणा न हुवें तो, देखतां परठ्यां दोष छे नांही रे॥ ५२॥
असणादिक सीतमात्र खारा खेरों, उपगरणादि अंसमात।
ते अजेंणा निंद्या टालनें देखतां परठ्या, तिणमें दोष नही तिलमात रे॥ ५३॥

दस दोष रहीत षेत्र हुवे तिहां, परठणो रूडी रीत जांण।
सगला बोला रो षेत्र समचे कह्यो छे, तिण री बुधवंत करजों पिछांण रे॥ ५४॥
आवे नही वले देखे नांही, संजम प्रवचन विरावीजें नांही।
वले उची नीची भूम नही हुवें, त्रिणा पत्रादिक नहीं त्यांही रे॥ ५५॥
थोडा कालनों अचित थडलों हुवे, विसतीरण कही जगनाथ।
च्यार आंगुल कही अचित उपरली, गांमादिक थी दूर विख्यात रे॥ ५६॥
बिल उंदरादिक नही रूंधाइ, तस प्रांण बीजादिक रहीत।
दस बोल कह्या छे समचे दरबां रा, ज्यूं उचार पासवण री रीते रे॥ ५७॥
पिण सगलाइ दरब परठण रे उपर, दस दस बोल कह्या छे नांहीं।
कोइ चतुर विचषण डाहा हुवें, ते, विचार करो मन मांही रे॥ ५८॥
तीन च्यार मारग भेला हुवे तिण ठांमें, वले मझ बाजार रे मांही।
तिण ठामें साध ने उतरणो चाल्यो, ते क्यूं मातरो परठसी नाही॥ ५९॥
मातरा ने ओर दरब परठण री, विध ओलखाइ पुर सहर मझार।
संवत अठारे सतावनें वरसे, आसोज सुद तेरस मंगलवार रे॥ ६०॥

ढाल : २१

दुहा

भिष्ट भागल विकल हूआ तके, करें असुध वेंहरण री थाप।
चोर ज्यूं असुत्र अर्थ हरता, थोथा करें अग्यांनी विलाप ॥ १ ॥
किहांइक पाठ छे सूतर में, तिणरो न्याय नेलै नहीं मूंढ।
साधां नें असुध वेंहरावीयां धर्म कहें, एहवी करें अग्यांनी रूढ ॥ २ ॥
साधां नें असुध वेंहरावीयां, तिणमें धर्म नहीं अंसमात।
धर्म कहें असुध वेंहरावीयां, तिणरा घट में घोर मिथ्यात ॥ ३ ॥
च्यार आहार सचित नें असूझता, श्रावक वेंहरावें जांण जांण।
तिणमें पाप अल्प बहोत निरजरा, एहवी करें अग्यांनी तांण ॥ ४ ॥
ए पाठ भगोती सूतर मझे, गतक आत्मा मांय।
तिणरो अर्थ करणवालो पिण डरपीयो, तिण केवलीयां नें दीयो भलाय ॥ ५ ॥
छदमस्थ अर्थ करे इहां, तिणरो केवली जांणे न्याय।
कल्प कोइ बुधवंत हुवै थकी, ढनमांन थी देवें बताय ॥ ६ ॥
जांग अफासु थापीयां, वीर वचन विगडाय।
सूतर सूं पिण मिलें नहीं, ते प्रतख दीसें अन्याय ॥ ७ ॥
साध नें सचित नें असुध दीयां, कहें बोहत निरजरा अल्प पाप।
विण उंधी सरधा रों निरणों कहूं, ते सुणजों चुपचाप ॥ ८ ॥

ढाल

[आ अनुकम्पा जिण आगन्या में]

अफासु आहार नें सचित कह्यों जिण, अणसणीजेंण ते असूझतो थावें।
ते साधां नें श्रावक जांगे वेंहरावे, तिणरें अल्प पाप नें बोहत निरजरा बतावें।
असुध वहरण री थाप करे ते अग्यांनी, तथा असुध वेंहरण री थाप करों मत कोइ* ॥ १ ॥
कोरो अन सचित्त नें असूझतों छें, ते साधां नें श्रावक जांण वेंहरावें।
तिणमें जिण मारग रा अजांण अग्यांनी, तिणरें अल्प पाप नें बोहत निरजरा बतावें ॥ २ ॥
काचो पांणी सचित्त नें असूझतो छें, ते साधां नें श्रावक जांण वेंहरावें।
तिणमें जिण मारग रा अजांण अग्यांनी, अल्प पाप नें बोहत निरजरा बतावें ॥ ३ ॥
काचा फल दाडमादिक असूझता छें, ते साधां नें श्रावक जांण वेंहरावें।
तिण दीधां में मूढ मिथ्याती जीवडा, अल्प तो पाप नें बहोत निरजरा बतावें ॥ ४ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सचित्त पांन डोडादिक असुझता छैं, ते साधां नें श्रावक जांणे वेंहरावे।
तिण दीधां मे मूंढ मिथ्याती जीव, अल्प तो पाप ने बोहत निरजरा वतावे ॥ ५ ॥
च्यारूं आहार सचित्त नें असुझता छैं, ते साधांनें श्रावक जांणे वेहरावे।
तिण दीधां में मूंढ मिथ्याती जीव, तिणनें अल्प पाप ने बोहत निरजरा वतावे ॥ ६ ॥
साधानें आहार सचित्त ने असुध वेहरावें, तिण श्रावक रो बारमो व्रत भागों।
साधु जांणेनें सचित्त असुझतो लेवें तो, ओ पिण व्रत भांगे ने होय गयों नागो ॥ ७ ॥
साधां रें आहार सचित्त ने असुध लेवण रा, जीवें ज्यां लग छें पचखांण।
रोगादिक पीड्यां साधू रा प्रांण जाए तोंही, सचित नें असुझतो नही लेवें जांण ॥ ८ ॥
असल श्रावक ते साधांने असुध न देवें, सुध साधां रा जाता देखें तोही प्रांण।
असुध देइने सांधां रो साधपणों न लूटे, पोता रा लीधा चोखा पाले पचखांण ॥ ६ ॥
कदा राग रों घाल्यो असुध वेंहरावे, तिणमें संवर निरजरा अंस न जांणे।
व्रत भांगो ने पाप लागो छें तिणरों, प्राछित ले व्रत रांखें ठिकांणें ॥ १० ॥
च्यारूं आहार सचित्त नें असूझता छें, ते साधां नें श्रावक जांणे केम वेंहरावें।
सुध साधू तो जांणेने असुध न वेंहरें, अल्प पाप ने बोहत निरजरा किम थावे ॥ ११ ॥
अफासु नें अणेसणीज्जे पाठ सूतर में, तिण पाठ रों अर्थ सूधो कहणी नांवें।
जथातथ तिणरों अर्थ करे तो, घणां लोकां में सेखी उड जावें ॥ १२ ॥
तिणरा झूठा झूठा अर्थ अनेक वतावे, कदे कारण पडीयां रो नांम वतावे।
वले विविध प्रकारें घुचलाइ घाले नें, भारीकर्मां भोला लोकां नें भरमावें ॥ १३ ॥
ओं तो पाठ भगोती सूतर में छे, पिण आंधां रे अतरंग नही छे पिछांणो।
च्यारूं आहार सचित्त ने असुझता दीधां में, बोहत निरजरा किहांथी होसी रे अयांणो ॥ १४ ॥
फासु एषणीक साधु नें देवे श्रावक, ठांम ठांम बहु सूत्रां रे मांहि।
ते सचित असुध जांणे किम देवे, वले बोहत निरजरा जांणे किम ताहि ॥ १५ ॥
इण पाठ ने मूंढे आंणे वांरूंवार, त्यांरा सचित ने असुध खावा रा परिणांम।
जो असुध वेंहरण रा परिणांम नहीं छें, तो यूंही क्यां ने बकसी वेकांम ॥ १६ ॥
च्यारूं आहार सचित्त नें असुध वेंहरावें, तिणरे तो अल्प आउखो वंधाय।
भगोती पांचमें सतक छठें उदेसें, वले तीजें ठांणे ठांण अंग मांय ॥ १७ ॥
साध नें आहार सचित्त नें असुध वेंहरावें, अल्प पाप ने बोहत निरजरा थाय।
जब तो ठांण अंग ने भगोती सूतर रो, पाठ ने अर्थ दोनूंइ उथप जाय ॥ १८ ॥
साधू नें जाणनें आधाकर्मी वेंहरावें, ते तो चारित धर्म रो लूटणहार।
ते पिण नरक निगोद में झींकां खावे, उतकष्टों रूले तो अनंतो काल ॥ १६ ॥
आधाकर्मी वेहरायां छें एकंत पाप, सचित नें असुध वेंहरायां ओं पिण पाप।
च्यारूं आहार सचित्त नें असुध वेंहराया, तिणनें मूढ करें वोहत निरजरा री थाप ॥ २० ॥

साधां नें असुध आहार तो अभष कह्यो जिण, ते अभष आहार देवें दातार।
तिणरें अल्प दोष बोहत निरजरा कहे ते, भूल गया मूढ विना विचार ॥ २१ ॥
साधां नें असुध आहार तो अभष कह्यों जिण, निरावलिका भगोती गिनाता मांय।
ते अभष आहार साधां नें श्रावक वेंहरायां, अल्प पाप नें बोहत निरजरा किम थाय ॥ २२ ॥
कुसीलीया ते हीण आचारी, विणा विचारीयां बोलसी वेणो।
रोगीयादिक गिलांण नें अर्थे, आधाकर्मीयादिक जांणेनें लेणों ॥ २३ ॥
ए तो आचारंग रे छठें अधेन नें, ते जोयलों चोथा उदेसा मांय।
तो सचित्त नें असुझतो साधां नें दीधां, अल्प पाप नें बहोत निरजरा किम थाय ॥ २४ ॥
नही कल्पे ते वस्तु साधु वेंहरें तो, तिणनें तो चोर कह्यों जिणराय।
कह्यो छें आचारंग पेहलें सतखंधें, अठमांधेन पहिला उदेसा मांय ॥ २५ ॥
ठांम ठांम सूतरमें नषेध्यों, साधांनें असुध लेंणों नही कांई।
श्रावक नें पिण असुध न देंणों, असुध दीयां में धर्म छें नांहीं ॥ २६ ॥
च्यार आहार सचित्त ने असुझता छे, त्यांनें श्रावक तो निसंक सूं जांणें सुध मांन।
आपरी तरफ सूं सुध ववहार करनें, साधां नें हरष दीयो छें दांन ॥ २७ ॥
तिणरी पागमें सचित पंखीयादिक न्हाल्यो, अथवा सचित्त रजादिक लागी छेंआय।
तिणरी श्रावक नें कांइ खवर नहीं छें, पिण ववहार सूं सुध जांण दियो वेंहराय॥ २८ ॥
इण रीतें आहार सचित्त नें असूझतो छें, पिण श्रावक तो सुध जांणे नें वेंहरावें।
अल्प पाप ते पाप तणो छें नकारो, चोखा परिणांम सूं बहोत निरजरा थावे ॥ २९ ॥
कें तो अजांणपणें साधु नें वेंहरावे, तिणरी तरफ सूं फासु नें सुझतो जांण।
इण रीते ए पाठ नो अर्थ हुवें तों, ते पिण केवल ग्यांनी वदे ते प्रमांण ॥ ३० ॥
उनो पांणी निसंक सूं श्रावक जांणें छें, तिण पाणी नें घर रां बावर दीयों ताय।
तिण ठांम में काचों पांणी घर रां घाल्यो, तिणरी तो श्रावक नें खबर न कांय ॥ ३१ ॥
तिण पांणीनें श्रावक उंनों जांणेनें, निसंक सूं साधां नें दीयो वेहराय।
तिणरे अल्प पाप ने बोहत निरजरा हुवें तो, ते पिण केवल ग्यांनी नें देंणो भलाय ॥ ३२ ॥
कोरा चिणा पड्या छे भूंगडादिक में, सचित गेहूं पड्यां छें धांणी रे मांय।
तिणरी श्रावक नें खबर न कांई, सुझता जांणी साधां ने दीयां वेंहराय ॥ ३३ ॥
अचित दाखां में सचित दाखां पडी छे, अचित खादम में सचित्त खादम छे ताय।
तिणरी श्रावक ने तो खबर न काइ, ते सुझतों जांणनें दीयों वेंहराय ॥ ३४ ॥
इत्यादिक अनेक सचित वस्त छें, ते श्रावक निसंक सु अचित जांण।
ते पिण आपरी तरफ सु चोकस करनें, साधां नें वहरावें घणो हरष आंण ॥ ३५ ॥
इण रीतें श्रावक रें बहोत निरजरा हुवें, तो पिण केवलग्यांनी जांणें।
म्हें तो अटकल सूं उनमांन कर्थ्यो छें, वले सुतर रा अनुसारा प्रमांणें ॥ ३६ ॥

आधाकर्मी साधु जांणेनें भोगवे तो, नरक निगोद मे भीखा खावे।
असुध देवे ते संजम रो लूटणहारो, चहूं गति में घणो दुख पावे॥ ३७॥
आधाकर्मी साधु अजांणे भोगवें तों, पाप रो अंस न लागो लिगार।
तिण दातार ने पूछें निरणो कर लीधो, संका सहीत पिण नही लीयो तिणवार॥ ३८॥
आधाकर्मी आहार कीयो तिणरे घर, उणरे तों घरे साधु वेंहरण गयो नांही।
ते आहार अनेक घरां रे आंतरे, निरणो करे वेहरयो पातरा मांही॥ ३९॥
तिण आहार भोगवतां सुध साधु रे, पापरो लेप न लागो कांइ।
सुयगडाअंग इकवीसमें अधेने, जोयकरो निरणो घट मांही॥ ४०॥
च्यार आहार सचित ने असूझता छे, तिणरी श्रावक ने खबर नही छे लिगार।
ते सूझता जांणे साधां ने वेहरावे, तिणरा छे निरवद जोग व्यापार॥ ४१॥
च्यार आहार अचित्त नें सुझता छे, पिण श्रावक रें संका पडी तिणवार।
ते सका सहीत साधां ने वेहरावे, तिणरा सावद्य जोग व्यापार॥ ४२॥
सावद्य जोग सू एकंत पाप लागे छे, निरवद जोग सूं निरजरा ने पुन थाय।
थोडो पाप ने बोहत निरजरा बतावे, तिणने पूछीजे किसा जोगा सूं हुवे ताय॥ ४३॥
सका सहीत आहार साधां ने वेहरांयो, तिण घर रो माल खोयने पाप लगायों।
तो सचित नें असुझतो जांणने देसी, तिणरे बोहत निरजरा किण विध थायो॥ ४४॥
सुध साधां भेलों तो अभवी रहे छे, तिणरो साधु देखे छे सुध ववहार।
तिण अभवी ने साध्र वांदे पूजे छे, तिणरो साधां ने दोष न लागे लिगार॥ ४५॥
साधा भेलो रहे चोथा व्रतरो भागल, ते तो छानो छे तिणरो न पड्यों उघाड।
तिणने वादे पूजे आहार पांणी देवे छे, तिणरो साधां ने दोप न लागों लिगार॥ ४६॥
अभवी भागल ने जाणे मांहे राखे, जब सर्व साधां रो साधुपणों भागे।
ज्यूं सचित ने असुझतो जांण वेहरायां, तिणरे निश्चेइ एकंत पापज लागे॥ ४७॥
सचित ने असूझतो आहार दीया मे, अल्प पाप ने निरजरा सरधे किण लेखे।
दोय वाना सरध्यां मिश्र दांन थपे छे, मिश्र उथाप्यो तिण सांमों क्यूं नही देखे॥ ४८॥
मिश्र वालां री सरधा नें खोटी कहे छे, पोते पिण मिश्र थापे छे मूंढ मिथ्याती।
आपरा बोल्यां री आपनें समझ न कांइ, ते तो हीयाफूट गधा रा साथी॥ ४९॥
मिश्र थापण वालां री तो सरधा खोटी छे, ते कहे मिश्र मे मुन राखां छां ताय।
मिश्र दान रा सूंस न करावां म्हे किण ने, त्याने पिण त्यांरा झूठ री खबर न काय॥ ५०॥
साधां नें आहार असुध देवण रो, ए त्याग करावे छे किण न्याय।
अल्प दोष नें बहोत निरजरा जांणे छें, तिणरे निरजरा री कांय देवे अंतराय॥ ५१॥
वले साधां रे अंतराय आहार री पाडी, दातार नें अंतराय दीधी छे विशेखें।
अल्प दोष थकी बोहत निरजरा हुंती थी, तिणने सुंस करायों छे किण लेखे॥ ५२॥

श्रावक साधां नें असुध जांणनें वेंहरावें, तिणनें धर्म ने पाप दोनूंइ जांणों।
तिणनें असूझतो दान देवण रा, किसे लेखे करावो पचखांणो॥ ५३॥
मुख सूं कहो मिश्र दांन तणा म्हें, किणनेंइ सूस करावां नांही।
इण मिश्र दांन रा सूंस करायां, थांरी सरधा री वरग बूहा नही कांई॥ ५४॥
मूंला गाजर जमींकंद दांन देवें छें, तिणमें धर्म थोडो नें घणो कहे पाप।
तिण दांन रा सूंस करावों नांही, मिश्र दांन जाणी रहो चुपचाप॥ ५५॥
अल्प पाप ने वहोत निरजरा जाणो छो, तिण दांन तणां पचखांण करावो।
वहोत पाप ने निरजरा अल्प जांणो थे, तिण दांन रा सुंस करावो छो किण न्यावो॥ ५६॥
कोइ कहे यां तो सूतर रो पाठ उथाप्यो, पिण पोतें उथाप्यों ते खवर न कांय।
मोह मतवाला ज्यूं वोलें अग्यांनी, ते सांभलजो भवीयण चित ल्याय॥ ५७॥
च्यारूं आहार सचित ने असुझता छें, त्यांरा श्रावक त्यांनें क्यूं न वेंहरावे।
अल्प पाप ने वहोत निरजरा कहे छें, त्यांनें वेंहरावतां संका क्यूं ल्यावें॥ ५८॥
च्यार आहार सचित नें असुझता वेहरे, जव तो यां पाठ साचो करि थाप्यो।
च्यार आहार सचित नें असुध न लेवें, जव पोतेइज थाप्यो ने पोतें उथाप्यो॥ ५९॥
च्यार आहार सचित साधां ने वेंहरावें, जव श्रावकांइ पाठ साचो कर थाप्यों।
च्यारूं आहार सचित नें असुध न देवें, जव त्यांहीज थाप्यो ने त्यांहीज उथाप्यो॥ ६०॥
जेसाइ साध ने जेसाइ श्रावक, यां दोयां रे घट मांहे घोर अंधारो।
जेसा कूं तेंसा आय मिलीया छें, उंटरे लारें उंटा वांधी कतारो॥ ६१॥
अल्प पाप ने वहोत निरजरा उपर, जोड कीधी गंगापुर गांम मझार।
समत अठारें वरस सतावने, पोह सुद आठम मंगलवार॥ ६२॥

ढाल : २२

दुहा

भेषधारी मिष्टी भागलां तणे, भूठ बोलण री संक न काय।
खोटी खोटी करे छे परूपणा, परभव सूं डरे नही ताय॥ १॥
धावता बालक री माता भणी, दिष्या देणी नही छे जांण।
लेणवाली ने पिण लेणी नही, एहवी कहे छे अग्यांनी तांण॥ २॥
तीन च्यार वरस रो बालक हूवो, जावक हांचाल छोडयो छे ताहि।
ते बालक अन खातो हुवे, तठा पछे दिष्या ले माहि॥ ३॥
एहवी अछती अछती करे छें परूपणा, लोकां सूं मिलती बात जांण।
यांरी सरधा सूं एहीज फिटा पडे, ते सुणजो चतुर सुजांण॥ ४॥

ढाल

[चतुर विचार करीने देखो]

जंबू पइना में अठारे नाता चाल्या, ते तो एहीज मिल मिल गावे जी।
धावतो बालक छोडे दिष्या लीधी वेस्या, तिणने तो एहीज सरावें जी।
भूठाबोलां रो सग न कीजे* ॥ १॥
तिण साप्रत धावतो बालक छोडे, एहीज कहे दिष्या लीधी जी।
एहीज इणनें सराय सराय, घणा लोकां में प्रसिध कीधी जी॥ २॥
यांरा वड वडेरा दर पीढ्यां लग, इण वेश्या ने घणी सराइ जी।
वले इणरो खेवो पार हूवो कहे, कहिता सक न आंणी कांइ जी॥ ३॥
ए तो साचा जाण ने कहिता आयां, आ तो कूडी न जांणी वातो जी।
त्यां लारें कुबदी कुपातर उठ्या, त्यानेइज भूठा घाल्या साल्यातो जी॥ ४॥
बालक धावतो छोड दिष्या लीधी वेस्या, तिणने ठहरायो एकंत कूडो जी।
इणरा वड वडेरा कहितां आया त्यांरें, भूठ घाले मूढें दीधी घूरो जी॥ ५॥
अठा पछे अठारे नाता एं कहसी, ए भूठा ने वले भूठ थासी रे।
यारे लेखे ए भूठ जांणे जाणे बोले, ते चिहुंगति में गोता खासी रे॥ ६॥
बालक धावें तिणरी मानें दिष्या न देणी, ठांणा अंग तीजो ठांणो छे साखी जी।
ओ पिण भूठ जांणेने बोले छे, इसडा भारीकर्मा छें अन्हाखी जी॥ ७॥
ठांणा अंग तीजे ठाणे तीन जणां ने, दिष्या न देणी तांमोजी।
नपुसक व्याधीयों कलीव तीजो, ओर वरज्या नही तिण ठांमोजी॥ ८॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

वले कहे बालक री दया आंणी ने, वालक री मांने दिष्या न देंणी जी।
सुध सावां रा धेष रा घाल्या, त्यांरी छे भूठी कहेणी जी॥ २५॥
वले एहीज बालक री मांने, दिष्या लीधी वतावें जी।
एहवा भूठा बोलां छे कुपातर, त्यांरा बोल्या री परतीत नावे जी॥ २६॥
मेणरेहा बालक छोड दिष्या लीधी, तिणने तो एहीज थापे जी।
सुध साधवीयां आगे दिष्या लीधी, तिणने भूठ बोली नें उथापे जी॥ २७॥
पद्मावती साधवी साध पणामे, करकण्डू नें जायो जी।
तिण मसाण में बालक ने परठ्यो, तिणरी मन मे न आणी कायो जी॥ २८॥
अठारे नाता मे बालक छोड वेस्या, चारित लीयो कहे साख्यातो जी।
सुध साधवीया आगे दिष्या लीधी, तिण सूं बोलें छे भूठ विख्यातो जी॥ २९॥
पद्मावती मेंणरेहा कुबेर सेन्या वेस्या, सजम लीयो सुखदायो जी।
भेषधार्‍यां रे लेखे तीनां रें, बालक री दया रही नही कायो जी॥ ३०॥
यां तीनां ने पहिलां तो थांहीज सराइ, हिवे यांने भूठी ठेराइ जी।
साधां ने भूठा घालणने पापी, भूठी भूठी बातां उठाइ जी॥ ३१॥
किण ही बाइरे बंधो दिष्या लेवा रो, बधो पूरो हूवा दीक्षा लेणी जी।
तिण दिन बालक हांचल धावे, यांरे लेखे तो दिष्या न देणी जी॥ ३२॥
जो बालक री मां भेष धार्‍यां ने पूछे, दिष्या लेउ के वालक धवाउं जी।
यामें घणो धर्म हुवे ते मोने बतावो, ज्यूं हूं सुखसाता पाउंजी॥ ३३॥
इम पूछ्यां भेषधार्‍यां ने जाव न आवें, जब अगल डगल उधा वोलें जी।
न्याय निरणो तो मूल न दीसे, जब भूठ रो टागरो खोले जी॥ ३४॥
वीर कह्यो उत्तराधेन दसमे अधेने, समो एक न करणो प्रमादो जी।
तो बाइ तो दिष्या लेवण नें उठी, तिण री जेज किम करसी साधो जी॥ ३५॥
भेषधारी कहे उणने दिष्या न देणी, बालक री दया आंणी जी।
सूंस भागा रो कारण कोइ नही छे, एहवी वोले कुपातर वांणी जी॥ ३६॥
सूंस भांग्या तो हुवे छे अनत ससारी, बालक पाल्या वंधे मोह कर्मो जी।
किसा बोल्यां री जिण आगना छें, किसा वोला मांहे जिण धर्मो जी॥ ३७॥
सूंस भांगे ने बालक पाले, तिणमे भेपधारी कहे धर्मो जी।
बालक छोडेनें दिष्या लेवें, तिणरे वंधें पाप कर्मो जी॥ ३८॥
सूंस न भागे ने दिष्या लेवे, तिणने भगवंत भाख्यो धर्मो जी।
सूंस भागे ने वालक पाले, तिणरें वंधसी पाप कर्मो जी॥ ३९॥
वालक धवायां में धर्म जांणें, ते निश्चे पापंडी पूरा जी।
ते जिण मारग रा अजाण अग्यांनी, जिण भाख्या धर्म सूं दूरा जी॥ ४०॥

वाल धवायां में धर्म जांणें छें, दया जाणें छें रूडी जी।
तो सामायक मांहे बालक न धवावे, आ दया तो पड गइ पूरी जी॥४१॥
किणरें मा नें वाप दोनूं छें वूढा, त्यांसूं हाल्यो चाल्यो नहीं जावे जी।
वले जावक धन नही घर मांह्यो, वले कवडी कमावणी नावे जी॥४२॥
त्यारें एक वेटो माइतां नें, आंण देवें चुगो पांणी जी।
यांरे लेखे तो इणनें दिष्या न देणी, माइतां री दया घट आंणी जी॥४३॥
एक दिष्या लीयां अनेक दुखी हुवें जब, तिणनें पिण दिष्या न देंणी जी।
दिष्या लीधां किणने दुख न हुवें, जव दीक्षा देणी ने लेणी जी॥४४॥
धावता बालक री मानें दिष्या न देंणी, तिण लेखें घणां नें न देणी जी।
जो एं पाछला दुख पावें त्यांनें दिष्या न देणी, तो वूड गइ त्यारी केंणी जी॥४५॥
धावता वालक री मानें दिष्या न देंणी, ओं तो चोडें चलाया गोला जी।
यांरी डाहा हुवे ते वात न मांनें, केइ मांनें तके जावक भोला जी॥४६॥
बालक री मां दिष्या लेवें तिणरा, परिणांम पाडें भेषधारी जी।
ते जिण मारग रा अजांण अग्यांनी, ते भागल भिष्ट अचारी जी॥४७॥
तीरथंकर चक्रवत बलदेवादिक, ते संजम ले सुखीया हुआ जी।
त्यारें लारें अनेक दुखीया हुआ दीसे, केइ हीयो फूटीने मूंआ जी॥४८॥
सेठ सेन्यापती आदि वड वडा राजा, ते दिष्या ले हुआ सूरा जी।
त्यारें पिण न्यातीला दुषीया हुआ, केइ अकाले पड गया पूरा जी॥४९॥
केइ निरधन भूखा दलदरीयादिक, संयम ले सुखी हूआ जी।
त्यांरे न्यातीला बोहत दुखी तिण विना, अन विना अकाले मूंआ जी॥५०॥
धावता बालक री मां दिष्या लेवें, कहे बालक दुखीयो थावें जी।
तो राजादिक दिष्या लीधी छें त्यांरा, न्यातीला पिण दुख पावें जी॥५१॥
धावता वालक री मा नें दिष्या दीधां, बालक री दया न आंणी जी।
तो राजादिक नें दिष्या दीधी त्यां, पाछिलां री दया क्यूं न आंणी जी॥५२॥
भेषधारयां ने आप तणां बोल्यां री, आपिण समझ न कांइ जी।
यां कने दिष्या लीधां लारला दुखी हुवें, त्यांरी एं पिण नांणे मन माहीं जी॥५३॥
दिष्या लेणवाला नें जेज न करणी, म्हारे कर्म काटे जांणो मोखो जी।
पाछला पाछला री कमाइ जासी, संजम लेणों निरदोषो जी॥५४॥
पाछला दुखी हूवां मोने पाप न लागें, सुखी हूवां मोने नही धर्मो जी।
यां सूं मोह तोडे अलगा होसी, त्यांरा कटसी निकेवल कर्मो जी॥५५॥
लारला सुखी दुखी री कीरप करसी, आ लोकीक दया जाणो जी।
आ सावद्य दया छोड संजम लेसी, ते निश्चें जासी निरवांणो जी॥५६॥

यामें एक जणो जो उज्जड चाले, तिण रो न काढे निस्तारो जी।
वडा उंट जिम आगें चालें, लारें बूही जाय कतारो जी॥ ५७॥
भेषधारयां री सरधा ओलखावण, जोड कीधी पीपाड मझारो जी।
संवत अठारें वर्ष गुणसठें, चेत सुद तेरस सोमवारो जी॥ ५८॥

ढाल : २३

दुहा

केइ भेषधारी आरे पांचमे, ते नांम धरावे साध।
त्यांरी सरधा असुध छे अति बूरी, त्यांरें कदेय म जांणो समाध ॥ १ ॥
त्यांरा टोला घणा छे जू जूआ, पूछ्यां कहें म्हें सघला साध।
पिण सरधा छे त्यांरी जू जूइ, वले कर रह्या मांहों मां विवाद ॥ २ ॥
सरधा तो एक एकण तणी, चोडे खोटी कहे छें साख्यात।
पिण विकलां नें समझ पडे नहीं, चोडें दीसे उघाडो मिथ्यात ॥ ३ ॥
कहिवा ने तो इम कहें, म्हें सगलाइ छां साध।
त्यारें आचार सरधा तो मिलें नहीं, तिणसूं मांहो मां करे विषवाद ॥ ४ ॥
त्यांमें केइ कहें जीव खवावीयां, धर्म नें पुन एकंत।
केइ कहें जीव खवावीयां, मिश्र दांन् कहंत ॥ ५ ॥
मांहों मां उडावें एक एक नें, त्यारें लागी मांहों मां तोट।
एक एक तणी सरधा मझे, कहें खोटा मे खोट ॥ ६ ॥
त्यारें मांहों मां सरधा तणो, फेर घणों छें अतंत।
पिण थोडो सों परगट करूं, ते सुणजो मतवंत ॥ ७ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या में]

प्रथवी पांणी अगन ने वाय, वले वनसपती ने छठी तसकाय।
छ काय री छ दांनसाला मंडावें, तिणमें एकंत पुन कहे छे ताय।
त्यांनें साध सरधे छे मूंढ मिथ्याती * ॥ १ ॥

अथवा छही काय ने जीवां हणेने, त्यांरी जूदी जूदी दानसाला मंडावें।
पछे हाथां सूं दांन देवे दगचाल, तिणमें एकंत धर्म नें पुन वतावें ॥ २ ॥
ग्रहस्थ ने मांहो मां छ काय खवावे, अथवा छ काय मारेनें खवावें।
तिणमें मिश्र कहे त्यांनें खोटा कहेने, एकंत धर्म ने पुन वतावें ॥ ३ ॥
कोइ गाजर मूला ने सकरकंद देवें, जमीकंद रो दांन देवें छें ताह्यो।
तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहे छें, मिश्र कहे त्यांनें दीया उडायो ॥ ४ ॥
वेगण वालोलादिक अनेक नीलोती, रांधे रांधे मिथ्याती जीवां नें खवावें।
तिणमें मिश्र कहें ज्यांने खोटा कहेनें, एकंत धर्म ने पुन वतावें ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

कोइ चिणा सेकी सेकी ने दांन देवे, कोइ गोहा नें सेकी सेकी देवे धांणी।
इत्यादिक अनेक धान सेकी नें देवे, तिणमें एकंत पुन कहे मूंढ अग्यांणी॥ ६॥
कोइ कूआ बाव तलाव खोदावें, वले पावें काचो अणगल पांणी।
तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छे, मिश्र कहे त्यांने खोटा जांणी॥ ७॥
श्रावक नें माहोमां छकाय खवावे, वले छकाय मारेनें जीमावे।
तिणमें मिश्र कहे त्यांनें खोटा सरधे नें, एकंत धर्म ने पुन बतावे॥ ८॥
समाइ पोसा रे काजें जागा करावे, छ काय जीवां रो करे घमसांण।
तिणने एकत धर्म ने पुन बताए, इणमे मिश्र कहे त्यांने खोटा जांण॥ ९॥
श्रावक ने देवे छे वस्त अनेक, छ काय जीवा रो करे घमसाणो।
तिणमे एकत धर्म ने पुन कहें छे, मिश्र कहे त्याने खोटा जांणो॥ १०॥
कल्पे ते वस्त श्रावक ने देवे, कलपे जिण पेतर ने काल में तांम।
तिणमें एकत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्यांरी पाडी मांम॥ ११॥
साव विना छें सगलाइ अनेरा, त्यां सगलां ने दान दीयां कहे पुन।
सचित अचित दीयां कहें पुन निकेवल, मिश्र कहे त्यारी सरधा ने जांने जबूंन॥ १२॥
तीर्थंकर दान दीयो ने कीयो सिनांन, वले दिप्या रा महोछव कीया छे पूरा।
तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छे, मिश्र कहे त्याने कहे छे कूडा॥ १३॥
भगवत पधार्‍यां री दीधी बधाइ, तिणनें धन धांन धरती दीधी छें दांन।
तिणमे एकत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्याने जांणें विकल समांन॥ १४॥
दानसाला मंडाइ परदेसी राजा, समाइ ने पोसा जिम जांणें छे तांम।
एकत धर्म ने पुन कहे छें, मिश्र कहे त्यांने खोटा कहे ठाम॥ १५॥
छ काय रा जीवा ने हणने मिथ्याती, आहार नीपजाए साधा ने देवे छे दांन।
तिणने एकंत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्यारी जांणें छे खोटी सरधांन॥ १६॥
मिथ्याती साधां ने काचो पाणी वेहरावे, वले वेहरावें कोरो काचों लूंण धान।
तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्यांरी सरधा ने कर कर हिरांन॥ १७॥
वले वेहरावे साधां नें सचित्त नीलोती, अथवा रांधे रांधे देवे साधां ने दांन।
तिणने एकंत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्यांने जाणे छे घोर अग्यांन॥ १८॥
आधाकर्मी आदि दे आहार दोषीलो, कोइ मिथ्याती साधां ने देवे छे दांन।
तिणमें एकत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्यांनें जांणें छे कपट री खांन॥ १९॥
साधु तो धुजतों देख मिथ्याती, साधु ने तपावें छें हेठो बेसांण।
तिणनें एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र री सरधा कहें छें जेंहर समांण॥ २०॥
कोइ साध उजाड में थाको छें तिणनें, गाडादिक बेसांणीनें गांव में आंणे।
तिणने एकंत धर्म नें पुन कहें छे, मिश्र कहे त्यांरी सरधा ने खोटी जांणे॥ २१॥

मात पिता वले सासू सुसरादिक, त्यांरो विनो करें छें हरष घणों आंणों।
तिणनें एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र कहें त्यांनें जांणे छें मूंढ अयांणो ॥ २२ ॥
वले काको बाबो ने सेंण सगादिक, त्यांरो विनो करें घणों हरखमन आंणो।
तिणनें एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र कहें त्यांनें एकंत खोटा जांणो ॥ २३ ॥
इत्यादिक संसारी अनेक जीवां रो, विनों करें मन हरष आंण।
तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र कहें त्यांरी सरधा नें खोटी जांण ॥ २४ ॥
कोइ अणुकम्पा आंणी छकाय नें देवें, अथवा छ काय मारी नें खवावें।
तिणने एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र कहें त्यांरी सरधा नें खोटी सरधावें ॥ २५ ॥
बंदीवांनादिक नें सचित्तादिक देवें, अथवा छही काय हणेनें जीमावें।
तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र कहें त्यांरी सरधा नें जाबक उठावें ॥ २६ ॥
कोइ भय रों घालीयो दांन देवे छें, थावरीयादिक नें देवे दरब अनेक।
तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र कहें त्यांनें जांणें खोटा विशेस ॥ २७ ॥
खरच करे छें मूंआ रे केडें, सेंण सगा न्यात जीमावें तांम।
तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र कहें त्यांनें खोटा कहें गांम गांम ॥ २८ ॥
कोइ लज्या रो घालीयो दांन देवे छें, जाचक डूंबरादिक ने जांण।
तिणनें एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र कहें त्यांरी सरधा ने खोटी पिछांण ॥ २९ ॥
रावलीया कीरतनीया नें भांड भवईया, त्यांनें दांन देवें मन मांहे गर्व आंण।
वले देवें सगा नें पेंरांवणी मूसालों, तिणमें पुन कहें मिश्र नें खोटो जांण ॥ ३० ॥
हांती नेंतादिक आंमा साह्यां देवें छें, वले आंमा साह्यां जीमें ने जीमावें।
तिणनें मिश्र कहें त्यांनें खोटा कहेनें, एकंत धर्म ने पुन बतावें ॥ ३१ ॥
अधर्म दांन टालेनें नवही दांन में, एकंत धर्म पुन बतावें।
मिश्र दांन कहें त्यांनें खोटा कहें छें, त्यांरी सरधा नें जाबक जड सूं उठावें ॥ ३२ ॥
मिश्र दांन उथापण री जोड कीधी छे, तिणमें तो त्यांनें जाबक दीया उडाय।
नव दांन में एकंत पुन कहेनें, मिश्र दांन में एकंत खोटो कहें ताय ॥ ३३ ॥
मिश्र दांन कहें छें तिणनें, धर्म तणो धाडायत थाप्यो।
वले कहें जमारो हार गयो छें, इम कहि कहि मिश्र दांन उथाप्यों ॥ ३४ ॥
मिश्र दांन परूपें तिणनें कहें छें, इण पुन तणों कर दीयों छें नास।
इम कहि कहि नें एकंत पुन थापें, मिश्र दांन री सरधा रो करें विणास ॥ ३५ ॥
वले मिश्र दांन परूपें तिण नें, कह दीयो कागला रो साथी।
वले तेहीज तिणनें साध सरधें तो, ते पिण पूरा छें मूंढ मिथ्याती ॥ ३६ ॥
वले मिश्र कहें छे तिणनें, देवालों काढ्यों कहे छें निसंको।
वले तेहीज तिणने साध सरधें तो, त्यांरे पिण नही मिटीयो मिथ्यात रो डंको ॥३७॥

वले मिश्र दांन कहे छें तिण नें, गाजी ने मुल्लाखांरी ओपमा दीधी ।
अठां दांना मे एकंत पुन थापण नें, मिश्र वालारी घणी फजीती कीधी ॥ ३८ ॥
मिश्र दांन री सरधा नें जेंहर कहें छे, वले कहे छे मिश्र नें साप रो मूढो ।
वले तेहीज तिणने साध कहे तो, त्यां पिण विकलां रे मिथ्यात री गूढो ॥ ३९ ॥
इत्यादिक जोड अनेक करेनें, मिश्ररी सरधावाला ने घालीयो कूडो ।
एकंत धर्म ने पुन थापण नें, मिश्र री सरधा उपर न्हाखी छें धूरो ॥ ४० ॥
मिश्ररी सरधा वाला ने खोटा कहे छे, वले तेहीज त्यांनें जो सरधे साध ।
ते पिण निश्चें छे मूंढ मिथ्याती, त्यां विकलांरें कदेय म जाणो समाध ॥ ४१ ॥
ज्यांने धर्म तणा धाडायत थाप्या, जब तो अनेक चोरां विच कहि दीया भारी ।
वले तेहीज त्यांनें साध सरधें तो, त्यांरी पिण भव भव मे होसी घणी खुवारी ॥४२॥
वले पुन रो न्हास कीयो कहें ज्याने, वले कागला रा साथी कहि दीया ज्याने ।
वले तेहीज त्याने साध सरधे तो, फिट फिट कहीजें त्यां विकलां ने ॥ ४३ ॥
मिश्र दांन कहें त्याने कह्या देवाल्या, देवाल्यां कह्या तिण कह दीया चोर ।
वले तेहीज देवाल्या नें साध सरधे तों, त्यांरें अधकार मे अधारो घोर ॥ ४४ ॥
साप रा मूंढा सरीपा कहि दीया त्याने, जब तो भारी जांण्यो त्यांरो जहर मिथ्यात ।
वले तेहीज त्याने साध सरधें तो, विगड गइ विकलांरी वात ॥ ४५ ॥
मिश्र दान कहें छे त्यांरी सरधा ने, भात भात करने खोटी दरसाइ ।
वले तेहीज त्यांने साध सरधे तो, त्यांरा बोल्या री त्याने पिण समझ न काइ ॥४६॥
मिश्र दान कहे त्यानें खोटा कहे छे, वले तेहीज त्यांनें कहे छे साध ।
ते पिण जिण मारग रा अजांण अग्यांनी, त्यारे पिण कदेय म जाणो समाध ॥ ४७ ॥
जे साध कहिता पिण वार न ल्यावे, असाध कहिता पिण सक न आणें ॥
त्यांरा श्रावक पिण छे बवेकरा विकल, गुर री सरधा पिण नही पिछांणे ॥ ४८ ॥
कोडांन कोडगमे बोल न मिलें, त्यांरे सरधा मांहे अनेक बोलारो छेफेर ।
तो पिण मांहोमां साध सरधे छे, एहवों छे भेप धार्‍यां रे अंधेर ॥ ४९ ॥
एकीको बोल उथाप्यों तिणने, निन्हव कह्या छे श्री भगवांन ।
अनेक बोल उथाप्यां त्याने साध कहे छे, एहवो भेप धार्‍या रे छें घोर अग्यान ॥ ५० ॥
ए जिण जिण ठामे मिश्र ने थापे, ए तिण तिण ठामें एकत पुन थापे ।
मिश्ररी सरधा सूं लोक बूडता जांणे, तिणसूं मिश्र री सरधा जावक परी उथापे ॥ ५१ ॥
ए जिण जिण ठामें एकत पुन थापे, एं तिण तिण ठामे मिश्र नें थापें ।
एकंत पुन कहे ते तों पापडीयां री सरधा, तिणने विपरीत जाणेने परी उथापे ॥ ५२ ॥
भेपधार्‍यां री सरधा ओलखावण काजे, जोड कीधी छें खेरवा मझार ।
संवत अठारे वरस चोपने, आसोज सुद एकम बृहस्पतवार ॥ ५३ ॥

ढाल : २४

दुहा

खोटो जांणे मिश्र नें उथापीयो, थाप्यो छें एकंत पुन।
जब मिश्र वालां पिण त्यांनें उडायनें, कर दीया जाबक जबून ॥ १ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिन आगन्या में]

मिश्र दांन उथापें एकत पुन थापें, त्यानें अंतर ग्यांन बिना कह्या छे आंधा।
अंतर ग्यांन विना आंधा निश्चें मिथ्याती, त्यानें समकत आवारा पिण पड गया जादा।
त्यांनें साध सरधे छें मूंढ मिथ्याती* ॥ १ ॥

मिश्र दान उथापे एकत पुन थापे, त्यानें कह दीया निश्चें हिंसाधर्मी।
तो निश्चें मिथ्याती हुवें छें, ते तो साध नही छें निकेवल अधर्मी ॥ २ ॥
वले मिश्र उथापे एकंत पुन थापे, त्यानें कहें त्यारी अकल गइ दपटाइ।
वले कहे भोला लोकाने भर्म में न्हाखें, कूडा कूडा कुहेत लगाइ ॥ ३ ॥
हिंसाधर्मी मुख सूं कहि दीया त्यानें, वले कहें त्यारी अकल गइ दपटाइ।
वले त्यांने तेहीज साध सरधे तो, त्यां विकलां में कला म जाणो काइ ॥ ४ ॥
निरवद दांन तों कह दीयों निर्ग्रंथ केरो, सावद्य दांन संसार नों कर दीयों कोरें।
तिणमें मिश्र उथापे एकत पुन थापें, त्यानें निश्चें पापडी कह दीया चोरे ॥ ५ ॥
मुख सूं तों पाषंडी कह दीया त्यानें, इण वातनें निश्चें न जाणी भूठी।
हिवे तेहीज त्यानें साध सरधें तो, हीया निलाड री दोनूइ फूटी ॥ ६ ॥
मिश्र दांन उथापे एकंत पुन थापे, त्यानें कहे छे ग्यान लोचन विण अंध।
वले तेहीज त्यांने साध सरधें, तों ते पिण अग्यानी अंध नरिंद ॥ ७ ॥
मिश्र दांन उथापे एकंत पुन थापे, त्यांने खोटो मत भाल्यों कहे ताय।
वले तेहीज त्याने साध सरधें तो, जब ओं पिण मिथ्या चोडे भूला जाय ॥ ८ ॥
मिश्र दांन उथापे एकंत पुन थापे, त्यांने कहें छें अभितर पाटो खोलो।
अभितर पाटा वाला नें एहीज साध सरधे, तो विकलां रे वाज्यो मिथ्यात रो भोलो ॥ ९ ॥
मिश्र दांन उथापें एकत पुन थापे, जीव खवायां पाप न गिणे ते आटो।
त्यांरी सरधा में कहि दीयो दांणो न नीकलें, वले कहे त्यानें थोथा मती पछाटो ॥ १० ॥
हाथां सू आरभ करने जीमावें, तों पिण हिंसा न माने काइ।
त्यारी बुध तो जाबक बूडी कहे छे, वले कहे छें हीया आडी ढांकणी आइ ॥ ११ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

थोथी कण रहीत कही त्यांरी सरधा नें, हीया आडी ढांकणी आइ ने कहें बुध भूंडी।
वले तेहीज त्याने साध सरधें तो, त्यां पिण विकलां री सरधा भूंडी ॥ १२ ॥
मिश्र दांन उथापे एकंत पुन थापे, त्यांने सिव धर्म्यांरा जोडायत थाप्या।
जब तो च्यार तीरथ मां सूं बारे काढ्या, जडा मूल सूं त्याने जाबक उथाप्या ॥ १३ ॥
अन तीरथीयां रे जोडायत थापे, जब हिंसाधर्मी कहि दीया त्यानें।
वले तेहीज त्यांनें साध सरधें तो, ववेक रा विकल कहीजे यांने ॥ १४ ॥
मिश्र उथापें एकंत पुन थापें, ते पहिला दयाधर्मी हुता कहे तासो।
पछे हुइ कहे छे हिंस्या धर्म री सरधा, यां तो कातीयो पीजीयो कीयो कपासो ॥ १५ ॥
कातीयो पीजीयों कपास कीयों छे, त्यां तो समकत संजम खोयो अग्यांनी।
वले तेहीज त्यानें साध सरधे छे, ते पिण निश्चेंइ नही छें ग्यांनी ॥ १६ ॥
आरंभ करे जीमावें कोइ सीधो खवावे, कोइ धोवण पावें कोइ काचो पांणी।
त्याने एकत पुन सरीषो कहे छे, त्यांने मिश्र वाला कहे निश्चे अनांणी ॥ १७ ॥
मिश्रवाला तो अग्यानी कहि दीया त्याने, अग्यांनी तो निश्चे नही समदिष्टी।
वले तेहीज त्याने साध सरधें छे, तो मिश्र वाला पिण निश्चेंइ मिष्टी ॥ १८ ॥
सचित अचित दीयां कहे पुन सरीषो, सुध असुध दीयां कहें पुन सरीषों।
इण मतने तों निश्चेइ कह दीयों कूडो, हाथ रा कांकण ने स्यूं आरीसों ॥ १९ ॥
मिश्र दान उथापे एकंत पुन थापे, ते तो तस थावर मार्‍यां रों पाप न जाणे।
तिण सूं उंधी अकल रा कह दीया त्याने, त्यांने जाबक उठावता सक न आंणे ॥ २० ॥
कूडो मत तो कह दीयो त्यांरो, वले उंधी अकल रा त्याने जांणें।
वले तेहीज त्याने साध सरधें तो, एं पिण निश्चे पहिले गुणठांणे ॥ २१ ॥
संबत अठारे नें वरस तेतीसे, एकंत पुन कहे छे त्याने दीया उडायो।
मिश्र दांन थाप्यो छे निसंक सू चोडे, खोटी जोड करेने ताह्यो ॥ २२ ॥
एकंत पुन कहें सूतर अर्थ मरोडे, वले गुर री पिण परतीत मूल न राखे।
ज्यां ने अर्थ उंधाइज सूझे, पुन कहे त्यांने मिश्र वाला इम भाखें ॥ २३ ॥
सूतर अर्थ उंधा करे त्याने, वले गुर री परतीत न राखें लिगारो।
एहवा अवगुण बतावें त्यांनें साध सरधें, त्यारें पिण जांणजो पूरो अंधारो ॥ २४ ॥
मिश्र दांन उथापें एकत पुन थापे, आठोइ दान ने धर्म दांन मे घालें।
जब मिश्र वाला कहे ए झूठ बोले छे, यांरो खोटों मत आघो नही हाले ॥ २५ ॥
मिश्र दान उथापें एकंत पुन थापें, त्यानें मिश्रवाला कहें कपट चलावें।
साध श्रावक त्यांनें निरणो पूछें जब, झूठ बोले उण रा घर रो पुन बतावें ॥ २६ ॥
उणरा घर रो एकत पुन बताए, भरमावे छें लोग लुगाइ।
साध थइ ने सूधा न बोलें, आ खोटी सरधा त्यांनें किण सीखाइ ॥ २७ ॥

नव थांनां में एकंत पुन परूपें, त्यांनें मिश्र वाला जांणें मोल्य मोटी।
साख्यात सूतर री वात न मानें, त्यांरी सरधा नें एकंत कहें छें खोटी ॥ २८ ॥
सूतर न मांनें एकंत पुन थापें, कूड़ कपट सुं भरमावें लोक लगाड़।
यांनें खोटा कहे तेहीज साव सरधें, त्यां पिण विकलां में कस्यो न काड़ ॥ २९ ॥
मिश्र वाला कहें मिश्र वीर परूप्यों, पुन कहे नें म्हांरो मिश्र थांन उथाप्यो।
ते तो जीव मार्‍या रो पाप न जांणें, त्यांतो धर्म नें पुन एकंत थाप्यों ॥ ३० ॥
मिश्र थांन उथापे एकंत पुन थापे, ते तो झूठी करे छें अग्यांनी भखालो।
ते अंतर ग्यांन विना जीव आंधा, त्यांरें आडा कहें छें अभितर कर्म जालो ॥ ३१ ॥
वीर वचन उथाप्या कहें त्यांनें, अंतर ग्यांन विना आंधा कहि दीया त्यांनें।
वले तेहीज त्यांनें साव सरधें, तों ववेकरा विकल कहीजे यांनें ॥ ३२ ॥
भठी लगावें नें चरु चढावें, वले चूल्हों बालें रांधें तरकारी।
जे कोइ धर्म जांणी नें जीमावें, ब्राह्मण तथा वले ओर भिखारी ॥ ३३ ॥
तिण नें एकंत पुन रो कारण कहें छें, देणवाला नें जावक न कहें तोटो।
लेणवालो उण री गति जासी, इण मत नें मिश्रवाला जांणें छें खोटों ॥ ३४ ॥
खोटो मत तो कह दीयो त्यांरो, त्यांनें वले तेहीज सरधें छें साव।
इसड़ा छें मूंढ ववेकरा विकल, ते पिण निमाइ निरचें असाव ॥ ३५ ॥
वाव तलाव नें कूआ खोदावें, वले घों मांडें पावें काचो पांणी।
कंद मूल नें सतूकार देवें, अणुकंपा मन माहें आणी ॥ ३६ ॥
एणमें जीव मार्‍यां रो पाप न जाणें, कहे छें एकंत लाभ ठिकांणों।
एहवो धर्म वनावें लोकां नें, कहि २ मूढा सूं नवमो ठांणो ॥ ३७ ॥
जीव मार्‍यां रो पाप न जांणें, कुपातर पोख्यां धर्म नें पुन जांणें।
त्यांनें पिण तेहीज साव सरधे छें, ते पिण निरचें पहलें गुण ठांणें ॥ ३८ ॥
जिण ठांमें जीवां री हिंस्या हुवे छें, वले जाएं जीवां रा जावक प्रांण।
तिण ठांमें एकंत पुन परूपें, त्यांरी खोटी सरधा कहें छें तांण ॥ ३९ ॥
वले सेवी, ब्राह्मण, अगरवाला, त्यांरी सरधा छें सिव धर्मी री सैली।
केइ कुल जैंनी हिंसा धर्मी, त्यांरी पिण सरधा त्यांसूं कहें छें मैली ॥ ४० ॥
हिंसा में पुन थापें तो कहि दीया त्यांनें, वले सिवधर्म्यां री त्यांरी सरधा जांणें।
त्यांनें वले तेहीज साव सरधें छें, ते पिण निरचें पहिलें गुणठांणें ॥ ४१ ॥
मिश्र न जांणे नें पुन वखांणें, इण सरधा नें कहें छें जावक भूंडी।
वीतराग रा वचन देखतां, आ कदेय न चालसी खोटी हूंडी ॥ ४२ ॥
सरधा तों भूंडी कहि दीधी त्यांरी, वले कही त्यांरी सरधा नें खोटी हूंडी।
त्यांनें पिण तेहीज साव सरधें छें, जव यांरी पिण सरधा जावक गइ बूडी ॥ ४३ ॥

समत अठारें वरस इगतीसें, मिश्र वाला कीधी जोड मेडता माह्यो।
मिश्र दांन पाखंड्यां चोडें थाप्यों, पुन कहें त्यांनें जादक दीया उडायो ॥ ४४ ॥
इम भगवंत नें आल देडनें, आप तो न्याराइज होय जावे।
त्यां कूडावोलां रो कांइ पकडीजे, मून तणे ओले छिप जावे ॥ ४५ ॥
पुन कहें त्यांनें मिश्रवाला कहे छें, त्यासूं तो कहें न्याय बोल्यो नही जायो।
मिश्र गोपवे नें मून कहे छें, वले कहें त्यानें चोडें कपट चलायो ॥ ४६ ॥
त्यांरी सरधा तो त्यांसूं चोडें कहणी न जांए, वले कहें त्यांने चोडें कपट चलायो।
वले वीर वचन गोपव्या कहें त्यानें, वले घाल्या निन्व नें पाखंड्यां माह्यों ॥ ४७ ॥
वारुंवार कूडावोला कह दीया त्यानें, वले भांत भांत त्यांने दीयो उडायो।
वले तेहीज त्यांने साध सरधें छे, ते पिण पडीया छे अंधकार माह्यों ॥ ४८ ॥
मिश्र दांन उथापे एकंत पुन थापें, तिणनें दोष कहें माहा भय रो ठिकांणो।
माहा भय तो नरक निगोद माहें छें, मिश्र वाला कहें यांरो ए फल जांणो ॥ ४९ ॥
पुन कहें त्यानें मिश्र वाला कहं छें, यां आधा ने साची सरधा न सूझें।
वले कूडपखी तो कहि दीयो त्यांनें, वले कहें त्यांनें आंधा जेम अलूझें ॥ ५० ॥
माहा भयकारी सरधा कहे छें त्यांरी, वले भूठाबोला ने आंधा कह्या त्यानें।
वले तेहीज त्यांनें साध सरधें तो, विकलां री पांत में गिणलेजो यांने ॥ ५१ ॥
त्यांसूं निरणो तो मूल कीयो नहीं जाएं, दस दांन ने वले नव पुन मांही।
उजडपडीया कहें त्याने मिश्र वाला, त्यामें साच रो सींचों न सरधे कांइ ॥ ५२ ॥
मिश्र दांन उथापें एकत पुन थापे, त्याने मिश्र वाला कहें एकंत कूडा।
त्याने पूछे तो मूंन ओले छिप जावें, खोटी सरधा परूपे ने होय जाएं पूरा ॥ ५३ ॥
मिश्रीया कहे पुन पाप कहणों जिण पाल्यो, म्हे मिश्र कहां छां ते पिण पाल्यो।
ए तो नास्तक मत सूं मिलता बोले छे, वले कहे त्याने भूठो झगडो झाल्यों ॥ ५४ ॥
आठ दांन नें धर्म मे घाले छें त्यानें, मिश्रीया कहे मिश्र दांन जो न छे।
मूंन तके सुघ जाब न दीधां, घणा ने घणा पिछतावोला पछें ॥ ५५ ॥
नास्तक मत सूं मिलता कही दिया त्यानें, वले कहें त्यानें पिछतावोला थापे पुन।
वले तेहीज साध सरधे छे त्यानें, जब त्यांरी पिण सरधा छें जाबक जबूंन ॥ ५६ ॥
दस दांन नें वले नव पुन माहें, त्यारो तो विवरो त्यांसूं कीयो न जायो।
सावद्य मे एकंत पुन सरधें, ओहीज बडो करें छे अन्यायो ॥ ५७ ॥
बडा अन्याइ तो कहि दीया यानें, वले साफ बोलता त्यांनें न जांणे।
वले त्यानें तेहीज साध सरधें तो, पीपल वांधी मूर्ख जिम तांणें ॥ ५८ ॥
कोरो अन काचो जल दीधां, पडदें पडदें पुन जणावें।
प्रगट कहिता भूंडा दीसें, तिणसूं नवमो ठांणो दिखावे ॥ ५९ ॥

कहें ओ देखों अनेराने दीधां, पुन तणी परकत तिणरे बंधायो।
भगवंत निरणों मिश्र नहीं दाख्यों, तो म्हां सूं मिश्र केम कहवायों ॥ ६० ॥
भेषधार्‍यां नें ओलखावण काजे, जोड कीधी खेरवा सहर मझार।
संवत अठारे वरस चोपने, आसोज सुदि पूनम वृहसपतिवार ॥ ६१ ॥

●

ढाल : २५

दुहा

किणही श्रावक रा व्रत आदस्या, रोटी खाएं छें माग।
तिणनें आहार ताजो मिलें नही, तिण वणायो साधु रो सांग ॥ १ ॥
ए सांग पेहर सोरो हूवों, दुनीया खादी खूंद।
जिण सेरी साधु गया, ते सेरी दीधो बूंद ॥ २ ॥
श्रावक रा व्रतां मझे, साध वण्यो किण न्याय।
उघाडों वाणीयों ठग लोक मे, ते भोला नें खबर न काय ॥ ३ ॥
श्रावक थयो साध रा भेष में, ठग ठग खाए लोकां रा माल।
बूडें थोडा सुख रें कारणें, पिण आगें होसी हवाल ॥ ४ ॥
तिणरा चाला चिरत तो अति घणा, ते पूरा केम कहवाय।
थोडसा परगट करू, ते सुणजो चित्तलाय ॥ ५ ॥

ढाल

[विना रा भाव सुण सुण गुंजे]

गुण विण पेहस्थो साधु रो सांगो, भेष रे ओलखाए छं मागो।
ते तो वरत विहूणो नागो, पेट रें काजें मांड्यों ठागों ॥ १ ॥
ते पर घर गोचरी जावें, जठे बुगल ध्यांनी होय जावें।
सूझतो आहार जांणे ने देखे, तो पिण घणो पूछे विशेखें ॥ २ ॥
ठग थको आपो जणावे, भोला लोकां ने भरमावें।
धुरतांई करें जाण जांणी, लोक जाणे ज्यू उतम प्राणी ॥ ३ ॥
इम कीयां लोक राजी होय जावे, तो मोनें ताजों आहार वेहरावें।
घी खांड दूध दही मिष्टान, मोनें देसी दे दे सनमांन ॥ ४ ॥
तिणनें जाणजो मोटको ठगो, भोला लोका नें देवें छें दगो।
ठग ठग खाए छें लोकां रा माल, तिणमे भव भव मे होसी हवाल ॥ ५ ॥
ग्रहस्थ रा भेष में माग खावें, तो कपट दगो टल जावें।
पेलो ग्रहस्थ जांणनें तांम, ग्रहस्थ सारूं होसी परिणांम ॥ ६ ॥
साध रो भेष पहरी नें ल्यावें, घणा लोकां ने विसमें उपजावें।
ते तो ठगा उपरलो ठगो, भेष रे लारे देवें दगो ॥ ७ ॥

ठग तो ठग ठग माल ल्यावें, पेंला नें पाप नहीं लगावें।
तिण तो धन तणों दीयो दगों, तिण सूं धन तणों छें ठगो॥ ८॥
असाधु थको मांगे ल्यावें, ओं तो पेला नें पाप लगावें।
पेंलें तो साधु जांणनें दीधो, इण साधू रा भेष में लीधो॥ ९॥
पेलें दीधां मे जाण्यों धर्म, इण जांण्यों लागों पाप कर्म।
तिण सूं ओ तों छें धर्म ठगों, भेष पेहरे मोटो दीयों दगो॥ १०॥
ओ साध वण्यों विण काजें, निरलजा मूल न लाजें।
तिणनें पूछ्यां न बोलें सूधो, घणो छेडवीयां बोलें उंधों॥ ११॥
भारीकर्मा जिभ्या रो लंपटी, धुरत मायावीयो छें कपटी।
तिण आपरों मतलब देख, गुण विण पेंहर्‌यों साधु रो भेष॥ १२॥
आछों खावा पीव रें कांम, ओ तों साध वण्यों छें तांम।
वले चढ गयों मांन रें छाजें, अकार्य करतो नही लाजें॥ १३॥
इण ने उचो करें कोइ हाथ, तिणरें निश्चें बंधें कर्म सात।
धर्म जाणें तो भारी मिथ्यात, चिकण कर्म लागें सात॥ १४॥
तिणनें असणादि हरख सूं दीधो, तिण भारी कर्म बंध कीधो।
धर्म जांण्यो तिणरी विशेष खुवारी, ते हूवों मिथ्यात सूं भारी॥ १५॥
तिण घणा जांण नें बोया, पाप मांहें पूरा विगोया।
माल खाय नें भारी कीधा, धर्म ठिकांणे दगा दीधा॥ १६॥
ओ तों साध वणे हूवो भारी, घणा लोकां री कीधी खबारी।
आप बूडे ओरां नें बोया, घणा लोकां नें पापी विगोया॥ १७॥
इसडो पापी हरांम खोर, ते तीर्थंकर नो चोर।
लूंण हरांमी हूवो पको, ज्यारो खाधो त्यांने दीयो धको॥ १८॥
बड बडा श्रावक नाम धरावे, इण छोटाने पेहली खमावे।
यां साराइ में पड गइ खांमी, इण रो विनो करे सीस नांमी॥ १९॥
वले विनो करे तिणने खमावें, नीचो होयनें सीस नमावे।
ओ वदण भेले मस्तक हलावे, साधां ज्यूं पाछो तिणने खमावें॥ २०॥
वले मन में मगज न मावें, साधु ज्यूं लोकां में पूजावे।
मगरुडाइ में होय रह्यों सेठों, कुकडधम राजा होय बेठो॥ २१॥
दीसतों दीसे मोटो अणगार, वणीयों सासण रो सिणगार।
ते तो कूड कपट तणों भंडार, पापी पाप सूं न डरे लिगार॥ २२॥
एहवा कनें बेसे केइ जाय, त्यांरी अकल गइ दपटाय।
एहवा कने करे समाई, त्यांरी पिण गई अकल ढंकाई॥ २३॥

तिणरे सनमुख बेसें आंण, तिण कने दरावें वखांण।
तिणने कहे थांरी सत वांणो, त्यांरेंइ मोटी भोलप जांणो॥ २४ ॥
श्रावक तिण पासे आवे, जब लोकां में प्रसंसा थावे।
भोलातो जाणे ओ साध रूडो, करणी करतूत माहे पूरों॥ २५ ॥
तिणने केइतो वांद खमावे, केई हरप सूं आहार वेहरावे।
केई कपडो देवे चोखों, जांणे ओ तो साधू निरदोषो॥ २६ ॥
तिणने वाद्यां पूज्यां जाणे धर्म, कटता जांणे वले कर्म।
असणादिक दीये पिण धर्म जांणे, वेहराए घणो हरख आणे॥ २७ ॥
ओ पिण छांने छांने कहे आप, मोने दीया म जांणो पाप।
घणे ठगा सूं कांम चलावे, इण विध लोकां रो माल खावे॥ २८ ॥
कने वेस करे तिणसूं वात, घणो वधे लोकां में मिथ्यात।
कने वेठो तिण वात विगाडी, सावद्य आजीवकाय वधारी॥ २९ ॥
केई जाणे छे ओं साध नांही, साध रा गुण नही इण माही।
तो ही हरख सूं देवें आहार, करे करे घणी मनवार ॥ ३० ॥
कपडा पिण मही मही दे जांण, मन मांहे उजम आंण।
मागे तका वसत करे त्यार, इसडो छे केकारें अंधार ॥ ३१ ॥
मन मांहे तो इतरोई न देखे, ओ साध वण्यो किण लेखें।
इण मे दीसे छें मोटी खोड, ओ तीथकर नो चोर॥ ३२ ॥
इण साधू रो सांग वणायों, इण कीयो उघाडो अन्यायो।
तिण नें इतरोइ पूछे नाही, ओ पिण निरणो नही घट मांही॥ ३३ ॥
कोइ चुतर विचखण ह्वे त, तो तिणने नषेध सांकड लेत।
तू साध वण्यो किण लेखे, तूं तो वरता सांह्यो न देखे ॥ ३४ ॥
तूं तो श्रावक थको वणीयो साध, मोटो अकार्य कीयो अगाध।
जिण मारग में कपट न पावे, श्रावक थको साध वणजावे॥ ३५ ॥
लोका री रोटी मागे खावे, साधु रो भेष धारीने ल्यावे।
तू तो साध वण्यो छे ठगो, लोकां ने देवाने दगो॥ ३६ ॥
तूं तो दीसे उघाडो कपटी, जिभ्या तणों दीसे छे लपटी।
तो कने वेसणो नही आछो, तूं तो ठग छे साचेलो साचो॥ ३७ ॥
तू तो ठगां में मोटो छे ठगो, भेष पाछे देवे छे दगों।
भांत भांत नषेदे पूरो, इण रो भेप कराय दे दूरो॥ ३८ ॥
पाछो ग्रहस्थ रो भेष करावें, उणरों कुर ने कपट छुडावे।
जब उण मांहे हुवे वेराग, तो करदे सर्व सावद्य रा त्याग॥ ३९ ॥

खावा पीवा री न करे परवाही, वेंराग करें मन माहि।
ज्यां लग साधां सूं रहूं छूं न्यारो, विगें पिण नही खांउ लिगारो ॥ ४० ॥
मरणो पिण कर दे कबूल, असल साधू ज्यूं चालें सूल।
रहें साधां तणे हजूर, नहीं रहें साधा सूं दूर ॥ ४१ ॥
हुवें साधां तणों सुवनीत, उपजावें पूरी परतीत।
साधां रो हुवें आग्याकार, आगन्या नहीं लोपें लिगार ॥ ४२ ॥
हिवे तो भेष लीयोस लीयों, मो सूं दूर नहीं जायें कीयो।
सांकडी वणीया करूं संथारूं, लीधो भेष ते नही उतारूं ॥ ४३ ॥
इसडी मन गाढी धारें, साधु भेष नही उतारें।
वले करें तिणरा गुणग्रांम, थे म्हांरो कपट छोडायो तांम ॥ ४४ ॥
जो उण उपर आवें धेष, तो ज्यूंरो ज्यूं राखें भेष।
उलटो हुवें तिणरो बेरी, केइ इसडा छें पापी गेरी ॥ ४५ ॥
जो साध रो भेष न करे दूरों तो उण रो करें लोकां में फितूरों।
प्रसिध चावो करे लोकां मांहि, ओ ठग साध वणीयों छें ताहि ॥ ४६ ॥
ओ तो उघाडो छें दगादार, कूड कपट तणों छें भडार।
इणरी संगत न करणी लिगार, जिण मारग रों लजावणहार ॥ ४७ ॥
इम कहे सारा लोकां रे मांहि, जब लोक पिण जांणीलें ताहि।
इणमे कला न दीसें काई, इण मांडी छें ठगबाजाई ॥ ४८ ॥
ओ तो गुण विण वणीयो छे साध, दोष काढ्यां करे विषवाद।
ओ तो मांन वडाई में खूतो, भेष पेहरी नें यूहीं विगूतो ॥ ४९ ॥
असाधु थकों साधां ज्यूं पूजावें, ठग ठग लोकां रा माल खावें।
मांन बडाइ में नहीं मावें, ते तो दिन दिन भारी थावे ॥ ५० ॥
ग्रहस्थी थको वणीयों छें साध, तिणरे भव भव में होसी असमाध।
ते चिहूं गति मांहे गोता खावे, संसार में घणो दुख पावें ॥ ५१ ॥
पाडे माहा मोहणी कर्म नों बंध, पछें होय जाय मोह अंध।
तिणने सवली तो मूल न सुझे, दिन दिन इधिक अलुझें ॥ ५२ ॥
ग्रहस्थी साधु रो वेस वणावे, ठग ठग लोकां रा माल खावे।
भेष रें पाछे खाएं रोटी, आ चाल घणी छे खोटी ॥ ५३ ॥
भारी करमो जीव विशेखें, ओ साध वण्यों किण लेखें।
कदा निकाचत कर्म बंध जावे, तो उतकष्टो संसार वंधावें ॥ ५४ ॥
एहवा पापी नें दूर तजीजे, एहवा ठगरों वेसास न कीजें।
इणरी संगत आछी नाही, इणसूं भलो न होसी कांई ॥ ५५ ॥

एहवा दुष्टी जीव हुवें ताय, ते तों सावां सूं दे भिड़काय।
सावां रो हुवें उलटो वेरी, इसडो भारीकर्मो छे गेंरी ॥ ५६ ॥
वले बोलें घणों विकराल, अणहुंता कूडा कूडा दें आल।
इणरें भूठ तणी सुग नाहीं, पापी पाप सूं डरपें नहीं कांइ ॥ ५७ ॥
इणरी मूर्ख करसी परतीत, ते पिण चिहूं गति में होसी फजीत।
एहवारी मांने साची बात, तिणरे वेगों आवे मिथ्यात ॥ ५८ ॥
एहवा पापी सूं रहसी दूरा, ते तो परमेसर रा पूरा।
इसा नें मूंढे नही लगावे, तो समकत ने धको न थावे ॥ ५९ ॥
तिण कनें जाय बेसे बाइ, तिणरे वरत भांगण री लागे साई।
एकला री किसी परतीत, एकला ने जांण लेणो विपरीत ॥ ६० ॥
विगडायल फिरें एकलो, तिणने कदेय म जांणो भलो।
इणरी बात तो धुर सूं बूडी, तिणरी संगत कीयां दीसे भूंडी ॥ ६१ ॥
इण कनें बेठां आवें आलो, तिणरो कुण काढें निकालो।
बात लोकांमें फेंल जावें, बात पाछी ठिकांणें न आवें ॥ ६२ ॥
जे जे लज्यावंत छें बाई, तिण कनें न वेंसे जाई।
घरे आयां पिण न करे बात, ले लज्यावंत साख्यात ॥ ६३ ॥
इणसूं बात कीयां आछो नांहीं, वले चेचें हुवें लोकां मांहीं।
यूंही लोकांमें हुवें फिलूरो, अणहुंतों आल आवें कूरो ॥ ६४ ॥
तिण सूं डाही हुवे ते बाई, तिण कने नही वेसे जाई।
तिणनें मूढें पिण न लगावें, घरे आयां पिण नही बतलावें ॥ ६५ ॥
केकांतों वले कपटाइ मांडी, उघाडी करें ओघारी डांडी।
ओघे तो साधपणों नही लीधों, इणने उघाडो कांय कीधो ॥ ६६ ॥
साध रो भेष तो आप लीधो, तिण भेष नें दूरों न कीधो।
आप वणीयो रह्यो साध, कपट ज्यूं रो ज्यूं राख्यों अगाध ॥ ६७ ॥
लोक कांई जांणें डांडी उघाडी, लोक काई जांणे डांडी ढकवारी।
लोक तो देखे साध रो भेष, तिणने दांन दे हरख विशेष ॥ ६८ ॥
तिणतो ज्यूंरो ज्यूं राख्यो भेष, तो कपट में कपट विशेष।
तिणसूं पाधरो ग्रहस्थ रेणों, के सुध साध पणे लेंणो ॥ ६९ ॥
जो पोतीयों. बांधने मांग खावें, कपट दगों तो टल जावें।
पेढी मांडे वखांण सुणावे, ते पिण सावद्य आजीवका चवावें ॥ ७० ॥
तिण कनें जाय वखांण मंडावे, मुदें आगेंवांणी आप थावे।
जब इणरी देखादेख, लोक भेला हुवे वगेख ॥ ७१ ॥

जब केइ इनने उतम जांण, असणादिक देवें हरष आंण।
इणरी अजीवका सावद्य वधारी, लोक बूडवानें हुआ त्यारी ॥ ७२ ॥
इण कने जाय वखांण मंडावे, तो मिथ्यात घणो वध जावे।
इम कीयां मत बंध जाअे न्यारों, घणा लोकां ने करे खुवारों ॥ ७३ ॥
पोतीयो बांधने गांम गांम, मिथ्यात वधावें ठांम ठांम।
ओ पिण मगरूडाइ भांडें, साधांनेंइ वंदण छांडे ॥ ७४ ॥
घणा लोकांनें भिडकावें, साधांरी वंदण छोडावें।
तिणसूं मांगेनें खाएं तिणरी, संगत नहीं करणी जिणरी ॥ ७५ ॥
तिण कनें नही करणी समाई, तिण कने न वेंसणों जाइ।
इणरा सीलरी किसी परतीत, इण तो छोड दीधी छें रीत ॥ ७६ ॥
इणमे अवगुण दीसें अथाय, ते पूरा केम कहवाय।
ओ तो आगुणग्राही चोर अवनीत, उंधी चलनें वले विपरीत ॥ ७७ ॥
भेष में ठग ओलखवाण ताहि, जोड कीधी पूहना सहर मांहि।
सतावनो वर्ष संवत अठार, माह विद बीज सनीसरवार ॥ ७८ ॥

ढाल : २६

दुहा

साध साधवी श्रावक श्रावका, जिण सासण में तीर्थ च्यार।
ते धर्म ठगाइ करे नही, अभिंतर हीयें विचार ॥ १ ॥
त्यामे साध साधवी री गोचरो, निरवद जोग व्यापार।
असणादिक करे ते निरवद्य जोग छें, त्याने पाप न लागे लिगार ॥ २ ॥
श्रावक ने श्रावका तणो, खाणो पीणो छे इविरत मभार।
जे जे दरब श्रावक भोगवे, ते सावज जोग व्यापार ॥ ३ ॥
श्रावक भोगवें ते पेहले करण छें, भोगवावे ते दूजें करण जांण।
अणमोदें ते करण तीसरें, त्यांने पाप लागे छें आंण ॥ ४ ॥
केइ श्रावक खाए छे कमाय ने, केइ श्रावक मागेने खाय।
ते भेष राखे ग्रहस्थ तणों, आगे हूंतो ज्यूंरो ज्यूं ताय ॥ ५ ॥
केइ तो लोक ठगवा कारणे, कांइ तो राखे ग्रहस्थ रो भेष।
कांई भेष बणावे साधू तणो, ते ठगवाने लोक वशेष ॥ ६ ॥
ए अधवेसडो सांग आछो नही, जिण सासण रे मभार।
तिणरा ठागा ने परगट करूं, ते सुणजो विस्तार ॥ ७ ॥

ढाल

[विने रा भाव सुण सुण गूजे]

पागडी ने भगो दूर कीधो, माथे पोतीयो बांध लीधो।
मूंढे मूहपती बांधी साख्यात, भोली पातरा लीधा हाथ ॥ १ ॥
वले ओघो काख मांहें घाल्यो, लोकांरे घर वेहरण चाल्यो।
इण सांग पांछे मिले रोटी, आ चलगत घणी छें खोटी ॥ २ ॥
ओ तो वणीयो धर्म ठगों, धर्म री ठोर देवें छें दगो।
इण भेष सु ठागो चलावे, ठग ठग लोकां रो माल खावे ॥ ३ ॥
इण भेष सूं लोक ठगावे, धर्म जांणी ने आछो वेहरावें।
त्यां घररोइ माल गमायों, उलटो मिथ्यात वधायो ॥ ४ ॥
भोला तो जांणे हूवों छें धर्म, पिण उलटा लागा पाप कर्म।
इण भेष सूं लोक ठगावें, घर रो माल इविरत में गमावे ॥ ५ ॥

ओ जांणें मोनें वेंहरायों इणरें, उसभ कर्म लागे छे तिणरें।
इण भेष पाछें देवें दगों, ते तो निश्चेंइ छें धर्म ठगो ॥ ६ ॥
इण ओ भेष पहर्यों किण लेखे, आपरा किरतब साहमों न देखे।
ओ तो दीसें उघाडो ठगो, देवें छें घणां नें दगो ॥ ७ ॥
ओ तो ग्रहस्थ तणी पांत माह्यो, ओ तो सांग किण लेखें वणायो।
ओ तो एकंत रोट्यां रे काज, अधवेस वण्यों मुनीराज ॥ ८ ॥
वेस वणायों पेट रें काजें, निरलजा मूल न लाजे।
ते तो भेष रो भांडण हारो, कीयो जिण मारग मे विगाडो ॥ ९ ॥
ए तो सांग घणों छें अजोग, तिण सूं सरम में पड जाएं लोक।
तिण आगें भोला लोक ठगावें, केई डाहा पिण कर्म में खावें ॥ १० ॥
एहवो सांग पेहर्यां फिरे तास, भोला हुवे ते बेसें तिण पास।
डाहा हुवें ते मूंढें न लगावें, तिण ने पेंला पिण नहीं बतलावें ॥ ११ ॥
इणतो साख्यात आण्यों सांगों, जिण मारग माहे पाडीयों भांगों।
अर्द्ध वेस सूं पर घर जावें, तिणनें आ पिण लज्या न आव ॥ १२ ॥
केई कहें साधपणों छें भारी, ते लेवा री आसंग नही म्हारी।
तिणसूं श्रावक ना वरत लीधा, मोसूं पले जिसा व्रत कीधा ॥ १३ ॥
तिणसूं पोतीयो बांधीयो माथें, झोली पातरा लीधा हाथें।
ओघो काख में घाली जावां, गोचरी आंण मांगीनें खावां ॥ १४ ॥
इण विध करां आजीवकाय, म्हांमे फोडा न दीसें ताय।
म्हारा व्रत पिण चोखा पाल, सुखे गमावां छा काल ॥ १५ ॥
तिण नें कहें मांग खावो लोकां रो, ओतो छांदो निकेवल थांरो।
ओघो मूहपती पातरा हाथ, एं क्यूं ले जावो छो साथ ॥ १६ ॥
जब ओ कहे इण वांना लारे, म्हारो आग हुवे छें सारें।
हरष सहीत आगा बोलावें, रोटी पिण आछी तरें वेंहरावें ॥ १७ ॥
इण भेष पांछें रोटी आवें, इण भेष विण कुण वेंहरावें।
तिण सूं ओ भेष वणायों, हिवे कुमी रहे नही कायों ॥ १८ ॥
जब ओ कहें थे छो धर्म ठगो, भोला लोकां नें देवों छो दगों।
इण भेष सूं लोक ठगावें, जाणे म्हांनें धर्म थावे ॥ १९ ॥
थे तो जांणों छों पाप उघाडो, भेष लारे पाडो छो धाडो।
थे जांणों हूं इविरत माहे ल्याउ, इविरत मे पेंलां रो माल खाउ ॥ २० ॥
इण लेखें थे धर्म ठगो, भेष पेंहरी नें देवो छों दगो।
माहामोहणी बंधसी कर्मो, छूट जासी जिण धर्मो ॥ २१ ॥

टाको झलीयां हुवे अनंत संसारी, भव भव मांहे हुवेला खुवारी।
जिण सूं ओ भेष परो उतारों, इण भेख में धाडो म पाडो ॥ २२ ॥
जो थारे मांगेनें खांणो, तो पाधरो ग्रहस्थ होय जाणो।
जथातथ ग्रहस्थ होय जावें, तो कूडा कपट नही थावे ॥ २३ ॥
जथातथ ग्रहस्थ होय लेवें, दाता पिण ग्रहस्थ जांण देवे।
जब नही कांइ कपट ने दगों, तव नही कहीजे धर्म ठगो ॥ २४ ॥
कोइ कहे साध ह्वेंणो छे मोय, घर रा आग्या न देवे कोय।
तिणसूं अर्घ सांग वणउं, घणा घर रो मांगेने खाउ ॥ २५ ॥
जब घर रा काया होय जावे, मोनें आगन्या वेगी आवें।
इण कारण मागेने खाउं ताहि, जावजीव री नही मन मांहि ॥ २६
जब उण ने पाछो केणो ताह्यों, ओ थे सांग क्यांने वणायो।
मागेनें खाये ते थारे छादें, ओ भेप ले कर्म कांय वांवें ॥ २७ ॥
पाधरो ग्रहस्थ रो हुवे साग, रोटीया खाला थे मांग।
तो कूड कपट दगों टल जावे, जिण मारग री हलकी न थावे ॥ २८ ॥
ओर न्यात रो मांगेने खासो, ओर न्यात रो अन्न पाणी ल्यासो।
जव न्यातीला छोड देसी आसो, आग्या वेगी देसी तासो ॥ २९ ॥
इम सुणे कोई हरपें विशेष, तुरत उतारे साधु रो भेप।
कोइ कहे थोरा दिनां रे तांइ, भेप उतारणी आवे नाही ॥ ३० ॥
जब उणने वले केंणो पाछों, ओ भेप नही छे आछो।
पिण इतरो कर ले वेराग, पाचू विगे रा कर दो त्याग ॥ ३१ ॥
लूखोइ आहार जिण रो ल्यावो, तिण ने पाछां इतरो जणावों।
म्हा ने थां जिम ग्रहस्थी जांणो, म्हा रे इविरत माहे छे खाणो ॥ ३२ ॥
मो ने देख म भूलो भर्म, मो ने दीवां रो नही धर्म।
धर्म साधा ने दीयां थावें, तिण रा पाप कर्म खय जावें ॥ ३३ ॥
म्हे तों आगन्यां लेवा कीयो सांग, पार की रोटी खाउ छू माग।
इम कहे पार की रोटी ल्यावे, तो कूड कपट दगो टल जावे ॥ ३४ ॥
जो इतरी पिण करणी न आवे, भेप पिण उतारणी नावे।
जव तो साख्यात छे धर्म ठगों, घणा लोकां ने देवे छे दगो ॥ ३५ ॥
भोला लोक पिण तिण आगे ठगावे, आछो आछो तिणने वेंहरावे।
ओ पिण होय जाए गटकायों, तिणसू संजम लीयो न जायो ॥ ३६ ॥
ताजे ताजे घर गोचरी जावें, जठी तठी फिर आछो ल्यावे।
ओ तो भेप ले हिलीयो गटके, सरस आहार रे कारण भटके ॥ ३७ ॥

भेष ले हूवो उलटों भारी, सुखसीलीयों साताकारी।
जांणें इण भेष में मांग ल्याउं, ठग ठग लोकां रा माल खाउं॥ ३८॥
साधपणों पिण लेणी न आवे, उलटो साधां मे दोष बतावें।
साधां रों उलटो हुवे वेंरी, केई इसडा पिण होय जाएं गेरी॥ ३९॥
साधां नें पिण वंदणा छोडें, दुष्ट परिणांमे बेंसें गोढें।
छिदर जोवे दिन रात, आल दे काढे तुरत साख्यात॥ ४०॥
अणहुंता आंगुण बोलें तांम, गामां नगरा ठांम ठांम।
साधां री वंदणा छुडावे, लोकां ने साधा सूं भिडकावें॥ ४१॥
वले लोका आगे कहें एम, हूं साधपणो लेउं केम।
आगलइ साधां रे मांहि, साधपणो न दासें ताहि॥ ४२॥
तिणसूं श्रावक पणो पालां चोखो, कांइ मोडे रा जासां मोखो।
इम कहि लोकां नें भरमावें, ठागा सूं कांम चलावें॥ ४३॥
केई इसडा पापी होय जावें, सुध साधां सूं भिडकावें।
पोतें सुखसीलीयो होय जावे, तिणसूं साधपणों लेणी नावें॥ ४४॥
तिणसूं साधां रा अवगुण गावे, आपरा अवगुण सर्व छिपावें।
पछें संवलोतो मूल न सूझें, वले दिन दिन इधिक अलूझें॥ ४५॥
ओं तो विवध पणो बोले कूडो, धर्म नो छे दावानल पूरो।
भूठ बोलतों न डरे लिगार, इण आरे कीयो अनंत संसार॥ ४६॥
श्री जिण मारग छे साचो, एहवो भे वधीयो नही आछो।
एहवा ने देखने केई भोला, त्यांरो मन खाए डमडोला॥ ४७॥
जाणे म्हे पिण इसडा होय जावां, इण विध मागे म्हेइ खावां।
इम करतां करतां मत बांधें, मिथ्यात री वधोतर सांधें॥ ४८॥
साध मारग रा होय जाए धेखी, निजर वले साधां नें देखी
साध वधीयो तो मूल न चावे, हूंतो देखें तिणनें भिडकावें॥ ४९॥
जिण मारग रा दावानल पका, भोला नें देवें धर्म रा धका।
इसडा भारीकर्मा जीव, त्या दीधी नरक री नीव॥ ५०॥
तिणसूं अधवेसडों सांग भूंडो, इण सांग सूं घणा जाए बूडो।
ओ अधवेसडों सांग अजोग, तिणसूं वधें मिथ्यात रो रोग॥ ५१॥
इम सांभल ने नर नारी, इणरो संग न करणो लिगारी।
इण साग में मांगे नें खावें, ते घणा ने दगो लगावें॥ ५२॥
ओं भेष पेंहरी माग खावे, तिणनें भगवंत नही सरावे।
जो ओ भगवंत भेष सरावत, तो ओ भेष घणो वध जावत॥ ५३॥
भगवंत यांने केम सरावें, ओं तो उघाडो ठागों दिखावें।
घणा लोकां नें मिथ्यात पमावे, त्यांने भगवंत केम सरावे॥ ५४॥

ढाल : २७

दुहा

भेषधारी भागल तणा, श्रावक श्रावका अनेक छें ताम।
त्यामें केयक तो दुष्टी घणां, त्यांरा दुष्ट घणा परिणांम॥ १ ॥
त्यांनें परभव री चिंता नही, ते वोले नहीं मूंढ़ विचार।
सार्वां नें आल देता सके नही, पाप कर्म सूं न डरें लिगार॥ २ ॥
किण ही दुष्टी अग्यांनी जीवरे, साधां ने आल दीयो छे ताय।
तिणरी साची वात ठेंहराय नें, देवे लोकां मे फैलाय॥ ३ ॥
ठांम ठांम वकता फिरें, सावां रा अवगुण वोले दिनरात।
उतारे साधां री आंसता, कर कर भूठी वात॥ ४ ॥
तिण सूं भेषधारी राजी घणा, तिणनें श्रावक जांणें सुध मांन।
ज्यूं ज्यूं अवगुण वोलें सावां तणा, तिणने सरावे मूंढ अयांण॥ ५ ॥
तिणमें कूड कपट रा चाला घणा, ते पूरा पूरा केम कहवाय।
थोडासा परगट करूं, ते सुणजो चित्तल्याय॥ ६ ॥

ढाल

[श्रा अणुकम्पा जिण आगन्या मं]

केई नागडा निरलज वथोकडा छें, ते तो कजीयो करण ने वेंठां त्यार।
ते साधां नें आल देता नहीं संकें, आंगुण वोलता पिण न डरें लिगार।
एहवा दुष्ट श्रावक छें भेष धार्‍यां रा*॥ १ ॥

ते किरतघनी संसार रे लेखें, ते न गिणे किणरोइ कीयों उपगार।
ते साधां नें आल देता नही संकें, भूठ 'वोलता न डरें लिगार॥ २ ॥
चोरी जारी आदि कुलंछण तिणमें, वले वेसासघाती घणा दगादार।
ते साधां ने आल देतां नहीं संके, ते पाप कर्म सूं न डरे लिगार॥ ३ ॥
केई कजीयाखोर वथोकडा पटनट, ,रणभंज रिणा तणा भांजणहार।
ते साधां नें आल देता नहीं संके, तिणारें परभव री चिंता न दिसे लिगार॥ ४ ॥
वले चाडीखोड चुगल हुवे दुष्टी, वले कूड ने कपट तणो भंडार।
ते सावां ने आल देता नहीं संके, तिण जीतव जन्म दीयों छे विगाड॥ ५ ॥
तिण री साख ने परख नहीं हुवे लोकां में, वले कजीया राड ने वेठां छें त्यार।
ते सावां नें आल देता नही संकें, वले जाता भगडा तणा लेंणहार॥ ६ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

हिण रा वोल्या री परतीत नही छें लोकां में, इत्यादिक अनेक आंगुण रो भंडार।
ते साधां ने आल देतो वही संकें, तिणरी वात मांने ते बूडा कालीवार ॥ ७ ॥
एहवो भेषधारयां रे श्रावक हुवे तो, तिणनें तों सगला में आगे कीयो राखे।
तिण कने साधां ने आल देणा सीखावे, पछे ओ तो फिरीयो २ अकाल भापें ॥ ८ ॥
एहवा दुष्टी जीव नें कुवद सीखावे, आपतो बुगलध्यानी हो जावें।
पछें लोक जांणें ओ निरापेखी छें, पिण छांनें २ कूड कपट चलावे ॥ ९ ॥
ऐसा ही सेवग ने एंसाइ सांमी, जेसा कुं तेंसा मिलीया छे आय।
ते कलेस कदागरो वधीयां छे राजी, तिणमें दुष्टी हुवे तिणने देवे लगाय ॥ १० ॥
एहवा दुष्टी जीव छे भारीकर्मां, त्या छोड दीधी छे लोकां री पिण लजीया।
तिण दुष्टी जीव ने छेरवे कोई, जव ओ त्यांरी वेठो छे करवा ने कजीया ॥ ११ ॥
एहवा दुष्टी अग्यांनी जीव छे पापी, तिण ने भलो मिनप तो छेडवे नांही।
तिणने छेडवीयां तो अवगुण होसी, भलो ह्वे तों म जांणजो कांई ॥ १२ ॥
ते तो निदक साधां तणो छे निरंतर, वले आल देवण ने उदमी पूरों।
वले रात नें दिवस छे धेषी साधां रो, ते नरक निगोद सूं नही छें दूरो ॥ १३ ॥
साधा रे आल अणहुंता देवे छें, तिणरे नियमाइ निश्चे भूंडो ह्वे तो जोणों।
तिणरे मूढें तों दलदर बोले उघाडों, वले घरमें पिण दलदर धसतों जांणों ॥ १४ ॥
ले साधा रो निंदक दुष्ट घणो हुवे, तिणनें भव भव में दलदरी ह्वे तों जांणो।
वले भव भव में विजोग पडसी वालां रा, तिण मांहे संका मूल म आंणो ॥ १५ ॥
वले तांणां तांण मिटे नही तिणरी, लारे लगी विपद रहें लागी।
जिहां जासी तिहां दुखीयो होसी, वले भव भव में होसी घणों दोभागी ॥ १६ ॥
एहवा दुष्टी ते श्रावक वाजे लोकांमें, मुहपती वांधनें बोलें मोटका कूडो।
वले साधां ने आल देता नही सके, त्यांरा श्रावक पणमें पड गई धूरो ॥ १७ ॥
सुध साधांने आल दे अन्हाखी, वले वकवो करे छें दिन नें रात।
भूठ रा पाप सूं न डरे पापी, सुध साधां थकी पडवजीयों मिथ्यात ॥ १८ ॥
एहवा विकलाने विकल आय मिलीया जव, मन माने ज्यूं गालां रा गोला चलावें।
ते तो गाडरी प्रवाह ज्यू होय रह्या छे, उंट रे केडे उटडां चलीया जावें ॥ १९ ॥
त्यांमे केयक दुष्टी अतही घणों हुवें, ते आल देतों संके नही तिलमात।
ते भूठा भूठा आल लोकां ने सीखावें, ते पिण वकवोकरें दिनरात ॥ २० ॥
त्यांरो श्रावक साधां रे आल देवे जव, एं पिण मन मांहे हरषत थावें।
काम पडे जव न्यारा होय जावे, पिण कुकला ने कुन्द तों एहीज सीखावें ॥ २१ ॥
थोरी वावरी केई सिकार जावे जव, सिकारी कुत्ता ने साथे लेजावें।
आप तो गोली वावें छें अलगोज उभों, पछें सिकारी कुत्ता त्यां पासें लगावें ॥ २२ ॥

ते स्वान तिण मृगलादिक रांक जीवांनें, विनास करें जीवां मारे छें तांम ।
त्यांनें भारुडी नें देवें मांस कुवावें, ते सान आवें छें सिकारयां रें कांम ॥ २३ ॥
तिण स्वांन थकी सिकारी छें राजी, तिण सिकारी नें स्वांन थकां कांम आवें ।
ज्यूं त्यांनें श्रावक साधांनें आल देवें जब, गुरु तिण थकां फलफूल होय जावें ॥ २४ ॥
सिकारी तो स्वांन नें बरज राखें जब, स्वांन तो किणही जीव री न करें घात ।
ज्यूं गुरु तिण थांरा श्रावकांनें बरजें, तो गुरु तिण साधां नें आल देता रहि जात ॥ २५ ॥
सिकारी स्वांन नें बरजें किण लेखें, थांनें तिण छें जीवां रा मारणहार ।
ज्यूं गुरु तिण श्रावकां नें बरजें किण लेखें, पोतेंइ आल देता न डरें लिगार ॥ २६ ॥
थांरा श्रावक साधां नें आल देवें ते, तिणरी बात नें साच मानें छें तांम ।
तिणनें निरखां तो पूरो हाथे नहीं आयो, तोही कहिता फिरे छें गांम गांम ॥ २७ ॥
भेषधारी साधां नें आल देवें ते, त्यांरा श्रावक त्यांरी बात मानें छे तांम ।
तिण आल सूं कुगुरु होयनें राजी, पछें गुरु तिण कहिता फिरें छें ठांम ठांम ॥ २८ ॥
कांई अनेरो आल साधां नें देवें ते, तिण आलनां थकी पोतें होय जावें ।
पछें क्रिया क्रिया अज्ञांण लोकां नें, तिण आल नें साचो करे दरसावें ॥ २९ ॥
थांरो परचा मांहि छें इसडों अंधारो, साधां नें आल दें तिणनें जांणें छें पको ।
तिण रो न्याय निरणों तो कुछ न कांई, थांनें कर्म कीयां छें मोटो धको ॥ ३० ॥
मारीकलों नींद छें मूंढ मिथ्याती, ते साधां नें आल देवणनें सूर ।
त्यांनें कुगुरु निर्दया छें पूरा पापंडी, सांनव लो सब खोयनें कूडा छें पूर ॥ ३१ ॥
कहि कहि नें कितरो एक कहूं, साधां नें आल दे मारे कर्मा अन्धारी ।
ते कुरीयां मांहि मोटो कुगुरु छें, ते मनसूत्र वीर गया छें भाखी ॥ ३२ ॥
जोड कीधी छें आल रा फल ओलखावन, मेवाड मांहि पुर सहर मझार ।
संवत अठारें सत्तावनें वरसें, आसोज विद अमावस नें बुधवार ॥ ३३ ॥

ढाल : २८

[रे जीवा मोह अणुकम्पा न आणिये]

सुध साध साधवीयां री निंद्या करे, वले देवे अणहूंता आल जी।
ते यूही बूडे छे बापडा, बांधें उसभ करमां रा जाल जी।
ते तो माठी गति रा प्रावणा* ॥ १ ॥
ओर हर कोइ री निंद्या करें, तो पिण बंधे पाप रा पूर जी।
तो साधां रा निंदक पापीया, ते तो जासी वहती रें पूर जी॥ २ ॥
साची ने साची कहे, ते तो निंद्या म जांणो कोय जी।
अणहूंती कहें कोइ पर तणी, ते निंदक पापी सोय जी॥ ३ ॥
खाटा खेटो करें नित साध थी, वले अवगुण बोले दिन रात जी।
घण लोकां रा व्रंद मिलें तिहां, करे साधां री तात जी॥ ४ ॥
जो उ गुण सुणे साधां तणा, तो उणरे लागें अभितर लाय जी।
रोम रोम मांहे घणो प्रजलें, वले मुख देवे कुमलाय जी॥ ५ ॥
खीटोर खुराइ करें घणी, छल छिदर जोवें दिन रात जी।
गुण ग्राम करे लोक साधां तणां, तो इणरें छाती मे न समात जी॥ ६ ॥
कोइ जस कीरत करे साधां तणी, तिण सूं पिण राखे वेष जी।
ते तो वीद वण्या छे नरक ना, त्यांनें अरू बरू ल्यो देख जी॥ ७ ॥
अणहूंतो अवगुण सुणें साधनो, तिण अवगुण नें साचो ठहराय जी।
पछे उजम आंण उदम करें, घणा लोकां मे देवे फेलाय जी।॥ ८ ॥
न्याय निरणो कीयां विण पापीया, बोलें विरूआ वेण जी।
त्यांने चिंता नहीं परभव तणी, त्यांरा फूटा अभितर नेंण जी॥ ९ ॥
उण रे साध निजर पडें जदी, जब जागें अभितर धेष जी।
मांठा परिणामा मूंह विगाड दे, जाणे वेरी ज्यूं वेर वशेष जी॥ १० ॥
अनेक जीवां रें आल अनेक दे, एक साध रे आल दें एक जी।
तो पिण भारी पाप छे एहनो, समझ जो आंण ववेक जी॥ ११ ॥
साधां री निंद्या करे तेहने, कडवा फल लागें आंण जी।
ते थोडासा परगट करूं, ते सुणजो चुतर सुजांण जी॥ १२ ॥
केई धुर सूं तो जाए नारकी, तिहां खाए अनंती मार जी।
पछे जाय पडें तिरजंच में, तिण दुख रो कहितां नावें पार जी॥ १३ ॥

---

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

नरक विचें तिरजंच में, दुख अनंत गुणा छें तांम जी।
काल अनंतो तिहां रहें, तिहां सुख रो नहीं कोइ ठांम जी॥ १४॥
कदे नरक निगोद थी नीकलें, पांमें नर अवतार जी।
तिहां पिंण दुख पांमें घणा, ते कहितां नांवे पार जी॥ १५॥

ढाल : २६

दुहा

केई सुध साधां रा समदाय मे, केई हुवें अवनीत अजोग।
तिणने गुर काढें गच्छ वाहि रें, तिणने फिट फिट करें सहू लोग ॥ १ ॥
ते तो च्यार तीरथ बारें हुवों, तोही मन मांहे अति अभिमांन।
तिणनें समदिष्टी साध गिणें नहीं, तो पिण कर रह्यो मूंढ गुमांन ॥ २ ॥
सुध साधां नें ढीला कहें, जाबक कहें साधां नें असाध।
रात दिवस त्यांरी निंद्या करे, करे घणों घणो विषवाद ॥ ३ ॥
ते पोंतें विकलाइ करें घणी, हूओ आचार थी भिष्ट।
सुध सरधा पिण विगडे गइ, समकत पिण हुइ छें निष्ट ॥ ४ ॥
केयक भिष्ट हुवा छें इण विध विधे, सेवा लागा दोष अनेक।
ते थोडासा परगट करूं, ते सुणजो आण ववेक ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या मे]

नीसरणी मांडनें चढे उतरें छें, रात दिवस मांहें बार अनेक।
तिण आगना लोपी श्री अरिहंत नी, तिणरो भिष्ट हूवो छें आचार ववेक।
तिणने साधु किण विध सरधीजे* ॥ १ ॥
जो साध निसरणी चढे उतरें तो, तिणने मोटों दोष कह्यों जिणराय।
दसवीकालक पांचमें अध्येने, सठसठमी गाथा मांय ॥ २ ॥
तीन गाथा तिहां लगती कही छें, तिहां छकाय जीवां री कही छे विराध।
वले हाथ पगादिक साधू रा भागे, तिण साधु रे श्री जिण कही असमाध ॥ ३ ॥
नीसरणी तले कीड्यां नें लटादिक, जीव अनेक भेला हुवें आय।
चढतां उतरतां नीसरणी सरकें, जब अनेक जीव तिहां मारीया जाय ॥ ४ ॥
वले नीलण फूलण चोमासें आवें, हेठें उंची नें गात्रादिक मांय।
वले छाट लागे मेह बूठां चोमासे, वले विवध प्रकारें अजयणा थाय ॥ ५ ॥
ते तो सेषाकाल नें वले चोमासा मांहे, सांप्रत दोष सेवे छे साख्यात।
तिण दोप ने दोष न सरधे अग्यांनी, तिण चोडेंइ पडिवजीयो छे मिथ्यात ॥ ६ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

वले कलप मरजादा उलंघें अग्यांनी, मनमांनें जिता दिन रहिवा लागों।
वले झूठी परूपणा करें लोकां में, तिण छोड दीयों श्री जिणवर मागो॥ ७॥
कहें साठ वरसां मांहें साध हूवो छें, तिणने एक ठिकांणें रहिणों थापे।
वले सूतर रो नांम ले ले अग्यांनी, एहवो झूठ बोले वीर वचन उथापें॥ ८॥
सूतर मांहें कठें नहीं चाल्यों, साठ वरस रा नें रहिणों एक ठिकांणे।
इण बात तणों कोइ निरणों करें तो, तिण झूठाबोला नें झूठा बोलो जांणें॥ ९॥
निसंक सूतर रो नांम बताए, भोला लोकां नें उपजावें वेसासो।
लाज सरम छोडे नें अग्यांनी, चोमासा उपर थाप्यों चोमासो॥ १०॥
एक मास रही नें विहार कीधो छें, विमणा दिन बारें काढ्यां विण तिहांइज आवें।
सेषा काल पिण महीना थी इधिकों रहे छें, तिण भागल नें हटक में कुण चलावें॥ ११॥
हालण चालण री सक्त घटें जब, साधु ठाणापती रहें एक ठिकांण।
वरसां रो नांम न चाल्यों सूतर में, कारण विनां रहें मूढ अयांण॥ १२॥
नव दीषत सामायक चारित वालो, तिण कनें सिज्झातर रो आहार मंगावें।
ते सिज्झातर रो आहार तिणनें खवावें, इसरो चेला नें आचार सीखावें॥ १३॥
सिज्झातर रो आहार जांण जांण खवावें, तिणमें दोष कहें तिणनें कहें अजांण।
ओं तो कल्प आचार साधु रो न जांणें, इसरी कहे मूंढ कर कर तांण॥ १४॥
ए सांप्रत दोष उघाडो दीसे, तिण दोष नें कर लीधो छें आसांन।
वले मन मांहें जांणें हूं प्रवीण पको, हीण बुधी थकों करें थोथों गुमांन॥ १५॥
चोवीसोइ तीथंकर त्यांरा साधां नें, सिज्झातर पिड न कल्पें लिगार।
नव दिषत गिलाण नें बालक बूढा नें, त्यांनें पिण नही खांणो सिज्झातर आहार॥ १६॥
मोटो दोष जांणें छें कमाड खोल्यां में, तो पिण हाथां सूं कमाड खोलवा लागो।
जीव हिंसा करतो नहीं संक्यों, हिसा कीयां थी पेंहलों महावरत भागो॥ १७॥
कोइ पूछे तो कूड बोलें कपटी, म्हें तो जेंणा सूं हाथे खोल्यों कमाड।
मोंनें पाप न लागो जेंणा सूं खोल्यां, इण विध झूठ बोलनें होय जाये पार॥ १८॥
कलाल तणो कुल मुख सूं निषेध्यों, तिणरो आहार लेवा नें होय गयो त्यारी।
तिणने जातो जांणी नें ग्रहस्थ निषेद्यों, थे म करो इण मारग री हाथां सू खुवारी॥ १९॥
ग्रहस्थ वरज्यों जब जातों रह्यों छें, पिण उण रा परिणांम एहीज जाणो।
दुगच्छणीक रो आहार लेतो न संके, तिण भांग दीधी श्री ज़िणवर आणो॥ २०॥
मेंणा रा घर री गोंचरी थापी, छाने छानें खाधो मेणा रो आंण्यों अहार।
वले मेंणा री गोचरी करवा ढूको, ते पिण लोकां में हूवो छें उघार॥ २१॥
लोकां मांहें परूपणा प्रसिद्ध लीधी, हूं तो मेंणा रो आंण्यो न खाउ अहार।
हूं इणनें अहार देउं पिण इण रों न लेउं, इण झूठ तणों पिण हूवों उघार॥ २२॥

कोइ गांम बारें जाय दिष्या लीधी, कोइ साध काजें सूंखडी मोल ल्यायों।
ते सांप्रत दोषीली सूंखडी लेतां, लोक लज्या पिण छोडी छें तायो॥ २३॥
जो दिष्या लेतो हुवें तिणरो न्यातीलो, तिणरें तांइ आंण नें तिणनें देवें कोय।
जो इधिकी आंणें ओर साधां काजें, ते वेहरें तो साधु ने दोषण होय॥ २४॥
दिष्या लेतो थको आहार साथे लेवें तो, आ पिण लोकां में आछी न लागें।
वले संका पडें ओर सगला साधां री, तिणरो न्याय निरणो करे किण किण आंगें॥ २५॥
ओर साधां रे काजे मोल लेइ नें, दिष्या लेंणवालो ले नीकले साथ।
ते सूंखडी साराइ साध खाए तो, तिणने निश्चेंइ दोष कह्यो जगनाथ॥ २६॥
पेंहलां तो गुर चोलपटादिक धोवें, त्यांरी देखा देख चेलो पिण धोयो।
जब आप धोयो ते सहिल गिणनें, चेला सूं तोर ने लोकां मांहि विगोयों॥ २७॥
जब चेलो कहे हूं तो थांहरी देखादेखी, चोलपटादिक धोयो निसंक।
जो दोष हुवे तो दोयां में दोष, म्हां एकला मांहे नहीं छें वंक॥ २८॥
जब गुर कहे आगें धोवता आपे, ते हिवडां उवा रीत छे नांय।
जब चेलो कहें आ तो खबर नही मोने, थे पेंहला मोने कह्यो नही कांय॥ २९॥
कपडा धोवण रो गुर चेला रे, एक एक रो मांहो मां कीयो उघाड।
जब लोकां माहे पिण भूंडा दीठा, वले मांहो मां कीधा कजीया ने राड॥ ३०॥
सोभा विभूषा करवा नें काजे, साध थइ कपडादिक धोवें।
तिण आगना लोपी श्री अरिहंत री, तिणरी चिहूंगति मांहे खूरावी होवे॥ ३१॥
अनंता सिधां री साख करने, चेला करण रा कीया पचखांण।
ते पिण सूंस भागे ने चेला कीधां, तिण अनंता सिधा री भांगी आंण॥ ३२॥
सूंस भागेने चेला करतो नही लाज्यो, ते तो होय गयो निश्चेइ भागल भिष्टी।
ते पड गयों च्यार तीर्थ बारें, तिणने किण विध साधसरधें समदिष्टी॥ ३३॥
सगला साध भेला होय मरजादा बांधी, तिण मरजाद मे सूंस कीया अनेक।
ते पिण सूंस सगलाइ भाग्यां, वले झूठ बोले मूढ विनां ववेक॥ ३४॥
सगला साधां मिल नें मरजाद बाधी, सगलाइ साध कीया पचखांण।
अनंता सिधां री साख करेने, आपे सगलाइ चालां यां सूंस प्रमांण॥ ३५॥
सगला सूंस करे मरजाद बांधी, ते सूंस लिख्या छे पांना रे मांहिं।
तिण लिखत हेठे सगलां आषर कीधा, अनंता सिधां री साख ठेहराइ॥ ३५॥
ए सूंस मरजादा भांगें तिणनें, गिणवों नही च्यार तीर्थ मांही।
वले तिणनें निंदक जांणवो च्यार तीर्थ रो, तिणनें वांदें त्यानें पिण आगना नांहीं॥ ३७॥
इसडा सूंस कर नें पांना माहे लिखाया, अनंता सिधां री साख करनें ताय।
ते पिण सूंस सगलाइ भांग्या, वले जांणी जांणी बोलें मूंसावाय॥ ३८॥

कदे तों कहे हूं इण लिखत में नाहीं, कदे कहें म्हें लिखत आरे न कीधों।
कदे कहे म्हे लिखत मे आखर न कीधां, कदे कहें म्हे एक ससो कर दीधों ॥ ३६ ॥
कदे तो कहे म्हे सरमासरमी, लिखत हेठें आखर कीया ताय।
कदे कहें मोनें कहि नें करायों, कदे कहें म्हे' लिखीयों सांकडें आय ॥ ४० ॥
कदे कहें मोसूं कपटाइ दगों करेनें, लिखत रे हेठें आखर कराया।
कदे कहें मोंनें एकलो करता जांणी नें, म्हें डरतें थकें आखर कीया छे ताया ॥ ४१ ॥
कदे तो कहें हूं यांरां टोला मांहें रह सूं, तठा तांइ म्हांरें छें पचखांण।
कदे कहें लिखत म्हांरें तांइ कीधों, ए सगलाइ मो उपर कीधा मंडांण ॥ ४२ ॥
कदे कहें म्हारें उसभ कर्म उदें आया, जब लिखत हेठें आखर लिख दीया ताय।
आतो भोलप होय गइ म्हांरी, तिण बात नें हूं रह्यों छूं पिछताय ॥ ४३ ॥
कदे तो कहे हू सगलाइ चेलां में, हूं वडो हूंतों तिणनें मूंदें न कीधो।
हूं छोटां री आग्यां मे किण विध चालूं, तिण सूं टोलों म्हे' छिटकाय दीधो ॥ ४४ ॥
कदे तो कहें हूं रह्यों यांरा टोला में, आत्मार्थी जोवण कांम।
पिण आत्मा रो अर्थी कोइ न दीठों, तिण सूं एकलो नीकल्यो टोला सूं तांम ॥ ४५ ॥
कदे कहें अविनांरी ढालां जोडी ते, सगली ढालां मो उपर कीधी छें ताहि।
चेलां नें कह्यों ठांम ठांम कहो थे, हिवें हूं किण विध रहूं टोला रे मांहि ॥ ४६ ॥
इत्यादिक झूठ बोले छें अनेक प्रकारें, परभव रो डर नांणें मूल लिगार।
जांणी जांणी झूठ बोलें छे अग्यांनी, खोय दीयो तिण संजम भार ॥ ४७ ॥
अनंता सिद्धां री साख करे सूंस कीधा, ते सूंस भागे नें हूवों एकलों।
ते हुय गयों अपछंदो अवनीत, तिणनें साध सरध्यां किम होसी भलो ॥ ४८ ॥
सुध साधां ने ढीला कहि कहि अग्यानी, आप भागल थको उतकष्टों वाजें।
तिणनें च्यारूइ तीरथ साध न जांणें, तो पिण नरलजो मूल न लाजें ॥ ४६ ॥
ज्याने ढीला जांणें त्यांरा टोला रा भागल, त्यां भागलां मे मन जावा रो कीधो।
त्यां सूं नरमाइ करे कह्यो मोंनें ल्यों थे, त्यां पिण तिणनें माहें नहीं लीधो ॥ ५० ॥
थे कहो तो दूर करूं म्हांरा चेला, थे कहो ते थानें परतीत उपाय।
थे मोनें चलावो जिण रीत चालूं, थे मोनें मांहें ल्यो हूं थां मांहें आउं ॥ ५१ ॥
दोय वार गयों त्यांमें जावानें काजें, जातो अनेक कोसां रो पेंडों कीधो।
त्यानें अनेक वार कह्यों मोनें मांहें ल्यो, तो पिण तिणनें त्यां माहें न लीधो ॥ ५२ ॥
ज्यानें ढीला जांणें त्यांरा टोला रा भागल, उतकष्टो प्राछित छें त्यारें मांहि।
त्या भागला पिण तिणनें मांहे न लीधों, तिण भागल री भोलां खबर न कांइ ॥ ५३ ॥
पांचू विगेंरा त्याग कीया तेही भांग्या, वले सुखडी रा सूंस ते पिण भांग्यां।
सूंस यांने लिख्या ते पांनो ही फाड्यों, रस ग्रिधी थकें एहवा सूंस उलांग्यां ॥ ५४ ॥

उषधादिक वासी राखवा लागों, ते पिण कपटाइ करने ताहि।
धणी रो ओषध धणी नें पाछों न सूंप्यो, आप रें काजे सूंप्यो अनेरा नें जाय ॥ ५५ ॥
इणविध नित रो नित आंणनें मेले, धणी नें पाछो न सूंपे जाइ।
घणा मास दिवस तांइ सेव्यों निरंतर, वले तिण मांहे दोष न सरधे छें ताहि ॥ ५६ ॥
इसरा मोटा मोटा दोप जांणेनें सेवे, तिण भिष्टी री भोला करसी परतीत।
तिणनें साधु सरधी तीखूतो कर वांदे, ते पिण चिहूं गति में होसी घणां फजीत ॥ ५७ ॥
सुध साधाने मूर्ख ढीला परूपे, पोते भारी भारी दोष सेवन लागों।
वले कुडा कुडा आल देतों नही सकें, ते तो विरत विहूणो होय गयो नागो ॥ ५८ ॥
तिण भागल नें ओलखावण काजे, जोड कीधी नेणवा सहर मझार।
संवत अठारे वरस अडताले, महाविदि अमावस ने सोमवार ॥ ५९ ॥

ढाल : ३०

दुहा

सत्रुंजो पर्वत कह्यो, तीर्थ न कह्यो जिणराय।
जो संका पडें इण वात री; तो जोवो सूतर रे मांय ॥ १ ॥
तिहां एकंत जायगां जांण ने, घणा साधां कीयां संथार।
तिहां केवल ग्यान उपजाय नें, पोहता मुक्ति मझार ॥ २ ॥
केइ अग्यांनी इम कहें, सत्रुंजो पर्वत वंदनीक।
तिहां कांकरे कांकरे सिध हुवा, तिण सूं ओ तीरथ ठीक ॥ ३ ॥
तिण सूं तीरथ करां जातरा, जावां दूर थकी चलाय।
वांदां पूजां सत्रुंजो भाव सूं, तो पातक दूर पुलाय ॥ ४ ॥
इण विध विकलाई करें, जेंनीं नाम धराय।
भूला अग्यांनी भर्म में, जिण धर्म री खवर न काय ॥ ५ ॥
सत्रुंजा पर्वत मझै, साधु सीधा अनेक तिण ठांम।
वंदनीक तो सिध साध छें, पर्वत वांदें अग्यांनी तांम ॥ ६ ॥
साधु सीधां जायगां वंदनीक हुवें, तो कुण कुण जायगां वंदनीक।
ते चित्त लगाय नें सांभलो, ज्यूं पडें पाखंड री ठीक ॥ ७ ॥

ढाल

[रे भवियण सेवो रे साध सयाणा]

जो थें सत्रुंजा पर्वत नें बांदो, तो वांदणा द्वीप अढाई।
वले बांदणा थांनें समुद्र दोनूंई, साधु सीधा एती ठोड मांहि रे।
भवियण जोवो रे हिरदे विचारी, थें कांय करो आतम भारी रे।
कुमत्यां हिंसा नही सुखकारी रे* ॥ १ ॥
लाख पैंतालीस योजन मांहि, साधु सीधा छे सगली ठामो।
सत्रुजा ज्यूं सगली जायगां नें, वांदे पूजै करणा गुण ग्रामो रे ॥ भ० २ ॥
थांरे लेखे सगली जायगां वंदनीक, हिव पग मेलसो किण जागां।
जो थें वंदनीक जायगां ऊपर पग मेलो, तो अकारज करवा कांय लागा रे ॥ भ० ३ ॥
वंदनीक\ जायगां ऊपर पग मेले, वले करे कारज अनेक।
मल मातरो तिण ऊपर न्हांखै, बूडो छो विना विवेक रे ॥ भ० ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सत्रुंजा नें बादे हाथ जोडी नें, तिण ऊपर चढे जोड़ी सूधा।
वले मल मात्रो तिण ऊपर न्हांखै, ए तो पूरा अज्ञानी ऊंधा रे॥ भ० ५॥
ज्यांनें बादे ज्यांरा इज सिर ऊपर, पग देता न हुवे पाछा।
इसडों अंधारो छे घट जेहने, डाहा किम जाणे साचा रे॥ भ० ६॥
थें सत्रुंजा रे सिर पग मेलो, तिणनें तीर्थ थापे बांदो पूजो।
आप थापी नें आप उत्थापो, तो डाहो कुण माने दूजो रे॥ भ० ७॥
साधां रा तो गुण बंदनीक, त्यांरी काया पिण नही बंदनीक।
तो जायगां बंदनीक किस विध होसी, थानें आ पिण नहीं छै ठीक रे॥ भ० ८॥
साधु सीधां सूं जायगां बंदनीय ह्वै, अकारज कियां सूं नही बंदनीक।
इण लेखे तो मनुष्य क्षेत्र में, कोइ जायगां नहीं बंदनीक रे॥ भ० ९॥
सगली जायगां मांहें अकारज हुवा, साधु पिण सीधा सर्व ठाम।
अवंदनीक जायगां थांरे किसी थापीजे, थें किसी जायगां बादो शीश नाम रे॥भ० १०॥
तो पांच तीर्थ जितरी जायगां में, आगे हुआ अकारज अनेक।
जो जायगां बिगड़े अकारज कियां तो, हिवे तीर्थ न बांदणो एक रे॥ भ० ११॥
सत्रुंजो [१] गिरनार [२] अष्टापद [३], समेत [४] शिखर आबु [५] बांदे।
ए पांच तीर्थ नें थेटरा कहे छें, वले अनेक थाप्या आप छांदे रे॥ भ० १२॥
ए आपरे छांदे तीरथ थाप्या, कर कर कूडी टेको।
वले नाम लेवे सूत्रां रो चोडे, पिण सूत्र में नही एको रे॥ भ० १३॥
शिव मारग ने मुसलमानां मे, आपणा कुल साहमो देखे।
त्यांरा पुराण कुराण मांहें कह्यो तिणसूं, त्यां तीर्थ थाप्या इण लेखे रे॥ भ० १४॥
त्यांरी देखादेख तीरथ थापे, आप छादे झाल रह्या टेको।
ते जिनेस्वर देव तो नही थाप्यो, शंका हुवे तो सूतर मांही देखो रे॥ भ० १५॥
हरकेशी जी ने ब्राह्मणा पूछयो, स्नान करवा नें द्रह कुण थायो।
कुण तीर्थ कीधां थकां म्हांरा, जन्म मरण मिट जायो रे॥ भ० १६॥
जब यां जिन धर्म रूपियो द्रह बतायो, भली लेश्या रूप पाणी जाणो।
इण स्नान कियां जीव निर्मल होसी, तिण सूं पामे पद निर्वाणो॥ भ० १७॥
तीर्थ करो तुम्हे शील रूपियो, तिण सूं जीव हुवै निकलंको।
शीतलीभूत हुवे मुगत मे जाये, तिण मे म राखो शंको रे॥ भ० १८॥
शील रूपियो तीर्थ श्री जिन भाख्यो, तिण माहे नहीं छे कूडो रे।
ओर तीर्थ सर्व लोकिक रा जाणो, तिणसूं कर्म न हूवे पूरो रे॥ भ० १९॥
शील रूपियो तीर्थ थापेने, यांनें आणिया मारग ठायो।
यांरा कुल रा तीर्थ सर्व छडाय में, सत्रुंजादिक नही वतायो रे॥ भ० २०॥

जो सत्रुंजादिक तीर्थ कियां सूं, कटता देखता कर्मो।
तो ओहिज तीर्थ त्यांनें पिण कहिता, त्यां कीधां बतावत धर्मो रे॥ भ० २१॥
शील रूपियो तीर्थ श्री जिन भाख्यो, उत्तराध्येन बारमों जोवो।
थें तीर्थ पर्वत पहाड़ थाप नें, नर भव नें कांय खोवो रे॥ भ० २२॥
वले थावरचा अणगार नें पूछ्यो, सुखदेव संन्यासी आयो।
जात्रा तुम्हारे छे के नहीं छे, सु यात्रा म्हांरे छे सुखदायो रे॥ भ० २३॥
जब सुखदेव कहे थांरे जात्रा किसी छे, किसी जात्रा करे काटो कर्मो।
जब सुखदेव संन्यासी नें कहे थावरचा, तूं सांभल म्हांरी जात्रा धर्मो रे॥ भ० २४॥
ज्ञान दर्शण चारित तप नें संजम ते, इत्यादिक सारा गुण निरदोखो।
यांरा जतन करां ते जात्रा छे म्हांरे, तिण सूं पामें अविचल मोखो रे॥ भ० २५॥
यां पिण ज्ञानादिक गुण री जात्रा कही छे, कांइ बाकी न राखी विशेखो।
सत्रुंजादिक री जात्रा नहीं दाखी, गिनाता रो पांचमो अध्येन देखो रे॥ भ० २६॥
ठाम ठाम सिद्धान्त में जात्रा कही जिहां, ज्ञानादिक गुण बताया।
आ जात्रा उत्थापे पर्वत पहाड़ थापे, इसडा गोला कांय चलाया रे॥ भ० २७॥
भगवंते सूत्र मांहि निरंवद्य, तीर्थ जात्रा बताई।
ते तीर्थ जात्रा थां सूं करणी नावें, तिण सूं मांडी थें विकलाई रे॥ भ० २८॥
साधु साधवी श्रावक नें श्राविका, ए च्यारूं तीर्थ जिनजी बताया।
थें पांचमों तीर्थ सत्रुंजादिक थापे, इसडा गोला कांय चलाया रे॥ भ० २९॥
ए च्यारूं तीर्थ रा गुण तेहिज तीर्थ छे, यांरी काया पिण तीरथ नांहीं।
तो थें सत्रुंजादिक अनेक कहो छे, ते किम तीरथ मांही रे॥ भ० ३०॥
थें सावद्य तीर्थ जात्रा थापेनें, छ काय जीवां नें मरावो।
इसडो अकारज करो आप छांदे, तिण में जिन आज्ञा कांय बतावो रे॥ भ० ३१॥
थें जीव मारेनें धर्म कहो छो, ते भगवंत रा नहीं बेंणो।
थें मोह मतवाला गहला ज्यूं बोलो, थांरा फूटा अभिंतर नेंणो रे॥ ३२॥
जीव हण्या मांहें धर्म परूपें, त्यांरो मत जाबक खोटो।
ते साधु तणा वचन किम सरधे, त्यांरा घट में मिथ्यात छे मोटो रे॥ ३३॥
थानें हणे छेदे भेदे जीवां मारे, तिणरे बंध्या कहो पाप कर्मो।
थें ओर जीव मारे धर्म जांणो, ओ थांनें किम होसी धर्मो रे॥ ३४॥
थानें हणे त्यानें पाप कहे ते, आ बात नहीं छें झूठी।
थें धर्म कहो पेला नें हणियां, तिण सूं अभिंतर री आंख फूटी रे॥ ३५॥
थें जीव हणेनें वले धर्म सरधो, आ मति किण दीधी माठी।
आ प्रतष चोडें खोटी सरधा, तिणनें झाल रह्या छो काठी रे॥ ३६॥

रांक जीवां ने मास्यां धर्म कहता, वले सिह तणी परे गाजो।
भगवंत रा केडायत वाजो, ते पिण नावे थांनें लाजो रे ॥ ३७ ॥

●

ढाल : २१

दुहा

केई जेनी नांम धराय नें, बोले भूठ अतीव।
साधु धोवण वहरे तेह में, कहे बेइंद्री जीव ॥ १ ॥
ते पोतें तो धोवण पीवें नहीं, पिये त्यांनें निंदे दिन रात।
ते अन्हाखी थका बकवो करे, त्यांरा घट मांहे घोर मिथ्यात ॥ २ ॥
जिभ्या रो स्वाद तज्यां विनां, धोवण पियो किम जात।
तिणसूं धोवण उथापें वहरणो, भूठी कर कर मुख सूं वात ॥ ३ ॥
केई कहे वासी आहार में, एकण रात रे मांहि।
जीव बेइंद्री उपजे, तिण सूं साधां ने वहरणो नांहि ॥ ४ ॥
पोतें ठंडो आहार भावे नहीं, तिण सूं उंधी परूपें एम।
एहवा हिंसाधर्म्या रा लक्षण बुरा, ते सुणज्यो धर प्रेम ॥ ५ ॥

ढाल

[धर्म आराधिये ए]

कसाई विचे तो कुगुर बुरा ए, त्यांरे दया नहीं लवलेश।
छ काया मारण तणो ए, दे पापी उपदेश।
पाखंडी गुर एहवा ए, उन्हों पांणी धरावे करे आमना ए * ॥ १ ॥
पछें भर भर ल्यावे ठांम, आधाकर्मी भोगवे ए।
त्यांरा दुष्ट घणा परिणांम, भविक निरणो करो ए ॥ पा० २ ॥
करडो काठो धोवण भावे नहीं ए, उन्हो पांणी लागे स्वाद।
तिण सूं अन्हाखी थका ए, करे कूडी विषवाद ॥ ३ ॥
कहे धोवण में उपजे घणा ए, दोय घडी पाछें जीव।
ए उंधी परूपनें ए, दे छे कुगति नीं नींव ॥ ४ ॥
धोवण इकवीस जाति नो ए, साधु ने लेणो कह्यो जिण आप।
आचारांग सूतर में ए, ते कुगुरां दीयो उथाप ॥ ५ ॥
इकवीस जाति सूं मिलतो थको ए, घणी जाति रो धोवण जांण।
ते पिण लेणो कह्यो ए, तिणरी न करे मूढ पिछांण ॥ ६ ॥
अनेरो सस्त्र परिणम्यां थकां ए, वर्ण ने रस फिर जाय।
ते धोवण लेणो साधु नें ए, ते विकलां ने खबर न काय ॥ ७ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

कहे धोवण में जीव उपजे ए, दोय घडी मे आय।
ते पिण सूतर में नही ए, भूठा थका वोले मूसावाय ॥ ८ ॥
ततकाल रो धोवण नहीं वेंहरणों ए, घणी बोलां रो धोवण लेणो जांण।
दसवैकालक में कह्यो ए, तोही करे अग्यांनी तांण ॥ ९ ॥
कहे धोवण मे जीव उपजें ए, ते अन तणे परवेश।
एहवो भूठ बोलनें ए, कर रह्या कूड कलेश ॥ १० ॥
जो धोवण में जीव उपजें ए, तो रोटी में ई उपजे आंण।
दोय घडी मझे ए, ए लेखो बरोबर जांण ॥ ११ ॥
इमहिज दाल खीच घाट में ए, इत्यादिक सगलो अन जांण।
सगलां में जीव उपजे ए, धोवण सूं याने ल्यो पिछांण ॥ १२ ॥
कठे पांणी थोडो नें अन घणो ए, कठे अन थोडो पांणी अत्यन्त।
पांणी ने अन सर्व में ए, यां सगलां रो एक विरतंत ॥ १३ ॥
दूध री जावणी रा धोवण मझे ए, यांमें उपजे वेइंद्री आय।
तो दूध मे पिण उपजें ए, पांणी मिले छे तिण मांय ॥ १४ ॥
वले दही ने छाछ रा धोवण मझे ए, यांमें उपजें वेइंद्री आय।
तो उपजे दही छाछ में ए, पांणी मिले छें यांरे ई मांय ॥ १५ ॥
जिण जिण दरब रा धोवण मझे ए, जो उपजें वेइंद्री आय।
तो दरब में ई उपजें ए, पांणी मिले छे दरब रे मांय ॥ १६ ॥
इतरा कांल पछें जीव उपजे ए, ते सूतर में न कह्यो भगवंत।
उपजता जीव जांण ने ए, वहरे नही मतिवंत ॥ १७ ॥
केई रात बासी रोटी मझे ए, कहे उपजे वेइंद्री आय।
ते साधु ने नही वेहरणी ए, एहवी कूडी करे वकवाय ॥ १८ ॥
ऊन्ही रोटी ततकाल री ए, ते खातां लागे स्वाद।
ठंडी भावे नहीं ए, तिण सूं वोले मिरखावाद ॥ १९ ॥
जीभ तणा लंपटी थका ए, ठंडी रोटी मांहे कहे जीव।
न कहे तो लेणी पडे ए, तिणसूं वोले भूठ सदीव ॥ २० ॥
लाडू लापसी सीरा पकवान ने ए, वासी वहिरे मन चाय।
रोटी वहिरे नहीं ए, तिण मांहे जीव बताय ॥ २१ ॥
जो वासी रोटी में जीव उपजे ए, तो लाडू आदि दे सगल्यां मे जांण।
अन्न पांणी सगलां मझे ए, इणरी न करे मूढ पिछाण ॥ २२ ॥
लाडू लापसी सीरो तो भावे घणो ए, ठंडी रोटी भावे नांहि।
तिण सूं अन्हाखी थका ए, जीव कहे ठंडी रोटी मांहि ॥ २३ ॥

पोहर रात गयां रोटी करे ए, तिणने नहीं वेंहरे परभात।
तिणमें जांणे जीवडा ए, तीन पोहर निकली कहे रात ॥ २४ ॥
तो परभाते रोटी नीपजे ए, आथम्यां सूधी खाणी नांहि।
पोहर च्यार नीकल्या ए, इण लेखे बेइंद्री तिण मांहि ॥ २५ ॥
उन्हाला री रात नान्ही हुवें ए, दिन मोटो छें साख्यात।
कदे फेर दोढो परे ए, लेखो कीयां विना क्यूं खात ॥ २६ ॥
रात पड्यां जीव ऊपजें ए, दिन रा न उपजें तिण मांय।
तो किण ही सूतर मझे ए, साचा हुवे तो काढ बताय ॥ २७ ॥
केई बासी वहिरे सीयाला मझे ए, शील सातम सूधी ताहि।
आगे वहिरे नहीं ए, ते पिण नहीं सूत्र रे मांहि ॥ २८ ॥
बासी विणस्यो नें कूयो घणो ए, वले अत्यन्त कूह्यो असार।
एहवो आहार भोगवे ए, तो पिण नाणे द्वेष लिगार।
दसमां अग में कह्यो ए ॥ २९ ॥
वले भगवंत वासी वहरियो ए, जोवो आचारांग मांय।
मूरख माने नही ए, चोडे भूला जाय ॥ ३० ॥
जीभ्या रो लोलपी थको ए, जीव बासी मे कहे ताण।
उंधी सरधा थकी ए, बूडे छें मूढ अयाण ॥ ३१ ॥
जो ठंडी रोटी मे जीव बेइंद्री ए, तो यांरा श्रावक जाण ने कांय खाय।
महाजन रा कुल मझे ए, इसडो कांय करे मूंढ अन्याय ॥ ३२ ॥
कदा पोते कुगुरां रा भरभाविया ए, पोते बासी अन्न नही खाय।
पिण घर रा मिनख नें ए, ठंडो आहार देवे खवाय ॥ ३३ ॥
व्यालूं करतां रोटी बचे ए, त्यांनें घरती क्यूं न देवे न्हांख।
जाणे छे जीव ऊपना ए, पछे खातां ई नाणे शांक ॥ ३४ ॥
नित नित खावे बेइंद्री ए, जीव काया करे दूर।
दांतां सूं मारेनें गिले ए, त्यांरो श्रावक पणो चकचूर ॥ ३५ ॥
जीव खाये खवरावे जाण नें ए, त्यां गुर री न राखी परतीत।
महाजन रा कुल तणी ए, छोड दीधी त्यां रीत ॥ ३६ ॥
बासी अन्न मांहे नीलणादिक ऊपजे ए, ते किण ही काल में जाण।
देखी नें साधु परिहरे ए, ते डाहा चतुर सुजाण ॥ ३७ ॥
रात्रि भोजन करे तेह में ए, पाप कहे ते न्याय।
पिण मुतलब आपरे ए, हुवे जिण सूं दे अधिको बताय ॥ ३८ ॥

झूठ बोले पाप अधिको कहे ए, आपरे उन्हो ल्यावर्ण काज।
जिभ्या रा लोलपी थका ए, झूठ बोलता नांणे लाज ॥ ३९ ॥
पिण भोलां नें खबर पडे नही ए, तिणरो कुण काढे निकाल।
विकलां नें कुगुरां न्हांखियो ए, मोटो मिथ्यात रो जाल ॥ ४० ॥
कोरडू धान ने छाछ भेलां हुवां ए, तो उपजे बेइंद्री तिण मांय।
पाखंडी इम कहे ए, ते एकंत मूसावाय ॥ ४१ ॥
कहे खीच ने छाछ भेलो करी ए, कोई जीमे भाणा मांय।
तो उपजे बेइंद्री ए, एहवो दियो झूठ चलाय ॥ ४२ ॥
जिण जिण धान में कोरडू मिले ए, तिण माहे घाले छास।
तो उपजे बेइंद्री ए, ते खाधां हुवे तिण रो विणास ॥ ४३ ॥
छाछ नें कोरडू धान भेला हुवे ए, विदल दियो तिण रो नाम।
एहवा विदल मझे ए, उपजे बेइंद्री ताम ॥ ४४ ॥
एहवी करे परूपणा ए, घाले भोलां रे शंक।
भिडकावे जिन धर्म थी ए, ओ चोडे कुगुरां रो डंक ॥ ४५ ॥
आ सरधा दिगम्बर मत तणी ए, ते नही माने आगम ज्ञान।
केई विगड्या श्वेताम्बरी ए, त्यां पिण लीधी त्यांरी मान ॥ ४६ ॥
कोरडू धान ने छाछ भेला कियां ए, उपजे बेइंद्री आय।
ते नही छे सिद्धांत में ए, ओ कुगुरां दीयो गोलो चलाय ॥ ४७ ॥
कोरडू धान छाछ भेला कीयां ए, जो उपजे बेइंद्री तिण माय।
तो इण सरधा रा धणी ए, खाटादिक क्यूं खाय ॥ ४८ ॥
वेजड तणी रोटी हुवे ए, ते नहीं खाणी छाछ सूं लगाय।
इणमें ई जीव ऊपजे ए, उणरी सरधा रो ओहिज न्याय ॥ ४९ ॥
जाण जाण नें खावे जीव बेइंद्री ए, जो खावे छै विना आगार।
ते भागल व्रतां तणा ए, त्यांरा श्रावकपणा ने धिक्कार ॥ ५० ॥
केइ श्वेताम्बर नें दिगम्बरा ए, ते बोले झूठ निसंक।
ऊंधी करे परूपणा ए, थांरी श्रद्धा माहे मोटो बंक ॥ ५१ ॥
जो कदा न खावे जाणनें ए, आ खोटी मत री छें रूढ।
इसडी ऊंधी ताणनें ए, आगे गया अनंता बूड ॥ ५२ ॥
बारे कुल री साधां नें कही गोचरी ए, यां कुलां सूं मिलता वले जाण।
आचारांग मे कह्यो ए, ते उथापी मूंढ अयाण ॥ ५३ ॥
बारे कुल री कही छे गोचरी ए, ते तो चोथा आरा मांय।
हिवडां करणी नहीं ए, एहवो बोले मूषावाय ॥ ५४ ॥

पांचमे आरे साधु साधवी ए, जो चाले सूतर रे न्याय।
तो बारह कुल री करे ए, पिण विकला सूं किधी न जाय ॥ ५५ ॥
ओर कुलां में आछो मिले नहीं ए, पोते भावे सरस आहार।
जिभ्यारा लंपटी थका ए, झूठ बोले जनम विगाड ॥ ५६ ॥
ओर कुल री न करां म्हें गोचरी ए, ओर कुल में तो मद्य मांस खाय।
तिण सूं महाजन रा कुल मझे ए, गोचरी करां म्हें जाय ॥ ५७ ॥
मांम खावे तिण घर वहिरे नही ए, मांस आहारी नें मूंड ले मांय।
भिन्न राखे नही ए, एकण पात्रे खाय ॥ ५८ ॥
जिण कुल रो आहार वहिरे नहीं ए, तिण कुल रा नें मांहें ले मूंड।
संभोग भेलो करे ए, देखो अग्यान्यां री रूढ ॥ ५९ ॥
आगे क्षत्री कुल रा राजवी ए, ते मांस खाता घर मांय।
त्यांरे घरे वहिरता ए, साधु साधवी जाय ॥ ६० ॥
उग्रसेन - राय जीव भोला किया ए, ते गोरो देवा नें ताय।
यांरा कुल री रीत थी ए, त्यांरा कुल मांहें बहरता जाय ॥ ६१ ॥
त्यांरा कुल रा हुंता साधु साधवी ए, ते मांस खाता घर मांय।
त्यांसूं भेला रह्या ए, त्यांरा कुलां में बहरता जाय ॥ ६२ ॥
ऊंच नीच मध्यम कुल री गोचरी ए, साधु नें कही जिनराय।
बारे कुल मांहें आविया ए, जोवो सूतर रे मांय ॥ ६३ ॥
ऊंच कुल क्षत्री राजा तणो ए, मध्यम बाणिया ब्राह्मण जाण।
नीच कुल पिण चोखो कह्यो ए, गूजरादिक मिलता पिछाण ॥ ६४ ॥
बारह कुल री गोचरी निषेधसी ए, तिणरे बोहला पाप।
चोर तीर्थंकर तणो ए, कह्यो जिनेश्वर आप ॥ ६५ ॥
लाडू पतासा री परभावना ए, दरावें उपासरा मांहि।
वखाण पूरो हूवां ए, ते किण ही सूतर में नांहि ॥ ६६ ॥
जावारा लोलुपी थका ए, घणा भेला हुवे आय।
लेवण नें लाडुआ ए, लाजे नहीं मन मांय ॥ ६७ ॥
आगे आनंदजी आदि श्रावक हुआ ए, त्यांरे कोडां रो धन घर मांय।
त्यां साधां रा थानक मझे ए, नहीं दीधी परभावना आय ॥ ६८ ॥
वले भगवंत रा मांडला मझे ए, नर नारी मिलता अनेक।
जिण दिन पिण श्रावक घणा ए, लाडू बांट्या न दीसे एक ॥ ६९ ॥
लाडू पतासा बांटण तणो ए, ओ कुगुरां तणो उपदेश।
मुतलब आपरो ए, कोई बुधिवंत जाणे त्यांरी रेस ॥ ७० ॥

जो लाडू पतासा बापरे ए, ते कोई यांनें देवे बहराय।
ए मुतलब आपरो ए, तिण सूं दीधी कुबुध चलाय॥ ७१॥
वले प्रशंसा बधारवा ए, मान बडाई काज।
दरावे परभावना ए, जाबक छोडे दीधी लाज॥ ७२॥
ज्यांरे लाडू पतासा पानें पडे ए, ते तो करे गुण ग्राम।
समझे नही धर्म में ए, त्यांरे लाडू पतासा सूं काम॥ ७३॥
धर्म कही कही भोला लोका नें ए, लाडू पतासा बंटाय।
घणा रे मन मानियो ए, तिणरो कुण पूछे न्याय॥ ७४॥
खाणो पीणो विषय इद्रियां तणो ए, तिण सूं कर्म बंधाय।
जिनेश्वर इम कह्यो ए, जोवो सिधांत रे मांय॥ ७५॥

रत्न : ३३

आचार री चौपई

ढाल : १

दुहा

पहिलां अरिहंत नें नमूं, ज्यूं सीझे आतम काम।
पिण वले विशेषे वीर नें, ए सासण नायक साम॥ १ ॥
कार्य साझी आपणा, ते पोंहता निरवाण।
सिद्धां नें वंदणा करूं, त्यां मेट्यो आवण जाण॥ २ ॥
आचार्य सहुं सारिषा, गुण रत्ना री खाण।
उवझाय ने सर्व साध जी, ए पाचूंइ पद वखाण॥ ३ ॥
वांदीजे नित एहने, नीचो सीस नमाय।
गुण ओलख वंदणा करे, तो भव भव नां दुख जाय॥ ४ ॥
सुगुरु कुगुरु दोनूं तणी, गुण विन खबर न काय।
पहिलां कुगुरु ने ओलखो, सुण सूतर रो न्याय॥ ५ ॥
सूतर साख दीया विना, लोक न माने बात।
सांभल नें नर नारियां, छोडो मूल मिथ्यात॥ ६ ॥
कुगुरू चरित अनंत छे, ते पूरा केम कहाय।
थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो चित्तलाय॥ ७ ॥

ढाल

[आदर जीव खिम्यागुण]

ओलखावण दोहरा भव जीवां, कुगुरू चरित अनंत जी।
कहितां छेह न आवे तिणरो, इम भाख्यो भगवंत जी।
साधु म जाणो इण चलगत सूं*॥ १ ॥
आधाकर्मी थानक मे रहे तो, ते पाडे चारित मे भेद जी।
नशीत नें दशमें उदेशे, च्यार महीना रो छेद जी॥ २ ॥
अठारे ठाणा कह्या जू जूआ, एक विराधे कोय जी।
बाल कह्यो श्री वीर जिनेसर, साधु म जाणो सोय जी।
कुगुरू पिछाणो इण चलगत सूं॥ ३ ॥
आहार सिज्या नें वस्त्र पातर, असुध लियां नही संत जी।
दसवेकालक छठे अध्ययने, भिष्ट कह्यो भगवंत जी॥ ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

अचित वस्तु ने मोल लरावे, तो सुमत गुप्त हुवे खड जी।
महाव्रत पांचूंई भागा, चोमासी नों जी॥ ५॥
एतो भाव नसीत में चाल्या, उगणीस में उदेश जी।
सुध साधु बिन कुण सुणावे, सूत्र नी उंडी रेस जी॥ ६॥
पुस्तक पातर उपाश्रादिक, लिवरावे ले ले नाम जी।
आछा भूंडा कहि मोल बतावे, ते करे ग्रहस्थ नों काम जी॥ ७॥
गराग नें तो कइयो कहिजे, कुगुरु विचे दलाल जी।
बेचणवालो कह्यो वाणियो, तीनां रो एक हवाल जी॥ ८॥
क्रय विक्रय मांहें वर्ते तो, महादोषण छे एह जी।
पेतीसमां उत्तराधेन में, साधु न कह्यो तेह जी॥ ९॥
नितको बहरे एकण घरको, च्यांरा मे एक आहार जी।
दसवेकालक तीजा में कह्यो, साधु नें अणाचार जी॥ १०॥
जो ल्यावे नित धोवण पांणी, तिण लोप्यो सूतर नों न्याय जी।
बतलायां बोले नहीं सूधा, दोषण दीए छिपाय जी॥ ११॥
नहीं कल्पे ते वस्तु वेंहरे, तिणमें मोटी खोड जी।
आचारांग पेंहले श्रुतस्कंधे, कह दीयो भगवंत चोर जी॥ १२॥
पेंहलों व्रत तो पूरो पडियो, जब आडा जडे किंवाड जी।
कूंटो आगल हुडो अटकावे, तो निश्चें नहीं अणगार जी॥ १३॥
पोते हाथे जडे उघाडे, ते करे जीवां रा जेन जी।
गृहस्थ उघाडी आहार वेंहरावे, तब करे अणहूंता फेन जी॥ १४॥
साधवीयां नें जडवो चाल्यो, तिणरी म करों तांण जी।
यां लारें जो साधु जडे तो, ए भागल रा अहनाण जी॥ १५॥
मन करनें जो बांछे जडवों, तिण नही जाणी पर पीर जी।
पेंतीसमा उत्तराधेन में, बरज गया महावीर जी॥ १६॥
पर निंदा में राता माता, चित्त में नही संतोष जी।
वीर कह्यो दसमां अंग में, तिण वचन में तेरे दोष जी॥ १७॥
दिष्या ले तो मो आगे लीजे, ओर कनें दे पाल जी।
कुगुरु एहवो सूंस करावे, एं चोडें उंधी चाल जी॥ १८॥
ए बंधा थी ममता लागे, गृहस्थ सूं भेलप थाय जी।
नशीत रे चोथे उद्देशे, डंड कह्यो जिणराय जी॥ १९॥
जीमणवार में वेहरण जाए, आ साधां री नहीं रीत जी।
वरज्यो आचारांग वृहतकल्प में, उत्तराधेन नसीत जी॥ २०॥

आलस नही आरा में जातां, वले बेठी पांत वसेष जी।
सरस आहार ल्यावे भर पातर, त्यां लज्यां छोडी ले भेष जी॥ २१॥
वेला करण री चलगत उंची, चाला बोहत चलाय जी।
साथे लीयां फिरे गृहस्थ नें, वले रोकड दाम दराय जी॥ २२॥
ववेक विकल नें सांग पहराए, भेलो करे आहार जी।
सामग्री में जाय वंदावे, फिर फिर करे खुवार जी॥ २३॥
अजोग ने दिष्या दीधी ते, भगवंत री आग्या बार जी।
नसीत रो डंड मूल न मान्यों, ते विटल हुवा वेकार जी॥ २४॥
विण पडलेह्या पुस्तक राखे, वले जमें जीवां रा जाल जी।
पडे कुंथुआ उपजे माकण, जिण बांधी भांगी पाल जी॥ २५॥
जोवे वरस छ मास निकलीयां, तो पेंहलां व्रत नो खंड जी।
नित पडिलेहण मेली तिणने, एक मास नों डंड जी॥ २६॥
गृहस्थ नें साथें कहे संदेसो, तो भेलो हुओ संभोग जी।
तिणनें साधु किम सरधी जे, लागो जोग नें रोग जी॥ २७॥
समाचार विवरा सुध कहि कहि, सानी कर गृही बुलाय जी।
कागद लिखावे करे आमनां, परहथ दीए चलाय जी॥ २८॥
आवण जावण वेसण उठण री, वले जायगां देवे बताय जी।
इत्यादिक साधु कहे गृहस्थ ने, तो दोनूं बराबर थाय जी॥ २९॥
गृहस्थ नें दे लोट पातरा, पूठा परत विशेष जी।
रजोहरण पूंजणी देवे, ते भिष्ट हुआ ले भेष जी॥ ३०॥
पूछे तो कहे परठ दीया में, कूड कपट मन मांहि जी।
कांम पडे तो जाय उरा ले, न मिटी अंतर चाहि जी॥ ३१॥
कहे परठ्यां गृहस्थ ने देइ, बोले वले अन्याय जी।
कह्यो अचारांग उत्तराधेन में, साधु परठे एकंत जाय जी॥ ३२॥
करे गृही सूं बदलो सदलो, पिंडत नांम धराय जी।
पूरी पडी सगला वरतां री, ते भेष ले भूला जाय जी॥ ३३॥
थोडो सो उपध गृहस्थ ने दीधां, वरत रहे नही एक जी।
चोमासी डंड नसीत मे गूंथ्यो, तिण छोडी जिण धर्म टेक जी॥ ३४॥
विण अंकुस जिम हाथी चाले, घोडो विगर लगाम जी।
एहवी चाल कुगुरू री जांणो, कहिवा नें साधु नांम जी॥ ३५॥
अणुकंपा नही छही काय री, गुण विण कहें में साध जी।
ए चरचा अणजोग दुवार में, विरला परमारथ लाध जी॥ ३६॥

धृष्ट पुष्ट नें मांस बधारे, वले करे किगेरो पूर जी।
माठा परिणांमा नाख्यां निरखे, ते साधुपणा थी दूर जी ॥ ३७ ॥
सरस आहार ले विण मरजादा, तो बधे देही री लोथ जी।
काचमणी प्रकाश करे जिम, कुगुरु माया थोथ जी ॥ ३८ ॥
दबक दबक उतावला चाले, तस थावर मार्‍यां जाय जी।
इर्या समिति जोया विण भागी, ते किम साधु थाय जी ॥ ३९ ॥
कह्यो आचारंग उत्तराधेन में, जो करे चलतां बात जी।
उंची तिरछी दिष्ट जोवे तो, छ काय री हुवे घात जी ॥ ४० ॥
कपडा में लोपी मरजादा, लांबा पेना लगाय जी।
इधिको राखे दोयवड ओढे, वले बोले मुसावाय जी ॥ ४१ ॥
उपगरण नें इधिका राखे, तिण मोटो कीयो अन्याय जी।
नसीत रें सोल में उद्देशे, चोमासी चारित जाय जी ॥ ४२ ॥
मूरख नें गुर एहवा मिलिया, ले डूबसी लार जी।
साचो मार्ग साधु बतावे, तो लडवा नें छे तयार जी ॥ ४३ ॥
एहवा गुर साचा कर मानें, ते अंध अग्यांनी बाल जी।
फोडा पडे उतकष्टा तिणमें, तो रुले अनंतो काल जी ॥ ४४ ॥
हलुकर्मी जीव सुण सुण हरषे, करे भारीकर्मा धेष जी।
सूतर रो न्याय निदाकर मांनें, ते डूबा वले विशेष जी ॥ ४५ ॥

ढाल : २

दुहा

समदिष्टी आरे पांच में, थोडी रिध अपमान।
मिथ्यदिष्टी जोडें हुसी, बहु रिध बहु सनमान ॥ १ ॥
समण थोडा ने मुड घणा, पांचमें आरे चेन।
भेष लेइ साधां तणो, करसी कूडा फेन ॥ २ ॥
साधु अल्प पूजावसी, ठांणा अंग में साख।
असाधु महिमा अति घणी, श्री वीर गया छे भाख ॥ ३ ॥
कुगुर कुदेव कुधर्म मे, घणा लोक रजाबंध होय।
ओलख ने निरणों करे, ते तो विरलां जोय ॥ ४ ॥
साधु मारग छे सांकडो, भोला खबर न काय।
जिम दीवे मरे पतंगियो, तिम पडे पगां में जाय ॥ ५ ॥
घणा साधु ने साधवी, श्रावक श्राविका लार।
उलटा पड जिण धर्म थी, परसी नरक मझार ॥ ६ ॥
महा नसीत में इम कह्यो, गुण विण धारे भेष।
लाखां कोडा गमे सांवठा, नरकां पडता देख ॥ ७ ॥
लीधा वरत न पालसी, खोटी दिष्ट अयांण।
तिणने कही छे नारकी, कोइ आप म लीजो तांण ॥ ८ ॥
आगम थी अंवला बहे, साधु नांम धराय।
सुध करणी वेगला, ते सुणजो चितल्याय ॥ ९ ॥

ढाल

[चन्द्रगुप्त राजा]

सीधा घर आपे साधु नें, वले ओर करावे आगे रे।
एहवो उपाश्रो भोगवे, तिणने वज्र किरिया लागे रे।
तिणनें साधु किम जाणीए* ॥ १ ॥
आचारंग दूजे कह्यो, महा दुष्ट दोषण छे जिणमें रे।
वीर वचन संवला करो, तो साधुपणो नहीं तिणमे रे ॥ २ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

साधु अर्थे करायो उपाश्रो, छायो लिप्यो ग्रहस्थ बाल रागी रे।
तिण थानक रहे तेहनें, महा सावद्य किरिया लागी रे॥ ३॥
त्यांनें भावे तो ग्रहस्थ कह्या, दियो आचारंग साखी रे।
भेषधारी कह्या सिधंत में, भगवंत काण न राखी रे॥ ४॥
सिज्यातर पिंडज भोगवे, वले कुब्द केलवे कपटी रे।
धणी छोड आग्या ले अवरनी, सरस आहारादिकरा लंपटी रे॥ ५॥
सबलो दोषण लागे तेहनें, वले नसीत में डंड भारी रे।
अणाचारी कह्या दसवेकालिके, तिण भगवंत सीख न धारी रे॥ ६॥
अणुकंपा आण श्रावक तणी, दरब दरावण आगा रे।
दूजे करण खंड्यो वरत पांचमों, तीजे करण पांचूंई भागा रे॥ ७॥
ग्रहस्थ जिमावणरी आमनां, जो करे साधु दलाली रे।
चोमासी डंड नसीत में, व्रत भांगे हूआ खाली रे॥ ८॥
करे बांसादिकनो बांधवो, वले किया भीतां रा चेजा रे।
लीपवो छायवो आद दे, ते कहिजे सपरिकम सेजा रे॥ ९॥
एहवी वस्ती भोगवे, ते साधु नहीं लवलेसे रे।
मासीक दंड कह्यो तेहनें, नसीत नें पांचमे उद्देशे रे॥ १०॥
बांधे पडदो परेच्च कनात नें, वले चन्द्रवा सिरकी ताटा रे।
साधु अर्थे किया ते भोगवे, तो ग्यानादिक गुण नाठा रे॥ ११॥
थापीता थानक में रहे, तिण दिया महाव्रत भांगो रे।
भावे साधुपणा थी वेगला, त्यांनें गुण विण जाणो सांगो रे॥ १२॥
काच चशमो वर्ज्यो ते राखनें, जाणे दोषण छे थोरो रे।
पांचमों वरत पूरो पड्यो, वले जिन आग्या नां चोरो रे॥ १३॥
ग्रहस्थ आयो देखी मोटको, हावभाव सूं हरषित हुआ रे।
करे विछावण री आमनां, ते तो साधु मारग थी जूआ रे॥ १४॥
ग्रहस्थ तेरण आया साधु नें, कपडादिक वेहरण ले जावे रे।
इण विध वहरे तेहमें, चारित किणविध पावे रे॥ १५॥
साहमों आण्यो लेजाए तेरियो, ए दोनूं दोषण छे भारी रे।
यांनें टाले केडायत वीर नां, सेव्यां नहीं साधु आचारी रे॥ १६॥
धोवणादिक में निलोतरी, वले जीव सहित कण भीनां रे।
ते पिण वहरे संके नहीं, ते परभव सूं नही वीनां रे॥ १७॥
एहवो अनपाणी भोगवे, त्यांनें साधु किम थापीजे रे।
जो सूतर नें साचा करो, तो चोरां री पांत घातीजे रे॥ १८॥

गृहस्थ रे सभाय बोल थोकडा, साधु लिखे तो दोषण लागे रे।
लिखायां नें अनुमोदियां, दोय करण उपरला भागे रे।। २१।।
पहिले करण लिखियां में पाप छे, तो लिखाया दोष उघाडा रे।
पांच महाव्रत मूलगा, त्यां सगलां में परिया वघारा रे।। २२।।
उगरण भलावे ग्रहस्थनें, ओ नहीं साधु आचारो रे।
प्रवचन न्याय न मानियो, लियो जुगत सूं मारग न्यारो रे।।
गृहस्थ रा उपधि रा जावता, कीधां वरत चकचूरो रे।
सेवग हुओ संसारियां, ते साधुपणा थी दूरो रे।।
साता पूछे पूछावे ग्रहस्थ नें, ते अविरत सेवण [illegible] रे
अणाचारी कह्या दसवेकालिके, वले पांचूंई महाव्रत [illegible] रे
श्रावक ने वले श्राविका, करें मांहोमांहि कारज रे
साता पूछे विनो वियावच करे, यांमें धर्म परूपे अनारज रे
अणाचार पूरा नहीं ओलख्या, ते नवभांगा किण [illegible] टले रे
गृहस्थनें सीखावे सेवणा, लिया वरत [illegible] संभाले
कारण परियां लेणो कहे साधुनें, करे असुध वहर [illegible] पाप
दातार नें निरजरा घणी, वले थोडो [illegible] पाप
एहवी ऊंधी करे परूपणा, घणा जीवां नें [illegible]
अणविचारी भाषा बोलता, भारीकर्मा ज [illegible]
करे भिष्ट आचार नी थापनां, कहि कहि [illegible]
हिवडां आचार छे एहवो, घणा दे [illegible]
एक पोते तो पाले नहीं, वले पाले [illegible]
दोय मूर्ख तिणनें कह्यो, पहलो [illegible]
पाट बाजोट आण्यां ग्रहस्थ नां, पाछा दे [illegible] नें
मरजादा लोपीनें भोगवे, तिण [illegible]
त्यांनें डंड कह्यो एक मास नो, नशीत [illegible]
ए न्याय मारग परगट कियां, भ री [illegible]

ढाल : ३

दुहा

घणा असाधु जिन कह्या, ते लोक में साधु कहाय।
सांसो हुवे तो देखलो, दसवेकालक मांय॥ १ ॥
भेष सगलां रो सारीखो, ते भोला खबर न काय।
विवरो वीर बतावियो, दूजी गाथा मांय॥ २ ॥
ग्यान दर्शन चारित तप, ए च्यारां में रक्त अपार।
एहवे गुणे सहित छे, ते मोटा अणगार॥ ३ ॥
इण विध साधु नें ओलखे, ते तो विरला जाण।
ए न्याय मारग जाण्यां विना, करे अग्यानी ताण॥ ४ ॥
चोथे आरे अरिहंत थकां, इम हिज खांचा ताण।
पाषंड में पडता घणा, कर्मा वस लोक अजाण॥ ५ ॥
झगडा राड हुंता घणा, चोथा आरा मांय।
पांचमां रो कहिवो किसूं, ते सुणज्यो चितलाय॥ ६ ॥

ढाल

[जोयजो रे कायर हीया]

सावत्थी तो नगरी वीर पधारिया रे, गोशालो झगड्यो छे तिहां आय रे।
लोक मूंढा सूं वाणी इम वदे रे, कुण साचो कुण झूठो थाय रे।
पाषंड वधसी आरे पांचमें रे*॥ १ ॥
घणा लोकारे मन इम मानियो रे, गोशालो भाषे ते सत वाय रे।
वीर नहीं छे जिन चोवीसमो रे, अणहूंतो बोले मुसा वाय रे॥ २ ॥
केएक उत्तम था ते इम कहे रे, गोशालो जिन नहीं करे अन्याय रे।
सतवादी वीर जिनंद चोवीसमां रे, ए कदेय न बोले मुसावाय रे॥ ३ ॥
कितरां एक रो सांसो मिटियो नहीं रे, म्हांनें तो समझ पडे नहीं काय रे।
जिण दिन पिण सगलाइ समज्या नहीं रे, भोल घणी थी लोकां मांय रे॥ ४ ॥
श्रावक गोसाला रे सुणिया अति घणा रे, इग्यारे लाख इगसठ हजार रे।
वीर रें एक लाख बले उपरे रे, गुणसठ सहंस अधिक विचार रे॥ ५ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

जद पिण पाखडी था अति घणा रे, तो हिवडां पिण पाषंडी नो जोर रे।
वीर जिनद मुगत गयां पछे रे, भरत मे हुओ अंधारो घोर रे॥ ६ ॥
तिणमें धर्म रहसी जिनराजरो रे, थोडोसो आग्या नो चमत्कार रे।
झबको परे ने वले मिट जावसी रे, पिण निरंतर नहिं इकबीस हजार रे॥ ७ ॥
अल्प पूजा होसी सुध साध री रे, आगूंच वीर गया छे भाष रे।
असाधु री पूजा महिमा अति घणी रे, ठाणा अंग माहें तिणरी साख रे॥ ८ ॥
ऊगे ऊगे ने वले ऊगियो रे, तो आथमियां विन किम उगाय रे।
इण न्याय भवियण नही धर्म सासतो रे, हुय हुय झलपट ने वुझ जाय रे॥ ९ ॥
लिगरा लिंगरी बधसी अति घणा रे, करसी मांहो माहि झगडा राड रे।
जे कोइ काढे तिण में खूचणो रे, क्रोध कर लडवा ने छे तयार रे॥ १० ॥
चेला चेली करण रा लोभिया रे, एकंत मत बाधण सूं काम रे।
विकलां ने मूंड मूंड भेला करे रे, दिराए ग्रहस्थ ना रोकड दाम रे॥ ११ ॥
पूजरी पदवी नाम धरावसी रे, मे छां सासण नायक साम रे।
पिण आचारे ढीला सुध नहि पालसी रे, नहिं कोइ आतम साधन काम रे॥ १२ ॥
आचार्य नाम धरासी गुण विना रे, पेटभरा ज्यारो परवार रे।
लपटी तो हूसी इद्री पोषवा रे, कपट कर ल्यासी सरस आहार रे॥ १३ ॥
तकसी तो देखी आरा टांमला रे, रिंगसी ए जाणी जीमणवार रे।
पात जीमें जिहा जासी पाधरा रे, आग्या लोपे हूसी बेकार रे॥ १४ ॥

ढाल : ४

दुहा

दावानल लागो अधिक, वले वाजे वाय अथाय ।
अटवी मोटी इंधण घणा, ते किम आग बुजाय ॥ १ ॥
आगा सूं इंधण अलगा करे, वले रहे वाजंतो वाय ।
ऊपर जल सूं छांटियां, दावानल मिट जाय ॥ २ ॥
तिम भर जोवन व्रत आदरे, वले डीलमें पुष्टी काय ।
अति सरस आहार नित भोगवे, तो विषय बधंती जाय ॥ ३ ॥
अति सरस आहार न भोगवे, वले खीणी पाडे काय ।
बुझावे विषेरूप अगन नें, सुमतारस पाणी ल्याय ॥ ४ ॥
विषे वधे तिम आहार न भोगवे, घष्टी पुष्टी न करे काय ।
भांत भांत करे निषेधियो, सूत्र सिद्धांतां मांय ॥ ५ ॥
आ भोल पडी मोटी घणी, त्यां जिभ्या दीधी मुकलाय ।
खाणे पहरणे चित दियो, इण सबले सरणे आय ॥ ६ ॥
भेष लेइ भगवान रो, खाधा लोकां रा माल ।
तप जप संजम बाहिरो, कूंदो वण रह्यो लाल ॥ ७ ॥
छदमस्थ एलाणे ओलखे, ए भेष ले भूला जांय ।
तिणरी खबर इण विध परे, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ८ ॥

ढाल

[जीव दया व्रत पालो]

रसगृद्धी ते हिलिया गटके रे, सरस आहार नें कारण भटके ।
भेषलेइ आत्म नहि हटके रे, त्यांरे चिहूं दिस फादा लटके ॥ १ ॥
रगाचंगा ने डीलां सनूरा रे, लोहो मांस बध्या नहि रुडा ।
लिया व्रत न पाले पूरा रे, ते सिव रमणी सूं दूरा ॥ २ ॥
चाप चाप नें कीधां आहारो रे, डील फाटे नें बधे विकारो ।
त्यारी देही बधे ऊभी ने आडी रें, साथल पीडयां पडे जाडी ॥ ३ ॥
घृत दूध दही मीठो भावे रे, कारण विण मांगी नें ल्यावे ।
लूंदा ल्यावे तपसा जणायो रे, ए तो पेट भरण रो उपायो रे ॥ ४ ॥

कोरो घृत पीए वीघारी रे, आ जुगती नहिं ब्रह्मचारी।
मरजादा विन करे आहारो रे, तिण लोपी भगवंत कारो॥ ५ ॥
ताक ताक जाए घर ताजे रे, साधु भेष लियो नहि लाजे। .
पर घर जाय पडगो माडे रे, नहि दियां भांडां ज्यूं भांडे॥ ६ ॥
दाता रा करे गुण ग्रामो रे, पारे नहि दे तिणरी मामो।
करे ग्रहस्थ आगे बातां रे, नहिं वहरावे त्यांरी करे तांतां॥ ७ ॥
श्रावक श्राविका ऊपर ममता रे, सिष्या री नहिं सुमता।
मूंडे वले काल्या दुकाल्या रे, त्यांसूं व्रत न जाए पाल्या॥ ८ ॥
बांध्यां थानक पकस्या ठिकाणा रे, ग्रहस्थ सूं मोह बंधाणा।
सुखसीलिया साताकारी रे, डूबा साधु नों भेषधारी॥ ९ ॥
ए लखण कुगुर रा जाणो रे, उत्तम नर हिरदे पिछाणो।
देव गुर में खोटा जिण खाघा रे, तिणनें छे संसार जादा॥ १०।
एहवा ने गुरकर पूजे रे, समकत विन संवलो न सूझे।
तिणरे छे भारी कर्मो रे, ते किम ओलखे जिन धर्मो॥ ११।
कुगुरां री झाली पखपातो रे, त्याने न्याय री न गमें बातो।
वुध उलटी ने मूढ मिथ्याती रे, साधु वचन सुण्यां वले छाती॥ १२
घनावे सेठ बेटी ने खायो रे, कुसले राजग्रही आयो।
इम करसी साधु आहारो रे, तो पोहचे मुगत मझारो रे॥ १३

ढाल : ५

दुहा

खोटो नांणो नें सांतरों, एकण नोली मांय।
ते भोला रे हाथे दियां, त्यांसूं जूआ किया किम जाय ॥ १ ॥
ज्यूं साधु असाधु लोक में, दोयां रो एक आकार।
भोला भिन्न नहिं लेखवे, ते जाणे नहि आचार ॥ २ ॥
जिणरी बुध छे निरमली, ते देखे दोयां री चाल।
कुगुरां नें काने करे, साधु वांदे पग झाल ॥ ३ ॥
जे भारीकर्मां जीवडा, ते रह्या कूडी पख झाल।
पिण छिपायी छिपे नहीं, ते सुणजो कुगुर नी चाल ॥ ४ ॥

ढाल

[सादलरी—ए देसी]

ग्रहस्थ लीपे साधु कारणे, वले ऊपर छावे छान।
तिणरी करे अनुमोदना, ए कपट बुगल ज्यूं ध्यान।
ते किम तिरसी संसार नें* ॥ १ ॥
थानक भाडे लियो भोगवे, वले काचो पाणी तिण ठाम।
गछवासी भेला रहे, ए विटलां रो छे काम ॥ २ ॥
मिनष आंतरिया ऊपरे, घन उदके थानक काज।
ते मोल लराय मांहें वसे, त्यां छोडी लोकां री लाज ॥ ३ ॥
वले जागां बांधण कारणे, लेवे अउतरो माल।
तिण जागां मांहें रह्यां, ओ खांपणवालो ख्याल ॥ ४ ॥
लिगडा लिंगड्यां कारणे, जागां बांधी मठ जेम।
मठवासी ज्यूं मांहें वसे, त्यांनें साधु कहीजे केम ॥ ५ ॥
एहवा थानक भोगव्यां, बुद्धि अकल पत जाय।
भेष भांड्यो भगवान रो, साधु नाम धराय ॥ ६ ॥
ए चाला तो पोते चालवे, काम पड्यां हुवे दूर ॥
थानक भायां निमते कहे, कपटी बोले कूर ॥ ७ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

गृहस्थ बेलादिक तप कियां, तिण पासे घाल्यो डंड।
भोलां नें पाख्यां भर्म मे, ते हणे जीवां रा झंड ॥ ८ ॥
लाडू करावे करे आमनां, सामग्री में दराय।
ते रस गृद्धी चेंवे पख्या, आणी आणी खाय ॥ ९ ॥
केइ भेषधारी भूला कहे, पोखो धर्म रे नाम।
श्रावक नें श्राविका भणी, दया पालण रे काम ॥ १० ॥
पछे गृहस्थ साधु श्रावकां तणो, भेलो बांध तूमार।
मोल ल्यावे त्यांरे कारणे, के घरे नीपावे आहार ॥ ११ ॥
तिण घर जाए तेरिया, ज्यूं डोरी ताण्यो स्वान।
ताजे आहार तूटा पड़े, ओ पेट भरण रो तान ॥ १२ ॥
ए जीमणरो नाम दया दियो, पिण प्रतख दीसे गोठ।
काबू करवा आपणो, चोडे चलायो खोट ॥ १३ ॥
वले भेष पहरी लोलपी थका, हेरे परघर हाट।
इंद्रयां मेली मोकली, त्यांरो परभव में कुण घाट ॥ १४ ॥
गुरु चेला एक समुदाय मे, ते सगला एकण पांत।
आहार पाणी भेला करे, तिणमें क्यूं जाणे भांत ॥ १५ ॥
केइ चेला नें जाण कुसीलिया, त्यांसूं तो तोडे संभोग।
गुरु सूं न तोरे संकता, एतो बात अजोग ॥ १६ ॥
श्री वीर जिनेसर इम कह्यो, भेलो राखे भागल जाण।
तिण गच्छ सूं भेलप करे, ए बूडण रा अहलाण ॥ १७ ॥
कुसीलियां भागल भेला रहे, तिणरो न काढे निकाल।
कूड कपट करता फिरे, वले साधां सिर दे आल ॥ १८ ॥
परसंसा करे आप आपणी, दोषण देवे ढांक।
भागल भागल मिल गया, किणरी न राखे सांक ॥ १९ ॥
जो एकण नें अलगो करे, तो करे घणा रो उघाड।
पलमों दूर कियां डरे, ओ खोटो नाणो असार ॥ २० ॥
पांच सुमत तीन गुपत में, दीसे छिद्र अनेक।
पांच महाव्रत माहिलो, आखो न दीसे एक ॥ २१ ॥
ते गुरु करनें पूजावता, आप डूबे ओरा ने डबोय।
इम सांभल नर नारियां, छोडो कुगुरु ने जोय ॥ २२ ॥
भट्टी काढे कलाल तणे घरे, उनो पाणी हुवे तयार।
लिंगडा लिंगडी शहर में, बांधे मकोडा ज्यं हार ॥ २३ ॥
१००

कदा आगे पाणी नहिं ऊतस्यो, तो तिहांइज ले विसराम।
भरभर ल्यावे लोट पातरा, ठाली कर दे ठाम ॥ २४ ॥
ते पछे फेर भरावे ठामडा, काचो पाणी आण।
ते भारी दोष पिछात सूं, ए बूडण रा अहलाण ॥ २५ ॥
त्यांरे परंपरा में निषेधियो, नहि वहरणो घरे कलाल।
तिण घर ढूका वहरवा, भांगी परंपरा पाल ॥ २६ ॥
त्यांरे लेखेइ तिण कुल वहरतां, आवे चोमासी नो डंड।
आज्ञा लोप बडा तणी, हूंआ जगत में भंड ॥ २७ ॥
धुर सूं तो कुल जुगतो नही, बीजो गृहस्थ ले जावे साथ।
नित नित वहरे ते तीसरो, चोथो दोष पिछात ॥ २८ ॥
वणीमग संकादिक दोषण घणा, पिण चावा दोषण च्यार।
ते लिगडा लिगडी टाले नहीं, ते विटल हुआ बेकार ॥ २९ ॥
त्यांमें कितरा एक वहरे नहीं, केइ वहरे तिण घर जाय।
त्यांमें कुण साधु ने कुण चोरटो, ते पिण खबर न काय ॥ ३० ॥
जो अस्त्री समझे साधां कनें, तो धणी नें देरे लगाय।
भरतार समझ्या नार नें, कुगुरु कुब्द सिखाय ॥ ३१ ॥
सासू बहू मा बेटीयां, वले सगा सबंधीयां मांहिं।
त्यांनें रागनें धेष सिखावता, भेद घलावे ताहि ॥ ३२ ॥
केइ आवे सुध साधां कनें, तो मतीयां नें कहे आम।
थें वर्जी राखो घर रा मनुष्य नें, जावा मत दो ताम ॥ ३३ ॥
कहे दरसण करवा दो मती, वले सुणवा मत दो वांण।
डराए नें ल्यावो म्हां कनें, ए कुगुर चरित पिछांण ॥ ३४ ॥
त्यांरी अकल लागे केई बापडा, त्यांमें बुद्धि नहीं लवलेस।
दगधे घर रा माणसां, कर रह्या कूड कलेस ॥ ३५ ॥
केई अपचो कर भूखां मरे, आ खोटा मतरी रेस।
तिणरो दिन छे बांकडो, त्यांरे कुगुर तणो परवेस ॥ ३६ ॥
हलुकरमी डराया डरे नहीं, त्यांने रुचियो जिणवर धर्म।
चल जाए केयक बापडा, उदे हुआं असुभ कर्म ॥ ३७ ॥
त्यांरा मत तणा घर मांहिलो, एक फिरयां दुख थाय।
ताजा आहार पांणी कपडा तणी, जांणे रखें पडे अंतराय ॥ ३८ ॥
पेट रे कारण पापीया, त्यांरा घर में घाले बेठ।
कलहो वधारे करे आमनां, ए तो खोटा कुगुर पेठ ॥ ३९ ॥

तिण घर एक समझू हुवे, तो राखे तिणरी आंख।
सुध असुध लेवण तणी, आवे मन में सांक ॥ ४० ॥
तिण कारण कुगुर कर रह्या, आमी सामी घमडोल।
तोही आंधा नें मूल सूझे नही, जिम तांबा उपर झोल ॥ ४१ ॥
भाग प्रमाणे कुगुर मिल्या, ते कर्म तणो छे दोष।
इम सांभल नर नारीयां, मत करो मांहो माहिं रोष ॥ ४२ ॥

ढाल : ६

दुहा

भेषधारी विगस्या घणा, पांचमां आरा मांय।
नांम धरावे साधु रो, पिण बेठां सरम न काय ॥ १ ॥
खेत खाधो लोकां तणो, पहर नाहर की खाल।
ज्यूं भेष लीयो साधां तणो, पिण चाले गधा री चाल ॥ २ ॥
सरधा में भूलो घणा, ते थापे हिंसा धर्म।
वले भिष्ट हुआ आचार थी, बोहला बांधे कर्म ॥ ३ ॥
आभे फाटे थीगरी, कुण छ देवणहार।
ज्यूं गुर सहीत विगडीयो, त्यांरे चिहुं दिस परिया बघार ॥ ४ ॥
चोरी जारी आद दे, नीपजें माठा कर्म।
तोही आंधा जाय पगां पडे, ते मूल न जांणे मर्म ॥ ५ ॥
गुर गुरणी तणा चरित जांणियां, पिण छूटे नहीं पखपात।
तोही निरलज सुध साधां तणी, उठावे अणहूंती बात ॥ ६ ॥
आल देवण आघा घणा, वले डरे नहीं तिल मात।
भूठ बोले मुख बांधनें, ते किम आवे हाथ ॥ ७ ॥
ज्यांरे लाय लागी चिहुं दिसा, रहे न तिणरी सुध।
ज्यूं विणास काले इण भेष री, उपनीं विपरीत बुध ॥ ८ ॥
कुगुर चरित अनंत छें, कहितां नावें पार।
हिवे भव जीवां नें प्रति बोधवा, अल्प कहूं विस्तार ॥ ९ ॥

ढाल

[समरूं मन हर्ष तेह]

एक एक तणा दोषण ढांके, अकारज करता नही सांके।
त्यांनें कोइ नही हटकण वालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ १ ॥
त्यांरा विटल हुवा चेली चेला, गुर मांहें पिण आवे रेला।
लोपी मरजाद फोडी पालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ २ ॥
व्रत पचखांण में नही सेठां, ठांम ठांम थांनक मांडे बेठां।
श्री जिणवर सीख दीधी रालो, एहवा भेषधारी पांचमे कालो ॥ ३ ॥

साथे लीयां फिरे पुस्तक पोथा, आचार पालण जाबक थोथा।
ते फस रह्या माया जालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो॥ ४॥
करणी करतूत माहे पोला, वले अरड वरड मिरषा बोला।
त्यांरे भूठ तणो नही टालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो॥ ५॥
विकलां ने मूंड कीयां भेला, ते नाच रह्या कुबदी खेला।
जांणे भरभोलियां तणी मालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो॥ ६॥
त्यांरा श्रावक पिण केइ मूढ मती, पेलांरी बात करे अछती।
परभव डर नांणे देता आलो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो॥ ७॥
नांम धरावे साध सती, पिण लषण न दीसे एक रती।
मूंढे भूठ तणो वेह रह्यों नांलो, एहवा भेषधारी पाच में कालो॥ ८॥
केई पदवीधर बाजे मोटा, चलगत उंधी लषणा खोटा।
कण रहीत एकंत परालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो॥ ९॥
केइक लिगडा ने लिगडो, त्यांरी सुमत गुपत धूरसूं बिगडी।
अंतर नही घाल्यो बिचालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो॥ १०॥
एक टोला मे तायफा रे घणा, तायफा तायफा मे भागल पणा।
कुण काढे त्यारो निकालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो॥ ११॥
उघाड मांहोमाहिं केम करे, पाणी सगलां रो मांहिं मरे।
लिंगडा लिगड्यां रो एक ढालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो॥ १२॥
भेष मांहे करे चोरी जारी, त्यांने गृहस्थ बिचे कहिजे भारी।
त्यांरे केरे लागा मूरख बालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो॥ १३॥
तिणरो करे रह्या गालागोली, त्यांरो बिगड गयो जाबक टोलो।
त्यां मे कुकर्म रो बधियो चालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो॥ १४॥
एहवा कर्म करे साधु बाजे, निरलजा मूल नही लाजे।
निकाल काढ्यां उठे भालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो॥ १५॥
त्यांरो जथातत्थ उघाड करे, तो परिवार सहित तिणसूं रे लडे।
भगडो भाले बाधे चालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो॥ १६॥
जब आफे लोकां मे उघाड पडे, किण एक भागल ने दूर करे।
तिणने प्रायछित विन ले माहें वालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो॥ १७॥
एतो कपट करे लोकिक राखी, इतरी न कियां जाय नाकी।
आहार पाणी आडो आवे तालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो॥ १८॥
इम कर कर नें राखे शेखी, त्यांनें केवलज्ञानी रह्या देखी।
एतो पेटतणी करे प्रतिपालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो॥ १९॥

जो आप तणा शिष्यत्व देखे, तो ऊंधो गुरु बांधे किण लेखे।
समझे नहिं ग्यान सहित वाळो, एहवा भेषधारी पांच में काळो ॥ २० ॥
त्यांमें अठारह पाप तणा स्याला, तो तिण मूरख बांधे ताला।
अग्यानी आपो नहिं संभाळो, एहवा भेषधारी पांच में काळो ॥ २१ ॥
कहपुरुषनें देह गांधे, चंगी, त्यांरे सिर रे माठी अंसंगी।
तांही बांधे आळ में पंपाळो, एहवा भेषधारी पांच में काळो ॥ २२ ॥
सांची सूत्र धोंथी में सीजावे, ज्यां सूं राज किया ज्यारे।
ए दिष्टांत लीजे संभाळो, एहवा भेषधारी पांच में काळो ॥ २३ ॥
त्यांनें प्रगट किया माहि कजिया, ज्यांरा बिगड गया साधु अजिया।
तिणसूं मार्गां रे सिर देवे आळो, एहवा भेषधारी पांच में काळो ॥ २४ ॥
ते परिवार सहित नरके जासी, पछे चिहुं गति में गोथा खासी।
सगरो अस्ट तणो ज्यूं घड़माळो, एहवा भेषधारी पांच में काळो ॥ २५ ॥
ए गुणिया था वीर ना वेणा, ते प्रत्यक्ष देख लिया नेणा।
सांसो हुवे तो सूत्र संभाळो, एहवा भेषधारी पांच में काळो ॥ २६ ॥
अंधारा सूं चोर रहे राजी, जेहवी कुगुरु तणी चतुराजी।
कोढ थाय पडे ससर जाळो, एहवा भेषधारी पांच में काळो ॥ २७ ॥
वैराग घट्यो ते भेष बंधियो, छ्यांअंगे भार गधा ज्यूं लधियो।
थक गया बोझ लियो गाळो, एहवा भेषधारी पांच में काळो ॥ २८ ॥
धुर सूं भेद नवतत्व नहीं भण्या, तेनां सांग पहरी मुनिराज बण्या।
ज्यूं नाहर री खाल पहरी स्याळो, एहवा भेषधारी पांच में काळो ॥ २९ ॥
मांठी मांहि निजर पड्यां दीजे, त्यांने उपमा स्वान तणी दीजे।
बलायां करे मुंह विकराळो, एहवा भेषधारी पांच में काळो ॥ ३० ॥
केलवा एक अवस्त्र छेद्रण लागा, किलवा एक चोथा सूं भागा।
निकल्यो ससं पड़ियो दिवाळो, एहवा भेषधारी पांच में काळो ॥ ३१ ॥
चोरां मांहि चोर जाय बस्या, साधां में साधु आय धस्या।
पाचरा कूटा ज्यूं ढीग औ गाळो, एहवा भेषधारी पांच में काळो ॥ ३२ ॥
सगूडो ताके घर में हाट, घले अवसर देख पाडे बाट।
ठगण ज्यूं ठाकर गांवे टाळो, एहवा भेषधारी पांच में काळो ॥ ३३ ॥
ण भेष तणा कूडकपट तणी, कितलो एक कहूं हो त्रिभुवन धणी।
क्या रो तणो नहिं सलवाळो, एहवा भेषधारी पांच में काळो ॥ ३४ ॥
जिनें पिण गुरु जाणी पूजे, समकित बिन संको नहिं सूझे।
अंतर फूटी आयो जाळो, एहवा भेषधारी पांच में काळो ॥ ३५ ॥

तिणरी दिस छे सगली काणी, ते खांच आपण मे ले ताणी।
अग्नि ज्यूं ऊठे अंतर झालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ ३६ ॥
समचे कह्यां पिण निंदा जाणे, बुद्धी भिष्ट थयां उलटी ताणे।
ते कर रह्या भूठी भखालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ ३७ ॥
जे अन्याय मारग रा पखपाती, ज्यारी सुण सुण बल उठे छाती।
त्यांने कुगुरु तणी लागी लालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ ३८ ॥
पखपात नही त्यांरे मन भावे, पिण चोर चांदणो किम सुहावे।
लारे बाहर रा पूर लागा लालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ ३९ ॥
ए तो भाव आचारग मे चाल्या, केइ ठाणाअंग माहिं सूं घाल्या।
विकलां नें वीर दिया टालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ ४० ॥
वले अग उपंग मूल नें छेद, तिण मांहै पिण चाल्या भेद।
ओलखाय कियो वीर उजवालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ ४१ ॥
कितरा एक चरित काने सुणिया, कितरा एक सूतर सूं गुणिया।
केइ प्रतख देख लिया न्हालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ ४२ ॥
सूतर तणो लेइ सरणो, पाषंड पथ रो कियो निरणो।
खोटा नें उत्तम दे विडालो, एहवा विरला पांच मे कालो ॥ ४३ ॥
एतो कुगुर तणी छे निसाणी, सुण हरष धरे उत्तम प्राणी।
अमृत ज्यूं लागे रसालो, एहवा विरला पांच मे कालो ॥ ४४ ॥

दुहा

ढाल : ७

केई भेषधारी भूला थका, ते कर रह्या उंधी तांण।
इविरत बतावें साध रे, ते सूतर अर्थ अजांण ॥ १ ॥
त्यां साधपणो नही ओलख्यो, ते भूला भर्म गिंवार।
सर्व सावद्य त्याग्यों मुख सूं कहें, वले पाप रो कहें आगार ॥ २ ॥
आहार पांणी कपडादिक उपरे, उवे सदा रह्या मुरझाय।
एहवा भेषधास्यां रे इविरत खरी, पिण साधां रें इवरत न कांय ॥ ३ ॥
च्यार गुणठांणा इविरत कही, तठें विरत न दीसें लिगार।
देस विरत गुणठांणें पांच में, आगें सर्व विरत अणगार ॥ ४ ॥
जो साधां रे इविरत हुवें, तो सर्व विरती कुण होय।
त्यांरो भाव भेद परगट करूं, सांभलजो सहु कोय ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आ०]

चौवीसमां श्री वीर जिणेसर, निरदोष आहार आंणी ने खायो।
सुध परिणांमे उदर मे उतास्यो, त्यांनेंइ मूरख पाप बतायो।
इण पाषंड मतरो निरणो कीजो* ॥ १ ॥

अनंत चोबीसी मुगत गइ, ते आहार ल्याया था दोषण टालो।
तिणमे अग्यांनी पाप बताए, सगला रे सिर दीधो आलो ॥ २ ॥
सर्व सावद्य जोग रा त्याग कीयां ते, सर्व विरत सुध साध कहावें।
तिरण तारण पुरषां रे अग्यांनी, इविरत रो आगार बतावें ॥ ३ ॥
गोतम आदि दे साध अनंता, साधवीयां रो छेह न पारो।
सगला रो आहार अधर्म मे घाल्यो, तिण आंख मीची नें कीयों अंधारो ॥ ४ ॥
साध रो जनम हूओ जिण दिन थी, कल्पें ते वस्तु वहरीने ल्यावें।
ते पिण अरिहंत री आगना सूं, इणमेंइ दूष्टी पाप बतावें ॥ ५ ॥
वस्त्र पातर रजोहरणादिक, साध रा उपध सूतर में चाल्या।
भगवंत री आग्या सूं राखे, ते अधर्म मांहें अग्यांनी घाल्या ॥ ६ ॥
दसवीकालक ठांणां अंग में, प्रश्न व्याकरण उवाइ मांह्यो।
धर्म उपध साध रा विरत मे, तिण मांहे मूरख पाप बतायो ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

किण ही ग्रहस्थ नीलोतरी ने त्यागी, जीवे ज्यां लग आण वेरागो।
उ साधपणो लेइ इविरत सरधे, तो ववेक विकल खावा कांय लागो॥ ८॥
अधर्म जांणें नीलोतरी खाधां, तो पचखांण भाग्यो किण लेखे।
घर मे थका जावजीव त्यागी थी, तिण सांह्मों मूरख कांय नहीं देखे॥ ६॥
ग्रहस्थ जे जे वस्तु त्यागी ते, अधर्म रो मूल इविरत जांणों।
ते साधपणो लेइ सेवा लागो, तो क्यूं नही पाले लीयां पचखांणो॥ १०॥
जे इविरत सरधे ने सूस न पाले, ते भागल छे भारीकर्मो।
मारग छोडीने उजर पडीया, साध आहार कीयां में सरधे अधर्मो॥ ११॥
करे वीयावच चेला गुररी, करम तणी कोड तेह खपावे।
तीर्थंकर गोत वर्धें उतकष्टों, पिण गुर नें तो मूरख पाप बतावे॥ १२॥
दसवीस चेला पडिकमणो करने, गुर री वीयावच करवा आवे।
ते गुर नें पाप लगाए अग्यांनी, दुरगत मांहे कांय पोहचावे॥ १३॥
गुर नें पाप लागे वीयावच करायां, ए सूतर मांहे कठे नही चाल्यो।
मुढ मती जीव भारीकरमा, ए पिण घोचो अणहुंतों घाल्यो॥ १४॥
गुर ने पाप सूं भेलो कीयां मे, चेलां रा करम कटे किण लेखे।
अभ्यंतर फूटी ने अंध थया ते, सूतर सांह्मो मूल न देखे॥ १५॥
साध मांहोमांहीं देवे लेवे, वस्त्र पातर आहार ने पांणी।
ते पिण लीधां मे पाप बतावे, एहवी कुपातर बोले वाणी॥ १६॥
दातार ने धर्म साधा ने वेहराया, पिण साध वेहरे हुवे पाप सूं भारी।
दातार तरीयो साधु डबोए, आ पिण सरधा कहे भेषधारी॥ १७॥
जो पाप लागे साध आहार कीयां मे, तिण पाप रो साभ दीयो दातार।
तिरण री आसा राखे किण लेखे, भूला रे भूला थे मूढ गिवार॥ १८॥
साध तो पाप अठारेइ त्याग्या, सुध छे तिणरी सुमति ने गुपती।
दातार कने सुध जाच लीयां में, पाप कठी सूं लागो रे कुमती॥ १६॥
गुर दिष्या देइ सिख सिषणी करे ते, निरजरा तणा भेद माहे चाल्या।
मोह मिथ्यात सूं भारीकरमां, ते पिण परिग्रहा मांहे घाल्या॥ २०॥
छठें गुणठांणें परमाद कहीने, साधां रे इविरत थापे खावारी।
पूछ्यां कहे में सर्व विरती छां, ओ पिण भूठ बोले भेषधारी॥ २१॥
छठे गुणठांणे परमाद कह्यो ते, किणहीक वेला लागतो जांणो।
ते विषे कषाय उसभ जोग आयां, पिण मुढ मती करे उंधी तांणे॥ २२॥
परमाद इविरत कहें आहार उपध सूं, ते कर रह्या कुमती कूडी विपवादो।
आहार उपध केवली पिण आंणें, ते कठी गयो त्यांरो परमादो॥ २३॥

अप्रमादी कह्या सातमें गुणठाणें, परमाद नहीं तिण गुण ठांणा आगें।
उवे पिण आहार उपाध भोगवता, तो त्यांनें परमाद क्यूं नहीं लागें॥ २४॥
छदमस्थ आचरें केवलीए आचरीयों, केवली ए ताग्यो ते छदमस्थ त्यागें।
आहार उपध केवली ज्यूं भोगवीयां, तिण साध नें परमाद किण विध लागें॥ २५॥
साध आहार करतां चारित कुसले, सुध परिणांमा सूं कटें आगला करमों।
जब उंध मती कोइ अवलो बोलें, कहे घणों खावो ज्यूं घणों हुवे धर्मो॥ २६॥
पोहर रात तांइ साध उंचें सब्दें, धर्मकथा कहें मोटें मंडाणो।
उण उंध मती री सरधा रे लेखें, आखी रात में करणो वखांणो॥ २७॥
जेंणा सूं साध करें पडिलेंहण, ते काटण करम आत्म नें उधरणी।
उण उंधमती री सरधा रे लेखें, आखोइ दिन पडिलेहण करणी॥ २८॥
मरजादा सूं आहार साध नें करणो, मरजादा सूं करणो वखांणो।
मरजादा सूं पडिलेहण करणी, समझो रें समझो थे मूंढ अयांणो॥ २९॥
ज्यूं साध नें आहार छ कारणें करणो, उवें घणों घणो खासी किण लेखें।
ए छवीसमो उत्तराधेन मांहें, वले छठो ठांणों मूंढ क्यूं नहीं देखें॥ ३०॥
जो धर्म हुवें साध आहार कीयां में, तो क्यांनें करें आहार ना पचखांणो।
पाप जांणेंनें त्याग करें छें, उलट बुधी बोले एहवी वांणो॥ ३१॥
साध काउसग में त्यागें हालवो चालवो, वले मुख सूं न बोलें निरवद वांणो।
उण उलट बुधी री सरधा रे लेखें, अे पिण पाप तणा पचखांणो॥ ३२॥
कोइ बोलण रा त्याग करें गुण साझें, ते धर्मकथा मांडी न करें वखाणो।
उण उलट बुधी री सरधा रे लेखें, अें पिण पाप तणा पचखांणो॥ ३३॥
कोइ साध साधां नें आहार देवण रा, त्याग करे मन उछरंग आंणो।
उण उलट बुधी री सरधा रे लेखें, अें पिण पाप तणा पचखांणो॥ ३४॥
कोइ साध साधां री न करें वीयावच, त्याग करें मन उरंग आंणो।
उण उलट बुधी री सरधा रे लेखें, अें पिण पाप तणा पचखांणो॥ ३५॥
सर्व मूलगुण में सर्व सावद्य त्याग्यों, तिणसूं नवा पाप न लागें आंणो।
आगला करम काटणनें साध नें, उत्तर गुण छें दस विध पचखांणो।
आ सरधा श्री जिणवर भाषी* ॥ ३६॥

साध उपवास बेलादिक करें संथारो, कोइ साध लेवें नितरो नित आहारो।
पाप रो त्याग बेहूं रे सरिखो, ओं तप तणों छें भेदजन्या रो॥ ३७॥
जेंणा सूं चाल्यां जेंणा सूं उभां, जेंणा सूं बेंठा जेंणा सूं सुवंता।
जेंणा सूं भोजन कीयां जेंणा सूं बोल्यां, तिण साध नें पाप न कह्यों भगवंत॥ ३८॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ए दसवीकालक चोथे अधेने, आठमी गाथा अरिहंत भाषी।
छ बोल जेणा सूं साध कीयां में, पाप कहे भारीकर्मा अन्हाखी॥ ३९॥
निरवद गोचरी रखेसरां री, मोख री साधन भगवांन भाषी।
ए दसवीकालक पांचमें अधेने बांणूंमी गाथा बोले साषी॥ ४०॥
सुध आहार वहरयां साध सद गति जाअे, निरदोष दीयां सुद गति जाअें दाता।
ए दसवीकालक पांचमें अधेनें, पेहला उदेसा री छेहली गाथा॥ ४१॥
सात करम साध ढीला पाडे, सुध आहार करे साध तिण कालो।
ए भगवती सूतर पेहले सुतस्कंधे, नवमो उदेसो जोय संभालो॥ ४२॥
आहार करे गुर री आगना सूं, तिण साध ने वीर कही छे मोखो।
अठारमो अधेन गिनाता रो जोए, सांसो काढी मेटो मन रो धोखो॥ ४३॥
सब्द रूप गन्ध रस फरस री, साधां रे इविरत भूल न कायो।
ए सुयगडांग अधेन अठारमें, वले उवाइ सूतर माह्यो॥ ४४॥
साधां रे इविरत कहे पाषंडी, तिण कुमती री संगत दूर निवारो।
ए सुण सुण नें उत्तम नर नारी, सर्व विरती गुर माथे धारो॥ ४५॥

ढाल : ८

दुहा

आहार उपध नें उपासरो, भोगवें दोष सहीत।
भिष्ट थया आचार सूं, त्यां छोडी साधां री रीत ॥ १ ॥
आहार उपधने उपाश्रो, असुध दे दातार।
ते गुरां समेत दुरगत परें, खाअें अनंती मार ॥ २ ॥
सहु दोषां में दोष मोटको, आधाकर्मी जांण।
एहवा थांनकादिक भोगवें, त्यां भांगी जिणवर आण ॥ ३ ॥
जिण आगना पालें नही, ते भागल री छें पांत।
ते कुग कुग अकार्य कर रह्या, ते सुणजो कर खांत ॥ ४ ॥

ढाल

[आ अनुकम्पा जिन आगण्या में]

केई भेषधारी कहें म्हें जीव बचावां, ते करें अन्हाखी अणहूंता कूका।
ते साधपणा रो नांम धराए, उलटा छ काय मरावण ढूका।
इण पापंड मतरो निरणो कीजो* ॥ १ ॥
पीलू जितरी मुरड माटी में, असंख्याता जीव तेहीज बतावें।
मांहे बुगलध्यानी मुनीसर बेठा, उपर थाटे थाटें मुरड नखावें ॥ २ ॥
साधां रे कारण थांनक लीपे, पीली पांणी रा जीवां नें मारी।
जो उण थांनक में साध रहें तो, तिणने तो वीर कह्यों भेषधारी ॥ ३ ॥
कूंटा सांकल करावे थांनक कारण, वले खाती सिलावट बेंठा कमावें।
केलू कूटीजें ने चूंनो दरीजें, अे पिण चाला कुगुर चलावें ॥ ४ ॥
एक आंकुरा वनसपती मे, जीव अनंता तो मुख सूं बतावे।
जो थांनक उपर नीलो उगें तो, सांनीकर दुष्टी जड सूं कढावें ॥ ५ ॥
दरतां लीपतां थांनक चूणंतां, कीड्यां मांकादिक मरे अथागो।
डरें नहीं दुष्टी अकार्य करता, त्यांरे करम जोगे डंक कुगुरां रो लागो ॥ ६ ॥
वले छपरा छावंता नें केंलू फेरतां, तठें नीलणफूलण जीव मरें अणंता।
जमीया जाल उखेलें अग्यांनी, ते पिण कुगुरां रे काज हणंता ॥ ७ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ए थांनक काजे हणे जीव दुष्टी, हणावण वालो दूजे करण जांणो।
सरावण वालो तीजें करण डूबो, पछे इविरत लेखे बरोबर जांणो॥ ८॥
जिण थानक करावण गरथ दीयों ते, सर्व हिंसा रो कहीजे नायक।
धर्म काजे दुष्टी जीव हणाए, अनत जीवा रो हुवो दुखदायक॥ ९॥
अनता जीव मारे थांनक कीधो, वले दिन दिन अनत मरे छे आगे।
भेषधार्‍यां सहीत श्रावक ने पूछीजे, इण थांनक रो पाप किण किण नें लागे॥ १०॥
कोइ श्रावक राते रोछार सूअे तो, तिणने पाप लागो कहे छे विमासी।
ओ थांनक सदाइ रोछार रहे छे, तिण पाप थी दुरगत कुण कुण जासी॥ ११॥
मठवासी ज्यूं तिणमें मूरख रख्या छे, वले थांनकरी राखे धणीयापो।
सार संभाल करे परीया धूरीयां, तिणनें लागें छे निरंतर पापो॥ १२॥
कोइ पूछे तो कूड बोले कपटी, श्रावका रे काजे कीधो बतावे।
जो साचो हुवें तो माहे रहणो त्यांगे, पछे कुण कुण श्रावक थांनक करावे॥ १३॥
छकाय हणीने थांनक कीधो, ते तो थानक छें आधाकर्मी।
तिण थांनक मे साध रहें तो, धर्म सूं भिष्ट ने कहीजे अधर्मी॥ १४॥
वले ग्रहस्थ कह्यो तिणने वीर जिणेसर, महासावद्य किरिया लागें भारी।
आचारग दूजे श्रुतकंधे, भेषरे लेखें कह्यों भेषधारी॥ १५॥
आधाकर्मी थांनक मे साध रहे ते, नरक निगोद में भीकां खावे।
ए भाव भगोती मे वीर कह्या छे, वले चिहुं गत मांहे घणो दुख पावे॥ १६॥
साध रे कारण थांनक करावे, ते गर्भमे आडो आवे दाता।
त्याने कापे कापे काढे नांन्हा काता, वले नरका मे मार अनती खाता॥ १७॥
धन रे कारण जीव हणे त्याने, मंदबुधी कह्या दसमे अंगो।
दयारी ठोर हिंसा ने थापी, डूबा रे डूबा थे कुगुरां रे संगो॥॥ १८॥
धर्म हेते हिंसा कीयां समकत जावे, वले जनम मरण दुख वधे अथायो।
ए वीर वचन साचा कर सरदो, पेला अधेन आचारग माहयों॥ १९॥
इम साभल ने उत्तम नरनारी, देवगुर धर्म काजे हिंसा नहीं कीजें।
आहार उपध सेज्या सथारो, निरदोष हुवे तो देइ लाहो लीजें॥ २०॥
न्याती अन्याती श्रावक अश्रावक ने, आखी आखी राति थांनक मे वसावे।
नसीत रे आठमे उदेसे, च्यार महीनां रो चारित जावे॥ २१॥
वासा रूप रहे तिणने नही नषेधे, कोइ नषेध्यां पछेइ रहे जोरीदावे।
तिण साथे वारे जावें साथे आवे पाछो, तिणनेइ डंड चोमासी आवे॥ २२॥
सिधंत रा पाठमें वीर नषेध्यो, केइ भिष्ट आचारी कहे रहणो चाल्यो।
उवें सूतर रो नांमलेइ भूठ वोले, ओ अर्थमे घोचो अणहुतो घाल्यो॥ २३॥

कूडा कूडा अर्थ लोकां नें वचाएं, आप डूबें करें ओरां नें भारी।
अणहुंता अर्थ सूं पाठ उथापें, जो टांकों भलें तो हुवें अनंत संसारी॥ २४॥
उदेसीक असणादिक भोगवें ते, वले मोल लीयो उपधादिक आहारो।
वले नितपिंड भोगवें एकण घरनो, एहवा साध जासी नरक मझारो॥ २५॥
एतो भाव कह्या उतराधेन मांहें, वीसमां अधेन में काढ्यों निकालो।
त्यांनें पिण गुर जांणेंनें वांदें अग्यांनी, त्यांरी अभितर फूटी आया करम जालो॥ २६॥
गांमवारें उतरीयो कटक सथवाडो, तिहां गोचरी जावेंतो पाछो आवें।
कोइ जिण आगना लोपी रात रहें तो, च्यार महीनां रो चारित जावें॥ २७॥
एतो वेतकल्प रे तीजें उदेसें, साधनें कटक मांहें न रहणो रातो।
कोइ रातें रही वले दोष न सरधें, तिण मूरख री मांनें मूरख बातों॥ २८॥
एहवा भारी भारी दोष जांणनें सेवें, वले बतलांया बोलें नहीं सूधा।
ते समझाया समझें नहीं मूरख, जिण आगना लोपी नें पडीया उंधा॥ २९॥
एहवा भेषधारी साध रा भेष मांहें, ते तो आप डूबें ओरां नें डबोवें।
त्यांनें वांदें पूजें सतगुर जांणेंनें, ते पिण मानव रो भव खोवें॥ ३०॥
उसभ करम उदें सूं संवलो न सूझें, त्यांनें गुर मिलीया छें हीण आचारी।
त्यांरी सेवा भगत कीयां ए फल लागें, टांको भलें तो हुवें अनंत संसारी॥ ३१॥
इम सांभलनें उत्तम नरनारी, एहवा भेषधार्यां सूं रहजो दूरा।
साधां री सेवा करें चित्त चोखे, ते तो चुतर विचषण प्रवीण पूरा॥ ३२॥

ढाल : ६

दुहा

भेषधारी भूला फिरें, त्यांरें घोर रुदर मिथ्यात।
वले भिष्ट थया आचार थी, त्यांरी भोला करें पखपात॥ १ ॥
आहार उपधि ने उपाश्रो, असुध भोगावे जांण।
त्यांसूं आचार री चरचा कीयां, तो लागे जहर समांण॥ २ ॥
वले जीव हिंसा सूं डरे नहीं, सके नही करता अकाज।
वले धर्म कहे हिंसा कीयां, नाणे मन मांहे लाज॥ ३ ॥
पिण भोलां ने खबर पडे नही, चोडे आचार री वात।
थोडीसी परगट करूं, ते सुणजो विख्यात॥ ४ ॥

ढाल

[देवदानव तीर्थंकर गणधर]

आधाकरमी थांनक मांहे साध रहे तो, पेहलो महावरत भागें।
वले दया रहीत कह्यो सूतर भगोती मे, अनंत जनम मरण करसी आगे रे मुनिवर।
जीव दया विरत पालो* ॥ १ ॥
वले सर्व सावद्य रा त्याग कहे तो, दूजोइ माहावरत भागो।
जो उ कहे थांनक म्हांरे काज न कीधो, तो कपट सहीत भूठ लागो रे॥ मु० जी० २ ॥
जे जीव मूंआ त्यां सरीर न आप्यो, तिणसूं अदत उण जीवां रो लागो।
वले आगनां लोपी श्री अरिहंत री, तिणसूं तीजोइ माहावरत भागो रे॥ ३ ॥
तिण थांनक ने आपणो कर राखे, वले ममता रहें नित लागी।
मठवासी ज्यूं माहे वसे तो, पांचमोइ गयो विरत भागी रे॥ ४ ॥
बाकी चोथो छठो विरत इण विध भागा, आचार कुसील रे लेखे।
एहवा भागल फिरे साध रा भेषमें, त्यांनें वुधवंत ग्यांन सूं देखें रे॥ ५ ॥
एक काय हणें तिणने उतकष्टे भांगे, हिंसा छकाय री लागे।
ज्यूं एक विरत भाग्यां उतकष्ट भांगें, विरत छहूंइ भांगें रे॥ ६ ॥
ए आचारंग रे दूजे अधेने, छठो उदेसो संभालो।
ए भाव सुणेने हिये विमासो, मत वोलो आल पंपालो रे॥ ७ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

इणसूं दोष मोटां मोटां सेवें, साध रा भेष मझारो।
कोइ चुतर विचषण जांण होसी ते, थांनें किम सरधें अणगारो रे॥ ८॥
वले दोष बयांलीस भाख्या सूतर में, बावन कह्या अणाचार।
यां मांहिला दोष सेव्यां सेवायां, माहावरतां में परसी वघार रे॥ ९॥
कोइ थानक निमतें गरथ दे तिणनें, मुख सूं मतीय सरावों।
आप समांणा छ काय जीवां नें, सांनीकर कांय मरावो रे॥ १०॥
थांनक करावें त्यांने धर्म कहें नें, भोला नें मत भरमावो।
आप रहिवानें जायगां रे कारण, जीवां नें मतीय मरावो रे॥ ११॥
साधां रें कारण जीव हणें त्यांरे, हुसी भूंडा सूं भूंडो।
जो उ साधु थइ उण जायगां में रहसी तो, साधपणो उणरोइ बूडो रे॥ १२॥
जिण गरथ दीयों जिण सूं जीव मूंआ त्यांरो, उतरा जीवांरो उणनें पापो।
वले धर्म जांणें तो पाप अठारमो, तिणसूं होसी घणो संतापो रे॥ १३॥
साध काजें दडें लीपें छपरा छावें, वले जीव अनेक विध मारें।
आप डूबे वेर वांधें जीवां सूं, वले गुर रो जनम विगाडे रे॥ १४॥
थे धर्म ठिकांणें जीव हणों छो, तो दया किसी ठोड पालो।
कुगुरां रा भरमाया आतमा नें, कांय लगावो कालो रे॥ १५॥
रात अंधारी में जीव न सूझें, जब आडा म जडो किवाडो।
छ कायां रा पीहर वाजो तो, हाथा सूं जीव म मारो रे॥ १६॥
जो थांनें साची सीख न लागें, तो मतल्यों साधवीयां रो सरणो।
साध नें रहणो दुवार उघाडें, साधवीयां नें चाल्यो जडणो रे॥ १७॥
जो गृहस्थ साथे मेलो संदेसो, जब मारी जासी छ कायो।
उ जोयां विनां चालें मारग मांहें, तो एहवो म करो अन्यायो रे॥ १८॥
साधपणो थांसूं सझतो न दीसें, तो श्रावक नांम धरावो।
सगत सारु वरत चोखा पालो, दोषण मतीय लगावो रे॥ १९॥
आचार थांसूं पलतो न दीसें, तो आरा रे माथें मत न्हांखों।
भगवंत रा केडायत वाजे, झूठ बोलता क्यूं नही सांको रे॥ २०॥
थे विरत विहूणा साध वाजो, तो ही रह्या लोकां में पूजाय।
ठाला वादल ज्यूं थोथा गाजो, ओं मोने इचर्य थाय रे॥ २१॥
इत्यादिक आचार में हीणां, ते पूरा केम कहवायो।
हिंसा मांहें धर्म परूप्णो, थांनें ते पिण खबर न कांयो रे॥ २२॥
तेलो करें तिणने तीनां दिनां लग, कोइ उनोपांणी कर पायो।
तिणनें तो आगली सरधा रें लेखे, थे एकंत पाप बतायो रे॥ २३॥

तिणने चोथें दिन आरंभ करने, छ काय हणीनें जीमायो।
तिण मांहे मिश्र धर्म बतावो, ते किण विध मिलसी न्यायो रे॥ २४॥
तेला मे उनो पाणी कर पावे, तिणमे लो पाप बतायो।
चोथे दिन पोख्यो ते हिंसा घणी करे, तिणमे मिश्र किहां थी थायो रे॥ २५॥
ओ मिश्र परूप्यो ते थांरे लेखे, आघो न चालें कोय।
थे हिंसा मांहें धर्म म थापो, सूतर सांह्मो जोय रे॥ २६॥
अर्थ अनर्थ धर्म जाणीने, छकाय हणे मंदबुधी।
धर्म रे कारण जीव हणें त्यांरी, सरधा घणी छे उंधी॥ २७॥
सूइ नाके सिंधर पावें, कहो किम आगो पेसें।
ज्यूं हिंसा मांहे धर्म परूपे, ते सालोसाल न बेसें रे॥ २८॥
ए समचे आचार साधरो बतायो, तिणमें राग धेख मत जांणो।
थे सुण सुणनें समता भाव राखो, थे म करो खांचातांणों रे॥ २९॥
पीत पुरांणी थी थासूं पेंहली, तिणसूं भिन भिन कर समझावूं।
जो थांरा मनमें संका पडें तो, सूतर काढ बतावूं रे॥ ३०॥
समत अठारे वरस तेतीसे, मेडता सहर मंझारो।
वेसाख विद नवमी दिन थांने, दीधी सीखावण हितकारो रे॥ ३१॥

ढाल : १०

दुहा

तालपुट विप पीधां थकां, जूदा हुवें जीव काय।
कुगुर नें कोइ गुर करें, ते चिहुं गति गोता खाय॥ १॥
कुगुर कुपातर अति बूरा, भाख्यो श्री भगवांन।
त्यांनें माठी माठी देउं ओपमा, ते सुणो सुरत दे कांन॥ २॥

ढाल

[वीर सुणो मोरी वीनती]

विष पीधों निरणें कोठें, पवन भूम्यो हो वले तिणहिज ठांम।
नहीं ओषध नहीं गारड़ू, जिवण रो हो तिनरें काठो कांम।
लखण सुणो कुगुरां तणां*॥ १॥
विप जिम छें मिथ्यात अनादरो, सर्प जेहवा हो कुगुरां रा डंक जांण।
जहर सगलेइ परगम्यों, नहीं वांछें हो सुणवा साधां री वांण॥ २॥
कदा सुणें तो सरधें नहीं, विण समझ्यां हो करें उंधी तांण।
साध श्रावक धर्म न ओलख्यों, सावद्य निरवद हो करणी रा अजांण॥ ३॥
सनीपात झोलो घट तेहनें, घणों भिडकें हो पायां मिश्री नें दूध।
इम साध वचन सुणीयां थकां, बक उठें हो मिथ्याती विण सुध॥ ४॥
केइ अग्यांनी इम कहें, म्हांरे तो हो घणा री परतीत।
ते केडें लागा कुगुरां तणे, समझण री हो न दीसें कांइ रीत॥ ५॥
जाजम विछाइ कूवा उपरें, चिहूं कांनी रे मेल्यों उपर भार।
भोला वेंसे तिण उपरें, ते डूब मरें रे तिण कूवा मझार॥ ६॥
तिम कुगुर छें कूवा सारिषा, जाजम सम रे कनें साध रो भेष।
त्यांनें गुर लेखव वंदणा करें, ते डूबें रे मूरख अंध अदेख रे॥ ७॥
कुगुर भडभूंजा सारिषा, त्यांरी सरधा हो खोटी भाड समांण।
भारीकरमां जीव चिणा सारिषा, त्यांनें झोखें हो खोटी सरधा में आंण॥ ८॥
चोरी जारी करता लाजें नहीं, ते किम लाजें हो मूरख देता आल।
केई भेपधारी छें एहवा, कर रह्या हो पापी भूठी झकाल॥ ९॥
एहवा भेपधास्यां नें छेडव्यां, बक उठें हो वोलें आल पंपाल।
कजीया. कलेस करें घणां, नहीं संकें हो देता कूडा आल॥ १०॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

लोक सुणे वखांण रात रो, जब जाए हो पाषंड पंथ उठ।
जब भेषधारी कुडता थकां, ते तो बोले हो पापी किण विध भूठ॥ ११ ॥
परउपगार जांणनें, साध्र करें हो रात रो वखांण।
तिणमें कहे दोष निसंक सूं, ते भेषधारी हो एहवा मूंढ अयांण॥ १२ ॥
रात तणो वखांण निषेधीयो, भेषधाख्यां हो मूरखां बेफांम।
ते चोडे भूठ चलावीयो, लेइ लेइ हो भगवंत रो नांम॥ १३ ॥
जो सूतर में भगवंत वरजीयो, रात तणो नही करणो वखांण।
साचा हुवें तो सूतर में बताय दो, नही तो बूडो क्यूं हो कूडी कर तांण॥ १४ ॥
रात तणो वखांण करणो नही, सूतर मांहे हो नही वरज्यो साख्यात।
भेषधाख्यां भूठ चलावीयों, त्यांरी मांनें हो कोइ मूरख वात॥ १५ ॥
दोष जांणे वखांण राते कीयां, तो कांय करे हो पोते राते वखांण।
पोते साध नांम धराय ने, कांय बूडे हो मूरख जांण जांण॥ १६ ॥
इम कह्यां जाव न उपजे, जब बोले हो मूरख उंधी वांण।
कहे म्हें दोष सेवां जांण जांणने, पिण थांनें हो नही करणों वखांण॥ १७ ॥
पोते भागल दोषीला ठहरने, निषेधो हो रात तणो वखांण।
एहवा भेषधारी सुध बुध विनां, अणहूंती हो लीधी गला में तांण॥ १८ ॥
कोइ नाक काटे आपरो, पेंलाने हो कुसावण करवा काज।
एहवा मूरख छें मांनवी, नकटा हुवेतां हो मूरख नांणी लाज॥ १९ ॥
ज्यूं साधां ने दोषीला थापवा, भेषधारी हो दोषीला ठहख्या आप।
नकटा तणी त्यांनें ओपमा, त्यांरे होसी हो भवभव में सताप॥ २० ॥
एहवा कुगुरां री परतीत सूं, आगे बूडा हो घणां जीव अनंत।
ते नरक निगोद माहे पड्यां, त्यारो कहतां हो किम आवे अंत॥ २१ ॥

ढाल : ११

दुहा

विनें मूल धर्म जिण कह्यो, ते जांणें विरला जीव।
ते सतगुर रो विनों करें, त्यां दीधी मुगत री नींव॥ १॥
जे कुगुर तणो विनो करें, ते किम उतरें भवपार।
ज्यां सुगुर कुगुर नहीं ओलख्या, ते गया जमारो हार॥ २॥
केई अग्यांनी इम कहें, गुर नें बाप एक होय।
भूंडा भला जे गुर कस्या, त्यांनें न छोडणा कोय॥ ३॥
जिण आगम मांहें इम कह्यों, गुर करणा गुण देख।
खोटा गुर ने नहीं सेवणा, त्यांरी कीमत करणी वशेष॥ ४॥
कुगुर नें अजांणपणें गुर कीयों, ठीक पडीयां छोडणो सताब।
आतो लीधी टेक न राखणी, ते सुणजो सूतर रा जाब॥ ५॥

ढाल

[जगत गुरु तिसला नदन वीर]

केई भोला लोक इम कहें जी, गुर नही छोडणा कोय।
त्यां आचार तो ओलख्यों नही, मन आवें ज्यूं बोलें सोय।
चुतर नर छोडो कुगुरनों संग* ॥ १ ॥
गुर गहला गुर बावला, तोही गुर देवन का देव।
चेलो जों सेणों हुवे तो, उं करे गुरां री सेव॥ २ ॥
साचो मारग साधरो जी, खोट खटावें नांहि।
चेलो गुर चूकें कदा जी, तो छोडें खिण एक मांहि॥ ३ ॥
कहो साध किसका सगा जी, तडकें तोडें नेह।
आचारी सूं हिलमिलें जी, अणाचारी सूं छेह॥ ४ ॥
नीलटांस कीडा चूगें जी, मांहें विराजें रांम।
कहे करणी रो कारण नही, म्हांरे दरसणरोइ कांम।
ए अणतीरथी री वांण॥ ५ ॥
नीलटांस कीडा चूगेंजी, तिणरे दया नही घट मांय।
पापी रो मुख देखतां जी, भलो कठा सूं थाय॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

गुण लारे पूजा कही, तोही निगुण पूजता जाय।
चोडे भूला मांनवी, त्याने किम आंणीजे ठांय ॥ ७ ॥
सोंनारी छूरी चोखी घणीं, पिण पेट न मारे कोय।
ए लोकीक दिष्टंत सांभले, तुम्हे हिरदें विमासी जोय ॥ ८ ॥
ज्यूं गुर कीधा तिखा भणी, ते ले जावें दुरगति मांय।
जे भागल तूटल गुर हुवे, त्यांने उभा दीजे छिटकाय ॥ ९ ॥
खोटा गुरने नही सेवणा जी, श्री वीर गया छें भाख।
कुण कुण गुरने छोडीया, त्यांरी सूतर में छे साख ॥ १० ॥
जमाली सिष्य भगवंत रो, तिणरें चेला पाचसों जांण।
एक वचन उथापे वीर नो जी, पर गयो उलटी तांण ॥ ११ ॥
जब कितरां एक चेलां तणो जी, तुरत गयों मन भाग।
घणां चेलां जमाली ने छोडीयो जी, सावथी नगरी रे बाग ॥ १२ ॥
केइ मूढ मिथ्याती कने रह्या, केइ आया भगवंत पास।
जमाली ने खोटो जांण छोडीयो, त्याने वीर वखाण्या तास ॥ १३ ॥
जमाली ने कुगुर जांण्या पछे जी, छोड दीयों ततकाल।
जो गुर छोड्यांरी संका पडे तो, सूतर भगोती संभाल ॥ १४ ॥
सावथी नगरी रे बाहिरे जी, कोठक नामां बाग।
तठे गोसाले भगवंत सूं जी, कीयो संवादो लाग ॥ १५ ॥
अजोग बोल्यो भगवत ने जी, मूल न राखी काण।
दोय साध बाल्या भगवंत रा जी, वीर नें कीयो लोही ठांण ॥ १६ ॥
लेस्या सूं खाली हुवो जाणने जी, साध आया सताब।
गोसाला ने प्रश्न पूछीया, जब नायो गोसाला ने 'जाब ॥ १७ ॥
जब गोसाला रा चेला तणों, उतरीयो गोसाला सूं राग।
तिणने खोटो जांणने छोडीयो जी, सावथी नगरी रे बाग ॥ १८ ॥
त्या गोसाला ने गुर कीयो हूतो, पिण छोडतां नांणी लाज।
पछे गुर करे श्री भगवत ने, त्या सास्या आतम काज ॥ १९ ॥
केइ चेलां गोसाला कने रह्या, त्यां राखी गोसाला री टेक।
ते तो कुगुर नें सेवनें जी, अें बूडा विनां ववेक ॥ २० ॥
गोसाला ने चेलां छोडीयो जी, ते तिरीया संसार।
ए भगवती रे सतखंध पनरमें, ते बुधवत करजों विचार ॥ २१ ॥
सोगंधीया नगरी तिहां जी, नीलासोग उद्यांण।
सेठ सुदंसण तिहां वसे, ते डाहो चतुर सुजांण ॥ २२ ॥

सुखदेव सिन्यासी नें गुर कीयो जी, सेठ सुदंसण जांण ।
खोटो जाण्यों जब छोडीयो, उणरी मूंल न राखी कांण ॥ २३ ॥
थावचा अणगार नें, गुर कीधा उत्तम जांण ।
सुखदेव सिन्यासी नें छोडीयो, तिण श्री जिण धर्म पिछांण ॥ २४ ॥
सुखदेव सिन्यासी सांभल्यो जब, आयो वेग सताब ।
सेठ सुदंसण रें घरे जी, आयों करवा जाब ॥ २५ ॥
पछे सुखदेव नें सुदंसण, आया नीलासोग उद्यांन ।
थावचें अणगार समझावीया, जब आयों घट में ग्यांन ॥ २६ ॥
सुखदेव सिन्यासी तिण समें, वले चेला एक हजार ।
थावचा अणगार नें गुर कीयां जी, लीयो संयम भार ॥ २७ ॥
त्यां आगला गुर नें छोड्तां जी, सक न आंणी काय ।
गिनाता रा पांचमां अधेन में जी, ए चोडे सूतर रो न्याय ॥ २८ ॥
सेलकराय रखेसर तणें जी, पांचसो चेला लार ।
सेलगपुर नगर पधारीया जी, करता उग्र वीहार ॥ २९ ॥
तठें बेटे कीधी त्यांरी वीनती जी, सरीर में रोग जांण ।
जब रथसाला में आय उतस्या जी, पछे ओषध कीधा आंण ॥ ३० ॥
रोग गयो साता हुइ पिण, न करें तिहां थी वीहार ।
खावापीवा उण चित्त दीयों जी, ग्रिधी थको करें आहार ॥ ३१ ॥
उसनो उसनविहारी हुवो जी, पासथो कुसीलीयो जांण ।
परमादी नें संसतो, ए पाचूंई बोल पिछांण ॥ ३२ ॥
जब पंथग वरजी पांचसो जी, मिलने कीयो विचार ।
गुर तो पड्या परमाद मे जी, पिण आपानें सिरें छें वीहार ॥ ३३ ॥
एहवी करें विचारणा जी, परभाते कीयो वीहार ।
गुरने ढीलों जांण छोडीयो, ते थिन मोटा अणगार ॥ ३४ ॥
पंथग बरजी पांचसों जी, नांणी गुर री परतीत ।
त्यां ढीलो जांणीनें परहस्यो जी, आजिण मारग री रीत ॥ ३५ ॥
पंथग वीयावच करीजी, तिणने कहे केइ धर्म ।
त्यां जिण मारग नहीं ओलख्यो जी, भूला अग्यांनी भर्म ॥ ३६ ॥
उसनादिक पांचूं भणीजी, असणादिक दें कोय ।
तिणनें चोमासी डंड नसीत रें, पनरमें उदेसें जोय ॥ ३७ ॥
तो सेलगनें जिण घालीयो जी, उसनादिक पांचू मांय ।
तो तिणरी वीयावच कीयां में, धर्म किहां थी थाय ॥ ३८ ॥

ज्ञाता अंग मे जिण कह्यो जी, म्हांरो साध साधवी होय।
जो सेलग ज्यूं ढीलो पडें तो, गण माहे आछो न कोय ॥ ३९ ॥
घणां साध ने साधवी जी, श्रावक श्राविका मांय।
उ हेलवा निंदवा जोग छें, जाव अनंत संसारी थाय ॥ ४० ॥
जे हेलवा निंदवा जोग छे, तिणने वांद्या किहां थी धर्म।
तिणरो विनों वीयावच कीया में, निश्चे वंधसी कर्म ॥ ४१ ॥
पंथग वीयावच करीजी, ए आपरों छांदो जांण।
धर्म नही तीन करण में जी, नसीत सूं करो पिछांण ॥ ४२ ॥
पंथग ने वीयावच थापीयों, जब सगलाइ भेला जांण।
ते पिण छांदो आपरो जी, पूरवली पीत आंण ॥ ४३ ॥
पथग वरजी पांचसो, गुरनें छोड्या खोटां जांण।
पछें सुध हुवा कांनें सुण्या, जब सगलाइ मिलीया आंण ॥ ४४ ॥
ए ज्ञाता सूतर मे कह्यो जी, पांचमां अधेन रे मांय।
खोटां जांणें गुर छोडणां जी, आ संका म आंणो काय ॥ ४५ ॥
सकडाल गोसाला ने गुर कीयो जी, छेहलो तीर्थंकर जांण।
तिण खोटो जांण्यों जब छोडीयो, उणरी मूल न राखी कांण ॥ ४६ ॥
पछे गुर कीधा भगवंत नें जी, कीयों गोसाला नें दूर।
ए सातमा अग मांहे कह्यो, ते निश्चे म जांणो कूर ॥ ४७ ॥
पछे गोसालो सुण आयो तिहां, सकडाल ने फेरण कांम।
सकडाल गोसाला ने देखनें, बेठों रह्यो एकण ठांम ॥ ४८ ॥
तिणने आदर सनमांन दीयों नही, वले मीट न मेली तांम।
जब गोसाले कपटी थके, कीधा भगवंत रा गुण ग्रांम ॥ ४९ ॥
हाट दीधा उतरवा तेहने, पिण मांम पाडी तिण ठांम।
कह्यों तोनें ओ दांन दीयों तिको, म्हांरे नही धर्म रो कांम ॥ ५० ॥
अंगालमरदन साध रें, चेलां पांचसो मुनीराय।
गुर तो अभवी जीव छें, पिण चेलां ने खबर न कांय ॥ ५१ ॥
एक भंडसूरो आगे चले, तिणरें पांचसो हस्ती लार।
एहवो सुपनों राय देखने, परभाते करे वीचार ॥ ५२ ॥
इतला मांहे आवीया, अंगालमरदन अणगार।
राजा देख सांसे पड्यो, पछें परख करी उण वार ॥ ५३ ॥
पछे चेलां पिण गुर ने जांणीयों, ए तिरण तारण नहीं होय।
दया रहीत जांणे छोडीयो, पिण मोह न आंण्यों कोय ॥ ५४ ॥

ए ठांणांअंग रा अर्थ में, वले कह्यो कथा रें मांय।
खोटा गुर नें छोडणा कह्या, ते निश्चें सूतर रोय न्याय ॥ ५५ ॥
हूं कहि कहि नें कितरा कहूंजी, गुर छोड्यां रा नांम।
ते सूतर में छें अति घणा जी, आ कही वांनगी तांम ॥ ५६ ॥
इत्यादिक साध नें श्रावकां जी, गुर नें छोड तिरीया अनंत।
जे करणी करें मुगते गया, त्यांरा गुण गाया भगवंत ॥ ५७ ॥
गुर गुर गेंहला कर रह्या, पिण गुर री खबर न काय।
जो हीण आचारी नें गुर करें तो, चिहूं गति गोता खाय ॥ ५८ ॥
जे कुगुर छोड सत गुर करें, वले पालें विरत अभंग।
ते तिरया तिरें तिरसी घणा जी, सतगुर रे परसंग ॥ ५९ ॥
गुर नें ढीला जांण छोडीया, त्यांरी कही सूतर सूं बात।
हिवें परंपरा गुर छोडीया जी, ते सुणजो विख्यात ॥ ६० ॥
लूंकें साह गुर नें छोडनें जी, कीधी आपणी थाप।
जो गुर छोड्यां में दोष छें तो, इण मोटों कीधों पाप ॥ ६१ ॥
त्यां मां सूं नीकल्या ढूंढीया जी, लूंका गुरां नें छोड।
जो गुर छोड्यां में दोष छें तो, यांमें ही मोटी खोड ॥ ६२ ॥
लूंकां नें ढीला जांण छोडनें जी, सयमेव चारित लीध।
साध वाज्या तिण दिवस थी जी, ओर गुर कोइ माथे न कीध ॥ ६३ ॥
जो गुर नहीं माथे केहनें जी, तिणमें बतावें दोष।
तो धुर सूं निगुरा छें ढूंढीया, इण लेखें ओही मत फोक ॥ ६४ ॥
कोइ कहें गुर माथे कीयां विनां जी, नही उतरें भव पार।
तो इण लेखें सगलाइ ढूंढीया जी, अें निगुरां रो परिवार ॥ ६५ ॥
जो गुर छोड्यां में दोष छे, वले गुर नहीं कीधां रो दोष।
ए दोनूं दोष तो ढूंढीयां में, ते किण विध जासी मोख ॥ ६६ ॥
वले मांहोमां ढूंढीया जी, गुर छोडें छें तांम।
वले ओर करें गुर जायनें जी, तिणरो धरावें नांम ॥ ६७ ॥
ढूंढीया में गुर छोडें घणां जी, त्यांरो किण किण रो कहूं नांम।
जो दोष हुवें गुर छोडीयां, तों अें सर्व बूडा वेकांम ॥ ६८ ॥
केई संवेगीयां रा श्रावकां, त्यां गुर कीयां ढूंढीयां तांम।
जो दोष हुवें गुर छोडीयां तांम, अें खोटी हुवा वेकांम ॥ ६९ ॥
वले भगत सिन्यासी नें सेवडा जी. केई गुर छोडी उभा जाय।
जो उवे गुर करें ढूंढीया भणी जी, तूरत मूंडेले मांय ॥ ७० ॥

उणरा आगला गुर छोडायनें जी, आप हुवा गुर तांण।
जो दोष कहे गुर छोडीयां तो, कांय बोया त्यांनें जांण ॥ ७१ ॥
यांरी सरधा रें लेखें इम बोलणो जी, गुर मत छोडो कोय।
आगला गुर नें सेवतां, थांने सुध गति वेगी होय ॥ ७२ ॥
इम कहणी आवें नहीं, जब बोल्या सूधी वांण।
खोटां जांणी गुर छोडणा जी, करणा उत्तम गुर जांण ॥ ७३ ॥
तो क्यूं कहो गुर नें न छोडणा जी, कूडी कांय करो बकवाय।
इण विध लीधा सांकडें, जब कोयक बोलें न्याय ॥ ७४ ॥
कुगुर छोडणी करी जी, रीयां गांम मझार।
संवत अठारें तेतीसे समें, असाढ सुद तीज नें सोमवार ॥ ७५ ॥

●

ढाल : १२

दुहा

भेष पहर्‌यों .. भगवांन रो, साधु नांम धराय।
पिण आचार में ढीला घणां, ते कह्यों कठा लग जाय ॥ १ ॥
त्यांनें वांदें गुर जांणनें, वले कूडी करें पखपात।
त्यां भूठां नें साचा करण खपें, त्यांरे मोटों साल मिथ्यात ॥ २ ॥
कुगुर तणां पग वांदनें, आगें बूडा जीव अनंत।
वले बूडें नें बूडसी घणां, त्यांरो कहतां न आवें अंत ॥ ३ ॥
साध मारग छें सांकडों, तिणमें न चालें खोट।
आगार नहीं त्यांरे पाप रो, त्यां वरत कीयां नवकोट ॥ ४ ॥
भेषधारी भागल घणां, त्यांसूं पलें नहीं आचार।
ते कुण अकार्य कर रह्या, ते सुणजो विसतार ॥ ५ ॥

ढाल

[आदर जीवा खिमा गुण आदर]

कुगुर तणां चिरत चावा करसूं, सूतर री दे साख जी।
सुमता आंण सुणो भव जीवां, श्री वीर गया छें भाख जी।
साध म जांणों इण आचारे* ॥ १ ॥

जो कुगुरां नें सेंठा कर झाल्या, तोही सुण सुण म करो धेख जी।
साच भूठ रो करों निवेरो, सूतर सांह्मो देख जी ॥ २ ॥

जीमणवार मांसूं कोइ ग्रहस्थ, ल्यावें धोवण पांणी मांड जी।
ते आप तणें घरें आंण वेंहरावें, ते करें भेष नें भांड जी ॥ ३ ॥

जो जांण जांणनें साध वेंहरें, तिण लोप दीयो आचार जी।
ए प्रतख सांह्मो आण्यों लेवे, त्यांनें किम कहिजें अणगार जी ॥ ४ ॥

ए अणाचार उघाडों सेवें, जे सांह्मो आंण्यों ले आहार जी।
ए दसवीकालक तीजें अधेनें, कोइ जोवो आंख उघाड जी ॥ ५ ॥

साध साधवी ठरलें मातर, एकण दरवाजें जांय जी।
वीर वचन सूं उलटा पडीया, ए चोडें कीयों अन्याय जी ॥ ६ ॥

गाम नगर पुर पाटण पाडो, तिणरो हुवें एक नीकाल जी।
तिहां साध साधवी न रहें भेला, आ वांधी भगवंत पाल जी ॥ ७ ॥

---

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

एकण दरवाजे साध साधवी, जो जाए नगरी वार जी।
तो अपरतीत उठे लोकां में, केइ विरत भांगी हुवे खुवार जी॥ ८॥
जुदो जुदो नीकाल छतो पिण, कोइ जाए एकण दरवाज जी।
ते घेठा हटक न मांने किणरी, वले नांणे मन मे लाज जी। ९॥
एक नीकाल तिहां रहणोइ वरज्यों, तो किम जाए एकण दुवार जी।
ए वेतकल्प रें पेहले उदेसें, ते बुधवंत करो विचार जी॥ १०॥
ग्रहस्थ रे घरे जाए गोचरी, जो जोडीयो देखें दुवार जी।
तिहां सुध साध तो फिर जाए पांछा, भागल जाए खोल किवाड जी॥ ११॥
केई भेषधारयां रे एहवी सरधा, ग्रहस्थ रे जड्यो दुवार जी।
तो धणी तणी आग्या ले साध, मांहे जाए खोल किवाड जी॥ १२॥
हाथां सूं साध किंवाड उघाडे, मांहे जाए वेहरण ने आहार जी।
इसरी ढीली करे परूपणा, ते विटल हुवा वेकार जी॥ १३॥
किंवाड उघाडनें वेंहरण जाणरो, मूल न सरधे पाप जी।
कदा न गया तो पिण गया सारिषा, आ कर राखी छे थाप जी॥ १४॥
किवाड उघाडनें वेहरण जाए, तो हिंसा जीवां री थाय जी।
ते आवसग सूतर मे वरज्यों, चोथा अधेन रे मांय जी॥ १५॥
गांम नगर वारे उतरीयो, कटक सथवाडो ताहिजी।
जो साध रात रहे तिण ठांमे, ते नही जिण आग्या मांहि जी॥ १६॥
एक रात रहे कटक मे तिणनें, च्यार मास रो छेद जी।
ते वेतकल्प रे तीजे उदेसे, ते सुण सुण म करो खेद जी॥ १७॥
इसरा दोष जाणीने सेवे, तिण छोडी जिण धर्म रीत जी।
एहवा भिष्ट आचारी भागल, त्यांरी कुण करसी परतीत जी॥ १८॥
विण कारण आंख्यां में अंजण, घाले आंख मझार जी।
त्यांने साधवीयां किम सरधीजे, त्यां छोड दीयो आचार जी॥ १९॥
विण कारण जो अजण घाले, ते श्री जिण आग्या बार जी।
दसवीकालक तीजें अधेने, ओ उघाडो अणाचार जी॥ २०॥
वस्त्र पातर पोथी पानादिक, जाए गृहस्थ रें घरे मेल जी।
पछें करे विहार दे धणी भलावण, तिण प्रवचन दीधां ठेल जी॥ २१॥
पछें ग्रहस्थ आंमा सांह्मा मेलतां, हिंसा जीवां री थाय जी।
तिण हिंसा सूं ग्रहस्थ नें साध, दोनूं भारी हुवे ताय जी॥ २२॥
भार पडावे ग्रहस्थ आगे, ते किम साधु थाय जी।
नसीत रे बारमें उदेसें, चोमासी चारित जाय जी॥ २३॥

वले विण पडिलेह्यां रहें सदा नित, ग्रहस्थ रा घर मांय जी।
ओ साधपणो रहसी किम त्यांरो, जोवों सूतर रो न्याय जी ॥ २४ ॥
जो विण पडिलेह्यां रहें एक दिन, तिणनें डंड कह्यो मासीक जी।
नसीत रे दूजें उदेसें, तिहां जोय करों तहतीक जी ॥ २५ ॥
मात पितादिक सगा सनेही, त्यांरा घर में देखें खाल जी।
त्यांनें परिग्रहो साध दरावें, आ चोडें कुगुर री चाल जी ॥ २६ ॥
सांनीकर साध दरावें रुपीया, वरत पांचमो भांग जी।
वले पूछ्यां भूठ कपट सूं वोलें, तिण पेंहर विगाड्यों सांग जी ॥ २७ ॥
न्यातीलां नें दांम दरावें, त्यारें मोह न मिटीयों कोयजी।
वले सार संभाल करावें त्यांरी, ते निश्चें साध न होय जी ॥ २८ ॥
अनरथ रो मूल कह्यों परिग्रहो, ठांणां अंग तीजें ठांण जी।
तिणरी साध करें दलाली, ते पूरा मूंढ अयाण जी ॥ २९ ॥
रित उनालें पांणी ठारें, ग्रहस्थ रा ठांम मभार जी।
मन मांनें जव पाछा सूंपें, ते श्रीजिण आग्या वारजी ॥ ३० ॥
ग्रहस्थ तणां भाजन में साधु, जीमें असणादिक आहार जी।
तिणनें भिष्ट कह्यो दसवीकाल में, छठा अधेन मभार जी ॥ ३१ ॥
केइ सांग पहर साधवीयां वाजें, पिण घट में नहीं ववेक जी।
आहार करें जव जडें किवाड, दिन में वार अनेक जी ॥ ३२ ॥
ठरलें मातरे गोचरी जाए जव, आडा जडें किंवाड जी।
वले साध कनें आवें तोही जडलें, त्यांरो विगड गयो आचार जी ॥ ३३ ॥
साधवीयां नें जडवो चाल्यों, ते सीलादिक राखण काज जी।
ओर कांम जो जडें साधवीयां, त्यां छोडी संजम लाज जी ॥ ३४ ॥
आवसग में हिंसा कही जडीयां, आलोवण खातें ताहि जी।
मन करनें जडणो नहीं वांछे, उतराधेन पेंतीसमां मांहि जी ॥ ३५ ॥
ओषध आद दे वेंहर आंणें, केइ वासी राखें रात जी।
ते जाय मेलें ग्रहस्थ रा घर में, पछें नित ल्यावें परभात जी ॥ ३६ ॥
आपरो थको ग्रहस्थ नें सूंप्यों, ए मोटों दोष पिछांण जी।
वले वीजो दोष वासी राख्यां रो, तीजो अजेंयणा जांण जी ॥ ३७ ॥
वले चोथो दोष पूछ्यां भूठ वोलें, वासी राख्यो न कहें मूंढ जी।
केइ भेषधारी छें एहवा भागल, त्यारें भूठ कपट छें गूढ जी ॥ ३८ ॥
ओषध आद दे वासी राख्यां, वरतां में पडें वगार जी।
कह्यो दसवीकालक तीजें अधेनें, वासी राखें तो अणाचार जी ॥ ३९ ॥

केइ आधाकरमी पुस्तक वेंहरे, वले तेहिज लीधो मोल जी।
ते पिण सांह्मो आंण्यो वेंहरें, त्यांरे पूरी जांणजो पोल जी ॥ ४० ॥
कोइ आप कनें दिख्या ले तिणरे, सांनीकर मेलें साज जी।
पुस्तक पांनादिक मोल लरावे, वले कुण कुण करे अकाज जी ॥ ४१ ॥
गछवासी परमुख आगा सूं, लिखावे सूतर जांण जी।
पेंहला मोल कराय परत रो, सचकार दरावें आंणजी ॥ ४२ ॥
रुपीया मेलावे ओर तणे घर, इसडो सेठो करे कांम जी।
ते पिण हाथे परत आयां विण, दिख्या दे काढे तांम जी ॥ ४३ ॥
पछे गछवासी कवल सूं डरतो, परत लिखे दिन रात जी।
जीव अनेक मरे तिण लिखतां, करे तस थावर री घातजी ॥ ४४ ॥
इण विध साध परत लिखावें, तिण संजम दीधो खोय जी।
जे दया रहीत छें एहवां दृष्टी, ते निश्चे साध न होय जी ॥ ४५ ॥
छकाय हणीने परत लिखी ते, आधाकरमी जांण जी।
ते हिज परत जो साध वेहरे, ए भागल रा अहलांण जी ॥ ४६ ॥
वले तेहिज परत टोलां मे राखें, आधाकरमी जांण जी।
जे सेमल हुवा ते सगला बूडा, तिणमे संका मत आण जी ॥ ४७ ॥
आधाकरमी रा लेवाल रूले तो, उतकष्टो काल अनंत जी।
दया रहीत कह्यो तिण साध ने, भगोती में भगवंत जी ॥ ४८ ॥
कोइ श्रावक साध समीपे आए, हरखे वांदे पग झाल जी।
जब साध हाथ दे तिणरे माथे, आ चोडे कुगुर री चाल जी ॥ ४९ ॥
ग्रहस्थ रें माथें हाथ देवे ते, ग्रहस्थ बरोबर जांण जी।
एहवा विफलां ने साध सरधे, ते पिण विकल समांण जी ॥ ५० ॥
ग्रहस्थ रे माथें हाथ दीयो तिण, ग्रहस्थ सू कियो सभोग जी।
तिणने साधु किम सरधीजे, लागो जोग ने रोग जी ॥ ५१ ॥
दसवीकालक आचारंग मांहे, वले जोवो सूतर नसीत जी।
ग्रहस्थ रें माथे हाथ दीयों ते, आ प्रतख उंधी रीत जी ॥ ५२ ॥
वले चेला करें ते चोर तणी परे, ठग पासीगर ज्यूं तांम जी।
वले उजबक ज्यूं तिणनें उचकाए, लेजाय मूंडे ओर गांम जी ॥ ५३ ॥
आछो आहार दिखाए तिणनें, कपडादिक मही दिखाय जी।
इत्यादिक लालच लोभ बताए, भोलाने मूंडे भरमाय जी ॥ ५४ ॥
इण विध चेला कर मत बांधे, ते गुण विण कोरो भेष जी।
साधपणा रो सांग पेहर ने, भारी हुवे वशेष जी ॥ ५५ ॥

मूंड मूंडावी भेला कीधा, त्यांसूं पलें नहीं आचार जी।
भूख तिरखा पिण खमणी नावें, जब लेवें असुध पिण आहार जी ॥ ॥ ५६ ॥
अनल अजोग नें दिख्या दीधां, तो चारित रो हुवें खंडजी।
नसीत रे उदेसें इग्यारमें, चोमासी रो डंड जी ॥ ५७ ॥
ववेक विकल बालक बूढा नें, पेंहरावें सांग सताव जी।
त्यांनें जीवादिक पदारथ नव रा, जाबक नावें जाबजी ॥ ५८ ॥
सिष्य करणों तो निपुण बुधवालो, जीवादिक नव जांणें ताहिजी।
नहीं तों एकल रहणों टोला में, उत्तराधेन बतीसमा मांहि जी ॥ ५९ ॥
केई दडें लीपें हाथां सूं थांनक, ते पिण ढलीया कूट जी।
इसरो कांम करें तिण साधु, पाडी भेषमें फूटजी ॥ ६० ॥
जो दडें लीपें थांनक नें साधु, तिण श्री जिण आग्या भंग जी।
तीजा वरत री तीजी भावना, तिहां वरज्यो दसमें अंग जी ॥ ६१ ॥
छती साधवीयां टोला मांहें, वले कारण पिण न पड्यो कोय जी।
तोही दोय साधवीयां रहें छें, ओ दोष उघाडो जोय जी ॥ ६२ ॥
पवित्रणी रहें दोय साधवी, ते जिण आग्या में नांहि जी।
त्यांनें वरज्यो ववहार सूतर में, पांचमां उदेसा मांहि जी ॥ ६३ ॥
कारण विण एकली साधवी, असणादिक वहरण जाय जी।
वले ठरले पिण एकलडी जावें, ते नहीं जिण आग्या मांय जी ॥ ६४ ॥
वले एकलडी नें रहणों वरज्यो, इत्यादिक बोल अनेक जी।
ते वेतकल्प रें पांचमें उदेसे, ते समझों आंण ववेक जी ॥ ६५ ॥
कुगुरु एहवा हीण आचारी, साधां सूं दे भिडकाय जी।
आप तणां किरतब सूं डरता, जिण मारग दीयो छिपाय जी ॥ ६६ ॥
इसडा कुगुरु नें गुरकर मांनें, त्यांरें अभितर में अंधकार जी।
गुर में खोटो खाय अग्यानी, चाल्या जनम विगाड जी ॥ ६७ ॥
उसभ करम ज्यांरे उदें हुवा जब, इसरा गुर मिलीया आय जी।
दग्ध बीज हो जाबक बूडा, पछें चिहूंगति गोता खाय जी ॥ ६८ ॥
इम सांभल नें उत्तम नरनारी, छोडो कुगुर नो संग जी।
सत गुर सेवो सुध आचारी, दिन दिन चढतें रंग जी ॥ ६९ ॥
आ सभाय करी कुगुरु ओलखावण, पीपाड सहर मझार जी।
समत अठारे वरस चोतीसे, आसोज सुद सातम बुधवार जी ॥ ७० ॥

ढाल : १३

दुहा

केई साधु नांम धराय ने, सेवें दोष अनेक।
त्यांने ठीक नही त्यांरा दोष री, ते सुणजो आंण ववेक ॥ १ ॥

ढाल

[मगध देस को राजा राजेसर]

केइ भंगी रा घर री रोटी तो खावें, पिण भंगी री भीटी न खावें।
इसडी उत्तमाई देखी विकलां री, डाहा ते इचर्य पावे रे।
जोवों हिरद विचारी, थे छोडो कुगुर री लारी रे।
कुगुर हीण आचारी* ॥ १ ॥
ज्यूं केई हाथा सूं जडें उघाडे किवाड, ग्रहस्थ उघाड दीयां करें टालों।
इसडों आचार देखो कुगुरां रो, ते प्रतष दाल मे कालो रे ॥ २ ॥
गृहस्थ उघाडे आहार वेंहरावें, ते वेहरें नहीं दोष जांण।
हाथे जड्यां उघाड्यां रो दोष न जांणें, इसडा छें मूढ अयांण रे ॥ ३ ॥
गोचरी जाए जब जडें किंवाड, पाछा आयां पिण खोलें किवाड।
ग्रहस्थ रे घरे गयां खोल ने पेसे, इसडों कुगुरां रो आचार रे ॥ ४ ॥
ज्यांने साध सरधें त्यांने भेला न राखें, एकण थांनक मांहि।
त्यांनें पूछ्यां कहें म्हांरे नही संभोग, तिणसूं भेला उतरां नांहि रे ॥ ५ ॥
इम कहि कहि राते भेला न राखे, एकण थानक मांय।
तो यांरे ग्रहस्थ सूं संभोग किसों छे, तिणनें माहें राखे कांय रे ॥ ६ ॥
ग्रहस्थ नें भेलां राखे सांधां ने नहीं राखे, ओ दोनूं कांनी देवालो।
यां दोनूं बोलांरो प्रायछित आवें, सूतर नसीत संभालो रे ॥ ७ ॥
कोइ सुध साधां रा कुल गण मांहें, भेद पाडें कर कर तांण।
तिणने प्रायछित्त दसमो आवे, ठांणा अंग रे पांचमें ठांण रे ॥ ८ ॥
जो दोषीलां सूं संभोग तोडे तो, प्रायछित्त मूल न आवें।
वले त्यां दोषीलां ने तेहिज वांदे, तो सगला सरिषा थावे रे ॥ ९ ॥
कदा आप दोषीलां नें बंदणा छोडें, तो पिण श्रावकां नें ढूकावें रें।
ते आप तणां मुतलब रें अर्थे, ठागा सूं कांम चलावें रे ॥ १० ॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

वले धर्म कहें दोषीलां नें वांद्या, तिणरें आय चूकों मिथ्यात।
तिण समकत सहीत साधपणों खोयो, उंधीं सरधें सूतर री बात रे॥ ११॥
त्यां दोषीलां नें साधां वंदणा छोडी, त्यांनें श्रावक श्राविका वांदें।
तिणनें त्यांरा गुर री परतीत न आई, जिण धर्म न ओलख्यों आंधें रे॥ १२॥
ज्यांरी परतीत थी त्यां वंदणा छोडी, तो आप वांदें किण लेखें।
इसडों अंधारों छें घट भितर जेहनें, ते सूतर न्याय न देखें रे॥ १३॥
ज्यांनें दोषीलां सरधें त्यांनें हिज वांदे, इसडी ज्यांरें भोलप मोटी।
ते समझें नहीं घमडोल में पडीया, सरधा भाल रह्या छें खोटी॥ १४॥
ढीला भागल नें साध वांदे नहीं, लागतो जांणें पाप करम।
तो श्रावक श्रावका वांदसी त्यांनें, किण विध होसी धर्म रे॥ १५॥
जे घर हुवो असुझतो तिण दिन, जिण दिन वेंहरणों नांहि।
जो उणहीज दिन तिण घर रों वेंहरें, तो भागल री पांत मांहि रे॥ १६॥
पेंहला तो ज्यां घरां रो धोवण जाय ल्यावें, त्यां कठें असूझतों होय जावें।
पछे तिण दिन तिण हीज टोलारा, विण पूछ्यांही वेंहरी ल्याय रे॥ १७॥
उणहीज दिन उणहीज टोलारा, मन मांनें तिण घर जावें।
असुझतो हुवो घर नहीं वतावें, विण पूछ्यांही वेंहरी ल्यावें रे॥ १८॥
इम प्रतष आहार असुझतो खावें, त्यांमें आछी अकल किम आवें।
ते साधपणां रो नांम धरावें, इण लेखें दुरगत जावें रे॥ १९॥
कोइ कहें म्हें नितको एकण घर रों, नहीं वेंहरां आहार नें पांणी।
म्हें धोवणादिक वेंहरां ते न्हांखी तो, ओ पिण झूठ बोलें छें जांणी रे॥ २०॥
तो पेंहलें दिन जिण घर जाय वेंहर्यों, असणादिक च्यारूं आहार।
बीजें दिन वीहर करतां नित वेंहरें, जब कठी गयो आचार रे॥ २१॥
उन्हों पांणी पिण नितकों वेंहरें, कलालादिक रें घरे जाय।
त्यांनें पूछें पांणी नितकों कांय वेंहर्यों, जब साच बोल्यों नहीं जाय रे॥ २२॥
केइ पाडा बंध गोचरी वरजेनें, फूटकर घरां रे मांय।
सिष्य सिष्यणी सगला नें मेलें, तिहां वेंहरें नितरा नित जाय रे॥ २३॥
एक दोय सिंघाडें पेंहलें दिन वेंहर्यों, केकां वेंहर्यों बीजें दिन जांण।
नितरो नित वेंहर्यों एकण टोला रां, गुर रें पास मेल्यो आंण रे॥ २४॥
केई एकण गुर रा सिष्य सिष्यणी छें, च्यारां पांचा जायगां रहें ताय।
ते गोचरी जाए विण पूछ्यां मांहोमां, एकण घर पिण वेंहरें आय रे॥ २५॥
उण वेंहर्यों ते घर बीजा न टालें, बीजां वेंहर्यो ते ओ पिण न टालें।
नितरो नित वेंहरें एकण टोला रा, अणाचार नें कुण संभालें रे॥ २६॥

इत्यादिक वले कूड कपट सूं, एकण घर वेंहरें नितको आहार।
ते अणाचारी उघाडा चोडें, ते पिण बाज रह्या अणगार रे॥ २७॥
च्यार पांच साध किहां रह्या चोमासे, आप आपरो वेंहर्‍यों खावे।
तो संकडाई पिण न पडें तिणां रे, सगला रे साता होय जावें रे॥ २८॥
च्यार पांच अनेक भेला रहें साध, ते जूजूवा वेंहरण जावे।
तो एकण दिन एकण घर मांहे, सगलाई वेंहरण आवे रे॥ २९॥
केई साध नांम धरावें त्यांरो, आचार छें घणों अजोग।
आहार पांणी तणां ग्रिधी छें गाढा, तिणसूं तोडें मांहोमां संभोग रे॥ ३०॥
इग्यारें संभोग तो भेला राखें, न्यारो करें आहार नें पांणी।
ते नितरो नित एकण घर वेहरण, त्यांरा कपट ने लीजो पिछांणी रे॥ ३१॥
ते पिण मांहोमां देवें लेवें, तो भेलोइज आहार नें पांणी।
ते नित्य पिंड एकण घर रो खावें, त्यांरा चारित्त री धूर घांणी रे॥ ३२॥
सदा भेला रहे नित इण सरधा सूं, सदा नित पिंड इण विध खावें।
ते पेटभरा साध रा भेष मांहें, ठागा सूं कांम चलावे रे॥ ३३॥
कोइ कारण वशेष रोगादिक आयां, नित पिंड ओषध ज्यूं खावें।
राग धेष रहीत कोइ कारण बतावें, ते तो निषेधणी नावे रे॥ ३४॥
जे जे बोल सूतर में नांहीं, ते वांधणो जीत आचार।
ते प्रतख नित नित वेंहरे एकण घर, ओ तो उघाडो अणाचार रे॥ ३५॥
पांणी न वेहरें ने धोवण वेंहरें, ते पिण सरधा खोटी।
धोवण मांहे तो वले छे असणादिक, ते वेहर्‍यां छें भोलप मोटी रे॥ ३६॥
ते धोवण ने पाणी मांहे न गिणें, ओ पिण मोटो अंधारो।
पांणी तो च्यार आहारां में आयो, पिण धोवण नही त्यां बारो रे॥ ३७॥
केई च्यारांई आहारां रो उपवास करे छे, ते धोवण पीवें नांही।
जे धोवण पांणी मांहे नही तो, क्यूं न पीवें उपवास मांहीं रे॥ ३८॥
इकवीस जातरो पांणी चाल्यो, ते धोवण पांणी एक जात।
जे धोवण वेंहरेनें पांणी न वेहरे, त्यांरी मूरख मांने बात रे॥ ३९॥
जो आप तणो वेहर्‍यों आप खावे, तो इसडो इज हुवें आचार।
तो जूओ जूओ वेंहर्‍यो आंण खाधा रों, दोष नहीं छे लिगार रे॥ ४०॥
तो जोड करीयांने ओलखावण, यांरोइज ओलखायो आचार।
आप थापी नें आप उथापें, बोले नहीं वंध लिगार रे॥ ४१॥
निरवद किरतब कहि कहि मूंढें, पीढीयां खप करता आवें।
पिण सुध साधां नें दोषीला ठहरावण, तिणमें हीज दोष बतावें रे॥ ४२॥

कोड आप तणों नाक जावक काटें, पेंहला नें कुसावण काजें।
ज्यूं सावां नें दोपीला थापण, आप दोपीला होता न लाजें रे ॥ ४३ ॥
जिण जिण किरतब माहिं दोपण थापें, ते छोड वतावें तो सूरा।
विण छोड्यां गेंहला ज्यूं गूजें, ते साध मारग थी दूरा रे ॥ ४४ ॥
दोप वतावें पिण छोडणी नावें, वले साध नांम धरावें।
वार वार तेहीज वातां करतां, निरलजा नें लाज न आवें रे ॥ ४५ ॥
सुध वुध विनां विचार्‌यां वोलें, ते होय वेंठा छें भडंग।
त्यांसूं चरचा तणों कदे कांम पडें तो, जांणक वोलें जडंग रे ॥ ४६ ॥
इसडा छें कुगुर हीण आचारी, ते पिण राखें छें मुगत री आसो।
ग्यांनी पुरुप इसडा विकला रों, देख रह्या छें तमासो रे ॥ ४७ ॥
कांणी काजल घाले तिण आंखें, ते सोभा न पामें सिणगार।
जो आचार वतावें पिण पोतें न पालें, ते पिण मूढ गिंवार रे ॥ ४८ ॥
जे अणाचारी थका आचार वतावें, ते यूंही अन्हाखी कूकें।
जांणे गायां तणां टोलारे मांहि, निकेवल गधा ज्यूं भूके रे ॥ ४९ ॥
साध मन करनें नहीं वांछें किंवाड, उत्तराधेन पेंतीसमें चाल्यों।
पिण जडवो उघाडवो वरज्यो न दीसें, ओ घोचो कुगुरां रो घाल्यो रे ॥ ५० ॥
मन करनें किंवाड न वांछणों, ते जडवारो परमारथ जांणों।
थे हाथा मूं जडो उघाडो किंवाड, तिणसूं उलटी मंत तांणो रे ॥ ५१ ॥
असणादिक च्यारूंई आहार, साध मन करें न वांछें रातो।
ते तो परमारथ खावारो जांणों, थे सरधो सूतर री वातो रे ॥ ५२ ॥
मन करनें साध अस्त्री न वांछें, ते परमारथ सेवारो जांणों।
धर्म परमारथ वंछा करें तो, सावद्य कदेय म जांणों रे ॥ ५३ ॥
मन करनें साध किंवाड न वांछें, ते तो जडवा उघाडवा कांमो।
तिण किंवाड उपर मूंजें वेंसें इत्यादिक, तो दोप नहीं छें तांमो रे ॥ ५४ ॥
मन करनें साध धन न वांछें, ते तो राखवा काजें।
पिण थांनक मांहिं धन पडीयों देखें तो, साध रों विरत मूल न भाजें रे ॥ ५५ ॥
चंदरवादिक साध मनकर न वांछें, पिण तिहां रहीतां दोप न लागें।
पिण छूटा चंदवा नें हाथां सूं वांधें, तो साध तणो विरत भांगें रे ॥ ५६ ॥
ज्यूं मन करे साध किंवाड न वांछें, तिहां रहीतां दोप न लागें।
पिण तेहीज किंवाड जडें उघाडें, तो पेंहलों माहावरत भांगें रे ॥ ५७ ॥

ढाल : १४

दुहा

भेषधारी विगड्या घणां, ते करें अनेक अन्याय।
ते नांम धरावे साधु रो, पिण जिण धर्म री खबर न काय ॥ १ ॥
त्यांमे चोरीजारी करे घणां, बोलें झूठ अथाग।
निरलज सुध बुध बाहिरा, भूला मुगत रो माग ॥ २ ॥
झूठा ने साचो करे, तिणरा दोषण देवे ढांक।
साचा ने झूठों करें, ते पिण नाणें सांक ॥ ३ ॥
त्यांमें कुबदी कदाग्रही अति घणा, सके नही देता आल।
त्यांरो गुर सहीत गण विगाडीयो, तिणरो कुण काढे नीकाल ॥ ४ ॥
त्यां भेषधास्यां रा टोला तणी, एक इचर्य वाली वात।
त्यांमे धीगामस्ती मंड रही, ते सुणजो विख्यात ॥ ५ ॥

ढाल

[रे जीव मोह अणुकम्पा न आणिये]

चोरी करे साधरा भेषमें, वले झूठ बोले फिर जाय रे।
मोटी चोरी करे छे तेहने, फेर दिख्या आवें छे ताय रे।
तूमे जोयजो अंधारो भेषमें* ॥ १ ॥
तिणने चेलो चेली जाणे आपरो, थोरो प्रायछित देवें आप जी।
तिण उपरलों आय दिख्या दीयें, उणरो दीधो डंड उथाप रे ॥ २ ॥
राग रो घाल्यो थोडो डंड दे, तिणने उतरो प्रायछित आय रे।
जो उ प्रायछित डंड लेवे नही, तो उ साध केम कहवाय रे ॥ ३ ॥
चोरने लेवे सूतर पारका, ओर पासे देवे गलाय रे।
जांणे रखे चोरी चावी हुवा, मोने फेर सावपणों आय रे ॥ ४ ॥
गालणवालो चोरी चावी करे, तिणने फेर दिख्या दे जांण रे।
कहिनें गलाया सूतर तेहने, दंड थोडो दे मूढ अयांण रे ॥ ५ ॥
ओर कने सूतर गलावीयां, चोरी ढांकवा री मन आंण रे।
तिण कूड कपट केलव्यो घणो, मुर्दे तो चोर तेहीज जांण रे ॥ ६ ॥
ओर रे कहे सूतर गालीया, ते तो भोलो छे विकल समांन रे।
पछे चोरी चावी कीधी तेहनी, गुर गुरणी ने कीयां हेरान रे ॥ ७ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

चोरी नें चावी कीधी तेहनें, फेर दिख्या देवें तांय रे।
मुदें चोर नें दिख्या दें नहीं, एहवो करें अग्यांनी अन्याय रे॥ ८॥
मुदें चोर नें दीख्या दे नहीं, आघो काढें थोडो दे दंड रे।
तिणनें पिण दिख्या दंणी फेरसूं, च्यार तीरथ में करणो भंड रे॥ ९॥
तिणनें फेर दिख्या देवें नहीं, तो सगलाइ मूंढ गिंवार रे।
एहवा नें आचार्य लेखवें, ते तो गया जमारो हार रे॥ १०॥
वले केयक लिगडा नें लिगडीयां, ते तों करें मांहोमां अकाज रे।
चोथो वरत भांगें पापीया, लोकां री पिण नांणें लाज रे॥ ११॥
केयक वरत भांगें भेद सूं, ते तों मांहोमांहीं मिल जाय रे।
जो उ करें आलोवण तेहनें, फेर दिख्या देवें ते न्याय रे॥ १२॥
त्यांरें भेद मांहें सेव्यो नहीं, त्यांनें प्रायछित नावें लिगार रे।
तिणनें दिख्या देइ छोटो करें, ते तो पूरा मूंढ गिंवार रे॥ १३॥
दिख्या नावें तिणनें दिख्या दीए, तिण मोटो कीयों अन्याय रे।
तिणनें पिण दिख्या आवें फेर सूं, चोडें देखो सूतर रो न्याय रे॥ १४॥
जो उणनें फेर दिख्या देवें नहीं, तो उण टोलां में भोलप जांण रे।
सगला बूडें छें बापडा, तिणरें केडें कर कर तांण रे॥ १५॥
भागलां नें कोड कसाई विचें, भूंडा कहें मुख सूं जांण रे।
इम भेषधारी बकता फिरें, त्यांरा बोलां री करजो पिछांण रे॥ १६॥
त्यांरा टोलां मांसूं केई नीकले, त्यांनें दिख्या विनां ले मांय रे।
वले वांदें पूजें सुध साध ज्यूं, त्यांसूं भिन न राखें कांय रे॥ १७॥
कहता कोड कसाया सूं बूरा, त्यांनें विनां दिख्या ले मांहि रे।
पछें पूछ्यांरो जाब न उपजें, तिणसूं बारें काढ्या ताहि रे॥ १८॥
एक दोय वरस भेला रह्या, वांदे पूजे भेलो कीयो आहार रे।
त्यांनें फेर दिख्या आवें मूल थी, कोइ बुधवंत करजो वीचार रे॥ १९॥
कोइ साध कसायां भेलो रहें, एक दोय वरस परमांण रे।
जो उवे फेर दिख्या दें तेहनें, तिण लेखें त्यांनेइ जांण रे॥ २०॥
फेर दिख्या दीयां पिण तेहसूं, जो उवे भेलो करें आहार रे।
तो उवे सगला बूडा छें बापडा, साध तणो भेषधार रे॥ २१॥
केइ वरत पालें श्रावक तणां, इण साध तणां भेष मांय रे।
त्यांनें दिख्या विनां मांहें लीयें, वांदें पूजें तिणरा पाय रे॥ २२॥
त्यांनें श्रावक पिण नहीं सरधता, खोटी सरधारो कहता एम रे।
त्यांनें दिख्या विनां माहे लीयें, त्यांनें साध कहिजें केम रे॥ २३॥

दिख्या दीयां विनां माहें लीयां, तिणनें पिण दिख्या देंणी जांण रे।
गाला गोलो करें इण बात रो, सगला बूडा मूंढ अयांण रे॥ २४॥
जो उणनें दिख्या देनें मांहें लीयें, तो टलें सगलां रो संताप रे।
पछें भूठ बोले जो उ कपट सूं, तो उणरो उणनें इज लागें पाप रे॥ २५॥
केई भेषधार्‍यां रा टोला मझे, एक उंधी घणीं छें रीत रे।
ते सुणतांइ इचर्य उपजें, नही न्याय मेलण री नीत रे॥ २६॥
सील भांगें त्यांरा टोलां मझे, तिणने फेर दिख्या दे तांम रे।
पिण छोटां रे पग पाडें नहीं, एहवा करे अग्यांनी कांम रे॥ २७॥
कहिवानें दिख्या दीधी फेर सूं, पिण डंड दीयों नही तिलमात रे।
बडो हूंतो ज्यूं रो ज्यूं राखीयो, त्यांरी मूरख मांने बात रे॥ २८॥
फेर दिख्या दे बडो राखी, तिण चोडें चलायो भूठ रे।
उगरा टोलां माहें उण पापीयें, कीधी कुसील सेवारी छूट रे॥ २९॥
फेर दिख्या दे बडो राखीया, तो कुण डरें करतो अकाज रे।
तिण टोलां रा लिगडा लिगडीयां, सील भांगता नांणे लाज रे॥ ३०॥
सील भांगें तिणनें दिख्या दीये, सगलां सूं बडो राखें जांण रे।
एहवी मरजादा वांधी तेहमें, दीसे भागल रा अहलांण रे॥ ३१॥
वले विगड्यो टोलों जांणें आपरो, पडतो दीसें घणारो उघाड रे।
त्यांरा दोष ढांकण रे कारणे, कपटी एहवो वांध्यो आचार रे॥ ३२॥
केई टोलां में लूंठा घणां, केई वनीत छें त्यां मांहि रे।
ते अकारज कर दिख्या लीयें, ज्यूंरा ज्यूं बडा राखें ताहि रे॥ ३३॥
लागबाजी हुवें रांक गरीब सूं, तिणरो करे तुरत उघाड रे।
तिणने तो दिख्या दे छोटो करे, सगलां रे पगे देवें पाड रे॥ ३४॥
प्रायछित सगलां ने नही दे सारिषो, जो उवे करे सारिषो अकाज रे।
आप छांदे करें मन जांणीयों, त्यांने किम कहीजें मुनीराज रे॥ ३५॥
सील भांगे ने फेर दिख्या लीये, बडा रहे करता ओ गाज रे।
तिण टोलारा लिगडा लिंगडी, किम संक सी करता अकाज रे॥ ३६॥
वरत भांगें ने फेर दिख्या लीयें, बडांने लगावे पाय रे।
तिण श्री जिण वचन उथाप नें, चोडे कीधो बुडण रो उपाय रे॥ ३७॥
बडा आगें करावें बंदणा, तिण कीयो विना रो नास रे।
एहवा भेषधारी भूला थका, राखें मुगत जावारी आस रे॥ ३८॥
भेषधारी भागल चोथा तणां, त्यांरी खबर पडे नहीं काय रे।
आगा ज्यूं टोलां में बंदावता, एहवी धीगामस्ती छें ताय रे॥ ३९॥

भागल नें दिख्या दे बडो राखीयो, तिण टोलां में पूरो अंधार रे।
त्यांनें वांदे पूजें गुर जांणनें, ते पिण बूडा कालीधार रे॥ ४०॥
एहवा भेषधाख्यां रा टोला मझे, उघडी भागलां री खांन रे।
त्यांनें छोडे कोइ संजम लीयें, तिणनें फिर फिर करें हेरांन रे॥ ४१॥
त्यां भेलो रहें ज्यां लग गुण करे, पिण न करें तिणरो उघाड रे।
जोउ संजम ले साधां कनें, तिणनें भांडें फिर फिर लार रे॥ ४२॥
त्यांनें खोटा जांणें नें छोडीयां, तो उवे बोलें अनेक विध कूड रे।
पछें लागू थका बकवो करें, कूडा करें फेंन फितूर रे॥ ४३॥
त्यां मांहें रहे त्यां लग तेहनी, करें कूडी घणी पखपात रे।
दोष हुवें ते सगला ढांकनें, सवारलें तेहनी बात रे॥ ४४॥
त्यांनें छोडें त्यांरा लागु घणां, तिणसूं पडवजीयो पूरो मिथ्यात रे।
तिणनें आल देता संके नहीं, झूठी कर कर अन्हाखी बात रे॥ ४५॥
केई भेषधाख्यां रा टोलां मझे, चोथा वरत सूं भागा अनेक रे।
त्यांरो लेखो कीयां तो लड पडें, झगडें मूंढ विनां ववेक रे॥ ४६॥
भेषधारी भागल नें छेडव्यां, तो उ झांबां घालें हाथ रे।
उलटा आल देवें पापीया, झूठी झूठी उठावे बात रे॥ ४७॥
त्यांरा भागलां नें चावा कीयां, करें ग्रहस्थ आगें पूकार रे।
केई ग्रहस्थ सुध बुध बाहिरा, झगडो करवा नें हुवे तयार रे॥ ४८॥
ते तो कुगुरां रा भरमावीया, लडवा आवें भेली करें खेंड रे।
उंधर बोलें अजोग बूरी तरें, जांणें जाग्यों पूर्वलों वेर रे॥ ४९॥
गुर गुरणी नें जांणें कुसीलीयां, ते किण विध काढें निकाल रे।
उलटों आल देवें साधनें, अन्हाखी थका भाषें अलाल रे॥ ५०॥
सती काढे कुसती रा खूंचणा, तो उवा बोलें आल पंपाल रे।
कूड कपट केवल नें पापणी, उलटो देवे सती सिर आल रे॥ ५१॥
कुसती डरे नही सील भांगती, तो उवा किम डरें देती आल रे।
तिणसूं सती डरें कुसती थकी, ते तो लोकीक सांह्यो न्हाल रे॥ ५२॥
ज्यूं भेषधारी भागल घणां, त्यांरो कुण काढें निकाल रे।
झगडो झालें पापी तेहसूं, उलटो देवें अन्हाखी आल रे॥ ५३॥
अकार्य करता डरें नही, तो ए किम डरे देता आल रे।
एहवां भेषधारी भागलां तणो, कहो किण विध काढें निकाल रे॥ ५४॥
आपणा दोषण नें ढांकवा, पापी बोले अनेक विध कूड रे।
त्यांने छेडवीयां गलें पडें, त्यांसू बुधवंत रहजो दूर रे॥ ५५॥

भेषधारी भागल तूटल घणां, होय बेठा बाबा रा धीग रे।
वेसरमा सुध बुध बाहिरा, सांह्मा मांडें साधां सूं सीग रे॥ ५६ ॥
आपणा किरतब देखे नही, हाथां सूं चावा हुवे मत हीण रे।
त्यांरा दोष परगट हुवां परजले, पछे भाषें लोकां आगें रीण रे॥ ५७ ॥
एहवा भेषधार्‍यां नें गुर करें, ते तो गया जमारो हार रे।
ते तो जासी नरक निगोद मे, तिहां खासी अनंती मार रे॥ ५८ ॥
छेदन भेदन पांमसी अति घणीं, तिहां सुख नहीं लवलेस रे।
परमाधांमी रे पांनें पड्यां, पांमें दुख असाता कलेस रे॥ ५९ ॥
इम सुण सुणनें नर नारीयां, सतगुर सेवो रूडी रीत रे।
'भेषधारी भागल नें परहरें, राखो सुध साधां री परतीत रे॥ ६० ॥
भेष अंधारी परगट करी, आणंदपुर सहर मझार रे।
समत अठारे तेतीसे समें, वेसाख सुद इग्यारस रिववार रे॥ ६१ ॥

ढाल : १५

दुहा

अरिहंत सिध नें आयरिया, उवभाया सर्व साध।
मुगत नगरनां दायका, ए पांचूं पद आराध ॥ १ ॥
वांदीजे नित एहनें, नीचो सीस नमाय।
गुण ओलख बंदणा कीयां, भव भव रा दुख जाय ॥ २ ॥
साध साधवी श्रावक श्रावका, जिण भाष्या तीरथ च्यार।
छोटी मोटी माला गुण रतनां तणी, त्यांनें सीख कहूं हितकार ॥ ३ ॥
साध साधवी श्रावक श्रावका भणी, चालणो इण मरजाद।
दोष देखे तो तुरत बतावणो, ज्यूं वधें नहीं विषवाद ॥ ४ ॥
कोइ कषाय वस दुष्ट आतमा, ओर साधां सिर दे आल।
त्यांमें घणां दिन दोष कहें घणां, तिणरो किण विध काढे निकाल ॥ ५ ॥
ओरां में बतावे दोष घणां दिनां, तिणरी मूल न मानणी बात।
आ बांदी मरजादा सर्व साधनें, ते लोपणी नहीं तिलमात ॥ ६ ॥
तोही दोष काढे घणां दिनां, वले भूठो करें विषवाद।
ते अपछंदा निरलज नागडा, तिण लोप दीधी मरजाद ॥ ७ ॥
इसडा अजोग नें अलगो कीयां, जब उ काढे दोष अनेक।
वले ओगुण काढे अति घणां, तिणरी बात न मानणी एक ॥ ८ ॥
इण रीते साधनें चालीयां, किणरे संका पडे नहीं काय।
वले वशेष परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ९ ॥

ढाल

[डाभ मुंजादिकना डोरी]

हिवे सांभलजो नर नार, सुध साधां तणो आचार।
कदा कर्म जोगे दोष लागे, तो प्रायछित लेणो गुर आगे ॥ १ ॥
कोइ गण मांहें दोष लगावे, ते निजर आपरी आवे।
ते नहीं राखणो दाब, उणनें कही देणो तुरत सताब ॥ २ ॥
गुर चेला नें गुर भाइ मांई, दोष देखे तो देणो बताई।
त्यांसूं पिण करणो नहीं टालो, तिणरो काढणो तुरत निकालो ॥ ३ ॥

कोइ दोष जाणीनें सेवे, तिणरो प्रायछित पिण नहीं लेवे।
तिणनें कर देणो गणसूं न्यारो, कुण डूबसी तिणरी लारो ॥ ४ ॥
दोषीला सूं करे आहार ने पाणी, तिणरो चारित्र हुवे धूल धाणी।
दोषीलां नें राखे गण माय, तो सगलाइ मिष्टी थाय ॥ ५ ॥
गुर रो दोष चेलो ढांके, मूढे पिण कहितो सांके।
तिणरे रहगइ भोलप मोटी, घर छोड हुवो छे खोटी ॥ ६ ॥
किणरो द्वेषी कोइ होय जावे, तिणमें दोष अनेक बतावे।
कहे म्हे छानां राख्या दोष जाण, म्हें राखी घणा दिन काण ॥ ७ ॥
घणा दिना रा दोष बतावे, ते तो मानवा मे किम आवे।
साच झूठ तो केवली जाणे, छदमस्थ प्रतीत न आणे ॥ ८ ॥
हेत मांहि तो दोषण ढाके, हेत टूटां कहतो नहिं सांके।
तिणरी किम आवे परतीत, उणनें जाण लेणो विपरीत ॥ ९ ॥
इण दोषीला सूं कियो आहार, जद पिण नहिं डरियो लिगार।
हिवै आल देतो किम डरसी, उणरी परतीत मूरख करसी ॥ १० ॥
इण दोष क्यांने किया भेला, इण क्यू न कह्यो उण बेलां।
इणरी साध तणी रीत हवे तो, उणरो उण दिन कहेतो ॥ ११ ॥
जद ऊ कहे न कह्यो डरते, गुर सूं पिण लाजां मरते।
जब उणने कहिणो पाछो, तोने किण विध जाणा आछो ॥ ॥ १२ ॥
थें दोषीला सूं कियो संभोग, थारा वरत्या माठा जोग।
थारी परतीत नावे म्हांने, इणरा दोष राख्या ते छानें ॥ १३ ॥
थे तो कियो अकारज मोटो, जिन मार्ग मे चलायो खोटो।
थारी भिष्ट हुइ मति बुद्ध, हिवे प्रायछित ले हुय सुद्ध ॥ १४ ॥
उणने पूछयां ऊ आरे होय, तो उणने प्रायछित देसां जोय।
जो ऊ पूछ्यां आरे नही होय, तो उणसूं जोर न लागे कोय ॥ १५ ॥
उणरी तो थारा कह्या सूं सक, पिण तूं तो दोषीलो निसंक।
इम कहि तिणने घालणो कूरो, प्रायश्चित नहिं ले तो कर देणो दूरो ॥ १६ ॥
ज्यूं कोइ वले ने दूजी वार, किणरा दोष न ढांके लिगार।
दोष ढाक्यां सूं हुवै खुवारी, टांको भले तो अनंत ससारी ॥ १७ ॥
संका सहित ने राखे माय, तो ओर साध दोषीला न थाय।
दोषीला ने जाणी राखे मांय, तो सगलाइ साध असाध थाय ॥ १८ ॥
एक दोष सेवे नित साध, तिण संजम दियो विराध।
तिणने साध जाण बांदे कोय, ते अनंत संसारी होय ॥ १९ ॥

तो घणां दोष सेवे साख्यात, तिणनें जाण वांदे दिन रात।
ते तो पूरा अज्ञानी बाल, ते रूलसी अनंतो काल ॥ २० ॥
एक दोष रो सेवणहार, तिण बांद्यां बधे अनंत संसार।
तो तिणमें जाणे घणां दोष साल, त्यांनें वांद्यां हुवे कवण हवाल ॥ २१ ॥
जाण जाण दोषीला ने बांदे, जिण धर्म न ओलख्यो आंधे।
ते तो बूड गयो कालीधार, आरे कियो अनंत संसार ॥ २२ ॥
छिद्रपेही छिद्र धारी राखे, कदे काम पडे जद कही राखे।
तिणमें साध तणी नहीं रीत, तिणरी कुण मानें परतीत ॥ २३ ॥
एहवारो वचन मानें सांचो, तो जिनमत पड जाय काचो।
पछे हरकोइ दोष बतावे, हरकोई झूठ चलावे ॥ २४ ॥
उणरी मान्या ऊ होय जावे सूरो, तो जिनमत रो हुवे फितूरो।
शुद्ध साध हुवे मोत्यां री माल, त्यांरे हरकोइ दे काढे आल ॥ २५ ॥
घणां दिनां काढे दोष विख्यात, तिणरी मूल न मानणी बात।
शुद्ध साधां री ए मरजाद, तिणसूं बधे नहीं विषवाद ॥ २६ ॥
ओर साधां में दोषण देखी, तुरत कहें ते निरापेखी।
तिणरे मूल नहीं पखपात, तिणरी मानणी आवे बात ॥ २७ ॥
किण में दोष परपूठ बतावे, ओर साधां नें आय सुणावे।
तिणरो किण विध काढे निकाल, दोनूं भेला नही तिण काल ॥ २८ ॥
एहवे कारण पडयां करे जेज, ओर मुतलब सूं नंही हेज।
दोष ढांकण री नहीं नीत, आतो जिन मारग री रीत ॥ २९ ॥
प्रायछित देवारा छे कामी, त्यांमें कदेय म जाणो खामी।
पछे करे दोयां ने भेला, निकाल काढे तिण बेलां ॥ ३० ॥
जिणमें दोषण आप जाणे, प्रायछित देने आणे ठिकाणे।
उतावल सूं न करणो विगाड़ो, प्रायछित न ले तो कर देणो न्यारो ॥ ३१ ॥
कदा सहज दोष छे ताय, दोनूं झगडे छे मांहोंमांय।
समझाया नही समझे ताय, तो केवल ज्ञानी नें देणो भलाय ॥ ३२ ॥

ढाल : १६

दुहा

भेषधार्‍यां रा त्याग वेंराग मे, लखण नही तिलमात।
विगे छोड बाजे वेरागीया, पिण एक इचर्य वाली बात ॥ १ ॥
उवे जांणे उत्तर गुण नीपनो, ते कर कर कूडी रूढ।
मूल गुण सहीत उत्तर गुण, दोनूं विगडया न देखे मूंढ ॥ २ ॥
ते सूंस लोकां नें जणावता, नाणे मन में लाज।
ठगबाजीगर नी परे, करे अनेक अकाज ॥ ३ ॥
केइ सूंस करें सुध बुध विनां, केइ मान वडाइ आंण।
केई मसांणीया वेराग स्यूं, केइ सरमां सरमी जाण ॥ ४ ॥
त्यांसूं पछे न जाए पालीया, चोडे भांग्या पिण नही जाय।
आरतध्यांन में दिन नीकले, पिण कारी न लागे कांय ॥ ५ ॥
सूंस भांगे पिण कपटी थकां, करे अनेक उपाय।
ते तो ताके सेरी चोर ज्यूं, भेल सभेल कर खाय ॥ ६ ॥
त्यां विकलां रा सूंसां तणी, परतीत आवे केम।
ते डाव घाव करे किण विधे, ते सुणजो धर पेम ॥ ७ ॥

ढाल

[विछिया नी देशी]

केइ भेषधारी महीना मझे, पनरें दिन विगे त्यागे जांण रे।
वेंराग विण सुध बुध बाहिरा, त्यांरी बुंधवंत करजो पिछांण रे।
तुम्हे जोयजो सूंस विकलां तणां* ॥ १ ॥
ते पिण कहिवानें पनरें दिन कहे, पिण आगार राखें अनेक रे।
पूरा त्याग परूपे भूठा थका, ओ पिण घटमें नही ववेक रे ॥ २ ॥
एहवो त्याग परंपरा बांधीयो, ते पिण जोरी दावे कराय रे।
आप लूखो खाए पेंलों चोपड्यों, तिणसूं अन्हाखी दें अंतराय रे ॥ ३ ॥
उ जां लग त्याग करें नहीं, त्यां लग थोडो घालें चुगराय रे।
ओर इधको लेवे चोरटा थका, उणनें त्याग वताय वताय रे ॥ ४ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

देखें आप सूं उधको खावतो, जब जागें अभिंतर धेष रे।
कूड कपट सूं करें नषेधणां, तिण पहर विगाडयों भेष रे॥ ५॥
म्हां बरोबर त्याग कीयां पछें, विगें वांटे देसां तोय रे।
तिणसूं ते पिण त्यागें तिण विधें, इम सहु सरीषा होय रे ॥ ६॥
विनां परिणांमा सूंस करावीयां, इसको खेदो दीसें साख्यात रे।
त्यांरा सूंस पालण री विध सुण्यां, एक इचर्य वाली बात रे॥ ७॥
दोय च्यार जणां गया गोचरी, वेंहरी लाया पूरण आहार रे।
पिण विगें थोडो आयों देखनें, करें मांहोमांहीं मनवार रे॥ ८॥
जांणें थोडा विगें रे कारणें, म्हांरे कुण लगावें आज रे।
तिणसूं नां कहें माथो धूणनें, पिण नांणें मूरख लाज रे॥ ९॥
न लगावें सर्व लोलपी थका, जांणें गिणती में दिन घट जाय रे।
जब मांहोमांहीं निंदा करें, घृत कपडा रें देवें लगाय रे॥ १०॥
कोइ वधतो देखे कलहो राड नें, कोइ डरतो थको मन मांय रे।
कोइ लाज सरम रो मारीयो, कदा थोडोसो देवें लगाय रे॥ ११॥
थोडो विगें खाधां वेदल हुवें, गिणती मां सूं घट्यों दिन जांण रे।
टाला टोलो करण खपे घणुं, पिण पडी गला नें आंण रे॥ १२॥
घृत थोडोसो आयों देखनें, केई आहार रे देवें लगाय रे।
लेप लागे ते लूखा में गिणे, सूंस भांगेनें इण विध खाय रे॥ १३॥
आइ फीणा रोटी चूरमादिक, वले गलगली रोट्यां पूर रे।
पिण घी थोडो आयो देखने, कपटी किण विध बोले कूड रे॥ १४॥
म्हें आज तो आहार लूखो करां, न लगावां विगें नें कोय रे।
तिणसूं फीणा रोटी चूरमादिक, लेवें पातरा मां सूं जोय रे॥ १५॥
चूरमा फीणा रोटीदिक मझे, जो तिणमें घी हुवें पाव अधसेर रे।
भावें जितो खाय लूखो गिणे, एहवो भेषधार्‍यां रे अंधेर रे॥ १६॥
कोइ रांक थको बुध केलवें, घृत ले काढें तिण मांय रे।
तिणनें डरावे लोलपी थका, वले झगडो राड मचाय रे॥ १७॥
त्यांमें रांक रहें छें जोवतों, लूंठो हुवे तो खाए डराय रे।
धींगामस्ती नें आरतध्यांन में, यांरा दुख मांहें दिन जाय रे॥ १८॥
आपरें लूखो खांणो जिण दिने, कोइ आहार अपथ वेंहराय रे।
जब कपटी दगो करे इण विधे, विगें भेलों लेवें तिण माय रे॥ १९॥
आपरें विगें खांणो जिण दिने, पेंलारें लूखो खाणो हुवे आहार रे।
जब आवे रोटी चोपडी, तो घाल दे घृत मझार रे॥ २०॥

कितला एक घी खाए घणो, केकां नें घणों विगे भांय रे।
जब कोयक कोरो घी पीवे, पिण लाजे नही मन मांय रे ॥ २१ ॥
यांरा खावारा चरित अनेक छें, ते तो पूरा कह्या न जाय रे।
वले वेंहर ल्यावण री विध कहूं, ते पिण सुणीयां इचर्य थाय रे ॥ २२ ॥
सहर जातां विचे गांवडां मझे, कोइ ग्रहस्थ विगें वेंहराय रे।
थोडो आवतो देख लेवें नहीं, आगे मोटी आसा मन माय रे ॥ २३ ॥
घणों विगे खावारें कारणें, लगतो खावे लूखो आंण रे।
ते तो सहर मांहें गयां पछें, नित सरस विगे लें जांण रे ॥ २४ ॥
घणों विगे ल्यावारी खप करे, ताक जाए ताजो घर जोय रे।
न मिलीयां न खाए तेहनें, वेंरागी मत जांणो कोय रे ॥ २५ ॥
जिण दिन विगें खांणो आपरें, जद जाए ताजो घर टाल रे।
आप न खाए खांणो ओर रे, जब जोवें घर अदेवाल रे ॥ २६ ॥
दूजें दिन विगें खावा कारणें, ताजा घर देवे टाल रे।
ओरां नें पिण जावा दे नहीं, एहवी पेट री वांधें पाल रे ॥ २७ ॥
विगे देवें न देवें तेहनां, सगला घर राखें टाल रे।
आप मूतलव वेहरे तिण घरे, विण मूतलव देवें टाल रे ॥ २८ ॥
आपरें लूखो खांणो जिण दिने, जब आगूंच वोले एम रे।
लूखो आवें ते वास वताय दे, तिणनें सरल कहिजें केम रे ॥ २९ ॥
ते पिण पडीया पोमावता, ले ले त्याग रो मूरख [illegible] रे।
पिण खावा रो ध्यांन मिटीयो नही, त्यां जनम विगाड्यो [illegible] रे ॥ ३० ॥
उवास करें जद पिण तेहनों, विगें खावारो न मिट्यो [illegible]
ताजा घर थाप राखें पारणे, ओर साध नें न दे [illegible] ॥ [illegible] ॥
कदा वीजें दिन घर हुवें असूझतो, कांई आय पडें [illegible]
उसभ करम वांधेनें यूं ही रह्यों, पुन विनां विगें [illegible] ॥ [illegible] ॥
ओर साध नें अंतराय पाडियां, करम आठोइ [illegible]
तीस कोडाकोड सागर तणी, उतकष्टी वंधे [illegible] ॥ [illegible] ॥
पछें जिण गति जाए तिण गते, अवस आय [illegible]
आसा मांडें ते न पडे पाधरी, चितवें ते [illegible] ॥ [illegible] ॥
विगें त्याग नें उत्तर गुण कीयां, जो पाले [illegible]
उत्तर गुण नही भांगां एकला, भांगां छे [illegible] ॥ [illegible] ॥
कोइ विगें वेंहरावें सुपातर जांणनें, उलट [illegible]
पिण विगें न खांणों आपरें, जद [illegible]

कोइ लाज सरम रो घालीयो, विगें वेंहरावें दातार रे।
पिण आपरें खांणों जिण दिनें, ढीला मेलेनें कहें नाकार रे॥ ३७॥
आप विगें न खाए जिण दिनें, कोइ दातार विगें वेंहराय रे।
तो सूझता में संका घालनें, आप बुगल ध्यांनी होय जाय रे॥ ३८॥
आपरें विगें खांणों जिण दिनें, कोइ विगें देवें तिण काल रे।
असुध हुवें तो पिण छोडें नहीं, पूछेनें नहीं काढें नीकाल रे॥ ३९॥
आपरें विगें खांणों जिण दिने, करें कुदम कुदा जांण रे।
आपरें नहीं खांणों तिण दिनें, वेंहर ल्यावें घर समुदांण रे॥ ४०॥
एहवी ओघट घाट घटमें घणी, करें चाला चरित अनेक रे।
तिणरो भोलां नें रांक गरीब सूं, भेलो रहीवा रो मन वशेष रे॥ ४१॥
जिण साथे गयां विगें मिलें घणों, तिण साथे मेल्यां हरषत थाय रे।
थोडो मिलें तिण साथे मेलीयां, तो धडक पडें मन मांय रे॥ ४२॥
ओ तो किणही एक आगें रख्यां थकां, चाला चरित कीया नही जाय रे।
जब साप ठोडी दव्या नी परे, दुख पावें घणों सीदाय रे॥ ४३॥
गुर गुरभाइ नें ओर साध सूं, इणरें किणसूं म जांणों पीत रे।
उणनें घणों विगें आंण पोखीयां, तिणरोइ छें वनीत रे॥ ४४॥
तप करें विगें रें कारणें, तिणरा कुण कुण कहिजें दोष रे।
घणों खावानें मारें हिडवची, थोडें खायां न करें संतोष रे॥ ४५॥
विकल सूंस पालें इण विधें, ते तो निश्चें बूडा जांण रे।
वले सरधें साधपणों आपमें, ते तो मूंढ मिथ्याती अयांण रे॥ ४६॥
एहवो त्याग परंपरा बांधनें, घाल्यो टोलां में झगडो राड रे।
हेत तूटे मांहोमांहीं तिम कीयों, ते तो पूरा मूंढ गिंवार रे॥ ४७॥
थोडा घणां सांह्मो जोवे नहीं, सेजां आयो लगावें जांण रे।
परतीत उपजावें पालतो, तिणरा त्याग कीयां परमांण रे॥ ४८॥
समत अठारें बतीसें समें, आसोज सुद बीज मंगलवार रे।
विकल पचखांणी परगट करी, खेंरवा सहर मझार रे॥ ४९॥

●

ढाल : १७

दुहा

कोइक रे माहोमां अडो अडी, कोइ आंणे मन वेंराग।
जाव जीव विगें त्यागन करे, पछें कायर जाए भाग॥ १॥
केई विगे खाए अपरेतीया, कदे हुवे अजीरण तांम।
जावजीव विगे त्यागें तिण समे, त्यांरो कठण घणों छे कांम॥ २॥
पछें भूरें रोट्यां देख चोपडी, इधकी लेवारें कांम।
परठावणीया खावानें हीज रें, भूंडा रहे परिणांम॥ ३॥
खाजा साकुली आया देखनें, मन मे रहे ओघट घाट।
लाफसी सीरादिक जांणें आवीया, जोवे इधका लेवण री बाट॥ ४॥
जो इधको न देवें तेहनें, तो जागें अभितर रोस।
आडी तेडी बातां घाली लडें, काढे अणहुंता , दोष॥ ५॥
दुष्ट परिणाम रहे तिण उपरें, वले बांछें तिणरी अंतराय।
वेर बुधी ज्यूं छिदर जोवतो, वले खुद्र परिणांम घट मांय॥ ६॥
विकलां रा सूंस पचखांण सू, दिन दिन केतब थाय।
ओर साघां ने उपसर्ग उपजें, ते सुणजो चित्तल्याय॥ ७॥

ढाल

[धीज कर सीता सती रे लाल]

विकल सूंस करतां थकां रे, राखें अनेक आगार रे। सुगणनर*।
ते करें विकलाइ अन्हाखी थका रे लाल, तिण घाली टोलां में राड रे। सुगणनर॥
सुणजो सूंस विकलां तणां रे लाल*॥ १॥
खावा नें मारें भाकुली रे, वले रहे निरंतर सोच रे।
तिणरी विकलाइ देखने रे लाल, ओर साघां नें उपजे संकोच रे॥ सु० २॥
विगे आयों देखें पातरे रे, ओर साघां नें खाता देख रे।
तिणने टालेने देवें चोपडी रे, जब जागें मूरख ने धेख रे॥ ३॥
जो टाल टालनें देवे चोपडी रे, वले सूखडी आदि देवें टाल रे।
तो दबीयो थको पडीयो रहे रे, नही दंतो उठे घट भाल रे॥ ४॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

तिणसूं आडी तेडी बातां घालनें, करें खोटोराइ जांण रे।
काढें अणहूंता खूंचणा रे, पग पग तांणा तांण रे॥ ५॥
पछें साधां नें सरधें लोलपी रे, वले बोलें अनेक विध कूड रे।
आल देतों संकें नहीं रे, तिणरा त्याग कीयां में धूर रे॥ ६॥
कोई सराग . रो घालीयो रे, टाल देवें घणां रो आहार रे।
ते दोनूंइ चोर भगवांन रा रे, तीजो वरत भांजे हुवा खुवार रे॥ ७॥
कोइ विगें वेंहरावें तेहनें रे, तो नही वेंहरें मूंढ अयांण रे।
ओरां री इरषा रो घालीयो रे, ए बूडणरा छें अहलांण रे॥ ८॥
दातार तो हरष पांमें घणों रे, नीठ मिलीयो सुपातर जोग रे।
उ उलट परिणांमा वेंहरावतो रे, पिण विकल पचखांणी नें सोग रे॥ ९॥
एहवा विकल भेला रह्यां रे, उ जद तद दावादार रे।
ते गुण कीयां पिण अवगुण गिणे रे लाल, वले छिदर गवेषणहार रे॥ १०॥
इण विध आगें बूडा घणां रे, त्यांरो कहितां न आवें पार रे।
ते समकत बोध गमायनें रे लाल, गया नरक निगोद मझार रे॥ ११॥
वले बेला तेलादिक पारणें रे, विगें खाए विण मरजाद रे।
ओरां नें राखें झीकता रे लाल, आप इधका करें विषवाद रे॥ १२॥
तपसा करें खावारें कारणें रे, ते पिण पूरा मूंढ रे।
विगेंरो उद्यम करें पारणे रे, जाए ताजें ताजें घर ढूंढ रे॥ १३॥
ते पेटभरा ठग भेष में रे, ते पिण बुगलध्यांनी होय जाय रे।
त्यां भोलां नें पाड्या भर्म में रे लाल, ताजा माल आंणी खाय रे॥ १४॥
वले वीहार गामां नगरां करें रे, पिण रहें निरंतर संताप रे।
मिगसर महीना थी मांडनें रे लाल, करे चोमासा री थाप रे॥ १५॥
गमतो खेतर देखीनें कहें रे, म्हे अठें करसां चोमास रे।
ओरां री म करजो वीणती रे लाल, यांरें मांहोंमां नही वेसास रे॥ १६॥
मिगसर मास लागां पछें रे, मांडें घणीं दोडादोड रे।
जांणें मन चिंतवीया खेतर में रे लाल, रखे करें चोमासों ओर रे॥ १७॥
वले छती सगत फिरवा तणी रे, तोही थांणें वेंसें रहें जांण रे।
ताजो खांणों मिलें तिण सहर में रे लाल, पर रहें मूंढ अयांण रे॥ १८॥
जो ताजो आहार मिलें नही रे, तो छोड दें थांणो सताब रे।
वले अलगो खेतर आछो सुणे रे लाल, तो जाय वेंसे खेतर दाब रे॥ १९॥
थांणें वेसें लोलपी थकारे, वले कूडा कारण बताय रे।
त्यांमें दोषां रो थांग दीसें नहीं रे लाल, ते पूरा केम कहीवाय रे॥ २०॥

तिणनें उपरलो आए मिले रे, तो छुडाय दे थांणों सताब रे।
विण परीणामां काढें दवकायने रे लाल, पाडे तिणरी आब रे॥ २१॥
उ साध श्रावकां रो दबीयो थको रे, गयो अनेरे गांम रे।
पिण अंतरंग में दुखीयो घणो रे, इणरो छूटो ठिकांणो ठांम रे॥ २२॥
इणने एकंत लोलपी जांणनें रे, ओरांने देतो जाणे अंतराय रे।
वले आंगुण घणां जाणे तेहने रे, दीयो ठिकांणो छडाय रे॥ २३॥
तोही तांणा वेजा तिणरे लागे रह्या रे, तिहां पाछा आवारा परिणांम रे।
जाणें चोमासो पूरो हूआ पछें रे, पाछो जाय बेसेसूं तिण ठांम रे॥ २४॥
सुखसाता आगा ज्यूं तिहां पावसू रे, इणरें इसरों छे मन वेसास रे।
इण आसा सूं दिन गिनतां थकां रे, पूरों करे छे चोमास रे॥ २५॥
चोमासो पूरों हूआं पछे रे, पाछो आय वेसे थांणें सताब रे।
तेतो लोलपी नगर पिंडोलीयो रे, तिणने खांणे कीयो छें खुराब रे॥ २६॥
कदेयक तो थांणें कहे रे, कदे कारण बतावें ताहि रे।
इणरें कूड कपट रो चालो घणो रे, तिणनें विकल राखें गण मांहि रे॥ २७॥
कल्प मरजादा भांगी लोलपी थको रे, तिणरें कदेय म जांणो समाघ रे।
तिणसूं आहार पांणी भेला करें रे लाल, त्यांने निश्चे कहीजे असाघ रे॥ २८॥
वले तप करें महिमा वधारवा रे, पूजा सलाघा काज रे।
जस कीरत रा भूखा घणा रे, ठाला बादल ज्यूं करें ओगाज रे॥ २९॥
मत विखरतो जांणे आपरो रे, फिरता देखे श्रावक अनेक रे।
तो करे उपाय मत राखवा रे, ते सुणजो दिष्टंत एक रे॥ ३०॥
जोगी ब्राह्मण आददे दरसणी रे, ज्यारी जाती देखे डोली ग्रास रे।
तो करे उदंगल अति घणां रे, त्यारे आजीवका रो विसास रे॥ ३१॥
हाथ फाडें चांदी चिगदो करे रें, मारें जांघ गले घालें जांग रे।
इतरे कीयें सुलझें नही रे लाल, तो जूंहर खडकें आंण रे॥ ३२॥
टूंटो खोडो पांगलो रे, वले गरटो जोजरो जांण रे।
निकमां माणस भेला करी रे, खडकें जूंहर में आंण रे॥ ३३॥
जो माथा उपर ली आए वणे रे, तो न गिणें बालक बचेल रे।
भेलाकर होमें धरती कारणे रे, देवे जूंहर में ठेल रे॥ ३४॥
कदा जूंहर रस आवें नहीं रे, तो वणजाअें घणी खुराव रे।
ग्रास जाअेंनें फिट फिट हुवें रे, उतरजाअे लोकां में आव रे॥ ३५॥
इण दिष्टते भेषधारी लोक मे रे, साधरो नांम धराय रे।
आजीविका अर्थे गच्छ बांधीयो रे लाल, भोलां आगें रह्या छें पूजाय रे॥ ३६॥

ते अकारज अनेक करता थका रे, संकें नहीं मन मांय रे।
ते मतवाला ज्यूं छकीया रहें रे लाल, ते डरें नहीं करता अन्याय रे॥ ३७॥
उघाड पडें त्यांरो लोकमें रे, कदे पूजा श्लाघा घट जायरे।
वले श्रावक फिरें मत वीखरें रे लाल, जब कुण कुण करें उपाय रे॥ ३८॥
केई गरढा अवनीत अजोगनें रे, तिणनें पोगां चढाय चढाय रे।
लांबी तपसा करावें तेहनें रे लाल, कें संथारो देवें कराय रे॥ ३९॥
तोही आघ आदर न हुवें लोक में रे, वले परजाअें इधको उघाड रे।
तो बाल जवांन पिण तेहनें रे लाल, करावें लांबो तप नें संथार रे॥ ४०॥
इम कर कर कांम चलावता रे, खाअें लोकां रा माल रे।
ते वरत विहूणा नागडा रे लाल, ते कूंदा वण रह्या लाल रे॥ ४१॥
कदा संथारो रस आवें नहीं रे, तो वणजाअें घणी खुराब रे।
आजीवका घटें मत वीखरे रे लाल, उतर जाअें लोकां में आब रे॥ ४२॥
चांदी चिगदां सम त्यांरो तप कह्यों रे, संथारो जूंहर समांण रे।
ते तो ग्रास आजीवका कारणें रे लाल, करें मनख मारें घमसांण रे॥ ४३॥
कोइ जूंहर मां सूं नीकलें रे, तिणनें पकड जूंहर में दें झोंक रे।
ज्यूं कोयक संथारो भांग नीकलें रे, तिणनें जोरी दावें राखें रोक रे॥ ४४॥
जो उ अनपांणी मागे हेला करें रे, तो राखें अबोलो मुख मींच रे।
ते हाय विराय टलबल करें रे, तिणनें मारें भूंडीतरे कुमीच रे॥ ४५॥
खावापीवा रो अतृपतो मूआं रे, महा मोहणी कर्म बंधाय रे।
वले नरक निगोद मांहें पडे रे, पछें चिहूं गति झोला खाय रे॥ ४६॥
उणनें रोक राखें ते पापीया रे, ते मिनष ना मारण हार रे।
ते पिण बांधें महा मोहणी रे लाल, जासी नरक निगोद मझार रे॥ ४७॥
एहवीतरें मूआं नें मारीयां रे, दोनूं नें दुरगत होय रे।
यांरें कर्म बंधें महा मोहणी रे लाल, दसासतकंधे सुतर में जोय रे॥ ४८॥
विना विचार्यां लांबो तप करे रे, वले करें संलेखणा संथार रे।
पछें आरतध्यांन मांहें मरे रे लाल, ते चाल्या जन्म विगाड रे॥ ४९॥
ग्रहस्थ रा घरमें कलहो हुवे रे, कोइ ताकें कूओ नें षेड रे।
कोयक आपघ करे मरे रे, वले खाय मरें केई जहर रे॥ ५०॥
ज्यूं भेषधारी घर छोडायनें रे, करें मांहोंमा कजीया राड रे।
त्यांमें केयक दुखरा दाधा थका रे, करें संलेखणा संथार रे॥ ५१॥
त्यांरो संथारो पार पोहचें नहीं रे, पोहचें तोही असुध परिणांम रे।
मरें लाज सरम रा मारीया रे, त्यांरो मरणो छें मरण अकांम रे॥ ५२॥

जे बालमरण मूआ तके रे, बूडा घोर रूद्र संसार रे।
त्यांरा गुण कीरत महिमा करे रे लाल, ते पिण बूडा त्यांरी लार रे॥ ५३॥
विनें करें सुतर भणे रे, करें तपसानें पाले आचार रे।
इहलोक परलोक जस कारणें रे लाल, ते तो भगवंत री आग्या बार रे॥ ५४॥
इहलोकादिक अर्थे तपसा करें रे, वले करें संलेखणा संथार रे।
कह्यो दसवीकालक नवमा अधेन में रे, अग्यां लोपी नें परीया उजाड रे॥ ५५॥
केई तपसा करें मांनी थका रे, केई पेट भराइ काज रे।
वले लोक सरायां हरषत हुवे रे लाल, त्यांनें केम कहीजें मुनीराज रे॥ ५६॥
ए सुण सुणनें नर नारीयां रे, करजो मनमें विचार रे।
समचें कह्या सगलां उपरें रे लाल, नांम लेइ न कर्‌यों उघाड रे॥ ५७॥
जिणमें अवगुण होसी एहवा रे, त्यांनें न गमें एहवी जोड रे।
बुधवंत सुण सुण हरखें घणा रे लाल, पांमे आणंद कोड रे॥ ५८॥
सुंस लेइ सुध पालजो रे, चोखा राखो परिणांम रे।
लोक बतावें आंगली रे, एहवो म करजो कांम रे॥ ५९॥
विकल पचखांणी आ दूसरी रे, कीधी खेंखा सहर मझार रे।
संवत अठारें बतीसें समें रे लाल, काती विद बीज मंगलवार रे॥ ६०॥

ढाल : १८

दुहा

पचखांण सुणे विकलां तणो, करजो सूंस विचार।
सीखावण कहूं सर्व साधनें, ते बुधवंत लेजो धार॥ १ ॥
केई सूंस करें बेंराग सुं, तिण काले सुध परिणांम।
पछें पड जाअें केई आड दोढ में, तिण जन्म गमायो वेकांम॥ २ ॥
वले वाजे लोकां में वेंरागीया, त्याग बताय बताय।
पिण करें विकलाई अति घणी, तिणरी खबर न काय॥ ३ ॥
करें विकलाई तेहनें, सूंस कीया ते निरफल थाय।
वले खावापीवा रो अत्रिपो रह्यां, तिणरें मोहणी कर्म बंधाय॥ ४ ॥
तिणसूं पहिला तोलनें, कीजो उत्तर गुण पचखांण।
कीधां पछें सुध पालजो, ज्यूं वेगा पोंहचो निरवांण॥ ५ ॥
विकलाई देख विकलां तणी, समचें कहूं छूं भाव।
सूंस लेवण नें पालण तणों, कही बतावूं न्याव॥ ६ ॥

ढाल

[पूजजी पधारो हो नगरी सेविया]

कोइ बंधो करे जाव जीव लग एहवो, हूं एकटक करसूं आहार मुनिसर।
पछें चांप चांप आहार मरजादा लोपी करें, ते श्रीजिण आग्या बार हो मुनिसर।
करजो रे भवीयण सूंस विचार नें॰ ॥ १ ॥
एक वार दोय वार आहार कीयां थकां, साध नें दोष न कोय हो।
चांप चांप आहार एकण टकमें कीयां, छिदर चारित रे होय हो॥ २ ॥
चांप चांप आहार करें एकण वार में, तेहिज आहार करें दोय वार हो।
तिण आज्ञा आराधी श्री जिणराज री, ते सुखे वहें संयम भार हो॥ ३ ॥
जो करणी नावे अणोदरी तेह सूं, तो करणो पूरो उन्मांन हो।
पिण कठोकठ साध नें आहार करणो नहीं, ते भाष गया भगवांन हो॥ ४ ॥
चांप चांप आहार करें छें तेहमें, दोषण उपजें अथाग हो।
निद्रा आलस रोग री उतपत हुवें, केई जाअें संजम सूं भाग हो॥ ५ ॥
जो करें उत्तरगुण आंण वेंराग नें, तो पालजे रूडी रीत हो।
जो आहार उनमांन एकण टकमें कीयां, और सायानें आवें परतीत हो॥ ६ ॥

---

*यह ऑकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

उपवास बेलादिक पारणें धारणे, तूं चांप चांप करेंलो आहार हो।
जद पिण अरिहंत री आज्ञा नही, ग्यांनादि गुण ने विगाड हो॥ ७॥
उपवास बेला तेलादिक तप तणो, तूं बंघो करेंला जावजीव हो।
पछे आरत ध्यांन माहें पडीयां थकां, तो बंधसी कर्म अतीव हो॥ ८॥
बंधो कीयां विण छूटो तप करें, जो रहिता जाणें थिर परिणांम हो।
पछे बंधो करे तो पाले रूडी रीत सूं, ज्यूं सुधरें आत्म काम हो॥ ९॥
तूं उपवास बेला तेलादिक तप करे, तो वेंराग राखे घट मांय हो।
ताजा घर पारणें धारणें नहीं राखणा, ओर साधा नें न देणी अंतराय हो॥ १०॥
ताजा घर पारणें धारणें थाप राखीयां, तो आ रीत छें घणी विपरीत हो।
वले साध सरखेंला तोनें लोलपी, थारी कुण मांनेला परतीत हो॥ ११॥
तप कीजें सरल सभावे कर्म काटवा, उपवास बेलादिक जांण हो।
सहजें आयो कीजें पारणो धारणो, ज्यूं पांमें पद निरवांण हो॥ १२॥
जावजीव पांचूंइ विगें त्यागण तणा, थारा इसडा उठे परिणांम हो।
तो आगली पाछली कीजे विचारणा, ए कठण घणो छे काम हो॥ १३॥
सूंस कीयां पछे विगय खावण तणी, कारी न लागे काय हो।
पछे परिणांम आड दोड मे वरतीयां, घणेरी खुराबी थाय हो॥ १४॥
तो सहजेंइ विगें टाले सूंस विण कीयां, ओरानें विगे खाता देखी तांम हो।
पछे लूखो आहार कीयां सुं ताहरा, किसडा एक रहे परिणांम हो॥ १५॥
जो चोखा परिणांम रहें नित ताहरा, वरस छमास लगे जांण हो।
तो त्याग कीजें दोय च्यार वरसां लगें, यूं सहितां सहितां कीजे पचखांण हो॥ १६॥
जो थिर परिणांम रहिता जाणे ताहरा, तो थागा थेगरा रो नहीं काम हो।
तूं त्याग कीजे जावजीव निसंक सूं, चढता राखे परिणांम हो॥ १७॥
पाछे रिगेला तूं रोट्यां देखे चोपड़ी, तो लागेली घणी विपरीत हो।
ओर साध सरधेला तोने लोलपी, उठेला घणी अपरतीत हो॥ १८॥
जे विगे त्यागे नें रोट्यां जोवे चोपडी, वले चोपडी रा जोवें दातार हो।
तिणरो खावारो ध्यांन मिट्यो नही माहिलो, तिणनें बुधवंत देसी धिकार हो॥ १९॥
त्याग करें तो विकलाइ करे मती, राखे समता परिणांम हो।
ओर साध बतावें तोने आंगुली, तूं इसडो म कीजें कांम हो॥ २०॥
कदे ओर साध तोनें जांणें सीदावतो, कोइ आहार आछो दें जोय हो।
ते पांती सूं इधिको लेवेंला कारण विना, तो कुण सरधे वेंरागी तोय हो॥ २१॥
ओर साधां नें विगे खाता देखने, तूं धेप धरेंला मन मांय हो।
साधां रो इसको खेदो कीयां थकां, ए पूरो बूडण रो उपाय हो॥ २२॥

सूंस कीयां पेंली ओर साधां भणी, कदे विगें नहीं धाम्यो तिलमात हो।
ते जावजीव सूंस करें तो पालण तणी, इचरज वाली छें बात हो॥ २३॥
वेंराग विनां विगें त्यागें उसभ उदें, वले ओर सूंसां रो करे पूर हो।
ते सूंस घणां मांहें भाग सकें नहीं, पछें गणसूं हो जाअें दूर हो॥ २४॥
उणरें ओघट घाट रहे घट में घणी, वलें पग पग कपट नें कूर हो।
उ खवारा चाला चिरत करें घणा, ते दिन दिन मुगत सूं दूर हो॥ २५॥
वले चेलां री भूख रहें तिणनें घणी, नहीं सूंस पालण री नीत हो।
सूंस लेइनें भांगें तेहनी, चिहूं गति में होसी कूपीत हो॥ २६॥
कोइ विगेंरो त्याग करें जीवें ज्यां लगे, पारणें धारणे आगार हो।
जो उ तपसा करें विगेंरो लोलपी थको, उणरो पडजाअें साधां में उघाड हो॥ २७॥
उ देखा देख पिण तपसा करतो नहीं, ते पिण रितु वरसात हो।
हिवें ग्रीषम रितु पिण ए एकलोइ तपकरें, ते लोलपी थको साख्यात हो॥ २८॥
ते थोडो विगें देखी तपसा करें नहीं, घणो आयो देख हुवें तयार हो।
एहवा चाला चिरत करें घणा, ते चाल्या जन्म बिगाड हो॥ २९॥
सूंस कीया जब परिणांम ओर था, पछें होय जायें ओर परिणांम हो।
तो थिर परिणांम करे सुध पालजे, ज्यूं सुध रें आत्म कांम हो॥ ३०॥
आहार विगें मरजादा सूं भोगवे, वले राग नें धेष रहीत हो।
देहीनें भाडो देवें छ कारणें, श्री जिण आग्या सहीत हो॥ ३१॥
जो इण रीतें आहार विगें नित भोगवें, तो साध नें दोष न कोय हो।
जो त्याग वेंराग करो कर्म काटवा, तो आपो वस आंणो सोय हो॥ ३२॥
वले केयकांरी अथिर घणी छें आत्मा, ते खिण मांहें रंग विरंग हो।
ते खिण एक में मंड जाअें सलेषणा, वले खिण मांहें जाअें मन भंग हो॥ ३३॥
उणनें धाप्यां तो मीठी लागें सलेषणा, भूखां मीठो लागें अन्न हो।
जो एहवा जीव मंडे सलेषणा, त्यांरो थिर किम रहसी मन्न हो॥ ३४॥
देवल धजा सरीषो मन जेहनों, ते करें सलेखणा संथार हो।
त्यांनें भूख लागां परिणांम भागल हुवें, ते कुसले न पोहचें पार हो॥ ३५॥
ज विगर विचास्यां करसी सलेखणा, वले विगर विचास्यां संथार हो।
पछें आरतध्यांन मांहें परीयां तिके, ते गया जमारो हार॥ ३६॥
तो पहिलां तूं अणसण अणादरी तप करे, वले दिन दिन आहार घटाय हो।
विगें रो त्याग सहितों सहितों करे, इम खीणी पारें कांय हो॥ ३७॥
पछें परिणांम दिढ रहिता जांणें ताहरा, तो बात काढे मुख बार हो।
परतीत उपजें ए सगला साध नें, मंडजे सलेखणा संथार हो॥ ३८॥

ते पिण गुरवादिक आग्या दीयां, तो चढता हुवें परिणांम हो।
ते पिण देही नें पतली पाख्यां पछे, ढील तणो नहीं कांम हो ॥ ३९ ॥
एकासणो आंबल उपवास बेलादिक, वले विगें तणो परिहार हो।
इत्यादिक सूंस करे जाव जीवरो, तो करजे विचार विचार हो ॥ ४० ॥
केई सूर नें वीरपणों मांनें आपनें, ते करे जावजीव पचखांण हो।
पछें सूंस न जाअें गीदर सूं पालीया, ते भांगे विकल जाण जांण हो ॥ ४१ ॥
एहवा त्याग कीयां विण साध नें, दोष न लागें कोय हो।
तो काचा परिणांमा सूंस न कीजीए, सूतर सांहमो जोय हो ॥ ४२ ॥
तप करता देख ओर साधां भणी, कोइ लोलपी करें कपटाय हो।
उ तपसा छोडें विगेंरें कारणें, उणरें गिरधिपणो घट मांय हो ॥ ४३ ॥
तिणरें उपदेस देवारी खेद दीसें नही, वले भणवां ने लिखवारी न काय हो।
तोही नित विगें खाअे तपसा करे नहीं, ओर साधां ने पाडें अंतराय हो ॥ ४४ ॥
उणनें आछा घर न बतावे गोचरी, तो उलटो डरावे तांम हो।
अन्हाखी थको दुख देवें साधां भणी, ते विगय खावा रें कांम हो ॥ ४५ ॥
जो तपसा करण रो कहें कोइ तेहने, तो उ भूठ बोले कारण बताय हो।
इसरा अजोग अवनीत नें लोलपी, ते किण विध आवें ठाय हो ॥ ४६ ॥
जो उ आहार थोरो कें उ आहार लूखो करें, वेंराग भावें रूडी रीत हो।
ते नित नित आहार करें तिण साध री, तिणरा कारण री आवें परतीत हो ॥ ४७ ॥
केयक कारण अणहुंता बताय ने, ते लागा छे खावा लार हो।
केयक सूंस भांगेनें विकल थया, यां दोया री संगत निवार हो ॥ ४८ ॥
तो बल समरथपणों देख सरीर नों, मांहे सरधा वेराग पिछांण हो।
वले काया निरोगी देखे आपणी, तू होय अवसर नो जांण हो ॥ ४९ ॥
वले दरब खेतर काल भाव विचारने, वय जोवनादिक जाण हो।
वले गुरवादिक साधां नें पूछनें, कीजें जावजीव पचखांण हो ॥ ५० ॥
सूंस कीयां परिणांम सेंठा रहें, त्थांरा सूंस कीया परिणांम हो।
जे सूरा वीरा पार पोंहचावसी, ते पांमे पद निरवांण हो ॥ ५१ ॥
ए भाव सुणे उत्तम नर नारीयां, चोखा पालजों सूंस हो।
ज्यूं फेरा टलें जन्म नें मरण तणा, पूरीजें मन हूंस हो ॥ ५२ ॥
समचें कहीं छें विकल सीखावणी, गुंदवच सहर मभार हो।
संवत अठारें बतीसा वरस में, वेसाख सुद ग्यारस सोमवार हो।
करजो रे भवीयण सूंस विचारजें ॥ ५३ ॥

ढाल : १९

दुहा

दुषम आरो पांचमो, घणो हलाहल मांन।
तिणमें भेषधारी हुसी घणा, कूड कपट री खांन॥ १॥
अे कुबदी खेला नाचसें, इण साध तणा भेष मांय।
वले हिंसा धर्म परूपनें, अें परसी नरक में जाय॥ २॥
त्यांरा विकल श्रावक नें श्रावका, ते करसी कूडी पषपात।
त्यांनें कुबद कदाग्रह सीखाय नें, त्यांनें पिण लेसी साथ॥ ३॥
ज्यांरे अंधकूंप नें जलोजथा, त्यांरें दिवस तका हीज रात।
ए गुघू सरीषा होय रह्या, वले दिन दिन अधिक मिथ्यात॥ ४॥
अें नव नव आंकरा नवकडा, ते जासी नरक मझार।
माहा नसीत में में सुण्या, ते सुणजो विस्तार॥ ५॥

ढाल

[सल कोइ मत राख]

आचार्य नें साध साधवी, वले श्रावक श्रावका जांणो रे।
अें गुण विण नांम धरायनें, नरक जासी त्यांरो परिमांणो रे।
इण विध ओलखों नवकडा*॥ १॥
पचावन कोड नें लाख पचावन, वले पचावन हजारो रे।
पांचसों नें पचावन उपरां, आचार्य जासी नरक मझारो रे॥ २॥
छासठ कोड नें छासठ लाख, वले छासठ कह्या हजारो रे।
छसों नें छासठ उपरें, साध जासी नरक मझारो रे॥ ३॥
सितंतर कोड लाख सितंतर, वले सितंतर हजारो रे।
सातसों नें सितंतर उपरें, साधव्यां जासी नरक मझारो रे॥ ४॥
अठ्यासी कोडनें लाख अठ्यासी, वले अठ्यासी हजारो रे।
आठसो नें अठ्यासी उपरें, श्रावक जासी नरक मझारो रे॥ ५॥
निनांणूं कोडनें लाख निनांणूं, वले निनांणूं हजारो रे।
नवसों नें निनांणूं उपरें, श्रावका जासीं नरक मझारो रे॥ ६॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ए आचार्य नें साध साधवी, पदवी धर बाजे मोटा रे।
जे नरक जासी इण भेष में, त्यांरा लखण घणां छे खोटा रे॥ ७॥
ते भिष्ट थया आचार थी, वले सरधा में मूंढ मिथ्याती रे।
पहरण सांग साधां तणो, पिण थोथा चिणां रा साथी रे॥ ८॥
खाए पीए सुखे दीहां सूय रहें, वले डील में वण रह्या लूंठा रे।
गोचरी वीहार करें जरें, जांणें रावला कोतल छूटा रे॥ ९॥
अे तो फिरता वचन बोलें घणा, वले कूड कपट मांहे राचें रे।
चरचा करे तिण अवसरे, जांणे ओघड उघाडा नाचें रे॥ १०॥
न्याय निरणो कीयां विनां, कर रह्या फेन फितूरा रे।
जो सूतर री चरचा करे, तो पग पग पड जाय कूडा रे॥ ११॥
कूड कपट करे मत बांधीयो, ते तो पेट भराइ काजें रे।
आचार में ढीला घणा, तोही निरलजा मूल न लाजे रे॥ १२॥
ते साध नांव धरायने, ठांम ठांम थांनक करावें रे।
तिणरी सांनी सूं कर कर आंमना, छ काय जीवां ने मरावें रे॥ १३॥
आधाकर्मी थांनक ने भोगवें, वले सांग साध रो धरीयो रे।
छ काय जीवां नें मरावता, ओ तो पीहर पूरो पडीयो रे॥ १४॥
वले पडदा परेच बंधावता, चंद्रवा सिरकी ताटा रे।
वले छपरा छांन करावता, तिणरा ग्यांनादिक गुण न्हाठा रे॥ १५॥
इत्यादिक थांनक रें कारणें, जीव हणे वारूंवारो रे।
एहवा थांनक साध भोगवे, ते चाल्या जन्म विगाडो रे॥ १६॥
साध थइ उदेसीक भोगवे, वले मोल लीयो वहरे आहारो रे।
नित पिंड वेहरे एकण घरे, ते जासी नरक मझारो रे॥ १७॥
ए उत्तराधेन रे बीसमे, वीरना वचन सभालो रे।
जे उदेसीकादिक भोगवें, त्यांरे किम होसी नरक सूं टालो रे॥ १८॥
घी खांड लाडू मिश्री मोल लें, त्यांरा भर भर मेले चाडा रे।
मोल ले ले वेंहरावें साध नें, ते तो गर्भ मे आवसी आडा रे॥ १९॥
घी खांड लाडू लूंग मिश्रीयां, मोलरा लीधां वेहरें जांणो रे।
वले साध वाजे इण लोकमें, ते तो पूरा मूंढ अयांणो रे॥ २०॥
जो चेलो हूंतो जांणें आपरो, तो उणने रोकड दांम दरावे रे।
पांचमों महावरत भागनें, तोही साध रो विडद धरावें रे॥ २१॥
जीवादिक जांणे नहीं तेहने, पांचोइ महावरत उचरावें रे।
साध रो सांग पेहराय नें, भोला लोकां ने पगां लगावे रे॥ २२॥

बालक बूढो देखें नहीं, थांरे पानें पडें ज्यूं ज्यूं मूंडें रे।
नांव ना करवा आपरी, ते तो मांन बडाइ सूं बूडें रे॥ २३॥
वले चेलो करवा कारणें, मांहोमां झगडो मांडें रे।
फाडा तोडो करता लाजें नहीं, इण साध रा भेष नें भांडें रे॥ २४॥
गांवां नगरां समाचार मेलवा, सांनीकर ग्रहस्थ बोलावें रे।
कागद लिखावें तिण कनें, विवरों आप बतावें रे॥ २५॥
ग्रहस्थ आगें वीयावच करावीयां, साध नें कह्यो अणाचारी रे।
दसवीकालक तीजा अधेन में, कोइ बुधवंत लेजो विचारी रे॥ २६॥
भागल तूटल त्यांमें घणा, त्यांरो कुण काढें नीकालो रे।
जो थोडासा त्यांनें छेडव्यां, उलटो दे अन्हाखी आलो रे॥ २७॥
आप सरीषा करवा खपें, दे दे अणहूंता आलो रे।
त्यांनें परभव री चिंता नहीं, त्यांरें झूठ तणो नहीं टालो रे॥ २८॥
सुध साधां रे माथें आल दें, त्यांरा टोला में तेह सपूतो रे।
तिण झूठ रो निरणो करें नहीं, त्यांरें नरक जावारा सूतो रे॥ २९॥
झूठो आल देवे तेहनें, प्रायछित न दें लिगारो रे।
तिणसूं आहार पांणी भेलो करें, ते बूड गया कालीधारो रे॥ ३०॥
रेणादेवी री कुगुर नें ओपमां, ते सांभलजों चित्त ल्यायो रे।
कूड कपट करे पापीया, सुध साधां सूं दे भिडकायो रे॥ ३१॥
रेणादेवी दिखण रा बाग में, अणहूंतोइ सर्प बतायो रे।
तिण आपणा किरतब ढांकवा, उण बोलीयो मूसावायो रे॥ ३२॥
तिण जिणरिष ने जिणपाल रे, उण घालदी संका मोटी रे।
पिण बुधवंत जाए जोयों तिहां, जब जांणी छें तिणनें खोटी रे॥ ३३॥
ज्यूं कुगुर रेणादेवी सारिषा, संका साधां रो घालें रे।
ते आपणा किरतब ढांकवा, सुध साधां कनें जातां पालें रे॥ ३४॥
पिण बुधवंत पूछ निरणो कीयो, जब जांण लीया त्यांनें खोटा रे।
ग्यांन किरीया में पोला घणा, जांणें पांणी तणा परपोटा रे॥ ३५॥
तिण रेणादेवी सांहमों जोयनें, जिनरिष हूवो खुवारो रे।
तिम कुगुरां परतीत सूं, दुरगत जासी नरभव हारो रे॥ ३६॥
रेणादेवी रो कपट जिहांइ रह्यो, पिण कुगुरां रा कपट छें भारी रे।
आप डूबें ओरां नें डबोवता, केई हुय जाए अनंत संसारी रे॥ ३७॥
सांग पहरे साधां तणों, खाधा लोकां रा मालो रे।
तप जप संजम बाहिरा, अें कूंदा बण रह्या लालो रे॥ ३८॥

इम सुण सुणनें नर नारीयां, छोड दो कुगुर सताबो रे।
सुध साधां तणी सेवा करो, राखो चावो इजत आबो रे॥ ३६ ॥
संवत अठारें तेतीसे समें, जेठ सुदि पुनम शुक्रवारो रे।
कही छे कुगुरा री नवकडी, रीया गांव मझारो रे॥ ४० ॥

ढाल : २०

दुहा

दुषम आरें पांचमें, श्रावक श्रावका नांम धराय।
गुण विण ठाला ठीकरा, पडसी नरक में जाय ॥ १ ॥
ते हीण आचारी कुगुरां तणी, सेवा करें दिन रात।
त्यां भूठा नें साचा करवा भणी, कूडी करें पखपात ॥ २ ॥
त्यां आंधा नें मूल सूझें नहीं, न्याय मारग री बात।
पाषंड मत में रच रह्या, घट मांहें घोर मिथ्यात ॥ ३ ॥
दीठी ने अणदीठी कहें, भूठ बोलता नांणें सांक।
आल देवण नें नही आलसू, त्यांरी बोली में बांक ॥ ४ ॥
एहवा श्रावक जासी नरक में, त्यांरा चाला चिरत अनेक।
वले थोडासा परगट करूं, ते सुणजो आंण ववेक ॥ ५ ॥

ढाल

[रे जीव मोह अनुकम्पा न आणिये]

नव नव आंकारा कुगुर नवकडा, ते तो जासी नरक मभार रे।
त्यांरा श्रावक नें श्रावकां तणों, तुम्हें सांभलजों विस्तार रे।
एहवा श्रावक जांणों नवकडा* ॥ १ ॥
धुर सुं तो भूला मारग मुगत रों, गुर काजें हणे छें जीव रे।
वले धर्म जांणें हिंसा कीयां, त्यां दीधी नरक री नीव रे॥ २ ॥
चवतो देखे थांनक जो गुर तणों, तिणरी आय करें संभाल रे।
नीलों उखण उपर न्हांखें मुरड नें, करें अनंत जीवां रों खेंगाल रे॥ ३ ॥
पीली पांणी तणा जीव मारनें, दडें लीये थांनक नें आय रे।
ते पिण गुर रें काजे निसंक सूं, अें तो हण रह्या जीव छकाय रे॥ ४ ॥
केइ करावें थांनक मूल थी, धुर सूं नवी जायगां उठाय रे।
पछें जीव विणासे विध विधें, ते तो कह्यों कठा लग जाय रे॥ ५ ॥
गाडां गाडां पृथवी मंगावता, वांणा वांणा पांणी मंगाय रे।
कचरा कूटों करे छ काय रो, मन गमतों थांनक बणाय रे॥ ६ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

केई करें मजूरीया हाथ सूं, उंडी उंडी दरावे नीव रे।
घर रो गरथ देई पापीया, छ काय रा मरावें जीव रे॥ ७ ॥
छ काय हणेने थानक करें, तिणमें धर्म जांणे निसंक रे।
तिणसूं ठांम ठांम जायगा बंधें, एहवा लागा कुगुरां रा डंक रे॥ ८ ॥
त्यांने पूछ्यां बोले केई पाधरा, केई भूठ बोले ततकाल रे।
भायां निमते थांनक करायो कहे, अन्हाखी थका भाषे अलाल रे॥ ९ ॥
प्रतख करायो गुर रे कारणें, लाजां मरतां खांचेले आपरे।
धर्म रे ठिकांणे भूठ बोलनें, भारी हुवें चीकण बांधे पाप रे॥ १० ॥
धर्म ठिकाणें भूठ बोलीयां, बंधे महामोहणी कर्म रे।
सित्तर कोडाकोड सागर लगे, नही पांमें जिणवर धर्म रे॥ ११ ॥
ज्यूं किणरी मा बेंनादिक डाकण हुवें, त्यांरी बात सुण्यां पांमे खीज रे।
त्यांने साची करण खपे घणूं, भूठो थको पिण थापे धीज रे॥ १२ ॥
वले अनेक उपाय करे घणा, घर जाणो पिण कर दें कबूल रे।
पिण मुख सूं डाकण कहणी दोहिली, गाढोइ भूंडो हुवे कबूल रे॥ १३ ॥
ज्यूं भारीकरमा केई जीवडा, बोले कुगुरां रे बदले भूठ रे।
त्यानें साचा करण खपें घणु, कूडा गुण करे मुख परपूठ रे॥ १४ ॥
अनंत संसार सूं डरे नही, नरक जांणो पिण करे कबूल रे।
पिण मुख सूं खोटा कहणा दोहिला, रह्या पाषड मत में भूल रे॥ १५ ॥
डाकण रें बदले धीज कीया थकां, कदा राजा कोप्यां घर जाय रे।
पिण कुगुरां काजे भूठ बोलीयां, पडें नरक निगोद मे जाय रे॥ १६ ॥
आप आदरया त्यां कुगुरां तणा, देवे दोषण सगला ढांक रे।
सुध सांधां ने आल देता थका, पापी मूल न आंणे सांक रे॥ १७ ॥
सुध साधां री निंदा करे, वले निजर पड्या जागें धेष रे।
त्यांसूं वरते वेरी ने सोक ज्यूं, जोवे छल छिद्र वसेष रे॥ १८ ॥
आप कुगुरां ने सेठा भालीया, त्यामें दोषां रो छेह न पार रे।
तिण सुं साधां तणा दोष जोवता, खप कर रह्या मूंढ गिवार रे॥ १९ ॥
पिण साधा माहे दोष देखे नही, जब कूडोइ देवे आल रे।
पछें भूठं बोली बकता फिरे, त्यांरे कुण काढे निकाल रे॥ २० ॥
कडवो तूंबो वेंहरायो साध ने, नागश्री ब्राह्मणी एक वार रे।
तिणसूं संसार में रुली घणी, सातूं नरकां में खाधी मार रे॥ २१ ॥
तिण तो न्हांखण रा आलस भणी, तूंबो वहरायो साध नें देख रे।
तिणराइ फल लागा पाडुआ, पांमी दुख माहे दुख वसेष रे॥ २२ ॥

तो साधां री केइ निंदा करें, वले राखें अभिंतर धेष रे।
अछतो पिण आल देवें निसंक सूं, ते तो बूडा वले वसेष रे॥ २३॥
केई करला बोलें बूरी तरे, केई वांछें साधां री घात रे।
केयक परीसा देवें वचन रा, केई तपता रहें दिन रात रे॥ २४॥
सर्व पाषंडीयां सूं मिल गया, वले लोकां नें देवें लगाय रे।
त्यांरे केडें गमता बोलें घणा, साधां सूं वेंरी करवा ताय रे॥ २५॥
एहवा नागश्री सूंइ अति बूरा, त्यांरो कहतां न आवें अंत रे।
तेतो नरक गांमी छें नवकडा, त्यांनें ओलखल्यो मतवंत रे॥ २६॥
नागश्री ब्रांह्मणी दुख भोगवे, नीठ नीठ पाम्यों तिण अंत रे।
सदा वेंरी ज्यूं वरतें साध सूं, त्यांरो हुसी कुण विरतंत रे॥ २७॥
हिवें कहि कहि नें कतरो कहूं, कोइ बुधवंत करजो विचार रे।
जे जे साधां रें सिर आल दें, ते तो बूडा कालीधार रे॥ २८॥
जो साची नें साची कहें, तेतो निंदा म जांणों कोय रे।
साची ने साची कहणी निसंक सूं, ते पिण अवसर जोय रे॥ २९॥
अेंतो जीव अजीव जांणें नहीं, आश्रव संवर की खबर न कांय रे।
आश्रव सेवें संवर धर्म जांणनें, अें तो चोडें भूला जाय रे॥ ३०॥
उपभोग परिभोग श्रावक तणा, तेतो इविरत आश्रव मांहि रे।
सेव्यां सेवायां भलो जांणीयां, यांमें धर्म जांणे छें ताहि रे॥ ३१॥
देवगुर धर्म ओलखीयां विना, रह्या ठाला बादल ज्यूं गूंज रे।
वले धोरी होय बेंठा धर्म ना, पिण पूरा छें मूंढ अबूज रे॥ ३२॥
केई चरचा में अटकें घणा, पिण सूधा न बोलें मूंढ रे।
अण विचार्यां उंधा बोलें घणा, पिण छोडें नहीं खोटी रूढ रे॥ ३३॥
वले गुर रों आचार जांणें नहीं, सरधां री पिण खबर न काय रे।
भेषधारी भागल तूटल भणी, तिखोतो कर वांदें पाय रे॥ ३४॥
घी खांड लूंग मिश्री आदि दे, मोल ले ले वेंहरावे जांण रे।
वले नीपनों जांणें वरत बारमो, इसडा छें मूंढ अयांण रे॥ ३५॥
बारमो वरत भांगें आपरों, साधां नें वेंहरावे ले मोल रे।
तका पिण समझ पडें नहीं, त्यांरा वरतां मांहे मोटी पोल रे॥ ३६॥
थांनक मोल ले गुर रें कारणें, वले भाडें लेवे गुर काज रे।
बारमो वरत भांग भागल हुवा, नरक में जासी श्रावक बांज रे॥ ३७॥
कपडो मांगे साध साववी, जब हाजर नही घर मांय रे।
मोल ले ले वेहरावें साव नें, गांव परगांव सुं मंगाय रे॥ ३८॥

मोल ले ले कपडो वेहरायने, वले धर्म जाणें मन मांय रे।
इसड़ी सरधा रा श्रावक श्रावका, ते तो दुरगति पडसी जाय रे॥ ३९ ॥
जीमणवार आरा तणे घरे, मांड धोवण उंनों पांणी जांण रे।
ते साधां नें वेहरावा कारणे, आपरे घरे राखें आंण रे॥ ४० ॥
पछे तेड वहरावें साध ने, वले जांणे होसी मांने धर्म रे।
एहवा कुगुरां 'रा भरमावीया, भूला छे अग्यांनी भर्म रे॥ ४१ ॥
केई धोवण जांणे इधको करे, साधां नें वहरावण कांम रे।
उंनो पांणी करे ठांमडा भरे, ते पिण ले ले गुर रो नांम रे॥ ४२ ॥
घणा साध साधवी जांण ने, इधको नीपजावे आहार रे।
पछें भर भर वहरावें पातरा, ते तो परभव में होसी खुवार रे॥ ४३ ॥
असुध आहार पांणी वहरावीयां, बंधे पाप कर्म रा पूर रे।
साध पिण जांणे वेंहरे असुझतों, ते तो साधपणा थी दूर रे॥ ४४ ॥
केइ आहार वहरावें असुझतो, केइ कपडो वहरावें असुध रे।
देवें थानकादिक असूझता, भिष्ट हुइ सगलां री बुध रे॥ ४५ ॥
सामायक संवर पोसा मझे, करे सावद्य जोग रा त्याग रे।
तिणमें भागलां नें वंदणा करे, सामाइ पोसो पिण गया भाग रे॥ ४६ ॥
एक समाइ भागे तेहनें, डंड देवे समाइ इग्यार रे।
तो नितका सामाइ भांगें तके, ते तो गया जमारो हार रे॥ ४७ ॥
सूंस न ले त्यांने पापी कह्यां, लेनें भांगे ते महा पापी होय रे।
वलें जांने हूं श्रावक मोटको, त्याने नरक तणी गति जोय रे॥ ४८ ॥
मांने भागल तूटल एकल भणी, वीणती कर राखे चोमास रे।
ते पिण साधां सुं धेषरा घालीया, वखाण सुणे तिण पास रे॥ ४९ ॥
जो उ साधां रा आंगुण बोलें घणा, तिणने हरष सूं देवे दांन रे।
वले करें प्रसंसा तेहनी, घणो देवे आदर सनमांन रे॥ ५० ॥
उणनें मन में तो साध जांणे नही, तोही वधारे उणरो आध रे।
ते पिण साधां सुं धेष चलायवा, त्यांरों निश्चेइ जांणो अभाग रे॥ ५१ ॥
आप आदर्‍या कुगुर तेहनां, गुण बोलावण रें कांम रे।
उपिण लोभ रो घालीयो थको, झूठा झूठा करे गुण ग्रांम रे॥ ५२ ॥
एहवा चाला चिरत करें तेहने, जो पाप उदे हुवे इण भव आंण रे।
दुख असाता अठेइज हुवें घणी, परभव मे तो संका मत आंण रे॥ ५३ ॥
भागल रा वखांण वांणी सुण्यां, केई पडवजे वेगो मिथ्यात रे।
वले तहत वचन करे तेहनों, तिणनें हूंकारें मूंगी बात रे॥ ५४ ॥

ज्यांरें कुगुरां सूं राग अति घणों, वले सावां सूं अंतर धेष रे।
दोनूं कांनी देवालो तेहनें, ते तो बूडा में बूडा वसेष रे॥ ५५॥
करलो डंक लागों कुगुरां तणों, तिणसूं करें त्यांरो पखपात रे।
त्यांसूं लीघी टेक छूटें नहीं, त्यांरा घट में छें मोटो मिथ्यात रे॥ ५६॥
संवत अठारें नें तेतीसे समें, असाढ विद नवमी रविवार रे।
श्रावक नरकगांमी नवकडी, कीधी रीयां गांव मझार रे॥ ५७॥

ढाल : २१

दुहा

भारीकरमा जीव संसार में, ते भूला अग्यांनी भर्म।
त्यांनें गुर पिण मूढ मूरख मिल्या, ते किण विध पांमे जिण धर्म ॥ १ ॥
सुध साधां री निंदा करें, वले देवे अणहूंतो आल।
त्यांरा बोल्यां री समझ त्यांनें नहीं, तिणरो कुण काढें नीकाल ॥ २ ॥
त्यांने ठीक नहीं धर्म अधर्म री, गुर कुगुर री खबर न काय।
वले साधू तणा आचार री, समझ नही मन मांय ॥ ३ ॥
डाकण नें चढवा जरख मिले, जब डाकण हरखत थाय।
ज्यूं भारीकरमा ने कुगुर मिले, जांणें पाछ रही नही काय ॥ ४ ॥
त्यांने कुगुर कुब्द सीखाय ने, कलेस करावे दिनरात।
ते कुगुर सहित जाओ कुगत में, तिहां मार अनंती खात ॥ ५ ॥

ढाल

[समरू मन हरषे तेह सती]

अनादरो जीव गोता खावे, समकत पथ हाथे नही आवे।
मिथ्यात मत माहे कलीया, करम जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १ ॥
उसभ उदें सूं संवलों नही सूझे, वले भाव सहीत कुगुरां नें पूजें।
ते मुगत मारग सूं परा टलीया, कर्म जोगें गुर माठा मिलीया ॥ २ ॥
जे कुगुर तणें पडीया पाने, ते सुगुर तणा वेण नही मानें।
मिथ्यात मत में काढा मिलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ३ ॥
भारी दोष लगावता नही साके, वले पांचमां आरा रे सिर न्हांखें।
ज्यासूं वरत नहीं जाओ पलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ४ ॥
सूतर रो न्याय तो नही जांणे, कुगुरां री पख काठी ताणें।
उंधा उंधा बोले क्रोध सूं वलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ५ ॥
भांत भांत साध त्यांनें समझावे, पापी जीव रे मन नही भावे।
त्यांरे माठी गलिरा टांका झलीया, करम जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ६ ॥
ज्यांरे उसभ कर्म तणा जोरा, ते केवली थकां रहि गया कोरा।
त्यांरा पिण बाल्या नही वलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ७ ॥

मेंला जीव मारग नहीं आवें, त्यांनें उपदेस दीयों अहलों जावें।
ते मोहकर्म सूं माठा खलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ ८॥
भारीकरमा जीव मूंढ मिथ्याती, साधू नें दीठां बल उठें छाती।
वले ओगुण बोलणनें उललीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ ९॥
साध काजे बांधे ताटा ताटी, त्यां विकलां नें गति होसी माठी।
वले भीत चूणे भेलाकर ढलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ १०॥
साध काजे परदा आण बांधे, जिण धर्म नहीं जाण्यो आंधे।
बले छावण लीपण नें हल फलिया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ ११॥
श्रावक नें जीमावे धर्म जांण, छ काय रो कर कर घमसाण।
ते जिन मारग सूं जाबक टलिया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ १२॥
कुगुरां रो तो दोष जाबक ढांके, साधां ने आल देता नहीं सांके।
त्यांरा लोकीक में पिण गुण गलिया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ १३॥
त्यांरे कुगुरां रा डंक भारी लागा, कजिया राड करवानें आगा।
वचन बोले अलिया अलिया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ १४॥
न्याय तणी चरचा करतां, त्यां विकलां नें वार नहीं लडतां।
उधा बोलें क्रोध मांहे बलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ १५॥
जिण आगम न्याय देवें ठेली, अनमतीयां नें उठाय करें बेली।
पाषंडीयां में जाय मिलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ १६॥
गुणवंत साधां रा कोई गुण गावें, ते दुष्ट जीवां रें मन नहीं भावें।
ते रात दिवस रहे परजलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ १७॥
जीवादिक नवतत रो नही निरणों, वले क्रोध तणों लीधो सरणों।
त्यानें मोहकर्म अजगर गलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ १८॥
न मिट्यों च्यारूं गति में आवण जांणों, चोरासी में लागो बेजा तांणो।
जिम आंमा साहमां फिर रह्या नलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ १९॥
देवगुर धर्म तणे काजें, जीवां नें हणता नही लाजें।
त्यांनें कुमत करे कुगुरां छलीयां, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ २०॥
आचार री बात लागें काठी, त्यांरी सुध बुध अकल जाबक नाठी।
आंधे पुरुष घरटी में मोती दलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ २१॥
गुण विण साध रो सांग धरें, त्यां विकलां रा पगां में जाय पडें।
ते बीज विहुणा हांकें हलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ २२॥
आधाकर्मी थानक सेवण लागा, ते चारित विहुणा छें नागा।
त्यांनें वांदें पूजें मांनें मन रलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ २३॥

सामायक पोसा मांहे भागलां नें वादे, ते करमां रा पूंज भारी वांधें।
त्यांरा समकत सहीत वरत गलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २४ ॥
भागलां ने वांदे जोडी हाथ, ते पाप करम बांधे सात।
उलटा कर्म रिणें मिलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २५ ॥
हरीया जव देखीने मिरग डरे, वावर माडी मे जाय पडें।
मिरग ज्यूं सेघे मारग जाए हीलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २६ ॥
आप गुर रा किरतब देखे, तो उचे सुर बोले किण लेखे।
न्याय विना बोले सिकल विकलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २७ ॥
ज्यारे कुगुरां रो डंक लागो भारी, त्यांने आचार री वात लागे खारी।
ते अणाचास्या सूं हिलिया मिलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २८ ॥
पाच महावरतां री चरचा छेरे, तो तुरत मूंहढा नो रग फेरे।
अतरंग मे आघण ज्यूं उकलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २९ ॥
जो वरता री चरचा करे त्या आगे, तो क्रोध करे लडवा लागे।
जांणे भाड मा सूं चिणा उछलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ३० ॥
जो साध रो आचार कहे तिण आगे, तो रूंम रूम में लाय लागे।
मूंह विगाड बोले क्रोध वलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ३१ ॥
ज्यांरे कुगुरा रो डंक लागो जांणो, त्यारी बोली में नही ठोर ठिकांणो।
कहि कहिने तुरत जाएं बदलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ३२ ॥
जोड कीधी छे कोठरीये गांम, सवत अठारे तयाले वरस तांम।
काती सुद आठम नें सोमवार, उत्तम गुर सेवों नर नार ॥ ३३ ॥

●

ढाल : २२

दुहा

इण दुषम आरें पांचमें, विगस्यो साधरो भेष।
संका हुवे तो पूछ निरणों करो, वले अरूवरू लो देख॥ १ ॥
साध मारग छें सांकडो, करडो छें त्यांरो आचार।
ते जिण तिण सेती किम पलें, जावजीव रहणो एकधार॥ २ ॥
केई सांग पेंहरे साध हुआ, त्यांरा घट में नहीं ववेक।
त्यां साधपणो नहीं ओलख्यों, तिणसूं सेवें छें दोष अनेक॥ ३ ॥
दोष सेव्यां भागें साधपणो, त्यांनें ते पिण खबर न काय।
त्यांनें श्रावक पिण तेसाहीज मिल्या, त्यांनें समझ नहीं मन मांय॥ ४ ॥
जो आचार बतावें त्यांनें साध रो, तो तुरत जांगें त्यांनें धेख।
जांणें निदा करें छे मारा गुर तणी, घटमें नही सुध ववेक॥ ५ ॥
आचार बतांयां साध रो, तिणनें निदा सरधे ते मूंढ।
ते ववेक विकल सुध बुध बिना, त्यां झाली मिथ्यात री रूढ॥ ६ ॥
साचीनें झूठी कहें, ते तो निंदा होय।
साची वात कहें समझायवा, ते निदा म जांणो कोय॥ ७ ॥
जे भारीकर्मां जीवडा, त्यांनें न गमें आचार री बात।
ते भूला छें भर्म अनादरा, त्यांरा घट मांहे घोर मिथ्यात॥ ८ ॥
पिण भव जीवां नें समझायवा, थोडी सी कहूं अल्प मात।
ते सुण सुणने नर नारीयां, छोंडों कुगुरां तणीं पखपात॥ ९ ॥

ढाल

[भवियण जिण आग्या०]

कोइ साधपणा रो नाम धरावें, पूरों पलें नहीं आचारो।
त्यांरा श्रावक दोष सेवावण सेंमल, यां दोयां रे घट में अंधारो रे॥ भ० ॥
जोवों हिरद विचारी, छोड दो कुगुरां री लारी रे। भ०।
कुगुर छें हीण आचारी*॥ १ ॥
आंधा नें आंधो आय मिलीयो जब, कुण बतावें वाटो।
ज्यूं कुगुरा नें विकल मिलीया श्रावक, यां दोयां रे अकल आडो पाटो रे॥ २ ॥

---

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

त्यांरा श्रावक जीव हणे त्यांरे काजें, त्यां श्रावकां नें तो वरजें नांही।
ते तो दोनूंई हरखें छे हिंसा कीयां थी, त्यांरें दया नही घट मांही रे॥ ३॥
कोइ साधां रे काजे नीलो उखेल ने, वरसता मेह मे मूरड न्हाखे।
अनता जीवा रो घमसांण करतां, पापी जीव मूल न सांके रे॥ ४॥
मोटी तिथ आठम नें चउदस, तिण दिन पिण न करे टालो।
आंप डूबें भिष्ट करें गुरां ने, आत्मा ने लगावे कालो रे॥ ५॥
साधां रे काजे जायगां खोदने, करे विषम जागाने सूधी।
नीलणफूलण नीला अंकूडा मारें, त्यांरी अकल घणी छे उंधी रे॥ ६॥
वले कसी सूं खोदे समी जागा करतां, कीडी मांकादिक देवे दाटी।
वले तिण मांहे धर्म जांणें छें भोला, त्यारे आइ अभितर पाटी रे॥ ७॥
वले साधां रे काजे कैंलू फेरावे, जमीयां उखेले जालो।
वले नीलणफूलण रा जीवां नें मारे, तस जीवां रो पिण करे खेगालो रे॥ ८॥
घणो खात कचरादिक पडीयो जागा में, बुहार भेलो करे साध रे भावे।
पंछे ओडीयें ओडीयें बारें नखावें, तिहां पिण जीव मास्या जावे रे॥ ९॥
साध काजें दडे लीपे छपरा छावे, चद्रवा ने ताटादिक बाधे।
वले विवध पणे घात करे जीवा री, तिण धर्म न ओलख्यो आधे रे॥ १०॥
एहवा किरतव करें छे साधा रे कारण, त्यांने साध निषेधे जो नांही।
वले आप मुतलव जांण राजी हुवें, त्याने गिणजो मती साधा माही रे॥ ११॥
एहवा किरतब करावे आमनां करने, आपरे सुखसाता रे काजें।
वले पेहरण सांग साध रो छें त्यांरे, पिण निरलजा मूल न लाजें रे॥ १२॥
जीवां री घात करने जागा करे चोखी, तठे रहवा ने होय जाअें त्यारी।
ते तो प्रतख्य असाध उघाडा दीसे, त्याने वीर कह्या भेषधारी रे॥ १३॥
केई साधां रे कारण नीव दराए, नवी करावे जागा।
तिण जागामे साध रहे ते· विरत विहूणा नागा रे॥ १४॥
केई साध रे काजे मोल ले जागा, केई साधा रे काजें ले भाडें।
तिण मांहे रहे ते अणाचारी, निश्चे सुध साध तणी पात बारे रे॥ १५॥
साध काजें दडे लीपे गार घालेने, ते पिण कर्म बांधेने बूडा।
साध पिण तिण ठांमें रहे ते, चिहुं गति में दीससी भूंडा रे॥ १६॥
एक थांनक तणा छें दोष अनेक, ते तो पूरा केम कहवाय।
असुध थांनक भोगवे भेषधारी, ते भोला ने खबर न काय रे॥ १७॥
नाटकीयें सांग साधां रो आंण्यों, ते पिण सांग तणी वरग वूहो।
भेषधास्यां तो साधरो सांग लजायो, स्वांन ज्यूं पकड रह्या ढूओ रे॥ १८॥

अजूंणाकाल में पांचमें आरें, घणी हीण पडी छें बुध।
एहवा अणाचार्‍यां नें साध सरधें, त्यांमें काय न दीसें सुध रे॥ १६॥
एहवा भाव सुणेनें भारीकर्मा, पांमें नहीं चमतकारों।
कर्म जोगें त्यांनें कुगुर मिलीया, त्यांरो किण विध मिटें अंधारो रे॥ २०॥
त्यांरा थांनक में कोइ दोष बतावें, तो बोलें घणा आलपंपालो।
पाछो जाब न आवे जब क्रोध करेनें, देवें अणहूंतो आलो रे॥ २१॥
सुध साध तो सुध थांनक में रहें छें, त्यांमें दोष बतावें अन्हाखी।
झूठ बोले छें आप सरीषा करण नें, त्यांरा झूठा बोला छें साखी रे॥ २२॥
सुध साधां रे आल देता नही संकें, आपरा दोष ढांकें निसंक।
दोनूं प्रकारे बूड गया त्यांनें, आपरों नहीं सूझें वंकरे॥ २३॥
परभाते आहार वहर्‍यों तिण घर रों, आथण रों वेंहरें दाल नें रोटी।
कारण विना दोनूं टक वेंहर ल्यावें, आ पिण चलगत खोटी रे॥ २४॥
परभाते आहार ल्यावें तिण घर रों, बेपारां गुगरीयादिक आंणें।
आथण रों ल्यावें ऊनी दाल नें रोट्यां, संका पिण किणरी न आंणे रे॥ २५॥
त्यांरा श्रावक पिण छें ववेक रा विकल, त्यारें मूल पडें नहीं संक रे।
जेसाकूं तेंसों आय मिलीयां, हिवें कुण काढें त्यांरो वंक रे॥ २६॥
कारण बिना उनों आहार ल्यावे आथण रों, नही गरढो गिलाण विसेष।
हिलीयों उंनी दाल नें रोट्यां रें रसकें, त्यां छोडी लज्या ले भेष रे॥ २७॥
कोइ राखवीयादिक तेंवार आथण रों, जबतो पेंहलां करें झालामालो।
पछें रसग्रिधी फिरें आथण रा, ताजा घर संभाल संभालो रे॥ २८॥
छतो आहार मिलें परभात रो त्यांनें, तो पिण ग्रिधी थका वेंहरें नांहीं।
जांणें आंथण रो ल्यासूं तेंवार रो जीमण, तांणा वेजा लागा तिण मांही रे॥ २६॥
इम आरतध्यांन करतो दिन काढें, सांझ रा ल्यावें सेवां नें कसार।
वले घृत ने खांड रां करें चबोला, इण विध पूजें तेंवार रे॥ ३०॥
इण विध तेवार पूजे रसग्रिधी, ते पिण नांम धरावे साध।
ताजें आहार तूटा पडे पापी, त्यांरे किण विध होसी समाध रे॥ ३१॥
ताजों आहार तेंवार रो सरस जांणें तो, चांप चांप खाएं भरपूर।
एहवी विकलाइ करें छे तिणांरा, परी साधपणा में धूर रे॥ ३२॥
एहवा रसगिरधी जिभ्या रा लंपटी, त्यां पहर विगाड्यो भेख।
त्यांनें साध सरधें वादें पूजें अग्यानी, ते पिण बूडें छें विना ववेक रे॥ ३३॥
कोइ कारण पडीयां जाअें आंथण रा, जब दोष नही छें लिगार।
बिना कारण जाअें तेंवार जांणेनें, त्यांनें छें तीन धिकार रे॥ ३४॥

कोइ ग्रहस्थ घर सूं बोलावण आयों, म्हांरें घरे वेहरण पधारो।
तेडीया तिण घर जाअे तिणानें, किम कहीजे अणगारो रे॥ ३५॥
तेरण आयो ते छ काय मरदतो, तिणरा हाथ सूं पिण न करे टालो।
तेरीया गयामें दोष न जांणें, त्यांरे आयो अभितर जालो रे॥ ३६॥
कदा कर्मजोगे साध तेडीया जावें, तो प्रायछित ले हुवें सुधो।
पिण सदाइ तेडीया जाअें तिणांरी, भिष्ट हुइ छें बुधो रे॥ ३७॥
जों सहजेइ ग्रहस्थ आयो छे थांनक मे, ते कहे म्हांरा दिस पधारो।
तिण भावभेल न आंण्यों साधां रो, जब गयां नही दोष लिगारो रे॥ ३८॥
तेडीया जावेने आंण दीधो लेवें, ते नीयमाइ निश्चे भिष्टी।
एहवा भागल भिष्ट हुआ छे त्यांने, साध सरधें नही समदिष्टी रे॥ ३९॥
केइ भेषधारी ग्रहस्थ नें देवे, पूठा पांना ने परत वशेष।
लोट पातरा नें ओघो पूंजणी देवें, ते तो भिष्ट हुआ ले भेष रे॥ ४०॥
केइ भोला ग्रहस्थ तो इम जांणे, मोसूं दीसे छें सावां री मया।
पूंजणी काढ दीधी छे मोने, तिणसूं पालां छा म्हें दया रे॥ ४१॥
ग्रहस्थ ने साध पूंजणी दीधां, भोला तो जांणे दोष न लागो।
पिण नसीत सूतर मे श्रीजिण भाख्यों, तिणरो चोमासी चारित भागो रे॥ ४२॥
ग्रहस्थ नें साध पूंजणी देवें, ते निमाइ निश्चे भिष्टी।
पिण भोलां रे भावें तो तेहीज साध, तिणने .साध न सरधे समदिष्टी रे॥ ४३॥
केइ कहें पूंजणी सूं तो दया पले छें, तिणसूं पूंजणी देवें छे साध।
तिण लेखें तो मूहपती पिण देणी, इणसूं पिण दया पलसी वाध रे॥ ४४॥
वले धोवणादिक पिण देणो ग्रहस्थ ने, तिणसूं काचा पांणी तणो हुवे टालो।
आ पिण दया पले यारे लेखे, पूंजणी ़ रो न्याय सभालो रे॥ ४५॥
पूंजणी देणी तो रोटीयां पिण देणी, तिणसूं टलें चूला रो आरंभो।
पूजणी देवेने रोटीयां न देवे, यांरी सरधा रो वडो अचंभो रे॥ ४६॥
कोइ काचा पांणी सूं कपडादिक धोवें, वांटादिकमें घाले काचो पांणी।
तिणनें धोवणादिक देणों दया पलावण, पूंजणी देवा रो लेखो जांणी रे॥ ४७॥
पूंजणी सूं तो गिणवा जीव पूजे, ते पिण थोडा सा अल्प मात।
उंनो पांणी धोवण असणादिक दीधां, टलें अनंत जीवां री घात रे॥ ४८॥
ग्रहस्थ ने एक पूंजणी देणी, तिण लेखें तो देणी वस्त अनेक।
थोडीसी वस्त साध देवें ग्रहस्थ नें, आखो वरत रहे नहीं एक रे॥ ४९॥
ग्रहस्थ नें साध हाथ पकडनें, राग करने हेठो वेंसांणें।
एहवा भागल भेषधारी छे त्यांने, डाहा हुवे ते साध न जांणे रे॥ ५०॥

संवत अठारे एकावनें वरसे, सावण सुद तीजनें बुधवार।
भेषधारयां नें ओलखावण काजे, जोड कीधी सरियारी मझार रे ॥ ५१ ॥

ढाल : २३

दुहा

सुध साधां ने दांन असुध दे, जांगनें असुध ले साध।
ते दोनूं बूडे छे बापडा, श्री जिण वचन विराध॥ १ ॥
असुध देवाल नें लेवाल रे, कडवा फल लागे आंण।
ते जथातथ परगट करूं, ते सुणजो चुतर सुजांण॥ २ ॥

ढाल

[राग उलाली]

तीनां बोलां करे जीवरे जी, अलप आउखो बंधाय।
हिंसा करे प्रांणी जीव री, वले बोले मूसावाय जी।
साधां ने असुध वेंहराय जी, हिंसाकर चोखी जागा बणाय जी।
साधां ने उतारें मांय जी, त्यांरे उसभ कर्म बंधे आय जी।
तीजे ठांणें कह्यों जिणराय जी, वले सुतर भगोती रे मांय जी।
श्री वीर कहे सुण गोयमा॥ १ ॥

दडें लीपे साधां रे कारणें, वले छपरा छावें आय।
केलूं पिण फेरतां थकां, जमीया जाल उखेले ताय जी।
नीलण फूलण मारी जाय जी, अनता जीव छें तिण मांय जी।
वले ओर हणें छकाय जी, त्यांरी दया न आंणे काय जी।
त्यारें पिण अल्प आउ बंधाय जी, श्री वीर कहे सूण गोयमा॥ २ ॥

वले नीव दराए थेट सूं, वले टांची वजावें ताय।
भेलाकर भाठा चुणें, तिण बोहत मारी छकाय जी।
अनंता जीव हणीया ताय जी, ते पूरा केम कहिवाय जी।
साधां ने रहिवा री मन ल्याय जी, तिण मोटो कीयो अन्याय जी।
तिणरे पिण अलप आउ बंधाय जी, श्री वीर कहे सुण गोयमा॥ ३ ॥

जिण गरथ दीयो थांनक करायवा, तिण पिण मराइ छकाय।
किणही मोल भाडे भोग लावें लीयो, किणही थाप राख्यों छे ताय जी।
इत्यादिक दोषीला कराय जी, खणे खोदे समों कीयो जाय जी।
विध विध सूं मारे छकाय जी, साधां नें उतारें मांय जी।
वले मन मे हरखत थाय जी, त्यांरे पिण अलप आउ बंधाय जी॥ ४ ॥

आहार सेज्या वसतर नें पातरो, इत्यादिक दरब अनेक।
असुध वेंहरावें साध नें, ते डूबें छें विना ववेक जी।
त्यां भाली कुगुरां री टेक जी, त्यांरे कर्म तणी काली रेख जी।
त्यांनें सीख न लागे एकजी, गुर नें पिण कीया भिष्ट वशेष जी।
संका हुवें तो सूतर लो देख जी, श्री वीर कहें सुण गोयमा ॥ ५ ॥

पाप उदें हुवे तेहनें जब, पडें निगोद में जाय।
उतकष्टो अनंता भव करें, तिहां मार अनंती खाय जी।
रहें घणी संकडाई मांय जी, जक नहीं निगोद में ताय जी।
वले मरण वेगो वेगो थाय जी, उपजें नें विलें होय जायजी।
तिणरो लेखो सुणो चितल्याय जी, श्री वीर कहें सुण गोयमा ॥ ६ ॥

सतरें भव जाभेरा करें, एक सास उसास मभार।
एकण मोहरत नें मभे, भव करें साढा पेंसठ हजार जी।
वले छतीस इधिक विचार जी, एहवी जनम मरण री धार जी।
मरण पांमें अनंती वार जी, अनंता काल चक्र मभार जी।
तिणरो वेगो न पांमें पार जी, ए फल पांमें निगोद मभार जी।
असुध दांन तणो दातार जी, श्री वीर कहें सुण गोयमा ॥ ७ ॥

कदा पेंहला पडे वंध नरकनो, तो पडे नरक में जाय।
तिहां क्षेत्र वेदन छे अति घणी, परमाधांमी मारें बतलाय जी।
तिहां मार अनंती खाय जी, उठें कुण छुडावें आय जी।
भूष त्रिषा अनंती ताय जी, दुष में दुख उपजें आय जी।
असुध दीवां रा ए फल जाणजी, श्री वीर कहें सुण गोयमा ॥ ८ ॥

दुख भोगवतां नरक में जी, सेष बाकी रहें पाप।
ते उपजें तिरयंच में, तठें पिण घणो सोग संताप जी।
ते छूटें नहीं कीयां विलाप जी, वले न्हाखें निगोद में पाप जी।
आडा नावें गुर मा बाप जी, दुख भोगवें आपो आप जी।
असुध दांन दीयो धर्म थाप जी, ते कुगुर तणो प्रताप जी ॥ ९ ॥

आधकर्मी साध जो भोगवें, ते बांधें चीकणा कर्म।
ते भिष्ट थया आचार थी, तिण छोड दीयो जिण धर्म जी।
नीकल गयो त्यांरो भर्म जी, त्यां छोडी लाज नें सर्म जी।
त्यां विगोय दीयो निज ब्रह्म जी, दुख पांमें उतकष्टा परम जी ॥ १० ॥

असुध जांणनें भोगवें, त्यां भांगी जिणवर पाल।
ते भमण करसी संसार में, उतकष्टो अनंतो काल जी।
नरक में जासी टांको भालजी, तिणनें मार देसी नरकपाल जी।
कीवा कर्म संभाल संभाल जी, रोसी किरतब सांहमो नाल जी।
भगोती पहलें सतक नीकाल जी, लीजों नवमें उदेशो संभाल जी ॥ ११ ॥

सावां रे काजे हणे छकाय ने, ते वार अनंती हणाय।
जो साध जाणेनें भोगवे, ते पिण अनंत मरण करे तायजी।
अे तो दोनूंई दुखीया थायजी, अनंता भव मास्या जाय जी।
एकवार मारी थी छकाय जी, त्या तो दुख भोगवे लीया ताय जी।
पिण यांरो पार वेगो नहीं आयजी, श्री वीर कहे सुण गोयमा ॥ १२ ॥

छकाय रे उसभ उदे हूवा, त्यां तो पांमी एक वार घात।
पिण साध पड्यो नरक निगोद में, सेवगां ने पिण लीधा साथ जी।
त्या मानी कुगुरां री बात जी, कीधी तस थावर री घात जी।
अनतो काल दुख मे जात जी, वले मरण वेगो वेगो थात जी ॥ १३ ॥

ज्यां गुर ने डबोया सेवगा, त्यां सेवगा ने डबोया साध।
ते दोनूं पस्या नरक निगोद मे, ते श्री जिण धर्म विराध जी।
बूडा संसार समुद्र अगाध जी, ते किण विध पांमे समाध जी।
जिण धर्म री रेस न लाधजी, भव भव में पामे असमाध जी।
ओ पिण कुगुर तणो परसाद जी, श्री वीर कहे सुण गोयमा ॥ १४ ॥

असुध दान दीयो जिण साध ने, तिण साध ने लूट्या ताय।
तिणरे पाप उदे हुवे इण भवे, तो दलदर धसे घर मांय जी।
रिध सपत जायें विललाय जी, वले दुख माहे दिन जाय जी।
कदा पुन भारी हुवे तायजी, तो इण भवमें दुख न थाय जी।
परभव मे संका नही काय जी, श्री वीर कहे सुण गोयमा ॥ १५ ॥

इम साभल ने नर नारीयां, कोइ करजो मन मे विचार।
सुध साधा ने जाणने, असुध मत देजो किणवार जी।
असुध मे नही धर्म लिगार जी, सुध देने लाहो लो लार जी।
उतर जावो भवपार जी, ओ मिनख पणारो सार जी ॥ १६ ॥

●

ढाल : २४

दुहा

दया सत दत सील सुध, निग्रग्रही अणगार।
पांच महावरत आदरी, पालें निर अतिचार॥ १॥

यांसूं नवा करम नहीं नीपजें, अर जूना तप करि खपाय।
जब चेतन निरमल हुवें, मोक्ष विराजें जाय॥ २॥

हिंसा भूठ अदत अब्रें, कुसील परिग्रह धार।
इणसूं कर्म उपारजें, जीव भमत संसार॥ ३॥

हिसा त्याग्यां सब तिगें, तीन करण तीन जोग।
ए जिण भाखित माहावरत, पाले सुध उपयोग॥ ४॥

अणुक्रमें वरत आदरवा भणी, सिष पूछें जुगत लगाय।
सुणि सतगुर इसडी कहें, सांभलजों चित्तल्याय॥ ५॥

ढाल

[जगत गुरु तिसलानन्दन वीर]

कोइ कहें पहिलों माहावरत पालसूं जी, हणसूं नही छकाय।
पिण माहरी जिभ्या वस नहीं, हूं बोलसूं मूंसावाया।
चुतर नर समझों ग्यान विचार* ॥ १॥

ओ महावरत भाख्यो भगवांन रो, ते नही हुवें इण रीत।
तू हिंसा में धर्म परूप दें, थारी कुण मांनें परतीत॥ च० २॥

कहें देवगुर धर्म कारणें, आरंभ कीयां रूडो थाय।
देवलादिक करावीया जी, जीव भली गति जाय॥ ३॥

धर्म हेतें जीव हिंसा कीयां में, थोडोसो पाप बंधाय।
तूं एहवी करें परूपणा, हिसा मांहे सेंमल होय जाय॥ ४॥

इम हिसा में धर्म सथापवा जी, करावें जीवां री घात।
माहावरत तो जिहांइ रह्या, जाय समकत होय मिथ्यात॥ ५॥

तो हूं हिंसा भूठ बेहूं त्याग सूं, पिण चोर लेसूं पर माल।
माहरी धन उपर ममता घणी, मोसूं नही मिटे ओ साल॥ ६॥

जो तूं जीव हणसी नही जी, वले नहीं बोलसी कूड।
पिण पेलारें दाह दीधां थकां, पेहिला माहावरत में पडसी धूर॥ ७॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

धन चोर्‌यां धणी दुख पामसी जी, हिंस्या लागी इम जोय।
जो तूं कहसी हिंसा लागी नही तो, दूजोइ वरत न होय॥ ८ ॥
तो तीजोइ माहावरत आदरूं जी, चोरूं नही परधन।
पिण सील मोसूं पले नही, म्हारो विषें सूं लग रह्यो मन॥ ९ ॥
चोथो आश्रव सेवतां जी, तीन वरत जाय भाग।
सब गुण बाले पलक में जी, जिम पीनी रूइ आग॥ १० ॥
जीव पंचिद्री नी हिंसा हुवें जी, हणवो नही ते झूठ।
वले आग्या नही वीतराग नी, जब तीन वरत जाये उठ॥ ११ ॥
तो हूं चोथोइ माहावरत आदरूं जी, पाचमो कीधो न जाय।
नवविध परिग्रह राख सूं, मोसूं ममता नही मूकाय॥ १२ ॥
खेतू वथू आदि परिगहो जी, ओ च्यारूइ आश्रव नो छे मूल।
एक परिग्रहो राखीयां, च्यारू माहावरत मिलसी धूल॥ १३ ॥
सस्त्र छे छहूं काय नो जी, कूड कपट नो ठांम।
आग्या नही जिणराज नी, वले नही रहे सील परिणांम॥ १४ ॥
पांचूइ आश्रव त्यागसूं जी, एक करण तीन जोग।
आग्या देसूं अणुमोद सूं, मोसूं सरागी बहू लोग॥ १५ ॥
एक करण तीन जोग थी जी, माहावरत नीपजें नही कोय।
त्रिविधे त्रिविधे सावद्य तागीयां जी, माहावरत इण विध होय॥ १६ ॥
एक घर त्याग्यो आपरो, जिणमे कितरो एक धन धांन।
हिवे हुकम चलासी लोकमें, इण लेखे जांणे राजांन॥ १७ ॥
घरमे गिणत होती नही जी, पूरो न मिलतो नाज।
भेष लेइ भगवांन रो, केइ करवा लागा राज॥ १८ ॥
दोय करण तीन जोग सू जी, पांचूइ आसरव त्याग।
अणुमोदना खाली राख सू, माहरे एतो इज छे वेराग॥ १९ ॥
अणुमोदना खाली रही जी, जब तूं वेहरे असुध आहार।
संभोग करें गृहस्थी थकी, तिणसूं पाचूं वरतां मे पड़े वगार॥ २० ॥
पाचूइ आश्रव ने विषे जी, हरप होवे मनमांन।
तीनूंइ जोगां थकी, थारो न मिटयो खोटो ध्यान॥ २१ ॥
तीन करण तीन जोग सूं जी, सर्व सावद्य परिहार।
धर्म सुकल ध्यान ध्यावता, नीपजे पाचूइ माहावरत सार॥ २२ ॥

ढाल : २५

दुहा

इण दुषम आरें पांचमें, गुण विण वधीयो भेष।
ते समकत विरत विना फिरें, भूला भर्म वसेष॥ १॥
ते सारंभीनें सपरिग्रही, वले करें अकार्य अनेक।
ते पिण साध नाव धरावता, त्यां झाली मिथ्यात री टेक॥ २॥
त्यां जूवा जूवा गच्छ बांधीया, मांहोमां कर कजीया राड।
त्यांरी सरधा चलगत जू जूइ, वले जूओ जूओ छें आचार॥ ३॥
सुध साधां सूं चरचा करें, जब सगला एकें होय जाय।
कहें म्हे सगलाइ साध छां, एहवी बोलें अग्यांनी वाय॥ ४॥
सावद्य कामा करता नें करावता, संका आंणें नही मन मांय।
हिवें कुण कुण अकार्य कर रह्या, ते सुणजो चितल्याय॥ ५॥

ढाल

[भवियण जिन आज्ञा]

साधांरें काजे थांनक करावें, छ काय रो कर घमसांण।
तिण थांनक मांहे रहिवा लागा, त्यां भांगी छें श्रीजिण आंण रे।
भवीयण जोवों हिरदें विचारी, थें छोडो कुगुरां री लारी रे। भ०।
थें ज्यूं उतरो भवपारी*॥ १॥
सांप्रत एहवा थांनक सेवें, वले झूठ बोलें ठांम ठांम।
कहे थांनक म्हारे काज न कीधो, श्रावकां रें काजें कीयो तांम रे॥ २॥
त्यांरा श्रावकां नें कहे थे इम बोलो, थांनक नें कहों धर्मसालों।
ज्यूं थारी म्हांरी आछी लागे लोका में, म्हांनें तो दोषण मांसूं टालो रे॥ ३॥
त्यांनें श्रावक पिण तेहवाइज मिलीया, त्यांनें ज्यूं सीखावें ज्यूं बोलें।
कहें धर्मशाला म्हांरें काजें कराइ, झूठ बोले वाजतें ढोले रे॥ ४॥
श्रावक त्यांसूं रीझ रह्या छे, जांणे बोलें पढाया ज्यूं सूआ।
त्यांमें जांणपणा री जुगत न दीसें, तेतो निदक साधा रा हुआ रे॥ ५॥
व्यापार्यां नें ठगां वेसासे, उजाड नें धतूरो खवायों।
तेल वांमीहा छांमीया करता, मूआ उजाड रे माह्यो रे॥ ६॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ज्यूं भेषधार्‍यां लोकां नें वेसासे, भूठ वोलणों त्यांनें सीखायो।
इण थांनक ने कहो धर्मसाला, ते धर्मसाला कहिता मरसी ताह्यो रे॥ ७॥
सावां रे काजें थांनक कीधो चोडें, छ काय रो करें खेंगाल।
ते थांनक प्रतख छे पापसाला, तिणरों नाम दीयो धर्मसाल रे॥ ८॥
तिण थांनक में सावां रें काजें, मन गमती राखें वारी।
तिण हिंस्या थकी साध ने श्रावक री, भव भव मे होसी खुवारी रे॥ ९॥
त्यांरा श्रावक पिण केइ मूंढमती छे, जांण जांण गुर रा दोष ढांकें।
आधाकर्मी थांनक नें कहें धर्मसाला, भूठ वोलता मूल न सांकें रे॥ १०॥
एहवा भूठा बोलाने पूछा कीजे, थे धर्मसाला करावण काजें।
थे रुपीया कठी थी आंण कराइ, जव पाछो जाव देता लाजे रे॥ ११॥
थे कहो म्हारे काजे कीधी धर्मसाला, तो अजोग दांन लीयो किण काजें।
थे कुण कुण दांन ले साला कराइ, ते सुण सुणनें मत लाजो रे॥ १२॥
मिनष आंतरीयो घुरडकें जूतो, ते धन उदकें थांनक काज।
ते दांन लेइ धर्मसाला करावों, एहवो दांन लेता क्यूं नहीं लाजो रे॥ १३॥
वले धर्मसाला करावण काजे, लेवो अउतरो मालो।
ओ निरमायल माल लोकीक लेखें, ओं तो खांपणवालो ख्यालो रे॥ १४॥
कोइ अंतकाल समे धन उदकें, रांक गरीव भिख्यारी तांई।
ते दांन लेइ धर्मसाला करावों, तिणमें करों पोसा समाई रे॥ १५॥
वले गांम परगाव सूं मांगणी करने, करावो छो धर्मसाला।
थे भिख्या मांगो नीचों हाथ मांडो, थांरा कुल सहांमो क्यूं नही न्हालो रे॥ १६॥
थे मोटका मिनष वाजो छो लोका में, वड वडा करों किरियावर काजो।
धर्मसाला कराइ अजोग दांन ले, थे छोड दीधी सरम ने लाजो रे॥ १७॥
निरमायल दांन मुरदा रो लेइने, थे धर्मसाला करावो छो।
तिण दांन तणो लेवाल छे कुण कुण, तिणरो थे नांम वतावो रे॥ १८॥
उतो धर्म जांणी दांन दे अंतकाले, तिणरो लेवाल किणने थापो।
थे पेंला रे बदलें भूठ वोलनें, काय विगोयो आपो रे॥ १९॥
दातार तो दांन देवें इम जांणी, साधारे जागा वांधण तांइ।
इण रुपीयां साटें चोखो थांनक करासी, तो साध उतरसी तिण मांही रे॥ २०॥
यूं जांणे धन उदकें आंतरीयो, निकेवल सांधां रें कांम।
थे कहो इसों दान साध क्यांनें ले, तो किसें श्रावक लीयो छें तांम रे॥ २१॥
ओं तो दांन साध श्रावकां लीधो छें, तीजों न दीसें कोय।
इण दांन तणो भेलू हूवो तिणरों, चोडें नाम वताय दों सोय रे॥ २२॥

जो साधां रो नांम बताय दे चोडें, तो साध सहीत श्रावक सर्व बूडा।
जो श्रावकां ओं दांन लीयो कहे तों, न्यात जात में दीससी भूंडा रे॥ २३॥
त्यांमें केयक तो पाप कर्म सूं डरता, केइ लोकीक सूं डरता।
ते तो कहिदें थांनक साधां रें काजें कीधो, सूधा बोलें छें लाजां मरता रे॥ २४॥
केइ कहें थांनक म्हांरें काजें कीधों छें, वद वदनें कहें वारूंवार।
त्यांमें इसडा इसडा केइ भूठा बोला छें, त्यांरा घटमें छें घोर अंधार रे॥ २५॥
त्यां भूठा बोलांनें पाछो इम कहिणों, जो थे लीयो आंतरीयो दांन।
इण दांन थकी जात न्यात लोकांमें, थे होसो 'घणा हिरांन रे॥ २६॥
मिनष आंतरीयो नें घुरडकें जूतों, तिण दांन रा थें लेवालो।
ते दांन लेइ धर्मसाला करावो, जब थें कुल नें लगावो कालो रे॥ २७॥
थे निरमायल दांन मुरदा रो लेइनें, जागा कराय हरषो तिण देखी।
तिण जागा मांहें करो पोसा सामांइ, तो उड गइ जाबक सेखी रे॥ २८॥
थे सांप्रत मुरदा रो दांन लेइनें, साधां रें काज थांनक करायो।
थे कहो थांनक म्हांरें काजें कीधों, ओ तो भूठ कुगुरां रो सीखायों रे॥ २९॥
आप आप तणा थांनक री ममता, दर पीढ्यां लग लागी छें ताहि।
यारी मरजी बिना अनेरा टोलां रां, कुण घसें तिण मांहि रे॥ ३०॥
मठधार्‍यां ज्यूं मठ मांडे बेंठा, मठधार्‍यां ज्यूं राखे धणीयापो।
सांप्रत ममताधारी छें त्यांनें, साध किसें लेखें थापो रे॥ ३१॥
आप आप तणा थांनक मांड बेंठा, ओरां नें उतरण दे नांहीं।
कदा उतरण दें तोही धणीयाप यांरो, उतारें खोज भांगण 'तांइ रे॥ ३२॥
थांनक निमतें गरथ लागे ते, करें सामग्रीही में भेलों।
ओर सामग्री तणा नहीं देवें, यांरें नहीं छे माहोमा मेलो रे॥ ३३॥
वले गांव परगांव सूं गरथ मंगावें, ते पिण सामग्री मांही।
कदा कोइ सरमा सरमी देवें अनेरो, ते तो लेखा में छें नांहीं रे॥ ३४॥
गछवासी ज्यूं गछ मांडी बेंठा, आप आपरा थांनक ठहराय।
ते पिण साध बाजें लोकां में, ते पिण भोलां नें खबर न काय रे॥ ३५॥
मुरदारो दांन ले थांनक करायों, ते थांनक नहीं छें सिष्ट।
तिण थांनक मांहे साध रहें छें, ते तो निमाइ निश्चें भिष्ट रे॥ ३६॥
मुरदा रो द्रान ले थांनक करायों, त्यांरी भिष्ट हुइ छें बुध।
तिण थांनक में करें पोसा सामाइ, ते पिण श्रावक नही छें सुध रे॥ ३७॥
कोइ मांदो आंतरीयों घुरलकें जूतो, ते धन उदकें थांनक काजों।
ते आंतरीयादिक रो दांन लेइनें, लोकां में वधारो छो व्याजों रे॥ ३८॥

इण दांन रो लेवाल किणने ठेहरायो, किणरो थको वधे छे व्याजो।
ओ किण किणरो वाजे छे परिग्रहो, ओ किण किणरे आवसी काजो रे ॥ ३९ ॥
इण मुरदा रो दान ले थांनक करावें, त्यांरी मत घणी छे माठी।
तिण थांनक में करसी पोसा सामांइ, त्यारी पिण अकल गइ छे न्हाठी रे ॥ ४० ॥
एतो निरमायल मुरदा रो माल, तिणनें रांक भिख्यारी झाले।
भगवंत रा उत्तम च्यार तीरथ, एहवा दान ने हाथ न घाले रे ॥ ४१ ॥
एहवो फिलूरखांनों मांड रह्यां लोकां में, त्यांरा मत माहे मोटी भोल्लो।
बुधवंत बिण कुण काढे निकालो, चोडे मांड रह्या गांगीरोलो रे ॥ ४२ ॥
त्यांरा थानक रो कोड काढे नीकालो, जब बोलें घणा आलपंपालो।
सुध साध रहे निरदोष जायगा में, त्यारे उलटा देवें सावां सिर आलो रे ॥ ४३ ॥
आधाकर्मीयादिक छें थांनक दोषीला, तिणने दीयो छे निरदोप थापी।
निरदोष जागां माहे साध रहे छे, तिणमें दोप कहें छे पापी रे ॥ ४४ ॥
एहवी अजोग जायगा माहे रहसी, त्यांमे अकल पिण एहवी आवें।
त्यांरो असुध उपदेस मूढा री वांणी, ते भवजीवा ने किम समझावे रे ॥ ४५ ॥
जांण जांणने एहवी जागा सेवे, वले असुध लेवे अनपांणी।
ते प्रतख जेन तणा विगडायल, त्यारी खोटी वखाण री वाणी रे ॥ ४६ ॥
वीर विक्रमादीत रे सिंघासण वेठां, लोक कहे आच्छी बुध आवें।
ज्यूं निरदोषण जायगा भोगवे त्यारे, आछी आछी अकल बुध थावें रे ॥ ४ ॥
माहोमा कहे म्हे सघलाइ साध, माहोमा त्यारी वंदणा छुडावे।
वले माहोमा सरधा कहे त्यारी खोटी, माहोमा दोप अनेक बतावे रे ॥ ४८ ॥
माहोमा आप तणा श्रावका ने, साव कहे त्यासूं भिडकावे।
ते सामायक पोसा न करे त्यारे पासे, वले वखांण सुणवा नही जावे रे ॥ ४९ ॥
माहोमा साध कहे त्यांरी वदणा छुडावे, त्यां विकलां री किसी परतीत।
कपटी थका झूठ बोले अग्यांनी, त्यामें साध तणी नही रीत रे ॥ ५० ॥
साध सरधे त्यांरी वदणा छुडावे, त्यारी सरधा घणी विपरीत।
साध कहे त्यांने वांद्या धर्म न सरधे, ते भव भवमें होसी फजीत रे ॥ ५१ ॥
माहोमा भेला हूवां करे नही वंदणा, साता पिण पूछे नाही।
आवो पधारो पिण नही देवे माहोमां, नहीं उतारे थानक माही रे ॥ ५२ ॥
आमना जणाय जणाय ग्रहस्थ ने, माहोमा देवे वदणा छुडाय।
वले साध माहोमा कहे किण लेखे, ओ पिण अधकार त्यांरा मत माहि रे ॥ ५३ ॥
जिगन दोय सहस कोड साव जाझेरा, उतकृष्ट नव सहंस छे कोड।
त्यां सावां ने थे वांदो वदावो, सीस नामी ने वेकर जोड रे ॥ ५४ ॥

ज्यांरी वंदणा छुडावें त्यां साधां नें, काढ्या साधां तणी पांत बारें।
त्यांनें वले तेहीज साध सरधें, ओ पिण विकलां रे नही छें विचार रे ॥ ५५ ॥
ज्यां साधां री वंदणा छोडाई, त्यांनें साध कहे किण लेखें।
अभितर आंख हीयां री फूटी, ते सूतर सांह्मों न देखें ॥ ५६ ॥
साध सरधें त्यांरी वंदणा छुडावें, ते बूडगया कालीधारो।
ते भारी करमा छें मूंढ मिथ्याती, त्यांरा घट माहे घोर अंधारो ॥ ५७ ॥
माहोमा साध कहे छें मूंढा सूं, त्यांसूं पिण करें अंतरंग धेष।
वले इसको खेदो करें छें माहोमा, त्यां पहर विगाड्यों छें भेष रे ॥ ५८ ॥
ज्यांनें कदेयक तो कहें साध लोकां में, त्यांनें कदेयक कहि दे असाध।
फिरती भाषा बोले अग्यांनी, त्यांरे किण विध होसी समाध ॥ ५९ ॥
एहवा भेषधार्‍यां नो वखांण सुणें छें, त्यांरे दिन दिन हुवें गाढो मिथ्यात।
ते कलेस कदाग्रहो करें साधां सुं, छेरवीयां करे उंधी वात रे ॥ ६० ॥
संवत अठारें बावनें बरसें, भादरवा विद सातम सुक्रवार।
जोड कीधी कुगुरां रो कपट ओलखावण, पाली सहर मभार रे ॥ ६१ ॥

ढाल : २६

दुहा

भेषधारी भागल तूटल हुआ, त्यांसूं पले नही आचार।
दोष सेवे छे जांण जांणने, पूछ्यां साच न बोले लिगार॥ १॥
त्यांरो पोथ्यां तणों गिज देखने, कोइ प्रश्न पूछे एम।
ओ पोथ्यां रो गिज पस्यो तेहनी, पडिलेहण करो छो केम॥ २॥
जब भारीकरमा जीवा थकी, साच बोल्यो नही जाय।
निज दोष ढांकणने पापीया, बोलें छें मूंसावाय॥ ३॥
कहे पोथ्यां पडिलेहणी चाली नही, किण ही सुतर रे माहि।
तिणसूं नही पडिलेहां छां पोथियां, थे सका म राखो कांय॥ ४॥
पोथ्यां ने नहीं पडिलेहीयां, तिणरो नही म्हांने दोषने पाप।
म्हाने हिंस्या पिण मूल लागें नही, एहवी कीधी लोकां मे थाप॥ ५॥
कपडा पाट बाजोट भोगवां, त्यांरी करणी पडिलेहण जोय।
नही भोगवा कपडादिक तेहनी, नही पडिलेह्यां दोष न कोय॥ ६॥
एहवो भूठ बोलनें दोष ढांकीयों, ते भोलां खबर न काय।
हिवे कूड कपड त्यारो सूणो, एगाएक चित्त लगाय॥ ७॥

ढाल

[डाभ चतुर विचार]

कहे पोथ्या री पडिलेहण नही चाली, तिणरी भाषा छे एकंत भूठी रे।
सुतर अरथ संवला नही सूभें, तिणरी हीया निलाड री फूटी रे।
भूठाबोलां रो संगन कीजें*॥ १॥
जो थोडी पिण उपधि नही पडिलेहें, तिणने मासीक दड बतायो रे।
संका हुवें तो नसीत सुतर माहे जोवों, दूजा उदेसा रे माह्यो रे॥ २॥
वले आवसग दसवीकालिक आद देइ, घणा सूतरां री साखो रे।
साध नें नित पडिलेहण करणी, श्री वीर गया छे भाखो रे॥ ३॥
राख रेत पोथी ने आखो थांनक पडारो, विण वावरीया उपधि छे मांही रे।
त्यानें पिण एकवार तो अवस पडिलेहे, विण पडिलेह्या न राखें कांइ रे॥ ४॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

भेषधारी कहें पोथ्यां नही उपधि मे, तिणसूं पोथ्यां पडिलेहां नाही रे।
अंतो ग्यांन तणी नेसराय छे तिणसूं, नही पडिलेह्या दोष न काइ रे॥ ५॥
भूठ बोले पोथी री पडिलेहण उठाइ, तिणने भारीकर्मो जीव जांणो रे।
तिणरों न्याय सुणे भव जीवा, तिण भूठा री पख मत ताणो रे॥ ६॥
पोथीया रो गिज विण पडिलेह्या राखे, त्यांमें जमें जीवां रा जालो रे।
नीलणफूलण चोमासा माहे आवें, घणा जीवां रों हुवें खेंगालो रे॥ ७॥
कीडीया कथू आदिक जीवा रा समूह, उपज उपज मरे तिण ठांमो रे।
विण पडिलेह्या पोथ्यां रा गिज में, त्यांरे भारी मंड्यों संगरामो रे॥ ८॥
विण पडिलेह्यां पोथ्यां रा गिज मे, अनत जीवां तणी हुवें घातो रे।
तिणरो पाप नें दोष लागो नही सरधे, त्यांरी विकल मांनें छे बातो रे॥ ९॥
पोथ्यां रा गिज नें विण पडिलेह्यां राखें, अनत जीवा रो हुवें घमसाणो रे।
तिण हिंसा तणो पाप किणने लागों, चोडें कहिता संक म आंणो रे॥ १०॥
जो पोथ्या ने हिंसा रो पाप लागो हुवे, तो पोथ्यां रों नाव बतावो रे।
नामे परना मे पाप रों भेलूं बतावो, थारी सरधा ने मतीय छिपावो रे॥ ११॥
जो किणनेंइ पाप लागों नहीं हुवें तो, आ पिण कहि दो निसंको रे।
जेसी हुवे तेसी कहि वतावो, छोडों हीया रों वको रे॥ १२॥
त्यांनें प्रश्न पुछ्यांरों जाब न आवे, जब कूडा कूडा कूहेत लगावें रे।
आल पपाल बोले विनां विचारया, गालां रा गोला मुख सूं चलावे रे॥ १३॥
पोथ्यां रो गिज विण पडिलेह्या राखे, त्यानें पाप लागें भरपूरो रे।
पोथ्यां विण पडिलेह्यां रो पाप न सरधे, त्यांरो तो मत जाबक कूडो रे॥ १४॥
पोथ्यां गिजने विण पडिलेह्यां राखे, त्यारे सदा रहे असमाधो रे।
पोथ्या रा गिज सूं जीव मरें अनता, त्याने निश्चेइ जाणों असाधो रे॥ १५॥
कहे पोथ्या ने कदे नही पडिलेह्या, तिणरो दोप न लागे कांइ रे।
तो ग्रहस्थ रे घरे पोथ्यां ने मेल्या, ओ पिण दोप छे नाही रे॥ १६॥
पोथ्या नही पडिलेह्या रो दोप न लागे, तो गाडा मे मेल्यां दोष छे नांही रे।
वले वेठीया पोढीया पोथ्या चलाया, ओ पिण दोप न लागे काइ रे॥ १७॥
जो पोथ्या नही पडिलेह्या रो दोप न लागे, तो मोल लीधां वेहरया दोष नांही रे।
हिंसादिक दोप सेवे पोथ्या रे ताइ, यारे लेखे तो दोष न काइ रे॥ १८॥
पोथ्यां नही पडिलेहे छे तिणरे लेखे, मेलणी ग्रहस्थ घर माह्यों रे।
ओवरा भखारी में पिण मेलणी पोथ्या, विण पडिलेह्यां राखे तिण न्यायो रे॥ १९॥
कहे पोथ्यां री पडिलेहण करणी, ते नही छे सूतर रे माह्यों रे।
तो ग्रहस्थ रे घरे पोथ्यां मेलण रो, ओ पिण नही छे नकारों ताह्यो रे॥ २०॥

पोथ्यां री पडिलेहण सूतर मे न चाली, पोथ्या ने न गिणे उपधि रे माह्यो रे।
इम कहि कहि अग्यान्या पडिलेहण छोडी, ओ तो चोडें कपट चलायो रे॥ २१॥
पाट वाजोट कपडा ने पडिया राखे, इत्यादिक उपधि वशेपो रे।
त्यानें उपध जांण पडिलेहे नांही, ओ दोष सेवे किण लेखें रे॥ २२॥
आखा थान नें विण पडिलेह्यां राखें, न पडिलेहे पिछोवडी सीवी रे।
वले पडिलेह्यां विण उपधि राखे अनेक, त्या खोइ संजम रूप नीवी रे॥ २३॥
कपडा ने पोथ्यां आला माहे घाले, उपर गारो लीपे छे काठो रे।
जब पूरी पडी पडिलेहण त्यारी, त्यारो चारित घट मा सूं न्हाठो रे॥ २४॥
मास छ मास तांइ न खोले आला, जब जमे जीवां रा जाला रे।
त्यामें जीव अनेक उपजे खपे छे, एहवा गुर छे विकला वाला रे॥ २५॥
कोइ खोडो ने पांगलो लूलो होवे, पगां बाधे इंडूणी गाबो रे।
दोनूं टका न करे पडिलेहण, तिणरो भागल काई देसी जाबो रे॥ २६॥
मुंहपती री तो करे नित पडिलेहण, नही पडिलेहे पगारो गाबो रे।
तिण मांहे जीव अनेक घसे छे, त्याने देवे पगा सू दाबो रे॥ २७॥
थांनक आडा पडदा वांध्या छे, ते साध हाथा सूं खोलने बाधे रे।
तिणरा साधपणा ने पलीतो लागो, ओ पिण दोप न जाण्यो आंधे रे॥ २८॥
तिण परदा रे नीलणफूलण आवे, आडो दीया छाटां लागे रे।
तिण हिंसा तणो पाप साधा ने हूवो, तिणसूं पहलो महावरत भागे रे॥ २९॥
जो सी राखणने पडदा हेठा करे छे, जब तो पडदा भोगवीया साधो रे।
तिणने देव अदत ने परिग्रह लागो, तिण चारित दीयो विराधों रे॥ ३०॥
जब कहे ग्रहस्थ री आगना लेने, म्हे पडदा मेला ढलकाउ रे।
तिण लेखे तो ग्रहस्थ री आगना लेइने, सी राखण सीरख ओढणी साऊ रे॥ ३१॥
साधां रे कारण पडदा वाधे छे, ते कर्म बाधे हूवो भारी रे।
तिण पडदा मांहे रहे साध जांणने, तिणरी पिण घणी खुवारी रे॥ ३२॥
कारण विण पिण महिना सूं इधिका रहे छे, त्या भाग्यो कल्प लोपी मरजादो रे।
तिण दोष तणो प्रायछित नही लेवे, वले पूछ्या करे विषवादो रे॥ ३३॥
केई चोमासी उतर गया पछे, कारण विण रहिवा लागा रे।
खावा पिवा कपडादिक काजें, त्यासूं छूटे नहीं सेंदी जागो रे॥ ३४॥
चोमासो करे तिण गाम नगर मे, नही करे चोमासा दोयो रे।
तठा पहिली चोमासों करे तिण गांमे, तिण चारित चोडे विगोयो रे॥ ३५॥
छती सगत छें पगां चालण री, तो ही लेवे कारण रों नांमों रे।
कारण कहे छे दोप रो खोज भागण रों, पिण रहे छे मुतलब कामो रे॥ ३६॥

त्यांमें कोइ तो मुतलब खावारें काजें, केई चेंला रें मुतलब काजें रे।
कोइ रहें कपडादिक काजें, तिणसं भूठ बोलतां न लाजे रे॥ ३७॥
कोइ तो जांणें म्हारा श्रावक फिर जासी, तो मत मांहें पडसी वगारा रे।
फिरता फिरता कदा सर्व फिरें तो, इहां थी छुट जासी पग म्हारा रे॥ ३८॥
जों श्रावक म्हारा फिर जाअें म्हांथी, तो पछे कारी न लागें कायो रे।
भगवंतें बांधी मरजादा भांगेंनें, देवे चोमासों ठहरायो रे॥ ३९॥
कल्प मरजादा लोपतां संक न आंणें, त्यामें साध तणी नहीं रीतो रे।
ते तो इह लोकरा अर्थी छें अग्यांनी, ते चिहूं गति में होसी फजीतो रे॥ ४०॥
साध एक मास रह्या तिण गांमें, तो बिमणा काढणा दिन बारे रे।
तठा पहिली पिण तिहां आय रहे छें, ते तो विटल हुआ बेंकारो रे॥ ४१॥
कल्प भांगेनें करें चोमासो, कल्प भांगेनें रहे सेखा कालो रे।
अणहूंतों अग्यांनी कारण बतावे, त्यांरे भूठ तणों नही टालो रे॥ ४२॥
कल्प भांगेनें करें चोमासों, कल्प भांगेनें रहें सेखा कालो रे।
तिणनें पिण पूज जांनें अग्यांनी, त्यांरे आयो अभितर जालो रे॥ ४३॥
जे सोंइ पूजनें जेंसाइ चेला, जेसोंइ परवार छें दूजो रे।
कल्प भांगेने करें चोमासो, ते पूज छें पूरो अबूजो रे॥ ४४॥
दोष सेव्यांरो प्राछित नहीं लेवे, आगा सूं नहीं पालें मरजादो रे।
एहवी धिगांमस्ती मडे रही तिण गछ में, ते तो भगवंत रा नहीं साधो रे॥ ४५॥
थानक मांहे पांणी चवें जब, ठांमडा मांड भेले पाणी रे।
तिणनें हिंसा लागे छें तस थावर री, तिणरो दोष न जांणे अग्यांनी रे॥ ४६॥
काचों पांणी भेलें पोतें जाय ढोलें, तिणरी दया घट मांसूं न्हाठी रे।
एहवा पिण साध वाजें लोकां में, तिणरी चोडे छे चलगति माठी रे॥ ४७॥
त्यारे ग्रहस्थण थांनक आय लीपें जब, आर्या धोवण गारा मे घालें रे।
केइ आर्या हाथां दडें लीपें छें, केइ गार पीडा हाथां भाले रे॥ ४८॥
केइ आर्या थानक तणी छंजास्यां, पडी हुवे तो थांनक माहे आंणें रे।
त्यां छजास्यानें आपरी कर जाणें, तिणसूं मेल दे एकंत ठिकांणे रे॥ ४९॥
ओषध आदि दे तंबाखू इधकी आंणे, वधें ते बासी राखे छे रातो रे।
त्यांनें पूछ्या कहें अें तों ग्रहस्थ री छें, तिणरी फेर आग्या ले परभातो रे॥ ५०॥
आपरी वस्त थांनक में वासी राखे ते, ग्रहस्थ री थापी किण न्यायो रे।
वले ग्रहस्थ री आग्या लेवें किण लेखे, त्यांमें आ पिण अकल न कायो रे॥ ५१॥
मूआ गया रा पातरा इधिका हुवे ते, त्यांरी पिण ममता मूकें नाही रे।
त्यांनें पडिया राखे छे विण पडिलेह्यां, आपरा थांनक मांही रे॥ ५२॥

लोट पातरा थानक मे पडीया देखीने, कोइ प्रश्न पूछें छें आंमो रे।
अें लोटने पातरा सावठा किणरा, जब तो कहें छे ग्रहस्थ रा ठांमो रे॥ ५३ ॥
लोट नें पातरा ग्रहस्थ रा कहिनें, आप न्यारों होय जावें रे।
एहवा एहवा भूठ जाणेनें बोलें, त्यांमें साध रो खेरो न पावें रे॥ ५४ ॥
ग्रहस्थ रे लोट पातरा क्यांने चाहीजे, ते थांनक में मेलें क्यांनें रे।
आपरां पातरा नें कहें ग्रहस्थ रा, साध न कहीजे ज्याने रे॥ ५५ ॥
जो आपरे चाहीजें लोट पातरा, तो लेवे छे तिण मांसूं ताह्यो रे।
वले मूआं गयां रा ववे लोट पातरा, ते मेल देवे तिण मांह्यो रे॥ ५६ ॥
ओ तो कोठार ज्यूं छं लोट नें पातरा, ते तो निश्चेइ त्यांरा जांणो रे।
जो भेषधारी कहे अें तो ग्रहस्थरा छें, त्यां विकलां रो करजो पिछांणो रे॥ ५७ ॥
विण पडिलेह्यां राख्यां पहिलो व्रत भागो, वीजो व्रत भागो भूठ भाख्यां रे।
तीजों व्रत भागो जिण आगना लोप्यां, पाचमों व्रत भागो इधिका राख्यां रे॥ ५८ ॥
आचार कुसील तणे लेखें तों, चोथो नें छठों व्रत भागा रे॥
विण पडिलेह्यां पातरा इधिका राखे, ते व्रत विहूणा नागा रे॥ ५९ ॥
लोट पातरा ने उपधि इधिका राखे, त्यांमें छे मोटी खोडो रे।
इधिकाइ राखे ने विण पडिलेह्यां, ते तो निश्चें भगवान रा चोरो रे॥ ६० ॥
कुगुराने ओलखावण जोड करी छे, सोजत सहर मभारो रे।
समत अठारे ने वरस तेपनें, आसोज सुद सातम थावरवारो रे॥ ६१ ॥

ढाल : २७

दुहा

भेषधारी भूला जिण धर्म थी, त्यांरा फूटा अभिंतर नेत।
ते भोलां नें भिष्ट करवा भणी, कूडा लगावें कूहेत ॥ १ ॥
निज दोषण ढांकण भणी, भूठी भूठी बणावें . बात।
त्यांरी बात मांने तिण जीव रें, आवे तुरत मिथ्यात ॥ २ ॥
चहरबाजी तमासा नी परें, ज्यू भेषधार्‍यां मांड्यो फंद।
`किणही भोला नें न्हांखी फंद मे, जब पांमें अधिक अणंद ॥ ३ ॥
काचा पंखी रें पांख आइ नहीं, ते उछल पडीयो आला बार।
तिणनें पडीयो देखनें पापीया, आपे आवे तुरत मभार ॥ ४ ॥
ज्यूं काचों जांणपणों छे तेहनें, तिणने भिष्टकरण हुवे तयार।
तिणनें भिडकावें सुध साधां थकी, कूड केलवे वारंवार ॥ ५ ॥
कमाड जड्यांनें उघाडीया, तिणनें दीसें उघाडों पाप।
ते वीर वचन उथापने, करें कवाड जडण री थाप ॥ ६ ॥
चोढें दोष अणाचार सेवता, पूछ्यां आरे न हुवें ताहि।
ते ढालें उतारे कूड कपट सूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[आ अनुकम्पा जिन आग्या मे]

केई साध रो भेष पेंहरी नें भूला, आडा जडे उघाडे कमाड।
त्यांमें केई तो कहें म्हांनें दोष लागे छे, केई कहें म्हांनें दोष न लागें छें लिगार।
यां भूठाबोलां रो निरणों कीजो* ॥ १ ॥
कवाड जडे पिण दोष जांणें छें, ते तो छें एक मूर्ख री पांत।
कवाड जडे नें दोष न जांणें, त्यांनें दोय मूर्ख कहीजे भलीभांत ॥ २ ॥
त्यां भेषधार्‍यां नें पूछा कीजें, थांरो श्रावक कहें थांसूं जोडी हाथ।
मोनें कमाड जडवो उघाडणों नांहीं, ए सूंस करावो मोनें सांमीनाथ ॥ ३ ॥
जब तो कहे म्हें उणनें सूंस करावां, तो किसों बरत उणरें नीपनो जांणों।
जब कहे उणरें पेंहलो वरत नीपनो, हिसा रों त्याग कीयो छे सुमता आंणो ॥ ४ ॥
जोड कवाड हाथा सूं जडें उघाडे, जबकि सों व्रत उन श्रावक रो भागो।
जब तो कहें उणरो पेहलो व्रत भागो, हिसा रो पाप सागेइ लागो ॥ ५ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

श्रावक जड्यां उघाड्यां पहिलो व्रत भागो, जब तो थांरोई पहलो महाव्रत भागो।
थे पिण कवाड जडो ने उघाडो, जब हिंसा रो दोष थानेंई लागो॥ ६॥
दोष न गिणे छें कवाड जड्यां उघाड्यां, तिणने जाब सूं जाब देइ खिष्ट कीधों।
जब मूंढो बिगाडने पडगयों फीटो, वलतो जबाब पाछो नही दीधों॥ ७॥
वले भेषधारी नें पूछा कीधी, थे कवाड जडेनें गोचरी जावो।
पाछा आवों जब पिण कवाड उघाडों, तो ग्रहस्थ रो आडो देख पाछा कांय आवों॥ ८॥
थांनक रो कवाड तो जडों उघाडो, तिणमे तो दोष गिणों नही कांइ।
तो थे ग्रहस्थ तणो कवाड खोलेने, क्यूं नही जावो तिणरा घर मांही॥ ९॥
जब तों कहे म्हे कवाड जड्यां मे, दोष तों मूल न जांणो लिगार।
आगे बाइ हुवें काइ ढांकी उघाडी, तिणसूं मांहे न जाओ खोल कवाड॥ १०॥
इम भूठ बोलीनें होय गयों पार, तिणनें पाछो खिष्ट करवों छे एम।
हाट माहें तो बाइ थे वेठी न जांणों, तो हाट खोली वेहरायां वेहरो नही केम॥ ११॥
कोइ बाइ ओरां रो कमाड उघाडें, थांने वेहरावे तो वेहरो नही कांय।
माहे तो बाइ ढांकी उघाडी न जांणों, हिवे कहो थें दोष गिणों किण मांहि॥ १२॥
कोइ ग्रहस्थ कहे सांमी कमाड उघाडें, असणादिक वेहरण मांहे पधारो।
जब थें कमाड उघाड मांही क्यूं न जावो, कमाड खोल्यां में दोष न जांणो लिगारो॥ १३॥
इत्यादिक खिष्ट कीया छें अनेक बोलां सूं, तिणरो पाछों जाबतों मूल न आयो।
कदा कवाड जड्या माहें दोष जाणे छे, तो पिण पापी सूं चोडे कह्यो नही जायो॥ १४॥
यांरा वडा वडेरा दर पीढ्यां लग, कहे कमाड खोलायने न लीयो आहार।
त्यां तो दोष जांणेनें नही लीधो, हिवे तो मूढ दोष न जांणें लिगार॥ १५॥
बयालीस दोषां मे दोष कह्यो छे, यांरा वडा वडेरां रा आखर संभालो।
भिने दोष में दोष जाणे ने टाल्यो छे, त्यांरी सरधा ने विकला लगायो छे कालो॥ १६॥
साधवीयां रो नांम लेइनें, साध ने कवाड जडवो थापे।
ते परभव सूं डरे नही पापी, जांण जांणनें वीरना वचन उथापें॥ १७॥
साध ने कवाड जडवो थापण ने, पापी कूडा कुहेत लगावण लागों।
जो साध जड्यां उघाड्यां पेहलो व्रत भागे, जो साधवियांरोइ पहलो व्रत भागो॥ १८॥
तिण मूढमती नें पाछो इम कहीजे, तूं ओही विचार हीया मे न देखे।
साधवीयां तो सील राखण नें जडें छे, साध कवाड जडे किण लेखें॥ १९॥
जब मूढ मती पाछो इम बोलें, सील राखण पेहलों व्रत भागें छे जेह।
डाला राखणनें गोड जडीयां सूं काढें, ए खोटो दिष्टंत देवें लोकां आगे तेह॥ २०॥
तिण मूढमती नें पाछों इम कहिणो, थें गोचरी जाओं ग्रहस्थ नें घर तांम।
घर में एकली अस्त्री छें बाल जवान, इतरे मेह आय गयो तिण ठांम॥ २१॥

एकली अस्त्री छें तिहां रहो के न रहों, जव तो कहें म्हें न रहां तिणठांम।
म्हे वरसतें मेह नीकल जावां वारें, चोथो सील वरत राखण ने काम ॥ २२ ॥
जो थे सील राखण नें पांणी मांहें चालों, जव थांरें लेखें थांरों पहिलों व्रत भागों।
आर्यां तों कवाड जडे सील राखण, थें सील राखण जीव मारया अथागों ॥ २३ ॥
आपरों व्रत भागो तो कोंहणी न आवें, जाव अटक गया जव पड गया फीटा।
भोला लोकां नें समझ पडें नहीं कांइ, डाहा लोकां में तो घणा भूंडा दीठा ॥ २४ ॥
वरसतें मेह नीकलें अस्त्री कना थी, तिण साध नें श्री जिण आगना जांणो।
साधवीयां कवाड जडे सील राखण नें, तिण में पिण श्री जिण आग्या प्रमांणो ॥ २५ ॥
सीलादिक कारण विण कवाड जडें छें, सीलादिक कारण विण मेह में चालें।
जव तो पहिलो महाव्रत निश्चेंइ भागों, तिण मांहे घोचो अग्यांनी घालें ॥ २६ ॥
त्यांनें कवाड जड्यां मांहे दोष वतावें, जव झूठ बोलें फलसों देवें वताइ।
कहे साध तों फलसों हाथां सूं उघाडें, तो कवाड जडवारी कुण चलाइ ॥ २७ ॥
कवाड विचे तो फलसों भारी छें, फलसो पूंजें खोलेनें मांहें जांणो।
ते तो आचारंग सूतर मांहें कह्यों छें, म्हे कवाड जडण री संक क्यूं आंणों ॥ २८ ॥
कवाड जडण उघाडण रो दोष ढांकणने, फलसों उघाडण रो झूठ चलायों।
वले आचारंग मांहे चाल्यों कहें छें, ते पिण एकंत मूसावायो ॥ २९ ॥
कंटक वोदीया पाठ कह्यों छें सूतर में, ते कंटक नी साखा डाली जांणो।
आचारंग दूजें सतक पेंहलें अधेनें, पांचमों उदेसो जोय करो पिछांणों ॥ ३० ॥
कंटक वोदीया साखा नें फलसो कहे छें, तिण निश्चेंई चोडें चलायो छे कूडो।
ते तों कवाड जडण नें उंधा अर्थ करें छें, त्यांरा साधपणा मांहें पर गइ धूरो ॥ ३१ ॥
कटक साखा रो ठूंठो पूंजें दुवार खोले, फलसों होसी तो पूंजणी किम आवें।
कंटक वोदीया रो अर्थ फलसों कहें ते, निश्चेंइ गालां रा गोला चलावें ॥ ३२ ॥
तिण भेषधारी ने पूछा कीजे, कवाड जड्यां खोल्यां पाप कें धर्म।
जो धर्म कहें तो लोकां में भूंडा दीसें, पाप कह्यां निकल जावें सरधा रों भर्म ॥ ३३ ॥
कवाड जड्यां मांहें दोष उघाडों, सांभलजों सूतर री साख।
तो पिण पापी मूल न मांनें, कवाड जडवो छे साध नें कहे छे अन्हाख ॥ ३४ ॥
कवाड जड्या उघाड्या हिंसा कही जिण, आवसग सूतर चोथा अधेन मझार।
थोडी हिंसा कीयां डंड आवें चोमासी, नसीत वार में उदेसें विचार ॥ ३५ ॥
वेतकल्प सूतर रे पेंहलें उदेसे, साधवीयां नें नहीं रहिणो उघाडे दुवार।
आडो जडेनें रात रो रहिणों, सील नें उपजतों जांण विगाड ॥ ३६ ॥
साध नें रहिणो दुवार उघाडें, साध नें कमाड जडवो नहीं चाल्यों।
पोतें जडण उघारण रो कांम न पडें तो, जडीयें दुवार तो रहणों नहीं पाल्यों ॥ ३७ ॥

आर्यां रो नांम लेइने साध जडें छें, त्यांनें जिण मारग रा कहीजे अजांण ।
आर्यां न जडे तो जिण आगना लोपी, साध जडे तिण भांगी छे जिणवर आंण ॥ ३८ ॥
मन करने पिण साध कमाड न बांछे, ते काया सूं किण विध जडें कमाड ।
ते वरज्यो छें उत्तराधेन पेतीस में अधेन, चोथी गाथा जोय करों निस्तार ॥ ३९ ॥
मनोहर घर ने वले चित्रांम कीधा, माला सहीत नें धूपादिक वासकारी ।
कवाड सहीत ने घर धवलीयों हुवे, वले चंद्रवा सहीत न वांछे लिगारी ॥ ४० ॥
जो इतरा बोल माहिलो सहजा हुवें तो, तिहां रहितां दोष न लागें कांइ ।
आगे पडीयां छें जिम नचित पख्यां छो, त्यांरी बंछा पिण नही करणी मन मांही ॥ ४१ ॥
चंद्रवा छूटा ने साध पाछा बाधे, वले हाथा सू जडे उघाडें कमाड ।
ते चित्रामादिक समारे हाथा सूं, त्यांरो बिगड गयो जावक आचार ॥ ४२ ॥
ज्यांने मन करनें वांछणा जिण पाल्या, त्यांनें कायाइं करेने सेवण लागा ।
वले कमाड जडवो साधां ने थापे, त्यांने वरत विहूणा कहीजे नागा ॥ ४३ ॥
गोसाले पिण कमाड जडीयो नही दीसें, ते सूतर भगोती सू करों पिछांणो ।
गोसालो मूआं पछे चेलां जख्या छें, ते तो आपरा मुतलब रे कांम जांणों ॥ ४४ ॥
पेहला चेलां ने करडा सूस कराए, पछे निज आलोवण कीधी गोसाले ।
जव चेला टटवस करणो मांड्यो, जब चेलां कमाड जड्यों तिण काले ॥ ४५ ॥
चेलां टटवस करने पाछो उघाड्यों, बीजू तो आगे हुंतो उघाडो दुवारों ।
गोसाला नें घीसालतो लाजां मरे छे, तिणसूं चेला जडीयों उघाख्यों कमारों ॥ ४६ ॥
गोसाला रे तो जागा सूतर में चाली, जडवों उघाडवो नही चाल्यो कवाड ।
ते तीथकर बाजें ते किण विध जडसी, ओ पिण दीसें उघाडो विचार ४७ ॥
केई पाषंडी पिण बाजें वेरागी, ते पिण आडा न जडे कमाड ।
भगवंत रा साध बाजें कमाड जडें छे, त्यां विकलां नें दीजे तीन धिकार ॥ ४८ ॥
झूठ बोलता बोलता जाब में अटकें, तो अनेक आका झाका ले उठें ।
वले क्रोध करे प्रजलता पापी, सुध साधां री निंदा करें परपूठे ॥ ४९ ॥
साधां रा भेष थकां कमाड नें जडतां, निरलजा हुवे ते मूल न लाजें ।
वले दोष काढे त्यांसूं मंड जाए साह्मा, न्याय चरचा करे त्यांसू दूरा भाजें ॥ ५० ॥
कमाड जडवारो दोष ओलखावण, जोड कीधी पालीसहर मझार ।
समत अठारेने वरस वावने, आसोज सुदि बीज ने बुधवार ॥ ५१ ॥

ढाल : २८

दुहा

दुषम आरें पांचमें, हीण परी लोकां री बुध।
त्यांनें साध नें असाध दोनूं तणी, पूरी परती न दीसें सुध ॥ १ ॥
भेषधारी भागल तूटल फिरें, इण साध तणा भेष मांहि।
त्यांरें माया ममता अति घणी, ते कह्यों कठा लग जाय ॥ २ ॥
गांमा गांमा थांनक त्यारे बांधीया, छ काय रो कर घमसांण।
नामें पर नामें त्यांरें जू जूआ, त्यांमें पर रह्या मूंढ अयांण ॥ ३ ॥
चेला चेली करणरा अति लोभी, त्यांरें लागी तिसणा लाय।
ववेक विकल बालक विरध नें, तुरत मूंडलें मांहि ॥ ४ ॥
त्यां भेष भांड्यो छे भगवांन रो, वले छोडी सरम नें लाज।
चेला चेली करण रें कारणे, करें छें अनेक अकाज ॥ ५ ॥
वले ओर दोप सेवें घणा, ते पूरा कह्या नहीं जाय।
थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[पाष ड बधसी आरे पाचमें]

जिण साधपणा रा गुण जांण्या नही रे, वले नही जांण्यों समकत रो सरूप रे।
एहवा विकलां नें मूंड भेला करे रे, ते भेप ले बूडा भवजल कूप रे।
त्यांने साध म जांणो श्री भगवांन रा रे* ॥ १ ॥
बूढा ने मूंडे बालक रें लालचें रे, जांणें बालक होसी म्हारें भणणार रे।
पिण अे दोनूंइ पेटभरा पेटारथी रे, त्यानें सांग पेंहराय कहे अणगार रे ॥ २ ॥
तिण बालक ने न्याती लेगा पकडने रे, तिणनें ग्रहस्थ कीयों छे भेष उतार रे।
ते बालक विकल थको रमतो फिरे रे, ते पिण चाल्या छें तिणरी लार रे ॥ ३ ॥
तिण नें पाछो ल्यावण री आसा धारने रे, धरणों पाल्यों तिण ठांमें जाय रे।
तोही हाथ न आयो त्यांरे डावडो रे, जब फेर धरणो दीयों छें ताय रे ॥ ४ ॥
कहे मांनें पाछो सूंपेदो डावडो रे, नही तों अणसण कर छोडूं थां उपर प्रांण रे।
कें हूं पाछो होय जासूं ग्रहस्थी रे, जोरी दावें लेजा सूं तिणनें तांण रे ॥ ५ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

वले कजीयो कलेस कीयो तिण अति घणो रे, छोरा ने पाछो लेजावण काज रे।
ओघड ज्यूं उघाडा नांच्या लोक मे रे, त्यां भेष री मूल न राखी लाज रे॥ ६ ॥
तो पिण हाथे नही आयो डावडो रे, वले फीटा पडीया छे लोकां माहे रे।
भूखां मूआं ते पिण यूं ही गयो रे, पछे काया होय धरणों दीयो उठाय रे॥ ७ ॥
पहिला तों विकलां नें मूंड माहे लीया रे, पछें धरणों पाड्यो पिण ठांमे जाय रे।
तिणांनें तो विकल निजरां देखी लीया रे, तो ही न मटी विकलां नें तिणरी चाहि रे॥ ८ ॥
भेषधारी विलखा वेदल हूआ घणा रे, जाणे कोइ न सरीयो म्हारे काज रे।
आसा अलूधा पाछा आवीया रे, घणा लोकां में खोए लाज रे॥ ९ ॥
पछें माहोमां मिलनें मतो कीयो रे, आपे भूंडा दीठा छां लोकां माहि रे।
हिवे बालक विण बूढो किण कांमरो रे, तो इण बूढा ने बारे काढे दो ताहि रे॥ १० ॥
इम जांणे नें बूढा ने पिण छोडे दीयो रे, जब बूढो तो जाय बेठो तिण गांम रे।
ओ पिण भेष छोडेनें हूवो ग्रहस्थी रे, जेसा हूंता जेसोइज कीधो कांम रे॥ ११ ॥
कलेस कदागरो करे घणो रे, वले देवे करडा करडा सराप रे।
तपकर मरवा मांडें उपरे रे, छोरा नें पाछा ल्यावण री थाप रे॥ १२ ॥
तिणमे भेषधास्यां ने सांभल जांण जो रे, पिण निश्चे तो जाणे श्री भगवत रे।
यारा चेहन देखे नें यांने अटकल्या रे, यारे छोरा सूं दीसे ध्यांन अतंत रे॥ १३ ॥
जो सेमल न हुवे तो कह दो एतलो रे, इणने लेसां म्हे आसी जब वेंराग रे।
लडे झगडे ल्यायाने माहे ल्यां नही रे, साचा हुवे तो कर दो इणरो त्याग रे॥ १४ ॥
जो त्याग न करे तो तिण कजीया मझे रे, सेमल छे चेला करवा काजरे।
एहवा कजीया कराएनें चेला करे रे, ते निरलजा मूल न आंणे लाज रे॥ १५ ॥
जो इतरो कहे कजीया मूल करो मती रे, म्हारे छोरा ने लेवण रा छें त्याग रे।
तिणरीं आसा छोडे ने निरदावें हुवें रे, जब तो थोडा में कजीयो जाअे भाग रे॥ १६ ॥
सुस करेने कजीयो मेटें किण विधें रे, तिणरे चेलां री लागी तिसणा लाय रे।
तेतो कुटंब छोडेने पडीयो विटंब मे रे, सुमता नही दीसे तिणरे माहि रे॥ १७ ॥
एहवा विकलां ने साधु सरधे छें भेलीया रे, त्यांरी पिण अकल गइ दपटाय रे।
त्यांनें कर्म जोगे एहवा कुगुर मिल्या रे, ते पिण खूता छे मोह मिथ्यात रे माहि रे॥ १८ ॥
कोइ मादो अकेलो ग्रह करलां थकां रे, धन उदकें साधां रे थानक काज रे।
एहवो पिण दांन लेता लाजें नही रे, त्यां विकलां ने किम कहीजे मुनीराज रे॥ १९ ॥
मिनष आंतरीयों जूतो घुरडकें रे, धन उदके साधां रे थानक काज रे।
वले साता उपजावण साधां ने दीयो रे, ते दांन लेतां पिण नांणें लाज रे॥ २० ॥
कोइ घर छोडतों थांनक मोल ले रे, जांणें साध रहसी तिण थांनक माहि रे।
वले परिग्रह पिण छाने सूंपे ग्रहस्थ ने रे, साधां ने साता उपजावण ताहि रे॥ २१ ॥

वले साधां रें थांनक करावण कारणें रे, लेवें छें अउत तणों तो माल रे।
एहवा थांनक जे साध भोगवें रे, त्यांनें भव भव में होसी घणा हवाल रे ॥ २२ ॥
वले कहि कहिनें त्यांनें कितरो कहूं रे, नही छोडें मुरदादिक रो धन माल रे।
ते पिण नांम धरावें साधरो रे, आ चोडे देखो कुगुरां री चाल रे ॥ २३ ॥
तिण परिग्रहा नें कहें छें थांनक तणो रे, आप तो होय जावें छें दूर रे।
पिण अंतरंग में जांणें छें धन आपरो रे, कपटी जांणेंनें बोलें कूड रे ॥ २४ ॥
जिणरों थांनक छें तिणरो परिग्रहो रे, पिण ओर रो भेल नही तिलमात रे।
तिण थांनक रा धणी धोरी जो साध छें रे, तो साधां रो परिग्रहो छें साख्यात रे ॥ २५ ॥
तिण धन रा भेलू त्यांरा श्रावक हुवें रे, ते मिल नें मेलें ठिकांणों जोग रे।
ते गुपत छांनें छें सामग्री गमें रे, ते लोकां में चावो न करें कोय रे ॥ २६ ॥
ते ब्याज वधें छें सामग्री गमें रे, त्यां सगलां रो जांणें छें साध नांम रे।
ते अंतरंग में जांणे छें मन में आपरो रे, ओ सगलोइ आसी म्हांरे काम रे ॥ २७ ॥
जिणमें नांणों छें तिणरा घर धणी रे, चाहीजे ते वेंहरी त्यावें जांण रे।
घी खांड कपड़ादिक देवें मोकला रे, तिणरो लेखो उ जाणें ते परमांण रे ॥ २८ ॥
जो थांनक निमतें पइसों चाहिजे रे, वले काठ मांडण नें मांडी कांम रे।
जब पिण सामग्री मांहि भेलो करें रे, तिण परिग्रह में लेवा न दें तांम रे ॥ २९ ॥
कारलो कांम पड्यां लेवा दे तेहनें रे, नें लेवा दे खोज मागण रे कांम रे।
ते पिण मुतलब जांणें आप रो रे, विण मुतलब लेवा न दे तांम रे ॥ ३० ॥
त्यांमें निसरायक मांग्यां पाछो दे नहीं रे, जोरीदावें बेंठा छें मूंढो मार रे।
जब ओ लाजां मरता पाछा बोलें नहीं रे, पिण छांनें छांनें भायां में करें पुकार रे ॥ ३१ ॥
एहवो पोलांणो छें इण भेष में रे, ठागो मांडायो लोकां माहि रे।
जाल मांड्यो छें मोह मिथ्यात रो रे, तिण मांहि पडें अग्यांनी आय रे ॥ ३२ ॥
कदे उदास थयां त्यांरें उदें हुआ रे, जब वात चावी हुइ लोकां माहि रे।
पापें भरीयो घडो फूटे गयो रे, हिवें दोष छिपाया न छिपें ताहि रे ॥ ३३ ॥
जब साध श्रावक सारा लाजां मरें रे, लोकां में हूवों जांण फितूर रे।
जब दोष ढांकण री मन करें घणी रे, हिवें विवधि सूं चोडें बोलें कूड रे ॥ ३४ ॥
त्यांनें परभव रो डर तो मूल दीसें नहीं रे, झूठ बोले लोकां नें देवें दाव रे।
एहवा साध श्रावक सगला बूडे गया रे, ते चिहुंगति में होसी घणा खुराब रे ॥ ३५ ॥
कोइ श्रावक यांरा ते साधां मांगनें रे, तिणनें दरावें रोकड दाम रे।
तिण मांहि सीर जांणें छें आपरो रे, इणरें होसी ते आसी म्हांरें कांम रे ॥ ३६ ॥
उ मोल त्यावें घी सक्कर सूंखडी रे, वले चिरक पिण मेवा नें मिसठांन रे।
उ पिण खाअें छें मन मांनें जीतो रे, गुर नें पिण देवें अकल्प दांन रे ॥ ३७ ॥

तिणरे निठ जाअें खातां देतां थकां रे, तो फेर सरू करें दातार रे।
कानी कांनी गांमां नगरां थकी रे, परिग्रह मेलण ने करें तयार रे॥ ३८॥
तिणनें फेर दरावें कर कर आंमना रे, वले उण कना थी ल्यावें छे आप रे।
चोरां कुत्ती मिली ज्यूं मिल गया रे, ज्यूं यांरे पिण आकर राखी छे थाप रे॥ ३६॥
किणरें दोय सीख्यां रे सोदों वेचणो रे, जब एक जणों वणें दलाल रे।
गराग ठगणनें कपट दगों करें रे, ये पिण इण विच ठग ल्यावे माल रे॥ ४०॥
मिनष आंतरीयो जूतो धुरडकें रे, धन उदके रांक गरीब ने ताहि रे।
ते पिण दरावे तिण श्रावक भणी रे, तिणरी पिण आसा छे मन माहि रे॥ ४१॥
हूं कहि कहि ने वले कितरो कहूं रे, इण भेष माहे छें घोर अंधार रे।
त्यांरा श्रावक भोला ने समझ पडे नही रे, ते पिण बूंडे छें त्यांरी लार रे॥ ४२॥
त्यांमें दोष बतावें थांनक तणो रे, जब भोला ने किण विध दें भरमाय रे।
कहे थानक चाल्या छे अठारे जातरा रे, तिणसूं म्हे पिण रहां छां थांनक माय रे॥ ४३॥
इम कहि कहि दोषीला थांनक भोगवे रे, गाला गोलो कर देवे ताय रे।
हिवें अठारे जातना थांनक तेहनो रे, जू जूओ नांम सुणें चितल्यांय रे॥ ४४॥
देवरो सभा जायगा पोतणी रे, परव्राजक नों कह्यो असरांम रे।
रूष हेठें पिण साव उतरे रे, अस्त्री ने पुरुष रमवाना आराम रे॥ ४५॥
गुफा ने लोहारादिक नी साला मझें रे, वले गुफा परवत नी हुवें रसाल रे।
चोह कमावे तिण ठांमें पिण उतरे रे, विरष व्यापत उद्यान ने गडसाल रे॥ ४६॥
क्रियाणासाला ने जगने मंडप मझे रे सूनो घर नें मसांण छत्री माहि रे।
परवत घरनें वले हाट मे रे, इत्यादिक जाचीने रहे तिण माहि रे॥ ४७॥
यांमें दोषीला थांनक तो एको नही रे, ए सगलाइ वीर कह्या छे सिष्ट रे।
त्यामे साधरो तो थांनक चाल्यो नही रे, थानक मांडीने वेठा ते भिष्ट रे॥ ४८॥
थानक तो कहे छे अठारे जातरा रे, अें वारुवार कहें किण कांम रे।
दोषीला थांनक रा दोष छिपायवा रे, वले दोषीला सेवण रा परिणांम रे॥ ४६॥
भोला ने भरमावें कपट दगों करी रे, तिण सूं भोला जाणे थांनक निरदोष रे।
पिण मन माहे मूल न जांणे सुझता रे, यां विकलां ने किण विध होसी मोख रे॥ ५०॥
भेषधारी भागल तूटल ओलखायवा रे, जोड कीधी छें सोजत सहर मझार रे।
संवत अठारे ने बरस तेपने रे, आसोज विद इग्यारस ने मंगलवार रे॥ ५१॥

ढाल : २६

दुहा

आधा कर्मी नें उदेसीक ते कीयों, ते तों साध नें कल्पें नांहि।
भोगवें त्यांनें भिष्टी कह्या, नहीं साध तणी पांत मांहि ॥ १ ॥
आधाकर्मी उदेसीक भोगवें, त्यांनें नपेधा श्री भगवांन।
त्यांनें कुण कुण कहि वतलावीयें, ते सुणों सुरत दे कांन ॥ २ ॥

ढाल

[भवियण जिन आ०]

आधाकर्मी उदेसीक भोगवें त्यांनें, निश्चें कह्या अणाचारी।
दसवीकालिक तीजें अधेनें, तिणमें संका म जांणों लिगारी रे।
भवीयण जोवो हिरदय विचारी, एहवा कुगुर छें हीण आचारी रे।
त्यांनें वांद्या हुवें घणी खुवारी* ॥ १ ॥
आधाकर्मी उदेसीक भोगवें त्यांनें, भिष्ट कह्या भगवंत।
दसवीकालिक रें छठें अधेनें, ते निरणों करों मतवंत रे ॥ २ ॥
आधाकर्मी उदेसीक भोगवें त्यांनें, कह्या छें गृहस्थ नें भेषधारी।
माहा सावद्य किरीया लागी कही त्यांनें, आचारंग सेद्या अधेन मझारी रे ॥ ३ ॥
आधाकर्मी उदेसीक भोगवें त्यांरा, भागा छहू व्रत जांणों।
आचारंग दूजा अधेन रें छठें उदेसें, तिहां जोय करों पिछांणो रे ॥ ४ ॥
आधाकर्मी उदेसीक भोगवें त्यांनें, नरकगांमी कह्या भगवांन।
ते उत्तराधेनरे वीसमें अधेनें, ते निरणों करों वुधवांन रे ॥ ५ ॥
आधाकर्मी भोगवीयां अधोगति जावें, वले कह्यों छें अनंत संसारी।
भगोती पहिला सतक रें नवमें उद्देसें, तिहां वोहत कह्यों विस्तारी रे ॥ ६ ॥
आधाकर्मी उदेसीक न कल्पें ते लेवें, तिणमें छें मोटी खोड।
आचारंग रें पहलें सुतखंधें, तिणनें कह दीयो भगवंत चोर रे ॥ ७ ॥
आधाकर्मी एकवार भोगवें, तिणनें चोमासी प्रायछित देणों।
पिण सदा निरंतर थेटसूं भोगवें छें, तिणरा प्रायछित रो कांइ कहणों रे ॥ ८ ॥
आधाकर्मी नें एकवार भोगवें, तिणनें सवलों दोषण लागों।
सदा निरंतर थेटसूं भोगवें छें, तिणनें प्राछित रों नहीं थागों रे ॥ ९ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

साधां रे काजे थांनक दडें लीपें जद, कीड्यां नें माकादिक देवें दाटी।
लाखां कोडां गमें तस जीवां नें मास्या, त्यां विकलां ने होसी गति माठी रे॥ १० ॥
अनेक तस जीवा ने जीवां मास्या, अनेक जीवां उपर दीधी माटी।
कुगुरां काजें जीव इण विध मारें, त्यांरी अकल आडी आइ पाटी रे॥ ११ ॥
सास उसास रुंधी तस जीव नें मास्यां, माह मोहणी कर्म बंधाय।
दसासतखंध सुतर में कह्यो छें, ते पिण विकलां ने खबर न काय रे॥ १२ ॥
चिगटरो तिरको न्हांखें तिण ठांमे, तठे कीड्यां लाखां गमे आवे।
तिहां गार दड्यां लीप्यां दर रूंधाय, लाखांगमे कीड्यां मारी जाय रे॥ १३ ॥
पूतीकर्म भोगवें तिण साध ने, कह्यो छें गृहस्थ ने भेषधारी।
दोय पक्ष तणो सेवणहार कह्यो छें, सुयगडाअंग सूतर मझारी रे॥ १४ ॥
तो पूतीकर्म दोष विचें आधाकर्मी, दोष विशेष छें भारी।
सदा निरंतर आधाकर्मी सेवें छे, तेतो निश्चे नही अणगारी रे॥ १५ ॥
आधाकर्मी थांनक जांण जांच सेवें छें, वले साध वाजें छें अन्हाखी।
त्यांरे तो माहामोहणी कर्म बंधें छे, दसासतखंध सुतर छें साखी रे॥ १६ ॥
आधाकर्मी थांनक जांण जांणनें सेवें, पूछ्यां पाधरा बोलणी नावें।
मिश्रभाषा बोले महामोहणी बांधे, कूड कपट सूं कांम चलावे रे॥ १७ ॥
आधाकर्मी थांनक जांण जांणनें सेवें, पूछ्यां थकां वोलें कूड।
त्यांरा श्रावक पिण त्यांरी साख भरें छें, ते पिण गया बहती रे पूर रे॥ १८ ॥
आधाकर्मी तो थांनक सेवें उघाडो, वले भूठ वोलें जांण जांण।
त्यांरा जेसाइ सांमी ने जेसाइ सेवग, त्यांरो बिगड्यो छें जावक घांण रे॥ १९ ॥
केइ श्रावक पिण त्यांरा भारीकर्मा, भूठ बोलता न डरें लिगार।
आधाकर्मी नें निरदोष कहें छे, ते वूड गया कालीधार रे॥ २० ॥
आधाकर्मी उदेसीक भोगवें त्यांनें, साध सरधें ते निश्चें मिथ्याती।
ठाणाअंग दसमें ठांणे कह्यो अर्थ मे, मूंढा तणी म जांणों वाती रे॥ २१ ॥
आधाकर्मी उदेसीक भोगवें त्यांनें, साध सरधे त्यांरें भारी कर्मो।
ते सुध बुध बाहिरा जीवं अग्यांनी, ते किम पांमे जिण धर्मो रे॥ २२ ॥
आधाकर्मी रा दोष सूतर सूं बताया, वले सूतर मे दोष अनेक।
हिवे मोल लीया रा दोष कहूं छूं, सुणजो आंण ववेक रे॥ २३ ॥
मोल रा लीया भोगवें त्यांने, निश्चे कह्या अणाचारी।
दसवीकालक रें तीजें अधेनें, तिणमे संका म जांणों लिगारी रे॥ २४ ॥
मोलरो लीधो भोगवें त्यांनें, नरकगामी कह्या भगवंत।
उत्तराधेन रें बीस में अधेनें, ते निरणों करो मतवंत रे॥ २५ ॥

मोलरो लीयो नहीं कल्पें ते वेंहरें, तिणमें छें मोटी खोड।
कह्यों छें आचारंग रे पहिलें सतखंबें, तिणनें कह दीयों भगवंत चोर रे ॥ २६ ॥
मोलरो लीयों भोगवें त्यांनें, भिष्ट कह्या भगवंत।
दसवीकालक रे छठें अधेनें, ते निरणो करों मतवंत रे ॥ २७ ॥
मोल रो लीयो भोगवें त्यांरा, सुमत गुपत महाव्रत भागा।
नसीत रें उगणीस में उदेगें, व्रत विहुणा छें नागा रे ॥ २८ ॥
मोल रो लीयों एकवार भोगवें, तिणनें चोमासी प्राछित देणों।
पिण सदा निरंतर भोगवें तिणनें, प्राछित रों नही परमांणो रे ॥ २९ ॥
मोल रो लीयो एकवार भोगवें, तिणनें सबलों दोषण लागो।
पिण सदा निरंतर भोगवें तिणनें, प्राछित रो नहीं थागों रे ॥ ३० ॥
मोल लीधा रा दोष सूतर सूं बताया, वले सूतर माहे छें अनेक।
हिवें नित पिंड वेंहर्‍यां रा दोष कहूं छूं, ते सुणजों आंण ववेक रे ॥ ३१ ॥
नितरों नित एकण घर रों वेंहरें, त्यांनें निश्चें कह्या अणाचारी।
दसवीकालक रे तीजें अधेनें, तिणमें संका म जांणों लिगारी रे ॥ ३२ ॥
नितरो नित एकण घर रों वेंहरें, त्यांनें भिष्ट कह्या भगवंत।
दसवीकालक रे छठें अधेनें, ते निरणों करों मतवंत रे ॥ ३३ ॥
नितरो नित एकण घर रों वेंहरे, त्यांनें नरक गांमी कह्या भगवांन।
उत्तराधेन रें वीसमें अधेनें, ते निरणों करों बुधवांन रे ॥ ३४ ॥
नितरों नित एकण घर रों वेंहरे, तिणमें छें मोटी खोड।
आचारंग रे पेंहलें सतखंबें, कह दीयो भगवंत चोर रे ॥ ३५ ॥
नितरो नित एकण घर रों वेंहरे, तिणनें मासीक प्राछित देणों।
पिण सदा निरंतर वेंहरें तिणनें, प्राछित रों नहीं प्रमाणो रे ॥ ३६ ॥
कोइ भेषधारी भागल नित रो नित वेंहरे, एकण घर रों आहार।
त्यांनें पूछ्यां थका पाधरा नहीं बोलें, भूठ बोलें विविध प्रकार रे ॥ ३७ ॥
नित को एकण घर रो धोवण तों वेंहरां, नित पांणी न वेंहरां लिगार।
धोवण नें च्यार आहार म्हे न गिणें, एहवों भेषधार्‍यां रे अंधार रे ॥ ३८ ॥
तेहीज नित नित कलाल रा घर सूं, वेंहर ल्यावें छें उंनो पांणी।
चोडे धाडें पीव्यां लग वेंहरतां आवें, वले भूठ बोलें जांण जांणी रे ॥ ३९ ॥
चोडें भूठ सभा में बोल्यो, नितका पांणी न वेंहरां तांम।
तिण भूठ तणों उघाड कीयों जब, लीयो वडां रो नांम रे ॥ ४० ॥
जो साचो हुवें तो सूतर माहे काड बतावत, वडां रों नहीं लेतो नाम।
तिणरा वडेरा तो अणाचारी उघाडा, त्यांमें साधपणों नहीं तांम रे ॥ ४१ ॥

भगवंत भाख्या सूतर ने उथापें, बडां लारे सेवे अणाचार।
ते बूड गया बडा सहीत अग्यांनी, घ्रिग त्यांरो जमवार रे॥ ४२॥
वीहार करे जब नित को वेंहरे, ते नितको वेहस्यो गिणे नांही।
इण विध कूड कपट करे नित वेंहरे, ताजो आहार लेवारे तांइं रे॥ ४३॥
वीहार तणों नांम लेने अग्यांनी, चोडे सेवे अणाचार।
आ आप छादे थाप कीधी अणहुंती, ते विटल हुआ वेकार रे॥ ४४॥
केइ तों नित रो नित एकण घर नो, वेंहरे धोवण ने पांणी।
ओ पिण उघाडो अणाचार सेवें, निडर थका जांण जांणी रे॥ ४५॥
केइ कहे म्हांरे वंधी गोचरी छें, तठें तो म्हें एकंतर जावो।
वाकी फुटगर घर मोकलाय देवां म्हे, तिहा थी मनमांने सोइ ल्यावों॥ ४६॥
जको वेंहरें तिणनें नही जांणो, बीजां रे अटकाव छे नांही।
इण विध कूड कपट करे नित वेहरे, भोगवे सर्व टोंला मांही रे॥ ४७॥
एकण टोला री एकण गांव मांही, ते जुदी जुदी थांनक उतरे छे।
आरज्यां रहे छें अनेक, सगल्यां रे सभोग छे एक रे॥ ४८॥
ते आपरे गोचरी जू जूइ जावें, ओर रा लीया घर नही टाले।
ते सगली जणी आहार पांणी ल्याए, गुर ने आंण दिखा ले रे॥ ४६॥
सगलां रो आण्यो आहार गुर भोगवे छे, नित पिड रो न करें टालों।
एहवा भेषधारी भागल साध बाजे, त्यां आत्मा ने लगायो कालो रे॥ ५०॥
एक टोला रा नित जू जूओ वेंहरे, एकण घर रो आहार पांणी।
त्या विकला नें साध सरधे छे मूरख, ते पूरा छे मूढ अयांणी रे॥ ५१॥
केइ भेषधार्‍यां रे इग्यारें संभोग, एक भेलो न करें आहार।
बधीयो घटीयों आहार देवें लेवें, वले माहोमा करें मनवार रे॥ ५२॥
आहार तणा संभोग नें तोस्यो, ते पिण खावा रें काज।
एक माडलें आहार जू जूओं करता, निरलजा मूल न लाजें रे॥ ५३॥
आहार पाणी माहोमा देवें लेवें, वले कहे म्हारे नही संभोग।
एहवा भूठबोला भागल भेषधारी, त्यांरें लागों जोगने रोग रे॥ ५४॥
आधाकर्मी नें मोल रो लीधों, नितको एकण घर रों आहार।
ए तीनां दोषां रो फल ओलखायो, अल्प मात्त कह्यो विस्तार रे॥ ५५॥
आधाकर्मी नें मोलरो लीधो, नही वहरणों करडे कांम।
निरदोषण ने नितपिंड आहार, कारण पख्यां लेणो कह्यों तांम रे॥ ५६॥
आधाकर्मी नें मोलरो लीधों, ओं तो निश्चें उघाडो असुध।
नित पिंड तो ढीला परता जांणी वरज्या, आ तीर्थंकरां नी बुध॥ ५७॥

भेषधारी तो दोष अनेक सेवें छैं, ते पूरा कह्या न जाय।
वले साधपणा रो नांम धरावें, ते भोलां नें खबर न काय रे॥ ५८॥
अें तीनूं दोष तों जांण जांण नें सेवें, वले वद वद नें बोलें कूड।
त्यांरों घांण रो घांण बिगड गयों जाबक, ते गया वेंहती रे पूर रे॥ ५६॥
अें तीन दोष ओलखावण काजे, जोड कीधी छें पाली मभार।
संवत आठारें पचावन वरसें, भादरवा विद दसम बुधवार रे॥ ६०॥

ढाल : ३०

दुहा

भेषधारी लांबी तपसा करें, प्रगट कर दें लोकां माहि।
वले बतावें दिन पारणा तणो, जांणे दीधी डबडबी बजाय॥ १ ॥
त्यांमें कोइ लांबी तपसा करें, केइ जस महिमा कांम।
केइ पेट भराई कारणे, आछो आहार खावा रा परिणाम॥ २ ॥
ज्यूं ज्यूं सरावे तेहनें, ज्यूं ज्यू फल फूले होय जाय।
ज्यू ज्यूं कर्म बधे छें चीकणा, तिणसू संसार बधतो जाय॥ ३ ॥
पारणा रो दिन चावो करें, आछो आछो खावा रें काज।
सुध असुध पिण वेहरता, मूल न आंणे लाज॥ ४ ॥
सुध साध लांबी तपसा करें, चावी न करें लोका माहि।
वले न बतावे उण दिन पारणों, दोष लागतो जाणीने ताहि॥ ५ ॥
लांबी तपसा चावी नही करें, त्याने कपटी कहे छें मूढ।
उलटा दोष वतावें छे तेहमे, कर कर कूडी रूढ॥ ६ ॥
लाबी तपसा रो पारणो, चावो कीयां दोष लागें ताय।
तिणरा भाव भेद परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ७ ॥

ढाल

[रे भवियण जिन आज्ञा सुखकारी]

केइ भेषधारी लांबी तपसा करे जब, परगट करें लोका रें माहि।
वले पारणा रो दिन कहे लोकां मे, जाणे डवडबी दीधी वजाय रे। भणियण।
आत्मकाय विगोवो, ओछा वेवज पेट रे कारण।
भोला लोकां नें कांय डबोवो रे, परभव साहमो जोवो॥ १ ॥
त्यांरा श्रावक पिण ववेक रा विकल, जिण धर्म री रीत न जांणे।
तपसी ने दांन देवा रें कारण, अे पिण पारणो साथे आणें रे॥ २ ॥
अे पिण पारणा रों दिन कहि २ ग्रहस्थ ने, त्यांनें पिण तपस्या करावें।
आप तणा खावा ने काजें, त्यांने पारणो साथे अणावे रे॥ ३ ॥
ग्रहस्थ ने इग्यारस संवछरी रो, उनवास करताने नही करायो।
दूजे दिन त्याने उपास कराए, पारणो आप साथ अणायो रे॥ ४ ॥
अे पेटरे कारण ग्रीधी थका पापी, आरंभ करावणरो डर नांणे।
त्यांने श्रावक पिण तेसाइज मिलीया, ते विकलां ने विकल न जाणें रे॥ ५ ॥

आगरा पारणा रो तो निस करेनें, आरंभ करें छें विविध प्रकार।
तिणनें तपसी तणों भाव भेळें अणजांणी, गुर सहित डूबा कालीधार रे॥ ६॥
पाछली रातरा उठ सवेरा, ताकीद सूं चूल्हा धकावें।
उतावळ नीपजावें असणादिक, जांणें रखे तपसी फिरजावे रे॥ ७॥
कोइ तो पकवानां कर राखें, कोइ करें सीरादिक तांम।
कोइ सूंठ कूटेनें करें अळोइ, तपसी नें वेहरावण रें कांम रे॥ ८॥
कोइ दूध उनोकर अळगो मेलें, कोइ मोल लेइ आणें तांम।
कोइ हाट थकी घरे आंण राखें, तपसी नें वेंहरावन कांम रे॥ ९॥
इत्यादिक अनेक असुध करवा नें, आगा पाछा नेगे राखें तांम।
असुध नें सुध करता नहीं डरपें, वेंहरावन रा आंण परिणांम रे॥ १०॥
त्यांरा गुर पिण त्यांनें तेंताइ जांणें, असुध वेंहरता संक नहीं आंणें।
सुध असुध लेता नहीं सकें, त्यां चित दीधो छें खांनें रे॥ ११॥
साधां नें दांन देवाने काजें, श्रावगां आघा पाछा जीमावें।
ते तो दोष बयालीस में दोष छठों छें, ज्यूं ओ पारनों साधे जमावें रे॥ १२॥
आणंद आद दे श्रावक अनेक हूआ छें, त्यांनें सूतर मांहे सरांया।
त्यां साधां नें दांन देवारें काजें, पारना साग्रो साधे न जमाया रे॥ १३॥
तपसी तणा पारणा रे दिन, सामग्री ना घर मोटका जांण।
आछो आछो आहार देता जांणें तिण घर, पातरा मांहें आंन रे॥ १४॥
वास वास में घर सांकडा पातला हुवे ते, त्यांनें तो छेडें टाळ।
वास वास मांहे आहार आछो देवे छें, त्यां घर जावें संभाळ २ रे॥ १५॥
सतवंती गोचरी नें छोडेवें, यां गया गोचरी नांही।
एहवा भेषधारी पेटभरा छें पापी, त्यांरी विरूपति नें होती मांडी रे॥ १६॥
कदा मोटकें घर आहार आछो न देवें, तो दिन तिण घर वेंहरें नांही।
रसगीधी तणों आहार गवेषें, ताणा वेता त्यांरा घट मांहि रे॥ १७॥
तपसी रें तो आहार अलप चाहिजें, ते आवें थोडा घर मांहेरो।
तिण तपसी तणा पारणा रें दिन, मगला रह्या छें मूंह फाडी रे॥ १८॥
उण दिन तो तपसी रें ओलें सगला ल्यावें सरस आहार।
सांती सांति सूं घर संभाळ वेंहरे, जांणें हूवो मांडयो तेंवार रे॥ १९॥
ते आहार तपसी नें तपसी रा भेळो, मिलें सगलाई खावें।
उण तपसी लारें सगला हुआ गिरधा, किणनुं तपसी तणा गुण गावें रे॥ २०॥
तपसी लारे सगलाइ गिरधा हूआ, जीमें आज हूआ म्हें निहाल।
सूंहनी वांकेनें भेष लजायो, वांदेने नाटकीया वालों ख्याल रे॥ २१॥

नाटकीयो वरत उपर खेले, नाच अनेक विध आणें ।
नीचे उभा ते करें धीग धीगा, ए पिण दांन माहे सीर जाणें रे ॥ २२ ॥
नीचला धीग धीगा तों कीधा घणाइ, पिण दांन तो नाच सारुं आवें ।
दान आयों ते नाटकीयो नाच्यो तिणमूं, पिण मिल नें सगलाइ खावें रे ॥ २३ ॥
नाटकीयो वरत उपर नाच्यो ते, सगला कुटंब रो काम चलावें ।
ज्यूं यारें पिण लांबी तपसा करे ते, पारणे सारा ताजो खावें रे ॥ २४ ॥
लांबी तपसा रें पारणे तपसी जांणेने, गमतो आहार आणेनें देंणो ।
वले गोचरी मे गमतों आहार जांणेने, वले मांगी मांगीनें लेणो रे ॥ २५ ॥
गरढा गिलांण रोगी तपसी रे कारण, गमतो आहार गवेपें ते लेखें ।
यांरें ओलें भेषधारी सगला, ताजो ताजो आहार गवेपें रे ॥ २६ ॥
इण रीतें ताक ताक आहार गवेपें, ते पिण खासी सराय सराय ।
एहवा भेषधास्यां में चारित नांही, चारित हुवें त्यारो कोयला थाय रे ॥ २७ ॥
इह लोक रा अर्थी तपसा करें त्यांरा, चोखा नही परणांम ।
ते तपसा ने परगट करदें लोका मे, खावा पीवा जस कीरत कांम रे ॥ २८ ॥
साधु नें लांवो तप करें जव, प्रछन छांनें करणो ।
ग्रहस्थ नें कहणो जिण वरज्यो, तिणरो आवसग में निरणों रे ॥ २९ ॥
जोग संग्रह ना बोल वतीस चाल्या छे, तिण मे सातमो बोल पिछाणो ।
अजांण्यों तप साध नें करणो, अग्यात कुल गोचरी जाणो रे ॥ ३० ॥
वले समवाअंग चोथा अंग माहे, जोग सग्रह नां बोल वतीस ।
त्यां पिण अजांण्यो तप करणो, इम भाष गया जगदीस रे ॥ ३१ ॥
वले उत्तराधेन इगतीस मे अधेने, प्रश्नव्याकरण दसमा अदेन मांहि ।
तिहां पिण वतीस जोग सग्रह छे, नांम मात्र कह्या जिणराय रे ॥ ३२ ॥
वेसाली नगरी वीर पधास्या, तिहा पचख दीया मास च्यार ।
त्यां पिण तपसा ने पारणा रो दिन, किणने कह्यो न दीसें लिगार रे ॥ ३३ ॥
त्यांनें दांन देवा री भावना भाइ, च्यारुं महीना जीर्ण सेठ ।
छांनी तपसा भगवंते कीधी, ओ सुध ववहार छे नेट ॥ ३४ ॥
अभिग्रह करे ते न कहे लोकां ने, जाणें रखे कोइ दोप लगावें ।
ज्यू लांवी तपसा रो पारणों जाणे जव, केई भोला असुध वेहरावें ॥ ३५ ॥
एक आदि देइ दातरी तपसा करें ते, ग्रहस्थ नें न कहे तांम ।
ग्रहस्थ नें कह्यां दोप लागेतो जांणो, लांवी तपसा पिन जांणो आंम ॥ ३६ ॥
साध रे महीना रो पारणो जांण्यों, बाइ भीरो करने वेहरावें ।
तिणरी जायगा में पारणो करे साध, तिणरो मोंना रो वारलो जावे रे ॥ ३७ ॥

कर्म जोगें साध नें वमण हूइ जव, साध रो चित्त आयो ठिकांणें।
जब आप तणो अवगुण पिण सुझ्यों, आहार नें पिण असुध जांणें रे॥ ३८ ॥
गाढों निरणों करनें सीरो न लीधों, उण पिण सीरों मोनें कर दीधों।
ते आहार कीयां म्हांरी भिष्ट हुइ मत, तिणरो बारलों चोर में लीधो रे॥ ३९ ॥
बाइ तो सीरों करे कर्म बांध्या, वले बारलों दीधो खोयों।
आ बाइ तो दोनूं प्रकारें बूडी, म्हें पिण चारित डबोयो रे॥ ४० ॥
म्हारा पारणा रो दिन बाइ जांण्यो तो, तिणसूं ए कर्म हूवों भारी।
ए सवली विचार तिहां थी निकलीयो, आयों बाइ रा घर मझारी॥ ४१ ॥
बाइ ने साच बोलाए साध, बारलों पाछों दीधों ताय।
पछें सगली बात सुणाए बाइ नें, ओलंभो दीयो तिणनें समझाय रे॥ ४२ ॥
सीरो असुध खादों तिणसूं बारलो लेगों, जब तूं तो ओर रे माथें देती।
इण पाप थकी परभव दुखपाती, अठे पिण घणा घमेडा लेती॥ ४३ ॥
आ कथा तो भेषधारी जांणें छें, ते कहि कहि घणी दिढावें।
पिण पोतें तो तपसा लांबी करे जब, घणा लोकां नें तुरत जणावे रे॥ ४४ ॥
लांबी तपसा नें पारणा रो दिन, घणा लोकां में देवें फेलाइ।
पेटभरा इह लोक रा अर्थी, जांणें डबडबी चोडें बजाइ रे॥ ४५ ॥
बाइ तों पारणो विना जांणायां जांण्यो, तिणसूं हूवो बिगाडो।
तो आपरें मुतलब तपसा जणावे, ते भव भव होसी खुवारो रे॥ ४६ ॥
गाला गोलो करे साध असुध लेसी, असुध आहार बाइ ज्यूं देसी।
ते दातार नें लेवाल वेहुइ, आगें घणा घमेडा लेसी रे॥ ४७ ॥
इह लोक रें अर्थे तपनही कारणों, परलोक रें अर्थे न करणों।
कीरत सलागादिक रे पिण अर्थे न करणों, दसवीकालक नव में अधेन निरणों॥ ४८ ॥
तप करणों कह्यों एक निरजरा नें अर्थे, ते लोकां में क्यां नें पमासी।
जे तप करनें पमासी लोकां में, तिणरा फल आछा किम पासी॥ ४९ ॥
केई इह लोक रें अर्थे करे त्यांसूं, छांनें केम रहवायों।
परगट लोकां में कीयां विण तिणरों, जांणे पेट आफर गयों ताह्यो रे॥ ५० ॥
इह लोक रें अर्थें तप करेनें, ठालां बादल ज्यूं करे ओगाज।
मोटी तपसा सूं लेनें पारणा तांइ, जांणे ढीबकी रही छें बाज रे॥ ५१ ॥
पांच सात तांइ मोटो तप नहीं दीसे, मोटो तो पख मासादिक जांणो।
एहवो मोटको तप लोक जांणें तो, दोष लागण रो दीसें ठिकांणो रे॥ ५२ ॥
मोटा तप रो पारणों कह्यां लोकां में, गुण तो कांइ न दीसें।
दोष लागतो उघाडों दीसे तिणसूं, छांनों तप कह्यों जगदीसें रे॥ ५३ ॥

कोई भेषधारी भागल फिरे एकेलो, ते तपसी रो नांम धरावे।
वेलें वेलें पारणों कहेकहे, लोकां में ठागो चलावें रे ॥ ५४ ॥
तपसी तणों नाम ले ले कपटी, ठग ठग लोकां रा माल खावें।
जांणें मोनें तपसी लोक जांणे तो, आछो आछो आहार वेंहरावें रे ॥ ५५ ॥
तिणरी भोला लोकां नें तो ठीक नहीं छें, तपसी जांण आछो वेंहरावें।
इणरा तप तणो ठागों नही जांणें, तिणसूं लोक ठगावे रे ॥ ५६ ॥
ते डील तणों घष्ट पुष्ट थयो छे, वले लुटपुट डीला सनूरों।
वले चाल पिण तिणरी छेंठी देखे, बुधवंत जांण लीयो फितूरों रे ॥ ५७ ॥
लूखों सूकों सरीर तपसी तणो हुवें, वले सरीर हुवें तेज रहीत।
वले तपसी तणा लोही मांस ढीला हुवें, चलगत हुवे वेराग सहीत रे ॥ ५८ ॥
केइ चुतर विचक्षण डाहा हुवें ते, दोयां नें रूडी रीत पिछाणें।
तपसी नें तों तपसी जांणेले, कपटी ने कूडो जांणे रे ॥ ५९ ॥
एहवा भेषधारी भागल भिष्टी नें, एहवों भागल भिष्टी मिलें आंणों।
तो ओं ठग ठगनें माल खाअें लोकां रा, त्यारी भोला ने नही पिछांणो रे ॥ ६० ॥
भेषधार्‍यां तणा किरतब ओलखावण, जोड कीधी नाथदुवारा मझार।
समत अठारें वरस छपनें, काती सुद आठम मंगलवार रे ॥ ६१ ॥

●

ढाल ३१

[प्रभव०]

मोची तणों थो दीकरों, ते गयों देसांतर तांम।
आगें काल कीयों राजा तिहां, मोची गयों तिण ठांम॥ १॥
पुत्र नहीं तिण राय नें, जब किणनें बेंसांणें पाट।
अमराव सहु नें मित्रवी, मिलिया थाटो थाट॥ २॥
माहो माहि मिसलत करी, हथणी सिणगारो आज।
कुंवरी वरमाला घालसी, तिणनें बेंसांणां राज॥ ३॥
ए वात ठेंहराइ मिलीनें सहू, हिवें मेल्या रांणोंरांण।
तिण स्वयंवर मंडप मझें, मोची पिण उभों आंण॥ ४॥
तिण मोची रा गला मझें, कुंवरी घाली वरमाल।
दीठों रूप रलीयांमणों, रायपुत्र जाण्यो सुखमाल॥ ५॥
मंत्रीसरां मोची नें पूछीयों, तुमनों कुण कुल कुण जात।
जब इण कह्यों खत्री कुल जात छां, उंचो गोत कह्यो विख्यात॥ ६॥
इम सांभल सहू हरखीया, परणाइ राजकुमारी।
राज बेंसांणें राजा कीयों, मोची नें तिणवारी॥ ७॥
मात पिता छे मोची तणा, तिण देस में पडीयो काल।
मउ साथे आया तिण नगरीयें, तिहां मोची बेठों सरवर पाल॥ ८॥
तिण मातपिता नें ओलखे, पगां पड्यों छें आय।
समझाए ल्यायों सहर में, त्यां पिण दीधी जात छिपाय॥ ९॥
मोची मातपिता सहीत सूं सुखे राज करें तिणवार।
पिण जात सभाव मिटें नहीं, त्यांरों त्यांसूं पडीयों उघाड॥ १०॥
बहुना पगनी मोचडी, तिणरी कूट गइ छें तूट।
जब सुसरें तिण मोचडी तणी, चोखी लीधी कूंट॥ ११॥
कूंटी ले तो देखीयों, सुसरा नें तिणवार।
सांसो पडीयों तेहनें, जांण्यों खाधी बात विकार॥ १२॥
राजा दीसे रलीयांमणों, मन मांन्यों मिलीयों मेल।
कूंटी सांह्यों भाली जांणीयो, क्यूं दीसें जात में भेल॥ १३॥
कूंटी अहलांणें जांणीयों, आ जात दीसें छें पोची।
ओ राज अंस दीसें नहीं, संकेत जात रो मोची॥ १४॥

तिण रात धणी नें पूछीयो, एक अरज हमारी सुणसों।
हुवे जेसी फुरमावो मो कने, आप जात रा कुणसों ॥ १५ ॥
तूं तो म्हारी अस्त्री, हू छू थारो वर।
पांणी तो पीधा पछें, हिवे कांई पूछे छे घर ॥ १६ ॥
जब बलती रायकुवरी कहे, हूं अस्त्री ने थें वर।
जो भेल हुवे तुम जात मे, तो जातो दीसे घर ॥ १७ ॥
जो पहली मोंनें जताय दो, तो काइ बांधे लेउं बात।
परधान कांमदार प्रोहत भणी, तेडाउं रातोरात ॥ १८ ॥
इणनें वार वार पूछयो घणो, जब ओ पिण उडो आलोची।
थारे करणों वेसो कर लीजो, हू छू जात रो पिण मोची ॥ १९ ॥
जब रातोरात बोलवीयो, रायकुवरी परधांन।
विगडी बात सुधारलों तो, थें पूरा बुधवांन ॥ २० ॥
वले राजा कहे परधांन नें, तूं गलो हमारो काट।
हिवे ढील म कर इण काम री, किण री मत जोए वाट ॥ २१ ॥
जब परधांन कहे किण कारणें, इसडी बात करो छो पोची।
जव राजा कहे हूं राजा नही, हू छू जात रो मोची ॥ २२ ॥
आ बात सुणे राजा तणी, परधांन पिण पांम्यो हरख।
ओ पिण जात हीणो हूंतो, इणरेइ मिट गइ मन धरक ॥ २३ ॥
ओ दूहा देइ बोलीयो, पगभाल रह्यो छे लूंब।
मारी चिंता मूल करो मती, हूं जात तणो छूं डूंव ॥ २४ ॥
जब राज कहे तू झूठ बोलनें, रखे पाडे म्हारी आव।
जब महिलां मांहे डूंबडे, लेइ वाजाइ रवाब ॥ २५ ॥
हिवे तेडावो कांमदार ने, उण सू गाढी वाघो वात।
जो आपे चावा हुवां, तो उ करसी दोयां री घात ॥ २६ ॥
इणने पिण तेडावीयो, ते पिण आयो रातोरात।
राजा परधांन कहे तेहनें, तूं म्हां दोयां री कर घात ॥ २७ ॥
जब कांमदार कहे किण कारणे, इसी कहो थे वात।
जब राय परधांन दोनूं कहे, म्हांरी विगड गइ वात साख्यात ॥ २८
हू मोची ओ डूंबडो, म्हे ठागा सूं खाधो राज।
हिवे गलो काट तू म्हांरो, ज्यूं रहें दोयां री लाज ॥ २९ ॥
इण बात सुणे दोनूं तणी, कांमदार हरख्यो तिणवार।
मिट गइ चिंता तेहनी, हिवे डर नही रह्यों लिगार ॥ ३०

थे चिंता मत राखो मांहरी, मोसूं मत जावो खोबी।
थे तो मोची नें डूंब छो, हूं पिण जात रो धोबी ॥ ३१ ॥
जब राजा धोबी नें कहें, रखे बात करें तूं फीटी।
जब धोबी महिलां मझे, दीधी हरष सूं सीटी ॥ ३२ ॥
हिवें तीनूं जणां मतों कीयों, हिवें ल्यावो प्रोहित बोल्या।
बात चावी हुवें आपणी, तो ओ तीनूं देवें मराय ॥ ३३ ॥
हिवें प्रोहित नें बोलवीयों, तिणहीज रात मझार।
कहें प्रोहित नें तीनूं जणां, म्हां तीनां नें तूं मार ॥ ३४ ॥
जब प्रोहित कहें किण कारणें, करूं तीनां री घात।
जब कहें तीनूंइ तेहनें, म्हांरी बिगडी बात साख्यात ॥ ३५ ॥
हूं राजा तो मोची अछूं, ओ डूंब छें परधांन।
कांमदार धोबी हूवों, म्हें तीनूं नही सुधमांन ॥ ३६ ॥
म्हां तीनां नें तूं मारसी, तो म्हांरी सोभा रहसी तांम।
उघाड न पडसी लोक मे, सहू सुधरसी कांम ॥ ३७ ॥
ए बात सुणीनें हरखीयो, थे डर मत राखो म्हारों।
थे मोची डूंब नें धोबी छों, ज्यूं हूं पिण जात रो पींजारों ॥ ३८ ॥
जब राजा कहें झूठ मत बोलजे, जब काढी पीजण री घाइ।
धट धूं धूं करतो बोलीयों, जब संका न रही काइ ॥ ३९ ॥
ते ठीक अमरांवां नें नहीं, यां राज कीयों छें खूब।
यां च्यारूं जणां ठागों कीयों, तिणरी बाहर न बूंब ॥ ४० ॥
वले माहोमा एकएकनो, न करें मूल उघाड।
जात सघलां री पाडवी, तिणरो डर नहीं रह्यो लिगार ॥ ४१ ॥
इण दिष्टंतें जांणजों, भेषधारी छें अनेक।
ते साध बाजें लोक में, त्यां पेंहर बिगाड्यों भेष ॥ ४२ ॥
त्यांरा टोला बाजें जू जूआ, जू जूइ सरधा अनेक।
त्यांरो आचार पिण छें जू जूओं, पिण कांम पड्यां कहें एक ॥ ४३ ॥
पाणी सगलां माहे मरे, सगला सेवें अणाचार।
ते माहोमा सहू मिल गया, त्यांरों करें कुण उघाड ॥ ४४ ॥
माहोमा सरधा एकएक नी, खोटी जांणें छें अंधकार।
पिण खोटा त्यांनें कहिता डरें, जांणें म्हारोइ करेंला उघाड ॥ ४५ ॥
असाध कहें जों तेहनें, ते पिण मनें कहें असाध।
जब उघाड पडें दोयां तणों, तिणसूं न करे छे विषवाद ॥ ४६ ॥

ते ठागो चलावें छें लोक में, ठग ठग खाअें लोकां रा माल।
ते जासी नरक निगोद में, त्यामें परसी घणा हवाल ॥ ४७ ॥
माहोमा कहे म्हे सर्व साध छें, त्यांने मन माहे जांणें असाध।
एहवा भेषधारी छे तेहने, किण विध होसी समाध ॥ ४८ ॥
ते माहोमा बंदणा छोडाय दे, वले मुख सूं कहे त्यांने साध।
एहवा भूठाबोला छें तेहनें, भव भवमे होसी व्याध ॥ ४९ ॥
ज्यूं यां च्यारूं जणा ठागों करी, राज कीयो मोटे मंडांण।
ज्यूं अें भेषधारी ठागो करी, माल खाअे लोकां रा आंण ॥ ५० ॥
ज्यूं अें माहोमा च्यारूं जणा, कहे माहोमा सुधमांन।
ज्यूं भेषधारी माहोमा कहे, म्हें सर्व साधू छां गुणखांन ॥ ५१ ॥
ज्यूं अें माहोमा च्यारूं जणा, जांणे म्हें छां घणा असुध।
ज्यूं भेषधारी माहो माहि में, जांणें म्हे पिण नही छा सुध ॥ ५२ ॥
ए च्यारूं जणा चावा हुवें, तो एकण भव में दुख थाय।
पिण भेषधारी दुखिया होसी घणा, त्यांरो कह्यो .कठा लग जाय ॥ ५३ ॥
भेषधारी भागल तूटल भणी, त्यांने ओलखे जथा तथ बुधवांन।
त्यारो संग परचो छोडाय दे, घालें घटमें ग्यांन ॥ ५४ ॥
रायकुमारी डाही हुंती, तिण कीधी त्यांरी पिछाण।
कूंटी लीधी देखनें, मोची लीधो जांण ॥ ५५ ॥
तिण सरीखो कोइ चुतर होसी, ते करसी पूरी पिछांण।
आचार पाडूओ देखनें, भेषधारी लेसी जांण ॥ ५६ ॥
एक मोची ने परखीयां, तीनूं परख्या तेह।
ज्यूं एक टोलानें परखसी, ते सगला परखसी जेह ॥ ५७ ॥

●

ढाल : ३२

दुहा

ओ दुषम आरो पांचमो, ते काल उतरतो जांण।
तिणमें भेषधारी भागल घणा, समकत विण मूंढ अयांण॥ १ ॥
त्यांसूं आचार तों पलें नहीं, तो पिण नाम धरावें साध।
कने सांग राखें साधां तणो, पांचूं व्रत दीया छें विराध॥ २ ॥
त्यांरा दोष उघाडे तेहसूं, करें छें कजीया राड।
धरणो पाडें बाजार में, लडवा नें हुय जावे तयार॥ ३ ॥
त्यांरा श्रावक पिण सेंमल हुवें, गुरां नें भखाय भखाय।
धरणो परावण री त्यारी करें, मेले बाजार रे माहि॥ ४ ॥
त्यां लज्या छोडी लोकां तणी, वले लजायो साध रो भेख।
जो किणरे संका हुवे, तो अरूवरू लो देख॥ ५ ॥

ढाल

[रे भवियण जिन आज्ञा]

त्यांरो सीलव्रत कोइ भागो सुणेंनें, तिणरो कोइ करें उघाड।
जब साध श्रावक मिल भेला होय नें, लडवा नें होय जाय त्यार रे। भवीयण।
त्यानें साध सरधीजें केम, त्यांरा भागा व्रत नें नेम रे।
हूआ ठाला ठीकरा जेम* ॥ १ ॥
त्यांनें श्रावक पिण तेंसा इज मिलीया, त्यांरे न्याय तणी नही नीत।
साच भूठ तणा नीकाला विनाइ, यूंई भगडें बेरीत रे॥ २ ॥
चोथो व्रत भागो कहे छें जिण रो, तिणनें तो बेठो राखें ताहि।
ओर च्यार जणा मिल भेला होय नें, धरणो पाडो बाजार रे माहि रे॥ ३ ॥
अें सुध बुध विना नागडा निरलजा, थांनें जाण्या इण धरणा लायक।
ते ववेक रा विकल हुंतां च्यारेइ, त्यांनें मेल्या टोला रे नायक रे॥ ४ ॥
ते च्यार जणा छे मूल रा करडा, ते आया बाजार रे माहि।
ते रीस भस्या छे जाज्वलामांनं, त्यां पासें उभा छें आय रे॥ ५ ॥
थें म्हारा साध रो व्रत भागो कहो छों, ते तो दो छों अणहुंतो आल।
हिवें साच नें भूठ री खबर पडसी, तिणरो काढण आया छां नीकाल रे॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

इण वात रो निकाल काढ्यां विण थांनै, च्यारूं आहार नहीं खांणो।
अनंता सिघा री आंण छे थांने, वले तीर्थंकरां री आंणो रे॥ ७॥
वले राज री आण छै थांने, मत खाय जो च्यारूंइ आहार।
म्हे पिण च्यारूंई आहार न खावां, ओ धरणो दियो मफ बाजार रे॥ ८॥
अनंता सिधा री ने तीर्थंकरां री, म्हें आण दीघी छै मफ बाजार।
वले राजा री आंण दराइ छे थांने, मत खायजो च्यारूंइ आहार रे॥ ९॥
मफ.बाजार में एहवो धरणो पाख्यौ, घणा लोकां ने कीया भेला।
एहवां भेषघारी साध रा भेष माहे, जांणें नाच्या कुब्दी खेला रे॥ १०॥
यांरा साध साधवी ववेक रा विकल, धरणो पारण सूं राच्या।
भेषधारी इणें दुषम कालें, ओघड उघाडा नाच्या रे॥ ११॥
ज्यांनें अन पांणी खांवा री आंण दराइ, ज्यांरी वंछी अकालें घात।
मिनषां ने मारण रो उपाय कीयो छै, त्यामें साघपणो नही अंसमात रे॥ १२॥
साघ गोचरी जावें छें तिण घर मे, आगें उभो मिख्यारी आंणो।
तिण घर में प्रवेस न करें साध, पडती अंतराय जांणो रे॥ १३॥
तो सांप्रत त्यांने आंण दराइ, च्यारूं आहार री दीघी अंतराय।
उघाडी घात वांछी छें त्यांरी, ते पिण विकलां नें खबर न काय रे॥ १४॥
भूख रा सेठा जांण्या त्यांनें मेल्या, पेंलां ने भूख रा काचा जांण।
ते थोडा में लातर भूठा पर जासी, के छोड देसी अकाले प्रांण रे॥ १५॥
त्यां च्यारूं जणां रां नाम दीया लोकां मे, अ तो च्यारूं नालां छे भारी।
नागण वाघण किंकंकिला संभूबांण, अ वेख्यां री मारणहारी रें॥ १६॥
एक तो भेषधारी कहें इम बोल्यो, मुंजरी डोरी सीघ री आण।
यांरा ने म्हांरा पग भेला बांध देसां, आघा पाछा न देसां जांण रे॥ १७॥
एहवी वातें करें लोक त्यांरें मूंढें, बले ठांम ठांम कहे परपूठे।
तो पिण निरलजा भेषधारी, धरणा सूं नहीं उठें रे॥ १८॥
एहवा भारी दोषां री ठीक नहीं छें, त्यांने समकत पिण नहीं पावें।
ते पिण सांग पेंहरे साध वाजें लोकां मे, ते भेष नें यूंही लजावें रे॥ १९॥
त्यांनें श्रावक पिण तेहवा इज मिलीया, ते अकार्य करतां कुण पालें।
जैंसा कूं तेसा आय मिलीया जब, पाधरा किण विघ चाले रे॥ २०॥
धुरसूं ओ हीज अन्याय उघाडो, ते अंतर माहे न देखे।
जिणरो व्रत भागो कहें ते नही फगडें, वीजा धरणो पाडचो किण लेखें रे॥ २१॥
साचो भूठो हुवे तो उणरी उ जांणे, वीजाने पुरी खबर न कांय।
ते निसंक सूं इणनें साचो ठेहरावण, धरणो पाड्यो बाजार रे माय रे॥ २२॥

जिणरा सीलव्रत नें भागो कहें छें, तिणनें पोते आए करणो निरणो।
इणरें वदले बीजा भेषधास्यां ने, किसें लेखे आए देणों धरणो रे॥ २३॥
घणां दिनां लग बाजार माहि, वासी धरणो पाड्यो।
इहलोक नें परलोक दोनूइ, जीतबं जनम विगाड्यो रे॥ २४॥
इह लोक तो फिट फिट हुवा लोकां में, गांमां नगरां मे घणा भूंडा दीठा।
भेष भेषंतर जात न्यात रें मांहि, सगलां में पडीया फीटा रे॥ २५॥
सुध साध जिणेसर ना छै त्यांनें, धरणो पारण री नहीं रीत।
भेषधारी भागल धरणा देसी, ते चिहूंगति में होसी फजीत रे॥ २६॥
एहवा भारी भारी दोष चोडे सेवे, ते पिण साध लोकां में वाजें।
अं तो नागडा निरलज दीसें उघाडा, त्यांरा श्रावक पिण त्यांसूं न लाजें रे॥ २७॥
चोवीस तीर्थंकर ना सासण माहे, किणही धरणो पास्यो दीसें नांहि।
इण दुषमकाल माहे भेषधास्यां, धरणो दीधो बाजार रे मांहि रे॥ २८॥
जो सुध साध रे किण आल दीयो हुवें, तो साध तो सुमता आंणें।
ओर किणहीनें दोष न देवें, आपरा संचीया कर्म जांणें रे॥ २९॥
जो म्हे किणरेइ माथे आल दीयो छें, तो आल म्हांरेंइ आयो।
ते आल समें परिणांमां खमीयां, म्हारें कर्म निरजरा थायो रे॥ ३०॥
जो इतरी करणी नावें साध सूं, अण बोल्यों रहिणी नावें।
ते च्यारूइ आहार ना त्याग करें नें, सागारी संथारो ठावे रे॥ ३१॥
इण कलंक उतरीयां विण मोनें, च्यारूं आहार खावारा पचखांण।
जो कलंक न उतरे मारा माथा थी, च्यारूं आहार न खाउ जांण रे॥ ३२॥
इण विध साध अणसण करनें, आल उतरे तो उतारे।
जो कर्म जोगे आल नहीं उतरे तो, किण सूं धरणो मूल न पाडें रे॥ ३३॥
जब केई भेषधास्यां रा श्रावक इम बोल्या, इम कीयां अें सुधा न थावें।
आगें तो आल उतारण देवता आवता, हिवडां देवता नहीं आवें रें॥ ३४॥
तिण सूं आल देवे तिण नें पाधरो करणो, चोडे पारणो छें धरणो।
च्यारूं आहार खावा री आंण दराए, इण विध पाधरो करणो रे॥ ३५॥
भूखां मरसी वले तिरसां मरसी, जब उतार देसी उवे आल।
तिण सूं म्हांरा साध धरणो पाडे छें, वेगो काढण निकाल रे॥ ३६॥
यांरा श्रावक पिण एहवा छें अग्यांनी, धरणो पाड्यां में दोष न जांणें।
त्यां जिण मारग ओलखीयों नांहीं, समझ पड्यां विण उंधी तांणें रे॥ ३७॥
यांरा श्रावक केइ पाधरा बोलें, साध नें नहीं देणो धरणों।
केइ विकल कहें देणो छें धरणो, यांनें माहोमा पिण नहीं छें निरणो रे॥ ३८॥

घरणो पारण गया ते ववेक रा विकल, त्यांनें मेल्या ते विकल विसेख।
ते हीया फुट गधा रा साथी, छोडी छें भेष री टेक रे॥ ३९॥
ते पिण पिंडत वांजें लोकां में, घरणा पाड्यां में दोष न जांणें।
एहवा अजाण ते मूंढ मिथ्याती, ते जिण धर्म नें केम पिछांणें रे॥ ४०॥
साव रो नांम धराए अग्यांनी, घरणो पाडवा लागा।
भोला लोकां माहे पूजावें, ते व्रत विहूणा नागा रे॥ ४१॥
घरणो पाड्या में धर्म जांणें ते, निश्चेंइ मूढ मिथ्याती।
तिणसूं आहार पांणी कोई भेलो करे छें, ते पिण तिण रो छें साथी रे॥ ४२॥
अन पाणी खावा री आंण दरावें, ते जेंन तणा छें जिंदा।
एहवा बिगडायल साघ रा भेग में, ते होय रह्या मोह अंघा रे॥ ४३॥
घरणो पाडे साघ रा भेष मांहे, ते निमाइ निश्चें बूडा।
एहवा भेषधार्‍यां नें गुर करसी, ते चिहुं गति माहे दीससी भूंडा रे॥ ४४॥
त्यांरा घरणा पाड्यां माहे दोष बतावें, त्यांरे माथे दें अछतो आलो।
थारें पिण साघवी घरणो दीघो, तिणरो पाछो न काढें निकालो रे॥ ४५॥
दरवार थकी प्यादा मेंलें नें, यांनें बाजार माथी उठाया।
वले सिन्यास्यां पिण नषेघ्या त्यांनें, जब भूठा पड हो गया काया रे॥ ४६॥
घरणो पाडेनें निकालो न काढ्यो, पाछा फिटा पडनें आया।
आल तो माथें ज्यूं रो ज्यूं राख्यों, ते तो सोभा कठेंइ न पाया रे॥ ४७॥
चोथा व्रत भांगां रो आल लीयां फिरें छें, अजे क्यूं नही काढे छे तार।
आल रा देवाल तो अठे नेडा फिरें छें, हिवें छोडी क्यूं यांरी लार रे॥ ४८॥
इण लेखे तो व्रत भागो छें इण रो, ते निश्चें तो ग्यांनी जांणें।
यांरा टोलावालां नें तो निश्चों न आयो, अें संका सहित क्यूं तांणें रे॥ ४९॥
भेषधार्‍यां नें ओलखावण काजें, जोड कीधी पाली सहर मझार।
संवत अठारें वरस गुणसठें, आसोज विद एकम रविवार रे॥ ५०॥

●

रत्न : ३४

अवनीत रास

ढाल : १

दुहा

मद विषे कषाय वस आत्मा, तिणसूं विनो कीयो किम जाय।
तिणरी वर्णें खुरावी अति घणी, ते सुणजो चित ल्याय ॥ १ ॥

ढाल

[विनां रा भाव सुण सुण गु जे]

कोइ गण मे हुवे साधु अहकारी, तिणरी थोडा में हुय जावे खुवारी।
उणरों गुण कही पोगां चढावे, तो उ थोडा मे फलफूल थावे ॥ १ ॥
जो उणनें गुर गुरभाइ सरावे, तो उ मगज मे पूरों न मावे।
जव रहे टोला में राजी, ठाला वादल ज्यूं करे ओ गाजी ॥ २ ॥
इसडो अभिमांनी दोष लगावे, तिणसू आलोवणी नही आवे।
इह लोक रो अर्थी मूंढ वाल, सल सहीत कर जावे काल ॥ ३ ॥
इसडो अभिमांनी हुवे अवनीत, कदे चाले रीत कुरीत।
तिणने गुर निषेदें घणा मांय, तो उ गुर रो धेषी हुय जाय ॥ ४ ॥
तिण भूठा ने कहे कोइ भूठो, तिण सूं तो रहे नित रूठो।
खपे छे तिणने देवा आल, जांणे टोला मासू देउ टाल ॥ ५ ॥
यां तो घणा सांधां रे माहि, म्हांरो आव न राखी कांइ।
म्हारी आसता चोडे उतारे, तो हू क्यांने रहू यारे सारे ॥ ६ ॥
याने छोडेने होय जाउं न्यारो, यारे पिण करू वोहत विगारो।
यामे दोप परूपू भारी, जव खवर पडे यांने म्हारी ॥ ७ ॥
यारा चेला ने वली चेली, त्याने फाड करू म्हांरा वेली।
इसडी चितवे मन मांय, मिले ओर साधा सूं जाय ॥ ८ ॥
जिण विध गुर सूं मन भागे, तेहवी वात करें तिण आगे।
जिण विध जागे गुर सूं धेष, तेहवी करे वात वगेप ॥ ९ ॥
वले वोलें आल पंपाल, भूठा २ दें गुर रे आल।
वले दोप अनेक वतावे, जावक खोटा सरधावे ॥ १० ॥
गुर गुरभाई उपर धेष, त्यांरा अवगुण वोले अनेक।
जूंना २ खुरट उखेले, आपरे मन माने ज्यूं ठेले ॥ ११ ॥

वले आप रें स्वार्थ नावें, त्यांमें दोष अनेक बतावें।
केकांरी तों हूं परतीत नांणूं, त्यांनें थेटरा असाध जांणूं ॥ १२ ॥
टोला मांहे तो घणी ढीलाई, कह्यां ठीक न लागें कांई।
तिणसूं म्हांरे तो हूवेणो न्यारो, यांमें कुण विगाडें जमारों ॥ १३ ॥
जो हूं इसडा जांणतो यांनें, तो हूं घर छोडतो क्यांनें।
हूं तो घर छोडनें पिछतांणो, में तो खोटो खाधा अजांणो ॥ १४ ॥
कलह लगावण री करें वले वात, जाणें फाड लेउं म्हांरे साथ।
जब पेंलों हुवें कांन रो काचो, तो उ मांन ले इणरो साचों ॥ १५ ॥
जब ओं राखे इणरी परतीत, ओ पिण बोलें इणहीज रीत।
ओ तों किणही में दोष न जांणें, इणरा कह्यां सूं ओपिण तांणें ॥ १६ ॥
जब ओ आपरो बेली जांण, पछें गुर सूं झगडें आंण।
या बेंठाहीज उंधो बोलें, आंगुणां रो पिटारो खोलें ॥ १७ ॥
यां आगें बोल्यो तिणहीज रीत, गुर आगेंइ बोले विपरीत।
वले बोले अन्हाखी अलाल, गुर नें देवें झूठा आल ॥ १८ ॥
जिण इणने चाल्यो थो झूठो, तिणसूं तो बेंठो थो रूठों।
तिणमें दोष अनेक वतावें, मनमानें ज्यूं गोला चलावें ॥ १९ ॥
हूं तों यांने न जांणूं साध, घर में थकां रो जांणू असाध।
यांरा महाव्रत पांचूंइ भागा, सुमत गुपत में दोषण लागा ॥ २० ॥
यांने राखसो टोला माहि, तों बारें नीकल सूं ताहि।
थें तो यांरी करों पखपात, तिण सूं मांनूं नहीं थांरी वात ॥ २१ ॥
वले घणी साधवीयां माहि, साधपणो न जाणूं ताहि।
वले दोष घणांमें वतावे, विपरीत पणें सुणावें ॥ २२ ॥
हूं धरती छोड परो नही जाउं, यां खेत्रां में साथे लगो आउं।
थां सांहमों उतर सूं आंणो, ओर गया ज्यूं मोंने म जांणो ॥ २३ ॥
थांरा दोष घणाने सुणाउं, थांने चोडें असाध सरधाउं।
इम बोले घणो विकराल, संकें नही देतो आल ॥ २४ ॥
जिणसूं वात बांधी थी भेली, तिण चेपी साथे लगी मेली।
कांयक दोष ओ पिण काढे, उणनें वले पोगां चाढें ॥ २५ ॥
इणरी आगेंई कीधी पखपात, झूठी साख भरी साख्यात।
जब इणनेंई निखेध्यो थो गाढों, तिणसूं ओपिण बोलें आडो आडों ॥ २६ ॥
न्याय निरणा तणी नही वात, झूठी करवा लागों पखपात।
न्याय निरणारी हुवें नीत, तो इणने निषेधे इण रीत ॥ २७ ॥

ओं तों तौमे हीज छे वांक, थें दोषण राख्या ढांक।
थे तो लोप दीधी मरजाद, तूं तो भूठों करें विषवाद ॥ २८ ॥
घणा दिनां काढे दोष अनेक, तिणरी वात न मांनणी एक।
आपांरे छें इसडी मरजाद, हिवे क्यांने करें विखवाद ॥ २९ ॥
इणनें इण विध पाडें कूडो, घणा बेंठा घालें मुख धूडों।
पिण चोरां कुत्ती मिली तेह, ते तो पोहरा किण विध देह ॥ ३० ॥
ज्यूं मिलीयों अवनीत सूं जेह, तिणने निषेधसी किम तेह।
जब गुर जांण्यों इणरें सीहें, ओं तो बोलतो मूल न बीहें ॥ ३१ ॥
ओं तो दीसें छें भारीकर्मो, निरलज घणों वेसरमो।
इणने प्रतख सूभी भूंडी, जब गुर तो विचारी उंडी ॥ ३२ ॥
रखे छूट एकलों थावें, रखे सका घणां रे परजावें।
रखे गूंजे पाखंडी अयाण, रखे जिणमत री पडें हांण ॥ ३३ ॥
रखे घट जायेला उपगार, बेंदो उठेला लोक मझार।
जो इणने करडा कहूं इणवारो, तो ए छूट होय जायला न्यारो ॥ ३४ ॥
ओं तो चढियो क्रोध अहंकारो, तो हिवें करणो कुण विचारो।
जो नरमाई कीयां ठाय आवे, कदा आलोय नें सुध थावे ॥ ३५ ॥
इम जांणी कीधी नरमाई, परतीत पूरी उपजाई।
किणरे संका न राखी कांय, सगला नें दीया समझाय ॥ ३६ ॥
जब ओं किण विध वोले उंधो, हिवें ओ पिण बोलीयो सूधो।
अब तो जावजीव रहूं मांय, गण छोडण री काढूं वाय ॥ ३७ ॥
इण दोषण काढया था अनेक, तिणरी पाछी न पूछी एक।
किणने थोडो घणों दंड देणों, ते पिण नही काढीयो वेणो ॥ ३८ ॥
वले घणी सावचीयां मांहि, साधपणो न जांणतों ताहि।
त्यानें काढणी नहीं ठेराई, त्यांरी वात न कीधी कांई ॥ ३९
यांनें छोड्यां रहूं गण मांहि, तका पिण काई वात न काय।
टोला माहें कहेतो थों ढीलाई, तिणरी पाछी नही चलाई ॥ ४०
सगली ढीली मेले दीधी वात, विनें सहीत बोलें जोडी हाथ।
हिवें आप घणो पिछतावें, गुर ने वारूंवार खमावें ॥ ४
म्हे तो कीधों छे कांम खोटों, अपराध कीयों म्हें मोटों।
मोनें आछो न जांणसो आप, इम करवा लागों विलाप ॥ ४
हिवे हूं मन में न राखूं पाप, म्हांरी सुणों आलोवण आप।
म्हे तो आपरा अवगुण अनेक, सावां रें कने बोल्या वगेष ॥

ते हूं आपनें सर्वं सुणाउं, जुदा जुदा कहे बताउं।
इण बात रो न काढूं आगों, इम कहि नें सुणावण लागों ॥ ४४ ॥
वले आलोया बोल अनेक, हिवें सल न राखूं एक।
वले याद आवसी मनें, ते पिण कहि देसूं थानें ॥ ४५ ॥
म्हांरा मन मांहें आई अनेक, पूरी कहणी न आवें वशेष।
म्हांरी भाषा तणें अेंलांण, लेजों तिण अणुसारें जांण ॥ ४६ ॥
म्हें तों इसरो जाण्यो मन माय, म्हारी गिणती राखें नहीं काय।
म्हारी आसता देवें उतारी, तिणसूं एकलो हुवेंणरी धारी ॥ ४७ ॥
म्हें कीधो विचार वशेष, यांनें इम कह्यां जागसी धेष।
जब अें करडा कहिसी तिणवारो, तब हूं एकलो होय जासूं न्यारो ॥ ४८ ॥
तिण कारण हूं बोल्यों विपरीत, म्हांरें एकला हुवेंणरी नीत।
म्हें तों इसडी न जांणी थी काय, मों आगें करसी नरमाय ॥ ४९ ॥
म्हें कीधों घणो विषवाद, म्हांरों खमजो सगलो अपराध।
म्हांरी गई आगावाली रीत, हूं तो हूओ घणो अवनीत ॥ ५० ॥
वले मन मांहें बोहत सीदावें, मुखसूंई घणों पिछतावें।
म्हें तो खोई म्हांरी परतीत, मोंनें आप जांण्यो अवनीत ॥ ५१ ॥
म्हें ती कीधो घणों अन्याय, थांरा आंगुण बोल्या साधां माहि।
हूं तो वले इण भव मांहि, एहवों कांम न करसूं ताहि ॥ ५२ ॥
कदा दोष जांणूं आप मांय, तो हूं कहि देसूं आप नें आय।
बीजानें कहितों कदेय म जांणों, हिवें तो म्हांरी संका म आंणो ॥ ५३ ॥
ओरां आगें न कहणरी थाप, म्हांरी परतीत राखजों आप।
हूं तो चालसूं आगली रीत, अठासूंइ जांणों वनीत ॥ ५४ ॥
आपों हेलें निन्दें गुर पासें, निज अवगुण अनेक परकासें।
वले कर कर घणी नरमाई, परतीत पूरी उपजाई ॥ ५५ ॥
वले करें घणो पिछयाताप, हिवें प्रायछित दों मोनें आप।
इम कीधी आलोवण ताय, जब गुर जांण्यो आयो ठाय ॥ ५६ ॥
ओं तो प्राछित मांगें म्हां आगें, म्हांरें तो दीधां ठीक न लागें।
ओ तो कषाय वस बोल्यों जांण, प्राछित देउं इण अेंलांण ॥ ५७ ॥
कदे विकटे वलें किण काल, वले भांगी दे बांधी पाल।
दीधों ते बोल संभाल, एक ओ पिण दे काढे आल ॥ ५८ ॥
ऐ तो प्राछित यां कनें लीधों, मोसूं डरतां पूरो नहीं दीधो।
म्हांरा बोल्यां रो करत निवेरो, तो मोनें साधपणो देत फेरों ॥ ५९ ॥

कदे इसरोई दे काढें आल, तिणरो कुण काढें नीकाल।
इणरों आगा सूं नहीं वेसास, इसरो जांण टालो दीयो तास ॥ ६० ॥
हिवडां तो न दीसें खांमी, प्राछित लेवारो छे कांमी।
वले कपट न दीसें ताय, तो इणरो देउं इणनें भोलाय ॥ ६१ ॥
ओं तों करें आलोवण एम, ओछो प्राछित लेसी केम।
इसरो जाणें कह्यों तिणने आंम, थने भासे जितो लेवो तांम ॥ ६२ ॥
आड दोढ आई मन मांय, ते पिण सारी याद अणाय।
जिण परिणामां कह्यो ओरां पास, सगला दोष भेला करें तास ॥ ६३ ॥
तिणरो प्राछित लें थारें मेलें, वले याद आवे तिण वेलें।
थनें दीधीं छे आग्या ताहि, कोइ सल मत राखजों माहि ॥ ६४ ॥
जब ओ करवा लागो विलाप, मोनें प्राछित देवो आप।
प्राछित मांग्यो घणां दिन ताय, तो पिण दीधो उणनें भोलाय ॥ ५५ ॥
पछे इणनें कह्यों तूं वताय, ते हूं प्राछित ले काढूं ताय।
जब ओ कहें मोने खबर न काय, आपने भासे ते लेवो ताय ॥ ६६ ॥
इणनें वतलायो घणी वार, दोष प्राछित न कहे लिगार।
इणनें पूछ्या रो उत्तर एह, आपनें भासे ते लेवो तेह ॥ ६७ ॥
पूछ्यां सीदावें संकोच पांम, जव इणरा जांण्या सुध परिणांम।
कदा फेर अगन ज्यूं ओ जागे, वले विगट वेदों करे आगें ॥ ६८ ॥
तो इणनें उत्तर देवा काम, तप थोडो घणों लेउं तांम।
दोष निरजरा हेत लीयो जांण, कल्हादिक मेटण री मन आंण ॥ ६९ ॥
ते तो केवल ग्यांनी रह्या देख, पिण केंतव न राख्यो एक।
जे कोइ मांहें राखसी सल, तो उणरी उणनें मुसकल ॥ ७० ॥
वले घणां साधां रे मांय, त्यांनें दीयों वगेष जताय।
कोइ दोष जाणों जिण मांय, प्राछित लेजों सुध वताय ॥ ७१ ॥
अठा पेहली रा केंतव अनेक, ते तों वाकी न राख्या एक।
अठा पेंहली रों अपराध सारो, ओ पिण खमायों वारूंवारो ॥ ७२ ॥
सरल हूवो दीसें सुवनीत, आगे हूंता तिणहीज रीत।
सहु हिल मिल नें एक हूआ, ओंपरा नहीं दीसें जूआ ॥ ७३ ॥
कोइ गण मांहें दोष लगावें, ते निजर आपरी आवे।
तिणनें देणों तुरत वताई, आगली रीत सेंठी ठेंराई ॥ ७४ ॥
कल्हो मेट कीया जिण सुध, जिणरी निरमल लेस्या वुध।
पिण दुष्टी रे समता न आवें, वले किण विध कल्हो उठावें ॥ ७५ ॥

तिणनें [illegible] दे काढ्या था दोखो, तिणरें मनमांहि मोटो धोखों ।
जब [illegible] आपरा किरतब देखें, तिणसूं पड गइ धरक वशेखें ॥ ७६ ॥
इसरी कीधीं घणी अजोगाई, यांसूं छांनी न दीसें कांई ।
वले जांण्यो घणो अवनीत, म्हांरी किम करसी परतीत ॥ ७७ ॥
[illegible] सगला साधां रे मांय, म्हारी परतीत देवे घटाय ।
[illegible] मोनें सरधाय, म्हांरी आसता देला उडाय ॥ ७८ ॥
पछें सगलां नें ले वख मांय, म्हांरा आंगुण त्यांनें दरसाय ।
रखे पछें मोसूं दाव वालें, एकला नें टोलां मांसूं टालें ॥ ७९ ॥
तो हूं पिण यांरा गण मांय, साध साधवीयां नें फटाय ।
त्यांनें फाड्यां सूं करूं न्यारा, त्यांनें कर राखूं बेली म्हांरा ॥ ८० ॥
किणसूं सेंठी बांधे राखूं वात, मोनें छोड्यां आवें म्हांरे साथ ।
तिणरा परिणांम गुर सूं फारों, तिणनें सेंठो कर राखूं म्हारों ॥ ८१ ॥
टोलो फारणरी धारी मन मांय, संकीयो नहीं करतों अन्याय ।
ज्यां भेलो रहें दिनरात, त्यांसूंइज मांडी वेसासघात ॥ ८२ ॥
माहें थकों करे एहवा कांम, तिणरा दुष्ट घणा परिणांम ।
ते तो परभव साह्मो न जोवें, नर नों भव निरथक खोवें ॥ ८३ ॥
तिण अवनीत नें सूझे उंधो, तिणरी भिष्ट हुइ मति बूंधो ।
संवलो सूझें नही तिलमात, तिणरें उदें थयो छें मिथ्यात ॥ ८४ ॥
वाह्य विनो करें दिनरात, अभितर में खेल रह्यो घात ।
घणो केलवे कपट नें कूरों, गुर रो धेषी होय गयों पूरों ॥ ८५
वेंरी ज्यूं रह्यों डस झाल, मुख सूं करें लाल नें पाल ।
विनो नरमाई करें वशेखो, छल छिद्र रह्यो नित देखो ॥ ८६ ॥
चोर ज्यूं रहें दुष्ट परिणांम, साध साधवी फारवा कांम ।
अवनीत उंधी उंधी धारे, आप विगड्यो ओरां नें विगारे ॥ ८७
एकला री आसंग नही आवें, जब ओरां में बेली उठावें ।
तिणनें लालच लोभ दिखावें, गुर सूं जाबक भिडकावें ॥ ८८
जिण विध गुर सूं मन भागें, तेहवी वात करें तिण आगें ।
जिणं विध जागें गुर सूं धेष, तेहवी करें वात वशेष ॥ ८९
आपां उपर छें गुर रो धेख, दाव वालसी अवसर देख ।
एके कर साध साधवी सारा, आपां नें छोडसी न्यारा न्यारा ॥ ९०
आपां सूं बोलें नरम वशेखें, ते तो आपरों मुतलब देखें ।
यानें सूधा कदे मत जांणों, यांरी परतीत मूल म आंणों ॥ ९१

जों आपांमांसूं करें एक काल, तो एकण ने दे गण सूं टा·
माहे राखे तो फोरा पारें, वले परतीत पूरी उतारे॥ ९२॥
तो आपां पिण टोला मांहि, आपणा कर राखां ताहि।
त्यांसूं सेठो कर कर करारो, ते गुर नें लखाव म पारो॥ ९३॥
इम कहि कहि उणनें भरमावे, सिष पदवी रो लोभ दिखावे।
तिणसूं कर कर घणी नरमाय, वले विविध पणें ललचाय॥ ९४॥
जो उणरे उदें हुवे मिथ्यात, तो उ मान ले उणरी वात।
परमारथ पिण पूरो न बूझें, कर्मां वस सवली नही सूझे॥ ९५॥
जब ओ गुर आग्या दे ठेली, अवनीत रो होय जाअे वेली।
तिणसू करे अग्यांनी एकों, बोल वंध सेठा लेवें वगेखो॥ ९६॥
वले माहोमां सूंस खावें, जिलो वाघ एके होय जावे।
अवनीत सूं एके होई, लोभ रे वस आतम विगोई॥ ९७॥
सिख पदवी री तिणरे चाहि, पूजा सलावा री मन माहि।
इत्यादिक लोभ मन मांहे आंण, अवनीत सूं एको कीयो जाण॥ ९८॥
अवनीत रे एको ने मिलाप, जब करे अविनां री थाप।
आपा ने गुर सूं डरतो न रहिणों, करडा कहे पाछो करडो कहिणो॥ ९९॥
आपा डरता रहिसां किण लेखें, आपा री तों परतीत वगेखे।
आपा तो रहिसां गण मांहे जोडे, इसडो कुण आपा सू तोडे॥ १००॥
कदे परपदा लोक हुवें भेला, थांने करडा कहे तिण वेला।
जब थे पिण करडा पाछा कहिजो, लोका बेठां डरता मत रहिजो॥ १०१॥
पाछो न कह्यां लागे हलकाई, थांरी गिणत रहे नहीं काई।
तिणसू थे पिण करडो कहिजो पाछो, नही कह्यां न लागे आछो॥ १०२॥
करडा पाछा कह्यां तोडे थांसूं, जब थे आय मिलजो म्हांसूं।
थारो उपर राखजो बोलो, ज्यूं वधे आपां रो तोलो॥ १०३॥
मोने अलगो जांणो तिण वेला तोही आय होयजो मो भेला।
म्हांरी संका कदे मत आंणो, मोनें थारो थकोईज जांणो॥ १०४॥
इण विध हुआ अविनां में सेठा, उलटा लडवा ने वेठा।
कजीयो करवारी वाट जोवे, छेरवे तो ततपर होवे॥ १०५॥
तिणने गुर कहे सहिज मे सूचो, तो उ पड जाअे मूरख उचो।
तिणरा लखण घणा छे माठा, उलटो गुर ने कहे करडा काठा॥ १०६॥
गुर ने करडो काठो कहिणो पाछो, ओ किरतत्र जाणीयो आछो।
तिणरी फिर गई सवली दिष्ट, हुआ जिण मारग थी भिष्ट॥ १०७

तिगनें २ करडा कहें किण वारें, जब उ अवनीत पास पुकारें।
जब २ [illegible] कहें उगनें एम, थें क्यूं पाछों कह्यों नहीं केम ॥ १०८ ॥
इसरी [illegible]रे अविनां री थाप, मांहोमां कीयो त्यांरे मिलाप।
वले जिलो संघग रे काज, हिवें कुग २ करें अकाज ॥ १०९ ॥
[illegible] मिल २ नें करें चोरी, गण में करें फारा तोरी।
[illegible]री वात करें उग आगें, जिग विध मांहोमां कलह लागें ॥ ११० ॥
गुर सूं पिग मेलें मूरख दांडी, तिण भेप ले आतमां भांडी।
गुर सूं चेलो हुवें उदास, तेहवी वात कहें तिण पास ॥ १११ ॥
किगनें कहें थां उपर वेख, ते अल्खरु ल्यों देख।
किगनें कहें थांरी कीधी उतरती, मो आगें पिण कीधी परती ॥ ११२ ॥
किगनें वले कहें छें आंम, थांने लोल्पी कहें छें तांम।
किणनें कहे थांनें कहितां वेंणो, इणनें मही कपडो नहीं देंणो ॥ ११३ ॥
किगनें कहें थे प्राछित लीधो, ते तो मों आगें कहि दीधो।
थांरी आसता एम उतारें, वले निन्दा करें पूठ लारें ॥ ११४ ॥
किगनें कहें थांनें कहितां चोरो, किणनें कहें थांसूं हेत थोरो।
किणनें कहें थांनें कहितां अविनीत, किणनें कहें थांरी करें अप्रतीत ॥ ११५ ॥
किणनें कहें थांनें नहीं भणावें, किणनें कहें थांनें नहीं वतलावें।
किगनें कहें थांनें रोगी जांणें, पिण ओपध कदेय न आंणें ॥ ११६ ॥
किणनें कहें थांनें चोमासे काल, लांबो खेतर वतावें टाल।
आछे खेतर थांनें नहीं मेलें, सेपें काल पिण इमहीज ठेलें ॥ ११७ ॥
किगनें कहें थांरो न करे वेसास, मांहें रहिवा री न करें आस।
जिग विध जांणें गुर सूं वेप, तेहवी करें वात वसेप ॥ ११८ ॥
जिग विध गुर सूं मन भागें, तेहवी वात करें उण आगें।
जिग विध गुर सूं हेत तूटें, तेहवी वात करें परपूठें ॥ ११९ ॥
इण विध साध साधवी फाडें, गण में भेद इण विध पाडें।
गुर सूं परिणांम उतारे, सुध साधां नें मूड विगारे। १२० ॥
वले गुर में अवगुण दरसावें, झूठा २ दोष वतावें।
वले निन्दा करे छांनें-छांनें, जिगरें अशुभ उदें ते मांनें ॥ १२१ ॥
जिनें गुर सूं करें उपराठों, आपरो कर राखें काठो।
जिगनें निसंक आपरों जाणें, तिगनें घणो घणो वखांणें ॥ १२२ ॥
ओर साध नें मेल उण साथ, जब पिण करें वेसासघात।
उगनें फार करें आप कांनी, पछें निन्दा करें मन मांनी ॥ १२३ ॥

इण विध करें फारातोडी, गुर सूं छांनें छांने करे चोरी।
त्यासूं छांनें छानें जिलो बांधे, जिण धर्म न ओलख्यो आंधे ॥ १२४ ॥
माहोमां मिल जिलो बांधे, गुर आग्या विण आपरे छादे।
इसरों करें अकारज खोटों, तिणने दोप लागे छे मोटो ॥ १२५ ॥
एहवा दोप री कर राखें थाप, पछे सेवे निरतर आप।
वले साघु नांम धरावे, तों उ पेहिले गुणठांणें आवें ॥ १२६ ॥
जों उ दोष नें दोष न जांणे, तो पिण पेहिले गुणठांणें।
ते तो मूढ मिथ्याती पूरो, पडीयों च्यार तीरथ थी दूरो ॥ १२७ ॥
तिणरे सरधा जमाली री आई, मूल की पूंजी सर्व गमाई।
समकत ने साधपणो खोयो, जिलो बांध ने जनम विगोयों ॥ १२८ ॥
एहवा गेरी थका गण मांय, तिणरी गुर नें खबर न कांय।
मुख उपर तों करे गुणग्रांम, छांने छांने करे एहवा कांम ॥ १२९ ॥
गुर रे मुख तो गुण गावें, छांने छांने अवगुण दरसावें।
मुख उपर तो बोले राजी, छाने छाने करे दगाबाजी ॥ १३० ॥
वले वादे गुर ने जोडी हाथों, पगां मे देवे नित नित माथों।
वांदताई करे गुणग्रांम, सारां पेंहली ले गुरां रो नांम ॥ १३१ ॥
वले लोकां ने वंदणा सिखावे, त्यामें पिण गुर रो नांम घलावे।
लोकां आगे करे गुणग्राम, पिण मन रा मेला परिणांम ॥ १३२ ॥
जोम अहकार में नहीं मावें, त्यासूं आलोवणी नही आवें।
प्राछित लेनें सुध नही थावें, पूरी परतीत नही उपजावे ॥ १३३ ॥
जब याने जांण्या दगादार पूरा, तब कर दीया गण सूं दूरा।
जब अे हुआ जाबक अपछंदा, विगडायल जेन रा जिंदा ॥ १३४ ॥
त्या छोडी लाज नें मरजाद, सके नही करता विषवाद।
त्यारें भूठ तणों नही टालो, कूड कपट तणो बोहत चालो ॥ १३५ ॥
त्यारा नेम वरत सर्व भागा, हुआ वरत विहूंणा नागा।
परीया च्यार तीरथ सूं बारे, आप विगड्या ओरां ने विगाडे ॥ १३६ ॥
गण मे करता था फारा तोरो, त्याने जांण्या घणा जणां चोरो।
सगलां साघा में परतीत खोई, त्यांरी साख भरे नही कोई ॥ १३७ ॥
त्यारे सिष पदवी री थी आस, तिण थी पिण हुआ निरास।
त्यांरो वेसास आगा सूं भागो, आत्म ने कलंक मोटो लागो ॥ १३८ ॥
गण मे कीची थी वेसासघात, पिण कोइ न लागो हाथ।
ज्याने आपरा कीधा था फार, ते पिण न गया त्यांरी लार ॥ १३९ ॥

त्यां पिण यांनें खोटा जांण, गुर नीं आग्या कीधीं परमांण।
अें तो गण मांहें भूंडा दीठा, सगला साधां में पर गया फीटा ॥ १४० ॥
साध तो कोइ हाथे न लागो, श्रावकां सूं करें हिवें ठागों।
त्यां आगें वोलें सूधा वशेख, मिनकी ज्यूं रह्या छल देख ॥ १४१ ॥
त्यां देखतां करें खप गाढी, न्हार भगत तणी चाल काढी।
बुगलध्यांनी ज्यूं वणीया ताहि, लोकां नें न्हाखवा फंद मांहि ॥ १४२ ॥
श्रावकां री लागी त्यांरे चाय, त्यांनें फारण रो करें उपाय।
मांन बडाई ने पेट काज, हिवें कुण कुण करे अकाज ॥ १४३ ॥
खोटी पेडी जमावण काजें, भूठ वोलता मूल न लाजें।
आपणा दोष सगला ढांके, ओरां सिर आल देता न सांके ॥ १४४ ॥
जांणे गुर माहें दोप वताय, श्रावक श्रावकां लेउं फंटाय।
इसरी आसा वांधे मन मांय, रात दिवस करें वकवाय ॥ १४५ ॥
श्रावक श्रावकां पूछें ताय, वले पूछें अनेराई आय।
वले पूछें त्यांनें ओर लोक, जव अें गुर में बतावें दोख ॥ १४६ ॥
घणां लोकां में भूठ चलावें, अणहुंता दोष गुर में वतावें।
आपरें मन मानें ज्यूं वोलें, आं गुणां रो पिटारो खोलें ॥ १४७ ॥
दोष वीसां तीसां रो ले नांम, पछे वोलें अग्यांनी आंम।
यांमें दोषां रो कहूं उनमांन, ते सुणों सुरत दे कांन ॥ १४८ ॥
सों मण तणी खांड मांहि, तिण मांसूं एक मूंठी दिखाइ।
ज्यूं छें दोष घणां यां मांहि, थांनें थोडासा दीया वताय ॥ १४९ ॥
घणी ढीलाइ छे टोला मांय, ते तो लोकां नें खबर न कांय।
यांरे खोट घणों छे माहि, परूपे जिम पालें नांहि ॥ १५० ॥
अें आचार घणोंई दिढावे, पोते तों पूरो पालणी नावें।
अें तो कपट सूं कांम चलावें, यांमें साधपणों नहीं पावें ॥ १५१ ॥
म्हें यांमें आगेई दोष वताया, यांनें प्राछित दीधों छों ताय।
पिण अें वले न चालें सूधा, तिणसूं म्हें हो गया जूदा ॥ १५२ ॥
म्हांरे आचार री छें सगाई, यांमें तो दीसें घणी ढीलाई।
जव म्हें असाध जांणीया यांनें, खोटा जांण छोडीया त्यांनें ॥ १५३ ॥
म्हें मिनष तणो भव हार, म्हें किम बूडां यांरे लार।
म्हे करसां आतमा रो किल्याण, चोखो चारित पालसां जांण ॥ १५४ ॥
जिणरा छे धेषी पूरा, तिणरें आल दे कूडा कूडा।
तिणमे दोष अनेक वतावें, जावक खोटो सरधावें ॥ १५५ ॥

गुर गुर भाई उपर धेष, त्यारा आंगुण बोले वशेष।
जुंना जूंना खुरट उ खेलें, आपरें मन मांनें ज्यूं ठेले॥ १५६ ॥
जिण घाल्यों थों इणने भूठो, तिण सूं तो वेठो थो रूठों।
तिणमें दोष अनेक वतावें, मन मांने ज्यूं गोला चलावें॥ १५७ ॥
तिणसूं तो आवे लागा लागा, तिणने आल देवा नें आगा।
तिणरी परती परती काढें वात, हिला निन्दा करे दिन रात॥ १५८ ॥
वले करें घणों विषवाद, सगला साधां नें कहे असाव।
घणा लोकां मे वद वद वोले, आंगुणां रो पिटारो खोले॥ १५९ ॥
किणनें कहे यांनें प्राछित आवे, तो प्राछित यासूं लेणी न आवे।
तिण कारण म्हे नीकलीया बारें, कुण बूडसी यांरे लारें॥ १६० ॥
किणनें कहे यांनें म्हे दंड दीधो, जब तो प्राछित यां लीवों।
वले यां दोष सेव्या छे ताहि, प्राछित विन लीधां किम रहां मांहि॥ १६१ ॥
किणनें कहे यांनें दोषण लागा, यांरा पांचोई महावरत भागा।
सुमत गुपत हुआ चकचूर, इण कारण यांसूं हो गया दूर॥ १६२ ॥
किणनें कहे यामें नही आचार, दोष सेवतां न डरें लिगार।
अणाचारी न लागे प्यारा, तिण कारण यांसूं हो गया न्यारा॥ १६३ ॥
किणनें कहे अें तो वोलें फिरता, भूठ सूं नहीं दीसें डरता।
कूड कपट घणों यां मांहि, यांरा बोल्या री परतीत नांहि॥ १६४ ॥
किणने कहे अे तो सुध न चालें, दोष सेवें तो कुण यांने पालें।
जे कोइ दोष काढें यां मांहि, तिणसूं डस भाल राखे ताहि॥ १६५ ॥
हूंतो कहितो यांनें दोष देख, जब अें म्हांसूं पिण करता धेख।
म्हांरी वात नें देता उडाय, मोने तो राखता दवकाय॥ १६६ ॥
म्हारे हुंती घणी मन मांय, एकलां री आसंग नही कांय।
हिवें तो म्हें हुआ छां दोय, दोष सेवण न दयां कोय॥ १६७ ॥
इसरा घड घड नें भूठ चलावे, आपरो सूरपणो मनावे।
आपरा दोषां सांमो न देखें, भूठ में भूठ वोले वशेखे॥ १६८ ॥
किणने कहे यामें दोषण पावे, विविध प्रकारे प्राछित आवे।
म्हामें दोषण मूल न पावे, मिच्छामि दुकडं पिण नही आवे॥ १६९ ॥
किणने कहे यां कह्यों म्हांरे पास, एक लिखत कर दयों मोने तास।
जो थे नीकलो टोला बार, जव थांने करणा नही च्यारुं आहार॥ १७० ॥
पाछें भागल तूटल रहें ज्यांने, सगला पानां सूंप देणा त्यानें।
दूसरो लिखत कर दयों कहे म्हांनें, इण कारण यांसूं हो गया कानें॥ १७१ ॥

अं तो ढीला पारण रे कांम, एहवा बंध बांधे तांम।
दूसरा बंध में परां नहीं ताहि, म्हारें कुण रहसी ढीलां मांहि ॥ १७३ ॥
किणनें कहें यांमें पेहलो गुणठाणों, निश्चेंइ मिथ्याती जांणों।
यांनें साध साचेला जांणें, ते पिण पेंहलें गुणठाणें ॥ १७४ ॥
किणनें कहें यांमें समकत नांहि, साधपणों जांणें आप मांहि।
जो अें आपनें असाध जाणें, जब तों चोथें गुणठाणें ॥ १७२ ॥
यांनें किणही पूछ्यों किण वेलां, किण भांत हुवो यांसूं मेला।
जब कह्यो म्हारें मेला होवो, इण सब में बाट म जोवो ॥ १७५ ॥
जो अें प्राछित ले सुध थाय, तो म्हें यांसूं भेला रहां जाय।
यांनें प्राछित लेता जांण्या नांहि, दीक्षा विण नहीं जावां मांहि ॥ १७६ ॥
यांनें किणहीक पूछीयों आय, मो आगें कहीजों सतवाय।
यांनें असाध जांणों के साध, जब कह्यों म्हें जाणां असाध ॥ १७७ ॥
जब यांनें फेर पूछ्यो मीठी वाणों, किण दिन पछें असाध जाणों।
जब अे बोलीया वचन विराध, म्हांनें छोडीयां पछें असाध ॥ १७८ ॥
थांनें तों यां कर दीया जूआ, पछें असाव क्यांथी अें हूआ।
जब तो पाछों जाब न आयों, मून साझ रह्या मुरझायों ॥ १७९ ॥
यांनें पूछ्यों किणही किण वेर, हिवें दिख्या लेंता दीसो फेर।
जब कहें फेर दिख्या ल्यां म्हें क्यांनें, खोटा जांण छोड दीया त्यांनें ॥ १८० ॥
म्हांमें ओर दोपण नहीं पावें, म्हांनें फेर दिख्या क्यांनें आवें।
म्हें भेला रह्या भागलां मांय, तिणरो प्राछित ले सुध थाय ॥ १८१ ॥
इण रीतें करें बकवाय, ते तो पूरी केम कहवाय।
जिण तिण आगें इण विध बोलें, ओंगुणां रो पिटारो खोलें ॥ १८२
यांरे ओहिज मुदें ध्यांन, यांरे ओहिज मुदें ग्यांन।
जांणें गुर नें खोटा सरधाय, श्रावक श्राविका लेउं फंटाय ॥ १८३
जाणें म्हें यांरी वंदणा छुडाय, सगलां नें पारां म्हांरे पाय।
जो जाणें यांनें लोक खोटा, तो म्हांनें जांणे अें पुरुप मोटा ॥ १८४
जिण विध गुर सूं मन भागें, तेहवी वात करें तिण आगें।
जिण विध गुर सूं हुवें उदास, तेहवी वात करें तिण पास ॥ १८५
जिण विध गुर सूं हेत तूटें, तेहवी वात करें परपूठें।
जिण विध जागें गुर नें धेप, तेहवी करें वात वगेप ॥ १८६
जिण विध गुर नें न जाणें आछा, जिण विध जाणें आप नें साचा।
एहवी भूठी वातां वणावें, ते भूठ लोकां में फेलावें ॥ १८७

जिण विध गुर नें असाध जांणे, एहवी वात घणी मुख आणे।
सके नही देता आल, वले कर रह्या भूठी भलाल ॥ १८८ ॥
लोकां सूं करे घणी नरमाय, मीठा बोले त्यासूं मिल जाय।
त्यारी करे खुसामदी जाण, जाणे फंद मांहे न्हांखूं नांण ॥ १८९ ॥
यांरी धुरताई ने कपटाई, तिणमें पाछ न दीसे कांई।
त्यांरे घात घणी घट मांय, त्यांरी काचा ने खबर न कांय ॥ १९० ॥
श्रावक श्रावका री त्यांरे चाहि, तिणसूं सवलो न सूझें ताहि।
घणो भूठ बोलें जांण, त्यांरी बुधवंत करजो पिछांण ॥ १९१ ॥
यातो कीधो अकारज खोटो, यांने दोपण लागो मोटो।
गुर सूं छाने २ वांध्यो जिलो, यांने कर्मा दीधो टिलो ॥ १९२ ॥
गण में कीधी फारा तोरी, करवा लागा छांनें २ चोरी।
गुर सूं माडी वेसासघात, त्यारी परगट होय गई वात ॥ १९३ ॥
वले सेवीया दोष अनेक, ते पिण चावा हुआ वशेख।
तिणरो प्राछित न हुआ आरे, जव काढ दीया गण बारे ॥ १९४ ॥
खोटा जांण ने छोडीया यांने, ते वात न राखी छांने।
याने चोडें छोड्या साख्यात, तिणमें कूड नही तिलमात ॥ १९५ ॥
अे तो कहे छें घणा लोकां मांहि, म्हें छोड्या छें यांनें ताहि।
इण विध बोलें छें परपूठ, ते तों निश्चेंइ बोले छे भूठ ॥ १९६ ॥
किणने कहें यां छोडीया म्हांने, किणनें कहें म्हें छोडीया याने।
इम भूठ बोलें जांण जांण, सकें नही मूढ अयाण ॥ १९७ ॥
जिण किरतब सूं कीया बारें, तिण वात रो नाम न काडे।
हिवें ओर री ओर ले उठें, अें तो लाग रह्या मत भूठें ॥ १९८ ॥
आप मांहें छे दोप अनेक, ते तों बारे न काढें एक।
उलटों ओरा में दोष वतावें, भूठ में भूठ जांण चलावे ॥ १९९ ॥
ओगुण सुण २ नें समदिष्टि, यांनें जाणे धर्म सूं भिष्टि।
यांरा बोल्यां री परतीत नाणें, भूठ में भूठ बोलता जाणें ॥ २०० ॥
श्रावक आरें करता दीसें नाहि, जब अे प्राछित ओढे आया मांहि।
आ आलोवण करणी थापी ताय, प्राछित पूरो लेणों ठेंहराय ॥ २०१ ॥
पाचूं पद विच्चें दे आया मांय, परतीत पूरी उपजाय।
तिणरा साखी ग्रहस्थ ठेंहराय, तठा पछें लीया मांय ॥ २०२ ॥
टोला रा साध साधवी मांहि, किणरें प्राछित ठेंहरायों नांहि।
किणही प्राछित मूल न लीधो, मिच्छामि दुकडं पिण नही दीधो ॥ २०३ ॥

किणही में न काढयो बंक, सगलां नें कर दीधां निसंक।
प्राछित विण दीधां आया मांहि, सगलां नें सुध जांणी ताहि ॥ २०४ ॥
यांरी तरफ सूं चोखा जांण, गुर रे पगां पडीया आंण।
जो अें दोष जाणें किण मांहि, तो अें आगों काढें जिसा नांहि ॥ २०५ ॥
ज्यांने असाध कह्या था मुख सूं, त्यांरा वांदीया पग मसतक सूं।
त्यांनें प्राछित मूल न दीधो, उलटों आप प्राछित ओढ लीधो ॥ २०६ ॥
ज्यांरा पांचूंव्रत कह्या भागा, त्यांरे हीज पगां आय लागा।
ज्यांनें कह्या था लोकां में खोटा, त्यांनेंहीज लेखव लीया मोटा ॥ २०७ ॥
ज्यांमें काढ्या था अनेक दोष, ते तो कर दीया सगला फोक।
उलटो आपरे डंड ठेहराय, इण विध आया गण मांय ॥ २०८ ॥
ज्यांने ढीला कहिता तांण तांण, वले भागल कहिता जांण जांण।
ज्यांरी वंदणा देता छुडाय, त्यांरा हीज पोतें वांदीया पाय ॥ २०९ ॥
ज्यांने कहिता पेहलें गुणठाणें, त्यांराहीज पग वांदीया आणें।
अणाचारी कहिता दिनरात, तिका पाछी न पूछी वात ॥ २१० ॥
ज्यांने प्राछित कैंता था आप, ते तो जावक दीयों उथाप।
उलटो आप डंड कराय, गण मांहें पेंठा छें आय ॥ २११ ॥
कहितो थो मोमें दोष न पावें, मिच्छामि दुकडं पिण नहीं आवें।
तिणनें प्राछित देणों ठेहराय, तठा पछे लीयों गण मांय ॥ २१२ ॥
कहितो आलोवण करूं नांहि, आप छांदे रहिसूं गण मांहि।
तिण आलोवण करणी थाप, ते प्राछित पिण ओढीयो आप ॥ २१३ ॥
ज्यांमें कहिता कपट नें झूठ, हिला निन्दा करता परपूठ।
त्यांनें उत्तम पुरुष ठेहराय, प्राछित ओढ आया त्यां मांय ॥ २१४ ॥
ज्याने खोटा सरधावण ताय, कीधा था अनेक उपाय।
त्यांनें तिरण तारण ठेहराय, प्राछित ओढे आया त्यां मांय ॥ २१५ ॥
यांरी करता था केई तांण, त्यांरो गल गयो जावक मांण।
यांरी करता केई पखपात, त्यांरी पिण विगड गइ वात ॥ २१६ ।
यांनें जाणता था केई साचा, ते तों प्राछित ले हुवा काचा।
वले ताणे यांरी दूजीवार, तों अें पूरा मूंढ गिंवार ॥ २१७ ॥
आगे तो यांरी राखें परतीत, निज गुर सूं हुवा विपरीत।
सुध साचां ने कह्या वले भूंडा, ते तो दोनूं प्रकारे बूडा ॥ २१८ ॥
जो यांरे वंधीया निकाचित कर्म, तों यांसूं छूट जासी जिण धर्म।
जासी मांनव रो भव हार, पडसी नरक निगोद मझार ॥ २१९ ॥

जो यारे न बध्यो निकाचित कर्म, कदा परजाअे पाछा नर्म।
कदा आलोए ने सल काढे, निज कांम सिराडे चाडे ॥ २२० ॥
त्यारा थका हुता गेरी, गण रा हुआ था पूरा वेरी।
सर्व साधा ने असाध सरधाया, त्यामेहीज डड ओड़ ने आया ॥ २२१ ॥
यां तो च्यार तीरथ रे मांय, कीधो थो घणो अन्याय।
पिण प्राछित ले आया माहि, टोला री परतीत अणाई ॥ २२२ ॥
घणा श्रावक हुआ निसंक, यांमेहीज जाणीयो वक।
या तो दोप बताया या मांय, आ तो भूठी कीधी बकवाय ॥ २२३ ॥
वारे थकां तो कहिता असाध, माहे आय सरव कीया साध।
इण विध बोल्या था विपरीत, त्यांरी तुरत नावे परतीत ॥ २२४ ॥
टोला रा साध साधवी माहि, साधपणो न कहिता ताहि।
इण वात सू घणा भूडा दीठा, परीया च्यार तीरथ मे फीटा ॥ २२५ ॥
अे तो प्राछित ओढे मांहे आया, सगला साधां ने सुध ठेहराया।
पिण यारो छूटो नही अभिमांन, वले किण विध विगडे छे तांन ॥ २२६ ॥
जिण दोष थी काढीया वार, ते पिण दोप सगला चितार।
ते आलोवणा गुर हजूरो, तिणरे प्राछित लेणो पूरो ॥ २२७ ॥
सगला साधां ने असाध सरधाया, त्यांमे दोप अनेक बताया।
ते तो दोष साधा मे न पावे, तिणरो प्राछित पिण याने आवे ॥ २२८ ॥
ते पिण आलोवणो गुर पास, प्राछित लेणो आण हुलास।
ते आलोवण करणी न आवे, प्राछित पिण लीधो न जावे ॥ २२९ ॥
उणने कह्यो घणीवार तांम, पिण आलोवण रा नही परिणाम।
ओ तो भारीकर्मो नही सरलो, तिणने आलोवणो काम करलो ॥ २३०
जिण ऊपर प्राछित ठेहरायो, तिणने पिण घणो जनायो।
इणने प्राछित दीजो भारी, इणरी संक म करजो लिगारी ॥ २३१ ।
इणने प्राछित पूरो दीजो, थाने दोप लागे ज्यूं म कीजो।
जब इण पिण नही मांनी वात, इणरी छूटी नही पखपात ॥ २३२
इणरेई दगो मन माहि, ते कहें हुंतो प्रायछित देउ नाहि।
जे दोष भ्याससी ते उण माहि, उणरो उहिज ले काडसी ताहि ॥ २३३
उणरो प्राछित उणनें भलावे, गुर आगे लेणो नही बनावे।
जब जांण्यो इणने अवनीत, इणने उंधो सूझ्यो विपरीत ॥ २३४
आप तो उणने प्राछित न देवें, उणरे मेले उ प्राछित लेवे।
गुर आगे लेण री नही वात, ओ उघाडोई मिथ्यात ॥ २३५

गुर आगें प्राछित लेवें नांहि, आप छांदें लेवें मन माहि।
जब तों चोरेई जांणों अवनीत, त्यामें साध तणी नही रीत॥ २३६॥
साधां तो यानें दीयो जताय, अे दगा सू आया दीसें मांय।
यारी किम आवे परतीत, यांरी देखलो पाछली रीत॥ २३७॥
जब तो पाछो बोलीयो आंम, म्हे दगो करसां किण काम।
म्हारें सिष करवारी न काई, सूंस करनें परतीत उपजाई॥ २३८॥
म्हारे सिष सिषणी करणों नांहि, म्हारे सूंस छे इण भव मांहि।
सभोगी करवारो छे आगार, ओ फिरतो बोल्यो तिणवार॥ २३९॥
जब उणने पाछो दीयो खराय, आ थें फिरती बोल्या क्यूं वाय।
थारे टोला रे बाहिर जाय, संभोगी पिण न करणों छे ताय॥ २४०॥
जब ओ बोल्यो कर नरमाय, संभोगी पिण न करसा ताय।
ज्यूं रो ज्यूं पाछो आरे कराय, काची बात न राखी काय॥ २४१॥
केई साध बोल्या इण रीत, यारा सूंसां री नही परतीत।
यांने सूंस करावे अनेक, पालता नही जाण्या एक॥ २४२॥
यानें आगेंई सूंस कराया, अनंता सिद्ध साखी ठेहराया।
ते सूंस पानां में लिखाया, नीचें यारा आखर कराया॥ २४३॥
इण रीतें सूंस कराया, ते पिण सूंस सगला उडाया।
चोरे भाग कीया चकचूर, इणमें मूल न दीसे कूर॥ २४४॥
तो लारला सूंस इमहीज जाणो, यांरी परतीत मूल म आणो।
वले एक साध बोल्यो एम, थांरी परतीत आवसी केम॥ २४५॥
म्हांरा पाचूं वरत कह्या भागा, थें तो लोका में कहिवा लागा।
सुमत गुपत भागी केता म्हांरी, मोने साध न गिणता लिगारी॥ २४६॥
मोनें असाध कह्यो लोकां मांय, मो मे दोष अनेक बताय।
ते प्राछित म्हे तो मूल न लीधो, मिच्छामि दुकडं पिण ही दीधो॥ २४७॥
थें प्राछित पिण मोने न ठेहरायो, तोही आय वांद्या म्हांरा पायो।
मोने परूप्यो लोका मे असाध, हिवे हु किण विध हुओ साध॥ २४८॥
आ देख लीधी थांरी रीत, इम नावे थांरी परतीत।
जब कहे म्हे लोकां मे मांहि, थांनें असाध परूप्या नांहिं॥ २४९॥
पाछो जाव नायो तिण ठाम, झूठ बोले चलायो काम।
इणरी किणनें न आई परतीत, झूठाबोलो जाण्यो विपरीत॥ २५०॥
याने पाछा लीया गण माहि, जब यांसूं पेहली वात ठहराइ।
सिप सिपणी न करणा सोय, जुदो टोलो न बाधणो कोय॥ २५१॥

कदा गुर ने पिण दोपण लागे, तो कहणो नही ओरा आगे।
गुर नेंड्ज कहिणो सताव, घणा दिन नही राखणो दाव ॥ २५२ ॥
वले फाडा तोडा री वात, किणसूं करणी नही तिलमात।
जिलो वांचणो नहीं मांहोमांहि, फेर साथे ले जावणो नाहि ॥ २५३ ॥
पांचूं पद विचे दीया ताय, आलोवण प्राछित पूरो ठेंहराय।
आग्या मे चालणो रूडी रीत, पूरी उपजावणी परतीत ॥ २५४ ॥
आगा विचेइ रहिणो वनीत, बाकी सर्व आगली रीत।
इत्यादिक पेहली सेठी ठेहराय, पछे गण मे लेणा थाप्या ताय ॥ २५५ ॥
एक वले परतीत उपजावो, वले कर्म जोगे न्यारा थावो।
तो न बोलणा अवगुणवाद, इसडो करणों नही विपवाद ॥ २५६ ॥
जिण बोल सूं वले तूट जाय, तेहिज बोल कहिणो लोकां माय।
ओर बोल न कहिणो एक, आ परतीत उपजावो वशेख ॥ २५७ ॥
जब ओ पिण बोल्यो चोखी वाणो, हिवे इण भव मे सका मत आणो।
तो पिण ओ बोल गाढो खराय, इत्यादिक घणा बोल जताय ॥ २५८ ॥
पछे दोय सूस कराय, तठा पछे लीया गण मांय।
आलोवणा प्राछित पूरो ठेहराय, अनन्ता सिध विचे दे आया माय ॥ २५९ ॥
ते आलोए प्राछित लेणी नावे, तिणसू भूठी भूखलायां खावे।
जाणे आगे ठेंहराइ ते भेलो, प्राछित लेवूं म्हारे मेलो ॥ २६० ॥
ओ पिण खांचातांण मांडी, जाणे टल जाये ज्यूं म्हांरी भाडी।
जब साधा घणो दबकायो, घणो दोरोसो आरे करायो ॥ २६१ ॥
गृहस्थ बेठा ठेंहराइ वात, ते प्रसिध करणी विख्यात।
जिण मे हुतो जिण रो जाणें वक, ज्यूं भागे लोका री सक ॥ २६२ ॥
आगे कीधो थो तिम ठेंहरायो, प्राछित लेणों आरे करायो।
जब उणनें कह्यो इण जाय, जब ऊ ओर ले उठीयो ताय ॥ २६३ ॥
जो हू प्राछित थां आगे लेसूं, ते ओर आगे कहण नही देसूं।
साधा री रीत तिम कीधो कहिणो, प्राछित रो नांम किणरो नही लेणो ॥ २६४ ॥
ओर कहिवा रो कीधो छे टालो, सगला सूंस कीया ते सभालो।
ओ तो भूठो ले उठीयो भोर, साधां तो सूंस कीधो ते ओर ॥ २६५ ॥
जो सूंस कीयो जाणे एह, तो दूजों क्यू आरे हुओ तेह।
लोका कने प्राछित कहिणो थाप, उण कने जाय दीयो उथाप ॥ २६६ ॥
ओ तो उणरेइज वल भूंभे, पोते कांई सवली नही सूझे।
जाणे ओ करसी म्हारें रूडों, इणरे पाछे लागो पूरो ॥ २६७ ॥

ओ तो गुरु नें उलटो डरावें, ऊली पैली अनेक बतावें।
सूंस कर नें बदल गयो ताय, बोलिए पिण बन्धन थाय ॥ २६८ ॥
हूं तो ठ्यां लग रहिसूं गण मांहि, किणरो अवगुण बोलसूं नांहि।
म्हैं तो सूंस जठाईं कीधो, जाव जीव रो सूंस न लीधो ॥ २६९ ॥
इणनें जाबक बदल गयो जांण, जब फेर पूछ्यों मीठी वांण।
थांरी परख करवा कह्यों आंम, सगला सूंस करो एक तांम ॥ २७० ॥
कदा आहार पांणी टूट जाय, तो किणरा अवगुण न बोलणा ताय।
जिन बोल सूं टूट जावें आहार, तेहिज बोल कहिणां विचार ॥ २७१ ॥
ओर अवगुण न बोलणा जांण, ओ तो सगला करो पचखांण।
जब यां पाछों उत्तर दीयो एम, ओ तो न करां म्हैं नेम ॥ २७२ ॥
ओ सूंस म्हांरै ठीक न लागें, कदा टूट जावें वले आगें।
पैहला सूंस कीयो ने भागो, आगा सूं इम बोलवा लागो ॥ २७३ ॥
जब इणनें जाण्यों घणों अवनीत, साधु तणी न जाणी रीत।
ओगुण बोलण में कांई कांम, इणरा दुष्ट जाण्या परिणांम ॥ २७४ ॥
ओगुण बोलण रो डर दिखाय, गण मांहें रहिता जाण्या ताय।
आगा ज्यूं जाण्यों झूठ रो चालो, ते कदे दे काढें मोटोई आलो ॥ २७५ ॥
ओ दगा सूं आया दीसे ताहि, इसडा आछा नहीं गण मांहि।
तो यांनें केणा देणा छिटकाय, इसडी धारी मन मांय ॥ २७६ ॥
प्राछित लेणां तो बदलीयों नांहि, पिण मांन घणों घट मांहि।
जो म्हांरो प्राछित कहै लोकां आगें, तो म्हांरी जाव हलकाई लागें ॥ २७७ ॥
तिण कारण वले अडवी मांडी, हुंती देख आपरी भांडी।
वारंवार आहिज घणी ताणें, रखे लोक भूंडो मोनें जाणें ॥ २७८ ॥
प्राछित थांरो न कहूं लोकां मांहि, गाला गोले छांनों राखूं ताहि।
तिण आ तो प्रसिध वात, ते छिपाई केम छिपात ॥ २७९ ॥
ओर थांरो प्राछित लीधो नांहि, त्यांनें कहवा न दूं लोकां मांहि।
जो उवे कहै म्हांनें प्राछित न दीधो, तो हूं पिण केसूं म्हैंई न लीधो ॥ २८० ॥
जब इणनें वले पूछीयों जांण, कोई गृहस्थ पूछें मोनें आंण।
थांरा सूंस भागा सुणीया तान, थांराइज सिषां रैं पास ॥ २८१ ॥
नहीं भागा नें नहीं भागो तो कहि सूं, अण बोल्यो बेठों किम रहिसूं।
इसडो आल माथे किम लेसूं, जब ओ कहै यूं तो कहिण न देसूं ॥ २८२ ॥
थांरां री रीत कीधो कहिणों, ओर उत्तर पाछों नहीं देणों।
सामना करे देवो जणाय, तेहवी पिण नहीं काढणी वाय ॥ २८३ ॥

जो थे कहिसों म्हांमें दोष नांहि, तो हूं कहि देसूं दोष यां मांहि।
म्हे कह्यो ते नही छे भूठ, तो वले वेदो जासी उठ॥ २८४ ॥
जिण प्राछित नहीं लीधो छे ताय, तिणने न लीयों न काढणी वाय।
जिण प्राछित लीधो छे तांम, तिणरो पिण नही लेणो नांम॥ २८५ ॥
लीधा न लीधा रो नांम नकारो, ग्रहस्थ आगे न कहिणों लिगारो।
जो थें कहिसों इणनें प्राछित दीधो, तो हूं कहिसूं म्हे मूल न लीधो॥ २८६ ॥
इसडों आल कुण ओढे माथे, प्रतीत जाओ इण वाते।
ग्रहस्थ नें भर्म ओर रो होवें, तो यांरें बदलें परतीत कुण खोवे॥ २८७ ॥
ग्रहस्थ पिण साचा ने भूठो जाणें, भूठा ने साचों कहें अजाणें।
ग्रहस्थ दोनूं प्रकारे हुवें भारी, केयक होय जाए अनंत संसारी॥ २८८ ॥
जांण नें साचा भूठा रो, सरीखो भर काढें हूंकारो।
एहवी मिश्र भाषा सूं हुवे खुवारी, ज्यूं वणी वसुदेव राजा री॥ २८९ ॥
इसडो कुण करसी अन्याय, वले निज परतीत गमाय।
कोइ जाणे यांरे सिपां री चाहि, यांनें प्राछित विण लीया मांहि॥ २९० ॥
आप प्राछित लीयों ते छिपावें, न लीयो तिणने दीयो सरधावें।
लोकां ने कहिवा न दे इण कांम, यांरा दुष्ट घणा परिणांम॥ २९१ ॥
म्हांनें प्राछित लीयो जाणे लोक, तो म्हांमें जांण लेसी दोप।
नही तो यांमें हिज जाणें दोप, यांनें प्राछित लीयो जाणें लोक॥ २९२ ॥
इसडी गूढ माया सेवे, ओर सावां सिर आल देवें।
इसडा आछा नहीं गण माहि, जाण्यो वेगा दीजें छिटकाइ॥ २९३
एक आचार्य पदवी रो भूखो, कदागरो करवा ढूको।
पदवी मूंढें आणें वारूंवार, कहितो पिण नही लाजें लिगार॥ २९४
जिणने थाप्यों आचार्य आप, तिणनें तो जाणें देउं उथाप।
आचार्य पदवी हूं लेऊं, जाणें सगलां रो नायक वेऊं॥ २९५
जिणने थाप्यों आचार्य जांण, जाव जीव रा करे पचखांण।
तिणमें अनंता सिद्धां री साख, त्यां सूसां री करवा मांडी राख॥ २९६
आचार्य पदवी रे काजे, सूंस भांग तो पिण नहीं लाजे।
हूवों पदवी रो मोह मतवालो, आत्मा ने लगावे कालो॥ २९७
इसडों अभिमांनी नें अवनीत, मांडी गछवास्यां वाली रीत।
पदवी पदवी करतो दीठो भूंडों, अवनीत सूं एको कर वूडों॥ २९
यारे एको मांहोमां न छूटें, उणरें वदले ऊ वोलें भूठों।
एक एक रा दोषण ढांके, गुर आगे पिण कहितों सांकें॥ २९

वले बोलें घणा घणा उंधा, सरलपणें न बोले सूधा।
करें जोम नें गाढ री वात, मिटियो नहीं त्यांरो सल मिथ्यात ॥ ३०० ॥
पांचूं पद बिचें दे आया मांहि, कपट दगो छूटों नहीं ताहि।
यांनें जाण्यां अें वेसासघाती, मांहोमां करें पखपाती ॥ ३०१ ॥
यारो जाण्यो मांहोमां एकों, चाला चरित देख्या अनेकों।
आगा ज्यूं चोखी रीत ठेंहरायो, तिका पिण नहीं दीसें कायो ॥ ३०२ ॥
इणनें एक बाई पूछ्यों एम, सांमीजी सूं जुदा हुवा केम।
जब ओर साध वोल्यो इम वांण, अब तो गुरां रे पगे पडीया आंण ॥ ३०३ ॥
जब उण साध नें कह्यों इण एम, इसडो थें बोलीया केम।
म्हांनें पगा पडीयो कह्यो कांय, हूं तो करार करे आयो मांय ॥ ३०४ ॥
आज पछें थें इसडो वाय, मूंढा बारें म काढजों ताय।
अें तों बोले अग्यांनी एम, ते तो गुर ने आरावसी केम ॥ ३०५ ॥
यांनें जाण्यों घणो अवनीत, नही चारित पालण री नीत।
छोडी जिण मारग री रीत, इणरी जाबक नावें परतीत ॥ ३०६ ॥
ग्रहस्थ आगें कहिवा रा पचखांण, ते पिण सूंस भांगीयों जांण।
प्राछित ठेंहरायों घणा री साखी, ते बदल गयो अन्हाखी ॥ ३०७ ॥
वले घणा लोकां रे मांय, भूठी भूठी करे बकवाय।
वले वद वद नें बोले करों, जब इणनें तों कर दीयो दूरो ॥ ३०८ ॥
दूजोडा नें न छोढ्यों ताय, तिणनें दीयो एम जताय।
जो थारें एको न छें मांहोमांहि, फाडा तोडो न कीधो छें ताहि ॥ ३०९ ॥
तो तूं मत जाए उणरी भार, उण दोषीला नें काढीयो बार।
ऊ प्राछित आढ बदलीयों तांम, तिण भूठा बोला सूं नही कांम ॥ ३१० ॥
जो तूं जाएला उणरी लारी, तो थे एको कीयो गण फारी।
इम कह्यां बेठो रह्यो तांम, अंतरंग तों मेला परिणांम ॥ ३११ ॥
उण सूं मिल मिल नें करें वात, उणरीज करें पखपात।
उणरों थकों बेठों गण मांय, जांण जांण करे कपटाय ॥ ३१२ ॥
ओं तो जाणें रहूं गण मांय, पिण उण विण रह्यो न जाय।
तिणरी करें दलाली आप, करें मांहें ल्यावण री थाप ॥ ३१३ ॥
आगें ठेहरायो प्राछित ताहि, ते प्राछित दे लेवो मांहि।
इणरो परमारथ छे एह, मो उपर प्राछित थापों तेह ॥ ३१४ ॥
जब उणनें पाछो कह्यों एम, तो उपर थापां प्राछित केम।
थारें उणरी दीसें पखपात, वले भेली दीसें थांरी बात ॥ ३१५ ॥

जब इण कह्यो मो उपर थें थाप्यो, ते थेइज कांय उथाप्यो।
जब इणने कह्यों वले आंम, उणहीज उथापीयो तांम ॥ ३१६ ॥
उण कह्यो प्राछित लेऊं नांहि, तिणनें किण विध राखां मांहि।
जब इण भूठ बोले तिणवार, उणरी वात लीधी संवार ॥ ३१७ ॥
उ तो प्राछित बदले क्यांनें, उणने आवे जितों देणो म्हांने।
फाडा तोडो न कीयों म्हे सोय, तिणरो प्राछित न लेउं कोय ॥ ३१८ ॥
उ तो बदलीयो ते इण न्याय, ओ बोल्यो इसडो भूठ बणाय।
जब उणने दीयो जताय, तोसूं प्राछित दीयो न जाय ॥ ३१६ ॥
म्हे तो सरल हुवो जाण्यो ताह्यों, जब थां उपर प्राछित ठेहरायो।
अब तो सरल न दीसो एक, छल खेलता दीसो अनेक ॥ ३२० ॥
उणनें प्राछित भारी आवे, ते तोसूं पूरो दीयों नही जावे।
'तोनें प्राछित कुण भलावे, थांरी परतीत मूल न आवे ॥ ३२१ ॥
तूं प्राछित दीधां रो करे नांम, ते तो खोज भांगण रे कांम।
तूं प्राछित रो करे गाला गालो, इसडों दूजो कुण वेठो छे भोलो ॥ ३२२ ॥
जो उणरे रहिणों होसी गण मांय, तो गुर कने प्राछित लेसी आय।
गुर छोडे तोकनें लेवें ताय, ते कारण मोहि वताय ॥ ३२३ ॥
आ उघाडा दगा री बात, मिल मिल नें करो वेसासघात।
थामें साध तणी नही रीत, उघाडाई दीसो अवनीत ।' ३२४ ॥
गुर कनें प्राछित लेवा नें पाछो, तिणनें कदे म जांणजों आछो।
इसडाने राखे गण मांय, तो सगलां ने आछो नही थाय ॥ ३२५ ॥
जब उणरी पख में बोल्यो पूरो, जब इणनेंइ कर दीयो दूरो।
इणनेइ नही राखियो मांय, जब ओ उण सूं भेलो हुवो जाय ॥ ३२६ ॥
जो उ न जाओ उणरी लार, तो उ कर दें इणरो उघाड।
कदा दसमो प्राछित वतावें, ते इणसूं पछे लीयो न जावे ॥ ३२७ ॥
ओ जाणें म्हांरी पारेला कूक, अठा सूं पिण जाउंला चूक।
भेला होय ने कीधा छे कर्म, चावा हुवां निकल जाओ भर्म ॥ ३२८ ॥
जो आप मे खामी न हुवे लिगार, तो कुण जाए भागल री लार।
ओ तो आपरा किरतब देखें, ते गुर सू भेलो रहें किण लेखे ॥ ३२६ ॥
जो उणनें प्राछित आप ओढावे, तो उ इणनें उतरो वतावे।
तिणसूं उणने प्राछित देणी नावे, आप सूं पिण लेंणी न आवे ॥ ३३० ॥
इणरे इसडी वणी छे आय, आड दोड में पडीयो जाय।
अवनीत सूं गाढी जोडी, गुर सूं तो पेहलांइज तोडी ॥ ३३१ ॥

गुर कीधो थो उपगार भारी, ते तो घाल दीयो विसारी।
अवनीत रे जिले जूतो, नर नों भव खोय विगूतो ॥ ३३२ ॥
यांनें छोडीया पेंहली वार, दोयां नें साथे काढीया बार।
हिवें छोडीया दूजी वार, एकीकानें काढीयों बार ॥ ३३३ ॥
हिवें अवनीत हुआ दोनूं भेला, करवा लागा गुरां री हेला।
सूंस वरत सर्व यांरा भागा, हुवा वरत विहूंणा नागा ॥ ३३४ ॥
प्राछित न ले तिणसूं काढ्या बारें, तिण वात रो नांम न काढें।
उलटो दोष साधां में वतावे, भूठ बोलतों संक न ल्यावे ॥ ३३५ ॥
जब गृहस्थ बोल्या वाय, यांमें दोष हुवें ते दयो वताय।
जब ओ पाछो बोल्यो तिणवार, यांरा दोषां रो घणों विसतार ॥ ३३६ ॥
हिवें काल पडिकमणा रो आयो, ते तों पूरा केम कहिवायो।
चेडा नें कोणक री हुइ राडो, ज्यूं यांरा दोषां रो छे विसतारो ॥ ३३७ ॥
पछें घणा लोक मिल आया, त्यां कनें दोष अनेक वताया।
जब लोक पाछा बोल्या एम, ओ गढ इण विध भांगे केम ॥ ३३८ ॥
कोइ भारी वतावो दोष, ज्यूं सुणें सगलाई लोक।
जब कह्यों मोटों दोष नहीं मांय, अणहूंतो वतायो न जाय ॥ ३३९ ॥
जों अंही दोष यांमें हुवेंसी, तिणरों अं प्राछित लेसी।
जब कहें प्राछित तों यांमें नांहीं, आगें सुध हुवा म्हां मांहीं ॥ ३४० ॥
जब लोकां कह्यों तो क्यूं वतावो, यांमें दोष हुवें ते सुणावो।
जब कहें अं तों म्हे वातां वताई, यांरी उठांणपरीया सुणाई ॥ ३४१ ॥
जब लोकां कह्यो वले यांनें, आ निरथक सुणाई थें क्यांनें।
हिवें थें प्राछित ले आवो मांहिं, जिलो मत राखो ताहि ॥ ३४२ ॥
जो थें जिला सहित आवो मांहिं, जब तो मांहें न लेवें ताहि।
थांरी परतीत यांनें न आवे, रखे वले किणनेंई ले जावे ॥ ३४३ ॥
जब अं पिण बोल्या बेरीत, म्हांनें यांरी नावें परतीत।
अं म्हांसूं गाढो करे करार, पछें काढें एकीका नें बार ॥ ३४४ ॥
जद गृहस्थ बोल्या तिणवार, थांनें दोष विनां काढें बार।
तो म्हे वंदणा छोड दयां यांनें, इसडी वात विचारो क्यांनें ॥ ३४५ ॥
जब कहें म्हें रहिसां दोय, तीजां नें नही फाडां कोय।
इसडी परतीत उपजावां, दोय तो वीखर न्यारा न थावां ॥ ३४६ ॥
मुदें जिलो विखेरणों पेंहलों, ओं तो दोष नहीं छें सेंहिलों।
चोरी सहीत लेवें गण मांय, तो सगलाई भिष्टी थाय ॥ ३४७ ॥

जिलो विखेरण रा नही हुआ ठगो, थे दीयो घणा ने ... कांम।
जेव लोकां पिण जांणे लीया ताहि, अे दगा सहीत आवें गण माहि ॥ ३४८ ॥
वले गृहस्थ बोल्या केई वाय, गुर कने प्राछित ल्यो जाय।
जव ओ वोल्यो अविनेकारी वाणों, आ वात इण भव मे मत जाणों ॥ ३४९ ॥
जो म्हे जावां यारा गण मांय, तठे तो म्हांरी गिणत न कांय।
म्हाने दिल्या दे लेवे मांय, सगलां रे पगां देवे लगाय ॥ ३५० ॥
आपणा किरतव देखे, ते गण मे आवसी किण लेखे।
आलोवण पिण करणी नावे, प्राछित पिण लेणी न आवे ॥ ३५१ ॥
जथातथ निज ओगुण वतावे, तो यांने प्राछित दसमों आवे।
एहवो वेराग ने नरमाई, ते मूल न दीसे कांई ॥ ३५२ ॥
जव घणा लोकां जाण्यां अजोग, याने मांहे लेवा नही जोग।
लोकां पिण कह्यो साधा ने आय, काची बातां म ल्यो यांने मांय ॥ ३५३ ॥
अपछदा पडीया गण सूं जूआ, च्यार तीरथ मे फिट फिट हूवा।
श्रावक हूंता चतुर सुजाण, यांने वदणा छोडी खोटा जांण ॥ ३५४ ॥
अे जाणें यामे दोप वताउ, श्रावका ने यांसूं भिडकाउ।
यारें उसभ उदे हुआ आंण, मुख सू पिण नीकले खोटी वांण ॥ ३५५ ॥
विसवा पिण म्हांराई घट जासी, लोका मे पिण आछी नही थासी।
पिण यारा श्रावका नें करू एम, दाहे वलीया आकडा जेम ॥ ३५६ ॥
या कने हरकोइ आवे, जब अे गुर मांहे दोष बतावे।
अे तो मिल मिल ने भूठ बोले, अवगुणां रो पिटारो खोले ॥ ३५७ ॥
आगे वोलीया अवगुण अनेक, तिण विचेइ बोले छे वशेख।
यारें निन्दा तिकोइज ध्यांन, यारे निन्दा तिकोइज ग्यांन ॥ ३५८ ।
जाणे अवगुण काढ्यां दिन रात, कोयक लागें म्हारेइ हाथ।
इण कारण करे छे विलाप, यारें उदे हूआ छे पाप ॥ ३५९ ।
अवगुण सुण सुण ने समदिष्टी, याने जाणे धर्म सूं भिष्टी।
यारा वोल्या री परतीत नाणे, भूठ मे भूठ बोलता जांणे ॥ ३६०
सगला श्रावक सारीखा नाहि, अकल जुदी जुदी घट माहिं।
समदिष्टी री साची हुवे दिष्ट, ते यांने करे थोडा माहे खिष्ट ॥ ३६१
ते याने न्याय सू देवे जाब, पारे घणां लोका माहे आव।
यारी मूल न आणे सक, याने देखाल दे यारो वंक ॥ ३६२
थे घणा दोप कहो गुर मांहि, घणा वरसां रा जाणो छो ताहि।
तो थे पिण साध किम थाय, जाण जांण मे ... ह्या ... ॥ ३६...

यांमें दोष घणा छे अनेक, कदा दोष नही छें एक।
ते तो केवलग्यानी रह्या देख, पिण थे तो बूडा ले भेख॥ ३६४॥
जो यामें दोष कह्या थें साचा, तोही थें तों निश्चें नहीं आछा।
जो झूठा कह्या तो वशेष भूंडा, थें तो दोनूं प्रकारें बूडा॥ ३६५॥
थे दोषीला नें वांद्या कहो पाप, भेला पिण रह्यां कहो संताप।
दोषीला नें देवे आहार पांणी, वले उपधादिक देवें आंणी॥ ३६६॥
हरकोइ वसत देवें आण, करें विनों वीयावच जांण।
दोषीला सूं करे संभोग, तिणरा पिण जाणों छों माठा जोग॥ ३६७॥
इत्यादिक दोषीला सूं करंत, तिणमें पाप कहो छो एकंत।
अं थें जाणें कीया सारा कांम, ते पिण घणा वरसां लगे तांम॥ ३६८॥
घणा वरस कीया एहवा कर्म, तिण सूं बूड गयो थांरो धर्म।
निरतर दोष सेवण लागा, हुआ वरत विहुंणा नागा॥ ३६९॥
ओ थे कीधो अकारज मोटो, छांने छांनें चलायो खोटो।
थें तो बांध्या करमा रा जालो, आतमा ने लगायो कालो॥ ३७०॥
थे गुर ने निश्चें जाण्यां असाध, त्यांनें वांद्या जांणी असमाध।
त्याराहीज वांद्या नित नित पाय, मस्तक दोनूं पग रे लगाय॥ ३७१॥
यांसूं कीधा थें बारें संभोग, ते पिण जाण्यां सावद्य जोग।
सावद्य सेव्यो निरंतर जांण, थें पूरा मूंढ अयांण॥ ३७२॥
थें भण भण ने पाना पोथा, चारित विण रहि गया थोथा।
थें कहो अर्थ करां म्हे गूढा, तो थें भण भण नें कांय बूडा॥ ३७३॥
थे वीहार करता गांम गांम, सिष सिषणी वधारण कांम।
किणनें देता बधो कराय, किणनें देता घर छोडाय॥ ३७४॥
वले कर कर गुर रा गुण ग्रांम, चढावता लोकां रा परिणांम।
जब थें गुर ने खोटा जाणो ताहि, ओरां नें क्यूं न्हाखता यां माहि॥ ३७५॥
पोते पडीया जाणों खाड मांय, तों ओरां नें न्हाखता किण न्याय।
ओरां नें डबोवण रो उपाय, जांण जांण करता था ताय॥ ३७६॥
पाच पद वंदणा सीखावता ताह्यों, तिणमे गुर रो नांम घलायो।
तिण गुर ने वांद्या जाणता पाप, तो ओरां नें कांय बोया आप॥ ३७७॥
ज्यूं नकटो नकटा हुआ चावें, उसभ उदें माठी मत आवें।
ज्यूं थे डूबता दोषीलां मांहि, ज्यूं ओरां नें डबोवता ताहि॥ ३७८॥
ओरां सूं करता एहवो उपगार, थांरा भणीया रो ओहीज सार।
इसडो कूड कपट थे चलायो, थांरो छूटको किण विध थायो॥ ३७९॥

थे तो जिण मारग में हुआ ठगो, थे दीयो घणा ने दगों।
ठग ठग खाधा लोकां रा माल, थांरो होसी कुण हवाल ॥ ३८० ॥
आछी वसत हूती घर मांहि, आहार पांणी कपड़ादिक ताहि।
थांनें गुर जाणें हरख सूं देता, सो थांरा तों अे निकल गया पेंता ॥ ३८१ ॥
म्हें थानें वांदता वारूवार, जद म्हांनें हुवतो हरष अपार।
थांनें जाणता सुध आचारी, थे छांने रह्यां अणाचारी ॥ ३८२ ॥
म्हे थांने जाणता था पुरष मोटा, पिण थें तो निकल गया खोटा।
म्हे थांनें जाणता उत्तम साध, थे तो होय नीवरीया असाध ॥ ३८३ ॥
थे जाणें रह्या दोषीला मांह्यों, ठागा सूं थे काम चलायो।
थे जीतब जनम विगाड्यो, नरनो भव निरथक हाऱ्यो ॥ ३८४ ॥
थे घणा दिनां रा कहो छो दोष, थांरी वात दीसे छे 'फोक।
साच भूठ तो केवली जाणे, छदमस्थ तो परतीत नाणें ॥ ३८५ ॥
थे हेत माहे तो दोषण ढांक्या, हेत तूटे कहितां नही सांक्या।
थांरी किम आवे परतीत, थांने जांण लीया विपरीत ॥ ३८६ ॥
थे दोषीला सूं कीयो आहार, जद पिण नही डरीया लिगार।
तो हिवे आल देता किम डरसी, थांरी परतीत मूरख करसी ॥ ३८७ ।
अे थे दोष क्यांने कीया भेला, अे थे क्यूं न कह्या तिण वेला।
थामे साध तणी रीत हुवेतों, जिण दिन रो जिण दिन केंतो ॥ ३८८
थें दोषीला सूं कीयो सभोग, थांरा वरतीया माठा जोग।
थारी परतीत नावे म्हांने, यांरा दोष राख्या थे छांने ॥ ३८९
थें तो कीधो अकारज मोटो, जिण मारग मे चलायो खोटो।
थारी भिष्ट हुइ मति बुध, हिवे प्राछित ले होवो सुध ॥ ३९०
उणरी तो थांरा कह्या सूं संक, पिण तूं तो दोषीलो निसंक।
इम कहि उणने घालणो कूडो, घणा बेठां देणी मुख धूड़ो ॥ ३९
ज्यूं कोइ वले न दूजीवार, किणराई दोष न ढांके लिगार।
दोष ढांक्यां हुवे घणी खुवारी, टांको भले तो अनंत संसारी ॥ ३९
संका सहीत नें राखे मांय, तो ओर साव दोषीला न थाय।
दोषीला ने जांणी राखें मांय, तो सगलाई असाध थाय ॥ ३
इम कह्यां यानें जाब न आवे, जब भूठी भूठी वातां वणावे।
यांरा दोष न कह्या म्हे डरते, गुर सूं पिण लाजा मरते ॥ ३
रखे कर दे मोनें टोला बारे, मुदे तो ओहीज डर रह्यो म्हारे।
म्हे दोष सेव्यां यारे कहे जांण, यां सेव्यां री करी तांण ॥

कदे देतों हूं दोष वताय, जब म्हारी देता वात उडाय।
म्हां एकला री आसंग नही कांय, तिण सूं रह्यो दोषीलां मांय ॥ ३९६ ॥
हिवें तों हुआ म्हें दोय, दोष सेवण न दयां कोय।
इसडी जोमरी वातां वणावे, मन मांनें ज्यूं गोला चलावे ॥ ३९७ ॥
जब यानें पाछो कहिणो एम, थांरो साधपणो रह्यो केम।
थें डरता अकारज कीधो, तिणरो प्राछित पिण नही लीधो ॥ ३९८ ॥
कदा गुर काचो पाणी मंगावत, तो थें डरता थकां भर ल्यावत।
करावत पाप हर कोई, तो थें डरता करता सोई ॥ ३९९ ॥
कदा गुर पिण भारी पाप करता, तोही थें तो भेला रहिता डरता।
भागलां माहें रहिता खूंता, पिण थें एकला कदेय न हूंता ॥ ४०० ॥
इसडी थांरी गीदडाई, थेंइज थारे मुख सूं वताई।
इसडा पाक्रम थां माहे पावें, थांरी आगा सूं परतीत नावें ॥ ४०१ ॥
साधा नें डरतो मूल न रहिणो, दोष देखे सताब सूं कहिणो।
डरता न कह्या तो थें गीदड पूरा, हिवे किण विध होसो थें सूरा ॥ ४०२ ॥
एकला होयवा सूं डरतें, दोष न कह्या थें लाजां मरतें।
तो हिवें ढांकोला दोप अनेक, जाणें होय जावांला एक एक ॥ ४०३ ॥
हिवें थांरे दोयां रे माय, कोइ दोष दे अनेक लगाय।
तो पिण चावा न करो लाजां मरता, एकला होण सूं वले डरता ॥ ४०४ ॥
एकला होण सूं डरो दोई, मांहोमा दोष देसो लकोई।
आ देख लीधी थांरी रीत, हिवें जावक नावें परतीत ॥ ४०५ ॥
थारे तो मांहोमां दोप देख, हिवे तो ढांकसो वशेख।
एकला होवण रो डर थानें, मांहोमां दोष राखसो छानें ॥ ४०६ ॥
जो हिवें कहो म्हे न राखां छानें, तो हिवें वात थांरी कुण माने।
थे बेठा परतीत गमाय, थांरी मूर्ख माने वाय ॥ ४०७ ॥
किणही चोर रो हुवो उघाडो, फिट फिट हुवो सहर मझारो।
घणा लोकां जाणीया तास, पछे कुण करे तिणरो वेसास ॥ ४०८ ॥
ज्यूं थांरो पिण हुवो उघाडो, दोषीलां भेलो काढ्यों जमारो।
परगट न कीया त्यारा दोष, थें जनम गमायो फोक ॥ ४०९ ॥
एक दोष सेवें नित साध, तिण संजम दीयो विराध।
तिणनें गुर जांण नें वांदे कोय, तो उ अनंत संसारी होय ॥ ४१० ॥
तो घणा दोष जाणें थें साख्यात, त्यांनें जाणे वांदयां दिनरात।
तो थें पूरा अग्यांनी बाल, थें रुलसो कितोएक काल ॥ ४११ ॥

एक दोष रो सेवणहार, तिण वांदचा वधे अनंत ससार।
थे घणा दोष जाण्यां त्यां मांय, त्यांरा हीज वांदचां नित नित पाप ॥ ४१२ ॥
भागलां रा वांदचां जाणे पायो, जिण मारग माहे ठागो चलायो।
रह्या कूड कपट मांहें भूल, हिवे थांरो होसी कुण सूल ॥ ४१३ ॥
जो थे गुर मांहे दोष वताया, घणा वरस थे राख्या छिपाया।
तिण लेखें पिण थेंइज भूडा, ग्यांनादिक गुण खोई वूडा ॥ ४१४ ।
जो थे दोष कह्या यामें कूरा, जव तो थे जावक वूडा पूरा।
थें दीया अणहूंता आल, हिवे रुलसो कितो एक काल ॥ ४१५
थें दोनूं विध वूडा इण लेखे, साच भूठ तों केवली देखें।
छदमस्थ तों यां अेंहलाणें, थानें जावक भूठा जाणें ॥ ४१६
यां कनें पेहला अवगुण कहिवाय, पछें खिष्ट करें इण न्याय।
यांरा वचन ने सेंठा भाले, यानें पग २ भूठा घाले ॥ ४१
यानें जाव न आवे पूरा, चरचा करतां परजाअे कूरा।
ज्यूं बोले ज्यूं पकडावे, भागवा री सेरी न पावे ॥ ४१
अे तों अवगुण बोले अनेक, वुधवंत नही माने एक।
यानें जाणे पूरा अवनीत, यांरी मूल नाणे परतीत ॥ ४१
अवनीतां रो करे वेसास, तो हुवे वोध बीज रो नास।
च्यार तीरथ सूं पडीया काने, त्यारी वात अग्यांनी मानें ॥ ४२
अविनीतां रो करे परसग, तो साधां सूं जाअे मन भंग।
अे साधां ने असाध सरधावे, भूठा २ अवगुण वतावे ॥
यांरो जाय सुणे वखांण, तिण लोपी जिणवर आंण।
यांरी तहत करे कोइ वाणी, आ दुरगत नी अेंलाणी ॥
किणरे उसभ उदें हुवे आंण, ते करे अविनीत री तांण।
त्यां भूठा ने साचा दे ठेंहराई, त्यांरे अनत संसार री साई ॥
यानें कहि वतलावे सामी, तिणमें पिण जाणजो मोटी खामी।
यानें उंचो करे कोइ हाथ, तिणरे निश्चें बंधे कर्म सात ॥
यांरो जाय वखांण मंडावे, वले ओर लोकां ने वोलावे।
इसडी कोइ करे दलाली, ते पिण धर्म सूं होय जाए खाली ॥
यानें च्यार तीरथ मांहे जाणें, ते पिण पेहले गुणठाणें।
यांरी करे कोइ पखपात, तिणरे आय चूको मिथ्यात ॥
यांसूं करे आलाप संलाप, तिणरें पिण वंधे चीकणा पाप।
यानें वंदणा करे जोडी हाथ, तिणरें वेगो आवे मिथ्यात ॥

यांरी भाव भगत करे कोइ, वले आदर सनमान दे सोई।
तिणरें सरधा न दीसे साची, गुर री पिण परतीत काची ॥ ४२८ ॥
यांसूं करे विनो नरमाई, तिणरें लागी मिथ्यात री साई।
घणों २ जो यां कनें जावे, ते समकत वेगी गमावे ॥ ४२९ ॥
अें अवनीत नें भागल पूरा, वले आल दे कूडा कूडा।
त्यांरी मान लेवे कोई वात, ते तों बूड चूका साख्यात ॥ ४३० ॥
कोइ भणवा रा लालच रो घाल्यो, त्यांरे कनें जाअें कोई चाल्यो।
ते तों गुर रो न मानें हटको, तिणरो तो हुंतो दीसे छे गटको ॥ ४३१ ॥
चरचा बोल सीखे त्यां आगे, तिणरें डंक मिथ्यात रो लागे।
यांरो संसतो परचो न करणो, यांरो संग जाबक परहरणो ॥ ४३२ ॥
समकत रा अतिचार संभालो, तो अवनीत सूं देजो टालो।
जोवो आणंद श्रावक री रीत, राखो सूतर री परतीत ॥ ४३३ ॥
अें अवगुण बोलें चिठाय चिठाय, किणही भोला रे संक पड जाये।
जो उ न करे त्यांरी पषपात, तिणरो काढणों सोहरो मिथ्यात ॥ ४३४ ॥
त्यांरी गाढी झाले पष कोई, ते नहीं छोडे झूठा जाणें तोही।
ते बूडसी अवनीतां रे लारें, त्यां अहली दीयो जनम विगाडें ॥ ४३५ ॥
कोई लीधी टेक न मेले, आपरें मन मानें ज्यूं ठेले।
जिण धर्म री रीत न जाणें, मूंढ मूर्ख थको यूंही ताणें ॥ ४३६ ॥
यां कनें करे कोई पोसो समाई, यां कनें करे पचखाण जाई।
तिणरी पिण जांणजो मति काची, जिण मारग में न कीधी आछी ॥ ४३७ ॥
जे अवनीत रा पषपाती, त्यांरी सुण २ बल उठे छाती।
अवनीतां रो करे उघाड, जब पिण मूंढो देवे विगाड ॥ ४३८ ॥
कोई गण में हुवे अवनीत, तिण सूं गाठी बांधे पीत।
ते पिण ओगुण बोलावण कांम, इसडा छे मेला परिणांम ॥ ४३९ ॥
जिणरो धेष छे घणा दिन पेलो, दुष्ट परिणांमी जीव छे मेलो।
तिणरें उदे हुवे कर्म मिथ्यात, ते तुरत मानें त्यांरी वात ॥ ४४० ॥
ते अवनीतां री करे पखपात, तिणरें आय चूको मिथ्यात।
खप करे त्यांरी करवा थाप, तिणरें उसभ उदे हुवा पाप ॥ ४४१ ॥
जाणें अभिमांनी ने अवनीत, तोही राखे त्यांरी परतीत।
तिणरे प्रतख पूरो अंधारो, बूडें छे अवनीत रे लारो ॥ ४४२ ॥
जिणनें गुर रा अवगुण सुहावे, ते अवनीत नें मूंढे लगावे।
त्यां कनें गुर रा अवगुण बोलावे, पछे लोकां में आप फेंलावे ॥ ४४३ ॥

करे जिण तिण आगे वात, करे अवनीता री पखपात।
अवनीतां ने साचा साचा सरधावे, गुर माहे अवगुण दरसावे ॥ ४४४ ॥
वादे तो गुर ने सीस नाम, करे अवनीतां रा गुणग्राम।
ते होय वेठा अवनीतां री लारी, वले ओरां ने खपे करवा खुवारी ॥ ४४५ ॥
गुर सूं लोकां रा परिणांम फारें, आप विगड्यो ओरा ने विगाडे।
इसडो श्रावक वेसासघाती, ते पिण होयचूको मिथ्याती ॥ ४४६ ॥
गुर री साची वात दे ठेली, अवनीतां रो होय जाए वेली।
हरकोई अवनीत छूटे, तिणरो वेली होय उठे ॥ ४४७ ॥
साधां रा अवगुण अवनीत बोले, तिण सूं वात करे दिल खोले।
अवनीत नें मिलीया अवनीत, त्यांरी तेहीज करे प्रतीत ॥ ४४८ ॥
गुर सूं पिण जाबक नही तोडे, अवनीत सूं पिण सटकें नही जोडे।
धरपाधर रह्या छे देख, छल छिदर जोवे छे वगेख ॥ ४४६ ॥
जो अवनीतां ने लोक न माने, तो आप पिण होय जाए काने।
अणसरते दवीया रहे मांहि, पिण लखण भदर लीया ताहि ॥ ४५० ।
केई श्रावक दोपडपीटा, ते पिण पडीया यारे संग फीटा।
जो कोई बंध निकाचत पाडे, ते पिण अनंत ससार वधारे ॥ ४५१
केई श्रावक भागल साख्यात, ते भागलां री करे पखपात।
जाणें चोर सूं मिल गई कुंती, भूठी वाता करे अणहूती ॥ ४५२
ते भागलां ने कहे उतकिष्टों, तिणरी पिण मति होइ गई भिष्टो।
तिण भागल नें भागल मिलियां, जब पूरीजे मन रलीयां ॥ ४५३
असाधां ने सरधे साध, साधां ने सरधे असाध।
दोनूं प्रकारे मूरख वूडें, ते पिण जाय वेससी तूडे ॥ ४५४
एहवा अभिमानी ने अवनीत, होसी चिहुंगति मांहे फजीत।
यांने भूंडा कह्या लोकां आगे, यांरा पखपाती रे दाह लागे ॥ ४५५
ए समचे भाव कह्या छे जांण, कोई आप म लीजो ताण।
एहवा अवगुण छे जिण मांय, ते छोड्या विण सुख नही थाय ॥ ४५६
ए विगडायल जेन रा पूरा, त्यांने कर दीया गण सू दूरा।
लाज सरम त्यां अलगी मेली, भेषधारी भागल त्यारा वेली ॥ ४५७
ए साधां मे दोष वतावे, ते भेषधार्‍यां रे मन भावे।
यारी ठडी कीधी या छाती, ए पिण हुवा त्यांरा पखपाती ॥ ४५८
यां तो दुरगत री नीव दीधी, भेषधार्‍या रे खरची कीधी।
इण खरची सू होसी खुराव, पडसी चिहु गति मांहे आव ॥ ४५

ए तो आगेइ देता था आल, ते भूंड रो क्यांनें काढे नीकाल।
ओ सहजें पडीयो भूंठ पानें, हिवें ए क्यांनें राख्या छानें ॥ ४६० ॥
भेपधार्‍यां रा श्रावक आवे, त्यांसूं तो घणा मिल जावे।
त्यांनें मीठा वचनां बोलावे, त्यां आगें गुर में दोप बतावे ॥ ४६१ ॥
जब ए पिण राजी होय जावे, असणादिक आछी रीत वेंहरावे।
वले ए पिण यांनें पोगां चढावे, वारंवार अवगुण बोलावे ॥ ४६२ ॥
वले मांहोमां कल्हो दें लगाड, आमी सामी भेटी मेलें ताहि।
यांरे आगेंई साव सूं घेप, तिणसूं यांरी मानें वसेप ॥ ४६३ ॥
वले यांनें पूछें केइ एम, थांनें गण बारे काढीया केम।
जब ए कहे म्हांनें काढें क्यांनें, म्हें तो ढीला जाणें छोड्या यांनें ॥ ४६४ ॥
इसडा भूंठ बोलें जांण जांण, तिणरो कठें नही परमांण।
यांनें छोड्या एकीकानें ताय, तका तो वात दीवी छिपाय ॥ ४६५ ॥
कमलप्रभ आचार्य नें देखो, तिण विचे यांरी विगडी वसेखों।
उण वचन फेर्‍यो एकवार, तों रुलीयो अनंत संसार ॥ ४६६ ॥
ए तों वके घणा दिनरात, कूड कपट सहीत करे वात।
वले विवधपणें देवे आल, तों ए रुलसी कितोएक काल ॥ ४६७ ॥
इसडा अनंत हुआ नें होसी, परभव सामो विरला जोसी।
वले आरा आजूणा मांहि, म्हे पिण देख लीया छे ताहि ॥ ४६८ ॥
ए भाव कह्या तिण मांहि, कोई बोल टले छे ताहि।
केई अणुसारें मेल्या छे न्याय, कोई बोली रो फेर छे मांय ॥ ४६९ ॥
इत्यादिक यांमें आंगुण जांण, जब लागा छे जहर समांण।
यांनें निन्व जाणें कीया दूर, तिणमें मूल म जांणजों कूड ॥ ४७० ॥
सेतीमें वरस संवत अठारे, काती सुद एकम सनीसरवार।
निन्व भागल रो विसतार, कीधो पादू गाम मभार ॥ ४७१ ॥